Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ed by Arya Samaj Foundation Chennai and eGa

Harijan Sewak

Vol. 10
1945

LIBRARY
G. K. V.
HARDWAR

n Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Ha

078025

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RF073

078025

STOCK VERIFICATION
Central Library
2024-25 G.K.D.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन सेवक

ओ३म्

१० फरवरी १९४६ से २८ दिसम्बर १९४६ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078025

हिन्दुस्तानी वनाम अंग्रेज़ी

Reg. No. B 4448

हरिजन-सेवक

दो आना

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क १

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १० फरवरी, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३.

विषय-सूची

			पृष्ठ
'हरिजन'का फिरसे प्रकाशन	...	गांधीजी	१
अंजलि	...	अमृतकुँवर	१
आगेका तरीका क्या हो?	...	प्यारेलाल	२
प्रदर्शनी कैसी हो?	...	गांधीजी	३
हिंदुस्तानी वनाम अंग्रेज़ी	...	गांधीजी	४
आश्चर्यजनक	...	गांधीजी	४
मदुराका सवक़	...	गांधीजी	५
पलनी-यात्रा	...	गांधीजी	५
कुछ हरिजन-कार्यके वारेमें	...	अ० वि० ठक्कर	६
अहिंसा और औरतों पर सितम	...	सु० न०	६
क्या हम गिर रहे हैं?	...	गांधीजी	७
पाठकोंसे	...	गांधीजी	७
व्यवस्थापकसभाका मोह	...	गांधीजी	८
नैसर्गिक उपचारगृह	...	गांधीजी	८
एक नमूना	...	अ० वि० ठक्कर	७
पुराने ग्राहकोंसे	...	जी० देसाई	८

'हरिजन'का फिरसे प्रकाशन

'हरिजन' फिर क्यों शुरू हो रहा है? यह सवाल मेरी तरह बहुतोंके दिलमें उठा होगा। पाठकोंसे मैं इतना कह दूँ कि उसे फिरसे शुरू करनेकी कोई खास कोशिश नहीं की गई। उस पर लगी हुई रोकको हटानेके लिए ता० ३-१२-'४५ के रोज़ एक अर्ज़ी भेजी गई थी और १०-१-'४६ को रोक हटा ली गई। बहुतसे पाठकोंको, जिनमें अंग्रेज़ और अमेरिकन भी शामिल हैं, 'हरिजन'की कमी बराबर खटकती रहती थी। फासिस्ट राज्योंकी हारके बाद तो यह कमी और भी ज़्यादा अखरने लगी थी। कारण इसका स्पष्ट है। समूची दुनियामें नहीं, तो कम-से-कम हिन्दुस्तानमें जो बहुत-सी बातें हो रही हैं, सत्य और अहिंसाकी दृष्टिसे मुझ पर उनका क्या असर पड़ रहा है, इसे जाननेकी उत्सुकता 'हरिजन'के पाठकोंमें रही है। और मैं उनकी इस इच्छाको पूरा करना चाहता था।

पिछले कुछ सालोंमें दुनियाके अन्दर बड़े-बड़े उल्कापात हो चुके हैं। क्या सत्य और अहिंसा पर अब भी मेरी श्रद्धा वैसी ही बनी हुई है? क्या अणु बमने मेरी श्रद्धाको चूर-चूर नहीं कर डाला? नहीं, ज़रा भी नहीं। उलटे, उसकी वजहसे तो मेरा यह विश्वास अधिक दृढ़ हुआ है कि दुनियामें सत्य और अहिंसासे बढ़कर कोई ताक़त नहीं है। उसके मुक़ाबिले अणु बम कोई चीज़ नहीं। एक नैतिक और आध्यात्मिक ताक़त है, दूसरी शारीरिक और भौतिक— इन दो विरोधी ताक़तोंके बीच ज़मीन-आसमानका फ़र्क़ है। एक में आत्माकी अथाह शक्ति मौजूद है, जब कि दूसरी स्वभावसे ही नाशवान है। आत्माकी शक्ति हमेशा आगे बढ़नेवाली और अनन्त है। जब इस शक्तिका पूरा उदय होता है, तो यह संसारमें अजेय बन जाती है। मैं जानता हूँ कि यहाँ मैं कोई नई चीज़ नहीं कह रहा। मैं तो सिर्फ़ एक हक़ीक़तकी गवाही भर दे रहा हूँ। इस ताक़तकी दूसरी ख़ूबी यह है कि बिना किसी रङ्ग या वर्णके भेदके यह हरएक मर्द, औरत और बच्चे में मौजूद रहती है। बात इतनी ही है कि बहुतोंमें यह सोई हुई हालतमें होती है, गोकि विवेकमयी शिक्षासे इसे जगाया जा सकता है।

एक दूसरी बात भी ध्यानमें रखने लायक है कि इस सत्यको अपनाये बिना और इसके साक्षात्कारका सच्चा प्रयत्न किये बिना सर्वनाशसे बचनेका दूसरा कोई इलाज नहीं। इससे बचनेका सच्चा उपाय यही है कि हर आदमी जीवनके हरएक क्षेत्रमें, अपने पड़ोसियोंसे किसी प्रतिफल या जवाबकी आशा रखे बिना, इन सिद्धांतों पर अमल करने लग जाय। 'हरिजन'की बराबर यह कोशिश रहेगी कि वह उदाहरणों और दलीलोंके साथ हर हफ़्ते इस सत्यका प्रतिपादन करे।

मदुरा जाते हुए, २-२-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

अंजलि

"हा! लुप्त जो कर हो गया, उसका मिले संस्पर्श कैसे?
हा! कण्ठ जो अब ना रहा, उसका सुनूँ मैं शब्द कैसे?"

'हरिजन'के पाठकोंको अपने सम्पादक स्वर्गीय श्री महादेव देसाईकी क़लमसे लिखे गये लेखोंकी कमी कितनी खटकेगा, सो मैं अच्छी तरह समझ सकती हूँ। जिस एकाग्रनिष्ठाके साथ वे अपने गुरुके ध्येयकी सेवा करते थे, उसे नज़दीकसे देखनेवाले हम सबको स्वर्गीय महादेवभाईकी कमी हमेशा खलती रहती थी, मगर आज वह कमी खेदके साथ गहरी ग़मग़ीनी पैदा करती है।

आख़िर परिस्थितियोंके अनुकूल होते ही जब मैंने अपनेको गांधीजीके काममें झोंक दिया, तभीसे महादेवभाईके साथ मेरी नज़दीककी जान-पहचान शुरू हुई। उनके साथ किये गये कामोंकी और उनसे सीखे हुए सबक़ोंकी याद और उनके साथकी मज़बूत दोस्ती, ऐसी चीज़ें हैं, जो हमेशा अनमोल ख़ज़ानेका काम देंगी। महादेवभाईके बारेमें निरी सचाई यह है कि वे देखनेमें अच्छे थे, उनका व्यवहार अच्छा था और सबसे बड़ी बात यह कि वे बहुत शीलवान थे। स्वभावसे वे भावुक थे और उनकी तबीयतमें एक अजीब मिठास थी। प्रेमकी प्रतिध्वनि उनके हृदयमें तुरन्त ही गूँजती थी। सहानुभूति और समझदारी उनमें ठूँस-ठूँसकर भरी थी और उनकी उदारताका पार न था। किन्तु उनके प्रेमल स्वभाव और उनकी अपूर्व कार्यकुशलतासे भी बढ़कर उनकी नम्रता लोगोंको उनकी ओर अधिक आकर्षित करती थी और उनके लिए वाह-वाह कहलवाती थी। क्या आश्चर्य है कि ऐसे शक्तिशाली आदमीको अपने जीवनके आरम्भमें ही अपना सबकुछ उस पुरुषके चरणोंमें चढ़ा देनेकी प्रेरणा हुई, जिसकी सेवामें वह अन्त तक अटल निष्ठासे डटा रहा?

गांधीजीकी जीवन-प्रणालीका गहरा ज्ञान और उसका अचूक निरूपण महादेवभाईकी अपनी अमूल्य निधि थी, जिसकी बदौलत 'हरिजन'को सारे संसारकी सराहना और उसका प्रेम इतनी बड़ी मात्रामें प्राप्त हुआ था। गांधीजीकी मदद करनेकी कोशिशमें लगे हुए हम लोगोंको ये दोनों चीज़ें, कितनी ही कम मिक़दारमें क्यों न हों, बख़्शी जायँ, यही प्रार्थना है!

मदुरा जाते हुए रेलमें, २-२-'४६ अमृतकुँवर

('हरिजन'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगेका तरीक़ा क्या हो?

कुछ दिन पहले एक मित्रने गांधीजीसे पूछा: "टेलिग्राफ़ के तार काटना अहिंसा के सिद्वान्त से किस तरह बेमेल या उसका विरोधी है?"

इस बार जबसे गांधीजी छूटे हैं, उनसे बार-बार पूछे जानेवाले सवालों का यह एक नमूना है। आग़ाखान महल से बाहर आनेके कुछ ही दिन बाद उनसे मिलने आये दूसरे एक भाई ने यह सवाल नीचे लिखे ढंग से पेश किया था: "हमारे नौजवानों में आज दो तरह की विचारधारायें काम कर रही हैं। उनमें से एकके माननेवालोंका यह ख़याल है और वे खुल्लमखुल्ला कहते भी हैं कि लड़ाई के कार्यक्रम के रूपमें अब अहिंसा में कोई दम नहीं रह गया। उसका काम आमजनता को जगाने का था, सो वह पूरा कर चुकी है। उसने पूर्ण स्वराज्य की आख़िरी लड़ाई के लिए मोर्चा तैयार कर दिया है, और अब इस लड़ाई में हथियारों के उपयोग को टाला नहीं जा सकता। दूसरी विचारधारावाले लोग अहिंसा में अपनी श्रद्धा जताते हैं, फिर भी वे कहते हैं कि अहिंसा की कार्यपद्धति में सुधार की और फेरफार की गुंजाइश है और उसकी तफ़सील ज़्यादा बारीकी के साथ तैयार की जानी चाहिये। ये लोग ज़ोरों के साथ यह कहते हैं कि बड़े पैमाने पर तैयार की गई तोड़फोड़ की योजना हमारी लड़ाई की अगली मंज़िल की एक निशानी होगी।" तोड़फोड़ का काम अहिंसाके कार्यक्रम का हिस्सा बन सकता है या कि अहिंसा के सिद्धान्त को ख़ुद जिस तरह समझे हैं, उसमें से यह चीज़ निकल सकती है, इसके बारे में गांधीजी ने अपनी शंका प्रकट की। तिसपर भी सवाल पूछनेवाले मित्रने आग्रह के साथ और बार-बार कहा कि हमें पसन्द पड़े, चाहे न पड़े, तोड़फोड़ की यह चीज़ अब हमारी लड़ाई के एक अंगके रूप में पक्की हो चुकी है। इस पर गांधीजीने उनकी बातको बीच ही में ख़तम करते हुए थोड़ेमें कहा: "भविष्यके बारेमें इस तरहकी ग़ैरज़िम्मेदारीसे भरी बातें करनेमें कोई सार नहीं। हमारे सामने जो सच्चा सवाल पेश है, वह तो यह है कि इस विषयमें हमारी स्थिति क्या है, हम खड़े कहाँ हैं, और इस बारेमें हमारा रुख़ कैसा रहनेवाला है?"

इस पर उन मित्र ने अपनी कुछ शंकायें पेश कीं। "क्या सरकारी मालमतेका नाश करना हिंसा है? आपने ख़ुद कहा है कि जो अपनी न हो, ऐसी किसी मिल्कियतको बरबाद करनेका किसीको हक़ नहीं। तो क्या सरकारी मिल्कियत मेरी मिल्कियत नहीं? मैं मानता हूँ कि वह मेरी है, और इसलिए (आप ही के शब्दोंमें) उसको नष्ट करनेका मुझे अधिकार है।"

जवाबमें गांधीजीने कहा: "आपकी दलीलमें दोहरी भूल है। गोकि आज हक़ीक़त ऐसी नहीं है, तिस पर भी हम मान लें कि सरकारी सम्पत्ति राष्ट्रकी ही सम्पत्ति है, तो भी महज़ इसलिए कि मौजूदा सरकारके साथ मेरी अनबन हो गई है, मैं उसकी मिल्कियतको बरबाद न करूँगा। अगर राष्ट्रीय सरकारके कुछ कामोंके बारेमें उसके साथ झगड़ा पैदा हो जाय, और जनताका हर आदमी यह दावा करने लगे कि उसे सरकारी पुलों, आमद-रफ़्त के साधनों, डाक-तारके ज़रियों और रास्तों वग़ैरा सब चीज़ोंको नष्ट करनेका हक़ है, तो ख़ुद राष्ट्रीय सरकारको भी एक दिनके लिए अपना काम चलाना मुश्किल हो जाय—वह चल ही न सके। फिर, जो बुराई है, वह पुलों या रास्तों वग़ैरामें नहीं; ये बेचारे तो जड़ पदार्थ हैं। बुराई तो आदमियोंमें बसी है। इसलिए हमें जो काम करना है, सो आदमियोंके साथ करना है। विस्फोटक पदार्थोंका उपयोग करके पुल वग़ैरा उड़ा देनेसे इस बुराई पर कोई आँच नहीं आती, उलटे जिस बुराईको हम मिटाना चाहते हैं, उससे भी बदतर एक बुराईको हम पैदा कर देते हैं।" इसके जवाबमें उन मित्रने कहा: "मैं मानता हूँ कि बुराई हम इन्सानोंमें है, उन पुलोंमें नहीं, जिनको अच्छे या बुरे हर तरहके कामके लिए बरता जा सकता है। साथ ही, मैं यह भी क़बूल करता हूँ कि पुल उड़ा देनेसे उसके जवाबमें ज़्यादा बुरी हिंसा होती है। लेकिन मेरा ख़याल है कि लड़ाईकी सफलताके लिए व्यूह रचनेकी दृष्टिसे और लोगोंको पस्त हिम्मत होनेसे बचानेके लिए पुलोंको उड़ाना ज़रूरी हो सकता है।"

जवाबमें गांधीजीने कहा: "यह बहुत पुरानी दलील है। कुछ दिनों पहले बमके और वैसे ही दूसरे अत्याचारोंके बचावमें यह दलील बार-बार सुननेको मिलती थी। तोड़फोड़ भी हिंसाका ही एक स्वरूप है। लोग अब इतना तो समझ गये हैं कि शारीरिक हिंसामें यानी अपने विरोधीको मार डालने या उसे चोट पहुँचानेके तरीक़ेमें कोई सार नहीं, वह निकम्मी चीज़ है। लेकिन कुछ लोग अब भी यह मानते दिखाई पड़ते हैं कि तोड़फोड़के ढंगकी एक हद तक सीमित हिंसाके प्रयोगसे सफलता ज़रूर मिलेगी। मेरा अपना यह दृढ़ विश्वास है कि हमारे देशकी समूची जनता आज साहस और निडरताकी जिस कक्षा तक पहुँची है, संपूर्ण अहिंसाके प्रयोगके बिना उस ऊँचाई तक वह कभी पहुँच न पाती। लेकिन हम अभी ठीक-ठीक नहीं जानते कि यह अहिंसा किस तरह काम करती है। इतनी बात निर्विवाद रूपसे सच है कि हम कभी तो साफ़ ही असफल हुए हैं और कभी पीछे हटे हैं, तो भी अहिंसाके आचरणकी हमारी ताक़त तो बराबर बढ़ती ही गई है। इसके ख़िलाफ़ बम और दूसरे आतंकपूर्ण कामोंकी वजहसे हमारे लोग हिम्मत हार कर बैठ गये थे। सच यह है कि जल्दबाज़ी से आख़िर नुक़सान ही होता है।"

इस पर उन मित्रने कहा: "हमारा तजरबा यह है कि जिन्हें हिंसाकी तालीम मिली है वे, उन लोगोंके मुक़ाबलेमें जिन्हें तालीम नहीं मिली या जिन्हें हिंसक तरीक़ेका तजरबा नहीं है, अहिंसाके आदर्शके ज़्यादा नज़दीक पहुँचते हैं।"

"अगर यह सच है, तो इसका मतलब यही है कि ऐसे लोग हिंसाके तरीक़ेको बार-बार आज़मा कर थक गये हैं और वे उसके निकम्मेपनको समझ गये हैं; आपके अनुभवका इससे अधिक और कोई अर्थ नहीं। इसी तरह क्या कभी आप यह दलील देंगे कि जिस आदमीने बदचलनीका मज़ा चखा है, वह उस आदमी के मुक़ाबले सदाचारके ज़्यादा नज़दीक है, जिसने कभी उस रास्ते पैर नहीं रक्खा? क्योंकि आख़िर हिंसावाली आपकी दलीलका यही मतलब निकलता है।"

इसके बाद चर्चाका रुख़ बदला और लुक-छिपकर या पोशीदगीके साथ काम करनेकी बात चली। उन मित्रकी दलील यह थी कि किसीके अकेले लुक-छिपकर काम करनेसे डरपोकपन बढ़ता है और इसलिए वह बुरी चीज़ है, लेकिन अगर इसी चीज़को संगठित रूपसे किया जाय, तो वह ज़रूर उपयोगी साबित हो।

"अगर आदमी हिम्मतके साथ अपनी करतूतोंका फल भोगनेको तैयार हो, तो उसके कामको पोशीदा या गुप्त कैसे कहा जा सकता है? जो पोशीदगी वह रखता है, सो तो उसके अपने ध्येयको पूरा करनेके लिए ही होती है। और बादमें उसपर मुक़दमा चलनेकी हालतमें उसे जो सवाल पूछे जाते हैं, उनका जवाब देनेसे वह इनकार करता है, इसलिए उसे झूठा इक़रार करनेकी ज़रूरत भी नहीं पड़ती।"

लेकिन गांधीजी टस-से-मस न हुए। बोले: "गुप्तदल कितना ही बड़ा क्यों न हो, कोई लाभ नहीं पहुँचा सकता। इस गुप्तताका हेतु क्या है? इसके ज़रिये आप अपने आस-पास बचावकी एक दीवार खड़ी कर लेना चाहते हैं। अहिंसामें इस तरहके तमाम बचावोंका विचार तक नहीं किया जाता। उसका प्रयोग खुले आम होता है और उसमें बड़े-से-बड़े ख़तरेका, जिसकी कि कल्पनाकी जा सकती है, खुली छातीसे सामना किया जाता है। हमारा देश बहुत बड़ा है। सदियोंसे वह ऐसे ज़ुल्मोंका शिकार रहता आया है, जिनका बयान नहीं किया जा सकता। ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशके करोड़ों लोगोंको हमें कुछ करनेके लिए संगठित करना है। सत्यमय और प्रकट साधनोंको छोड़कर दूसरे किन्हीं साधनोंसे इन लोगोंको संगठित नहीं किया जा सकता। अपनी जवानीसे लेकर आज इस छिहत्तर बरसकी उमरके बीच मैंने कभी पोशीदगी या गुप्तताको पसंद नहीं किया — मुझे उससे चिढ़ है। आदर्शको कभी शिथिल नहीं किया जा सकता। खुले आम काम करनेकी अपनी मूल कल्पना पर हम आग्रहके साथ डटे न रहे, तो ज़रा भी आगे न बढ़ पायेंगे।

"मैं जानता हूँ कि हम अपने आदर्शको पूरी तरह अमलमें नहीं ला सके। अक्सर हम ठीक-ठीक पीछे हटे हैं। हमारे हथियार कम अधकचरे होते, तो हम अपने ध्येयके ज़्यादा नज़दीक पहुँचे होते। हमने अपने आदर्शको कितना ही ढीला क्यों न किया हो, फिर भी अहिंसाने हमारे करोड़ों बेज़बान लोगोंके बीच चुपचाप खमीर का-सा काम किया है। इसका यह मतलब नहीं कि हमें हमेशाके लिए इस तरह अपूर्ण रहना पुसायेगा। हम एक जगह खड़े रहकर रुक नहीं सकते। हमें आगे बढ़ना ही होगा, वरना पीछे हटना पड़ेगा।"

इस पर उन मित्रने पूछा: "तो क्या आपका यह खयाल है कि अगस्तकी क्रान्तिसे पूर्ण स्वराज्यकी हमारी लड़ाईको धक्का पहुँचा है? वह पीछे हटी है? उस क्रान्तिमें हमारे लोगोंने जिस वीरताका परिचय दिया, जो बहादुरी दिखाई, क्या वह सब बेकार हुई?"

गांधीजीने कहा: "नहीं, मैं ऐसा नहीं कहता। आप देखेंगे कि अपना इतिहास बनानेके सिलसिलेमें देश हर तरहकी लड़ाईके ज़रिये आज़ादीकी ओर आगे बढ़ता है; और १९४२ के अगस्तमें जो प्रचंड तूफ़ान उठा, उसकी वजहसे भी देश तो आगे ही बढ़ा है। मैंने तो सिर्फ़ यही कहा कि अगर हमने मेरी व्याख्यावाली अहिंसक बहादुरी दिखाई होती, तो हम इससे भी कहीं आगे बढ़ गये होते। इस हिसाबसे तो तोड़फोड़की तहरीकसे आज़ादीकी दिशामें देशकी चालको धक्का ही पहुँचा है। जयप्रकाशनारायण-जैसे लोगोंकी हिम्मत, देशभक्ति, और त्यागभावनाके लिए मेरे दिलमें बड़ी इज्ज़त है, मगर जयप्रकाश मेरे आदर्शके नमूने नहीं। अगर बहादुरीका तमग़ा देना हो, तो मैं जयप्रकाशको न दूँगा, बल्कि उनकी पत्नी प्रभावतीको दूँगा, क्योंकि वह सरल है, राजनीतिके विषयमें उसका कोई दखल नहीं, फिर भी वह अपने-आपमें सत्याग्रहके शुद्ध सामर्थ्यको प्रकट करती है, और उस सामर्थ्यके आगे ख़ुद जयप्रकाशको भी झुकना पड़ता है। अगस्तके प्रचण्ड आन्दोलनके बारेमें मैंने जो कहा है, सो बीती बातोंको न्यायकी तराज़ू पर तौलकर फ़ैसला देनेके खयालसे नहीं कहा, — उस आन्दोलनकी निन्दा करनेसे मैंने बराबर इनकार किया है — बल्कि महज़ आगेकी रहनुमाईके खयालसे कहा है।"

आख़िर उन मित्रने कहा: "हमारी जनताको अहिंसामें श्रद्धा है, लेकिन वह नहीं जानती कि अपनी श्रद्धाको प्राणवान बनाकर उसे फलवती कैसे बनाया जाय। उसकी इस निष्फलताका कारण क्या है?"

गांधीजीने जवाब दिया: "इन पिछले सारे कठिन वर्षोंमें मैं लोगोंको एक ही बात फिर-फिर कहता रहा हूँ, जिससे वे इतना तो समझ गये हैं कि अहिंसामें एक छिपी हुई शक्ति मौजूद है; लेकिन उन्होंने अभी उसकी सम्पूर्ण शोभाका दर्शन नहीं किया। अहिंसाकी शक्तिको पुरअसर तरीक़ेसे संगठित करनेके लिए जो भी क़दम उठाये गये, अगर लोगोंने उन सबको अच्छी तरह अपनाया होता, और अठारह मुद्दोंवाले रचनात्मक कार्यक्रम पर पूरी तरह अमल किया होता, तो हमारा काम बहुत पहले हमें अपनी मंज़िल तक पहुँचा चुका होता। लेकिन रचनात्मक कामके विषयमें हमारी श्रद्धा इस हद तक कमज़ोर रही है, और इसीलिए हमारे दिलमें यह उलझन पैदा हुई है। लेकिन मैं यह भी भलीभाँति जानता हूँ कि कठिनाइयोंकी परवाह किये बिना हमें आगेका अपना रास्ता ढूँढ़ना ही होगा।"

मदुरा जाते हुए रेलमें,
शनिवार, २-२-'४६ ('हरिजन'से)

प्यारेलाल

प्रदर्शनी कैसी हो?

कांग्रेसका अधिवेशन दो तीन मासमें होनेका संभव है, इसलिए सामान्यतः यह प्रश्न उठता है कि देहाती दृष्टिसे उसे कैसा होना चाहिये? देहाती दृष्टि ही हिन्दुस्तानमें सही हो सकती है — अगर हम चाहते और मानते हैं कि देहातोंको जीना ही नहीं, बल्कि मज़बूत और समृद्ध बनना है। अगर यह सही है, तो हमारी प्रदर्शनीमें शहरी चीज़ोंको और आडम्बर व जाहोजलालीको स्थान नहीं हो सकता है। शहरमें जो खेल-तमाशे होते हैं उनकी ज़रूरत नहीं होनी चाहिये। प्रदर्शनी किसी हालतमें न तमाशा बननी चाहिये, न पैसे-पैदा करनेका साधन; व्यापारियोंके लिए ज़ाहिर खबरके लिए तो कभी नहीं। वहाँ बिक्रीका काम नहीं होना चाहिये। खादी तथा अन्य ग्रामोद्योगोंकी चीज़ें भी नहीं बेचनी चाहिये। प्रदर्शनीको शिक्षा पानेका स्थान बनना चाहिये, रोचक होना चाहिये, देहातियोंके लिए ऐसा होना चाहिये कि जिससे देहाती घर लौटकर कुछ-न-कुछ उद्योग सीखनेकी आवश्यकता समझने लगें। हिन्दुस्तानके सब देहातोंमें जो दोष हैं, उन्हें बतानेवाला तथा उन दोषोंको कैसे दूर किया जाय, यह बतानेवाला और ग्रामोंको आगे ले जानेकी प्रवृत्ति शुरू हुई तबसे आज तक क्या प्रगति हुई, सो बतानेवाला होना चाहिये। इस प्रदर्शनीको देहातका जीवन कलामय कैसे बन सकता है, सो भी बतानेवाला होना चाहिये।

अब देखें कि इन बातोंका पालन करनेवाली प्रदर्शनी कैसी होनी चाहिये।

१. दो देहातोंके नमूने होने चाहिये — एक देहात आज है ऐसा और दूसरा उसमें सुधार होनेके बादका। सुधरे देहातमें स्वच्छता होगी; घरकी, रास्तेकी, देहातके आस-पासकी और वहाँके खेतोंकी। पशुओंकी हालत भी बननी चाहिये। कौनसे धन्धे किस प्रकारसे आमदनी बढ़ाते हैं, इत्यादि बातें नक्शों, चित्रों व पुस्तकोंसे बताई जायँ।

२. सब तरहके देहाती उद्योग कैसे चलाये जायँ, उनके लिए औज़ार कहाँ मिलते हैं, वे कैसे बनाये जाते हैं, यह सब बताना चाहिये। सब तरहके उद्योगोंको चलते हुए बताया जाय। साथ-साथ निम्न लिखित वस्तुएँ भी बतानी चाहिये।

(अ) देहाती आदर्श ख़ुराक
(आ) यंत्रोद्योग और हाथ उद्योगका मुक़ाबला
(इ) पशुपालन-विद्याका पदार्थपाठ
(ई) पैखानोंका नमूना
(उ) कला विभाग
(ऊ) वनस्पति खाद विरुद्ध रासायनिक खाद
(ए) पशुकी खाल, हड्डी, इत्यादिका उपयोग
(ऐ) देहाती संगीत, देहाती वाद्य, देहाती नाट्यप्रयोग
(ओ) देहाती खेलकूद, देहाती अखाड़े व व्यायाम
(औ) नई तालीम
(अं) देहाती औषध
(अः) देहाती प्रसूतिगृह

आरम्भमें बताई हुई नीतिको खयालमें रखकर जो वृद्धि हो सकती है, सो की जाय। जो मैंने बताया है, उसे उदाहरण-स्वरूप माना जाय। इसमें मैंने चर्खेसे आरम्भ करके जितने देहाती उद्योग हैं, उन्हें जान-बूझ कर नहीं बताया है। इन सब उद्योगोंके सिवा प्रदर्शनी निकम्मी मानी जाय।

मद्रास जाते ट्रेनमें, मोहनदास करमचंद गांधी
२०-१-४६ ('खादी जगत'से)

नई किताबें

	मूल्य	डाकखर्च
गोसेवा — (गांधीजी)	१-८-०	०-५-०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी — (वनमाला परीख, सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

फरवरी १० १९४६

हिन्दुस्तानी बनाम अंग्रेज़ी

हिन्दुस्तानीसे किसी हिन्दवासीको नफ़रत कैसे हो सकती है? संस्कृतमयी भाषा चाहनेवाले डरते हैं कि हिन्दीको नुक़सान पहुँचेगा। उर्दू बोलनेवाले डरते हैं कि फ़ारसी-अरबीमयी उर्दूको। दोनोंका डर निकम्मा है। प्रचारसे भाषा नहीं फैलती। ऐसा होता तो 'वोलापुक' या 'एस्पेराण्टो'को जनतामें स्थान मिलता। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। चन्द लोगोंके आग्रहसे भी किसी भाषाको स्थान नहीं मिलता। लेकिन जो लोग शक्तिशाली, मेहनती, कलाशील, साहसिक, व्यापारी हैं, उनकी भाषा चलती है और पराक्रमी बनती है। प्रयत्न करना हमारा काम है। लोग जिसे अपनावेंगे, वही उनकी भाषा बन सकती है। गोकि अंग्रेज़ी तेजस्वी भाषा है, तो भी वह राष्ट्रभाषा तो बन ही नहीं सकती। अगर अंग्रेज़ोंका राज्य जब तक सूरज और चाँद हैं, तब तक रहनेवाला है, तो वह उनके अमलोंकी भाषा ज़रूर होगी, लेकिन आम-जनताकी कभी नहीं। और चूँकि अमलदार लोग राज्यकर्त्ता होंगे और तालीमका काम अंग्रेज़ोंके हाथमें रहेगा, इसलिए प्रान्तोंकी भाषा कंगाल बनती जायगी। स्वर्गीय लोकमान्यने एक दफ़ा कहा था कि अंग्रेज़ोंने प्रान्तीय भाषाकी सेवा की है। यह बात सच्ची थी। एक हद तक उनको यह करना था। लेकिन प्रान्तीय भाषाओंकी तरक़्क़ी करना उनका काम नहीं था, न वे कर सकते थे। यह काम तो लोकनायकोंका और लोगोंका ही है। अगर वे अपनी मातृभाषाको भूलें,— जैसे कि भूल रहे थे और आज भी कुछ भूल रहे हैं — तो लोग कंगाल रहेंगे।

अब तो हम जानते हैं कि अंग्रेज़ी राज्य अखण्डित नहीं। शायद इसी बरसमें वह ख़तम हो जायगा। वे ख़ुद यह कहते हैं, हम भी मानते हैं। ऐसी हालतमें हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके सिवा और कोई हो ही नहीं सकती।

आजकी हिन्दुस्तानीके दो रूप हैं: हिन्दी और उर्दू। हिन्दी नागरी लिपिमें लिखी जाती है; उर्दू, उर्दू लिपिमें। एकका सिंचन होता है संस्कृतसे, दूसरीका अरबी-फ़ारसीसे। इसलिए आज तो दोनोंको रहना है। दोनों मिलकर ही हिन्दुस्तानी बनेगी। आइन्दा उसकी क्या शकल होगी, हम नहीं जानते, न कोई कह सकता है। जाननेकी ज़रूरत ही नहीं। तेईस करोड़से अधिक लोग आज हिन्दुस्तानी बोलते हैं। जब आबादी तीस करोड़की थी, तब हिन्दुस्तानी भाषा बोलनेवालोंकी संख्या २३ करोड़ थी। अगर हम चालीस करोड़ हुए हैं, तो दोनों रूपोंमें बोलनेवाले अधिक होने चाहिये। सो कुछ भी हो, राष्ट्रभाषा इसीमें है। दोनों बहनोंको आपसमें झगड़ा नहीं करना है। मुक़ाबला तो अंग्रेज़ीसे है। उसमें मेहनत कम नहीं। हिन्दुस्तानीकी चढ़तीसे प्रान्तोंकी भाषाको बढ़ना ही है, क्योंकि हिन्दुस्तानी लोगोंकी भाषा है, मुट्ठीभर राज्यकर्त्ताओंकी नहीं। इस राष्ट्रभाषाके प्रचारके लिए मैं दक्षिण गया था। वहाँ कल तक हिन्दी ही इसका नाम रखा था। अब नाम हिन्दुस्तानी हुआ है। थोड़े ही महीनोंमें बहुतसे लड़के-लड़कियोंने दोनों लिपियाँ सीख ली हैं। उनको मैंने प्रमाणपत्र भी दिये। वहाँ भी खटका तो लिपिका नहीं, लेकिन अंग्रेज़ीका है। इसमें राज्यकर्त्ताओंका दोष भी नहीं। हम ही अंग्रेज़ीका मोह नहीं छोड़ते। यह मोह हिन्दुस्तानी-नगर में भी था। अब आशा रखी जाती है कि यह मिटेगा। कैसा भी हो, दक्षिणके प्रान्तोंमें काम ज़रूर हुआ है, लेकिन जिस जगह हमें पहुँचना है, उसे देखते हुए तो अभी और बहुत-कुछ करना होगा।

सेवाग्राम जाते हुए रेलमें, मोहनदास करमचंद गांधी
५-२-'४६

आश्चर्यजनक

पलनीसे लौटते हुए श्री राजाजी और श्री गोपालस्वामीके ख़िलाफ़ एक ख़त मुझे दिया गया। उसमें यह भी लिखा था कि ये दोनों मेरे पास उन लोगोंको नहीं आने देते, जिन्हें इनसे शिकायत है। मैं जानता हूँ कि यह सच नहीं। तो भी जो मुझसे महत्त्वकी बात करना या मुझे लिखना चाहे, उसे कोई भी रोक नहीं सकता। इस ख़तका मेरे पास पहुँचना ही यह साबित करता है। श्री कामराज नादार मेरे साथ स्पेशल रेलमें थे। पलनीके मंदिरमें भी वे मेरे साथ रहे। लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि सफ़रमें राजाजी और गोपालस्वामी मेरे बहुत ही नज़दीक थे। सफ़रका इन्तज़ाम उन्हींने किया था। राजाजी मेरे सबसे पुराने मित्रोंमेंसे हैं। और कहा जाता था कि अपने जीवनमें मेरे आदर्शोंका पालन वे ही सबसे बढ़कर करते थे। मैं जानता हूँ कि १९४२में उनका मुझसे मतभेद हुआ। मेरे दिलमें उनके लिए इस बातका आदर है कि उन्होंने खुली सभामें मेरा विरोध किया। वे बड़े सामज-सुधारक हैं, और जो मानते हैं, उसे निडर होकर करते हैं। उनकी दयानतदारी और सियासी दानाईसे कोई इनकार नहीं कर सकता। इसलिए दुःखकी बात है कि उनके खिलाफ़ आज एक गुट बन गया है, और मद्रासके कांग्रेसी हलक़ोंमें इस गुटका असर है। लेकिन आमजनताका प्रेम राजाजीके साथ है। मैं इतना मूर्ख या इतना घमंडी नहीं हूँ कि यह न समझ पाऊँ कि यात्राके रास्तेमें दर्शनके लिए जो जनता लाखोंकी संख्यामें जमा हुई थी उसका कारण बहुत हद तक राजाजीका प्रभाव ही था। दक्षिणदेशके कांग्रेसी वही करें, जो उनकी रायमें ठीक हो; लेकिन मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि उन्हें चेतावनी दूँ कि वे राजाजीकी सेवाको इस वक़्त हाथसे जाने न दें, क्योंकि दूसरा कोई उनकी तरह उसे कर नहीं सकेगा।

वर्धा जाते हुए,
५-२-'४६

आज सुबह ५॥ बजे बैजवाड़ा पहुँचनेसे पहले इतना मैं लिख चुका था। वहाँ मुझे श्री ए० सुब्रह्मण्यम्‌की ओरसे नीचे लिखा पत्र दिया गया:

"आन्ध्र देशमें ग़लतफ़हमी यह फैली हुई है कि आपका मद्रासमें आगमन श्री राजगोपालाचार्यजीको प्रधानमंत्री बनानेके लिए हुआ है। कांग्रेसके कार्यकर्त्ता भी इस तरहका प्रचार कर रहे हैं। इसी बातको लेकर तेलुगुकी कई छोटी-मोटी पत्रिकाओंने हिंदुस्तानीके ख़िलाफ़ भी लिख दिया है। इस पर आप अपनी राय जाहिर करनेकी कृपा करें।

ए० सुब्रह्मण्यम्"

मेरे लिए जवाब देना लाज़िमी हो गया। मैंने लोगोंको बताया कि मैं दक्षिणदेशमें केवल हिन्दी-प्रचार-सभाकी रजत-जयन्ती मनानेके लिए आया था; बीचमें मदुरा और पलनीकी यात्रा भी शामिल हो गई। मद्रासका आना तो मेरे जेलसे अचानक छूटनेके बाद ही तय हो गया था। उस समय कांग्रेसके धारासभावाले कामका तो किसीको स्वप्न भी नहीं था। मेरे मद्रास आनेका राजाजीको प्रधानमंत्री बनानेके साथ ज़रा भी संबंध नहीं। मेरे जीवनमें तो कोई गुप्तता है ही नहीं। यदि मैं राय देना चाहूँ, तो खुल्लमखुल्ला देता हूँ। लेकिन चूँकि मुझे चुनावोंमें और मंत्रीपदमें कोई दिलचस्पी नहीं, इसलिए मैंने इस मामलेमें लोगोंको राय देनेसे इनकार किया। मगर अब चूँकि मुझसे पूछा जा रहा है, तो मैं बिना संकोचके यह कहता हूँ कि दक्षिण-देशमें प्रधानपदके लिए राजाजी-जैसा और कोई व्यक्ति नहीं। और अगर मेरे हाथमें इस गद्दीका देना हो, तो यह काम मैं उन्हींके सिपुर्द करूँ, बशर्ते कि ख़ुद अपने लिए न रक्खूँ। लेकिन यह इख़्तियार मेरा नहीं। प्रांतीय कांग्रेस-कमिटीका और आख़िर वर्किंग कमिटीका यह काम है। मेरी राय तो व्यक्तिगत ही हो सकती है, और उसका वैसा ही वज़न पड़ना चाहिये।

बैजवाड़ाके बाद वर्धा जाते हुए, ५-२-'४६
('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदुराका सबक़

मदुरामें लोगोंकी भीड़ पाँच लाखसे कम तो नहीं थी, मुमकिन है कि वे छह लाख भी रहे हों। जहाँ तक नज़र पहुँचती थी, लोगोंके चेहरे ही चेहरे दिखाई देते थे। असलमें वह एक उमड़ता मानवसागर ही था। घुड़-दौड़के मैदानके लम्बे रास्ते पर लोगोंका ताँता-सा लगा था, जो प्रार्थनाके मैदानवाली भीड़को बढ़ानेवाला था। लोग, जितना जिससे बनता था, आगे धँसे आ रहे थे। मुझे शक है कि जो लोग बिलकुल छोर पर थे, वे मुझे देख भी सकते थे, मुझको या किसी औरको सुन सकना तो दूरकी बात है; गोकि लाउडस्पीकरका इन्तज़ाम अच्छा था और मंच भी काफ़ी ऊँचा बना था। स्वयं-सेवकोंको ऐसी विशाल भीड़का प्रबन्ध करनेकी आदत नहीं थी। लोग दूर-दूरके उन गाँवोंसे आये थे, जहाँ कांग्रेसवालोंने कभी कुछ किया भी हो, तो भी लगकर काम नहीं किया था। ऐसी हालतमें शोर और ग़ुल और धक्कमधुक्की तो लाज़िमी ही थी। तिस पर भीड़को मुझ-जैसे सत्याग्रहीसे काम पड़ा था। लेकिन वहाँ पहली बार मेरा सत्याग्रह असफल हुआ। लोगोंका तो असफल होने ही वाला था। जब तक मैं निश्चेष्ट बैठा रहा, लोगोंने काफ़ी धीरज रक्खी। मेरे सामने और अगल-बग़लका विशाल मानव-समूह बिलकुल चुपचाप और बिना हिले-डुले बैठा था, हालाँकि पीछेसे काफ़ी दबाव आ रहा था। लेकिन मंचके पिछले भागमें लोगोंका चिल्लाना और धक्कमधुक्की करना बराबर ज़ारी रहा। मैंने मंच खाली करा दिया और अपने साथकी बहनोंसे कहा कि वे घर चली जायँ। सिर्फ़ राजाजी, कनु गांधी और रामकृष्ण बजाज ही मेरे साथ रहे। रामकृष्णने कहा: "रास्ता साफ़ है, चलिये।" लेकिन ज्योंही मैं लोगोंको दिखाई पड़ा, उनमें हलचल मच गई। मैंने अपने सामने और अगल-बग़ल बैठे लोगोंको समझाते हुए कहा कि वे चले जायँ, क्योंकि मैं भाषण नहीं करूँगा। वे चुप तो हो गये, मगर जानेको तैयार न हुए। इसलिए मैंने सोचा कि मैं उस रात तब तक वहीं आराम करूँगा, जब तक कि लोगोंकी भीड़ छँट न जाय या मेरे लिए रास्ता न करने दे। इसी बीच मुझे ललचानेके लिए कनु गांधी फिर आ गये और बोले कि लोग मेरे लिए रास्ता कर देंगे और मुझे जाने देंगे। मोटर लोगोंकी भीड़से कुछ दूरी पर मेरे लिए खड़ी रहेगी। उस वक़्त मुझमें कुछ कमज़ोरी आ गई और मैं राज़ी हो गया। वहाँ रक्खी हुई मज़बूत निसैनीकी कुछ ही सीढ़ियाँ मैं उतरा था कि फिर लोगोंकी आगे धँसती और हल्ला मचाती भीड़ मेरे सामने आ गई, गोकि इस बार वह पहलेसे काफ़ी कम थी। लोगोंकी जैसी शान्त और सुव्यवस्थित भीड़में से मैं जाना चाहता था, और जिसके लिए मैं उन्हें समझा रहा था, वैसी वह नहीं थी। और उसमेंसे गुज़रना खतरेसे खाली नहीं था। मगर वह तूफ़ानियोंकी भीड़ तो हरगिज़ नहीं थी। जिस मूर्तिकी ओर वे धँसे आ रहे थे, उसके प्रति अपनी प्रीतिको प्रकट करनेका एक ही तरीक़ा वे जानते थे—शोरो.ग़ुलके साथ धक्कामुक्की करते हुए आगे बढ़ना। उनके सामने उन्हींकी-सी मिट्टीका बना जीता-जागता पुतला खड़ा था। और उस पुतलेमें यह शक्ति नहीं थी कि वह उनके शोरो.ग़ुलवाले दिखावेकी क़द्र करे—उसे यह पसन्द भी नहीं था। लेकिन मैं एक अधीर और अयोग्य शिक्षक साबित हुआ। अगर मैंने सब्रसे काम लिया होता, तो मैं मानता हूँ कि मदुराकी इस भीड़ने शान्त और समझदारीसे भरे प्रेमकी क़ीमतको पहचाना होता और शायद स्वराज्यके लिए ज़रूरी अनुशासन या निज़ामको भी माना होता। आगे कभी ऐसा मौक़ा आया, तो मुझसे फिर ऐसी ग़लती न होगी। जो भी हो, यह पूछा जा सकता है कि पलनीमें लोगोंने जिस नमूनेदार बरतावका परिचय दिया, वह पिछली रातके मदुरावाले अधूरे सबक़का ही नतीजा तो न था? हर हालतमें इस घटनाके लिए न तो कोई क़सूरवार है, और न किसीको इसके लिए शरमिन्दा होनेकी ज़रूरत है।

सेवाग्राम जाते हुए, ५-२-'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

पलनी-यात्रा

पलनीमें शामकी प्रार्थना मन्दिरकी छायामें हुई। विशाल सभा पूरी तरह शान्त थी। किसी क़िस्मकी आवाज़ न थी। मैंने इस मौक़ेका उपयोग करके जनताको अस्पृश्यता-निवारणका अर्थ समझाया। यह काम अस्पृश्योंके स्पर्शसे शुरू होता है, मगर वहीं खतम नहीं हो सकता। एक ब्राह्मण विद्वान् होते हुए भी बुरा आदमी हो सकता है। उसे ब्राह्मण कहना भारी भूल होगी। ब्राह्मण वह है, जो ब्रह्मको जानता है। मनुष्यको बनानेवाला उसका अपना चरित्र होता है, धन्धा नहीं। समाजमें जो स्थान ब्राह्मणका है, वही भंगीका भी है, या होना चाहिये। दूसरी शक्ति समान हो, तो कोई वजह नहीं कि क्यों एक भंगी मौलाना अबुल कलाम आज़ादके मानिंद कांग्रेसकी कुर्सीको सुशोभित नहीं कर सकता। एक भंगीको, भंगीका काम करते हुए, महासभाके सदरकी कुर्सी पर बैठते देख कर मुझे अपार आनन्द होगा।

अस्पृश्यताका घाव इतना गहरा चला गया है कि उसका ज़हर हमारे जीवनकी रग-रगमें घुस गया है। ब्राह्मण-अब्राह्मणके भेदभावकी और अलग-अलग प्रान्तों व अलग-अलग धर्मोंके बीच के भेदभावकी जड़ अस्पृश्यतामें रही है। अस्पृश्यताका यह ज़हर क्यों रहना चाहिये? हम सब भारतमाताके बच्चे हैं। हम सारे हिन्दुस्तानको अपना कुनबा क्यों न मानें? और दर असल तो सारी मनुष्य जाति हमारा कुटुम्ब है। क्या हम सब एक ही वृक्षकी शाखायें नहीं हैं?

जब छुआछूत जड़-मूलसे नष्ट हो जायगी, ये सारे भेदभाव अपने आप मिट जायँगे; और कोई अपने आपको दूसरोंसे ऊँचा नहीं समझेगा। इसका सीधा नतीजा यह होगा कि ग़रीबों और दलितोंका शोषण भी बन्द हो जायगा, और चारों तरफ़ परस्पर प्रेम और सहयोग देखनेमें आवेगा।

अस्पृश्यताकी बात पूरी करके मैंने लोगोंको यात्राकी बात सुनाई। संचालकोंको डर था कि अगर जनताने मेरे साथ पलनी मंदिर पर चढ़नेका आग्रह किया, तो मैं ऊपर नहीं जा सकूँगा। ६००से अधिक सीढ़ियाँ थीं। मुझे कुर्सी पर बैठकर चढ़ना था। जगह इतनी न थी कि बड़ी संख्यामें लोग भी चढ़ें। सो मैंने विचार किया कि मैं नीचेसे ही दर्शन करके संतोष मानूँगा।

जनता यह न समझे कि मैं पत्थरकी या सोने-चाँदीकी मूर्तिमें किसी तरहका विश्वास रखता हूँ। मूर्तिको भक्त जैसी बनाता है, वैसी वह बन जाती है। जब तक हरिजनोंको मन्दिरोंमें जानेकी इजाज़त न थी, मेरे लिए वे मूर्तियाँ निष्प्राण थीं। मैं पहले भी मदुराके मीनाक्षी मन्दिरके सामनेसे गुज़र चुका था। मगर जब तक हरिजन वहाँ नहीं जा सकते थे, मैंने कभी भीतर जानेकी इच्छा तक न की। मैं तो भंगी होनेका दावा करता हूँ। जिनमें भंगी न जा सकें, ऐसे मन्दिरोंमें जानेकी इच्छा मैं कैसे कर सकता था? मेरा यह भी विश्वास है कि हिन्दुस्तानके देव उसके मैदानोंमें हैं, जहाँ करोड़ों हिन्दुस्तानी रहते हैं। हिमालय पर कितने लोग पहुँच सकते हैं? पलनी पर कुछ ज़्यादा पहुँचते होंगे, मगर ४० करोड़ तो वहाँ भी नहीं पहुँच सकते। मैं तो करोड़ोंमेंसे एक हूँ। वहीं रहना चाहूँगा।

मुझे यह भी यक़ीन था कि पहाड़ीके नीचेसे मेरी प्रार्थना शायद मन्दिर में बैठे हुए कुछ लोगोंकी प्रार्थनासे अधिक अच्छी तरह सुनी जायगी। देव तो मनुष्यके हृदय को पहचानते हैं। उसीकी वे परवाह करते हैं। उनके लिए बाहरका दिखावा, अगर वह भीतरका प्रतिबिम्ब न हो, कोई अर्थ नहीं रखता। मेरे लिए यह जान लेना बस था कि मेरे हरिजन भाई दूसरे हिन्दुओंकी तरह पलनीके मन्दिरमें जा सकते थे।

मगर करोड़ोंके लिए इस सारी ज्ञानवार्ताको समझना कठिन था। उन्हें कहा गया था कि मैं ऊपर चढ़ूँगा। मेरे न जानेसे उनके मनमें अनेक तरहकी अमंगलसूचक शंकायें पैदा हो सकती थीं। प्रार्थनामें जनताकी शान्तिको देखकर मुझे आशा बँधी कि शायद मैं निश्चित किये हुए कार्यक्रमको पूरा कर सकूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषण छह बजे पूरा हुआ। आठ बजे मैंने पाया कि मैं ऊपर चढ़ सकता हूँ। पहाड़ीके नीचे बहुत लोग इकट्ठा हो गये थे। मगर किसीने मेरे और राजाजीके साथ ऊपर चढ़नेका आग्रह नहीं किया। हमें कुर्सियोंमें बिठाकर ऊपर ले जाया गया। यात्रा सफल हुई।

मगर एक चिड़ियाके आनेसे वसन्त ऋतु तो नहीं आ जाती। इस एक प्रसङ्गसे कोई निश्चयात्मक परिणाम नहीं निकाला जा सकता। तो भी मैं इसमेंसे यह आश्वासन लिये लेता हूँ कि हिन्दुस्तानके स्वराज्यके लिए यह-शुभ सूचक है।

इसी लेखमें साउथ इण्डिया रेलवे का और उसके कर्मचारियोंका आभार मान लेना भी ठीक होगा। उन्होंने मेरी यात्राको सुविधाजनक और जितनी हो सके उतनी आरामदेह बनानेकी भरसक कोशिश की है।

पलनीसे मद्रास जाते हुए गाड़ीमें,
४–२–'४६ ('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

कुछ हरिजन-कार्यके बारेमें

१. अपनी परम्परा और नीतिके प्रति सच्चा रहकर हरिजन-सेवक-संघने, मित्रोंकी प्रार्थनाओंके बावजूद, परिगणित जातियोंके लिए सुरक्षित रक्खी गई जगहोंके बारेमें कांग्रेसके पार्लमेण्टरी बोर्डको उम्मीदवारोंके नाम सुझानेके काममें दखल देनेसे बराबर इनकार किया है। संघका अपना खयाल है कि राजनीतिमें पड़कर वह जाति-जातिके बीचकी वर्तमान प्रतिस्पर्द्धाको और बढ़ायेगा ही। रचनात्मक काम ही संघकी एकमात्र चिन्ताका विषय है, जिसमें शिक्षा-सम्बन्धी प्रगति और सब तरहकी सामाजिक अयोग्यताओंको मिटाना शामिल है।

२. गढ़वालके हरिजन अपने दूल्हा-दुलहिनको डोला-पालकीमें बैठाकर आम रास्तोंसे नहीं ले जा सकते; यह एक बिलकुल अन्यायपूर्ण रिवाज है, जो आज भी वहाँ मौजूद है। फिर भी यह लिखते हुए खुशी होती है कि हाल ही मजिस्ट्रेटोंने एक हरिजन बारातको लूटनेके सिलसिलेमें सवर्ण हिन्दुओंको सज़ायें दी हैं। एक मामलेमें छहसे आठ महीनोंकी सख्त सज़ा और जुर्माना हुआ है और दूसरेमें हरएकको ६१) रु० जुर्मानेकी सज़ा हुई है।

३. जब काठियावाड़के गाँवोंमें हैज़ा फ़ैलता है, तो भंगियों पर अक्सर यह इलज़ाम लगाया जाता है कि उन्होंने बुरे मंत्रोंका प्रयोग करके हैज़ा फैलाया है, और इसलिए उनके साथ बुरा बरताव किया जाता है। कभी-कभी जब तक बीमारी दूर नहीं होती, उन्हें गाँव छोड़ परगाँव चला जाना पड़ता है।

इस निर्दय व्यवहारके बिलकुल विपरीत अबकी वहाँसे यह उत्साहजनक समाचार मिला कि पिछली गांधी-जयन्ती पर हरिजनों और ग़ैरहरिजनोंने एक साथ बैठकर भोजन किया।

४. दुःखकी बात है कि बड़े-बड़े शहरोंमें भी भंगी सामूहिक रूपसे असंगठित हैं, और यही वजह है कि कॉर्पोरेशनों द्वारा उनका शोषण होता रहता है। हड़ताल ही एक ऐसा साधन है, जिसके ज़रिये वे अपनी मज़दूरी बढ़वा सकते हैं। कलकत्तेमें काफ़ी परेशानीके बाद अभी-अभी भंगियोंकी तनख्वाह १५) माहवार की गई है। छोटे क़स्बों और म्युनिसिपैलिटियोंमें तो उनकी तनख्वाह बहुत ही क़लील है; कहीं-कहीं उन्हें सिर्फ़ ७) महीना मिलता है, और हर महीने २) से ५) तकका महँगाई भत्ता। जहाँ तक उनके रहनेके मकानोंका ताल्लुक़ है, कलकत्ते और मद्रास जैसे शहरोंमें भी हालत इतनी खराब है कि उसे 'शर्मनाक' कहना भी काफ़ी नहीं है। चूँकि शहरोंमें संतोषके साथ सफ़ाईका काम करनेवाले लोगोंकी एक फ़ौज की फ़ौज ज़रूरी है, इसलिए गटरों और नालियोंके प्रबंधकी तरह ही अपने नौकरोंके लिए अच्छे-भले और बिना किरायेके मकानोंका इन्तज़ाम करना म्युनिसिपल अर्थव्यवस्थाका पहला काम होना चाहिये।

५. हिन्दुस्तानमें बघेलखण्डकी रियासतोंका प्रदेश एक ऐसा प्रदेश है, जिसे बहुत कम लोग जानते हैं। ये रियासतें रेलकी सड़कोंसे बहुत दूर हैं और इनमें बहुत ही पिछड़े हुए लोग रहते हैं। इन्दौरके प्रोफ़ेसर श्री र० के० यार्दने रीवाँके श्री अवध बिहारीलालकी सहायतासे वहाँ अभी कोई एक साल पहले ही हरिजनोंके उत्थानका काम शुरू किया है। नागन्द, मैहियर और अजयगढ़के राजाओंने राज्यके मन्दिर हरिजनोंके लिए खोल दिये हैं और उनमें उत्थानका काम करनेके लिए कुछ रक़में भी अलगसे निकाली हैं। इन पिछड़े हुए प्रदेशोंमें यह एक अच्छा — स्वागत योग्य — काम शुरू हुआ है।

६. चूँकि हरिजन कन्याओंकी शिक्षाका प्रश्न एक प्राथमिक महत्त्वका प्रश्न है, इसलिए हर जगह कन्या-छात्रावास खोलना बहुत ज़रूरी है। धूलिया (महाराष्ट्र), साबरमती (गुजरात), मदुरा, तामिलनाड़के दो अन्य स्थान, देवकोट्टाई और त्रीची, इलाहाबाद, बैज़वाड़ा, एल्लोर, और गुन्तूर (आंध्र), कालीकट (मलाबार) और दूसरी कुछ जगहोंमें ऐसे छात्रावास मौजूद हैं। इन सबको संघके केन्द्रीय दफ़्तरसे सहायता दी जाती है। गुन्तूरमें एक हरिजन बहन स्वयं ऐसा एक छात्रावास बड़ी दिक़्क़तोंके साथ चला रही हैं। अपने छात्रावासका खर्च चलानेके लिए इस बहादुर बहनने अपनी ज़मीनका कुछ हिस्सा तक बेच डाला है। गुन्तूरके मित्रोंको चाहिये कि वे इन बहनको उनके इस काममें मदद पहुँचायें।

मदुरा जाते हुए रेलमें, अमृतलाल वि० ठक्कर
२–२–'४६ ('हरिजन'से)

अहिंसा और औरतों पर सितम

दिसम्बर, १९४५की २९ तारीखकी रातको गांधीजी महिषादलसे और उसके आस-पासके गाँवोंसे आये हुए क़रीब २०० भाई-बहनोंसे मिले। इनमें वहाँके काम करनेवाले और १९४२की लड़ाई के दरमियान पुलिस और फ़ौजवालोंके हाथों सताये गये लोग शामिल थे। गांधीजीने उनसे सवाल पूछनेको कहा। पहला सवाल यह पूछा गया कि जब हमारी माँ-बहनोंकी लाज लूटी जाती हो, क्या तब भी हमें अहिंसक रहना चाहिये? स्वराज्यके लिए यातनायें सहना उन्हें मंज़ूर था। वे यह भी मानते थे कि अहिंसाके रास्तेसे ज़रा भी हटनेसे स्वराज्यके आनेमें देर लगेगी। तो फिर जब हमारी माँ-बहनें सताई जायँ, हम क्या करें? यह उनका सवाल था।

जवाबमें गांधीजीने कहा कि सन् १९२० और १९२१में भी मुझसे यही सवाल पूछा गया था और उस वक़्त मैंने जो जवाब दिया था उसीको मैं यहाँ फिर दोहरा सकता हूँ। यह सवाल मेरी कल्पनाकी अहिंसा और स्वराज्यके बारेमें लोगोंके अज्ञानको प्रकट करता है। बहनोंकी आबरू खोकर मैं स्वराज्य नहीं चाहता। जो चीज़ अहिंसाके नामसे चलती है, अगर वह आपको बहनोंकी इज़्ज़त व आबरू बचानेकी ताक़त नहीं देती, या खुद बहनोंको इस लायक़ नहीं बनाती कि वे अपनी इज़्ज़त खुद बचा लें, तो वह अहिंसा नहीं है। सचमुच, वह कोई और ही चीज़ है। और फिर गांधीजीने बताया कि १९०९में उन्होंने इस बारेमें 'हिन्द-स्वराज्य'में क्या लिखा था। पाठकोंको मेरी सलाह है कि वे 'हिन्द-स्वराज्य'के सत्याग्रहवाले अध्यायको, जिसमें गांधीजीने इस विषयकी चर्चा की है, पढ़ जायँ। गांधीजीने कहा कि अनुभवने उनकी उस समयकी दलीलोंको ज़्यादा ज़ोरदार बनाया है। वे बोले: "कहिये, सीताको रावणसे किसने बचाया? कवि हमसे कहता है कि सीताकी पवित्रता इतनी ज़बरदस्त थी कि बिना उसकी स्वीकृतिके रावणकी हिम्मत ही न हुई कि वह अपने मनकी कर ले।"

आख़िर गांधीजीने सबको चेतावनी देते हुए कहा कि अगर आप मेरे पास यह कहते हुए आते हैं कि चूँकि आप अहिंसाकी प्रतिज्ञा कर चुके थे, इसलिए अपनी बहनों की रक्षा न कर सके, तो मैं आपको अपने सामने खड़ा न रहने दूँगा। अहिंसा को कायरता की ढाल तो हरगिज़ न बनाना चाहिये। वह तो बहादुरों का हथियार है। ऐसे ज़ुल्मों या अत्याचारों को बेबसी के साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते रहने की अपेक्षा तो मैं यह ज़्यादा पसंद करूँगा कि आप हिंसक तरीक़े से लड़ते-लड़ते मर मिटें। सच्चा अहिंसक पुरुष ऐसे अत्याचारों की कहानी कहने को कभी ज़िन्दा न रहेगा। वह तो अहिंसक तरीक़े से जूझता हुआ अपनी जान पर खेल चुका होगा — मर मिटा होगा।

गांधीजीकी सीमाप्रान्तवाली यात्रामें .ख़ुदाई खिदमतगारोंने उनसे ऐसे ही कुछ सवाल पूछे थे, जिनके जवाबकी याद इस समय मुझे इस सिलसिलेमें आ रही है। महिषादलवालोंको गांधीजीने जो जवाब दिया, वैसे ही एक जवाबको सुननेके बाद .ख़ुदाई खिदमतगारों ने गांधीजीसे पूछा था: "अगर कोई ज़ालिम आपको मार डालनेके बजाय बाँध रक्खे और इस तरह आपको अपने .ज़ुल्म व सितमको चुपचाप देखनेके लिए मजबूर करे, तो क्या हो?" इसके जवाबमें गांधीजी ने कहा था: "मैं अपनेसे इस क़दर जूझूँगा कि या तो मेरे बंधन टूट जायँ या उन्हें तोड़नेकी कोशिशमें मैं ढेर होकर पड़ जाऊँ। किसी भी हालतमें मैं अत्याचारका विवश साक्षी तो नहीं ही रहूँगा। जहाँ भावना इतनी तीव्र हो उठती है, वहाँ भगवान् भी हमारी मददको दौड़ा आता है और हमें ऐसे अत्याचारको जीते जी देखनेकी वेदनामेंसे किसी-न-किसी तरह बचा लेता है।"

महिषादल, सु० न०

शनिवार, २९-१२-'४५

('हरिजन'से)

क्या हम गिर रहे हैं?

"हमारी संस्थामें लोगोंकी अपनी रुचि-अरुचियों, महत्त्वाकांक्षाओं और ईर्ष्याओंके लिए कोई जगह न होनी चाहिये। इसलिए मुझे यह देखकर बहुत दुःख होता है कि कांग्रेसवालोंमें आपसकी नापसंदगी, नफ़रत और बदला भँजानेकी भावना निजी जीवनमें और सार्वजनिक भाषणोंमें रोज़की चीज़ बन रही है, और इसलिए अनुशासनकी कमी और हुल्लड़बाज़ी बढ़ रही है।" एक बहनके लम्बे पत्रसे यह अवतरण दे रहा हूँ। उन्होंने तो इसकी कुछ मिसालें भी दी हैं, और अपनी बातको विस्तारसे समझाया है। लेकिन मैंने अपने मतलबके लिए जितना ज़रूरी था, उतना ही यहाँ लिया है। उनकी बातके हर शब्दका मैं दिलसे समर्थन करता हूँ। गोकि अखबार मैं आग्रहपूर्वक नहीं पढ़ता, तो भी मैं महसूस करता हूँ कि उनके अनुभवमें सचाई है। अब, जब कि ऐसा दीख रहा है कि हम अपने मालिक बननेवाले हैं, जिन बुराइयोंकी शिकायत की गई है, वे दूर होनी चाहिये और क्या घरमें और क्या बाहर, सब जगह, क्रोध, अनुशासनहीनता और ईर्ष्या-द्वेषके बदले शान्ति, कठोर अनुशासन, सहयोग और सद्भाव क़ायम होना चाहिये। अगर ऐसा न हुआ, तो स्वराज्यका यंत्र टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा और बहुत मुमकिन है कि हमारी आनेवाली सरकार, मौजूदा सरकारसे, जो बुरी और न सहने लायक है, बदतर बन जाय। जैसा कि मैंने महिषादलमें कहा था, वास्तविक स्वराज्यका तेज ऐसा होना चाहिये कि जिसे हिन्दुस्तानके करोड़ों अनपढ़ लोग भी महसूस कर सकें। उनको यह मालूम हो जाना चाहिये कि आजकलकी निरंकुश और ऑर्डिनन्सोंके बल पर चलनेवाली सरकारमें और स्वराज्यकी होगी, जो लोगोंकी रायसे चलनेवाली, व्यवस्थित और अहिंसक सरकार होगी, क्या खास फ़र्क़ है। मुझे आशा है कि जब लोगों पर सच्ची ज़िम्मेदारी आयद होगी और हिन्दुस्तानको अपने क़ब्ज़ेमें रखनेवाली विदेशी फ़ौजका घातक बोझ हट जायगा, तो हम अपने व्यवहारमें सहज, उदात्त और संयत बन जायँगे। अभी तो हम एक ऐसी हालतमें जी रहे हैं, जो बहुत ही बनावटी और अस्वाभाविक है। इससे हम जितनी जल्दी छूट जायँ, उतना ही हमारा, शासक सत्ताका और दुनियाका भला है। अतएव मैं इन बहनको और उनके-से विचार रखनेवालोंको यही कहूँगा कि वे अपने आचरणको कठोरतापूर्वक अपने विचारोंके अनुरूप बनायें, फिर चाहे वे मुट्ठीभर ही क्यों न हों।

मद्रास जाते हुए रेलमें, ४-२-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

पाठकोंसे

'हरिजन' फिर निकल रहा है। इतने सालोंसे कई विषयों पर मैं अपने विचार 'हरिजन'के मारफ़त प्रकट करता था। सन् १९४२में यह सोता सूख गया था, अब फिर बहने लगेगा। सच पूछा जाय तो सभी 'हरिजन' — हिन्दुस्तानी, गुजराती और अंग्रेज़ी — मेरे साप्ताहिक पत्र ही हैं। लेकिन अगर कहूँ कि गुजराती खास तौर पर ऐसा है, तो वह ग़लत न होगा। चूँकि वह मेरी मातृभाषा है, इसलिए उसमें मुझे खत लिखनेवालोंकी संख्या बहुत ज़्यादा है और मैं जवाब ज़्यादा आसानीसे और छूटसे दे सकता हूँ। इसलिए मैं गुजरातीमें ही लिखूँ और बाक़ी सब तरजुमा होकर ही छपे, तो मुझको कम मेहनत पड़े और मैं गुजराती 'हरिजन'को ज़्यादा सिंगार सकूँ।

लेकिन पकड़ा हुआ रास्ता झट छूट नहीं पाता, और मोह भी जाने-अनजाने अपना काम करता है। मुझे अंग्रेज़ी आती है। मेरी अंग्रेज़ी भाषामें कुछ आकर्षक है, यह मैं समझ गया हूँ, लेकिन वह क्या है, सो मैं नहीं जानता। यही बात हिन्दुस्तानीके बारेमें भी है, मगर कुछ कम अंशोंमें। बरसों पहले ब्रजकिशोरबाबूने मुझको इसका अनुभव कराया था। उस वक़्त मैं प्रान्तीय हिन्दी सम्मेलनका सभापति बनाया गया था। तब मेरी हिन्दी आजके मुक़ाबले ज़्यादा कच्ची थी। मैंने उनको अपना भाषण सुधारनेके लिए दिया, लेकिन उन्होंने सुधारनेसे इनकार किया, इसलिए जैसा था, उसीसे काम चला। पाठक मेरी व्याकरणरहित और टूटी-फूटी हिन्दीको निबाह लेते हैं। इस तरह बाबाजीके दोनों नहीं, तीनों बिगड़ते हैं, फिर भी फ़िलहाल तो जैसा चल रहा था, वैसा ही चलने देना चाहता हूँ। आखिर जहाज़ कहाँ पहुँचकर लंगर डालेगा, सो आज कहा नहीं जा सकता। इसलिए अगर गुजरातीमें मेरे अंग्रेज़ी लेखोंका तरजुमा ही ज़्यादा आये, तो गुजराती पाठक उसे दर-गुज़र करें। इतना आश्वासन दे सकता हूँ कि जो तरजुमा छपेगा, वह मेरी नज़रोंसे गुज़रा होगा, इसलिए ज़्यादातर अनर्थ नहीं होगा। 'ज़्यादातर' कहना पड़ता है, क्योंकि जल्दीकी वजहसे मुमकिन है, मैं तरजुमा देख न सकूँ, और अगर अहमदाबाद ही में हुआ, तब तो देख ही न सकूँगा। जो भी हो, मैं माने लेता हूँ कि पाठक पहलेकी तरह इस बार भी निबाह लेंगे।

('हरिजनबंधु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

एक नमूना

[चित्तूर ज़िलेके शान्तिपुरम् गाँवमें डॉक्टर गुरुबाथम जो काम कर रहे हैं, उसका नीचे लिखा ब्यौरा श्री ठक्कर बापाने भेजा है। प्या०]

"श्री० गुरुबाथम डॉक्टर हैं और आंखकी बीमारियोंके खास जानकार हैं। अभी कुछ महीनों पहले वे कोयम्बटूर और वेलोरमें अपना धन्धा करते थे। मोतियाबिन्दके ऑपरेशनके लिए वे काफ़ी मशहूर हैं। तिस पर भी उन्होंने अपनी उम्दा आमदनीवाला पेशा छोड़कर गांवमें रहनेका निश्चय किया है। पलार नदीके किनारे उनकी ६० एकड़ जमीन है और अब आसपासके लोग उनको 'पलारके डॉक्टर'के नामसे पहचानते हैं। डॉक्टर और उनका परिवार सच्चे अर्थोंमें ईसाई है। उनका बड़ा लड़का खेतीबारीके कामका ग्रेज्युएट है। .ख़ुद जमींदार होते हुए भी वह अपने हाथों हल चलाता है और मजदूरोंके साथ काम करता है। .ख़ुद डॉक्टर साहबने भी खेती शुरू की है। इसके सिवा, वे बढ़ई और लुहारका काम भी जानते हैं। उनके पास भेड़ें, मुर्गियाँ और एक अच्छी गोशाला भी है। असलमें गाँवकी जिन्दगीको ऐसा एक भी पहलू नहीं, जिसमें वे दिलचस्पी न लेते हों।

अपने परिवारके लिए उन्होंने एक सादा-सा घर बनाया है। वहाँ एक मेहमान-घर भी है, जिसमें फ़िलहाल इलाजके लिए आये हुए बीमारोंको टिकाया जाता है। बाहरसे आनेवाले बीमारोंको दवा वग़ैरा देनेके अलावा वे जरूरी ऑपरेशन भी करते हैं। लेकिन उनका असल मक़सद तो हर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरीक़ेसे गाँववालोंकी सेवा करना ही है। उनका दूसरा लड़का और उनकी एक लड़की भी डॉक्टरी पढ़ रही है और डॉ० गुरुवाथमको उम्मीद है कि ये दोनों उनके कामको सँभाल लेंगे। उन्होंने एक मदरसा भी खोला है, जिसमें ३० बालक पढ़ते हैं। वे इस मदरसेको बुनियादी तालीमका मदरसा बना देनेको उत्सुक हैं। छूतछात मिटानेका काम भी वे कर रहे हैं। अपने खजूरके पेड़ोंको वे ताड़ीके लिए छिदवाते नहीं। उनको इस बातका पूरा यक़ीन है कि जब नई सरकार बनेगी, तो शराब-बन्दी भी शुरू होगी और उस वक़्त उनके ये पेड़ ताड़ी नहीं, गुड़ देंगे। इधर आम तौर पर मजदूरों और कारीगर[illegible] चार आना मजदूरी मिलती है, मगर डॉक्टर साहब उन्हें ज्यादा मजदूरी देते हैं।

"वैसे, डॉक्टर गुरुवाथम पिछले छह सालसे गांवोंमें काम कर रहे हैं, और उन्हें यह काम कड़ा कसौटीवाला, लगा है, लेकिन इसकी, सफलताके बारेमें उन्हें तनिक भी शक नहीं है। वे शान्तिपुरम्को दक्षिणभारतका सेवाग्राम बनाया चाहते हैं। वहाँ वे अपने प्रान्तके देहाती जीवनको बनानेके लिए कार्यकर्त्ताओंको तालीम देनेकी भी उम्मीद रखते हैं।"

('हरिजन'से)

व्यवस्थापकसभाका मोह

मैं मानता हूँ कि व्यवस्थापकसभामें यानी एसेम्ब्लीमें किसी कांग्रेसीको जाना ही चाहिये। पहले मैं इस खयालका नहीं था कि जहाँ चुनाव हो, वहाँ कांग्रेसियोंको उम्मीदवारी करनी ही चाहिये, अब हूँ। मेरी यह उम्मीद कि सब कांग्रेसी बहिष्कार करेंगे, सफल नहीं हुई; ज़माना भी बदला है, और स्वराज्य नज़दीक आया है। ऐसा है, तो जहाँ चुनाव होता हो, वहाँ कांग्रेसी उम्मीदवार होने ही चाहियें। इसमें हेतु मानका नहीं, सेवाका ही हो सकता है। कांग्रेस-जैसी संस्थाकी यह प्रतिष्ठा होनी चाहिये और है कि जिसे वह पसंद करे, वही खड़ा हो; जिसे पसंद न करे, उसे दुःख तो होना ही न चाहिये; बल्कि उलटे उसे तो दूसरी सेवाके लिए मुश्ति मिलनेकी ख़ुशी होनी चाहिये। अफ़सोस इस बातका है कि दर असल ऐसा है नहीं।

दूसरे, चुनाव लड़नेमें कांग्रेसको पैसा खर्च करनेकी ज़रूरत होनी ही न चाहिये। लोकप्रिय संस्थाके उम्मीदवार घर बैठे चुने जाने चाहिये। ग़रीब मतदाताओंके लिए सवारीका इन्तज़ाम घर बैठे होना चाहिये। मसलन्, पेटलादके मतदाताओंको नड़ियाद जाना पड़े, तो ग़रीबोंका किराया पेटलाद दे। संगठित, लोकसत्तात्मक, अहिंसक संस्थाकी यह एक निशानी है। पैसे पर नज़र रखनेवाली संस्था ग़रीबोंकी सेवा कभी कर नहीं सकती। अगर लोगोंकी लड़ाई पैसेसे जीती जा सकती हो, तो अंग्रेज़ी सल्तनत, जो लखलूट पैसा खर्च कर सकती है और करती है, सबसे ज्यादा प्यारी होनी चाहिये। लेकिन हक़ीक़त यह है कि शाही नौकर, जो बड़ी-बड़ी तनख्वाहें लेते हैं, वे भी दिलमें ख़ुश तो नहीं। और करोड़ों ग़रीबोंकी तो पूछना ही क्या?

हम व्यवस्थापकसभाकी क़ीमत भी कूतें। व्यवस्थापकसभा सल्तनतके ऐबोंको खुला कर सकती है, मगर यह उसकी बड़ी सेवा नहीं। सल्तनतकी बुराइयोंको जाननेवाले और उसके शिकार बननेवाले लोग शिकार क्यों बनते हैं, सो कौन बताये? इसे बतानेवालेकी और उन बुराइयों या ऐबोंकी मुख़ालिफ़त करना सिखानेवालेकी सेवा बहुत बड़ी है। व्यवस्थापकसभा इस काममें बाधक बनती है, बनी है और बनेगी।

व्यवस्थापकसभाका दूसरा और सच्चा उपयोग है, बुरे क़ायदोंको न बनने देना और लोकोपयोगी क़ायदे पास करना। लोकोपयोगी क़ायदोंसे मतलब यह है कि अधिकारी सत्ता खासकर रचनात्मक कामोंके लिए जितनी सहूलियत कर सके, कर दे।

असल बात यह है कि व्यवस्थापकसभाका काम है, लोकमतके अनुसार चलना। अभी तो उसमें कुछ वाक्‌चतुर लोगोंकी ज़रूरत मानी जाती है। लेकिन आखिर वह कम ही होगी। उसमें तो व्यवहार-कुशल ज्ञानियोंकी और उनकी बातका अनुमोदन करनेवाले दूसरे लोगोंकी ही ज़रूरत रहेगी। इस तरह जहाँ सिर्फ़ सेवाका ही काम है, और जिसने मान, सम्मान, पदवी वग़ैराका बहिष्कार किया है, उस संस्थामें इस भावनाका पैदा होना ही कि व्यवस्थापकसभामें जानेमें इज्ज़त है, हानिकारक है। अगर यह खयाल जड़ पकड़ जाय, तो उसमें मुझे महान् कांग्रेसका पतन और आखिर उसका नाश ही नज़र आता है।

अगर कांग्रेसकी ऐसी हालत हुई, तो हिन्दुस्तानके नर-कंकालोंमें लहू और मांस कौन पूरेगा और हिन्दुस्तानको व दुनियाको किसका आधार रहेगा?

सेवाग्राम जाते हुए,
५–२–'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजनबंधु'से)

नैसर्गिक उपचारगृह

पाठक जानते हैं कि डॉक्टर दीनशा महेताके 'क्लिनिक'में मैं भाई जहाँगीर पटेलके साथ ट्रस्टी बना हूँ। उसमें शर्त यह है कि इस बरसकी जनवरीकी पहली तारीख़से वह संस्था धनिकोंकी मिटकर ग़रीबोंकी बने। ऐसे पूरापूरा बना तो नहीं है। मैं बाहर रहा। कल्पना मेरी ही थी, इसलिए फेरफारका काम ठंडा रहा है। मुझे आशा तो है कि मैं इस कामके लिए इस मासमें पूना जाऊँगा और कुछ तो कर सकूँगा। मेरी आशा यह रहेगी कि धनिक बीमार आवें, तो वे पैसे पेट भरके दें। फिर भी ग़रीबोंके साथ एक ही कमरेमें रहें। मुझे विश्वास है कि ऐसा करनेसे वे ज़्यादा लाभ उठायेंगे। जो इस तरह नहीं रहना चाहते हैं, उनको पूना जानेकी आवश्यकता नहीं है। संस्थाके लिए यह तो आवश्यक है ही। ग़रीबोंके आरोग्यगृहमें उनकी तबीयत अच्छी करनेकी कोशिश करनेके अलावा उन्हें अच्छे कैसे रहना, सो भी बताया जायगा। आज माना जाता है कि नैसर्गिक उपचारमें बहुत खर्च होता है। मामूली वैद्य या डॉक्टरकी दवाका खर्च उससे कम होता है। अगर यह बात सही सिद्ध हो, तो मैं अपने प्रयत्नको व्यर्थ समझूँगा। लेकिन मेरा विश्वास इससे उलटा है और अनुभव भी जो कुछ है, इससे उलटा ही है। नैसर्गिक या क़ुदरती वैद्यका धर्म है कि वह दरदीके शरीरकी सँभाल तो करे, मगर इतना ही काफ़ी नहीं। देहमें जो देही है, उसे भी पहचाने और उसके लिए भी उपचार बतावे। यह उपचार तो रामनाम ही है। वह रामबाण दवा है। रामनामका क्या अर्थ है, उसकी क्या विधि है, सो आज नहीं बता सकता। इतना ही कहूँगा कि ग़रीबोंको दवाकी बहुत फ़िकर नहीं रहती। वे यों ही मरते हैं। अज्ञानके वश जानते भी नहीं कि क़ुदरत क्या सिखाती है। अगर पूनामें यह प्रयोग अच्छी तरह चला, तो क़ुदरती इलाजोंकी एक युनिवर्सिटी या विद्यापीठ क़ायम करनेका डॉक्टर दीनशाका स्वप्न सिद्ध हो सकेगा। इस भगीरथ कार्यमें मैं हिंदुस्तानके सच्चे क़ुदरती तबीबोंकी मदद चाहता हूँ। इसमें पैसेका लालच तो हो ही नहीं सकता। ज़रूरत है, सेवाभावसे ग़रीबोंका इलाज करनेकी। ऐसे क़ुदरती तबीब काफ़ी संख्यामें मिलें, तभी काम आगे बढ़ सकेगा। तबीब कहने मात्रसे कोई तबीब नहीं बन सकता। वह सच्चा, मेहनती सेवक होना चाहिये। जिनको कुछ अनुभव-ज्ञान है, उन्हें अपने ज्ञान इत्यादिकी फ़ेहरिस्त भेजनी चाहिये। जिन खतोंको मैं निकम्मा मानूँगा, उनका उत्तर नहीं दिया जायगा। पाठक समझें कि 'हरिजन' के निकलनेसे सेवाकार्यका क्षेत्र बढ़ा है। इसलिए व्यक्तियोंको खत लिखनेकी बहुत कम गुंजाइश रहेगी।

वर्धा जाते हुए रेलमें, मोहनदास करमचंद गांधी
५–२–'४६

पुराने ग्राहकोंसे

'हरिजन-सेवक'के बन्द होने पर जिन ग्राहकोंने अपना बाक़ी चन्दा वापस नहीं माँगा था, उन्हें अपने चन्देकी बाक़ी रक़मके बदलेमें 'हरिजन-सेवक' पानेका हक़ है, बशर्ते कि उनका पुराना पता ठीक हो। इसलिए जिन्होंने इस बीच अपनी जगह बदली है, वे व्यवस्थापकको अपने बदले हुए पतेकी इत्तिला कर दें। जी० देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनाज और कपड़ेका अकाल

Reg. No. B 4448

हरिजन-सेवक

दो आना

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क २

मुद्रक और प्रकाशक जीवणजी डाह्याभाई देसाई नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १७ फरवरी, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६, विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३.

विषय-सूची

			पृष्ठ
पशु-पालन	...	गांधीजी	९
मज़दूरोंके कुछ सवाल	...	गांधीजी	९
निजी मंत्री-सम्बन्धी गांधीजीका आदर्श	...	प्यारेलाल	१०
अनाज और कपड़ेका अकाल	...	गांधीजी	१२
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	१२
अहिंसक तरीक़ा और प्रति-सरकार	...	प्यारेलाल	१३
गांधीजीका बयान	...	सं०	१४
महादेवभाई और 'हरिजन'	...	सुशीला नय्यर	१५
बहनोंके बारेमें	...	अमृतकुँवर	१६
टिप्पणियाँ			
विद्यार्थी-जीवन	...	मो० क० गांधी	१५
सच है, तो गुनाह है	...	मो० क० गांधी	१५

पशु-पालन

वर्धामें जो केन्द्रीय गो-सेवा-संघ चलता है, वह स्वर्गीय जमनालालजीकी अन्तिम कृति है। उनकी लोकोपयोगी प्रवृत्तियाँ अनेक थीं। वर्षोंसे धन कमानेका मोह उन्होंने छोड़ रखा था। जो कुछ धन कमाते थे, सो लोकसेवामें लगानेके लिए। ११ फरवरीको उनकी पाँचवीं पुण्यतिथि थी। उनके अनुयायियों और साथियोंने इस पुण्यतिथिका समय जमनालालजीकी अन्तिम प्रवृत्तिका विचार करनेमें बिताया और इस तरह तिथि मनाई। सब जानते हैं कि अपने देहान्तके एक घण्टे पूर्व भी वे कुछ-न-कुछ गो-सेवाका कार्य कर रहे थे। गोपुरी नामका क्षेत्र भी उन्हींने बनाया था। उनकी समाधि गोपुरीमें ही है। और उक्त सभा भी वहीं हुई। 'गो-सेवा' शब्दका प्रयोग विचार-पूर्वक हुआ है, और गो-रक्षामें जो मुरब्बीपन रहा है, वह सेवा शब्दके स्वीकारसे नहीं रहता। गायको हिन्दूमात्र माता समझता है, और वह माता है भी। एक अंग्रेज़ लेखकने उसे मानव-समृद्धिकी माता माना है—'मदर ऑव् प्रॉस्पेरिटी' कहा है—और यह प्रयोग ठीक भी है। यह दूसरी बात है कि पश्चिममें लोग गायको खा जाते हैं। लेकिन वे भी मानते हैं कि मनुष्य-जीवनमें जो अनेक प्राणी हिस्सा लेते हैं, उनमें गायका सबसे बड़ा स्थान है।

बग़ैर गायके दूधके मनुष्य-जीवनका चलना असम्भव नहीं, तो मुश्किल अवश्य है। इस गो-सेवाके भीतर पशु-पालन रहा है। यह पशु-पालन हमारे हिन्दुस्तानमें बड़े महत्त्वका प्रश्न है। और यह दुःखकी बात है कि जिस मुल्कमें गायकी भक्ति होती है, उसी मुल्कमें उस पशुकी देखभाल नहीं की जाती है। उसको काटते नहीं हैं, तो निर्दयतासे सताते हैं। बात यहाँ तक पहुँच गई है कि आज हिन्दुस्तानके करोड़ों पशु हिन्दुस्तानकी भूमिमें भार रूप माने जाते हैं, और उनको हज़ारोंकी संख्यामें क़तल करके भार कम करनेकी बात भी चलती है। ऐसी हालतमें एक जमनालालजी क्या कर सकते थे? लेकिन अब तो वे भी नहीं हैं।

पशु-पालन व्याख्यानसे नहीं हो सकता। उसके लिए गहरे ज्ञानकी, अभ्यासकी, त्यागकी आवश्यकता है। करोड़ों रुपया इकट्ठा करनेमें वाणिज्य नहीं है, लेकिन पशु-पालन कैसे करना, उसका शुद्ध ज्ञान हज़ारों लोगों तक कैसे पहुँचाना, और कैसे उसका अमल करना, इस सबकी छान-बीनमें, और ऐसे कामोंमें द्रव्य खर्च करनेमें सच्चा वाणिज्य रहा है। आज होता है उलटा। धनिक वर्ग धन किसी-न-किसी तरह कमा लेता है, और उसमेंसे दो-चार कौड़ीका दान करके शास्त्रीय ज्ञानविहीन लोगोंके मारफ़त नामकी गोशाला बनाकर अपने दिलको धोखा देता है कि पुण्यका काम कर लिया। इन त्रुटियोंका दर्शन जमनलालजीने कर लिया था और इन्हें दूर करनेके लिए वे एक योजनाका मनन कर रहे थे, इतनेमें यमदूतने उनको बुला लिया। स्वराज्य पानेके वास्ते जितनी शक्ति चाहिये, इस कठिन समस्याको हल करनेके लिए शायद उससे भी अधिक शक्तिकी आवश्यकता है।

सेवाग्राम, ९–२–'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

मज़दूरोंके कुछ सवाल

मद्रास और पलनीकी यात्रामें 'गोल्डन रॉक' (सुनहली चट्टान) पर हुई मज़दूरोंकी एक विशाल सभामें नीचे लिखा दस्तावेज़, जिस पर २५९ आदमियोंके दस्तख़त हैं, मुझे दिया गया :

"हम साउथ इण्डिया रेलवेके कर्मचारी अपनी कुछ ख़ास समस्यायें आपका समर्थन प्राप्त करनेके लिए आपके सामने पेश करते हैं।

"सभी रेलोंसे क़रीब २,६४,००० कर्मचारी निकाले जानेवाले हैं। अकेली साउथ इण्डिया रेलवेमें १०,००० निकाले जायेंगे और अब तक २,००० निकाले जा चुके हैं। रेल-कर्मचारियोंकी जगह सरकार सेनामें काम किये लोगोंको रखना चाहती है। इस प्रकार वह हमारे मुक़ाबले भूतपूर्व फ़ौजियोंको खड़ा किया चाहती है।

"हम माँग करते आ रहा हैं कि हमको कमसे-कम ३०) मासिक जीवन-वेतन मिलना चाहिये। फ़िलहाल कम-से-कम वेतन ८) से १५) के बीच मिलता है, और हममेंसे ज्यादातर लोगोंको १८) मासिकसे कम मिलता है।

"४२,००० रेलवे कर्मचारियोंमेंसे सिफ़ ८,००० को ही रहनेके मकान मिले हुए हैं। ज्यादातर मकानोंकी सफ़ाईकी हालत ख़राब है और हवा व रोशनीका भी ठीक इन्तज़ाम नहीं है।

"आपको अखिल भारतीय रेलवे-कर्मचारी-संघके इस फ़ैसलेका पता होगा : अगर अधिकारी हमारी शिकायतोंको दूर न करें और हमारे सुझावोंको मंज़ूर न करें, तो उसने न्यायालय द्वारा फ़ैसला करवाने अथवा जाँच अदालत बिठानेकी माँग की है। रेलवे पद्धति और कर्मचारियोंकी हालतमें सुधार करनेके लिए सुझाव दिये गये हैं। आपकी जानकारीके लिए नीचे वे सोलह सुझाव दिये जाते हैं, जो रेलवे-कर्मचारी-संघने रेलवे-बोर्ड और सरकारको भेजे हैं।

१. पहले उपायके तौर पर कामके घण्टे फ़ी हफ़्ता चालीस कर दिये जायँ और बादमें सभी कर्मचारियोंके लिए, जिनमें चलती गाड़ियोंमें काम करनेवाले भी शामिल हों, चालीस घण्टेका हफ़्ता नियत कर दिया जाय। साथ ही मौजूदा वेतनमें कोई कमी न की जाय।

२. सभी रेलवे-कर्मचारियोंको हफ़्तेमें एक दिनकी छुट्टी दी जाय।

३. छुट्टी जानेवाले कर्मचारियोंकी जगह काम करनेवाले कर्मचारियोंकी संख्या २५ फ़ी सदी बढ़ा दी जाय।

४. इंजीनियरिंग गैंगमेनोंके लिए रेल-लम्बाई घटाई जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५. रोजाना मजदूरी पर काम करनेवालों और नीचेके दर्जेके कर्मचारियोंको मातहत (सबॉर्डिनेट) कर्मचारियोंके बराबर छुट्टीकी सुविधा दी जाय।

६. वह सारा काम जो इस समय ठेके पर मजदूरोंसे करवाया जाता है, रेलवे-विभाग द्वारा करवाया जाय।

७. एंजिन, वैगन और गाड़ियोंकी दुरुस्तीके लिए मीलोंकी संख्यामें कमी की जाय।

८. रेलके कारखानोंमें उत्पादनका क्षेत्र बढ़ाया जाय यानी बॉयलर, एंजिनके हिस्से वग़ैरा बनाये जायँ।

९. हिन्दुस्तानके रेल-कारखानोंमें एंजिन, गाड़ियाँ और वैगन बनाये जायँ।

१०. तीसरे दर्जेकी गाड़ियोंको फिरसे बनाया जाय, ताकि मुसाफ़िरोंको स्नानघरों, पंखों और दूरके सफ़रके समय सोने आदिकी सुविधा मिल सके।

११. जो लाइनें बन्द कर दी गई थीं, उन्हें फिरसे जारी किया जाय; जो गाड़ियाँ रोक दी गई थीं, उन सबको फिरसे शुरू किया जाय और जनताकी जरूरतोंको पूरा करनेके लिए और भी गाड़ियाँ चलाई जायँ।

१२. सभी रेलवे-कर्मचारियोंके लिए अच्छे साफ़-सुथरे मकानोंका प्रबन्ध करनेके लिए मकान बनानेकी योजना हाथमें ली जाये।

१३. देशकी जरूरतोंको पूरा करनेके लिए नई लाइनें डाली जायें।

१४. जहाँ कहीं जरूरी हों, दोहरी लाइनें बिछाई जायँ।

१५. जहाँ रेलोंकी पहुँच न हो सके, वहाँ दूरके देहात और क़स्बोंमें पहुँचनेके लिए रेलके साथ मोटरकी सवारीको जोड़ दिया जाय।

१६. शाही हवाई बेड़ेके कारखाने, जो इस समय रेलवेकी देखरेखमें चलते हैं, क़ायम रखे जायँ और उन्हें बढ़ाया जाय ताकि हवाबाजीकी जरूरतें पूरी हो सकें।

"पूरा काम, जीवन-वेतन, अच्छे मकानोंकी सुविधा आदि पानेकी हमारी जो माँगें हैं, उनके लिए हम आपसे हमारा समर्थन करनेकी प्रार्थना करते हैं, और आशा करते हैं कि आप इस मामलेमें देशका नेतृत्व करेंगे और रेलवे-बोर्डको हमारी माँगें माननेके लिए मजबूर करेंगे और इस तरह हजारहा रेलवे-कर्मचारियों और दूसरोंको बेकारी, मुसीबत और ग़रीबीसे बचा लेंगे।"

अगर रेलके कर्मचारियोंको, जैसा कि दस्तावेज़में कहा गया है, इसलिए अलग करना है कि भूतपूर्व फ़ौजियोंके लिए जगह की जाय, तो मेरी रायमें यह दोहरा अन्याय है। जगह लेनेवालोंके लिए इसलिए अन्याय है कि उनके साथ रियायत की जायगी और जो सैनिक रियायत स्वीकार करता है, वह सैनिक नहीं हो सकता। दूसरा अन्याय उन लोगोंके साथ होगा, जिन्हें नौकरीसे हटाया जायगा। वे बिना किसी क़सूरके बेकार हो जायेंगे। यह कहनेसे काम न चलेगा कि वे थोड़े समयके लिए रखे गये थे। राज्यको सभी बेकारोंके लिए काम जुटाना चाहिये।

अब रेलवे-कर्मचारियोंकी माँगों पर विचार करें। १से ९ तककी माँगें और १२वीं माँग मेरी रायमें मज़दूरोंके दायरेमें आती हैं, किन्तु वे उचित हैं या नहीं, यह रेलवे-अधिकारियोंका पक्ष सुने बिना नहीं कहा जा सकता। इन माँगों पर पंच-फ़ैसला हासिल किया जाना चाहिये। जब तक पंच-फ़ैसलेकी कार्रवाई नहीं हो जाती, उनको हड़तालका आधार नहीं बनाया जा सकता। किसी भी आकस्मिक और व्यापक हड़तालका मतलब होगा, सामनेवाले पक्षसे ज़बरदस्ती बात मनवाना। यह ख़तरनाक होगा।

१०, ११ और १३से १६ तककी बातोंकी माँग मज़दूर जायज़ तौर पर नहीं कर सकते। ये मुसाफ़िरोंकी शिकायतें हैं और मुसाफ़िर यानी जनता इन्हें हाथमें ले सकती है।

१०वीं माँग मुझे बहुत बढ़ी-चढ़ी मालूम होती है। अभी सबसे ज्यादा मुसाफ़िर तीसरे दर्जेमें सफ़र करते हैं और मुझे इसमें कोई शक नहीं है कि उनके साथ उत्तरोत्तर अच्छा बरताव होना चाहिये, न कि पहले और दूसरे दर्जेवालोंके साथ। वह समय बहुत दूर नहीं है, जब रेलगाड़ियोंमें कोई दर्जे न होंगे। श्रेणीरहित समाज हमारा आदर्श है और वह कोरा आदर्श ही नहीं है, बल्कि उसे व्यवहारमें भी लाना है। उस तरहके समाजमें श्रेणियों और जातियोंके लिए कोई जगह न होगी। जब तक वह समय नहीं आता, पहले और दूसरे दर्जेकी सहूलियतोंका एक ख़ास पैमाना बन जाना चाहिये, और जहाँ ज़रूरी हो, वहाँ उनमें कमी भी की जानी चाहिये, और सारा ध्यान तीसरे दर्जेके मुसाफ़िरों पर लगाना चाहिये। लेकिन मैं ऐसे किसी वक़्तका खयाल नहीं कर सकता, जब तीसरे दर्जेकी गाड़ियोंमें, चाहे यात्रा कितनी ही दूर की क्यों न हो, लाखों यात्रियोंके लिए स्नानघरोंका प्रबन्ध किया जा सकेगा। ज़रूरत इस बातकी है कि तीसरे दर्जेके लिए रेलवे स्टेशनों पर नहानेका मुनासिब इन्तज़ाम किया जाय। हिन्दुस्तानमें तीसरे दर्जेके मुसाफ़िरोंके साथ सबसे ज़्यादा लापरवाही दिखाई जाती है। रेलगाड़ियों और रेलवे स्टेशनोंके ज़रिये जनताको सफ़ाई और स्वच्छताकी उचित शिक्षा दी जानी चाहिये। आज ऐसा नहीं होता। साथही, हिन्दू या मुसलमानी चाय या पानीका फ़र्क़ जितनी जल्दी मिटाया जा सके, उतना ही अच्छा होगा। राज्य ऐसे अस्वाभाविक और अधार्मिक भेदोंको क्यों स्वीकार करे? जो लोग यह समझते हों कि अपनेसे अलग मज़हबके माननेवालोंकी सेवा स्वीकार करनेसे उनका धर्म भ्रष्ट हो जायगा, उनसे कह दिया जाय कि वे अपने साधन ख़ुद जुटा लें।

रेलके मुसाफ़िरोंकी मददका काम करनेवाली संस्थाको अधिकारियोंके सामने यात्रियोंकी शिकायतें ज़रूर रखनी चाहिये। उसका मुख्य काम यह भी होना चाहिये कि वह मुसाफ़िरोंको बराबर इस बातकी शिक्षा दे कि उनका एक-दूसरेके लिए क्या फ़र्ज़ है और उन्हें सफ़ाई और स्वच्छताके नियम पालनेके लिए क्या करना चाहिये।

सेवाग्राम, ८–२–'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

निजी मंत्री-सम्बन्धी गांधीजीका आदर्श

१

शायद यह कहा जा सकता है कि गांधीजीके नज़दीक निजी मंत्रीका कोई स्थान नहीं। क्योंकि उनका सारा जीवन एक खुली चीज़ है और जनताके लिए है। उसमें खानगी या निजी नामकी कोई चीज़ है ही नहीं। आम तौर पर लोग निजी मंत्रीमें और खासकर राजकाजी पुरुषके निजी मंत्रीमें रोब और हुकूमत या सत्ताका आरोपण करते हैं। हम देखते हैं कि सरकारी महकमोंके मंत्री और उपमंत्री इतनी सत्ता और वसीला रखते हैं कि लोगोंको उनके साथ इस तरह बरताव करना पड़ता है, मानों वे ख़ुद ही आला अफ़सर हों। राजनीतिक क्षेत्रके बड़े अधिकारीका मंत्रित्व तो अक्सर सार्वजनिक जीवनमें और पद-प्राप्तिमें ऊपर उठनेकी पहली सीढ़ी समझा जाता है। मंत्री ख़ुद ही आला अफ़सर बननेकी उमंग रखता है। लेकिन गांधीजीके यहाँ बात बिलकुल उलटी ही है। उनके आदर्श मंत्रीको अपने बड़े या बुज़ुर्गके आदर्शको जीवनमें उतारनेकी आतुरता या लगनके सिवा दूसरी कोई वृत्ति रखनेकी ज़रूरत नहीं। आम तौर लोग अपने जीवनमें जैसी कीर्ति और प्रतिष्ठा पाने और सुनहले अवसरोंसे लाभ उठानेकी इच्छा रखते हैं, गांधीजीके मंत्रीको उस सबकी ओर पीठ करके बढ़ना है। उसे तो शून्य-सा बनकर अपने सरदारमें समा जाना है। इसका यह मतलब नहीं कि उसे अपना व्यक्तित्व गँवा देना है। सार यह है कि उसे अपने सरदारके साथ दो शरीर एक प्राण बन जाना है। स्वतंत्र रीतिसे काम करनेकी शक्ति रखते हुए भी उसे अपने बड़ेके साथ एकतार हो जाना है। मंत्री-सम्बन्धी गांधीजीके आदर्शका यह मध्य बिन्दु है। दूसरी सब चीज़ें इसीमेंसे सहज भावसे निकल आती हैं।

लन्दनकी दूसरी गोलमेज़ परिषद्के दिनोंमें इण्डिया ऑफ़िसमें काम करनेवाले एक नौजवान मंत्री, जो हमारे साथ बहुत नज़दीकका सम्बन्ध रखने लगे थे, एक बार अपनी घनिष्ठताका परिचय देते हुए हमें यह विश्वास दिलाने लगे कि ज़रूरत पड़ने पर वे उस समयके उपभारत-मंत्री लॉर्ड पीलसे कहकर बहुत-कुछ करा सकते हैं। उन्होंने आँख मटकाते हुए कहा: "आप यह तो भलीभाँति जानते ही हैं कि निजी मंत्री कितना असर रखते हैं।" हमने उनसे कहा: "हम इसके अपवाद हैं। यों कहिये कि हम तो निरे हम्माल हैं।" इस पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी ग़लतीको सुधारते हुए वह भी बोले : " मैं भी आपहीके जैसा एक दूसरा हम्माल हूँ ।" और हम सब खिलखिलाकर हँस पड़े।

गांधीजी अपने लिए भंगी, जुलाहा, कतवैया और किसान वग़ैरा कई नामोंका इस्तेमाल करते आये हैं । उनके मंत्रीको भी इन सब कामोंमें निपुण होना पड़ता है । गांधीजीका दावा है कि वे केवल जनताके प्रथम सेवक हैं । इसलिए अपने मंत्रीसे वे यह अपेक्षा रखते हैं कि वह दासानुदास बने । उनके नज़दीक निरी बौद्धिक तेजस्विताका मूल्य बहुत कम है । उनकी दृष्टिमें सरलता, सत्यपरायणता और पवित्रताकी लगन और जिन आदर्शोंकी वे स्वयं उपासना करते हैं, उन तक पहुँचनेकी आतुरता और मंथन ही सब कुछ है ।

उनकी मातहतीमें किया जानेवाला कोई भी काम जीवनकी साधना और तपश्चर्याके समान है और उनके मंत्रीका पद इसका कोई अपवाद नहीं । उनके मंत्रीको रोज़-रोज़के व्यवहारमें आनेवाला हलके-से-हलका काम भी भारी-से-भारी कामकी तरह ही उत्साह, लगन, एकाग्रता और चिन्ता या ख़बरदारीके साथ करनेको तैयार रहना चाहिये । गांधीजीके मंत्रीके कामोंमें नीचेके तमाम काम शामिल हैं; जैसे, रसोई बनाना, कपड़े धोना, पाख़ाने साफ़ करना, बीमारोंकी सार-सँभाल रखना, किसी बड़े दैनिक पत्रका संचालन करना, आलोचक और हठीले पत्र-लेखकोंके अटपटे सवालोंके जवाब देना, किसी ज़रूरी बातचीत या महत्त्वकी मुलाक़ातका ब्यौरा महज़ अपनी याददाश्तसे तैयार करके देना, और वाइसरायसे या उनके अफ़सरोंसे मिलने जाना, वग़ैरा । ऊपरके इन तमाम कामोंको स्वर्गीय महादेवभाईने बड़ी कामयाबीके साथ किया था । इधर-इधर गांधीजी अक्सर कहा करते हैं कि "महादेवभाईने बड़े-बड़े कामोंमें जो यश पाया, वह शुरूके सालोंमें छोटे-छोटे काम करनेकी तालीमका नतीजा है ।"

गांधीजीके मंत्रीको सबसे पहली चीज़ यह सीखनी पड़ती है कि वह छोटे-छोटे कामोंमें बहुत चौकस और ख़बरदार रहे । कोई भी काम, कितना भी छोटा क्यों न हो, ऊपरके दिलसे, बेढंगे तौर पर या लापरवाहीके साथ हरगिज़ न किया जाना चाहिये । जल्दीमें लिखे गये किसी छोटे मज़मून या नोटमें भी काना-मात्राकी कोई ग़लती न रहनी चाहिये । मामूली कार्डको भी 'दोहराया नहीं है,' लिखकर डाकमें डालना गांधीजीके मन अक्षम्य है । अगर कोई भूले-चूके यह दलील कर बैठे कि कामकी भीड़के कारण या वक़्तकी कमीके कारण ऐसी जल्दी हो गई है, तो समझिये कि फिर उसका भगवान् ही मालिक है ! गांधीजी हरएक बातमें सम्पूर्णता और चौकसाईका ख़ास आग्रह रखते हैं । मामूली ख़तका मुख़्तसर जवाब देनेमें भी विषयका अभ्यास और उसकी पकड़ नज़र आनी चाहिये ।

उनका मंत्री सलाहकी राह देखता हुआ बैठा नहीं रह सकता । अमुक मामलेमें गांधीजीकी अमुक ही सलाह होगी, यह समझकर काम करनेकी लियाक़त उसमें होनी चाहिये । दूसरे शब्दोंमें, गांधीजीका सहारा लिये बिना स्वतंत्र रीतिसे सोचने और अमल करने और कुछ हद तक ख़ुद गांधीजीकी ओरसे भी काम करनेकी शक्ति उनके मंत्रीमें होनी चाहिये । १९२१ में 'इण्डिपेण्डण्ट' पत्रके संपादक जॉर्ज जोसेफ़के पकड़े जानेकी अफ़वाह ज़ोरों पर थी । उस वक़्त स्वर्गीय मोतीलालजी ने गांधीजीसे प्रार्थना की थी कि वे 'इण्डिपेण्डण्ट'के सम्पादकका काम करनेके लिए किसीको, और हो सके तो महादेवभाईको, भेज दें । महादेवभाईके लिए गांधीजीके वियोगको सहना बहुत कठिन था । उन्होंने दलील की : "क्या आप क० स०को नहीं भेज सकते ?" गांधीजीने कहा : "तुम यह क्यों नहीं समझते कि लालाजीको क० स०की सेवासे वंचित नहीं किया जा सकता ? वह तो लालाजीके दाहिने हाथ हैं ।" इस पर महादेवभाईने उलटकर पूछा : "और मैं ?" गांधीजीने तुरन्त ही कहा : " तुमको तो मैं अपना दिमाग़ बनाया चाहता हूँ ।" और, गांधीजीकी इस अपेक्षाको महादेवभाईने भली-भाँति पूरा किया ।

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, गांधीजीकी दृष्टिमें उनके मंत्रीके कामोंमें चिट्ठी-पत्रीका और ऑफ़िसके कार्योंमें सहायता पहुँचानेका काम बहुत गौण काम है । उनके मंत्रीमें गांधीजीके विचारोंको लोगोंके सामने रखनेकी और गांधीजीके आदर्शोंका प्रचार करनेकी योग्यता होनी चाहिये । और यह योग्यता या शक्ति तो उन आदर्शोंको अपने जीवनमें उतारनेसे ही आ सकती है । मसलन्, आज गांधीजी खादी, ग्रामोद्योग, हरिजन-सेवा, नई या बुनियादी तालीम, गो-सेवा, और अंतिम किन्तु सबसे महत्त्वका आश्रम, यों कई तरहके कामोंका संचालन कर रहे हैं । गांधीजीकी सच्ची सहायता करनेके लिए न सिर्फ़ इन सब विषयोंके शास्त्रीय ज्ञानकी ज़रूरत है, बल्कि इस बातकी भी ज़रूरत है कि ये कमोबेश अपने जीवनके अंग बनाये जायँ । महादेवभाईको कातनेका और ख़ासकर तकली पर कातनेका बड़ा शौक़ था । उनके इस शौक़की छाप 'यंग इण्डिया' और 'हरिजन'के पन्ने-पन्ने पर देखी जा सकती है । कामकी बेहद भीड़के रहते हुए भी वे लगातार कई-कई हफ़्तों तक हाथमें टोकनी और झाड़ू लेकर सफ़ाईके लिए जानेवाली टुकड़ीके अगुआकी हैसियतसे जैसी तनतोड़ मेहनत करते थे, उसे जिन्होंने देखा है, वे ही गांधीजीके साप्ताहिकोंमें छपनेवाले महादेवभाईके अस्पृश्यता-निवारण और ग्रामोद्धार-सम्बन्धी लेखोंके प्रभावका रहस्य समझ सकते हैं । उनकी इस साधनाके कारण न सिर्फ़ गांधीजीके विचारोंका प्रतिपादन करनेकी शक्ति ही उनके लेखोंमें आती थी, बल्कि उनका अपना उदाहरण भी कार्यकर्ताओंको रचनात्मक कामके महत्त्वके बारेमें प्रभावित करता रहता था ।

गांधीजी बड़े सख़्त काम लेनेवाले हैं । **मा प्रमदितव्यम्** : 'प्रमाद न करो,' यह उनका मुद्रालेख या ध्यानमंत्र है । उन्होंने आपको कोई भी काम सौंपा हो, उसे पूरा करनेके मार्गमें आनेवाली कठिनाइयोंको वे काम न होनेके बचावके रूपमें कभी भी स्वीकार नहीं करते । दूरन्देशीसे काम लेकर इन कठिनइयोंको पार कर जानेकी शक्ति आपमें होनी ही चाहिये । चम्पारनके सत्याग्रहके दिनोंमें बिहारकी रेलोंके डब्बोंमें अक्सर बत्तियाँ नदारद रहती थीं, अथवा जो होती भी थीं, वे निकम्मी-सी होती थीं । इसलिए चलती गाड़ीमें रातके वक़्त काम करनेके ख़यालसे महादेवभाई अपने साथ दियासलाई और मोमबत्ती रखा करते थे । एक बार गांधीजीके दूसरे दर्जेवाले डब्बेके पाख़ानेमें बैठकर 'यंग इण्डिया'के लिए लेख तैयार करने पड़ गये थे । गांधीजीको अच्छी तरह सोने देनेके लिए उनके डब्बेकी बत्तीको ग़ुल कर देना ज़रूरी था और साथ ही यह भी ज़रूरी था कि बाक़ी रही हुई लेख-सामग्री तैयार करके ठीक समय पर डाकमें डाल दी जाय । आधी रातको जब गांधीजी पाख़ाने जानेको उठे, तो हम दोनोंको पाख़ानेमें बैठा देखकर दंग रह गये । गांधीजीने देखा कि हमारे काग़ज़ पाख़ानेकी फ़र्श पर फैले पड़े थे । उन्होंने हमें झिड़का, लेकिन हम अपना काम पूरा कर सके और 'यंग इण्डिया'के लिए सारी लेख-सामग्री समय पर अहमदाबाद पहुँचा सके । अलग-अलग साप्ताहिकोंको चलानेमें महादेवभाईने गांधीजीके साथ २३ सालका लम्बा समय बिताया था, (और इस बीच ब्रह्मदेश, लंका और विलायतकी यात्रायें हुई थीं) फिर भी ऐसा एक भी अवसर मुझे याद नहीं पड़ता, जब लेखोंके समय पर न पहुँचनेके कारण किसी भी साप्ताहिकके प्रकाशनमें देर हुई हो ।

(गुजरातीसे) प्यारेलाल

नई किताबें

	मूल्य	डाकख़र्च
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (गांधीजी)	०–६–०	०–१–०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१–८–०	०–५–०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२–०–०	०–६–०
हफ़्तेमें उर्दू — (श्रीपाद जोशी)	०–७–०	०–१–०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

फरवरी १७ १९४६

अनाज और कपड़ेका अकाल

अपने बंगला, आसाम और मद्रासके दौरेमें मने अनाज और कपड़ेकी कमीके कारण लोगोंके संकटके किस्से सुने हैं। हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंसे भी मेरे पास खबरें आ रही हैं। उनमें भी उसी हालतका ज़िक्र है। राजेन्द्रबाबूने मुझे बताया कि ज्यों ही सरकारने अनाजकी कमीकी आशंका प्रकट की, त्यों ही बाज़ारमें क़ीमतें दुगुनी हो गईं। यह बुरी निशानी है। इस तरहका सटोरियापन आज मुमकिन न होना चाहिये। व्यापारी-समाजमें ऐसे लालचको दबानेकी ताक़त होनी चाहिये। सरकारकी ग़लतियों या नालायक़ीके कारण पैदा हुए सङ्कटको उसे बढ़ाना नहीं चाहिये। देशमें व्यापारियोंकी संस्थायें और मंडल मौजूद हैं। अगर वे देशभक्तिकी भावनासे काम करें, तो घबराहट और सटोरियेपनको रोकनेमें बहुत मदद दे सकते हैं।

अकालके लिए क़ुदरतको दोष देना एक फ़ैशन-सा बन गया है। अकेले हिन्दुस्तानमें ही बरसात कम नहीं होती। दूसरे देशोंमें, हालाँकि लोग बरसातका स्वागत करते हैं, पर वहाँ भी अगर एक-दो मौसममें बारिश न हुई, तो लोग क़रीब-क़रीब अपना काम चला लेते हैं। हमारे यहाँ सरकार यह माने बैठी है और जनतासे भी कहती है कि जब बरसात कम होती है तभी अकाल पड़ता है। अगर उसका खयाल दूसरा बना होता, तो उसने बरसातकी कमीके लिए कुछ और इन्तज़ाम किया होता। उसने समस्याको हल करनेकी ठोस कोशिश नहीं की और यह स्वाभाविक भी था। कारण, सरकारी अधिकारियोंको इससे अच्छा सोचनेकी आदत ही नहीं डाली गई। भारत-सरकारका जैसा इकहत्था, गुँथा हुआ संगठन है, उसमें मौलिकताके लिए जगह नहीं हो सकती। दुनियामें उसके-जैसा स्वेच्छाचारी संगठन शायद ही और कहीं मौजूद हो। लोकतंत्र तो केवल ब्रिटेनके लिए ही सुरक्षित रक्खा गया है। और जब वह दूसरी क़ौमोंके करोड़ों आदमियों पर हुकूमत करता है और उनका शोषण करता है, तो खालिस बुराई बन जाता है। वह सारे देशको इस बुरे खयालका शिकार बना देता है कि किसी भी प्रगतिशाली लोकतंत्रके लिए इस तरहका शोषण सबसे अच्छी चीज़ है। अगर मेरा खयाल सही है, तो इस मूलभूत बातको याद रखना ठीक होगा। तात्कालिक समस्या पर विचार करते समय हम इस बातको मान लेंगे, तो मौजूदा कर्मचारियोंके प्रति हम धीरज रख सकेंगे। इसका यह मतलब नहीं कि मैं बुराईको सहन लेनेकी अपील कर रहा हूँ। यह फ़र्क़ हमको बुराईसे निपटनेमें ज्यादा समर्थ बनायेगा।

तो हमको सबसे पहले, जहाँ तक मुमकिन हो, अपने घरका ठीक प्रबन्ध करना चाहिये। और साथ ही हमें विदेशी सरकारसे भी यह माँग करनी चाहिये कि चूँकि जो वह कहती है, वही उसका आशय भी है, इसलिए उसे ग़ैरज़िम्मेदार कार्यकारिणी कौंसिलकी जगह केन्द्रीय धारासभाके चुने हुए और ज़िम्मेदार सदस्योंकी कार्यकारिणी कौंसिल क़ायम करनी चाहिये, चाहे धारासभा कितनी ही दकियानूसी और सीमित मताधिकारसे क्यों न बनी हुई हो। वाइसराय अगर आज ही ऐसा करना चाहें, तो उनके रास्तेमें कोई रुकावट नहीं हो सकती। यहाँ मैं पहलेसे कठिनाइयोंका जवाब नहीं दिया चाहता। 'जहाँ चाह है, वहाँ राह है'; अकेले इस एक क़दमसे विश्वास क़ायम होगा और घबराहट दूर होगी।

'ज्यादा नाज पैदा करो'का नारा लड़ाईके ज़मानेमें बुरा नारा न था! उसकी आज और भी ज़रूरत है। इस पर अमल राष्ट्रीय सरकार ही अच्छी तरह करवा सकती है। उसकी ग़लतियाँ भी नामज़द कार्यकारिणी कौंसिलकी तुलनामें, चाहे वह कितनी ही लायक़ क्यों न हो, बड़ी नहीं उँचेंगी। आज जैसी हालत है, उसमें उसकी योग्यता और ईमानदारी पर भी शक होता है। ऐसा होना सही है या ग़लत, यह एक जुदा सवाल है। उसका इससे ताल्लुक़ नहीं। धरती माताके पेटसे पानी निकालनेकी हर कोशिश की जानी चाहिये। इस कामको करनेके लिए इस देशमें काफ़ी योग्य आदमी मौजूद हैं। प्रान्तीय स्वार्थके स्थान पर राष्ट्रीय ज़रूरतको जगह दी जानी चाहिये।

इसके अलावा, न कि इन उपायोंकी जगह, जहाँसे भी मुमकिन हो, अनाज मँगाया जाना चाहिये।

कपड़ेका अकाल यों टाला जा सकता है कि करोड़ों लोगोंको अपने-अपने देहातमें कातने और बुननेके लिए कहा जाय; जहाँ कपास न होती हो, वहाँ कपास, और किराये पर अथवा लम्बी मियादकी खरीद शर्तों पर उत्पादनके सीधे-सादे औज़ार अर्थात् चर्खे-करघे आदि राज्य लोगोंको मुहय्या करे। चर्खा-संघके सधे हुए कार्यकर्त्ताओंको मदद और राह दिखानेके लिए कहा जाना चाहिये। अगर काम लगनसे शुरू किया जाय, तो इसमें कुछ महीने लग जायँगे। जब तक यह बीचका समय गुज़रता है, तब तक देशी मिलोंको कहा जाय कि शहरों और देहातमें अपने कपड़ेको बुद्धिमानीके साथ वितरण करके वे इस राष्ट्रीय काममें मदद दें। देशमें जो संकट मौजूद है और रोज़मर्रा बढ़ता जा रहा है, उसको देखते हुए यह दलील बन्द हो जानी चाहिये कि मिलें हमारी सारी ज़रूरतोंको पूरा कर सकती हैं अथवा नहीं। मिलें देशके करोड़ों बेकार देहातियोंके लिए काम नहीं जुटा सकतीं। चर्खेके शैक्षणिक मूल्यकी जगह और कौन ले सकता है? हमारे दिमाग़ों पर जो जादू सवार हो चुका है यदि वह उतर जाय, तो हम सब इस ज़ाहिर सचाईको समझ लें, ठोस कार्य पर अमल करने लगें और इस तरह करोड़ोंमें और सम्भवतः सारी दुनियामें विश्वास पैदा कर सकें, क्योंकि आज दुनियामें किसीके भी पास न काफ़ी अनाज है और न कपड़ा।

सेवाग्राम, १०-२-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

सवाल-जवाब

स०—दूसरेसे बातचीत करते समय, मस्तिष्क द्वारा कठिन कार्य करते समय अथवा अचानक घबड़ाहट आदिके समय भी क्या हृदयमें रामनामका जप हो सकता है? अगर ऐसी दशामें भी लोग करते हैं, तो कैसे करते हैं?

ज०—अनुभव कहता है कि मनुष्य किसी भी हालतमें हो, सोता भी क्यों न हो, अगर आदत हो गई है और नाम हृदयस्थ हो गया है, तो जब तक हृदय चलता है तब तक रामनाम हृदयमें चलता ही रहना चाहिये। अन्यथा यह कहा जाय कि मनुष्य जो रामनाम लेता है, वह उसके कंठसे ही निकलता है, अथवा कभी-कभी हृदय तक पहुँचता है; लेकिन हृदय पर नामका साम्राज्य स्थापित नहीं हुआ है। जब नामने हृदयका स्वामित्व पाया है तब जप कैसे करते हैं, यह सवाल पूछा ही न जाय। क्योंकि जब नाम हृदयमें स्थान लेता है तब उच्चारणकी आवश्यकता ही नहीं है। यह कहना ठीक होगा कि इस तरह रामनाम जिनको हृदयस्थ हुआ है, ऐसे लोग कम होंगे। जो शक्ति रामनाममें मानी गई है, उसके बारेमें मुझे कोई शक नहीं है। हरएक आदमी इच्छा मात्रसे ही रामनामको अपने हृदयमें अंकित नहीं कर सकेगा। उसमें अनथक परिश्रमकी आवश्यकता है, धीरजकी भी है। पारसमणिको हासिल करनेके लिए धीरज क्यों न हो? नाम तो उससे भी अधिक है।

स०—क्या दिमाग़की किसी कमज़ोरीके कारण मनको सन्देह नज़र आते हैं, अथवा क्या निश्चल दशामें पहुँचनेसे पहले मनके लिए इन हालतोंमेंसे गुज़रना लाज़िमी है? जाग्रत दशामें भी शान्त मनमें स्वप्नके-से खेल क्यों होते हैं? अर्थात् जिन घटनाओंका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रत्यक्ष जीवनकी याददाश्तके साथ कभी सम्बन्ध नहीं रहा, उनका दिमाग़में आगमन अथवा हृदयमें उच्चारण क्यों होने लगता है ?

ज० — निश्चल दशामें पहुँचनेके पहले जिसका बयान प्रश्नकर्त्ताने किया है, वह क़रीब-क़रीब सबको होना लाज़िमी है । 'क़रीब क़रीब' कहनेका मतलब है कि पूर्वजन्ममें जिन्होंने साधना की है, लेकिन जो सिद्धार्थ नहीं हुए, उनको इस जन्ममें यातनासे गुज़रना नहीं पड़ेगा। शान्त मनमें स्वप्नके-से खेल होते हैं, इसका अर्थ इतना ही है कि मन बाहरसे शान्त दीखता है, परन्तु वास्तवमें वह शान्त नहीं है। प्रत्यक्ष जीवनमें जिसका सम्बन्ध नहीं दीखता, मनमें उसका संवरण होता है, इसका अर्थ मेरी दृष्टिमें यह है कि याददाश्तके अलावा भी बहुत-सी चीज़ें पड़ी हैं, जिनका सम्बन्ध रहता ही है।

स० — सेवाकार्यके कठिन अवसरों पर भगवद्भक्तिके नित्य-नियम नहीं निभ पाते, तो क्या कोई हर्ज़ होता है ? दोनोंमें किसको प्रधानता दी जाय, सेवाकार्यको अथवा माला-जपको ?

ज० — कठिन सेवाकार्य हो या उससे भी कठिन अवसर हो, तो भी भगवद्भक्ति यानी रामनाम बन्द हो ही नहीं सकता। उसका बाह्य रूप प्रसंगवशात् बदलता रहेगा । माला छूटनेसे रामनाम, जो हृदयमें अंकित हो चुका है, थोड़े ही छूट सकता है ?

सेवाग्राम, ९–२–'४६ **मोहनदास करमचंद गांधी**

अहिंसक तरीक़ा और प्रति-सरकार

मिदनापुर हमेशा ही आज़ादीकी लड़ाईमें आगे रहा है। सन् १९३०के नमक सत्याग्रहमें महिषादलके मर्द और औरतोंने इतिहास ही बना डाला था। सन् १९३१की सत्याग्रहकी लड़ाईमें उसे फिर सरकारके दमनका शिकार होना पड़ा। उस समय फ़ौजोंने एक सिरेसे दूसरे सिरे तक कई कूच किये थे। उन कूचोंकी विशेषता यह थी कि फ़ौजी निशानोंको ज़बरदस्ती सलाम करवाया जाता था, लूट-मार होती थी और इससे भी बुरा और न जाने क्या-क्या होता था। इस दमनके आगे तामलुकमें देहातियोंको घर-बार छोड़कर सामूहिक रूपसे भागना पड़ा था। महिषा जाति, जो महिषादल सब डिवीज़नके इर्द-गिर्द इस ज़िलेके दक्षिणी हिस्सेमें रहती है, एक मेहनती और मज़बूत किसान जाति है। सदियों तक उसे .कुदरतके साथ लड़ना पड़ा है और इसने उसे एकता और सहयोगका पाठ पढ़ाया है। इस इलाक़ेमें खेती इस बात पर निर्भर करती है कि धरतीमें पानीका बहाव ठीक हो और बाँध बाँधकर समुद्रके पानीको खेतीकी ज़मीनमें न घुसने दिया जाय। इस तरह इस जातिकी परिश्रमप्रियता और इसका सामाजिक संगठन इसके .कुदरती वातावरणकी उपज है।

सन् १९४२की अगस्तवाली उथल-पुथलमें मिदनापुरको जो मुसीबतें झेलनी पड़ीं, वैसी हिन्दुस्तानके किसी दूसरे हिस्सेको शायद ही बरदाश्त करनी पड़ी हों। उस समय मनुष्यकी पशुताने .कुदरतके कोपके रहे-सहे कामको पूरा कर दिया। कष्ट-सहनने उनको संयमी तो बनाया है, पर उससे उनकी भावना दब नहीं सकी है। प्रार्थनाके समयकी गांधीजीकी सभाओंमें, जिनमें कभी-कभी एक लाखसे अधिक लोग शरीक होते थे, पूरे अनुशासन और शान्तिका रहना उस संयमकी ही निशानी थी।

जब गांधीजी महिषादल गये, तो स्वभावतः मिदनापुरके कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओंकी चर्चाओंमें अहिंसाका और 'जातीय' यानी राष्ट्रीय प्रति-सरकारका सवाल मुख्य रहा। मिदनापुर ज़िलेके सुताहाटा, नन्दीग्राम, महिषादल और तामलुक थानोंमें 'जातीय' सरकार ता० १७–१२–'४२ और १६–१–'४३को क़ायम की गई और जब गांधीजीने जेलसे छूटनेके बाद चोरी-छिपे काम करनेके बारेमें अपना बयान दिया, तो उसके फलस्वरूप ८ अगस्त, १९४४को वह बाक़ायदा तोड़ दी गई। सितम्बर, १९४४ तक उससे सम्बन्धित १५० कार्यकर्त्ता खुलेमें आ गये और उन्होंने अपनेको अधिकारियोंके हवाले कर दिया। गांधीजी जब महिषादल गये तो मिदनापुरके कार्यकर्त्ताओंने उन्हें एक विस्तृत रिपोर्ट दी थी। उसमें उन्होंने विस्तारसे हूबहू यह बताया था कि किस तरह लोगोंने थानों पर क़ब्ज़ा किया, कचहरियोंको जलाया, आमद-रफ़्तके साधनोंको बेकार बनाया, अपने स्वतंत्र पुलिस-दल और उसकी .खुफ़िया-शाखाका संगठन किया और अदालतें क़ायम कीं, जहाँ अपराधियों और समाजके ख़िलाफ़ काम करनेवालोंको 'क़ानूनके मुताबिक़' सज़ा दी जाती थी। उनका दावा था कि उन्होंने किसीकी जान न लेनेकी पूरी-पूरी सावधानी रखी और इस तरह अहिंसाका पालन किया। बादमें उन्होंने गांधीजीके साथ 'जातीय' सरकारके समूचे सवाल पर और तोड़-फोड़के कामोंके बारेमें चर्चा की। गांधीजीने कहा: "मैं नहीं कह सकता कि जो कुछ किया गया, वह सब ठीक किया गया, या कि किया जाना चाहिये था। इसके ख़िलाफ़ बहुतसी बातें ऐसी हैं, जो न की जानी चाहिये थीं। लोग हाथ पर हाथ धरकर बैठे नहीं रहे, यह सन्तोषकी बात है; किन्तु यह अफ़सोसका मुक़ाम है कि इतने सालोंके बाद भी लोगोंने यह नहीं समझा कि कांग्रेस क्या चाहती है। उन्होंने जो कुछ किया, बिना विचारे किया। उसका जो रूप था, वह ऐसा ही था कि उसे ज़्यादा समय तक ज़ारी न रखा जा सकता था।

"आपने अपनी रिपोर्टोंमें हुबहू यह बताया है कि आप लोगोंने किस तरह एक रेलके रास्तेको उड़ाया, एक कचहरीको जलाया, एक थाने पर क़ब्ज़ा किया, 'जातीय' सरकार क़ायम की वग़ैरा-वग़ैरा। यह अहिंसक कार्रवाईका तरीक़ा नहीं है। लोगोंने यह समझनेमें भूल की कि जिस बातमें मारना शामिल न हो, वह अहिंसा है। कभी-कभी मारना हिंसाका विशुद्ध अंग होता है। अगर आप किसी शरारत करनेवालेको एकदम मार डालते हैं, तो जहाँ तक उसका ताल्लुक़ है, क़िस्सा ख़त्म हो जाता है, किन्तु सताना या परेशान करना और भी बुरी बात है। उससे शरारत ख़त्म नहीं होती। उलटे इस तरहकी शरारत हमारे अपने सिर पर सवार हो जाती है। अधिकारी बदला लेनेवाले बन जाते हैं। शायद आप कहें कि वे तो हर हालतमें ही बदला लेनेवाले होते, किन्तु हम जो चाहते हैं, वह यह नहीं है। उनको घबड़ा देनेमें हमारा कोई लाभ नहीं हो सकता।

"अगस्त १९४२में अधिकारी घबड़ा गये थे। हमने उनको इसका बहाना दे दिया था। किन्तु वे ऐसे लोग हैं, जो हारना नहीं जानते; उनकी कायरता मूलभूत नहीं है। वे थानों, कचहरियों, पंचायतों और अदालतों वग़ैराको कुछ अरसेके लिए खिलौनोंकी शक़लमें आपके हाथोंमें रहने देंगे, किन्तु ज्यों ही वे अपनी तैयारियाँ पूरी कर लेंगे, अपनी बदलेकी मशीनको पूरे ज़ोर-शोरके साथ हमारे .ख़िलाफ़ चला देंगे। इस तरीक़ेसे हिन्दुस्तानको आज़ादी नहीं मिलनेवाली है। हम इसको दुहराने न देंगे।

"आज आपको अकेले ब्रिटेनसे ही नहीं, तीन बड़े राष्ट्रोंसे निपटना पड़ेगा। आप उनके ही हथियारोंसे उनके साथ सफल लड़ाई नहीं लड़ सकते। आख़िर आप परमाणु बमसे आगे तो नहीं जा सकते। जब तक हम हर क़िस्मके साम्राज्यवादसे लड़नेके लिए हिंसक विद्रोहके पुराने तरीक़ेके बजाय कोई नया तरीक़ा ईजाद न करेंगे, तब तक दुनियाकी पीड़ित जातियोंके लिए कोई उम्मीद नहीं हो सकती।

"किसीको रूसके उदाहरणसे .गुमराह नहीं होना चाहिये। हमारी परम्परा रूससे बिलकुल जुदी है। हमारे इतिहासकी भूमिका भी अलग तरहकी है। रूसमें सारी जनताके पास हथियार थे; हिन्दुस्तानकी जनताको आवश्यक शिक्षण दिया जाय, तो भी वह हथियार नहीं उठायेगी। किन्तु यह सोचना बेकार है कि हमारे शासक हमको ऐसा शिक्षण देने देंगे, जब कि उन्होंने एक ही प्रहारसे जापान जैसे पहले दर्जेके फ़ौजी राष्ट्रको बेहथियार बना दिया है। आज जापान अपने विजेताओंके पाँवोंमें ढेर होकर पड़ा है। किन्तु अहिंसामें हार है ही नहीं। हाँ, यह ज़रूर है कि अहिंसा असली होनी चाहिये; दिखावटी नहीं। अगर इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरहकी अहिंसाका अकेला मैं ही एक प्रतिनिधि बच रहूँ, तो भी मुझे कोई अफ़सोस न होगा।"

मित्रोंने कहा: "हमने जो कुछ किया और भुगता उस सबके बाद हमें यह शङ्का होने लगी है कि हमारी शक्तियाँ ठीक दिशामें खर्च हुई हैं या नहीं? कहीं आम जनताकी जागृतिको ग़लत दिशामें तो नहीं ले जाया गया? मगर क्या अहिंसक बग़ावत 'सत्ता हथियानेका' कार्यक्रम नहीं है?"

"इसीमें तो भ्रम है।" गांधीजीने उत्तर दिया। "अहिंसक क्रान्ति 'सत्ता हथियाने'का कार्यक्रम नहीं है। यह सम्बन्धोंको बदलनेका कार्यक्रम है। उसके आख़ीरमें सत्ताका शान्तिपूर्वक बदलाव होता है। मैंने कांग्रेस-महासमितिकी बम्बईवाली बैठकके अपने भाषणमें जो पाँच उपाय बताये थे, यदि लोगोंने पूरी तरह उन पर अमल किया होता और अहिंसाका पूरा वातावरण रहा होता, तो सरकारकी दमन करनेकी ताक़त कुण्ठित हो जाती और उसे राष्ट्रीय माँगको मानना पड़ता।

"अगर विदेशी चढ़ाईके प्रभावसे या ऐसे ही और किसी कारणसे शासक-सत्ता हट जाय और उसकी जगह खाली हो जाय, तो कुदरती तौर पर लोगोंका संगठन उसकी जगह ले लेगा, किन्तु ऐसी 'जातीय' सरकारकी पीठ पर अपने आदेश मनवानेके लिए अहिंसा और लोगोंकी सेवाके अलावा और कोई बल न होगा। वह दबावसे हरगिज़ काम न लेगी। उसके मातहत ख़िलाफ़ राय रखनेवालोंकी भी पूरी रक्षा की जायगी।"

अहिंसक तरीक़ा दबावके तरीक़े के मुक़ाबलेमें कितना अधिक कारगर होता है, इसकी मिसालके तौर पर गांधीजीने बारडोलीका ज़िक्र किया। मिदनापुरमें शुरू-शुरूमें लोग सत्ताके कुछ चिह्नों पर क़ब्ज़ा करनेमें कामयाब हुए, मगर वे अपनी सफलताके नतीजोंको बरक़रार न रख सके। किन्तु बारडोलीमें सत्याग्रही अपनी लड़ाईके फ़ायदोंको पूरी तरह क़ायम रख सके। "इसके अलावा," गांधीजीने कहा: "आप देख चुके कि आपकी सारी बहादुरी भी स्त्रियोंकी बेइज़्ज़तीको न रोक सकी। यह तो नाक़ाबिले बरदाश्त है। स्त्रियोंकी ओर बुरी निगाह डालनेकी किसीकी हिम्मत न होनी चाहिये। इसके लिए ऊँची क़िस्मकी बहादुरीकी यानी अहिंसक वीरताकी ज़रूरत होगी, जो मौतको भी चुनौती दे सके और जिसके ख़िलाफ़ आक्रमणकारीकी ताक़त कामयाब न हो सके। मैं ऐसी वीरता सिखानेकी कोशिश कर रहा हूँ। इसमें वक़्त लग सकता है। लाखों-करोड़ों आदमियोंमें इस तरहकी श्रेष्ठ वीरता पैदा करनेमें काफ़ी वक़्त लगेगा। इस क़िस्मकी अहिंसा कभी अमलमें आयेगी या नहीं, यह मैं नहीं जानता, किन्तु आप लोगोंको, जिन्होंने इन कई वर्षोंसे अहिंसाकी शिक्षा पाई है, यह समझना चाहिये कि आपको अहिंसाका वह सब चमत्कार दिखाना है, जो उसमें छिपा है।"

कांग्रेस-कार्यकर्त्ताओंने यह जानना चाहा कि वे ठीक दिशामें किस प्रकार काम शुरू करें। गांधीजीने जवाबमें उनके सामने चर्खा पेश किया, जो १८ सूत्रोंवाले रचनात्मक कामका प्रतीक और मध्य सूर्य है। सामाजिक एकता और अहिंसक संगठन क़ायम करनेका यह सबसे अच्छा तरीक़ा है। अहिंसक तरीक़ेकी यह विशेषता है कि वह बुराईके साधनको अकेला डाल देता है और उसकी ताक़त छीन लेता है। अहिंसा पर बनी हुई 'जातीय' सरकार सरकारी नौकरोंको क़ैद नहीं करेगी, किन्तु उनको इस तरह अलग-थलग डाल देगी कि या तो उन्हें लोगोंके साथ मिल जाना पड़ेगा या विदेशी सरकारके आदेशोंका ख़ालिस बर्बरतासे पालन करना होगा। इस बर्बरतासे वे जल्दी ही थक जायेंगे। यहाँ तक कि उनके रिश्तेदार और प्रिय जन भी उन्हें छोड़ देंगे। "इसका आधार यह है कि जनताके किसी भी वर्गको दूसरेके हाथों अन्यायका शिकार न होना पड़े। 'जातीय' सरकारमें छुआछूत, शोषण और साम्प्रदायिक मनमुटावके लिए कोई गुंजाइश नहीं हो सकती, वरना वह एक ऐसा संगठन होगा, जिसके हिस्से आपसमें ही टकराते हों। ऐसी सरकार ख़त्म हुए बिना न रहेगी।"

सेवाग्राम, ९-२-'४६

('हरिजन'से)

प्यारेलाल

गांधीजीका बयान

गांधीजीने अख़बारोंके लिए नीचे लिखा बयान दिया है:

"अनाजकी जो हालत पैदा हो गई है, उसके कारण वाइसरायके ख़ानगी मंत्रीको मेरे पास आना पड़ा। मेरे लिए अगले कई दिनों तक सभाओं और मुलाक़ातोंका कार्यक्रम तय हो चुका था। उन्हें मैं टाल नहीं सकता था। फिर, मैं हवाई जहाज़ से सफ़र करना जानता नहीं और उम्मीद रखता हूँ कि शायद मुझे ऐसा करना भी न पड़े। इसलिए वाइसरायके अनुरोधभरे बुलावेके जवाबमें मैंने यह चाहा कि वह मेरे पास किसीको भेज दें, जो उनकी ओर से बात कर सके। इस तरह वाइसरायके ख़ानगी मंत्री कल आये। सिर्फ़ अनाजकी हालतके कारण ही वह मेरे पास आये थे। क्या मैं इस बारेमें कोई ऐसी बात कह सकता हूँ, जो इस सवालको राजनीतिके दायरेसे अलग रख सके और सरकारके इरादों और नीतिके बारेमें जो आम अविश्वास पाया जाता है, उसका इस पर कोई असर न पड़े? इस मामलेमें देरकी गुंजाइश नहीं हो सकती, इसलिए मैंने जो कुछ कहा उसका सार यहाँ दे रहा हूँ।

जहाँ तक कांग्रेसका ताल्लुक़ है, वाइसरायको चाहिये कि मौलाना आज़ादको बुलायें और अगर वह न आ सकें, तो उन्हें अपना नुमाइन्दा भेजनेके लिए कहें। मैं ख़ुद यह महसूस करता हूँ कि मौजूदा ग़ैर-ज़िम्मेदार कार्य-कारिणी कौंसिल की जगह फ़ौरन ज़िम्मेदार कौंसिल बनाई जानी चाहिये और उसके सदस्य केन्द्रीय धारासभाके चुने हुए सदस्योंमें से लिये जाने चाहियें। मेरा यह भी ख़याल है कि इस ज़िम्मेदारीको केन्द्रीय धारासभाके चुने हुए सदस्योंको पार्टियोंका विचार न करते हुए लेना चाहिये, कारण कपड़े और अनाजके अकालका ख़तरा देशके करोड़ों लोगोंको समान रूपसे है। सरकार इस सुझावको स्वीकार करेगी अथवा नहीं, और केन्द्रीय धारासभाकी विविध पार्टियाँ उसको व्यावहारिक मानेंगी या नहीं, यह मैं नहीं कह सकता। किन्तु बिना किसी खण्डनके डरके एक बात तो मैं कह ही सकता हूँ। मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं कि अगर व्यापारी-समाज और अधिकारी-जगत् ईमानदार बन जाय, ख़ासकर आनेवाले सङ्कटका सामना करनेके लिए, तो हमारा देश इतना बड़ा है कि बाहरी दुनियासे मदद न मिलने पर भी हम मुश्किलोंमेंसे पार हो जायँगे, क्योंकि बाहरी दुनिया तो ख़ुद ही कष्टसे कराह रही है।

अनाज और कपड़ेके व्यापारियोंको संग्रह नहीं करना चाहिये; उन्हें सट्टा भी नहीं करना चाहिये। जहाँ भी पानी हो या मुहय्या किया जा सकता हो, वहाँ खेतीके लायक़ सारी ज़मीनमें अनाज पैदा किया जाना चाहिये। फूलोंके बगीचोंमें अनाजकी फ़सलें उगाई जानी चाहिये। लड़ाईके ज़मानेमें ऐसा किया गया है। मौजूदा ज़माना कुछ दृष्टियोंसे लड़ाईकी बनिस्बत भी ज़्यादा ख़राब है। इससे पहले कि हम अपनी बचतका नाज खा-पका जायँ, हमको कंजूसोंके जैसी किफ़ायतशारीसे काम लेना चाहिये। सब क़िस्मके सामाजिक उत्सव या आयोजन बन्द कर दिये जाने चाहियें। औरतें अपनी घर-गृहस्थीमें किफ़ायत करके मौजूदा सङ्कटको कम करनेमें बड़ा हिस्सा ले सकती हैं। सरकारका रूप कैसा भी हो, अगर वह लोगोंके काममें दख़ल न दे, तो हम बिना सरकारकी मददके अपने रोज़मर्राके दसमेंसे नौ कामोंका इन्तज़ाम ख़ुद कर सकते हैं।

घबड़ाना तो हमको हरगिज़ न चाहिये। मौतके आनेसे पहले ही हमें मरनेसे इनकार कर देना चाहिये। हमें हिन्दुस्तानके नर-कंकालोंकी बात सोचनी चाहिये, और सोचना चाहिये कि हम उनकी क्या मदद कर सकते हैं। फिर तो हमारे देशका भला ही होगा। हम इस ख़यालके शिकार न बनें कि चूँकि हम ख़ुद मौजसे रह सकते हैं, इसलिए हमारा पड़ौसी भी उसी तरह रह लेता होगा।

मैं जानता हूँ कपड़ेका अकाल तो एक मज़ाक ही है, क्योंकि अगर मिल-मालिक और सरकार ईमानदारी और समझदारीसे काम लें, तो कपड़ेके बिना किसीको नंगा न रहना पड़े। हमारे पास काफ़ी रुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और काफ़ी आदमी बेकार हैं और कारीगरीकी भी कमी नहीं है। फिर हम कैसे अपनी ज़रूरतका कपड़ा देहातमें पैदा न कर सकेंगे ?"

[नोट — पाठक यह जान लें कि उस दिन गांधीजीका मौनदिन था, इसलिए उन्होंने अपने सब जवाब लिखकर ही दिये थे। सं०]

('हरिजन'से)

महादेवभाई और 'हरिजन'

'हरिजन' तीन सालसे कुछ ज़्यादा वक़्तके बाद शुरू हुआ है। ये साल ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाओंसे भरे पड़े हैं कि एक युग-से मालूम होते हैं। जिस अडिग हिम्मतके साथ लोगोंने रंजो-मुसीबतका सामना किया उसे देखकर दिलमें आशा और सराहनाके भाव भर जाते हैं। कोई ताज्जुब नहीं कि गांधीजी और हमारे दूसरे सभी नेता कह रहे हैं कि आज़ादी बहुत नज़दीक है। आज़ादी नज़दीक है, किन्तु उसको नज़दीक लानेमें मदद देनेवाले बहुतसे चल बसे हैं। श्री महादेव देसाई उनमेंसे एक थे। हमको सिखाया गया है कि इस तरहकी क़ुरबानियाँ हिन्दुस्तानकी आज़ादीके दिनको नज़दीक लाती हैं, और इसी श्रद्धाने मित्रों और सम्बन्धियोंको इस हानिको बहादुरीसे सहन करनेकी ताक़त दी है।

महादेवभाई अक्सर गांधीजीके साथ अपने शुरूके अनुभवोंकी रोमांचकारी कहानियाँ कहा करते थे। उस समय वह अकेले ही गांधीजीके निजी सहायक थे। 'हरिजन'की शुरुआतके समय भी वह गांधीजीके अकेले ही सहायक थे। वे उस समय यरवड़ा जेलमें थे और महादेवभाईने मुझसे कहा था कि किस तरह उन्होंने अपनी ज़बानी याददाश्तसे एक हज़ार पतों पर 'हरिजन' अकेले हाथों रवाना किया था। हालाँकि शुरूमें गांधीजी 'हरिजन'के सम्पादक थे, किन्तु सन् १९३३ में, जबसे 'हरिजन' निकलने लगा तबसे लगाकर अन्तमें अगस्त १९४२ तक शायद 'हरिजन'का एक अङ्क भी ऐसा नहीं मिलेगा, जिसमें महादेवभाईकी क़लमसे लिखी बढ़िया और महत्त्वपूर्ण सामग्री न हो। बीमारीके बिछौने परसे भी उनके लेख आया करते थे। उनकी क़लममें इतना प्रवाह था कि गांधीजी जितना भी चाहते, कम या ज़्यादा लिख सकते थे। शेषकी पूर्ति महादेवभाई कर लिया करते थे। और ऐसा वह जैसे-तैसे न करते थे। गांधीजीने और जनताने यह मान लिया था कि उनकी व्याख्या कितनी सही होती है। उनकी लिखी चीज़ें गांधीजीके बराबर ही प्रामाणिक मानी जाने लगी थीं। यही कारण है कि जब गांधीजी सन् १९३५ में बीमार पड़ गये थे, तो उन्होंने महादेवभाईको 'हरिजन'का सम्पादक बना दिया था।

हममेंसे बहुतोंके लिए बरसों तक महादेवभाईकी लेखनीके साथ 'हरिजन'का उतना ही सम्बन्ध हो गया था, जितना गांधीजीकी लेखनीके साथ। मुझे याद है कि एक बार महादेवभाई अपनी चप्पलें गांधीजीकी कुटियाके सामने छोड़कर चले गये थे। उन चप्पलों पर 'एम० डी०' अक्षर खुदे थे। सरदारने अपने ख़ास विनोदपूर्ण ढंगमें महादेवभाईकी ख़बर ली: "महादेव, अपनी चप्पलें वहाँ न रक्खा करो। कोई उन्हें नई क़िस्मका 'हरिजन' समझ लेगा।" 'एम० डी०' 'हरिजन'का प्रतीक बन गया था।

महादेवभाई खूब पढ़नेवाले थे। उनकी यह बुरी आदत थी कि बिछौने पर पड़नेके बाद बिना पढ़े उन्हें नींद न आती थी। किन्तु वह काममें इतने डूबे रहते थे कि जो-कुछ पढ़ते थे, सो 'हरिजन'के लिए अच्छी सामग्री ढूँढनेकी ख़ातिर। उनकी मौतके क़रीब आध घण्टे पहले तक उनके हाथमें जो आख़िरी किताब थी, वह एण्ड्री मॉरिसकी 'जीवनकला' नामक पुस्तक थी। यह उपरोक्त कथनका प्रमाण है। इस पुस्तकके हाशिये पर महादेवभाईके हाथके कई नोट हैं और पैरों पर जहाँ-तहाँ निशान लगे हैं।

महादेवभाईकी हानि ऐसी है, जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती। 'हरिजन'के फिरसे शुरू होने पर वह और भी ज़्यादा महसूस हो रही है।

सेवाग्राम, ९-२-'४६ ('हरिजन'से)

सुशीला नय्यर

टिप्पणियाँ

विद्यार्थी-जीवन

लाहौर और लखनऊके अख़बारोंसे ख़बर मिली है कि वहाँ विद्यालयोंके लड़कोंमें मार-पीट हुई। झगड़ेका कारण झंडा फहराना था। कांग्रेसके प्रेमियोंको तिरंगा झंडा फहराते देख लीगके प्रेमियोंने लीगका झंडा फहराया। कांग्रेसके प्रेमी इसे सहन न कर सके, और मार-पीट हुई। यह प्रकरण यदि दुःखद नहीं, तो हास्यजनक है। सौभाग्य से लाहौरमें मौलाना साहब मौजूद थे। उनके पास यह ख़बर पहुँची। उन्होंने फ़ैसला दिया कि विद्यार्थियोंको इस तरह तिरंगा झंडा फहरानेका कोई हक़ न था। इस तरह उस समय तो झगड़ा मिट गया। मगर झगड़ेकी जड़ तो रही। जड़में तो अराजकता, अनाचार और स्वेच्छाचार है। विद्यालयोंके मकान विद्यार्थियोंके नहीं होते। मकान तो मालिकोंके हैं। झंडा फहरानेका अधिकार भी मालिकोंको ही है। विद्यार्थियोंको इसमें हस्तक्षेप करनेका कोई अधिकार नहीं।

और इस तरह झगड़ा खड़ा करना विद्यार्थी-जीवनके लिए शर्मकी बात है। विद्यालय तो संयम, सभ्यता, एकता, और सद्व्यवहार सीखनेका स्थान है। वहाँ तो पहला पाठ नियमन पालनेका होना चाहिये। ऐसा न हो, तो वहाँका विद्याभ्यास निरर्थक चीज़ है।

('हरिजन-बंधु'से)

मो० क० गांधी

सच है, तो गुनाह है

कर्नाटकसे यह ख़बर आई है:

"ता० १-२-'४६ को १० बजे सुबह, जब कि कर्नाटक प्रान्तीय कांग्रेस-पार्लमेण्टरी-बोर्डकी सभा हुबलीमें हो रही थी, २० से २५ सज्जन बिना सभापतिकी इजाज़तके ज़बरदस्ती हॉलमें घुस गये। उन्होंने बोर्डकी सभासे कहा कि वे उसके सामने अपनी फ़रियाद रखना चाहते हैं। बोर्ड कुछ ज़रूरी काम करनेके लिए बैठा था। सभापतिने कहा: "आप लोगोंको तो कल काफ़ी वक़्त दिया गया था, अब चूँकि हमारे सामने और ज़रूरी काम हैं, हम आपको तीसरे पहर ही समय दे सकेंगे।" इसके जवाबमें इन सज्जनोंने कहा कि हमारे पास कुछ और महत्त्वकी बातें हैं, जिन्हें हम पेश करना चाहते हैं, और हठ किया कि बोर्डको वे बातें फ़ौरन ही सुननी होंगी। सभापति ने उन्हें समझाया कि उनका यह तरीक़ा सभ्यता और नियमनके विरुद्ध है और अगर वे नहीं जायँगे, तो सभापतिको ख़ुद वहाँसे चला जाना पड़ेगा। लेकिन जब सभापतिकी उन्होंने एक न सुनी, तो वह जानेके लिए खड़े हो गये। ऐसा होते ही एक आदमीने उन्हें ज़बरदस्ती बैठानेकी कोशिश की। दूसरे ने उनके हाथसे दफ़्तरकी फ़ाइलें छीन लीं। तीसरेने श्री दिवाकरके सर पर छतरीसे हमला किया। इतनेमें और लोग मदद पर आ गये और शांति स्थापित की।"

अगर यह सब सच है, और ऐसा ही रहा, तो कांग्रेस-संस्थाके टुकड़े-टुकड़े हो जायँगे। आतंककी छायामें कोई भी संस्था क़ामयाबीके साथ नहीं चल सकती। इस मौक़े पर क़सूर किसका था, इस सवालमें मैं यहाँ जाना नहीं चाहता। इसका फ़ैसला तो कांग्रेसकी कार्य-समितिको ही करना होगा। जो हुआ, वह न केवल सभ्यता और नियमनके ख़िलाफ़ है, बल्कि स्पष्ट ही अहिंसाके भी ख़िलाफ़ है। फिर, धारासभामें दाख़िल होनेके लिए आजकल जो अनुचित उत्सुकता लोगोंके दिलोंमें पैदा हो गई है, यह घटना उसकी सूचक है। यह उत्सुकता बताती है कि लोग धारासभामें दाख़िल होनेके मुख्य हेतुको भूले हुए हैं।

९-२-'४६ ('हरिजन'से)

मो० क० गांधी

ग्राहकोंसे

अपने ग्राहक नंबरके साथ बदले हुए पतेकी सूचना हमारे पास देर में देर गुरुवार तक पहुँच जानी चाहिये। इसके बाद मिलनेवाली सूचना पर तुरन्त अमल नहीं किया जा सकेगा।

एजण्टोंसे

'हरिजन-सेवक'के लिए कम या ज़्यादा प्रतियोंकी माँग गुरुवार तक यहाँ पहुँच जानी चाहिये। गुरुवारके बाद आई हुई माँग पर अगले हफ़्ते ही अमल किया जा सकेगा।

व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहनोंके बारेमें

गौहाटी आसामका प्रवेश-द्वार है। वहाँ हम एक आश्रममें ठहरे थे। आश्रम शहरसे कुछ मीलकी दूरी पर सरनिया नामक एक छोटे गाँवमें हाल ही शुरू किया गया है। वह ज़रा ऊँची जगह पर है और उसके सामने एक छोटा-सा देहात पड़ता है। आस-पासके दृश्य दिलको लुभानेवाले हैं। पेड़ छाया देते हैं और उनकी कतारों पर कतारें लगी हुई हैं। समय पाकर यह एक अच्छा बग़ीचा बन जायगा। गांधीजीके लिए बाँसकी चटाईकी कुटिया बनाई गई थी। इस अस्थायी कुटियाको स्थायी बना दिया जायगा। एक सीधी-सादी पक्की इमारत भी खड़ी हो चुकी है, जिसमें एक रसोईघर और बरामदा भी है। गौहाटीके डॉक्टर दासकी पुत्री अमलप्रभादेवीने अपना जीवन देहातियोंकी सेवामें लगा देनेका फ़ैसला किया है। उन्होंने शादी करनेसे इनकार कर दिया है। अधिकांश माता-पिताओंकी तरह उनके पिता उनकी सेवा करनेकी इच्छाके मार्गमें बाधक नहीं हैं, बल्कि जहाँ तक हो सकता है, उनकी मदद करते हैं। उनके पास तीन देहाती लड़कियाँ हैं, जिन्हें वह शिक्षा दे रही हैं। उनकी एक डॉक्टर बहन हैं, जो ज़रूरत पड़ने पर उनकी मदद करती हैं। जब तक हम वहाँ रहे, हमारे खाने-पीनेका प्रबन्ध इन बहनके ज़िम्मे था। खाना सादा होता था और सफ़ाईसे परोसा जाता था। जिन पर परोसगारी होती थी, वे ऐसे दीखते थे मानों सफ़ेद संगमरमरके टुकड़े हों, किन्तु दरअसल वे केलके पत्तोंके टुकड़े थे, जिन्हें सफ़ाईसे काटकर धो लिया जाता था। पासके दो गाँवोंसे बढ़िया दूध मँगवा लिया जाता था और सीधे-सादे तौर पर तैयार की गई सब्ज़ी, चावल या रोटी, पालक, टमाटर, कच्चे प्याज और सन्तरा वग़ैरावाली पूर्ण पोषक ख़ुराक हमें दी जाती थी। जैसा कि अक्सर मेहमानोंके आने पर होता है, वहाँ न तो फ़िजूलखर्ची थी और न अनावश्यक भरमार। जब तक हम ठहरे, वहाँ दर्शकोंकी भीड़भाड़ रही, मगर मामूली तौर पर वह एक शान्त स्थान है और आस-पासके वन-प्रदेशकी स्वाभाविक सुन्दरता और दूरके पहाड़ी दृश्योंसे काफ़ी प्रेरणा ली जा सकती है। देहातमें रहनेवाली स्त्रियों और बच्चोंकी सेवाके लिए अमलप्रभादेवी सरीखी साहसी और सेवाभावनावाली और भी युवतियोंकी ज़रूरत है।

श्री दुर्गाबाई एक अथक काम करनेवाली बहन हैं। उन्होंने हाल ही में ज़मीन प्राप्त करके मद्रास शहरमें एक इमारत बनवाई है, जिसमें लड़कियोंका छात्रावास रहेगा। हम सब जानते हैं कि लड़कियोंके लिए, चाहे वे शहरोंकी रहनेवाली हों या आसपासके देहातकी, ऐसे आश्रय-स्थानोंकी कितनी भारी ज़रूरत है। अवश्य ही इस छात्रावासमें सब जातियों और धर्मोंकी लड़कियाँ दाखिल की जायँगी। सदियों पुराने पक्षपात और छुआछूतके अभिशापको मिटानेके लिए इस तरहकी आम संस्थायें एक बड़ा साधन होती हैं।

बुढ़ापेके बावजूद और आँखोंकी ज्योतिके कम होते जाने पर भी डॉ० मुथुलक्ष्मी निराश्रित लड़कों और लड़कियोंको, ख़ासकर पतित जीवन बितानेवाली स्त्रियोंके बच्चोंको, बचानेका अपना जीवन-व्यापी काम किये जा रही हैं। इस समय उनके अडियारके गृहमें बर्मासे आये हुए कई बालक हैं। उनमें ज़्यादातर तामिल हरिजन हैं। बच्चोंका यह सौभाग्य है कि उन्हें डॉ० मुथुलक्ष्मी जैसी माँ मिली हैं। वह चाहती हैं कि कुछ काम करनेवाली बहनें उन्हें मिलें, जो उनके बोझको हलका कर सकें; किन्तु अफ़सोस यही है कि सख्त ज़रूरत होने पर भी ऐसी बहनें मिल नहीं रही हैं।

डॉ० मुथुलक्ष्मीके गृहके नज़दीक ही डॉ० सुंदरम् रामचन्द्रन्का प्रसूतिगृह और शिशु-हितकारी स्वास्थ्य-केन्द्र है। ऐसे स्थान और जगहोंमें भी बनने चाहिये। यहाँ अनेक ग़रीब स्त्रियाँ और बच्चे आते हैं, जिन्हें देखा-भाला जाता है और दवा-दारू दी जाती है। यहाँ रोगियोंको पूरे समयके लिए रखनेका भी प्रबन्ध है। स्वेच्छासे, निजी ज़िम्मेदारी पर शुरू किये गये कामोंमें, जैसा कि आम तौर पर होता है, अधिकतर व्यवस्था कामचलाऊ होती है। और उनमें अधिक कमरों, अधिक दवाइयों और दूसरी चीज़ोंकी ज़रूरत बनी ही रहती है। अगर हमारी अपनी सरकार होती, तो ऐसी संस्थाओंको किसी बातकी कमी न रहती। आज तो राष्ट्रीय पक्षकी हर कोशिशको शककी निगाहसे देखा जाता है और यदि उसका अमली विरोध न भी हो, तो उसको आम तौर पर अपनी फ़िक्र ख़ुद ही करनेके लिए अकेला छोड़ दिया जाता है।

आसाममें साल और बाँसके सुहावने जंगल हैं। विशाल ब्रह्मपुत्र बहती है, जिसके दोनों ओर हरी-भरी पहाड़ियाँ हैं। ब्रह्मपुत्रके शांत भावसे बहनेवाले जल पर उगता और डूबता हुआ सूरज इतना सुन्दर मालूम होता है कि जिसका बयान नहीं किया जा सकता। इन दृश्योंको देखकर लोगोंकी ग़रीबी और गन्दगीकी बात थोड़ी देरके लिए भूल-सी जाती है। तामिलनाड्की स्त्रियोंकी रंग-बिरंगी भीड़को देखकर भी मन मुग्ध हो जाता है। मैंने इस प्रकारका जनसमूह पहले कभी नहीं देखा, जैसा हालके दौरेमें गांधीजीके दर्शनोंके लिए हर जगह इकट्ठा होता था। और निश्चय ही इतनी औरतोंको तो मैंने कभी न देखा था, जो धूपमें या सर्दियोंकी ठिठुरानेवाली रातमें बिना चूँ-चरा किये खड़ी रहती थीं। राजाजीने एक दिन अपने ख़ास विनोदी ढंगमें गांधीजीसे कहा: "आपने इन औरतों पर क्या जादू कर दिया है कि ये भारी भीड़में अपनी जानोंको जोखममें डालनेको उतारू हो गई हैं?" दोनों ठहाका मारकर हँस पड़े। इसमें कोई शक नहीं कि औरतोंमें जागृति हुई है। इस बार हमको उसका लाभ उठाना चाहिये, ताकि हम उसे ठीक दिशामें ले जा सकें।

भीड़के स्त्री-विभागमें जो रंग-वैचित्र्य देखनेको मिला, वह आश्चर्य-जनक था। धूपमें बैठी हुई वे ऐसी लगती थीं, मानों तरह-तरहके फूलोंका खेत लहरा रहा हो। मैं नहीं समझती कि मैंने हिन्दुस्तानके किसी दूसरे हिस्सेमें पुरुषोंको रंगीन धोतियाँ पहने देखा हो। यह सब रंग-बिरंगापन हमारी उस प्रसन्नता और प्रफुल्लताकी विरासत है, जो कभी हमको प्राप्त थी। हमको अथक मेहनत करके आजके देहाती जीवनके रूखे-सूखेपनको प्रत्येक क्षेत्रमें फिरसे हरा-भरा बनाना है।

वह एक बहुत ही करुणा दृश्य होता था कि जब रेलगाड़ी धीरे-धीरे स्टेशनके बाहर निकलती थी और गांधीजी जिस खिड़कीके पास बैठे होते थे, उसके पास-पास छोटे-छोटे बच्चे दौड़ते थे और अपने खाली मुँह और भूखे पेटोंका प्रदर्शन करते थे। हम आशा करें कि हमको बंगाल जैसे एक और संकटका सामना न करना पड़ेगा।

सेवाग्राम, ११–२–'४६

('हरिजन'से) अमृतकुँवर

ग्राहकों और एजण्टोंसे

ड्राफ्ट और पोस्टल ऑर्डर **व्यवस्थापक, हरिजन-सेवक**के नाम भेजें, किसी व्यक्तिके नाम नहीं। पोस्टल ऑर्डर इस तरह भेजें कि उसका रुपया **अहमदाबाद पोस्ट ऑफिस**से मिल सके।

हमारी बम्बई (१३०, प्रिन्सेस स्ट्रीट), पूना (२९९, सदाशिव पेठ), सूरत (कणपीठ बाज़ार) और राजकोट (सर लाखाजीराज रोड)की शाखाओंके सिवा दूसरे किसी व्यक्ति, संस्था या एजण्टको हमारी तरफ़से चन्दा वसूल करनेका अधिकार नहीं दिया गया है।

एजण्ट कृपया इस बातका ध्यान रक्खें कि **हरिजन-सेवक**की प्रतियों पर छपी क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत वे ले नहीं सकते। अगर यह नियम तोड़ा गया, तो उनकी एजन्सी रद कर दी जायगी। खरीदारोंसे प्रार्थना है कि वे छपी हुई क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत न देकर हमारे साथ सहयोग करें और अगर कोई ज़्यादा क़ीमत माँगे, तो हमें उसकी इत्तिला करें।

नमूनेकी प्रतिके लिए तीन आनेके डाकटिकट भेजने होंगे।

व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वेषको कैसे मोड़ें?

Reg. No. B 4448

हरिजन-सेवक

दो आना

संपादक : प्यारेलाल

भाग १०] [अङ्क ३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २४ फरवरी, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३.

विषय-सूची

		पृष्ठ
राजाजीके बारेमें	... गांधीजी	१७
उफ़! यह हमारी अंग्रेज़ी!!!	... गांधीजी	१७
काम-काजके बीच	... प्यारेलाल	१८
द्वेषको कैसे मोड़ें?	... गांधीजी	२०
सवाल-जवाब	... गांधीजी	२१
इतना तो करें ही	... गांधीजी	२२
नासमझ बरबादी	... गांधीजी	२३
१२५ सालकी उमर	... गांधीजी	२३
साप्ताहिक पत्र	... प्यारेलाल	२४
ईश्वरका अर्थ	... गांधीजी	२४
टिप्पणियाँ		
एक विनती	... मो० क० गांधी	२१
लोक-सेवक और थैलियाँ	... मो० क० गांधी	२१
बेकार खर्च	... अ० कुँ०	२१
तारीफ़के लायक़	... अ० कुँ०	२०
मुर्दार और ज़िन्दा सूत	... विनोबा	१९

राजाजीके बारेमें

मैंने श्री कामराज नादारका अखबारोंको दिया बयान पढ़ा है। मुझे अफ़सोस है। मैं आसानीसे चुप रह सकता था, किन्तु उससे कामको नुक़सान पहुँच सकता है। वह कहते हैं कि वह मेरे अनुयायी हैं। उस हालतमें उनको अखबारमें अपना बयान छपानेसे पहले और निश्चय ही इस्तीफ़ा देनेके पहले मुझसे पूछना चाहिये था। मैंने इरादतन् अपनेको 'भंगी' कहा है। आदमीने समाजकी जो सीढ़ियाँ बना रखी हैं, उनमें मैं नीचे-से-नीचे रहना चाहता हूँ। मैं श्री कामराजसे चाहूँगा कि वह नादार न रहें और मेरे साथ भंगी बन जायँ, और पूरी विनयके साथ अपना इस्तीफ़ा वापस ले लें। कांग्रेस-विधानके अनुसार ऐसा किया जा सकता है या नहीं, इसका फ़ैसला तो प्रान्तीय और अखिल भारतीय कार्यकारिणी समितियाँ ही कर सकती हैं। अगर वह समझते हों कि इस्तीफ़ा देकर उन्होंने अपनी और कामकी हानि की है, तो नैतिक दृष्टिसे इस्तीफ़ा वापस लेनेमें कोई रुकावट नहीं हो सकती। उस हालतमें, अगर विधानके मुताबिक़ वैसा मुमकिन हो, तो वह एक मज़बूत आदमीकी हैसियतसे उस मुश्किल ओहदेको फिरसे सँभाल लेंगे। इस्तीफ़ा देकर उन्होंने कमज़ोरी दिखाई है। वह कहते हैं कि उन्होंने चार दूसरे साथियोंको इस्तीफ़ा नहीं देने दिया। यह अच्छा हुआ कि उन्होंने इस्तीफ़े नहीं दिये।

'क्लीक' यानी गुट्ट शब्दके इस्तेमाल पर इतनी परेशानी क्यों? अंग्रेज़ी ज़बानके अपने सारे प्रेमके बावजूद वह मेरे लिए एक विदेशी ज़बान है और मैं उसके शब्दोंका इस्तेमाल करनेमें ग़लती कर सकता हूँ। बेशक मैंने 'क्लीक' शब्दका जान-बूझकर इस्तेमाल किया है। मैं उसको वापस नहीं लूँगा। शब्दकोषमें उसका यह मतलब दिया गया है: 'एक छोटा खास दल'। मैं जानता हूँ कि तामिलनाडमें राजाजीके खिलाफ़ ऐसा एक दल या गुट्ट है। मैं उसके किसी एक आदमीका निश्चयके साथ नाम नहीं ले सकूँगा। किसीको भी 'चोरकी दाढ़ीमें तिनका' वाली मिसाल साबित न करनी चाहिये। दुनियाके अच्छे-से-अच्छे संगठनोंकी तरह कांग्रेसमें भी कई छोटे-छोटे दल हैं। ऐसे दलोंकी तादाद जितनी ही कम होगी, उतना ही उस संगठनके लिए अच्छा होगा।

दक्षिणके मेरे उस दौरेमें मुझे वह चुनौती न दी गई होती, तो मैं चुप ही रहा होता।

मुझे मानना पड़ेगा कि स्पेशल रेलगाड़ीमें मेरे साथ जो लोग थे, उनसे मैंने बातचीत नहीं की। मैं काममें डूबा हुआ था। ठहरनेके मुक़ामों पर सभाओंमें जाना पड़ता था और चलती रेलगाड़ीमें लिखना पड़ता था। जनता यह जान ले कि जो लोग रात-दिन मेरे साथ ही रहते हैं, उन्हें भी इतनी सब्रसे काम लेना पड़ता है कि वे नज़दीक आकर मेरे काममें रुकावट नहीं डालते। मेरे तूफ़ानी जीवनमें ऐसा ही होता आया है। मैं अपने ख़ुदके बच्चोंको भी बहुत थोड़ा वक़्त दे पाया हूँ। श्री अरुणा आसफ़अली इतने अरसे तक छिपी रहनेके बाद दो दिनके लिए मुझसे मिलने आई थीं; मगर उन्होंने इतनी सहनशीलता दिखाई कि मेरे घूमनेके वक़्तमेंसे जितना वह ले सकीं, उतनेसे ही उन्होंने काम चला लिया। सेवाग्राम, १५-२-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

उफ़! यह हमारी अंग्रेज़ी!!!

कितना अच्छा होता, अगर हमारे अखबार हमारी अपनी ज़बानोंमें ही निकलते होते! उस हालतमें हमारी हालत उन अन्धोंकी-सी न होती, जिनमेंसे एक हाथीकी पूँछको हाथी समझता था, दूसरा उसके दाँतोंको, तीसरा सूँड़को और चौथा पैरको! सबको अपनी अक़्लमन्दीका ग़रूर था, मगर असलमें सभी ग़लती पर थे। इसी तरह, मैंने भी अपने ग़रूरमें कहा था और फिर कहता हूँ कि राजाजीका विरोध एक गुट्ट तक ही सीमित था और है। मेरे एक बुज़ुर्ग दोस्तका और दूसरोंका कहना है कि विरोधको गुट्टका नाम देकर मैंने बड़ी ग़लती की है। मैंने जिस विशेषणका प्रयोग किया है, वह कांग्रेस-संस्थाके लिए नहीं था, न हो सकता है; फिर वह संस्था प्रान्तकी हो या अखिल भारतीय हो या और कोई हो, क्योंकि कांग्रेस तो राजाकी तरह कोई ग़लती कर ही नहीं सकती। ग़लती तो कोई गुट्ट ही आम तौर पर करता है। लेकिन इसमें शक नहीं कि मैं और मेरे टीकाकार दोनों सही हैं; अलबत्ता, अपने-अपने ढंगसे, और दोनों ग़लत भी हैं। पराई ज़बानके एक शब्दका इस्तेमाल करने पर यह इतना बड़ा झमेला खड़ा हो गया है! अगर मैंने राष्ट्रभाषामें या मेरी अपनी गुजरातीमें लिखा होता, तो हम एक शब्दके प्रयोग पर उलझे न होते। राजाजीके इस क़िस्सेको मैं यह कहकर खतम किया चाहता हूँ कि अगर मैंने गुट्ट या 'क्लीक' शब्दका ग़लत इस्तेमाल किया है, या राजाजीको ग़लत समझा है, तो इसमें किसीको मेरा अनुसरण करनेकी ज़रूरत नहीं। मेरे हाथमें कोई क़ानूनी हुकूमत नहीं। अगर मैंने ग़लत समझा या कहा है, तो इसमें नुक़सान मेरा अपना ही है, क्योंकि उससे मेरा जो नैतिक बल है, उसे मैं बहुत हद तक या कुछ हद तक खो बैठूँगा।

लेकिन अभी, इस वक़्त तो मुझे उन रिपोर्टरसे झगड़ना है, जिन्होंने गो-सेवा-संघकी सभामें दी गई मेरी तक़रीर (भाषण)का अंग्रेज़ीमें तरजुमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने की कोशिश करते हुए मुझसे, जो कुछ मैंने कहा और कहना चाहा था, उससे बिलकुल उलटी बात कहलवा दी है । जो बात सरस, कोमल, सराहनाके रूपमें कही गई थी, उसे एक कठोर कटाक्षका रूप दे दिया गया है । मैंने कहा था कि स्वर्गीय जमनालालजीकी विधवा धर्मपत्नी श्री जानकीबाई अपने स्वर्गीय पतिकी उसी तरह पहली और सच्ची उत्तराधिकारिणी हैं, जिस तरह स्वर्गीय रमाबाई अपने स्व० पति न्यायमूर्ति रानडेकी थीं । इसमें 'अगर-मगर 'का कोई सवाल ही नहीं था । श्री जानकीबाईके बाद उनके बच्चोंका नम्बर आता है । वे अपने कर्तव्यमें चूक सकते हैं । हम नहीं । क्योंकि मृतात्माकी स्मृतिका सम्मान करनेके लिए हममेंसे जो वहाँ इकट्ठा हुए थे, वे भी स्व० जमनालालजीके वारिस ही थे, बशर्ते कि हम सच्चे हों । हम अपनी इच्छासे उनके वारिस हैं, किसी रिश्तेदारीकी वजहसे नहीं । मुझे विश्वास है कि अपनी टूटी-फूटी हिन्दुस्तानीमें मैंने जो प्रशंसा कोमल भावसे की थी उसको समझनेमें श्री जानकीबहनने, उनके बच्चोंने, इस काममें लगे हुए भाइयोंने और उन सब मित्रोंने जो उस दिन वहाँ बने पण्डालमें मौजूद थे, कोई भूल न की होगी । ऊँची और समान हेतुवाली सेवाके काममें सभी कोई वारिस हैं, क्योंकि सेवाकी वपौतीका तो पार नहीं । मुझे अपने इस सन्देश पर गर्व था । मगर पराई भाषामें भेजे जानेके कारण इसका सारा मतलब ही खब्त हो गया ! अगर इसकी रिपोर्ट हिन्दुस्तानीमें ली और भेजी जाती, तो यह सीधा पाठकोंके दिल तक पहुँचा होता।

मैं उस रिपोर्टको पढ़ नहीं पाया हूँ । मैं चाहता हूँ कि उस सभामें दूसरी जो दो बातें मैंने कही थीं, उन्हें यहाँ थोड़ेमें कहकर उस रिपोर्टको पूरा कर दूँ । मवेशियोंकी हिफ़ाज़तका सवाल हिंदुस्तानका एक बड़ा सवाल है । महज़ भाषण करनेसे या पैसेसे यह हल नहीं हो सकता । यह तो तभी हल हो सकता है कि जब गो-सेवा-संघके पास बहुतसे ऐसे पशुविशारद हों, जो इस मसलेको समझते हों और इसे हल करनेमें लगे हों, और व्यापारी-समाज हो कि जो इस कामको नाम कमाने या धन कमानेका ज़रिया न बनाकर शुद्ध सेवाभावसे करे । अगर ये लोग अपनी सिद्ध बुद्धिका उपयोग पशुओंकी रक्षा करनेमें करें, तो ये हिन्दुस्तानकी बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं । इस प्रश्नकी विशालतासे उन्हें घबराना न चाहिये । हरएक आदमी सोचे कि वह क्या कर सकता है, और जो कुछ करे, पूरी तरह करे, और इसका खयाल न रक्खे कि उसके पड़ोसी या दूसरे लोग कुछ करते हैं या नहीं । इसलिए गो-सेवा-संघके केन्द्रीय दफ़्तरका यह काम है कि वह अपनी ताक़त ज़्यादा दूध पैदा करनेमें और वर्धाके हर बाशिन्देको सस्ता दूध पहुँचानेमें लगा दे । आखिर वे देखेंगे कि उन्होंने हिन्दुस्तानके मवेशियोंके सवालको हल कर लिया है ।

अन्तमें मैंने उनसे कहा कि श्री अरुणा आसफअलीने जो उलाहना उनको नेक खयालके साथ दिया है उसे वे ध्यानमें रक्खें । उनका कहना था कि कहीं अपने उपकारी इन चौपायोंका विचार करनेमें हम इनके बड़े भाई, हिन्दुस्तानके दो पैरवालोंका, यानी चालीस करोड़ हिन्दुस्तानियोंका खयाल न भूल जायँ, जिनके बिना ये चौपाये एक दिन भी जी नहीं सकते । इसलिए हरएक भले आदमीका अपने तईं और देशके तईं यह फ़र्ज़ है कि वह सिर्फ़ उतना ही खाये, जितना तन्दुरुस्तीके साथ जीनेके लिए ज़रूरी है । मौज-शौक़के लिए कोई एक कौर भी ज़्यादा न खाये । हर समझदार औरत, मर्द और बच्चेको चाहिये कि वह देशके लिए कुछ-न-कुछ उगाये, जहाँ पहले एक दाना उगता हो, वहाँ दो उगानेकी कोशिश करे । अगर सब लोगोंने सोच-समझ कर, ईमानदारीसे और मिल-जुलकर हिम्मतके साथ काम किया, तो देखेंगे कि वे आनेवाली मुसीबतका बिना किसी हाय-हायके, बेफ़िक्रीके साथ और बाइज़्ज़त सामना कर सकते हैं ।

बम्बई, १८-२-'४६

('हरिजन'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

काम-काजके बीच

दक्षिण भारत-हिन्दी-प्रचार-सभाकी रजत जयन्तीके मौक़े पर मद्रासमें गांधीजीके लिए जो भारी-भरकम कार्यक्रम रखे गये थे, उनके बीच कुछ हलके प्रसंग भी हुए । गांधीजीको सभाओंमें जाते-आते जो चन्द मिनट मिलते थे, वही इन प्रसंगोंका समय था । इसी तरह एक बार गांधीजीसे इण्डोनेशियाके कुछ खलासी मिले । यह इत्तफ़ाक़की बात थी कि जिस समय वे लोग गांधीजीसे मिले, उसी समय इण्डोनेशियाके डच गवर्नर वॉन मूक हॉलैण्डसे बटेविया जाते हुए हवाई जहाज़से मद्रास उतरे थे । इन खलासियोंको कुछ दिन पहले नौकरीसे अलग कर दिया गया था; क्योंकि इन्होंने उस जहाज़ पर काम करनेसे इनकार कर दिया था, जो ऐसे आदमियों और चीज़ोंके साथ बटेविया जा रहा था, जिनका इस्तेमाल राष्ट्रवादियोंकी लड़ाईके खिलाफ़ होता । वे चाहते थे कि अपनी लड़ाईमें उन्हें हिन्दुस्तानकी हमदर्दी और शिरकत या सहयोग मिले । उन्होंने शिकायत की कि इण्डोनेशियनोंको कुचलनेके लिए हिन्दुस्तानी फ़ौजोंका इस्तेमाल किया जा रहा है । गांधीजीने कहा कि हिन्दुस्तानकी हमदर्दी तो उनके साथ है ही । और, यह कांग्रेसकी कार्य-समितिके उस प्रस्तावसे ज़ाहिर है, जो उसने इण्डोनेशिया और दूरके पूर्वी देशोंके बारेमें पास किया है । और इण्डोनेशियनोंके खिलाफ़ हिन्दुस्तानी फ़ौजोंका इस्तेमाल तो हिन्दुस्तान और ब्रिटेनके लिए शर्मकी और इण्डोनेशियनोंके लिए बदक़िस्मतीकी बात है । इस हालतका खात्मा हिन्दुस्तानको आज़ादी मिलने पर ही हो सकता है । हिन्दुस्तानकी आज़ादी दुनियाकी सभी पीड़ित और शोषित क़ौमोंकी आज़ादीकी भूमिका होगी।

जेलसे छूटे हुए आज़ाद हिन्द फ़ौजके आदमियोंकी एक टुकड़ी गांधीजीसे मिली । गांधीजीने अपने मुक़ामकी तरफ़ जाते समय उनसे चन्द मिनट बातचीत की । वे लोग वापस अपने-अपने घरोंको जा रहे थे । उन्होंने टोकियोके फ़ौजी विद्यालयमें सैनिक शिक्षा पाई थी। "हमने नेताजीकी रहनुमाईमें काम किया । अब किसके कहने पर चलें ?" उन्होंने पूछा । गांधीजीने जवाब दिया कि उन्हें कांग्रेसके आदेशों पर ही चलना चाहिये । उन्होंने कप्तान शाहनवाज़के उस बयानकी ओर उनका ध्यान खींचा, जिसमें उन्होंने कहा है कि जब हम हिन्दुस्तानके बाहर थे, तो अपने देशकी आज़ादीके लिए हथियारोंसे लड़े, अब हम अहिंसाके ज़रिये मुल्ककी खिदमत करेंगे । गांधीजीने कहा : "आपको याद रखना चाहिये कि किसीकी रहमदिलीका आसरा तकना एक सिपाहीकी शान व इज़्ज़तके खिलाफ़ होगा । आज़ादीके सिपाही होनेके नाते आपको अपनी रोटी ईमानदारीका कोई काम करके कमानी चाहिये और ऐसा करते हुए आपको मुसीबतें और तकलीफ़ें उठानी पड़ें, तो भी दूसरे लोगोंकी मददकी इच्छा नहीं करनी चाहिये ।"

अखीरमें पश्चिमी अफ्रीकाके हब्शी सिपाहियोंका एक दल गांधीजीसे मिला । अफ्रीकाके हब्शी सबसे ज़्यादा जागे हुए हैं । उनमें आजकलकी युनिवर्सिटी-शिक्षाका प्रयोग हुआ है और उसके कुछ बड़े तेजस्वी मगर अजीब-से नतीजे निकले हैं । वे लोग सवालोंकी एक लम्बी फ़ेहरिस्त लेकर गांधीजीके पास आये थे । यह इस बातका सबूत था कि उनके दिलोंमें अपने हक़ोंके लिए कितनी गहरी हलचल मची हुई है । उनका पहला सवाल यह था : "दुनियामें कई धर्म हैं । मगर वे सब विदेशोंमें पैदा हुए हैं । उनमेंसे अफ्रीकावाले किस धर्मको मानें ? क्या वे अपने ख़ुदके लिए किसी धर्मकी ईजाद करें ? अगर हाँ, तो किस तरह ?"

गांधीजीने कहा : "यह कहना ग़लत है कि सब धर्म विदेशोंमें पैदा हुए हैं । ज़ूलू और बण्टू लोगोंके साथ मेरे काफ़ी गहरे ताल्लुक़ात रहे हैं । मैंने देखा कि अफ्रीकियोंका अपना धर्म है । हाँ, यह हो सकता है कि उस धर्मको उन्होंने तर्ककी कसौटी पर न कसा हो । मैं अफ्रीकी जातियोंमें पाये जानेवाले रीति-रिवाजों और अन्ध-विश्वासोंका ज़िक्र नहीं करता, मेरा आशय उस धर्मसे है, जो एक सर्व शक्तिमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्माको मानता है। आप लोग उस ईश्वरकी प्रार्थना करते हैं। सम्प्रदाय तो बहुत हैं, मगर धर्म तो एक ही है। आप लोगोंको उसी धर्मपर चलना चाहिये। विदेशी आपके आगे ईसाई धर्म पेश करेंगे, किन्तु यूरोप और अमेरिकामें आज जो ईसाई धर्म पाया जाता है, वह तो ईसाके उपदेशोंसे बिलकुल मेल नहीं खाता। फिर, हिन्दू धर्म, इस्लाम और ज़रदुश्तका पारसी धर्म वग़ैरा कुछ और धर्म हैं। हरएक धर्ममें कुछ-न-कुछ अच्छी बात है। आपको अपनी पसंदगीको महदूद न करते हुए इन अच्छी बातोंको अपना लेना चाहिये और अपने धर्मका रूप तय कर लेना चाहिये।

हब्शी सिपाहियोंने गांधीजीके इस कथनका हवाला दिया कि ग़ुलामीमें पड़े रहना इन्सानकी इज़्ज़तके ख़िलाफ़ बात है। और यह कि जो इन्सान ग़ुलामीको महसूस करते हुए भी अपनी जंज़ीरोंको तोड़नेकी कोशिश नहीं करता, वह जानवरसे भी गया-बीता है। उन्होंने पूछा: "अफ्रीका जैसा महाद्वीप, जिसमें इस क़दर फूट फैली हुई है, ग़ुलामीकी बेड़ियोंको तोड़नेकी लड़ाई कैसे ठान सकता है?"

गांधीजीने जवाब दिया: "मैं आप लोगोंकी मुश्किलोंको जानता हूँ। अगर यह देखा जाय कि अफ्रीका कितना बड़ा महाद्वीप है, उसके अलग-अलग हिस्से एक-दूसरेसे कितने दूर हैं और उनके बीच कितनी क़ुदरती रुकावटें हैं, लोगोंकी बस्ती कितनी फैली हुई है, और उनमें कैसी भयंकर फूट है, तब तो अफ्रीकाकी आज़ादीके लिए कोई उम्मीद नहीं बाँधी जा सकती। किन्तु एक जादू ऐसा है, जो इन सारी मुश्किलोंको हल कर सकता है। जिस घड़ी ग़ुलाम यह इरादा कर लेता है कि अब वह ग़ुलाम नहीं रहेगा, उसी दम उसकी बेड़ियाँ टूट पड़ती हैं। वह ख़ुद अपनेको आज़ाद कर लेता है और दूसरोंको आज़ादीकी राह दिखाता है। आज़ादी और ग़ुलामी मनकी हालतका नाम है, इसलिए सबसे पहले अपने मनमें यह ख़याल मज़बूत बनाओ: 'अब मैं हरगिज़ ग़ुलाम न रहूँगा; मैं किसीके हुक्मोंको हुक्म समझकर नहीं मानूँगा; बल्कि जो भी हुक्म मेरे दिलके ख़िलाफ़ होगा, उसे माननेसे मैं इनकार करूँगा'। आपका वह नामधारी मालिक आपको मारेगा-पीटेगा और ज़बरदस्ती काम लेनेकी कोशिश करेगा। किन्तु आप कहेंगे: 'नहीं, मैं आपके रुपयोंकी ख़ातिर या धमकीके अधीन होकर आपका काम नहीं करूँगा।' इसके नतीजेमें आपको मुसीबतें उठानी पड़ेंगी। मगर मुसीबतको बरदाश्त करनेकी आपकी तैयारी आज़ादीकी ऐसी मशाल जला देगी, जो कभी बुझाई न जा सकेगी।"

"अफ्रीका और हिन्दुस्तान दोनोंको ग़ुलामीकी कड़वी घूँट पीनी पड़ रही है। उसके ख़िलाफ़ समान मोर्चा खड़ा करनेकी ग़रज़से दोनोंमें एकता क़ायम करनेके लिए क्या उपाय करने चाहिये?"

गांधीजीने जवाब दिया: "आपका कहना सही है। हिन्दुस्तान अभी आज़ाद नहीं हुआ है, फिर भी हिन्दुस्तानियोंने यह महसूस करना शुरू कर दिया है कि उनकी आज़ादी आ रही है। और यह इसलिए नहीं कि गोरे लोग ऐसा कहते हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने ख़ुद अपने भीतर ऐसी ताक़त पैदा कर ली है। चूँकि हिन्दुस्तानकी लड़ाई अहिंसक है, इसलिए वह अधिक शक्तिशाली ताक़तके ख़िलाफ़ तमाम पीड़ित जातियोंकी मुक्तिकी लड़ाई है। मैं यह नहीं कहता कि वे सब यांत्रिक रूपसे मिलकर कारंवाई करें। 'हरएकको अपनी मुक्ति ख़ुद ही खोजनी होगी;' परलोककी मुक्तिके समान ही इस लोककी मुक्तिके लिए भी यह सच है। इतना काफ़ी होगा कि एशियावालों और अफ्रीकियोंके बीच सच्चा नैतिक रिश्ता रहे। समयके साथ वह मज़बूत होता जायगा।"

हब्शी सैनिकोंका अगला सवाल यह था: "अनैतिकसे अनैतिक और भयंकरसे भयंकर बातें अफ्रीकाके मत्थे थोपी जाती हैं। विदेशोंमें हमारे ख़िलाफ़ ग़लतफ़हमीकी जो महामारी फैली हुई है, उसे दूर करनेके लिए क्या किया जाय?"

गांधीजीने जवाब दिया: "अफ्रीकियोंके ख़िलाफ़की जानेवाली आलोचनामें जहाँ तक सचाईका अंश है, वहाँ तक कहना होगा कि यह कोई अफ्रीकाकी ही ख़ास विशेषता नहीं है। अनीति और अन्याय सभी देशोंमें समान रूपसे पाये जाते हैं। किन्तु आप लोगोंको यह कहकर आत्म-सन्तोष नहीं मान लेना चाहिये: 'दूसरे हमसे अच्छे कहाँ हैं?' जिन बुराइयोंको लेकर हब्शियोंके ख़िलाफ़ ग़लत ख़याल फैले हुए हैं, उनमेंसे बहुत-सी, शायद ज़्यादातर, अमेरिकासे आई नाम मात्रकी ईसाइयतके कारण पैदा हुई हैं। हब्शियोंने शराब पीना, अनैतिक नाच नाचना आदि बुराइयोंको सीख लिया है। फिर कुछ बुरे अफ्रीकी रिवाज भी हैं। आप लोगोंको इन बुरे रिवाजोंको दूर करना चाहिये और इस तरह विदेशोंमें फैले ग़लत ख़यालोंके आधारको ही मिटा देना चाहिये। काम तो यह मेहनतका है, पर है बहुत मज़ेदार। तब विदेशोंमें फैली ग़लतफ़हमीकी महामारी अपनी मौत ख़ुद ही मर जायगी।"

हब्शी सिपाही यह जानना चाहते थे कि हिन्दुस्तान-सम्बन्धी उपयोगी किताबें रखनेके भण्डार वे किस तरह क़ायम कर सकते हैं, हिन्दुस्तान उन्हें क्या दे सकता है और उनका जो भयंकर शोषण हो रहा है, उससे बचनेके लिए सहयोगके आधार पर वे अपने देशमें कैसे उद्योग-धन्धे क़ायम कर सकते हैं?

गांधीजीने जवाब दिया: "हिन्दुस्तान आपको अच्छे विचार दे सकता है। वह आपको सारे संसारका भला करनेवाली किताबें दे सकता है। पश्चिमी शोषक कच्चा माल लेकर तैयार माल देते हैं, हिन्दुस्तान ऐसा धन्धा न करेगा। हिन्दुस्तान और अफ्रीकाके बीच विचारों और सेवाकी अदला-बदली होगी। हिन्दुस्तान आपको चरखा दे सकता है। जब मैं दक्षिण अफ्रीकामें था तब मुझे चरखेका ज्ञान हो गया होता, तो मैंने उन अफ्रीकियोंमें जो फिनिक्समें मेरे पड़ोसी थे, उसका प्रचार ज़रूर किया होता। आप लोग कपास पैदा कर सकते हैं, आपके पास काफ़ी वक़्त है और आप लोग हाथसे काम करनेकी कला भी जानते हैं। देहाती धन्धोंको फिरसे जिलानेकी हम जो कोशिश कर रहे हैं, उसका आपको अध्ययन करना चाहिये और उससे सबक़ सीखना चाहिये। आपकी मुक्तिकी कुंजी इसीमें छिपी है।

सेवाग्राम, ८–२–'४६
('हरिजन'से)　　**प्यारेलाल**

मुर्दार और ज़िन्दा सूत

तुम प्रतिज्ञाके तौर पर प्रतिदिन १०–१५ तार कातने लगे हो, इसमें मेरी कोई विजय नहीं है। रोती सूरतके घोड़े पर सवार होनेसे विजय क्या मिलनेवाली है? इससे तो वह घोड़े पर सवार ही नहीं होगा, तो बेचारा कम-से-कम कुशलसे तो रहेगा। जब कि हमारी बुद्धिने उसका स्वीकार न किया तो बतौर बेगारके १०–१५ तार कात लेना अपने आपको धोखा देनेका एक तरीक़ा है। स्वराज्यका सूत कातनेसे सम्बन्ध तो है, मगर ऐसे मुर्दार सूतसे नहीं। उसके लिए तो ज़िन्दा सूत चाहिये।

संप्रति हमारे देशको मतभेदोंने ग्रस लिया है। जर्मनीमें सात लाख फ़ौज तैयार हो जाती है, और हमारे यहाँ "पिण्डे-पिण्डे मतिर्भिन्ना; कुण्डे-कुण्डे नवं पयः" के न्यायके अनुसार छोटी-छोटी खोपड़ियोंका भी गांधीजी-जैसोंसे मतभेद हुआ करता है।

मेरी तो यह सलाह है कि प्रतिज्ञाका अर्थात् प्रतिज्ञाकी आत्माका पालन करना हो, तो तुम्हारे जैसे देशके हितके लिए तड़पनेवाले तरुणको खादीका विद्यापीठ बन जाना चाहिये। प्रत्येक ग्रहके इर्दगिर्द जिस प्रकार उस ग्रहका अपना वातावरण होता है, उसी प्रकार तुम्हारे चारों ओर खादीका स्वतंत्र वातावरण होना चाहिये।

('खादी-जगत्'से)　　**विनोबा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

फरवरी २४ १९४६

द्वेषको कैसे मोड़ें ?

हवामें द्वेष छा गया है और अधीर देशभक्त, अगर वैसा मुमकिन हो तो, आज़ादीके मक़सदको आगे बढ़ानेके लिए हिंसाके ज़रिये भी उसका ख़ुशीसे उपयोग कर लेना पसन्द करेंगे। मेरा कहना यह है कि यह बात किसी भी वक़्त और हर कहीं ग़लत होगी। मगर जिस देशमें आज़ादीके लिए लड़नेवालोंने दुनियाके आगे यह घोषित किया है कि उनकी नीति सत्य और अहिंसाकी नीति है, वहाँ तो ऐसा करना और भी ग़लत और नामुनासिब होगा। उनका कहना है कि द्वेषको मुहब्बत यानी प्यारमें नहीं बदला जा सकता। जो लोग हिंसामें मानते हैं, वे सहज ही यों कहकर इसका उपयोग करेंगे : 'अपने दुश्मनको मार डालो, उसे और उसकी सम्पत्तिको ज़रूरतके मुताबिक़ खुले तौर पर या छिपकर, जैसे भी मुमकिन हो, नुक़सान पहुँचाओ।' इसका नतीजा यह होगा कि द्वेष और गहरा होता जायगा, द्वेषके बदले द्वेष पैदा होगा और दोनों तरफ़से बदलेका दौरदौरा होगा। पिछला महायुद्ध, जिसकी चिनगारियाँ अभी पूरी तरह ठण्डी नहीं पड़ी हैं, द्वेषके प्रयोगके दिवालियेपनकी ज़ोरोंसे घोषणा कर रहा है। और अभी यह देखना बाक़ी ही है कि कथित विजेता सचमुचमें विजयी हुए हैं या कि अपने दुश्मनोंको गिरानेकी चाह और कोशिशमें ख़ुद ही गिर नहीं गये हैं। आख़िर यह एक बुरा खेल है। इस देशके कुछ कर्मठ विचारक कामके तरीक़ेमें कुछ सुधार सुझाते हुए कहते हैं : 'हम अपने दुश्मनको तो कभी नहीं मारेंगे, मगर उसकी सम्पत्तिको ज़रूर बरबाद करेंगे।' जब मैं यह कहता हूँ कि यह 'उसकी सम्पत्ति' है, तो मैं शायद उसके साथ अन्याय करता हूँ; क्योंकि यह ध्यान देनेकी बात है कि कथित शत्रु साथमें अपनी कोई सम्पत्ति नहीं लाया है और जो थोड़ी-बहुत लाया भी है, तो उसकी हमसे क़ीमत वसूल करता है। इसलिए जिसे हम बरबाद करते हैं, दरअसल तो वह हमारी ही सम्पत्ति है। उसका ज़्यादातर हिस्सा, चाहे वह आदमियोंकी सूरतमें हो या चीज़ोंकी, वह यहीं पैदा करता है। इसलिए जो बात है, वह यही कि सम्पत्ति पर उसका क़ब्ज़ा है। इस सम्पत्तिकी बरबादीका मुआवज़ा हमको नाकके बल देना पड़ता है, और बेगुनाहोंको उसकी क़ीमत चुकानी पड़ती है। ताज़ीरी टैक्स या दण्डात्मक कर और उससे जुड़ी हुई ज़्यादतियोंका यही मतलब होता है। इसलिए वह अहिंसा, जिसमें केवल किसीको न मारना ही शामिल हो, मुझे हिंसात्मक तरीक़ेसे बेहतर नज़र नहीं आती। उसका मतलब है, धीरे-धीरे सताना। और जब यह धीमापन बेकार हो जायगा, तो हम फ़ौरन मारने पर उतारू हो जायँगे और परमाणु बमका इस्तेमाल करने लगेंगे, जोकि आज हिंसाका आख़िरी हथियार है। इसलिए सन् १९२० में मैंने द्वेषको ठीक दिशामें मोड़नेके लिए अहिंसाका और उसके लाज़िमी जोड़ीदार सत्यका प्रयोग सुझाया था।

द्वेष करनेवाला द्वेषकी ख़ातिर द्वेष नहीं करता, यानी इसलिए करता है कि वह द्वेषपात्र आदमी या आदमियोंको अपने देशसे हँकाल देना चाहता है। इसलिए वह हिंसक तरीक़ेकी तरह अहिंसक तरीक़ेसे भी अपना मक़सद हासिल कर लेगा। पिछले २५ वर्षोंसे, राज़ीसे या नाराज़ीसे, कांग्रेस अपनी खोई हुई आज़ादीको हासिल करनेके लिए जनताके सामने हिंसाके मुक़ाबले अहिंसाकी हिमायत करती रही है। हमने जो तरक़्क़ी की है, उससे हमने यह देख लिया है कि अहिंसाके ज़रिये हम जितनी जल्दी और जितना ज़्यादा जनताके दिलको जगा सके हैं, उतना पहले कभी नहीं कर सके थे। फिर अगर सच कहें तो — और सच तो कहना ही चाहिये — हमारी अहिंसक कार्रवाई अधकचरी ही रही है। कइयोंने दिलमें हिंसाको छिपाये रखकर केवल ज़बानसे अहिंसाका उपदेश किया। किन्तु सीधी-सादी जनताने हमारे दिलोंमें छिपे हुए भावोंका मतलब समझ लिया और उसकी अनजानी प्रतिक्रिया वैसी नहीं हुई, जैसी होनी चाहिये थी। दम्भने सद्गुणकी प्रशंसा तो की, किन्तु वह सद्गुणकी जगह हरगिज़ नहीं ले सकता था। इसीलिए मैं अहिंसा पर और उससे भी ज़्यादा अहिंसा पर ज़ोर देता रहता हूँ। मैं अज्ञानवश ऐसा नहीं करता, बल्कि उसके पीछे मेरे साठ सालका अनुभव है। यह नाज़ुक वक़्त है। आज जनता भूखों मर रही है। देशकी मौजूदा ज़रूरतोंमें अहिंसाका प्रयोग किस तरह किया जाय, बुद्धिमान पाठकको इसके अनेक उपाय सूझ जायँगे।

आज़ाद हिन्द फ़ौजका जादू हम पर छा गया है। नेताजीका नाम अपने लायक़ बन गया है। उनकी देशभक्ति किसीसे कम नहीं है। (वर्तमानकालका उपयोग मैं जान-बूझकर कर रहा हूँ।) उनकी बहादुरी उनके सारे कामोंमें चमक रही है। उनका मक़सद बुलन्द था, पर वह नाकामयाब रहे। नाकामयाब कौन नहीं रहा? हमारा काम तो यह देखना है कि हमारा मक़सद बुलन्द हो और हम नेक मक़सद रखें। सफलता यानी कामयाबी हासिल कर लेना हर किसीकी क़िस्मतमें नहीं लिखा होता। इससे ज़्यादा तारीफ़ मैं नहीं कर सकता, क्योंकि मैं जानता था कि उनका काम विफल होने ही वाला है, और अगर वह अपनी आज़ाद हिन्द फ़ौजको विजयी बनाकर हिन्दुस्तानमें ले आये होते, तो भी मैंने यही कहा होता, क्योंकि इस तरह आमजनता अपने अधिकारोंको न पा सकी होती। नेताजी और उनकी फ़ौज हमको जो सबक़ सिखाती है, वह तो त्यागका, जात-पाँतके भेदसे रहित एकताका और अनुशासनका सबक़ है। अगर उनके प्रति हमारी भक्ति समझदारीकी और विवेकपूर्ण होगी तो हम उनके इन तीनों गुणोंको पूरी तरह अपनायेंगे, लेकिन हिंसाका तो बिलकुल त्याग ही करेंगे।

मैं यह नहीं चाहूँगा कि आज़ाद हिन्द फ़ौजका आदमी यह सोचे या कहे कि वह या उसके साथी हिन्दुस्तानकी जनताको हथियारोंके ज़रिये ग़ुलामीसे छुटकारा दिलवा सकते हैं। लेकिन अगर वह नेताजीका और उनसे भी ज़्यादा देशका वफ़ादार है, तो वह जनताको — स्त्री, पुरुष और बच्चोंको — बहादुर बनने, त्याग करने, और एक हो जानेकी शिक्षा देनेमें अपनी ताक़त ख़र्च करेगा। तभी हम दुनियाके आगे कमर सीधी करके खड़े हो सकेंगे। लेकिन अगर वह केवल हथियारबन्द सैनिक ही बना रहा, तो वह जनताके सिर पर सवारी ही गाँठेगा और तब उसके स्वयंसेवकपनेकी कोई ज़्यादा क़ीमत नहीं रह जायगी। इसलिए मैं कप्तान शाहनवाज़के इस बयानका स्वागत करता हूँ कि नेताजीके योग्य अनुयायी बननेके लिए हिन्दुस्तानकी धरती पर आनेके बाद, वह कांग्रेसकी सेनामें एक विनीत, अहिंसक सिपाही बनकर काम करेंगे।

सेवाग्राम, १५–२–'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन' से)

तारीफ़के लायक़

दक्षिण भारत-हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभाकी रजत जयन्तीके मौक़े पर मद्रासके कई व्यापारियोंने शिविरमें सब प्रतिनिधियोंके खाने-पीनेका इन्तज़ाम अपने हाथमें ले लिया था। २३ जनवरीसे लेकर १ फरवरी तक यह काम उन्होंने बहुत अच्छी तरहसे चलाया। ५०,००० लोगोंको खिलाना छोटी बात नहीं। भोजन अच्छा था और सफ़ाईका काफ़ी ख़याल रखा जाता था। सभाको अपनी तरफ़से एक पैसा भी नहीं ख़र्च करना पड़ा। ऐसी संस्थाके लिए यह बड़ी बात है।

मद्रासके व्यापारी बधाईके योग्य हैं कि उन्होंने यह शुभ कार्य ख़ुशी और प्रेमके साथ अपने सिर लिया।

सेवाग्राम ८–२–'४६ अ० कु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

078025

टिप्पणियाँ

एक विनती

देशके इतिहासके एक ऐसे नाज़ुक मौक़े पर मैंने 'हरिजन'का काम फ़िरसे सँभाला है कि एक बार लिखनेका ज़िम्मा ले लेनेके बाद कुछ मामलोंमें अपने खयालोंको ज़ाहिर करनेके लिए मैं 'हरिजन'के अगले अंकके निकलने तक रुक नहीं सकता। फिर, जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँसे निकलनेके बजाय वह मुझसे बहुत दूर, अहमदाबादमें, छपता है। इसलिए जो पाठक यह चाहते हैं कि मेरी हर चीज़ 'हरिजन'में ही पढ़ें, वे रोज़ाना अखबारोंमें छपी मेरी चीज़ोंको फ़िरसे 'हरिजन'में छपी देखें, तो मुझे उसके लिए माफ़ करें। इसकी वजह तो साफ़ है। 'हरिजन' ऐसे बहुतसे पाठकोंके पास जाता है, जो उन अखबारोंको नहीं पढ़ते, जिनमें मेरे बयान छप सकते हैं, और जिनमें छपे बयानोंके बिलकुल सही होनेकी कोई गारण्टी नहीं दी जा सकती। 'हरिजन' किसी भी मानीमें रोज़गारी या व्यवसायी पत्र नहीं है। वह तो हिन्दुस्तानकी आज़ादीके मसलेको आगे बढ़ानेके खयालसे ही निकाला जाता है।

सेवाग्राम, १५-२-'४६

लोक-सेवक और थैलियाँ

सार्वजनिक काम करनेवालोंको दी गई थैलियोंके उपयोगका एक दिलचस्प मामला हाल ही मेरी निगाहमें आया है। मुझे जनताकी ओरसे बहुतसी थैलियाँ मिलती हैं। हालके दौरेमें कलकत्तेसे मदुरा तक दो लाखसे ज़्यादा रक़मका दान मुझे मिला था। कुछ दान देनेवालोंने अपनेको ग़ुमनाम रखा था, कुछ दान किसी एक निश्चित कामके लिए थे और कुछ दानदाताओंने मेरे पूछने पर कहा कि मैं अपनी मर्ज़ीके मुताबिक़ उस रुपयेका उपयोग कर सकता हूँ। मैंने ऐसी कोई सम्पत्ति नहीं रक्खी, जिसे मैं अपनी कह सकूँ। क्या मैं दानकी इन रक़मोंको या इनके कुछ हिस्सेको अपनी निजी ज़रूरतोंके लिए काममें ले सकता हूँ? अपने सार्वजनिक जीवनके दौरानमें मैंने कभी भी दानकी रक़मोंका ऐसा इस्तेमाल नहीं किया और मित्रोंको भी ऐसा ही करनेकी सलाह दी है। जिन लोगों पर जनता विश्वास करती है और जिनको पूरी तरह यह मानकर दान देती है कि वे देनेवालोंकी बनिस्बत रुपयेको ज़्यादा सोच-समझकर और सावधानीके साथ किसी सार्वजनिक काममें लगायेंगे, उनके लिए दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है। इस तरहके विश्वासका निजी कामोंके लिए दुरुपयोग करना सचमुच ही एक भयंकर चीज़ होगी। ऐसे दुरुपयोगके जो विनाशकारी परिणाम आयेंगे, उनका बयान करनेके बजाय कल्पना करना ही ज़्यादा अच्छा है। सीज़रकी पत्नीकी तरह सार्वजनिक सेवा भी शंकासे परे होनी चाहिए।

बम्बई, १९-२-'४६

('हरिजन'से)　　मो० क० गांधी

बेकार खर्च

गांधीजी जहाँ भी जाते हैं, वहाँ लोगों द्वारा उनका मनमाना स्वागत तो होता ही है, उन्हें रुपयों और चीज़ोंके रूपमें बेशुमार सौगातें भी मिलती हैं। उनका लोभ कभी तृप्त होना जानता ही नहीं। जैसे वक़्त बीतता जाता है, उनके सिपुर्द की गई रक़मोंको खर्च करनेकी माँग भी बढ़ती जाती है। उन्हें मिलनेवाले रुपये-पैसोंकी छँटनीका काम एक भगीरथ काम है, जो इस सीग़ेमें काम करनेवालोंको घण्टों बझाये रहता है।

चीज़ोंके रूपमें दिये जानेवाले उपहारों या सौगातोंकी वजहसे, जैसे-जैसे सफ़र आगे बढ़ता है, साथी मुसाफ़िरोंके लिए जगहकी तंगी बढ़ती ही जाती है। सूत और खादीके रूपमें दी जानेवाली चीज़ें तो हमेशा ही बड़ी ख़ुशीके साथ ली जाती हैं, क्योंकि गांधीजीके बढ़ते हुए परिवारके लोगोंके लिए और सूत न दे सकनेवाली संस्थाओंके लिए खादीकी तो बेहद माँग है। लेकिन इन सौगातोंमें कुछ ऐसी चीज़ें भी होती हैं, जिनको ठिकाने लगाना मुश्किल होता है, मसलन्, सोने और चाँदीके बने चरखोंके नमूने, और धातु या लकड़ीकी बनी दूसरी बहुतसी बेकार चीज़ें। इस तरहकी चीज़ें भेंटमें न दी जानी चाहियें। सोनेके चरखेमें जितना सोना लगता है, उससे ज़्यादा तो उस पर की गई कारीगरीमें खर्च हो जाता होगा — सोनेसे 'गढ़ावन' महँगी! ऐसी चीज़ें देनेसे अच्छा तो यह है कि नक़द रुपया दे दिया जाय। सूत और खादीके अलावा अपवादके रूपमें कुछ इस तरहकी चीज़ें भी दी जा सकती हैं, जैसे, देहातकी कारीगरीका या पुरानी कलाका कोई सच्चा नायाब नमूना, या वे ज़ेवर, जिन्हें बहनें ख़ुद अपनी इच्छासे गांधीजीको देना चाहें।

सौगातोंकी एक और भी क़िस्म है, जिसको कोई बढ़ावा न मिलना चाहिये, और इनमें गांधीजीकी अपनी वे तस्वीरें, फोटो और लकड़ी, चाँदी, सोना, हाथीदाँत या काँचकी बनी छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं, जिनमें कला नामकी कोई चीज़ नहीं होती। कलाकारोंको और दूसरोंको भी चाहिये कि वे गांधीजीसे उनकी अपनी ऐसी भद्दी तस्वीरों या मूर्तियों पर सही करनेकी उम्मीद न रखें। किसी भी क्षेत्रमें हलके दर्जेकी चीज़ोंको बनानेका प्रोत्साहन देना मुनासिब नहीं। और यों जनता चाहे तो वह गांधीजीके अच्छे फोटो आसानीसे पा सकती है।

मद्रास जाते हुए, ४-२-'४६

(अंग्रेज़ीसे)　　अ० कुँ०

सवाल-जवाब

स० — अनाज बाहरसे जितना ज़्यादा आये, अच्छा है, क्योंकि आजकल लोगोंको जितना दिया जाता है, उससे कम देनेमें जोखिम है। लोगोंको पेटभर खानेको नहीं मिलता। इससे फ़ाक़ाकशी बढ़ सकती है, बीमारी या महामारी फैल सकती है और शायद दंगे भी हो सकते हैं। इस वक़्त नया अनाज पैदा करना अगर नामुमकिन नहीं, तो निहायत मुश्किल है।

ज० — मैं जानता हूँ कि इस तरहके खयाल रखनेवाले बहुतसे लोग देशमें हैं। मगर मुझ पर इसका असर नहीं हो सकता। फ़ाक़ाकशी या भुखमरी तो इस वक़्त भी मौजूद है। ऐसी हालतमें लोगोंकी ख़ूराकमें कमी करना असह्य हो सकता है। लेकिन अगर हम मान लें (मैं तो मानता हूँ) कि सरकारके पास इस समय अनाजके जत्थेका जो हिसाब है, वह सच है, तो दूरंदेशी हमसे कहती है और यह हमारा धर्म है कि हम कड़ुई घूँट पी जायँ और लोगोंको भी पिलावें और उनसे कहें कि वे आज ही से अपनी ख़ूराकमें कमी कर लें और अगली फ़सलके आने तक किसी तरह काम चलावें। सचाई यह है कि राशनमें मिलनेवाले जिस नाजके लोगों तक पहुँचनेकी बात मानी जाती है, वह भी हुकूमतकी बदइन्तज़ामीकी वजहसे उन्हें नहीं मिलता। अगर अब, बराबर हिसाबके मुताबिक़, सही तरीक़से और आसानीसे लोगोंको अपने-अपने हिस्सेका अनाज मिलने लगे, तो मैं उसे देशका सौभाग्य समझूँगा। इसके ख़िलाफ़ अगर हम यह मान लें कि सरकारी आँकड़े झूठे हैं और चुनाँचे अपने आन्दोलनको ज़ारी रक्खें और ज़्यादा अनाज देनेकी माँग करते ही रहें और सरकार वैसा करना मंज़ूर कर ले, तो इससे पहले कि दूसरी फ़सलके पकने तक हम टिक सकें, ऐसा समय आ जायगा, जब लोगोंको बिलकुल अनाज न मिलेगा और वे बेमौत मरने लगेंगे। इस विकट परिस्थितिका सामना करनेके लिए हमें चौकन्ना रहना चाहिये। और ऐसा करते हुए कुछ कम खानेकी नौबत आये, तो उसे सह लेना मैं मुनासिब समझता हूँ। नया अनाज या दूसरे खाद्यपदार्थ पैदा करना मेरे ख़यालमें ज़रा भी नामुमकिन नहीं है। हाँ, मुश्किल ज़रूर है। और मुश्किल भी इसलिए है कि हममें इस विषयके शास्त्रीय ज्ञानकी और कार्यकुशलताकी कमी है। अगर हम सब आशावादी बनकर, बिना हिम्मत हारे, एक साथ, जो भी अनाज पैदा किया जा सके उसे पैदा करनेमें जुट जायँ, तो इस वक़्त ख़ूराकमें कमी करनेका जो सिलसिला शुरू हुआ है, उसकी मुद्दत भी कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की जा सकती है और लोग युक्ताहारी बन सकते हैं । मैं ख़ुद तो अपनी आशावादिताको छोड़ नहीं सकता । हाँ, यह क़बूल किये लेता हूँ कि ताली एक हाथसे नहीं बजती । इस काममें सरकार और जनता दोनोंकि सहयोगकी ज़रूरत है । दोनोंमें आपसका यह सहयोग न हुआ तो विदेशोंसे अनाज या खाद्यपदार्थोंके आने पर भी उनके बेकार खर्च हो जानेका अंदेशा है । असलमें वह जिन्हें मिलना चाहिये उन्हें नहीं मिलेगा; बल्कि हम जो पहले ही पराधीन हैं और भी ज्यादा पराधीन बन जायँगे । आशा न रखते हुए भी बाहरसे जो अनाज आ पहुँचेगा, उसे हम फेंक नहीं देंगे, बल्कि उसे ले लेंगे और उसके लिए एहसानमंद रहेंगे । इस तरह बाहरसे अनाज मँगाना सरकारका परम धर्म है। लेकिन सरकारकी ओर टकटकी लगाकर बैठनेमें या दूसरे देशों पर आधार रखनेमें मैं कोई श्रेय नहीं देखता; यही नहीं, बल्कि रक्खी हुई आशाके सफल न होने पर लोगोंमें जो निराशा पैदा होगी, वह इस संकटके समयमें उनके लिए हानिकारक होगी । लेकिन अगर जनता इस कठिन समयमें एकमत हो जाय, दृढ़ बन जाय, केवल ईश्वर पर ही भरोसा रखनेवाली बन जाय, और सरकारका जो भी काम उसे स्वतंत्र रीतिसे कल्याणकारी मालूम हो, उसका विरोध न करे, तो जनताके लिए नाउम्मीदीकी कोई वजह न रह जाय, वह आगे बढ़े, और इस भट्टीमेंसे उजली होकर निकले। और, दूसरे देशोंसे, जहाँ-जहाँ अनाज बच सकता है, बचा हुआ अनाज अपने-आप यहाँ आ सकता है । अंग्रेज़ीमें एक बढ़िया कहावत है कि जो अपनी मदद ख़ुद करते हैं यानी स्वावलम्बी बनते हैं, उनकी मदद तो स्वयं ईश्वर भी करता है, औरोंका तो पूछना ही क्या ? मतलब यह कि बाहरसे आनेवाला अनाज बिना माँगे यहाँ आ सकेगा । यहाँ यह कहनेकी ज़रूरत नहीं कि जब अंग्रेज़ हाकिमोंने हिन्दुस्तानमें जो भी कुछ था, सो सब खाली कर डाला, और उसीका यह नतीजा आज हमें भोगना पड़ रहा है, तो अब सरकारका और जिनकी उसने मदद की थी, उन सबका यह धर्म ही है कि वे इस वक़्त अपना फ़र्ज़ अदा करें ।

स० — देशमें रूई कम है । अफ्रीका और अमेरिकासे आती है । यहाँ किसानोंको कपास बोने नहीं दी जाती । वजह यह बताई जाती है कि ज्यादा अनाज पैदा करना चाहिये ।

ज० — जिन्हें अपने घरेलू खर्चके लिए रूईसे सूत कात लेना है, उन पर यह क़ानून आयद नहीं होता, न होना चाहिये । जो रूई पैसा कमानेके लिए बोई जाती है, उस पर इस क़ानूनका आयद होना समझा जा सकता है और मेरे खयालमें यह उसी पर लगाया जा सकता है । रूईको व्यापारकी चीज़ बनानेका महान् पाप सरकारने किया है । अब बाहरसे रूई मँगाकर वह इस पापको न सिर्फ़ धो नहीं सकती, बल्कि दोहरा पाप ओढ़ लेती है । मेरे विचारमें लंकाशायर भेजनेके लिए रूईको बनावटी तौर पर तिजारतकी चीज़ बनाना ही ग़लत था । अनाज उगानेकी ग़रज़से किसी एक ही जगहमें ढेरों कपास पैदा करने पर रोक लगाई जाय, तो वह समझी जा सकती है । लेकिन इसका हल यह नहीं है कि कपासकी बुवाई बिलकुल बन्द कर दी जाय और बाहरसे रूई मँगाई जाय। यह पाप तो तभी धुल सकता है कि जब जहाँ-जहाँ संभव हो, लोगोंको उनके अपने उपयोगके लिए कपास पैदा करनेकी छूट दी जाय । मिलोंके लिए बाहरसे रूई मँगानेकी नीति समझमें आ सकती है, सही जा सकती है, लेकिन इस नीतिके सिलसिलेमें अगर लोग अपने खेतके कुछ हिस्सेमें अपनी ज़रूरतकी कपास नहीं बो सकते, तो यह एक ऐसी बात है जो समझमें नहीं आ सकती; यही नहीं, बल्कि यह तो घोर विरोधकी चीज़ बन जाती है । जनता और सरकार दोनोंको इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये ।

('हरिजनबंधु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

इतना तो करें ही

यह मानकर चलना चाहिये कि हमको अनाजके संकटका सामना करना पड़ेगा । ऐसी हालतमें हमको नीचे लिखी बातें तो फ़ौरन शुरू कर देनी चाहिये :—

१. हरएक आदमीको अपने खाने-पीनेकी ज़रूरत कम-से-कम कर लेनी चाहिये; वह इतनी होनी चाहिये कि उसकी तन्दुरुस्ती क़ायम रह सके । शहरोंमें जहाँ दूध, साग-सब्ज़ी, तैल और फल मिल सकते हैं, वहाँ अनाज और दालोंका इस्तेमाल घटा देना चाहिये । ऐसा आसानीसे किया जा सकता है । अनाजोंमें पाया जानेवाला स्टार्च या निशास्ता गाजर, चुकन्दर, आलू, अरुई, रतालू, ज़मींकन्द, केला वग़ैरा चीज़ोंसे मिल सकता है । ख़याल यह है कि उन अनाजों और दालोंको, जिन्हें इकट्ठा करके रक्खा जा सके, मौजूदा ख़ूराकमें शामिल न किया जाय और उन्हें बचाकर रक्खा जाय । साग-सब्ज़ी भी मौज-मज़े और स्वादके लिए न खानी चाहिये, खासकर ऐसी हालतमें कि जब लाखों लोगोंको वे बिलकुल ही नसीब नहीं होतीं और अनाज तथा दालोंकी कमीकी वजहसे उनके भूखों मरनेका खतरा पैदा हो गया है ।

२. हरएक आदमी, जिसे पानीकी सहूलियत मिल सकती हो, अपने लिए या आम लोगोंके लिए कुछ-न-कुछ खानेकी चीज़ पैदा करे । इसका सबसे आसान तरीक़ा यह है कि थोड़ी साफ़ मिट्टी इकट्ठा कर ली जाय, जहाँ मुमकिन हो, उसके साथ थोड़ी सजीव खाद मिला ली जाय — थोड़ा सूखा हुआ गोबर भी अच्छी खादका काम देता है — और उसे मिट्टीके या टीनके गमलेमें डाल दिया जाय । फिर उसमें साग-भाजीके कुछ बीज, जैसे राई, सरसों, धनिया, मेथी, पालक, बथुआ वग़ैरा बो दिये जायँ और उन्हें रोज़ पानी पिलाया जाय । लोगोंको यह देखकर ताज्जुब होगा कि कितनी जल्दी बीज उगते हैं और खाने लायक़ पत्तियाँ देने लगते हैं, जिनको बिना पकाये कच्चा ही सलाद या चटनीकी तरह खाया जा सकता है ।

३. फूलोंके तमाम बग़ीचोंमें खानेकी चीज़ें उगाई जानी चाहिये। इस बारेमें मैं यह सुझाना चाहूँगा कि वाइसराय, गवर्नर और दूसरे ऊँचे अफ़सर मिसाल पेश करें । मैं केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंके खेतीके महकमोंके मुखियाओंसे कहूँगा कि वे प्रान्तीय भाषाओंमें अनगिनत पर्चे छपवा कर बाँटें और साधारण आदमियोंको समझायें कि कौन-कौनसी चीज़ें आसानीसे पैदा की जा सकती हैं ।

४. सिर्फ़ आम लोग ही अपनी ख़ूराकको न घटावें, बल्कि फ़ौजवालोंको भी चाहिये कि वे ज्यादा नहीं तो आम लोगोंके बराबर अपनी ख़ूराकमें कमी करें। सेनाके आदमी सैनिक अनुशासनमें होनेके कारण आसानीसे किफ़ायत कर सकते हैं, इसलिए मैंने सेनासे ज्यादा कमी करनेकी बात कही है।

५. तेलहनकी और तैल व खलीकी निकासी अगर बन्द न की गई हो तो फ़ौरन बन्द कर दी जानी चाहिये । यदि तेलहनमेंसे मिट्टी और कचरा वग़ैरा अलग कर दिया जाय, तो खली इन्सानके लिए अच्छी ख़ूराक बन सकती है। उसमें काफ़ी पोषक तत्त्व होता है ।

६. जहाँ मुमकिन और ज़रूरी हो, सिंचाईके लिए और पीनेके पानीके लिए सरकारको गहरे कुएँ खुदवाने चाहिये ।

७. अगर सरकारी नौकरों और आमजनताकी तरफ़से सच्चा सहयोग मिले, तो मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं कि देश इस संकटसे पार हो जायगा । जिस तरह घबरा जाने पर हार यक़ीनी हो जाती है, उसी तरह जहाँ व्यापक संकट आनेवाला हो, वहाँ फ़ौरन कार्रवाई न की जाय, तो धोखा हुए बिना न रहे। हम इस मुसीबतके कारणों पर विचार न करें। कारण कुछ भी हों, सचाई यह है कि अगर सरकार और जनताने संकटका धीरज और हिम्मतसे सामना नहीं किया, तो बरबादी निश्चित है । इस एक मोर्चेको छोड़कर हम और सब मोर्चों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सरकारसे लड़ेंगे, और अगर सरकार हृदयहीनतासे काम ले या उचित लोकमतको ठुकराये, तो इस मोर्चे पर भी हमको उससे लड़ना होगा। इस बारेमें मैं जनताको मेरी इस रायसे सहमत होनेके लिए कहूँगा कि हम सरकारकी बातको जैसा वह कहती है, वैसा ही मान लें, और समझें कि स्वराज्य कुछ ही महीनोंमें मिल जानेवाला है।

८. सबसे ज़रूरी चीज़ यह है कि चोर बाज़ारोंका और बेईमानी व मुनाफ़ाखोरीका तो बिलकुल खात्मा ही हो जाना चाहिये, और जहाँ तक आजके इस संकटका सवाल है, सब दलोंके बीच दिली सहयोग होना चाहिये।

सेवाग्राम, १४–२–'४६ मोहनदास करमचंद गांधी
('हरिजन'से)

नासमझ बरबादी

अखिल भारत-ग्राम-उद्योग-संघके श्री झवेरभाई पटेल, जो अपने विषयके जानकार हैं, लिखते हैं:

"बर्मासे चावलोंका आना बन्द हो जानेके बादसे हिन्दुस्तानमें चावलकी बेहद कमी हो गई है। चावलकी इस कमीको पूरा करनेके लिए चावलोंको एक हदके बाद पॉलिश करनेकी मुमानियत कर दी गई। अगर पॉलिश करनेकी बिलकुल ही मुमानियत कर दी गई होती तो बर्मासे आनेवाले चावलोंके बन्द हो जाने के कारण पैदा हुई कमी जरूर पूरी हो गई होती। हिन्दुस्तानमें जितना चावल पैदा होता है, उसका सिर्फ़ ५ फ़ी सदी बर्मासे आता था, जबकि पॉलिश करनेसे नुक़सान १० फ़ी सदी होता है। कुछ तो लोगोंकी आदतको एकदम बदल डालना मुश्किल होता है, और कुछ मौजूदा सरकार लोकमतको तैयार करके उसे अपने साथ नहीं रख सकती, इसलिए वह यह तरीक़ा जारी न कर सकी। लेकिन इससे भी ज्यादा खराबीकी बात यह हुई कि लोगोंका समझा-बूझा सहयोग न मिलनेके कारण सरकारका यह अधूरा उपाय भी बेकार गया। जबसे सरकारने कम पॉलिश किया चावल देना शुरू किया, चावल खानेवालोंने राशनके चावलको पॉलिश करवाना शुरू कर दिया। मैंने हालहीमें गुजरातमें देखा है कि गोला जातिकी औरतें घर-घर जाकर मजदूरी पर चावल कूटनेका काम करने लगी हैं। ईधर यह एक आम रिवाज बन गया है। गृहस्थीमें काम आनेके लिए लकड़ीके ऊखलों और मूसलोंकी बिक्री भी ख़ूब हो रही है। बम्बई-जैसे बड़े शहरोंमें, जहाँ जगहकी कमीकी वजहसे लकड़ीके ऊखल और मूसल काममें नहीं लिए जा सकते, औरतें लोहेके सँभलने लायक़ ऊखल-मूसल काममें लेती हैं। लकड़ीके ऊखल-मूसलसे पॉलिश करनेकी हालतमें चावलकी मिकदार औसतन क़रीब पांच फ़ी सदी कम हो जाती है और लोहेके ऊखल-मूसलसे होनेवाली कमीकी तो कोई सीमा ही नहीं है; वह कभी-कभी ३० फ़ी सदी तक पहुँच जाती है। ऐसे परिवार थोड़े ही होंगे जो राशनमें मिलनेवाले चावलोंको उसी रूपमें खाते हों। इसका नतीजा पहलेके बाक़ायदा पॉलिश किये हुए चावलोंसे भी ज्यादा खराब हो रहा है।

"हम अपनी ख़ूराकमें बिना पॉलिशका पूरा चावल काममें लेने लगें, इसका सबसे कारगर तरीक़ा यह है कि हम अपनी बहनोंको आहार-शास्त्र सिखायें।"

यह बात बिलकुल सही है कि यह ज़रूरी सुधार हम अपनी बहनोंको शिक्षा देकर ही जल्दी करवा सकते हैं। हमें उनको यह शिक्षा देनी होगी कि किस तरह पकाने पर हम अपने भोजनके पोषक तत्त्वोंकी रक्षा कर सकते हैं। यह शिक्षा कैसे दी जाय, यह एक गम्भीर सवाल है। अख़बारों और सभाओंके अलावा स्कूल और कॉलेज इस शिक्षाके शायद सबसे ज्यादा तैयार साधन हो सकते हैं। अगर लोगोंको अपने-आपको और करोड़ों भूखोंको इस नाज़ुक समयमें बचाना है, तो अख़बारों और सभाओंके ज़रिये यह तात्कालिक ज़रूरत पूरी की जानी चाहिये।

सेवाग्राम, १७–२–'४६
('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

१२५ सालकी उमर

एक सौ पचीस साल जीनेकी बात मैंने बिना सोचे नहीं कही थी। उसमें रहस्य था। मेरा आधार ईशोपनिषद्का नीचे लिखा मंत्र है:

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि, जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति, न कर्म लिप्यते नरे॥"

इसका शब्दार्थ इस प्रकार है: सेवाकार्य यानी निष्काम कर्म करते हुए मनुष्य सौ साल जीनेकी इच्छा रक्खे। सौ साल यानी १२५ बरस, इस आशयकी एक टीका मैंने पढ़ी थी। आज भी मद्रासमें कुछ लोग सौका अर्थ ११६ करते हैं। मुझे सौ रुपये दिये गये, लेकिन असलमें वे ११६ थे। सौको निन्यानवे+एककी रीतिसे गिननेका कोई अचूक रिवाज हमारे देशमें नहीं है। बात ऐसी हो, चाहे न हो, यहाँ उससे कोई बहुत निस्बत नहीं। भले, सौका मतलब एक पर दो शून्य ही हो।

मुझे तो सिर्फ़ इच्छापूर्तिकी शर्त बतानी है। निष्काम सेवाकार्य करते हुए यानी अनासक्त भावसे रहते हुए लम्बी उमर तक जीनेकी इच्छा रखनी चाहिये। ऊपरके मंत्रसे मैं यह भावार्थ निकालता हूँ कि इसके बिना जीनेकी इच्छा की नहीं जा सकती। मुझे इस बारेमें ज़रा भी शक नहीं कि अगर अनासक्त न हुआ जाय, तो सवा सौ साल जिया ही नहीं जा सकता। आदमीकी आँखें टिम-टिमाती रहें और वह पलंग पर मुर्देकी तरह पड़ा रहे, तो वह दूसरों पर बोझ बन जाता है और तब उसका यह धर्म हो जाता है कि वह ज्यों-त्यों जीनेके बदले ईश्वरसे अपने लिए जल्दी मौत माँग ले। मनुष्यकी देह भोगके लिए हरगिज़ नहीं है, मात्र सेवाके लिए है। त्यागमें रहस्य है, जीवन है। भोगमें मृत्यु है। निष्काम सेवा करते हुए सबको सवा सौ साल जीनेका अधिकार है, सबको यह इच्छा रखनी चाहिये। ऐसे आदमीका समूचा जीवन सिर्फ़ सेवाके लिए होगा। इस सेवामें, इस सेवाके लिए किये गये त्यागमें सम्पूर्ण रस रहा है। इस रसको कोई छीन नहीं सकता, क्योंकि यह अमृतरस हृदयमेंसे झरता है और पोषण पहुँचाता है। ऐसे जीवनमें आतुरता या चिन्ताको कोई स्थान नहीं। उसमें अपूर्व आनन्द है। इस आनन्दके बिना मैं दीर्घजीवनको असम्भव मानता हूँ, और वह सम्भव भी हो तो निरर्थक है।

इससे यह साफ़ हो जाता है कि शर्तका पालन न हो, तो सवा सौ बरस जीनेकी आशा या इच्छा आकाशपुष्पको पानेकी आशा या इच्छाके समान है। मुमकिन है कि बाहरी उपायोंसे लम्बी उमर तक जिया जा सके, लेकिन वैसे जीवनको इस विचारधारामें कहीं कोई स्थान नहीं।

सेवाग्राम, ११–२–'४६
('हरिजनबंधु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

ग्राहकों और एजण्टोंसे

ड्राफ्ट और पोस्टल ऑर्डर **व्यवस्थापक, हरिजन-सेवकके** नाम भेजें, किसी व्यक्तिके नाम नहीं। पोस्टल ऑर्डर इस तरह भेजें कि उसका रुपया **अहमदाबाद पोस्ट ऑफिससे** मिल सके।

हमारी बम्बई (१३०, प्रिन्सेस स्ट्रीट), पूना (२९९, सदाशिव पेठ), सूरत (कणपीठ बाज़ार) और राजकोट (सर लाखाजीराज रोड) की शाखाओंके सिवा दूसरे किसी व्यक्ति, संस्था या एजण्टको हमारी तरफ़से चन्दा वसूल करनेका अधिकार नहीं दिया गया है।

एजण्ट कृपया इस बातका ध्यान रक्खें कि **हरिजन-सेवककी** प्रतियों पर छपी क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत वे ले नहीं सकते। अगर यह नियम तोड़ा गया, तो उनकी एजन्सी रद कर दी जायगी। ख़रीदारोंसे प्रार्थना है कि वे छपी हुई क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत न देकर हमारे साथ सहयोग करें और अगर कोई ज़्यादा क़ीमत माँगे, तो हमें उसकी इत्तिला करें।

नमूनेकी प्रतिके लिए तीन आनेके डाक-टिकट भेजने होंगे।

व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक पत्र

गांधीजीको लोगोंकी भीड़का अध्ययन करना बहुत प्रिय है। यह भीड़ बच्चों-सी सरल, चंचल, और मनचली होती है और जब क्षुब्ध हो जाती है, तो कभी-कभी पिंजड़ेमें बंद जानवरकी तरह अपना तोल खो बैठती है, खतरनाक बन जाती है। कभी-कभी लोगोंकी अविवेकपूर्ण पूजा या भक्तिसे गांधीजीको बचा लेना ज़रूरी हो गया है। लेकिन जिस तरह एक माँ अपने मनचले बालकको छोड़ नहीं सकती, उसी तरह गांधीजी भी जनसमूहको छोड़ नहीं सकते।

अब, जब कि आज़ादी नज़दीक है, लोगोंकी भीड़को तालीम देना और अनुशासन या निज़ाम सिखाना एक बहुत ही महत्त्वकी चीज़ बन गई है। इधर यह सवाल लगातार गांधीजीके मनमें उठा करता है कि लोग आज़ादीके पहले धक्केको किस तरह बरदाश्त करेंगे? — उसके प्रथम साक्षात्कारका उन पर क्या असर होगा? उनके इस उमड़ते हुए उत्साह और उनकी इस भक्तिका अन्त क्या होगा? अहिंसा या हिंसा? जब तक उनको अहिंसक दृष्टिसे भलीभाँति संगठित करके तैयार नहीं किया जाता, वे आज़ादीसे बहुत फ़ायदा नहीं उठा सकेंगे और मुमकिन है कि आज़ादी उनके लिए एक शंकास्पद वरदान बन जाय। इसलिए अबकी गांधीजीने कलकत्तेसे मद्रास तक की अपनी यात्राको जनसमूहके व्यवहारका अध्ययन और निरीक्षण करनेकी यात्रा बना लिया था।

यह तो जानी हुई बात है कि गांधीजीके दिलमें उड़ीसाके लिए एक ख़ास ममता है, क्योंकि उड़ीसा भारतमाताका 'अनाथ बालक' है। यात्राके प्रबन्धकोंने तय किया था कि रातमें गाड़ी कहीं भी न ठहराई जाय। लेकिन गांधीजीने उड़ीसाके कई स्टेशनों पर ख़ास तौरसे गाड़ी ठहरवाई। उस दिन आधी रातके क़रीब हम कटक पहुँचे। वहाँ लोगोंकी एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हो गई थी और गांधीजीको भाषण करनेके लिए ले जाया गया था। वहाँ पहुँच कर गांधीजीने जो कुछ देखा, उससे उन्हें बहुत ही दुःख हुआ। लोग अव्यवस्थित थे और शोर मचा रहे थे। गांधीजीने उनको अपनी व्यथा कह सुनाई। वे बोले कि उन्हें इस बातका बहुत ही अफ़सोस है कि जिस उड़ीसाको वे इतना ज़्यादा चाहते हैं, और जहाँ उन्होंने पैदल चलकर हरिजनयात्रा की थी, वहाँ लोग उनकी उम्मीदोंको इस तरह झुठलायें। क्या यही उनकी अहिंसा है? या क्या वे यह सोचते हैं कि इस तरहकी अनुशासन-हीनता और हुल्लड़बाजीसे आज़ादी हासिल की जा सकेगी या टिकाई जा सकेगी? अगर वे ऐसा सोचते हैं, तो सचमुच बहुत ग़लत सोचते हैं। क्या अणु बमके मुक़ाबलेमें, जो पाशवी शक्तिकी पराकाष्ठाका सूचक है, अपनी इस अनुशासनहीनता और हुल्लड़बाजीको पेश करके हम अपनी हँसाई ख़ुद न कर लेंगे? अब वक़्त आ गया है, जब उन्हें इन दो रास्तोंमेंसे किसी एकको चुननेका निश्चय कर लेना चाहिये। अगर वे समझते हैं कि अहिंसामें अब कोई दम नहीं रह गया है, तो उन्हें उसे छोड़ देनेकी पूरी आज़ादी है। लेकिन अगर मुँहसे अहिंसाकी बात करते हुए वे मनमें हिंसाकी बात सोचते हैं, तो वे अपनेको और दुनियाको धोखा देने और ठगनेके अपराधी ठहरते हैं। और उन्होंने कहा: "मुझे न तो आप लोगोंके स्वागतभरे जय-जय-कारकी ज़रूरत है, और न रुपये-पैसोंकी। लेकिन मैं यह चाहता हूँ कि आपके अंदर जो झुठाई घुस गई है, उसे आप निकाल डालें। आपके उपहारोंसे मुझे इतनी ख़ुशी नहीं होगी, जितनी इस एक कामसे होगी। आपके हल्ला मचानेसे तो मुझे कभी ख़ुशी हुई नहीं, न कभी होगी।"

लेकिन बरहामपुरने कटककी कमीको कुछ पूरा किया। बाक़ीके सफ़रमें भी जहाँ-जहाँ गाड़ी ठहरी, लोगोंकी भीड़ उमड़ती ही नज़र आई। वॉल्टेरसे दिनका सफ़र शुरू हुआ। लोगोंकी उस प्रचंड भीड़को, जो दूर-दूरसे चलकर और ख़राब मौसमकी मुसीबतोंको झेलकर भी अनन्य भक्तिके साथ वहाँ एकत्र हुई थी, देखना भी अपने-आपमें एक दर्शन था — एक साक्षात्कार! लोग हरिजनोंकी सेवाके लिए गांधीजीके कटोरेमें अपना पाई-पैसा लगातार खुले हाथों डालते चले जाते थे। इस तरह जो रक़म इकट्ठा हुई उसे गिननेमें श्री कनु गांधीको और उनके ४० साथियोंको मद्रासमें अपने दो दिन और दो रातका अधिकतर समय लगाना पड़ा। इस रक़ममें ३,८९५ रुपयोंके सरकारी नोट और ५४,६०८ सिक्के थे। इस तरह सारी यात्रामें कुल रु० ५५,०७१-७-३ इकट्ठा हुए थे। सेवाग्राम, १३-२-'४६ (क्रमशः)

('हरिजन'से) प्यारेलाल

ईश्वरका अर्थ

"आजकल आपकी लिखी 'गीताबोध' पढ़ रहा हूँ, और उसे समझनेकी कोशिश करता हूँ। 'गीताबोध'के दसवें अध्यायको पढ़नेके बाद जो सवाल मेरे मनमें उठा है, उसीके सिलसिलेमें यह ख़त लिख रहा हूँ। उसमें लिखा गया है कि श्रीकृष्ण अर्जुनसे कहते हैं: "और, छल करनेवालोंका द्यूत भी मुझीको समझ। इस संसारमें जो भी कुछ होता है, सो मेरी इजाज़तके बिना नहीं हो सकता। भला, बुरा भी तभी होता है, जब मैं होने देता हूँ।" तो क्या भगवान् बुरा भी होने देता है? और जब यह चीज़ भगवान्‌की इजाज़तसे होती है, तो वह इसका बदला बुराईके रूपमें कैसे दे सकता है? क्या परमात्मासे संसारकी उत्पत्ति इसीलिए है? क्या संसारका समय शान्तिपूर्ण वातावरणमें कभी बीत ही नहीं सकता?"

एक पत्र-लेखकने यह सवाल पूछा है। यह कहना कि बुराईका मालिक भी ईश्वर है, कानोंको कठोर लगता है। लेकिन अगर वह अच्छाईका मालिक है, तो बुराईका भी है ही। रावणने अनहद ताक़त दिखाई, सो भी ईश्वरने दिखाने दी तभी न? मेरे ख़यालमें इस सारी उलझनकी जड़ ईश्वर-तत्त्वको न समझनेमें है। ईश्वर कोई पुरुष नहीं, व्यक्ति नहीं। उसे कोई विशेषण लगाया नहीं जा सकता। ईश्वर ख़ुद ही क़ायदा, क़ायदा बनानेवाला और क़ाज़ी है। दुनियामें हमें यह चीज़ इतनी सुसंगत रीतिसे कहीं देखनेको नहीं मिलती। लेकिन जब कोई आदमी ऐसा करता है, तो हम उसे शाहंशाह नीरो (शैतान)के रूपमें देखते हैं। मसलन्, हिन्दुस्तानका वाइसराय ख़ुद क़ायदे बनानेवाला, क़ायदा और क़ाज़ी है। मनुष्यको यह स्थिति शोभा नहीं देती। लेकिन जिसे हम ईश्वरके रूपमें पूजते हैं, उसके लिए तो यह न सिर्फ़ ज़ेबा है, बल्कि असलमें हक़ीक़त भी यही है। अगर हम इस चीज़को समझ लें, तो इस ख़तमें जो सवाल उठाया गया है, उसका जवाब मिल जाता है, या यों कहिये कि फिर वह सवाल उठ ही नहीं सकता।

दुनिया अपना समय शान्तिमय वातावरणमें बिता ही नहीं सकती, यह सवाल भी खड़ा नहीं हो सकता। जब दुनिया चाहेगी तब वातावरण भी शान्तिमय हो जायगा। यह सवाल तो उठना ही न चाहिये कि दुनिया कभी ऐसा चाहेगी या नहीं, या चाहेगी तो कब चाहेगी। ऐसे सवाल उठाना मेरे ख़यालमें निठल्लेपनकी निशानी है। 'आप भला, तो जग भला'के अनुसार सवाल पूछनेवाले ख़ुद हर हालतमें शान्ति रख सकें, तो उन्हें समझ लेना चाहिये कि जो काम वे ख़ुद कर सकते हैं, सो सारी दुनिया कर सकेगी। ऐसा न माननेका मतलब होगा कि वह बड़े अभिमानी हैं।

('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

नई किताबें

	मूल्य	डाकखर्च
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधारी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१-८-०	०-५-०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०
हफ़्तेमें उर्दू — (श्रीपाद जोशी)	०-७-०	०-१-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकेला नहीं

Reg. No. B 4448

हरिजन-सेवक

दो आना

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क ४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ३ मार्च, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

विषय-सूची

			पृष्ठ
साप्ताहिक पत्र	...	प्यारेलाल	२५
अकेला नहीं	...	गांधीजी	२८
उपवासका दुरुपयोग	...	गांधीजी	२८
दो मँगें	...	गांधीजी	२९
हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा	...	गांधीजी	२९
सूबोंमें कस्तूरबा ट्रस्टके एजण्ट	...	अमृतलाल वि० ठक्कर	३०
गांधीजीके अखबारी बयान	...		३०
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	३२
प्रार्थनाका अनुशासन	...	प्यारेलाल	३२
कुदरती इलाज	...	गांधीजी	३२

साप्ताहिक पत्र

भयंकर छाया

मद्राससे वापस लौटने पर गांधीजी कुछ ही समय सेवाग्राममें रह पाये। इस अरसेमें आनेवाले अकालकी भयंकर छायासे गांधीजीका दिमाग़ भरा हुआ रहा। जब वह बंगालमें थे, तभी आनेवाले खतरेकी उन्हें आगाही मिल गई थी। बिहार और मद्रासकी हालत जानकर तो उन्हें और भी परेशानी हुई। जब वह मद्रासके गवर्नरसे मिले, तो उन्होंने उनसे भी इस सवालकी चर्चा की, मगर बातचीतके बाद उनके दिलका बोझ हलका न हुआ। हालत ऐसी है कि जिसमें सभी सम्बन्धित पक्षोंका सहयोग ज़रूरी है, और यह कहकर मैं कोई पोशीदा बात ज़ाहिर नहीं कर रहा हूँ कि वा[illegible] प्राइवेट सेक्रेटरी श्री एबेल जब ११ तारीखको सेवाग्राम पहुँचे, त[illegible]हें यह जानकर ख़ुशीके साथ ताज्जुब हुआ कि गांधीजीने अपने एक लेखमें उनके प्रस्तावोंको पहले ही लिख दिया है। यह लेख 'हरिजन'में छप चुका है।

गांधीजी प्रश्नको टालनेके आदी नहीं। उसी दिन शामकी प्रार्थनाके बाद उन्होंने आश्रमवासियोंको समझाया कि खाने-पीनेकी चीज़ोंको बचाकर रखने और किफ़ायतसे खर्च करनेकी और अनाज वग़ैरा उपजाने लायक़ धरतीके चप्पे-चप्पेमें खेतीके ज़रिये खाद्यकी मिक़दार बढ़ानेकी कितनी सख्त ज़रूरत है। डॉ० जाकिर हुसैन और तालीमी संघके कुछ दूसरे सदस्य १६ तारीखकी दोपहरको बातचीत करने आये, तब भी गांधीजीने उनके साथ इसी सवाल पर चर्चा की। चूँकि नई तालीमका उद्देश्य ही जीवनके असली हालातके साथ जीवित सम्बन्ध क़ायम करना है, इसलिए उनमें होनेवाले हरएक हेरफेरका उसे सामना करना चाहिये। "चुनाँचे मौजूदा संकटके समय, जब कि लोगोंके भूखों मरनेका खतरा पैदा हो गया है, यह कहनेसे काम न चलेगा कि हम लोग तो शिक्षा-सम्बन्धी कामोंमें लगे हुए हैं। नई तालीमको मौजूदा हालातका सामना करना चाहिये। वह हमारी खाद्यसामग्रीको बढ़ानेका साधन बन जाय और लोगोंको बताये कि खाद्यकी कमीके खतरेका कैसे मुक़ाबला किया जा सकता है। अगर नई तालीमके विद्यार्थी अपनी खाद्य-सम्बन्धी ज़रूरतोंका एक हिस्सा भी ख़ुद पैदा करने लगें, तो उस हद तक वे दूसरोंके लिए खाद्य सुलभ कर देंगे। और अपनी ख़ुदकी मिसालसे वे दूसरोंको अपने पाँवों पर खड़े होनेका जो सबक़ सिखायेंगे, सो अलग।" किसीने उज्र पेश किया कि सेवाग्राममें तालीमी संघके पास जो ज़मीन है वह हलके दर्जेकी है और मुश्किलसे ही खेतीके लायक़ हो सकती है। गांधीजीने इस एतराज़को रद कर दिया: "आपको मालूम नहीं कि दक्षिण अफ्रीकामें हमको किस क़िस्मकी ज़मीनसे पाला पड़ा था। हम वहाँ 'कुली' कहे जाते थे और कुलियोंको अच्छी ज़मीन कौन देता? मगर अपनी मेहनतके बल पर हमने उसी ज़मीनको फलोंके बग़ीचेमें बदल दिया।

"अगर मैं आपकी जगह होऊँ तो मैं शुरूमें हलसे काम न लूँ। मैं बच्चोंके हाथोंमें कुदाली पकड़ा दूँगा और उससे अच्छी तरह काम लेना सिखाऊँगा। यह भी एक कला है। बैलोंकी ताक़तसे बादमें काम लिया जा सकता है। इसी तरह मैं यह नहीं पसन्द करूँगा कि खराब या हलकी क़िस्मकी ज़मीनके कारण आप नाउम्मीद हो जायँ। चिकनी मिट्टी या खादकी हलकी परत डालकर हम कई उपयोगी साग-सब्ज़ी और गमलोंमें पैदा होनेवाली पत्तियाँ उगा सकते हैं। थोड़े गहरे गड्ढोंमें पाखाना डालकर हम उसकी खाद बनानेका काम फ़ौरन शुरू कर सकते हैं। इस खादके तैयार होनेमें एक पखवाड़ेसे ज्यादा नहीं लगता। नहाने-धोने या रसोईघरके पानीकी हर बूँदको पिछवाड़ेकी तरकारियोंकी क्यारियोंमें पहुँचाया जा सकता है। पानीकी एक बूँद भी बरबाद नहीं जाने दी जानी चाहिये। हरी पत्तियाँ मिट्टीके गमलोंमें और बेकाम पुराने टीनके डिब्बोंमें उगाई जा सकती हैं। छोटे-से-छोटे मौक़ेको भी हाथसे न जाने दिया जाना चाहिये। अगर यह सब देशव्यापी पैमाने पर हो सका, तो उस हालतमें कुल मिलाकर उसका नतीजा बहुत बड़ा होगा।"

रूँगटा भवनकी प्रार्थना-सभा

सेवाग्रामसे पूना जाते हुए गांधीजी बम्बईमें एक ही दिन ठहरे थे। आजकल दो बातें उनके दिलमें बसी हुई हैं। एक तो जनताके अहिंसक संगठनके लिए सामूहिक प्रार्थनाकी साधना और दूसरी अकालकी समस्या। इन दोनों बातोंके बारेमें बम्बईके रहनेवालोंको अपना संदेश सुनानेके लिए इस मौक़ेका गांधीजीने फ़ायदा उठा लिया।

१८ तारीखकी शामको हमेशाकी तरह रूँगटा भवनमें सार्वजनिक प्रार्थना हुई थी। जिस तरह गांधीजी बंगाल, आसाम और मद्रासके दौरेमें करते आये हैं, उसी तरह अबकी बम्बईमें पहली बार उन्होंने तालके साथ रामधुनको प्रार्थनामें दाखिल किया। सामूहिक रामधुन और तालका महत्त्व और अर्थ इसी अंकमें दूसरी जगह बताया गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । रूँगटा भवनकी सभामें कितने ही लोगोंने ताल देनेमें गड़बड़ी की । यह गांधीजीको पसन्द नहीं आया, उन्होंने मीठा उलाहना देते हुए कहा : "बम्बईके रहनेवाले संगीतके शौक़ीन हैं। संगीत सीखनेके यहाँ कई साधन हैं । इसलिए अगर बालकोंको भी ताल देना न आये, तो इसमें मैं उनकी माताओंका ही दोष समझता हूँ । मैंने आपको अनेक बार कहा है कि अगर हमें आज़ाद होना है, तो हमको हँसते-हँसते फाँसी चढ़ जानेकी ताक़त हासिल करनी पड़ेगी । मगर हर चीज़के लिए उसका वक़्त होता है । हम हँसनेके समय हँसें और गम्भीर होनेके समय गम्भीर रहें । बे-वक़्तकी हँसी असभ्यता समझी जाती है । इसी तरह गम्भीर रहनेके समय खिलखिलाना अशिष्टताका सूचक है । हम हिन्दू हों या मुसलमान, पारसी हों या यहूदी या सिक्ख, सब एक ही ईश्वरकी सन्तान हैं । दिनके चौबीसों घण्टे हमको उसका नाम लेना चाहिये । लेकिन अगर ऐसा न कर सकें, तो कम-से-कम प्रार्थनाके समय तो सब इकट्ठे होकर उसका नाम लें । सामूहिक प्रार्थना सारी मानव जातिको एक कुटुम्ब समझनेकी शिक्षा देनेका अच्छे-से-अच्छा साधन है । सामूहिक रामधुन और ताल उसकी बाहरी निशानी है । अगर उनका रूप सिर्फ़ यांत्रिक न हो, बल्कि उनके ज़रिये हृदयकी एकताकी गूँज उठती हो, तो उससे जो ताक़त और रसका वातावरण पैदा होता है, उसको शब्दों द्वारा नहीं, बल्कि अनुभवसे ही समझा जा सकता है ।

"जब हम पुलिस और फ़ौजमें भरती होते हैं, तो हमको क़वायद सिखाई जाती है । हथियार चलानेकी शिक्षा देना फ़ौजी अनुशासनका ज़रूरी हिस्सा समझा जाता है । इसका मक़सद दुश्मनको मारनेकी लियाक़त हासिल करना होता है । फ़ौजी क़वायदमें हुक्मके मुताबिक़ कूच करना, सामूहिक तरीक़ेसे, ज़रा भी आवाज़ किये बिना, तालके साथ हिलना-डुलना आदि बातें शामिल होती हैं । इसी तरह अहिंसक संगठनमें सामूहिक रूपसे एक हृदय और एक तार होकर रामधुन और ताल लगाना ज़रूरी होता है । यह सलाह तभी फ़ायदेमन्द साबित होगी, जब हम केवल बुद्धिसे ही नहीं, बल्कि हृदयसे भी इसको मानेंगे । कोरी, सूखी बुद्धि हमको बहुत दूर नहीं ले जायगी ।"

नौकर या मालिक ?

अकालके संकटकी चर्चा करते हुए गांधीजीने कहा : "आज हमारे सामने एक मुश्किल वक़्त आ खड़ा हुआ है । उसके लिए आप सरकारकी आलोचना कर सकते हैं । मैं भी उसमें आपका साथ दे सकता हूँ । इससे पहले मैंने सरकारकी कड़ी आलोचना की है और वक़्त आने पर, अगर मैं अकेला भी रहा, तो भी वैसा करनेमें पीछे न रहूँगा । मगर आज हम सरकारको भूल जायँ । जैसा कि मैंने सन् १९४२ में कहा था, अगर अंग्रेज़ हिन्दुस्तानकी जनताके मालिक नहीं, बल्कि नौकर बनकर धुरी राष्ट्रोंको हरानेके लिए इस देशमें रहे होते, तो मुझे कुछ नहीं कहना पड़ता । मगर उन्होंने तो इससे बिलकुल उलटा ही किया है । वे शाहन्शाहके तानाशाही नुमाइन्दे बनकर यहाँ रहे हैं । मैं यह नहीं कहना चाहता कि उन्होंने जानबूझ-कर ऐसा किया है । मगर अपनी ताक़तके घमण्डमें उन्होंने हिन्दुस्तानके सच्चे प्रतिनिधियोंकी सलाहको ठुकराया और प्रजाको लुट जाने दिया । इसका जो नतीजा हुआ, उसे हम सब जानते हैं ।

सुस्ती और पक्षपात छोड़ो

"जो हुआ, सो हुआ; अनाजके अकालको तो मैं थोड़ा समझ भी सकता हूँ, पर कपड़ेके अकालको तो मैं नहीं समझ सकता । हम जितना चाहें उतना कपास पैदा कर सकते हैं । क़ुदरतने दिल खोलकर अपना भण्डार हमको दिया है । हमारे देशमें हिमालय जैसा पर्वतराज है, जिसकी चोटियाँ हमेशा बर्फ़से ढँकी रहती हैं । कहते हैं, उसमें भगवान् विश्वनाथका निवास है । गंगा जैसी महा नदियाँ हमारे देशमें बहती हैं । किन्तु हमारी मूर्खता और सुस्तीसे पानीका यह अटूट भण्डार हर साल बंगाल और अरबके सागरोंमें फ़ज़ूल चला जाता है । इस सारे पानीको बाँध बाँधकर खेतीके काममें लिया जाय, तो हमारे देशमें कभी अकाल पड़ ही नहीं सकता । इसी तरह अगर चरखे या तकलीके रूपमें हम घर-घरमें एक-एक छोटी मिल खड़ी कर दें, तो हमको अपनी ज़रूरतके लायक़ सारा कपड़ा क़रीब-क़रीब मुफ़्त मिल सकता है । मैंने इस पर अमल करनेके लिए पुकार-पुकार कर सरकारसे कहा है । अब भी देखना है, वह क्या जवाब देती है । आज भी इस योजना पर अमल किया जा सकता है । मेरा दावा है कि उस पर अमल किया जाय, तो एक भी आदमीको नंगा न रहना पड़े और कपड़ेकी कमी महसूस न करनी पड़े । सिर्फ़ सरकारका निठल्लापन और ग़लत धारणा ही रुकावट पैदा कर रही है ।

"अनाजकी कमीके बारेमें मुझे यह मानना पड़ता है कि उसे दूर करनेके लिए हमारे पास काफ़ी साधन नहीं हैं । यह काम तो सरकार ही कर सकती है । मगर हमको भी हाथ पर हाथ धरकर बैठ नहीं रहना चाहिये । मौतके आनेसे पहले ही मर जानेमें मर्दानगी नहीं । धरतीके नीचे पानीका जो अटूट भण्डार भरा है, उसको काममें लानेके लिए सरकारके इंजीनियरोंको ज़रूरी उपाय करने चाहिये । इसके लिए २,००० फीटकी खुदाई भी करनी पड़े, तो की जानी चाहिये । सभी साधनों और तरकीबोंको जब तक हम न आज़मा लें तब तक हमें नाउम्मीद होने या क़िस्मतको दोष देनेका हक़ नहीं हो सकता ।

"मैं देखता हूँ कि बम्बई जैसे बड़े शहरोंमें आज दावतों और दूसरे जलसोंमें अन्न बेहिसाब बरबाद होता है । आज जैसे संकटके समय तो अन्नके एक-एक दाने और घी या तेलकी एक-एक बूँदको बचा लेनेका हरएकका धर्म हो जाता है । जब लाखोंकी तादादमें लोग भूखों मरनेवाले हों, तब शरीरको क़ायम रखनेके लिए जितना ज़रूरी हो, उससे ज़्यादा मौज-शौक़के लिए कुछ भी खाना पाप ही समझा जायगा । अगर यह बचा हुआ अन्न ग़रीबोंको, उन्हें भिखारी बनानेके लिए नहीं, बल्कि उनकी मेहनतके बदलेमें दिया जाय, तो उन्हें अच्छी मदद मिल सकती है ।"

आगे चलकर गांधीजीने हमारी आजकी बेबस हालतका इलाज बताते हुए कहा कि यह हमारी दोहरी ग़ुलामीका नतीजा है । एक ग़ुलामी तो विदेशी ताक़तकी है और दूसरे, हम ख़ुद आलस्यके ग़ुलाम बन गये हैं । आलस्यकी ग़ुलामीकी मिसालके तौर पर गांधीजीने कालबादेवीके खादी-भण्डारकी ओर इशारा किया । खादीकी नई योजनाके मुताबिक़ सभी खादी-प्रेमियोंको कातने और पींजनेके साधन मुहय्या करने और सारी क्रियायें सिखानेकी सुविधा इस खादी-भण्डारने की है । शुरूमें तो लोगोंमें इसके लिए थोड़ा उत्साह देखा गया, पर अब कातने-पींजनेके सरंजामकी बिक्री धीमी पड़ गई है । अगर बम्बईके लोग आलस्यकी गहरी नींदसे जाग पड़ें, तो खादी-भण्डारमें कातना-[illegible]ना सीखनेवालोंकी रात-दिन भीड़ लगी रहनी चाहिये और थोड़े ही अरसेमें कपड़ेकी तंगी भूतकालकी बात हो जानी चाहिये ।

साफ़ सोचनेकी ज़रूरत

लोगोंको उम्मीद है, और मैं भी उम्मीद रखता हूँ कि थोड़े अरसेमें ही हमारी राजनीतिक ग़ुलामी खत्म हो जायगी । मगर परदेशी ग़ुलामी खत्म हो जानेसे ही क्या करोड़ों लोगोंको सच्ची आज़ादी मिल जायगी ? ऐसी शंका बारबार मनमें उठती है । मौलाना अबुल कलाम आज़ादने कुछ दिन पहले कलकत्तेमें गिरजाघर वग़ैरा जला डालनेकी घटनाओंकी निन्दा करते हुए कहा कि ये घटनायें आज़ादीकी तमन्ना रखनेवाले लोगोंको शोभा नहीं देतीं । मैं उम्मीद रखता हूँ कि ऐसा शर्मनाक बरताव लोग फिर न करेंगे । अगर लोग समझते हैं कि हुल्लड़ मचानेसे अंग्रेज़ यहाँसे चले जायँगे, तो वे बड़ी भूल करते हैं । हमने दुनियाके आगे सत्य और अहिंसासे आज़ादी लेनेकी प्रतिज्ञा की है । उसके बाद अगर हम ऐसा नपुंसक ग़ुस्सा ज़ाहिर करेंगे, तो हम झूठे समझे जायँगे । लूटमार करके, घरोंमें आग लगाकर या हुल्लड़ करके हम न तो इस देशका भला कर सकते हैं और न दूसरे किसीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने पहले भी कहा था और आज फिर कहता हूँ कि अगर ४० करोड़ हिन्दुस्तानी एक आवाज़से और एक दिलसे फ़ैसला करें कि उन्हें तो सत्य और अहिंसासे ही स्वराज्य लेना है, तो आज़ादी उनकी गोदमें आकर गिरने ही वाली है। किन्तु अगर उनमें इतनी श्रद्धा नहीं है, तो सोच-समझकर और खुले तौर पर वे सत्य और अहिंसाको छोड़ सकते हैं। मेरे जैसा आदमी भले ही इसे बेवक़ूफ़ी समझे, मगर दुनिया उन्हें झूठा अथवा कायर नहीं समझेगी। मुझे डर है कि आज हम इस इलज़ामसे नहीं बच सकते। कप्तान शाहनवाज़ने हालमें कहा है कि नेताजी सुभाष बोसने यह आदेश दिया था कि हिन्दुस्तानमें जाने पर तुम लोगोंको तलवारसे नहीं, बल्कि अहिंसासे देशकी सेवा करनी है। मान लो कि हिन्दुस्तान काफ़ी तादादमें गोलाबारूद और हथियार पैदा कर ले और लड़ाईका हुनर जाननेवाले भी उसके पास हो जायँ, तो भी यह सवाल बच रहेगा कि हिन्दुस्तानकी बेशुमार बहनें और बच्चे, जो हथियार नहीं उठा सकते, स्वराज्य हासिल करनेमें अपना हिस्सा किस तरह बँटा सकते हैं? मुझे तो ऐसा स्वराज्य चाहिये जिसको हासिल करनेमें औरतें और बच्चे बहादुर लड़वैयों जितनी ही बहादुरी दिखा सकें। उसी हालतमें वे हिन्दुस्तानकी आज़ादीके सच्चे हिस्सेदार हो सकते हैं। अहिंसाके ज़रिये ही ऐसा हो सकता है। इसलिए अगर मैं अकेला होऊँगा तो भी यह कहूँगा कि स्वराज्य हासिल करनेके लिए सत्य और अहिंसा ही एकमात्र साधन है।

ख़तरेकी घण्टी

जो खबरें आ रही हैं, उनमें सचाईका थोड़ा भी अंश हो, तो उससे काफ़ी चिन्ताजनक हालतका पता चलता है। अभी उस दिन मारवाड़ी-व्यापारी-संघके श्री एम० एल० खेमकाने इलाहाबादमें पत्र-सम्पादक सम्मेलनके सामने कहा: "एक ओर तो भारत-सरकारके खाद्य-विभागके सेक्रेटरीका यह कहना है कि अगस्त १९४३से अनाजकी निकासी बिलकुल बन्द है, और दूसरी ओर कलकत्तेके चुंगीघरने जो निर्यात-सूची छापी है, उससे पता चलता है कि सिर्फ़ गत अगस्त और सितम्बरके महीनोंमें ही अकेली एक ग़ैर हिन्दुस्तानी फ़र्मने कलकत्तेके बन्दरगाहसे विदेशोंको २२,५०४ टनसे कम चावल नहीं भेजा है, जिसकी क़ीमत ९४ लाख रुपयेसे ज़्यादा होती है।" श्री खेमकाने यह भी कहा है कि "कलकत्तेकी निर्यात-सूचीकी बारिक़ीसे छानबीन करनेसे ही बंगालसे चावलकी और भी निकासीका पता चलेगा।"

एक भारतीय जहाज़ी कम्पनीके मैनेजरकी ओरसे एक सज्जन बम्बईसे लिखते हैं:

"हमारी लाइन १९१७में क़ायम हुई। तबसे हमारे माल ले जानेवाले जहाज हिन्दुस्तानके मुख़्तलिफ़ बन्दरगाहोंके अलावा हाँगकाँग और दूसरे चीनी बन्दरगाहोंके बीच भी चलते रहे हैं। जापानकी लड़ाईमें हमारे दो जहाज डूब गये। हमारा एक नया जहाज पिछले महीने ही आया है। पिछले सप्ताह ता० १४-२-'४६ को विदेशकी अपनी पहली मुसाफ़िरीमें ही वह मूँगकी दालके २,९५१ बोरे ले गया।"

अपनी पूरक सूचनामें वे लिखते हैं:

"पिछले महीने भी 'बेगम' और 'जलज्योति' जहाज दालोंके और मूँगके ३५,००० बोरे कोलम्बो ले गये; लँग दालके २६,०५३ बोरे, अरहरकी दालके ३,०११ बोरे और मूँगके १,५१२ बोरे 'बेगम' जहाजसे निर्यात हुए। मुझे और मालूम हुआ है कि अधिकारियोंकी जानकारीमें इतनी ही मिक़दार हर महीने बाहर भेजी जाती है।"

उत्तरी बंगाल-चावल-मिल-एसोसियेशन, दिनाजपुरने जो रिपोर्ट भेजी है, वह भी उतनी ही चिन्ताजनक है। उसका सार यह है:

"सन् १९४५में बंगाल सरकारने चावलकी दर अचानक ११ रु० ८ आना से घटाकर ९ रु० ८ आना कर दी और जब चावलकी मिलवालोंने इस अचानक और भारी कमीका विरोध किया, तो चावलकी मिलोंके क़ब्ज़ेमें चावलका जो भी संग्रह था, जिसमें उबले, अधउबले, नम और कच्चा धान सभी शामिल थे, वह भारत-रक्षा-नियमोंकी मातहत सरकारने अपने अधिकारमें ले लिया, ताकि मिलोंवाले बादमें बढ़ाई गई १० रु० ८ आना मनकी दरका फ़ायदा न उठा सकें।

"सन् १९४४में बंगाल सरकारने १३ रु० ८ आनासे लगाकर ११ रु० ८ तक आना फ़ी मनके हिसाबसे दिनाजपुर जिलेसे ५० लाख मन चावल हासिल किया और उसी चावलको अभाववाले इलाक़ोंमें और राशनके इलाक़ोंमें १६ रु० फ़ी मनके हिसाबसे बेचा। एक जिलेके चावलसे ही इस तरह सरकारने एक करोड़ रुपयेसे ज्यादा नक़द मुनाफ़ा कमाया। राशनके इलाक़ेमें चावलकी दर घटनेके साथ चावलकी मिलोंके चावल पर सरकार २ रु० फ़ी मनके हिसाबसे भारी बट्टा लेने लगी। सरकारने सन् १९४५में दिनाजपुर जिलेसे ही ९ रु० ८ आनासे १० रु० फ़ी मनके भाव पर ६० लाख मन चावल खरीदा और उसे १४ रु०से १५ रु० फ़ी मनके हिसाबसे बेचा। यह ध्यान रहे कि जिस चावल पर सरकार २ रु० फ़ी मन बट्टा काटती थी, उसको भी वह १४ रु०से १५ रु० फ़ी मनकी दर पर बेचती थी। इस तरह सरकारने एक करोड़ पचास लाख रुपयेसे कम मुनाफ़ा नहीं कमाया। चावल पर बट्टा अनेक अस्पष्ट आधारों पर काटा जा रहा है। जैसे, चावल कम साफ़ हुआ है, ठीक ढंगका नहीं है, कम पॉलिश हुआ है, ज्यादा पक गया है, कम पका है, वग़ैरा। इस प्रकारकी नई-नई क़िस्में हर हफ़्ते उत्साही और तरक़्क़ीकी इच्छा रखनेवाले ऊँचे अफ़सर ईजाद करते रहते हैं। उन्हें सरकारको मुनाफ़ा-खोरीमें मदद देनेके लिए जल्दी-जल्दी तरक़्क़ियाँ मिल जाती हैं। पहलेसे ही बोझसे लदी जनताकी किसीको परवाह नहीं। सरकार मध्यम दर्जेका चावल बट्टा काटकर मोटे चावलसे भी कम भाव पर खरीदती है; मगर उसी चावलको राशनके इलाक़ेमें मध्यम दर्जेके चावलके तौर पर भेजती है।

"सन् १९४५में चावलकी मिलोंको टूटे चावलों (खुडी)को चावलसे अलग करनेके लिए मजबूर किया गया, जो कि सन् १९४४ तक चावलके ही हिस्से समझे जाते थे। . . . खुडी चावलोंका भारी ज़ख़ीरा इकट्ठा हो गया है और कई याददिहानियों और अर्ज़ियोंके बावजूद भी उनको ठिकाने लगानेका कोई इन्तज़ाम नहीं किया गया है। . . .

"ऐसी अनेक मिसालें हैं कि सरकारने चावलकी मिलोंके चावलको खराब बताकर नहीं खरीदा और न ही उसकी निकासीकी इजाज़त दी। नतीजा यह हुआ कि वह चावल बेकार गया या मवेशियोंके खानेके काम आया।

"अगर मिलवालोंको प्रान्तके भीतर ही इस चावलकी निकासी करने दी जाती, तो सरकारी गोदामोंसे जो निहायत बदनाम व खराब चावल दिया जाता था, उससे यह कहीं ज्यादा अच्छा साबित होता। इस तरह सरकार बहुतसे लोगोंको कम-से-कम ख़ूराक भी नहीं मिलने दे रही है, जिसकी तंगीके इन दिनोंमें उन्हें सख़्त जरूरत है।

"चावलकी मिलोंको सौ फ़ी सदी पॉलिश किया हुआ चावल देनेको मजबूर किया गया और अगर चावलके किसी दाने पर थोड़ी भी ललाई पाई गई, तो उसे कम पॉलिश किया हुआ बता दिया गया और उस पर भारी बट्टा लगाया गया। मामूली तौरसे ज्यादा पॉलिश करने पर एक मन पीछे एक सेरकी बरबादी होती है, और चावल टूट भी जाता है। इसके अलावा, चावलके विटामिन तत्त्व कम होते हैं, सो अलग। इस तरह सरकार लाखों मन ऐसा चावल बरबाद कर रही है, जो आसानीसे बचाया जा सकता है।"

अगर यह सच हो, तो चावलकी मिलोंसे सौ फ़ी सदी पॉलिश किये चावलकी माँग और टूटे चावलोंको अलग करनेमें होनेवाली बरबादीको गुनाह ही कहना पड़ेगा। अगर सन् १९४३की दुर्घटना फिर बड़े पैमाने पर न होने देनी हो, तो इस सबकी फ़ौरन ही बारीक़ जाँच होनी चाहिये और कार्रवाई की जानी चाहिये।

पूना, २३-२-'४६

('हरिजन'से)

प्यारेलाल

नई किताबें

	मूल्य	डाकखर्च
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधारी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१-८-०	०-५-०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०
हफ़्तेमें उर्दू लिपि — (श्रीपाद जोशी)	०-७-०	०-१-०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक
३ मार्च १९४६

अकेला नहीं

कुछ दिन हुए, एक मित्रने मुझे लिखा कि दोस्तोंके बीचमें रहते हुए भी उन्हें ऐसा लगता है, मानों वह अकेले हों। मैंने उन्हें कहा था कि मैं सरकारी कर्मचारियोंकी बात पर विश्वास नहीं करता। उनका अकेलापन मेरे इस वाक्यसे पैदा हुआ था। उनका विश्वास कर्मचारियों पर था और वह समझते थे कि मेरा भी होगा। लेकिन जब उन्होंने देखा कि बात तो इससे उलटी है, तो वह निराश हो गये। मुमकिन है कि जो अर्थ मैंने उनके पत्रका निकाला, वह सही न हो। कुछ भी हो, मैंने उन्हें जवाब दिया कि ईश्वरमें श्रद्धा रखनेवाला आदमी अपने आपको कभी भी अकेला महसूस न करेगा। क्योंकि ईश्वर हमेशा उसका साथी है। सारी दुनिया भी उन्हें त्याग दे, तो क्या हुआ? इसलिए उन्हें चाहिये कि वह अपने विश्वासको क़ायम रखें, चाहे मेरा विचार कुछ भी हो। शर्त यह है कि विश्वासका आधार केवल बुद्धि न हो, बल्कि वह दिलके अंदरसे उगा हो।

मैं कुछ दूसरे ढंगसे बना हूँ। विश्वासके जवाबमें विश्वास या प्रेमके जवाबमें प्रेम, विश्वास या प्रेम कहलानेके लायक़ नहीं। सच्चा प्रेम वह है, जो दुश्मनके सामने भी टिके; अगर हमारे पड़ोसी पर हमारा अविश्वास है, तो भी हम उससे प्रेम करें। अंग्रेज़ कर्मचारीवर्ग पर मेरे अविश्वासके लिए सबल कारण हैं। लेकिन अगर मेरा प्रेम सच्चा है, तो अंग्रेज़ कर्मचारियों पर अविश्वास होते हुए भी उनके प्रति मेरे प्रेममें कुछ फ़रक़ न आना चाहिये। अगर मेरा प्रेम तभी तक रहता है, जब तक मेरे मित्र पर मुझे विश्वास है, तो उसकी क्या क़ीमत? इतना तो चोर भी आपसमें करते हैं। परन्तु विश्वासका रिश्ता टूटते ही वे एक दूसरेके दुश्मन बन जाते हैं।

देखिये, आज बम्बईमें क्या हो रहा है? जहाँ मैंने इतना समय बिताया है, जिस बम्बईने सार्वजनिक कामोंके लिए इतना पैसा दिया है, वह बम्बई, मैं मानता था कि अहिंसाको एक हद तक समझ गया है। क्या वही बम्बई अहिंसाकी क़ब्र बनेगा?

मैं यह माननेको तैयार नहीं कि जो लूट-मार और जो बेइज़्ज़ती आज वहाँ अंग्रेज़ोंकी हो रही है, वह गुण्डोंका काम है। आखिर गुण्डे कौन हैं? क्या अंग्रेज़ोंके राजके साथ उनका भी खात्मा हो जायगा? गुण्डोंके सिर सारा दोष मढ़नेका आज जो रिवाज चल पड़ा है, सो बन्द होना चाहिये। गुण्डोंको बनानेवाले भी हम ही हैं। जैसी हवा होती है, वैसा ही उनका बरताव भी हो जाता है।

गल्लेकी दुकानोंको लूटनेकी मूढ़ता पर ज़रा सोचें। लूट-मार करनेवालोंने कोई अपनी भूख मिटानेके लिए लूट-मार नहीं की होगी। वे कहाँ भूखों मर रहे थे? और अनाज तो भूखसे पीड़ित लोगोंके लिए ही था। अगर यह कहा जाय कि उसका दुरुपयोग हो रहा था, तो लूट तो उसे अटका नहीं सकती थी। मुल्कके अनाज पर जो लोग आज क़ब्ज़ा जमाकर बैठे हैं, वे तो जहाँसे भी मिलेगा, और अनाज लाकर भर लेंगे और दो लुटेरोंके बीचमें ग़रीब लोग और भी पिस जायँगे।

जिन्होंने नौकादलके लोगोंमें बलवा करवाया, उन्होंने बिना सोचे-समझे सब काम किया। उन्हें समझना चाहिये था कि बलवा करनेवालोंको आख़िर हारना पड़ेगा। क्या यह सब हिंसाका पाठ सीखनेके लिए था? अगर यही कल्पना थी, तो मैं कहूँगा कि इतिहाससे उन्होंने उलटा सबक़ सीखा है।

मैं अपने आपसे पूछ रहा हूँ — शायद दूसरे भी दिलमें यही पूछते होंगे — कि चौरीचौराकी दुर्घटनाके परिणाम-स्वरूप जो क़दम मैंने उठाया था, वह आज क्यों नहीं उठाता? इसका जवाब यह है कि आज उसकी अंतर-प्रेरणा मुझे नहीं हो रही। जब वह होगी, तो मैं सारी दुनियाके रोके भी न रुकूँगा। चाहे उस वक़्त मेरा स्वास्थ्य कैसा भी हो। मैं फिरसे कहता हूँ कि मुझे अंग्रेज़ोंसे उतना ही प्रेम है, जितना हिन्दुस्तानियोंसे। दोनों मनुष्य हैं। तो भी मैं हिन्दुस्तानका राज करोड़ों हिन्दुस्तानियोंके हाथमें और उनके अपने हितके लिए चाहता हूँ। स्व० लोकमान्यने हमें सिखाया है कि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध हक़ है। आजकल बम्बई, कलकत्ता और कराँचीमें जो चल रहा है, उससे करोड़ोंका वह स्वराज्य नहीं मिलेगा। हरएक कांग्रेसी, चाहे वह चार आनेवाला सदस्य हो या न हो, सोचे कि कांग्रेस आज क्या मानती है। हम अपनेको और दुनियाको धोखा न दें।

पूना, २४–२–'४६ — मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन'से)

उपवासका दुरुपयोग

राजाजीके बारेमें दिये गये मेरे बयानकी निन्दा करनेवाले बहुतसे पत्र और तार आये हैं। उनमेंसे कईमें लिखा है कि राजाजीकी जो कुछ भी तारीफ़ की गई है, वे सब तरह उसके लायक़ हैं। वे उनकी अटूट ईमानदारी, आत्मत्याग, योग्यता और प्रबन्धशक्तिको क़बूल करते हैं। लेकिन सन् १९४२में उनके उस माने जानेवाले रुख-परिवर्तनको वे माफ़ नहीं कर सकते। और मद्रासके प्रधानमंत्री बननेके लिए जो तरकीबें वे भिड़ा रहे हैं, सो तो असह्य है। कांग्रेससे इस्तीफ़ा देनेमें और अपने विचारों पर डटे रहनेमें कोई अपराध है या रुख बदलनेकी कोई बात है, ऐसा मैं नहीं समझता। अगर राजाजी प्रधानमंत्री बननेकी जुगतमें हैं, तो ज़रूर यह बुरी बात है, और मेरे लिए तो यह एक दुःखदायी खबर होगी।

लेकिन मैं फिर इस विषय पर जो लिख रहा हूँ, सो राजाजीका बचाव करनेके लिए नहीं। मैं जो कुछ कहता हूँ, उसके पीछे नैतिक बलको छोड़कर दूसरा कोई बल नहीं है, इसलिए लोग मेरी बातको जब चाहें, नामंज़ूर कर सकते हैं। जो लोग राजाजीका विरोध कर रहे हैं, उनके बारेमें इस्तेमाल किये गये 'क्लीक' विशेषणके वापस न लिए जाने पर उपवासकी धमकीकी या ख़ुद उपवासकी मैं यहाँ निन्दा करना चाहता हूँ। 'क्लीक' शब्दसे मेरा क्या मतलब है, सो मैं बतला चुका हूँ, और उस अर्थके अनुसार मैं अपने इस प्रयोग पर क़ायम हूँ। किसी भी आदमीको अपना विश्वास बदलनेके लिए मजबूर नहीं करना चाहिये। अगर ऐसा उपवास सफल हो जाय, तो सारी सभ्यताका और बुद्धिवादका खात्मा हो जाय।

सत्याग्रहमें उपवास भी एक साधन है। इसकी शोध करनेवाला मैं हूँ। इस नातेसे मुझे यह कहना पड़ता है कि चाहे सारी दुनिया मेरे खिलाफ़ उपवास क्यों न करे, मैं ईमानदारीसे क़ायम की हुई अपनी रायको छोड़ नहीं सकता। बहुतसे नास्तिक मिलकर आस्तिकोंके खिलाफ़ उपवास करें, तो क्या सब आस्तिक नास्तिक बन जायँ? मैं जो नीति बताता हूँ, वह सबके लिए है। इत्तफ़ाक़न्, मैं यह भी कह दूँ कि यू० पी०के कुछ जेलोंमें बन्दियों द्वारा किये गये उपवास और पार्लमेण्टरी बोर्डके फ़ैसलेके खिलाफ़ शिकायतके तौर पर शुरू किये गये उपवास इसी श्रेणीमें आते हैं, गोकि उनकी कुछ दूसरी पुख्ता और जुदा वजहें हैं।

पूना, २२–२–'४६

('हरिजन'से) — मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो माँगें

एक भाई सुझाते हैं कि आत्मकथाको जहाँसे मैंने छोड़ा है, वहाँसे आगे उसे शुरू करूँ और अहिंसाका शास्त्र लिखूँ या लिखवाऊँ ।

आत्मकथा तो मैंने लिखी ही नहीं । 'सत्यके प्रयोग' नामकी एक लेखमाला लिखी है और वह किताबकी शकलमें छपी है । प्रयोगोंकी उस मालाको पूरी किये पच्चीस साल हो गये । उसके बाद क्या किया, क्या सोचा, सो सिलसिलेसे दिया नहीं गया है । यह सब लिखना मुझे अच्छा लगेगा, लेकिन इसका दार-मदार फ़ुरसत पर है । कठिन परिस्थितिमें कर्त्तव्य समझकर 'हरिजन' शुरू किया है । उसका काम मुश्किलसे पूरा कर पाता हूँ । ऐसी हालतमें सत्यके जो प्रयोग हुए हैं, उनको सोच निकालनेके लिए जैसी फ़ुरसत चाहिये, वह नहीं मिल रही । लेकिन अगर भगवान् उन्हें लिखवाना चाहेगा, तो वह रास्ता भी सुझायेगा ।

अहिंसाका शास्त्र लिखना मेरे लिए नामुमकिन है । मैं शास्त्रकार नहीं । मैं तो कर्मी — काम करनेवाला — हूँ । जैसा मुझे आता है, वैसा कर्म धर्म समझकर करता चलता हूँ । इसलिए मेरा सारा काम सेवाभावसे प्रेरित होता है । उसमेंसे शास्त्रकी रचना की जा सकती हो, तो भले की जाय । लेखक तीन नाम सुझाते हैं : श्री विनोबा, श्री किशोरलाल और काका साहब — सिलसिलेसे ये तीन नाम उन्होंने दिये हैं । विनोबा लिख सकते हैं, मगर वह कभी न लिखेंगे । उनका पल-पल व्यवस्थित रीतिसे बंधा हुआ है । उसमेंसे शास्त्र-रचनाके लिए समय निकालना उनकी दृष्टिमें अधर्म होगा । मैं भी उसे अधर्म समझूँगा । संसारको शास्त्रकी भूख नहीं । सच्चे कर्मकी है, और हमेशा रहेगी । जो इस भूखको मिटा सकता है, वह शास्त्र-रचनामें न पड़े ।

श्री किशोरलालने एक स्वतंत्र ग्रंथ लिखा है । अगर उनका शरीर काम दे, तो वे उस तरहकी और चीज़ लिख सकते हैं । उनके ग्रंथको शास्त्र कहना शायद ठीक न हो, तो भी वह शास्त्रके नज़दीककी चीज़ है, ऐसा तो माना जा सकता है । लेकिन इस वक़्त जैसी उनकी तन्दुरुस्ती है, उसे देखते हुए, मैं मानता हूँ कि वे इस बोझको उठा नहीं सकेंगे । मैं तो उठानेको कहूँगा ही नहीं । वे भी अपने समयको व्यर्थ नहीं जाने देते । अनेक मित्रोंके जीवनकी समस्याओंको सुलझानेमें उनका बहुत-सा समय बीत जाता है और दिन डूबे वे लस्त होकर पड़ जाते हैं ।

काका साहबके पैरोंमें बापा (ठक्कर बापा)की तरह चकरी लगी है । राष्ट्रभाषाका और प्रान्तीय भाषाओंका प्रचार करना और उन्हें सजाना-सँवारना उनका खास विषय है । इसमेंसे वे एक क्षण भी शास्त्र-रचनामें बितायें, तो मैं ही उन्हें रोकूँ ।

इसका सार यह निकलता है कि फ़िलहाल ऐसे शास्त्रकी ज़रूरत नहीं । मेरे जीते-जी जो लिखा जायगा, वह अधूरा होगा । अगर उसका लिखा जाना मुमकिन हो, तो भले वह मेरे मरने पर लिखा जाय । और लिखा गया, तो भी मैं चेतावनी दिये देता हूँ कि उसमें पूर्ण अहिंसाके दर्शन नहीं हो सकेंगे । ईश्वरका पूरा-पूरा वर्णन अभी तक कोई कर नहीं सका । यही अहिंसाके लिए भी कहा जा सकता है । मैं ख़ुद जिसे आज मानूँ या करूँ, उसे कल मानूँगा या करूँगा, ऐसी प्रतिज्ञा नहीं कर सकता । यह काम त्रिकालदर्शी भगवान्‌का है । देहधारी मनुष्य तो सदा-सर्वदा अपूर्ण ही है । उसे भगवान्‌की उपमा चाहे दी जाय, पर वह भगवान् तो हरगिज़ नहीं । भगवान् अदृश्य है, अदृष्ट है । इसलिए जिसे हम सन्तपुरुष मानते हैं, उसके वचनोंको और आचरणको समझें; और जो चीज़ हमारे दिलमें बस जाय, उसके अनुसार अपना आचरण बनायें । शास्त्र और क्या करेगा ?

पूना, २५-२-'४६

('हरिजनबंधु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा

इस सभाकी बैठक १५ और १६ फरवरीको हुई थी । सभाकी कार्रवाईका आवश्यक हिस्सा नीचे दिया है :

श्री काका कालेलकर, श्री सत्यनारायण, डॉक्टर ताराचंद, श्री मगनभाई देसाई और श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल (मंत्री)की एक समिति मुकर्रर की जाय जो सभाके विधानमें ज़रूरी सुधार सुझाये ।

नीचे लिखे सहायक सभासदोंको परिपत्र-चुनावके ज़रिये नियम ५के मुताबिक़ सभाका सभासद बनाया जा सकता है :

डॉ० जाफ़र हसन, डॉ० सैयद महमूद, श्री ए० एम० ख्वाजा, श्री जुगतराम दवे, श्री श्रीनाथसिंह, श्री हरिभाऊ उपाध्याय, श्री प्यारेलाल, डॉ० सुशीला नय्यर, श्री यशोधरा दासप्पा, श्री प्रेमा कण्टक, श्री देवप्रकाश नय्यर, श्री श्रीपाद जोशी ।

हिन्दुस्तानीकी पहली तीन परीक्षायें, जहाँ तक सम्भव हो, वर्धासे न चलाकर उनकी ज़िम्मेवारी प्रान्तों पर डाली जाय । चौथी या आख़िरी परीक्षा वर्धासे चलाई जाय ।

इस आख़िरी परीक्षाको चलानेकी और बाक़ीकी परीक्षाओंकी देखरेख करनेकी ज़िम्मेवारी नीचे लिखे सदस्योंकी समिति पर रहेगी :

श्री काका कालेलकर, श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल और श्री अमृतलाल ठा० नाणावटी (मंत्री) ।

चौथी परीक्षाका पाठ्यक्रम कुछ इस ढंगका रहेगा :

परचा १. हिन्दुस्तानी गद्य
,, २. हिन्दुस्तानी पद्य
,, ३. भाषा और व्याकरण
,, ४. निबन्ध और अनुवाद
,, ५. ज़बानी इम्तहान

इस परीक्षाके लिए किताबोंका चुनाव करनेका काम श्री काका कालेलकर और श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल करेंगे, जिसमें वे नीचे लिखे सदस्योंसे मदद लेंगे :

डॉ० ताराचन्द, श्री सुदर्शन, श्री सत्यनारायण, और श्री रैहाना तैयबजी ।

किताबोंका आख़िरी फ़ैसला कार्य-समिति करेगी ।

'हिन्दुस्तानी-प्रचारक-मदरसा' नामकी एक संस्था वर्धामें खोली जाय । यह मदरसा जुलाईसे अप्रैल तक चलेगा ।

इसमें सारे हिन्दुस्तानके विद्यार्थियोंमेंसे चुनिन्दा विद्यार्थियोंकी भरती किया जायेगा ।

इस मदरसेको चलानेके लिए नीचे लिखी समिति मुकर्रर की जाती है :

श्री काका कालेलकर (अध्यक्ष), श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल (मंत्री), श्री अमृतलाल ठा० नाणावटी (सदस्य), श्री श्री० ना० बनहट्टी (सदस्य), श्री रैहाना तैयबजी (सदस्य) ।

इस मदरसेमें नीचे लिखे मज़मून पढ़ाये जायँगे :

परचा, १. हिन्दुस्तानी अदब — हिन्दुस्तानीकी तारीख़ और हिन्दुस्तानीका ऊँचा ज्ञान ।
,, २. हिन्दुस्तानी भाषा — भाषाका जनम और विकास, हिन्दुस्तानीकी बनावट और क़ायदे ।
,, ३. हिन्दी और उर्दूका ज्ञान — ज़बान और अदब
,, ४. पढ़ानेका तरीक़ा
,, ५. हिन्दुस्तानकी सभ्यताकी तारीख़ ।
,, ६. हिन्दुस्तानके क़ौमी सवाल ।
,, ७. अनुवाद-कला ।
,, ८. हिन्दुस्तानकी भाषायें और उनके साहित्यकी मामूली जानकारी ।

इन मज़मूनोंकी पढ़ाईके लिए किताबोंका चुनाव करनेका काम श्री काका कालेलकर और श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल करेंगे । इस काममें वे नीचे लिखे मेम्बरोंसे मदद लेंगे :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सत्यनारायण, डॉ० ताराचन्द, श्री सुदर्शन और श्री रैहाना तैयबजी ।

किताबोंका आखिरी फ़ैसला कार्य-समिति करेगी ।

इस मदरसेकी पढ़ाई पूरी करके इम्तहानमें कामयाब होनेवालोंको 'हिन्दुस्तानी-प्रचारक'की सनद (उपाधि) दी जायेगी ।

श्री पेरीन बहन कैप्टन, मंत्री, हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, बम्बईने यह दरख़ास्त पेश की कि हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, बम्बईके कार्यका क्षेत्र सिर्फ़ बम्बई शहर तक ही सीमित न रखा जाय और बम्बईके उपनगरों और जी० आई० पी० लाइन पर कल्याण तक तथा बी० बी० एण्ड सी० आई० लाइन पर विरार तकके लोकल ट्रेनोंके प्रदेशोंमें उसे कार्य करनेकी इजाज़त दी जाय ।

तय हुआ कि श्री पेरीन बहनकी दरख़ास्तको फ़िलहाल मंजूर किया जाय ।

मोहनदास करमचंद गांधी

सूबोंमें कस्तूरबा ट्रस्टके एजण्ट

कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टके सदरके नाते गांधीजीने नीचे लिखी बहनोंको उन-उन सूबोंकी एजण्ट मुकर्रर किया है :

प्रान्त	एजण्टका नाम	
१. आन्ध्र	श्रीमती जी० दुर्गाबाई,	मद्रास
२. आसाम	,, अमलप्रभा दास,	गौहाटी
३. बंगाल	,, लावण्यलता चण्ड,	कलकत्ता
४. बिहार	,, प्रियम्वदा नन्दकेवलियार,	गया
५. मध्यप्रान्त (मराठी और बरार)	,, ताराबहन मशरूवाला,	अकोला
६. गुजरात	,, सरलाबहन साराभाई,	अहमदाबाद
७. कर्णाटक	,, उमाबाई कुन्दापुर,	हुबली
८. केरल	,, मीरा एस० के० जॉर्ज,	त्रिचूर
९. रियासत मैसूर	,, यशोधरा दासप्पा,	मैसूर
१०. पंजाब और काश्मीर	,, रामेश्वरी नेहरू,	लाहौर
११. राजपूताना	,, रतनदेवी शास्त्री,	वनस्थली (जयपुर)
१२. संयुक्त प्रान्त	,, सुचेतादेवी कृपालानी,	प्रयाग
१३. उत्कल	,, रमादेवी चौधरी,	बरी (कटक)

नीचे लिखे प्रान्तोंमें एजण्ट नियुक्त करनेके बारेमें चर्चा चल रही है :

१. दिल्ली, २. सिन्ध, ३. सीमाप्रान्त, ४. मध्यभारत, ५. तामिलनाड, ६. महाराष्ट्र, ७. निज़ाम हैदराबाद ।

बजाजवाड़ी, वर्धा २०-२-'४६

('हरिजन'से) अमृतलाल वि० टक्कर

ग्राहकों और एजण्टोंसे

ड्राफ्ट और पोस्टल ऑर्डर व्यवस्थापक, हरिजन-सेवकके नाम भेजें, किसी व्यक्तिके नाम नहीं । पोस्टल ऑर्डर इस तरह भेजें कि उसका रुपया अहमदाबाद पोस्ट ऑफिससे मिल सके ।

हमारी बम्बई (१३०, प्रिन्सेस स्ट्रीट), पूना (२९९, सदाशिव पेठ), सूरत (कणपीठ बाज़ार) और राजकोट (सर लाखाजीराज रोड)की शाखाओंके सिवा दूसरे किसी व्यक्ति, संस्था या एजण्टको हमारी तरफ़से चन्दा वसूल करनेका अधिकार नहीं दिया गया है ।

एजण्ट कृपया इस बातका ध्यान रक्खें कि हरिजन-सेवककी प्रतियों पर छपी क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत वे ले नहीं सकते । अगर यह नियम तोड़ा गया, तो उनकी एजन्सी रद कर दी जायगी । खरीदारोंसे प्रार्थना है कि वे छपी हुई क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत न देकर हमारे साथ सहयोग करें और अगर कोई ज़्यादा क़ीमत माँगे, तो हमें उसकी इत्तिला करें ।

नमूनेकी प्रतिके लिए तीन आनेके डाक-टिकट भेजने होंगे ।

व्यवस्थापक

गांधीजीके अख़बारी बयान

१

राजाजीके बारेमें मैंने जो कहा है, उसकी निन्दा करनेवाले तार और खत मेरे पास आ रहे हैं । उनमें कुछ लेखक मुझे 'क्लीक' शब्द न लौटाने पर उपवासकी धमकी देते हैं । सत्याग्रहके शस्त्रागारके लिए उपवासरूपी शस्त्रका निर्माण करनेवालेके नाते मुझे उपवासके ऐसे उपयोगकी निन्दा करनी ही चाहिये । चाहे सारी दुनिया खिलाफ़ हो, तो भी आदमीको अपना प्रामाणिक मत छोड़ना न चाहिये । इसलिए मेरी सलाह है कि कोई ऐसे उपवास न करें ।

पूना, २२-२-'४६

२

"आज हिन्दुस्तानमें होनेवाली घटनाओंको मैं बड़े दुःखके साथ देख रहा हूँ । जहाज़ी बेड़ेका यह ग़दर और उसके पीछे जो कुछ हो रहा है, सो किसी भी तरह अहिंसात्मक लड़ाई नहीं है । जितना ही किसी एक आदमीको 'जय हिन्द' या दूसरे किसी चलते नारेको लगानेके लिए मजबूर किया जायगा, उतना ही हिन्दुस्तानकी लाखों-करोड़ों मूक जनताके स्वराज्यको रोका जायगा । गिरजाघरोंका या ऐसी ही दूसरी जगहोंका नाश कांग्रेसके द्वारा बताए हुए स्वराज्यका रास्ता नहीं है । लूट-मार करना, ट्रामगाड़ियों और दूसरी चीज़ोंको जलाना, गोरोंका अपमान करना या उन पर हमला करना कांग्रेसकी व्याख्याकी अहिंसा नहीं है । फिर यदि यह मान भी लिया जाय कि मेरी अहिंसा कांग्रेससे जुदा है, तो यह मेरी अहिंसा तो हरगिज़ ही नहीं है । विचारशून्य हिंसारूपी आगको सुलगानेवाले ज्ञात और अज्ञात अगुआओंको समझना चाहिये कि वे क्या कर रहे हैं ? फिर वे अपनी वृत्तिके अनुसार जैसा चाहें, करें । कोई यह न कह सके कि कांग्रेसने दुनियाके सामने ऐलान तो अहिंसात्मक लड़ाईके द्वारा स्वराज्य लेनेका किया, मगर अमलमें, और सो भी अपने जीवनके नाज़ुक समयमें, अपने वचनको झुठला दिया । मैंने 'विचारशून्य' विशेषणका जान-बूझकर प्रयोग किया है; क्योंकि विचारपूर्ण हिंसात्मक लड़ाई-जैसी भी चीज़ होती है । मैं अभी जो कुछ होते हुए देखता हूँ, वह विचारपूर्ण नहीं है । जहाज़ी बेड़ेके हिन्दुस्तानी सदस्य अगर अहिंसाको जानते और उसकी क़दर करते हैं, तो अहिंसात्मक मुक़ाबलेका ढंग सभ्य, वीरतापूर्ण और पूरे तौरसे प्रभावशाली हो सकता है, अगर वह सामूहिक हो । अकेले आदमीके लिए तो यह सदा सफल साधन है ही । यदि नौकरी करना उनके लिए या हिन्दुस्तानके लिए अपमानजनक है, तो वे नौकरी पर रहते ही क्यों हैं ? इस तरहकी लड़ाईको मैंने अहिंसात्मक असहयोग कहा है । जो कुछ आज हो रहा है, वह तो हिन्दुस्तानके लिए एक बुरा और अनुचित उदाहरण बन रहा है । हिंसात्मक कार्रवाईके लिए हिन्दू, मुसलमान और दूसरे लोगोंका ऐक्य अनुचित है और उसका अन्त एक-दूसरेकी हिंसामें अथवा उसकी तैयारीमें होगा, जो हिन्दुस्तान और दुनियाके लिए बुरा होगा ।

ब्रिटिश सरकारने भारतीय सरकारके पक्षमें भारत छोड़नेके अपने विचारका ऐलान कर दिया है । जनताके दिलोंमें छिपी हुई दुःखपूर्ण बेचैनीकी आगके भड़क उठनेको निमित्त बनाकर अब क्षणभरके लिए भी इस वादेका अमल रुकना नहीं चाहिये । उनकी शक्तिके बारेमें किसीको सन्देह नहीं । किसी अनिवार्य आवश्यकताके उपरान्त उसका उपयोग अनुचित होगा, इतना ही नहीं, अगर जनता या उसके किसी भागका दमन करनेके लिए उसका उपयोग हुआ, तो वह दुष्टता होगी । जनता विदेशी सत्ताकी दमन नीतिसे काफ़ी समय तक कुचली जा चुकी है ।"

पूना, २३-२-'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३

बम्बईकी घटनाओं पर मैंने जो बयान दिया था, उसका हिम्मतके साथ खण्डन करनेके लिए मैं श्रीमती अरुणा आसफ़अलीको बधाई देता हूँ। अगर श्रीमती अरुणा पोशीदा रहकर काम करनेवालोंकी एक काफ़ी बड़ी तादादकी नुमाइन्दगी न करती होतीं, तो मैंने उनके खण्डन पर ध्यान न दिया होता। श्रीमती अरुणा मेरी लड़की हैं, क्या हुआ कि उन्होंने मेरे घरमें जन्म नहीं लिया या कि वह विद्रोही बन गई हैं। जब वह छिपकर रहती थीं, तब भी मैं कई बार उनसे मिला हूँ। मैंने उनकी बहादुरी, नये-नये रास्ते खोजनेकी शक्ति और गहरे देशप्रेमकी सराहना की है। पर मेरी सराहना इससे आगे नहीं बढ़ी। मैंने उनके छिपकर काम करनेको पसन्द नहीं किया। मैं छिपकर किये जानेवाले किसी कामकी सराहना नहीं करता। मैं जानता हूँ कि देशके करोड़ों स्त्री-पुरुष छिपकर काम नहीं कर सकते। कुछ मुट्ठीभर लोग यह सोच सकते हैं कि पोशीदा हलचलोंके ज़रिये वे करोड़ोंके लिए स्वराज्य ला सकेंगे। लेकिन क्या यह बच्चोंको चम्मचसे दूध पिलाने जैसी बात न होगी? आमजनता तो खुली चुनौती और खुले कामोंका रास्ता ही अपना सकती है। असली स्वराज्यकी झाँकी तो स्त्रियों, पुरुषों और बच्चों सभीको होनी चाहिये। ऐसे मक़सदके लिए मेहनत करना ही सच्ची क्रान्ति होगी। हिन्दुस्तान दुनियाकी सभी शोषित जातियोंके लिए एक नमूना बन गया है, क्योंकि हिंदुस्तानकी लड़ाई खुली है और बिना हथियारोंके लड़ी जा रही है। इस लड़ाईमें आज़ादीको हड़पकर बैठे हुओंको चोट पहुँचाये बिना सभीसे क़ुरबानी चाही जाती है। अगर यह लड़ाई खुली और निहत्थी न होती, तो करोड़ों हिंदुस्तानियोंमें आजकी जागृति न आई होती। जब-जब इस सीधे रास्तेको छोड़ा गया, तब-तब थोड़ी देरके लिए विकासशील क्रान्तिमें रुकावट पड़ी है।

सन् १९४२की घटनाओंका यह बहादुर बहन जो अर्थ लगाती हैं, वह मैं नहीं लगाता। यह अच्छी बात थी कि लोग अपने-आप उठ खड़े हुए। मगर यह बुरी बात हुई कि कुछ लोगोंने या बहुत लोगोंने हिंसा की। इससे कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ता कि श्री किशोरलाल मशरूवाला, काकासाहब और दूसरे काम करनेवालोंने उस समयके उतावलीभरे उत्साहमें अहिंसाकी ग़लत व्याख्या की। उनके ऐसा करनेसे ही यह साबित होता है कि अहिंसा कितना नाज़ुक औज़ार है। मैं जो तुलना कर रहा हूँ, उसका मतलब किसी आदमी पर लांछन लगाना नहीं है। हरएकने अपनी-अपनी समझके मुताबिक़ ठीक ही किया। ज़बरदस्त संगठित हिंसाके मुक़ाबले हाथ पर हाथ धरकर बैठ रहना तो कायरता होती। अगर मैं सन् १९४२की घटनाओंके बारेमें अपना ख़याल ज़ाहिर न करूँ, तो कमज़ोरीका सबूत दूँगा या ग़लती करूँगा।

श्रीमती अरुणा "भले ही वैधानिक मोर्चेके बजाय लड़ाईके मोर्चे पर हिन्दू-मुसलमानोंको इकट्ठा करना पसन्द करें," मगर हिंसाके ख़यालसे भी यह एक ग़लत विचार है। अगर लड़ाईके मोर्चेवाली एकता सच्ची हो, तो वह वैधानिक मोर्चे पर भी होनी चाहिये। लड़नेवाले हमेशा लड़ाईके मोर्चे पर डटे नहीं रहते। उनमें आत्मघात न करने जितनी अक़्ल ज़रूर होती है। लड़ाईके मोर्चेके बाद हमेशा वैधानिक मोर्चा आता ही है। उसको हमेशाके लिए रद नहीं किया जा सकता।

मैं यह ज़ोरके साथ कहूँगा कि ब्रिटिश घोषणाओंमें अविश्वास करना और पहलेसे बखेड़ा खड़ा कर देना दूरन्देशीकी कमी ज़ाहिर करता है। क्या सरकारी प्रतिनिधि-मण्डल एक बड़े राष्ट्रको धोखा देने आ रहा है? ऐसा सोचना किसी मर्द या औरतको शोभा नहीं दे सकता। इन्तज़ार करनेमें आख़िर हम खो क्या देंगे? सरकारी प्रतिनिधि-मण्डलको हम आख़िरी बार और यह साबित करने दें कि ब्रिटिश घोषणायें एतबार करनेके लायक़ नहीं होतीं। विश्वास करनेसे राष्ट्रको फ़ायदा ही होगा। जिसको धोखा दिया जाता है, उसकी ओरसे जब सही जवाब मिलता है, तो धोखा देनेवालेकी ही हार होती है।

हम असलियत पर ग़ौर करें। जो मिशन आ रहा है, उसके लिए कहा जाता है कि वह दोस्ताना मिशन है। उसको उम्मीद है कि वह आज़ादीका वैधानिक रास्ता खोज निकालेगा। सवाल उलझा हुआ है, शायद ऐसे उलझे हुए सवालका मुसद्दियोंको पहले कभी सामना नहीं करना पड़ा होगा। यह हो सकता है कि मिशन एक हल न होनेवाली पहेली पेश कर दे। मगर यह उसीके हक़में बुरा होगा। जिन मुश्किलोंको अंग्रेज़ शासकोंने ख़ुद खड़ा किया है, अगर मिशन उनको हल करनेका सच्चा रास्ता ढूँढ़ने पर तुला होगा, तो मुझे शक़ नहीं कि रास्ता है। लेकिन इसमें हमारे राष्ट्रको भी अपना हिस्सा अदा करना होगा। अगर उसे ऐसा करना है, तो कम-से-कम फ़िलहालके लिए उसे लड़ाईके मोर्चेको एक ओर रखना होगा। मैं श्रीमती अरुणासे और उनके दोस्तोंसे अपील करता हूँ कि वीरता और त्यागसे मिली हुई अपनी ताक़तका वे समझदारीसे इस्तेमाल करें।

यह बड़े सन्तोषकी बात है कि जहाज़ी बेड़ेमें काम करनेवालोंने अपने आपको अधिकारियोंके हवाले कर देनेकी सरदार पटेलकी सलाह मान ली। उन्होंने अपनी इज़्ज़तको नहीं सौंप दिया है। जहाँ तक मैं सोच सकता हूँ, उन्होंने ग़लत सलाहके असरमें आकर बग़ावत की थी। अगर उन्होंने किन्हीं ख़याली या असली शिकायतोंकी वजहसे ऐसा किया, तो उन्हें अपनी पसन्दके राजनीतिक नेताओंकी सलाह और दरमियानगीरी पहले हासिल करनी थी। अगर उन्होंने हिन्दुस्तानकी आज़ादीके लिए बग़ावत की, तो दुहेरी ग़लती की। पहलेसे तैयार क्रांतिकारी पार्टीके इशारेके बिना वे ऐसा न कर सकते थे। अगर उन्होंने यह समझा हो कि वे अपनी ताक़तसे हिन्दुस्तानको विदेशी ग़ुलामीसे छुटकारा दिला सकेंगे, तो उनका ऐसा समझ बैठना नादानी और नासमझीसे भरा था।

श्रीमती अरुणाका यह कहना सही है कि इस बार लड़नेवालोंने जैसी मज़बूती दिखाई, वैसी पहले कभी नहीं दिखाई थी। मगर जब मज़बूती कुसमयकी और आत्मघाती हो, जैसी कि इस मौक़े पर थी, तो वह मूर्खता बन जाती है।

श्रीमती अरुणाको यह कहनेका हक़ है कि 'लोगोंको हिंसा या अहिंसाके सिद्धान्तोंमें कोई दिलचस्पी **नहीं है**।' मगर लोगोंको यह जाननेमें **ज़रूर** दिलचस्पी है कि जनताको आज़ादी **किस रास्तेसे** मिलेगी, हिंसासे या अहिंसासे? लोग अब तक, अधूरे ही सही, अहिंसाके रास्ते पर चले हैं। श्रीमती अरुणा और उनके साथियोंको हर बार अपनेसे यह सवाल पूछना चाहिये कि आया अहिंसक रास्तेने हिन्दुस्तानको उसकी सदियोंकी नींदसे जगाया है या नहीं और स्वराज्यके लिए हिन्दुस्तानियोंके दिलोंमें, चाहे धुँधली ही क्यों न हो, इच्छा पैदा की है या नहीं। मेरी रायमें इस सवालका एक ही जवाब हो सकता है।

श्रीमती अरुणाके बयानमें दूसरे भी ऐसे फ़िक़रे हैं, जो मेरे ख़यालमें विचारोंकी उलझन ज़ाहिर करते हैं। लेकिन उन पर तो बादमें भी ग़ौर किया जा सकता है।

यहाँ यह कहना ग़ैरज़रूरी है कि अख़बारोंमें छपे उनके बयान पर मैंने जो ख़याल जाहिर किये हैं, सो यह मानकर किये हैं कि बयान उनकी अपनी रायका सूचक है। अगर ऐसा नहीं है, तो मैं उनसे पहले ही माफ़ी माँग लेता हूँ। अगर यह मालूम हो जाय कि ख़बर भेजनेवालेने उनको ठीकसे समझा नहीं था, तो भी उससे मेरी दलीलों पर कोई असर नहीं पड़ता। क्योंकि मेरी दलीलें आख़िर उसूली दलीलें हैं, ये किसीकी शख़्सियतसे ताल्लुक़ नहीं रखती, और सिर्फ़ उन्हीं बातों पर तवज्जह दिलाती हैं, जिनसे आम रिआयाके गुमराह होनेका अँदेशा है, फिर भले उनका कहनेवाला कोई भी हो।

पूना, २६-२-'४६ ('हरिजन'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवाल-जवाब

एक खतका सारांश यह है :

स०—आप कहते हैं कि विवाह करनेवालोंमेंसे एक पक्ष हरिजन होना चाहिये । आप यह तो नहीं कहते हैं न कि एक पक्ष हरिजन ही हो? अर्थात् दूसरे विवाह निषिद्ध हैं, ऐसा अर्थ तो आप नहीं निकालते हैं?

उ०—यह प्रश्न ठीक पूछा गया है । दूसरे विवाह मैं निषिद्ध नहीं मानता हूँ । मैंने तो आदर्श बताया है, और उसका अमल जितनी शीघ्रतासे हो सके उतनी शीघ्रतासे करना मुनासिब समझता हूँ ।

पूना, २४-२-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

प्रार्थनाका अनुशासन

मद्रासके अपने मुक़ामके दिनोंमें अबकी गांधीजीने किसी भी सार्वजनिक समारंभ या आम जल्सेमें शरीक होना मंज़ूर नहीं किया । कोदम्बकमके 'हरिजन इण्डस्ट्रियल स्कूल'का जल्सा ही इसका एक अपवाद रहा । आम जल्सों या सभाओंकी जगह सामूहिक प्रार्थनाने ले ली थी । जिस तरह रेलके सफ़रसे गांधीजीको लोगोंकी भीड़के बरतावका अध्ययन करनेका मौक़ा मिला, उसी तरह सामूहिक प्रार्थनाके आयोजनोंने गांधीजीको मौक़ा दिया कि वे लोगोंको अनुशासन या निज़ामके बारेमें कुछ समझायें । हिन्दुस्तान हिंसाके तरीक़ोंसे स्वराज्य हासिल करे या अहिंसाके तरीक़ोंसे, दोनों हालतोंमें, अनुशासन यानी निज़ामकी ज़रूरत तो एक-सी ही है । शायद पहलेके मुक़ाबले दूसरेमें, यानी अहिंसासे स्वराज्य हासिल करनेमें, उसकी ज़्यादा ज़रूरत है । गांधीजीने उन्हें समझाया कि जहाँ तक फ़ौजका सवाल है, दुश्मनको मार डालनेके लिए हथियार चलाना सीखनेमें अनुशासन रहा है । मगर अहिंसाके तरीक़ेमें तो अनुशासन इस बातमें है कि ज़्यादा-से-ज़्यादा उकसाहटके रहते भी किसीको बिना मारे, बिना बदला लिये, मरनेकी कलाको अपनाया जाय और समाजकी निःस्वार्थ भावसे सेवा की जाय । अगर हिन्दुस्तानके चालीस करोड़ लोग एक आदमीकी तरह, एक आवाज़से बोलें, एक साथ चलें और एक साथ काम करें, तो स्वराज्य उनकी हथेलीमें ही धरा है । प्रार्थना लोगोंको एक साथ रखनेवाली सबसे बड़ी ताक़त है । वह इन्सानोंमें आपसकी एकता और मेल पैदा करती है । जो आदमी प्रार्थनाके ज़रिये ईश्वरके साथ अपनी एकताको पहचान लेता है, वह सबको अपने जैसा ही मानता है । उस हालतमें न कोई ऊँचा होगा, न नीचा; न प्रान्तीयताकी संकुचित भावना रहेगी और न आन्ध्र, तामिल, कर्नाटक या मलाबारवालोंके बीच भाषाके नकुछ-से झगड़े होंगे । सवर्णों और हरिजनों, हिन्दुओं और मुसलमानों और पारसी, ईसाई या सिक्खोंके बीच द्वेष बढ़ानेवाला भेदभाव भी न रहेगा । इसी तरह समूह-समूहके बीच या एक ही समूहके सदस्योंके बीच निजी फ़ायदेके लिए या हुकूमतके लिए छीना-झपटी या आपसी झगड़े भी न होंगे ।

हमारे अन्दरका प्रकाश बाहर फैलना चाहिये । अगर हम ईश्वरके साथ एकरस हुए हों, तो भीड़ कितनी ही बड़ी क्यों न हो, उसमें पूरी-पूरी शान्ति और व्यवस्था रह सकती है और कमज़ोर-से-कमज़ोर भी पूरी सलामती महसूस कर सकता है । सबसे बड़ी बात तो यह है कि ईश्वरके साक्षात्कारके फलस्वरूप मनुष्यको दुनियाके सभी भयोंसे मुक्त हो जाना चाहिये । गांधीजीने बार-बार कहा है कि राजनीतिक ग़ुलामी और ईश्वरकी शरण दोनों बे-मेल चीज़ें हैं; ग़ुलामके लिए मोक्ष, मुक्ति या नजात है ही नहीं ।

शुरू-शुरूकी प्रार्थना-सभाओंमें लोग सहज ही शोर मचाते पाये जाते थे, जिसकी वजहसे संस्कृतके श्लोक, क़ुरानकी आयतें और ज़न्द अवस्ताके मंत्रोंका पाठ छोड़ देना पड़ता था । लेकिन मद्रास-निवासके हमारे आख़िरी-आख़िरी दिनोंमें शान्ति और अनुशासन-पालनके मामलेमें साफ़ ही हालत सुधरी नज़र आती थी । इससे गांधीजीके इस अनुभवको बल मिला कि लोगोंकी भीड़ कितनी ही अव्यवस्थित क्यों न हो, अगर हममें दिलकी पूरी-पूरी सचाई हो, और हम आग्रह रखते हुए भी शान्त रह सकें, तो उसका ऊपर उठानेवाला असर लोगों पर होकर ही रहता है ।

पूना, २३-२-'४६
('हरिजन'से) प्यारेलाल

क़ुदरती इलाज

क़ुदरती इलाज या उपचारका अर्थ है, ऐसे उपचार या इलाज जो मनुष्यके लिए योग्य हों । मनुष्य यानी मनुष्यमात्र । मनुष्यमें मनुष्यका शरीर तो है, लेकिन उसमें मन और आत्मा भी है । इसलिए सच्चा क़ुदरती इलाज तो रामनाम ही है । इसीलिए रामबाण शब्द निकला है । रामनाम ही रामबाण इलाज है । मनुष्यके लिए क़ुदरतने उसीको योग्य माना है । कोई भी व्याधि हो, अगर मनुष्य हृदयसे रामनाम ले, तो व्याधि नष्ट होनी चाहिये । रामनाम यानी ईश्वर, ख़ुदा, अल्लाह, गॉड (God) । ईश्वरके अनेक नाम हैं, उनमेंसे जो जिसे ठीक लगे, उसे वह ले; लेकिन उसमें हार्दिक श्रद्धा हो, और श्रद्धाके साथ प्रयत्न हो । वह कैसे?

तो जिस चीज़का मनुष्य पुतला बना है, उसीसे इलाज ढूँढ़े । पुतला पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और वायुका बना है । इन पाँच तत्त्वोंसे जो मिल सके, सो ले । उसके साथ रामनाम चलता रहे । नतीजा यह आता है कि इतना होते हुए भी शरीरका नाश हो, तो होने दे और हर्षपूर्वक शरीर छोड़ दे । दुनियामें ऐसा कोई इलाज नहीं निकला है, जिससे शरीर अमर बन सके । अमर तो आत्मा ही है । उसे कोई मार नहीं सकता । उसके लिए शुद्ध शरीर पैदा करनेका प्रयत्न सब करें । उसी प्रयत्नमें क़ुदरती इलाज अपने आप मर्यादित हो जाता है । दुनियाके असंख्य लोग दूसरा कर भी नहीं सकते । और जिसे असंख्य नहीं कर सकते, उसे थोड़े क्यों करें?

पूना, २४-२-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

यरवड़ाचक्र—१९४६की कृति

यरवड़ाचक्र (पेटी चर्खा)की माँग काफ़ी आ रही है और बढ़ भी रही है । अच्छा तो यही है कि ज़रूरतके मुताबिक़ सरंजाम स्थानिक ही बना लिया जाय । कुछ पुरज़े जो तत्काल न बनाये जा सकें, वे मँगवाये जायँ । यदि बनानेमें कुछ दिक़्क़त हो, तो उसके बारेमें राय भी पूछी जाय । लेकिन सब जगह पर सब लोगोंके लिए ऐसा करना आजकी परिस्थितिमें कुछ कठिन-सा मालूम होता है । इसलिए **साबरमती-खादी-सरंजाम-कार्यालयमें** यरवड़ाचक्र बनानेका काम फिरसे शुरू किया है । क़ीमत फ़ी चर्खा रु० ७-०-० (सात रुपया) रक्खी गई है । पैकिंग और रवानगी खर्च अलग होगा—जो लगभग फ़ी चर्खा आठ आना होगा । चर्खेमें मोढ़िया नये सुधारवाला बनाया गया है ।

माल रवाना करनेमें बुकिंगकी आजकल बड़ी दिक़्क़त रहती है । इसलिए मालके तुरन्त रवाना होनेकी सम्भावना कम है । गुजरात प्रान्तसे मँगानेवालोंसे प्रार्थना है कि माल मिलनेका जवाब मँगवाकर, यदि अपना माल वे ख़ुद यहाँ आकर ले जानेका प्रबन्ध करेंगे, तो विशेष सुभीता रहेगा और लाभदायी भी होगा ।

माल मँगानेके लिए निम्न पते पर पत्रव्यवहार करें :

ग्रामोद्योग गांधीहाट,
भद्र, अहमदाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचारोंका घर्षण

Reg. No. B 4448

हरिजन-सेवक

दो आना

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क ५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १० मार्च, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

विषय-सूची

			पृष्ठ
ग़रज़ किसकी ?	...	गांधीजी	३३
पढ़-लिखकर क्या करें ?	...	गांधीजी	३३
मौतकी आखिरी सीढ़ी पर	...	मीराबहन	३४
अहिंसक हिन्दुस्तान : दुनियाकी एक ताक़त	...	जे० सी० कुमारप्पा	३४
कोढ़की समस्या	...	टी० एन० जगदीशन्	३५
विचारोंका घर्षण	...	गांधीजी	३६
एजण्टोंसे	...	जीवणजी देसाई	३६
साप्ताहिक पत्र	...	प्यारेलाल	३७
कुछ सुझाव	...	अमृतकुँवर	३८
मौजूदा शक्तिका सदुपयोग	...	गांधीजी	४०
टिप्पणियाँ			
कामके सुझाव	...	मो० क० गांधी	४०
एक उपयोगी पर्चा	...	मो० क० गांधी	४०
हिन्दुस्तानी परीक्षाएँ	...	श्रीमन्नारायण अग्रवाल	४०

ग़रज़ किसकी ?

नौकर रखनेका रिवाज बहुत पुराने समयसे पाया जाता है। लेकिन नौकरके प्रति मालिकके बरतावमें फेरफार होते जाते हैं। कोई उसको अपने परिवारका ही आदमी समझकर उससे वैसा बरताव करते हैं, और कोई उसे .गुलाम मानकर या अपनी मिल्कियत समझकर उस तरह पेश आते हैं। इन दो हालतोंके बीच समाजका काम चलता रहता है। आजकलके ज़मानेमें जब कि नौकरोंकी ज़रूरत सबको पड़ती है, नौकरको अपनी क़ीमतका पता चल गया है, इसलिए नौकर अपनी शर्त पर और मुँहमाँगी तनख्वाह पर काम करता है। अगर उसका बरताव भले आदमियोंका-सा रहे, तो यह अच्छी चीज़ मानी जाय। नतीजा इसका यह हो सकता है कि नौकर, नौकर न रहकर हमेशाके लिए स्वजन यानी अपना ही आदमी बन जाय। लेकिन जहाँ लोग बहुत बड़ी तादादमें यह मानने लगे हों कि हिंसासे सब-कुछ या बहुत-कुछ हो सकता है, वहाँ नौकर स्व-जन कैसे बने ?

मैं मानता हूँ कि जो आदमी दूसरोंका सहयोग चाहता है और अपना दूसरोंको देना चाहता है, उसे नौकरकी ग़रज़ न रहनी चाहिये। जिसे ग़रज़ होती है, वह ज़्यादा-से-ज़्यादा तनख्वाह देकर और दूसरी जो शर्तें रक्खी जायँ, उन्हें क़बूल करके नौकर रक्खेगा यानी असलमें वह मालिक न रहकर .गुलाम-सा बन जायगा। इससे वह न अपना भला करेगा, न नामधारी नौकरका। उसके सामने एक ही विचार रहेगा — अपने स्वार्थकी सिद्धि। इसके खिलाफ़ जो नौकरकी तलाशमें नहीं रहेगा, बल्कि सहयोग ढूँढ़ेगा वह अपना और सहयोगीका भला करेगा। इससे उसके परिवारका फैलाव बढ़ता जायगा। और आखिर सारी दुनिया आपसमें एक कुनबेकी तरह पेश आयेगी। और यही सच्चा रास्ता है।

इस तरह जीवन बितानेकी इच्छा रखनेवाले आदमीको अपने कामका विस्तार कम रखना होगा। ऐसे आदमीमें .खुदको हज़ारोंका सहयोग सुलभ होने पर भी अकेले खड़े रहनेकी अहिंसक ताक़त होनी चाहिये। इन विचारोंके अनुसार जो दूसरोंको नौकर समझते हैं, उनमें नौकर समुदायको नीचे गिरानेका सपनेमें भी कोई खयाल पैदा न होना चाहिये। वे कोशिश तो यह करेंगे कि नौकर अपना नौकरपन भूल जायँ। वे हमेशा यह चाहेंगे कि जहाँ तक वे .खुद जा सके हैं वहाँ तक सारी दुनिया जा सकती है। यानी वे इस तरह बरतेंगे कि जिससे जो दूसरोंको नहीं मिल सकता, वह उन्हें भी न मिले। पूना, १-३-'४६

('हरिजनबंधु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

पढ़-लिखकर क्या करें ?

एक विद्यार्थी गम्भीरतासे यह सवाल पूछते हैं कि वह पढ़ाई खत्म कर लेनेके बाद क्या करें ?

आज हम .गुलाम हैं। जिन्होंने हमको पराधीन कर रक्खा है, उन्हींके फ़ायदेकी दृष्टिसे हमारी आजकलकी पढ़ाईका कार्यक्रम रक्खा गया है। बिना लालच दिखाये कोई अपना मतलब साध ले, ऐसा दुनियामें कहीं नहीं होता। इसलिए हमारे शासकोंने आजकलकी शिक्षाके सिलसिलेमें अनेक प्रलोभन पैदा कर रक्खे हैं। इसके सिवा, ऐसे शासन-तंत्रके सभी आदमी एक सरीखे नहीं होते। उनमें कुछ सद्वृत्तिवाले भी होते हैं। वे उदार दिलसे विचार करते हैं। इसमें संदेह नहीं कि आजके सरकारी शिक्षणमें भी कुछ अच्छाई है, तो भी सब मिलाकर, हम चाहें या न चाहें, उसका उपयोग अनिष्टकारी हो जाता है। यानी लोग उसे अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा करने और ऊँचे-से-ऊँचा पद पानेका साधन समझते हैं। धन और पदके लोभमें .गुलामी प्यारी लगने लगती है! इस वातावरणमेंसे निकल जायँ, तो '**सा विद्या या विमुक्तये**' 'यानी विद्या वही है, जो मुक्त करे,' इस प्राचीन मंत्रको सिद्ध कर लें। विद्या यानी केवल आध्यात्मिक ज्ञान और मुक्ति यानी छुटकारा, इतना ही इसका अर्थ न करें। विद्याका अर्थ है, लोकोपयोगी सारा ज्ञान प्राप्त करना और मुक्तिसे मतलब है, इस जीवनमें सब तरहकी .गुलामीसे छुटकारा पाना। .गुलामीका अर्थ है, किसी दूसरेके अधीन होना, या अपने आप पैदा की हुई बनावटी ज़रूरतोंका .गुलाम बनना। इस प्रकारकी मुक्ति जिसके द्वारा मिले, वही असली शिक्षा है। ऐसी शिक्षा मिले, तो 'पढ़-लिख कर क्या करें ?' यह सवाल उठे ही नहीं।

विदेशी सरकारके द्वारा शुरू की गई शिक्षा-प्रणाली उसके अपने मतलबके लिए है, ऐसा मानकर ही सन् १९२०में कांग्रेसने सरकारी मदरसोंका बहिष्कार करनेका ऐलान किया था। मगर वह ज़माना तो अब बीत ही सा गया है। सरकारी मदरसों और सरकारकी योजनाके अनुसार शिक्षा देनेवाली संस्थाओंकी संख्या रोज़-रोज़ बढ़ती ही जाती है, तो भी उससे विद्यार्थियों और विद्यार्थिनियोंकी माँग पूरी नहीं होती। परीक्षा देनेवालोंकी संख्या भी .खूब बढ़ रही है। यह सब होते हुए भी मैं कहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ कि सच्ची तालीम तो वही है, जो मैंने बताई। इस मंत्रके ऊपर-ऊपरके अर्थसे आकर्षित होकर जो विद्यार्थी अपनी चलती हुई पढ़ाई छोड़ेंगे, उन्हें बादमें कभी पछताना पड़ सकता है। इसीलिए मैंने विद्यार्थियोंको एक सुगम रस्ता बताया है। वह यह कि वे अपने मदरसोंमें पढ़ते हुए भी वहाँ मिलनेवाली शिक्षाको सेवाके लिए ही प्राप्त करें, और सेवाके काममें ही उसका उपयोग करें; रुपया पैदा करनेके लिए नहीं। वर्त्तमान शिक्षामें जो कमी है, उसे स्कूलसे बाहरके समयमें ज्ञान प्राप्त करके दूर करें; यानी अपने विद्यार्थी-जीवनमें जितना रचनात्मक कार्य वे कर सकते हैं, करें।

पूना, १–३–'४६

('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

मौतकी आख़िरी सीढ़ी पर

अकाल हमारे आगे मुँह बाये खड़ा है। देहातमें रहनेवाले करोड़ों लोगोंके लिए यह भुखमरीकी ओर एक और क़दम बढ़ना होगा। यह आखिरी क़दम उन्हें मौतके मुँहमें ही ढकेल देगा।

कुछ दिन पहले मैं पासके एक छोटे-से हरिजन गाँवमें गई थी। उसका कुछ हाल यहाँ लिख दूँ।

* * *

एक नदीके बहावके बारेमें कुछ बातें मालूम करनेके लिए मुझे वहाँ घोड़े पर सवार होकर जाना पड़ा। सवेरेका वक़्त था और पाला पड़ रहा था। मैंने सर्दीसे बचनेके लिए मोटा कोट पहन लिया था और सिर पर एक गरम ऊनी गमछा लपेट लिया था। खेतोंमें होकर मील डेढ़ मीलकी दूरी पार करने पर सामने मिट्टी और फूसकी झोंपड़ियाँ खड़ी मिलीं। मवेशी भी उनके आगे ही खड़े थे। गाय और बैल आश्रमके एक वर्षके बछड़ेसे शायद ही कुछ बड़े होंगे। उनके बदनकी हड्डियाँ बाहर निकली पड़ रही थीं और वे मुझे बेजान और थकी हुई आँखोंसे देख रहे थे। पहला खयाल दिलमें यही आया: "कैसी बेरहमी है? ये लोग इन जानवरोंको काफ़ी खानेके लिए क्यों नहीं देते?" मगर इन्सानोंकी तरफ़ देखा तो वे जानवरोंसे कुछ अच्छे नज़र नहीं आये। उनकी भी वैसी ही चमकसे सूनी आँखें और बाहर निकली हुई हड्डियाँ। एक तरहसे तो वे जानवरोंसे भी गये-गुज़रे नज़र आये; कारण क़ुदरतने जानवरोंको तन ढँकनेके लिए बाल तो दिये थे, जब कि इन्सानोंके कपड़े चिथड़े-चिथड़े हो रहे थे। औरतें सवेरेका खाना पका रही थीं। मैंने पूछा: "ज़रा बताओ तो बहन, क्या पका रही हो?" एक बहन पतली-सी मक्काकी रोटी और सरसोंकी सब्ज़ी लेकर आई। यह सब्ज़ी वह खेतसे बटोर लाई थी। मैंने पूछा: "और दाल कहाँ है?" उसने अपने फटे लहँगेकी ओर इशारा करते हुए कहा: "क्या आप समझती हैं कि अगर मैं दाल खरीद सकती होती, तो मैंने अपनी लाज ढाँकनेके लिए ठीक-सा लहँगा न बना लिया होता?" सचमुच ही इस बहनने लहँगेको मोटे धागेसे जैसे-तैसे जोड़-जाड़ रखा था। मैंने जवाब दिया: "क्या तुम्हारा कहना यह है कि तुम्हें दाल नहीं मिलती?" पास खड़े आदमीने हाँ-में-हाँ मिलाते हुए कहा: "हाँ, यही बात है। अगर कभी कोई खास मेहमान आ जाते हैं या कोई त्योहार आ पड़ता है, तो हम बकरा या बछड़ा या और कुछ भी बेचकर थोड़ी दाल ले आते हैं।" "अच्छा, तो फिर दूध?" "नहीं!" "घी?" "वह भी नहीं!" "तो फिर तुम लोग तेल तो खाते होगे? नहीं, वह भी नहीं!!" मैंने मसालोंके बारेमें पूछा: "और नमक?" "हाँ, हम लोग खेतकी मेंड़ परसे और सार्वजनिक ज़मीन परसे घास काटते हैं और पासके देहाती बाज़ारसे उसके बदले थोड़ा नमक ले आते हैं। अगर घास थोड़ी ज़्यादा मिल गई, तो कुछ मिर्चें भी पा लेते हैं।" उन्होंने जवाब दिया।

* * *

अगर ऐसे लोगोंकी ख़ूराकमें कमी की गई, तो उसका मतलब मौत ही होगा। घरमें कुछ गल्ला जमा नहीं है और शरीरकी ताक़त तो पहले ही जा चुकी है। इनमेंसे ज़्यादातर खेत-मज़दूर हैं। इनके पास अपनी कोई ज़मीन नहीं। ये सबके सब बेपढ़े-लिखे हैं। इस तरहके लोग करोड़ोंकी तादादमें देशमें फैले हुए हैं।

यह छोटी-सी तस्वीर खींचते हुए मैंने कोई नई बात नहीं कही है। उसूली तौर पर हर कोई इस हालतको जानता है। मगर जो लोग आरामसे ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, उनके दिलोंमें हमेशा यह तस्वीर बसी नहीं रहती। अगर ऐसा होता, तो वे आज जिस तरह खाते-पहनते और रहते हैं, उस तरह नहीं रह पाते।

जब अकालकी तकलीफ़ महसूस होने लगेगी तो शहरोंके रहनेवाले अपनी आवाज़ उठा सकेंगे, मगर खेतोंमें काम करनेवाले मज़दूर चुपचाप, हमारी निगाहोंसे दूर, सहन करते रहेंगे।

जो अकालको दूर करनेके उपाय करने जा रहे हैं, उन्हें समय रहते इन करोड़ों बेज़बानोंको याद रखना चाहिये।

आख़िर जब जनताके प्रति ज़िम्मेदार सरकार आयेगी, तो उसका पहला काम होगा कि वह समाजके इस अंगका उद्धार करे और इसे क़ायमी तौर पर अपने पाँवों पर खड़ा रहनेवाला बनाये।

किसान-आश्रम, बहादराबाद, १७–२–'४६

('हरिजन'से) मीराबहन

अहिंसक हिन्दुस्तान: दुनियाकी एक ताक़त

हम दो क़िस्मकी ताक़तें पैदा करके दूसरों पर क़ाबू पा सकते हैं: एक रचनात्मक और दूसरी विनाशात्मक। प्रेम और सेवा रचनात्मक शक्तिकी और नफ़रत और डर विनाशक शक्तिकी निशानी है।

आज दुनिया पर डर और नफ़रतकी ताक़त राज कर रही है। यह हमारी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाका नतीजा है, जो *लाज़िमी* तौर पर अपने पड़ोसी परके हमारे क़ाबू पर आधार रखती है। केन्द्रित उद्योगोंको, जिनकी मशीनें और कारखाने एक जगह होते हैं, अपने लिए दूर-दूरसे कच्चा माल मँगाना पड़ता है। उन्हें बाज़ारोंकी भी तलाश करनी पड़ती है और उन पर अपना क़ाबू रखना पड़ता है, फिर भले ही वे बाज़ार दुनियाके दूसरे सिरे पर क्यों न हों। कपड़ेकी मिलें मैंचेस्टरमें हो सकती हैं, जहाँ कि रूई पैदा होती ही नहीं। उनके लिए ६,००० मील दूर हिन्दुस्तानमें रूई पैदा की जाती है। उसे कातकर और उसका कपड़ा बुनकर उसे फिर ६,००० मील दूर हिन्दुस्तानमें बिकनेके लिए भेजा जाता है। इससे यह ज़रूरी हो जाता है कि मैंचेस्टरके मिल-मालिक हिन्दुस्तानके रूई पैदा करनेवालोंके जीवनको नियंत्रित करें। वे मिल-मालिक भारत-सरकार पर भी क़ाबू रखना चाहेंगे, ताकि अपने कपड़ेको बेचनेके लिए अपने अनुकूल कस्टम और एक्साइज़के कर बिठवा सकें। परमाणु बम बनानेके लिए विज्ञानका सहारा लेकर और बाज़ारोंमें सफल मुक़ाबला करनेवाले जापानियों और जर्मनोंके ख़िलाफ़ अपने बच्चोंको घृणाके गीत सिखाकर ही यह सब किया जाता है। इसीका एक नतीजा हिन्दुस्तानकी ग़ुलामी भी है।

यह सब हासिल करनेके लिए हिंसाके गीत गाये जाते हैं और समाजमें उसे ऊँचा दर्जा दिया जाता है। सैण्ट पॉलके गिरजे और वेस्टमिन्स्टर एबीमें जल-सेनापतियों और थल-सेनापतियोंकी यादगारें खड़ी की जाती हैं। इन यादगारोंको देवताके बराबर-बराबर रक्खा जाता है। तभी लोग जल, थल और हवाई सेनामें धड़ाधड़ भर्ती हो सकते हैं। यह सभ्यताको जंगलीपनमें बदल देना है। दुनिया आज इस पद्धतिके नीचे कराह रही है। बड़े राष्ट्र परमाणु बमके सहारे अपनी प्रभुता क़ायम रक्खे हुए हैं। बाक़ी दुनिया विनाशके डरसे गरदन झुकाये है। दुनियाका समस्त वैभव चाहे पा लिया गया हो, मगर आत्मा तो नष्ट हो गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका दूसरा रास्ता क्या ? हमको जुदा क़िस्मके पैमाने बनाने होंगे । मिलों और मशीनोंकी भलाईकी जगह लोगोंकी भलाईको देनी होगी । हमारा जीवन भौतिक दुनियाकी ज़रूरतोंके मुताबिक़ नहीं चलाया जाना चाहिये । हमें बनावटी तौर पर अपनी ज़रूरतोंको बढ़ाने और फिर उनको पूरा करनेकी कोशिश न करनी चाहिये । हमें पहली चीज़ोंको पहला स्थान देना चाहिये । सच्चा जीवन इस पर निर्भर नहीं करता कि हमारे पास चीज़ें कितनी ज़्यादा हैं ।

हिन्दुस्तानने एक हल पेश किया है । उसका अपना पैमाना उस दर्जेसे ज़ाहिर होता है, जो समाजमें अलग-अलग श्रेणियोंको मिला हुआ है । सबसे नीची सतह पर वे शोषक हैं, जो दूसरोंके नाश पर निर्भर करते हैं । आर्थिक साम्राज्यवाद इसी क़िस्मका संगठन है । इसके बाद उन लुटेरे प्राणियोंका नम्बर आता है, जो बिना पैदा किये उपभोग करते हैं । अमीरोंकी तरह ऐश-आराम करना हमारा आदर्श नहीं हो सकता । कुलीन लोग इसी वर्गमेंसे हैं । इसके बाद आर्थिक वर्ग यानी वैश्य आते हैं । मगर यहाँ पैसा मुख्य वस्तु नहीं है । इनके बादकी दो ऊँची श्रेणियाँ जनताकी सेवक हैं —— क्षत्रिय लोगोंकी ज़रूरतोंकी निगहबानी करते हैं और ब्राह्मण संस्कृतिके रक्षक होते हैं । इस पैमानेको अपनाकर हिन्दुस्तान दुनियाके दूर-दूरके हिस्सोंमें पहुँचा था और अपने साथ ज्ञान और प्रकाश ले गया था । यह सांस्कृतिक प्रवेश था जिसने राष्ट्रोंमें शान्ति और एकता क़ायम की थी ।

इस व्यवस्थामें भोग-विलास जीवनका ध्येय न था । जब भोग पर ज़ोर देते हैं तो व्यवस्थाका आधार मौज-मज़ा और अधिकार हो जाते हैं । इसका आख़िरी नतीजा संघर्ष और हिंसा निकलता है । इसके ख़िलाफ़ अगर हम कर्त्तव्यों, यानी फ़रायज़ पर ज़ोर दें, तो जीवन पर आत्मसंयम क़ायम हो जाता है और हमारी ज़रूरतें सीमित हो जाती हैं । यह सभ्यताका आधार हुआ । हमको समाजमें ज़रूरत-मन्दोंकी सेवाको सबसे ऊँची जगह देनी होगी । इस तरह हम हिंसाको त्यागेंगे और दूसरों पर हमारा असर डरके कारण नहीं, बल्कि हमारी सेवाओंकी क़द्र पर निर्भर करेगा । एक ज़माना था जब हिन्दुस्तानके हाथमें यह ताक़त थी, और आज भी उसे मिल सकती है । वह आपसके लिहाज़ और इज़्ज़तकी ताक़त है । उससे संस्कृतियों (तहज़ीबों)का मेल होगा और दुनियामें शान्ति क़ायम हो सकेगी ।

('हरिजन'से)

जे० सी० कुमारप्पा

कोढ़की समस्या

सबसे पहली बात यह है कि कोढ़की समस्या न सिर्फ़ आमलोगोंको बल्कि समाजके नेताओं, शासकों, धारासभाओंके सदस्यों और कभी-कभी डॉक्टरों, वैद्यों और सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभागके अधिकारियोंको भी यह समझानेका प्रश्न है कि इस बीमारीके बारेमें आजकल क्या सोचा और समझा जाता है । कोढ़ एक मामूली बीमारी है । कभी-कभी वह छूतसे भी लग जाती है, मगर वह डरावनी या घिनौनी बीमारी नहीं । हर क़िस्मका कोढ़ छूतवाला नहीं होता । जब वह छूतसे लगनेवाला होता है, तब भी उसकी छूत बहुत अरसे तक और बहुत नज़दीक रहने पर ही लगती है और वह भी ख़ासकर बच्चोंको लगती है । कोढ़ विरासतमें मिलनेवाला रोग नहीं है । इसकी शुरुआत गरमी, सूज़ाक वग़ैराकी तरह सम्भोगसे नहीं होती । अगर रोगी शुरूमें ही चेत जाय और बराबर इलाज करवाये, तो रोगको रोका और क़ाबूमें रखा जा सकता है । लेकिन रोगी जल्दी इलाज करवाना तभी शुरू करेंगे, जब जनता यह समझ लेगी कि इस बीमारीका होना कोई शर्मकी बात नहीं है । इसके अलावा, डॉक्टरोंको कोढ़के बारेमें आजकलका ज्ञान हासिल करना चाहिये और रोगियोंके लिए भरसक सब कोशिश करनी चाहिये ।

किन्तु कोढ़ ऐसा रोग है कि जिसको बिलकुल ठीक करनेके बजाय रोकना ज़्यादा आसान है । कोढ़को रोकनेका इसके सिवा और कोई मतलब नहीं कि छूत फैलानेवाले रोगियोंके बहुत नज़दीक बच्चोंको न जाने दिया जाय । नॉर्वेमें बच्चोंको छूतवाले रोगियोंसे अलग रखकर ही कोढ़को फैलनेसे रोका गया था । कोढ़के बीमारोंको अलग रखनेका भी यही मतलब होता है कि छूतवाले रोगियोंके बहुत नज़दीक और लम्बे अरसे तक दूसरोंको, ख़ासकर बच्चोंको, न रहने दिया जाय । अगर कोढ़के रोगियोंको बहुत सख़्तीके साथ अलग रखा जायगा, तो जिन्हें हाल ही कोढ़ शुरू हुआ है, वे अपनी बीमारीको छिपाये रहेंगे । हरएक रोगीके बारेमें उसके हालातको देखकर फ़ैसला किया जाना चाहिये । कुछ रोगी ऐसे हो सकते हैं, जिन्हें इलाजके लिए और अलग रखनेकी ग़रज़से किसी सेनीटोरियममें भेजना ज़रूरी हो । मगर उस हालतमें मक़सद यह होना चाहिये कि रोगीको किसी लाभदायक काममें लगाकर रखा जाय और उपयोगी आदमी बनाकर उसे समाजमें लौटा लाया जाय ।

हमारे देशमें कोढ़ ज़्यादातर देहातकी समस्या है । हालाँकि यह सभी देहातमें फैला हुआ रोग नहीं है, फिर भी ऐसे बहुतसे गाँव हैं, जहाँ कोढ़के काफ़ी रोगी मिलेंगे । इन तमाम रोगियोंको हम इनके लिए बनाई गई अलग बस्तियोंमें नहीं भेज सकते, और न हमको ऐसा करना ही चाहिये । अपना यह पुराना ख़याल हमें छोड़ देना चाहिये कि कोढ़के रोगीको उम्र भर किसी चिकित्सा-गृहमें रखना ज़रूरी होता है । मदुरान्तकम्के नज़दीक हम छूतवाले रोगियोंको केवल रातमें गाँवके बाहर झोंपड़ियोंमें रखनेका प्रयोग कर रहे हैं । दिनमें रोगी खेतोंमें काम करते हैं; रातको वे उनके लिए बनी जगहोंमें सोते हैं । इस तरह छूतसे बच्चोंकी रक्षा हो जाती है, और रोगी अपनी कमानेकी योग्यता क़ायम रखता है । अगर हम सहानुभूतिसे काम लें तो हम रोगियोंको यह दिखा सकते हैं कि किस तरह वे गाँवोंमें रहकर काम भी कर सकते हैं, और साथ ही, बच्चोंके लिए ख़तरनाक भी नहीं बनते । हमको हिन्दुस्तानमें कोढ़ियोंके लिए ऐसे स्वतंत्र आश्रयस्थानोंकी ज़रूरत है, जहाँ कम ख़र्चसे और सहानुभूतिपूर्वक काम चलाया जाता हो ।

इस समस्याका आध्यात्मिक पहलू भी है, जिसका हम पर गहरा असर होना चाहिये । **कोढ़का रोगी हमारे लिए एक धार्मिक समस्या भी है** । वह पीड़ित मानवजातिका एक अंग होता है । कोढ़के रोगीको जो दुःख भोगने पड़ते हैं, और उनमेंसे जिनको दूर किया जा सकता है, उन्हें दूर करनेके लिए हमको उस अज्ञान और घिनको मिटाना होगा जोकि उसके कारण हैं । यह काम वही बहादुर भाई-बहन कर सकते हैं, जो कोढ़ द्वारा हमारे भाईचारेको दी गई चुनौतीका जवाब देनेके लिए आगे आनेको तैयार हों । फ़ादर डेमियनने अपने ज़मानेमें इस चुनौतीका जवाब दिया था और जो काम पार्लमेण्टके क़ानूनों और आर्थिक सहायतासे न हो सका, उससे ज़्यादा काम उन्होंने कर दिखाया था । आज तो हम भी उनके दिखाये रास्ते पर चल सकते हैं और हमको तो उस ख़तरेका भी सामना न करना पड़ेगा जिसका फ़ादर डेमियनने इतनी महानतासे सामना किया था ।

और, कोढ़-निवारणके कामके ज़रिये हम अपने देहातकी ज़िन्दगीकी आम सतहको ऊँचा उठा सकते हैं । क्योंकि कोढ़ इन्सानकी तकलीफ़ोंके सवालकी जड़ तक जाता है । काम करनेवालोंके किसी भी दलको, जो कोढ़की बीमारीको दूर करनेमें मदद देगा, एक लाज़िमी तौर पर सामाजिक और आर्थिक सवालोंके पूरे चक्करका सामना करना पड़ेगा । यह भी सच है कि रचनात्मक कामका एक हिस्सा बन जानेके कारण कोढ़-निवारणका काम बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है । वह कोढ़के रोगीको दान पर जीनेवालोंकी श्रेणीमेंसे हटाकर अपने पाँवों पर खड़ा होनेकी इज़्ज़त पानेमें मदद दे सकता है । अपने 'कस्तूरबा गांधी-कुष्ठरोग-निवारण-निलयम'में हम स्त्रियों और बच्चोंको स्वाभिमानकी ओर आगे बढ़नेमें मदद देनेकी उम्मीद रखते हैं । कोढ़को दूर करनेमें आर्थिक प्रश्न यह है कि कोढ़ी स्त्री-पुरुषोंको उत्पादक काम करनेवाला बनाया जाय इस समस्याका मनोवैज्ञाकिक रूप यह है कि हम लोगोंको यह समझायें कि ऐसा हो सकता है । रचनात्मक काममें मुझे इस समस्याका हल नज़र आता है ।

('हरिजन'से)

टी० एन० जगदीशन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

१० मार्च १९४६

विचारोंका घर्षण

"मैं गांधीजीकी इस बातको समझ नहीं सकती कि हिन्दुस्तानी नौसेनाके लोगोंको नौकरीकी शर्तें अपमान-जनक मालूम होनेकी हालतमें इस्तीफ़ा दे देना चाहिये था। अगर वे ऐसा करते, तो अपनी रोज़ीके एकमात्र ज़रियेको खो बैठते। इसके अलावा, वे सिद्धान्तोंकी ख़ातिर लड़ रहे थे। अगर वे आज इस्तीफ़ा देते, तो बेकारीके इन दिनोंमें सैंकड़ों ही उनकी जगह लेनेको तैयार हो जाते और उनके साथ भी वैसा ही भेदभाव बरता जाता और हाकिमोंका वही बरताव रहता। नौसेनाके आदमी कुछ भी हासिल न कर पाते। जो कांग्रेसी ख़ुद धारासभाओंमें जा रहे हैं, वही नौसेनाके आदमियोंको नौकरी छोड़ देनेके लिए किस मुँहसे कह सकते हैं? उससे देशके काममें कोई मदद नहीं होती।"

अरुणाबहनकी अख़बारी मुलाक़ातसे जो बातें ऊपर दी गई हैं, उनमेंसे हरएक बात उन विचारोंके ख़िलाफ़ है, जो आम तौर पर कांग्रेसी मानते हैं या मानते हुए समझे जाते हैं। यहाँ यह सवाल नहीं उठता कि दरअसल अरुणाबहन उन विचारोंको मानती हैं या नहीं, जो मुलाक़ातमें उनके मुँहसे कहलवाये गये हैं। फ़िलहाल तो इतना काफ़ी होगा कि इन विचारोंको कसौटी पर कसा जाय और यह दिखाया जाय कि ये कांग्रेसके प्रस्तावोंसे बिलकुल मेल नहीं खाते।

सन् १९२०में कांग्रेसके कलकत्तेवाले विशेष अधिवेशनके, जो स्व० लाला लाजपतरायकी सदारतमें हुआ था, एक प्रस्तावमें यह बताया गया है कि अहिंसक कार्रवाईका पहला सिद्धान्त यह है कि हर उस चीज़ के साथ असहयोग किया जाय, जो अपमानकारक हो। यह याद रखना चाहिये कि हिन्दुस्तानकी नौसेनाका संगठन हिन्दुस्तानियोंकी भलाईकी ख़ातिर नहीं किया गया था। आदमी खुली आँखों उसमें शामिल हुए थे। भेदभाव तो सामने ही पड़ा है। अगर कोई नौकरीमें शामिल होता है, तो उससे बच नहीं सकता। ज़ाहिर है कि इस नौकरीकी योजना हिन्दुस्तानको ग़ुलामीमें रखनेके लिए की गई है। कोई चाहे तो हालातको ठीक करनेकी कोशिश कर सकता है, उसे करनी भी चाहिये। मगर यह एक हद तक ही मुमकिन हो सकता है। यह चीज़ बग़ावत या विद्रोहके ज़रिये हासिल नहीं की जा सकती। बग़ावत या विद्रोह सफल भी हो सकता है, मगर वह कामयाबी बाग़ियों और उनके रिश्तेदारोंके लिए ही फ़ायदेमंद हो सकती है, सारे हिन्दुस्तानके लिए नहीं। और इससे जो नसीहत निकलेगी, वह तो एक बुरी विरासत होगी। अनुशासन जितना आज ज़रूरी है, स्वराज्यमें भी कम-से-कम उतना ही ज़रूरी होगा। सफल विद्रोहियोंकी अधीनतामें हिन्दुस्तान आपसमें झगड़नेवाले गिरोहोंमें बँट जायगा, जो भीतरी कलहके कारण शक्तिहीन हो जायँगे।

अगर यह सच हो कि नौसेनाके मौजूदा नौकरोंके अपमान-जनक हालतोंके ख़िलाफ़ लड़ाई लड़ते हुए इस्तीफ़ा दे देने की हालतमें सैकड़ों उनकी जगह लेनेको तैयार हो जायँगे, तो यह कहना होगा कि कांग्रेसी हिन्दुस्तानने स्वराज्यकी लड़ाईको समझनेमें बहुत थोड़ी तरक़्क़ी की है। अगर हम इतने गिरे हुए हैं कि हममेंसे सैकड़ों ही अपमानकी घूँटको पीनेको तैयार हो जायँगे और अपमानके शिकार बने साथियोंकी जगह लेनेकी हद तक चले जायँगे, तो क्या हम आम जनताके लिए स्वराज्य ले सकेंगे? यह ख़याल ही कांग्रेसियोंके लायक़ नहीं है, ख़ासकर उस वक़्त जब कि स्वराज्य आँखोंके आगे आता हुआ ख़याल किया जाता है।

जो लोग यह मानते हैं कि नौसेनाकी नौकरी ही उनके लिए आजीविका का एकमात्र साधन है, उनका इन लोगोंके बारेमें बहुत ही हलका ख़याल होना चाहिये। सिपाहीकी ज़िन्दगी सख़्त ज़िन्दगी होती है। उसे मिलकर काम करना और फावड़ा और कुदाली चलाना सिखाया जाता है। ऐसे आदमीको यह सोचना अच्छा नहीं लगेगा कि सिपाहीगीरीके अलावा उसकी और कोई आजीविका नहीं हो सकती। अगर हम यह ख़याल करते हों कि सिपाही अपनी मेहनतसे रोज़ी नहीं कमा सकते, तो वह उनके बारेमें हमारी बहुत हलकी राय होगी। मज़दूर हर हालतमें अपनी मज़दूरी कमाने लायक़ होता है। हाँ, यह बात सच है कि सिपाहीके काममें जो चमक-दमक है और उसे जो सुभीते मिलते हैं, नौकरी छोड़ देने पर वह उनसे वंचित हो जायगा। मारने और मिटानेके इस हिंसक धन्धे पर अब तक जो सुनहरा रंग चढ़ाया गया है, उसको अगर हम धो नहीं सके हैं, तो हमने अपने पच्चीस क़ीमती साल यों ही बरबाद कर दिये हैं।

अरुणाबहनने यह कहा बताते हैं कि समुद्री बेड़ेके आदमियोंने इस्तीफ़ा देकर कुछ हासिल न किया होता। मेरा कहना यह है कि अगर उन्होंने बहादुरीसे नौकरी छोड़ दी होती, तो उनको इज़्ज़त और प्रतिष्ठा हासिल हुई होती, उन्होंने बम्बईके रहनेवालोंको इज़्ज़त और प्रतिष्ठाका पाठ पढ़ाया होता, और बम्बईमें आदमियोंकी, माल-मतेकी और क़ीमती खाने-पीनेकी चीज़ोंकी जो मूर्खतापूर्ण बरबादी हुई, उसे भी उन्होंने बचा लिया होता। यक़ीनन् यह कम उल्लेखनीय कामयाबी न होती।

अरुणाबहनकी मुलाक़ातकी आख़िरी बात निश्चय ही विचारोंकी गड़बड़ी ज़ाहिर करती है। देशकी इज़्ज़त और आज़ादीको बचा लेनेके लिए कांग्रेसियोंका धारासभाओंमें जाना ठीक वैसी ही बात नहीं है, जैसी कि नौसेनामें अपनी रोज़ी कमानेके लिए नौकरी करना, जिसमें यह संभावना भी रहती है कि उनका अपने ही देशवासियों और उनकी आज़ादीके ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया जा सकता है। धारासभाओंमें जानेवाले कांग्रेसी मतदाताओंकी रायसे चुने जाते हैं, और वे वहाँ और किसी बातके लिए न सही, तो इसी लिए जाते हैं कि ऐसे लोगोंको धारासभाओंमें जानेसे रोकें, जो मतदाताओंकी ग़लत नुमाइन्दगी करते हैं। धारासभाओंमें जाना बिलकुल बुरा हो सकता है, लेकिन उसकी ऐसी कोई तुलना नहीं हो सकती, जिसका कि अभी ज़िक्र किया गया है।

पूना, ३-३-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन'से)

एजण्टोंसे

'हरिजन-सेवक'की प्रतियोंके लिए स्वभावतः माँग बराबर बढ़ रही है। उसके लिए काग़ज़का जो कोटा मिला है, जब तक वह नहीं बढ़ता, तब तक इस माँगको पूरा कर सकना नामुमकिन है। हम और काग़ज़ हासिल करनेकी कोशिश कर रहे हैं, और इस बीच ग्राहकों और ख़ास तौर पर एजण्टोंसे धीरज रखनेकी प्रार्थना करते हैं। एजण्ट यह आसानीसे समझ सकेंगे कि उनकी माँगोंको तभी पूरा किया जा सकता है, जब कि पहले स्थायी ग्राहकोंको अख़बार भेज दिया जाय। आशा है, एजण्ट फ़िलहाल अपनी माँगको सीमामें रखकर हमारे साथ सहयोग करेंगे। नये एजण्ट तो फ़िलहाल मेहरबानी करके अख़बार न मँगवायें तो अच्छा होगा।

अहमदाबाद, ६-३-'४६ जीवणजी देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक पत्र

हिंसाका नतीजा

"इटलीकी ओर देखो।" गांधीजीने उस दिन एक दोस्तसे कहा, जो हर क़ीमत पर आज़ादी हासिल करना चाहते हैं। "ग़ैरीवाल्डी बड़ा आदमी था। उसने इटलीको आज़ादी दिलवाई। और मुसोलिनीने भी इटलीको बड़ा बना हुआ-सा दिखाया। मगर आज इटली कहाँ है? जापानकी तरफ़ देखो, जर्मनीकी तरफ़ देखो। जिस हिंसाकी वदौलत वे सत्ताके शिखर (चोटी) पर चढ़े, उसीने उनको धरती पर गिरा दिया है। और, क्या परमाणु बमने सभी क़िस्मकी हिंसाकी व्यर्थता साबित नहीं कर दी है? फिर भी हम इतने कूढ़-मग़ज़ हैं, जो यह ख़याल करते हैं कि कुछ लोगोंकी खोपड़ियाँ तोड़कर और उस जायदादको बरबाद करके, जो सब कुछ कहने और कर लेनेके बाद भी हमारी अपनी जायदाद है, हम स्वराज्य हासिल कर सकेंगे।" यह कहनेकी ज़रूरत नहीं कि इन सब घटनाओंने गांधीजीके दिलको इस तरह मसोस डाला है कि कुछ कहा नहीं जा सकता। मगर गांधीजीका आशावाद हमेशा हरा रहनेवाला है। उन्होंने कहा: "मुझे यक़ीन है कि हिंसाके इस ताण्डवसे लोग अहिंसाका पाठ पढ़ेंगे।" जो कुछ हो रहा है, उस पर गांधीजीको जो भारी दुःख और पीड़ा हो रही है, उसे वह सत्य और अहिंसा रूपी ईश्वरमें अपनी अटूट श्रद्धासे ही सहन कर पा रहे हैं।

नग्न यथार्थता

फ़ौजमें बाजे-गाजे और झण्डोंका प्रदर्शन युद्धकी भयंकरता और उसके जंगलीपनको छिपा लेते हैं। हमारी देशभक्तिकी भावनाको बम्बईकी घटनाओंकी नग्न यथार्थता पर पर्दा नहीं डालने देना चाहिये। २२ फरवरीको बम्बईके एक हिस्सेमें होनेवाली घटनाओंका जी० एस० मेडिकल कॉलेजकी एक विद्यार्थिनी द्वारा गांधीजीको लिखा गया यह आँखों देखा बयान है:

"बम्बई आज मौतके ताण्डवका अखाड़ा बना हुआ है। मैं अपने अस्पतालसे अभी लौटी हूँ। मैंने ऐसी बरबादी और ख़ून-ख़राबी पहले कभी नहीं देखी। हम किताबोंमें 'लहूकी नदियाँ' बह जानेका हाल पढ़ा करते हैं। मैंने वह नज़ारा इस बार ख़ुद अपनी आँखों देख लिया। हमारे हताहतोंके दफ़्तरमें मुर्दा लाशों और घायलोंका बेतरतीब अम्बार लगा हुआ है, जिनमें हिन्दू भी हैं और मुसलमान भी; बूढ़े भी हैं और औरतें भी; और दो साल तकके बच्चे भी। हमारे छात्रावासके हर विद्यार्थीको और रोगियोंकी देखभाल करनेवाले सभी मुलाज़िमोंको ज़रूरतसे ज़्यादा काममें जुटा रहना पड़ा। क्या इस बेकारकी बरबादीको रोकनेके लिए, जिसमें इतने बेगुनाहोंकी हत्या हो रही है, कुछ नहीं किया जा सकता? कुछकी अँतड़ियाँ निकल आई हैं। कुछकी छातियोंमें गोलियाँ लगी हैं। कुछ लोगोंके हाथ-पाँव काट देने पड़े हैं। यह नज़ारा देखकर दिल काँप उठता है। अब रातके ९ बज रहे हैं। हालात थोड़े शान्त हो गये हैं। शामको छह बजे हमारे कॉलेजके सामने सड़क पर गोलीबार हुआ। उसमें हमारे अस्पतालमें काम करनेवाला एक परिचारक घायल हुआ है। अंग्रेज़ सैनिक चलती हुई लॉरियोंसे बेतहाशा गोलियाँ चलाते रहते हैं।

"मैं चीरफाड़के कमरेमें खड़ी मदद दे रही थी। लहूकी धारायें बहती देख मुझे चक्कर आने लगे। क्लोरोफॉर्म और लहूकी मिली बदबूसे मेरा जी घबराने लगा। . . . लोगोंकी हुल्लड़बाज़ीकी कहानियाँ भी सुननेको मिलती हैं। मगर असल हुल्लड़बाज़ बेदाग़ बच निकलते हैं।

"मैं अपने अस्पतालमें एक बार फिर हो आई हूँ, और वहाँसे अभी-अभी लौटी हूँ। मरे हुओंकी तादाद ५६ तक पहुँच चुकी है। और कइयोंकी हालत नाज़ुक है।"

बेहतर रास्ता

इस हफ़्तेके दौरानमें कई फ़ौजी जवान सलाह लेनेके लिए गांधीजीके कैम्पमें आये। उनमेंसे एक गांधीजीसे मिला। वह बहुत अशान्त था। उसने कहा कि उसके साथी जानकी बाज़ी लगानेको तैयार हो गये हैं। क्या गांधीजी उन्हें सारे अपमानों और अन्यायोंको सहते जाने और कुछ न करनेकी सलाह देंगे?

गांधीजीने उत्तर दिया: "नहीं। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, मैं ख़ालिस अहिंसक कार्रवाई और खुले तरीक़ोंका पक्षपाती हूँ। मैं पोशीदापनको बिलकुल नापसन्द करता हूँ।"

मुलाक़ाती परेशानीमें पड़ गया। उसे ताज्जुब हो रहा था कि अन्यायको मिटानेके लिए फ़ौजी कर्मचारियोंके बीच अहिंसाकी क्या जगह हो सकती है?

गांधीजीने कहा: "मैंने अपने ७ अगस्त, १९४२के कांग्रेस की महा-समितिवाले भाषणमें अहिंसक लड़ाईका एक कार्यक्रम बताया था। मैंने कहा था कि किस तरह देश अपनी शक्तिके अनुसार ऊँची-से-ऊँची अहिंसा और क़ुरबानीको जगा कर उन्हें संगठित कर सकता है। मैंने उस भाषणमें बताया था कि अख़बारवाले क्या करें, विद्यार्थी क्या करें, राजा क्या करें, सरकारी नौकर क्या करें और आख़िरमें हिन्दुस्तानी सिपाही क्या करें? जैसा मैंने बताया था, अगर उसके मुताबिक़ सबने अपना काम किया होता, तो उसका बेहिसाब असर हुआ होता। उस कार्यक्रम पर आज भी अमल किया जा सकता है। सैनिक यह घोषणा कर दें कि वे सिपाहीका पेशा अपने पेटके लिए नहीं, बल्कि हिन्दुस्तानको आज़ाद करने और रखनेके लिए करेंगे। मैं नहीं चाहता कि जिस सरकारसे उन्हें तनख़्वाह मिलती है, उसके प्रति वे ग़ैरवफ़ादार हों, क्योंकि अगर वे आज मौजूदा सरकारके प्रति ग़ैरवफ़ादार होते हैं, तो कल उसी नापसे राष्ट्रीय सरकारके प्रति भी ग़ैरवफ़ादार हो सकते हैं। लेकिन किसी भी सैनिकके लिए यह ग़ैरवफ़ादारी नहीं होगी, अगर वह अपने बड़ोंसे जाकर यह कहे कि वह उसी वक़्त तक उनका आदमी रहेगा, जब तक कि वे देशकी आज़ादीके हामी होंगे, और यह कि वह अपने देश-वासियोंकी आज़ादीको कुचलनेके लिए कभी हथियार नहीं उठायेगा। अगर ऐसा कहने पर सैनिकोंको नौकरीसे अलग कर दिया जाय, या बरख़ास्त कर दिया जाय या फ़ौजी अदालतमें उन पर मुक़दमा भी चलाया जाय, तो उन्हें इसकी परवाह नहीं करनी चाहिये। इस तरह वे एक ऐसी चिनगारी जलायेंगे, जिसे किसी भी ताक़तके सारे हथियार भी नहीं बुझा सकेंगे और थोड़े ही अरसेमें सारी हिन्दुस्तानी फ़ौजमें बिना ख़ून बहाये देश-भक्तिकी भावना भर जायगी। इसके ख़िलाफ़ अगर उन्होंने अनुशासनको तोड़ा और हिंसा व हुल्लड़से काम लिया, तो वे सारी हमदर्दी खो देंगे और अधिकारियोंको उन्हें सबक़ सिखानेका बहाना दे देंगे।"

मुलाक़ातीने कहा: "जब मैं यहाँ आया था, मेरा दिमाग़ घोटालेमें पड़ा हुआ था। अब मैं सब बातोंको ज़्यादा साफ़ देख पा रहा हूँ। आपने हमको एक बड़ी ग़लतीसे बचा लिया। हम यकायक या बिना सोचे-समझे कोई क़दम नहीं उठायेंगे।"

हवाका रुख़

अंग्रेज़ोंके दिलोंमें आज जो गहरा आत्मचिन्तन हो रहा है, उसका यह एक नमूना है, जो एक सैनिक द्वारा गांधीजीको लिखे एक पत्रसे लिया गया है:

"हममेंसे कई, जिन्हें लाज़िमी तौर पर सेनामें भर्ती किया गया है, दिलसे आपके देशकी भलाई चाहते हैं। यहाँ तक कि अपनी भावनाओंको अमली तौर पर ज़ाहिर करनेका जो एक ही ज़रिया हमारे पास था, उसे हमने अपनाया है। हमने हमारी पार्लमेण्टके सदस्योंके नाम चिट्ठियाँ लिखी हैं, जिनमें हमने आज हमारे सामने जो समस्या मौजूद है, उसे हल करनेके लिए फ़ौरन पूरी कार्रवाई करनेकी ज़रूरत पर ज़ोर दिया है। जहाँ तक हम सिफ़ारिश कर सकते थे, वहाँ तक हमने कहा है कि समस्याका एकमात्र हल यही है कि यह देश फ़ौरन इस देशके रहनेवालोंके हवाले कर दिया जाय। हमने अनुरोध किया है कि 'भारत छोड़ो'वाले सर्वथा उचित प्रस्ताव पर अमल करनेके लिए हर सुलभ उपाय काममें लेनेको आपसे कहा जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दूसरा सवाल, जो मैंने अपने पार्लमेण्टके सदस्यके सामने उठाया है, यह है : अगर उन लोगोंके ख़िलाफ़, जिन्हें मैं प्यार करता हूँ, मुझसे हथियार उठानेको कहा जाय, तो ब्रिटिश सेनाके सिपाहीके नाते मेरी क्या स्थिति होगी? मैंने सूचित किया है कि अगर कोई अफ़सर इतना गुमराह हो कि मुझे इस तरहकी आज्ञा दे, तो मुझको उसे माननेसे इनकार कर देना चाहिये, और मैं इनकार करूँगा भी। मैंने यह भी लिखा है कि हमारी स्थितिको साफ़ करनेके लिए ज़रूरी कार्रवाई की जाय। हम सेनामें साम्राज्यवादी लड़ाई लड़नेको दाख़िल नहीं हुए हैं। और, जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, मैं ऐसी लड़ाई लड़नेवाला नहीं हूँ।

"हवामें अधीरता छा गई है, और वह ठीक भी है। दंगा-फ़साद होना उसकी निशानी है। मुझे यक़ीन है कि इस तरहके विद्रोह बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं हैं, और मक़सदके सही होनेके प्रति जो हमदर्दी है, उसे कम कर देंगे। मुझे दिली उम्मीद है कि जो लोग इनके लिए ज़िम्मेदार हैं, वे विवेक और सहनशीलतासे काम लेंगे ताकि अचानक चारों ओर बेक़ाबू भीड़का राज्य क़ायम न हो जाय।

". . .हो सकता है कि मैं यह सब लिखनेमें अपने अधिकारसे बाहर चला गया होऊँ, लेकिन अगर उसमें कुछ खतरा हो, तो मैं उसका सामना करनेको बिलकुल तैयार हूँ। कम-से-कम मैं यह महसूस करता हूँ कि एक इन्सानके नाते, जिसके दिलमें थोड़ी मानवताकी भावना है, जो कुछ मैं अनुभव करता हूँ, उसे मैंने सचाईसे ज़ाहिर कर दिया है। आपको यह जानकर भी मदद मिलेगी कि हममें से कई, यहाँ और इंग्लैण्डमें, आपकी कामयाबी चाहते हैं। . . . अमली तौर पर मदद दे सकनेके लिए व्यक्तिशः कुछ करनेकी बहुत थोड़ी गुंजाइश है, मगर जहाँ कहीं ऐसा करना मुमकिन हो, मैं बड़ी ख़ुशीसे ऐसे हर आदमीका साथ दूँगा, जो समस्याओंका जल्दी और शान्तिपूर्वक हल निकालनेकी चेष्टा कर रहा होगा। ये समस्यायें जो भी मेरी पैदा की हुई नहीं हैं, लेकिन मैं महसूस करता हूँ कि हमारी वजहसे हैं और इसलिए कुछ हद तक उनके लिए अपनी ज़िम्मेदारी मानता हूँ।"

पूना, ३-३-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

ग्राहकों और एजण्टोंसे

ड्राफ्ट और पोस्टल ऑर्डर **व्यवस्थापक, हरिजन-सेवक**के नाम भेजें, किसी व्यक्तिके नाम नहीं। पोस्टल ऑर्डर इस तरह भेजें कि उसका रुपया **अहमदाबाद पोस्ट ऑफ़िससे** मिल सके।

एजण्ट कृपया इस बातका ध्यान रक्खें कि **हरिजन-सेवक**की प्रतियों पर छपी क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत वे ले नहीं सकते। अगर यह नियम तोड़ा गया, तो उनकी एजन्सी रद कर दी जायगी। ख़रीदारोंसे प्रार्थना है कि वे छपी हुई क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत न देकर हमारे साथ सहयोग करें और अगर कोई ज़्यादा क़ीमत माँगे, तो हमें उसकी इत्तिला करें।

नमूनेकी प्रतिके लिए तीन आनेके डाक-टिकट भेजने होंगे।

व्यवस्थापक

नई किताबें	मूल्य	डाकख़र्च
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधारी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१-८-०	०-५-०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०
हस्तेमें उर्दू लिपि — (श्रीपाद जोशी)	०-७-०	०-१-०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०

कुछ सुझाव

जबसे गांधीजीने देशके सामने खड़े हुए अकालके संकटको टालनेके उपाय और साधन मालूम करनेकी ओर अपना और जनताका ध्यान खींचा है, उनके पास चारों ओरसे सुझाव पर सुझाव चले आ रहे हैं। इनमेंसे कई सुझावोंकी चर्चा गांधीजी अपने अख़बारी बयानों और 'हरिजन'के लेखोंमें कर चुके हैं। कुछ और सुझाव नीचे दिये जाते हैं। जो काम सरकारी हाकिमोंके करनेका है, वह उन्हें करना चाहिये और जहाँ आमजनताके अमली सहयोगकी ज़रूरत है, वहाँ उसे आगे आना चाहिये।

१. लाखों एकड़ उपजाऊ काली मिट्टीवाली ज़मीन वर्जीनिया तम्बाकू उगानेके काममें ली जा रही है। ऐसी ज़मीन ८ लाख एकड़ गन्तूरमें, ६ लाख कृष्णा और गोदावरी ज़िलों में, १० लाख सरकारोंमें और २० लाख दूसरे हिस्सोंमें है। चूँकि तम्बाकू और उसका इस्तेमाल इन्सानके लिए नुक़सानदेह करार दिया गया है, इस ज़मीनके मालिकोंके लिए उसकी खेती बंद कर देने या कम कर देनेका यह सुनहरा मौक़ा है। उसके बदले वे इस उपजाऊ ज़मीनमें अनाज, तरकारियाँ और मवेशियोंका चारा वग़ैरा उगावें।

२. छिलकोंवाला और सूखा नारियल, जिसे आम तौर पर खोपरा कहा जाता है, बड़े पैमाने पर व्यापारिक कामोंके लिए इस्तेमाल किया जाता है। उससे खोपरेका तेल, और दूसरे ख़ुशबूदार तेल, साबुन वग़ैरा चीज़ें बनाई जाती हैं। खोपरेको बिना किसी मुश्किलके लम्बे अरसे तक रक्खा और पूरक व पोषक ख़ुराकके तौर पर काममें लाया जा सकता है। उसमें काफ़ी मात्रामें अच्छी क़िस्मकी वनस्पती-चर्बी और खनिज तथा विटामिन होते हैं। यह ख़ास तौरपर कोचीन और त्रावणकोरमें होता है। और वहाँ खोपरेके उद्योगको चलानेमें बड़े-बड़े लोगोंका हाथ है।

३. पूनाके एक दोस्तने मुझे जुवारके दो नमूने भेजे हैं। एक नमूना उस जुवारका है, जिसे पिछली मौसममें गाँववालोंने अपने खेतोंमें पैदा किया था, और जिसे सरकारी हाकिमोंने लाज़िमी तौर पर नाज इकट्ठा करनेकी योजनाके मुताबिक़ गाँववालोंसे हासिल कर लिया था। इस जुवारके पैदा करनेवालोंको ६ रुपया फ़ी बंगाली मन (४० सेर)के हिसाबसे दाम चुकाये गये। दसरा नमूना उस जुवारका है, जिसे उन्हीं गाँववालोंको, जिनसे पहले नमूनेकी जुवार लाज़िमी तौर पर ले ली गई थी, भूखों मरनेसे बचनेके लिए १० रुपया फ़ी मनके हिसाबसे लेना पड़ रहा है। अगर यह सच हो, तो यह हाकिमोंकी नालायक़ी, दूरन्देशी की कमी और ग़रीबोंकी ज़रूरतों और भलाईकी ओर पूरी लापरवाहीकी जीती-जागती मिसाल है। किसी भी इलाक़ेसे अनाजका एक दाना भी बाहर भेजनेके पहले मुक़ामी ज़रूरतोंका ठीक-ठीक हिसाब लगा लेना चाहिये।

४. बिहारसे एक दोस्त महुओंके बारेमें ध्यान खींचते हुए लिखते हैं कि यह एक खानेकी चीज़ है, मगर देशी शराब बनानेके काममें इसका इस्तेमाल किया जाता है। अगर इससे शराब बनाना बहुत ही कम कर दिया जाय, तो महुआ न केवल गाँववालोंकी ख़ुराकमें शामिल किया जा सकता है, बल्कि 'इससे मज़दूरोंकी आमदनीमें लाज़िमी तौर पर बचत होने लगेगी। कई उदाहरणोंमें तो उनकी कुल आमदनीका २५ फ़ी सदी इस पर ख़र्च हो जाता है। इस तरह वे आजसे ज़्यादा दूध, तरकारी, अण्डे वग़ैरा ख़रीद सकेंगे।' मवेशियोंको जो अनाज खिलाया जाता है, उसकी जगह महुआ भी खिलाया जा सकता है।

५. अनाजोंसे जो शराब या नशीले पेय तैयार किये जाते हैं, उनका बनाया जाना फ़ौरन बन्द कर दिया जाना चाहिये।

६. कलफ़ तैयार करनेवाले कारख़ानोंको फ़िलहाल चावल और मक्का देना रोक दिया जाय या कम कर दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. एक पंजाबी दोस्तकी राय है कि गेहूँ पैदा करनेवाले ज़िलोंमें कई सौ मन गेहूँकी कच्ची फ़सल रोज़मर्रा मवेशियोंको हरे चारेके रूपमें खिलाई जाती है। इस अध-पके गेहूँका दोसौ-तीनसौ मन गेहूँ यदि पक जाने दिया जाय, तो वह पाँचसे साढ़े सात हज़ार मनके बराबर हो सकता है। इन मित्रका सुझाव है कि आदमियोंकी तरह मवेशियोंके लिए भी अनाजकी मिक़दार तय कर दी जाय और उसके बदले शत्ताला, सरसों, हरी सब्ज़ी और घासके रूपमें हरा चारा उन्हें ज़्यादा मिक़दारमें दिया जाय।

८. होटलों और उपहारघरोंमें केक, बिस्कुट, पेस्ट्री, बढ़िया रोटी (फ़ैन्सी ब्रेड्) मिठाई वग़ैरा बनती हैं, इस बारेमें जाँच-पड़ताल होनी चाहिये और उसमें कमी की जानी चाहिये।

९. शादी-ग़मीके मौक़ों पर होनेवाली दावतें और पार्टियाँ बन्द कर दी जायँ।

१०. चावलके सवाल पर श्री प्यारेलालजीने लिखा ही है, मगर इस बारेमें कुछ और लिखा जा सकता है। दीनाजपुरसे एक संवाददाता लिखते हैं कि ३०,००० मन खुडी (टूटा) चावल वहाँकी मिलोंमें पड़ा है और बरबाद हो रहा है। वह चाहे बाज़ारमें न बेचा जाय, लेकिन अगर उसे छुट्टा कर दिया जाय, तो हज़ारों भूखोंका पेट भर सकता है। लेखकका सुझाव है कि इस बातकी जाँच की जाय कि बंगाल कितना चावल पैदा करता है, कितना सरकार मिलोंसे खरीदती है, और उसको किस काममें लेती है, सारे प्रान्तमें कितना खुडी चावल पड़ा है और क्या सरकार इस चावलको खास तौरपर मुकर्रर की गई अन्न बाँटनेवाली कमेटीके सिपुर्द करने देगी?

११. प्रो॰ रंगाका खयाल है कि शहरी लोगोंको अन्नका राशन मुहय्या करनेकी तो पूरी कोशिश की गई है, मगर देहातमें रहनेवालोंके लिए उसी तरह ख़ूराक मुहय्या करनेकी ओर बहुत कम तवज्जह दी गई है। उनके नीचे लिखे सुझाव हैं:

(क) अनाज पैदा करनेवाले किसानोंको काफ़ी मेहनताना दिया जाय; ताकि वे व्यापारी फ़सलें उगाना बन्द कर दें। किसानको कपड़ा, घासलेट, ईंधन और दूसरे तेल काफ़ी मिक़दारमें नहीं मिलते। दलालोंको अलग रखकर अगर अन्नकी पैदावारकी उन्हें अच्छी क़ीमत दी जाय, तो उनका संकट कम हो सकता है। उनके काममें आनेवाली चीज़ें उन्हें राशनिंग पद्धतिसे दी जायँ और खेतीकी पैदावारमें इन चीज़ोंके मिलनेका व्यवस्थित और उचित तरीक़ा खोजा जाय और उस पर अमल किया जाय।

(ख) किसानोंको खेतीके औज़ार उचित भाव पर ज़रूरतके मुताबिक़ दिये जायँ।

(ग) फ़ी आदमी अधिक-से-अधिक पैदावार और कम-से-कम खपतके बारेमें गृहस्थों, किसानों और देहातियोंके बीच अच्छी होड़ाहोड़ी हो। जो लोग ज़्यादा पैदा करें, उन्हें ज़्यादा पैसा दिया जाय और उन्हें उनके काममें आनेवाली चीज़ें ज़्यादा मिक़दारमें मिलें।

(घ) जो ज़मीन खेतीके लायक़ हो, लेकिन किसीके अधिकारमें न हो, वह सबकी सब उन किसानोंको, जिनके पास ज़मीन नहीं है, या उनकी सहयोग समितियोंको सिर्फ़ अनाज पैदा करनेकी शर्त पर बाँट दी जाय।

(ङ) अनाज पैदा करनेवालोंको सिर्फ़ अपनी ज़रूरतके लायक़ अनाज अपने पास रखनेके लिए समझाया जाय; बाक़ीको वे गाँव पंचायतोंके सिपुर्द कर दें, जो इस बातका फ़ैसला करें कि अनाज न पैदा करनेवालों और बिना ज़मीनवाले मज़दूरोंको कितने अनाजकी ज़रूरत होगी। गाँवकी पंचायतें अनाजको बुद्धिमानीके साथ इकट्ठा करके रखेंगी और उसे बाँटेंगी।

(च) बाक़ी बचा हुआ अनाज ज़िलेके हाकिमोंके तहतमें रहे, जिसे वे दूसरी जगह भेज सकते हैं। अनाजके मौजूदा ज़खीरेको मुनासिब तौर पर बाँटनेके अहम कामको अंजाम देनेके लिए एक अफ़सर नियुक्त किया जाय। वह अन्न इकट्ठा करने, उसे बाँटने और उसका राशनिंग करनेका काम करे।

(छ) देहातियोंको शादी और दूसरे रस्मो-रिवाज मुल्तवी कर देने या कम-से-कम ऐसे मौक़ों पर अन्नकी बरबादीको कम करनेके लिए समझाया जाय। ऐसे मौक़ों पर कम-से-कम लोगोंको इकट्ठा किया जाय।

(ज) कारीगरों और दूसरोंके लिए अगर सस्ते भावों पर सामुदायिक भोजनालय खोले जायँ, तो अन्नकी बरबादी कम होगी।

(झ) हर पचास गाँवोंके पीछे या हर तहसीलमें अनाज-भण्डार क़ायम करने होंगे, ताकि किन्हीं गाँवोंमें या आसपासके इलाक़ोंमें अगर अचानक अनाजकी कमी पड़ जाय, तो वहाँ काफ़ी मात्रामें अनाज पहुँचाया जा सके।

(ञ) हर तहसील और गाँव पंचायतको लोहा मुहय्या किया जाय, गाड़ियोंके लिए लोहेकी पत्तियाँ पहले दी जायँ, ताकि अनाजको इधर-उधर ले जानेके लिए अनाज बाँटने और इकट्ठा करनेवाले अधिकारियोंको बैल-गाड़ियाँ मिल सकें।

(ट) जब कभी ज़रूरत पड़े, फ़ौजी मोटर लारियाँ हासिल की जायँ, और बहुत ज़रूरी हो, तो रेलवे अधिकारियोंको चाहिये कि वे खास रेलगाड़ियाँ दौड़ानेकी तैयारी रखें।

(ठ) गाँववालोंको शहरियोंकी बनिस्बत ज़्यादा अनाज मिलना चाहिये।

(ड) पानीको ज़ाया न होने दिया जाय और जहाँ ज़रूरत हो, वहाँ कुएँ खुदवाये जायँ। मौजूदा तालाबों और कुओंकी मरम्मत सरकारको करानी चाहिये।

(ढ) जंगलकी और दूसरी हरी पत्तियोंकी खाद इकट्ठा करके रखी जाय और जहाँ ज़रूरत हो, वहाँ भेजी जाय। इसको भेजनेका किराया घटाया जाय। किसानोंको खादका मिलना एक ज़रूरी काम है। खाद बाँटनेका काम गाँवकी पंचायतों या किसानोंकी संस्थाओंके सिपुर्द किया जाना चाहिये।

(ण) कन्द-मूल-जैसी धरतीके भीतर पैदा होनेवाली फ़सलें, जो सालमें तीन-चार बार उगाई जा सकती हैं, उगानेके लिए बढ़ावा दिया जाय।

(त) धान (चावल) हाथसे फटका जाय। इस तरह उसकी मिक़दार कम-से-कम १० फ़ी सदी बढ़ाई जा सकती है।

(थ) अगर सूबे और ज़िलेके अधिकारी अनाज और दालें वैज्ञानिक तरीक़ेसे उगाने दें तो अनाजसे होनेवाले पोषणकी मात्रा १५से २५ फ़ी सदी तक बढ़ाई जा सकती है।

१२. पशु-पालनको बढ़ावा दिया जाय। गन्तूरसे एक दोस्त लिखते हैं कि उनका ज़िला अच्छे दूध देनेवाले जानवरोंके लिए मशहूर है। उनके ज़िलेमें ओंगोल क़िस्मकी गाय होती है। मगर उनके ज़िलेसे अच्छी नस्लको फ़ौजकी और मांसकी ज़रूरतें पूरी करनेके लिए बाहर जा भेजा रहा रहा है।

१३. मौजूदा संकटके समय सेनाको, खासकर उन लोगोंको जिन्हें सेनासे अलग किया जा रहा है, कई तरहके कामोंमें लगानेके सुझाव भी आये हैं। एक संवाददाताका कहना है कि कल्याणसे करजतके बीच चावल पैदा करने लायक़ एक चौड़ी और उपजाऊ पट्टी है। हज़ारों एकड़ अच्छी ज़मीन, जिसके आसपास समुद्रमें जाकर गिरनेवाला काफ़ी पानी है, नवम्बरसे जून तक बेकार पड़ी रहती है। पानीको आसानीसे नहरोंमें ले जाया जा सकता है या थोड़ी दूर पर खेतोंमें कुएँ खोदे जा सकते हैं। ज़ाहिर है कि धान पैदा करनेवाले इतने ग़रीब हैं कि वे यह काम नहीं कर सकते; लेकिन अगर धानको नुक़सान पहुँचाये बिना दूसरी फ़सलें उगाई जा सकें, तो सरकार इस काममें इंजीनियरोंकी कई टुकड़ियाँ और दूसरे सैनिकोंको क्यों न लगा दे? यह बात इस लम्बे-चौड़े देशके और भी बहुतसे दूसरे हिस्सों पर लागू होती है।

१४. आख़िरमें, अनाजको जमा करके रखने और चोर बाज़ार चलानेकी हमेशाकी और आम शिकायत है। चोर बाज़ारको खत्म करनेका सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि अमीर उसमें जायें ही नहीं। क्या वे ऐसा करेंगे? आज जिस हवामें हम साँस लेते हैं, उसके ज़र्रे-ज़र्रेमें हिंसा भरी हुई है। किन्तु हत्या करना, लूटना, आग लगाना और सम्पत्तिका नाश करना ही हिंसा नहीं है; लालच, मतलब-परस्ती, शोषण, रिश्वतखोरी और बेईमानी हिंसाके बारीक़ और इसलिए ज़्यादा ताक़तवर रूप हैं। भीड़का ग़ुस्सा कम हो जाता है या बड़ी हिंसासे उसे क़ाबूमें किया जा सकता है, किन्तु सूक्ष्म हिंसा गहरे रोगकी तरह जड़ जमा लेती है और समाजके प्राणोंको कुतरती रहती है। जाग्रत लोकमत और नैतिक मूल्योंको ठीक-ठीक समझनेसे ही उसे मिटाया जा सकता है।

पूना, २–३–'४६

('हरिजन'से)

अमृतकुँवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणियाँ

कामके सुझाव

एक सज्जन लिखते हैं :

"आप इस वक़्त पूनामें हैं। अखबारोंसे पता चला है कि आप आग़ाखान साहबके दोस्त हैं। उनके पास पानी है, पैसे हैं, ज़मीन है। इसी तरह गवर्नर साहबका गणेशखिंडका मैदान भी बहुत बड़ा है। क्या इन दोनों जगहोंमें अनाज नहीं पैदा हो सकता? क्या उसे पैदा करनेकी प्रेरणा उनको आप नहीं दे सकते?

"आपको उपवासमें विश्वास है। आपने यह भी लिखा है कि उपवास सिर्फ़ धर्मलाभके लिए नहीं, बल्कि आरोग्यके लिए भी किया जा सकता है। क्या जिनको हमेशा खाना-पीना मिलता है, उनको आप हफ़्तेमें एक दिन या तो एक या अधिक समयका खाना छोड़नेको नहीं कह सकते? और इस तरहसे भी अनाज नहीं बचाया जा सकता? कहा जाता है कि अंकुर फूटने तक अनाजको पानीमें भिगोकर कच्चा खाया जाय, तो थोड़े अनाजसे काफ़ी पुष्टि मिलती है। क्या यह ठीक है?"

मेरे खयालमें ये तीनों सूचनायें ठीक हैं, और उन पर अमल आसानीसे हो सकता है। जिनके पास ज़मीन और पानी है, उनके लिए पहली सूचना है; दूसरी जो ठीक खाते हैं उनके लिए; तीसरी सबके लिए है। इसका निचोड़ यह है कि जो चीज़ कच्ची खाई जा सकती है, उसे कच्ची ही खानेकी कोशिश करनी चाहिये। ऐसा ज्ञान-पूर्वक करनेसे बहुत थोड़ेमें हम निर्वाह कर सकते हैं, इतना ही नहीं, बल्कि उससे लाभ होता है। अगर सब लोग आहारके नियम समझ लें और उसके अनुसार चलें, तो बहुत बचत हो सकती है, इसमें संदेह नहीं।

पूना, १-३-'४६

एक उपयोगी पर्चा

एक मित्रने बम्बई प्रान्तके खेती-विभाग द्वारा प्रकाशित एक पर्चा भेजा है। उसमें बँगलों वग़ैराके अहातोंमें छोटे पैमाने पर साग-भाजी पैदा करनेके लिए कुछ सूचनायें हैं। यह पर्चा लड़ाईके दिनों, सन् १९४२में, 'अधिक अन्न पैदा करो' आन्दोलनके सिलसिलेमें प्रकाशित हुआ था। जो कुछ उस वक़्त ज़रूरी था, अन्नकी मौजूदा बढ़ती हुई कमीको देखते हुए आज वह उससे भी कहीं ज़्यादा ज़रूरी है। यह दुःखकी बात है कि यह पर्चा अंग्रेज़ीमें छपा है। मगर हो सकता है कि सिर्फ़ अंग्रेज़ीका ही पर्चा मेरे पास भेजा गया हो, और यह कि प्रान्तीय भाषाओंमें भी इसका अनुवाद हुआ हो। सो जो भी हो, यह पर्चा बहुत मार्गदर्शक और उपयोगी है। जो पाठक इसमें रस लेते हैं, जैसा कि हर किसीको लेना चाहिये, उन्हें मैं यह सुझाऊँगा कि वे इस पर्चेको मँगायें, और अगर उन्हें इस कामके लिए ज़मीन मिल सकती है, तो इसमें दिये सुझावोंसे फ़ायदा उठानेके खयालसे वे इसे पढ़ें। मैंने बिना किसी खास सिलसिलेके इस पर्चेमेंसे नीचे लिखे सुझाव चुन लिये हैं :

(१) इस कामके लिए चुनी हुई ज़मीन मकानों या पेड़ोंकी छायासे ढँकी न रहती हो; पानीका बहाव भी बहुत अच्छा हो।

(२) जिन क्यारियोंमें फूल ख़ूब अच्छी तरहसे उगाये गये हों, वे आम तौर पर इस कामके लिए अच्छी होती हैं; लॉनके यानी हरी दूबवाले मैदानके भी कुछ भाग खोदकर भाजी उगानेके काममें लाये जा सकते हैं।

(३) स्नानघर या रसोईघरका गन्दा पानी इस काममें लगाया जा सकता है।

(४) गोबर इत्यादिके द्वारा बनी हुई देसी खादके उपयोगकी आवश्यकता पर इसमें बहुत ज़ोर दिया गया है।

(५) अखीरमें एक नक़्शा दिया है, जिससे यह पता चल सकता है कि किस क़िस्मका कितना बीज ज़रूरी है; कितनी गहराई पर उसे बोना चाहिये; क्यारियोंकी लम्बाई-चौड़ाई कितनी हो; क़तारोंके बीचमें कितना फ़ासला रहे, वग़ैरा।

पूना, १-३-'४६

('हरिजन'से)

मो० क० गांधी

हिन्दुस्तानी परीक्षाएँ

हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धाके मंत्री श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालने नीचे लिखा बयान भेजा है :

हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धाने तय किया है कि हिन्दुस्तानीके प्रचारके लिए परीक्षाएँ ली जायँ। और यह भी तय किया है कि आखिरी इम्तहान वर्धाके केन्द्रीय कार्यालयसे लिया जाय। आखिरी परीक्षासे नीचेकी परीक्षाएँ प्रान्तीय संस्थाएँ लेंगी। इसके मुताबिक गुजरात और बम्बईमें हिन्दुस्तानीकी परीक्षाएँ शुरू हो गई हैं। इन दो सूबों और दक्षिणभारतको छोड़कर हिन्दुस्तानके दूसरे सूबोंमें, जहाँ हिन्दुस्तानी नहीं बरती जाती है, वहाँ भी हिन्दुस्तानी परीक्षाएँ वर्धासे ली जायेंगी। आगामी परीक्षाएँ रविवार ता० १५ सितम्बर, १९४६को होंगी। इन परीक्षाओंके पाठ्यक्रम और नियम वग़ैरा हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धाके दफ़्तरसे मिल सकेंगे। जो लोग अपने यहाँ हिन्दुस्तानी परीक्षाओंका केन्द्र खोलना चाहते हैं, वे मेहरबानी करके 'परीक्षा-मंत्री, हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा'को लिखकर केन्द्र खोलनेके छपे हुए फ़ॉर्म और दूसरी जानकारी मँगायें।

उम्मीद है कि राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके प्रेमी भाई-बहन इन इम्तहानोंका बहुत बड़ी तादादमें फ़ायदा उठायेंगे।

मौजूदा शक्तिका एक सदुपयोग

स० — हज़ारों गाँवोंमें आटा पीसनेकी चक्कियाँ एंजिनसे चलती हैं। इन एंजिनोंको नदियों, कुओं या तालाबों पर लगानेसे बहुतसे खेतोंमें पानी देनेका काम बड़ी आसानीसे हो सकता है। यह काम सरकारके द्वारा क्यों न कराया जाय? एंजिनके मालिक क्या इतना सहयोग न देंगे?

ज० — अगर हज़ारों गाँवोंमें आटा पीसनेकी कलें हैं, और वे एंजिनसे चलती हैं, तो मैं इसे हमारी पामरताकी सीमा समझता हूँ। हिन्दुस्तानमें कहीं इतनी कलें या इतने एंजिन नहीं बनते। मुझे उम्मीद है कि गुजरातके हज़ारों गाँवोंमें ऐसा नामुनासिब काम हरगिज़ नहीं होता होगा। सारे हिंदुस्तानमें ऐसे गाँवोंकी संख्या भी हज़ारों तक नहीं जा सकती। लेकिन अगर यह सच है, तो इससे गाँवके लोगोंका आलस्य ज़ाहिर होता है। ये इतने ज़्यादा एंजिन और पनचक्कियाँ, इनके मालिकोंके अतिलोभकी सूचक हैं। क्या ग़रीब लोगोंको इस हद तक मुहताज बनाकर धन कमाना मुनासिब होगा? फिर, इस तरहकी कलोंको रखनेसे आज देहातमें चलनेवाली पत्थरकी चक्कियाँ बेकार हो जायँगी। चक्की बनानेका उद्योग करनेवाले भी बेकार हो जायँगे। इस तरह तो गाँवके उद्योगोंका और उनके साथ कलाका भी लोप हो जायगा। एकका लोप होकर दूसरा उपयोगी उद्यम शुरू हो जाय, तो शायद बहुत कहनेको न रहे। मगर मैं नहीं जानता कि कहीं ऐसा हुआ हो। इसके सिवा, हाथकी चक्की चलानेवाले भिनसारे प्रभातियों और भजनोंका जो मधुर संगीत बहाते हैं, उसका भी लोप हो जायगा।

लेकिन मुझे जो कहना है, वह तो यह है। मेरे खयालसे आज इन एंजिनोंका दुरुपयोग हो रहा है। आजके इस आपत्तिकालमें इन्हीं एंजिनोंका उपयोग नदी, कुएँ और तालाबसे पानी खींचकर खेतोंकी सिंचाई करने और अन्न बोनेके काममें भी किया जाय, तो कितना अच्छा हो? उस हालतमें इन एंजिनोंका आजकलका दुरुपयोग सहा जा सकता है। सवाल पूछनेवालोंने सरकारकी मददका ज़िक्र किया है। लेकिन क्या सचमुच इसमें सरकारी मददकी ज़रूरत हो सकती है? क्या मालिक लोग मुसीबतके समयमें भी अपने एंजिनोंका ऐसे परोपकारके काममें उपयोग न करेंगे? अथवा क्या हमारी हालत इतनी अपंग हो गई है कि जब तक सरकार हमें मजबूर न कर दे, हम एक भी लोकोपयोगी काम अपनी इच्छासे करनेको तैयार ही न रहें?

पूना, १-३-'४६

('हरिजनबंधु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जब जागे तभी सवेरा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Reg. No. B 4448

हरिजन-सेवक

दो आना

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क ६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १७ मार्च, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

विषय-सूची

			पृष्ठ
हरिजनोंकी हैरानी	...	गांधीजी	४१
अत्याचारका भण्डाफोड़	...	गांधीजी	४१
बुनियादी तालीमसे पहलेकी तालीम	...	सुशीला नय्यर	४२
नई योजना और बम्बईका खादीभण्डार	...	गांधीजी	४३
रचनात्मक कार्य और समग्र ग्रामसेवा	...	सुशीला नय्यर	४३
जब जागे तभी सवेरा	...	गांधीजी	४४
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	४५
गुण्डोंके खिलाफ़ सत्याग्रह	...	गांधीजी	४५
अन्नकी तंगी : कुछ और सुझाव	...	अमृतकुँवर	४६
गांधीजीके अखबारी बयान	...		४७
हिन्दू और मुसलमान चाय वग़ैरा	...	गांधीजी	४८
टिप्पणी			
बीमारोंसे	...	गांधीजी	४४

हरिजनोंकी हैरानी

श्री- परीक्षितलाल मजमूदार लिखते हैं :

"काठियावाड़के वढ़वाण राज्यमें मोटा केराड़ा एक गाँव है। वहाँ किसी बीमारीकी वजहसे लोग बड़ी तादादमें मरने लगे। गाँवके कुछ लोगोंको शक हुआ कि भंगियोंकी वजहसे ऐसा हुआ है। उन्होंने वहाँ रहनेवाले भंगी परिवारको धमकाया। नतीजा यह हुआ कि डरके मारे भंगी परिवार गाँव छोड़कर भाग गया। वढ़वाणके हरिजन-सेवकोंको जब इसका पता चला, तो उन्होंने हरिजनोंको वढ़वाण राज्यकी मदद दिलवाई। इधर गाँवके लोगोंने वहाँवालोंका वहम दूर किया। हरिजनोंकी रक्षाके लिए दोनोंने इतना काम कर लिया। नतीजा यह हुआ कि वह भंगी परिवार वापस अपने गाँवमें आ गया। अभी-अभी यह समाचार मिला है।

"इस साल ढोरोंमें बीमारी फैली। इसकी वजहसे भी काठियावाड़के हरिजनोंको खास तौर पर बहुत मुसीबतें उठानी पड़ीं। इस तरह गाँवके लोगोंका हरएक अन्धविश्वास या वहम इन ग़रीब हरिजनोंके लिए बहुत भारी हो जाता है।"

इस वहमको मिटानेकी शुद्ध दवा ज्ञान है। काठियावाड़में ऐसे वहम ज़्यादा देखनेमें आते हैं। इसकी वजह यह मालूम होती है कि वहाँ देहातमें नये विचारोंका प्रवेश नहींके बराबर हुआ है। हरिजन-सेवकोंको चाहिये कि वे इस कमीको पूरा करनेमें ख़ूब हिस्सा लें। मगर सेवक कहाँ हैं? जो हैं भी, वे गाँवोंमें जाते नहीं; और जायँ भी, तो यह कठिन लगनेवाला काम कैसे करें? ऐसी अनेक अड़चनोंकी कल्पना की जा सकती है। पुरुषार्थ तो ऐसी अड़चनोंकी परवाह न करके शुद्ध बुद्धिसे काम करते जानेमें है। वढ़वाणका क़िस्सा नसीहत लेने जैसा है। इस क़िस्सेको सच मानें, तो कहना चाहिये कि राजा और प्रजा दोनोंको अक़्ल आ गई और तुरन्त उपाय कर दिया, जिससे घड़ीभरके लिए संकट मिट गया। ऐसा ही काम सब जगह होता रहे, तो वहममात्र दूर हो जाय। धर्ममें सच्चा शिक्षण भरा है।

पूना, ४-३-'४६
('हरिजनबंधु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

अत्याचारका भण्डाफोड़

बम्बईके हाईकोर्टने अभी-अभी एक ऐसा फ़ैसला दिया है, जो नज़रबन्दी के क़ानून पर और सरकारी रवैये पर काफ़ी रोशनी डालता है। श्री एच० के० शाह और श्री बी० ई० साठेने समय-समय पर बढ़ाई गई अपनी नज़रबन्दीके हुक्मोंके खिलाफ़ अदालतके सामने दो 'हेबियस कॉर्पस' अर्ज़ियाँ पेश की थीं। हाईकोर्टने दोनों अर्ज़ियोंको मंज़ूर रक्खा, और चीफ़ जस्टिस स्टोन और जस्टिस लोकुरने अपना बहुत विचारपूर्ण फ़ैसला देते हुए उन दोनों अर्ज़दारोंको रिहा कर दिया है, जो साफ़ ही ग़ैरक़ानूनी तौर पर नज़रबन्द रक्खे गये थे और वे नज़रबन्द ही बने रहते, अगर एडवोकेट पुरुषोत्तम त्रिकमदासने उनके मामलेको बम्बई हाईकोर्टके सामने लानेमें उनकी मदद न की होती। मेरे पास समय कम होनेसे इस फ़ैसलेके कुछ महत्त्वपूर्ण अवतरण ही मैं यहाँ दे रहा हूँ :

अपनी यह राय ज़ाहिर करनेके बाद कि बम्बई सरकारके गृहमंत्री मि० सिम्सने इन दो अभियुक्तोंके बारेमें जो दो हलफ़नामे पेश किये हैं, उनमें उन पर लिखे नम्बरोंके सिवा और कोई फ़र्क़ नहीं है, विद्वान् जज कहते हैं : "मि० साठेके मामलेमें उनको नज़रबन्द रखनेके लिए जो कारण दिये गये हैं, उनमें कहीं यह नहीं सुझाया गया है कि उन्होंने किसी भी लुकछिपकर काम करनेवाली संस्थाको सहायता पहुँचाई है या उसका समर्थन किया है या ख़ुद किसी गुप्त संस्थाका संगठन किया है, गो यह सुझाया गया है कि उन्होंने एक ऐसी संस्थाके काममें मदद पहुँचाई, जिसका मक़सद तोड़-फोड़के काम करना था। अगर यह मान भी लिया जाय कि ऐसी संस्था गुप्त रीतिसे काम करेगी, तो भी हक़ीक़त यह है कि मि० सिम्सके दोनों हलफ़नामे एक-सी भाषामें लिखे गये हैं, जो भी उनका ताल्लुक़ दो अलग-अलग हालातवाले मामलोंसे है। इससे यह साबित होता है कि इन मामलोंका विचार बहुत सरसरी तौर पर किया गया है और बिना मुक़दमा चलाये लोगोंको नज़रबन्द करनेके मामलेमें सरकारी नौकरोंको जो लम्बी-चौड़ी सत्ता मिली है, उसकी गंभीर ज़िम्मेदारी और कर्त्तव्यको ख़यालमें नहीं रक्खा गया है।

"गोखलेवाले मामलेमें इस हाईकोर्टके फुल बेंचको इस बातकी टीका करनेका मौक़ा मिला था कि नज़रबन्दीके हुक्म साइक्लोस्टाइलसे छपे फ़ॉर्मों पर जारी किये जाते हैं, जिनके मज़मूनका किसी ख़ास मामलेकी हक़ीक़तोंसे कोई मेल नहीं बैठता, और अब ऐसा मालूम होता है कि अगर रोका न गया, तो साइक्लोस्टाइल पर छपे हलफ़नामोंका युग शुरू होनेको है। मि० सिम्सके हलफ़नामोंकी ऐसी अनियमितताओं पर, जैसे, किसी हलफ़नामेका ज़िक्र करते हुए यह न बताना कि वह किससे ताल्लुक़ रखनेवाला हलफ़नामा है, ध्यान न दें, तो भी उनके हलफ़नामेमें यह तक नहीं कहा गया है कि अर्ज़दारके मामलेमें सब परिस्थितियोंका पूरी तरह विचार करनेके बाद ही ७ जनवरी, १९४६का मुद्दत बढ़ानेवाला हुक्म जारी किया गया था।"

मि० सिम्सके एक और हलफ़नामे पर जो उन्होंने जिरहके लिए अदालतमें हाज़िर रहनेसे इनकार करनेके बाद पेश किया था, टीका करते हुए जज कहते हैं : "यह एक बहुत मार्केका दस्तावेज़ है, जो एक ऐसे शख़्सने पेश किया है, जिसे अदालतने यह मौक़ा दिया था कि वह अदालतमें हाज़िर रहकर ज़बानी गवाही दे। इस हलफ़नामेमें जो कुछ कहा गया है, उसकी बनिस्बत जो नहीं कहा गया है वह क़ाबिल तवज्जह है, क्योंकि इसमें दोनों अर्ज़दारोंने २२ फ़रवरीको मि० सिम्सके उन दो हलफ़नामोंके जवाबमें, जो एक ही-सी भाषामें लिखे गये हैं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन्हें यह आखिरी हलफ़नामा सुधारना चाहता है, जो हलफ़नामे पेश किये हैं, उनमें उठाई गई बातोंका कोई जवाब नहीं दिया गया है।" मुद्दत बढ़ानेवाले हुक्मोंका ज़िक्र करते हुए विद्वान् जज लिखते हैं: "लेकिन जब एक बार असल हुक्मकी तामील हो चुकती है, तो उस हालतमें धारासभाने नज़रबन्दोंकी रक्षाके लिए कुछ बचावकी सूरतें सुझा रक्खी हैं। छह महीनोंकी मुद्दतके खत्म होनेसे पहले नज़रबन्द व्यक्तिको उसकी नज़रबन्दीके कारण बतानेवाली सूचना मिल जानी चाहिये और उसे हक़ है कि वह दफ़ा ७के मुताबिक़ उस पर अपनी बाजू पेश करे। मुद्दत बढ़ानेवाला हुक्म भी पहले हुक्मकी मुद्दत पूरी होनेसे पहले तीस दिनके अन्दर ही जारी किया जाना चाहिये और आखिरी शर्त यह है कि अपने खुदके सन्तोषके साथ-साथ नज़रबन्दीका हुक्म जारी करनेवाले अफ़सरको चाहिये कि वह नज़रबन्दके मामलेके सब हालात पर फिर विचार कर ले। हमारी रायमें यहाँ 'सब' शब्द पर जोर दिया जाना चाहिये, और फिर तुरंत ही यह सवाल खड़ा होता है कि वे तमाम हालात क्या हैं, जिन पर ग़ौर किया जाना चाहिये। और तब यह एक क़ानूनी सवाल बन जाता है।"

बचाव पक्षकी इस दलीलको मंजूर रखते हुए कि नज़रबन्द करनेवाले अफ़सरने मामलेके सब हालात पर ग़ौर नहीं किया था, जज फ़रमाते हैं:

"मि० पुरुषोत्तम त्रिकमदासने ऐसे कई हालात पेश किये हैं, जिन पर ग़ौर करना, उनकी रायमें, नज़रबन्द करनेवाले अफ़सरके लिए लाज़िमी है। हमारी यह स्पष्ट राय है कि ऐसे हालातमें नीचे लिखी बातोंका समावेश होना चाहिये:

(१) उन कामों या बातों पर ग़ौर करना, जो नज़रबन्दने किये थे, या जब असल हुक्म जारी हुआ, तब जिनके किये जानेका अंदेशा था।

(२) इन मामलों और बातों पर मौजूदा हालातकी रोशनीमें और उनको ध्यानमें रखकर ग़ौर किया जाना चाहिये। यानी मुद्दत बढ़ानेका प्रस्तावित हुक्म जिस दिन जारी किया जाय, उस दिन हिन्दुस्तानमें कैसी परिस्थिति मौजूद थी, इस पर ग़ौर होना चाहिये।

(३) नज़रबन्द द्वारा दफ़ा ७ (४) के मुताबिक़ पेश किये गये उसके जवाबका विचार करते समय इस बातका भी विचार किया जाना चाहिये कि नज़रबन्दीके शुरूसे नज़रबन्दकी क्या हालत रही है और इस वक़्त उसकी तन्दुरुस्ती कैसी है।

"अब हम अपने सामने पेश दोनों मामलोंके हालात पर विचार करें। हमने सारी परिस्थिति पर बहुत ध्यानके साथ ग़ौर किया है और हम यह माननेको तैयार नहीं हैं कि दोनों अर्ज़ियोंमेंसे किसी भी अर्ज़ीके बारेमें मि० सिम्सने जो हलफ़नामे पेश किये हैं, वे अर्ज़दारोंकी इस मज़बूत माँगका कोई माक़ूल जवाब देते हैं कि उनके मामलोंके सभी हालात पर ७ जनवरी, १९४६ के दिन हिन्दुस्तानमें जैसी परिस्थिति मौजूद थी, उसके प्रकाशमें ग़ौर नहीं किया गया है। जैसा कि अर्ज़दार सुझाते हैं, उस तारीखको ऐसी कोई लड़ाई नहीं चल रही थी, जिसकी सफलतामें सामूहिक आन्दोलनके कारण रुकावट पैदा होती; दूसरे, कांग्रेसकी कमेटियाँ जो पहले ग़ैरक़ानूनी करार दी गई थीं वे सब क़ानूनी बन चुकी थीं और कांग्रेस-पार्टीकी कार्यकारिणीके सदस्य और उसके नेता नज़रबन्दीसे रिहा कर दिये गये थे। ये वे सब हालात हैं, जिन पर ७ जनवरी, १९४६को नये हुक्म जारी करनेसे पहले ग़ौर किया जाना ज़रूरी था।

"इसके बाद जज इस हक़ीक़तकी ओर ध्यान दिलाते हैं कि मि० सिम्सने यह ज़िक्र नहीं किया है कि गवर्नर महोदयने इन काग़ज़ात पर ग़ौर नहीं किया था और ७-१-'४६के मुद्दत बढ़ानेवाले हुक्मोंको जारी करनेकी इजाज़त नहीं दी थी। जज कहते हैं: "यह एक बहुत महत्त्वकी और सूचक चीज़ है कि गवर्नर महोदयने मुद्दत बढ़ानेवाले इन हुक्मों पर विचार करके इन्हें जारी करनेकी मंज़ूरी नहीं दी थी, जब कि १९४४ और १९४५में इन दोनों मामलोंमें जारी किये गये तमाम हुक्मों पर उन्होंने ग़ौर किया था और उनके लिए अपनी मंज़ूरी दी थी। अगर ७ जनवरी, १९४६को जारी किये गये हुक्मोंके बारेमें उन्होंने ऐसा किया होता, तो समझमें नहीं आता कि मि० सिम्सने इतनी महत्त्वपूर्ण बातका ज़िक्र क्यों नहीं किया, जिससे यह विश्वास पैदा होता कि कोई भी हुक्म, जिस पर इस तरह ग़ौर किया गया है और मंज़ूरी दी गई है, आवश्यक सावधानी, ध्यान और विचारके बाद ही जारी हुआ है।" इसलिए उनका अपना यह खयाल है कि दोनों अर्ज़दारोंने "७ जनवरीके मुद्दत बढ़ानेवाले दोनों हुक्मोंको कामयाबीके साथ यह चुनौती दी है कि वे वैधरूपसे जारी नहीं किये गये थे, क्योंकि अर्ज़दारोंने जो हक़ीक़त पेश की है, उसको ध्यानमें रखते हुए इस नतीजे पर पहुँचना मुमकिन ही नहीं कि नज़रबन्द करनेवाले अफ़सरने अर्ज़दारोंके मामलेमें सभी हालात पर ग़ौर करनेवाली शर्तको पूरा किया है। . . . ऐसी हालतमें स्पष्ट ही हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम उनको फ़ौरन रिहा करनेका हुक्म जारी करें।"

मेरी रायमें छूटे हुए सज्जनोंको ग़ैरक़ानूनी नज़रबन्दीके लिए हरजाना माँगनेका हक़ है। मगर किसी क़दर यह चीज़ बहस तलब हो सकती है। लेकिन इसमें तो कोई शक नहीं हो सकता कि इस तरह नज़रबन्द किये गये सब लोगोंको, फिर वे किसी भी सूबेमें क्यों न हों, निःशंक भावसे फ़ौरन रिहा कर दिया जाना चाहिये। इन रिहाइयोंकी वजहसे सरकारके उलट जानेका कोई खतरा नहीं है।

बम्बई, १३-३-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

बुनियादी तालीमसे पहलेकी तालीम

[पिछली ता० १७-२-'४६ को सेवाग्राममें शिक्षकोंके सामने गांधीजीने जो कुछ कहा था, उसका सार यों था:]

हमारा प्रयत्न तो यही होना चाहिये कि जितने बच्चे हैं, उन सबको हम खींच लें। जो नहीं आते हैं, उनके न आनेमें हमारी कोई कमी है, ऐसा मान लेना चाहिये। उन्हें तो शौक़ होना चाहिये।

यह समझकर चलना चाहिये कि जितने बच्चे हमारे पास आ जाते हैं, वे सब हमारे लड़के हैं। उनका शरीर और मन तगड़ा हो जाय, उनमें मामूली सभ्यता आ जाय, तो समझना चाहिये कि हमारा काम हो गया।

मैंने कई लड़कोंको सिखाया है। उनको तूफ़ान करने नहीं दिया। अगर वे मेरे हाथमें रहें, तो मैं उन्हें ऐसी तालीम दूँ कि वे बचपन ही से सीखें कि विध्वंसकी वृत्ति बुरी चीज़ है। वे जो कुछ भी करें, उसमें कुछ बनावें, पैदा करें। बनानेमें कला होती है या होनी चाहिये।

मैं यह नहीं मानता कि बच्चे जन्मसे ही अच्छे या बुरे होते हैं। कुछ झुकाव तो रहता है, लेकिन उसको रूप हमें देना है। इसका अर्थ यह हुआ कि जबसे बच्चा माँके पेटमें आता है, तबसे उसकी तालीम शुरू होती है। तब तो मैं माँ को सिखाऊँगा — वह प्रौढ़-शिक्षणका विषय हो जाता है। बच्चेके संस्कार भी वहींसे शुरू होते हैं। आनेवाली प्रजाको इसी रास्तेसे तैयार करना है।

जब तक बच्चा माँको नहीं छोड़ता, तब तक माँको सिखाऊँगा। बच्चेके हाथ-पैर चलते रहते हैं और वे कुछ-न-कुछ कर ही लेते हैं। दो-ढ़ाई सालके लड़के-लड़कियाँ हमारे हाथमें आ जावें और अपने हाथ-पाँव हमारे बताये ढङ्गसे चलावें, तो वे कितने ऊँचे चढ़ेंगे, इसकी हद मैं तो नहीं बाँध सकता।

हमारे हाथमें रहने पर बालक कोई चीज़ बिगाड़ेगा नहीं। ऐसा करते हुए उसे दर्द होगा।

बालकोंको हम जो कुछ सिखावें, वह रचनात्मक हो, क्रियात्मक हो — नाशक नहीं।

जब बच्चा बोलना शुरू करता है, तब भाषाकी तालीम शुरू होती है। पहले रङ्गोंकी पहचान होगी। अक्षर-ज्ञान तो चित्रोंसे ही शुरू करें। १, २, अ, आ, आदि चित्र हैं न? पढ़ना, लिखना, हिसाब करना, प्रवाहमें अपने समय पर आवेंगे — ऐसा होनेसे परिश्रम नहीं पड़ेगा। उसकी सब शिक्षा खेल-सी होनी चाहिये।

वह जो कुछ बनाये, कामकी चीज़ बनाये। तब उसकी बुद्धिका और हाथ-पैरका विकास साथ-साथ होता है।

बुनियादी तालीममें काम और खेल, ऐसे दो विभाग नहीं हैं। बच्चेके लिए तो सब खेल ही खेल है। आगे चला जाता हूँ, तो उसकी सारी ज़िन्दगी ही खेल हो जाती है। मैं वर्षोंसे ऐसा करता आया हूँ। मुझे कभी खयाल नहीं आता कि अब खेलका समय हुआ, चलो खेलें। मेरे लिए तो लिखना भी खेल है। मेरे मनकी नई तालीमवाले लड़के खेलते खेलते सीखेंगे।

सुशीला नय्यर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई योजना और बम्बईका खादीभण्डार

अखिल भारत-चरखा-संघके कालबादेवीवाले (बम्बई) खादीभण्डारसे नीचे लिखे आँकड़े मिले हैं। ये जानने लायक़ हैं। नई पद्धतिके अनुसार होनेवाली प्रगतिका हिसाब कुछ मामलोंमें उलटा चलना चाहिये। शहरवाले जितनी ज़्यादा तादादमें चरखे वग़ैरा चीज़ें ख़रीदें और जितनी ज़्यादा तादादमें चरखेके कामोंको सीख लें, उतना ही अच्छा। लेकिन पूनियोंकी बिक्री तो जितनी जल्दी बन्द हो जाय, बेहतर हो। शर्त यह है कि पींजना और कातना सीखनेवालोंकी तादाद ज़्यादा हो। अगर लोगोंमें सच्ची लगन हो, तो श्री विनोबाके प्रयोग .खूब सफल होने चाहिये। सो जो भी हो। इतनी बात साफ़ है कि कातनेवालेको अपनी रुई धुनकर पूनी बना लेनी चाहिये। इसके लिए यह ज़रूरी है कि धुननेका काम बहुत आसान कर दिया जाय। माॡम होता है कि पुनाईसे धुनाईकी ज़रूरत ख़तम हो जायगी।

भण्डारमें खादीके रहते हुए भी उसका रूप विद्यालयका-सा होना चाहिये। भण्डारके सभी कार्यकर्त्ताओंको (मैं उन्हें नौकर कहूँ, तो भी वे स्वयंसेवक होने चाहिये। तनख्वाह लेनेवाले होने पर भी अगर वे अपने बाज़ार-भावसे कम लेते हैं और खादीके प्रति प्रेमके कारण इस काममें पड़े हैं, तो वे स्वयं-सेवक ही हैं।) ओटना, धुनना, और कातना सिखानेमें निपुण होना चाहिये। जितने बुनना जानें, उतना अच्छा। बुनाईके बारेमें हमारे प्रयोग बहुत कम हुए हैं। मेरी कल्पनाका सच्चा भण्डार तो बम्बईके किसी उपनगरकी विशाल भूमिमें खड़ा होगा, जहाँ लोगोंको खादीकी सारी क्रियायें सिखाई जाती हों और खादीका सारा काम होता हो। कठिनाई हमें झुकाये नहीं, बल्कि हम उसे झुकायें, यानी दूर करें। अगर खादीमें स्वराज्यकी बात सच है, तो स्वराज्यके सिलसिलेमें कठिनाइयाँ तो आयेंगी ही। लेकिन इसमें यानी अहिंसाके मार्गमें कम-से-कम आयेंगी।

बम्बई जाते हुए रेलमें,
१८-२-'४६

मो० क० गांधी

खादीकी नई नीतिका प्रगति-पत्र

	दिसम्बर १९४५में	नवम्बर १९४५ तक	मार्च '४५ से दिसम्बर '४५ तक
चरखे: यरवडाचक्र बनवाये	२८०	२,१६८	२,४४८
चरखे बिके	१९८	२,०१४	२,२१२
पूनियाँ बनाईं —रतल	४२०	३,५०७	३,९२७
पूनियाँ बेचीं —रतल	४७३॥	२,७२६॥	३,२००
चरखे दुरुस्त करके दिये	९२	६२९	७२१
ग्राहक सूत जमा करवाकर खादी पास बुन ले गये	१,१२६	११,३२६	१२,४५२
गुण्डियाँ मिलीं	५,७०७	६८,९५०	७४,६५७
सूत जमा हुआ —रुपयोंमें			
ग्राहक खादी खरीदनेके	१,०२९-५-६	१२,७०४-४-९	१३,७३३-१०-३
हक़दार हुए—रुपयोंमें	१५,०९३-६-०	४,५०,६५८-३-०	४,६५,७५१-९-०
ग्राहक खादी खरीदकर ले गये—रुपयोंमें	१४,९९४-१३-०	३,५३,३८५-७-९	४,१८,३३०-४-९

	कातना जानते हैं	पींजना जानते हैं	बुनना जानते हैं
दुकानमें काम करनेवाले	९०	४६	३८
बाहरवाले	१०	१४	५
कुल	१००	६०	४३

२५ कार्यकर्त्ता बुनाईको छोड़कर बाक़ी सारा काम जानते हैं।
१ कार्यकर्त्ता बुनाईके साथ सब काम जानते हैं।
('हरिजनबंधु'से)

ह० बृजलाल ठाकर
व्यवस्थापक खादीभण्डारकी ओरसे

रचनात्मक कार्य और समग्र ग्रामसेवा

२९ जनवरीको मद्रासमें रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंकी एक सभा हुई थी। वहाँ गांधीजीको जो सवाल पूछे गये थे, उनमेंसे दो सवाल और उनके जवाब नीचे दिये जाते हैं:

स०—एक ऐसा व्यक्ति जो रचनात्मक कार्यक्रमका एक अंग लेकर बैठ गया है, क्या वह दूसरे अंगोंमें भी हाथ डाल सकता है? क्या कई चीज़ोंमें हाथ डालना ठीक होगा? अगर हाँ, तो किस तरह वह यह सब करे?

ज०—रचनात्मक कार्यक्रममें अठारह चीज़ें भरी हैं। चरखा मध्यबिन्दु है। हरएक कार्यकर्त्ताको चरखेके बारेमें पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिये। मानो कि एक कार्यकर्त्ता, उसके उपरान्त, काग़ज़ बनानेको अपना मुख्य धन्धा बना लेता है। उसीमेंसे उसे अपना पेट भी भरना है, तो दूसरे कामोंके लिए उसके पास बहुत समय नहीं रह जायगा। तो भी ग्रामसफ़ाईका काम तो वह कर ही सकेगा, बीमारोंकी सेवा पूरी-पूरी न कर सके, तो भी कुछ तो सलाह-मशविरा उस बारेमें भी लोगोंको दे सकेगा। मानो कि कोई चरखेको ही अपना मुख्य काम बनाना चाहता है, उसीमेंसे पेट भी भरना चाहता है, तो वह ऐसा कर सकता है। मुझे शक नहीं कि चरखेके द्वारा पेट भरा जा सकता है और उसके साथ-साथ कुछ दूसरा सेवाकार्य भी किया जा सकता है। हरएक कार्यकर्त्ताको निश्चय कर लेना चाहिये कि रचनात्मक कार्यक्रममेंसे चरखा चलानेके उपरान्त कौन-कौनसी चीज़ें वह करना चाहता है। मगर वह जो भी करे, ज्ञानपूर्वक करे; ज्ञानपूर्वक चरखा चलानेके लिए उसे कताईसे पूर्वकी और पीछेकी सब क्रियाओंका ज्ञान होना चाहिये। और रचनात्मक कार्यक्रमकी दूसरी चीज़ोंका भी पूरा-पूरा नहीं तो सामान्य ज्ञान तो होना ही चाहिये। एक खगोलशास्त्री दूसरी साइन्सोंके बारेमें कुछ न जाने, तो खगोलविद्या भी पूरी तरहसे नहीं जान सकता। इसलिए रचनात्मक कार्यक्रमका जो अंग आपने अपना लिया है, उसे पूरी तरह करें, बाक़ी चीज़ोंके लिए समय रहे तो करें, नहीं तो न करें।

स०—आपकी कल्पनाकी समग्र सेवाका पूरा अर्थ क्या है? इस कामके लिए हम अपने आपको कैसे योग्य बना सकते हैं?

ज०—अठारह विध रचनात्मक कार्यक्रममें समग्र सेवा आ ही जाती है। गाँवमें जितने लोग रहते हैं, उन्हें पहचानना, उन्हें जो सेवा चाहिये वह देना, अर्थात् उसके लिए साधन जुटा देना और उनको वह काम करना सिखा देना, दूसरे कार्यकर्त्ता पैदा करना आदि। ग्रामसेवक ग्रामवासियों पर इतना प्रभाव डालेगा कि वे .खुद आकर उससे सेवा माँगेंगे, और उसके लिए जो साधन या दूसरे कार्यकर्त्ता चाहियें, उन्हें जुटानेके लिए उसकी पूरी मदद करेंगे। मानो कि मैं एक देहातमें घानी लगाकर बैठा हूँ, तो मैं घानीसे सम्बन्ध रखनेवाले सब काम तो कर ही लूँगा। मगर मैं सामान्य १५, २० रुपये कमानेवाला घाँची (तेली) नहीं बनूँगा। मैं तो महात्मा घाँची बनूँगा। 'महात्मा' शब्द मैंने विनोदमें इस्तेमाल किया। इसका अर्थ केवल यह है कि अपने घाँचीपनेमें मैं इतनी सिद्धि डाल दूँगा कि गाँववाले आश्चर्यचकित हो जायँगे। मैं गीता पढ़नेवाला, .कुरान शरीफ़ पढ़नेवाला, उनके लड़कोंको शिक्षा दे सकनेकी शक्ति रखनेवाला घाँची हूँगा। समयके अभावसे वह लड़कोंको सिखा न सके, वह दूसरी बात है। लोग आकर कहेंगे: "तेली महाशय, हमारे लड़कोंके लिए एक शिक्षक तो ला दीजिये।" मैं कहूँगा: "शिक्षक मैं ला दूँगा, मगर उसका ख़र्चा आपको बरदाश्त करना होगा।" वे .खुशीसे उसका स्वीकार करेंगे। मैं उन्हें कातना सिखा दूँगा। जब वे बुनकरकी मददकी माँग करेंगे, शिक्षककी तरह उन्हें बुनकर ला दूँगा, ताकि जो चाहे, सो बुनना भी सीख ले। उन्हें ग्राम सफ़ाईका महत्त्व बताऊँगा। तब वे सफ़ाईके लिए भंगी माँगेंगे। मैं कहूँगा, मैं .खुद भंगी हूँ, आइए आपको यह काम भी सिखा दूँ। यह है, मेरी समग्र सेवाकी कल्पना। आप कह सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं कि इस युगमें तो ऐसा घाँची पैदा नहीं होनेवाला है, तो मैं आपसे कहूँगा, तब इस युगमें ग्राम भी ऐसे-के-ऐसे रहनेवाले हैं ।

रशियाके घाँचोको लीजिये । तेलकी मिलें चलानेवाले भी तो घाँची ही हैं न? उनके पास पैसे रहते हैं । मगर पैसेको क्या महत्त्व देना था? पैसा तो मनुष्यके हाथका मैल है । सच्ची शक्ति ज्ञानमें रही है । ज्ञानीके पास नैतिक प्रतिष्ठा और नैतिक बल रहता है, इसलिए सब लोग ऐसे आदमीकी सलाह पूछने जाते हैं । विनोबाको लीजिये । वह एक अच्छे तेली हैं, सो तो आप सब जानते ही हैं । आप सब उनका अनुकरण अपनी शक्तिके मुताबिक़ कर सकते हैं ।

सुशीला नय्यर

हरिजन-सेवक

१७ मार्च १९४६

जब जागे तभी सवेरा

जैसा कि मेरे कई साथियोंने देखा है और मैं .खुद देख सका हूँ, ग़लतियाँ करके, उनको मं.ज़ूर करके और उन्हें सुधारकर ही मैं आगे बढ़ सकता हूँ । पता नहीं क्यों, किसीके बरजनेसे या किसीकी चेतावनीसे मैं उन्नति कर ही नहीं सकता । ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूँ । जब हम सब बालक थे, तब तो इसी तरह सीखते थे । अपने ७६वें सालमें भी मेरी हालत बालकके समान ही है । अभी-अभी मुझे मालूम हुआ कि मैं अन्धा होकर दीवारसे सिर टकराने चला था । यह दीवार इतनी बड़ी थी कि इसे देखनेमें कोई ग़लती नहीं हो सकती थी, फिर भी मैं तो नज़दीक पहुँचने पर ही इसे देख पाया ।

मैं डॉक्टर दीनशा मेहताको एक अरसेसे पहचानता हूँ । उन्होंने अपनी ज़िन्दगी .कुदरती इलाजको ही सौंप दी है और उनकी एक ही लालसा है कि हिन्दुस्तानमें .कुदरती इलाजोंका एक विश्वविद्यालय बने । दुनियामें कहीं भी ऐसा विश्वविद्यालय नहीं है । पश्चिममें जो कुछ हैं, वे ख़ास तौर पर धनवानोंके लिए हैं । मगर वे भी विश्वविद्यालय तो हरगिज़ नहीं हैं । मुझे दृढ़ विश्वास है कि अगर ऐसा विश्वविद्यालय खुला, तो उसमें ख़ासकर यह बताया जायगा कि ग़रीबोंकी बीमारियोंका इलाज .कुदरती तौर पर किस तरह किया जा सकता है ।

मैं मानता हूँ कि हिन्दुस्तानके देहाती लोगोंकी बीमारियोंको .कुदरती तरीक़ेसे मिटानेकी चाबी मेरे हाथमें है । और इसलिए मुझे यह जानना चाहिये था कि पूना जैसे शहरमें गाँववालोंकी बीमारियोंका .कुदरती इलाज हो ही नहीं सकता । लेकिन ट्रस्ट तो बन गया । डॉ० दीनशा मेहताका उपचारगृह भी ट्रस्टमें शामिल कर लिया गया । डॉ० मेहताके और मेरे साथ बहुत व्यवहारकुशल जहाँगीरजी पटेल भी शामिल हुए । और, डॉ० मेहताने जिस उपचारगृहकी रचना धनवानोंके लिए की थी, ग़रीबोंके लिए उसका उपयोग करनेके ख़यालसे मैं दौड़ा-दौड़ा पूना पहुँचा । मैंने कुछ बड़ी-बड़ी तब्दीलियाँ सुझाईं, लेकिन पिछले सोमवारको यानी ४ मार्चको अपने मौनमें मुझे यह ज्ञान हुआ कि एक शहरमें ग़रीब देहातियोंके लिए .कुदरती इलाजका ख़याल तक करनेवाला मूर्खोंका सरदार होना चाहिये । मैंने अपने आपको इस रूपमें देखा । और, मैं समझ गया कि अगर गाँवके बीमारोंका '.कुदरती इलाज' करना हो, तो मुझे उनके पास जाना चाहिये, न कि उनको मेरे पास आना । जहाँ फाँकनेको पुड़िया या पीनेको दवा दी जाती है, वहाँ भी वैद्यों और डॉक्टरोंको बीमारोंके घर जाना पड़ता है । और, जो बीमार डॉक्टरोंके पास जाते हैं, वे भी ज़्यादातर डॉक्टरोंके अपने गाँव या शहर ही में रहनेवाले होते हैं ।

कोई देहाती शहरमें आये और उससे कहा जाये कि वह पेट या पीठ पर मिट्टीकी पट्टी रक्खे, नंगा होकर धूपमें सोये, कटिस्नान या घर्षण स्नान करे, और अपना भोजन इस तरह पकावे कि उसका कोई हिस्सा फ़.ज़ूल न जाय, तो यह निरी हिमाक़त न होगी तो और क्या होगा? देहाती मरीज़ 'जी हाँ' कहकर लौट जायगा, लेकिन साथ ही मनमें हँसेगा और .कुदरती इलाज करनेवालेको बेवक़ूफ़ समझेगा । वह बेचारा मेरे पास एक पुड़िया फाँकने या दवाकी प्याली पीकर लौटनेके ख़यालसे आता है और यह श्रद्धा रखता है कि वह अच्छा हो जायगा ।

.कुदरती इलाज तो इस तरह नहीं होते । उनमें तो ज़िन्दगी जीनेका एक नया रास्ता सीखना पड़ता है । इन उपचारोंके सफल होनेके लिए यह ज़रूरी है कि उपचारक यानी इलाज करनेवाला मरीज़की झोंपड़ीके नज़दीक रहे, मरीज़को उपचारककी 'हूँफ' मिले, उपचारकमें अखूट धीरज हो और उसे मनुष्यस्वभावका ज्ञान हो । जब उपचारक एक या एकसे ज़्यादा गाँववालोंके मनको चुरा सकता है, अपने नये रास्तेको पहचान सकता है और उस रास्ते चलने लग जाता है, तभी ऐसे उपचारके विश्वविद्यालयकी नींव डाली जा सकती है ।

इस सीधी चीज़को समझनेके लिए मुझे ख़ास ११ दिन नहीं लगने चाहिये थे । मुझको फ़ौरन ही यह मालूम हो जाना चाहिये था कि ऐसे इलाजके लिए एक शहरी बँगलेकी ज़रूरत न होनी चाहिये । मैं नहीं जानता कि अपनी इस बेवक़ूफ़ी पर मैं हँसूँ या रोऊँ । मैं तो हँसा हूँ, और किसी भी तरहका ख़र्च करनेसे पहले मैंने अपनी ग़लती सुधार ली है ।

शुरू किये कामको छोड़ना तो मैं सीखा नहीं, इसलिए मेरे वास्ते एक ही रास्ता रह गया है । किस गाँवमें इसे शुरू किया जाय?

मेरी इस भूलसे पाठकोंको सबक़ सीखना चाहिये । महात्मा-जैसे आदमी भी कुछ कहें, तो उसे मान ही लेनेमें मनुष्यता नहीं । महात्माकी कही बात हमारे गले उतरे और दिलमें पैठे तभी हमें वैसा करना चाहिये ।

इस मामलेमें तो मेरी मूर्खता इतनी स्पष्ट थी कि वह लम्बे समय तक टिकी होती, तो भी सच्चे देहाती कभी पूना आये न होते । अगर इलाजका थोड़ा भी काम शुरू करनेके बाद मैंने अपनी यह भूल देखी होती, तो मेरी इज्ज़त धूलमें मिल जाती । क्योंकि तब मेरे पास मेरा स्वाभिमान न रहा होता । और जिस आदमीका मान उसके अपने ख़यालसे मर चुका है, वह जितना नुक़सान अपनेको पहुँचा सकता है, उतना दूसरा कोई उसे नहीं पहुँचा सकता । इस ग़लतीके बाद लोग मुझमें विश्वास न रक्खें, तो मैं समझूँगा कि मैं इसी लायक़ था । लेकिन पाठक यह याद रक्खें कि इस उपचारके सिलसिलेमें ग़रीबोंके लिए जितने पैसे निकाले थे, उनमेंसे अभी एक पाई भी ख़र्च नहीं हुई है ।

मेरे अपने लिए तो यह बस होगा कि इस ग़फ़लतके बाद मैं अपने आदर्शों तक पहुँचनेमें ज़्यादा सावधान रहूँ । गाँवके ग़रीब .कुदरती इलाजको अपनायेंगे या नहीं, सो तो भविष्य पर निर्भर करता है । मगर इसमें तो शककी कोई गुंजाइश ही नहीं हो सकती कि उन्हें इसे अपनाना चाहिये ।

पूना, ६-३-'४६ **मोहनदास करमचंद गांधी**

बीमारोंसे

पूनाके नैसर्गिक उपचारगृहमें भरती होनेकी इच्छा रखनेवाले बीमारोंकी ओरसे बड़ी तादादमें चिट्ठियाँ आ रही हैं । मैं यह कहूँ कि फ़िलहाल वहाँ इस तरहकी कोई सहूलियत मौजूद नहीं है । उपचारगृहमें सफ़ाईका जो पैमाना दाख़िल करनेका इरादा रक्खा गया था, उसमें अभी कामयाबी नहीं मिली है । गाँववालोंके लिए अभी वहाँ काम शुरू नहीं हुआ है । जब तक शुरूकी व्यवस्था और फेरफार पूरे नहीं हो जाते, कुछ भी किया नहीं जा सकता । इसलिए बीमारोंको अभी राह देखनी होगी । वैसे, बम्बईमें डॉक्टर दीनशा महेताका एक नैसर्गिक उपचारघर है । मुमकिन है कि वे पूना और सिंहगढ़में भी अपनी शाखायें खोलें । मगर चूँकि उन्होंने नेचर क्यूअर ट्रस्टके सिलसिलेमें अपने सिर बहुत भारी ज़िम्मेदारी ले रक्खी है, इसलिए इसमें सबको वक़्त लग सकता है । ख़ानगी मरीज़ोंके लिए फ़ीसकी दरें वहीं रहेंगी, जो पहलेसे चली आ रही हैं ।

बम्बई, १२-३-'४६ **मो० क० गांधी**

('हरिजन'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवाल-जवाब

स०— फ़ौजमें रहकर कोई रचनात्मक काम किस तरह करे ?

ज०— अगर फ़ौजमें यानी फ़ौजवालोंमें दम हो, तो वे चरखा चला सकते हैं; यानी कपासकी सभी क्रियायें कर सकते हैं; काग़ज़ बनानेका काम कर सकते हैं। इस तरह जितने भी ग्रामोद्योग हैं, सो सब फ़ुरसतके वक़्त कर सकते हैं। जिन दिनों लड़ाई नहीं चलती, फ़ौजवालोंको फ़ुरसत रहती ही है। और, जब लड़ाई चलती होती है, तब भी सब लोग लड़नेके काममें नहीं लगे रहते, न लगने चाहियें। जब काम पर बुलाये जायँ, जानेकी उनकी तैयारी होनी चाहिये। हिन्दुस्तानकी आज़ादीके सिलसिलेमें क्या काम हो रहा है, इसका अभ्यास वे कर सकते हैं। सब दोनों लिपियोंमें राष्ट्रभाषा सीख सकते हैं।

इन सब बातोंकी तहमें आज़ादीकी लगन और ख़ुद अकेले होने पर भी अपनी राय पर डटे रहने और उस पर अमल करनेकी हिम्मत होनी चाहिये। इससे कहीं भी फ़ौजी अनुशासन या निज़ामको कोई धक्का नहीं पहुँचता। यह मेरी विचारधारामें नहीं आता कि डिसिप्लिन या अनुशासनको तोड़कर भी नौकरी पर डटे रहनेमें धर्म है। लुकछिपकर कुछ करनेकी तो उसमें कोई गुंजाइश ही नहीं। मैं मानता हूँ कि इन दो नियमों पर क़ायम रहकर ही कोई व्यक्ति या राष्ट्र सही रास्ते पर चल सकता है।

स०— खाना खाते समय थालीको बिलकुल ही पोंछकरके उठनेमें हलकापन माना जाता है और थोड़ी-बहुत जूठन छोड़ जानेमें बड़प्पन माना गया है। ऐसा क्यों है? और भुखमरीके इन दिनोंमें यह कैसे बरदाश्त किया जा सकता है?

ज०— इसके कारणकी खोजके पचड़ेमें पड़ना मेरे ख़यालसे एक बे-मानी चीज़ है। अगर कोई कारण है भी, तो उसका पता लगानेमें मैं अपना वक़्त नहीं दे सकता। लेकिन इतना भोजन परोसवा लेना कि जूठन छोड़नी पड़े, मेरे विचारमें जंगलीपन और अविवेककी निशानी है। आजके कठिन समयमें तो मुझे इसमें निर्दयता दीखती है, क्योंकि आजकल तो किसीको भरपेट खानेका भी अधिकार नहीं। मैं मानता हूँ कि थालीको साफ़ करके उठनेमें बहुत विवेक और सभ्यता है। इससे समय बचता है और जिन्हें बरतन साफ़ करने पड़ते हैं, उनकी मेहनत बचती है।

अगर कोई किसीकी थालीमें ज़रूरतसे ज़्यादा परोस दे, तो खाना शुरू करनेसे पहले ज़्यादा परोसी चीज़को एक साफ़ बरतनमें रख देना चाहिये। मेरे विचारमें यह विवेक है। और मेरी राय तो यह है कि मेज़बान मेहमानको वही और उतना ही दे, जितना और जो उसे रुचे। बहुत नाज़ुकीसे काम लेनेवाले तो अपने मेहमानकी ज़रूरतको पहलेसे ही जान लेते हैं, और फिर उसीके मुताबिक़ सब चीज़ें उसे परोसते हैं।

स०— आजकल ख़ूनसे खत लिखने और तिलक करनेकी एक हवा-सी चल पड़ी है। क्या यह रिवाज बंद करने लायक़ नहीं?

ज०— मैं तो इस रिवाजको बिलकुल जंगली समझता हूँ। अपना ख़ून देनेमें कोई तकलीफ़ तो होती नहीं। आजकल तो ऐसे सब काम बिना तकलीफ़ दिये किये जा सकते हैं। जब बहुत-सा ख़ून दिया जाता है, तब ख़ून देनेवाला कमज़ोर हो जाता है, लेकिन अपना लहू निकालकर तिलक करने या लहूकी बूँदोंको गिराकर उससे सही करनेमें न तो बहादुरी है, न त्याग, न कष्ट-सहन। सिर्फ़ अविचारकी मूर्च्छा (बेहोशी) है। इसका त्याग करना इष्ट ही नहीं, बल्कि इसे बन्द करना धर्म है। इसका सरल-से-सरल तरीक़ा यह है कि किसी भी नेताको इस जंगली रिवाजके वश न होना चाहिये।

पूना, ६-३-'४६

('हरिजनबंधु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

गुण्डोंके खिलाफ़ सत्याग्रह

गुण्डे लूट-पाट करें, तो उनके खिलाफ़ सत्याग्रही क्या करे?

यह सवाल उठना ही न चाहिये। फिर भी एक भाईने नम्रतापूर्वक यह सवाल पूछा है और जवाब माँगा है। अगर सत्याग्रहका रहस्य समझ जायँ, तो यह सवाल ही न उठे। जिन्हें हम सच्चा मानते हैं, उनकी रक्षा करते हुए मर जाना ही सत्याग्रहकी जड़ है। लुटेरा आये और मैं अकेला होऊँ, तो मुझे अपनी रक्षा करते हुए मर जाना चाहिये। कोई आदमी इससे ज़्यादा कर ही नहीं सकता। तलवार रखनेवाला तलवार चलाकर एक दो सिर काटेगा, लेकिन आखिर शरण आयेगा या मरने तक लड़ता रहेगा। सत्याग्रहीकी तलवार है, उसका प्रेम और उसमेंसे पैदा होनेवाला आग्रह। इसलिए वह सैकड़ों गुण्डोंको भी भाई समझकर मारेगा नहीं, बल्कि उनके हाथों मरेगा और मरकर अमर हो जायगा।

यह सीधा और सरल हिसाब हुआ। पर बड़ी बस्तीमें अकेला एक सत्याग्रही किस प्रकार विजय प्राप्त करे? बम्बईमें सैकड़ोंका झुण्ड चढ़ आया और उसने माल लूटा, आग लगाई। वहाँ अकेला सत्याग्रही तो चबैना बन जाय। सवाल पूछनेवालेने यह दलील की है।

मेरा तो एक ही जवाब है। एक हो या बहुत हों, सत्याग्रही जोखिममेंसे निकलकर भाग नहीं सकता। अगर सत्याग्रही जूझता हुआ मरे, तो कहा जायगा कि उसने अपना कर्त्तव्य पूरा किया। हथियारोंकी लड़ाईमें भी यही क़ायदा चलता है। सत्याग्रहमें यह अधिक लागू होता है। एकके बलिदानमेंसे बहुतोंका बलिदान प्रकट हो सकता है। यह भी मुमकिन है कि एकके बलिदानका ही बड़ा नतीजा निकल आये। मगर परिणामका लालच ही बुरा माना जाना चाहिये। यहाँ मैंने सिर्फ़ सत्याग्रहकी शक्यता ही बताई है। परिणामको कोई लालच न समझे।

मेरे ख़यालसे सभी युगोंमें, और ख़ासकर इस युगमें तो हरएक स्त्री-पुरुषको अपनी रक्षा करनेकी शिक्षा लेनी ही चाहिये। पश्चिमी देशोंमें लोग शस्त्रों द्वारा अपनी रक्षा करते हैं। वहाँ हरएक विभागमें नौजवानोंको अपना अमुक वक़्त सरकारके मातहत हथियारोंकी तालीम लेने और उनका उपयोग करनेमें देना पड़ता है। सत्याग्रहकी तालीम जवान, बूढ़े, स्त्री और पुरुष सब पर लागू होती है। उसके लिए किसीको मजबूर करनेकी ज़रूरत नहीं होती। इस तालीममें मन मुख्य अंग है, शरीर नहीं। मनको मजबूर करके किसीको तालीम दी गई हो, सो कहीं जाना नहीं गया। यह जुदी बात है कि मन पर वातावरणका असर पड़ता है।

इस परसे देखा जा सकता है कि दुकानदार बनिये, मिलके मज़दूर, हल चलानेवाले किसान और क़लम चलानेवाले मुन्शी, थोड़में, सभीको अपनी रक्षा करने लायक़ सत्याग्रहकी तालीम लेना अपना धर्म समझना चाहिये।

सत्याग्रह शस्त्राग्रहसे हमेशा श्रेष्ठ है। यह चीज़ कहकर नहीं बताई जाती, करके ही बताई जा सकती है। यह बलवानका हथियार है, भूषण है; बलहीनका हरगिज़ नहीं। यहाँ मन और आत्माके बलको लेना चाहिये, शरीरके बलको नहीं। यह इसकी ख़ूबी है, दोष नहीं।

इसकी मर्यादा भी समझ लेनी चाहिये। झूठके लिए सत्याग्रहका उपयोग कभी काम नहीं देगा।

ऐसे बलिदानी सत्याग्रहियोंकी टुकड़ी हरएक गाँवमें और हरएक मुहल्लेमें हो, और इस टुकड़ीमें वे ही लोग हों, जिन्हें सब जानते हैं, कोई अनजान न हों। यह शस्त्राग्रहीकी रीतिसे बिलकुल उलटी रीति है। सरकारकी भरतीमें तो जाने और अनजाने सभी खप जाते हैं। सत्याग्रहकी भरतीमें सत्य और अहिंसाका पालन करनेवाले ही खप सकते हैं, इसलिए जिन्हें सब जानते हों, उन्हींको इसमें रहना चाहिये।

पूना, ६-३-'४६

('हरिजनबन्धु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्नकी तंगी : कुछ और सुझाव

(१) दक्षिण भारतसे एक मित्र लिखते हैं कि मद्रास सरकारकी नीतिसे न तो माल पैदा करनेवालोंको फ़ायदा पहुँचता है, न खरीदारोंको, क्योंकि दोनोंको नुक़सानमें रखकर दलाल बे हिसाब मुनाफ़ा कमाते हैं। ज़िलेका कलेक्टर थोक मालके व्यापारियोंकी नियुक्ति करता है और ये व्यापारी अपने एजण्ट मुक़र्रर करते हैं। मसलन्, एक एजण्ट क गाँवसे रु० ५–९–१० फ़ी मन (मद्रासके ३२ माप) के हिसाबसे धान खरीदता है। इस धानको वह चार मील दूर थोकबन्द मालके व्यापारीके गोदाम पर ले जाता है। फिर यही धान जिस गाँवमें पैदा हुआ था, वहाँ वापस भेजा जाता है और तीन आना पाँच पाई फ़ी मद्रासी मापकी दरसे बेचा जाता है। इस तरह लागत क़ीमत और बिक्रीकी क़ीमतमें फ़ी मन एक रुपया साढ़े तीन आनेका फ़र्क़ रहता है, यानी लागत पर २१·७ फ़ी सदी ज़्यादा। मालकी ढुलाईका खर्च कम करनेके बाद यह सारी रक़म दलालके जेबमें जाती है। इस फ़र्क़के कारण ही लोग गल्लेका संग्रह करते हैं और इससे चोर बाज़ारोंके निर्माणमें मदद मिलती है। किसान अपने मालको फुटकर बिक्रीकी क़ीमतसे कम क़ीमतमें आसानीसे बेच सकता है और फिर भी वह, दलाल उसे जो कुछ देता है, उससे ज़्यादा ही पा सकता है। गाहक भी राशनकी दुकानके मुक़ाबले किसानसे सीधा सस्ते दामों माल खरीद सकता है।

इसमें कोई शक नहीं कि जब खरीदा हुआ धान चावलकी शक्लमें बेचा जाता है, तो दलालको और भी ज़्यादा मुनाफ़ा होता है। हर हालतमें, कोई वजह नहीं दीखती कि लोगोंको धान ही क्यों न दिया जाय, जिसे वे अपने हाथों कूटकर चावल बना सकें। इससे उनको जो शारीरिक और आर्थिक लाभ होगा, उसके अलावा उन्हें अपने ढोरोंके लिए भूसी भी मिल सकेगी। अतएव ये मित्र नीचे लिखे उपाय सुझाते हैं :

अ. गाँवोंके गोदामोंमें धान इकट्ठा करके रक्खा जाय। गाँवकी अपनी ज़रूरतोंके लिए काफ़ी धान जमा कर लेनेके बाद बचे हुए धानको सीधा, जहाँ उसकी ज़रूरत हो, भेजा जा सकता है।

आ. राशन धानके रूपमें तक़सीम किया जाय।

इ. धानका वितरण लागत क़ीमत पर किया जाय और उसे प्राप्त करने व बाँटनेका खर्च सरकार अपनी तरफ़से दे।

ई. खेतोंमें मज़दूरी करनेवाले या दूसरी कड़ी मेहनत करनेवाले मज़दूरोंको आजसे दुगना राशन दिया जाय।

(२) बंगालके एक मित्र सुझाते हैं कि जूटकी फ़सल इतनी कम कर दी जाय कि उससे सिर्फ़ मुक़ामी ज़रूरत ही पूरी हो सके। जूटकी खेतीमें उपजाऊ ज़मीनका बहुत बड़ा हिस्सा लगा हुआ है। अब उसका उपयोग अन्न-सामग्री पैदा करनेमें किया जाना चाहिये।

(३) एक तीसरे मित्र लिखते हैं कि कुछ देशी रियासतोंमें बहुत ज़्यादा गल्ला इकट्ठा करके रक्खा गया है। उनसे कहा जाय कि वे अपनी मुक़ामी ज़रूरतोंको पूरा करनेके बाद इस मामलेमें अंग्रेज़ी हिन्दुस्तानसे सहयोग करें और अपना ज़ायद गल्ला उन जगहोंमें भेजें, जहाँ उसकी ज़रूरत है। जहाँ कहीं भी गल्ला इकट्ठा करके रक्खा गया हो, वहाँ वह सड़कर नष्ट न हो जाय, या मुनाफ़ाखोरीका ज़रिया न बने, इसकी कड़ी निगरानी रक्खी जानी चाहिये।

(४) खेतीके औज़ारोंके मामलेमें ग़रीब किसानोंको हर तरहकी मदद दी जानी चाहिये। सरकारका यह फ़र्ज़ है कि वह इन औज़ारोंमें सुधार करे और किसानोंको सस्ते दामों दे।

(५) एक पंजाबी मित्र लिखते हैं कि कण्ट्रोल ग़रीबोंको मदद मिलनेके बजाय क़ीमतोंके बढ़ने और काले बाज़ारोंके पैदा होनेमें मदद मिल रही है। वे लिखते हैं कि पंजाबके बाज़ारोंमें आज चना १८ रुपया फ़ी मनके हिसाबसे बिक रहा है, और उसका यह सौदा भी साफ़-पाक तरीक़ेसे नहीं हो रहा। अगर कण्ट्रोल उठा लिया जाय, तो दर कम हो जाय। पंजाबमें ढेरों गेहूँ काला पड़ रहा है और आटेमें मिलावटके होते हुए भी वह १३ या १४ रु० फ़ी मनके हिसाबसे बमुश्किल मिलता है।

(६) कई सज्जनोंने लिखा है कि आमोंकी अगली फ़सलसे पूरा फ़ायदा उठाया जाना चाहिये, क्योंकि इस बार आम ख़ूब बौराये हैं और अच्छी फ़सल आनेकी उम्मीद है। इन्सानोंके लिए आममें काफ़ी पोषक तत्त्व रहते हैं।

(७) मूँगफली, सरसों और दूसरे तेलहनकी खलीको आसानीसे मनुष्यकी उच्च पोषक ख़ूराकमें तब्दील किया जा सकता है। इसे रोटी बनानेके काममें भी ला सकते हैं और अगर यह गेहूँके आटेमें बराबरीसे मिला दी जाय, तो उसकी चपातियाँ भी बन सकती हैं। अगर घासलेट बाहरसे ज़्यादा मँगाया जाय, तो ग़रीबोंके लिए तेलहन ज़्यादा मिकदारमें खानेके काम आ सकता है।

(८) चूँकि अन्नका सवाल राजनीति और दलबन्दीसे परेका सवाल है, इसलिए केन्द्रमें लोगोंके माने हुए प्रतिनिधियोंकी एक खास अन्न समिति होनी चाहिये। मुमकिन है कि इसकी वजहसे घूसखोरी वग़ैरा बुराइयोंसे छुटकारा पानेमें बड़ी मदद मिले।

(९) ख़ुशहाल लोगोंमें ज़्यादातर लोग ऐसे हैं, जो बहुत ज़्यादा खाते हैं। उन्हें इस बातकी तालीम दे कर यह समझाना चाहिये कि तन्दुरुस्ती और ताक़तका दार-मदार ज़्यादा खानेपर नहीं है। बल्कि असलमें बात बिलकुल उलटी है।

(१०) सोयाबीनके इस्तेमाल पर भी इस बिना पर ज़ोर दिया गया है कि उसमें प्रोटीन, चर्बी और कार्बोहाइड्रेट पाये जाते हैं। एक हिस्सा सोयाबीन और तीन हिस्से गेहूँ मिलकर पूरी पोषक ख़ूराक बन जाती है। अगर इसे रोज़के राशनमें बढ़ाया जा सके, तो गेहूँकी मिक़दार घटाकर नौ औंस की जा सकती है। लेखकका आग्रह है कि बाहरसे सोयाबीन मँगाये जायँ और यहाँ भी उनकी खेतीके लिए बढ़ावा दिया जाय।

(११) अकालकी हालत जीवनके सभी क्षेत्रोंमें देहातियोंको सहयोगका मूल्य सिखानेके लिए एक सुनहला मौक़ा देती है। लेकिन यह काम उन्हीं लोगों द्वारा किया जाना चाहिये, जो सचमुच गाँववालोंसे मुहब्बत करते हैं और उनमें घुलमिलकर, उनके बनकर, यह देखते हैं कि हर काम ईमानदारीके साथ किया जा रहा है।

(१२) एक जानकार मित्र लिखते हैं :

"अन्न-संकटके सिलसिलेमें मैं कुछ नौजवान फ़ौजी अफ़सरोंसे बातचीत करता रहा हूँ। वे अपने बसभर सब-कुछ करनेको तैयार और उत्सुक हैं। ज़रूरत इस बातकी है कि उन्हें काश्तकारीकी कुछ बातें थोड़े समयमें सिखा दी जायँ और इस बातकी ठीक-ठीक हिदायत दे दी जाय कि उन्हें क्या-क्या करना है। फ़ौजी इंजीनियरोंकी इन टुकड़ियोंके साथ कुछ कृषि-विशारदोंकी नियुक्ति करना ज़रूरी होगा। उनके पास ट्रैक्टरों, जीपों और बुल-डोज़रोंके रूपमें काफ़ी साधन-सामग्री मौजूद है, लेकिन उनसे यह उम्मीद नहीं की जानी चाहिये कि वे हल भी तैयार करें। उनको हल वग़ैरा चीज़ें दी जानी चाहियें। फ़ौजके लिए यह ज़रूरी है कि उसे विशेषज्ञों या माहिरोंकी रहनुमाई मिले। लेकिन बदक़िस्मतीसे केन्द्रके सूत्रधार बहुत ही कमज़ोर हैं और दूरन्देशी तो उन्हें छू भी नहीं गई है। ख़ुशीकी बात है कि वाइसरायने ख़ुद मामलेको अपने हाथमें ले लिया है, मगर केन्द्रकी जिस कार्यकारिणीके ज़रिये इस महान् समस्याका हल होनेवाला है, वह अभी तक संगठित नहीं की गई है। गणितकी भाषामें सारी समस्याको इस तरह पेश किया जा सकता है:

"सालमें हमारे यहाँ कुल ६ करोड़ टन गल्ला पैदा होता है, और उसमेंसे १ करोड़ ८० लाख टन बाज़ारमें बिकनेको आता है। सरकारने ६० लाख टन गल्लेकी कमीका अन्दाज़ किया है। साल भरमें जितना गल्ला बाज़ारमें आता है, उसका यह एक तिहाई हिस्सा होता है। सिर्फ़ ढुलाईके खयालसे भी यह बहुत बड़ा ज़खीरा है। अगर यह देखा जाय कि जिन खास हलक़ोंमें फ़ौरन ही मदद पहुँचनी चाहिये, उनमें सूबे बम्बईका दक्षिणी भाग, और मैसूर-त्रावणकोर सहित समूचे मद्रासका इलाक़ा शामिल है, तो समस्या बहुत ही विकट बन जाती है। मुमकिन है कि विदेशोंसे तीस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या चालीस लाख टन गल्ला देशमें आये; लेकिन पश्चिमी और दक्षिण-पूर्वी किनारों परके अपने बन्दरगाहों पर आनेवाले इस गल्लेके एक चौथाई भागकी भी मुनासिब व्यवस्था करना हमारे लिए बिलकुल नामुमकिन हो जायगा। क्योंकि न तो कहीं कोठारों या गोदामोंका इन्तज़ाम किया गया है और न बन्दरगाहों या रेलोंपर इतनी सहूलियत है कि आनेवाले मालको जहाँका तहाँ पहुँचाया जा सके। इस बातका बड़ा खतरा है कि एक तरफ़ तो लोग भूखों मरते रहें और दूसरी तरफ़ बन्दरगाहोंमें गल्ला सड़ता रहे या जहाज़ों में लदा पड़ा रहे, और सो भी महज़ इसलिए कि इस सारे सवाल पर तफ़सीलके साथ सोचा ही नहीं गया है। एक पूरी लदी हुई मालगाड़ीमें पचास डब्बे होते हैं, और एक बारमें एक गाड़ी १,००० टनसे ज्यादा बोझ नहीं ले जाती। ऐसी एक मालगाड़ीको भरनेके लिए ३से ५ दिनका समय लगता है, बशर्ते कि उसके लिए ज़रूरी साइडिंग और मज़दूर सुलभ हों। मालगाड़ी खाली करने और उसके एक जगहसे दूसरी जगह जाने-आनेमें जो वक़्त लगेगा, उसे भी इसमें शामिल किया जाय, तो सहज ही आपको समयकी तंगीका अन्दाज़ हो जायगा। अगर बाहरसे हमें ३० लाख टन गल्ला मिले, तो उसकी ढुलाईके लिए ३,००० स्पेशल मालगाड़ियोंकी ज़रूरत रहेगी; इनमेंसे कम-से-कम आधीकी ज़रूरत तो शुरूके १५० दिनोंमें पड़ेगी, यानी रोज़की १० गाड़ियाँ लगेंगी;— अच्छी-से अच्छी परिस्थितिमें भी यह एक बिलकुल असंभव चीज़ है। समझमें नहीं आता कि पश्चिमी तटके बन्दरगाहोंकी अपनी मर्यादाओंके रहते और दक्षिण भारतमें चलनेवाली रेलवे लाइनोंके साधनोंको देखते हुए यह सारा काम कैसे हो सकेगा? रेलों और सड़कोंकी राह मालकी ढुलाईके जितने भी साधन आज रेलवालों, आम लोगों और फ़ौजवालोंके पास मौजूद हैं, उनसे कहीं ज्यादाकी हमें ज़रूरत पड़ेगी। बदक़िस्मतीसे इस चीज़को इन हक़ीक़तोंके साथ सरकारवालोंने न तो यहाँ सोचा है, न केन्द्र ही में। कभी-कभी तो मुझे डर लगता है कि सरकारको उस आनेवाले खतरेकी अहमियतका खयाल कराना बिलकुल नामुमकिन है, जो मुल्कके सामने न सिर्फ़ इस साल मुँह बाये खड़ा है, बल्कि आनेवाले सालमें भी जिसका खतरा बना रहनेवाला है; क्योंकि हमारी मौजूदा बस्तीके लिए हमको तुरतमें ७० लाख टन ज्यादा गल्ला उगानेकी ज़रूरत है, और सन् १९५३में हमें ४५ करोड़की अपनी आबादीके लिये १ करोड़ ४० लाख टन ज़ायद गल्लेकी ज़रूरत होगी। इसलिए हम विदेशवालोंकी उदारताकी उम्मीद पर जी नहीं सकते। भविष्यमें उनकी ओरसे बराबर मदद मिलती रहे, तो भी हम उस मददकी आशा पर निभ नहीं सकते।

"जैसा कि गांधीजीने कहा है, इसका एक ही रामबाण इलाज है, और वह है, स्वावलम्बन। इस स्वावलम्बन या स्वयं-सहायताका मतलब यह है कि अपनी पैदावारको बढ़ानेके लिए हम ठोस उपायोंसे काम लें, यातायातके साधनोंकी गतिमें वृद्धि करें और माल गोदामोंका पूरा-पक्का इन्तज़ाम करें। गोदामोंमें ग़लत तरीक़ेसे माल भरने और कीड़े वग़ैरा लगनेसे जो भयंकर नुक़सानी होती है, वह कोशिश करनेसे बहुत-कुछ कम की जा सकती है — की जानी चाहिये। मगर इसमें दिक़्क़त यह है कि सारा सरकारी अमला एक लीक पर चलनेवाला बन गया है। यही वजह है कि ख़ुद वाइसराय भी कोशिश करके उसे जगानेमें कामयाब नहीं हो सकते। इसके लिए ज़रूरत इस बातकी है कि सार्वजनिक संस्थाओं और सरकारी कल-पुर्ज़ोंके बीच ज्यादा-से-ज्यादा सहयोग बढ़ाकर पूरे संगठनकी एक तफ़सील तैयार कराई जाय। इसलिए मैं ज़रूर यह उम्मीद करता हूँ कि केन्द्रमें जल्दी ही कुछ फेरफार होंगे, और कम-से-कम खाद्य विभागमें तो ज़रूर ही होंगे, वरना इसमें शक नहीं कि हमारे सामने बहुत ही विकट समय आनेवाला है। अगर सारी योजनाको अमलमें लानेके लिए ज़िम्मेदार कर्मचारी समय रहते न जागे (और, उनके जागनेके कोई लक्षण नज़र नहीं आ रहे हैं), तो बाहरसे आनेवाली मदद हमारी पूरी-पूरी नालायक़ीका भण्डाफोड़ कर सकती है।

('हरिजन' से)

पूना, १०-३-'४६

अमृतकुँवर

गांधीजीके अख़बारी बयान

१

अपना ता० २१-२-'४६को वाइसरायके निजी मंत्रीको लिखा नीचेका पत्र और उसके जवाबमें आया वाइसरायके निजी मंत्रीका ता० २६-२-'४६का पत्र वाइसराय महोदयकी सम्मतिसे गांधीजीने अख़बारोंमें छपनेके लिए भेजा है:

"अन्न-संकटका सामना करनेके लिए कुछ मित्रोंने मेरे पास नीचे लिखे कुछ सुझाव और भेजे हैं:

"हिन्दुस्तानकी फ़ौजको रचनात्मक काम करनेका यह नायाब मौक़ा दिया जाना चाहिये। फ़ौजवालोंको एक जगहसे दूसरी जगह आसानीसे भेजा जा सकता है। इसलिए उन्हें उन तमाम जगहोंमें भेजा जाना चाहिये, जहाँ कुएँ खुदवानेकी सख्त ज़रूरत हो।

"अतिरिक्त या ज़ायद अन्नके सिलसिलेमें मछलियोंका उपयोग सुझाया गया है। हिन्दुस्तानके समुद्री किनारों पर सब तरफ़ मछलियाँ बहुतायतसे पाई जाती हैं। लड़ाई खत्म हो चुकी है; हमारे पास छोटे और मझोले क़दके बेशुमार ऐसे जहाज़ हैं, जो पिछले पाँच सालोंसे हमारे किनारों पर निगरानी और चौकीदारीके काममें लाये जाते थे। भारत सरकारका नौसेना-विभाग इन जहाज़ोंके लिए नई भरतीका इन्तज़ाम कर सकता है, और इसमें उसे सरकारके मत्स्य-विभागकी पूरी मदद मिल सकती है। अगर लड़ाईके ज़मानेमें सब कुछ और हर काई चीज़ की जा सकती है, तो शान्तिके समयमें भी वैसा ही उद्योग क्यों न किया जाय? आज भी मामूली तौर पर आम लोग बहुत बड़ी तादादमें सूखी मछलियाँ खाते हैं — अलबत्ता, तभी कि जब वे मिलती हैं या लोग उन्हें खरीद पाते हैं।

"जितने भी सार्वजनिक बाग़ या बाग़ीचे हैं, उन सबमें फ़ौरन ही क़ानूनन् साग-सब्ज़ीकी खेती शुरू करवा देनी चाहिये। इस कामके लिए भी फ़ौजियोंके दस्ते जहाँ-तहाँ भेजे जा सकते हैं। जिन लोगोंको अपनी ज़मीन या बाग़ीचेमें खेती करवानेके लिए ज्यादा मज़दूरोंकी ज़रूरत हो, उन्हें भी इस ज़रियेसे खुली या मुफ़्त इमदाद मिलनी चाहिये।

"अन्नका बँटवारा सहयोग समितियोंके या ऐसी ही दूसरी संस्थाओंके ज़रिये किया जाना चाहिये।

"विलायतमें या समुद्र पारके दूसरे देशोंमें दोस्तों या रिश्तेदारोंको खाने-पीनेकी चीज़ोंके जो पार्सल भेजे जाते हैं वे क़तई बन्द किये जाने चाहिये, और साथ ही मूँगफली, तेल और खली वग़ैराकी निकासी भी बंद होनी चाहिये।

"फ़ौजके क़ब्ज़ेमें जितनी अन्न-सामग्री आज मौजूद है, सो सब तुरत ही आम रिआयाके लिए सुलभ कर दी जानी चाहिये और फ़ौजियों व नागरिकोंके बीच कोई भेदभाव न बरता जाना चाहिये। इस सिलसिलेमें मैं वाइसराय महोदयका ध्यान ता० ११ फरवरी, '४६की 'अमृत बाज़ार पत्रिका'में छपे ए० पी०के नीचे लिखे समाचारकी तरफ़ खींचता हूँ:

ढाका, फरवरी ८

माल्रूम हुआ है कि सड़े हुए आटेका बहुत बड़ा ज़खीरा पिछले कुछ दिनोंसे नारायणगंजके पास शीतलाक्षा नदीमें डुबोकर नष्ट किया जा रहा है।

"नाउम्मीदीके ख़िलाफ़ और अधिक अन्न उगानेके हक़में शुरू किया गया आन्दोलन तब तक बेकार ही होगा, जब तक घूसख़ोरीको, जो अभूतपूर्व पैमाने पर काम कर रही है, बन्द नहीं किया जाता और ईमानदारी और व्यवहारकी सचाई, क्या सरकारी हल्क़ोंमें और क्या आम जनतामें, पूरी तरह स्थापित नहीं हो जाती।"

* * *

"अन्न-संकटका मुक़ाबला करनेके लिए भेजे गये सुझावोंवाले ता० २१ फरवरीके आपके पत्रके लिए धन्यवाद! वाइसराय महोदयको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने आपका पत्र दिखाया है, और वे उसके लिए आपके एहसानमन्द हैं । वाइसराय महोदय आपके उन प्रस्तावोंकी छानबीन करवायेंगे, जिनकी छानबीन अब तक नहीं हो पाई है ।

२. "अभी एक या दो दिन पहले ही वाइसराय महोदयने कमाण्डर-इन-चीफ़को यह सुझाया था कि भारत सरकारकी नौसेनाके लोग मछली पकड़नेके काममें मदद कर सकते हैं । हालकी घटनाओंके कारण इसमें कुछ दिक़्क़तें पेश आ सकती हैं, मगर इस बीच वाइसराय महोदयने कनाडा और न्यूफ़ाउण्डलैण्डसे सूखी हुई मछलियाँ मँगानेकी सम्भावनाके बारेमें पूछताछ शुरू करवा दी है और इस कामके लिए उपयोगी जहाज़ और साधन-सामग्री प्राप्त करनेके बारेमें भी पुछवाया है, ताकि नये ढंग पर मछलियोंके उद्योगको बढ़ानेका काम शुरू किया जा सके । फ़ौजके लोग तो इस वक़्त भी 'ज़्यादा गल्ला पैदा करने'के काममें काफ़ी मदद कर रहे हैं और कुएँ खोदने व ज़मीनको समतल बनानेके लिए ज़रूरी मशीनें वग़ैरा भी फ़ौजकी तरफ़से तक़सीम की जा रही हैं ।

३. "दिल्लीमें 'सेण्ट्रल विस्टा' नामक शाही मैदानका बहुत बड़ा हिस्सा जोता जायगा और बँगलोंके बाग़ीचोंका उपयोग बड़े पैमाने पर साग-तरकारी उगानेके लिए किया जायगा । दोस्तों या रिश्तेदारोंको हिन्दुस्तानसे बाहर भेजे जानेवाले खाद्य पदार्थोंके पार्सलोंको बन्द करनेका हुक्म जारी किया जा चुका है और मूँगफली, खली वग़ैरा चीज़ोंकी निकासीके सवालकी ताकीदके साथ जाँच-पड़ताल शुरू की जा रही है ।

४. "यह तो मानी हुई बात है कि घूसखोरी और बेईमानी, समुचित खाद्य-व्यवस्थाके घोर शत्रु हैं । इस बुराईको मिटाना एक बहुत ही मुश्किल काम है । कण्ट्रोलकी तफ़सीली व्यवस्था तो खासकर सूबेकी सरकारोंके हाथमें है और मुमकिन है कि नई वज़ारतें इस दिशामें कामयाबी हासिल कर सकें ।"

पूना, ६–३–'४६

२

जनरल अवारीकी ज़िन्दगीको, जो खतरेमें मालूम होती है, बचानेके काममें मेरी मदद चाहनेवाले पत्र और तार मेरे पास बराबर आ रहे हैं । मैं जनरल अवारीको जानता हूँ । वह एक प्रीतिपात्र कार्यकर्ता हैं । लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि अक्सर वह अनुचित रीतिसे ज़िद पकड़ जाते हैं । इस बार भी ऐसा ही हो रहा है । आदमी कितना ही लोकप्रिय और बड़ा क्यों न हो, अगर वह किसी अनुचित बात पर अड़ जाता है और उस अनौचित्यके बचावमें उपवास करता है, तो उसके मित्रों (जिनमें मैं भी अपनेको शामिल समझता हूँ), साथी-सहयोगियों और रिश्तेदारोंका फ़र्ज़ है कि वे उसे मरने दें, बनिस्बत इसके कि उसे ज़िन्दा रखनेके लिए एक अनुचित कार्यकी विजय हो । शुद्ध-से-शुद्ध साधन भी शुद्ध नहीं रह जाते, जब उनका उपयोग किसी अशुद्ध हेतुके लिए किया जाता है । मैं फिर कहता हूँ कि जनरल अवारीका हेतु अनुचित और अशुद्ध है । मुमकिन है कि उनके इस कहनेमें सचाई हो कि कांग्रेसके सेण्ट्रल पार्लमेण्टरी बोर्डने एक बहुत बड़ा अन्याय कर डाला है । लेकिन इस अन्यायको बदल कौन सकता है ? जैसा कि जनरल अवारी मुझसे कहते हैं, सरदार पटेल तो ऐसा नहीं कर सकते । सरदार होते हुए भी आखिर वह एक व्यक्ति ही हैं । उन्होंने बोर्डका फ़ैसला सुनाया है । कोई न्यायाधीश अपने फ़ैसले पर फिरसे ग़ौर नहीं कर सकता । सरदारका अब उससे कोई ताल्लुक़ नहीं । सेण्ट्रल बोर्ड अपने फ़ैसले पर न तो फिरसे ग़ौर कर सकता है, न उसे करना चाहिये । वह इसका अधिकारी नहीं । सुव्यवस्थित प्रजातंत्रके अन्तर्गत कोई संस्था स्वच्छन्दतापूर्वक काम नहीं कर सकती । जनरल अवारी और उनके दोस्तोंको हक़ है कि वे कार्यकारिणीसे इसके ख़िलाफ़ अपील करें, या इस पर उसका फ़ैसला लें; उसके बाद वे ए० आई० सी० सी० के पास और अखीरमें कांग्रेसके पास भी जा सकते हैं । मुमकिन है कि जनरल अवारीको यह तरीक़ा बहुत लम्बा मालूम पड़े । अगर, जैसा कि वह मुझे विश्वास दिलाते हैं, उनका झगड़ा किसी व्यक्ति या व्यक्तियोंके लिए नहीं, बल्कि एक उसूलके लिए है, तो उन्हें यह लम्बा न लगना चाहिये । उसूलके बचावमें तो वक़्त हमेशा ही बचाव करनेवालोंके हक़में रहता है । अगर कांग्रेसका खुला अधिवेशन, जो न्यायकी रक्षा करनेवाली सबसे बड़ी पंचायत है, जनरल अवारीके ख़िलाफ़ फ़ैसला दे, तो उन्हें उसे मानना होगा । कांग्रेस ही हमारी पंचायत है । राजाकी तरह वह कभी कोई ग़लती नहीं कर सकती । एक अचूक कर्त्तव्यका पालन करनेके लिए इस ख़यालको सामने रखना ज़रूरी और उचित माना गया है । मगर दरअसल बात यह है कि मानवीसंस्थाओंके निर्णय कभी-कभी हर जगह ग़लत पाये गये हैं । इस मामलेमें भी ऐसा हो सकता है । तभी, उससे पहले नहीं, जनरल अवारीको उसूलन् यह हक़ होगा, बशर्ते कि वे उस पर अमल करना चाहें, कि लोकमतको सक्रिय बनानेके लिए वे आमरण अनशन करें । वैसे, व्यवहारमें यह चीज़ हास्यापद ही होगी । क्योंकि इस कार्रवाईके पीछेका उसूल भी नामका ही उसूल होगा । प्रजातंत्रमें शुद्ध आदमी भी अनजाने ग़लत फ़ैसले दे सकते हैं । इसका इलाज यह है कि लोगोंमें ज़्यादा और शुद्ध शिक्षाका प्रचार किया जाय, उनमें ज़्यादा जागृति पैदा की जाय और इस तरहके जाग्रत वातावरणमेंसे बड़ी तादादमें ऐसे सार्वजनिक कार्यकर्त्ता तैयार हो जायँ जिनका एकमात्र कर्त्तव्य यह हो कि वे इस तरह बोलें, लिखें और काम करें, जो आमरिआयाके लिए अच्छो नमूनेदार चीज़ बन जाय ।

मुझे उम्मीद है कि जनरल अवारीके मित्र अब मेरी इस बातको समझ जायँगे कि जो लोग ग़लत तरीक़ेसे उनका और उनके उपवासका समर्थन कर रहे हैं और इस तरह उन्हें बढ़ावा दे रहे हैं, वे ही जनरल अवारीकी मौतको नज़दीक लायेंगे; वे नहीं, जो एक ग़लती करनेवाले दोस्तकी ज़िन्दगीको बचानेके लिए भी न्यायके सुप्रतिष्ठित नियमोंसे विचलित नहीं होते । मैं कहता हूँ, न्यायकी जीत होने दीजिये, फिर चाहे सारी दुनियाको बिलखना ही क्यों न पड़े ।

पूना, ७–३–'४६
('हरिजन'से)

हिन्दू और मुसलमान चाय वग़ैरा

स्टेशनों पर हिन्दू चाय और मुसलमान चाय वग़ैरा चीज़ें अलग-अलग बिकती हैं । बाज़ दफ़ा खानेकी जगह भी अलग रहती है । कई बार हरिजनोंको जगह ही नहीं मिलती । यह सब हमारी दुर्दशाकी निशानी है और अंग्रेज़ी सल्तनत पर धब्बा है । सल्तनत धर्मके मामलोंमें दखल न दे, यह मैं समझ सकता हूँ । लेकिन स्टेशन पर अलग-अलग धर्मियोंके लिए अलग-अलग चाय, पानी वग़ैराका इन्तज़ाम रखना तो अलगपन पर मुहर लगाने-जैसा हुआ । रेलवे और रेलवे-स्टेशन तो लोगोंके ऐब दूर करने, उनमें एकता फैलाने, समाजमें सभ्यताके साथ बरतने और सफ़ाई वग़ैरा कामोंको सिखानेके सुन्दर साधन बन सकते हैं । उसके बदले वहाँ लापरवाही बरती जाती है और रेलगाड़ी बुरी आदतोंको मज़बूत करनेका साधन बन जाती है । पहले और दूसरे दर्जेमें सफ़र करनेवालोंको मौजमज़ा करनेकी आदतमें इज़ाफ़ा करना सिखाया जाता है । तीसरे दर्जेके मुसाफ़िरों पर रेलवे निर्भर है मगर उनको सुविधा तो क्या, कष्ट ही रहता है । तिस पर भी जो हिन्दू, मुसलमान वग़ैराके बीच छूतछातका भेद रखा जाता है, तो रेलके अधिकारी अयोग्यताकी हद तक पहुँच जाते हैं । अगर कोई मुसाफ़िर भेदभाव रखना चाहे, तो वह भले भूख-प्यासको बरदाश्त करे, रेलवालोंसे भेदभावको टिकानेके प्रबन्धकी कोई आशा न रक्खे । दूसरी बात है कि मांसाहारी और शाकाहारी लोगोंके लिए उनके अनुकूल खाना मिलनेका प्रबन्ध होना चाहिये । वह प्रबन्ध तो आज भी है ही ।

पूना, ७–३–'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी

Reg. No. B 4448

हरिजन-सेवक

दो आना

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क ७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २४ मार्च, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

विषय-सूची

विषय		लेखक	पृष्ठ
हरिजनोंके लिये क्यों ?	...	गांधीजी	४९
रामनाम रामबाण	...	गांधीजी	४९
दक्षिण अफ्रीकाके प्रतिनिधि-मण्डलका निवेदन	...		५०
गांधीजीका अखबारी बयान	...		५१
दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी	...	गांधीजी	५२
गांधी-मन्दिर ?	...	गांधीजी	५२
क्या दशांश पद्धति काम देगी ?	...	गांधीजी	५३
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	५३
वर्किंग कमेटीके ठहराव	...		५४
आज़ाद हिन्द फ़ौजमें क़ौमी एकता और छूत-छातकी ग़ैरमौजूदगी	...	गांधीजी	५५
टिप्पणियाँ :			
चरखासंघके कार्यकर्ताओंके लिए प्रतिज्ञा	...	नरहरि परीख	५१
अविचार	...	मो० क० गांधी	५६
सच हो तो भयंकर	...	मो० क० गांधी	५६
पूनामें कोढ़की समस्या	...	टी० एन० जगदीशन्	५६

हरिजनोंके लिए क्यों ?

स०— हरिजनों पर सरकारकी खास कृपा रहती है। उनकी पढ़ाई-लिखाई, व्यवसाय और तरक़्क़ीके लिए एक बड़े पैमाने पर उन्हें खास सहूलियतें दी जाती हैं। फिर आप क्यों उनकी तरफ़से हमारी मदद माँगते हैं ? सवर्ण हिन्दुओंमें भी तो उतने ही, बल्कि उनसे भी ज़्यादा ग़रीब लोग हैं। आप उनकी बेहतरीके लिए क्यों नहीं काम करते ?

ज०— यह एक अजीब सवाल है। इसमें ताज्जुबकी कोई बात नहीं कि सरकार हरिजनों पर कृपा करती है। कारण कुछ भी हो, अगर इस कृपासे वाक़ई उनका कोई फ़ायदा होता है, तो इस चीज़के लिए दुःख नहीं होना चाहिये। सरकारकी सारी कृपायें ऐसी नहीं होतीं। मुझे लगता है कि इसमें सवर्ण कहे जानेवाले हिन्दुओंसे उन्हें अलग कर देना ही सरकारका हेतु है। सरकारका यह हेतु सिद्ध होता है, क्योंकि सवर्ण हिन्दू उसे इसका मौक़ा देते हैं। अगर सवर्ण हिन्दू ख़ुद दुराचार न करते, तो अवर्ण और सवर्णका यह भेद मुमकिन ही न होता। हालाँकि कांग्रेस इतने सालोंसे बराबर हरिजनोंके हक़ोंके लिए लड़ती आ रही है, फिर भी क्या सवर्ण हिन्दू जनताने अपने आचार-व्यवहारमें कोई सुधार किया है ? अगर यह मानें कि काफ़ी सुधार हुआ है, तो भी इस सवालका जवाब तो 'नहीं' ही रहेगा। विदेशी हुकूमतको खत्म करनेकी दृष्टिसे कांग्रेसका प्रभाव बहुत ज़्यादा है, लेकिन सामाजिक मामलोंमें उसका प्रभाव बहुत कम है। इसलिए विदेशी हुकूमतके साथ अपवित्र स्पर्द्धामें न पड़कर सुधारकोंके लिए ज़रूरी है कि जब तक छुआछूतका यह भूत पूरी तरहसे दूर न जाये, वे हरिजनोंके प्रति अपने कर्त्तव्यका पालन करते रहें। जहाँ तक सवर्ण ग़रीबोंका सवाल है, उनकी देखभाल करनेवाले काफ़ी लोग हैं। कुछ लोग तो उनके लिए इतना तक करते हैं कि उनके हाथ-पैर भी न हिलें और उन्हें सब कुछ मिल जाय !

बंबई, १६-३-'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन' से)

रामनाम रामबाण

यह देखकर कि क़ुदरती इलाजोंमें मैंने रामनामको रोग मिटानेवाला माना है और इस सम्बन्धमें कुछ लिखा भी है, वैद्यराज श्री गणेशशास्त्री जोशी मुझसे कहते हैं कि इसके सम्बन्धका और इससे मिलता-जुलता साहित्य आयुर्वेदमें ठीक-ठीक पाया जाता है। रोगको मिटानेमें क़ुदरती इलाजका अपना बड़ा स्थान है और उसमें भी रामनाम विशेष है। यह मानना चाहिये कि जिन दिनों चरक, वाग्भट वग़ैराने लिखा था, उन दिनों ईश्वरको रामनामके रूपमें पहचाननेकी रूढ़ि पड़ी नहीं थी। यह विष्णुके नामकी महिमा थी। मैंने तो बचपनसे रामनामके ज़रिये ही ईश्वरको भजा है। लेकिन मैं जानता हूँ कि ईश्वरको ॐके नामसे भजो या संस्कृत, प्राकृतसे लेकर इस देशकी या दूसरे देशकी किसी भी भाषाके नामसे उसको जपो, परिणाम एक ही होता है। ईश्वरको नामकी ज़रूरत नहीं। **वह और उसका क़ायदा दोनों एक ही हैं।** इसलिए ईश्वरी नियमोंका पालन ही ईश्वरका जप है। अतएव केवल तात्त्विक दृष्टिसे देखें, तो जो ईश्वरकी नीतिके साथ तदाकार हो गया है, उसे जपकी ज़रूरत नहीं। अथवा जिसके लिए जप या नामका उच्चारण साँस-उसाँसकी तरह स्वाभाविक हो गया है, वह ईश्वरमय बन चुका है, यानी ईश्वरकी नीतिको वह सहज ही पहचान लेता है और सहज भावसे उसका पालन करता है। जो इस तरह बरतता है, उसके लिए दूसरी दवाकी ज़रूरत क्या ?

ऐसा होने पर भी जो दवाओंकी दवा है, यानी राजा दवा है, उसीको हम कम-से-कम पहचानते हैं। जो पहचानते हैं, वे उसे भजते नहीं, और जो भजते हैं, वे सिर्फ़ ज़बानसे भजते हैं, दिलसे नहीं। इस कारण वे तोतेके स्वभावकी नक़ल भर करते हैं, अपने स्वभावका अनुसरण नहीं। इसलिए वे सब ईश्वरको 'सर्वरोगहारी'के रूपमें नहीं पहचानते।

पहचानें भी कैसे ? यह दवा न तो वैद्य उन्हें देते हैं, न हक़ीम, और न डॉक्टर। ख़ुद वैद्यों, हकीमों और डॉक्टरोंको भी इस पर आस्था नहीं। यदि वे बीमारोंको घर बैठे गंगा-सी यह दवा दें, तो उनका धन्धा कैसे चले ? इसलिए उनकी दृष्टिमें तो उनकी पुड़िया और शीशी ही रामबाण दवा है। इस दवासे उनका पेट भरता है और रोगीको हाथोंहाथ फल भी देखनेको मिलता है। "फलाँ-फलाँने मुझको चूरन दिया और मैं अच्छा हो गया," कुछ लोग ऐसा कहनेवाले निकल आते हैं और वैद्यका व्यापार चल पड़ता है।

वैद्यों और डॉक्टरोंके रामनाम रटनेकी सलाह देनेसे रोगीका दलिद्दर दूर नहीं होता। जब वैद्य ख़ुद उसके चमत्कारको जानता है, तभी रोगीको भी उसके चमत्कारका पता चल सकता है। रामनाम पोथीका बैंगन नहीं, वह तो अनुभवकी प्रसादी है। जिसने उसका अनुभव प्राप्त किया है, वही यह दवा दे सकता है, दूसरा नहीं।

वैद्यराजने मुझे चार मंत्र लिखकर दिये हैं। उनमें चरक ऋषिवाला मंत्र सीधा और सरल है। उसका अर्थ यों है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चराचरके स्वामी विष्णुके हज़ार नामोंमेंसे एकका भी जप करनेसे सब रोग शान्त होते हैं।

विष्णुं सहस्रमूर्धानं चराचर पतिं विभुम्।
स्तुवन्नाम सहस्रेण ज्वरान् सर्वान् व्यपोहति ॥

पूना, १०-३-'४६ — चरक चिकित्सा, अ० ३ –श्लोक ३११

मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजनबंधु'से)

दक्षिण अफ्रीकाके प्रतिनिधिमण्डलका निवेदन

दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों के प्रतिनिधिमण्डल ने वाइसराय महोदयको जो निवेदन पेश किया है, उसके कुछ हिस्से नीचे दिये जाते हैं। एच० एच० आगाखान इस प्रतिनिधिमण्डल के अगुआ थे।

* * *

"३. अगर दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन सरकारके मौजूदा इरादे पर अमल किया गया, तो जिस घटिया दरजेके खिलाफ़ हम सन् १८९३से अधिक निश्चित रूपसे लड़ते आ रहे हैं, वह हमें प्राप्त हो जायगा। १८९३में नेटालमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंसे एक क़ौमके नाते उनके मताधिकारको छीन लेनेकी कोशिश की गई थी। उस वक़्त इस नीतको हमने नेटालमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंके लिए ही नहीं, बल्कि अपनी मातृभूमिके लिए भी लांछनरूप माना था। उन दिनों दक्षिण अफ्रीकामें कोई संयुक्त सरकार नहीं थी, और सब केप स्टेटमें हिन्दुस्तानियोंसे सम्बन्ध रखनेवाला कोई खास सवाल भी लगभग नहीं था। ऑरेंज फ्री स्टेटने वहां रहनेवाले मुट्ठीभर हिन्दुस्तानी व्यापारियोंको अपने मुल्कसे निकाल दिया था और उसे अपनी इस संपूर्ण एशिया-विरोधी नीति पर गर्व था। ट्रान्सवालमें उन दिनों इने-गिने हिन्दुस्तानी व्यापारी, फेरीवाले और दूसरे कुछ लोग थे। 'लोकेशन' सिस्टिम, यानी हिन्दुस्तानियोंको यूरोपियनोंकी बस्तीसे अलग दूसरी जगहमें रखनेकी नीतिका —जो बादमें 'सेग्रीगेशन'के नामसे मशहूर हुई—जन्म वहीं हुआ था। नेटालके गोरोंने अपनी गरज़से अपने ईख और चायके बगीचोंके लिए जान बूझ कर गिरमिटके तरीक़ेसे हिन्दुस्तानियोंको अपने यहां बुलाया था। उनके बाद वहां हिन्दुस्तानी व्यापारी और दूसरे लोग पहुँचे, जिसकी वजहसे आज दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंकी बस्ती मिश्र प्रकारकी बस्ती है।

"४. यह सोचा जा सकता था कि यूनियन सरकारकी स्थापनाके कारण दक्षिण अफ्रीकामें बसनेवाली सभी जातियोंका यानी अफ्रीकाकी बण्टू जातिका, यूरोपियनोंका और एशियावालोंका (खासकर हिन्दुस्तानियोंका) सम्मिलन हो जायगा। यह सम्मिलन दुनियाके लिए कितना अच्छा उदाहरण बन जाता! लेकिन ऐसा न हो सका। इसके विपरीत, वह यूनियन सरकार अफ्रीकनों और एशियावालोंकी विरोधी बन गई। यूनियन सरकारके कार्यकालमें अफ्रीकावालों और एशियावालोंके विरोधकी उसकी नीति साल दरसाल निश्चित रूपसे आगे बढ़ती गई है। और इस नीतिके खिलाफ़ वहांके प्रवासी हिन्दुस्तानियों और उनके वारिसोंका कड़ा विरोध भी बढ़ता रहा है। इसके साथ नत्थी किये गये परिशिष्ट 'अ'को देखनेसे यह चीज़ साफ़-साफ़ समझमें आ जायगी।

"५. आपसे हमारा यह निवेदन है कि आप इस सवालको इसी एक दृष्टिसे देखें। फील्ड मार्शल स्मट्सने जिस क़ानूनका ज़िक्र किया है, और जिसकी वजहसे इस डेलिगेशनको दक्षिण अफ्रीकासे यहां तावड़तोड़ आना पड़ा है, व जिसका खतरा वहांके हिन्दुस्तानियोंके सिर पर मँडरा रहा है, वह एक ज़बरदस्त क़दम है। और, एशियावासियोंको हमेशाके लिए गिरी हुई हालतमें रखनेकी जो नीति अब तक बरती गई है, उसकी दिशामें यह शायद सबसे बड़ा क़दम होगा। इससे जीवनके सभी क्षेत्रोंमें असमानता और हीनताको फैलानेका काम शुरू होता है। इस तरह अलहदगीके लिए अलग-अलग हलके क़ायम कर दिये गये हैं और क़ानूनके ज़ोरसे दूसरी क़ौमोंको जबरन अलग रखनेके लिए यूरोपियनोंने ऐसा एक हलका अपने लिए महफ़ूज़ रखा है। ईश्वरने तो मनुष्यको 'एक ही महान् मानव-परिवार'का सदस्य बनाया है। दक्षिण अफ्रीकाकी गोरी जातियां इस मानव-परिवारको रंगके हिसाबसे तीन अलग-अलग हिस्सोंमें बाँट डालना चाहती हैं।

"६. ज़मीन सम्बन्धी जिस क़ानूनके बननेका अंदेशा है वह ठीक-ठीक खराब है, लेकिन मताधिकार सम्बन्धी जो क़ानून बनाया जानेवाला है वह तो उससे भी ज़्यादा खराब है। यह क़ानून मताधिकारका मखौल-सा है और हमको दिये जानेवाले हलके दरजेकी कड़ुवी याददाश्तके समान है। यह दरजा इतना ज़्यादा हलका है कि हम अपनमेंसे किसी एकको अपना प्रतिनिधि चुनने लायक़ भी नहीं माने जायँगे।

"७. हम ठेठ दक्षिण अफ्रीकासे यहां महज़ इसलिए नहीं आये हैं कि वहां हमको व्यक्तिके या सम्पत्ति के अधिकारोंकी रक्षा करनेका हक़ दिया जाय, गोकि ये दोनों हक़ हमें प्यारे हैं। हम तो आपको और अपनी मातृभूमिके लोगोंको यह कहनेके लिए आये हैं कि आप और वे बराबरीके दरजेके लिए लड़ी जानेवाली हमारी इस लड़ाईको समझें और इस काममें आपसे व उनसे जितनी बन पड़े उतनी मदद हमें दें। यह लड़ाई जितनी हमारी उतनी ही हिन्दुस्तानियोंकी भी है। दक्षिण अफ्रीकामें जो कुछ किया जा रहा है उससे अंग्रेज़ोंकी और ख़ुद फील्ड मार्शलकी बड़ी-बड़ी घोषणाओं पर पानी फिरता है।

"८. हमें यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई है कि हिन्दुस्तानके चुने हुए प्रतिनिधियोंको सत्ता सौंपकर अंग्रेज़ कुछ ही समयमें हिन्दुस्तानसे हट जानेवाले हैं। तो फिर हम पूछते हैं कि क्या यह आपका दोहरा कर्तव्य नहीं है कि आप समानताके पक्षमें अपनी नीतिका ऐलान करके उस पर निश्चित रूपसे भरसक अमल करें?

* * *

"१०. इसलिए हम आपसे निवेदन करते हैं कि आप 'नेटाल इंडियन ज्युडिशियल कमीशन'के शब्दोंमें दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंके सम्बन्धके सभी मामलोंको हल करनेके लिए दोनों सरकारोंके बीच एक गोलमेज़-परिषद् बुलानेकी गरज़से अपने प्रभावका उपयोग करें। लेकिन अगर बदक़िस्मतीसे इस सम्बन्धकी आपकी कोशिशें बेकार साबित हों, तो हम आपसे निवेदन करते हैं कि आप इसके साथ नत्थी किये गये ठहरावके मुताबिक़ दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन सरकारके यहांसे हिन्दुस्तानके हाई-कमिश्नरको वापस बुला लें और उसके खिलाफ़ आर्थिक व राजनीतिक प्रतिबन्धोंका उपयोग करें। हम जानते हैं कि इसकी वजहसे दक्षिण अफ्रीकाको बहुत ही थोड़ा नुक़सान होगा और हम यह भी जानते हैं कि इसके जवाबमें की जानेवाली कार्रवाईसे हमको मुसीबतोंका सामना करना पड़ेगा। लेकिन प्रतिबन्धोंके प्रयोगके नैतिक प्रभावकी तुलनामें हमारी इन मुसीबतोंकी कोई बिसात न होगी।"

परिशिष्ट 'अ'

सन् १८९३के पहले नेटालमें हिन्दुस्तानियोंको यूरोपियनोंके बराबर ही पार्लमेण्टरी और म्युनिसिपल मामलोंमें मत देनेका अधिकार प्राप्त था। सन् १८९३में पहली बार उनका पार्लमेण्टरी मताधिकार छीना गया और उसमें अपवाद सिर्फ़ उन्हीं लोगोंका रखा गया, जिनके नाम पहलेसे मतदाताओंकी सूचीमें दर्ज थे। लेकिन उस वक़्त हिन्दुस्तानियोंके विरोध पर ध्यान दिया गया और लन्दनवालोंने मताधिकारके उस क़ानूनको नामंज़ूर कर दिया।

सन् १८९६में हिन्दुस्तानियोंको सफलताके साथ इस ज़ाहिर बिना पर पार्लमेण्टरी मताधिकारसे वंचित किया गया कि हिन्दुस्तानमें उनको यह अधिकार प्राप्त नहीं था। सन् १९४२में उनको म्युनिसिपल मताधिकारसे महरूम कर दिया गया। इसका नतीजा यह हुआ कि केन्द्रीय, प्रान्तीय या म्युनिसिपल शासन-व्यवस्था पर उनका कोई प्रभाव नहीं रह गया। इसके कारण डरबनमें और दूसरी जगहोंमें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी बस्तियोंकी वहांके स्थानीय अधिकारियों द्वारा घोर उपेक्षा की गई है।

हिन्दुस्तानियोंके लिए अलग मदरसे चलाये जाते हैं और कुछ जगहोंमें हिन्दुस्तानियों और अफ्रीकनोंके लिए अलग अस्पताल भी खोले गये हैं। नेटालके युनिवर्सिटी कॉलेजमें किसी हिन्दुस्तानीको भरती नहीं किया जाता। रेलगाड़ियोंमें आम तौर पर हिन्दुस्तानके लोग ग़ैर-यूरोपियनोंके साथ सिर्फ़ उन्हीं खास डब्बोंमें बैठ सकते हैं, जो उनके लिए सुरक्षित रखे जाते हैं। और सरकारी दफ़्तरोंमें, मसलन्, डाक और तारघरोंमें और रेलवेके टिकटघरोंमें ग़ैर-यूरोपियनोंके लिए अलग जगहें रखी गई हैं। यहां तक कि न्यायकी अदालतोंमें भी यही भेदभाव बरता जाता है।

हिन्दुस्तानियोंको चपरासी वग़ैराकी हलकी नौकरियोंके अलावा सरकारी और म्युनिसिपल संस्थाओंमें किसी तरहकी कोई नौकरी नहीं दी जाती। अलबत्ता, सिर्फ़ हिन्दुस्तानियोंके लिए खोले गये मदरसोंमें हिन्दुस्तानी शिक्षक रखे जाते हैं और कहीं-कहीं अदालतोंमें दुभाषियोंके तौर पर हिन्दुस्तानियोंको काम दिया जाता है।

नेटालमें अभी-अभी तक हिन्दुस्तानियोंको जो थोड़ी सहूलियतें प्राप्त थीं, उनमें एक यह थी कि वे वहांके शहरी और देहाती हलकोंमें अपनी जायदादके तौर पर ज़मीनें खरीद सकते थे और उन पर आबाद हो सकते थे। लेकिन सन् १९४३के 'पेगिंग एक्ट'ने उनके इस अधिकारको भी बहुत ही सीमित बना दिया है। फील्ड मार्शल स्मट्सने पार्लमेण्टमें हाल ही यह घोषणा की है कि नेटाल और ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोंके सम्बन्धमें वे कुछ नये क़ायदे बनवानेवाले हैं।

(अ) इस नये क़ानूनके मुताबिक़, जो ३१ मार्च, १९४६को खतम होनेवाले 'पेगिंग एक्ट'की जगह लेगा, कुछ खास हलकोंको छोड़कर नेटालके हिन्दुस्तानियोंको नई जायदादें खरीदने या वहां जाकर बसनेकी मुमानियत हो जायगी।

(आ) 'पेगिंग एक्ट'का असर और उसका दायरा सिर्फ़ डरबन शहर तक ही सीमित था और वह यूरोपियनों और हिन्दुस्तानियोंके बीच होनेवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचल सम्पत्तिके व्यवहारको ही रोकता था, जब कि यह नया क़ानून नेटालके शहरी और देहाती हलकों सहित समूचे सूबे पर लागू होगा और इसके अनुसार न सिर्फ़ यूरोपियनों और हिन्दुस्तानियोंके बीच ऐसे सब व्यवहार बन्द हो जायँगे, बल्कि मौजूदा 'पेगिंग एक्ट'से आगे बढ़कर यह क़ानून ऐसे हर व्यवहारको ग़ैरक़ानूनी बनाता है, जो एक तरफ़ हिन्दुस्तानी और दूसरी तरफ़ ग़ैर-हिन्दुस्तानीके बीच, यानी यूरोपियन, अफ्रीकन, बण्टू, चीनी, मलायी और दूसरी ग़ैर-हिन्दुस्तानी जातियोंके बीच होगा।

(इ) इस नये क़ानूनके अनुसार ट्रान्सवालमें हिन्दुस्तानियोंके लिए शहरों, कस्बों और गाँवोंमें रहने और व्यापार करनेके लिए कुछ हलके अलग कर दिये जायँगे। इसका नतीजा यह होगा कि हिन्दुस्तानियोंको अपना व्यापार-धन्धा उनके लिए निश्चित किये गये इन हलकोंके अन्दर ही, पूरी तरह सीमित नहीं, तो कम-से-कम नियंत्रित तो करना ही होगा। इस तरह व्यापारके केन्द्रोंसे कुछ दूर हटा दिये जानेके कारण और देशकी आबादीके उन तमाम हिस्सोंसे उनके सम्पर्कके टूट जानेके कारण, जिनके साथ वे अब तक व्यापार-धन्धा करते आये थे, हिन्दुस्तानी व्यापारियोंको तबाहीका सामना करना पड़ेगा।

इसके अलावा ट्रान्सवालमें व्यापार-धन्धेके परवानेका क़ानून हिन्दुस्तानियोंके लिऐ बहुत ही सख़्तीके साथ बरता जाता है। यानी, होता यह है कि परवाना देनेवाले बोर्डोंको इस बातका पूरा अधिकार है कि वे बिना कोई कारण बताये हिन्दुस्तानियोंको परवाना देनेसे इनकार कर दें। परवानोंकी आपसकी अदला-बदलीके मामलेमें भी यही क़ानून लागू होता है।

इसी तरह नेटालमें परवानेके क़ानूनका हिन्दुस्तानियोंके खिलाफ़ सख़्तीके साथ अमल किया जाता है और इस सबकी तहमें काले-गोरेका भेद ही काम करता है।

(ई) नेटाल और ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियोंको यूनियनकी धारासभामें बण्टुओं और दक्षिण अफ्रीकाके दूसरे मूल निवासियोंकी तरह 'जातिगत' अधिकार पर प्रतिनिधित्व दिया जायगा। १५० से अधिक सदस्योंवाली धारासभामें हिन्दुस्तानियोंका प्रतिनिधित्व ३ ऐसे यूरोपियन सदस्य करेंगे, जिनका चुनाव दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियों द्वारा किया जायगा।

अगर ये तजवीज़ें पास होकर क़ानून बन जाती हैं, तो इनकी वजहसे यूनियन सरकार और भारत सरकारके बीच सन् १९२७में जो 'केपटाउन समझौता' हुआ था, वह टूट जायगा और समय-समय पर दिये गये वचनों और आश्वासनोंका भंग होगा।

नोट—नेटाल और ट्रान्सवालमें जिन क़ानूनी विषमताओंका हिन्दुस्तानियोंको सामना करना पड़ता है, उनमेंसे कुछ ही का ज़िक्र यहाँ इस परिशिष्टमें किया गया है, क्योंकि हमारी विषमताओं, शिकायतों और दिक़्क़तोंका किसी भी हालतमें यह पूरा-पूरा बयान नहीं है। जीवनके अलग-अलग क्षेत्रोंमें यूरोपियनोंके व्यवहार द्वारा जिन दूसरी विषमताओंका हमें सामना करना पड़ता है, वे यद्यपि असह्य हैं, तो भी यहाँ जान-बूझकर उनका ज़िक्र टाला गया है।

चरखासंघके कार्यकर्त्ताओंके लिए प्रतिज्ञा

चरखासंघके कार्यकर्त्ताओंके लिए कुछ प्रतिज्ञा तो होनी ही चाहिये। यह प्रतिज्ञा व्यवहार्य और जीवनकी राह स्पष्ट करनेवाली होनी चाहिये। मैं नीचे लिखी प्रतिज्ञा सुझाता हूँ:

१. सत्य और अहिंसाके सिद्धान्तोंको मैं श्रद्धापूर्वक स्वीकार करता हूँ और इन सिद्धान्तों और तरीक़ोंको अपने जीवन और व्यवहारमें अमलमें लानेके लिए मैं प्रयत्नशील रहूँगा।

२. मैं मानता हूँ कि खादी अहिंसाका प्रतीक है और इसलिए खादी-कार्यको स्वावलंबन और सच्ची शिक्षाका साधन बनाकर मैं अपनी प्रवृत्ति चलाऊँगा।

३. वस्त्रस्वावलंबी बननेके लिए शारीरिक विवशताकी अवस्थाको छोड़कर मैं हर मास कम-से-कम तैयार पूनीसे ७॥ गुंडी या संयुक्त कताईकी ५ गुंडी सूत कातूँगा।

४. मैं अस्पृश्यताको पापरूप मानता हूँ और हरिजनोंके साथ पूर्ण समानताका व्यवहार करूँगा।

५. मैं अपने हृदयमें जातीय पक्षपातका भाव नहीं रखता और भिन्न-भिन्न जातियोंमें सद्भावपूर्ण मित्रता बढ़ानेका प्रयत्न हर हमेशा करता रहूँगा।

६. मैं हिन्दुस्तानी भाषाका कामचलाऊ ज्ञान शीघ्र ही प्राप्त कर लूँगा।

७. मैं सब प्रकारके रचनात्मक कामोंमें दिलचस्पी लूँगा और उन्हें अपने जीवन और व्यवहारमें अमलमें लानेकी कोशिश करूँगा।

('खादीजगत्'से)　　　　नरहरि परीख

गांधीजीका अख़बारी बयान

गांधीजीने अखबारोंको नीचे लिखा बयान दिया है:

श्री श्रीरामुलु एक अज्ञात और ग़रीब कांग्रेसी हैं। वह मानवजातिके सेवक हैं और नेल्लोरमें काम करते हैं। हरिजनोंके हितके लिए वह अकेले वहाँ मेहनत करते रहे हैं। एक ज़माना था, जब नेल्लोरमें छूत-छातको मिटाने और दूसरे समाजी काम करनेके बारेमें बड़ी-बड़ी उम्मीदें रक्खी जाती थीं। नेल्लोरके नज़दीक एक आश्रम क़ायम किया गया था, लेकिन कुछ ऐसे कारण पैदा हो गये, जिनसे वहाँके कामोंको धक्का पहुँचा। देशभक्त श्री कोण्डावेंकटप्पैया बहुत बूढ़े हो जाने पर भी शुरूसे इन कामोंके प्रेरक रहे हैं और आज भी हैं। ऐसी इस जगहमें श्री श्रीरामुलु छूत-छातको जड़मूलसे उखाड़नेके लिए चुपचाप और लगकर काम करते रहे हैं। उनकी यह कोशिश रही है कि नेल्लोरका एक मंदिर हरिजनोंके लिए खुल जाय। कुछ दिन हुए, उन्होंने मुझसे पूछा था कि अगर दूसरी सब कोशिशें बेकार हो जायँ, तो क्या मन्दिर खुलवानेके हक़में लोगोंकी भावनाको जगानेके लिए वे उपवास कर सकते हैं? मैंने उनको अपनी मंज़ूरी भेज दी थी। अब नेल्लोरके लोगोंमें इस सवालको लेकर एक खलबली मच गई है। लेकिन कुछ लोगोंने मुझसे कहा है कि मैं श्री श्रीरामुलुको सलाह दूँ कि वे अपने उपवासको मुल्तवी करें, जिससे वे क़ानूनी दिक़्क़तें दूर की जा सकें, जिनके बारेमें मैं कुछ भी नहीं जानता। मैं उनको ऐसी कोई सलाह नहीं दे सका हूँ। चूँकि मैं चाहता हूँ कि मानवजातिका एक शान्त सेवक आम जनताकी जानकारी और उसके समर्थनके अभावमें मर न जाय, मैं समूचे हिन्दुस्तानके नहीं, तो कम-से-कम दक्षिण भारतके पत्रकारोंसे यह प्रार्थना करता हूँ कि वे इस मामलेमें दिलचस्पी लें और ख़ुद इसकी सचाईका पता लगायें और अगर मेरी बात हक़ीक़तमें सच निकले, तो खुले तौर पर उसको ज़ाहिर करके उन लोगोंको शरमिन्दा करें, जो इसका विरोध कर रहे हैं, और उनसे सही काम करा लें और यों एक क़ीमती ज़िन्दगीको बचा लें!

बम्बई, १६-३-'४६

*　　*　　*

[ऊपरका बयान १६ तारीखको ज़ारी किया गया था। आज श्री श्रीरामुलुका एक तार इस मतलबका मिला है कि जनताके आग्रहको मानकर उन्होंने अपना उपवास छोड़ दिया है। अगर उपवासकी समाप्तिका यह मतलब है कि जनताने बिना देर लगाये मंदिरको खुलवानेकी ज़िम्मेदारी अपने सिर ले ली है, तब तो मुझे इसकी ख़ुशी हो सकती है। प्रोफेसर रामचन्द्ररावका जो पत्र मुझे मिला है, उससे पता चलता है कि मन्दिरके खुलवानेमें सचमुचकी एक क़ानूनी दिक़्क़त मौजूद है और मंदिरके मुख्य ट्रस्टीने वादा किया है कि वह ज़रूरी क़ानूनी कार्रवाईके बाद मंदिर खोल देंगे। उम्मीद है कि मंदिरमें आनेवाली जनताकी अपनी सम्मतिसे — राज़ी-रज़ामन्दीसे — मंदिर खुल सकेगा। श्री श्रीरामुलुके उपवासके कारण जो व्यापक सहानुभूति पैदा हुई है, उसका यही एक मतलब लगाया जा सकता है।

मो० क० गांधी]

पूना, १७-३-'४६
('हरिजन'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

२४ मार्च १९४६

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी

इधर एकके बाद एक जो घटनायें घटी हैं उनकी वजहसे दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंकी नीतिका सवाल बहुत ही नाज़ुक बन गया है। उनकी उस नीतिके गर्भमें विश्व-युद्धके बीज अलक्ष्यरूपसे मौजूद हैं। ज़मीन और मताधिकारके बारेमें जो क़ानून वहाँ जल्दी ही बनाया जानेवाला है और जिसके कारण दक्षिण अफ्रीकाके प्रतिनिधिमण्डलको हिन्दुस्तान आना पड़ा है, वह ऊपर-ऊपरसे तो नेटाल और ट्रान्सवालके हिन्दुस्तानियों पर ही असर डालता नज़र आता है, लेकिन दरअसल वह सारे एशियाके लिए और छिपेरूपमें तमाम हब्शी जातियोंके लिए भी एक चुनौती ही है। अपनी आजकलकी उदात्त मनःस्थितिमें हिन्दुस्तान इस चीज़को दूसरी किसी नज़रसे देख ही नहीं सकता। पंडित जवाहरलाल नेहरूकी रग-रगमें भारतीयता भरी है, लेकिन साथ ही वे अन्तर्राष्ट्रीयतावादी भी हैं। इसलिए उन्होंने हमको हर चीज़की तरफ़ महज़ स्थानीय दृष्टिसे देखनेके बदले अन्तर्राष्ट्रीयताके प्रकाशमें देखनेका आदी बना दिया है। शारीरिक और भौतिक दृष्टिसे कमज़ोर मगर नैतिक और संख्याकी दृष्टिसे बलवान हिन्दुस्तानने बुलन्द आवाज़से यह ऐलान किया है कि उसकी आज़ादी किसी भी व्यक्ति या राष्ट्रके लिए ख़तरनाक न होगी; बल्कि दुनिया-भरमें जहाँ कहीं भी आज़ादीके लिए या दूसरे उम्दा कामोंके लिए नेक कोशिशें होती होंगी, उन सबको वह मदद पहुँचायेगा और दुनियाके तमाम शोषित लोगोंकी सहायता करेगा। इसलिए दक्षिण अफ्रीकाके यूनियन द्वारा जो क़ानून बनाया जानेवाला है, उसे हिन्दुस्तान सभी पराधीन और शोषित जातियोंके लिए अपमानजनक और चुनौती रूप समझता है।

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंका प्रतिनिधिमण्डल इस प्रस्तावित क़ानूनको हिन्दुस्तानियोंके जायदाद-सम्बन्धी अधिकारों पर ही नहीं, बल्कि स्वतंत्र मनुष्योंके नाते उनका जो दर्जा होना चाहिये, उस पर किया गया एक वार समझता है। वे दक्षिण अफ्रीकामें ज्यों-त्यों रहना भर नहीं चाहते। इस कामके लिए उन्हें अपने डेपुटेशनको इतनी दूर हिन्दुस्तानमें भेजनेकी कोई ज़रूरत नहीं थी। वे तो दक्षिण अफ्रीकामें वहाँके यूरोपियन बाशिन्दोंकी बराबरीसे रहना चाहते हैं। वे जानते हैं कि आज उनकी यह हैसियत नहीं है। लेकिन उनके लिए इस ख़राबीको यहीं रोकना ज़रूरी है और साथ ही आगेकूच करना भी। इसमें शक नहीं कि उनकी इस आगेकूचमें हिन्दुस्तान उनकी सहायता करेगा। दरअसल, दुनियाकी सभी नैतिक शक्तियाँ उनके साथ होंगी। लेकिन इस जद्दोजहदका सारा बोझ तो उन्हींको बरदाश्त करना पड़ेगा। आजकी दुनियामें सत्याग्रहकी शक्तिका उन्होंने फिरसे खोज निकाला था, और वह सत्याग्रह ही उनकी शक्तिका एकमात्र और अन्तिम स्रोत रहेगा। मगर अभी सत्याग्रहका समय नहीं आया है। हम आशा करें कि वह कभी नहीं आयेगा। इस बीच उन्हें दुनियाकी सभी नैतिक शक्तियोंको अपने हक़में इकट्ठा करनेकी कोशिश करनी होगी। उनको अपने आस-पासका सारा कूड़ा-करकट साफ़ करना होगा, उन तमाम संकुचित स्वार्थों और निजी महत्त्वाकांक्षाओंको मिटाना होगा, जो हमेशा और हर जगह सिर उठाने लगती हैं, बशर्ते कि उन पर दिन-रात सजग भावसे कड़ी निगरानी न रक्खी जाय। समुद्रमें तैरते हुए उस अभागे जहाज़की हालतका ख़याल कीजिये, जिसको रास्ता दिखानेवाली रोशनी गुल हो चुकी है। दूसरे शब्दोंमें, आदर्शके दीपस्तम्भका दीया बुझ जाय, तो लड़ाईकी नैया क्यों करकिनारे लगे?

दक्षिण अफ्रीकावालोंको इस लड़ाईके सिलसिलेमें आकस्मिक दुर्घटनाओं और उनकी वजहसे होनेवाली तकलीफ़ोंके लिए तैयार रहना चाहिये। अगर वे सचाई और दृढ़ताके साथ बुरी-से-बुरी चीज़का भी मुक़ाबला करनेको तैयार हो गये, तो आख़िर जीत उनकी ही होगी, इसमें शक नहीं।

सवाल उठता है कि दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंका क्या? अव्वल तो उन्होंने हिन्दुस्तानियोंको अपने यहाँ बुलाया। अगर उन्होंने यह सोचा था कि आनेवाले लोग हमेशा ग़ुलामोंकी तरह रहेंगे या उनके पीछे उनके स्वतंत्र देशवासी नहीं आयेंगे, तो उन्होंने जल्दी ही महसूस कर लिया होगा कि उनका यह सोचना कितना ग़लत था।

क्या सच्ची श्रेष्ठताके लिए क़ानूनोंके रूपमें बाहरी आधारोंकी ज़रूरत रहा करती है? क्या वे इस बातको नहीं समझेंगे कि अपनी रक्षामें खड़ी की गई ऐसी हर दीवाल उनको कमज़ोर बनायेगी और आखिरकार वह उन्हें नामर्द बना देगी? इतिहाससे उन्हें यह सबक़ सीखना चाहिये कि जो ताक़तवर है, वही सच्चा नहीं होता, बल्कि जो सच्चा है, वही शक्तिशाली है। फील्ड मार्शल स्मट्स एक महान् सैनिक-राजनीतिज्ञ हैं। क्या उन्हें यह नहीं सूझता कि जिस क़ानूनको वे पास कराने जा रहे हैं, उसकी तहमें छिपी नीति पर वे अड़े रहे, तो वे दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंको विनाशके गहरे गर्तमें गिरा देंगे। मैं कहूँगा कि उन्हें अपने उन साथी राष्ट्रोंकी सलाह लेनी चाहिये, जिनको विजयी बनानेके लिए उन्होंने बहुत कुछ किया है। इसमें शक नहीं कि अगर वे पश्चिमी सभ्यताको बनावटी उपायोंसे बचानेकी अपनी योजना पर अड़े रहे, तो वे इस विजयके फलोंको अपने हाथसे खो देंगे।

पूना, १८–३–'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

गांधी-मन्दिर ?

एक भाईने मुझे अख़बारकी एक कतरन भेजी है। उसमें ख़बर है कि मेरे नामका एक मन्दिर बनवाया गया है और उसमें मेरी मूर्तिकी पूजा की जाती है। इसे मैं मूर्तिपूजाका बेढंगा रूप मानता हूँ। जिसने यह मन्दिर बनवाया, उसने अपने पैसे बरबाद किये, गाँवके भोले लोगोंको ग़लत रास्ता दिखाया और मेरे जीवनका ग़लत ख़ाका खींचकर मेरा अपमान किया। इससे पूजाका अर्थ सिद्ध नहीं होता, उलटे अनर्थ होता है। अपने गुज़ारेके लिए या स्वराज्यके लिए यज्ञके रूपमें कातना ही मेरे विचारमें सच्ची चरखा-पूजा है। तोतेकी तरह गीताका पारायण करनेके बदले उसके उपदेशके अनुसार आचरण करना सच्ची गीता-पूजा है। गीतापाठ भी उसी हद तक मुनासिब माना जायगा, जिस हद तक वह गीताके उपदेशके अनुसार आचरण करनेमें मददगार हो। मनुष्यकी कमज़ोरीका नहीं, बल्कि उसके गुणोंका अनुकरण ही उसकी सच्ची पूजा है। ज़िन्दा आदमीकी मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करनेसे हम हिन्दू धर्मको पतनकी आख़िरी सीढ़ी पर पहुँचा देते हैं। मौतसे पहले किसी आदमीको पूरी तरह अच्छा नहीं कहा जा सकता, और मौतके बाद भी जिसे उस आदमीमें आरोपित गुणोंमें विश्वास होगा, वही उसे अच्छा कहेगा। सच तो यह है कि अकेला एक ईश्वर ही मनुष्यके हृदयको जानता है। इसलिए किसी ज़िन्दा या मरे हुए आदमीको पूजनेके बदले जो पूर्ण है और सत्य स्वरूप है, उस ईश्वरको पूजने और उसीका भजन करनेमें सुरक्षितता है। यहाँ यह सवाल ज़रूर उठ सकता है कि फ़ोटो रखना भी पूजाका ही एक प्रकार है या नहीं! इसके बारेमें मैं पहले लिख चुका हूँ। फ़ोटो रखनेका रिवाज भी ख़र्चीला तो है, मगर उसे निर्दोष समझकर मैं अब तक उसको बरदाश्त करता आया हूँ। अगर उसकी वजहसे मैं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रीतिसे मूर्ति-पूजाको तनिक भी बढ़ावा देता होऊँ, तो उसे भी हास्यास्पद और हानिकारक समझकर छोड़ दूँगा। मन्दिरके मालिक मूर्तिको हटाकर उस मकानमें खादीका केन्द्र खोलें, तो वह सब तरह इष्ट होगा और फ़िलहाल जो पाप वह कर रहे हैं उससे बच जायँगे। उस मकानमें ग़रीब लोग मज़दूरीके लिए धुनें और कातें। दूसरे यज्ञके लिए धुनें और कातें। सब खादी पहनने लगें। यही गीताका कर्मयोग है। जीवनमें इसका आचरण करनेसे गीताकी और मेरी सच्ची पूजा की जा सकेगी। दूसरी पूजा हानिकारक है और इसलिए छोड़ने लायक़ है। बम्बई, १५–३–'४६

('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या दशांश पद्धति काम देगी ?

श्री किशोरलाल मशरूवाला लिखते हैं :

"अखबारोंमें छपा है कि धारासभामें 'डेसिमल कॉइनेज'का बिल पेश होनेवाला है और उसके पास होनेपर छह महीनोंके अन्दर 'सेण्ट कॉइनेज' दाखिल किया जानेवाला है।

"इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पंडितोंको और बड़े-बड़े व्यापारियोंको डेसिमल-पद्धति पसन्द है। एक हदके बाद तो सभी हिसाब दशक पद्धति पर ही चलाने पड़ते हैं। लेकिन अनुभव कहता है कि देहाती लोगोंके और छोटे-छोटे व्यापारियोंके लिए चौथाई पद्धतिमें बहुत सहूलियत है। उसमें जोड़, बाक़ी और गुणामें तीनसे बड़े आँकड़ेकी जरूरत ही नहीं पड़ती, और ३ खड़ी, ३ आड़ी और फिर ३ खड़ी पाइयोंसे ६३ तकके भाग दिखाये जाते हैं। ०।।।≡।।। यानी ६३/६४ रुपया, तोला, सेर वग़ैरा। कई तरहके कोष्टकोंमें ज्यादातर इसी पद्धतिका उपयोग किया जाता है। इसका साधारण नियम यह है कि 'युनिट'के गुणकोंको दशक पद्धतिसे गिनना और उसके हिस्सोंकी गिनती चौथाई पद्धतिसे करना। इस तरह रुपयेको 'युनिट' समझकर पाव आने तक उसके हिस्से होते हैं। सेरके छटाक तक, तोलेके खसखस तक, वग़ैरा। अंग्रेज़ कारकूनोंने रुपया, चवन्नी, अधी और पैसा, इस तरहके चार खाने न करनेके खयालसे रुपया, आना और पाईका अटपटा तरीक़ा दाखिल किया और अब वे ही उसको बुरा बताते हैं।

"लेकिन इस तात्त्विक चर्चाको यहीं रहने दें, और इस बातका विचार करें कि दशांश-पद्धतिको फ़ौरन ही दाखिल करनेसे चीज़ोंको महँगा करनेमें कैसी अनुकूलता होगी।

"मुमकिन है कि ३ पैसेका कार्ड ५ सेण्टका किया जाय और ६ पैसेका लिफ़ाफ़ा १० सेण्टका। इसका मतलब यह हुआ कि बारह आनेके १६ कार्ड और डेढ़ रुपयेके १६ लिफ़ाफ़ोंके बदले १५ कार्ड और १५ लिफ़ाफ़े मिलेंगे। इसी तरह पाव आने, आध आने और आने वग़ैराके टिकटोंकी क़ीमत भी कुछ बढ़ जायगी। १२ आने पर तीन पैसेका मुनाफ़ा, यानी फ़ी सदी ६¼ का मुनाफ़ा हुआ। इसमेंसे डाक-विभाग पोस्टेजकी क़ीमतको बढ़ानेका दिखावा न करते हुए भी कितना मुनाफ़ा कर लेगा, सो सोचनेकी बात है। इसका ज्यादातर बोझ मामूली आदमियों पर ही पड़ेगा।

"यही हाल रेलगाड़ीके किरायेकी दरोंका भी होगा। सरकार आधे सेण्टका सिक्का बनानेका इरादा तो रखती है। लेकिन यह मुमकिन नहीं मालूम होता कि रेलवेमें आधे सेण्टकी गिनती के टिकट रहेंगे। हो सकता है कि एक मीलको ३ पाईके बदले फ़ी मील २ सेण्टकी दर क़ायम की जाय। इस तरह आनेके टिकटके ८ सेण्ट हो जायँगे।

"लेकिन मान लीजिये कि इसमें ३ पाईका १½ सेण्ट ही रक्खा जाय, तो भी जब-जब खरीदारके पास एक ही तरहके पूरे सिक्के न होंगे, बल्कि कुछ सेण्ट और कुछ पैसे होंगे, तब-तब उसे हमेशा पुरानी क़ीमतसे ज्यादा पैसे चुकाने पड़ जायँगे।

"मसलन् मान लीजिये कि एक आदमीको ३।। आने चुकाने हैं। इसकी नज़दीक से नज़दीक क़ीमत २२ सेण्ट होगी, जो ३।। आनेसे ज्यादा ही है। लेकिन उसके पास १० पैसे और १० सेण्ट हैं। वह चाहे तो १० पैसे और ७ सेण्ट दे या १० सेण्ट और ८ पैसे दे या दूसर किसी तरीक़ेसे चुकानेकी कोशिश करे, उसे २२ सेण्ट से ज्यादा तो चुकाने ही होंगे।

"फुटकर मालके बड़े व्यापारियोंको—(इनमें रेलवे और डाक-विभाग भी शामिल हैं)—इसकी वजहसे ग़रीब खरीदारोंके खर्चसे हरसाल बहुत बड़ी आमदनी होगी और खरीदारका अन्धा खर्च बढ़ेगा।

"इस पर यह कहा जायगा कि यह कुछ ही दिनोंकी दिक़्क़त है। कुछ दिनोंकी तो है, मगर क़रीब पाँच मालसे कम की नहीं। खुशहालीके दिनोंमें इस दिक़्क़तको निभाया जा सकता है। मगर अकालकी हालतमें और खासकर जब बेकारोंकी तादादके बढ़नेकी बहुत संभावना है, यह अनुचित मालूम होता है।

"जब सरकार कहती है कि वह देशमें प्रजातंत्र क़ायम करने और लोगोंके प्रतिनिधियोंको सत्ता सौंप देनेकी तैयारीमें है, तब जिन सुधारोंको वह अपने देशमें भी दाखिल नहीं कर सकती, उनको जाते-जाते हमारे देशमें दाखिल करनेकी यह उतावली क्यों? वक़्त आने पर जो सुधार हमें उचित मालूम होंगे, सो हम कर ही लेंगे। और वे सिर्फ़ सिक्कोंके चलनके सिलसिलेमें ही नहीं होंगे, दूसरे कोष्टकोंमें भी होंगे; और इस तरह होंगे कि सब एक-दूसरेसे मेल खा सकें। इस जल्दबाज़ीकी तहमें कोई राज़ या रहस्यमय हेतु है, ऐसा शक पैदा हुए बिना नहीं रहता।"

यह लेख विचार करने लायक़ है। इसमें साधारण लोगोंको इस पद्धतिके कारण तत्काल ही जो दिक़्क़तें होंगी उनकी कुछ मिसालें दी गई हैं। उद्यमी पाठक ऐसी दूसरी मिसालें ढूँढ़ लेंगे, तो उनको पता चलेगा कि दशांश पद्धतिकी वजहसे ग़रीबोंको होनेवाला नुक़सान बहुत बड़ा होगा। ऐसी पद्धतिके बचावमें शास्त्रीय आधार देना आसान है; लेकिन दुनियाका व्यवहार इस तरह नहीं चला करता। हिन्दुस्तान एक अभागा देश है कि जहाँ लोगोंके खर्चसे तरह-तरहके प्रयोग मनमाने ढंगसे किये जाते हैं, और लोगोंको शास्त्रके नाम पर बहुत सहना पड़ा है। क्या जाते-जाते भी हिन्दुस्तानके नसीबमें यह आखिरी भेंट बदी है? इस बिलका हेतु निर्मल होने पर भी वह त्याज्य होना चाहिए। जब लोगोंके हाथमें हुकूमत आ जायगी, तब वे सोच-समझकर दशांश-पद्धतिको सीख लेंगे। सीखनेमें नुकसान होगा, तो उसे बरदाश्त भी करेंगे। मगर धारासभाका धर्म है कि वह इस बिलको ठुकरा दे।

पूना, १७-३-'४६

('हरिजनबंधु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

सवाल-जवाब

स०—आप तो मछली खानेवालोंको मछली खिलानेकी बात लिखते हैं? क्या खानेवाला हिंसा नहीं करता? खिलानेवाला उसमें भागीदार नहीं बनता?

ज०—दोनोंमें हिंसा भरी है। भाजी खानेवाला भी हिंसा करता है। जगत् हिंसामय है। देह धारण करनेका मतलब है, हिंसामें शरीक होना। ऐसी हालतमें अहिंसाधर्मका पालन करना है। वह किस तरह किया जाय, सो मैं कई बार बता चुका हूँ। मछली खानेवालेको ज़बरदस्ती मछली खानेसे रोकनेमें बहुत ज़्यादा हिंसा है। मछली मारनेवाले, मछली खानेवाले और मछली खिलानेवाले जानते भी नहीं कि वे हिंसा करते हैं। और अगर जानते भी हैं, तो उसे लाज़िमी समझकर उसमें भाग लेते हैं। लेकिन ज़बरदस्ती करनेवाला घोर हिंसा करता है। बलात्कार अमानुषी कर्म है। जो लोग आपस-आपसमें लड़ते हैं, जो धन कमाते समय आगा-पिछा नहीं सोचते, जो दूसरोंसे बेगार लेते हैं, जो ढोरों या मवेशियों पर हदसे ज़्यादा बोझ लादते हैं, उन्हें लोहेकी या दूसरी किसी आरसे गोदते हैं, वे जानते हुए भी ऐसी हिंसा करते हैं, जो आसानीसे रोकी जा सकती है। मछली या मांस खानेवालोंको ये चीज़ें खाने देनेमें जो हिंसा है, उसे मैं हिंसा नहीं मानता। मैं उसे अपना धर्म समझता हूँ। अहिंसा परमधर्म है ही। हम उसका पूरा-पूरा पालन न कर सकें, तो भी उसके स्वरूपको समझकर हिंसासे जितना बच सकें, बचें।

स०—आप लिखते हैं कि चावलको पॉलिश न करना चाहिये। लेकिन यह बुराई तो बहुत गहरी पैठ गई है। पॉलिशवाले चावलोंको मल-मलकर धोया जाता है। पकानेपर माँडका सारा पानी, जिसमें सत्त्व होता है, बहा दिया जाता है; क्योंकि आँखोंको और जीभको खुले चावल खाना अच्छा लगता है। छात्रावासोंमें भी यही होता है। यह बुराई कैसे मिटाई जाय?

ज०—मैं इस बुराईसे अनजान नहीं। हम ग़रीब-से-ग़रीब मुल्कमें रहते हैं, फ़िर भी हम अपनी बुरी आदतों और नुक़सान पहुँचानेवाले स्वादोंको छोड़नेके लिए तैयार नहीं। हमें अपनी ही पड़ी है। दूसरे अपने होते हुए भी पराये-से मालूम होते हैं। वे मरें या जीयें, हमें उससे क्या? मरेंगे, तो अपने पापसे; जीयेंगे, तो अपने पुण्यसे! मरना-जीना हमारे हाथमें कहाँ है? हम खायें, पीयें और मौज करें, यही हमारा पुण्य है।

जहाँ धर्मका रूप इतना विकृत हो गया, वहाँ उसका एक ही इलाज है। जिसे हम सच्चा धर्म मानते हैं उसका पालन करें और आशा रक्खें कि जो सच है, वह किसी न किसी दिन प्रकट होगा ही। तब तक जिसे हम सच्चा धर्म समझें, उसका ऐलान जब मौक़ा पायें, करते रहें।

बम्बई, ११-३-'४६

('हरिजनबन्धु'से)

स०—आपने कहा है कि आज़ादी नज़दीक दिखाई दे रही है। लेकिन आपकी यह बात मेरी समझमें नहीं आ रही। आपके सामने खड़ी अनेक उलझनोंमेंसे एक पाकिस्तानकी उलझनको ही लीजिये।

ज०—आशाके सामने कोई उलझन ऐसी नहीं, जो सुलझ न सके। लेकिन यह सवाल भी क्यों पूछा जाय, जब कि हफ़्तोंमें नहीं, तो कुछ महीनोंके अन्दर ही इसके जवाबका पता चल जायगा? और इस बार तो अकेला मैं ही आशावादी नहीं हूँ। बम्बई, १२-३-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्किंग कमेटीके ठहराव

बंबईमें ता० १५ और १६ मार्च, १९४६को कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीने जो चार ठहराव पास किये थे, वे ज्योंके त्यों नीचे दिये जा रहे हैं :

१. खाद्य-स्थितिके बारेमें

१. लड़ाई और उसके बादके परिणामोंने मुल्कमें पहले ही भारी अन्नसंकट पैदा कर दिया था। तिस पर हिन्दुस्तानके कई हिस्सोंमें बारिश न होनेसे यह खतरा इतना ज्यादा बढ़ गया है कि आज देशको अन्न और वस्त्रके अकालका सामना करना पड़ रहा है। इसलिए यह निहायत जरूरी है कि इस खतरेके समय सरकार और जनताकी नीति एक ही हो। भूख ऊँच-नीच, ग़रीब-अमीर, हिन्दू-मुसलमान किसीमें भेद नहीं करती। मगर इस संकटका सच्चा बोझ तो लाजिमी तौरसे ग़रीबों पर ही पड़नेवाला है। ऐसी हालतमें वर्किंग कमेटी अपनी नीति स्पष्ट कर देना चाहती है।

२. ऐसे कठिन समयमें जनताका सबसे पहला फ़र्ज़ यह होगा कि वह हिम्मत न हारे। हरएकको अपने निजी कर्तव्यका ध्यान रखना चाहिये और अपनी पूरी-पूरी योग्यताके अनुसार उसका पालन करना चाहिये। और हर आदमीको यह विश्वास रखना चाहिये कि अगर मुल्कके सब लोग ऐसा करें, तो हिन्दुस्तान हजारों-लाखों ग़रीबोंकी जान बचा सकेगा। इसलिए गाँव और शहरके हर बाशिन्देको अपनी और अपने पड़ोसीकी हिफ़ाज़तके लिए अच्छी-से-अच्छी कोशिश करनी चाहिये।

३. हरएक आदमीको जिसके पास जमीन है, कम-से-कम समयमें जितने खाद्य पदार्थ पैदा किये जा सकें, पैदा करने चाहियें। जोती जा सकने लायक़ पड़ती जमीनको जल्दी-से-जल्दी जोत कर अन्न पैदा किया जाय और इसके लिए राज्यकी ओरसे हर तरहके सुभीते दिये जायँ। हरएक आदमीका यह फ़र्ज़ है कि पैदा हुई फ़सलसे अपनी कम-से-कम जरूरत पूरी कर लेनेके बाद जो अन्न बचे उसे वह दूसरे ज़रूरतमन्दोंके लिए मुहैया कर दे।

४. जहाँ मुमकिन हो वहाँ तिजारती फ़सलोंके बजाय अन्नकी फ़सलोंको तरजीह दी जाय।

५. जहाँ पानीकी कमी हो वहाँ लोग मामूली कुएँ या तालाब खोदें और उसके लिए राज्य और स्थानीय संस्थायें लोगोंको सब तरहकी सहूलियतें दें।

६. आज धनवानोंका यह फ़र्ज़ है कि वे सादी जिन्दगी बितायें और अपने धन और शक्तिको संकटसे राहत दिलानेवाले उत्पादक और रचनात्मक कामोंमें लगायें।

७. विदेशोंसे अन्न पानेकी हर तरह कोशिश की जानी चाहिये। मगर किसी भी हालतमें हमें बेबसी न महसूस करनी चाहिये। इसके खिलाफ़ जितना कुछ हम हिन्दुस्तानमें पैदा कर सकें, करें और अपने मौजूदा साधनोंसे आनेवाली तमाम कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए तैयार रहें। याद रहे कि बाहरसे ज़ायद अन्न आ जाने या देशमें ज्यादा अन्न पैदा कर लेनेसे ही हमारा मतलब हल नहीं हो जायगा, बशर्ते कि इस तरह मिला हुआ अनाज वक़्त रहते उन जगहोंमें पहुँच जाय जहाँ लोग भूखों मरते हों और वहाँ वह लोगोंमें ठीक-से बाँटा जाय।

८. सब तरहका अन्न किफ़ायतसे बरता जाय और ब्याह-शादीके व दूसरे उत्सवोंके मौक़ों पर उसके खर्चको टाला जाय।

९. फलोंका मुरब्बा बनाने और उन्हें सुखाने वग़ैराके तरीक़ोंको बढ़ावा दिया जाय और इन तरीक़ोंको बड़े पैमाने पर अपनाया जाय, ताकि तमाम मुहैया फलोंका पूरा उपयोग किया जा सके और उनका कोई भाग बरबाद न हो।

१०. सरकारका यह फ़र्ज़ है कि वह अपनी तमाम मौजूदा जन-शक्तिको, कल-कारखानोंके होशियार कारीगरोंको, और यांत्रिक साधनोंको जहाँ ज़रूरत हो, वहाँ अनाज पैदा करने, उसकी रक्षा करने और उसे एक जगहसे दूसरी जगह भेजनेके काममें लगा दे। सभी अनाजों, खाद्यपदार्थों, तेलहनों, खली, मूँगफली, तेल और दूसरी खाने लायक़ चीज़ोंकी निकासी कतई बन्द कर दी जाय।

११. जहाँ कहीं ज़रूरत हो, सरकार गहरे कुएँ खुदवाये या पानी पहुँचानेके दूसरे साधनोंसे काम ले। साथ ही फ़ौज वग़ैरासे छोड़े गये या अलग किये गये फ़ौजियों और आज़ाद हिन्द फ़ौजके सैनिकोंसे भी अन्नकी पैदावार बढ़ानेके काममें मदद ली जाय।

१२. कमेटीको उम्मीद है कि मुल्कमें छाई मुसीबतको दूर करनेके लिए और राशनिंग व गल्ला इकट्ठा करनेके लिए जो भी वाजिब तजवीज़ें तैयार की जायँ, उनको सफल बनानेमें जनता सब तरहकी जरूरी कुरबानी करेगी और गल्लेको ठीक तरीक़ेसे जमा करने, उसे काले बाज़ारमें ले जाने और घूसखोरीको रोकनेके काममें मदद देगी।

१३. यह साफ़ है कि जैसे इस काममें जनताको हर तरहकी मदद करनी चाहिये उसी तरह सरकारका भी यह सबसे बड़ा फ़र्ज़ है कि वह जनताकी खास जरूरतोंको समझे और पूरा करे। इस गंभीर संकटका सामना करनेके लिए जो क़दम उठाया जायगा, उसमें तब तक कामयाबी हासिल नहीं हो सकती, जब तक सत्ता जनताके हाथमें न सौंपी जाय।

१४. जहाँ तक कपड़ेका सम्बन्ध है, सरकार और जनताको चाहिये कि वे गाँववालोंको अपने गाँवोंमें अपनी ही कोशिशोंसे ज्यादासे-ज्यादा खादी पैदा करनेमें हर तरहकी मदद दें। जहाँ जरूरत हो वहाँ सरकारको कपास पैदा करनेकी सहूलियतें देनी चाहियें या कपास मुहैया करना चाहिये और खादी तैयार करनेके औजार और खादीका काम सिखानेवाले शिक्षक भी भेजने चाहियें।

१५. कांग्रेस कमेटियों और कांग्रेसजनोंको यह सलाह दी जाती है कि वे इस प्रस्तावमें सुझाई गई बातोंको असली रूप देनेमें हर तरहकी मदद करें।

२
अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिके बारेमें

अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिमें आपसकी खींचातानी बढ़ती जा रही है और उसकी वजहसे बड़ी-बड़ी ताक़तें (सरकारें) खुल्लमखुल्ला एक-दूसरी पर आक्षेप करती हैं, अपने अधिकारके औपनिवेशिक प्रदेशोंको और (फ़ौजी व तिजारती लिहाज़से) अनुकूल और फ़ायदेमन्द मुक़ामोंको अपनी हुकूमतमें रखने या नये औपनिवेशिक प्रदेशों और ऐसी दूसरी जगहोंको प्राप्त करने व अपनी कठपुतली सरकारें खड़ी करनेकी कोशिशें करती हैं। वर्किंग कमेटी इस सबको बहुत चिन्तित भावसे देखती है। इसकी वजहसे आगे फिर लड़ाई छिड़नेकी संभावना रहती है। हाल ही जो लड़ाई खत्म हुई है, उसके दरमियान की गई घोषणाओंके बावजूद लड़ाईके खत्म हो जानेके बाद भी न तो ग़ुलाम देशों पर से साम्राज्यशाही हुकूमतें खत्म हुई हैं, और न हुकूमतके लिए खेले जानेवाले राजनीतिक दावपेंचोंका अन्त हुआ है। युगों पुराना साम्राज्यवाद आज भी मौजूद है और उसके साथ साम्राज्यवादके नये-नये प्रकार पैदा हो रहे हैं। स्वतंत्र और संयुक्त राष्ट्रोंकी नई व्यवस्था क़ायम होनेके बदले अगुआ राष्ट्रोंमें आपसकी फूट पाई जाती है और दुनियाके बड़े-बड़े हिस्सोंमें आज़ादी कहीं नज़र नहीं आती। हाल ही लन्दनमें संयुक्त राष्ट्रोंकी जो परिषद् हुई थी, वह इस हक़ीक़तका चौंकानेवाला सबूत पेश कर रही थी। तेल आज भी साम्राज्यवादी हुकूमतोंके लिए प्रलोभनका विषय बना हुआ है। और खाली या सैनिक दृष्टिसे महत्त्वके केन्द्रोंको जोड़नेवाले और 'लाइफ़-लाइन' के नामसे पहचाने जानेवाले रास्तोंको बचाये रखनेके लिए और उनकी हिफ़ाज़तके बहाने औपनिवेशिक प्रदेशों पर हुकूमत क़ायम रखी जाती है या नये प्रदेशों पर हुकूमत क़ायम की जाती है। जिस नीतिकी वजहसे दो बड़े-बड़े विनाशकारी विश्व-युद्ध हो चुके हैं, वह पुरानी और निन्दनीय नीति अब भी काम कर रही है। और, मुमकिन है कि उसकी वजहसे एक और लड़ाई छिड़ जाय, जो पहली लड़ाइयोंसे कहीं बड़ी और बहुत ज्यादा विनाशकारी साबित हो।

जाहिर है कि लगातार चलते रहनेवाले कलह और युद्धके इन बीजोंमेंसे शांति और स्वतंत्रता पैदा नहीं हो सकती। सिर्फ़ ग़ुलाम देशोंकी भलाईके लिए ही नहीं, बल्कि मानवताका सर्वनाश करनेवाले जोखिममेंसे दुनियाको बचानेके लिए भी साम्राज्यवादकी नीतिका त्याग करना जरूरी है। इस तरह आज यह निहायत जरूरी हो गया है कि एशिया और अफ्रीकाके मुल्कों परसे विदेशी हुकूमतको खत्म किया जाय और ऐसे तमाम देशोंमेंसे और खासकर इण्डोनेशिया, मंचूरिया, इण्डोचाइना, ईरान और मिस्रसे विदेशी फ़ौजें हटा ली जायँ। हिन्दुस्तान आज भी एशियाकी आज़ादीकी एक समस्या बना हुआ है, और हिन्दुस्तानकी आज़ादी पर बहुतसे देशोंकी आज़ादी और संसारकी शांति निर्भर करती है।

३
दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें

हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीय महासभाकी कार्यकारिणी समितिकी यह राय है कि दक्षिण अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी विषमतायें मानवताके लिए कलंक रूप और पश्चिमी सभ्यताके लिए लांछन रूप हैं। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके प्रतिनिधि-मंडलने वाइसरायको जो निवेदन पेश किया है, उसमें कहा गया है कि ये विषमतायें एशियाई लोगोंके खिलाफ़ दिन-दिन बढ़ती जानेवाली बद-गुमानीकी और की गई घोषणाओं और दिये गये वचनोंके भंगकी एक अटूट कहानी है। एशियाईकी व्याख्या इस तरह की गई है: "जिसमें यहूदी या सीरियन जातिके किसी भी व्यक्तिका और केप मलयके नामसे पहचानी जानेवाली जाति या वर्गके किसी आदमीका समावेश न होता हो, ऐसा कोई भी तुर्क या ऐसी जाति या क़बीलेका कोई भी सदस्य जिसका वतन एशियामें हो।" जिस सभ्यताको अपनी रक्षाके लिए काले और एशियाई लोगों पर राजनीतिक और आर्थिक रुकावटें लादनेवाले क़ानून बनाने पड़ते हैं, उसके गर्भमें भावी युद्धोंके और उसके अपने सर्वनाशके बीज छिपे हैं, इसमें कोई शक नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्किंग कमेटीकी राय है कि हिन्दुस्तान और दक्षिण अफ्रीकाके बीचके व्यापारी सम्बन्धोंको तोड़ डालनेकी जो बात चल रही है, उसको इस दिशामें भारत सरकारकी ओरसे की गई बहुत मामूली कार्रवाई कहा जायगा। दुनियाकी तमाम अ-श्वेत जातियोंके खिलाफ़ बरती जानेवाली दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारकी समूची नीति पर ग़ौर करनेके लिए दोनों सरकारोंकी गोलमेज-परिषद् बुलाने तक अगर दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार अपने प्रस्तावित क़ानूनको मुल्तवी नहीं करती, तो वर्किंग कमेटी भारत सरकारसे कहेगी कि वह दक्षिण अफ्रीकासे अपने हाई कमिश्नरको फ़ौरन वापस बुला ले।

वर्किंग कमेटीको यह जानकर दुःख और आश्चर्य हुआ है कि दक्षिण अफ्रीकाके यूनियनके प्रधान फील्ड मार्शल स्मट्स प्रस्तावित एशिया-विरोधी क़ानूनको घरेलू मामला कहकर उस पर चर्चा करनेका न तो भारत-सरकारको मौक़ा देना चाहते हैं, और न दूसरे मित्रराष्ट्रोंको ही दोस्तके नाते इसमें दखल देनेका हक़दार समझते हैं। वर्किंग कमेटी यह मानती है कि आजके जमानेमें कोई भी राष्ट्र, फिर वह कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, अपने ऐसे क़ानूनके खिलाफ़, जो अमानुषिक है, या अपने यहाँ बसनेवाली जातियोंके स्वाभिमान पर चोट करनेवाला है, उठाई गई दुनियाके दूसरे राष्ट्रोंकी आवाजको सुननेसे इनकार नहीं कर सकता। कमेटी विजयी मित्रराष्ट्रोंको यह सलाह देती है कि वे दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारके इस प्रस्तावित क़ानूनकी ओर खास तवज्जह दें। अगर उन्होंने अफ्रीकामें बसनेवाले काले लोगों और एशियाई लोगोंके शोषणके लिए बनाये जानेवाले यूनियन सरकारके इस काले क़ानूनका विरोध नहीं किया, तो आजादी और प्रजातंत्रके नाम पर लड़ा गया पिछला युद्ध बेकार साबित होगा।

दक्षिण अफ्रीकासे आये हुए हिन्दुस्तानी डेलिगेशनसे वर्किंग कमेटी यह कहा चाहती है कि वह (वर्किंग कमेटी) और उसके साथ सारा हिन्दुस्तान दलबंदी और जात-पाँतके भेदोंको भूलकर इस न्यायपूर्ण युद्धमें उनके साथ है; और वह उन्हें अपने भरसक तमाम नैतिक सहायता पहुँचायगा। मगर डेलिगेशनको यह महसूस करना चाहिये कि एक जबरदस्त शक्तिके साथ लड़ी जानेवाली इस लड़ाईका बोझ उन्हींको उठाना होगा। वर्किंग कमेटीको विश्वास है कि दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी कष्ट-सहनके श्रेष्ठ नियमके अनुसार अपने और अपनी मातृभूमिके स्वाभिमानकी रक्षाके लिए बरसों पहले उन्होंने जो मिसाल पेश की थी उसके अनुरूप ही काम करेंगे।

इन आखिरी क्षणोंमें भी वर्किंग कमेटीको किसी क़दर यह उम्मीद है कि प्रस्तावित क़ानूनमें जो नीति व्यक्त हुई है और जो जंगलके उस क़ानूनकी हिमायत करती है कि जिसका बचाव नहीं किया जा सकता, उसके बदले दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार और वहाँके गोरे बाशिन्दे समझदारीसे काम लेकर उस नैतिक क़ानूनकी पुकारको सुनेंगे जिस पर मनुष्यजातिका जीवन निर्भर है।

४
हालके दंगोंके बारेमें

हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीय महासभाकी कार्यकारिणी समितिकी यह राय है कि पिछले दिनों लोगोंने बंबई, दिल्ली, कलकत्ता और दूसरी जगहोंमें जो दंगे किये, वे हर तरह नुक़सानदेह और कांग्रेसकी राहमें रोड़े अटकानेवाले थे। इन दंगोंके दरमियान लोगोंकी खानगी दूकानों, और सार्वजनिक जगहोंको जानबूझ कर जलाया गया था, लूटपाट मचाई गई थी, और खास कर अनाजकी बरबादी की गई थी, राह चलतोंको डराया-धमकाया गया था, लोगोंको कुछ खास नारे लगानेके लिए मजबूर किया गया था, यूरोपियनोंसे उनके हैट जबरदस्ती उतरवाये गये थे और दूसरे तरीक़ोंसे उन्हें सताया गया था। ये तमाम कार्रवाइयाँ साफ़ तौरसे कांग्रेस द्वारा अपनाई गई अहिंसक नीतिके खिलाफ़ थीं और इसमें शक नहीं कि राष्ट्रके गौरवको घटानेवाली थीं। लोगोंकी इस हुल्लड़बाजीकी तो हर तरह निन्दा ही की जा सकती है। मगर पिछले दिनों जो हिंसक कार्रवाइयाँ हुईं, उनको दबा देनेके लिए फ़ौजकी तरफ़से की गई कार्रवाई पर पहलेसे कोई राय न क़ायम करते हुए इस समितिका यह खयाल है, और आम तौर पर जनताकी भी यह धारणा रही है, और वह वाजिब है, कि फ़ौजी कार्रवाई जरूरतसे ज्यादा थी और जनताके दिलमें दहशत बैठानेके खयालसे ही की गई थी। यही वजह है कि फ़ौजवालोंने राह चलतों पर और अपने घरके छज्जों पर खड़े निर्दोष स्त्री-पुरुषों और बच्चों पर गोलियाँ चलाई हैं। आजकी हालतमें ऐसी कोई भी कार्रवाई लोगोंको डरपोक बनानेके बदले उनको उभाड़ती है। इसलिए वर्किंग कमेटी सरकारसे यह कहती है कि मिलिटरीने अलग-अलग जगहोंमें जो कार्रवाइयाँ की हैं उनकी जाँचके लिए एक जाँच-कमेटी बैठाई जाय। कमेटीको उम्मीद है कि यह जाँच खुले तौर पर और सार्वजनिक रीतिसे होगी और जाँच-कमेटीमें लोगोंके ऐसे प्रतिनिधियोंको लिया जायगा, जिन पर जनताका विश्वास है और जो न्यायाधीशके नाते काम करनेकी योग्यता रखते हैं। इसके साथ ही वर्किंग कमेटी आशा रखती है कि जनता कांग्रेसकी भी इसके अनुसार संयमका परिचय देगी और ब्रिटिश मंत्रि-मण्डलके प्रतिनिधियोंके साथ जनताके प्रतिनिधियोंकी परिषद्को शान्त वातावरणमें अपना काम करने देनेमें सहायक होगी।

आज़ाद हिन्द फ़ौजमें क़ौमी एकता और छूत-छातकी ग़ैरमौजूदगी

पूर्वी एशियाके आज़ाद हिन्द आन्दोलनने कई सवाल हल कर दिये। उनमें एक बड़ा और उलझा हुआ सवाल क़ौमी इत्तहादका था। गोकि इस ओर कोशिशें तो सन् १९४२में आन्दोलनके शुरूसे ही जारी हो चुकी थीं, तो भी इसने अमली सूरत तो नेताजी सुभाषचन्द्र बोसके आने पर ही अख्तियार की। छूत-छातका एक दूसरा भी सवाल वहाँ पेश था, मगर वह इतने बड़े पैमाने पर न था। पूर्वी एशियामें छूत-छातका सवाल हमारे सामने उस रूपमें कभी पेश नहीं हुआ, जिस रूपमें वह हिन्दुस्तानमें हुआ था या होता है। जब नेताजी आ गये तो किसी तरह यह बुराई भी दूर की गई, क्योंकि आज़ाद हिन्द फ़ौजकी छावनियों और दफ़्तरोंमें सभी हिन्दुस्तानियोंको बिना किसी भेदभावके आम तालीम दी जाती थी।

इन कामोंकी सिद्धिके लिए जिन तरीक़ों और ज़रियोंसे काम लिया गया था, उनकी कहानी तो बहुत लम्बी है। लेकिन कामयाबीके तीन खास कारण दिये जा सकते हैं। पहला यह कि कोई तीसरी हुकूमत वहाँ मौजूद न थी; दूसरा यह कि खुद नेताजीने इस मसलेको हल करनेकी सीधी कोशिश की थी और तीसरा यह कि नेताजीने ज़ाहिरा तौर पर इन मसलोंकी नज़र-अन्दाज़ किया था।

आम जनताको जिस चीज़में दिलचस्पी हो सकती है, वह तो यह है कि क़ौमी एकताको क़ायम करनेमें और छूत-छातको मिटानेमें जो कामयाबी हासिल हुई थी, उसकी ज़ाहिरा शकल क्या थी। इसके लिए मुझे आज़ाद हिन्द फ़ौजके लड़नेवाले और न लड़नेवाले दोनों दलोंका कुछ बयान करना होगा।

जब पूर्वी एशियासे ब्रिटिश हुकूमत हट गई, तो हिन्दुस्तानियोंके बीचके क़ौमी झगड़े भी हवा होने लगे। क़ौमी एकताका पहला दृश्य या नज़ारा सन् १९४२के जून महीनेमें बैंकॉकमें देखनेको मिला। उस वक़्त वहाँ पूर्वी एशियामें बसे हिन्दुस्तानियोंके १२० नुमाइन्दे एक कान्फरेन्सके लिए इकट्ठा हुए थे। उनमें हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई वग़ैरा सभी थे। वे एक साथ रहे, एक साथ जीमे और उन्होंने एक साथ यह तय किया कि वे हिन्दुस्तानियोंको एक सङ्गठन और एक झण्डेके नीचे इकट्ठा करेंगे।

इसके बाद १९४३की फरवरी आई और आया महात्माजीका उपवास। समूचे पूर्वी एशियामें बड़े-बड़े सम्मेलन हुए, जिनमें अलग-अलग धर्मों व मज़हबोंके और अलग-अलग जातियों और पन्थोंके हिन्दुस्तानियोंने इकट्ठा होकर महात्माजीकी रिहाईके लिए आवाज़ उठाई। गांधीजीकी दीर्घायुके लिए मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और गिरजोंमें प्रार्थनायें और दुआयें की गईं। क़ौमी एकताका वह एक ऐसा दृश्य था, जो मन को सराहनासे भर देता था और हृदयको पुलकित करता था।

फिर नेताजीका आगमन हुआ और उसके साथ समाजमें और संस्थामें इन्क़लाबी फेरफार हो गये। नेताजीने हिन्दुस्तानकी आज़ादीके लिए लड़ी जानेवाली हथियारोंकी लड़ाईके वास्ते एक-एक बच्चेको तैयार होनेकी हिदायत दी। नेताजीकी इस पुकार पर सब कोई दौड़ पड़े — हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई वग़ैरा सभी क़ौमोंके लोग आगे आये। उन्होंने अपनी इच्छासे लड़नेवालों और न लड़नेवालोंमें अपने नाम लिखाये।

इन स्वयं-सेवकोंमेंसे कुछ तो उस आज़ाद हिन्द संघमें भरती कर लिये गये, जिसकी तरफ़से आज़ाद हिन्द फ़ौज और आज़ाद हिन्द सरकार खड़ी की गई थी। दूसरे, जिनमें ज़्यादातर स्वयं-सेवक थे, फ़ौजके सिपाहियोंमें भरती हो गये। समूचे पूर्वी एशियामें संघकी अपनी शाखाओंका जाल-सा बिछ गया। और हरएक शाखामें हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई कार्यकर्त्ताओंने मिलजुलकर काम किया। जहाँ कहीं भी कार्यकर्त्ता बड़ी तादादमें रहते थे, वहाँ वे एक समूहमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते और एक जगह खाते थे, मसलन् बैंकॉक, सिंगापुर, रंगून, सैगौंव, हाँगकाँग वग़ैरामें। इन शहरोंमें इनके खाने और रहनेकी जगह एक ही होती थी। हिंदू, मुस्लिम, सिख या ईसाइयोंके लिए रहने-खानेका कोई अलग इन्तज़ाम नहीं था। सभी धर्मों और मज़हबोंके लोगोंके लिए एक ही रसोईघर होता था। हिंदू, मुसलमान, सिख और ईसाई एक साथ रहते थे, एक मेज़ पर खाना खाते थे और एक साथ काम करते थे।

यही हाल आज़ाद हिंद फ़ौजका था। हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी एक ही बराकमें रहते थे। उनमें ब्राह्मण भी थे और हरिजन भी; मौलवी भी थे और अहीर भी; एक ही बराकमें सवर्ण हिन्दुओंके साथ नामधारी अछूत भी रहते थे। अलग लङ्गर किसीके लिए थे ही नहीं। सभी सिपाही एक साथ बैठकर खाते थे। सिपाहियों और अफ़सरोंको एक-सा राशन दिया जाता था। आज़ाद हिन्द संघ और आज़ाद हिन्द फ़ौजके भोजनालयोंमें गाय और सुअरका मांस पकानेकी मनाही थी। वहाँ झटके और हलालका कोई सवाल ही नहीं उठता था।

रामसिंह रावल

नोट : ऊपरका मज़मून, कुछ बातोंको छोड़कर, जो बार-बार दोहराई गई थीं; ज्यों का त्यों छापा जा रहा है। इसमें दी गई बातें बड़े कामकी हैं। सहज ही सवाल उठता है कि अब चूँकि ये सिपाही अपने देशमें वापस आ गये हैं, क्या उनमें वैसा ही भाईचारा बना रहेगा? रहना तो चाहिये। बम्बई, १४-३-’४६

(‘अंग्रेज़ी’से) मोहनदास करमचंद गांधी

टिप्पणियाँ

अविचार

“आप जानते हैं कि इधर जनताके जोशके खिलाफ़ मिलिटरीकी गुण्डाशाही जंगली स्वरूप पकड़ती जा रही है। आम जनताके पागलपनकी तो आप निन्दा करते हैं; मगर मिलिटरीके पागलपनके बारेमें कुछ भी नहीं कहते।”

ये उद्गार एक प्रश्नकर्त्ताके हैं। मैंने इसको अविचार कहा है। प्रजाको पागल बननेका अधिकार नहीं। मिलिटरी तो .खुद ही पागलपनकी मूर्ति है। जिसने .खुद मिलिटरीकी ही निन्दा की है, वह उसके पागलपनकी निन्दा करे, तो भी उससे वह पागलपन मिटेगा नहीं। हुकूमतको सावधान करनेके लिए टीका करनेका मौक़ा आ सकता है। लेकिन सब कुछ अपनी जगह और अवसर पर ही शोभा देता है। सत्याग्रही सेनापति क्या करे? अपनी सेनाको सुधारे या सामनेवालोंको? सेनाको सुधारनेसे सामनेवालोंकी ताक़त ही निकम्मी हो जाती है। और लम्बे अरसे तक यही सिलसिला जारी रहे, तो सामनेवाले .खुद-ब-.खुद सुधर जायँ! ऊपरकी टीका मेरे सिवा दूसरों पर तो लागू होती ही नहीं, क्योंकि उन्होंने तो मिलिटरीके कामोंकी काफ़ी निन्दा की है।

अन्तमें यह भी याद रखना चाहिये कि फ़ौजके पागलपनका परदा खोलनेके लिए हमारे पास कोई सामान तैयार नहीं। वह तैयार हो रहा है। लेकिन आम .जनताके लिए ज़रूरी और बड़ी बात तो यह है कि वह अन्तर्मुख होकर अपने दोष देखे। दूसरोंके — विरोधियोंके ही दोष देखनेसे डर रहता है कि कहीं दोषद्रष्टा .खुद उस दोषका शिकार न बन जाय। कठौती कुण्डेको क्या हँसे?

बम्बई, १५-३-’४६

सच हो तो भयंकर

गुजरात-हरिजन-सेवक-संघके सहायक मंत्री श्री हेमन्तकुमार लिखते हैं कि कराड़ीको छोड़कर दूसरे किसी गाँवमें हरिजनोंके लिए न तो मंदिर खुले हैं और न सार्वजनिक कुओंका उपयोग ही वे कर सकते हैं।

अगर यह सच है तो कहना होगा कि मैं बारडोली न जा सका, सो अच्छा ही हुआ। जो गुजराती लोग हरिजनोंको अपना ही नहीं मान सकते, आज भी सार्वजनिक कुओं पर उन्हें पानी नहीं भरने देते, मंदिरोंमें उन्हें जाने नहीं देते और किसी महामारी वग़ैराके फैलने पर उसका दोष भी हरिजनोंके मत्थे मढ़कर उन्हें मारने दौड़ते हैं, वे मेरा मान-सम्मान किसलिए करेंगे? या उनके मान-सम्मानको मैं कैसे हज़म करूँगा? और उसकी क़ीमत भी क्या होगी?

मैं तो मन, वचन और कर्मसे अपनेको हरिजन मानता हूँ। इसलिए जहाँ हरिजनोंका अपमान होता हो, वहाँ मेरा भी अपमान हो, तो उसे मैं मान समझूँगा, और अगर वहाँ मेरा मान-सम्मान हो, तो उसको मैं अपना अपमान समझूँगा।

इसलिए मेरी तो यह माँग है कि सवर्ण कहलानेवाले तमाम गुजराती प्रायश्चित्त करें। वे हरिजनोंको अपना समझें। तभी मैं मानूँगा कि उन्होंने बहुत-कुछ किया है और वे स्वराज्यकी रक्षा करने लायक़ हो गये हैं। मुझे आशा है कि बारडोली तहसीलके लोग तो मेरी इस बातको ज्यादा अच्छी तरह समझ सकेंगे।

पूना, १०-३-’४६

(‘हरिजनबंधु’से) मो० क० गांधी

पूनामें कोढ़की समस्या

पूनामें कोढ़के रोगियोंका एक दल है, जो अपने बच्चों के साथ कथड़ीखाना नामकी गन्दी बस्ती में बनी टीनकी झोंपड़ियों में किरायेसे रहता है। वहाँ उनकी एक छोटी-सी बस्ती ही बस गई है। वे लोग भीख माँग कर अपनी गुज़र करते हैं। कुछ कोढ़ियोंने, जो खोण्डवाके कोढ़घरसे निकाल दिये गये थे या वहाँसे चले आये थे, एक साथ रहना शुरू कर दिया। उनके साथ कुछ दूसरे कोढ़ी भी आ मिले, जो इधर-उधरसे भटकते हुए पूना आ पहुँचे थे। आज वहाँ अलग-अलग प्रान्तोंसे आये हुए ८५ कोढ़ी एक साथ रहते हैं, जिनमें ३७ मर्द, ३१ औरतें और १७ बच्चे हैं। उनमेंसे कुछके साथ, खासकर औरतोंके साथ, बातचीत करनेसे पता चला है कि उन्हें उनके परिवारवालोंने घरसे निकाल दिया था। उनको देख कर लावारिस और पतित मानवताका एक दुःखद दृश्य आँखोंके सामने खड़ा हो जाता है। लेकिन मैंने देखा कि उनके बीच आपसका भाईचारा और एक-दूसरेको मदद करनेकी प्रबल वृत्ति मौजूद है, और मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ।

इस दलको इसकी आजकी हालतसे ज्यादा अच्छी हालतमें रखनेकी कोशिश करने पर जिन दिक़्क़तोंका सामना करना पड़ेगा, उनको मैं भलीभाँति महसूस करता हूँ। इन लोगोंको व्यवस्थित रीतिसे रखनेमें कठिनाई तो होगी ही, लेकिन उनकी बातचीतसे मालूम होता है कि अगर किसी तरह उनको मदद पहुँचाई जाय, तो वे उसको पसन्द करेंगे। मुझ पर इस बातका गहरा असर पड़ा है कि वे एक साथ हिलमिल कर रहते हैं। मुझे लगता है कि जिस हालतमें वे रह रहे हैं, उसका तकाज़ा है कि हम उनकी उपेक्षा न करें। काम जितना कठिन है, उसको पूरा करनेका हमारा आग्रह भी उतना ही दृढ़ होना चाहिये। उनकी मददका कोई ऐसा इन्तज़ाम होना चाहिये कि जिससे वे .खुद बेहतर ज़िन्दगी बिता सकें और उनके बच्चोंको बीमारी और कंगालीसे बचाया जा सके। सामाजिक सेवाके क्षेत्रमें पूना शहरकी अपनी एक महान् परम्परा रही है। रानडे, गोखले, तिलक, देवधर और दूसरे बहुतसे प्रसिद्ध समाज-सेवकोंकी सेवाभूमि होनेके कारण हिन्दुस्तानमें उसे तीर्थकी महिमा प्राप्त हो गई है। क्या ऐसी पवित्र स्मृतियोंवाले नगरसे यह आशा रखना अनुचित होगा कि वह अपने बीच इस दूषित चीज़को बढ़ने न दे और कोढ़के इन रोगियोंके लिए किसी ऐसे स्थानका प्रबन्ध कर दे, जहाँ उनको न सिर्फ़ राहत मिले, बल्कि कुछ काम भी मिले, जिससे वे कम-से-कम कुछ हद तक अपने पैरों खड़े हो सकें?

बम्बई, २-३-’४६

(‘हरिजन’से) डी० एन० जगदीशन्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूँजीपति और हड़ताल

रजि० नं. बी ४४१८

हरिजन-सेवक

दो आना
१० पृष्ठ

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क ८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ३१ मार्च, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

विषय-सूची

		पृष्ठ
क़ुदरती इलाजमें क्यों फँसा ?	... गांधीजी	५७
कांग्रेसियोंकी उदासीनता	... गांधीजी	५७
चरखेको सजीव कैसे बनाया जाय ?	... प्यारेलाल	५८
जानने लायक़ दस सुझाव	... गांधीजी	५९
पूँजीपति और हड़ताल	... गांधीजी	६०
भंगी-बस्तीमें क्यों ?	... गांधीजी	६०
एक अंग्रेज़की कठिनाई	... प्यारेलाल	६१
सवाल-जवाब	... गांधीजी	६१
अकाल और जन-संख्या	... गांधीजी	६२
गांधीजी और साम्यवाद	... प्यारेलाल	६३
सहूलियत बनाम ज़रूरत	... गांधीजी	६४
सूतका सिक्का	... गांधीजी	६५
आज़ाद हिन्द फ़ौजवालोंके लिए	... प्यारेलाल	६६
टिप्पणियाँ :		
बरबादी	... मो० क० गांधी	६५
हाथ-कताई और हाथ-बुनाई	... मो० क० गांधी	६५
अ० भा० ग्रामोद्योग-संघके समाचार	... अ० कुँ०	६६

क़ुदरती इलाजमें क्यों फँसा ?

ऐसे सवाल पूछे जा रहे हैं: क्या मेरे पास काम कम था ? क्या मैं बूढ़ा नहीं हो गया हूँ ? क्या कोई नये कामकी मुझसे आशा कर सकते हैं ? ये सब सवाल किये जाने लायक़ हैं। मेरे लिए भी सोचने लायक़ हैं। लेकिन मुझे भीतरसे एक ही जवाब मिलता है। भीतर बैठा हुआ ईश्वर कहता है : "दूसरे कुछ भी कहें, तुझे उससे क्या ? डॉ० दीनशा जैसा साथी मैंने तुझे दिया है। तुम दोनों एक-दूसरेको पहचानते हो। तुझे अपनी ताक़त पर एतबार है। बरसों क़ुदरती इलाज तेरा शौक़ रहा है। तेरे पास इतनी पूँजी है। उसे छिपा कर तू चोर बनेगा क्या ? तेरे लिए यह अच्छा नहीं होगा। ईशोपनिषद्‌का पहला मंत्र याद कर। जो तेरे पास है, उसे तू दे दे। तेरे पास तेरा है क्या ? जो तू अपना समझता था वह तेरा था नहीं, और है नहीं। सब मेरा है। यह जो तेरे पास बाक़ी है वह भी तू मेरे लोगोंको दे दे। ऐसा करनेसे तेरे दूसरे काममें हर्ज नहीं होगा। शर्त यह है कि तू सब कुछ अनासक्त हो कर करेगा। तूने १२५ वर्ष तक ज़िन्दा रहनेकी इच्छा की है। इच्छा पूरी हो या न हो, तुझे क्या ? तुझको ख़ुद ही अपना धर्म समझना है। उसका पालन किया कर और जीवन आनन्दसे चलाता जा।" ऐसी बात मेरे कानोंमें गूँज रही है। इस देहातमें आज मेरा तीसरा दिन है। मरीज़ आते रहते हैं। बढ़ते जाते हैं। वे ख़ुश रहते हैं। मैं भी उनकी सेवा करके ख़ुश रहता हूँ। यहाँके लोग साथ दे रहे हैं। मैं जानता हूँ कि अगर लोगोंके हृदयमें मैं प्रवेश कर सकूँगा, तो दर्दका नाश होगा ही। इस देहातको और देहातियोंको साफ़ बनाना है। ऐसा कुछ न बन पाये तो मुझे क्या ? मैं तो हाकिमके हुक्मका ताबेदार हूँ।

उरुली, २५-३-'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

कांग्रेसियोंकी उदासीनता

स० — मुझे यह देखकर ख़ुशी हुई कि आपने नेल्लोरमें हरिजनोंके लिए एक मन्दिर खोलनेके बारेमें अपनी राय ज़ाहिर की है। उससे बहुतेरे कांग्रेसियोंकी आँखें खुल जानी चाहिये। मन्दिर खोलनेकी अनिच्छाके बारेमें वजह यह दी जाती थी कि उससे चुनावोंमें कांग्रेसके कामयाब होनेकी सम्भावनाओं पर उलटा असर पड़ सकता है।

ज० — अगर आम तौर पर लोगोंका यही खयाल रहा है, तो कांग्रेसके लिए यह कोई अच्छी निशानी नहीं। कांग्रेसके जैसी सारे हिन्दुस्तानमें फैली हुई लोकप्रिय और प्रजातंत्रात्मक संस्था कभी छूत-छातको जड़मूलसे उखाड़नेकी अपनी नीति (अगर उसे धर्म न कह सकें) के तईं बेवफ़ा नहीं हो सकती। सन् १९१५में अपने हिन्दुस्तान लौटनेके वक़्तसे आज तक कांग्रेसके साथ मेरा जो निकटका सम्पर्क रहा है, उसमें मैंने यह अनुभव किया है कि कांग्रेस जितनी ही अपने ख़ास मक़सद या ध्येय पर डटी रही है, उतनी ही ज़्यादा वह लोकप्रिय बनी है। आम जनताकी नुमाइन्दगी करनेवाली संस्थाको हर हालतमें सत्यका आचरण करनेकी हिम्मत दिखानी पड़ती है। जो लोगोंकी कमज़ोरियोंको ग़लत तरीक़से पोसता है, वह अपने साथ लोगोंको भी गिराता है और उनको प्रजातंत्रकी तरफ़ न ले जाकर हुड़दंगशाहीकी ओर ले जाता है। जमहूरियत या लोकशाही और हुड़दंगशाहीके बीच अक्सर बहुत ही बारीक़ फ़र्क़ होता है, मगर जो होता है, वह ठोस फ़ौलादसे भी ज़्यादा सख्त और मज़बूत होता है। लोकशाही या जमहूरियतका रास्ता ज़िन्दगी और तरक़्क़ीका रास्ता है, जबकि हुड़दंगशाही सीधी मौतकी ओर ले जाती है। अगर हम अपनी गिरावटके कारणकी छानबीन करें, तो आखिर हमें पता चलेगा कि वह कारण हमारे अंदर पड़ा है, बाहर नहीं। वहीं हमें उसका पता लगाना होगा। अगर एक क़ौम या राष्ट्रके नाते हम सब तरहके सन्देहों और प्रलोभनोंसे ऊपर रहे होते, तो दुनियाकी तमाम सल्तनतें मिलकर भी हमें झुका न पातीं। कोई यह न समझे कि यह तो सिर्फ़ कहनेकी बात है। अगर हम मूलभूत तथ्यों यानी बुनियादी हक़ीक़तोंको मानकर चलें, तो हम सचाई और सब्रसे काम लेंगे और अपने सामने आनेवाली तमाम मुसीबतोंका, फिर वे अन्दरूनी हों या बाहरी, भलीभाँति सामना कर सकेंगे। सिद्धान्त या उसूलको छोड़नेकी बनिस्बत चुनावोंमें सब कुछ खोनेकी हमारी तैयारी चुनाव जीतनेका अचूक या रामबाण उपाय है। अब तकके नतीजोंसे यह साबित हो चुका है कि सन् १९२०में कांग्रेसने जो नीति निश्चितकी थी, उसकी वजहसे हमें एकके बाद एक कामयाबी मिलती गई है; मगर वह उसी हद तक मिली है, जिस हद तक कांग्रेस उस नीतिके मूलभूत तत्त्वोंके तईं सच्ची रही है, जो उसने उन दिनों अपनायी थी। अगर हिन्दुस्तानको एक राष्ट्रकी तरह फूलना-फलना और जीना है, तो छूत-छात मिटनी ही चाहिये।

पूना, २१-३-'४६
('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरखेको सजीव कैसे बनाया जाय ?

"हिंसा बुरी चीज़ है। मैं आपकी यह बात भी मानता हूँ कि चरखा जिसका प्रतीक है ऐसा रचनात्मक कार्य ही उसकी जगह ले सकता है। पर ऐसा मालूम होता है कि चरखेका चैतन्य – प्रेरकतत्त्व – ग़ायब हो चुका है। उसके क्रान्तिकारी महत्त्वको प्रकट करनेके लिए क्या किया जाय ?" हिन्दुस्तानी नौ-सैनिकोंके बलवेके बारेमें बातचीत करते हुए एक मित्रने गांधीजीसे कुछ दिन पहले यह सवाल पूछा था। गांधीजीका जवाब बहुत छोटा और गागरमें सागर लिए हुए था। एक शब्दमें उनका जवाब था : **'तपस्या'**। तपस्यासे गांधीजीका मतलब था ज्ञानकी तपस्या — अपनी पूर्ण अभिव्यक्तिके लिए जिसका कर्मयुक्त होना ज़रूरी है। बातचीत यहीं खत्म हो गई और मुझे डर है कि उन मित्रने इस विषय पर फिर शायद विचार किया हो। लेकिन यह सवाल बार-बार दुहराया जाता है। यही सवाल कलकत्तेमें गांधीजीसे बरकमताके खादी-कार्यकर्ताओंने भी पूछा था। गांधीजीने जवाब देते हुए कहा था :

इफ़रातमेंसे कंगाली

"डॉ० राधाकुमुद मुकर्जीने अपनी एक किताबमें कोलब्रुकका उद्धरण दिया है, जिसमें कहा है, 'हिन्दुस्तान भयंकर कंगालीका घर है। वहाँ चरखा ग़रीबोंको सूखी रोटी पर मक्खन दिलानेका साधन है।' स्वर्गीय रमेशचन्द्र दत्तने यह साबित कर दिया है कि ईस्ट इण्डिया कंपनीकी समृद्धि हिन्दुस्तानके सूती कपड़ेके व्यापार पर निर्भर थी। दुनियाके किसी हिस्सेमें — चीन और जापानमें भी — हिन्दुस्तान-जैसा सूती कपड़ा नहीं बनता था। शुरूमें ईस्ट इण्डिया कंपनी हिन्दुस्तानके सूती मालके इजारेसे ग़ैरवाजिब फ़ायदा उठाकर मालदार बनी। इस तिजारतसे सिर्फ़ उसीको बड़ा भारी लाभ नहीं हुआ, बल्कि ब्रिटिश जहाज़ी-उद्योगको भी प्रोत्साहन मिला। बादमें कई तरहकी मशीनोंका आविष्कार होनेसे लंकाशायरमें भी सूतके कारखाने बढ़ने लगे। इसकी वजहसे उसके सूती माल और हिन्दुस्तानके सूती मालमें होड़ा-होड़ी पैदा हुई। तब हिन्दुस्तानी कारीगरोंका शोषण करनेकी नीतिके बजाय उनके धन्धेको मिटानेकी नीति अख्तियार की गई।

"एक अंग्रेज़ लेखकने लिखा है कि 'कपासका इतिहास सभ्यताका इतिहास है। राजनीति व्यापारकी दासी है।' हिन्दुस्तानका इतिहास इसकी सबसे अच्छी मिसाल है। जब हमारा सूती व्यवसाय ख़ूब बढ़ा-चढ़ा था, तब हम अपनी ज़रूरतका सारा कपास ख़ुद पैदा कर लेते थे। बिनौले गाय-भैंसोंको खिलाये जाते थे, जो लोगोंको तन्दुरुस्ती बढ़ानेवाला दूध देती थीं। उस वक़्त खेती-बारीने ख़ूब तरक़्क़ीकी थी। कई तरहके उम्दा सूती कपड़े तैयार किये जाते थे। ढाकाकी जामदानीका नाम नमूनेके तौर पर लिया जा सकता है। इस व्यवसायकी एक शाखा थी मछलीपट्टमकी रँगाई और छपाईकी कला, जो सारी दुनियामें मशहूर थी। इस विषयके जानकार लोगोंका कहना है कि टिकाऊपन, चमक-दमक और ख़ूबसूरतीमें हमारे पुराने देशी रंगोंकी बराबरी दुनियाका कोई रंग नहीं कर सकता था। लेकिन आज उसका नाम-निशान भी नहीं रहा। आज हिन्दुस्तान सब तरहसे नंगा हो गया है। हमें उसकी नग्नताको ढँकना है। अगर कोई इसका चरखेसे बढ़कर उपाय बता सके, तो चरखेको मैं आज ही छोड़ दूँगा। लेकिन अभी तक ऐसा कोई उपाय मिला नहीं, और मैं दावेके साथ कह सकता हूँ कि चरखेको छोड़कर दूसरी ऐसी किसी चीज़के मिलनेकी संभावना भी नहीं।

ग़ुलामीको खत्म करनेके लिए

"फिर भी यह सवाल उठता है : 'अगर चरखा हिन्दुस्तानकी जाती हुई आज़ादीको रोक नहीं सका, तो वह उसको वापस कैसे ला सकता है ?' इसका एक ही जवाब है कि पुराने ज़मानेमें चरखेको आज़ादीकी भावनासे जोड़ा नहीं गया था। और, न उस समय वह अहिंसाका प्रतीक ही था। पुराने ज़मानेमें तो वह हमारी ग़ुलामीका प्रतीक था। हमें इसका भान नहीं था कि हमारी तरक़्क़ी, हमारी समृद्धि, यहाँ तक कि हमारी आज़ादी भी चरखे पर निर्भर है। अगर हमने इस सचाईको समझा होता, तो हम आज़ादीकी रक्षाके लिए लड़े होते और हमने सत्याग्रहकी शरण ली होती। अपनी नासमझी और लापरवाहीके कारण हमने जो कुछ खोया, उसे हमें बुद्धि और ज्ञानके द्वारा फिर पा लेना है। आज तो हमने अपने बारेमें सोचना भी बन्द कर दिया है। सरकार कहती है कि बंगाल नंगा-भूखा है और हम यंत्रवत् उसकी बातको मान लेते हैं। लेकिन ६॥ करोड़की आबादीवाले प्रान्तको कंगाल कहना अपनी बुद्धिका दिवाला पीटना है। हाल ही के अपने एक ब्रॉडकास्टमें बंगालके गवर्नरने क्या यह नहीं बताया है कि बंगालके किसान सालमें छह महीने बेकार रहते हैं ? क्या दुनियाके किसी भी मुल्ककी जनता सालमें छह माह निकम्मी रहकर जीती रह सकती है ? अगर सालके एक बड़े हिस्सेमें बेकार रहनेवाली जनताकी ज़बरन् लादी गई बेकारी मिटाई नहीं जाती, तो बरसातका सारा पानी इकट्ठा करके उसे आबपाशीके काममें लगाने पर भी वह ज़िन्दा नहीं रह सकती। हमारा असल रोग ग़रीबी नहीं, आलसीपन, लापरवाही और निकम्मापन है। आप इंजीनियरोंकी मददसे आबपाशीका बड़े-से-बड़ा चमत्कार दिखा सकते हैं। मगर अनाजसे खचाखच भरे गोदाम ही हमारी ग़ुलामीको नेस्त-नाबूद नहीं कर सकते। ग़ुलामीको खत्म करनेके लिए हमें जनताकी मानसिक और शारीरिक जड़ताका नाश करके उसकी बुद्धि और रचनात्मक शक्तिको बढ़ाना होगा। मेरा यह दावा है कि हिन्दुस्तान-जैसे विशाल और विविधता लिए हुए देशमें अगर सारी जनता चरखेको उन सब बातोंके साथ अपना ले, जिनका वह प्रतिनिधित्व करता है, तभी यह सब किया जा सकता है। मैंने चरखेकी तुलना मध्यवर्ती सूर्यके साथ और दूसरे देहाती उद्योग-धन्धोंकी तुलना उसके आसपासके ग्रहमण्डलके साथ की है। चरखा दूसरे ग्रामोद्योगोंको प्रकाश और शक्ति देता है और उन्हें जीवित रखता है। उसके बिना वे टिक नहीं सकते।"

क्या चरखा असफल रहा ?

स० — "अगर आपके कहनेके मुताबिक़ स्वराज्य हाथकते सूतके धागे पर निर्भर है, तो लगातार २५ वर्षके खादी-कार्यके बाद भी आज तक हम उसे हासिल क्यों न कर सके ?"

ज० — "क्योंकि हमारा श्रम ज्ञानसे प्रेरित नहीं था। क़ब्रकी शान्ति क़ब्रको मौतका घर बना देती है, किन्तु आत्माकी शान्ति उसे दिव्यज्ञानका केन्द्र बनाती है। इसी तरह यंत्रवत् श्रम करना ग़ुलामीका सूचक है, जबकि ज्ञानसे प्रकाशित श्रम आज़ादीकी भावनाको प्रकट करता है। इन दोनोंके बीच ज़मीन-आसमानका फ़र्क़ है। खादी-कार्यकर्ताओंको यह समझ लेना चाहिये कि खादीका शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त किये बिना किया हुआ खादीकार्य श्रद्धापूर्वक किये जाने पर भी स्वराज्यकी दृष्टिसे बेकार साबित होगा।"

ज्ञानका कीमिया

स०— "कताईके शास्त्रका आप क्या अर्थ करते हैं ? उसमें किन-किन बातोंका समावेश होता है ?"

ज०— "मैंने कई बार कहा है कि मैं बिना खाये रह सकता हूँ, मगर यज्ञार्थ कताईके बिना नहीं। मेरा यह भी दावा है कि हिन्दुस्तानमें शायद ही कोई मेरी तरह अटल नियम और धार्मिक निष्ठाके साथ कातता होगा। तिस पर भी मैं कहूँगा कि इस तरह यज्ञार्थ की गई कताई भी कताईके शास्त्रीय ज्ञानका स्थान नहीं ले सकती। शास्त्रीय ज्ञानके लिए यह ज़रूरी है कि कताईके सम्बन्धमें की जानेवाली छोटी-छोटी क्रियाओंके कारण और प्रयोजनका भी हम बराबर ध्यान रखें। चरखेमें स्वराज्य और शान्ति मौजूद है, ऐसा कहकर बैठे रहनेसे काम नहीं चलेगा। जो आदमी हर बातको शास्त्रीय दृष्टिसे देखनेका आदी है, वह चीज़ोंको श्रद्धासे शास्त्रीय मानकर सन्तुष्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं होगा । वह उनको बुद्धिकी कसौटी पर कसनेका आग्रह रखेगा । श्रद्धा जब बुद्धिसे सम्बन्ध रखनेवाली बातोंमें दखल देनेका साहस करती है, तो वह पंगु हो जाती है । बुद्धिका क्षेत्र जहाँ खत्म होता है, वहीं श्रद्धाका क्षेत्र शुरू होता है । श्रद्धासे हम जिन निर्णयों पर पहुँचते हैं वे अटल होते हैं, जब कि बुद्धि पर निर्भर करनेवाले निर्णय अस्थायी होते हैं और सवाई बुद्धिके सामने डिग जाते हैं या ग़लत साबित होते हैं । शास्त्र या विज्ञानकी मर्यादा सूचित करनेका मतलब उसकी क़ीमतको घटाना नहीं है । सच पूछा जाय तो दोनोंके बिना हमारा काम चल नहीं सकता । श्रद्धा और शास्त्र दोनों अपने-अपने स्थान पर उपयोगी हैं ।

शास्त्रीय मस्तिष्क और खादीकार्य

"पहले-पहल मैंने केवल अन्तः प्रेरणासे ही चरखेकी शोध की थी । मुझे उसका कोई ज्ञान नहीं था; यहाँ तक कि मैं चरखे और करघेमें कोई भेद ही नहीं समझता था । मगर बादमें मैंने स्वर्गीय मगनलाल गांधीकी मददसे चरखेकी शक्तिको जाननेकी कोशिश की । मसलन्, यह सवाल पैदा हुआ कि तकुआ लोहेका ही क्यों बनाया जाय, पीतलका क्यों नहीं ? वह मोटा हो या पतला ? उसकी ठीक मोटाई कितनी होनी चाहिये ? पहले-पहल हमने मिलके तकुओंसे काम शुरू किया । उस समय चमरखे बाँस या लकड़ीके होते थे । उसके बाद हमने चमड़े और ताँतके चमरखे बनाये । अनुभवने हमें बताया कि तकुए जल्दीसे टेढ़े हो जाते हैं और उन्हें सीधा करना मुश्किल होता है । तब हमने स्वेटर वग़ैरा बुननेकी सलाइयोंके तकुए तैयार किये और आखिर छत्रीकी ताड़ियोंके तकुए बनाये । इन सारी कोशिशोंमें आविष्कारक शक्ति और वैज्ञानिक शोधको काममें लेनेकी ज़रूरत पड़ी थी ।

"हरएक चीज़को शास्त्रीय दृष्टिसे देखनेवाला खादी-कार्यकर्त्ता यहीं नहीं रुक जायगा । वह अपने तईं सवाल करेगा : 'चरखा ही क्यों, कातनेकी मिल क्यों नहीं ?' इसका जवाब होगा कि हरएक आदमी कातनेकी मिल नहीं रख सकता । अगर लोग अपने कपड़ोंके लिए कातनेकी मिलों पर मदार रक्खेंगे तो वे मिल-मालिकोंके ग़ुलाम हो जायेंगे और उनकी निजी आज़ादी खत्म हो जायगी । आज बिजलीके तारों और पानीके नलोंको काटकर २४ घंटेके अन्दर कोई भी आदमी सारे लन्दन और न्यूयार्कको अपने क़ाबूमें कर सकता है । सामाजिक जीवनके लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता और परस्परावलम्बन दोनों ही बड़े कामकी चीज़ें हैं । सिर्फ़ एक रॉबिन्सन क्रूसो ही अपनी तमाम ज़रूरतोंको अपने हाथों पूरा कर सकता है । अपनी सबसे महत्त्वकी ज़रूरतोंको पूरा करनेके लिए भरसक कोशिश कर लेनेके बाद ही कोई आदमी बाक़ीकी ज़रूरतोंके लिए अपने पड़ोसीकी मदद चाहता है । यही सच्चा सहयोग है । इस तरह चरखेका शास्त्रीय ज्ञान हमें समाज-शास्त्रकी ओर ले जाता है । अगर हमने चरखेसे सम्बन्ध रखनेवाले दूसरे शास्त्रोंका भी गंभीर अध्ययन नहीं किया, तो चरखा हिन्दुस्तानकी आज़ादी हासिल करानेवाला हमारा ताक़तवर हथियार नहीं बन सकता । मगर ऐसा हुआ, तो वह न सिर्फ़ हिन्दुस्तानको आज़ाद करेगा, बल्कि सारी दुनियाको आज़ादीकी राह दिखायेगा ।

अनासक्ति और साहस

"पंडित जवाहरलाल नेहरूने सच ही कहा है कि एक ज़माना था, जब हिन्दुस्तानमें आविष्कारक बुद्धिकी कमी नहीं थी । मगर आज उस पर ज़ंग चढ़ गया है । एक बार किसीके शास्त्रीय दृष्टि पा जाने पर वह उसके सारे कामोंमें दिखाई पड़ेगी । उसका खाना, पीना, आराम करना, सोना सारी बातें शास्त्रीय ढंगसे नियमित हो जायँगी । इसे हरएक कामका 'क्यों' और 'किसलिए' भी मालूम रहेगा । अन्तमें, शास्त्रीय दृष्टिकोणवाले आदमीमें अनासक्तिका होना ज़रूरी है, वरना उसे पागलखानेकी हवा खानी पड़ेगी । उपनिषद्‌का कथन है कि इस विश्वमें जो कुछ दिखाई देता है, वह ईश्वरसे ही पैदा हुआ है । वह सब ईश्वरका ही है और ईश्वरको ही समर्पण करके उसका उपभोग किया जाना चाहिये । ऐसा होने पर सुख-दुःख, सफलता और विफलता सब आपके लिए समान हो जायँगे । आप समदृष्टा बन जायगे ।"

अखीरमें गांधीजीने कहा : "इस विषयमें एक बात और जान लेनी चाहिये । मान लीजिये कि ज़ालिम चरखेको ही मिटाना चाहता है । तब क्या किया जाय ? ऐसा मौक़ा आने पर चरखेकी बरबादी देखनेसे पहले चरखेके साथ हमें भी मिट जाना चाहिये । हम उसके नाशके साक्षी रहकर न जीयें । क्योंकि इस तरह अपनी क़ुरबानी करनेवाले एक खादी-कार्यकर्त्ताकी जगह हज़ारों दूसरे पैदा हो जायँगे । और, उसका यह काम उसके अपनाये हुए ध्येय पर विजयकी अन्तिम मोहर लगा देगा ।"

पूना, ६-३-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

जानने लायक़ दस-सुझाव

एक सेवकने संकटका सामना करनेके लिए कुछ सुझाव भेजे हैं । थोड़े हेरफेर और सुधारके साथ उन्हें यहाँ देता हूँ । मुमकिन है कि इनमेंके कुछ सुझाव किसी-न-किसी रूपमें पहले छप चुके हों । मैंने इसका विचार नहीं किया । अप्रामाणिक आदमियोंके हाथों अच्छे-से-अच्छे सुझावोंके भी तोड़े-मरोड़े जानेका डर रहता है । हम यह उम्मीद रक्खें कि धधकती होलीकी आगमें सबकी अपवित्रता जल जायगी ।

१. गाँवोंके ढोर-ढाँखर सहित समूची आबादीके सम्पूर्ण निर्वाहके लिए ज़रूरी अनाज और घासचारेको अनामत रक्खे बिना गाँवसे एक भी दाना या एक भी पूला बाहर न ले जाया जाय, इसका कड़ा और पक्का इन्तज़ाम होना चाहिये ।

२. गल्लेकी खरीदी और बिक्रीकी दरोंमें फ़र्क़ न रहना चाहिये । खरीदीकी दर ही बिक्रीकी भी दर रहनी चाहिये । व्यवस्था-खर्च सरकारको ही उठाना चाहिये ।

३. इस बातका इन्तज़ाम किया जाना चाहिये कि खाने-पीनेका सामान हरएक बस्तीमें लोगोंको ठहरी हुई क़ीमत पर आसानीसे मिल सके । आजकी तरह पाँच-पाँच, सात-सात मीलके धक्के खाकर खाली हाथों लौटनेकी नौबत न आनी चाहिये ।

४. जिनके पास अन्न खरीदने लायक़ पैसा न हो उनसे उनकी हैसियतके मुताबिक़ काम लेकर अन्न-वस्त्रके रूपमें उन्हें उनका मेहनताना चुकानेका इन्तज़ाम रहना चाहिये ।

५. कम तनख्वाह पानेवाले नौकरोंकी तनख्वाह इस तरह बढ़ाई जानी चाहिये कि जिससे वे महँगीके इन दिनोंमें अपना गुज़ारा कर सकें; और इसके लिए उन्हें किसी तरहका आन्दोलन करनेकी ज़रूरत न पड़नी चाहिये । उनको दी जानेवाली मदद अनाजके रूपमें दी जानी चाहिये ।

६. जनताको जिलानेकी खातिर हमेशाके चालू कामोंके बजटमें कमी की जानी चाहिये । बड़ी-बड़ी तनख्वाहोंवाले नौकरोंकी तनख्वाहें ज़रूरतके मुताबिक़ कम की जानी चाहिये ।

७. लड़ाईके बादकी योजनायें या दूसरे प्रयोग तब तक भले रुके रहें, जब तक संकटके बादल पूरी तरह बिखर न जायें ।

८. सार्वजनिक दानोंके स्रोतोंको भलीभाँति केन्द्रित करके उनका उपयोग भुखमरीका सामना करनेमें और ज़्यादा अनाज पैदा करनेके काममें ही किया जाना चाहिये ।

९. सरकारका यह परम पवित्र कर्त्तव्य माना जाना चाहिये कि वह हर तरह और हर हालतमें आम रिआयाको जिलानेकी सच्ची कोशिश करे ।

१०. ऐसे अन्नछत्र या लंगर खोले जायँ, जहाँ कम-से-कम क़ीमतमें, या तरह-तरहकी काफ़ी मेहनत करके, हरकोई आदमी जात-पाँतके भेदका कोई खयाल न रखते हुए भोजन पा सके ।

('हरिजनबंधु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

३१ मार्च १९४६

पूँजीपति और हड़ताल

जब मज़दूर लोग हड़ताल करें, तो पूँजीपतियोंको क्या करना चाहिये ?

यह एक बड़ा सवाल है । इसका एक रास्ता तो, जिसे अमेरिकाका रास्ता कहते हैं, गुण्डेबाज़ीसे ही क्यों न हो, मज़दूरोंका दमन करना है । मेरे ख़यालसे यह रास्ता ग़लत और घातक है । दूसरा और सच्चा रास्ता यह है कि हरएक हड़तालके गुण-दोष पर विचार करके मज़दूरोंके साथ पूरा इन्साफ़ किया जाय । इन्साफ़का मतलब जिसे मालिक इन्साफ़ कहे, वह नहीं, बल्कि जिसे मज़दूर इन्साफ़ माने और आम जनता भी क़बूल करे, वह इन्साफ़ है ।

अव्वल तो हड़ताल हो ही क्यों ? पहलेसे ख़याल रखा जाय तो इसकी नौबत ही न आये । मालिक और मज़दूरका शुरूसे ही ऐसा अच्छा ताल्लुक़ क्यों न रहे ? एक पंच हो, जिसके सामने दोनों पक्ष अपनी अपनी माँगें रख दें, और वह जो फ़ैसला दे, तुरन्त दोनों पक्ष पाक दयानतदारीसे उस पर अमल करें ।

यह देखा गया है कि जैसे-जैसे वक़्त बीतता जाता है, मज़दूरोंकी माँगें बढ़ती जाती हैं और उन्हें क़बूल करवानेके तरीक़े भी नये निकलते जाते हैं । उन तरीक़ोंमें हिंसाकी पूरी छूट रहती है । मालिकका माल ख़राब करना, मशीन बिगाड़ देना, नये या पुराने मज़दूरोंको ज़बरदस्ती काम पर आनेसे रोकना, वग़ैरा घटनायें हों, तो मालिक क्या करें ?

मेरी रायमें तो मालिक और मज़दूर बराबरीके हिस्सेदार हैं, और अगर किसीका हिस्सा ज़्यादा है भी, तो वह मज़दूरोंका । लेकिन आज इसका उलटा हो रहा है; क्योंकि पूँजीपतियोंके पास बुद्धि है, या यों कहिये कि वे कम पूँजीवाले बुद्धिमानोंको अपने साथ मिला लेते हैं । इसके अलावा वे धन-संग्रह करके उसका उपयोग करना जानते हैं । अकेले एक रुपयेकी शक्ति नहींके बराबर होती है । लेकिन बहुतसे रुपये इकट्ठा करनेसे उनकी जो सामूहिक शक्ति बनती है, वह जितने रुपये बढ़े हैं, उतनी गुनी नहीं, बल्कि उससे कई गुनी ज़्यादा होती है । इसीको संघ-शक्ति कहते हैं ।

मज़दूर बेहाल हैं । बहुतसे यूनियन और फेडरेशन होते हुए भी उनकी संघ-शक्ति नहींके बराबर है । फिर, बुद्धि भी उनके पास थोड़ी होती है । एक यूनियन दूसरे यूनियनकी जड़ काटता है । कम अक़्ल होनेकी वजहसे ख़ुदग़रज़ और तूफ़ानी लोगोंके चढ़ाने पर वे तूफ़ान करने लगते हैं । ये तूफ़ान करनेवाले लोग अहिंसाकी ताक़तको नहीं समझते । इसका नतीजा यह होता है कि मज़दूरोंको नुक़सान उठाना पड़ता है । अगर मज़दूर अहिंसाकी ताक़तको सीख जायँ, तो मेरा तो अनुभव है कि ऐसे ज़िन्दा इन्सानोंकी संघ-शक्तिके सामने पूँजीपतियोंके हाथमें जमा धनकी शक्ति बिलकुल तुच्छ है ।

इसलिए पूँजीपतियोंको मेरी यह सलाह है कि मज़दूरोंको सच्चा मालिक बनानेके लिए उन्हें उनकी बुद्धि और शक्ति बढ़ानी चाहिये । उनका फ़र्ज़ है कि मज़दूरोंको अच्छी-से-अच्छी तालीम देकर उनकी संघ-शक्तिको मज़बूत करें ।

सारे पूँजीपति इस कामको एक दिनमें तो नहीं कर सकते । इस बीच हड़तालोंसे उनका जो नुक़सान होता है, उसके लिए वे क्या करें ? इस बारेमें मैं तो बिना किसी हिचकके यही कहूँगा कि कारख़ानोंका पूरा अधिकार मज़दूरोंको सौंप कर मालिक लोग तुरन्त वहाँसे निकल जायँ । क्योंकि कारख़ानों पर हड़तालियोंका भी उतना ही अधिकार है, जितना मालिकों का । यह सब ग़ुस्सेमें नहीं, बल्कि अपनी सच्चाई दिखाते हुए किया जाना चाहिये । अगर मज़दूर लोग मालिकोंसे इंजीनियरों या दूसरे कारीगरोंकी मदद माँगें, तो वह भी उन्हें देनी चाहिये । इसमें मालिकोंका कोई नुक़सान नहीं होनेवाला है । वे सब तरहके विरोधसे बच जायँगे और मजदूर भी उन्हें धन्यवाद देंगे । अपने धनका सदुपयोग करनेवालोंमें उनकी गिनती होगी । मैं इसे परमार्थ नहीं, शुद्ध बुद्धि और नेक बरताव कहूँगा ।

उरुळी, २३-३-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

भंगी-बस्तीमें क्यों ?

हो सके तो भंगी-बस्तीमें रहनेका मैंने इरादा किया है । इस पर दोस्तोंको ताज्जुब क्यों होता है ? ताज्जुब तो इसलिए होना चाहिये था कि मैं इतने दिनों तक हरिजन-बस्तीमें रहने क्यों नहीं गया ? 'क्यों नहीं गया,' इसका जवाब किसी और वक़्त दूँगा । आज तो इरादा क्यों किया है, वह बता दूँ । मैंने कहा है कि हम अपनेको भंगी यानी अति शूद्र मानें और वैसा ही बरताव भी रक्खें । मैं ऐसा मानता तो हूँ, लेकिन चलता नहीं । शायद सब तरह तो ऐसे चलना असंभव-सा हो । लेकिन जितना हो सके उतना तो करूँ । मनमें कई दिनोंसे इस तरहके विचार उठ रहे थे । इसी बीच, जैसा कि 'हरिजन'में दे चुका हूँ, ख़बर मिली कि गुजरातमें हरिजनोंके लिए एक ही कुआँ खुला है । इसी तरह मन्दिर भी एक ही । यह सही है या ग़लत, इस पर विचार न किया जाय । इसका मेरे मन पर जो असर हुआ, वही यहाँ समझनेकी बात है । दिलमें इस बातका ग़ुस्सा नहीं होना चाहिये । मैंने तुरन्त सोचा कि अगर मैं ही हरिजनोंसे अलग रहता हूँ, तो दूसरे क्या करें ? यह सवाल तो ठीक था ही, लेकिन सच्ची बात तो यह थी कि दूसरे कुछ भी करें, मुझे अपना फ़र्ज़ अदा करना चाहिये । यही एक बात है, जो मुझ पर सवारी किये हुए है, और मुझसे कहती है कि जहाँ मैं जाऊँ वहाँ मुझे हरिजन-बस्तीमें ही रहना चाहिये ।

इसीलिए मैंने सेठ रामेश्वरदास बिड़लासे कहा कि जब मैं बंबई आऊँ तो मेरे रहनेका इन्तज़ाम भंगियोंकी बस्तीमें करें और वहाँ सम्भव न हो, तो कहीं किसी हरिजन-बस्तीमें । सेठ घनश्यामदास बिड़लाको भी मैंने तार किया है कि वे दिल्लीमें भी ऐसा ही इन्तज़ाम करें । भाई ब्रजकृष्ण चाँदीवालोंका तार मिला है कि वहाँ वैसा बन्दोबस्त हो रहा है । ज़ाहिर है कि अगर हरिजन भाई-बहन ही अपनी बस्तीमें मेरा रहना बरदाश्त न कर सकें, तो मैं वहाँ नहीं रह सकता । उनका दिल दुखाकर मैं उनकी बस्तीमें कैसे रह सकता हूँ ? मगर मुझे ऐसा कोई डर नहीं है ।

कुछ लोग ख़ुश हुए हैं कि मैं अब बिड़ला-हाऊसमें नहीं रहूँगा । वे नहीं जानते कि बिड़ला भाइयोंके साथ मेरा क्या सम्बन्ध है ? कितने ही सालोंसे मैं बिड़ला भाइयोंसे सेवा ले रहा हूँ । अपने सार्वजनिक कामके लिए मैंने उनसे काफ़ी रुपये भी लिये हैं और लेता रहता हूँ । आम लोग क्या जानें कि उनके जीवनमें कैसा परिवर्तन होता रहा है ? जो होता है वह दिखावेके लिए नहीं । यह सब होते हुए भी उनके जीवनमें और मेरे जीवनमें बड़ा अन्तर है । उससे न दुःख होना चाहिये, न ताज्जुब । सच्चा परिवर्तन दिलसे होता है । किसीके दबावसे किया हुआ परिवर्तन निकम्मा होता है । मुझमें न ऐसा अभिमान है, न ऐसी मूर्खता कि मैं सबको अपने जैसा बनानेकी आशा तक रक्खूँ । यह कौन कह सकता है कि जो मैं करता हूँ वह ठीक है, या जो दूसरे करते हैं वह ठीक है ? मैं अपने रास्ते पर रहूँ और दूसरे अपने पर । हम सब भगवान्‌के ताबे रहें । जैसे वह चलाये वैसे चलें, और अपने-अपने रास्ते पर चलते हुए सबसे मैत्री रक्खें ।

उरुळी, २५-३-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदा करने और उसे बढ़ानेमें उनका विश्वास है । उनका कहना है कि राजसत्ता पाने पर वे लोगोंसे समानताके सिद्धान्त पर अमल करवायेंगे । मेरी योजनाके अनुसार राज्य प्रजाकी इच्छाको पूरी करेगा, न कि लोगोंको हुक्म देगा या अपनी आज्ञा ज़बरन् उन पर लादेगा । मैं घृणासे नहीं, प्रेमकी शक्तिसे लोगोंको अपनी बात समझाऊँगा और अहिंसाके द्वारा आर्थिक समानता पैदा करूँगा । मैं सारे समाजको अपने मतका बनाने तक रुकूँगा नहीं, बल्कि अपने पर ही यह प्रयोग शुरू कर दूँगा । इसमें ज़रा भी शक नहीं कि अगर मैं ५० मोटरोंका तो क्या, १० बीघा ज़मीनका भी मालिक हूँ, तो मैं अपनी कल्पनाकी आर्थिक समानताको जन्म नहीं दे सकता । उसके लिए मुझे ग़रीब बन जाना होगा । यही मैं पिछले ५० सालोंसे या उससे भी ज़्यादा वक्तसे करता आया हूँ । इसीलिए मैं कट्टर कम्युनिस्ट होनेका दावा करता हूँ । अगरचे मैं धनवानों द्वारा दी गई मोटरों या दूसरे सुभीतोंसे फ़ायदा उठाता हूँ, मगर मैं उनके वशमें नहीं हूँ । अगर आमजनताके हितोंका वैसा तकाज़ा हुआ, तो बातकी बातमें मैं उनको अपनेसे दूर हटा सकता हूँ ।"

अमली अहिंसा

प्र० — धनवानोंको ग़रीबोंके प्रति उनका फ़र्ज़ समझानेमें सत्याग्रहका क्या स्थान है ?

ज० — वही, जो विदेशी हुकूमतके खिलाफ़ है । सत्याग्रह एक ऐसी चीज़ है, जो हर जगह लागू की जा सकती है । उसका उपयोग कुटुम्बसे लगाकर दूसरे सभी क्षेत्रोंमें किया जा सकता है । खयाल कीजिये कि एक ज़मींदार अपने असामियोंका शोषण करता है, और उनकी खून-पसीनेकी कमाईका खुद उपभोग करता है । जब वे इसका विरोध करते हैं, तो वह ध्यान नहीं देता और कहने लगता है कि उसे इतनी रक़म अपनी पत्नीके लिए चाहिये, उतनी रक़म अपने बच्चोंके लिए चाहिये, वग़ैरा । तब वे किसान या उनका पक्ष लेनेवाले प्रभावशाली लोग ज़मींदारकी पत्नीसे अपील करेंगे कि वह अपने पतिको समझावे या उसके कामका विरोध करे । शायद वह यह कह दे कि पति द्वारा शोषणके रूपमें कमाया गया पैसा उसे नहीं चाहिये । बच्चे भी इसी तरह कह सकते हैं कि अपनी ज़रूरतका पैसा वे खुद मेहनत करके कमा लेंगे ।

"यह भी मान लीजिये कि ज़मींदार किसीकी बात नहीं मानता या उसकी पत्नी और बच्चे किसानोंके खिलाफ़ उससे मिल जाते हैं, तब भी किसान हार नहीं मानेंगे । अगर उनसे कहा जायगा, तो वे गाँव छोड़ देंगे, लेकिन ज़मींदारसे यह साफ़-साफ़ कहना नहीं चूकेंगे, कि ज़मीनका मालिक वह है, जो उसे जोतता है । मालिक सारी ज़मीन खुद तो नहीं जोत सकता, इसलिए आख़िर उसे किसानोंकी मुनासिब माँग पर उन्हें अपनी ज़मीन जोतनेके लिए देनी ही पड़ेगी । यह भी हो सकता है कि पहले किसानोंके चले जाने पर उनकी जगह मालिक दूसरे किसान बैठा दे । तब वे उस वक्त तक अहिंसक आन्दोलन चलायेंगे, जब तक उनकी जगह आनेवाले किसान अपनी ग़लती समझकर ज़मींदारके खिलाफ़ उनसे मिल नहीं जाते । इस तरह सत्याग्रहके ज़रिये लोकमत तैयार किया जा सकता है । उसमें समाजके सारे तत्त्व मिले हुए हैं, और अन्तमें इसीलिए वह अजेय साबित होता है । हिंसा इस प्रयोगमें बाधा पहुँचाती है, और सारे समाजकी सच्ची क्रान्तिमें लम्बे समय तक रुकावट डालती है ।

सत्याग्रहकी कामयाबीके लिए नीचे लिखी शर्तें ज़रूरी हैं :
(१) सत्याग्रहीके मनमें अपने विरोधीके प्रति किसी तरहकी नफ़रत नहीं होनी चाहिये । (२) सत्याग्रहीका मुद्दा सच्चा और ठोस होना चाहिये । (४) सत्याग्रहीको अपने सिद्धान्तके लिए अख़ीर तक कष्ट सहनेको तैयार रहना चाहिये ।

पूना, ४-२-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

सहूलियत बनाम ज़रूरत

जिन्हें बहुतसे कांग्रेसी जानते हैं, ऐसे एक भाई लिखते हैं :

"आपसे बातचीत करते समय मैंने महसूस किया कि आमजनताकी मौजूदा हालतको लेकर आप कितने परेशान हैं । इसमें शक नहीं कि हिंसक कामोंके रूपमें अपनेको व्यक्त करनेकी जनताकी शक्ति बहुत क्षोभजनक है, और कभी-कभी मनमें यह सवाल पैदा हो सकता है कि इतने सालोंकी इस अहिंसाका क्या हुआ ?

"जब मैं अपनेको अन्दरसे टटोलकर देखता हूँ, (और लोगोंके बारेमें जाननेका मेरे खयालमें यही एक तरीक़ा है) तो मैं पाता हूँ कि पिछले पाँच-छह सालोंके संघर्षभरे अनुभवोंने अहिंसामें मेरी श्रद्धाको दृढ़ ही किया है । मैंने और दूसरे बहुतोंने शायद पहली ही बार इस कगारको झाँककर देखा — और अपनी बुद्धिके ज़रिये नीचेकी अँधेरी घाटियोंका सफ़र भी किया — और मुझे निश्चय हो गया कि उस रास्ते मुक्ति नहीं मिल सकती । और, बापूजी, क्या आप जानते हैं कि मेरी तरह हज़ारों ऐसे हैं, जिन्होंने यह अनुभव किया है और जो इन्हीं नतीजों पर पहुँचे है ? अब तक आपकी आवाज़ हमारे तपे हुए दिमाग़ों और दबी हुई आत्माओंके लिए ठण्डक पहुँचानेवाले मरहमका काम देती थी; लेकिन अहिंसा तो हमारे लिए महज़ एक ऐसी चीज़ थी, जिसे लड़ाईमें आपको अपना सेनापति बनाये रखनेके लिए हम बरदाश्त कर लिया करते थे ।

"मगर अब तो अहिंसा मेरे-जैसे हज़ारोंके लिए एक ऐसी जीवनी-शक्ति बन गई है, जिसके बिना न प्रजातंत्र या जमहूरी सल्तनत पैदा हो सकती है और न मानवता पनप सकती है । अब हमारी अहिंसा श्रद्धाकी चीज़ बन गई है, वह सुभीतेकी या कायरताकी चीज़ नहीं रही ।

"लेकिन दूसरे भी कुछ ऐसे लोग हैं, जिनमें बुनियादी बातोंको समझनेका माद्दा नहीं रहा है । वे आज भी ताक़तकी और ताक़तको संगठित करनेकी बातें सोच रहे हैं । मेरा अपना खयाल तो यह है कि यह उनके विकासकी एक अवस्था है । जिन लोगोंने इस चीज़को समझ लिया है, उनका अनुभव और उनकी उत्कटता एक दिन इनको भी सही रास्ता दिखानेमें बहुत मददगार होगी ।

"ऐसे भी बहुतसे हैं जो राजनीतिकी इन चालोंसे परेशान हैं और अहिंसक नीतिके साथ इनका मेल बैठानेमें कठिनाई महसूस करते हैं, या यों कहिये कि राजनीतिकी चालोंके साथ अहिंसाका मेल बैठानेकी बहुतोंकी कोशिशसे वे उलझनमें पड़ गये हैं । इस सबके कारण मैं खुद तो इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि अपनी बगीचीका यानी अपने धर्मका विकास करना ही सबसे श्रेष्ठ है । 'कैण्डाइड' नामक अपने ग्रंथके अन्तमें फ्रांसीसी लेखक वॉल्टेयर इसी नतीजे पर पहुँचा है ।

"मैं महसूस करता हूँ कि हम सच्ची मनुष्य जातिके लिए लड़ रहे हैं, और हमें अभी कई लड़ाइयाँ लड़नी हैं — इस वक्त जो लड़ाई हम लड़ रहे हैं, वह तो हमारी पहली लड़ाईकी इब्तदा ही है । मेरा यह खयाल है कि अभी हमें बहुत दूर जाना है, और यह कि जब तक हम निडर होकर कुछ कठोर अनुभव नहीं करेंगे और कुछ ठोकरें नहीं खायेंगे, तब तक हम अपने अंदर अहिंसाका विकास नहीं कर सकेंगे ।

"शायद ऐसे बहुत हैं, जो मेरी तरह इन दिक़्क़तोंको महसूस कर रहे हैं ।"

बम्बई, १४-३-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

नई किताबें	मूल्य	डाकखर्च
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधारी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१-८-०	०-५-०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०
हफ़्तेमें उर्दू लिपि — (श्रीपाद जोशी)	०-७-०	०-१-०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीका साम्यवाद

अपने साम्यवादी और समाजवादी मित्रोंके साथ चर्चा करते हुए गांधीजीने अक्सर यह दावा किया है कि वे उनसे ज़्यादा अच्छे साम्यवादी या समाजवादी हैं। ध्येय सबका एक ही है। मगर उनके उपायों और काम करनेके तरीक़ोंमें मौलिक भेद है। समाजकी रचनाको हिंसा और असत्यके द्वारा बदलनेमें गांधीजीको कोई रस नहीं; क्योंकि वे जानते हैं कि इससे हिन्दुस्तानके करोड़ों बेज़बानोंको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचेगा। आग़ाखान महलमें अपनी नज़रबन्दीके दिनोंमें उन्होंने साम्यवादके साहित्यका अध्ययन किया। वह हर चीज़को शास्त्रीय दृष्टिसे सोचते हैं। मित्रोंकी बातचीतसे और जहाँ-तहाँ कुछ पढ़ लेनेसे साम्यवाद या समाजवादका जो ज्ञान गांधीजीको मिला, उससे उन्हें संतोष नहीं हुआ। उन्होंने मार्क्सका 'डॅस केपिटल' पढ़ा, उसकी कुछ दूसरी रचनायें पढ़ीं; और एंजिल्स, लेनिन और स्टालिनका साहित्य भी पढ़ा। उन्होंने चीनी कम्युनिस्टोंके बारेमें भी कुछ किताबें पढ़ीं। इस सबके अन्तमें उनका यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया कि उनकी कल्पनाका साम्यवाद ही दुनियाके दुःखी लोगोंको राहत पहुँचा सकता है। उनके अपने आश्रमोंमें और उनसे प्रेरणा पाकर उनकी देखरेखमें चलनेवाली संस्थाओंमें एक ही सिद्धान्तका पालन किया जाता है: "हरएकको उसकी ज़रूरतके माफ़िक दिया जाय और हरएकसे उसकी योग्यताके अनुसार काम लिया जाय।" इस तरह गांधीजीके आश्रम .ख़ुद वे स्थान हैं, जहाँ अहिंसाको और हिन्दुस्तानके गाँवोंकी हालतको मद्देनज़र रखकर साम्यवादके प्रयोग किये जाते हैं। सेवाग्राम आश्रममें यह बात मान ली गई है कि आश्रमवासी वहाँ गाँवके लोगोंकी मरज़ीसे ही रहते हैं। गाँवके एक झगड़ालू आदमीने ईंधनके लिए आश्रमके कुछ पेड़ काट डाले, गोकि उसे इसका कोई हक़ नहीं था। एक दूसरे भाईने मुआवज़ा लेनेके बाद भी अपने खेतसे जानेवाले आश्रमके रास्तेको रोक दिया। इसके लिए कोई क़ानूनी कार्रवाई नहीं की गई। सिर्फ़ यह ऐलान कर दिया गया कि आश्रमवासी वहाँ गाँववालोंकी सेवाके लिए ही रहते हैं। अगर गाँववाले उन्हें नहीं चाहते, तो वे दूसरी जगह चले जायँगे। आख़िरकार गाँववाले अपने झगड़ालू साथियोंको सीधी राह पर ले आये। साबरमती आश्रमकी बहनोंने न सिर्फ़ अपने घरेलू रसोईघरोंको आम रसोईघरमें मिला दिया और उसे चलाया, बल्कि दूसरोंके बच्चोंको अपने परिवारमें लेकर अपने बच्चोंकी तरह उन्हें पालने-पोसनेके लिए भी वे राज़ी हो गईं, और साथ ही उन्होंने अपने बच्चोंको दूसरोंकी देखभालमें सौंपा। पारिवारिक जीवनको क़ायम रखते हुए स्त्रियोंकी ग़ुलामीकी दीवारोंको तोड़कर उन्हें आज़ाद करनेकी यह एक ऐसी ज़बरदस्त क्रान्ति थी, जिसमें अराजकताका नाम भी नहीं था। मगर एक मित्रने तालीमी संघके आम रसोड़ेमें — जहाँ सौसे ज़्यादा आदमी खाते हैं — खाना खानेके बाद मज़ाकमें कहा: "गांधीजी इसे रसोड़ा कहते हैं, तो यह मामूली-सी बात लगती है। मगर कम्युनिस्ट इसे 'कम्यून' कह दें, तो वह सबको प्रभावित कर देती है!" क्या एडिसन नामक अंग्रेज़ लेखकके एक पात्रने, बूढ़े सामन्तने, ताज्जुब ज़ाहिर करते हुए यह नहीं कहा था कि जिस नाटककी एक-एक सतर वह समझ सकता है, वह नाटक दुःखान्त हो ही कैसे सकता है?

आर्थिक समानताका सच्चा अर्थ

गांधीजीकी पिछली मद्रास-यात्राके दिनों रचनात्मक कार्यकर्त्ताओंके एक सम्मेलनमें उनसे पूछा गया: "आपकी रायमें आर्थिक समानताके सही मानी क्या हैं? आपकी धारणाके अनुसार वैध ट्रस्टीशिप किसे कहा जायगा?"

गांधीजीने जवाब दिया: "आर्थिक समानताकी मेरी कल्पनाका यह अर्थ नहीं कि हरएकको शब्दशः एक ही रक़म दी जाय। उसका सीधा-सादा मतलब यह है कि हरएक स्त्री या पुरुषको उसकी ज़रूरतकी रक़म मिलनी ही चाहिये। मसलन्, सर्दियोंमें मुझे दुशालेकी ज़रूरत पड़ती है, जब कि मेरे भतीजेके लड़के कनु गांधीको, जो मेरे पुत्रके समान है, एक भी गरम कपड़ेकी ज़रूरत नहीं पड़ती। मुझे बकरीके दूध, संतरे और दूसरे फलोंकी ज़रूरत होती है। कनुका काम मामूली .ख़ूराकसे चल जाता है। मुझे कनुसे ईर्ष्या होती है, मगर उसका कोई मतलब नहीं। कनु नौजवान है, मैं ७६ सालका बूढ़ा हूँ। मेरे खानेका खर्च कनुसे ज़्यादा आता है। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम दोनोंमें आर्थिक असमानता है। हाथीको चींटीसे हज़ार गुना ज़्यादा खाना लगता है, मगर यह असमानताका सूचक नहीं। इसलिए आर्थिक समानताका सच्चा अर्थ है, 'हरएकको उसकी ज़रूरतके माफ़िक दिया जाय।' मार्क्सकी व्याख्या भी यही है। अगर कोई अकेला आदमी एक औरत और चार बच्चोंवाले आदमीके बराबरकी माँग करता है, तो इसको आर्थिक समानताके सिद्धान्तका भंग कहा जायगा।"

गांधीजीने आगे कहा: "किसीको भी उच्च वर्ग और आम जनताके, राजा और रंकके बीचके बड़े भारी भेदको यह कहकर उचित नहीं मान लेना चाहिये कि पहलेकी ज़रूरतें दूसरेसे बढ़ी हुई हैं। यह बेकारकी दलील और मेरे तर्कका मज़ाक उड़ाना होगा। आजके अमीर और ग़रीबके भेदसे दिलको बड़ी चोट पहुँचती है। विदेशी नौकरशाही और देशके रहनेवाले — शहरी लोग — गाँवके ग़रीबोंका शोषण करते हैं। गाँववाले अन्न पैदा करते हैं और .ख़ुद भूखों मरते हैं। वे दूध पैदा करते हैं और उनके बच्चोंको दूधकी एक बूँद मयस्सर नहीं होती। यह कितना शर्मनाक है! हरएकको पौष्टिक भोजन, रहनेके लिए उम्दा मकान, बच्चोंकी तालीमके लिए हर तरहके सुभीते और दवादारूकी मदद मिलनी चाहिये।" गांधीजीकी आर्थिक समानताकी यही कल्पना है। वे ज़रूरतसे ज़्यादा किसी भी चीज़को रखनेका विरोध नहीं करते। मगर उसका नम्बर तभी आता है, जब कि ग़रीबोंकी ज़रूरतें पूरी हो जायँ। जो काम पहले करने लायक़ है, वह पहले किया जाना चाहिये।

वैध ट्रस्टीशिप

आजके धनवानोंको वर्ग-संघर्षके और स्वेच्छासे धनके ट्रस्टी बन जानेके दो रास्तोंमेंसे एकको चुन लेना होगा। उन्हें अपनी मिल्कियतकी रक्षाका हक़ होगा। उन्हें यह भी हक़ होगा कि अपने स्वार्थके लिए नहीं, बल्कि मुल्कके भलेके लिए दूसरोंका शोषण न करके वे धनको बढ़ानेमें अपनी बुद्धिका उपयोग करें। उनकी सेवा और उसके द्वारा होनेवाले समाजके कल्याणको ध्यानमें रखकर उन्हें निश्चित कमीशन भी राज्य देगा। उनके बच्चे अगर योग्य हुए, तो वे भी उस जायदादके रक्षक बन सकेंगे।

अखीरमें गांधीजीने कहा: "खयाल कीजिये कि कल हिन्दुस्तान आज़ाद हो जाता है, तो उस हालतमें सारे पूँजीपतियोंको अपने धनके वैध ट्रस्टी होनेका मौक़ा दिया जायगा। मगर ऐसा कोई विधान उन पर ऊपरसे लादा नहीं जायगा। वह नीचेसे आयेगा। जब लोग ट्रस्टीशिपके मानी समझ लेंगे और इसके लिए मुल्कमें वातावरण पैदा हो जायगा, तो लोग .ख़ुद ग्रामपंचायतोंसे शुरू करके ऐसा क़ानून बनायेंगे और उस पर अमल करेंगे। इस तरहकी बात जब नीचेसे पैदा होगी, तो सब उसे .ख़ुशी-.ख़ुशी मंज़ूर कर लेंगे। ऊपरसे लादनेमें वह जड़ चीज़के समान बोझिल मालूम होगी।

फ़र्क़ क्या है?

स०— आर्थिक समानताके मक़सदको हासिल करनेके लिए आपके तरीक़े और साम्यवादी या समाजवादी तरीक़ेमें क्या फ़र्क़ है?

ज०— साम्यवादियों और समाजवादियोंका कहना है कि आज वे आर्थिक समानताको जन्म देनेके लिए कुछ नहीं कर सकते। वे उसके लिए प्रचार भर कर सकते हैं। इसके लिए लोगोंमें द्वेष या वैर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अंग्रेज़की कठिनाई

फ्रेण्ड्स एम्बुलेन्स युनिटके एक सदस्यने गांधीजीसे कलकत्तेमें मिलकर कहा: "हम आप लोगोंके दोस्त बननेकी कितनी भी चाह लेकर आपके पास क्यों न आवें, आपकी पुरानी परम्परा आपसे चिपटी रहती है और आप हमें देखते ही बेक़ाबू हो उठते हैं।" और आगे चलकर वे कहने लगे: "मुझे लगता है कि आज किसी नौजवान बंगाली विद्यार्थीको अंग्रेज़ोंकी अच्छाईका विश्वास कराना दुराशामात्र होगी। अगर उसे इंग्लैण्ड भेज दिया जाय, तो मुमकिन है कि वह अंग्रेज़ोंकी भलाईमें भरोसा करने लगे।" उस समय हिन्दुस्तानके अत्यन्त क्षुब्ध वातावरणको देखकर उन सदस्यके मुँहसे निकल पड़ा था: 'क्या अंग्रेज़ोंके लिए यह अच्छा नहीं होगा कि वे आज सेवा-कार्य करनेके लिए हिन्दुस्तान न आवें, और अच्छे दिनोंका इन्तज़ार करें?'

गांधीजीने जवाब दिया: "हिन्दुस्तान ऐसे किसी भी दोस्तका ज़रूर स्वागत करेगा जो सच्चा है और हिन्दुस्तानियोंकी सेवा करनेके लिए आता है। लेकिन ऊपरसे दोस्तीका दम भरनेवाले और अन्दर श्रेष्ठताका ज़हर लेकर आनेवाले अंग्रेज़का हिन्दुस्तानमें कोई स्थान नहीं। हिन्दुस्तान जब आज़ाद हो जायगा तो उसे ऐसी मददकी ज़रूरत होगी। आपका कहना ठीक है कि हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ोंका विश्वास नहीं करते। हिन्दुस्तानी विद्यार्थियोंको हिन्दुस्तानसे इंग्लैण्ड भेज देने पर भी यह अविश्वास मिटेगा नहीं। आपको ख़ुद इसका सबब ढूँढ़कर इसे मिटाना होगा। इस अविश्वासकी जड़ें हिन्दुस्तानके इतिहासमें मौजूद हैं। मैं और स्वर्गीय चार्ली एण्ड्रूज घनिष्ठ मित्र थे। हमारे मनमें जो विचार उठते थे उन्हें हम एक-दूसरेसे कहे बिना न रहते थे। यहाँ तक कि उन्होंने हिन्दुस्तानी पोशाक भी अपना ली थी, जो भी इससे कभी-कभी वे लोगोंकी निगाहमें हास्यास्पदसे बन जाते थे। लेकिन उन पर भी लोगोंने शक किया। यहाँ तक कि उन्हें लोग 'जासूस' भी कहते थे। वे बड़े भावुक थे। लोगोंके इन झूठे आरोपोंसे उन्हें अपार दुःख हुआ और उन पर लोगोंको जो झूठा शक था, उसे मिटानेमें मुझे बड़ी कठिनाईका सामना करना पड़ा। मैंने इन आलोचकोंसे कहा: "अगर एण्ड्रूज जासूस हैं, तो मैं भी जासूस हूँ।" आख़ीरकार एण्ड्रूजकी शुद्धभावनाकी विजय हुई और लोगोंका शक दूर हुआ।

"पियर्सन, सी० एफ० एण्ड्रूजके शिष्य और दोस्त थे। उन पर भी हिन्दुस्तानियोंने शक किया था। स्टोक्सका भी यही हाल हुआ। उन्होंने अपने आपसे कहा: "अगर हिन्दुस्तानकी सेवा करनी है, तो मुझे पक्का हिन्दुस्तानी बन जाना चाहिये।" और उन्होंने एक राजपूत जाति की क्रिश्चियन लड़कीसे शादी की। नतीजा यह हुआ कि राजपूतोंने उनका बहिष्कार कर दिया। शुरू-शुरूमें सरकारने भी उन पर शक किया था। मगर उन्होंने धीरे-धीरे सरकार और हिन्दुस्तानी दोनोंके अविश्वासको अपने कार्योंसे दूर कर दिया।

"अगर सी० एफ० एण्ड्रूज, स्टोक्स और उनके जैसे लोगोंको भी अविश्वासके बीच काम करना पड़ा, तो हिन्दुस्तानी आप जैसे नये लोगों पर शक करें, इसमें कोई ताज्जुब नहीं। हिन्दुस्तानी अभी तक अंग्रेज़ोंको केवल शासक-जातिके ही सदस्य मानते रहे। ये अंग्रेज़ या तो बुज़ुर्ग बनकर आते और हिन्दुस्तानियोंको अपने आश्रित से समझते, या फिर कुछ ऐसी मग़रूरी दिखाते कि जिसका हिसाब नहीं। आम लोग ऐसे साम्राज्यवादी अंग्रेज़ों और अपने पूर्वजोंके किये हुए कामोंका प्रायश्चित्त करनेके लिए छटपटानेवाले, नई पीढ़ीके भले और नम्र अंग्रेज़ोंमें कोई भेद नहीं समझते। इसलिए अगर किसीमें क़ुरबानीकी आग नहीं है, तो मैं उससे कहूँगा: 'अभी हिन्दुस्तानमें मत आओ।' लेकिन अगर आपमें क़ुरबानीका माद्दा है, तो आपको अपने काममें कोई कठिनाई नहीं होगी। अगर आप अपनी धुनके पक्के हैं, तो लोग आपकी खरी क़ीमतको ज़रूर पहचानेंगे। फिर भी आपमेंसे जो लोग हिन्दुस्तानमें मौजूद हैं उन्हें लौट जानेकी कोई ज़रूरत नहीं।"

उन्हीं मित्रने चीनी सहकारी-संस्थाओंके 'इण्डस्को प्लान' के दोष भी गांधीजीसे कहलवा लिये। पहली बात यह है कि 'इण्डस्को' असाधारण समयकी उपज है। युद्ध और जापानी नाकेबन्दीके कारण दिन-दिन बढ़नेवाली चीनकी युद्ध-सामग्री-सम्बन्धी माँगने ही उसे जन्म दिया था। दूसरी बात यह है कि इण्डस्कोका संगठन उन विदेशी मिशनरियोंने किया था, जिनकी सेवाओंमें धर्मपरिवर्तन करानेकी गन्दी बू थी। गांधीजीने उनसे कहा: "अगर आप चीनी सहकारी-संस्थाओंकी नक़ल ही करना चाहते हों, तो आप हिन्दुस्तानमें बुरी तरह असफल होंगे। यहाँ आपको हिन्दुस्तानी क्रिश्चियनोंमें काम करना होगा। उनका स्वभाव, उनका चारित्र्य, उनका वातावरण बिलकुल भिन्न है। सहयोग वही कामयाब होता है जिसकी जड़ें गहरी पैठ जाती हैं। इसलिए आपको ख़ुद इस बात पर विचार करना होगा कि हिन्दुस्तानी स्वभाव और वातावरणके लिए किस प्रकारकी सहकारी-संस्थायें उपयुक्त होंगी। आज तो क्रिश्चियन धर्मको ग्रहण करनेवाले हिन्दुस्तानी भी उससे मुँह फेर रहे हैं।"

"'मुँह फेर रहे हैं' से आपका मतलब यह है कि मूल धर्मकी ओर लौट रहे हैं?"

"हाँ, मेरा कहनेका मतलब यह है कि वे सच्चे ईसाई धर्म और ईसा की ओर जा रहे हैं, न कि पश्चिमी ईसाई धर्मकी ओर। वे इस बातको महसूस करने लगे हैं कि ईसा एशियाई थे। इसको जान लेनेके बाद अब वे बाइबलको हिन्दुस्तानी आँखोंसे पढ़ने लगे हैं। आपको जे० सी० कुमारप्पाकी 'प्रैक्टिस एण्ड प्रिसेप्ट्स ऑव् ज़ीसस' नामकी किताबसे हिन्दुस्तानी ईसाई धर्मकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिये।

उरुळी, शनिवार, २३-३-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

सवाल-जवाब

स०—अगर मुक़ामी कांग्रेस-कमेटियोंका काम ढिलाईके साथ चलता हो, तो क्या किया जाय?

ज०—ऐसी हालतमें कांग्रेसका सच्चा सेवक अकेला या दूसरोंके सहयोगसे सेवाभावके साथ काम करता रहेगा। इस तरह काम करते हुए उसे जो यश मिलेगा उसको वह कांग्रेसके चरणोंमें चढ़ा देगा। अगर ऐसे बहुतसे सेवक खड़े हो जायँ, तो कांग्रेस दिन-दिन तरक़्क़ी करे; ढिलाईके साथ काम करनेवाले शरमिन्दा बनें, और सजग हो जायँ। और एक संस्थाके नाते कांग्रेस साफ़ और साबूत रहे। 'सेवाभावके साथ'का मैंने जानबूझकर इस्तेमाल किया है। मान और प्रतिष्ठाके लिए की गई सेवाके अच्छे परिणाम निकलने पर भी मुमकिन है कि उनका यश सेवक या कार्यकर्त्ताको मिले।

स०—अपने कार्यक्षेत्रसे बाहरकी किसी परिस्थितिका सामना करना ज़रूरी हो, तो उस हालतमें कांग्रेस-कार्यकर्त्ता क्या करे?

ज०—कार्यकर्त्ताओंका कार्यक्षेत्र उनकी कमज़ोरीके कारण सीमित और विभाजित किया जाता है। शक्तिशाली कार्यकर्त्ताके लिए तो समूचा हिन्दुस्तान ही उसका कार्यक्षेत्र है। इसलिए जिस समय जहाँ उसकी ज्यादा ज़रूरत होगी वहाँ वह सेवाके लिए पहुँच ही जायगा। चूँकि सब कोई उसकी सेवाकी क़द्र करते होंगे, इसलिए किसीको उसका वहाँ पहुँचना अखरेगा नहीं। अपने निश्चित क्षेत्रके बाहर झगड़ा होता देखकर कार्यकर्त्ताको जान जोखिममें डालकर भी उसको मिटना चाहिये। 'यह मेरा क्षेत्र नहीं है; मैं क्यों इसमें दखल दूँ?' इस तरहकी लचर और हँसीके लायक़ दलील देकर अगर वह दूर रहता है, तो यह उसकी नामर्दीकी निशानी मानी जायगी।

स०—क्या कोई एक ही आदमी अपनी आजीविकाके कामके साथ-साथ कांग्रेसका राजनीतिक, रचनात्मक, और संगठन-सम्बन्धी काम कर सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज० — एक साथ इन सब कामोंको करनेवाला आदमी इस ज़मानेका भीम ही माना जायगा। हो सकता है कि कोई एक ही आदमी अपने मातहत लायक़ मंत्रियों और कारकूनोंका दल रखकर इन सब कामोंको भलीभाँति कर सके। लेकिन पूछनेवालेका हेतु कुछ और है। कामका बँटवारा हमेशा ज़रूरी है। तमाम कामोंका इकहत्था इन्तज़ाम चाहने लायक़ नहीं। इससे संस्थाकी व्यवस्थामें रुकावट पैदा होती है। इंग्लैण्डमें जो तरीक़ा चलता है वह संस्थागत है, व्यक्तिगत नहीं। इसीलिए वहाँ यह कहावत मशहूर है: 'राजा मर गया, राजा अमर हो।' और यह कि, 'राजा कभी भूल नहीं करता।' निजी तौर पर राजा बदमाश हो सकता है, लेकिन संस्थाके प्रतिनिधिके नाते वह पूर्ण माना जाता है। यानी जिस समाजकी पूर्णताकी जैसी व्याख्या होती है उसके अनुसार वह पूर्ण होता है। मतलब यह कि किसी प्रगतिशील संस्थामें शुरू-शुरूमें उसको चलानेवाले आदमी सच्चे हों, तो उनकी अयोग्यता या कम योग्यताके कारण कोई नुक़सान नहीं होता। यह ज़रूरी है कि ऐसे लोग हमेशा अपने हितके बदले संस्थाके हितको तरजीह देनेवाले—उसे बढ़ानेवाले—होने चाहियें। अगर किसी ठगसे काम लिया जाय, तो संस्थाकी बागडोर उसके हाथमें होनेकी वजहसे संस्थाकी बदनामी होगी।

स० — अगस्त १९४२की वजहसे लोगोंकी मनोवृत्तिमें बहुत बड़ा फेर पड़ गया है। किसी कामको पूरा करनेके लिए लोग अब कांग्रेसके हुक्मकी राह नहीं देखते। इस हक़ीक़तसे लाभ उठाकर दूसरे पक्षवाले लोग अपना कार्यक्रम उनके ज़रिये पूरा कराते हैं। मुक़ामी कांग्रेस कमेटियाँ कुछ भी नहीं करतीं। अक्सर यह पाया जाता है कि कांग्रेस द्वारा तय की गई नीति या कार्यक्रमका अधूरा पालन होता है। जब तक ऊपरसे दबाव नहीं पड़ता, मुक़ामी कमेटियाँ इसके लिए कोई कोशिश नहीं करतीं। ऐसे समय कांग्रेसियोंको क्या करना चाहिये?

ज० — यह एक अच्छा सवाल है। अगर अगस्त १९४२के बाद कांग्रेसवाले अपनेआप काम करने लगे हों, तो वह बड़ी चीज़ होगी। लेकिन मैं इसे नहीं मानता। ख़ुद सोचनेवाला ही ख़ुद काम कर सकता है। ऐसा करनेमें उससे ग़लतियाँ भी हों, तो हर्ज़ नहीं। चलना सीखनेसे पहले बालक अक्सर गिरता है। अपने सामने आये किसी भी कार्यक्रममें शामिल हो जाना एक बात है, और निजी कोशिश करना दूसरी। अगस्त-प्रस्तावका रहस्य तो यह था कि जब कांग्रेसका कारोबार बन्द पड़ जाय, तब हरएक कांग्रेसी अपना नेता बन जाय: किसी दूसरे दल, पक्ष या आदमीकी चालबाज़ियोंका वह शिकार न बने।

इस सवालके पिछले हिस्सेसे भी यही बात साबित होती है कि १९४२ने कांग्रेसियोंको अपने तौर पर सोचना और काम करना नहीं सिखाया। अगर कांग्रेसवालोंने इस चीज़को सच्ची और अच्छी तरह सीखा होता, तो उन्होंने कांग्रेसकी वर्किंग कमेटी द्वारा तय किये कार्यक्रमको दिलसे अपनाया होता और तमाम सूबा-कमेटियों और मातहत कमेटियोंने उसमें इस तरह पूरा-पूरा हाथ बँटाया होता, मानों सारी कांग्रेस एक ही शरीर और प्राणकी तरह काम कर रही हो। १९४२में मैंने यह उम्मीद रक्खी थी, लेकिन वह पूरी नहीं हुई। इतिहास इसका साक्षी है। जनताके लिए यह ज़रूर गौरवकी बात रही कि सरकारकी व्यापक दमन-नीतिसे वह दबी नहीं और जिस तरह उसे सूझा उसने उसका मुक़ाबला किया। लोग अगस्त-प्रस्तावकी अहिंसक नीति पर डटे रहे होते, तो हम बहुत आगे बढ़ जाते। अगर मेरी यह दलील सच हो, तो इसका यही एक मतलब निकलता है कि समझदार कांग्रेसियोंको इस झंझटमें न पड़ना चाहिये कि उनके पास-पड़ोसवाले क्या करते हैं, बल्कि ख़ुद कांग्रेसके प्रस्तावों पर पूरी तरह अमल करना चाहिये। जब-जब किसी संस्थाका काम रुक जाता है, तो उस संस्थाके तईं वफ़ादार हरएक आदमी संस्थाके कामके लिए ज़िम्मेदार बनता है और वह फिरसे उस संस्थाको धीरे-धीरे आगे बढ़ाता है।

स० — जो हड़तालें छुट-फुट और अचानक की जाती हैं, और कांग्रेस जिनकी हिमायत नहीं कर सकती, उन हड़तालोंको कांग्रेसी किस तरह ख़त्म करायें?

ज० — पहली बात तो यह है कि अगर कांग्रेसका काम सब जगह फैला हुआ और अच्छी तरह गँठा हुआ हो, तो ऐसी हड़तालें हों ही नहीं। जो हों, वे ग़ैरवाजिब मानी जायँ। सुसंगठित कांग्रेस जिस हड़तालका ज़िम्मा लेगी, वह वाजिब ही होगी। लेकिन दुर्भाग्यसे क़िस्मतीसे ताक़तवर होते हुए भी आज कांग्रेस इतने ऊँचे दर्जे तक नहीं पहुँच पाई है। इसलिए हड़ताल करानेवाले पक्षका विचार किये बिना हड़तालके गुण-दोषका विचार करना मुनासिब होगा। गुण-दोषका विचार करनेके बाद अगर कोई हड़ताल अनुचित मालूम पड़े, तो कांग्रेसका और जनताका फ़र्ज़ हो जाता है कि वह उसकी निन्दा करे। नतीजा यह होगा कि हड़ताली वापस काम पर चले जायँगे। अगर हड़ताल वाजिब साबित हो, तो जिस संस्थाके ख़िलाफ़ वह की गई हो, कांग्रेस और जनताको उसकी इस तरह निन्दा करनी चाहिये जिससे वह संस्था दूसरे मज़दूर ला न सके और आपत्तिजनक साधनोंसे हड़तालियोंको दबा न सके।

उरुळी, २३-३-'४६

('हरिजन' से)

मोहनदास करमचंद गांधी

अकाल और जन-संख्या

स० — इण्डिया ऑफिस मेडिकल बोर्डके सभापति मेजर जनरल सर जॉन मैकगॉका कहना है कि "अकाल तो हिन्दुस्तानमें पड़ते ही रहेंगे। सच तो यह है कि हिन्दुस्तानके सामने अखण्ड अकाल मुँह बाये खड़ा है। अगर हिन्दुस्तानमें बढ़ती हुई जन-संख्याको घटानेकी कोशिश न की गई, तो उसे ज़बरदस्त मुसीबतका सामना करना पड़ेगा।" क्या इस गम्भीर सवाल पर आप अपनी राय ज़ाहिर करेंगे?

ज० — मेरे खयालमें अकालके ऐसे उथले कारण देकर उसका जो सच्चा और एकमात्र कारण है, उस परसे हमारे ध्यानको हटा दिया जाता है। मैं कई दफ़ा कह चुका हूँ और फिर कहता हूँ कि हिन्दुस्तानके अकाल क़ुदरतकी ख़फ़गीसे नहीं, बल्कि सरकारी हाकिमोंकी लापरवाहीसे जाने-अनजाने पैदा होनेवाली मुसीबत है। अगर आदमी कोशिश करे और अक़लसे काम ले, तो अकालोंको रोकना मुश्किल नहीं। दूसरे देशोंमें अकालको रोकनेकी ऐसी कोशिशें कामयाब हुई हैं। लेकिन हिन्दुस्तानमें इस तरह लगातार सोच-समझकर कोई कोशिश की ही नहीं गई।

बढ़ती हुई जन-संख्याका हौवा कोई नई चीज़ नहीं। अक्सर वह हमारे सामने खड़ा किया गया है। जन-संख्याकी वृद्धि कोई टालने लायक़ संकट नहीं; न होना चाहिये। उसे कृत्रिम उपायोंसे रोकना एक महान् संकट है। फिर चाहे हम उसे जानते न हों। अगर कृत्रिम उपायोंका उपयोग आम तौर पर होने लगे, तो वह समूचे राष्ट्रको पतनकी ओर ले जाय। ख़ुशी इस बातकी है कि इसकी कोई सम्भावना नहीं। एक ओर हम विषय-भोगसे पैदा होनेवाली अनचाही सन्ततिका पाप अपने सिर ओढ़ते हैं, और दूसरी तरफ़ ईश्वर उस पापको मिटानेके लिए हमें अनाजकी तंगी, महामारी और लड़ाईके ज़रिये सज़ा करता है। अगर इस तिहेरे शापसे बचना हो, तो संयमरूपी कारगर उपायके ज़रिये अनचाही सन्ततिको रोकना चाहिये। देखनेवालोंको आज भी यह दिखाई पड़ता है कि कृत्रिम उपायोंके कैसे बुरे नतीजे होते हैं। नीतिकी चर्चामें पड़े बिना मैं यही कहा चाहता हूँ कि कुत्ते-बिल्लीकी तरह होनेवाली इस सन्तान-वृद्धिको ज़रूर रोकना चाहिये। लेकिन इस बातका खयाल रखना होगा कि ऐसा करनेसे उसका ज़्यादा बुरा नतीजा न निकले। इस बढ़ती हुई प्रजोत्पत्तिको ऐसे उपायोंसे रोकना चाहिये, जिनसे जनता ऊपर उठे; यानी इसके लिए जनताको उसके जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली तालीम मिलनी चाहिये, जिससे एक शापके मिटते ही दूसरे सब अपने आप मिट जायँ। यह सोचकर कि रास्ता पहाड़ी है और उसमें चढ़ाइयाँ हैं, उससे दूर नहीं भागना चाहिये। मनुष्यकी प्रगतिका मार्ग कठिनाइयोंसे भरा पड़ा है। उनसे डरना क्या? उनका तो स्वागत करना चाहिये।

पूना, १९-३-'४६

('हरिजन' से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूतका सिक्का

"देहातमें खादीको गाँवोंमें चलनेवाले उद्योग-धन्धोंके सूर्यका स्थान देकर देहातके घर-घरमें उसका प्रकाश फैलानेकी इच्छा रखनेवाले कार्य-कर्ताओंको इतना तो करना ही चाहिये :

अपने गाँवमें खादीका केन्द्र हो, तो उसके जरिये सूतके सिक्केका रिवाज शुरू करें और अपने केन्द्रमें जहाँ-जहाँ रुपया-आना-पाईमें हिसाब लिखा या किया जाता हो, वहाँ-वहाँ उसकी जगह सूतके सिक्केको चलानेका काम शुरू करें और करावें।

रुई, पूनी, खादीकी बिक्री, इनकी मजदूरी वगैरा सभी सूतके सिक्के द्वारा दें और हिसाब भी सूतके सिक्केमें ही लिखें।

गाँवके लोगोंका सहयोग हासिल करके साग-सब्जी, दूध, गुड़, घी, तेल, मिट्टीके बरतन वगैरा चीजोंके लिए सूतके सिक्केका प्रचार बढ़े, तो धीरे-धीरे अनाज वगैरा भी इस सिक्केसे मिल सकता है।

गाँवकी आम रिआया जिस क़िस्मके कपड़ेका इस्तेमाल करती हो, उसको नजरमें रखकर उस नम्बरके सूतको ही सिक्केके तौर पर शुरू करें, ताकि उस से तैयार किया हुआ कपड़ा उसी जगह बिक जाय। जहाँ मुमकिन हो, वहाँ दुबटे सूतका रिवाज शुरू किया जाय।

सिक्केका कोष्टक इस तरह रक्खें :

४ फुट = १ तार
६० तार = १ लच्छी
४ लच्छी = १ बीसी
१० बीसी = १ दिवस

गाँववालोंके सहयोगसे सूतके सिक्केकी जाँच-पड़तालके लिए भरोसेके किसी आदमीकी नियुक्ति की जानी चाहिये, और उसके जिम्मे सूतकी क़िस्म, सूतके तारोंकी गिनती, सूतका कपड़ा बुनवानेकी व्यवस्था और खादीकी जात वगैरा पर निगरानी रखनेका काम सौंपा जाना चाहिये। अगर गाँववाले चाहें, तो गाँवमें खादी-केन्द्र चलानेवाला ग्राम-सेवक ही इस कामको भी सँभाल सकेगा।

सूतके सिक्केके इस कोष्टकका हेतु साफ़ तौरसे लोगोंके ध्यानमें आ जायगा। उसका खास फ़ायदा और मक़सद यह है कि एक मामूली बहन भी एक घण्टेमें एक बीसी यानी २४० तार सूत आसानीसे कात सकती है, इसलिए उसे बीसीका ठीक खयाल आ जायगा और पूरे दिनके लिए दस बीसीके दिवसको भी वह समझ जायगी।

कपड़ेकी बुनाईका हिसाब अटपटा है। वह जरा मुश्किलसे गाँववालोंके गले उतरेगा। गाँववालोंको यह हिसाब लगानेमें परेशानी होती है कि कितनी गुण्डियोंसे कितने गज कपड़ा बनेगा या कितने सेर सूतसे कितना कपड़ा तैयार होगा। इसलिए १०० बीसी सूतका कपड़ा भी १०० बीसी ही हो। उस हालतमें लम्बाई-चौड़ाई और रुपये-आनेके साथ उसका सम्बन्ध रखनेकी जरूरत नहीं। इसमें धोखा देने और चोरी करनेकी भी बहुत गुंजाइश नहीं रहती। इसी तरह गाँवके जुलाहों या बुनकरोंका सूत-पारखीके साथ रात-दिनका जो सम्बन्ध रहेगा, उससे भी प्रामाणिकता पर जोर पड़ेगा।

ग्राम-सेवक देखेगा कि एक हजारकी आबादीवाले गाँवमें हर साल कम-से-कम २०,०००) बीस हजार रुपयोंका मिलका कपड़ा आता है। वह गाँवको इस खर्चेसे बचा लेगा। इसके सिवा, गाँववालोंके आपस-आपसके लेन-देनमें कपड़ेके मुक़ाबले कितना ज्यादा रुपया खर्च होता है, सो भी वह जान लेगा और सूतके चलनकी मददसे इस चीजको भी मिटा देगा।

गाँवमें पैदा होनेवाले कच्चे माल और लोगोंकी मजदूरी वगैराको बेचने पर ही रुपया गाँवमें आता है और फिर वही तैयार या पक्का माल खरीदनेमें बाहर चला जाता है। इस तरह आते-जाते दोनों वक़्त गाँव को चूसनेका काम बराबर जारी रहता है। इतना होने पर भी गाँवके उद्योग-धन्धे जिन्दा नहीं रह पाते, बल्कि लोगोंमें आलस्य, व्यसन और फ़ज़ूल-खर्ची बढ़ती जाती है। इससे उनका नैतिक अधःपतन भी होता रहता है। ऐसा मालूम होता है कि सूतका सिक्का इस रोगकी दवा है।

दूसरे, गाँवके ग़रीब लोग पासमें पैसा न होनेकी वजहसे वे अपने पास-पड़ोसके बच्चोंके लिए न तो दूध खरीद सकते हैं, न साग-सब्जी, फल वगैराके जैसी उपयोगी चीजें ही खरीद पाते हैं। और ये चीजें या तो शहरोंके पास चली जाती हैं या ग़रीबोंको साहूकारोंसे क़र्ज लेकर खरीदनी पड़ती हैं। सूतके सिक्केका चलन उन्हें इस मुसीबतसे बरी करता है।

आज अपने बच्चोंके लिए दूध, साग, सब्जी या फल वगैरा खरीदनेके लिए ग़रीब माताओंको सरकारी टकसालका मुँह ताकना पड़ता है, और इस टकसालके उन एजण्टोंका दबैल होना पड़ता है, जो हर गाँवमें फैले पड़े हैं। वे छटपटा कर रह जाते हैं। उनको अपनी ठीक क़ीमत पानेके लिए भी गिड़गिड़ाना पड़ता है। इससे पता चलता है कि हमारी गुलामी कितनी गहरी है। चुनांचे घर-घर टकसाल और घर-घर स्व-राज्य क़ायम करनेके लिए सूतके सिक्केका चलन एक उत्तम उपाय है। इस नये सिक्केको चलानेकी कोशिश करनेके बाद ग्राम-सेवक देखेगा कि उसके गाँवका तेज बढ़ा है और खादीके इस आर्थिक पहलूका विकास हुआ है।

आत्माराम शर्मा"

यह साहस अभी प्रयत्नके क्षेत्रमें है। एक गाँवमें भी यह सफल हो जाय, तो इसका वेग बढ़े। अभी तो इसे नमूनेके तौर पर यहाँ देता हूँ।

पूना

मोहनदास करमचंद गांधी

टिप्पणियाँ

बरबादी

खबरों पर खबरें चली आ रही हैं कि खाने-पीनेके सामानका जो ज़खीरा था, वह आदमियोंके इस्तेमालके लायक़ नहीं रहा और फेंका जा रहा है। बिना मक्खनवाले दूधकी गाहकी न होनेकी वजहसे वह फेंका जा रहा है, और गाढ़ा किया हुआ दूध जहाजलतकी वजहसे निकम्मा पड़ा है। बन्दरगाहों पर अनाज जमा करनेसे मुसीबत कम नहीं होगी, जब तक जहाँ उसकी फ़ौरन ज़रूरत है, वहाँ उसे तुरन्त पहुँचाया न जाय। इससे भी खराब तो यह तिहेरी बरबादी है, जो बढ़ते हुए अकालकी इस हालतमें आज की जा रही है। यह सब बरबादी इसीलिए होती है कि हुकूमत और जनताके बीच कोई सीधा-जीता-जागता-लगाव नहीं है।

उरुळी, २४-३-'४६

('हरिजन' से)

हाथ-कताई और हाथ-बुनाई

श्री जाजूजी लिखते हैं कि एक तरफ़ तो हाथ-कते सूतका ढेर लगता जाता है, और दूसरी तरफ़ जुलाहे मिलका ही सूत बुनते हैं; हाथका छोड़ते चले जाते हैं। जुलाहोंमें 'हरिजन' पढ़नेवाले तो बहुत ही कम हैं। उन्हें कोई पढ़कर सुनावे, तो उसमें भी वे दिलचस्पी नहीं लेते। इसलिए उन जुलाहोंको समझानेका काम चर्खा-संघमें काम करनेवाले सेवकोंका है। वे जुलाहों या बुनकरोंको समझायें कि हाथ-कते सूतको बुनना छोड़कर वे .खुद ही अपने हाथ काटते हैं; क्योंकि मौक़ा मिलने पर मिलवाले तो .खुद ही अपने सूतको बुनने लगेंगे। उनका धन्धा पैसा कमानेके लिए है, परोपकारके लिए नहीं। इसलिए जिससे ज़्यादा पैसे मिलें, वही काम वे करेंगे। इसी ग़रज़से कातनेकी मिलें खड़ी हुईं और इसीकी वजहसे बुननेकी मिलें भी बनीं। इसलिए अब हाथकी बुनाईके बन्द होनेकी बारी है। हाथ-बुनाईका सच्चा आधार हाथ-कताई ही है। इसी तरह हाथ-कताईका मदार हाथ-बुनाई पर है। ये दोनों साथ-ही-साथ चलनी चाहिये। सेवकोंको चाहिये कि वे ज्ञानपूर्वक और प्रेमसे यह चीज़ जुलाहोंको सिखायें। साथ ही, प्रेम और ज्ञानका यह तक़ाज़ा है कि वे उनकी मुश्किलोंको भी जान लें, और उन्हें दूर करनेके उपाय सीख लें। उन मुश्किलोंको दूर करनेका तरीक़ा श्री विनोबाने सुझाया है। सूतको कुकड़ी परसे उतारते वक़्त ही दुबटा करते जाना चाहिये। अनुभव कहता है कि ऐसा करनेसे हाथका कता हुआ दुबटा सूत मिलके सूत-जैसा ही काम देता है। अगर यह चीज़ सब जगह चल जाय, तो बुनाईके लिए दुबटे हाथ-कते सूतके सिवा दूसरे सूतका मिलना ही बन्द हो जाय। दूसरे, मैंने तो जेलसे बाहर निकलते ही पुकार-पुकार कर कहा है कि जिस तरह खादीके सेवक .खुद कातते थे, इसलिए वे कातनेवालोंको कातना सिखा सके, उन पर असर डाल सके और उनकी अड़चनोंको दूर कर सके, उसी तरह अब सेवकोंको बुनना भी सीख लेना चाहिये, और रोज़ बुनना चाहिये, जिससे वे उसमें रहनेवाली मुश्किलोंको समझ सकें और उनको दूर करनेका तरीक़ा भी बता सकें।

उरुळी, २४-३-'४६

('हरिजनबंधु' से)

मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अ० भा० ग्रामोद्योग-संघके समाचार

अखिल भारत-ग्रामोद्योग-संघके प्रबन्धक मण्डलके कार्य-विवरणसे नीचे कुछ समाचार दिये जाते हैं :

१. ३१ दिसम्बर १९४५ तक अखिल भारत-ग्रामोद्योग-संघके सदस्योंको 'ग्रामोद्योग पत्रिका' मुफ़्त मिला करती थी। लेकिन चूँकि इधर उसका खर्च बढ़ गया है, इसलिए यह सुझाया गया है कि संघके जो सदस्य कहीं-न-कहीं संघके प्रत्यक्ष काममें लगे हैं, उनको छोड़कर बाक़ी सब सदस्योंसे आधा चन्दा वसूल किया जाय।

२. मण्डलकी पिछली बैठकसे लेकर अब तक नीचे लिखी किताबें प्रकाशित की जा चुकी हैं :

१. ताड़गुड़
२. मगनवाड़ीके हृदय
४. साबुनसाज़ी
५. धोतीजामा

३. श्री० भारतन कुमारप्पाने सहायक मंत्रीके अपने कामसे मुक्त होनेकी इच्छा प्रकट की है। बोर्डने उनके इस्तीफ़ेको बहुत खेदके साथ मंज़ूर किया है। दस सालकी उनकी बहुमूल्य सेवाओंके बाद अखिल भारत-ग्रामोद्योग-संघ उनकी कमीको बहुत महसूस करेगा।

४. यह सुझाया गया है कि शिन्दी गाँवमें कस्तूरबा कोषकी देखरेखमें या स्वतंत्र रीतिसे देहातियोंके लिए एक स्वास्थ्यकेन्द्र शुरू किया जाय।

('हरिजन'से) अ० कुं०

आज़ाद हिन्द फ़ौजवालोंके लिए

पिछले दिनों जब गांधीजी बम्बईमें थे, मेजर जनरल शाहनवाज़ और कर्नल सहगल उनसे मिले थे और उन्होंने आज़ाद हिन्दफ़ौज़के छूटे हुए सिपाहियोंके भविष्यके बारेमें गांधीजी के साथ तफ़सीलवार बातचीत की थी। उन्होंने कहा कि आज़ाद हिन्द फ़ौजके लोग अहिंसक तरीक़ेसे देशकी उत्तम सेवा करनेको आतुर हैं, लेकिन अगर उनको मुल्की कामोंमें ठीकसे लगाया नहीं गया, और उनकी ठीक रहनुमाई न की गई, तो डर है कि स्वार्थी लोग या संस्थायें उनको बहका कर ग़लत रास्ते ले जायँ और उनसे अनुचित फ़ायदा उठायें। उन्होंने पूछा कि इन फ़ौजियोंको किन आदर्शोंके अनुसार काम करना चाहिये। इस पर गांधीजी ने अपनी उसी सलाहको दोहराया, जो उन्होंने आज़ाद हिन्द फ़ौजके छूट कर आये हुए कुछ लोगोंको, जो उनसे मिलने आये थे, मद्रासमें दी थी। गांधीजीने उनसे कहा था कि एक सिपाहीके लिए लोगोंके दिये दान पर जीना उसकी इज़्ज़त और शानके खिलाफ़ चीज़ है — होनी चाहिये। उनको अपने सामने खरे पसीनेकी रोटी कमानेका आदर्श रखना चाहिये। आज़ाद हिन्द फ़ौजकी मददके लिए इकट्ठा किया गया कोष जो भी मौजूद है, तो भी उसका उपयोग लोगोंको घर बैठे खिलानेमें न किया जाना चाहिये — वैसा करना ग़लत होगा। गांधीजीने उनसे कहा कि दक्षिण अफ्रीकामें उन्होंने सत्याग्रही क़ैदियोंके घरवालोंको मदद पहुँचानेके लिए उन सबको टॉल्स्टॉय फ़ॉर्ममें बसा लिया था, जहाँ वे अपनी-अपनी ताक़तके मुताबिक़ मेहनत-मज़दूरी करते थे। इस तरह लोगोंको मदद पहुँचानेमें फ़ायदा यह होता है कि इस चीज़को हम जितना चाहें, बढ़ा सकते हैं, और इसमें न ज़्यादा खर्च पड़ता है, न ज़्यादा बोझ बढ़ता है। गांधीजीने उनसे कहा कि आज़ाद हिंद फ़ौजकी सच्ची कसौटी तो अब होनेवाली है। लड़ाईके मोर्चे पर उनके सामने रोमांचकारी उत्तेजना थी। नागरिक जीवनमें वैसी कोई बात नहीं रहेगी। आज देशके सामने अकालका भूत मुँह बाये खड़ा है। लड़ाईके मैदानमें उन्होंने जिस साहस, संगठन, हेलमेल, अडिगता, और साधनसम्पन्नताका परिचय दिया था, क्या अकालके इस भूतसे लड़नेमें भी वे इन्हीं सब गुणोंका परिचय देंगे? जिस तन-देही, उस्तादी और होशियारीसे उन्होंने बन्दूकें चलाई थीं, क्या फावड़ा, कुदाली और खुरपी चलानेमें भी वे अपने इन्हीं गुणोंसे काम लेंगे? आज देशको कुएँ खुदवाने, बंजर और पथरीली ज़मीनको उपजाऊ बनाने, चरखे चलाने और करघों पर कपड़ा बुननेकी ज़रूरत है, ताकि भूखोंको अन्न नंगोंको कपड़ा दिया जा सके। क्या वे देशकी इन ज़रूरतोंको करेंगे? वे ... रसे हटे-कटे हैं, अनुशासन या निज़ामको समझते और सबसे बड़ी बात यह है कि उनमें एक साथ, हिलमिलकर करनेका माद्दा मौजूद है और वे तंग फ़िरक़ापरस्तीसे दूर हैं। सब ऐसी बातें हैं जिनकी वजहसे वे आम जनतामें अहिंसक अनु... और संगठनको दाखिल करनेका काम निहायत ख़ूबीके साथ कर सकें।

आज़ाद हिन्द फ़ौजका हरएक सिपाही, जो काम करना चाहे और दरअसल सिपाही है, रचनात्मक कामोंमें सहज ही शरीक हो सकता है। अगर वे रचनात्मक कामको अपना लें, तो उनमेंसे किसीको बेकार होने या रहनेकी कोई ज़रूरत ही न रह जाय।

आज़ाद हिन्द फ़ौजके सिपाहियोंके लिए जिस वक़्त गांधीजी नमूनेदार कार्यक्रम सुझा रहे थे, उस वक़्त बरबस मुझे एक राष्ट्रीय सेनाकी याद आ रही थी, जो इतिहासमें अपना नाम कर गई है। एक मशहूर अंग्रेज़ इतिहास-लेखकने इस सेनाका, जो क्रॉमवेलकी फ़ौलादी सेनाके नामसे मशहूर थी, इस तरह वर्णन किया है:

"इन शान्त, नीतिमान, परिश्रमी और विचारशील लोगोंने शस्त्र धारण करनेका निश्चय इसलिए नहीं किया था कि उन्हें कोई ... सता रहा था, या कि वे नवीनता और स्वच्छन्दताके प्रेमी थे, या कि वे रँगरूट भरती करनेवाले अफ़सरोंके भुलावेमें, उनकी मीठी-मीठी बातोंमें आ गये थे। नहीं, उन्होंने तो धार्मिक और राजनीतिक उत्साहके कारण ही ऐसा किया था और साथ ही उनमें कुछ नाम कमाने और ता... पानेकी भी इच्छा रही थी। इन सिपाहियोंको इस बातका गर्व था कि वे महज़ 'जाँनिसारों'में नहीं थे, बल्कि ऐसे स्वतंत्र-जन्मा अंग्रेज़ थे जिन्होंने इंग्लिस्तानकी आज़ादी और उसके धर्मके लिए अपने प्राणोंको संकटमें डाला था और जिनका यह हक़ और फ़र्ज़ था कि वे राष्ट्रके हितकी निगरानी रक्खें जिसको उन्होंने बचाया था।

* * *

"लड़ाईके मैदानमें इस अजीब फ़ौजका मुक़ाबला करना मुश्किल था। . . . दूसरे नेताओंने भी ऐसी कड़ी व्यवस्था रक्खी है, ... नेताओंने अपने अनुयायियोंमें इतना ही तीव्र उत्साह उत्पन्न किया है, लेकिन अकेले क्रॉमवेलकी ही एक सेना थी, जिसमें अतिशय कड़े अनुशासनके साथ-साथ सैनिकोंमें भीषण-से-भीषण उत्साह पाया जाता था। उसकी फ़ौजें मशीनकी-सी चौकसाईके साथ विजय पर विजय प्राप्त करती जाती थीं और उनमें धर्मके लिए लड़नेवालोंका-सा भयंकर उन्माद पाया जाता था।

"लेकिन दूसरी फ़ौजोंके मुक़ाबले क्रॉमवेलकी फ़ौजोंकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि उसके हरएक सैनिकमें कठोर नैतिकताके साथ ईश्वरका भय व्याप्त था। . . . वही एक ऐसी फ़ौज थी, जिसमें कभी कोई सौगन्ध या शपथ नहीं लेता था, न कोई शराब पीता था, न जुआ खेलता था; इस फ़ौजके लम्बे शासनमें शान्तिप्रिय नागरिकोंकी सम्पत्ति और स्त्रियोंका शील पवित्र माना जाता था। . . ."

आगे वही इतिहास-लेखक लिखता है कि इस सेनाको सबसे बड़ी विजय लड़ाईके मैदानमें नहीं, बल्कि लड़ाई खतम हो जानेके बाद मिली थी:

"अब फ़ौजोंको फ़ौजी कामसे छुट्टी देनी थी। हथियार चलानेके आदी बने हुए पचास हज़ार आदमी एकदम मामूली आदमियोंके ... मिला दिये गये। अनुभव यह विश्वास करनेको कहता था कि इसकी वजहसे कई तरहकी मुसीबतें और आफ़तें पैदा होंगी। गुनाहोंकी तादाद बढ़ जायगी; फ़ौजसे हटाये गये लड़वैये गली-गली भीख माँगते नज़र आयेंगे; और ... कि भूखकी वजहसे वे लूट-मार करने पर उतारू हो जायँगे। लेकिन ऐसी कोई बात नहीं हुई। कुछ ही महीनोंके अन्दर इस बातका कोई नाम-निशान भी न रह गया कि दुनियाकी एक ज़बरदस्त फ़ौज हाल ही देशके ... करोड़ोंमें घुलमिल कर एक हो गई है। ख़ुद उस वक़्तके रॉयलिस्टोंने ... मंज़ूर किया कि फ़ौजसे हटाये गये फ़ौजियोंने सब तरहके प्रामाणिक ... धन्धोंमें दूसरे आदमियोंके मुक़ाबले ज़्यादा तरक़्क़ी की; उनमेंसे किसी पर कभी चोरी या डाकेकी कोई तोहमत नहीं लगी, कभी कोई भीख माँगता हुआ नहीं पाया गया, और अगर कहीं कोई भटियारा, राज या ठेलेवाला अपनी मेहनत और संयत जीवनके कारण लोगोंका ध्यान खींचता, तो लोग आम तौर पर यह मानते कि हो-न-हो वह ऑलीवर क्रॉमवेलके पुराने सिपाहियोंमेंसे ही कोई होगा।"

पूना, २०-३-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम प्रार्थना करें

रजि॰ नं॰ बी ४४४८

हरिजन-सेवक

तीन आना
१६ पृष्ठ

संपादक : प्यारेलाल

भाग १०] [अङ्क १०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता॰ १४ अप्रैल, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु॰ ६,
विदेशमें रु॰ ८, शि॰ १४

विषय-सूची

विषय		लेखक	पृष्ठ
स्वावलम्बी खादी बनाम व्यापारी खादी	...	गांधीजी	७७
आये हुए पत्रोंसे	...	अमृतकुँवर	७८
साप्ताहिक पत्र	...	प्यारेलाल	७८
वनस्पति और घी	...	गांधीजी	७९
हम प्रार्थना करें	...	गांधीजी	८०
नाममें क्या रक्खा है ?	...	गांधीजी	८०
मंत्री-सम्बन्धी गांधीजीका आदर्श-२	...	प्यारेलाल	८१
कचरेमेंसे सोना	...	मीराबहन	८३
दो महत्त्वके प्रयोग	...	प्यारेलाल	८४
क़रीब चार साल बाद	...	अमृतकुँवर	८५
खादी प्रेमियोंके जानने योग्य	...	गांधीजी	८७
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	८८
आज़ाद हिन्द फ़ौजका सन्देश	...	प्यारेलाल	८९
हमारी शर्म	...	प्यारेलाल	९०
गुजरात हिंदुस्तानी प्रचार समिति	...	गांधीजी	९१
हमारी नीति क्या है ?	...	गांधीजी	९२
हरिजन व आदिवासी बालिकाओंके लिए छात्रवृत्तियाँ	...		९२
टिप्पणियाँ			
रामनाम	...	मो॰ क॰ गांधी	८०
हरिजनके साथ भोजन	...	मो॰ क॰ गांधी	८९
मंत्रियोंकी तनख्वाह	...	मो॰ क॰ गांधी	८९
कस्तूरबा कोढ़-निवारक-कार्य	...	मो॰ क॰ गांधी	८९

स्वावलम्बी खादी बनाम व्यापारी खादी

यह झगड़ा हमींने पैदा किया है। हम खादी-शास्त्र जानते नहीं थे। अब भी पूरी तरह नहीं जानते। यही कारण है कि बालककी तरह गिरते-पड़ते आगे बढ़ते हैं, यानी चलना सीखते हैं। बिलकुल पड़े ही रहे हैं, इस ग़रज़से चलना सिखानेवाली गाड़ीका भी हमने उपयोग किया है, और आज भी करते हैं। अपनी इस कमज़ोरीका पता लगनेके बाद तो चरखा-संघको जी तोड़ कोशिश करके अपने सच्चे रूपको सिद्ध करना होगा या मिट जाना होगा। चरखा-संघसे मतलब है, वे सब कार्यकर्त्ता जो संघका काम करते हैं, और आखिरकार वे सब लोग कि जो कातते हैं। याद रहे कि कातनेवालोंको उनके पैरों खड़ा करना और उनके कामोंके मारफ़त हिन्दुस्तानकी आज़ादी हासिल करना चरखा-संघका उद्देश्य या मक़सद है, और होना चाहिये। इस बातकी फ़िक्र हम कम करें कि इस उद्देश्यको हम कभी सिद्ध नहीं कर सकते। यह समझकर कि यह उद्देश्य सच्चा है, खादीकी प्रवृत्ति पैदा हुई है। इसलिए इस उद्देश्य तक पहुँचनेमें जितनी भी भूलें हुई हों, उन्हें दुरुस्त करके हमें आगे बढ़ना है। इसीमें शास्त्रीयता भी समाई हुई है। कोई भी शास्त्र पूरी तरह आसमानसे ही उतरकर नहीं आया है। सभी शास्त्र अनुभवसे सुधरते जाते हैं और बनते जाते हैं। जिनको सम्पूर्ण माना जाता है, वे शास्त्र नहीं। सम्पूर्णता तो पूर्ण मनुष्यके लिए यानी उसके बनाये शास्त्रके लिए भी असंभव है। खगोल-शास्त्रको लीजिये। हम देखते हैं कि उसमें सुधार होते ही रहते हैं। बहुत-सी ग़लतियाँ हुई हैं। उन ग़लतियोंको सुधारा गया है और आज भी वे सुधर रही हैं। यही बात खादी-शास्त्रके बारेमें कही जा सकती है। अगर इस बातको ठीकसे समझकर याद रक्खा जाय और निर्भयताके साथ इसका अमल किया जाय, तो जो सवाल पूछा गया है उसका जवाब फ़ौरन ही दिया जा सकता है। कातनेवालेको कताईसे पहलेकी सब क्रियायें ख़ुद कर लेनी चाहिये। और उसके बादकी भी यानी खादी बुनने तककी सभी क्रियायें उसे सीख लेनी चाहिये। यह स्वराज्यका रास्ता है। आज तक हम जाने-अनजाने व्यापारी खादी ही पैदा करते रहे हैं, गोकि उसमें भी स्वराज्यकी भावना भरी गई है। यह भावना न भरी गई होती तो व्यापारी खादी भी न चलती। और मुमकिन है कि स्वराज्यकी खादी तो सपना ही बनी रहती। व्यापारी खादी हमको चलना सिखानेवाली 'चन्दनगाड़ी' थी और आज भी है। और कातनेवालोंके लिए दूसरोंसे पिंजवाना वग़ैरा छोटी 'चन्दनगाड़ियाँ' थीं, और हैं। जैसे-जैसे हम इन 'चन्दनगाड़ियों'को छोड़ते जाते हैं, वैसे-वैसे स्वराज्यकी खादी पैदा करते जाते हैं। चरखा-संघके जिन मीग़ोंमें आज व्यापारी खादी पैदा की जाती है और उनके सिलसिलेमें पिंजाई वग़ैराका काम अलगसे किया जाता है, वह सब आज बन्द हो सकता हो, तो बन्द करना चाहिये। वग़ैर समझौतेके इन्सानके सब काम चल नहीं पाते, इसलिए यही कहा जा सकता है कि जितनी जल्दी ये 'चन्दनगाड़ियाँ' छोड़ी जा सकें, उतनी जल्दी छोड़ दी जानी चाहिये। जिसे ज़्यादा श्रद्धा होगी, और जो इस कामको करना जानता होगा, वह सबसे पहले छोड़ेगा। जहाँ हम सच्चे दिलसे डटकर कोशिश करते हैं, वहाँ होड़ाहोड़ीका सवाल पैदा नहीं होना चाहिये।

इस समयकी एक परिस्थिति विचार करने लायक़ है। जो लोग कताईका काम अपने गुज़ारेके लिए करते हैं, वे कताईसे पहले और बादकी नई क्रियाओंको सहज ही सीख लेंगे, क्योंकि ऐसा करनेसे उनकी आमदनी बढ़ेगी। लेकिन आजकल इस तरह कातनेवालोंकी तादाद घट रही है, क्योंकि कमाईके दूसरे और आसान ज़रिये लोगोंके लिए सुलभ हैं। कत्तिनोंके सामने नीति-अनीतिका सवाल नहीं होता। जो बहुतसे पेशे मौजूद हैं, उनमेंसे आसान-से-आसान पेशे या धन्धेको वे अपना लेती हैं। मसलन्, बीड़ीके पत्ते बीनकर और हज़ारोंकी बीड़ी बनाकर हज़ारहा अपनी रोज़ी कमाते हैं। हमें तो इनको ज्ञान देना है। स्वराज्यकी कठिन सीढ़ियों पर चढ़ाना है और चढ़ाते-चढ़ाते इन सबको हृष्टपुष्ट बनाना है। अगर हम इतना न कर सकें, तो अपनी हस्ती खो बैठें। इसीलिए जो बहन या भाई समझ-बूझकर कातेंगे, वे ही हमारे कामके हो सकेंगे।

दूसरी एक बात और याद रखने जैसी है कि कई मौजूदा धन्धोंमें कताईके धन्धेने भी अपनी जगह बना ली है। इसलिए वह तो चलता ही रहेगा। इस वजहसे भी हमको व्यापारी खादीके बारेमें बेफ़िकर रहना चाहिये। इसके कारण जो उलझनें पैदा होती हों, कार्यकर्त्ताओंको उन्हें सुलझा लेना चाहिये। यह पूछना कि फलाँ चीज़ इस चौखटके अन्दर बैठ सकती है या नहीं, यह तो आलस्य या अज्ञानकी निशानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझी जानी चाहिये । भूमितिमें जो उपसिद्धान्तोंको सिद्ध नहीं कर सकता वह भूमितिका जानकार नहीं माना जाता । यही बात शास्त्रके बारेमें कही जा सकती है ।

नई दिल्ली, ३–४–'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजनबंधु 'से)

आये हुए पत्रोंसे

सोयाबीनके बारेमें 'हरिजन-सेवक'के कॉलमोंमें चर्चा की जा चुकी है। बरेलीसे एक दोस्त लिखते हैं :

"इस जिलेके मेरे खेतोंमें मैंने सोयाबीन पैदा किया है । खरीफ़ फ़सलके नाते वह ख़ूब पका है और कुछ दोस्तोंने, जिन्होंने उससे बनी कई चीज़ोंको चखा है, उसे बहुत पसन्द किया है। लड़ाईके दिनोंमें दूधकी कमी होनेसे मेरे एक दोस्तने सोयाबीनके बने दूधसे ही काम चलाया है।

"अगली बारिशमें वह ऐसे तमाम खेतोंमें पैदा किया जा सकता है, जहाँ बरसातका पानी ज्यादा वक़्त तक नहीं ठहरता । खासकर बँगलोंसे जुड़ी हुई खाली जमीनोंमें बोनेके लिए सोयाबीनकी फ़सल बड़े कामकी साबित होगी । पंजाब और पश्चिमी यु० पी०के लोगोंकी सेहत ज्यादा चावल खानेसे बिगड़ जाती है । बाजरा और मक्का बहुत लोगोंको माफ़िक़ नहीं आते । गेहूँ मुश्किलसे मिलते हैं । इसलिए अगर आम तौर पर नहीं, तो कम-से-कम कुछ लोगोंके लिए तो सोयाबीन गेहूँ, चावल वग़ैराकी जगह ले सकता है और फ़ायदेमन्द साबित हो सकता है ।"

* * *

'एग्री-हॉर्टीकल्चरल सोसायटी'की सालाना जनरल मीटिंगकी सभानेत्री की हैसियतसे श्रीमती लीलावती मुंशीने आम जनता और बम्बई म्युनिसिपल कॉर्पोरेशनके सामने कुछ कामके सुझाव पेश किये हैं :

(अ) पहाड़ीकी चोटी पर बने हुए हैंगिङ्ग गार्डनको छोड़ कर, बॉम्बे गैरेजसे लेकर केम्प कॉर्नर तककी मलाबार हिलकी सारी ढालू जमीनको शाक-भाजीके बगीचेमें बदल दिया जाय । इतनी जमीन एक हजार आदमियोंको बड़ी आसानीसे शाक-भाजी दे सकती है ।

(आ) आजकलके नये तरीक़ोंको अमलमें लाकर सारे मकानोंकी छतों पर छोटे पैमाने पर टमाटर और दूसरी हरी भाजियाँ पैदा की जायँ ।

(इ) शहरके सारे कूड़े-करकटकी रासायनिक रीतिसे खाद तैयारकी जाय।

(ई) बच्चोंमें, स्कूल और घर दोनों जगह, फलके पौधे, तरकारियाँ और अनेक तरहके अनाज पैदा करनेकी रुचि उत्पन्न की जाय । इससे बच्चोंका फालतू वक़्त सेहत बढ़ानेवाले कामोंमें खर्च होगा और समाजसेवाकी भावनायें भी उनमें बचपनसे ही पैदा हो जायँगी ।

उनका यह कहना ठीक है कि अगर तरकारियोंका बग़ीचा ठीक ढंगसे सजाया जाय, तो वह सुन्दर भी दिखाई देगा । ज़रूरत पड़ने पर सोसायटी इस बारेमें जानकारोंकी सलाह मुहैया करनेके लिए भी तैयार है ।

* * *

एक पत्र-लेखकने गांधीजीके इस सुझावका स्वागत किया है कि अनाजकी कमीके इन दिनोंमें कच्ची तरकारियाँ खाई जायँ और कभी-कभी पूरा या आधा उपवास भी किया जाय । सादा भोजन और यौगिक आसन कई लोगोंकी अनचाही चर्बीको घटाकर उनकी पाचनशक्तिको सुधार देते हैं । अधिकतर मालदार लोगोंकी बीमारियाँ ग़लत खान-पान या ज़्यादा खानेसे पैदा होती हैं । इस कठिन वक़्तमें अगर खान-पानके मामलेमें थोड़े सोच-विचारके साथ संयमसे काम लिया जाय, तो ये दोनों कठिनाइयाँ दूर की जा सकती हैं ।

* * *

बकरीका दूध कम-से-कम खर्चमें मिल सकता है । कई बड़े परिवारोंमें रोज़-रोज़ काफ़ी अन्न, तरकारियोंके छिलकों और डण्ठलों वग़ैराके रूपमें फेंक दिया जाता है, जिससे एक बकरीका पेट आसानीसे भर सकता है ।

हिन्दुस्तान जैसे मुल्कमें, जहाँ चरागाहोंकी बड़ी कमी है, और बहुत थोड़े किसान दुधारु मवेशी पाल सकते हैं, वहाँ दुधार बकरी ही ग़रीबकी गायकी जगह ले सकती है ।

कुछ लोग बकरीका दूध इसलिए नापसन्द करते हैं कि उसमें बदबू आती है । लेकिन उसकी यह बुराई सफ़ाईसे दूध निकालने और उबालनेसे दूर की जा सकती है ।

उरुली, २८–३–'४६

('हरिजन 'से) **अमृतकुँवर**

साप्ताहिक पत्र

आख़िरी नहीं, पहला क़दम

बम्बईकी तरह नई दिल्लीमें भी गांधीजी हरिजन-बस्तीमें ही ठहरे हैं । उनके साथके लोगोंके रहनेके लिए काफ़ी जगहका इन्तज़ाम करनेके खयालसे वाल्मीकि-मंदिरके आँगनमें दो छोटे तम्बू गाड़े गये हैं और एक शामियाना तैयार किया गया है । बरसों पहले गांधीजीने स्व० महादेवभाईको इस हरिजन-बस्तीकी मुलाक़ातके लिए भेजा था। महादेवभाईने उस समय इस हरिजन-बस्तीमें काम करनेवाले कुछ सेवाभावी सवर्ण हिन्दुओंके सुन्दर कामकी तारीफ़ करते हुए यह आशा प्रकट की थी कि किसी दिन गांधीजी इस हरिजन-बस्तीमें जाकर रह सकेंगे । इसलिए इस बार वहाँ जाकर रह सकनेके कारण गांधीजीको बहुत ही संतोष हुआ । दिल्ली आने पर उसी दिन शामकी सार्वजनिक प्रार्थनाके बाद अपने पहले सार्वजनिक भाषणमें उन्होंने कहा : "मैं बहुत दिनोंसे यह कहता आया हूँ कि हिन्दुओंको न सिर्फ़ नामसे, बल्कि विचार, वाणी और कार्यसे भी अतिशूद्र बनना होगा । इसीलिए मैंने हरिजनोंकी बस्तीमें जाकर ठीक हरिजनोंके बीच रहनेका निश्चय किया है।"

आगे उन्होंने कहा : "लेकिन अपने यहाँ रहनेकी वजहसे मैं इस भ्रममें नहीं हूँ कि मैं हरिजनोंकी ही ज़िन्दगी बिता रहा हूँ। मैंने हरिजनोंकी कई बस्तियाँ देखी हैं, और हरिजनोंमें जो ग़रीबी, गन्दगी और मैला-कुचैलापन पाया जाता है, वह भी मैंने देखा है । मैं यह भी जानता हूँ कि इस जगहको ख़ूब साफ़-सुथरा बना दिया गया है । मेरे लिए और मेरे साथियोंके लिए श्री बिड़लाजीने आराम और सहूलियतकी जो चीज़ें यहाँ जुटा रक्खी हैं उनके कारण सचमुच ही मैं परेशान हूँ । मैं यहाँ रहने आया तो हूँ, लेकिन मुझे उम्मीद है कि इस ओर यह मेरा आख़िरी नहीं, बल्कि पहला क़दम है । मैं उस दिनकी राह देख रहा हूँ, और उसके लिए हमेशा ईश्वरसे प्रार्थना करता रहता हूँ कि जब सचमुच ही मैं हरिजनकी झोंपड़ीमें जाकर रहूँगा और वहाँ हरिजन जो भोजन मुझे खिलायेंगे, वही खाऊँगा । इस बीच हरिजनोंकी बस्तीमें बनी हुई इस धरमशालामें रहकर मैं थोड़े सन्तोषका अनुभव करता हूँ ।"

जब गांधीजी यहाँ आये, तो यहाँके हरिजनोंमेंसे कुछ हरिजनोंने उनके खिलाफ़ नारे लगाये और झण्डियाँ दिखाई थीं । इसका ज़िक्र करते हुए गांधीजीने कहा : "मैं उन पर क्यों ग़ुस्सा होऊँ! नामधारी सवर्णोंने उनके साथ जिस तरहका बरताव किया है, उसके खिलाफ़ उनके इस अदम्य रोषको मैं समझ सकता हूँ । मुमकिन है कि वे बदला भी लेना चाहें । हमारी कहनी और करनीमें कोई मेल नहीं है ! उनको अधीर होने का हक़ है । मैं तो उनसे यही विनती करूँगा कि वे हिन्दू-समाजके साथ सब्रसे काम लें, यानी उसे निबाह लें । सदियों पुरानी बुराई एक दिनमें जड़मूलसे नहीं मिटाई जा सकती । मैं यह भी जानता हूँ कि यह मिटनी ही चाहिये, नहीं तो हिन्दू धर्मका नाश होना चाहिये । जब तक यह नहीं होता, हरिजन जिन दिक़्क़तों और मुसीबतोंके बीच जी रहे हैं, उनमें उनके हिस्सेदार बनकर और जो हक़ उन्हें हासिल नहीं हैं, उन हक़ोंको ख़ुद छोड़कर हम थोड़ा प्रायश्चित्त कर सकते हैं । आज वे जिस हालतमें जी रहे हैं, वह तो समझदार आदमीसे एक दिन को भी सही जानी चाहिये। सफ़ाई और स्वच्छताके मामलेमें हरिजन-बस्तीकी हालत ऐसी होनी चाहिये कि मेरे जैसा आदमी भी वहाँ बिना किसी खटकेके जाकर रह सके। ईश्वरसे मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह दिन जल्दी ही आये ।"

शुरूमें प्रार्थना वाल्मीकि-मंदिरके आँगनमें की जाती थी, लेकिन जगहकी तंगीकी वजहसे कुछ ही समय बाद अजमेरी दरवाज़ेके बाहर लम्बे-चौड़े मैदानमें की जाने लगी । पहले ही दिन गांधीजीने लोगोंसे कह दिया था कि महज़ उनके दर्शनोंके लिए कोई प्रार्थनामें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये। जिन्हें प्रार्थनामें श्रद्धा हो, वे ही आयें। लेकिन प्रार्थनामें आनेवालोंकी तादाद तो रोज़-रोज़ बढ़ती ही गई और इसकी वजहसे प्रार्थनाकी जगह बदलनी पड़ी।

स्वतंत्रताके आगमनकी घड़ी

जिस ब्रिटिश मंत्रि-मण्डलके कारण गांधीजी यहाँ आये हैं, उसके काममें वे बड़े सबेरेसे लेकर रात तक सारा समय बझे रहते हैं। काम-काजकी इस भीड़में भी उन्हें एक ही चिन्ता खास तौर पर परेशान किये हुए है, और वह यह कि ब्रिटिश हुकूमतकी लम्बी .ग़ुलामीके बाद, जिसकी कड़ुई यादें भुलाये भूली नहीं जा सकतीं, जब स्वतंत्रताका मुहूर्त्त आयेगा, तो देशके करोड़ों लोग किस तरह बरतेंगे। गांधीजी भलीभाँति जानते हैं कि ब्रिटिश हुकूमतके बारेमें लोगोंके दिलोंमें गहरा द्वेष जड़ जमाये है। इसकी वजहसे अगर देशमें दंगे हुए, लूटपाट और मारकाट मची, तो क्या होगा? इन दर्दनाक वारदातोंको रोकनेके लिए वे अपनी पूरी ताक़त खर्च कर रहे हैं। पिछले इतवारको इस फ़िक्र ही फ़िक्रमें वे क़रीब-क़रीब सारी रात जागते रहे। उस रातके अपने मन्थनोंका ज़िक्र करते हुए उन्होंने अपने एक साथीसे कहा: "मैं ईश्वरसे यह प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह मेरे मुँहसे ऐसी कोई उपयुक्त बात कहला दे, कि जो, जिनसे वह कही जाय, उनको इस अवसरके अनुरूप धीरज और समझदारीके साथ काम करनेके लिए प्रेरित करे।"

इस हफ़्तेमें गांधीजीने क्वेकर मित्रोंकी मौन प्रार्थनामें शामिल होनेका न्यौता मंज़ूर किया और आज़ाद हिन्द फ़ौजकी छावनी और उसका अस्पताल देखा। आज़ाद हिन्द फ़ौजकी छावनीवाली इस मुलाक़ातके बारेमें उन्होंने अपने विचार एक भाषणमें प्रकट किये थे। वह भाषण इसी अंकमें दूसरी जगह दिया गया है।

नई दिल्ली, ९-४-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

वनस्पति और घी

सरदार सर दातारसिंह हिन्दुस्तानकी गायोंके लिए लड़ते रहे हैं। गायमें भैंसका समावेश हो जाय, तो दोनों जी सकती हैं। लेकिन अगर भैंसमें गायका समावेश हो, तो दोनों मर जायँ। "गाय ख़ुशहालीको पैदा करनेवाली माँ है"। जो लोग यह समझना चाहें कि गाय ख़ुशहाली कैसे पैदा करती है, वे श्री सतीशचन्द्र दासगुप्तकी गायके बारेमें लिखी दोनों किताबें पढ़ें। यहाँ मैं सिर्फ़ घीके बारेमें ही कुछ कहना चाहता हूँ, क्योंकि आज खतरा है कि कहीं वेजिटेबल घीके नामसे पुकारी जानेवाली वनस्पति उसे दबा न दे। वास्तवमें घी तो जानवरोंसे ही मिलता है। आदमी बिना सोचे-समझे उसे वेजिटेबल या वनस्पति घी कह देते हैं, लेकिन ये दोनों विरोधी शब्द हैं। सरदार दातारसिंहने बहुत सोच-समझ और छान-बीनके बाद लिखा है कि सन् १९३७में वनस्पतिकी बिक्री २६,००० टन थी, जो सन् १९४५में बढ़कर १,३७,००० टन हो गई है, यानी सात सालमें ४०० फ़ीसदी बढ़ गई। घीका उद्योग उसी हिसाबसे गिर गया। जो लोग उनका पूरा लेख पढ़ना चाहें, वे सरदार दातारसिंहसे या गो-सेवा-संघ, वर्धासे उसकी प्रति मँगा सकते हैं। सरदार जिस नतीजे पर पहुँचे हैं, उसका निचोड़ मैं नीचे देता हूँ:

(१) खाद्य पदार्थकी हैसियतसे वनस्पति, घीके मुक़ाबले बहुत घटिया चीज़ है। उसे हज़म करना तो मुश्किल है ही, उसमें जीवनतत्त्व भी नहीं होते।

(२) बनावट और स्वादमें घीके जैसा ही होनेकी वजहसे उसका बहुत बड़ा हिस्सा मिलावटके काममें आता है, या वह असली घीकी जगह बिकता है, इसलिए घीके लिए यह बड़ा खतरनाक है।

(३) इस काममें नफ़ेकी बहुत बड़ी गुंजाइश होनेके कारण सन् १९३७में २६,००० टन फ़ी सालसे बढ़कर सन् १९४३में इसकी पैदावार १,०५,००० टनकी हो गई है। और बहुत जल्दी ही कम-से-कम इसकी दुगनी पैदावार हो जायगी।

(४) घीका उद्योग हिन्दुस्तानका सबसे बड़ा ग्रामोद्योग है। सौ करोड़ रुपया लगाकर इसके ज़रिये हर साल २,३०,००,००० मन घी तैयार होता है।

(५) घीके उद्योगके नाशसे न सिर्फ़ किसानोंकी ख़ुशहाली पर बुरा असर पड़ेगा, बल्कि पशुओंके उस व्यवसायको भी यह घातक नुक़सान पहुँचायेगा, जिस पर सारे राष्ट्रकी तरक़्क़ी का मदार है।

ऊपर बताई हुई कठिनाइयोंको दूर करनेके लिए नीचे लिखे साधन सुझाये गये हैं:

(१) अगर किन्हीं कारणोंसे सरकार वनस्पतिका बनना बिलकुल बन्द नहीं कर सकती, तो भी कड़ा नियंत्रण तो उस पर तुरन्त ही लगा दिया जाना चाहिये।

(२) वनस्पतिके बनानेवालों और थोक या खुरदा बेचनेवाले सारे दूकानदारोंके लिए लाइसेन्स लेना लाज़मी हो जाना चाहिये। ऐसे आदमियोंको अपने यहाँ घी रखने या बेचनेकी इजाज़त नहीं मिलनी चाहिये।

(३) हिन्दुस्तानमें बनाये जानेवाले वनस्पतिको, जिस जगह वह बनाया जाता है, वहीं और बाहरसे आनेवालेको हिन्दुस्तानके किसी बन्दरगाह पर आते ही रँगना लाज़िमी कर देना चाहिये। बनानेवालोंको वनस्पतिमें १० फ़ीसदी तिलका तेल मिलाना ही चाहिये। इससे यह फ़ायदा होगा कि अगर असली घीमें तेल मिला हुआ वनस्पति मिलाया गया, तो उसे पहचानना बहुत ही आसान हो जायगा। रासायनिक प्रतिक्रियाओंसे तिलके तेलको फ़ौरन पहचाना जा सकता है।

(४) वनस्पतिको असली घीकी तरह बनानेके लिए मिलाई जानेवाली मिलावटकी ख़ुशबुओंको बिलकुल बन्द कर देना चाहिये।

(५) जो लोग वनस्पतिसे तैयार की हुई चीज़ें बेचें, उन्हें बाज़ार क़ानूनके मुताबिक़ कोई पहचान रखनेको मजबूर किया जाय। बिना किसी ऐसे निशान या पहचानके कहीं भी वनस्पति रखना क़ानूनन् जुर्म करार दे दिया जाय। इससे उन हलवाइयों और मिठाई बनानेवालोंकी ठगी मिट जायगी, जो वनस्पतिकी चीज़ें बनाकर उन्हें असली घीके नामसे बेचते हैं।

(६) वनस्पतिको 'वेजिटेबल घी' या 'वनस्पति घी' या किसी ऐसे दूसरे नामसे, जिससे खरीददारोंको उसकी असल बनावटके बारेमें धोखा होनेका डर हो, बाज़ारमें नहीं जाने देना चाहिये।

(७) वनस्पति बाज़ारमें उस तरहके डब्बोंमें न आये, जिस तरहके डब्बोंमें घी आता है। वनस्पतिके टीनों पर साफ़ साफ़ लेबल होना चाहिये।

इसमें कोई शक नहीं कि यह बुराई खास तौरसे उन्हीं लोगोंके लालचकी वजहसे होती है जो गायकी पूजा करते हैं। वनस्पति बिलकुल ग़ैरज़रूरी है। तेलोंमेंसे नुक़सान पहुँचानेवाले भाग निकाले जा सकते हैं। लेकिन उन्हें जमानेकी या घी की शकल देनेकी ज़रूरत नहीं। एक ईमानदार उत्पादक इतना नीचे नहीं गिरेगा कि जाली काम शुरू करे। बाज़ार उनसे भरे पड़े हैं। जाली सिक्के बनाने पर काफ़ी सज़ा होती है। फिर जाली घीके लिए क्यों न काफ़ी सज़ा दी जाय? जबकि असली घी सिक्कोंसे कहीं ज़्यादा क़ीमती होता है। लेकिन सबसे अच्छा उपाय तो यही है कि जो व्यापारी राष्ट्रके स्वास्थ्यकी भी कोई परवाह न करते हुए एकदम मालदार बन जाना चाहते हैं, वे और दूसरे सब, सब तरह ईमानदारीका बरताव करें।

नई दिल्ली, ८-४-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

१४ अप्रैल १९४६

हम प्रार्थना करें

अब इसमें कोई शक नहीं मालूम होता कि कुछ ही समयमें हिन्दुस्तान राजनीतिक आज़ादी पा जायगा। इस आज़ादीमें हम प्रार्थनाके साथ प्रवेश करें। प्रार्थना फ़ुरसतके वक़्त बुढ़ियाके दिलबहलावकी चीज़ नहीं। अगर उसके रहस्यको ठीक-ठीक समझ लिया जाय और उसका ठीक इस्तेमाल किया जाय, तो वह हमको काम करनेकी अजीब ताक़त देती है।

तो अब हम प्रार्थना करें और यह जान लें कि अहिंसाका रहस्य क्या है और उसके ज़रिये हासिल की गई आज़ादीको कैसे टिकाया जा सकता है। अगर हमारी अहिंसा कमज़ोरोंकी है, तो यह समझ लेना चाहिये कि ऐसी अहिंसासे आज़ादी टिकाई नहीं जा सकेगी। इसीसे यह भी साबित होता है कि एक लम्बे अरसे तक हम हथियारोंके ज़रिये अपनी हिफ़ाज़त करनेकी ताक़त नहीं पा सकेंगे। हमारे पास न हथियार हैं, और न उनकी जानकारी है। हममें ज़रूरी अनुशासन भी नहीं। नतीजा यह होगा कि हमको दूसरे राष्ट्रकी मदद पर मदार रखना पड़ेगा और सो भी बराबरीके नाते नहीं, बल्कि शिष्य और गुरुके नाते। इस खयालसे कि 'हलके दरजेके', शब्द कानोंको कठोर लगेगा, उसका इस्तेमाल नहीं किया है।

इसलिए साफ़ तौर पर यह महसूस किया जाना चाहिये कि आज़ादी हासिल करनेकी तरह ही उसे क़ायम रखनेके लिए भी अहिंसाका सहारा लिये बिना चारा नहीं। इसका मतलब यह हुआ कि जो अपनेको हमारे दुश्मन समझते हैं, उन सबके लिए हमें अहिंसाका ही इस्तेमाल करना है। जिन्होंने क़रीब ३० साल तक अहिंसाकी तालीम पाई है उनके लिए यह चीज़ बहुत ज़्यादा न होनी चाहिये। अहिंसाका मंत्र है: 'अपनी इज़्ज़त और आज़ादीके लिए मरो।' यह नहीं कि: 'ज़रूरत पड़ने पर मारो और मारते हुए मरो।' बहादुर सिपाही क्या करता है? वह मौक़ा पड़ने पर ही मारता है और ऐसा करते हुए अपनी जान जोखिममें डालता है। अहिंसा इससे ज़्यादा धीरज और त्यागकी उम्मीद रखती है। किसीकी जान लेते हुए अपनी जानको जोखिममें डालना ज़्यादा आसान क्यों मालूम होता है? और क्या वजह है कि बिना मारे मरना दिव्य माना जाय? यह सोचना कि मारनेके धन्धेको सीखे बिना मरा नहीं जा सकता, निरा भ्रम है। हम इस भ्रममें न फँसें। बार-बार भ्रमकी ही रट लगाये रहनेसे हम उसमें फँस जाते हैं, और उसीको सच समझने लग जाते हैं।

लेकिन टीका करनेवाले या निन्दा करनेवाले यह पूछेंगे कि जब यह चीज़ इतनी आसान है, तो प्रार्थनाको किस लिए बीचमें डालते हो? इसका जवाब यही है कि जीवनकी अलग-अलग हालतोंमें और आखिरी हालतमें, राष्ट्रकी आज़ादी और इज़्ज़तकी रक्षाके लिए अपने आपको मिटा देनेकी जो भव्य और वीरतापूर्ण कला हमें सीखनी है, उसके लिए प्रार्थना पहला और आखिरी सबक़ है।

प्रार्थनाके लिए ईश्वरमें सजीव श्रद्धाकी ज़रूरत है। बिना ऐसी श्रद्धाके सत्याग्रहके सफल होनेकी कल्पना नहीं की जा सकती। भगवान्‌को हम किसी भी नामसे क्यों न पहचानें, उसका रहस्य यह है कि वह और उसका क़ानून एक ही है।

नई दिल्ली, ६-४-'४६

('हरिजन'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

नाममें क्या रक्खा है?

स० — 'हरिजन' शब्द कितना ही पवित्र क्यों न हो, लेकिन जिन लोगोंको हम हरिजन कहते हैं, मेरा विचार है कि मनोवैज्ञानिक दृष्टिसे यह नाम उनके मनमें बराबर अपने नीचेपनकी भावना जगाता रहता है। अगर हम उन्हें हमेशा 'हरिजन' नामसे पुकारते रहेंगे, तो वे कितने ही आगे क्यों न बढ़े हों या बढ़ जायँ, उनमेंसे इस भावनाको निकालना बहुत मुश्किल हो जायगा। इस तरह अगर राह चलते किसी आदमीसे किसी हरिजनके बारेमें कुछ पूछें, तो वह पहले उसके अस्पृश्य और दलित होनेकी बात कहेगा। क्या यह मुमकिन नहीं कि हरिजनोंके मनमें नीचेपनकी यह अनचाही भावना पैदा ही न हो और दूसरे लोग भी उनके बारेमें सोचते समय उनके अस्पृश्य या दलित होनेकी बात न सोचें? क्या उन्हें कोई ऐसा दूसरा नाम, जिसमें दूसरे वर्गोंके लोग भी समा जायँ, देना बेहतर न होगा?

ज० — वर्षों पहिले 'यंग इण्डिया'में इसके बारेमें लिखा जा चुका है। 'हरिजन' नामके साथ बहुत-सी पवित्र घटनायें जुड़ी हुई हैं। एक हरिजन भाईने ही अस्पृश्य, दलित या भंगी, मेहतर, चमार आदि अछूतोंके दूसरे सब नामोंकी जगह यह नाम रखनेको कहा था। सरकारी अफ़सरोंने उनकी एक फ़ेहरिस्त बनाई और 'शेड्यूल्ड कास्ट'में उन सबकी गिनती करके उनकी हालत और भी बदतर कर दी। जो लोग अछूत नहीं थे, वे इस वर्गमें रख दिये गये, और जो इसमें आ सकते थे उन्हें छोड़ दिया गया। सरकारको धन्यवाद है कि उसकी इस नीतिसे आज हम उस हालतको पहुँच गये हैं कि जब शेड्यूल्ड वर्गोंमें शामिल होनेकी लालसा होती है। सरकारने हरएक प्रातिनिधिक संस्थामें चुनकर आनेके लिए फ़िरक़े-वाराना चुनाव शुरू करवा दिये हैं। अगर लोग सचमुच अपनी योग्यताके आधार पर ही इन जगहों पर पहुँचनेकी इच्छा करें, तो ठीक है। लेकिन योग्यताका कुछ भी ख़याल न रखते हुए ऐसी इच्छा करना बिलकुल बुरी चीज़ है। ऊँची-से-ऊँची जगह पानेकी योग्यता हासिल करनेकी इच्छा तारीफ़ करने जैसी है, उसे प्रोत्साहन मिलना चाहिये। लेकिन किसी ऐसी जगह पर सिर्फ़ अपनी जाति या वर्गके आधार पर नियुक्त होनेकी इच्छाको कम करना चाहिये — दबाना चाहिये।

मैंने इसका सच्चा उपाय बता दिया है। ऊँच-नीचके ख़याल मिट जाने चाहिये। वे मिट तो रहे हैं, लेकिन चींटीकी चालसे। अगर हरएक हिन्दू जान-बूझकर अपने बड़े होनेके विचारको छोड़ दे, और व्यवहारमें हरिजन, या यों कहिये कि हरिजनोंमें जो सबसे नीचे गिने जानेवाले भंगी या मेहतर हैं, उनके जैसा बन जाये, तो यह रफ़्तार बढ़ सकती है। उस समय 'हरिजन' शब्दके सच्चे मानीमें हम सब ईश्वरके बच्चे बन जायँगे। जब तक यह नहीं हो जाता है, अछूतोंको हम किसी भी नामसे क्यों न पुकारें, उनमें नीचेपनकी भावना रहेगी ही। जब तक अस्पृश्यता बिलकुल जड़से न मिट जाय, हमें जीवनके हरएक क्षेत्रमें पूरी तरह इसी ढंगसे काम लेना है। जब वह ख़ुशीका दिन आयेगा, हरएक घर सच्चे हरिजनोंका घर होगा, और दिल और घरकी सफ़ाई समूचे जीवनका नियम बनेगा।

नई दिल्ली, ५-४-'४६

('हरिजन'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

रामनाम

स० — क्या दिलमें रामनाम रखना काफ़ी नहीं? उसे ज़बानसे बोलनेमें कुछ है?

ज० — रामनाम लेनेमें ख़ूबी है, ऐसा मैं मानता हूँ। जो आदमी जानता है कि राम सचमुच उसके दिलमें है, उसे रामनामका उच्चारण करनेकी ज़रूरत नहीं, यह मैं क़बूल कर सकता हूँ। लेकिन ऐसे आदमीको मैं नहीं जानता। इससे उलटा मुझे ज़ाती अनुभव है कि रामनामके रटनेमें कुछ चमत्कार है। वह क्यों और कैसे, यह जाननेकी ज़रूरत नहीं।

नई दिल्ली, ६-४-'४६ **मो० क० गांधी**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणियाँ

हरिजनके साथ भोजन

स०—निरामिषाहारी सवर्ण हिन्दू मांसाहारी हरिजनके घर रोटी कैसे खा सकता है ?

ज०—निरामिषाहारी सवर्ण हरिजनके घरमें निरामिष आहार ज़रूर ले सकता है। भोजन-व्यवहारके मानी यह कभी नहीं हो सकते कि जो कुछ मिले सो खा लिया जाय। यह ज़रूरी है कि खाना व बरतन साफ़ हों, और खाना साफ़ हाथोंसे पकाया हुआ हो। यही नियम पानीके लिए भी होना चाहिये। सहभोजनके यह भी मानी नहीं कि हम एक थालीमें खायें या एक ही गिलाससे बग़ैर उसे साफ़ किये पानी पीयें।

नई दिल्ली, ६–४–'४६

मो० क० गांधी

मंत्रियोंकी तनख़्वाह

प्रान्तीय धारासभाओंके सदस्य और मंत्री सच्चे लोक-सेवककी तरह अपनी-अपनी जगह काम करने पहुँच गये हैं। अंग्रेज़ सरकारने अब तक इन जगहोंके लिए जो तनख्वाहें दी हैं, वैसी ही तनख्वाहें वे लोग नहीं ले सकते। अगर लीं, तो उन्हें उसकी क़ीमत चुकानी होगी। यह भी कोई ज़रूरी नहीं कि चूँकि अमुक तनख्वाह देना तय किया गया है, इसलिए हर कोई तनख्वाह ले ही। तनख्वाहका जो पैमाना तय होता है, उससे तो तनख्वाहकी हद ही बँधती है, यानी उससे ज्यादा तनख्वाह कोई नहीं ले सकता। लेकिन पैसेदार लोगोंके लिए तो यह एक हँसीकी बात होगी कि वे पूरी या थोड़ी भी तनखवाह लें। तनख्वाह तो उन्हीं लोगोंके लिए है, जो बिना कुछ लिये आसानीके साथ, यानी सेवाभावसे, काम नहीं कर सकते। वे दुनियाके ग़रीब-से-ग़रीब लोगोंके प्रतिनिधि या नुमाइन्दा हैं। उनको मिलनेवाली पाई-पाई ग़रीबोंकी कमाईसे आती है। वे इस महत्वकी बातको ध्यानमें रक्खें और उसके मुताबिक़ रहें और बरतें।

नई दिल्ली, ६–४–'४६

कस्तूरबा कोढ़-निवारक-कार्य

प्रोफेसर टी० एन० जगदीशन्‌की देखरेखमें १९ मई सन् १९४५से यह काम हो रहा है। अब तक जो कुछ काम हुआ है, उसका एक मुख्तसर ब्यौरा उन्होंने तैयार किया है। डॉ० टी० एस० एस० राजन् उस कमेटीके प्रधान हैं, जो ख़ास तौरसे इसी कामके लिए बनाई गई है। डॉ० वी० पी० रामस्वामीने इसके लिए डॉ० आर० जी० कोचरानेसे खुद यह काम सीखा है। वह मरीज़ोंकी देखरेखके साथ ही देहातोंमें इस रोगके बीमारोंकी जाँच-पड़तालका काम भी करते हैं।

कन्दाचीपुरम्‌के स्कूलोंमें ६५५ बच्चे हैं, जिनकी जाँच करनेसे पता चला है कि वहाँ कुष्ठ रोगके साथ ही खुजली और दाद वग़ैरा चमड़ीके रोग भी ख़ूब ज़ोरों पर हैं। वहाँ सौसे ज्यादा बीमार बच्चोंकी देख-भालकी जाती है और तीस-चालीसके कोढ़का इलाज किया जाता है। मदविलगम गाँवके ५९३ आदमियोंमेंसे १८ तो इस रोगके पूरे-पूरे रोगी हैं। इनमेंसे चारका रोग संक्रामक है और १४का छूत न फैलानेवाला है। रोगियोंके साथ बच्चोंके बेरोक मिलने-जुलनेसे छूत फैलती है।

अदुक्कम गाँवके ३२३ आदमियोंमेंसे १५ कोढ़के रोगी हैं। इनमें पाँचका रोग संक्रामक है। दो और जगहोंमें क्रमसे २९ और १५ कुष्ठ रोगके रोगी हैं, जिनमेंसे ८का रोग फैलनेवाला है।

डॉ० रामस्वामीने दूसरे पाँच गाँवोंकी और जाँच-पड़तालकी है, जहाँ अब तक ३०० रोगी मिले हैं। इनमें सिर्फ़ १५७ रोगी ही अपने स्त्री होने या ७ सालसे कम उमरके बच्चे होनेकी वजहसे इस ट्रस्टसे फ़ायदा उठा सकते हैं।

प्रोफेसर टी० एन० जगदीशन्‌का यह ब्यौरा ज़ाहिर करता है कि ज़रूरतमन्द होने पर भी पुरुष-रोगी इस निधिसे कोई फ़ायदा नहीं उठा सकते। यह कमी ट्रस्टकी किसी शर्तको तोड़नेसे पूरी नहीं हो सकती। प्रो० जगदीशन् बड़ी आसानीसे एक छोटी-सी मुक़ामी निधि जमा करके उन लोगोंको भी अपने कार्यक्षेत्रमें शामिल कर सकते हैं।

नई दिल्ली, ४–४–'४६

('हरिजन'से)

मो० क० गांधी

आज़ाद हिन्द फ़ौजका सन्देश

आज़ाद हिन्द फ़ौजके क़ैदियोंसे मिलनेके बाद दूसरे दिन शामकी प्रार्थनामें गांधीजीने कहा: "कलसे मेरे मनमें जो खयाल उठ रहे हैं, सो मैं आपसे कहा चाहता हूँ। हिन्दुस्तानने आज़ाद हिन्द फ़ौजके छूटे हुए लोगोंका शाही शानसे स्वागत किया है। राष्ट्रवीरकी तरह उनका अभिनन्दन किया गया है। ऐसा लगता है कि जनताकी भावनाके उठते ज्वारमें सब कोई बह गये। लेकिन मुझे साफ़-साफ़ यह क़बूल कर लेना चाहिये कि इस तरहकी विवेक-रहित पूजामें मैं शरीक नहीं हो सकता। मैं आज़ाद हिन्द फ़ौजकी और नेताजी बोसकी कारगुज़ारी, क़ुरबानी और देशप्रेमकी सराहना करता हूँ, लेकिन उन्होंने जिस तरीक़ेको अपनाया था, उससे मैं सहमत नहीं हो सकता। कांग्रेसने आज़ादी हासिल करनेके लिए पिछले २५ सालोंसे जो तरीक़ा अपना रक्खा है, उससे इसका मेल नहीं बैठता। कल मैंने आपसे स्थितप्रज्ञ यानी सत्याग्रहीके बारेमें कहा था। अगर हम इस आदर्शको अपनाते हैं, तो हमें किसीको भी अपना दुश्मन न समझना चाहिये। हमें दुश्मनी और बुराईको क़तई छोड़ देना चाहिये। यह आदर्श कुछ इने-गिने साधु-सन्तों और ऋषि-मुनियोंके लिए ही नहीं; यह तो सब किसीके लिए है। मैंने अपनेको भंगी कहा है। जिन दिनों मैं फिनिक्समें रहता था, उन दिनों मैं सिर्फ़ नामका ही नहीं, बल्कि सचमुचका भंगी बन गया था। अपने दिलकी आवाज़को सुनकर हलके-से-हलके लोगोंके साथ अपनेको मिला देनेके खयालसे मैंने वहाँ अपने हाथमें डोल और झाड़ू सँभाल लिये थे। मैं आप ही के जैसा एक नम्र साधक हूँ। मैं आप लोगोंसे अपना यह अनुभव कहा चाहता हूँ कि प्रार्थनाके वक़्त पढ़े जानेवाले गीताके श्लोकोंमें जिस तरहकी समताका ज़िक्र है, वैसी समता एक मामूली देहाती भी हासिल कर सकता है, अगर वह चाहे और कोशिश करे। हम चाहे क़बूल न करें, या हमें इसका पता भी न हो, तो भी यह सच है कि कभी-कभी हम सब अपनी समझदारी और स्वस्थताको खो बैठते हैं। स्वस्थ चित्तवाला आदमी बच्चेके साथ भी धीरज नहीं खोता; वह न ग़ुस्सा होता है, न गाली देता है। गीतामें कहे गये धर्मका आचरण इसी जीवनमें करना है। इस जन्ममें आप जो कुछ भी करें उससे कोई निस्बत न रखते हुए अगले जन्ममें श्रेय प्राप्त करनेका यह कोई साधन नहीं। वैसा करना तो धर्मका दिवाला पीटना होगा।

"आज़ाद हिन्द फ़ौजके नज़रबन्द लोगोंसे मिलना मेरे लिए शुद्ध कर्त्तव्यरूप था। उनसे मिलकर मुझे बहुत ही सन्तोष हुआ। और उन्होंने भी जिस प्रेमके साथ मेरा स्वागत किया, उसे मैं कभी भूल नहीं सकूँगा। उनके इस स्वागतका मैं यह मतलब समझा हूँ कि उन्होंने मुझको देशका एक निष्ठावान सेवक माना है।

"नेताजी तो मेरे लिए मेरे पुत्रके समान थे। स्व० देशबन्धु दासके नेतृत्वमें काम करनेवाले एक होनहार कार्यकर्त्ताके रूपमें मैंने पहले-पहल उनको जाना था। आज़ाद हिन्द फ़ौजके लिए उनका आखिरी सन्देश यह था कि परदेशमें वे हथियारोंके साथ लड़े हैं, लेकिन वापस हिन्दुस्तान लौटने पर उनको कांग्रेसके नेतृत्वमें और उसकी रहनुमाईमें अहिंसाका सिपाही बनना है और उस नाते देशकी ख़िदमत करनी है। हिन्दुस्तानके लिए आज़ाद हिन्द फ़ौजका सन्देश यह नहीं है कि आपसी झगड़ोंको मिटानेके लिए हम हथियार चलानेके तरीक़ेको अपनावें—क्योंकि उसकी आजमाइश हो चुकी है और वह कच्चा साबित हुआ है—बल्कि सन्देश तो यह है कि हम अपने बीच अहिंसा, एकता, मेल-जोल और संगठनको बढ़ायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

“गोकि आज़ाद हिन्द फ़ौज अपनी तुरतकी मुरादोंको पूरा नहीं कर पाई, तो भी उसने बहुत-सी ऐसी बातें की हैं, जिनके लिए उसे नाज़ हो सकता है। हिन्दुस्तानके सभी धर्मों और सभी क़ौमोंके लोग एक ही झण्डेके नीचे इकट्ठा हुए और क़ौमी या उस ढंगकी दूसरी किसी भी संकुचित भावनासे दूर रहकर वह सब लोगोंमें एकताकी भावना पैदा कर सकी, यह उसका बड़े-से-बड़ा काम था। हम सबको उसका अनुकरण करना चाहिये। अगर उन्होंने लड़ाईके जोशमें ही यह सब किया हो, तो उसकी बहुत क़ीमत नहीं। शान्तिके दिनोंमें भी यह चीज़ इसी तरह चलनी चाहिये। इसमें शक नहीं कि यह काम ज्यादा ऊँचा और ज़्यादा मुश्किल है। इसके लिए ज़रूरत इस बातकी है कि हम अपने अन्दर गीतामें कहे गये स्थितप्रज्ञके गुणोंका विकास करें।

“तलवारकी ताक़तसे सत्याग्रहकी ताक़त कहीं ज़्यादा ज़ोरदार है। आज़ाद हिन्द फ़ौजके लोगोंसे मैंने यह बात कही और उन्होंने .खुशीके साथ मुझसे कहा कि वे इस चीज़को समझ चुके हैं, और अबसे आगे वे कांग्रेसके झण्डेके नीचे अहिंसाके सच्चे सिपाही बनकर हिन्दुस्तानकी सेवा करनेकी कोशिश करेंगे। उनकी यह बात सुनकर मुझे भी .खुशी हुई।”

नई दिल्ली, ८–४–’४६

(‘हरिजन’से) प्यारेलाल

हमारी शर्म

ता० १७–३–’४६ की शामको बंबईके रुँगटा हाउसमें प्रार्थनाके लिए इकट्ठा हुए लोगोंके सामने गांधीजीने नीचे लिखा भाषण किया था :

“हाल ही बम्बईमें जो वारदातें हुई हैं, उनकी वजहसे जिस शर्म और नामूसीको मैंने महसूस किया है, उसीको आप लोगोंने भी महसूस किया होगा। मुझे उम्मीद है कि यहाँ आये हुए भाई-बहनोंमें से कोई भी उन नामूसी-भरे कामोंमें शरीक नहीं हुए होंगे। लेकिन महज़ इसके लिए मैं आपको मुबारकबादी नहीं दे सकता। अब हम एक ऐसी जगह पहुँच गये हैं कि न तो किनारे खड़े रह कर तमाशा देखना और न गोल-गोल बातें करके अपनी सफ़ाई देना ही हमें पुसा सकता है। हमारा धर्म तो यह है कि जिस चीज़को हम सच मानते हों उसे बिना डरे कह डालें और ज़रूरत पड़े तो उसके लिए अपनेको .कुरबान भी कर दें। जिस वक़्त ऐसी आग भड़क उठी हो, हमारे लिए हाथ जोड़कर बैठे रहना .जुर्म ही कहा जायगा। क्या इस आदर्शका पालन बहुत कठिन है? मैं कहूँगा कि मुसीबतके जिन दिनोंमेंसे हम आज गुज़र रहे हैं, उनमेंसे सही-सलामत पार होनेका यही एक रास्ता है।

ज़िम्मेदारी किसकी?

“जब ऐसी वारदातें होती हैं, तो उनको गुण्डोंका काम कह कर अपने मनको मना लेनेकी आजकल एक फ़ैशन-सी चल पड़ी है। इस तरह अपनी नैतिक ज़िम्मेदारीसे बच निकलना हमें शोभा नहीं देता। आखिर ये गुण्डे हैं कौन? क्या वे हमारे ही देशभाई नहीं हैं? क्या हमारा यह दावा नहीं कि हम एक राष्ट्र हैं? तो फिर जब हमारा एक भी आदमी ऐसा कोई काम करता है, तो क्या उसके लिए हम ज़िम्मेदार नहीं? जो लोग इन वारदातोंके लिए ज़िम्मेदार हैं, उनको गुण्डा कहकर बदनाम किया जाय या देशभक्त कहकर उनकी तारीफ़ की जाय, हर हालतमें इस निन्दा और स्तुतिके हम समान रूपसे भागीदार हैं। जिन लोगोंको आज़ादी हासिल करनी है उनके लिए यही एक मात्र सच्चा और बहादुरीका रास्ता है कि अपने कर्त्तव्यका पालन करते हुए निन्दा या स्तुति, जो भी हिस्से आ जाय, हँसते-हँसते उसे सह लें।

हरिका मार्ग

“आहार, निद्रा और शरीरकी ऐसी दूसरी क्रियाओंमें मनुष्य और पशुके बीच कोई फ़र्क़ नहीं। पाशवी वृत्तियोंसे मुक्त हो कर नैतिक दृष्टिसे अपनेको ऊपर उठानेकी लगातार कोशिश ही मनुष्यको पशुसे अलग करती है। आज समूची मानव-जातिके सामने दो रास्ते खड़े हैं। सवाल यह है कि वह जंगलके यानी पशु-जीवनके नियमोंका अनुसरण करना चाहती है या मानव-जीवनके नियमोंका? हिन्दुस्तानमें हमने २५ साल पहलेसे सोच–समझ कर मानव-जीवनको अपनाया है। लेकिन मुझे लगता है कि हम सिर्फ़ श्रेष्ठ नियमोंके अनुसरणकी बातें ही करते हैं। हमारे बरतावके साथ उसका मेल नहीं बैठता। हम ढिंढोरा पीटकर दुनियासे यह कहते हैं कि अहिंसा बहादुरोंका हथियार है, लेकिन हममें कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने उसे कमज़ोरोंका हथियार माना है और उसको नीचे गिराया है। मेरी अपनी यह राय है कि अभी-अभी बंबईमें जिस तरहकी वारदातें हुईं, उनको होते देख कर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना निरी नामरदी है। मैं बहुत ही नम्र भावसे यह कहा चाहता हूँ कि अहिंसाका मार्ग सचमुच ही शूरोंका मार्ग है। गुजरातके भक्त कवि प्रीतमने कहा है कि हरिका मार्ग शूरोंका मार्ग है, उसमें कायरोंका काम नहीं। यहाँ हरिके मार्गसे मतलब है, अहिंसा और सत्यका मार्ग। मैं पहले कह चुका हूँ कि अहिंसा और सत्यके सिवा दूसरे किसी ईश्वरकी मैं कल्पना नहीं कर सकता। अगर आपने अहिंसाको उसके पूरे-पूरे अर्थमें समझे बिना अहिंसक सिद्धान्तको अपनाया हो, तो आपको उससे इनकार करनेकी छूट है। मैं .खुद ग़लतियों को क़बूल करके उन्हें सुधारनेके तरीक़ेमें मानता हूँ। इस तरह अपनी ग़लती क़बूल करनेसे आदमीकी ताक़त बढ़ती है और आत्माकी शुद्धि होती है। अहिंसा हमसे यह अपेक्षा रखती है कि हम उलट कर चोट किए बिना चोटोंको सहनेकी ताक़त और हिम्मत दिखायें और अपने पर पड़नेवाली चोटोंके जवाबमें हाथ तक ऊपर न उठायें। लेकिन अहिंसाका मतलब यहीं खतम नहीं हो जाता। मौक़ा पड़ने पर पूरी तरह सच्ची बातका ऐलान करने और उसके मुताबिक़ बरतनेका फ़र्ज़ जब सामने आ पड़े, तब चुप रह जाना, निरी नामरदी है। अगर कांग्रेसकी घोषणाके अनुसार सत्य और अहिंसाके मार्गसे हमें हिन्दुस्तानकी आज़ादी हासिल करनी हो, तो हमको अपने अन्दर इस हिम्मतको बढ़ाना ही होगा। यह एक ऐसा आदर्श है जिसके लिए जीना भी सार्थक होगा और मरना भी। आप लोगोंमेंसे जिन-जिनने इस आदर्शको अपनाया है उनको यह महसूस करना चाहिये कि एक भी अंग्रेज़ औरत या बच्चे पर किया गया हमला उनके अहिंसा-धर्मके लिए चुनौती ही है, और जिस पर हमला हो रहा हो, उसे अपनी जानको जोखिममें डालकर भी बचानेका उनका फ़र्ज़ है। तभी आपको यह गानेका अधिकार होगा कि हरिका मार्ग शूरोंका है, कायरोंका नहीं। महज़ इसलिए कि हमें मौजूदा सरकारसे शिकायत है, किसी मनुष्य नामधारीको यह शोभा नहीं देता कि वह असहाय अंग्रेज़ औरतों और बच्चों पर हमला करे।

शक करना ही नामरदी है

“ब्रिटिश सरकारके मंत्रियोंका प्रतिनिधि-मण्डल हिन्दुस्तानमें कुछ दिनोंके अन्दर ही आनेवाला है। उनकी साफ़ नीयतके बारेमें पहले ही से शक करना भी एक तरहकी कमज़ोरी है। ब्रिटिश मंत्रियोंने यह ऐलान किया है कि वे हिन्दुस्तानके क़र्ज़ को चुकानेके लिए आ रहे हैं। उनकी इस घोषणाका जो सीधा अर्थ निकलता है उसीको स्वीकार करना एक बहादुर क़ौमके नाते हमारा धर्म है। अगर कोई क़र्ज़दार अपनी ग़लतीको महसूस करके प्रायश्चित्त करनेके विचारसे आपकी चीज़ आपको लौटाने आये, तो क्या आपका यह फ़र्ज़ नहीं कि आप उसका स्वागत करें? इसके खिलाफ़ पुराने अन्यायोंको याद करके उसका अपमान करना, उसे ज़लील करना, क्या नामरदी नहीं? ब्रिटिश सरकारको ही आखिरी बार यह साबित करने दीजिये कि वह जो कुछ कहती है, सो करके दिखानेकी उसकी नीयत नहीं है। अगर उसने ऐसा किया तो उसका इलाज करनेके लिए हमारे पास काफ़ी वक़्त है। तब तक मर्दानगी और खानदानियतका तकाज़ा है कि हम शानके साथ खामोश रहें।

(‘हरिजन’से) प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुजरात हिन्दुस्तानी प्रचार समिति

जब सब जेलमें थे तब भी गुजरातमें हिन्दुस्तानीके प्रचारका काम काकासाहब कालेलकरके पट्टशिष्य श्री अमृतलाल नाणावटी चलाते रहे, यह उनके और गुजरातके लिए शोभास्पद है। हिन्दुस्तानी भाषाके प्रचारका काम हिन्दी प्रचारका विरोधी नहीं, बल्कि उसकी पूर्ति करनेवाला है। निरी हिन्दी, यानी नागरी लिपिमें लिखी जानेवाली संस्कृतमयी भाषा राष्ट्रभाषा नहीं, न उर्दू लिपिमें लिखी जानेवाली फारसीमयी भाषा राष्ट्रभाषा है। इसके बारेमें काफ़ी लिख चुका हूँ, इसलिए यहाँ दलीलें नहीं दूँगा। यहाँ तो सिर्फ़ यही कहूँगा कि हिन्दी जाननेवालेको उर्दू सीखनी चाहिये और उर्दू जाननेवालेको हिन्दी। तभी हम सच्ची राष्ट्रभाषा पैदा कर सकेंगे। इसलिए गुजरातने जो एक क़दम आगे बढ़ाया है, उसका ज़िक्र भर करनेको यह लिखा है। यहाँ जिस क़दमका मैंने ज़िक्र किया है, उसकी ज्यादा जानकारी नीचेके दो मज़मूनोंसे होगी।

मो० क० गांधी

१

वर्धा, ता० १८–२–'४६

श्री० महामात्र,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

भाईश्री,

पूज्य महात्माजीकी प्रेरणासे हम दो जने पिछले छह सालोंसे गुजरातमें 'गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार'के नामसे राष्ट्रभाषाका प्रचार करते रहे हैं। साथ ही, इस प्रचारके सिलसिलेमें विद्यार्थियोंकी योग्यताकी परीक्षा लेनेके उद्देश्यसे हमने वर्धाकी राष्ट्रभाषा प्रचार समितिकी परीक्षाओंकी एजन्सी भी चलाई थी। महात्माजीकी प्रेरणाके अनुसार इन परीक्षाओंको चलानेमें भी हमारा हाथ था ही। आगे चलकर जब यह महसूस किया गया कि इन परीक्षाओंकी नीति प्रयागके हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी नीतिके साथ संकुचित बनती जा रही है, तो हमने इन संस्थाओंसे 'गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार'का सम्बन्ध तोड़ लिया। जेलसे बाहर आनेके बाद पूज्य गांधीजीको भी सम्मेलनके कर्त्ता-धर्त्ता श्री टण्डनजीके साथके लम्बे पत्र-व्यवहारके बाद उस संस्थासे और उसकी परीक्षाओंसे अपना सम्बन्ध तोड़ लेना पड़ा।

पूज्य गांधीजीने राष्ट्रभाषाको जो नई व्यापक दृष्टि दी है, उसके अनुसार हिन्दुस्तानीके नामसे राष्ट्रभाषाका प्रचार करने और लाज़िमी तौरसे नागरी और उर्दू लिपिमें उसे चलानेके लिए पिछले ढाई सालसे हम इस तरहकी परीक्षायें भी लेते हैं। परिस्थितिके अनुकूल होते ही 'गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार' संस्थाको गांधीजीकी नई संस्था हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके साथ जोड़ दिया गया है।

इस सब कामको चलानेमें गूजरात विद्यापीठ और नवजीवन संस्थाका सहयोग शुरूसे ही रहा है। यहाँ हम इसका कृतज्ञतापूर्वक उल्लेख करते हैं।

गुजरातकी जनताको राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके प्रचारका महत्त्व अधिकाधिक ध्यानमें आता जाता है और इस कामका विस्तार बढ़ रहा है। ऐसी हालतमें हमें यह ज़रूरी मालूम होता है कि गूजरात विद्यापीठके समान राष्ट्र-निर्माणके रचनात्मक कामका बीड़ा उठानेवाली प्रौढ़ संस्था इस कामको अपने ही हाथोंमें ले ले। इसलिए हमारी प्रार्थना है कि हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके साथ संबद्ध रहकर चलनेवाले इस सारे कामको गुजरात विद्यापीठ अपने हाथमें ले और इसे विधिवत् अपनाये।

गुजरात और कच्छ-काठियावाड़में यह जो काम चल रहा है, उसमें हमारी दिलचस्पी कम नहीं हुई है। हम अपनी शक्तिके अनुसार समूचे हिन्दुस्तानमें राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके प्रचारका काम करते ही हैं। इसलिए गुजरातकी अपनी इस संस्थाको विद्यापीठके सिपुर्द कर देनेके बाद भी इस कामके सिलसिलेमें विद्यापीठ हमारी सेवाको जहाँ-जहाँ ज़रूरी समझेगा, वहाँ-वहाँ हम अपनी सेवा कर्त्तव्यभावसे उसे देते रहेंगे।

कृपाकर हमारे इस पत्रको गूजरात विद्यापीठ मण्डलके सामने पेश कीजियेगा और हमें मण्डलके निर्णयकी सूचना भेजियेगा।

सेवक,
काका कालेलकर
अमृतलाल नाणावटी

श्री महामात्रका पत्र

(विद्यापीठ-मण्डल-परिपत्र ४/४५-४६)

इसके साथ श्री काकासाहब कालेलकर और श्री अमृतलाल नाणावटीका पत्र भेजा जा रहा है। आपको मालूम है कि मण्डलकी पिछली बैठकमें हिन्दुस्तानी-प्रचारके कामको विद्यापीठकी देखरेखमें चलानेका ठहराव मुल्तवी किया गया था। उसके बाद जब वर्धामें हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभाकी बैठक हुई तो वहाँ पूज्य गांधीजीकी सम्मतिसे यह विचार किया गया कि गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार संस्था जो काम कर रही है, उसे वह विद्यापीठको सौंप दे। साथमें नत्थी किया गया पत्र उसी सिलसिलेमें और उसीके अनुसार है।

इस कामको अपने हाथमें लेनेके ही बात हमने सोची ही है। उसके मुताबिक़ मेरी यह सिफ़ारिश है कि ऊपरके पत्रके सिलसिलेमें हमें इसके साथ नत्थी किया गया प्रस्ताव पास कर लेना चाहिये। आप इस बारेमें अपनी राय कोई आठ दिनके अन्दर मुझे भेज दीजियेगा।

ता० १४–३–१९४६

विद्यापीठका ठहराव

श्री महामात्र द्वारा भेजा गया, विद्यापीठ-मण्डल-परिपत्र नं० ४।४५-४६, और उसके साथ नत्थी किया गया श्री गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार संस्थाके अध्यक्ष और संचालक (क्रमशः) श्री काकासाहब कालेलकर और श्री अमृतलाल नाणावटी द्वारा महामात्रको लिखा गया पत्र, दोनों, देखे। इस सम्बन्धमें यह तय किया जाता है कि महामात्रने अपने परिपत्रमें जो सिफ़ारिश की है, वह मंजूर की जाय और विद्यापीठ उक्त संस्थाके काम-काजको नये सालसे (यानी जून, १९४६से) सँभाल ले।

२. श्री महामात्रको यह अधिकार दिया जाता है कि वे इस कामसे सम्बन्ध रखनेवाले दफ़्तरी काग़ज़ात और हिसाब-किताब वग़ैराको श्री अमृतलाल नाणावटीसे समझ लें और उन्हें विद्यापीठ-कार्यालयकी देखरेखमें ले लें।

३. पिछले छह वर्षोंसे श्री काकासाहब और श्री नाणावटीने राष्ट्रभाषाका काम करके गुजरातमें राष्ट्रीय शिक्षाकी जो सेवा की है, उसकी 'नोंध' ली जाती है, और उसके लिए यह मण्डल उन्हें मुबारकबादी देता है। साथ ही, हर्ष और आभारके साथ यह बात नोट की जाती है कि आगे भी वे इस कामके सिलसिलेमें विद्यापीठको अपनी मदद देते रहेंगे।

४. इस कामके लिए नीचे लिखी समिति नियुक्त की जाती है। यह समिति श्री गुजरात हिन्दुस्तानी प्रचार समिति कही जायगी।

१. कुलनायक सरदार श्री वल्लभभाई पटेल, अध्यक्ष
२. श्री मोरारजी देसाई
३. ,, जुगतराम दवे
४. ,, बबलभाई महेता
५. ,, विट्ठलदास कोठारी
६. ,, अमृतलाल नाणावटी
७. ,, गिरिराजजी
८. ,, नानाभाई भट्ट
९. ,, करीमभाई वोरा
१०. ,, जीवणजी देसाई
११. महामात्र श्री मगनभाई देसाई, मंत्री

५. विद्यापीठकी दूसरी समितियोंकी तरह इस समितिकी नियुक्ति भी वार्षिक मानी जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६. इस समितिको अधिकार होगा कि यह अपना काम चलानेके लिए परीक्षा-समिति जैसी उपसमितियोंको नियुक्त करे ।

७. गुजरात-काठियावाड़के ज़िलों और शहरोंमें मुक़ामी प्रचारकके कामका प्रबन्ध किस तरह करना मुनासिब और माफ़िक़ होगा, सो भी यह समिति ख़ुद सोच ले ।

८. मण्डल यह विनती करता है कि जो भाई-बहन आज गुजरातमें राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीका काम कर रहे हैं, वे सब इस कामके विकास और विस्तारमें विद्यापीठकी मदद करें । साथ ही, यह आशा की जाती है कि गुजरातके राष्ट्रप्रेमी भाई-बहन और स्कूलों व कॉलेजोंके शिक्षक-शिक्षिका और विद्यार्थी-मण्डल भी इस कामको अपना लेंगे ।

२

आभार

पूज्य गांधीजीकी सूचनाके अनुसार और नवजीवन संस्थाकी मददसे सन् १९३९ के अक्तूबर महीनेमें हमने 'गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार' का काम शुरू किया, और इस संस्थाके ज़रिये हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनकी वर्धा-समितिकी परीक्षायें गुजरातमें चलाईं । सन् १९४२ में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनके साथ मतभेद होने पर गांधीजीने हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धाकी स्थापना की । इस सभाकी राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी नीति पूरी तरह राष्ट्रीय है और इसलिए गुजरातमें भी उसीके अनुसार काम चलाना चाहिये, ऐसा निर्णय करके गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार संस्था ने अपनी दो लिपिवाली तीन परीक्षायें शुरू कीं । इसके परिणाम-स्वरूप हमें सम्मेलनवाली वर्धा-समितिकी परीक्षाओंको छोड़ देना पड़ा । पूज्य गांधीजीके जेलसे छूटने पर हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धाका काम बाक़ायदा शुरू हुआ और सभाने गुजरात की परीक्षाओंको और परीक्षा लेनेवाली हमारी संस्थाको अपनी मंज़ूरी दी । आज तकके इस सारे इतिहासको गुजरातके राष्ट्रभाषा-प्रेमी जानते ही हैं ।

शुरूसे ही हमारा आग्रह था कि राष्ट्रभाषा-सम्बन्धी सभी काम गुजरात विद्यापीठके जैसी प्रौढ़ राष्ट्रीय संस्था चलावे; लेकिन किसी-न-किसी कारण परिस्थिति अनुकूल न होनेसे ऐसा हो नहीं पाया ।

अब जब परिस्थितियाँ अनुकूल हुईं, तो हमने अपना आग्रह श्री गूजरात विद्यापीठ पर प्रकट किया । हमें यह लिखते हुए सन्तोष होता है कि गूजरात विद्यापीठ ने हमारी बातको मंज़ूर करके राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके प्रचारकी सारी व्यवस्थाको अपने हाथमें ले लेनेका निश्चय किया है ।

इन साढ़े छह बरसोंमें गुजरातमें हमने जो काम किया, उसे चलानेके लिए ज़रूरी पैसोंकी मदद श्री नवजीवन संस्था ने की । इसके सिवा तीन साल तक वर्धा-समितिकी परीक्षा चलानेके लिए उसे समितिने नियमानुसार सहायता दी थी, और जिस वक़्त देश नाज़ुक हालतमेंसे गुज़र रहा था, उस वक़्त गुजरातकी दो बहनोंने क़ीमती मदद पहुँचाई थी ।

गुजरात राष्ट्रभाषा प्रचार-सम्बन्धी अपनी ज़िम्मेदारीको सन्तोषजनक रीतिसे छोड़ते समय हम हृदयपूर्वक उन सब संस्थाओंका, गुजरातके राष्ट्रभाषा-प्रेमी नर-नारियोंका और प्रचारक भाई-बहनोंका आभार मानते हैं, जिन्होंने हमें पैसेकी और दूसरी मदद की और जब गांधीजी ने राष्ट्रभाषाकी नीतिके सिलसिलेमें एक क़दम आगे बढ़ाया, तो उस नीतिके प्रति श्रद्धा रख कर निष्ठाके साथ हमारी सहायता करते हुए हमारे साथ खड़े रहे ।

आजकी और आगेकी परिस्थितिका ख़याल रख कर स्वराज्यका वातावरण पैदा करनेकी कोशिशमें लगे हुए गुजरातके तमाम भाई-बहन अबसे आगे गूजरात विद्यापीठकी ओरसे चलनेवाले हिन्दुस्तानी-प्रचारके काममें दिन-दिन ज़्यादा दिलचस्पी लें, यही हमारी प्रार्थना है । विद्यापीठको जब ज़रूरत होगी तब हमारी तत्पर सेवा उसके हाथमें ही रहेगी ।

वर्धा, २२-३-'४६ काका कालेलकर

सच्ची नीति क्या है ?

"क्या इटली, जर्मनी और जापान, तीनों, इसलिए हारे कि वे हिंसामें मानते थे, या लड़ाईने जो ढंग अख्तियार किया था उससे थककर उन्हें हारना पड़ा ? क्या आप यह कह सकते हैं कि ब्रिटेन, रूस और अमेरिकाकी जीत उनकी अहिंसाकी वजहसे हुई ?"

एक भाईने, जो कुछ परेशान-से लगते हैं, इस मतलबकी दलील की है और सवाल पूछा है । मेरे लेखका जो हिस्सा उन्होंने दिया है, उसमें विजयी राष्ट्रोंका कोई ज़िक्र तक नहीं किया गया है । शायद इस चीज़ पर वे ध्यान नहीं दे पाये । लेकिन एक दूसरी जगह मैंने यह साफ़ कहा है कि अगर जीते हुए राष्ट्र इस लड़ाईसे समय रहते सबक़ नहीं सीखेंगे और अपने जीवनको अहिंसाके उसूल पर खड़ा नहीं करेंगे तो उनकी जीत बिलकुल झूठी साबित होगी । सच ही कहा गया है कि जो तलवारके बल पर जीता है वह तलवार ही से मरेगा । इसमें शक नहीं कि जीतनेवालों और हारनेवालों, दोनोंने, एक ही से साधनोंका इस्तेमाल किया था, फ़र्क़ सिर्फ़ कम-ज़्यादाका था । लेकिन अब जीतनेवाले ही आपसमें लड़नेको उतारू हो रहे हैं । लड़ाई शुरू नहीं हो सकी है, इसकी वजह सिर्फ़ यही है कि वे अभी उसके लिए तैयार नहीं हो पाये हैं । आख़िर आदमी बेजान कल-पुरजा तो है नहीं । अगर वह लगातार लड़ता ही रहे, तो जानवर बन जाय । इसलिए हम यह उम्मीद करें कि मनुष्य-जातिके लिए ये लोग गहराईसे सोचने लगेंगे । इस तरह सोचनेसे उन्हें पता चलेगा कि अपने ही भाइयोंका गला काटनेसे कोई फ़ायदा नहीं होता । साथ ही, वे यह भी महसूस करेंगे कि शान्तिके फल युद्धके फलोंके मुक़ाबले कहीं ज़्यादा मीठे और कल्याणकारी होते हैं । विनाशके साधनोंको ढूँढ़नेमें ख़र्च की गई बुद्धि आदमीको गिराती है । इसलिए उसे अ-विनाश या निर्माणके साधनोंकी शोध करनेमें लगाना मनुष्य-जातिके लिए शोभा देनेवाला है ।

नई दिल्ली, ५-४-'४६

('हरिजन' से) मोहनदास करमचंद गांधी

हरिजन व आदिवासी बालिकाओंके लिए छात्रवृत्तियाँ

किंग्सवे दिल्लीसे हरिजन-सेवक-संघके प्रधानमंत्री लिखते हैं :

"अपनी पत्नी श्रीमती दुर्गादेवी खेमकाकी स्मृतिको स्थायी करनेके लिए श्री सीताराम खेमकाने कुछ छात्रवृत्तियाँ प्रदान करनेका निश्चय किया है, और उनमेंसे तीन-तीन छात्रवृत्तियाँ हरिजन तथा आदिवासी छात्राओंको दी जायेंगी ।

१. हिन्दी भाषा-भाषी और पिछड़े क्षेत्रकी छात्राओंको तरजीह दी जावेगी ।

२. १५) मासिककी छात्रवृत्तियोंमेंसे एक छात्रवृत्ति आयुर्वेदिक कोर्सके लिए तथा एक एलोपेथिक कोर्सके लिए सुरक्षित है ।

३. १५) मासिककी छात्रवृत्तियोंमेंसे एक छात्रवृत्ति स्त्रियोपयोगी दस्तकारी सीखनेके लिए सुरक्षित रखी है ।

४. १०) मासिककी छात्रवृत्तियोंमेंसे २ छात्रवृत्तियाँ नर्स ट्रेनिंग कोर्सके लिए सुरक्षित हैं ।

५. शेष छात्रवृत्तियाँ हाईस्कूल अथवा कॉलेजमें पढ़नेवाली लड़कियोंको दी जायेंगी ।

हरिजन व आदिवासी छात्राओंके आवेदन-पत्रों पर हरिजन-सेवक-संघ, दिल्लीके प्रधानमंत्री विचार करके छात्रवृत्ति देनेका निर्णय करेंगे । इसके लिए आवेदन-पत्र उनके पास ३१ मई, १९४६ तक पिछले स्कूल या कॉलेजके ज़रिये अथवा आगे वे जिसमें भरती हों, उस स्कूल व कॉलेज द्वारा ३१ मई, १९४६ तक आ जाना चाहिये । आवेदन-पत्रके फ़ॉर्म प्रधानमंत्री, हरिजन-सेवक-संघ, किंग्सवे, दिल्लीसे मिल सकते हैं ।"

किंग्सवे, दिल्ली, १५-३-'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज़ादी

रजि० नं० बी ५४४८

हरिजन-सेवक

तीन आना
१२ पृष्ठ

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क १३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ५ मई, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

अहिंसक सेवादल

एक बार मेरे सुझानेसे ही शान्तिदल क़ायम करनेकी कोशिशें हुई थीं। लेकिन उनका कोई नतीजा नहीं निकला। उनसे इतना सीखनेको मिला कि शान्तिदल बड़े पैमाने पर काम नहीं कर सकते। बड़े-बड़े दलोंको चलानेके लिए सज़ा नहीं, तो सज़ाका डर होना चाहिये और ज़रूरत मालूम होने पर सज़ा भी दी जानी चाहिये। ऐसे हिंसक दलोंमें आदमीके चाल-चलनको नहीं देखा जाता। उसके क़द और डीलडौलको ही देखा जाता है। अहिंसक दलमें इसके ठीक उलटा होता है। उसमें शरीरकी जगह गौण होती है। शरीरी सब कुछ है, यानी चरित्र सब कुछ है। ऐसे चरित्रवान् आदमीको पहचानना मुश्किल है। इसलिए बड़े-बड़े शान्तिदल क़ायम नहीं किये जा सकते। वे छोटे ही होंगे। जगह-जगह होंगे, हर गाँव या हर मुहल्लेमें होंगे। मतलब यह कि जो जाने-पहचाने लोग हैं, उन्हींकी टुकड़ियाँ बनेंगी। वे मिलकर अपना एक मुखिया चुन लेंगे। सबका दरजा बराबर होगा। जहाँ एकसे ज़्यादा आदमी एक ही तरहका काम करते हैं, वहाँ उनमें एकाध ऐसा होना चाहिये, जिसके हुक्मके मुताबिक़ सब कोई चल सकें। ऐसा न हो तो मेलजोलके साथ, सहयोगसे, काम न हो सके। दो या दोसे ज़्यादा लोग अपनी-अपनी मरज़ीसे काम करें, तो मुमकिन है कि उनके कामकी दिशा (सिम्त) एक दूसरेसे उलटी हो। इसलिए जहाँ दो या दोसे ज़्यादा दल हों, वहाँ वे हिलमिल कर काम करें, तभी काम चल सकता है और उसमें कामयाबी हो सकती है।

इस तरहके शान्तिदल जगह-जगह हों, तो वे आरामसे और आसानीसे दंगा-फ़सादको होनेसे रोक सकते हैं। ऐसे दलोंको अखाड़ोंमें दी जानेवाली सभी तरहकी तालीम देना ज़रूरी नहीं। उसमेंकी कुछ तालीम लेना ज़रूरी हो सकता है।

सब शान्तिदलोंके लिए एक चीज़ आम यानी सामान्य होनी चाहिये। शान्तिदलके हरएक मेम्बरका ईश्वरमें अटल विश्वास होना चाहिये। उसमें यह श्रद्धा होनी चाहिये कि ईश्वर ही सच्चा साथी है और वही सबका सरजनहार है, कर्त्ता है। इसके बिना जो शान्ति-सेनाएँ बनेंगी, मेरे ख़यालमें वे बेजान होंगी। ईश्वरको आप अल्लाहके नामसे पहचानें, ख़ुदा मज़्द कहें, जीहोवा कहें, जीता-जागता क़ायदा कहें, राम कहें, रहमान कहें, किसी भी नामसे पुकारें, मगर उसकी शक्तिका उपयोग तो आपको करना ही है। ऐसा आदमी किसीको मारेगा नहीं, बल्कि ख़ुद मरकर जीतेगा और जी जायगा।

जिस आदमीके लिए यह क़ानून एक जीती-जागती चीज़ बन जायगा उसको वक़्तके मुताबिक़ अक़्ल भी अपने आप सूझती रहेगी।

फिरसी अपने तजरबेसे यहाँ कुछ नियम देता हूँ :

१. सेवक अपने साथ कोई भी हथियार न रक्खे।

२. वह अपने बदन पर ऐसी कोई निशानी रक्खे, जिससे फ़ौरन पता चले कि वह शान्तिदलका मेम्बर है।

३. सेवकके पास घायलों वग़ैराकी सार-सँभालके लिए फ़ुरत काम आनेवाली चीज़ें रहनी चाहियें। जैसे, पट्टी, कैंची, छोटा चाकू, सुई वग़ैरा।

४. सेवकको ऐसी तालीम मिलनी चाहिये, जिससे वह घायलोंको आसानीसे उठाकर ले जा सके।

५. जलती आगको बुझानेकी, बिना जले या झुलसे आगवाली जगहमें जानेकी, ऊपर चढ़ने और उतरनेकी कला सेवकमें होनी चाहिये।

६. अपने मुहल्लेके सब लोगोंसे उसकी अच्छी जान-पहचान होनी चाहिये। यह ख़ुद ही एक सेवा है।

७. उसे मन-ही-मन रामनामका बराबर जप करते रहना चाहिये और इसमें माननेवाले दूसरोंको भी ऐसा करनेके लिए समझाना चाहिये।

कुछ लोग आलसकी वजहसे या झूठी आदतकी वजहसे यह मान बैठते हैं कि ईश्वर तो है ही और वह बिना माँगे मदद करता है, फिर उसका नाम रटनेसे क्या फ़ायदा? हम ईश्वरकी हस्तीको क़बूल करें या न करें, इससे उसकी हस्तीमें कोई कमी-बेशी नहीं होती, यह सच है। फिर भी उस हस्तीका उपयोग तो अभ्यासी ही कर पाता है! हरएक भौतिकशास्त्रके लिए यह बात सौ फ़ी सदी सच है, तो फिर अध्यात्मके लिए तो यह उससे भी ज़्यादा सच होनी चाहिये। फिर भी हम देखते हैं कि इस मामलेमें हम तोतेकी तरह रामनाम रटते हैं और फलकी आस रखते हैं। सेवकमें इस सचाईको अपने जीवनमें सिद्ध करनेकी ताक़त होनी चाहिये।

नई दिल्ली, २५-४-'४६

('हरिजनबंधु' से) मोहनदास करमचंद गांधी

बन्दरोंकी शरारत

बन्दरोंकी शरारतसे लोग थक जाते हैं। दिलमें तो ख़ुद भी उनको मारते हैं और कोई मारे तो ख़ुश होते हैं। लेकिन तो भी जब कोई उनको मारता है, तो वे ही लोग उसका विरोध करते हैं। एक भाई, जो शास्त्रादिके अभ्यासी हैं, लिखते हैं कि बन्दर कैसे रसोई बिगाड़ते हैं, चीज़ें उठा ले जाते हैं, फलमात्र खा और बिगाड़ जाते हैं, यहाँ तक कि बच्चोंको भी उठा ले जाते हैं। दिन-दिन उनकी बढ़ोतरी होती है। उनके लिए अहिंसा क्या कहती है, वह मुझसे पूछते हैं।

मेरी अहिंसा मेरी ही है। जीवदयाका जो अर्थ किया जाता है, उसे मैं हज़म नहीं कर सकता। जो जीव मनुष्यको खा जाय या उसका नुक़सान करे उसे बचानेकी दया मुझमें नहीं है। उनकी बढ़ोतरीमें हिस्सा लेना मैं पाप समझता हूँ। इसलिए मैं चींटियों, बन्दरों और कुत्तोंको खाना नहीं खिलाऊँगा। उन जीवोंको बचानेके लिए किसी मनुष्यको मैं कभी नहीं मारूँगा।

इस तरह विचार करते हुए मैं इस नतीजे पर आया हूँ कि बन्दर जिस जगह उपद्रव-रूप हो गये हैं, उस जगह उनको मारनेमें जो हिंसा होती है वह क्षम्य है। ऐसी हिंसा धर्म होती है।

यह सवाल उठ सकता है कि मनुष्यके लिए भी यही नियम क्यों न लगाया जाय? मनुष्यके लिए यह नहीं लग सकता, क्योंकि वह हमारे जैसा ही है। ईश्वरने मनुष्यको बुद्धि दी है, जो मनुष्येतर प्राणीको नहीं दी।

नई दिल्ली, २६-४-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनु गांधीका शिविर

इस अंकमें श्री कनु गांधी के दूसरे शिविरका अहवाल छपा है। शिविरमें विद्यार्थी किस तरह चुने गये, उसमें घाटा क्यों नहीं हुआ, पाखाना सफ़ाईसे लेकर विद्यार्थियोंने क्या-क्या काम किया, क्या खाया, वग़ैरा सब जानने लायक़ चीज़ें हैं। यह सब ध्यान दिलाने लायक़ है। इसमें छोटी-से-छोटी चीज़ पर भी ध्यान दिया गया है। शिविरके संचालक और सदस्य दोनोंके लिए यह पथ-प्रदर्शक होगा।

मैं शिविरकी सफलताका मुख्य कारण यह मानता हूँ कि संचालक लोग अपने-अपने काममें कुशल थे, और अन्त तक ख़ुद भी सब कामोंमें हिस्सा लेते थे — हुक्म करनेवाले नहीं थे। जहाँ संचालक हुक्म करनेवाले रहते हैं वहाँ ज़्यादातर शिथिलता आ जाती है।

यह शिविर पूरे समय न चल सका यह दुःखकी बात है। ऐसा होनेके सबल कारण थे। इतनी आशा रखें कि लोगोंने इस शिविरमें जो कुछ पाया उसका वे लोग पूरा उपयोग करेंगे, दिन-दिन आगे बढ़ेंगे और शुद्ध सेवक बनेंगे।

नई दिल्ली, २९-४-'४६

('हरिजनबंधु' से) मोहनदास करमचंद गांधी

[श्री कनु गांधी लिखते हैं :

"अख़बारोंके ज़रिये मैंने यह पहले ही ज़ाहिर कर दिया था कि 'उन दिनों गरमी काफ़ी सख्त होगी और पूज्य बापूजी भी नहीं होंगे, इसलिए जिन्हें काम सीखना है वे ही आवें।' कुल सौ विद्यार्थी लेनेका इरादा था। शिविरमें आनेके लिए १६०के ऊपर लोगोंके ख़त आये। ऐलानके मुताबिक़ ज़्यादातर ख़त बारडोली पहुँचनेकी वजहसे ठीक वक़्त पर न मिल सके। ता० २४ तक जिन लोगोंके ख़त मिल चुके थे, उन्हींको आवेदन-पत्र भेजे गये। क़रीब ४० आवेदन-पत्र भरकर वापस आये। उनमें से ३०को शिविरके लिए चुना गया।

इस शिविरमें ४ बहनें थीं और २२ भाई थे। उनमें हैदराबाद (दक्षिण) १; संयुक्तप्रान्त १; उड़ीसा १; दार्ज़िलिंग १; आन्ध्र २; मध्यप्रान्त ५; पंजाब ५ और गुजरात के ९ थे।

श्री मोहनसिंहजीने पिछले शिविरकी तरह रसोईका काम सँभाला और श्री कृष्णदास भाईने सफ़ाईके कामकी ज़िम्मेवारी उठाकर मुझे बहुत मदद दी।

रसोईघर तालीमी-संघके विद्यार्थियोंके साथ ही रखा था। चूँकि उन लोगोंके चूल्हेसे बहुत धुआँ निकलता था और रसोई करनेवालेको बहुत त्रास देता था, इसलिए श्री मोहनसिंहजीने अपनी पद्धतिके अनुसार दो बड़े चूल्हे बनाये थे। उनका धुआँ चिमनीके ज़रिये बाहर जाता रहता था, इसलिए तालीमी-संघके विद्यार्थियोंको भी रोटी बनानेमें आनन्द होता था।

रसोईघरके काममें तीनों समय परोसनेका काम ८-८ की टोलीमें रोज़ शिविरके लोग करते थे। तरकारी काटना, बरतन माँजना, अनाज-सफ़ाई वग़ैरा काम शिविरके विद्यार्थी तालीमी-संघके विद्यार्थियोंके साथ मिलकर करते थे।

सुबह नाश्तेमें दलिया, और कभी-कभी अंकुर फूटे हुए चने देते थे। दोपहर और शामको जुवारकी बड़ी-बड़ी रोटियाँ, दाल-भात, शाक और कुल मिलाकर क़रीब २० तोला दही या छाछ देते थे। घीके बदलेमें तेल देते थे। रोज़का व्यक्तिगत भोजन-ख़र्च ६ आने ९ पाई आया।

सफ़ाई में ३०-४० मिनिट लगते थे। विद्यार्थी काम सब अच्छी तरहसे करते थे। पाखानेके खड्डे भी इस बार उन्हींने तैयार किये थे। रास्ते वग़ैराकी सफ़ाईका काम पिछले शिविरके जैसा ही बाँट दिया गया था। बालटीके पाखानेका अनुभव करानेकी ग़रज़से रोज़ ३-४ लोगोंको बारी-बारीसे उसका उपयोग करने देते थे और उसकी सफ़ाई भी उनसे करवाते थे। सब लोग ख़ुशी-ख़ुशी करते थे।

चर्खा-कार्य :

खादी-विद्यालयकी ओरसे श्री चौधरीजी आते थे। शुरूमें ढाई घण्टे कातने और पौन घण्टा चर्खाशास्त्रके लिए रखा गया था। बादमें पौन घण्टा और बढ़ा दिया गया था।

ज़्यादातर लोगोंको मामूली कातना आता था। सबको पुनाईसे लेकर कातने तककी क्रिया सिखाई गई (पुनाई : सलाई पटरीसे कपास ओटकर सीधे पूनी बना लेना)। शुरूसे ही सब लोग सीधे पुनाई करके कातने लगे। पूरे एक घण्टेमें पुनाई करके, कातकर और परेतकर ज़्यादा-से-ज़्यादा १७० तार निकले।

खेती :

खेतीके लिए भी एक दिन छोड़ कर १३-१३की टुकड़ी १॥ घण्टे काम पर जाती थी। उसमें तरकारीकी क्यारियाँ बनानेकी और खाद वग़ैराकी आवश्यक जानकारी श्री यशवंतभाईने दी।

प्राथमिक उपचार :

डॉ० विजया बहनने दो दिन हड्डी वग़ैराका सामान्य ज्ञान दिया। उसके बाद हड्डी टूटने या हाथ वग़ैरा टूटने पर किस तरह पट्टी बाँधी जाय, सो सिखाया। १३ विद्यार्थियोंको एक दिनके अन्तरसे पौन घण्टा मिलता था।

क़वायद :

श्री पांडेजी सुबह-शाम हरएकको क़वायद कराते थे। साथमें कूच के गीत भी गवाते थे।

झण्डारोहण और झण्डावतरणके गीत, झण्डावन्दनका गीत और राष्ट्रीय गाने वग़ैरा सिखाये गये।

झण्डारोहणकी चालू पद्धति बदलकर मैंने एकदम पुरानी पद्धति अख़्त्यार की। इस बारेमें मैंने आपके साथ भी चर्चा की थी। आजकल झण्डेको तहाकर, पोटली बाँधकर पहलेसे खम्भे पर चढ़ा देते हैं। झण्डावन्दनकी क्रियाके समय अध्यक्ष के रस्सी खींचने से झण्डा खुल जाता है और हवा रही तो फहराने लगता है। इस तरीक़ेमें मैंने और दूसरे लोगोंने महसूस किया है कि कई बार अभ्यास करने पर भी ऐन मौक़े पर झण्डेकी रस्सी खुलती नहीं है, और ज़ोरसे खींचने पर रस्सी टूट भी जाती है, या झण्डेकी रस्सी ग़लत तरीक़ेसे बाँधनेके कारण झण्डा उलटा फहराने लगता है। हरएक देश-प्रेमीको ऐसा झण्डा देख कर दुःख होना स्वाभाविक है। इसलिए इस तरह न करके मैंने पुरानी पद्धति से ही शिविर का आरम्भ किया। पुरानी पद्धतिमें झण्डारोहण के समय ही नीचेसे खुला झण्डा फहराया जाता है। ये दोनों पद्धतियाँ विद्यार्थियोंको बताई गईं और नई पद्धति शुरू करनेकी ज़रूरत और उसके फ़ायदे सबको समझाये गये। सबको यह नई पद्धति अच्छी लगी।

राष्ट्रीय गीतोंमें 'वन्देमातरम्'; 'झण्डा ऊँचा रहे हमारा'; 'राष्ट्रगगनकी दिव्य ज्योति'; 'जनगण-मन-अधिनायक'; 'सारे जहाँसे अच्छा;' वग़ैरा गीत सिखाये गये।

प्रार्थना :

पिछले सालकी तरह ताल पर भजन गवाये गये। सुबहकी प्रार्थनामें तालीमी-संघके विद्यार्थी हिस्सा लेते थे। बादमें शामको खादी-विद्यालयके विद्यार्थी भी आने लगे — खास करके राष्ट्रीय गाने सीखनेके लिए।

भजनोंमें 'नाम जपन क्यों छोड़ दिया;' 'मनकी मनही माँहि रही;' 'है बहारे बाग़ दुनियाँ चन्दरोज़;' 'क्यों मन जीवन सार बिसारा;' सिखाये गये।

इसके अलावा श्री आशाबहन, श्री आर्यनायकम्‌जी, श्री नरहरिभाई, श्री पारनेरकरभाई, पू० विनोबाजी, श्री श्रीमन्नारायणजी, श्री कुमारप्पाजी, और श्री धोत्रेजी वग़ैराके प्रवचन भी हुए।

हिन्दुस्तानी :

आपको यह जानकर आनन्द होगा कि जब मैंने विद्यार्थियोंसे पूछा : 'आपमेंसे उर्दू कौन-कौन सीखेंगे?' तो उर्दू जाननेवाले ५-६ के सिवा सबने प्रबल इच्छा बताई। श्री देवप्रकाशभाई कुल ३॥ घण्टे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिखा सकें। सिखानेका उनका तरीक़ा इतना आसान है कि सब विद्यार्थी पटिये पर लिखा हुआ धीरे-धीरे पढ़ने लग गये। अभ्यास चालू रखेंगे तो आगे बढ़ जायेंगे। संक्षेपमें, दूसरे लोगोंकी तरह विद्यार्थियोंको भी डर था कि "उर्दू कठिन है . . विद्यार्थियोंको सिखानेका आग्रह करना उन पर एक क़िस्मका बोझ बढ़ाने जैसा है।" यह डर एकदम निकल गया। इस तरह हमें लगा कि इस शिविरमें उर्दू-वर्ग शुरू करनेसे हमें फ़ायदा हुआ है।

गरमीके कारण तीन भाइयोंको क़ै हुई। नाकसे .खून तो बच्चोंके गिरता था। प्याज ज़्यादा खिलाने लगे। स्वास्थ्य अच्छा रहा। आख़िरी दिन सबका वज़न लिया गया था। बग़ैर घीके, सिर्फ़ औसतन १५ तोले दूधकी चीज़ोंसे भी कई लोगोंका २ से ८ रतल तक वज़न बढ़ गया। ४ का २ से ५ रतल तक कम हुआ। २ का वज़न स्थिर रहा।

गरमीके दिनोंमें शिक्षकोंकी भी कमी महसूस हुई। आपके कामोंके बारेमें विद्यार्थियोंको कुछ जानकारी हासिल हो, इसके लिए एक छोटा-सा पुस्तकालय भी रखा था, जिससे काफ़ी मदद मिली।

ता० १३ अप्रैलको राष्ट्रीय सप्ताहके दिन सुबह ६ बजे सेवाग्रामसे ६ मील दूर सेलूकाँठा नामके देहातमें गये थे। वहाँ पूज्य भणसाली भाईके साथ पौन घण्टा गाँवकी सफ़ाई की। उसके बाद गाँव देखकर ११ बजे वापस सेवाग्राम पहुँचे। रास्तेमें १। घण्टा बारिश हुई।

सब काम अपने हाथसे करने और किसी चीज़का बिगाड़ न हो, इस बातका खयाल रखनेसे खर्च कम हुआ और घाटा भी नहीं रहा।"

नई दिल्ली, २९-४-'४६   मो० क० गांधी] २

कातनेसे स्वराज्य कैसे?

चरखा-संघके एक सेवक लिखते हैं:

"जब कत्तिनोंको खादीधारी बनाना है, उन्हें समझ-बूझ कर कातना सिखाना है, तो व्यापारिक काम तो कम ही हो सकेगा। यह सब ठीक है। मैं नई योजना या चरखा-संघकी नई नीतिको बहुत पसन्द करता हूँ। लेकिन यह खत लिख कर आपको इसलिए तकलीफ़ देता हूँ कि आपने 'हरिजन'में जो लिखा है वह और ज़्यादा साफ़ हो जाय। आप लिखते हैं: 'कातनेवालोंको उनके पैरों पर खड़ा करना और उनके कामोंके मारफ़त हिन्दुस्तानकी आज़ादी हासिल करना चरखा-संघका उद्देश्य या मक़सद है. . . . कातनेवालोंको कताईसे पहले और बादकी सब क्रियायें सीख लेनी चाहिये — यह स्वराज्यका रास्ता है।' यह ठीक है कि कातनेवाले खेतसे कपास चुननेसे लेकर तुनाई, धुनाई, पिंजाई और बुनाई वग़ैराकी सब क्रियायें सीख कर .खुद ही इन कामोंको करने लगें तो उनकी मज़दूरी बढ़ेगी और सूत और खादी अच्छी तैयार होगी। स्वावलम्बन बढ़ेगा। लेकिन इससे आज़ादी कैसे हासिल होगी? स्वराज्य कैसे आयेगा? हमें इस बारेमें कातनेवालोंको क्या-क्या समझाना होगा? कृपाकर इन तमाम बातोंको खोल कर समझाइये, जिससे काम करनेवाले .खुद समझ सकें और कातनेवालोंको समझा सकें।"

मान लीजिये कि सब कत्तिनें ऊपर जो कुछ कहा गया है वह सब ज़बरदस्तीसे नहीं, बल्कि समझकर करती हैं, तो हिन्दुस्तानकी हालत कैसी होगी? करोड़ों कत्तिनोंके खड़े होनेका मतलब है, लाखों बुनकरोंका तैयार होना। इस जागृतिको पैदा करनेके लिए कितने सेवकों और सेविकाओंकी ज़रूरत होगी? अगर उस वक़्त हिन्दुस्तानमें मिलें चलती होंगी, तो वे दूसरे देशों पर निर्भर करेंगी। ग़रीब देहातियों और शहरियों पर भी उनका आज जैसा साम्राज्य चल नहीं सकेगा। हिन्दू-मुसलमान एक हो जायँगे। सब सच्चे बनेंगे। किसीको खद्दर पहननेके लिए कहना नहीं पड़ेगा। सिवा खद्दरके दूसरे कोई कपड़े देखनेमें नहीं आयेंगे। इतनी भारी तबदीलीमें स्वराज्य तो छिपा ही है। यह सबके लिए स्वयं सिद्ध होना चाहिये। लेकिन इसमें ही इसको असम्भव-सा माना गया है; यानी प्रश्न पूछनेवालेने अपनी कल्पनाशक्तिका अभाव दिखाया है। उनका यह पूछना ठीक है कि ऐसी तालीम किस तरह दी जाय, जिससे कत्तिनें बताये हुए तरीक़े पर काम करें। इस जवाबकी खोज करना ही चरखा-संघका खास काम है। अब तक ऐसी खोज नहीं हो पाई है। चरखा-संघमें जितने सेवक हैं, उनका तो यह धर्म है। अब तो काफ़ी सूबोंमें कांग्रेसी लोगोंके हाथोंमें हुकूमत भी आ गई है। सब सेवक खोज करें और अपने क्षेत्रमें विजयी बनें। चरखा-संघके दफ़्तरकी तरफ़ देखनेसे सफलता नहीं मिल सकती।

नई दिल्ली, २६-४-'४६   मोहनदास करमचंद गांधी

सभ्यताकी दौड़

स० — १४ अप्रैलके 'हरिजन'के ९१वें सफ़े पर यह दलील की गई है कि बैल एक जीती-जागती मशीन है, और ऐसे बेगुनाह जानवरोंके साथ लगाव रखना मनुष्यकी सभ्यताको आगे बढ़ानेमें बड़ी मदद करता है। तो भी बधिया बनाकर जानवरोंको सीधा किया जाता है। क्या सभ्यताको आगे बढ़ानेका यही सही तरीक़ा है? हम गाय पालते हैं, तो हमें साँड भी पालने चाहिये। आदमी स्वार्थके लिए बड़ी बेरहमीसे उन्हें बधिया करके बैल बनाता है। एक विचारशील मनुष्यको छोड़कर दूसरे सब जानवर तो ज़रूर ही अपनी वीर्य-शक्तिका उपयोग अपनी नसलको बढ़ानेमें ही करते हैं। इसलिए इतने अच्छे जानवरको 'महादेवजीके वाहन'से बोझा ढोनेवाला जानवर बना डालना दुःखकी बात है।

ज० — लेखककी बात तर्कपूर्ण है। लेकिन इस तर्कसे तो गायका पालना भी बन्द हो जायगा, क्योंकि शायद गाय पालनेमें साँडको बधिया करनेसे ज़्यादा बेरहमी है। सिर्फ़ दरजेका सवाल है। इसके अलावा, ज्यों-ज्यों सभ्यता बढ़ती है, जानवरों पर आदमीकी हुकूमत बढ़ती जाती है और उसके साथ ही उनसे काम लेनेके उसके तरीक़े भी दयापूर्ण होते जाते हैं।

जीवमात्र पर दया करनेवालोंमें तीन खयालके लोग हैं। पहले वे हैं जो जानवरोंके बजाय किसी और शक्तिसे काम लेनेमें विश्वास करते हैं। दूसरे कहते हैं कि जानवरोंको अपने-जैसा समझकर उनसे ऐसा काम लो जैसा एक भाईसे ले सकते हैं। तीसरे वे हैं, जिनके खयालमें आदमीके मतलबके लिए जानवरोंसे काम लेना मुनासिब नहीं। अपनी या अपने साथियोंकी जगह उनसे काम ले सकते हैं, लेकिन यह काम उसी हद तक लिया जा सकता है, जिस हद तक वे बिना जब्रके अपनी राज़ी-.खुशीसे काम करनेको तैयार हों। मैं तीसरे खयालवाले लोगोंमेंसे हूँ। अगर इन्सानोंकी ताक़तका इस्तेमाल न्याय और नम्रताके साथ किया जाय, तो उससे बहुत हद तक फलोंकी और अनाज तककी खेती की जा सकती है। जिन दिनों हम लोग ट्रान्सवालमें राजनीतिक बन्दी थे, हमने वहाँकी पथरीली ज़मीनको खोद-खोद कर उस जगह एक म्युनिसिपल बाग़ीचा बनाया था। यह काम हलोंकी मददसे किसी भी तरह नहीं हो सकता था। मगर कुदालीसे ज़मीन भलीभाँति तैयार की जा सकी थी।

पहले खयालको मैं बेकार ही नहीं, बल्कि आखिरकार इन्सानोंके लिए नुक़सानदेह भी समझता हूँ। दूसरे दोका मुनासिब मेल ही मुझको आखिरी ध्येय मालूम होता है। बधिया करनेसे बचनेका कोई रास्ता मुझे दिखाई नहीं पड़ता। इस सिलसिलेमें सिर्फ़ यही किया जा सकता है कि इस तरीक़ेको दिन-दिन ज़्यादा दयापूर्ण बनाया जाय।

इसी सिलसिलेमें एक भाईने जानवरोंको दागनेका सवाल उठाया है। जानवरोंको दागनेसे उनको जो तकलीफ़ होती है, क्या उसकी भरपाई उस फ़ायदेसे हो जाती है जो दागनेके कारण उनको या उनके मालिकोंको होता है? अगर उससे जानवरोंको कोई फ़ायदा नहीं होता, तो ज़ाहिर है कि दागनेका रिवाज बन्द कर दिया जाना चाहिये।

नई दिल्ली, २९-४-'४६   मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

५ मई १९४६

आज़ादी

दोस्तोंने बार-बार मुझपर ज़ोर डाला है कि मैं यह बताऊँ कि आज़ादी क्या है? बातके दोहराये जानेका डर होते हुए भी मुझे कहना चाहिये कि मैं तो राम-राज्यका यानी दुनियामें ईश्वरके राज्यका ख्वाब देखता हूँ — वही आज़ादी है। स्वर्गमें यह राज्य कैसा होगा, सो मैं नहीं जानता। बहुत दूरकी चीज़ जाननेकी मुझे इच्छा भी नहीं। अगर वर्त्तमान दिलको काफ़ी अच्छा लगता हो, तो भविष्य उससे बहुत अलग नहीं हो सकता।

इसलिए राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक यानी सियासी, माली और इख़लाक़ी, तीनों तरहकी आज़ादी ही सच्ची आज़ादी है।

'राजनीतिक' आज़ादीका मतलब ही यह है कि मुल्क पर ब्रिटिश फ़ौजोंकी किसी भी शक्लमें कोई हुकूमत न रहे।

'आर्थिक या माली आज़ादी'का मतलब ब्रिटिश पूँजीपतियों और ब्रिटिश पूँजीके साथ ही उनके प्रतिरूप हिंदुस्तानी पूँजीपतियों और उनकी पूँजीसे क़तई छुटकारा पाना है। दूसरे लफ़्ज़ोंमें छोटे-से-छोटे आदमीको भी यह महसूस करना है कि वह बड़े-से-बड़े आदमीके बराबर है। यह तभी हो सकता है जब पूँजीपति अपने हुनर और अपनी पूँजीमें छोटे-से-छोटे और ग़रीब-से-ग़रीबको अपना हिस्सेदार बना लें।

'नैतिक आज़ादी' का मतलब मुल्ककी हिफ़ाज़तके लिए रखी हुई हथियारबन्द फ़ौजोंसे छुटकारा पाना है। राम-राज्यकी मेरी कल्पनामें ब्रिटिश फ़ौजी हुकूमतकी जगह राष्ट्रीय फ़ौजी हुकूमतको बैठा देनेकी कोई गुंजाइश नहीं। जिस मुल्कमें फ़ौजी हुकूमत होती है, फिर वह फ़ौज मुल्ककी अपनी ही क्यों न हो, वह मुल्क नैतिक दृष्टिसे कभी आज़ाद नहीं हो सकता, और इसलिए उसके सबसे कमज़ोर कहे जानेवाले बाशिन्दे कभी पूरी तरहसे नैतिक उन्नति नहीं कर सकते।

अगरचे यह दावा किया जाता है कि श्री चर्चिलने ब्रिटेनके लिए लड़ाई जीती है, तो भी एक असल अहिंसावादी सुधारकके नुक़्तेनिगाहसे उन्होंने एडबर्गमें अपनी तक़रीरमें अक़्लमन्दीकी बातें कही हैं। एक हथियारोंसे लैस सिपाहीकी तरह ही श्री चर्चिल भी जानते हैं कि हमारे ज़मानेकी पिछली दोनों लड़ाइयोंसे कितनी तबाही और बरबादी हुई है। अख़बारोंमें उनकी तक़रीरका जो .ख़ुलासा छपा है, उसे मैं इसी अंकमें दूसरी जगह दे रहा हूँ। उनके भाषणसे निराशा-वादकी जो गूँज उठती है, उसके ख़िलाफ़ मुझे जनताको सावधान कर देना चाहिये। कुछ भी नुक़सान न होगा, अगर मनुष्य-समाज लड़ाईकी मुसीबतोंसे बचनेके लिए उससे मुँह मोड़ ले। लोगोंने आख़िरी बूँद तक अपना जो .ख़ून बहाया है, वह बेकार न हुआ होता, अगर उससे हम यह सीख जाते कि अच्छा या बुरा कैसा भी कारण क्यों न हो, हमें दूसरोंका .ख़ून लेनेके बजाय .ख़ुद अपना ही .ख़ून .ख़ुशीसे देना चाहिये!

अगर विलायती वज़ीरोंका मिशन स्वराज्य दे देता है, तो हिंदुस्तानको यह तय करना पड़ेगा कि क्या एक फ़ौजी राष्ट्र बननेकी कोशिशमें वह, कम-से-कम कुछ सालोंके लिए, दुनियामें पाँचवें दरजेकी ताक़त बना रहना चाहेगा, और इस तरह ऊपर जिस निराशावादका ज़िक्र हुआ है उसके जवाबमें वह दुनियाको आशाका कोई सँदेशा न देगा; या अपनी अहिंसाको और भी सँवारकर वह अपनेको दुनियाका सबसे पहला राष्ट्र बननेके लायक़ साबित करेगा और बड़ी मुश्किलोंसे हासिलकी हुई अपनी आज़ादीका इस्तेमाल दुनियाके सिरसे उस बोझको उतारनेमें करेगा जो लड़ाईमें हासिलकी गई जीतके बावजूद उसे पीस रहा है?

नई दिल्ली, २९-४-'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

मि० चर्चिलकी तक़रीरका अख़बारी .ख़ुलासा

दुनिया बहुत बीमार है। नफ़रतसे भरी पड़ी है। इन्सानी खानदानकी बड़ी-बड़ी शाखें, जीती हुई या हारी हुई, निर्दोष या गुनहगार, घबराहट, दुःख और तबाहीमें पड़ी हैं। हमारे जीवनमें दो भयानक लड़ाइयोंने दिलको उनकी .ख़ूबसूरती और सभ्यतासे छीन लिया है।

जिसको १९वीं सदी 'ईसाई तहज़ीब' कहती है, उसे बेहद चोट पहुँची है। क्योंकि सब बड़ी-बड़ी क़ौमें ऐसे खींच-तनावमें से गुज़र रही हैं कि उनके एहसासात कुन्द और समाजी मेलजोलके सुन्दर ढंग तबाह हो गये हैं।

सिर्फ़ सायन्स इन्सानीयुद्धकी ज़बरदस्त हवाओंकी मार खाती हुई आगे बढ़ी है। इसने आदमियोंके हाथमें तबाहीका ऐसा सामान दे दिया है जो, जो कुछ तरक़्क़ी उनकी अक़्ल और इख़लाक़में हुई है, उससे कहीं ज़्यादा है।

एक ऐसी दुनियामें जहाँ कि पहले ज़रूरतसे ज़्यादा .ख़ूराककी उपज वक़्त-ब-वक़्त एक मसला बन जाती थी, वहाँ कई मुल्कोंके लोगों पर .क़हतने अपनी सूखी और डरावनी उँगलियाँ रख दी हैं और .ख़ुराककी कमी तो सबको दरपेश है।

मनुष्य-जातिकी मानसिक शक्तियाँ उन सब तकलीफ़ोंने थका कर चूर कर दी हैं, जिनमेंसे वह गुज़र चुकी है और अभी गुज़र रही है। यह सिर्फ़ .ख़ूनका बहना ही नहीं, जिसने हमें थका दिया है और पीला कर दिया है।

इन्सानमें रूह फूँकनेवाले ज़िन्दा चश्मे इस घड़ीके लिए सूख चुके हैं। ऐसे वक़्तकी सख्त .ज़रूरत है, जिसमें पुरानी शक्तियाँ वापिस ली जा सकें। अपनी आजकलकी हालतमें मनुष्य-जाति नये धक्के और नई लड़ाइयाँ बिलकुल बरदाश्त नहीं कर सकती; नहीं तो वह बिलकुल शुरू की और भोंडी शक्ल अख्तियार कर लेगी।

फिर भी हम नहीं जानते कि जो नफ़रतें और गड़बड़ आज हैं, वे उन आज़माइशोंसे भी, जिनमेंसे हम बड़ी तकलीफ़से और बाल-बाल बचे हैं, ज्यादा सख्त आज़माइशें हमारे सामने नहीं लायेंगी।

बहुतसे मुल्कोंमें जहाँ कि सबकी मिलकर कोशिश भी ज़रूरतसे कम पड़ती है, फ़िरक़ेवारी और उसके झगड़े उकसाये जाते हैं या कठपुतली और हाड़-पिंजर-से कट्टर लोग मुँह फाड़-फाड़ कर एक-दूसरे पर अपने रक़ीबाना तसव्वरातके बारेमें चिल्लाते हैं।

इस वक़्त (इस असनामें) हर मुल्कके आम लोग अपने आपको रहमदिल, बहादुर और अपने साथियोंके काम आनेवाले साबित करते हैं। फिर भी शक्तियें, संस्थायें और नज़रिये उनको एक-दूसरेसे दिलसे वजह और बेदर्दीसे इस तरह भिड़ा रहे हैं, जैसे बिलकुल .ख़ुद मुख्तार शाहंशाह और बादशाहोंके ज़मानेमें।

साँस लेनेकी मुहलतकी, मुबारक इफ़ाक़ेकी, इन्सान और .ख़ुदाके आरज़ी सुलह की जितनी ज़रूरत आजकल है, कभी न थी।

('स्टेट्समन', २९-४-'४६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रार्थना-सभाके प्रवचन

पत्रकारोंसे मिलनेके बारेमें गांधीजीने अपने पर जो रोक लगा रखी है, वह अभी ज़ारी है। उन्होंने अपने ज़िम्मे मंत्रि-मिशनको और अपने देशवासियोंको सलाह देनेवाले सलाहकारका ना.ज़ुक काम लिया है। इसलिए वे महसूस करते हैं कि जिन मामलोंमें उनको सलाह देनी पड़ती है उनके बारेमें दुनियाके सामने वे अपने ख़याल ज़ाहिर न करें। यही वजह है कि जबसे दिल्ली आये हैं, तबसे उन्होंने शामकी प्रार्थना-सभाओंमें दिये जानेवाले प्रवचनोंके सिवा सार्वजनिक रूपसे और कोई बात कही नहीं। जैसा कि गांधीजी इधर एकसे अधिक बार कह चुके हैं, प्रार्थना सिर्फ़ आध्यात्मिक मुक्ति पानेका ही ज़रिया नहीं है, बल्कि इस दुनियाके बन्धनोंसे छूटनेका भी ज़रिया है। बड़ेमें छोटेका समावेश हो जाता है। प्रार्थनाके बादके अपने एक भाषणमें उन्होंने कहा था : "अगर करोड़ोंकी अहिंसक ताक़तसे स्वराज्य हासिल किया जाने को है, तो उन्हें किसी हद तक अपने अन्दर स्थितप्रज्ञके गुणोंका विकास करना होगा।"

"यह आदर्श अकेले ज्ञानियोंके लिए नहीं है। यह सबके लिए है—मामूली घर-गृहस्थीवालोंके लिए भी। महाभारतमें ख़ुद भगवान् श्रीकृष्णको रथ हाँकनेवाला सारथी बताया गया है, और उनके शिष्य अर्जुनको, जिसे गीताका उपदेश दिया गया था, अपने विचारों और रहन-सहनमें साधारणजन-सा चित्रित किया गया है।

"तो फिर स्थितप्रज्ञकी विशेषतायें क्या हैं? स्थितप्रज्ञ वह है जो अपनी इन्द्रियोंको इन्द्रियार्थोंसे हटाकर उन्हें आत्माकी ढालके नीचे छिपा लेता है; जिस तरह कछुआ अपने अंगोंको अपनी ढालके नीचे छिपाता है।

"जिस आदमीकी बुद्धि स्थिर नहीं होती, उसके लिए यह डर रहता है कि वह ग़ुस्सेका, विकारों और बुरे विचारोंका या गाली-गलौचका शिकार बन जायगा। इसके ख़िलाफ़ जिस आदमीकी बुद्धि स्थिर होती है, वह स्तुति और निन्दा दोनोंको समान भावसे सह लेगा। वह समझ जायगा कि गालीसे गाली देनेवालेकी ज़बान ही गन्दी होती है; जिसको गाली दी जाती है, उसका कुछ नहीं बिगड़ता। इसलिए स्थिर बुद्धिवाला आदमी कभी किसीका बुरा नहीं चाहेगा। बल्कि आख़िरी दम तक अपने दुश्मनके भलेके लिए भी भगवान्से प्रार्थना करता रहेगा।"

गांधीजीने पूछा : "क्या इस आदर्शका पालन करना बहुत कठिन है?" और फिर ख़ुद ही जवाब दिया : "नहीं। इसके बरख़िलाफ़, इसमें जो नियम बताये गये हैं वे ही इन्सानकी सच्ची शानके मुताबिक़ हैं।

"आज हमारे दिमाग़ों पर भ्रमके जाले छाये हुए हैं, अपनी नासमझीके कारण हम एक-दूसरेसे झगड़ते हैं और अपने ही भाई-बन्दोंके ख़िलाफ़ दंगा-फ़साद करते हैं। ऐसे लोगोंको न तो मुक्ति मिल सकती है और न स्वराज्य। अपने ऊपर क़ाबू रखना स्वराज्यकी पहली शर्त है।

"संस्कृतमें होनेके कारण गीताके श्लोकोंको सही-सही बोलना सबके लिए मुश्किल हो सकता है। लेकिन रामधुन गानेमें तो सब कोई शामिल हो सकते हैं। तालके साथ रामधुन गाना प्रार्थनाका सादे-से-सादा रूप है।"

"लेकिन ग़ैर-हिन्दू इसमें कैसे शामिल हो सकते हैं?" एक बार यह सवाल किया गया था।

जवाबमें गांधीजीने कहा था : "जब कोई यह एतराज़ पेश करता है कि रामका नाम लेना या रामधुन गाना तो सिर्फ़ हिन्दुओंके लिए है, तब मुझे मन-ही-मन हँसी आती है। हाँ, ऐसी हालतमें मुसलमान उसमें किस तरह शरीक हो सकते हैं? क्या मुसलमानोंका भगवान् हिन्दुओं, पारसियों या ईसाइयोंके भगवान्से जुदा है? नहीं, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी ईश्वर तो एक ही है। उसके कई नाम हैं, और उसका जो नाम हमें सबसे ज्यादा प्यारा होता है उस नामसे हम उसको याद करते हैं।

"मेरा राम, हमारी प्रार्थनाके समयका राम, वह ऐतिहासिक राम नहीं है, जो दशरथका पुत्र और अयोध्याका राजा था। वह तो सनातन, अजन्मा और अद्वितीय राम है। मैं उसीकी पूजा करता हूँ। उसीकी मदद चाहता हूँ। आपको भी यही करना चाहिये। वह सब किसीका है। इसलिए मेरी समझमें नहीं आता कि क्यों किसी मुसलमानको या दूसरे किसीको उसका नाम लेनेमें एतराज़ होना चाहिये? लेकिन यह कोई ज़रूरी नहीं कि वह रामनामके रूपमें ही भगवान्को पहचाने—उसका नाम ले। वह मन-ही-मन अल्लाह या ख़ुदाका नाम भी इस तरह जप सकता है कि जिससे उसमें बेसुरापन न आवे।"

एक दूसरे मौक़े पर प्रार्थनाके समय गाये गये भजनको समझाते हुए उन्होंने कहा था : "इस भजनमें हमें यह यक़ीन दिलाया गया है कि भगवान् जिसकी रक्षा करता है, दुनियाकी कोई ताक़त उसको नुक़सान नहीं पहुँचा सकती। आजके मौक़े पर इस भजनका यह सन्देश ख़ास महत्त्व रखता है, क्योंकि आज सारी दुनिया आपसके झगड़ोंमें डूबी हुई है। लड़ाई जो भी ख़तम हो चुकी है, तो भी जिन कारणोंसे वह शुरू हुई थी वे अभी तक बने हुए हैं। इसे शान्ति नहीं कहा जा सकता; यह तो दूसरी लड़ाईके लिए चुपचाप तैयारी करनेका एक तरीक़ा है।

"दिल्लीमें आज क्या हो रहा है? लोग एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं, गालियाँ देते हैं और मार-काटकी धमकियोंसे सारी हवा ज़हरीली बन गई है। लेकिन अगर आपमें ईश्वरके प्रति श्रद्धा है, तो आप इन तमाम धमकियों और गालियोंसे घबरायेंगे नहीं, बल्कि यह सोचकर बेफ़िकर रहेंगे कि जब तक भगवान्का साया आपके ऊपर है, कोई आपका बाल भी बाँका नहीं कर सकता। कहावत है कि जो अन्दर है उसीकी छाया बाहर भी पड़ती है। अगर आप भले हैं तो सारी दुनिया आपके साथ भली रहेगी। इसके ख़िलाफ़ अगर आपको किसीको बुरा समझनेकी ख्वाहिश हुई, तो बहुत मुमकिन है कि बुराई आपके अन्दर ही हो।"

अख़बारों में ख़बर छपी थी कि चौधरी ख़लिकुज़्ज़मानने आम तौर पर हिन्दुओंके ख़िलाफ़ बहुत कुछ बुरा-भला कहा है। इस ख़बरको भजनके सन्देश पर घटाते हुए गांधीजीने कहा : "चौधरी साहबके दिलमें मेरे लिए बहुत इज़्ज़त है। इसलिए अगर कोई मुझसे आकर कहे कि उन्होंने हिन्दुओंको गाली दी है और उन्हें भला-बुरा कहा है, तो मुझे उस पर यक़ीन न करना चाहिये और न ही उनका बुरा सोचना चाहिये। कल तक जो आदमी मेरे सगे भाईकी तरह था, वह अचानक हिन्दुओंका दुश्मन कैसे बन सकता है? बल्कि मैं तो यह सोचूँगा कि कुछ हिन्दुओंने अपने बरतावसे उनको इस क़दर हैरान किया होगा कि वे अपना तौल खो बैठे होंगे। इसी तरह मुझको पक्का भरोसा है कि अगर चौधरी साहब आज मुझसे आकर मिलें और मैं उनसे पूछूँ कि क्या सचमुच वे यह मानते हैं कि एक ही रातमें सारे-के-सारे हिन्दू बुरे बन गये हैं, तो वे उनके अपने मुँहसे कहलाई हुई बातों पर हँस देंगे और उन्हें वाहियात कहकर टाल देंगे। हमें न तो किसीका बुरा सोचना चाहिये और न यह शक रखना चाहिये कि कोई हमारा बुरा सोच रहा है। बुरी बातोंको सुनने और उन पर भरोसा करनेकी आदत ईमानकी कमीको ज़ाहिर करती है।"

दूसरा प्रवचन इस प्रकार था :

"अपने दिलको टटोलते हुए कवि (शायर) अपने आपसे पूछता है : 'भले आदमी, तूने भगवान्का नाम जपना क्यों छोड़ दिया है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तूने .गुस्सा नहीं छोड़ा, लालच नहीं छोड़ा, झूठ नहीं छोड़ा, लेकिन तू सचको छोड़ बैठा है। यह कितने दुःखकी बात है कि तूने कौड़ीका तो इतना जतन किया और भगवान्के प्रेमरूपी लाल रतनको हाथसे जाने दिया ? अरे मूरख! तूने सब तरहका घमंड छोड़कर अपनेको अकेले एक भगवान्के भरोसे क्यों नहीं छोड़ दिया ?' इसका यह मतलब नहीं कि अगर आपके पास धन-दौलत है, तो आप उसे फेंक दें, और बाल-बच्चोंको घरसे बाहर निकाल दें। बात यह है कि आपको इन सबका मोह छोड़ देना चाहिये; यानी इनके लिए मनमें कोई लगाव नहीं रखना चाहिये, और अपना सब कुछ ईश्वरको सौंपकर उसकी दी हुई चीज़ोंका इस्तेमाल उसीकी सेवाके लिए करना चाहिये। इसका मतलब यह होता है कि अगर हम सच्चे दिलसे उसका नाम लें, तो हमको अपने-आप अपने मनके विकारोंसे, झूठसे और बुरे खयालोंसे छुटकारा मिल जाता है।

"प्रार्थनाके शुरूमें हर दिन ईशोपनिषद्का जो पहला श्लोक पढ़ा जाता है, उसमें हमसे यह कहा गया है कि हम अपना सब कुछ भगवान्के हवाले कर दें और फिर अपनी ज़रूरतके मुताबिक़ उसका उपयोग करें। इसमें खास शर्त यह है कि हमें दूसरोंकी चीज़को लालचकी निगाहसे नहीं देखना चाहिये। इन दो हिदायतोंमें हिन्दू धर्मका सारा निचोड़ आ गया है।

"सुबहकी प्रार्थनामें पढ़े जानेवाले एक दूसरे श्लोकमें कहा गया है: 'मैं राज्य नहीं चाहता, स्वर्ग भी नहीं चाहता, न मैं मोक्ष या निर्वाण चाहता हूँ। मैं तो सिर्फ़ यही चाहता हूँ कि जो दुःखोंके तापसे तपे हुए हैं, मैं उनके दुःखको दूर कर सकूँ।' यह दुःख जिस्मका भी हो सकता है और दिलका या आत्माका भी। अपने विकारोंकी गुलामीके कारण होनेवाला आत्माका दुःख कभी-कभी शारीरिक दुःखसे भी ज़्यादा होता है।

"लेकिन भगवान् ख़ुद दुःख मिटानेके लिए नहीं आता। वह किसी आदमीको अपना निमित्त बनाता है। इसलिए भगवान्से दूसरोंके दुःखोंको दूर करनेकी शक्ति माँगनेका मतलब यह होना चाहिये कि हम ख़ुद उसके लिए मेहनत करनेको हर तरह तैयार रहें।

"आप देखेंगे कि यह प्रार्थना सबके लिए है। यह किसी जाति या फ़िरक़े तक महदूद नहीं। इसमें सब कोई शामिल हो सकते हैं। यह सारी मनुष्य-जातिके लिए है। इसलिए जिस दिन यह पूरी होगी, उस दिन दुनियामें स्वर्गका राज्य क़ायम हो जायगा।"

एक और मौक़े पर कुछ बच्चे प्रार्थनाके वक़्त इधर-उधर भटक रहे थे, जिससे प्रार्थनामें खलल पहुँचा था। इस चीज़ने गांधीजीको बेचैन कर दिया। उन्होंने कहा: "इसके लिए माँ-बाप क़सूरवार हैं। मैंने किसी मसजिद या गिरजेमें बच्चोंको कभी खेलते नहीं पाया। सच्ची संस्कृति या तहज़ीब यह तक़ाज़ा है कि प्रार्थनाके वक़्त प्रार्थनाकी जगह पर पूरी-पूरी शान्ति रहनी चाहिये। वहाँका वातावरण मन्दिर, मसजिद या गिरजेकी तरह शान्त, गंभीर होना चाहिये।" वे जानते थे कि बहुतसे मन्दिरोंमें बड़ा शोर होता है। इससे उन्हें बहुत दुःख हुआ था। "हम मन्दिरोंमें धातु या पत्थरकी मूर्तिको नहीं, बल्कि उसमें रहनेवाले भगवान्को पूजने जाते हैं। मूर्ति तो आदमी जैसी बनाता है वैसी बन जाती है। पुजारी उसमें जिस पवित्रताकी प्रतिष्ठा करता है, उसके सिवा उसकी अपनी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं होती। इसलिए बच्चों सहित सब किसीको प्रार्थनाके वक़्त पूरी-पूरी खामोशी रखनी चाहिये।" इस टीकाके कारण दूसरे दिनसे बच्चोंके व्यवहारमें अद्भुत सुधार हो गया।

नई दिल्ली, २२-४-'४६
('हरिजन' से) प्यारेलाल

सवाल – जवाब

स० — आपकी अहिंसाके मुताबिक़ आज़ाद हिन्दुस्तानमें चोरी, लूटमार, हत्या वग़ैरा करनेवाले गुनहगारोंके साथ कैसा बरताव किया जायगा ?

ज० — अहिंसक ढंगके आज़ाद हिन्दुस्तानमें गुनाह होंगे, लेकिन कोई गुनहगार न होंगे। उन्हें सज़ा नहीं दी जायगी। किसी भी मर्ज़की तरह गुनाह भी एक मर्ज़ या बीमारी है और मौजूदा समाज-व्यवस्थाका फल है। इसलिए हत्या वग़ैरा सभी तरहके गुनाहोंको बीमारी समझा जायगा और उनका वैसा ही इलाज भी होगा। यह दूसरी बात है कि हिन्दुस्तान कभी ऐसा बनेगा या नहीं ?

नई दिल्ली, २८-४-'४६
('हरिजन' से) मोहनदास करमचन्द गांधी

स्त्रियोंका आदर्श

बहुतेरे समाज-सुधारकोंने स्त्रियोंके ध्येयको अपना ध्येय बनाया है। लेकिन उनमें ज़्यादातर स्त्रीको घरकी रानी समझते थे। अपने पतिके सुख और आरामकी फ़िकर रखना और बच्चोंकी ठीक-ठीक परवरिश करना ही स्त्रियोंका कार्यक्षेत्र माना जाता था। जब देशमें पश्चिमी शिक्षाका आरम्भ हुआ, तो उसके साथ स्त्री-पुरुषकी समानताका खयाल भी फैला। लेकिन वह समानता ऊपरी और बनावटी थी। गांधीजी सच्ची समानताको मानते हैं और ख़ुद जो कहते हैं, उस पर अमल करते हैं। उनके आश्रममें सार्वजनिक रसोईका काम ज़्यादातर मरदोंको ही सौंपा जाता है। इसका मतलब यही है कि बहुतेरे काम ऐसे हैं, जिन्हें स्त्री और पुरुष समानरूपसे कर सकते हैं। स्त्री, पुरुषके बराबर तो है ही, मगर वह उससे बेहतर भी बन सकती है। बच्चोंकी और घरकी सार-सँभाल स्त्री-पुरुष दोनोंकी संयुक्त ज़िम्मेदारी है। स्त्री माता है, मगर उसका मातृत्व उसके अपने बच्चों तक ही सीमित न रहना चाहिये, बल्कि उसे फैलना चाहिये, और इसलिए उसका कार्यक्षेत्र भी अपने घरसे आगे बढ़ना चाहिये।

अपनी पिछली बंगाल-यात्राके दिनोंमें कार्यकर्त्ताओंकी एक सभामें उनके सवालोंका जवाब देते हुए गांधीजीने कहा था कि जो स्त्री अपने बच्चोंको मातृभूमिकी सेवाके लिए सही तौर पर तैयार करती है, उसे इससे ज़्यादा और कुछ करनेकी ज़रूरत नहीं। एक मित्रने इसका यह मतलब निकाला कि गांधीजीकी इस बातसे लोगोंकी इस प्रचलित धारणाका समर्थन होता है कि घर सँभालना और बच्चोंकी ठीक तरह परवरिश करना ही औरतोंका एक फ़र्ज़ है। इस पर गांधीजी हँस दिये और बोले: "ऐसी बातोंमें लोग हमेशा अपने मतलबका अर्थ निकाल लिया करते हैं। जो स्त्री-पुरुष विषयभोगमें रचेपचे रहते हैं, वे अपने बच्चोंको कभी भी मातृभूमिकी सेवाके लिए तैयार नहीं कर सकते। जो संयमके नियमका पालन करके जीवन बिताते हैं, वे ही यह काम कर सकते हैं और ऐसे लोगोंको घरसे बाहरके कामोंमें अपनी सेवा देनेके लिए हमेशा वक़्त भी मिल जाता है।"

कृत्रिम साधनों द्वारा सन्तति-निरोधके खिलाफ़ गांधीजीके विचार बहुत कड़े हैं। वे कहते हैं: "सन्तति-निरोधके कृत्रिम साधनोंका उपयोग स्त्रीवके लिए अपमानजनक है। एक वेश्याके और सन्तति-निरोधके साधनोंका इस्तेमाल करनेवाली स्त्रीके बीच फ़र्क़ सिर्फ़ यही है कि पहली अनेक पुरुषोंको अपनी देह बेचती है, जब कि दूसरी एक पुरुषको। जब तक पत्नीको सन्ततिकी इच्छा न हो, पतिको कोई हक़ नहीं कि वह उसे हाथ लगाये; और, स्त्रीमें इतना संकल्प-बल होना चाहिये कि वह अपने पतिकी इच्छाके वश न हो।"

हालकी अपनी मद्रास-यात्राके मौक़े पर स्त्रियोंकी सभामें भाषण करते हुए उन्होंने कहा था: "मैं तो चाहता हूँ कि स्त्रियोंमें सीताकी-सी पवित्रताका वह तेज हो कि जिसके सामने रावण-जैसे समर्थ पुरुषको भी हार माननी पड़े। अगर आपमें ऐसा तेज हो, तो हिन्दुस्तानमें आपहीका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डंका बजे और दुनियाको आप स्वर्ग-सा बना दें। यही नहीं कि आप एक कस्तूरबा ट्रस्टका काम चलायें, बल्कि मैं तो चाहता हूँ कि आप राष्ट्रके दूसरे सारे कामोंमें भी ज़्यादा-से-ज़्यादा हाथ बँटायें। मैं आतुर भावसे उस दिनकी बाट जोह रहा हूँ, जब हिन्दुस्तानकी करोड़ों बहनें चरखा चलाने लगेंगी, अपने दिलसे छुआछूतके और जात-पाँतके भेदोंको जड़से मिटा डालेंगी और हिन्दुस्तानी बोलने लगेंगी।"

स्त्री अहिंसाकी मूर्त है। जिन दिनों गांधीजी बम्बईमें क़ायदे आज़म जिन्नाके साथ बातचीत करनेमें लगे थे, तभी कुछ जैन साध्वियोंसे बात करते समय उन्होंने कहा था: "स्वभावहीसे स्त्रियाँ बहुत सहनशील होती हैं। यही कारण है कि उनके लिए अहिंसा बहुत सुगम हो जाती है। आप जैन बहनें हैं। आपसे मैं बहुत बड़ी आशा रखता हूँ।"

गांधीजी अक्सर कहते हैं: 'मैं स्त्री हूँ।' उनका अपना ख़याल है कि जब आदमी अहिंसाको हज़म कर लेता है और उस पर अमल करता है, तब वह स्त्रीके ज़्यादा नज़दीक पहुँच जाता है। हिंसाके मुक़ाबले अहिंसामें अधिक धैर्यकी ज़रूरत होती है। क्योंकि हिंसाके लिए तो सिर्फ़ शरीरकी ताक़त और पशुबलकी ही ज़रूरत रहती है। इस तरह स्त्रीके स्वभावके समीप पहुँचना ऊँचे दरजेकी मानवताका लक्षण है।

कस्तूरबा ट्रस्टकी ओरसे बहनोंको तालीम देनेके लिए बोरिवलीमें जो छावनी खोली गई थी, वहाँ बहनोंके सामने बोलते हुए गांधीजीने कहा था: "मैं स्त्रियोंको पुरुषोंके बराबर और उनसे भी बढ़ कर देखना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि ज़िम्मेदारीकी तमाम जगहें आप सँभाल लें। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि आप बिना योग्यताके उन जगहों पर जा बैठें। असलमें मैं तो यह चाहता हूँ कि आप अपनेको पुरुषोंसे ज़्यादा शक्तिशाली साबित करें।

"बराबरीका मतलब यह नहीं कि आप पुरुषोंकी बुराइयोंकी नक़ल करें। मसलन्, मरदोंके लिए बीड़ी फूँकना और शराब पीना एक मामूली चीज़ बन गई है। आपको उस हद तक नीचे नहीं जाना है। आपको तो अपनी पवित्रता, आत्मत्याग, निःस्वार्थ प्रेम और सेवाके ज़रिये पुरुषोंके सामने एक मिसाल पेश करनी है।"

नई दिल्ली, १६-४-'४६

('हरिजन'से)

सुशीला नय्यर

नौकरशाही योजनाओंके ख़िलाफ़ चेतावनी

१

पिछले सितम्बर महीनेमें रूटरने तारसे खबर भेजी थी कि ४ करोड़ डॉलर या १३ करोड़ रुपयोंके खर्चसे ३५ लाख टन एमोनियम सल्फेट पैदा करनेके लिए एक कारखाना खोलनेकी योजना हिन्दुस्तानकी मौजूदा ग़ैर ज़िम्मेदार सरकारने तैयार की है। और इस योजनाके सिलसिलेमें 'सर'का ख़िताब रखनेवाले एक अंग्रेज़की सरदारीमें कुछ लोगोंका एक डेपुटेशन इंग्लैण्डमें '५ महीने बितानेके बाद' युनाइटेड स्टेट्सकी मुलाक़ातको आ रहा है।

लेकिन हिन्दुस्तानियोंके सिर इससे बड़ी आफ़त शायद दूसरी कोई नहीं आ सकती कि उनकी ज़मीनको बनावटी खादके ज़रिये ज़हरीली बना दिया जाय। खेतीके ब्रिटिश माहिरोंने (तज्ञोंने) ख़ुद ही बनावटी खादके इस्तेमालको बुरा बताया है और उसकी निन्दा की है।

ज़मीनमेंसे हम जितना लेते हैं, उतना उसे वापस लौटा देना चाहिये। फ़सल काटनेसे ज़मीनकी ताक़त (कस) कम होती है। खेतोंमें ढोरोंकी खाद और घास-फूसकी जुताई करके इस कमीकी भरपाई कर देनी चाहिये। आदमीके शरीर पर दवाओंका जैसा असर होता है वैसा ही असर रासायनिक खादोंका ज़मीन पर होता है। सच है कि थोड़े समयके लिए इन खादोंसे बहुत ज़्यादा फ़सल पैदा होती है, लेकिन बादमें उसकी उलटी क्रिया शुरू हो जाती है। बनावटी खादोंका इस्तेमाल करके बहुत ज़्यादा फ़सल ली जा सकती है। लेकिन ये खाद ज़मीनमें नई बीमारियाँ और नई कमियाँ पैदा कर देती हैं। 'लिविंग सॉइल' (ज़िन्दा ज़मीन) नामकी किताबमें सर अल्बर्ट हॉवर्डकी भेजी गश्ती चिट्ठीसे बॉल्फरने नीचेका हिस्सा उतारा है:

"दक्षिणी फ्रान्समें अंगूरकी खेती ज़्यादातर बनावटी खादकी मददसे की जाती है और ज़हरीले रसायनोंकी पिचकारियाँ लगा कर अंगूरकी बेलोंको लगनेवाली बीमारियोंका सामना करना पड़ता है।

"इसके बरख़िलाफ़ बलूचिस्तानमें अंगूरकी बेलोंको हमेशा घूरोंकी यानी मवेशी वग़ैराके गोबरसे बनी प्राणिज खाद दी जाती है। अंगूरकी फ़सलको नुक़सान पहुँचानेवाली फफूँदी या जन्तुओंका नाश करनेके लिए वहाँ रासायनिक ज़हरोंकी पिचकारी लगानेकी ज़रूरत नहीं पड़ती; क्योंकि वहाँ वैसी बीमारियाँ होती ही नहीं।"

ब्रिटेनके लेखकोंका ख़याल है कि इंग्लैण्डमें फ़सलको लगनेवाली जो बीमारियाँ बढ़ गई हैं, उसकी वजह ये बनावटी खाद ही हैं। जेन्सने लॉर्ड लिमिंग्टनके लेखोंसे नीचेका एक अवतरण दिया है:

"२० साल पहले आलूकी फ़सल पर सालमें एक या दोबार कॉपरसल्फेट यानी नीलेथूथेका घोल छिड़कना पड़ता था। लेकिन आजकल फ़सलके मौसिममें १२ से १५ बार छिड़कना पड़ता है। बहुत करके इस सबकी वजह यह है कि ज़मीनको प्राणिज खाद नहीं मिलती और खेती के मुनासिब तौलको क़ायम नहीं रक्खा जाता।" ('फ़ैमिन इन इंग्लैण्ड'—इंग्लैण्डमें अकाल)

रासायनिक पदार्थोंकी पिचकारी फ़सल पर बुरा असर डालती है, और फ़सलके लायक़ ज़मीनकी उम्र काफ़ी घटा देती है।

लॉर्ड लिमिंग्टनकी राय है कि बनावटी खाद बहुत नुक़सान-देह है। "जीवनकी प्रक्रियाका आधार जितना वनस्पतिके बढ़ने पर है, उतना ही उसके सड़ने पर है। प्राणिज और वनस्पतिजन्य पदार्थ ठीक-ठीक सड़कर 'ह्यूमस' के रूपमें बदल जाते हैं, तभी नीरोग फ़सल पैदा हो सकती है: और 'ह्यूमस' तभी पैदा होती है कि जब ज़मीनके अन्दर रहे हुए बैक्टीरिया अपना काम करते हों। सल्फेट ऑव् एमोनिया, नाइट्रोचॉक, पोटाश और दूसरे क्षारोंका अविचारपूर्ण उपयोग इन बैक्टीरियाका नाश करता है। और जब ज़मीनमें 'ह्यूमस' नहीं होती तो पौधे नीरोग नहीं रह सकते।"

पशुओंकी और आदमियोंकी बीमारीकी तरह खेतीकी फ़सलके रोग भी बनावटी इलाजोंकी वजहसे ही होते हैं। इंग्लैण्डमें फ़ी आदमी दवाका सालाना खर्च ६ पौण्ड है और किसानको ढोरोंसे होनेवाली आमदनीका १०वाँ हिस्सा उसकी दवादारूमें खर्च होता है।

इंग्लैण्डमें ढोरोंको मुँह और पैरकी बीमारियाँ होती हैं, और बीमार ढोरोंको क़तलखानोंमें भेज दिया जाता है। क्योंकि जिन हलक़ोंमें बीमारीका ज़ोर होता है, वहाँसे १५ मीलके घेरेमें ढोरोंकी आमद-रफ़्त बन्द कर दी जाती है। लेकिन हॉवर्डने प्रमाणोंसे यह साबित किया है कि प्राणिज खाद डालकर पैदा की गई ख़ूराक पर जीनेवाले उनके बैलोंको बीमार ढोरके साथ 'नाक घिसने' पर भी उस ढोरके रोगकी छूत नहीं लगती थी।

वॉल्फरने अपने नाम आये एक ख़तमेंसे नीचेका हिस्सा दिया है: "नाइट्रेट और फॉस्फेट डालकर उगाई जानेवाली बन्दगोभीका रंग एक अजीब तरहका 'झूठा' रंग होता है। अगर खरगोशको ख़ूराकके तौर पर दी जानेवाली सब्ज़ीमेंसे ५०फ़ी सदी इस तरहकी हो, तो वह मर जाता है। अगर फॉस्फेट एक हदसे ज़्यादा दिया जाता है, तो खेत अस्वाभाविक रूपसे हरे रंगका हो जाता है और जंगली खरगोश उसे छोड़कर भाग जाते हैं।" फॉस्फेट बेचनेवाले इसको एक अच्छाई समझकर बतौर सिफ़ारिशके इसका उपयोग करते हैं। वे लिखते हैं: "हमारे घुल जानेवाले फॉस्फेटकी खादका इस्तेमाल करो और खरहोंको भगा दो।" या "अगर आप पूरी मिक़दारमें नाइट्रोचॉकका इस्तेमाल करेंगे, तो आपका खेत इस क़दर हरा हो उठेगा कि खरगोश शायद ही उसे छुएँगे और अगर छुआ तो मर जायँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा मालूम हुआ है कि बनावटी खादकी मददसे तैयार किये गये खेतमें ढोर चरते नहीं ।

बॉल्फरने एक ऐसे स्कूलकी भी मिसाल दी है, जिसने पहले बनावटी खादोंसे और बादमें प्राणिज खादसे साग-सब्ज़ीकी खेती की थी। उस स्कूलके हेडमास्टरने बताया कि पहले स्कूलके बहुत-से लड़कोंको ज़ुकाम होता था, फोड़े-फुन्सी निकलते थे और 'स्कार्लेट फीवर' के नामसे मशहूर एक छूत फैलानेवाला बुखार आता था। लेकिन बादमें ऐसा एकाध ही केस होता था, और सो भी बाहरकी छूत लगनेकी वजहसे ही। साग-सब्ज़ीके स्वाद और गुणमें भी निश्चित सुधार हुआ था।

जिन दिनों डॉक्टर मैक्केरिसनके ज़िम्मे हिन्दुस्तानमें 'पोषणकी कमीके कारण होनेवाली बीमारियों' की जाँचका काम था, तब उन्हें यह पता चला था कि प्राणिज यानी घूरेकी खाद डालकर तैयार की गई ज़मीनमें पके हुए गेहूँकी पौष्टिकता रासायनिक खाद डालकर तैयार की गई ज़मीनमें पके गेहूँकी पौष्टिकतासे १७ फ़ी सदी ज़्यादा थी। दूसरे तरीक़ेसे यानी रासायनिक खादोंकी मददसे पैदा किये गये गेहूँमें 'ए' विटामिनकी मात्रा कम थी। छुतहे रोगोंसे टक्कर लेनेके लिए मनुष्य और उसके आश्रित पशु दोनोंके लिए यह विटामिन महत्त्वका होता है।

डॉ॰ मैक्केरिसनको यह भी पता चला कि ढोरोंकी खादसे पैदा हुए बाजरेमें अगर 'बी' विटामिनकी मात्रा १ मानें, तो रासायनिक खादसे पैदा किये गये बाजरेमें उसकी मात्रा क़रीब ·६६ होती है।

२

नौकरशाही योजनाओंमें दूसरी एक योजना हमारी खेतीके तरीक़ेमें मशीनें दाखिल करनेकी यानी खेतीका यंत्रीकरण करनेकी है। लेकिन लार्ड नॉर्थबोर्नने अपनी 'लुक टु दि लैण्ड' (ज़मीनकी दशा देखो: प्रकाशक, डेण्ट) नामकी किताबमें जो चेतावनी दी है, उसके मुताबिक़ यंत्रीकरणसे ज़मीनका इतना ज़्यादा शोषण होता है कि उसकी वजहसे खेतीकी ज़मीनके बड़े-बड़े भागोंके रस और कससे खाली होकर लम्बे-चौड़े रेगिस्तान बन जानेका अँदेशा रहता है। यह एक ऐसी हालत है, जो पहले कभी पैदा नहीं हुई थी। इसीलिए खेतीके साधनोंका यंत्रीकरण हमको भुलावेमें डालनेवाला भयानक जाल-सा बन जाता है।

अपने खेतोंमें मशीनोंका इस्तेमाल करनेवाले अंग्रेज़ किसानोंसे हमें इस बारेमें बहुत-कुछ सीखना है और हमारा यह फ़र्ज़ है कि जिन मामलोंमें वे ख़ुद अपनी ग़लती क़बूल करते हैं, उनसे सबक़ लेकर हम उनके जैसी नुक़सानीसे बचें।

उनका एक तजरबा यह है कि बहुत वज़नदार होनेकी वजहसे मशीनोंके नीचे ज़मीनकी बनावट नीरोग नहीं रह पाती। हरी घासवाले खेतों पर 'मोटर लॉन मोअर' (घास काटनेकी मोटर) का इस्तेमाल होता है, जिससे ज़मीनका कस उतर जाता है।

कई तसलोंवाला यांत्रिक हल ज़रूरतसे ज़्यादा तेज़ीके साथ ज़मीनको जोत डालता है, जब कि बैल या घोड़ेके एक तसलेवाले हलसे किसी बड़े खेतको जोतनेमें कई दिन लग जाते थे। ज़मीन जोतते समय अन्दरसे जो जीव-जन्तु बाहर निकल आते हैं उनको या उनके अण्डों और छोटी इल्लोंको गटक जानेके लिए तैयार बैठे पक्षियोंके झुण्ड-के-झुण्ड उस हलके पीछे उड़ा करते थे। पहले जिस कामको बहुत दिन लगते थे, अब वह एक ही दिनमें खतम हो जाता है और परिन्दोंको ज़मीन साफ़ करनेका मौक़ा ही नहीं मिलता। इसलिए अंग्रेज़ किसान अब इस बातकी बहुत शिकायत करते हैं कि उनके खेतोंमें धानकी जड़को कुरेद कर खा जानेवाली इल्लें और दूसरे जन्तु बेशुमार बढ़ गये हैं।

लेकिन बात यहीं आकर रुक नहीं जाती। इस तरह ज़मीन तो साफ़ होती ही नहीं; साथ ही, प्राणिज या वनस्पतिज पदार्थोंके सड़नेसे तैयार होनेवाला जो तत्त्व ज़मीनमें है और रेतमें नहीं है, मशीनसे खेती करनेके कारण वह नष्ट होता जा रहा है। यह एक दूसरी ही क्रिया है। जब घोड़े या बैल हल खींचते हुए खेतोंमें घूमते थे, तो अपनी लीद या गोबरसे ज़मीनके कसको बढ़ाते थे। मोटरसे चलनेवाला ट्रैक्टर बात-की-बातमें सारे खेत पर चक्कर लगा डालता है और अपनी तरफ़से ज़मीनको कुछ नहीं देता। पिछले २० बरसोंमें ब्रिटिश फ़ौजों और ब्रिटिश शहरोंसे ५ लाख घोड़े कम हो गये हैं। नतीजा यह हुआ है कि ब्रिटेनकी १० लाख एकड़ ज़मीनको लीदकी खादसे जो पोषण मिला करता था, वह अब नहीं मिलता और उस हद तक वहाँकी ज़मीनें कमज़ोर हो गई हैं।

वनस्पति, प्राणी और मनुष्य इन तीनका कृषि-चक्र विलायतमें अनेक तरहसे खण्डित हुआ है और हरएक जगह उसका फल बुरा निकला है। माइकेल ग्रेहाम अपनी 'सॉइल एण्ड सेन्स' (ज़मीन और समझदारी — प्रकाशक, फ़ेबर) नामकी किताबमें लिखता है कि ब्रिटेनकी घरवालियाँ अपने परिवारको छोटा बनाना सीख गई हैं, जिससे गडरिये बेकार हुए हैं, और किसान कंगाल बनने लगे हैं। हर साल भेड़ोंकी तादादमें १० लाखकी कमी होती जाती है और इसकी वजहसे ब्रिटेनको गेहूँकी तंगीका सामना करना पड़ता है। इतना होते हुए भी गेहूँके खेतोंमें खादके लिए जितनी भेड़ोंको बैठानेकी ज़रूरत होती है उतनी तादादमें भेड़ें आज मिलती नहीं।

यह एक हक़ीक़त है, और सारी दुनियाका यह तजरबा भी है कि वैज्ञानिक कही जानेवाली खेती ज़मीनके कसका नाश करती है, उसे कंगाल बनाती है, और आखिर उसके सारे रसको चूस लेती है। जैसा कि मिस्रमें हुआ — "जिस हिसाबसे वहाँ खेतीका ज़्यादा और ज़्यादा वैज्ञानिक तरीक़ा दाखिल किया गया उसी हिसाबसे ज़मीन भी बराबर एक-सी उतरती गई।" ('रेप ऑव् दि अर्थ' — पृथ्वी पर अत्याचार)

जबसे विलायतमें मशीनोंसे खेती होने लगी है तबसे खेतोंके आसपासकी हरी बागुड़ें भी चुन-चुन कर साफ़ कर दी गई हैं। ई॰ बी॰ बॉल्फरकी रायमें इसकी वजहसे खेतोंमें जीव-जन्तुओं और इल्लोंका त्रास बहुत ही बढ़ गया है, क्योंकि "बागुड़ोंके निकल जानेसे जीव-जन्तुओंका शिकार करनेवाले परिन्दोंके बैठनेकी जगह भी खतम हो गई। उनके लिए कोई आसरा न रहा।" पहले विलायतमें छोटे-छोटे खेत थे। इनके सिवा बागुड़ोंमें हरियाली खूब रहती थी। थोड़े-थोड़े फ़ासले पर पेड़ भी बहुतसे थे। इसकी वजहसे ब्रिटेनमें, जहाँ ज़ोरोंकी आँधियाँ उठा करती हैं, "ज़मीनकी गठन क़ायम रहती थी और उसकी पैदावारमें वृद्धि होती थी।" लेकिन अब नये ढंगकी खेतीकी मशीनोंका इस्तेमाल करनेके खयालसे खेतोंका क़द बहुत बढ़ा दिया गया है।

ब्रिटिश किसानोंके इन अनुभवों पर विचार करते हैं, तो यह एक इष्टापत्ति ही मालूम होती है कि अमेरिका हमको ५ सौ ट्रैक्टर भी नहीं दे सकेगा, जब कि वह रूसको ५० हज़ार और फ़्रान्सको दूसरे २० हज़ार ट्रैक्टर देनेवाला है।

जॉर्ज रसेलको, जो अपने ए॰ ई॰ उपनामसे मशहूर थे, उनकी मृत्युसे २ साल पहले अमेरिकाके संयुक्त राज्योंकी सरकारने अपने यहाँ बुलाया था और उनसे प्रार्थना की थी कि वे बतायें कि अमेरिकाकी खेतीके तरीक़ेमें क्या खामी है। साधन-सामग्री सब बिलकुल अच्छी तरह तैयार की गई थी। फिर भी काम करनेवाले किसान काम करनेमें आनाकानी करते थे। ए॰ ई॰ने यह सब देखकर राय दी कि आप लोगोंके ज़रूरतसे कहीं ज़्यादा संगठनकी वजहसे असल चीज़मेंसे आत्मा उड़ गई है; मनुष्य, ज़मीन और मनुष्यके साथी घोड़े या बैल, इन तीनोंके बीच मशीनोंने कुछ ऐसा दखल दिया है कि आदमीके लिए अपना काम आनन्दरूप होनेके बदले बेगारकी तरह असह्य हो गया है।

लॉर्ड नॉर्थबोर्नके नीचे लिखे कथनको हम रट रक्खें:

"क्या खेतीमें और क्या दूसरे हुनरोंमें, हरएक अच्छी-से-अच्छी चीज़ आदमीको अपने हाथों द्वारा ही मिलती है। और, इसमें शक नहीं कि जो बढ़िया नहीं है या उससे थोड़ी भी घटिया है, उससे काम नहीं चल सकता।"

('हरिजन' से)   बालजी गोविन्दजी देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक पत्र

सनसनीखेज खबरें छापनेवाले अखबार पिछले कुछ दिनोंसे लोगोंमें जो भारी घबराहट और हौलदिली फैलानेकी कोशिश करते रहे हैं, और पिछले हफ़्ते गांधीजी जिसका ज़िक्र कर चुके हैं, उसने गये बुधवार तो हद ही कर दी! उस दिन नई दिल्लीमें किसी अनजान आदमीने कायरताके साथ एक हिन्दू लड़केकी पीठमें छुरा भोंक दिया। तक़दीरसे वह हमला घातक साबित नहीं हुआ। उस बस्तीके लोग धन्यवादके पात्र हैं कि उन्होंने अपनेको शान्त रक्खा और ज़ब्तसे काम ले कर किसी तरहका बदला नहीं लिया। इसीलिए फ़साद आगे नहीं बढ़ा। इस घटनाकी टीका करते हुए गांधीजीने कहा: "इस बारेमें लोग बिना सोचे-समझे एकदम यह अन्दाज़ लगा सकते हैं कि हिन्दू लड़के पर हमला करनेवाला कोई मुसलमान ही हो सकता है। मेरी रायमें इस तरहकी अटकलबाज़ी सिर्फ़ बेकार ही नहीं, नुक़सानदेह भी है। इसके बजाय हमें अपने आपसे यह सवाल करना चाहिये कि अगर हम मौक़े पर होते, तो क्या करते या हमें क्या करना चाहिये था?" इस तरहके डरपोक हमलोंको खड़े-खड़े देखते रहना अपनी कायरताको ज़ाहिर करना है। तब क्या लोगोंको छुरा निकालकर गुंडोंको उनकी करतूतका मज़ा चखाना चाहिये? गांधीजीने कहा कि ये दोनों तरीक़े ग़लत हैं। उनकी रायमें इसका सबसे अच्छा तरीक़ा यही है कि लोग गुण्डोंको समझायें कि वे बेगुनाहोंका ख़ून न करें। अगर ऐसा करनेमें वे ख़ुद गुण्डोंके ग़ुस्सेके शिकार बनें, तो उन्हें उसकी परवाह न कर उसका स्वागत करना चाहिये। ऐसे ही मौक़ों पर लोगोंकी रोज़-रोज़ प्रार्थना-सभाओंमें हाज़िर रहनेकी ईमानदारीकी जाँच होगी। "जब ग़ुस्सा और जोश ख़ूब बढ़ जाता है और आम जनता डर और घबराहटकी बुरी तरह शिकार हो जाती है, तो प्रार्थनामें विश्वास रखनेवाले आदमीका यह फ़र्ज़ है कि इस तूफ़ानसे अपनेको बचावे और ख़ुद जानवर न बने। हमें भगवान्‌से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह अपने दिलकी नफ़रत और ग़ुस्से पर क़ाबू पानेमें हमारी मदद करे। ग़ुस्से, नफ़रत और दूसरी बुराइयोंको जीत सकनेमें ही प्रार्थनाकी कामयाबी है। छुरा लेकर किसी दुष्ट पर हमला करनेके बजाय शान्ति और दृढ़ताके साथ उसका हथियार छीन लेनेमें और गाली देनेके बजाय मुँहसे गाली न निकलने देनेमें ज़्यादा बहादुरी है।

उन्होंने लोगोंको इस तरहकी एक और वारदातकी याद दिलाई, जिसमें 'विजय-दिवस'के दिन दिल्लीमें हुए फ़सादमें एक बेगुनाह अमन पर हमला किया गया था। उन दिनों आम जनतामें युरोपियनों और अंग्रेज़ोंके ख़िलाफ़ बदलेकी आग भड़क उठी थी। गांधीजीकी रायमें यह भी कोई कम नामरदीकी बात न थी।

"हमें गुण्डों पर रहम करना चाहिये," गांधीजीने कहा। "एक मौलाना, जो मुझसे मेरे प्रार्थनामें आने के पहले मिले, कह रहे थे कि कई अखबार हर रोज़ और हर हफ़्ते किस तरह साम्प्रदायिक द्वेष (फ़िरक़ेवाराना नफ़रत) की आग को फैला रहे हैं। वे ही सच्चे गुनहगार हैं। हत्या करने के लिए उकसाना भी हत्यासे ज़्यादा नहीं तो हत्याकी बराबरीका ही गुनाह है। अक्सर देखा गया है कि असल हत्यारा नासमझ, दूसरोंके इशारों पर नाचनेवाला, और नुक़सान-देह प्रचार का ही शिकार होता है।" लेकिन इस तरह का प्रचार भी सिर्फ़ ज़हरीली हवा में ही कारगर हो सकता है। तन्दुरुस्त हवा उसे बेकार बना देती है। आखिर में उन्होंने कहा: "घबराहट आखिर तो डर से ही पैदा होती है। लेकिन प्रार्थना करनेवाला कभी नहीं डरता। अगर आपकी प्रार्थना डर, घबराहट और आम लोगों के पागलपन को दूर नहीं करती, तो उसे बार-बार दोहराना बेकार है।"

प्रार्थना के बाद के अपने एक दूसरे प्रवचनमें गांधीजीने फिर इस बात का ज़िक्र किया। अख़बारों में छपा था कि सारी बम्बई में डर और आतंक छा गया है। न हिन्दू मुसलमानों की बस्तीमें जाने की हिम्मत करते हैं, न मुसलमान हिन्दुओंकी। दुकानें बन्द कर दी गई हैं और दंगों के डर से रास्ते वीरान हो गये हैं। लेकिन ये सब अखबारी अफ़वाहें ही साबित हुईं। न तो बम्बईमें दर असल घबराहट थी, न किसी तरह का आतंक या डर। हिन्दू और मुसलमान स्त्री-बच्चे आज़ादी के साथ एक-दूसरे की बस्तियों में जाते-आते थे। सारी कहानी मनगढ़न्त ही थी। अभी कल ही दिल्ली में एक हिन्दू बहन एक मुसलमान भाई के ताँगे में बैठ कर कहीं जा रही थी। यहाँ जो कुछ चल रहा था उस पर ताँगेवाले को बड़ा डर और ताज्जुब मालूम हो रहा था। उसने पूछा: 'आख़िर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच झगड़ा क्यों होना चाहिये? जो लोग आपसमें लड़ते-झगड़ते हैं उन पर ख़ुदा मेहरबानी नहीं करता'। गांधीजीने कहा: "यह बात यह साबित करती है कि डर फैलानेवाली अफ़वाहों पर भरोसा करना कितना खतरनाक है।" उन्होंने आगे चलकर कहा: "इस सबसे हमें एक ही सीख मिलती है कि हमें कभी डरना नहीं चाहिये। क्योंकि लोग हमेशा डरपोकों को ही डराते हैं, बहादुरों को नहीं। लेकिन दिल में डर भरा हो, तो बाहर से बहादुरी दिखाना बेकार है। शायद आप सबने उस बच्चे के बारेमें सुना होगा जिसे साँप के साथ खेलते रहने पर भी कोई नुक़सान नहीं पहुँचा। लेकिन अगर साँप से डरनेवाला सयाना आदमी साँप से खेलने लगे, तो साँप उसके छूते ही उसके भीतर के डर को भाँप लेगा और शायद उसे डँस लेगा। लेकिन मान लीजिये कि आप डरे हुए हैं और डर को दूर करना चाहते हैं, तो इसकी पहली शर्त यह है कि आप अपने पास कोई हथियार न रक्खें। आपको ईश्वर पर भरोसा रखना चाहिये। वही आपकी हिफ़ाज़त करेगा। जो आदमी डर कर अपने पास हथियार रखता है, वह ईश्वर की हस्ती को नहीं मानता और हथियारों को ही अपना ईश्वर बना लेता है।"

दुष्ट भेद

नई दिल्लीमें म्युनिसिपैलिटीकी भंगी-बस्तीके और गांधीजीके रहनेकी जगहके बीच सिर्फ़ एक दीवारकी आड़ है। फिर भी दोनोंके रहन-सहनकी हालतोंमें ज़मीन-आसमानका फ़र्क़ है। पिछले शनीचरको सुबह-सुबह गांधीजी इस बस्तीको देखने पहुँच गये। बस्ती एक चौकोर घेरेमें बसी हुई है और उसमें एक-एक कमरेवाले इकहरे झोंपड़े चारों तरफ़ बने हुए हैं। ये झोंपड़ियाँ छोटी-छोटी काल-कोठरियाँ ही हैं, जिनमें हवा और उजेलेके लिए छतसे लगा हुआ एक-एक तंग उजालदान बना हुआ है। इन झोंपड़ोंमें हमारे-जैसोंका तो दम ही घुटने लगता है। इनमेंसे बारह फीट लम्बे और दस फीट चौड़े कुछ घरोंके अन्दर कहीं-कहीं तो छह-छह, आठ-आठ और दस-दस लोग एक साथ रह रहे हैं। भगवान् जाने, वे वहाँ अपनी लाज-शरमको बचाते हुए किस तरह रह पाते होंगे! बस्तीके ठीक बीचमें बिना आड़-परदेके टूटे-फूटे बमपुलिसकी दो कतारें बनी हुई हैं, और वहीं बग़लमें नहानेके नल लगे हैं। बस्तीके ज़्यादातर लोग खुलेमें सोये हुए थे। उनके ओढ़ने-बिछानेके कपड़े बेहद गन्दे थे। रहने-सहनेकी जो सहूलियतें उन्हें दी गई हैं, उनको देखते हुए इसके सिवा और हो भी क्या सकता था? दूसरे दिन स्वयंसेवकोंकी एक सभामें बोलते हुए गांधीजीने अपने जलते जीका सारा उफ़ान उनके सामने उँडेल दिया। उन्होंने कहा: "इन लोगोंकी यह हालत जितनी मेरे लिए शर्मनाक है, उतनी ही आप सबके लिए भी है। आप यहाँ मेरी सेवाके लिए तैनात किये गये हैं। जिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्तैदी और मुहब्बतके साथ आपने मेरी और मेरे साथके लोगोंकी खिदमत की है, उसके लिए मैं आपका एहसानमन्द हूँ। लेकिन अगर मेरे बिलकुल पड़ोसमें रहनेवाले इन ग़रीब-से-ग़रीब और छोटे-से-छोटे लोगोंकी आप कोई खिदमत नहीं करते हैं, तो मेरी खिदमत करनेसे फ़ायदा क्या? अच्छा तो यह हो कि आप मेरे पड़ोसमें रहनेवाले इन भंगियोंकी खिदमत करें, जो बराबर गंदे और मैले-कुचैले रहते हैं। इस तरह की खिदमत करनेवालेको उसीमें मज़ा आने लगता है। मैं यहाँ इस भंगी-बस्तीमें रहने आया तो हूँ, लेकिन जिस गन्दगीमें यहाँके भंगी भाई-बहन रहते हैं, उसमें मैं नहीं रह सकता। इसमें क़सूर उनका नहीं। क़सूरवार तो वे हैं, जिन्होंने उनकी यह हालत बना रक्खी है। जिन घरोंमें इन लोगोंको बसाया गया है, वे हिन्दुस्तानमें और दक्षिण अफ्रीकामें मेरी देखी हुई जेलखानोंकी बुरी-से-बुरी काल-कोठरियोंसे भी ज़्यादा खराब हैं। मैं आपसे कहता हूँ कि आप इन भंगी-बस्तियोंमें जाइये। भंगियोंके उस्ताद या सरपरस्त बनकर नहीं, बल्कि उनके सच्चे सेवक बनकर ही आप उनके दिलों तक पहुँच सकेंगे और बात-की-बातमें वहाँका सारा नक़शा बदल सकेंगे।"

जब गांधीजीने पुरानी दिल्लीमें अजमेरी दरवाज़ेके नज़दीककी भंगी-बस्ती देखी, तो वहाँकी हालत उन्हें बहुत ही बदतर नज़र आई। शहरकी चहार-दीवारीके सायेमें सिर्फ़ आठ झोंपड़े एक-दूसरेसे सटकर बने हुए हैं, और शहरके गन्देनाले और इन झोंपड़ोंके बीचकी एक तंग पगडण्डी ही दोनोंको एक-दूसरेसे अलग करती है। उस पगडण्डी पर एक आदमी भी बमुश्किल चल पाता है। हमसे कहा गया था कि अभी कुछ दिन पहले ही वहाँके भंगियोंका एक बच्चा उस नालेमें गिरकर डूब चुका था। इस बस्तीके भंगी ख़ुद ही मिट्टी और पुराने टीनकी जंग खाई हुई चादरोंकी मददसे वहाँ अपने लिए कुछ और झोंपड़े खड़े कर रहे हैं। नहाने और पीनेका पानी भरनेके लिए वहाँ सिर्फ़ एक ही नल लगा हुआ है, और वह भी अभी-अभी लगाया गया है। सारी बस्ती इतनी गंदी थी कि जिसका बयान नहीं किया जा सकता। मारे बदबूके दम घुटता था। साँस लेना मुश्किल हो रहा था। उस दिन गांधीजीके साथ राजकुमारी अमृतकुँवर भी वहाँ गई थीं। उनसे वह बदबू सही नहीं गई—उन्हें क़ै हो गई।

गांधीजीने जाना कि पाण्डवों और मुग़लोंका यह शानदार शहर आज शायद हिन्दुस्तानका सबसे ज़्यादा गन्दा शहर है। शहरकी म्युनिसिपैलिटीने सफ़ाईकी बदइन्तज़ामीके मामलेमें हद कर दी है। शहरकी इन भंगी-बस्तियोंको देखनेके बाद ही इस बातका ठीक अन्दाज़ लग सकता है। सात साल पहले स्व० श्री महादेवभाईने इन बस्तियोंको देखकर रोंगटे खड़े करनेवाली एक रिपोर्ट पेश की थी। पिछले सात सालोंमें हालत बदसे-बदतर हो गई है। गांधीजीको यह देखकर बहुत ही सदमा पहुँचा। दिल्लीके म्युनिसिपल कौंसिलर और हेल्थ-ऑफ़ीसर क्या करते रहते हैं, भगवान् ही जाने! काश, दिल्लीके टैक्स देनेवाले लोग जागें और म्युनिसिपल मेम्बरोंको अपना फ़र्ज़ अदा करनेके लिए मजबूर करें!

दूसरी तरफ़, शिमलाके लिए रवाना होनेसे पहले जब गांधी जी महामना मालवीयजीसे दुबारा मिलने गये तो वहाँ उन्हें गंगाजीमें नहानेका-सा सुख और ताज़गी मिली। लेकिन इसकी चर्चा अगले हफ़्ते करेंगे।

नई दिल्ली, १-५-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

बहनोंके लिए

शहरकी बहनें अक्सर पूछती हैं कि समाज-सेवाके तौर पर वे क्या कर सकती हैं? इन बहनोंकी ज़िन्दगीका एक दुःख यह है कि इनका उन बहनोंसे कोई लगाव नहीं, जिनकी खिदमत इन्हें अपने फ़र्ज़के तौर पर करनी चाहिये। अगर ऐसा होता, तो यह सवाल ही न उठता।

मैं नहीं जानती कि दिल्लीकी इन ख़ुशहाल बहनोंमें से किसीने भी यहाँकी हरिजन-बस्तियोंको कभी देखा हो। जिस बस्तीकी सरहद पर गांधीजी यहाँ रह रहे हैं, वह पुकार-पुकारकर कह रही है कि समाजके इन भूले हुए लोगोंकी खिदमत करना निहायत ज़रूरी है। जिन मकानोंमें ये लोग रहते हैं वे काफ़ी गन्दे हैं, हालाँकि दूसरे शहरोंकी हरिजन-बस्तियोंके मुक़ाबले या खास दिल्लीकी दूसरी कुछ बस्तियोंके मुक़ाबले कुछ अच्छे हैं। जिन लोगोंकी सेवाओंके बिना हम जी नहीं सकते उनके लिए अच्छे मकानोंका इन्तज़ाम करानेकी तहरीकमें बहनोंको सबसे आगे रहना चाहिये। उनको नाकाफ़ी पगार या मज़दूरी मिलती है। उनके ओढ़ने, बिछाने और बदन पर पहननेके कपड़ोंकी ओर देखा नहीं जाता। दिल दर्दसे भर उठता है। उनके बच्चे मैले-कुचैले और बिना नहाये-धोये रहते हैं। क्या यहाँकी कुछ बहनोंसे यह उम्मीद करना ज़्यादा होगा कि वे हर रोज़ इन बस्तियोंमें आयें, बच्चोंको नहलायें, लड़कियोंके उलझे बालोंको धो-पोंछकर उनमें कंघी करें, छोटी-मोटी बीमारियोंका सीधा-सादा इलाज करें, उनके कपड़े धुलवा दें, बच्चोंके लिए दूधका इन्तज़ाम करा दें, और बहनोंको अपने घरके लिए अच्छी तरह खाना पकाने और खानेकी तालीम दें और अपने आसपासकी जगहको भरसक साफ़ रखना सिखायें, बावजूद इसके कि आज जिन जगहोंमें उन्हें रहना पड़ता है वे इतनी अँधेरी, गन्दी और तंग हैं कि उनमें सफ़ाईके साथ रहना मुश्किल है। उम्मीद है कि अलग-अलग सूबोंमें लोगोंके चुने हुए नुमाइन्दोंकी जो सरकारें बनी हैं, वे न सिर्फ़ हरिजनोंके लिए बल्कि तमाम मजदूरोंके लिए अच्छे-भले मकानोंका इन्तज़ाम करना और उनकी मज़दूरी या पगार बढ़ाना अपना पहला फ़र्ज़ समझेंगी।

नई दिल्लीको बसानेवालोंने अमीरोंके शानदार महलोंको छोड़कर और कहीं हवा और रोशनीका इन्तज़ाम करनेकी तरफ़ बहुत कम ध्यान दिया है। हमारी सरकारोंको चाहिये कि वे उनकी ग़लतियोंको फ़ौरन दुरुस्त करें।

नई दिल्ली, २६-४-'४६
('हरिजन'से)

अमृतकुँवर

बेरहमी

कुछ मुसाफ़िरोंने रेल्वेके हाकिमोंके नाम एक खत भेजा था, जिसका सार नीचे दिया जाता है:

"हम 'हुबली मेल'के मुसाफ़िर, जो रात १० बजकर १९ मिनिट पर पूना आये हैं, इस बातकी ओर आपकी तवज्जह दिलाना चाहते हैं कि जिस डब्बेमें हम सवार हैं उसमें दरअसल सिर्फ़ २८ मुसाफ़िरोंको बैठना चाहिये, जबकि हक़ीक़तमें डब्बेके अन्दर ८० मुसाफ़िर अपने भारी असबाबके साथ बैठे हुए हैं। हमारी समझमें नहीं आता कि गाड़ियोंमें रहनेवाली जगहकी कोई देखभाल क्यों नहीं होती? हमारी हालतको कलकत्तेकी कालकोठरीसे कम नहीं कहा जा सकता। हमारा दम घुट रहा है। औरतों और बच्चोंकी तो जान ही निकल रही है। क्या तीसरे दरजेके मुसाफ़िरोंके साथ इस तरहका बरताव वाजिब है?"

यह शिकायत बिलकुल मौज़ूँ है। इसमें जो बातें कही गई हैं, वे रोज़मर्रा देखनेको मिलती हैं। लेकिन सवाल यह है कि क्या रेल्वेवाले तीसरे दरजेके अपने इन ग़रीब मुसाफ़िरोंके लिए कुछ करेंगे? इन्हींके बल तो रेलें चलती हैं। तीसरे दरजेके डब्बों और तीसरे दरजेके सफ़रमें पूरा-पूरा सुधार और फेरफार फ़ौरन ही हो जाना चाहिये। अब वक़्त आ गया है, जब करोड़ोंका खयाल रखकर चलनेवाली अपनी सरकारकी हमें सख्त ज़रूरत है।

नई दिल्ली, २७-४-'४६
('हरिजन'से)

अमृतकुँवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीका अख़बारी बयान

मि० हूवर चन्द दिनोंके लिए हिन्दुस्तान आये थे। उनकी इस मुलाक़ातने लोगोंमें काफ़ी दिलचस्पी पैदा की है और शायद उम्मीद भी। भुखमरीसे झगड़नेमें लगे हुए हिन्दुस्तानको अमेरिकासे और दूसरे मुल्कोंसे जो भी मदद मिल सकेगी, उसका यहाँ स्वागत ही किया जायगा। फिर भी मेरी कोशिश ऐसे तरीक़ों और ज़रियोंको ढूँढ निकालनेकी रही है, जो हमको इस मामलेमें अपने पैरों खड़ा कर सकें। अगर लोगोंने घबराहटको अपने पर हावी होने दिया, तो भुखमरी धरी ही है, बावजूद इसके कि हिन्दुस्तानके बन्दरगाहों पर एकके बाद एक जहाज़ आते रहें और बाहरसे लाया हुआ गल्ला बन्दरगाहों पर खाली होता रहे। इसके बरखिलाफ़, अपने बल-भरोसे, ईमानदारी और बहादुरीके साथ, आनेवाली मुसीबतोंका सामना करनेवाले हिंदुस्तानको बतौर फ़र्ज़के बाहरसे भेजे जानेवाले अनाजका एक-एक दाना मुल्कके लिए हर तरह मुफ़ीद साबित होगा। मि० हूवरकी यह मुलाक़ात सरकारी नौकरोंके लिए, पैसेदारोंके लिए और गल्लेके व्यापारियोंके लिए एक ऐसी चेतावनी बन जानी चाहिये, जिससे वे मुल्कके करोड़ों लोगोंके प्रति अपने फ़र्ज़का बराबर खयाल रख सकें। जो अपनी मदद ख़ुद करते हैं, क़ुदरत हमेशा उनका साथ देती है।

नई दिल्ली, २६-४-'४६

('हरिजन'से)

बेसमझ क़ानून

श्री टी० एन० जगदीशन्‌ने गांधीजीको लिखा है:

"मद्रासके 'हिन्दू'में नीचे लिखी खबर छपी है: '१ अप्रैल, कराची: आज सिन्ध एसेम्बलीने अपना वह बिल सिलेक्ट कमेटीके हवाले किया, जिसमें सरकारको यह अधिकार दिया गया है कि वह कोढ़ियोंको खस्सी बना सके। बिलके मक़सद और उसके कारणोंका ज़िक्र करते हुए यह कहा गया है कि कोढ़ सूबे सिन्धका अपना मर्ज़ नहीं है। लेकिन वहाँ कोढ़के बीमारोंके इलाजकी जो डॉक्टरी सहूलियतें मौजूद हैं, उसकी वजहसे सारे हिन्दुस्तानसे बहुत बड़ी और बढ़ती हुई तादादमें कोढ़ी वहाँ खिंचे चले आते हैं। और इसकी वजहसे सूबेके लिए एक गंभीर सवाल खड़ा हो गया है। इस बिलके मुताबिक़ मर्द कोढ़ियोंको खस्सी किया जा सकेगा'।"

"कोई एक साल पहले डॉ० आर० जी० कोचरानेने (जो इस वक्त छुट्टी लेकर इंग्लैण्ड चले गये हैं) इस मसले पर उनकी राय पूछी जाने पर साफ़ शब्दोंमें इसके खिलाफ़ अपनी राय दी थी। अगर कोढ़की बीमारी एक पुश्तैनी बीमारी होती, तो कोढ़ी मरदोंको खस्सी करनेसे कोढ़को रोका जा सकता था; लेकिन कोढ़ बापसे बेटेको मिलनेवाला मर्ज़ नहीं है। यह मर्ज़ तो छुतहे कोढ़ियोंके साथ तन्दुरुस्त आदमियोंके बहुत अरसे तक और बहुत नज़दीक रहनेसे फैलता है। ख़ासकर छोटे बच्चोंको ऐसी हालतमें यह जल्दी लगता है। छुतहे कोढ़ीके साथ पल-पुसकर बड़ा होनेवाला बच्चा जल्दी ही कोढ़का शिकार बन सकता है। छुतहे कोढ़के बीमार माँ-बाप या माँ और बापकी औलाद होने पर भी अगर बहुत छोटी उम्रमें बच्चोंको ऐसे माँ-बापोंसे अलग कर दिया जाय, तो उन्हें यह बीमारी नहीं होती। इस बारेमें अब तक जितनी जाँच-पड़तालें हुई हैं, उनकी रिपोर्टोंसे मालूम होता है कि हिन्दुस्तानके ऐसे परिवारोंमें माँ-बापोंके साथ रहनेसे बच्चोंको उतनी छूत नहीं लगती, जितनी अपने चाचा, चाची, भाई, बहन वग़ैराके साथ रहनेसे लगती है। पड़ोसियों और एक ही मकानमें एक साथ रहनेवाले किरायेदारोंसे भी इसकी छूत लगती है। इसलिए मर्द कोढ़ियोंको खस्सी करनेसे हालतमें कोई सुधार नहीं होगा। बल्कि इसकी वजहसे यक़ीनन् हालत बदतर हो जायगी, क्योंकि जो दरअसल इसके मरीज़ हैं वे डर जायँगे और कई सालों तक अपनी बीमारीको छिपाये रहेंगे। याद रहे कि कोढ़ एक ऐसा मर्ज़ है जो सालों तक छिपाया जा सकता है, और अगर इन सालोंके दरमियान बीमारका इलाज हो जाय, तो वह अच्छा हो सकता है। इलाज न किया जाय, तो वह आसानीसे छूत फैलानेका एक पुरअसर ज़रिया बन सकता है।

"अगर यह तजवीज़ क़ानून बन गई, तो ज़ाहिर है कि अमली तौर पर इसका असर उन्हीं मरीज़ों पर पड़ेगा, जिनके केस ज़ाहिरा बहुत पुराने हो गये हैं और जिनका कोढ़ चूने लगा है। ऐसे कोढ़ियोंकी छूत बहुत नहीं फैलती, क्योंकि उनकी बीमारीके छुतही होनेके बावजूद यक़ीनन् उनके शादी करने या बच्चे पैदा करनेकी गुंजाइश नहीं रहती। सिन्धी बिलकी मंशा यह है कि वह बाहरसे आनेवाले बीमारोंके ज़रिये इस बीमारीको अपने वहाँ फैलनेसे रोके। बाहरसे आनेवाला बीमार अगर छुतहे रोगवाला हुआ, तो उसे खस्सी कर देनेसे भी वह छूत फैलानेसे बाज़ न आयेगा। जो लोग लगातार लम्बे अरसे तक उसके साथ रहेंगे, उन्हें उसकी छूत लगेगी ही। कोढ़को रोकनेका और उस पर क़ाबू पानेका एक ही तरीक़ा है, और वह यह है कि छूतवाले कोढ़ियों को, फिर वे बाहरी हों या मुक़ामी, बच्चोंके साथ लगातार बहुत दिनों तक क़तई न रहने देना चाहिये।

"सिन्धका यह बिल बहुत कड़ा है, और समझके बाहर है। तपेदिककी तरह कोढ़ भी घरोंमें तभी फैलता है, जब घरके तन्दुरुस्त लोग, ख़ास कर बच्चे, ऐसे बीमारोंके बहुत नज़दीक रहते हैं। कोढ़को रोकनेके उपाय तपेदिकको रोकनेके उपायोंसे ज़्यादा कड़े नहीं होने चाहिये। और इसमें ज़्यादा ध्यान इस बात पर दिया जाना चाहिये कि छूतवाले बीमारोंके साथ तन्दुरुस्तोंके ताल्लुक़ात कम-से-कम रहें या बिलकुल न रहें। अफ़सोस यह है कि ज़्यादा-से-ज़्यादा पढ़े-लिखे और समझदार लोग भी कोढ़के बारेमें बहुत पुराने और ग़लत खयाल रखते हैं। और, जैसा कि आम तौर पर होता है, पुराने ख़यालात बहुत मुश्किलसे दूर होते हैं, इसलिए जब कोढ़के मसलेको हल करनेकी बात सामने आती है, तो हमारे क़ानून बनानेवालों और हाकिमोंके दिमाग़में कोढ़ियोंके खिलाफ़ कड़ा रुख़ अख्तियार करनेकी बात ही ठँस जाती है। लेकिन कोढ़ियोंकी सेवा करनेवाले तमाम बड़े-बड़े सेवकोंका तजरबा एक आवाज़से डंकेकी चोट यह कहता है कि कोढ़को मिटानेके लिए जो सख्त कार्रवाई की जाती है उसका नतीजा उलटा ही होता है। इन सख्तियोंकी वजहसे बीमार अपनी बीमारीको छिपाते हैं और इस तरह उसे फैलानेके बाइस बनते हैं। जीवनके दूसरे क्षेत्रोंकी तरह कोढ़के मामलेमें भी कठोरता काम नहीं देती। ज़ोर-ज़बरदस्ती या हिंसासे मुराद पूरी नहीं होती।"

डॉक्टरी दुनिया प्रो० जगदीशन्‌की एक-एक बातकी ताईद करेगी। गरम मुल्कोंमें होनेवाली बीमारियोंके एक माहिर श्री मेन्सन बारने कोढ़के पुश्तैनी होने-न-होनेके बारेमें इस तरह लिखा है:

"चूँकि कोढ़ एक ही घरमें कई पीढ़ियों तक होता है, और कुछ मामलोंमें वह कई पीढ़ियोंके अन्तरसे प्रकट होता है, इसलिए पुराने ज़मानेमें कोढ़को पुश्तैनी बीमारी माना जाता था। अगर दरअसल बात ऐसी होती, तो आप इस अजीब चीज़का क्या मतलब लगाते कि नॉर्वेके १६० कोढ़ियोंके बहुतसे बच्चोंमेंसे एक भी ऐसा नहीं था जिसे कोढ़की बीमारी लगी हो। हेन्सेनने यह जाँच की है और बताया है कि ये तमाम बच्चे नॉर्वेसे अमेरिका चले गये थे। गोकि आँवलमें ऐसे जन्तु पाये गये हैं, जिन पर एसिडका भी असर नहीं होता तो भी फिलिपाइन्सकी क्यूलियन नामक कोढ़ियोंकी बस्तीसेजो सबूत मिले हैं, वे यह साबित करते हैं कि कोढ़ पुश्तैनी बीमारी नहीं है।"

इस बीमारीको रोकनेका एक ही तरीक़ा है और वह है, कोढ़ियोंको बस्तियोंसे दूर अलग किसी जगहमें बसा देना। कोढ़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माता-पितासे पैदा हुए बच्चेको उसकी पैदाइशके बाद तुरत ही उनसे अलग कर देना चाहिये। गरम देशोंकी बीमारियोंके एक और माहिर श्री स्टिलका ख़याल है कि अगर इसमें ६ महीनेकी देर की गई, तो अँदेशा यह है कि इस बीच बच्चेको इस बीमारीकी छूत लग चुकी होगी। बिना समझे-बूझे सिर्फ़ क़ानून बना देनेसे कोई मक़सद हासिल नहीं होता। बल्कि इससे तो उलटे बहुत-कुछ नुक़सान होनेका अँदेशा रहता है। अपने ख़तमें प्रो० जगदीशनने इसे बख़ूबी समझाया है। उम्मीद है कि सारे देशके डॉक्टर और हक़ीम सिंध सरकारकी इस तजवीज़का विरोध करेंगे और सरकार .ख़ुद भी इसको बिलके रूपमें पास करानेके बजाय कोढ़को फैलनेसे रोकनेके लिए उन सब मुनासिब उपायोंसे काम लेगी, जो दरअसल कारगर हो सकते हैं।

नई दिल्ली, २२-४-'४६

('हरिजन'से) सुशीला नय्यर

सफ़ेदपोशों पर आरोप

"मैं स्त्री हूँ पर . . . विषयमें आपको लिखना उचित समझती हूँ। लगभग तीन मास हुए . . . का नौकर . . . में . . . के पास ठहरा था। कांग्रेसी लोगोंके बारेमें मेरे विचार बड़े पवित्र थे, इसलिए . . . के संपर्कमें मैं आ गई। मैं रोज़ चरखा कातती थी। वह दुष्ट भी रोज़ आया करता था और मुझे बेटी कहकर पुकारता था। मैं भी उसको चाचाजी कहा करती थी। एक दिन शामको एक मोटरकार आई। दुष्ट . . . ने मुझे कहा: 'बेटी कभी मोटरकारमें भी बैठी हो? अगर नहीं बैठी हो तो आओ, आज तुमको बैठाकर सैर करा लावें।' मुझे उसपर किसी प्रकारका सन्देह न हुआ और उसके साथ मोटरकारमें बैठ गई। कारमें मुझे सीधा . . . लाया गया। और मेरे मुँहमें कपड़ा ठूँस दिया गया, जिससे मैं बोल न सकूँ। उसके बाद मैं . . . लाई गई और मेरे धर्मको बिगाड़नेके लिए कुछ दिन प्रयत्न किया गया। कई बार भागना चाहा पर भाग न सकी। पिस्तौलका डर दिखाया जाता था और मैं डर जाया करती थी। जानका मोह हरएकको होता है। एक सेठ . . . हैं जो कि . . . के बड़े धनी सेठ हैं और सुना है, कॉंग्रेसके बड़े नेता हैं। एक दिन वे मेरे पास आये। उन्होंने कहा: मेरे साथ . . . चली चलो, हम दोनों बड़े मज़े उड़ावेंगे।' दुष्ट . . . मेरी ओर देखकर हँस रहा था। सच कहती हूँ महात्माजी, जैसा इस चाण्डाल सेठने मेरे साथ किया वह वर्णनके बाहर है। और भी बहुतसे लोग हैं जिनके नाम नहीं जानती। पर इस सेठने उस बुढ़ियाको ५००) दिया था। बुढ़ियाने मुझको यह बतलाया कि यह बड़ा धनी सेठ है, इसके साथ चली जा, बड़े मज़ेमें रहेगी। एक दिन शामको . . . की सहायतासे मुझे इस नरक कुण्डसे निकाल लिया गया।"

मुझे ऐसे काफ़ी ख़त मिले हैं। उनमें कांग्रेसके नामी लोगों पर व्यभिचारका आरोप है। सब ख़त बनावटी हैं, ऐसा मानकर बैठे रहना उचित नहीं लगता। यह किसीने कभी दावा नहीं किया है कि सब कांग्रेसी अच्छे हैं। यह अभिमानकी बात है कि कांग्रेसमें कुछ भी ऐब नहीं होना चाहिये, ऐसी मान्यता रहती है। व्यभिचारादि हर क़िस्मके लोगोंमें चलता है। मेरा कर्तव्य इतना है कि अगर यह इल्ज़ाम किसीको भी लागू होता है, तो उसे दुरुस्त किया जाय। व्यभिचार करनेमें भी कुछ मर्यादा तो रहती है। अगर मुझे लिखनेवालोंने सब झूठी बातें नहीं लिखी हैं, तो यहाँ निर्दोष लड़कियोंको फुसलाने तक बात चली गई है।

नई दिल्ली, २८-४-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

जात-पाँतरूपी घुन

जब पानीसे ज़मीन कटने लगती है, तो अच्छी ज़मीन भी बरबाद हो जाती है। यह काफ़ी बुरी चीज़ है। मगर जात-पाँत रूपी घुन उससे भी बुरा है। वह आदमियोंको बरबाद कर देता है और उन्हें एक-दूसरेसे अलग करता है। जब ईसाइयों और पारसियोंकी तरफ़से बराबर ख़त आ रहे हैं, तो हरिजनों और स्त्रियोंके ख़त आना स्वाभाविक है। वे मंत्रि-मण्डलमें अपनी नुमाइन्दगी चाहते हैं। प्रान्तीय मुक़ाबला तो पहलेसे है ही। मंत्रि-मण्डल बनानेवाले भी इस बुराईसे बचे नहीं हैं। वे लोग इसके हक़में न हों तब भी, अगर वे सही चीज़ करें और सिर्फ़ क़ाबलियत पर ही चुनावको सीमित रखें, तो जात बाहर हो जायँ। लोकतंत्र सिर्फ़ मामूली लोगोंकी नुमाइन्दगी कर सकता है, अगर मामूलीसे नीचेवालोंकी नहीं। इसलिए किसी जमहूरी संस्थाको शुद्ध बननेके लिए छोटे-से-छोटे और ग़रीब-से-ग़रीबको हर तरहकी तालीम देनेकी तरफ़ ध्यान देना चाहिये। इसके ज़रिये सब तरहके वहम और सामाजिक बुराइयाँ ख़त्म हो जानी चाहिये। ऐसे समाजमें न तो कोई ईसाई या ग़ैरईसाई ही होगा और न मर्द-औरतका भेद रहेगा। अगर औरतें ही सबसे ज़्यादा क़ाबिल हैं, तो सारे मंत्री या वज़ीर उन्हींमें से होंगे, और इसी तरह अगर पारसी सबसे ज़्यादा क़ाबिल हुए तो सब मंत्री पारसी होंगे। मगर .ख़ुशीका वह दिन बहुत दूर हो सकता है! इस बीच क्या किया जाये? जो लोग यह महसूस करते हों कि उन्हें छोड़ दिया गया है, वे धीरज रखें और सेवा और क़ाबलियतके बल पर ऊपर उठें। जो लोग मंत्री बने हैं, उनको सबके साथ एकसा इन्साफ़ करना चाहिये और ऐसा करते हुए उन लोगोंके लिए ख़ास कोशिश करनी चाहिये, जिनकी तरफ़ अब तक तवज्जह नहीं दी गई है और जो कुचले गये हैं। हर क़दम पर जनता उन्हें और उनके कामोंको देख कर यह महसूस करे कि वे क़ौमके मालिक नहीं, बल्कि सेवक हैं।

नई दिल्ली, २९-४-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

			पृष्ठ
अहिंसक सेवादल	...	गांधीजी	११३
बन्दरोंकी शरारत	...	गांधीजी	११३
कनु गांधीका शिविर	...	गांधीजी	११४
कातनेसे स्वराज्य कैसे?	...	गांधीजी	११५
सभ्यताकी दौड़	...	गांधीजी	११५
आज़ादी	...	गांधीजी	११६
मि० चर्चिलकी तक़रीरका अख़बारी .ख़ुलासा	...		११६
प्रार्थना-सभाके प्रवचन	...	प्यारेलाल	११७
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	११८
स्त्रियोंका आदर्श	...	सुशीला नय्यर	११८
नौकरशाही योजनाओंके ख़िलाफ़ चेतावनी	...	वालजी गोविन्दजी देसाई	११९
साप्ताहिक पत्र	...	प्यारेलाल	१२[illegible]
बहनोंके लिए	...	अमृतकुँवर	१२[illegible]
बेरहमी	...	अमृतकुँवर	१२[illegible]
गांधीजीका बयान	...	. . .	१२[illegible]
बेसमझ क़ानून	...	सुशीला नय्यर	१२[illegible]
सफ़ेदपोशों पर आरोप	...	गांधीजी	१२[illegible]
जात-पाँत रूपी घुन	...	गांधीजी	१२[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंसा कैसे रोकें?

रजि० नं० बी ४५५८

हरिजन-सेवक

१६ पृष्ठ
तीन आना

भाग १०] संपादक : प्यारेलाल [अङ्क १५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १९ मई, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

आयुर्वेद और .कुदरती इलाज

आयुर्वेदाचार्य और वनस्पति-शास्त्री वैद्य वल्लभराम लिखते हैं :

"आयुर्वेदको एलोपैथीके साथ मिला देनेसे उसकी असल रीतका खातमा हो रहा है। पाँच महाभूतोंमेंसे वायु यानी हवाके दोषको वात या बादी, अग्निके दोष या विकारको पित्त और जलके विकारका कफ़ कहा गया है। इन तीन तरहके विकारोंके चिह्न जब शरीरमें दिखाई देते हैं तब उन्हींको बीमारीकी जड़ समझकर आयुर्वेद आगे बढ़ता है। यही वजह है कि बीमारीको मिटानेके लिए आयुर्वेदमें जल, वायु और तेजका सेवन मुख्य माना गया है, और उसे धर्मका रूप देकर उसके पालनका मज़बूत आग्रह रक्खा गया है। इसलिए आयुर्वेदके इलाजका तरीक़ा इस हद तक तो .कुदरती इलाजके साथ मिलता ही है। आयुर्वेदमें पथ्य या परहेज़ पारिभाषिक (इस्तिलाही) बन गया है। उसका मतलब यह है कि बीमारीसे छुटकारा पानेके लिए खान-पान वग़ैरामें .कुदरतके क़ानूनके मुताबिक़ बरता जाय। वाग्भट्ट कहता है :

पथ्येऽसति गदार्तस्य किमौषधनिषेवणैः।
पथ्ये सति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः॥

अगर परहेज़ नहीं पाला जाता, तो दवा लेनेसे फ़ायदा क्या? अगर परहेज़ पाला जाता है, तो दवा लेनेकी ज़रूरत क्या?

"ईश्वरकी स्तुति और सदाचारके पालनसे चरक वग़ैरा ग्रन्थोंमें बीमारीसे छुटकारा पानेकी बात कही गई है। सो कुछ भी हो, लेकिन आपने जो प्रचार शुरू किया है वह आयुर्वेदके लिए भी मददगार होगा। आयुर्वेदमें दवाका नंबर परहेज़के बाद आता तो है, लेकिन उसमें उसके गुण और दोषोंका विचार पाँच महाभूतोंके तरीक़े पर किया गया है। कुछ दवायें तो बिलकुल निर्दोष हैं। जैसे नीम, नीबू, मुलेठी, हराधनिया, 'साटोडी', जौ, गोखरू, गिलोय वग़ैरा। मैं नहीं जानता कि ऐसी चीज़ें .कुदरती इलाजमें बरती जा सकती हैं या नहीं। अगर बरती जा सकें तो इसमें शक नहीं कि उनकी वजहसे .कुदरती इलाजके साथ आयुर्वेदका लगाव बढ़ेगा।

"वैदोंको तो आपके इस नये कामसे इस वक़्त चेत जाना चाहिये। अभी आयुर्वेदको झूठी जो पोशाक पहनाई गई है वह उतार डालनी चाहिये और उन्हें परहेज़ पर व निर्दोष दवाओं पर ज़ोर देना चाहिये। अगर आयुर्वेदका अपना तरीक़ा—कफ़, वात, पित्तके तीन दोषोंकी मददसे इलाज करनेका तरीक़ा—सच्चा होगा तो सब कोई उसे अपनायेंगे।"

ईश्वरकी स्तुति और सदाचारका प्रचार हर तरहकी बीमारीको रोकनेका अच्छे-से-अच्छा और सस्ते-से-सस्ता इलाज है। मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं। अफ़सोस इस बातका है कि वैद, हकीम और डॉक्टर इस सस्ते इलाजका उपयोग ही नहीं करते। बल्कि हुआ यह है कि उनकी किताबोंमें इस इलाजकी कोई जगह ही नहीं रही, और कहीं है, तो उसने जन्तर-मन्तरकी शकल अख्तियार करके लोगोंको वहमके कुएँमें ढकेला है। ईश्वरकी स्तुति या रामनामको वहमसे कोई निस्बत नहीं। .कुदरतका यह सुनहला क़ानून है। जो इस पर अमल करता है वह बीमारीसे बचा रहता है। जो अमल नहीं करता, वह बीमारियोंसे घिरा रहता है। तन्दुरुस्त रहनेका जो क़ानून है वही बीमार होनेके बाद बीमारीसे छुटकारा पानेका भी क़ानून है। सवाल यह होता है कि जो रामनाम जपता है और नेकचलनीसे रहता है उसको बीमारी हो ही क्यों? सवाल ठीक ही है। आदमी स्वभाव ही से अपूर्ण है। समझदार आदमी पूर्ण बननेकी कोशिश करता है। लेकिन पूरा-पूरा पूर्ण वह कभी बन नहीं पाता। इसलिए अनजाने ग़लतियाँ करता है। सदाचार या इख़लाक़में ईश्वरके बनाये सभी क़ानून समा जाते हैं, लेकिन उसके सब क़ानूनोंको जाननेवाला संपूर्ण पुरुष हमारे पास नहीं। मसलन्, एक क़ानून यह है कि हदसे ज्यादा काम न किया जाय। लेकिन कौन बतावे कि यह हद कहाँ खतम होती है? यह चीज़ तो बीमार पड़ने पर ही मालूम होती है। मिताहार और युक्ताहार यानी कम और ज़रूरतके मुताबिक़ खाना .कुदरतका दूसरा क़ानून है। कौन बतावे कि इसकी हद कब लाँघी जाती है? मैं कैसे जानूँ कि मेरे लिए युक्ताहार क्या है? ऐसी तो कई बातें सोची जा सकती हैं। इस सबका निचोड़ यही है कि हर आदमीको अपना वैद .खुद बनकर अपने ऊपर लागू होनेवाले क़ानूनका पता लगा लेना चाहिये। जो इसका पता लगा सकता है और उस पर अमल कर सकता है, वह १२५ बरस जीयेगा ही।

श्री वल्लभराम वैद्य पूछते हैं कि मामूली मसाले और पाक वग़ैरा चीज़ें .कुदरती इलाजमें शुमारकी जा सकती है या नहीं? यह एक बड़े कामका सवाल है। डॉक्टर दोस्तोंका यह दावा है कि वे पूरी तरह .कुदरती इलाज करनेवाले हैं। क्योंकि दवायें जितनी भी हैं, सब .कुदरत ही ने बनाई हैं। डॉक्टर तो उनकी नई मिलावटेंभर करते हैं। इसमें बुरा क्या है? इस तरह हर चीज़ पेश की जा सकती है। मैं तो यही कहूँगा कि रामनामके सिवा जो कुछ भी किया जाता है वह .कुदरतके खिलाफ़ है। इस मध्य-बिन्दुसे जितने दूर हटते हैं, उतने ही हम असल चीज़से दूर जा पड़ते हैं। इस तरह सोचते हुए मैं यह कहूँगा कि पाँच महाभूतोंका असल उपयोग .कुदरती इलाजकी हद है। इससे आगे बढ़नेवाला वैद अपने ईर्द-गिर्द जो दवायें उगती हों या उगाई जा सकें उनका इस्तेमाल सिर्फ़ लोगोंके भलेके लिए करे, पैसे कमानेके लिए नहीं, तो वह भी अपनेको .कुदरती इलाज करनेवाला कहला सकता है। ऐसे वैद आज कहाँ हैं? आज तो वे पैसा कमानेकी होड़ाहोड़ीमें पड़े हैं। छान-बीन और खोज-ईजाद कोई करता नहीं। अपने आलस और लोभकी वजहसे आयुर्वेद आज कंगाल बन गया है, इस चीज़को क़बूल करनेके बदले वैद लोग नेताओंको और सरकारको दोष देते हैं। नतीजा यह होता है कि सरकार लँगड़ी होनेकी वजहसे और कुछ कर नहीं पाती। दूसरी तरफ़ वैद आलसी और लालची होनेके कारण .खुद ही अपंग-अपाहिज बन जाते हैं और आयुर्वेद बदनाम होता है।

शिमला, ९-५-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी
('हरिजनबंधु' से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणियाँ

अहिंसा और खादी

कांग्रेसके विधानमें जड़मूलकी तबदीलियाँ होनेवाली हैं। कांग्रेसके विधानकी पहली धारासे 'सच्चे और शान्तिमय' लफ़्ज़ोंको हटाना और खादीके बारेमें विधानके नियमको रद करना झूठ और दिखावेको टालनेके लिए एक बहुत ही महत्त्वका और चाहनेलायक़ सुधार है। अनुभव यह कहता है कि ज़्यादातर कांग्रेसी सत्यके, अहिंसाके या खादीके व्रती नहीं हैं — उन्होंने इन तीनोंको जी-जानसे अपनाया नहीं है। मैं सत्य और अहिंसाका और इन दोनोंकी नुमाइन्दगी करनेवाली खादीका ज़बरदस्त प्रेमी हूँ। इस नाते मैं हिम्मतके साथ यह सुझाता हूँ कि कांग्रेसके विधानसे ये धारायें हट जानी चाहिये। कोई भी औरत या मर्द, जो चाहे, वह सत्य और अहिंसा पर अमल कर सकता है और खादी पहन सकता है। फ़र्क़ इतना ही होगा कि उस हालतमें हिन्दुस्तानकी या दुनियाकी आँखोंमें धूल नहीं झोंकी जा सकेगी। मेरी यह बात बेमेल-सी मालूम होगी, लेकिन मैंने जो सुधार सुझाया है उसे न करनेके बदले वैसा सुधार कर लेनेसे हम आजसे ज़्यादा तन्दुरुस्त, ज़्यादा अहिंसक और ज़्यादा अच्छे खादीके चाहनेवाले बनेंगे। याद रहे कि एक बार मैंने ख़ुद ही इन दोनों धाराओंको रद करनेकी तरमीम पेश की थी। उस वक़्त अपनी उस तरमीमको मंज़ूर करानेमें मैं नाकाम रहा था और उससे मुझे ख़ुशी हुई थी। इस तरह मेरा ख़ुश होना ग़लत था। अब अगर मेरी इस तजवीज़ या सुझावको नामंज़ूर किया गया तो मुझे दुःख होगा। हमारे बारेमें कोई यह न कह पाये कि हम सचाई के मुक़ाबले दिखावेको ज़्यादा अहमियत देते हैं।

हरिजन रसोइये

एक भाई अपने खतमें सुझाते हैं कि कांग्रेसके अगले जलसेके मौक़े पर सब हरिजन रसोइये ही रक्खे जायँ और इसके लिए हरिजन रसोइयोंकी एक टुकड़ी तैयार की जाय और उसको हमारे मुल्क जैसे ग़रीब मुल्कको फबनेवाली वह तालीम दी जाय जिससे वे लोग सफ़ाई रखने और शास्त्रीय ढंगसे रसोई बनानेके काममें होशियार हो जायँ। खत लिखनेवाले भाई चाहते हैं कि जिस सूबेमें कांग्रेसका जलसा होनेवाला हो उस सूबेके कांग्रेसियोंको इस चीज़से फ़ायदा उठाने और इस बारेमें अपना फ़र्ज़ अदा करनेका मौक़ा मिलना चाहिये। वे यह भी सुझाते हैं कि जलसा खतम होनेके बाद जिन कांग्रेसियोंको अपने घर रसोइया रखना पुसाये या जो रसोइये रखते हों, उन्हें अपने यहाँ इन हरिजन-रसोइयोंको रख लेना चाहिये।

छुआछूत अब बीते ज़मानेकी चीज़ बन गई है, इस बातको अमली तौर पर दरसानेवाला ऐसा कोई भी सुझाव स्वागतके लायक़ है। इस बारेमें मैं अपनी तरफ़से इतना और बढ़ाना चाहूँगा कि जिन कांग्रेसियोंको ये सुझाव मंज़ूर हों उनके लिए कांग्रेसके जलसे तक ठहरनेकी ज़रूरत नहीं। अबसे आगे उन्हें हरिजनोंको न सिर्फ़ रसोइयोंके नाते, बल्कि दूसरे सब कामोंके लिए भी अपने साथ रखना चाहिये। इससे भी बेहतर यह होगा कि जिनसे बन पड़े वे हरिजनोंको अपने घरोंमें अपने ही बच्चोंकी तरह रक्खें और उनको मुनासिब तालीम दें। लेकिन यह तभी हो सकता है, जब क्या औरत और क्या मर्द, सब सच्चे दिलसे यह मानते हों कि धर्मके नाम पर हिन्दूधर्मने अपने ही भाईबन्दोंको, उनका कोई क़सूर न होते हुए भी, अछूत बना रक्खा है।

'कॉकटेल' पार्टियाँ

पूर्ण स्वराज या मुकम्मल आज़ादी अब आया ही चाहती है। अगर हमें यूरोपवालोंके बुरे तौर-तरीक़ों और रस्म-रिवाजोंकी नक़ल ही नक़ल करनी है, तो फिर हमने आज़ादीको बेश-क़ीमती चीज़ माना तो क्या और न माना तो क्या? आज़ादी हासिल करनेके लिए हमको 'कॉकटेल' पार्टियाँ (इस तरहकी पार्टियाँ या दावतें शामको छह बजेके बाद होती हैं और उनमें खानेके साथ ख़ास शराब परोसी जाती है।) देनी पड़ें और ऐसे-ऐसे दूसरे काम करने पड़ें, तो समझिये कि हिन्दुस्तानके लिए और समूची दुनियाके लिए वह एक दुखदायी दिन होगा। भूखों मरनेवाले करोड़ों हिन्दुस्तानी इन दावतोंके बारेमें भला क्या जानते हैं? हमारे बारेमें कोई यह न कहने पाये कि जिनसे पैसे पाकर हमारे दौलतमन्द लोग मालदार बने हैं, वे जब अन्नकी कमीके कारण भूखों मर रहे थे, तभी धनवान अपने राग-रंगमें मस्त थे!

शिमला, ८-५-'४६
('हरिजन'से) मो० क० गांधी

ख़त लिखनेवालोंसे

मेरी डाक बहुत बढ़ गई है। 'हरिजन' पत्रोंको शुरू करनेके बाद क़रीब चौगुनी हो गई है। इन सब ख़तोंका जवाब देना नामुमकिन है। कोई ख़त बिना पढ़ा नहीं रहता। यह नहीं कहा जा सकता कि सब ख़त मैं ख़ुद पढ़ता हूँ। सबको पढ़ने बैठूँ तो मेरा सारा वक़्त उसीमें चला जाय और मैं कोई सेवा न कर सकूँ। मेरे मददगार उन्हें पढ़ जाते हैं और जो मुझे दिखाने लायक़ होते हैं, दिखाये जाते हैं। बहुतसे तो बेमतलब होते हैं। जिनके जवाब 'हरिजन' पत्रोंमें देने लायक़ होते हैं, उनके जवाब दिये जाते हैं, और कुछ ऐसे भी होते हैं जिनके जवाब निजी तौर पर देना मुनासिब होता है। उनको वैसे जवाब दिये जाते हैं। कुछ लोग शादीके मौक़े पर आशीर्वाद चाहते हैं। ऐसे आशीर्वाद भेजनेमें अब बहुत झिझक मालूम होती है। मैं लिख चुका हूँ कि मेरे ख़यालमें शादी करनेवाले जोड़ेमें किसी एकका हरिजन होना ज़रूरी है। जहाँ ऐसा न हो वहाँ मैं चाहूँगा कि कोई मुझसे आशीर्वाद न माँगे। असलमें आशीर्वादकी ज़रूरत ही क्या है? जो सेवाके लिए, धर्म समझकर, शादी करते हैं उनके साथ आशीर्वाद हैं ही। जो भोगके लिए शादी करते हैं उन्हें तो आशीर्वाद माँगने ही न चाहिये। और अकालके इस ज़मानेमें शादी वग़ैरामें होनेवाला ख़र्च और दावतें वग़ैरा होती हों तो वे बन्द की जानी चाहिये। शादियाँ तो होती ही रहती हैं। क्यों न वे बिना किसीको ख़बर दिये कर ली जायँ?

शिमला, ६-५-'४६
('हरिजनबंधु'से) मो० क० गांधी

हिन्दुस्तानी प्रचारक मदरसा, वर्धा

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धाने तय किया है कि राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीके प्रचारको तेज़ीसे बढ़ानेके लिए एक 'हिन्दुस्तानी प्रचारक मदरसा' शुरू किया जाय। यह मदरसा १ जुलाई, १९४६को वर्धामें खुल जायगा। इसमें हिन्दुस्तानके सभी प्रान्तोंसे क़रीब २५ चुने हुए उम्मीदवार भर्ती किये जायँगे। मदरसेमें ऐसे ही विद्यार्थी शामिल हो सकेंगे जिन्हें हिन्दी या उर्दू दोनोंमेंसे किसी एक भाषाकी अच्छी योग्यता और दूसरी ज़बानका साधारण ज्ञान हो। मदरसेका अभ्यासक्रम १० महीनेका रहेगा। मदरसेमें भर्ती किये गये १५ विद्यार्थियोंको, योग्यताके मुताबिक़, २५) मासिककी छात्रवृत्ति (वज़ीफ़ा) दी जायगी।

मदरसेकी नियमावली, पाठ्यक्रम वग़ैरा हिन्दुस्तानी प्रचार सभाके कार्यालयसे मिल सकते हैं। सभी अर्ज़ियाँ ता० १० जून, १९४६ तक सभाके दफ़्तरमें पहुँच जानी चाहिये।

बहनोंके लिए हिन्दुस्तानीका शिक्षण देनेकी व्यवस्था महिलाश्रम, वर्धामें की गई है। जो बहनें हिन्दुस्तानी प्रचारिकाएँ बनना चाहें वे मंत्री, महिलाश्रम, वर्धासे नियमावली वग़ैरा मँगवा सकती हैं।

श्रीमन्नारायण अग्रवाल
मंत्री,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बम्बईमें खादीकी तालीम

भाई विट्ठलदास जेराजाणी उन लोगोंमें हैं, जो किसी चीज़को समझ लेने पर उसके मुताबिक़ काम करनेमें जुट जाते हैं। सन् १९१५में २० साल तक हिन्दुस्तानसे बाहर दक्षिण अफ्रीकामें रहनेके बाद जब मैं वापस आया उस वक़्त वे स्वदेशीकी एक बड़ी दुकान ज़ोरशोरसे चला रहे थे। बेपारके ख़यालसे उसमें एक तरहकी कामयाबी थी। फिर भी जब मैंने उन्हें समझाया कि उनकी वह स्वदेशी नामकी स्वदेशी है, उसमें मनको फुसलानेके सिवा और कुछ नहीं होता, तब उन्हें मेरी बात जँची थी। लेकिन यह साफ़ नहीं था कि करना क्या चाहिये। मैं भी वही चीज़ सुझानेके सिवा तुरत तो और कुछ कर नहीं सका। लेकिन ऐसी कोई चीज़ किये बिना मेरे मनको चैन नहीं पड़ सकता था। इसलिए मैं जिस चीज़को मानता था उस पर मैंने अमल करना शुरू किया और आख़िर खादीके कामका ही बीड़ा उठा लिया, और भाई विट्ठलदासने भी खादीका बेपार शुरू किया। उन दिनों तो जो खादी बनती थी वह बम्बईमें ही बिकती थी। जिस जगह बनती थी वहाँ उसके पहननेवाले अँगुलियों पर गिने-जाने जितने ही थे। इसके आगेका इतिहास (तवारीख़) दिलचस्प होते हुए भी उसे यहाँ छोड़े देता हूँ। अब जब कि खादीको बेपारकी एक चीज़ माननेका दोष ख़यालमें आ गया है, भाई विट्ठलदासने एक और क़दम आगे बढ़ाया है। उसका ब्योरा उन्हींके शब्दोंमें ५ मईके उनके ख़तसे लेकर नीचे देता हूँ:

"बम्बईके खादी-भण्डारकी चार शाखायें अलग-अलग मोहल्लोंमें बिक्रीके ख़यालसे शुरू की गई थीं। उनमेंसे दो शाखाओंमें खादीकी बिक्री क़तई बन्द कर दी गई है और अब वहाँ लोगोंको कातना सिखानेका इन्तज़ाम किया गया है। यह ख़बर मैं अपने पहले ख़तमें दे चुका हूँ। इस इन्तज़ामको आज एक महीना पूरा हुआ है। इस बीच ट्रेनिंग देनेवाली दुकानोंमें जो तजरबा हुआ है उसका ब्योरा आपकी जानकारीके लिए इस ख़तमें दे रहा हूँ। दोनों जगहोंमें जहाँ पहले तरह-तरहकी खादी सजाई जाती थी, वहाँ अब वैसी खादीके दरसन नहीं होते। उसकी जगह खादी पैदा करनेका सरंजाम सजा दिया गया है। बिक्रीकी दुकानोंमें रास्ते पर पड़नेवाले काँचके केसोंमें राह चलते लोगोंको तरह-तरहकी खादी दिखानेके लिए ख़ूबसूरतीके साथ खादीके कपड़ोंकी जो सजावट की जाती थी, वहाँ भी अब कपाससे लेकर सूत तककी सब क्रियाओंकी और सरंजामोंकी सजावट की गई है, जिससे लोग उन चीज़ोंके बारेमें ज़रूरी बातें जान सकें। खादीके बदले इन केसोंमें इस नई सजावटको देखकर लोग उसे पास आकर देखने लगते हैं और उनमेंसे कुछ ज़्यादा जानकारी हासिल करनेके लिए दुकानके अन्दर आते हैं।

"इन दुकानोंमें बाक़ायदा कातनेकी तालीम देनेका इन्तज़ाम किया जा चुका है। अब तकका उसका नतीजा नीचे आँकड़ोंकी शकलमें दे रहा हूँ।

"तालीम लेनेके लिए आये हुए भाई-बहनोंकी तादाद:

गिरगाँव खादी-दुकान	१६६
माटुंगा भण्डार	४३
कुल	२०९

"ता० २८-४-'४६ को तालीमकी क्लासोंमें नीचे लिखे मुताबिक़ हाज़िरी रही थी:

	हाज़िर	कताई	पिंजाई	तुनाई
गिरगाँव	५८	४६	१२	५
माटुंगा	२५	१८	६	१
कुल	८३	६४	१८	६

"आजकल मदरसोंमें सब जगह छुट्टियाँ होनेसे विद्यार्थियोंको फ़ुरसत है। इसलिए ऊपर दी हुई संख्यामें विद्यार्थी भी शामिल हैं। लेकिन जब जूनके दूसरे हफ़्तेमें स्कूल खुल जायँगे, तो मुमकिन है कि उसका इस हाज़िरी पर काफ़ी असर पड़े, यानी आनेवालोंकी तादाद काफ़ी कम हो जाय। श्री काकूभाईने इस कामका ज़िम्मा लिया है और वे अपना सारा वक़्त इसीमें लगाते हैं।

बुनाई:

"आज बम्बई शहरमें कोई भी काम करना हो तो यह सवाल बड़ी परेशानी पैदा करता है कि वह कहाँ किया जाय? मकानोंकी इस तंगीकी वजहसे शुरूमें बम्बईके पास अन्धेरीमें जो जगह मिली थी उसमें खड्डेवाले करघे लगाये गये थे। उसके बाद बुनाईके कामको ज़्यादा फैलानेकी बात सोची गई। इसके लिए कालबादेवी भण्डारमें बिक्रीके लिए जो लम्बी-चौड़ी जगह है, उसमेंसे आधी जगह बिक्रीके लिए रखकर बाक़ीकी आधीमें करघे लगाये हैं और ये सब ढरकीवाले करघे हैं। संजोगसे बुनाई-कामके एक अच्छे जानकार भाईकी मदद मिल सकी है, और वे सारे कामको पूरा पक्का करनेमें जुटे हैं। कई मुश्किलों पर ग़ौर करते-करते अब उनका हल मिलने लगा है। इस तरह कहाँ पहुँचेंगे सो तो अभी देखनेकी बात है।

बिक्री:

"आजकल कपड़ेकी जो तंगी महसूस की जा रही है उसकी वजहसे कपड़ेकी ज़रूरतवाले लोग जब अपनी ज़रूरतके लायक़ कपड़ा कहींसे हासिल नहीं कर पाते, तो वे खादी हासिल करनेकी कोशिश करते हैं।

"जब लड़ाई छिड़ी और मिलके कपड़ेकी क़ीमतें बढ़ गईं, तो खादीका कपड़ा मिलोंके मुक़ाबले सस्ता माना गया। इसलिए उन दिनों खद्दरकी माँग इतनी बढ़ गई कि पूरी नहीं की जा सकी। आज ज़रूरतके मुताबिक़ कोई कपड़ा नहीं मिलता। यही नहीं, बल्कि जिनको ज़्यादा कपड़ेकी ज़रूरत होती है उनको चोर-बाज़ारोंसे कई गुना ज़्यादा दाम देकर कपड़ा ख़रीदना पड़ता है। यह महँगाई इतनी ज़्यादा है कि आज फिरसे खद्दर-भण्डार सस्ते कपड़ेकी दुकान समझे जाने लगे हैं। इसलिए अगर हमने सूतका चलन शुरू न किया होता तो हम लोगोंकी माँगको किसी भी तरह पूरा न कर पाते। यही नहीं, बल्कि कुछ ऐसी अन्धाधुन्धी मचती कि न सिर्फ़ खद्दर-भण्डार चलाना मुश्किल हो जाता, बल्कि चोरबाज़ारके बेपारी खद्दरको भी काले-बाज़ारकी चीज़ बना देते — आज इसका अँदेशा मालूम होता है।

"सन् १९३०में और उसके बाद जब-जब राजनीतिक जागृति आई है, तब-तब खादीकी माँग बढ़ी है, लेकिन इस बार तो कपड़ेकी तंगीकी वजहसे यह माँग बढ़ती ही जा रही है। ऐसी हालतमें आज वह वक़्त आ गया है जब खादीके सच्चे प्रेमियोंको, जो अब तक कातनेके मामलेमें उदासीन थे, अब काते बिना गति नहीं। इसलिए अन्दाज़ यह है कि हमने बम्बईमें कताईकी तालीमका जो इन्तज़ाम किया है उसके लिए कई तरहसे यह वक़्त अनुकूल है।"

वैसे देखा जाय तो कहा जा सकता है कि इन आँकड़ोंमें कुछ दम नहीं। कहनेवालोंको यह कहनेका हक़ है कि दुनिया पागलोंसे भरी है और उसका एक नमूना बम्बईमें मौजूद है। श्रद्धावाले लोग कहेंगे कि दुनिया ऐसे पागलोंसे ही चलती है। एक तरहके पागल वे हैं, जो आसमानके तारे तोड़ने को झपटते हैं। वे बोझरूप हैं। दूसरी तरहके पागल या दीवाने वे हैं, जो सचाईका पता लगानेकी जीतोड़ कोशिश करते हैं। उन्हें दूसरी कोई बात सूझती ही नहीं। मैं भाई विट्ठलदासको ऐसे ही पागलोंमें शुमार करता हूँ। बम्बई-जैसे मौज-शौक़वाले शहरमें खद्दरकी ताक़तको समझनेवाले लोग मिल जाते हैं, इसे मैं कम सन्तोषकी बात नहीं मानता। जब खादी गाँव-गाँव और घर-घर बनेगी और जहाँ बनेगी वहीं पहनी जायगी, तभी कहा जायगा कि उसकी ताक़तका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा-पूरा विकास हुआ है । अगर इस हालतको लानेमें बम्बईका हिस्सा सबसे ज़्यादा रहे तो यह कौन नहीं चाहेगा कि जो बम्बई पैसे देनेमें अव्वल रहती है वह इस मुश्किल काममें भी अव्वल रहे? भाई विट्ठलदास और उनके साथी यह साबित करनेकी कोशिशमें लगे हैं कि ऐसा हो सकता है। आज तो यह सब सपना-सा है। ऐसे सपनोंको सही साबित करते-करते मौत आ पहुँचे, तो वह स्वागतके लायक़ ही मानी जायगी। शर्त यही है कि जल्दी करनेकी कोशिशमें कहीं कोई ग़लती न होनी चाहिये । और ग़लती मालूम होते ही उसे दुरुस्त कर लेनेसे सब अच्छा ही होता है ।

('हरिजनबंधु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

रोमन लिपि और सांस्कृतिक .गुलामी

आज़ाद हिन्द फ़ौजके लोगोंकी मददके लिए बनाई गई सेण्ट्रल कमेटीने आज़ाद हिन्द फ़ौजके लिए रोमन लिपिमें एक 'न्यूज़ बुलेटिन' निकालनेकी तजवीज़ पेश की है। आज़ाद हिन्द सरकारके श्री अय्यर इसकी चर्चा करनेके लिए एक दिन गांधीजीके पास आये। उन्होंने कहा: "कमेटीको रोमन लिपिका कोई ख़ास मोह नहीं है । सिर्फ़ अपना काम चलानेके एक उपायके रूपमें उसने रोमनका इस्तेमाल करना तय किया है । अगर बुलेटिन रोमन लिपिमें न छपायें, तो नागरी, उर्दू और तामिल तीन अलग-अलग लिपियोंमें उसे छपाना पड़ जाय और ख़र्चका कोई पार न रहे ।" इसके सिवा, उन्होंने यह भी कहा कि "यह कोई नई बात नहीं है। जो तरीक़ा चला आ रहा है, हम उसीका अनुसरण करते हैं। आज़ाद हिन्द फ़ौजवाले जब हिन्दुस्तानकी फ़ौजोंमें थे, तभीसे वे रोमन लिपिके आदी बन चुके थे । इसलिए जब उन्होंने दक्षिण-पूरबी एशियामें अपना काम शुरू किया, तब भी वे उसी चीज़को अपनाये रहे थे ।" गांधीजीने उनको जवाब दिया: "आज आप दक्षिण-पूरबी एशियाके मुल्कोंमें नहीं, बल्कि यहाँ हिन्दुस्तानमें अपना काम कर रहे हैं, इस चीज़को न भूलिये । मैं आपसे एक सवाल पूछता हूँ: "ये लोग अपने घरवालोंको — औरतों और बच्चोंको — तो ख़त लिखते ही होंगे। क्या वे सब ख़त रोमन लिपिमें लिखे जाते हैं?"

श्री अय्यरने जवाब दिया: "वाह! यह कैसे हो सकता है? ख़त तो सभी कोई नागरी या उर्दू या तामिल या हिन्दुस्तानकी दूसरी किसी लिखावटमें ही लिखते हैं ।"

इस पर गांधीजीने कहा: "इसका मतलब यह हुआ कि सबको हिन्दुस्तानकी एक-न-एक लिपि आती है । हमारे पास हमारी अपनी कोई लिपि न हो, और इस वजहसे काम चलानेके लिए हम-आप रोमन लिपिका इस्तेमाल करनेको तैयार हो जायँ, तब तो बात समझमें आ सकती है । लेकिन हिन्दुस्तानीकी उर्दू और नागरी दो जानी-मानी लिखावटोंके मौजूद होते हुए भी आप हिन्दुस्तानीके लिए रोमन लिपिका इस्तेमाल करनेको तैयार हुए, इससे पता चलता है कि अंग्रेज़ोंने हमारे दिल और दिमाग़ पर किस हद तक क़ाबू जमा लिया है। अंग्रेज़ोंने आपको जीता और उनको जीतनेके लिए आपने उन्हींकी पोशाक पहनी, यानी दक्षिण-पूरबी एशियामें अपनी पत्रिका आपने रोमन लिपिमें निकाली । अपनी तहज़ीबी यानी सांस्कृतिक .गुलामीकी इस निशानीको मिटाकर आपको अपनी पत्रिका रोमनके बदले हिन्दुस्तानकी लिपियोंमें निकालनेका आग्रह रखना चाहिये था । ब्रिटिशोंको हम पर हुकूमत करनी थी । इसके लिए यह ज़रूरी था कि ब्रिटिश हाकिम और सिपाही हिन्दुस्तानी सीखें । दूसरा कोई चारा न था। इसलिए ख़ासकर उनकी सहूलियतके ख़ातिर हिन्दुस्तानीके लिए रोमन लिपिका उपयोग शुरू किया गया था । इस तरह एक तरफ़ उन्होंने ख़ुद उर्दू लिपिके तरह-तरहके जुड़वाँ अक्षरोंकी दिक़्क़तोंसे छुटकारा पाया और दूसरी तरफ़ हमको अपने उन टाइप राइटरों, तार भेजनेकी मशीनों और छापेकी कलोंका शौक़ लगाया, जिनमें सिर्फ़ एक रोमन लिपि ही बरती जाती है । और हम इसके शिकार बन गये। आज जब कि हम हिन्दुस्तानको सदियों पुरानी .गुलामीको जड़मूलसे मिटानेके लिए छटपटा रहे हैं, हमें अपनी तहज़ीबी .गुलामीकी इस निशानीके रास्ते फिर लौटना न चाहिये । आप ब्रिटिश फ़ौजोंमें इस ख़यालसे नौकरी करते थे कि वहाँ आपको तरह-तरहके तमग़े और बिल्ले मिलेंगे, अच्छी-सी तनख़्वाहें मिलेंगी, बड़ी-बड़ी पेन्शनें मिलेंगी और ज़मीनें और जागीरें मिलेंगी। लेकिन आज आपको इन लालचोंकी ज़रूरत नहीं रही। आज तो आप सिर्फ़ इस ख़यालसे नौकरी करने निकले हैं कि आपको अपने देशकी आज़ादी हासिल करनी है और उसकी इज़्ज़त-आबरू बढ़ानी है। आप किसी आसान रास्तेकी खोजमें भी नहीं निकले हैं ।

"हिन्दुस्तान जल्दी ही आज़ाद होनेवाला है । यह न समझिये कि आज़ादी मिलनेके बाद फ़ौरन ही हिन्दुस्तानके लिए कोई लिपि या लिखावट तैयार हो जायगी । जब आप और मैं ईमानदारीसे और लगनसे दोनों लिखावटोंको सीखेंगे तभी उनमेंसे एक नई और सबके कामकी लिखावट पैदा होगी । उससे पहले किसी हालतमें नहीं । मुकम्मल आज़ादीकी यह कम-से-कम क़ीमत है, जो हमें चुकानी होगी ।"

अपनी दलीलको ज़ोर देनेके लिए गांधीजीने दक्षिण अफ़्रीकाकी मिसाल दी । वहाँ वाले अपना सब काम-काज दो ज़बानोंमें चलाते हैं । सरकारी गज़ट दो भाषाओंमें निकलता है । इसी तरह मदरसोंमें पढ़ाई जानेवाली पढ़ाईकी किताबें भी दोनों ज़बानोंमें छपती हैं। "और इस सबके बावजूद उनका राज दक्षिण अफ़्रीकाके टुकड़ोंके नामसे नहीं, बल्कि 'यूनियन'के नामसे मशहूर है । अपने इस यूनियनकी एकताको बनाये रखनेके लिए उन्होंने हरएक सूबेकी एक-एकके हिसाबसे अपने यहाँ चार-चार राजधानियाँ रखी हैं। आज़ाद लोगोंका और आज़ादी-पसन्द लोगोंका यही रास्ता है ।"

श्री अय्यरने गांधीजीकी दलीलोंको मंज़ूर करते हुए कहा: "हम अपनी पत्रिका नागरी और उर्दू दोनों लिखावटोंमें निकालेंगे, रोमनमें नहीं।"

नई दिल्ली, २०-४-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

सवाल – जवाब

स०— कांग्रेसके विधानमें 'हाथ-कती, हाथ-बुनी' खादी चुनावमें खड़े होनेवालोंके लिए आदतन् पहनना ज़रूरी रक्खा गया है। क्या इसके यह मानी नहीं हैं कि वह खादी अखिल भारत-चरखा-संघसे प्रमाणित होनी चाहिये?

ज०— मेरी दृष्टिमें तो चरखा-संघसे प्रमाणित खादी ही खादी हो सकती है ।

स०— क्या अप्रमाणित खादीका व्यापार करनेवाला कांग्रेस-कमेटीके ओहदेदारोंके चुनावमें खड़ा हो सकता है?

ज०— मेरी समझमें आ ही नहीं पाता कि अप्रमाणित खादीका व्यापार करनेवाला कोई कांग्रेसमैन कैसे हो सकता है या ओहदेदारोंके चुनावमें कैसे आ सकता है?

स०— आप कहते हैं कि अप्रमाणित खादीका व्यापार करनेवाला कांग्रेसी कैसे हो सकता है? ओहदेदार बननेकी तो बात ही क्या! लेकिन जो लोग मिलोंके कपड़ेका व्यापार करते हैं और विदेशी कपड़ा भी बेचते हैं, पर खादी पहन लेते हैं, वे कांग्रेसके ओहदेदार बने हुए हैं, उनका क्या?

ज०— मैं तो ऐसे लोगोंके लिए भी यही कहूँगा । ऐसे ही कारणोंसे मैंने इस हफ़्तेके 'हरिजन'में सलाह दी है कि कांग्रेसके विधानसे खादीकी धारा ही हटा दी जाय, क्योंकि अनुभव हमें सिखाता है कि हम इस शर्तका पालन करनेमें असमर्थ हैं ।

शिमला, ८-५-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिमलाकी डायरी

पिछले हफ़्ते मैंने शिमलासे अपने दिल्ली वापस आ जानेकी जो वजहें बताई थीं उनके कारण इस बार शिमलाकी कोई साप्ताहिक चिट्ठी नहीं दी जा रही है। इसके लिए मैं 'हरिजन-सेवक'के पढ़नेवालोंसे माफ़ी चाहता हूँ। राजकुमारी अमृतकुँवरने प्रार्थनाके वक़्त दिये गये गांधीजीके प्रवचनों (ख़ुतबों)के जो नोटस् लिए थे उनसे नीचेका मज़मून तैयार किया गया है, और इसमें सारे हफ़्तेकी बातें क़रीब-क़रीब आ जाती हैं।

अपने हमेशाके साथी-संगियोंको शिमलासे वापस दिल्ली भेजनेके बारेमें गांधीजीने अख़बारोंको जो बयान दिया था उससे लोगोंको संतोष नहीं हुआ। वह एक ऐसी अनोखी बात थी कि लोग उसे सच माननेको तैयार न थे। उस बयानके बावजूद वे 'सच्ची' वजह जानना चाहते थे। इसलिए हमारी रवानगीके बाद गांधीजीने प्रार्थनाके बाद जो पहला प्रवचन दिया उसमें सहज ही उन्होंने अपने इस अहम फ़ैसलेका ज़िक्र किया। उन्होंने प्रार्थनामें आये हुए लोगोंको बताया कि किस तरह कुछ ही वक़्त पहले उनके साथी दिल्लीके लिए रवाना हो गये हैं। रवाना होते समय उनके चेहरों पर .ख़ुशी छाई थी और उनको गांधीजीके आशीर्वाद मिल चुके थे। उन्होंने कहा: "मेरा काम बहुत ही मुश्किल है; लेकिन भगवान् पर भरोसा रखनेसे तमाम मुश्किलें आसान बनाई जा सकती हैं। जबसे मैं समझदार या सयाना हुआ हूँ तभीसे मैंने हमेशा यह महसूस किया है कि जो भगवान्की उपासना करते हैं, भगवान् हमेशा उनके साथ रहता है। असलमें तो वह सब कहीं है। लेकिन चूँकि वह निराकार है और आँखोंसे दिखाई नहीं पड़ता, इसलिए आदमी हमेशा उसकी मौजूदगीको महसूस नहीं कर पाता। लेकिन अगर आपके पास भगवान्को बातोंको सुननेवाले कान हैं, तो भगवान् आपसे आप ही की ज़बानमें बात करेगा, फिर चाहे वह ज़बान कोई भी क्यों न हो। खान साहबने अभी-अभी आपको बताया है कि प्रार्थना क्या चीज़ है। ईश्वर सर्वशक्तिमान् है। आदमी उसकी इच्छा पर जीता है। चूँकि मैं इस नाज़ुक घड़ीमें अकेले ईश्वरकी ही मदद पर रहना चाहता हूँ, इसलिए अपने उन साथियोंसे, जो मेरी रोज़मर्राकी ज़रूरतोंका खयाल रखते थे और 'हरिजन'-पत्रोंको एडिट करनेमें मेरी मदद करते थे, मैंने कह दिया कि वे मुझको भगवान्के भरोसे छोड़ जायँ। इसका यह मतलब नहीं कि मुझको यहाँ किसीकी मदद मिलेगी ही नहीं। फ़क़ीर खानसाहब तो साथ हैं ही, सरदार पटेल हैं और उनकी लड़की श्री मणिबेन हैं जो कि मेरी अपनी ही लड़की हैं। इनके अलावा डॉ० दिनशा मेहता और श्री व्रजकृष्ण हैं। बिड़लाजीने भी अपने कुछ लोगोंको छोड़ दिया है।"

एक मुश्किल काम

शिमलामें चल रहे कामका ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा कि तीन दलोंमेंसे हरएक दलके लिए यहाँका काम मुश्किल है। लेकिन ब्रिटिश कैबिनेट मिशनके लिए वह सबसे ज़्यादा मुश्किल है। उन्होंने हिन्दुस्तानसे अपनी हुकूमतको हटा लेनेका अहद लिया है — प्रतिज्ञाकी है। गांधीजीने आगे कहा: "मैं उनकी बात पर भरोसा करता हूँ। मैं आप सबको भी सलाह दूँगा कि आप उन पर भरोसा करें। शक करना हमारी शानके ख़िलाफ़ है। जो धोखा देता है, वही असलमें ख़ुद धोखा खाता है। मैं आपसे कहूँगा कि आप यह न मानें कि अंग्रेज़ोंका ज़ोर कम हो रहा है। उनकी अपनी एक बड़ी ताक़त है। हमारे लिए यह शर्मकी बात थी कि मुट्ठीभर अंग्रेज़ इतने लम्बे अरसे तक हम पर हुकूमत करते रहे। और इससे भी ज़्यादा शर्मकी बात हमारे लिए थी कि उन्होंने हम पर हुकूमत की। लेकिन अगर सब बहादुर बन जायँ और भगवान् पर भरोसा रक्खें तो आगेके लिए किसीको किसी तरहका डर रखनेकी ज़रूरत न रह जाय।

मौनका शास्त्र

अगले दिन भी गांधीजीने इसी सिलसिलेमें कुछ कहा होता, लेकिन चूँकि वह उनका मौन दिन था, इसलिए उस दिन उन्हें एक छोटा सन्देश (पैग़ाम) लिखकर ही सन्तोष करना पड़ा। इस सन्देशमें उन्होंने बड़े-बड़े मजमोंमें शांति रखनेके शास्त्रको समझाया था। आमतौर पर लोगोंको ख़ामोश करनेके लिए एक-दूसरेसे चिल्लाकर ख़ामोश रहनेको कहनेका जो तरीक़ा पाया जाता है वह अपने-आपमें ग़लत चीज़ है और उससे ख़ामोशी रखनेका सारा मतलब ही ख़त्म हो जाता है। ज़ोरसे शोर मचाकर शोर मिटाया नहीं जा सकता। वह तो तभी मिट सकता है कि जब लोग एक-दूसरेको चुपचाप इशारों से समझायें और हर हालतमें धक्का-मुक्कीसे बाज़ आयें। यों तो सब तरहकी सभाओंके लिए शांति और व्यवस्थाकी (ख़ामोशी और तरतीबकी) ज़रूरत रहती है, लेकिन प्रार्थना-सभाओंमें तो वे ख़ास तौर पर ज़रूरी हैं। लोग प्रार्थनामें शान्ति पानेके ख़यालसे और भगवान्का नाम सुनने और रटनेके इरादेसे आते हैं। इसलिए प्रार्थनामें शामिल होनेवालोंको घरसे चलते वक़्त ही अपने मनकी लय प्रार्थनाकी लयमें मिला देनी चाहिये। वे चुपचाप आयें और चलते-चलते भी अपने मनको प्रार्थनाके ही विचारोंमें लगायें रहें। अगर यह सब नहीं होता है, तो प्रार्थनामें आना बेकार है।

अजीब अफ़वाहें

७ मईको प्रार्थनाके बादके अपने प्रवचनमें गांधीजीने दो दिन पहलेकी बातका हवाला देते हुए कहा: "मेरे साथियोंके चले जानेके बारेमें मेरे पास अजीब-अजीब अफ़वाहें आई हैं। कुछ लोग तो इतने ख़ाम-ख़याल बन गये हैं कि उनके ख़यालमें मेरे साथियोंके जानेकी वजह हमारा आपसका कोई झगड़ा है। लेकिन मैं आपसे कह दूँ कि मेरे साथ रहनेवाले लोग ऐसी कच्ची मिट्टीके नहीं बने हैं। कुछ दूसरे ऐसे भी हैं जिन्होंने यह अटकल लगाई है कि चूँकि मेरे साथी चले गये हैं इसलिए यहाँकी बातचीत ख़तम हो चुकी है। यह भी बिलकुल ही ग़लत बात है। जैसा कि मैं आपसे परसों कह चुका हूँ, मेरे साथी यह समझकर यहाँसे गये हैं कि मैं अकेले ईश्वरको ही अपना साथी बना कर यहाँ रहना चाहता हूँ। तिस पर भी मेरे लिए मददगारोंकी कोई कमी नहीं। मेरी तमाम ज़िन्दगीमें ऐसा ही होता आया है। दक्षिण अफ़्रीकामें भी हर तरहके लोगोंने, बोअरों, अफ़्रीकनों और युरोपियनों तक ने, मेरी मदद की है।"

अटकलोंकी आँधी

७ मईके अपने भाषणमें गांधीजीने उन दिनों शिमलामें उठी हुई अटकलोंकी आँधीकी ख़ूब ख़बर ली। उन्होंने कहा: "मैं इसे डरपोक-पनकी एक निशानी समझता हूँ। सच मानिये कि यह चीज़ डरसे ही पैदा होती है। मैं ख़ुद नहीं जानता कि डर क्या चीज़ है? डरपोक लोग ही अपनी मौतसे पहले कई बार मर चुकते हैं। बीमारीके डरसे जितने आदमी मरते हैं उतने ख़ुद बीमारीसे नहीं मरते। मैं अख़बारवालोंसे दरख़ास्त करूँगा कि आप लोग ग़लत ख़बरें न फैलायें। आप लोगोंका फ़र्ज़ है कि आप आम रिआयाको बहादुर बनना सिखायें। उनमें डर पैदा करना आपका काम नहीं। कैबिनेट मिशन यहाँ ब्रिटेनके प्रधान मंत्रीके आशीर्वाद लेकर आया है। प्रधान मंत्री यह कह चुके हैं कि उनके नुमाइन्दे हिन्दुस्तानसे अपनी हुकूमत हटा लेनेके लिए यहाँ आ रहे हैं; फिर चाहे हिन्दुस्तानवाले आपसमें समझौता कर पायें या न कर पायें। जब तक कोई ख़ास वजह न हो, तब तक किसी पर शक करना या भरोसा न रखना ठीक नहीं। जिन लोगोंने २५ साल तक एक बड़ी सल्तनतके ख़िलाफ़ अहिंसक लड़ाई लड़नेकी हिम्मत दिखाई है, क्या वे महज़ इस बातसे नाउम्मीद हो जायँगे कि अंग्रेज़ सरकार अपना फ़र्ज़ अदा करनेमें नाकाम रही है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदेवकी जयन्ती (सालगिरह)

८ मईको गुरुदेवका जनमदिन था । उस दिन मंच पर गुरुदेवकी एक तसवीर रक्खी गई थी । तसवीरके नीचे यह मंत्र लिखा था : 'कभी न बुझनेवाली ज्योत !' गांधीजीने प्रार्थनामें आये हुए लोगोंका ध्यान गुरुदेवकी इस तसवीरकी ओर खींचते हुए कहा : "गुरुदेवकी देह खाकमें मिल चुकी है, लेकिन उनके अन्दर जो जोत थी, जो उजेला था, वह तो सूरजकी तरह था, जो तबतक बना रहेगा जबतक धरती पर जानदार रहेंगे । गुरुदेवने जो रोशनी फैलाई वह आत्माके लिए थी । सूरजकी रोशनी जैसे हमारे शरीर (जिस्म)को फ़ायदा पहुँचाती है, वैसे गुरुदेवकी फैलाई रोशनीने हमारी आत्माको ऊपर उठाया है । वे एक कवि थे और अव्वल दरजेके साहित्यिक थे । उन्होंने अपनी मातृभाषामें — मादरीज़बानमें — लिखा, और सारा बंगाल उनकी कविताके झरनेसे काव्यरसका गहरा पान कर सका । उनकी रचनाओंके अनुवाद बहुत-सी भाषाओंमें हो चुके हैं । वे अंग्रेज़ीके भी बहुत बड़े लेखक थे । और शायद बिना अंग्रेज़ी जाने ही वे उस ज़बानके इतने बड़े लेखक बन गये थे । मदरसेकी पढ़ाई तो उन्होंने की थी, लेकिन युनिवर्सिटीकी कोई डिग्री उन्होंने नहीं ली थी । वे तो बस गुरुदेव ही थे । हमारे एक वाइसरायने उनको एशियाका कवि कहा था । उससे पहले किसीको ऐसी पदवी नहीं मिली थी । वे समूची दुनियाके भी कवि थे । यही क्यों, वे तो ऋषि थे । हमारे लिए वे अपनी गीतांजली छोड़ गये हैं, जिसने उनको सारी दुनियामें मशहूर कर दिया । तुलसीदासजी हमारे लिए अपनी अमर रामायण छोड़ गये हैं । वेदव्यासजीने महाभारतकी शकलमें हमारे लिए मानवजातिका इतिहास छोड़ा है । ये सब निरे कवि नहीं थे । ये तो गुरु थे । गुरुदेवने भी सिर्फ़ कविके नाते ही नहीं, ऋषिकी हैसियतसे भी लिखा है । लेकिन सिर्फ़ लिखना ही उनकी अकेली खासियत नहीं थी । वे एक कलाकार थे, नृत्यकार थे और गायक थे । बढ़िया-से-बढ़िया कलामें जो मिठास और पवित्रता होनी चाहिये, वह सब उनमें और उनकी चीज़ोंमें थी । नई-नई चीज़ें पैदा करनेकी उनकी ताक़तने हमको शान्तिनिकेतन, श्रीनिकेतन और विश्वभारती-जैसी संस्थायें दी हैं । अपनी इन संस्थाओंमें वे भावरूपसे विराजमान हैं, और ये अकेले बंगालको ही नहीं, बल्कि समूचे हिन्दुस्तानको उनकी विरासतके रूपमें मिली हैं । शान्तिनिकेतन तो हम सबके लिए असलमें यात्राका एक धाम ही बन गया है । गुरुदेव अपने जीते जी इन संस्थाओंको वह रूप नहीं दे पाये जो वे देना चाहते थे — जिसका वे सपना देखते थे । कौन है, जो ऐसा कर पाया हो ? आदमीके मनोरथको पूरा करना तो भगवान्‌के हाथमें है । फिर भी ये संस्थायें हमें उनकी कोशिशोंकी याद दिलायेंगी और हमेशा हमको यह बताती रहेंगी कि गुरुदेवके मनमें अपने देशके लिए कितनी गहरी प्रीत थी और उन्होंने उसकी कितनी-कितनी सेवायें की हैं । उनके रचे क़ौमी गीतको आप अभी-अभी सुन चुके हैं । हमारे देशके जीवनमें इस गीतकी अपनी एक जगह बन गई है । हज़ारों-लाखों लोग एक साथ इसकी प्रेरणा पहुँचानेवाली कड़ियोंको अक्सर ही गाते रहते हैं । यह सिर्फ़ गीत ही नहीं है, बल्कि भक्तिभावसे भरा भजन भी है !"

आखिरमें गांधीजीने लोगोंसे कहा कि गुरुदेव हमारे लिए अपनी जो महान् मिसाल छोड़ गये हैं, उसको सामने रखकर हम अपने देशसे मुहब्बत करनेका सबक़ सीखें, समूची दुनियासे मुहब्बत करें और निस्वार्थ भावसे सबकी सेवा करना सीखें ।

स्पिरिटकी बातें

इसके बादके अपने अगले दो प्रवचनोंमें गांधीजीने बताया कि आदमीको ज़िन्दगीमें किस स्पिरिटसे काम करना चाहिये । पहले प्रवचनमें उन्होंने कहा : "प्रार्थनाकी स्पिरिट, जज़्बा या भावना आपके अन्दर चौबीसों घण्टे मौजूद रहनी चाहिये, बशर्ते कि प्रार्थना दिलसे निकलती हो और महज़ ज़बानी या ओठोंसे निकलनेवाली न हो । आपके दिलोंमें प्रार्थनाकी सच्ची शान्ति तो तभी आ सकेगी कि जब आप उसमें भगवान्‌को भी अपने साथ रक्खेंगे । उस हालतमें आप अन्दर-बाहर एक-से रह सकेंगे। आपमें सचाई और ईमानदारी आ जायगी । आप किसीके लिए अपने मनमें कोई दुश्मनी न रक्खेंगे । आप सचाईको प्यार करेंगे और अगर आप सौदागर या बेपारी हैं, तो किसीको ठगनेसे परहेज़ करेंगे ।"

गांधीजीने आगे कहा : "मैं चाहूँगा कि आप यहाँ इन प्रार्थना-सभाओंमें ज़्यादा-से-ज़्यादा तादादमें आयें; मगर शर्त यही है कि सही स्पिरिट लेकर आयें । जो कुछ यहाँ होता है, उसे ध्यानसे सुनने और गुननेका खयाल लेकर आयें, ताकि यहाँकी पूजासे जो कुछ भी अच्छा आप ले जा सकें उसके मुताबिक़ आप अपने जीवनको बनायें । दिलसे रामनाम निकलनेमें वक़्त लग सकता है । बीजको धरतीमें बोनेके बाद उसकी पूरी सार-सँभाल करनी पड़ती है, तभी मौसिम पाकर वह फल देता है । अगर भगवान्‌को हमेशा अपने साथ रखनेकी ख्वाहिश दिलमें है, तो तरक़्क़ीकी चाल कितनी ही धीमी क्यों न हो, वह होकर ही रहेगी । आदमीको रातोंरात बुरेसे भला नहीं बनाया जा सकता । भगवान् कभी जादूसे काम नहीं लेता । वह भी क़ानूनसे बँधा हुआ है । मगर उसका क़ानून सरकारके क़ानूनसे जुदा है । सरकारी क़ानूनमें ग़लती हो सकती है, लेकिन भगवान् कभी ग़लती नहीं कर सकता । अगर वह अपने क़ानूनकी हदको लाँघ जाय, तो दुनिया ही खतम हो जाय । वह कभी बदलता नहीं । वह हेर-फेरसे परे है । उसकी कोई जोड़ नहीं। जिस शकलमें वह कल था उसीमें वह आज भी रहेगा और आगे भी हमेशाके लिए उसकी वही शकल होगी । उसका क़ानून आपके दिलकी तख्ती पर लिखा हुआ है । आप उसी हालतमें बदले हुए मर्द और औरत बन सकते हैं कि जब आपके अन्दर अपनेको सुधारनेकी ख्वाहिश पैदा हो और आप उसके लिए लगातार कोशिश करनेको तैयार हों ।"

श्रीमती सुचेता कृपलानीके आ जानेसे और उनके मीठे, सुरीले संगीतकी वजहसे प्रार्थनाकी सभाओंमें एक नई छटा आ गई । ११ मईके दिन गांधीजीने श्रीमती कृपलानीके गाये हुए भजनको अपने प्रवचनका आधार बनाकर उसकी तशरीहमें यों कहा : "अभी जो गीत आप लोगोंने सुना, उसमें हमसे कहा गया है कि हम एक ऐसे मुल्कके रहनेवाले हैं, जिसमें न तो दुःख और शोक है, और न रोना-बिलखना। आप यह न सोचिये कि इसमें इशारा स्वर्गकी तरफ़ है । क्योंकि कविने कहा है कि उसका यह गीत उस देशकी तारीफ़में है, जिसमें आप-हम सब रहते हैं । इसका यह मतलब नहीं कि हम तब तक बैठे राह देखते रहें, जबतक सब कोई पूर्ण न बन जायँ । अगर आप भगवान्‌को अपने अन्दर बसा लें, तो आपमेंसे हरएक अपने लिए ऐसा देश बना सकता है । आखिर दुनिया एक-एक आदमीसे ही बनी है । सच है कि दुनियामें अलग-अलग जातिके, अलग-अलग रंगोंवाले और अलग-अलग ज़बानें बोलनेवाले लोग हैं । ऐसी दुनियामें हमें किस तरह रहना चाहिये यही बात यह भजन हमें सिखाता है।"

इस बार खाली हाथ नहीं

अपने अगले प्रवचनमें गांधीजीने शिमलाकी बातचीतके बारेमें कुछ इशारा-सा किया । जिन झूठी अफ़वाहोंसे सब-के-सब परेशान थे, उनका ज़िक्र करते हुए गांधीजीने कहा : "इस बारकी कान्फरेन्स पिछले साल शिमलामें हुई कान्फरेन्सके जैसी नहीं है । इसलिए आपको उन अफ़वाहों पर ध्यान नहीं देना चाहिये, जिनमें कहा जाता है कि बातचीत खतम हो गई है या यह कि कैबिनेट मिशन हिन्दुस्तानके लिए बिना कुछ किये विलायत लौट रहा है और कि हिन्दुस्तानके नेताओंको पिछली शिमला कान्फरेन्सकी तरह इस बार भी खाली हाथों लौटना होगा, वग़ैरा-वग़ैरा ।" उन्होंने फिर कहा : "अगर मैं अंग्रेज़ी भाषाको सही तौरसे समझता हूँ, तो मैं समझता हूँ कि कैबिनेट मिशन यहाँ इस इरादेसे आया है कि वह हिन्दुस्तान छोड़ने यानी हिन्दुस्तान से अपनी हुकूमत उठा लेनेके अपने फ़ैसलेको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस तरह अच्छे-से-अच्छे ढङ्गसे अंजाम दे सकता है। अगर उनसे हो सके, तो यह उनका फ़र्ज़ ही था कि वे कांग्रेस और मुस्लिम-लीगके बीच समझौता करानेकी कोशिश करते। यह परिषद् यहाँ इसी मक़सदसे हो रही है। अगर हममें एका होता तो दुनियाकी कोई ताक़त हम पर हुकूमत न कर पाती। लेकिन दुःख इस बातका है कि हममें आपसकी फूट है। अगर यह कान्फरेन्स अपने मक़सदको पूरा न कर पाये, तो भी उससे किसीको नाउम्मीदी न होगी। जिन्हें ईश्वरमें श्रद्धा है उन्हें सबसे काम लेना और बहादुर बनना चाहिये। मान लीजिये कि हमारे साथ धोखा होनेवाला है। उस हालतमें हमें और आपको चाहिये कि हम मुस्तैद होकर बहादुरीके साथ उसके नतीजोंका मुक़ाबला करें। मुझे ऐसी कोई वजह नज़र नहीं आती, जिससे मैं मानूँ कि कैबिनेट मिशन यहाँ हमको धोखा देनेके लिए आया है। परेशान होनेकी तो हमें कोई ज़रूरत ही नहीं। आदमीको अपना फ़र्ज़ अदा करना चाहिये। ईश्वरने इसके लिए उसको सूझ और शक्ति दी है। लेकिन फल देनेवाला तो आखिर भगवान् ही है।"

कहीं हम भूल न जायँ

"इस खयालसे कि कहीं अपने भविष्यकी चिन्तामें हम उन लोगोंके तईं अपने फ़र्ज़को भूल न जायँ, जिनको हमने समाजके अन्दर हलके-से-हलका दरजा दे रक्खा है, मैंने बादशाहखानसे कहा था कि वे भंगी-बस्तीमें जाकर वहाँकी हालत देखें और मुझे बतायें। उन्होंने वहाँ जाकर जो कुछ देखा उससे उनको बहुत रंज हुआ और गुस्सा भी आया। मैं .खुद वहाँ जाना पसन्द करता, लेकिन कमज़ोरीसे मैं अब इस लायक़ नहीं रह गया हूँ कि पहाड़ी चढ़ाई चढ़ सकूँ। इसलिए मैं .खुद उनके पास उतनी दूर जाकर उन्हें देख नहीं सका। खास तौर पर भले-चंगे आदमियोंका रिक्शामें बैठना मेरे नज़दीक एक गुनाह है। मुझे तो मोटरमें बैठना भी पसन्द नहीं। मैं हमेशा अपने पैरोंसे काम लेना चाहता हूँ। क्योंकि भगवान्‌ने चलने-फिरनेके लिए मुझको यही सवारी दी है। कल रात मैं पैदल चला था, लेकिन पहाड़ी रास्ता खतम ही नहीं होता था। अगर मेरा बस चलता, तो मैं यहाँकी हरिजन-बस्तीमें रहता। लेकिन आज यह मेरे लिए मुमकिन नहीं। मैंने पहले भी सुन रक्खा था और जो कुछ बादशाहखानने कहा उससे इस बातकी ताईद होती है कि जिन बस्तियोंमें यहाँके हरिजनोंको रहना पड़ता है वे जानवरोंके रहने लायक़ भी नहीं हैं, इन्सानोंकी तो बात ही क्या? यहाँके कुछ हरिजनभाई आज सुबह मुझसे मिलने आये थे और वे अपनी मुसीबतोंकी रामकहानी मुझे सुना गये। शिमलावालोंका यह फ़र्ज़ है कि वे यहाँके हरिजनोंकी तकलीफ़ोंका पता लगायें और उन्हें दूर करें-करायें।

"मैंने यह भी सुना है कि यहाँके खादी-भण्डारको बन्द कर देना पड़ेगा, क्योंकि शिमलाके लोग इस क़दर आलसी हैं और नई बातोंको समझनेमें इतने मन्द हैं कि वे खादी खरीदनेके लिए ज़रूरी अपने हिस्सेका सूत तक कात नहीं पाते। मैं तो आपसे फिर कहूँगा कि स्वराज आज भी हाथ-कते सूतके धागे पर लटका हुआ है। राजनीतिक या सियासी स्वराज मिल जाने पर भी, जैसा कि मिलनेवाला ही है, आप खादीके बिना उसको कभी क़ायम नहीं रख पायँगे, क्योंकि खादी ही अहिंसाका सच्चे-से-सच्चा प्रतीक है। अगर आप ताक़तके बल पर स्वराजको क़ायम रखनेकी उम्मीद करते हैं, तो आप बुरी तरह गलती कर रहे हैं। आपसे बढ़ा-चढ़ा कोई आ धमकेगा और आपकी आज़ादी छीन लेगा। यहाँके खादी-भण्डारको बनाये रखना शिमला-वालोंके हाथकी बात है, और मुझे उम्मीद है कि वे ऐसा करेंगे। एक ज़माना था, जब पंजाबकी बहनोंने मुझे पहले-पहल सूत दिया था — सूत देनेमें वे अव्वल रही थीं। अब भी वे ऐसा कर सकती हैं। जहाँ तक मेरा ताल्लुक़ है, ज़रूरत पड़ने पर मैं आपके पैसेसे भी हाथ धो लूँगा और तमाम खद्दर-भण्डार भी बन्द कर दूँगा, लेकिन किसी भी हालतमें मैं स्वराजको हाथसे जाने न दूँगा।"

दिल्ली, १५–५–'४६
('हरिजन' से)

प्यारेलाल

एक अच्छी याददिहानी

एक गुमनाम मित्रने बाइबलकी 'बुक ऑव् जॉब' और उसके गीतोंसे कुछ बहुत मौज़ूँ हिस्से लेकर भेजनेकी तकलीफ़ उठाई है। उनकी भेजी ये चीज़ें हममेंसे हरएकको सजग या चौकन्ना रखनेवाली हैं। मैं उन्हें .खुशी-.खुशी नीचे देता हूँ। उनके भेजे इन वचनोंका जो सार मैंने निकाला है, वह यह है कि आदमी महज़ धूल है या यों कहिये कि घास है, इसलिए उसको चाहिये कि जो चन्द मिनट उसे इस दुनियामें रहना है, उन मिनटोंको वह अपने साथके प्राणियोंकी सेवामें खर्च करे। मुझे उम्मीद है कि बाइबलके इन भजनोंको इन मित्रने यह दिखानेके लिए नहीं भेजा है कि दुनियामें कुछ भी करना बेकार है, क्योंकि ऐसा मानना तो आलसकी और दूसरों पर बोझ बनकर जीनेकी निशानी है।

जॉब

"औरतसे पैदा होनेवाले आदमीकी ज़िन्दगी चन्द दिनोंकी है,
और मुसीबतोंसे भरी है।
वह फूलकी तरह सामने आता है और तोड़ लिया जाता है:
वह सायाकी तरह भागता है, और बना नहीं रहता।
वह जानता है कि उसकी ज़िन्दगीके दिन तय हैं,
तूने ही उसके महीनोंकी तादाद भी तय कर रक्खी है,
और उसके लिए एक हद बाँध दी है, जिसे वह लाँघ नहीं सकता;
क्योंकि पेड़को काट भी दिया जाय, तो भी उसके
लिए उम्मीद रहती है कि वह फिरसे फूटेगा और
उसकी मुलायम टहनियाँ कभी खूटेंगी नहीं;
गोकि उसकी जड़ें बहुत ज़मानेसे ज़मीनके अन्दर पैठी हुई हैं,
और उनका जत्था ज़मीनके अन्दर सूख जाता है; तो भी
बारिशके पानीकी सोंधी महक पाकर वह पनप उठेगा,
और पौधेकी तरह उसमें टहनियाँ और शाखें फूटने लगेंगी;
लेकिन आदमी मर जाता है और मिट जाता है,
आदमी अपना चोला छोड़ देता है और,
फिर (पता नहीं) वह कहाँ रहता है?
जिस तरह समन्दरसे पानी आना बन्द हो जाता है,
और बाढ़ उतर जाती है और पानी सूख जाता है,
उसी तरह आदमी क़ब्रमें सो जाता है, और
फिर उठ नहीं पाता।
जब तक बहिश्त मिट नहीं जाता, वह उठ नहीं पायेगा,
और न कोई उसको उसकी नींदसे जगायेगा।"

साम

"ऐ मालिक! तू मुझे बता कि मेरा आखिरी दिन कब आयेगा?
और मैं कितने दिन यहाँ रहूँगा; ताकि मैं जान सकूँ
कि मैं कितना कमज़ोर हूँ।
देख, कि तूने मेरे दिन एक हाथ-पसारेसे ज़्यादा लम्बे नहीं बनाये;
और मेरी उमर तेरी उमरके सामने कोई चीज़ नहीं है;
सच ही हर आदमी अपनी बेहतरीन हालतमें भी निरा मग़रूर है,
क्योंकि मालिक, तू हमारे ढाँचेको जानता है;
और तुझे मालूम है कि हम खाक हैं।
आदमीकी बात तो यह है कि उसके दिन घासकी तरह हैं।
वह बगीचेके फूलकी तरह खिलता है;
हवाका एक झोंका उस परसे गुज़रता है और वह खतम हो जाता है;
और कोई नहीं जानता कि वह कहाँ गया है।

शिमला, १३–५–'४६
('हरिजन' से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

१९ मई १९४६

हिंसा कैसे रोकें ?

स० — कुछ दिन पहले मैं पूनामें एक अंग्रेज़ मिलिटरी अफ़सरसे मिला था। वह विलायत जा रहे थे। उन्होंने मुझसे कहा कि अब हिन्दुस्तानमें हिंसा बढ़ रही है और आगे और भी बढ़ेगी। लोग अहिंसाके रास्तेको छोड़ते जा रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा: "हम लोग हिंसामें मानते हैं। हिंसासे हमारा जीवन बँधा पड़ा है। कई गुलाम देशोंने हिंसाके ज़रिये अपनी आज़ादी हासिल की है, और आजकल वे सुखसे दिन बिता रहे हैं। हमने हिंसाको रोकनेके लिए अणु-गोला भी निकाला। दुनिया जानती है कि किस तरह थोड़े वक़्तके अंदर ही हमने खूँख्वार लड़ाईको अणु-गोलेकी मददसे बन्द कर दिया।"

साहब बहादुर और कहने लगे: "हिन्दुस्तानमें महात्मा गांधीने लोगोंको अहिंसाका रास्ता बताया है। लेकिन क्या गांधीजीने अणु-गोले-जैसी कोई चीज़ निकाली है, जिसका इस्तेमाल करनेसे लोग फ़ौरन अहिंसाके रास्ते आ जायँ और देशमें शांतिका राज क़ायम हो जाय? क्या अब गांधीजीका अणु-गोला देशको हिंसाके रास्ते जानेसे रोक नहीं सकता?"

फिर वह मुझसे बोले: "आप अपने गांधीजीसे क्यों नहीं कहते कि वे इस वक़्त देश पर अपनी शक्ति छोड़ें, जिससे लोग हिंसाके रास्तेको तर्ककर दें और फिरसे सब मिलकर अहिंसा अख़्तियार कर लें। मैं तो कहता हूँ कि अगर गांधीजी इस भीषण हिंसाको, जो आज सारे हिन्दुस्तानमें फैल रही है, अभीसे नहीं रोकेंगे, तो बादमें उनको बहुत ही दुःखी होना पड़ेगा और उनका इतने दिनोंका काम बरबाद हो जायगा।"

आशा है, आप कृपाकर इन अंग्रेज़ अफ़सरकी शंकाका जवाब देंगे।

ज० — इस सवालमें काफ़ी विचारदोष पाता हूँ। अणु-गोलेने हिंसाको नहीं रोका है। लोगोंके मनमें तो हिंसा भरी ही है, और तीसरी लड़ाईकी तैयारियाँ होती दिखाई पड़ती हैं। यह कहना फ़ज़ूल है कि हिंसासे किसीको सुख-चैन मिला है। फिर भी यह कोई नहीं कहता कि हिंसासे कुछ हो ही नहीं सकता।

मैं हिंसाको रोक न सकूँ तो मुझे पछताना पड़ेगा, ऐसी कोई बात अहिंसामें हो ही नहीं सकती। कोई भी आदमी हिंसाको रोक नहीं सकता। ईश्वर ही हिंसाको रोक सकता है। मनुष्यको तो वह निमित्त-मात्र बनाता है। हिंसा किसी बाहरी प्रयोगसे रोकी नहीं जा सकती। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि कोई बाहरी प्रयोग हो नहीं सकता या होता नहीं। बाहरी उपायोंके होते हुए भी वह रुकी, तो ईश्वरकी कृपासे ही रुकेगी। हाँ, इतना कहूँगा कि ईश्वरकी कृपा रूढ़ प्रयोग है। ईश्वर अपने क़ानूनके मुताबिक़ ही चलता है। इसलिए हिंसा उस क़ानूनके मुताबिक़ ही रुकेगी। हम ईश्वरके सब क़ानूनोंको जानते नहीं हैं, न कभी पूरे-पूरे जानेंगे। इसलिए जो प्रयत्न हमसे बन सके, सो हम करते रहें। इतना और भी कह दूँ कि मेरा विश्वास है कि हिन्दुस्तानमें अहिंसाका प्रयोग काफ़ी हद तक सफल हुआ है। मैं मानता हूँ कि सवालमें जो निराशा ज़ाहिर की गई है उसकी कोई गुंजाइश नहीं है। आख़िर अहिंसा जगत्का एक महान् सिद्धान्त है। उसे कोई मिटा नहीं सकता। मेरे जैसे हज़ारोंके उसपर अमल करते-करते मर जानेसे भी वह सिद्धान्त मिट नहीं सकता। मरकर ही अहिंसाका प्रचार बढ़ेगा।

शिमला, ९-५-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

क्या स्वराज्य ठुकराया जाय ?

"मैं मामूली हैसियतका आदमी हूँ और बम्बईमें १२'×१… एक कमरेमें रहता हूँ। मेरे सिर मेरी पत्नी और एक ल… ज़िम्मेदारी है। कमरेमें खाना बनाने और सोनेकी जगह मिली… हैं। मैंने खादी पहननेकी प्रतिज्ञा की थी और मैं उसे पूरी तरह … रहा हूँ। पिछले दिनों जब यह तय हुआ कि सूतके बदले … मिलेगी तब मेरे जैसे बीचके दरजेवाले आदमीके सामने यह मुश्कि… पेश हुई कि बम्बईकी मशीन-जैसी ज़िन्दगीमें कातनेका वक़्त … निकाला जाय? फिर भी अपनी प्रतिज्ञाका पालन करनेके … अपने छोटे कमरेमें दो बार करके जब भी वक़्त मिलता है … हमेशा डेढ़ घण्टा कात लिया करता हूँ। आजकल मेरे पास कात… लिए पूनियाँ बिलकुल नहीं हैं। जब मैं चरखा-संघके खादी-भण्डा… पूनियाँ लेने गया, तो मुझसे कहा गया: "आप यहाँ आइये … पूनी बनाकर ले जाइये, या तुनाईका सामान ले जाकर घर … पूनी बना लीजिये।" मैंने कहा कि जगहकी तंगीकी वजह … घर पर पूनी बन नहीं सकती। और मेरे-जैसे आदमीके … यहाँ आकर पूनी बनाने जितना वक़्त नहीं। मुझे पूनी दीजि… नहीं तो मुझको चरखा छोड़ देना पड़ेगा। मुझसे कहा ग… "आपको जैसा ठीक लगे, आप कीजिये। पूनियाँ नहीं मिलेंगी… मैं समझता हूँ कि आदमीको स्वावलम्बी बनना चाहिये और इस… पूनियाँ भी अपने हाथसे बनानी चाहिये। लेकिन बम्बईकी मशीन… ज़िन्दगीमें मझले दरजेवालोंके लिए, मेरे खयालमें, यह चीज़ नामुम… है। बम्बईमें मेरे-जैसे हज़ारों लोगोंकी यही हालत है। … अब मैं क्या करूँ? क्या चरखेको ठुकरा दूँ? मेहरबानी … इस मामलेमें मुनासिब रास्ता दिखाइयेगा।

"खादी-भण्डारने पूनियाँ बेचना बन्द करके ग़रीबोंके … पर एक तरह लात मारी है, क्योंकि मेरे खयालमें जिस … ग़रीब सूत कातकर अपनी रोज़ी पूरी करते हैं, उसी तरह … बनाकर भी वे अपनी रोज़ी पूरी कर सकते हैं।"

इस खतका जवाब देना ज़रूरी है। जो हालत इस खतके लि… वालेकी है, वही बम्बईके कबूतरखानों-जैसे तंग मकानोंमें रहने… बहुतोंकी है। अगर हमारे लोग आसानीसे राज़ी न हों, तो … मकान-मालिक छोटी-छोटी और तंग कोठरियाँ बनाकर उनमें … ग़रीबोंको न ठूँसें। एक ही कोठरीमें रसोईघर, सोनेकी जगह … बैठक! यह ज़िन्दगी बम्बईमें लाखोंकी है। इसीकी वजहसे मल… हिल और चौपाटीका निबाह हो पाता है। चरखा हमेशा पुकार-पुकार… कहता है कि यह हालत बदली जानी चाहिये। अगर उसका … मतलब न होता हो, तो मेरे नज़दीक चरखेकी कोई क़ीमत नहीं …

हाँ, तलवारसे थोड़े लोग इस तरह अपना रास्ता चाहे तय कर… लेकिन करोड़ों तो हरगिज़ नहीं कर सकते। कोई यह न समझे … जो हालत बम्बईमें है वह लन्दनमें या पेरिसमें नहीं है। न्यू… भी यही हाल है। वहाँ भी ग़रीब कबूतरखानोंमें ही रहते हैं।

रूसमें क्या होगा, सो अभी कुछ कहा नहीं जा सकता।

सवाल यह है कि इन भाईकी मुश्किलका क्या? ये रोज़ … लिए डेढ़ घण्टा निकाल सकते हैं। जो आदमी रोज़ डेढ़ घण्टा … है, उसके पास उसकी ज़रूरतसे ज़्यादा सूत जमा हो जाता … पूनी ख़रीदकर कातनेमें जो ग़लती हो रही थी वह दुरुस्त की गई … इसलिए खादी-भण्डारने इन भाईको जो जवाब दिया वह ठीक ही … जिस कोठरीमें चरखा रह सकता है उसमें तुनाई-पुनाई तो आ… हो सकती है। और अगर चरखेकी जगह बचानी हो तो तकु… ही। धनुष-तकुआ भी काम देता है। एक आदमीके या ह… रास्तेमें जो कठिनाइयाँ आती हैं उनके सामने झुकनेमें नहीं, …

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्हें दूर करनेमें ही स्वराज्य समाया हुआ है। मुश्किलें ही आदमीको तदबीर सुझाती हैं।

फिर जब खादी-भण्डारवाले कातने-पींजनेकी सहूलियत कर देते हैं, तो वहीं पींजने या तुन लेनेमें मुश्किल क्या है? पुनाईका नया तरीक़ा तो बहुत ही आसान है। और कह सकते हैं कि वह ज़रा भी जगह नहीं घेरता।

मुद्देकी बात यह है कि खादी पहननेवालेके मनमें यह यक़ीन होना चाहिये कि सूतके तारमें स्वराज है। जिसे यह यक़ीन न हो, उसके खादी छोड़ देनेसे मुल्कको कोई नुक़सान नहीं होगा। खादीने अपने लिए इतनी जगह तो बना ही ली है कि जो कातकर और धुनकर ही अपना गुज़ारा करते हैं, उन ग़रीबोंका काम चलता रहे। और यह माना जा सकता है कि इस शकलमें खादी बनी रहेगी। लेकिन उससे करोड़ोंका सवाल हल नहीं हो सकेगा।

शिमला, १३-५-'४६

('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

मुकम्मल शराब-बन्दी

हिन्दुस्तानमें अब सब सूबोंकी अपनी राष्ट्रीय (क़ौमी) सरकारें पुरजोशसे काम करने लगी हैं। ख़ुशक़िस्मती यह है कि शराब-बन्दीके मामलेमें कांग्रेस और मुस्लिमलीगके बीच किसी तरहका मतभेद (नाइत्तफ़ाक़ी) नहीं हो सकता। इसलिए अगर सब मिलकर एक-सी नीति अपनायें और उसमें देशी रियासतें भी शामिल हो जायँ, तो हिन्दुस्तान देखते-देखते शराबकी बुराईसे छुटकारा पा जाय और लाखों घरों या कुनबोंकी दुआयें उन्हें मिलें। पिछले कुछ सालोंमें मुल्कमें जो हुकूमत रही, वह गोकि कहनेके लिए फ़ौजी हुकूमत नहीं थी, तो भी हक़ीक़तमें उसका अमल फ़ौजी ही था और उस दरमियान उस वक़्तकी सरकारोंने एक नामूसी-भरा काम किया; यानी गवर्नरों और उनके सलाहकारोंने कुछ सूबोंमें शराब-बन्दीकी जो नीति उनसे पहलेकी सरकारोंने शुरू की थी उसे रद कर दिया, और उस वक़्तकी सूबोंकी सरकारोंने इस कामके लिए जो रुपया इकट्ठा किया था, उसे भी बिलकुल बेहया बनकर दूसरे कामोंमें ख़र्च कर डाला। अब नई सरकारोंको चाहिये कि वे शराब-जैसी नशीली चीज़ोंको और अफ़ीम-जैसी बुरी लत लगानेवाली नशेकी चीज़ोंको रोकनेका काम शुरू कर दें। नई सरकारें शराब-बन्दीका क़ानून बनाकर ही चुप न बैठें। उनका फ़र्ज़ है कि वे पीनेवाले लोगोंकी बस्तियोंमें नशीली चीज़ोंके पीनेसे होनेवाले नुक़सानके बारेमें लोगोंको तालीम देनेके तरीक़े ढूँढ़ निकालें और ऐसा इन्तज़ाम करें कि जिससे लोगोंको शराब या दूसरी नशीली चीज़ोंकी जगह तन्दुरुस्ती देनेवाले पेय पीनेको मिलें और साथ ही अच्छे-भले तरीक़ोंसे वे अपना दिल-बहलाव भी कर सकें। आज जहाँ-जहाँ शराबकी दुकानें हैं, वहाँ-वहाँ, और वहाँ मुमकिन न हो, तो उनके ठीक पड़ोसमें तन्दुरुस्ती देनेवाले नाश्तेका और दिल-बहलावका इन्तज़ाम किया जाना चाहिये। अगर इस तामीरी कामको शुरू कर दिया जाय, तो उससे न सिर्फ़ सरकारकी आमदनीमें बढ़ती होगी, बल्कि शराब-बन्दी शुरू हो जानेकी वजहसे हज़ारों बरबाद घर फिरसे आबाद हो जायँगे।

दूसरे, खजूर वग़ैरा पेड़ोंसे ताड़ी चुआनेके बदले उनको नीरा टपकानेके लिए छेदा जाय और उस नीरासे गुड़ बनाया जाय। इससे हमारे मुल्कको अपनी ख़ूराकके लिए जिस सस्ती शकर की ज़रूरत है, वह मिल जायगी और उसे बहुत फ़ायदा होगा। पहले इस परचेमें यह बताया जा चुका है कि ताड़ या खजूरका गुड़ ईखके गुड़के मुक़ाबले किन कारणोंसे ज़्यादा पसन्द करने लायक़ है।

हाल ही 'वीमेन्स क्रिश्चियन टेम्परेन्स एसोसियेशन' की (फ़ैज़ाबाद-रोड, लखनऊ) अखबारोंके नाम भेजी एक गश्तीचिट्ठीके नीचे लिखे फ़िक़रों परसे मुझे ये विचार सूझे हैं। उसमें 'नौजवान क्या करें?' नामसे विद्यार्थियोंको ध्यानमें रखकर जिन बातोंका ज़िक्र किया है, उन्हें मैं नीचे देता हूँ।

नौजवानोंको चाहिये कि वे:

(१) सभी तरहकी नशीली शराबें और तम्बाकू सहित सब तरहकी नशीली चीज़ोंका कभी इस्तेमाल न करनेका व्रत लें। इससे प्रतिज्ञा पर सही करना आसान हो जायगा।

(२) वे यह माँग पेश करें कि मदरसोंमें जिन चीज़ोंकी तालीम दी जाती है, उनमें शराबके जैसी नशीली चीज़ों और नशा पैदा करनेवाले पदार्थोंके मुतअल्लिक़ पूरी-पूरी तालीम भी शामिल की जाय।

(३) तालीमके सालोंमें समाज-सेवाके कामोंमें हाथ बँटानेकी माँग पेश करें और उसमें शराब-बन्दीके कामको भी शामिल करें। और, उसके सिलसिलेमें आम जनताको इस बातकी तालीम दें कि नशीली चीज़ोंके खाने-पीनेसे कैसे-कैसे नुक़सान होते हैं।

(४) इस वक़्त मुल्कमें गाँववालोंके बीच यह जो हलचल चल रही है कि लोग छोटी-छोटी रक़में बचाकर रखें, उसके साथ आप लोगोंसे यह भी सिफ़ारिश करें कि उसमें तमाम नशीली चीज़ोंसे बचनेकी बात भी आ जानी चाहिये।

(५) शराबकी भट्ठी लगानेकी खटपटमें खानेके काम आने लायक़ बेश क़ीमती अनाजकी बहुत बुरी बरबादी होती है। नौजवान इस बरबादीको रोकें और इस वक़्त लोगोंके लिए अनाज मुहैय्या करनेके काममें जुट जायँ।

(६) शराब-बन्दीका काम करनेवाली संस्थाओंमें शरीक हो जायँ। 'वीमेन्स क्रिश्चियन टेम्परेन्स एसोसियेशन' हिन्दुस्तानमें पिछले ५९ बरससे शराबखोरीके खिलाफ़ लड़ता आ रहा है। उसे आपके सहारे और बढ़ावेकी ज़रूरत है। इस एसोसियेशनका मंत्र यह है: 'ईश्वरके लिए, कुटुम्बके लिए और तमाम मुल्कोंके लिए!'

(७) शराब-बन्दीके बारेमें निकले हुए साहित्य (अदब)का इस्तेमाल करें। सालके सिर्फ़ दो रुपये जमा करानेसे आपको हर महीने हिन्दी या उर्दूमें और एकाध दूसरी देशी ज़बानमें छपी हुई १०० पत्रिकायें (परचे) तक़सीम करनेको मिलेंगी। 'इण्डियन टेम्परेन्स न्यूज़' नामका अंग्रेज़ी माहवारी किसी भी वाचनालय या रीडिंगरूमको, जो निजी नहीं है, सालका एक रुपया भेजनेसे मिल सकता है। जो विद्यार्थी इसे मँगाना चाहेंगे उन्हें भी यह रिआयत दी जायगी।

(८) छुट्टियोंमें ऐसी सेवा अच्छी तरह की जा सकती है।

(९) सच्चे देशभक्तके नाते आप यह सबक़ सीखें कि देशसे अपने लिए कितना लेना चाहिये, इसका विचार न करते हुए देशको आप कितना दे सकते हैं यह सोचना ज़्यादा ज़रूरी है।

शिमला, ७-५-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

हिन्दुस्तानी-गुजराती कोश : सम्पादक – मगनभाई देसाई

कोशके शब्द नागरी और उर्दू दोनों लिपियोंमें दिये गये हैं और अर्थ गुजरातीमें दिये हैं।

इस कोशकी प्रस्तावनामें गांधीजी लिखते हैं: "अपनी भाषामें ऐसा दूसरा कोश मैंने नहीं देखा।"

क़ीमत ४-०-० डाकख़र्च ०-८-०

हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी

(वनमाला परीख और सुशीला नय्यर) २-०-० ०-६-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़बरदस्ती और .ज़ुल्म

"नमकका कर एक ज़बरदस्ती और ज़ुल्म है। और अगर लोग इसे समझ जायँ, तो इसकी वजहसे उनमें बेक़रारी पैदा हुए बिना न रहे। मुनाफ़ाख़ोर कंपनीने हिन्दुस्तानके ग़रीबोंका जिस बड़े पैमाने पर .खून चूसा है, नमक-कर उसीका बचा हुआ हिस्सा है।"

रामसे मैक्डॉनल्ड

"जो महसूल मूँड़ महसूलकी बराबरीका होता है उसके बोझको ग़रीब मुल्क बुरी तरह महसूस करता है और उसकी वजहसे अक्सर लोगोंमें गहरी बेक़रारी पैदा होती है।"

बैस्टेबल

सरकारी अन्दाज़ेके हिसाबसे हिन्दुस्तानमें आजकल हर साल जितना नमक ख़र्च होता है वह ५ करोड़ १० लाख ५० हज़ार मन माना जाता है। गरम मुल्कोंमें तन्दुरुस्त रहनेके लिए फ़ी आदमी फ़ी साल १२ पौण्ड यानी क़रीब छह सेर नमकका उपयोग ज़रूरी माना गया है। इस हिसाबसे ४० करोड़ लोगोंके लिए कुल ६ करोड़ मन नमककी ज़रूरत होगी।

मवेशियों और दूसरे चौपायोंके लिए फ़ी ढोर नमककी ज़रूरत इस तरह कूती गई है : गायके लिए १८ पौण्ड, बैल, भैंस और घोड़ेके लिए ४५ पौण्ड, और बकरी और भेड़के लिए ११ पौण्ड। हिन्दुस्तानके मवेशियोंकी तादादका मोटा हिसाब लेकर चलें, तो उनके लिए सालमें ४ करोड़ ७३ लाख मन नमककी ज़रूरत होगी।* दूसरे ३ करोड़ मन तरह-तरहके रोज़गार-धन्धोंके लिए चाहिये। इस तरह कुल नमक १३ करोड़ ७३ लाख मन होता है। आजकल हर साल ५ करोड़ १० लाख मन नमक पैदा किया जाता है, यानी असल ज़रूरतका ३८ फ़ी सदी नमक ही मुल्कमें बनता है। जैसे-जैसे मुल्कमें उद्योग-धन्धे बढ़ते जायँगे, वैसे-वैसे नमककी ज़रूरत और भी बढ़ेगी।

हिन्दुस्तानकी सरकारके नमक-विभागकी सारी ताक़तें और तमाम ख़र्च अब तक ग़ैरक़ानूनी नमक बनानेकी रोक-थाममें ही लगता रहा है। नमकके धन्धेको बढ़ानेकी तरफ़ उसका ध्यान ही नहीं गया। देशी रियासतोंमें नमककी पैदावारको रोकनेके लिए सन् १९३९-४०में सरकारने अलग-अलग रियासतोंको कुल ३३ लाख ७२ हज़ार २ सौ ५१ रु० ४ आना १० पाई बतौर मुआवज़ेके दिये थे।

अगर हिन्दुस्तानको नमक बनानेकी आज़ादी मिल जाय, तो वह आसानीसे नमककी पैदावारको १० गुना बढ़ा सकता है। हिन्दुस्तानके नक़्शेमें जहाँ-तहाँ ऐसी जगहें बिखरी पड़ी हैं, जहाँ किसी ज़मानेमें नमक बनानेके अच्छे ख़ासे केन्द्र थे। आज वे सब बेकार पड़े हैं। क्योंकि वहाँ नमकके क़ानून पर बड़ी सख़्तीसे अमल किया जाता है। और सचमुच ही यह शर्मकी बात है कि हिन्दुस्तानमें नमक पैदा करनेके इन .क़ुदरती ज़रियोंको बेकार पड़ा रहने देकर हम आजकल १ करोड़ ९४ लाख मन नमक, यानी हमारी कुल ज़रूरतका एक चौथाई या २५ फ़ी सदी नमक बाहरसे मँगाते हैं। इसमें नमकके अलावा १ करोड़ ४२ लाख ४२ हज़ार रुपयेकी क़ीमतके सोडियम और पोटैशियम तो शामिल ही नहीं किये गये हैं। १९३७-३८में कुल ३ करोड़ ४३ लाखके नाइट्रेट और आल्कली हिन्दुस्तानमें बाहरसे मँगाये गये थे। इनमें पोटैशियम नाइट्रेट, सोडियम सल्फेट, कैलशियम क्लोराइड और मेग्नेशियम क्लोराइड शामिल थे। इसके साथ ही आज हिन्दुस्तानमें हज़ारों एकड़ ज़मीन ऐसी मौजूद है, जो मिट्टीके बहुत ज़्यादा खारी होनेकी वजहसे खेतीके कामकी नहीं रह गई है। सरकार आज लोगोंको नमक बनानेसे रोकनेके लिए लाखों रुपया ख़र्च करती है। अगर वह इस रक़मका थोड़ा हिस्सा भी नमकके उद्योगको बढ़ानेमें ख़र्च करे, तो न सिर्फ़ बड़ी-बड़ी ज़मीनें फिरसे खेतीके काममें आने लगें, बल्कि बाहरसे केमिकल्स मँगानेके लिए हर साल मुल्कसे जो करोड़ों रुपया दूसरे देशोंमें चला जाता है, वह देशका देश ही में रह सके। ख़याल रहे कि नमकका उद्योग तमाम बड़े-बड़े केमिकल उद्योगोंके लिए बुनियादी और शुरूका उद्योग है।

नमकके उद्योगको कुचलनेका नतीजा यह हुआ है कि दूसरी तरहके बहुतसे केमिकल्स बनानेका काम भी बन्द पड़ गया है। सन् १८७३-७६ की संख्याके मुताबिक़ अकेले उत्तरी हिन्दुस्तानमें इन खारों या रसायनोंकी पैदावार नीचे लिखे मुताबिक़ थी :

साल	शोरा	रूथड़	खारी	सज्जी	रसाई
१८७३–७४	२१२	१३,९०८	६६८	३,७६०	८१५
१८७४–७५	१८६	७,४०९	४९८	३,६२०	११४
१८७५–७६	१३२	६,७०१	७१०	४,८५३	३८७
१८७६–७७	१३०	५,६३३	५४४	१,७६५	२१२

नमक क़ानूनोंके अमलके साथ इन चीज़ोंको बनानेसे रोकनेका जो ताल्लुक़ था उसका पता सन् १८७२-७३ के सालकी सरकारी रिपोर्टके नीचे लिखे हिस्सेसे चलता है (सफ़ा १०९) :

"बुलन्दशहर, अलीगढ़, बदायूँ, मैनपुरी, फ़र्रुख़ाबाद, जौनपुर और गाज़ीपुरसे आये हुए नमकके नमूनोंकी जाँचका नतीजा मैंने देखा है। मेरी राय है कि जमुनाके दोनों बाज़ुओं पर मिलनेवाली खारी मिट्टीसे नमक वग़ैरा खार तैयार करनेकी इजाज़त देना बहुत ही नुक़सानदेह होगा। खारी मिट्टीसे कहीं भी खारवाली चीज़ें (अल्कली) बनानेकी इजाज़त देना ख़तरनाक होगा। इसकी वजहसे लाखों मन मामूली नमकसे होनेवाली आमदनीको धक्का पहुँचेगा।"

सन् १९४० और '४१में हिन्दुस्तानसे १ लाख ५० हज़ार हण्डरवेट सूखी और नमक लगाई हुई मछलियाँ बाहर भेजी गईं। हमें मान लेना चाहिये कि हिन्दुस्तानमें इस तरहकी सूखी और नमक लगाई हुई मछलियाँ इससे कई गुनी खपी होंगी। इसी तरह सन् १९३९-'४०में ३१ हज़ार ८ सौ टन, यानी ८७ लाख मन सूखा और साफ़ किया हुआ चमड़ा हिन्दुस्तानसे बाहर भेजा गया था। उद्योग-धन्धोंमें भी बहुतेरे ऐसे हैं, जिनमें नमकका काफ़ी इस्तेमाल होता है। मसलन्, काग़ज़, खेती, साबुन-साज़ी, काँच, फ़ौलाद और मिट्टीके पॉलिशवाले बरतन वग़ैरा। और, हालाँकि इन सब उद्योगोंमें इधर तेज़ीसे तरक़्क़ी हुई है, तो भी उद्योगके कामके लिए बरते जानेवाले नमक पर जो बट्टा माँगा और दिया जाता है, वह बराबर कम होता नज़र आता है।

नमक-करके* लादे जानेकी वजहसे पिछले ५० सालोंमें नमकका

* हिन्दुस्तानके मवेशियों और दूसरे चौपायोंके लिए कुछ नमककी ज़रूरत :

सन् [illegible]की सेन्ससके मुताबिक़ हिन्दुस्तानके मवेशियोंकी तादाद २१ करोड़ ५० लाख थी। रोज़के आध औंस नमकके हिसाबसे, जो सालका २२ पौण्ड होता है, इन मवेशियोंके लिए हर साल क़रीब ४ करोड़ ७३ लाख मन नमक ज़रूरी होगा। इसी तरह अगर यह हिसाब लगायें कि हर १० सेर दूध पर दुधार मवेशीके लिए पौन छटाँक नमककी ज़रूरत होती है, तो हिन्दुस्तानमें हर साल पैदा होनेवाले १०० करोड़ मन दूधके लिए सिर्फ़ दुधार ढोरोंके वास्ते १ करोड़ १२ लाख मन नमककी ज़रूरत होगी। इसलिए हिन्दुस्तानके मवेशियों और दूसरे चौपायोंके लिए सालके सिर्फ़ ३ करोड़ मन नमकका अन्दाज़ा बहुत ही कम और ग़लत अन्दाज़ा है। ढोरोंकी तन्दुरुस्तीके जानकारोंका कहना है कि जिस नाकाफ़ी मिक़दारमें मवेशियोंको नमक मिलता है उसकी वजहसे उनकी तन्दुरुस्ती में और नस्लके प्रकारमें फ़र्क़ पड़ा है, यानी दोनोंकी हालत गिरती चली गई है।

* परिशिष्ट (अ) भी देखिये।

साल	ख़र्च फ़ी आदमी
१७९३	११.९० पौण्ड
१८०३	११.२७ ,,
१८२३	११.४४ ,,
१८३३	८.७४ ,,
१८४३	९.० ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खर्च एक चौथाई कम हो गया है, यानी जहाँ पहले एक आदमी सालमें १२ पौण्ड या ६ सेर नमक खाता था, वहाँ अब ९ पौण्ड या ४॥ सेर ही खा पाता है। और इस बीच देहातके एक मज़दूरको अपने घरके लिए जितना नमक लगता है, उसकी क़ीमत दो महीनोंकी उसकी मज़दूरीके क़रीब हो जाती है, यानी उसकी साल भरकी कमाईका छठा हिस्सा सिर्फ़ नमक पर खर्च हो जाता है (जे० डेनफ़ोर्ड, १८३६)।

हिन्दुस्तानमें कुल ५ करोड़ १० लाख मन नमक बनता है और उसमें कारखानों और मवेशियोंका हिस्सा भी शामिल है। इसको खयालमें रखते हुए फ़ी आदमी, औसतन् क़रीब १० पौण्ड नमक लोगोंके हिस्से आता है। गरम मुल्कमें रहनेवाले लोगोंके लिए इतना नमक उनकी ज़रूरतसे बहुत कम है।*

नमककी बुनियादी खपतमें इतनी कमी हो जानेके बावजूद कनारामें और वेदारण्यम्के[1] नज़दीक खास तौर पर महकमे एक्साइज़की तरफ़से लोगोंको इसलिए तैनात किया जाता है कि वे उस नमकको, जो क़ुदरत तैयार करती है और जो इन्सानोंके खाने लायक़ होता है, जल्दी-से-जल्दी या तो समन्दरमें बहा दें या दूसरी तरहसे उसको बेकार बना दें।

नमकके उद्योगको सायन्सके ढंग पर संगठित करनेके मामलेमें सरकारने अपनी तरफ़से कोई पहल शायद ही की हो। जिन तरीक़ोंसे वह नमक तैयार कराती है वे बहुत बेढंगे, पुराने और बेकाम हैं। नमक बनानेके लागत-खर्चसे इन्तज़ाम और निगरानीका खर्च कहीं बढ़ जाता है। मसलन्, साँभर नमकको बनानेमें फ़ी मन सिर्फ़ ८·६ पाई खर्च आता है, लेकिन इन्तज़ाम और निगरानी वग़ैराका खर्च शामिल कर देने पर यही रक़म फ़ी मन ३ आना २·३४ पाई हो जाती है।[2] दिल्लीमें इन्तज़ाम वग़ैराका खर्च लागत-खर्चके मुक़ाबले ६२३% पड़ता है।

साँभर झीलसे सादा नमक निकाल लेनेके बाद उसकी मिट्टीसे जो दूसरी क़ीमती चीज़ें तैयार की जा सकती हैं, उन्हें तैयार करनेके लिए अब तक कुछ भी नहीं किया गया है। नतीजा यह हुआ है कि लाखों टन सोडियम सल्फ़ेट, सोडियम कार्बोनेट और सोडा बाय-कार्बोनेट यों ही बरबाद होने दिये जाते हैं, जब कि देशके कल-कारखानोंके लिए बाहरसे इन चीज़ोंको मँगानेके वास्ते हर साल बहुत बड़ी तादादमें रुपया बाहर चला जाता है।

२

एक ज़माना था जब हिन्दुस्तानमें हाथ-कताईके बाद नमक बनानेका धन्धा ही सबसे बड़ा धन्धा था। आज इस चीज़को बहुत कम महसूस किया जा रहा है। इसी तरह इस धन्धेको कुचलने और इसे चूसनेकी कहानी भी कम दर्दनाक नहीं है।

जब नमकका इजारा ईस्ट इण्डिया कंपनीके हाथमें था तब मोलंगियोंके शोषणके खिलाफ़ बहुत-सी आवाज़ें दी गई थीं। ता० २६-९-१८७४को लिखे अपने एक खतमें बेपारी बोर्डने गवर्नर जनरल-इन-कौंसिलको लिखा था:

"आपके माननीय बोर्डने आपकी यह राय ज़ाहिर की है कि अड़ङ्गा पद्धतिके बारेमें आपने जो जाँच-पड़ताल की है, उससे बिलाशक यह बात साबित हुई है कि वह एक ज़बरदस्तीका तरीक़ा है और असलमें वह तरीक़ा रेगुलेशनकी स्पिरिटके और साथ ही इन्साफ़ और अच्छी नीतिके भी खिलाफ़ है।"

चौबीस परगनोंके एजेण्टने अपनी रिपोर्टमें लिखा था: "मुलंगियोंको ७॥ महीनोंकी मज़दूरीके लिए सिर्फ़ ६ रुपये बतौर मेहनतानेके दिये जाते थे, यानी नमक बनानेके पूरे मौसिममें उन्हें इतनी मज़दूरी दी जाती थी। इसकी वजहसे मुलंगी लोग एजेन्सीके हमेशाके ग़ुलाम-से बन गये थे।" "इन्साफ़के लिए खास अदालतें क़ायम की गई थीं और उनके लिए यह दावा किया जाता था कि वे मुलंगियोंके हितोंकी हिफ़ाज़त करनेके लिए क़ायम की गई हैं। लेकिन इन अदालतोंने उन मुसीबतज़दा अभागोंको नाउम्मीद करनेमें ही मदद पहुँचाई, जो और भी ज़्यादा ज़ोर और ज़ुल्मके डर और अँदेशे से न तो कोई फ़रियाद करते थे और न करनेकी हिम्मत ही जुटा पाते थे।"

उन दिनों हिन्दुस्तानमें नमक बनानेका काम इतना फैला हुआ था कि नमकके इजारेको सलामत रखनेके लिए जंगली क़ानून बनाये गये थे। मसलन्, सन् १७७८के नमक क़ानूनों और सन् १७९३के रेगुलेशनके मुताबिक ज़मीनके मालिकोंसे यह कहा गया था कि वे ग़ैर-क़ानूनी नमक बनाने या उसे बाहरसे मँगानेवालोंके बारेमें रिपोर्ट करें। अगर रिपोर्ट न की गई और दीवानी अदालतमें यह साबित हो गया कि उनकी जानकारीमें, मगर आँख आड़े कान करने से, किसी जगह नमक बनाया गया था या बाहरसे मँगाया गया था, तो उनको इसके लिए सज़ा दी जायगी।" सन् १८०१के छठे रेगुलेशनके मुताबिक रिपोर्ट न करने पर और यह साबित हो जाने पर कि नमक बनाया-था या नमकके कारखाने खोले गये थे, ५ हज़ारका जुर्माना किया जा सकता था। १८१९के दसवें रेगुलेशनमें कहा गया है कि अगर किसीकी ज़मींदारीमें नमकका कारखाना चलता हो और ज़मींदार जान-बूझकर इस बातको छिपाये और सरकारको इसकी खबर न दे, तो उसे हरएक ऐसे कारखाने पर ५ सौ रुपयेका जुर्माना किया जायगा। दफ़ा ३१के मुताबिक़ हरएक छोटे-से-छोटा चूल्हा भी 'खलारी' क़रार दिया गया था,

* देखिये परिशिष्ट (आ)

१. देखिये परिशिष्ट (इ)

२.

जगहका नाम	लागत खर्च	इन्तज़ाम वग़ैराके साथ कुल क़ीमत	सारे सालकी पैदावारका औसत खर्च	बिक्रीकी क़ीमत*
साँभर	०-०-८६.४	०-२-६.६०	०-३-२.३४	०-४-३
डिडवाना	०-१-९.८४	०-२-३.८०	०-२-८.०२	०-२-६
पचभद्र	०-२-२.१९	०-२-१०.८२	०-३-०.१२	०-३-०
खेवड़ा	०-२-८.६९	०-३-३.६५	०-३-४.४२	०-४-३
वरछा	०-२-१०.९५	०-२-४.४२	०-२-४.४३	०-४-३
कालाबारा	०-२-१०.३०	०-३-०.८८	०-३-३.८८	०-४-३

हिन्दुस्तान सरकारके महकमे नमकने नीचेके जो आँकड़े दिये हैं वे भी बहुत ही आँख खोलनेवाले हैं:

	रु० आ० पा० फ़ी मन
महसूलकी दर	१—९—० "
फ़ी आदमी महसूलका बोझ:	०—४—० "
१९४४-४५में सरकारी ज़रियोंसे पैदा होनेवाले नमककी लागत:	०—४—४ "

जगह	फ़ी मन बिक्रीकी थोक दर
दिल्ली	रु. ३—८—४
इलाहाबाद	,, ३—३—०
कलकत्ता	,, ६—८—०
मद्रास	,, २—१—१
बम्बई	,, ३-१२-१०
सिंध	,, २—८-१०

इन आँकड़ोंसे दो मुद्दे सामने आते हैं। एक तो यह कि नमक बनानेके सरकारी गोदामोंमें नमककी लागत क़ीमत १९४४-४५ में ४ आ० ४ पा० फ़ी मन पड़ी थी, जब कि दिल्लीमें उसकी थोक दर फ़ी मन रु० ३-८-४ थी। इसमेंसे महसूलके रु० १-९-० कम कर देने पर जो रु. १-११-० बच रहते हैं वे लागत क़ीमत पर चढ़े हुए व्यवस्था-खर्चके सूचक हैं। यानी लागत पर क़रीब ६२३ फ़ी सदी व्यवस्था-खर्च बैठता है। कलकत्तेमें यही १,५९२ फ़ी सदी है!

दिल्ली और कलकत्तेमें नमककी क़ीमतके बीच यह इतना फ़र्क़ क्यों? क्या इसलिए कि लिवरपुलसे आया हुआ ज़्यादातर नमक कलकत्तेमें खाली किया जाता है और क़रीब क़रीब सबका-सब बंगालमें ही खपता है? इस ग़ैर-क़ुदरती या बनावटी आमदको मदद देनेके लिए क्या ४३ करोड़ों पर टैक्स बैठाना ज़रूरी है? नमक पर सरकारका जो इजारा है उसकी भीषणताका इससे बढ़कर और क्या सबूत हो सकता है? अगर बंगालवालोंको बिना महसूल या परवानेके नमक बनानेकी आज़ादी मिल जाय, तो वे अपनी ज़रूरतका तमाम नमक एक या दो आना फ़ी मनके हिसाबसे पा जायँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसकी वजहसे खाना पकानेके बरतनमें थोड़ा नमकीन पानी उबालना भी जुर्म था और इसके लिए ज़मींदारको ५ सौ रुपयेका जुर्माना देना पड़ सकता था। १८२६के दसवें रेग्युलेशनने पानीमें भिगाई हुई घासको जलाकर उसकी खारी राखको खानेके साथ मसालेके तौरपर बरतना भी १८१९के १०वें रेग्युलेशन तहत गुनाह करार दे दिया गया था और इसी तरह समुद्रके पानीको सुखानेके लिए बनाई गई क्यारीको नमकका कारखाना माना जाता था।

सन् १८३८का २९वां रेग्युलेशन ऊपर बताई सज़ाओंमें इजाफ़ा करता है: "इस तरहकी जानकारीके लिए यह ज़रूरी न होगा कि वह सीधे-सीधे साबित की जाय, बल्कि जजको यह हक़ होगा कि वह सब बातोंका खयाल करके अपने विवेकसे इसका फैसला करे।" अगर कोई ज़मींदारी पत्तीवाली होती थी, तो तमाम पत्तीदारों या भागीदारोंमेंसे हरएकको ५ सौ रुपयोंका जुर्माना देना पड़ सकता था।

सन् १८६३में नमक पर सरकारी इजारा उठा दिया गया। इसकी वजहसे सरकारने नमक बनाना छोड़ दिया। साथ ही नमक पर लगनेवाली चुंगीकी वजहसे हिन्दुस्तानमें छूटके साथ नमक बनाने पर रोक लगा दी गई। नतीजा यह हुआ कि थोड़े ही वक़्तमें हिन्दुस्तानी नमककी जगह बाहरसे आये हुए नमकने ले ली। इसका एक नतीजा यह हुआ कि नमकके इजारेके दिनोंमें जो लोग नमक बनानेके काममें लगे हुए थे वे हज़ारों-लाखोंकी तादादमें बेकार हो गये। उनके पास अपनी कोई ज़मीनें न रह गईं और उन्हें मज़दूरीका सहारा लेना पड़ा। गवर्नमेन्ट ऑव् इण्डियाके रेवेन्यू बोर्डके सेक्रेटरी सर सेसिल बीडनने लिखा है: "उड़ीसामें वे अकालके सबसे पहले शिकार बने। उनके पास अपनी कोई जमा-पूँजी नहीं थी, जिसका इस वक़्त वे सहारा लेते . . . अपनी कहनेको खेतीकी कोई उपज उनके पास नहीं थी . . . उनमेंसे बहुतोंको भूखों मरना पड़ा।" और "उनकी बहुत बड़ी तादाद तो इस दुनियासे हमेशाके लिए कूच कर गई।"

यही सख्त पॉलिसी आज भी काम कर रही है। बम्बईके नमक क़ानूनकी दफ़ा ४८ (ए)में दूसरी बातोंके साथ-साथ यह कहा गया है कि नमकका महसूल वसूल करनेवाला कोई भी अफ़सर "जिसे कोई मजिस्ट्रेट डरपोक होनेका गुनाहगार करार देगा, उसे तीन महीने तककी क़ैदकी सज़ा दी जायगी या उसकी ३ महीने तककी तनख्वाह बतौर जुर्मानेके काट ली जायगी या उसको क़ैद और जुर्माना दोनोंकी सज़ा दी जा सकेगी।" इसमें 'डरपोकपन'से सरकारका क्या मतलब है, सो कहीं समझाया नहीं गया है। लेकिन जिस क़ानूनके साथ करोड़ों इन्सानोंका — मर्द, औरत, नौजवान, बूढ़े, अपाहिज और तन्दुरुस्त लोगोंका — सीधा ताल्लुक़ है उसका अमल करवानेके सिलसिलेमें डरपोकपनका क्या मतलब हो सकता है उसे समझना किसीके भी लिए मुश्किल नहीं होना चाहिये।

नमक-करको हिन्दुस्तानका 'गैबेल' (वह नमक-कर जो क्रान्तिसे पहले फ्रान्समें लगाया गया था) कहा गया है। फ्रान्समें जो इन्क़लाब हुआ उसकी वजहोंमें एक वजह बेहद बढ़ा हुआ नमकका महसूल भी था। हिन्दुस्तानका इतिहास भी फ्रान्सके इस इतिहाससे बहुत जुदा नहीं रहा है।

नमक बनाने पर रोक लगानेसे पहले जिन जगहोंमें हमारे यहाँ नमक बना करता था वहाँ बारिशके पानीकी हमेशा ही तंगी रहा करती थी और दूसरी तरहसे भी वहाँके हालात खेती या कारतकारीके लिए अनुकूल नहीं थे। चुनाँचे हज़ारों-लाखों ग़रीबोंको नमकके धन्धेसे बढ़िया रोज़ी मिला करती थी। अकेले बालासोर और कटकमें किसी ज़मानेमें ४४ हज़ार लोग नमक बनाकर अपनी गुज़र चलाते थे। नमक बनाने पर रोक लगा देनेका नतीजा यह हुआ कि ये लोग एक बड़ी तादादमें बेकार हो गये और दरअसल कहीं-कहीं तो इसकी वजहसे लोगोंमें इतनी बेक़रारी पैदा हो गई कि उन्होंने बलवे कर दिये और सरकारको बड़ी सख्तीके साथ उनको दबा देना पड़ा।

सन् १८४४ में सूरतमें नमकका महसूल ॥।) मनसे बढ़ा कर १) मन कर दिया गया। इससे वहाँ बलवे हुए और वे दबा दिये गये। बादमें महसूल फिर पहलेकी तरह ॥।) मन कर दिया गया। उड़ीसामें सन् १८१७में नमकका इजारा ज़बरदस्ती लादा गया। इससे सारे उड़ीसामें जहाँ-तहाँ बलवे हुए और उनको 'ज्यादा-से-ज्यादा सख्ती'के साथ दबा देना पड़ा।

नीचे नमक बनानेके केन्द्रों (मरकज़ों) का जो मुख्तसर बयान दिया जाता है उससे पता चलेगा कि हमारे देशमें यह धन्धा कितने बड़े पैमाने पर फैला हुआ था और आज भी नमक बनानेके ज़रियों का विकास करने और मुल्क भर में उसे फैलानेकी कितनी गुंजाइश रही है। एक ज़माना था जब इन जगहोंमें खूब नमक बनाया जाता था, लेकिन जबसे आज़ादी के साथ नमक बनाने पर रोक लगाई गई है तबसे ये तमाम जगहें बेकार पड़ी हैं।*

हिन्दुस्तान एक ऐसा देश है, जहाँ लोग ख़ुद ही अपनी बस्तियोंके आसपास बहुतायतसे और नकुछ-सी लागतसे नमक बना सकते हैं। क्योंकि यहाँ सैकड़ों-हज़ारों खारी झीलें हैं, खारे पानीके सोते हैं, खारी कुएँ हैं और खारी मिट्टी है। हज़ारों मील लम्बे समन्दर के किनारों की तो बात ही छोड़िये। नमक बनाने के इतने सब ज़रियोंको अछूता और अनविकसा छोड़कर नमककी खानों की शक्ल में मुल्क को जो विरासत मिली है, उसको खाली करते जाना राष्ट्रके धन को बरबाद करना है, और यह एक बहुत बड़ा गुनाह है।

इसलिए थोड़ेमें यह कहना होगा कि:

१. किसी तरहका महसूल चुकाये या परवाना लिये बिना आज़ादीसे नमक बनानेके लिए लोगोंको बढ़ावा दिया जाना चाहिये। और, इस बातकी कोशिश की जानी चाहिये कि सरकारके दबा देनेसे नमक बनानेकी जो बड़ी-बड़ी जगहें आज बेकार पड़ी हैं, और जहाँ किसी ज़मानेमें बहुतायतसे नमक बनता था, वहाँ फिरसे नमक बनानेका काम शुरू करवाया जाय। अगर ऐसा हुआ तो लोगों और मवेशियोंके लिए जितने नमककी ज़रूरत है वह सब-का-सब, जहाँ-का-तहाँ, बना लिया जा सकेगा और चूँकि उसे एक जगहसे दूसरी जगह ले जानेकी ज़रूरत न होगी और उसपर निगरानी रखनेका खर्च और दलालोंकी दलाली नहीं चढ़ेगी, इसलिए वह क़रीब एक आना मनके हिसाबसे लोगोंको मुहैया किया जा सकेगा। साथ ही लोगोंके इस तरह बड़े पैमाने पर नमक बना लेनेसे सरकारकी आमदनीको भी कोई धक्का नहीं पहुँचेगा, बशर्ते कि वह बढ़िया-साफ़ नमक बनानेका काम अपने ज़िम्मे ले ले।

२. लिवरपुल और चेशायरसे हिन्दुस्तानमें नमक बुलाना तो एक खतरनाक और वाहियात चीज़ है। इसका अपना एक गन्दा इतिहास है।[१] बाहरसे आनेवाले इस नमक पर ज़बरदस्त आयात-कर (आमद-महसूल) लगाकर इसको फ़ौरन ही रोकना चाहिये।

३. अगर ऐसा हुआ तो इसकी वजहसे हर साल मुल्कसे ४५ लाख रुपयोंका बाहर जाना रुक जायगा।

४. देशी रियासतोंमें लोगोंको आज़ादीके साथ नमक बनानेकी इजाज़त देनेसे सरकारको हर साल क़रीब ३४ लाख रुपयेकी बचत होगी। आज यह रुपया सरकारकी तरफ़से मुख्तलिफ़ रियासतोंको बतौर मुआवज़ेके इस ग़रज़से दिया जाता है कि वे अपनी हदमें किसीको नमक न बनाने दें।

५. खानेके नमकके अलावा दूसरी तरहके जो नमक या खार हिन्दुस्तानकी मुख्तलिफ़ खारी मिट्टियोंमें पाये जाते हैं या नमकीन

* देखिये परिशिष्ट (ङ)

१. देखिये परिशिष्ट (उ)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानीवाली झीलोंमें नमकके साथ अशुद्धरूपमें मिलते हैं, उनको तैयार करानेका काम सरकार अपने ज़िम्मे ले। साथ ही सरकारको चाहिये कि वह सायन्सके ढंग पर मिट्टीसे आल्कली और केमिकल्स बनानेका काम अपने हाथमें ले और बाहरसे आनेवाली चीज़ों पर आयात-कर बैठाकर उनका आना रोके।

६. मौजूदा एक्साइज़ डिपार्टमेण्ट फ़ौरन खतम कर दिया जाय और नमक बनाने और उसमें तरक़्क़ी करनेके कामका ज़िम्मा इण्डस्ट्रीज़ डिपार्टमेण्टको सौंप दिया जाय। महकमे एक्साइज़का मौजूदा अमला अपनी तालीम और तौर-तरीक़ोंकी वजहसे नमकके उद्योगको शास्त्रीय ढंगसे या बेपारी [ढंग] पर चलानेके क़ाबिल नहीं है। इस महकमेके बड़ी-बड़ी तनख़्वाह पानेवाले अफ़सरोंको तनख़्वाह देनेमें जो रुपया ख़र्च किया जाता था, उसका उपयोग नमक-कर उठानेसे होनेवाली आमदनीकी कमीको पूरा करनेमें किया जाय, या सायन्सके ढंगसे और किफ़ायतके साथ नमकके उद्योगका संगठन करनेके लिए जो खोज और छान-बीन करनी ज़रूरी है, उसका इन्तज़ाम करनेमें इस रुपयेको लगाया जाय।

नमककी चुंगी उठा देनेसे आमदनीमें जो सीधी कमी होगी उसकी बहुत-कुछ भरपाई इन तरीक़ोंसे हो जायगी और आख़िरकार कुल मिलाकर मुल्कको इस शकलमें फ़ायदा ही होगा कि लोग न सिर्फ़ सस्ता नमक पा सकेंगे, बल्कि जिन उद्योग-धन्धोंको, खेतीको और मवेशियोंको आज पूरा-पूरा नमक और दूसरे खार नहीं मिलते हैं, उन्हें भी वे सस्तेमें [ख़रीद] सकेंगे।[1] साथ ही मुल्कके जिन हिस्सोंमें खेती नहीं की जा सकती, और इसीलिए जहाँ बार-बार अकाल पड़ा करते हैं, वहाँके लाखों लोगोंको इसकी वजहसे काम मिलने लगेगा। इस तरह मुल्कमें चौतरफ़ा तरक़्क़ी नज़र आयेगी — ज़मीनकी हालत सुधरेगी और साथ ही उसपर बसनेवाले इन्सानों और हैवानोंकी तन्दुरुस्ती भी तरक़्क़ी करेगी।

दिल्ली, १३-५-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

परिशिष्ट अ

नमक-कर और नमककी खपत

सन् १८९५में कलकत्तेमें कांग्रेसके मंचसे बोलते हुए स्व० श्री गोपालकृष्ण गोखलेने कहा था:

"सन् १८८२में यानी उस वक़्त कि जब नमकका महसूल घटाकर [उस] जगह दो रुपया फ़ी मन नहीं किया गया था, हिन्दुस्तानमें २ करोड़ ९० लाख मन नमक ख़र्च होता था। १८८२में देशभरमें नमक-कर घटाकर २ रु० मन कर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि फ़ौरन ही नमककी खपत बढ़ने लगी। सन् १८८७में, जब लॉर्ड डफ़रिनने फिरसे महसूल बढ़ाकर फ़ी मन २॥. रु० किया था, यह खपत ३३७ लाख मन थी। इस तरह कर बढ़ानेका नतीजा क्या हुआ? लॉर्ड रिपनके ज़मानेमें नमककी जो खपत बराबर बढ़ती चली [आ रही] थी वह एकदम थम गई और तबसे लेकर आज तक यानी इन ८ सालोंके अरसेमें खपत ज्योंकी त्यों रही है, और पिछले साल [देशमें] कोई ३४१ लाख मन नमक खपा था। . . . . इससे हमें [पता] चलता है कि लॉर्ड रिपनने महसूलमें जो कमी की थी उसकी [बदौलत] पाँच सालके अन्दर मुल्कमें ५० लाख मन नमक ज़्यादा [ख़र्च] होने लगा था, जब कि डफ़रिनके ज़मानेमें बढ़े हुए महसूलकी [वजहसे] आठ सालमें सिर्फ़ ४ लाख मनकी बढ़ती हुई। इस दरमियान [आबादी] बराबर बढ़ती गई है। इसलिए हक़ीक़तमें आप देखेंगे कि [इन] आठ सालोंमें नमकका ख़र्च कम हो गया है।"

इसके बाद फ़ी आदमी नमककी खपतके ख़ास सवालकी चर्चा [करते] हुए श्री गोखलेने कहा था:

"बड़े-बड़े डॉक्टरोंकी यह राय है कि तन्दुरुस्त ज़िन्दगीके लिए [फ़ी] आदमी हर साल १२ पौण्ड नमक ज़रूरी है। लॉर्ड लॉरेन्सकी [हुकूमतके] दिनोंमें फ़ी आदमी १२ पौण्ड नमक ख़र्च होता था। उसके बाद उसमें कमी होने लगी। लॉर्ड लिटनके राज्यके अख़ीर-अख़ीरमें फ़ी आदमी नमकका औसत ख़र्च कम होते-होते क़रीब ९ पौण्ड रह गया था। इसके बाद लॉर्ड रिपनका उपकारी राज शुरू हुआ। उस वक़्त, जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, नमकका महसूल घटाया गया और सारे देशमें उसकी दर दो रुपया कर दी गई। देखते-देखते नमकका ख़र्च बढ़ गया। नतीजा यह हुआ कि १८८७में फ़ी आदमी औसत ख़र्च १०-१/३ पौण्ड हो गया। लेकिन बादमें बढ़ाये गये महसूलकी वजहसे इसमें फिर कमी हो गई है और पिछले साल फ़ी आदमी ख़र्चका आँकड़ा ९॥ पौण्ड पर ही रुक गया है।"

परिशिष्ट आ

नमक और तन्दुरुस्ती

ठण्डी या मातदिल आबहवावाले मुल्कोंके मुक़ाबले गरम आबहवावाले मुल्कोंमें इनसानको तन्दुरुस्त रहनेके लिए ज़्यादा नमककी ज़रूरत पड़ती है। इसके अलावा, जब लोग आम तौर पर पूरे-पूरे या अधपके साग-तरकारी खानेवाले होते हैं तब तो शरीरके अन्दर नमककी मिक़दार को ठीक बनाये रखनेके लिए ज़्यादा मसालेकी ज़रूरत रहती है।

नमक पर लिखे गये अपने एक लेखमें मि० कार्वर कहते हैं: "कोई साल दो साल पहले हिन्दुस्तानके अंग्रेज़ फ़ौजी अफ़सरोंने फ़ौजोंको ज़्यादा नमक देना शुरू किया; क्योंकि उन्हें यह पता चला था कि गरमियोंमें नमक फ़ौजियोंको तन्दुरुस्त रखता है और उन्हें लूसे और थकावटसे बचाता है। गरमियोंमें बदनसे पसीनेके रास्ते जो बहुत-सा नमक बाहर चला जाता है उसकी इस तरह भरपाई हो जाती है। डॉक्टरोंने पता लगाया है कि गरमीमें काम करनेसे पसीनेकी राह जो नमक निकल जाता है उसकी वजहसे लोगोंमें रग-पट्ठोंके सिकुड़नेकी शिकायत पैदा हो सकती है। लड़ाईके दिनोंमें अमेरिकाके मज़दूरोंको खानेके नमककी गोलियाँ दी जाती थीं, ताकि वे उन्हें पानीमें घोलकर पी सकें और नमककी कमीकी भरपाई कर सकें।"

मि० कार्वर और कहते हैं: "नमकके बिना तन्दुरुस्ती और जोश ठण्डा पड़ जाता है। हॉलैण्ड में बीचके ज़मानेमें लोगोंको जो क़ानूनी सज़ायें दी जाती थीं, उनमें एक सज़ा उनको नमक न देनेकी थी, जिसकी वजहसे लोग सुस्त हो जाते थे और बीमार पड़ते थे। किसी ज़मानेमें स्वीडनमें मौतकी सज़ाके बदले एक महीने तक नमक न खानेकी सज़ा दी जाती थी। गुनहगारोंको अलोनी ख़ूराक खानी पड़ती थी। नतीजा यह होता था कि आम तौर पर वे मर जाया करते थे।

घेरों और अकालके दिनोंमें भी नमककी कमीसे लोग परेशान होते हैं और बीमार पड़ते हैं। जिन मुल्कोंमें लोग ज़्यादातर दूध और मांस (गोश्त) खाकर ही रहते हैं, (जहाँ गोश्त कच्चा या भूना हुआ खाया जाता है, जिससे उसमें पाया जानेवाला नमक बरबाद न हो) वहाँ यह हो सकता है कि आदमी खानेके मामूली नमकके बिना अपना काम चला ले। लेकिन जो लोग अन्न और साग-पात खाकर जीते हैं उनके लिए तो नमक ज़रूरी ही है।"

ख़ूराककी इस ज़रूरी चीज़ पर डाला गया महसूल हिन्दुस्तानके करोड़ों ग़रीबोंको कितना नुक़सान पहुँचाता है इसका पता नीचेके एक मज़मूनसे लगेगा। २६ नवंबर, १८५२ के दिन बम्बईके किसानोंने बम्बई सरकारको एक अर्ज़ी दी थी। अगले साल हाउस ऑव कामन्सकी सिलेक्ट कमेटीके सवालोंका जवाब देते हुए श्री रुस्तमजी वीकाजीने इस अर्ज़ीको पढ़ सुनाया था। अर्ज़ीमें कहा गया था: "अपने खेतोंमें पैदा होनेवाली फ़सलसे हमको सालमें ८ महीनोंके लिए काफ़ी अन्न मिल जाता है। बाक़ीके ४ महीनोंमें हमको साग-पात पर जीना पड़ता है। जब नमक पर महसूल नहीं था, तब हम नमक और मिर्च डालकर इस साग-सब्ज़ीको पका लिया करते थे। लेकिन जबसे नमक पर महसूल डाला गया है, तबसे हमको इस मामूली सुख-सुभीतेसे भी हाथ धो लेने पड़े हैं।"

१. देखिये परिशिष्ट ऊ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परशिष्ट इ

.कुदरती नमकका नाश

सन् १८६३में हिन्दुस्तानके नमकवाले हलक़ोंके वारेमें लिखते हुए मि० ब्रूसने लिखा है : "गंजाम और राजमहेन्द्रीमें ये दलदल बहुतायतसे पाये जाते हैं," जबकि तंजोर और मछलीपट्टममें "खास तौरपर बढ़िया क़िस्मका नमक बनता है ।" इन ज़िलोंमें यह .कुदरती नमक, जैसा कि वह कहा जाता था, "जितना चाहो उतना बनाया जा सकता था । वह बढ़िया क़िस्मका और कम दामोंवाला होता था । शायद उसकी क़ीमत औसतन् हर १२० मनकी रु० ४ होती थी, या यों कहिये कि १ मनका आध आना ।" कालीमीर पॉइण्टके उत्तर और पश्चिममें वेदारण्यम्के इर्द-गिर्द जो बड़े-बड़े दलदल हैं, और जो ३० मीलसे भी ज़्यादा लम्बाईमें फैले हुए हैं, उनमें एक क़िस्मका नमक बनता था, जो "बहुत सफ़ेद और खास तौरपर बढ़िया दानोंवाला होता था ।" मि० टी० ए० बार्बरने लिखा है कि सरकारकी पॉलिसीने मलाबारके दरियाई नमकको जितना नुक़सान पहुँचाया, उससे कहीं गहरा नुक़सान उसने इस .कुदरती नमकको पहुँचाया । **क्योंकि यह नमक अपने आप बनता था और इसलिए इस पर कोई रोक नहीं लगाई जा सकती थी । चुनाँचे सरकारने उसको सब-का-सब नष्ट करनेका तरीक़ा अख्तियार किया,** ताकि कोई उसे चोरी-छिपे ले न जा सके । इस पॉलिसीके हक़में दलील यह दी गई कि जिन जगहोंमें ऐसा नमक बनता था, वे बहुत दूर-दूर बिखरी थीं और आमदरफ़्तकी उन दिनोंकी हालतमें वहाँ तक पहुँचना आसान नहीं था । लेकिन सन् १८७६में नमकके सवाल पर ग़ौर करनेके लिए जो कमीशन बैठाया गया था उसने यह हक़ीक़त दर्ज की थी कि कहीं-कहीं इस तरह बना हुआ नमक इकट्ठा किया जाता था और कारखानोंमें बनाये नमकके मुक़ाबले, खासकर वेदारण्यम् नमकके मुक़ाबले, कम क़ीमतमें बिकता था । सन् १८५९में सरकारने कलेक्टरोंके नाम एक गश्ती चिट्ठी भेजकर उनसे पूछा था कि वे यह बतायें कि .कुदरती नमकके बारेमें फ़िलहाल और आगे वे क्या करना चाहते हैं । लेकिन जो जवाब सरकारके पास पहुँचे उन पर कोई खास कार्रवाई नहीं की गई, और कहीं-कहीं नमककी बरबादी और कहीं उसका इकट्ठा किया जाना पहलेकी तरह जारी रहा ।

परिशिष्ट ई

पचभद्रसे ८ मील दूर तिलवाड़ा नामकी जगहमें बढ़िया क़िस्मका बहुत ज़्यादा नमक बनता था और वह तिलवाड़ी नमकके नामसे मशहूर था । हुण्ड्र, लिम्बू और पधारू नामके गाँवोंमें खारे पानीके ऐसे तालाब हैं, जिनसे नमक बनाया जा सकता है । चितवनाके सामने चरनीमें और चरनीसे वारम्वा तक ऊँची जातका .कुदरती नमक पाया जाता था । मण्डोलासे लेकर आगे तक नदीके पानीमें नमक बहुत बड़ी मिक़दारमें पाया जाता है । इसके सिवा नदीके किनारे-किनारे कई ऐसे नमकीन सोते हैं जहाँ दानेदार नमक अपनी .कुदरती हालतमें पाया जाता है । जोधपुरके फलौदी राजमें और बीकानेरके लोकासुरमें नमककी झीलें हैं । राछोदरा गाँवके पश्चिममें कई मील लम्बी-चौड़ी एक झील है, जिसमें खारे पानीके बहुतसे झरने आकर मिलते हैं । इस झीलसे पैदा होनेवाला नमक साँभरके नमकसे बेहतर होता है, क्योंकि वह ९७-९८ फ़ीसदी साफ़ होता है । किसी ज़मानेमें फलौदी रियासतमें २ लाख मन सादा नमक बनता था । नग्यरमें और जोधपुर रियासतमें ४ सौ वर्ग मीलके घेरेमें ३६ ऐसे गाँव हैं जहाँ खास तौर पर बड़ी सहूलियतके साथ नमक बनाया जा सकता है । रिवासामें १ लाख २५ हज़ार मन नमक बना करता था ।

साँभरसे ३० मील पर रायचूरकी एक खारी झील है और उसके आसपास दूसरी कई खारी झीलें हैं । नसनोदा, पाली, हुमांस, सायाँको, धारासनी, खेड़वा, गूरा, कुचपाक, लालकी, सानोद, रुपवास, बुरयालो, और साम्बोरा नामके गाँवोंमें लाखों मन नमक बनाया जाता था । इनके सिवा अखाड़ी, पर्वत और भाकीगाँव, माझे मण्डोल और जहयालीके लम्बे-चौड़े हलकोंमें भी नमक बना करता था । यहाँ .कुदरती हालतमें इतना ज़्यादा नमक तैयार होता था कि लोग उसे खोद-खोद कर ले जाते थे ।

बीकानेरके चूरू शहरके नज़दीक चाकुर गाँवमें हरसाल २ लाख ५० हज़ार मन नमक तैयार होता था । पोखट्र गाँवमें हर साल ३० हज़ार मन नमक बनता था । मि० यंगने १८९० में दुर्गापुर रियासतमें नमकके २,९९२ कारखानोंकी एक फ़ेहरिस्त तैयार की थी । वहाँ हर साल ७० से ८० हज़ार मन तक नमक बनता था । झाबुआ रियासतमें दो क़िस्मका नमक तैयार होता था जो 'फूल' और 'साधारण' कहा जाता था । इनमेंसे फूलमें ९६ फ़ी सदी और साधारणमें ८८ फ़ी सदी सोडियम क्लोराइड पाया जाता था ।

सन् १८६७ में जैसलमेर रियासतमें ३० हज़ार मन नमक तैयार होता था । सन् १८६७-६८ की सरकारी रिपोर्टमें बताया गया है कि भरतपुर रियासतमें हर साल औसतन् नीचे लिखे मुताबिक़ नमक तैयार होता था :

गटिया	१२,००० मन
कटीला	७५,००० मन
पुरानिया	६,००,००० मन

सन् १८६७ में सुलतानपुर, सदराना, सैयदपुर, महमूदपुर, मुबारकपुर, बशीरपुर, बालपुर, कालियावाज़, जहारपुर और सिलोर गाँवोंमें १,५६५ एकड़के हलक़ेमें नमक बनाया जाता था । खारे पानीके कुओंकी तादाद ३३० थी । इन कुओंसे हर साल औसतन् ५० लाख ५६ हज़ार ५८ मन नमक तैयार हुआ करता था । सन् १८६६ और १८६८ में ६ लाख ९४ हज़ार ३५७ मन नमक बना और बिक्रा; १८७७-७८ में ९ लाख २४ हज़ार ४४२ मन नमक बना था ।

दिल्लीसे ८ मील दूर बुरारी मुक़ाम पर ३० वर्ग मीलके घेरेमें १९ गाँवोंमें कुल २ लाख मन नमक बनता था । इस हलकेके तालाबोंसे हर दो पौण्ड पानीसे १॥ औंस नमक तैयार होता है । इनके अलावा, बासीपुर, अडारी, फ़ीरोज़पुर, घाड़ी और दरियापुरमें भी नमक बनता था । वल्लभगढ़ तहसीलके ३० गाँवोंमें खारी मिट्टीसे नमक बनाया जाता था । रोहतक ज़िलेमें शोरेके ९० कारखाने थे; हाँसी और हिसारमें ५० और शाहपुर ज़िलेमें १९ । ज़िन्द रियासतके कुल १५० गाँवोंमेंसे ७२ गाँवोंमें शोरा बनाया जाता था । भावलपुर रियासतमें राज्यको मुआवज़ेके सालाना ८६ हज़ार रुपये देकर वहाँ नमक बनाना रोका गया था । इसी तरह सन् १८६७में, सालाना मुआवज़ेके ३८ हज़ार रुपये देकर पुदूकोटा स्टेटमें नमक बनाना बन्द किया गया था । सन् १८६७ में मैसूर रियासतकी सरकारको नमककी क्यारियोंसे कुल रु० १३,००७-१२-७ की आमदनी हुई थी । बम्बई इलाक़ेकी वाऊ रियासतकी तरफ़से सरकारको सन् १९२६ में इस मतलबका एक खत लिखा गया था कि अगर ज़रूरी इज़ाजत दे दी जाय तो हर साल वहाँकी ज़मीनसे आसानीके साथ २ लाख मन नमक खोद कर निकाला और बाज़ारमें भेजा जा सकता है ।

कहा जाता है कि किसी ज़मानेमें यू० पी०में नमकके १ हज़ार कारखाने चलते थे । इन कारखानोंकी वजहसे सन् १८६... सरकारी नमककी बिक्रीमें १० लाख मनकी कमी हो गई थी ।

बम्बई इलाक़ेमें, मलाबारमें और कनारामें कुल ६,४३८ नमकके कारखाने थे जो बन्दकर दिये गये । मि० टी० ए० बार्बरकी १८७६में लिखी एक रिपोर्टके मुताबिक़ नमककी पैदावार पर रोक लगा देनेकी वजहसे ६,४३८ आदमी बेकार हो गये थे ।

बंगालमें दरियाके किनारे-किनारे बंगलौर तक और उड़ीसामें ... तक सब जगह नमक बनाया जाता था । सालमें कुल ४४ लाख मन नमक बनता था और उससे ४४ हज़ार आदमियोंको रोज़ी मिलती थी ।

सन् १८६३में मि० ब्रूसने लिखा था कि मद्रासके गंजाम, राजमहेन्द्री और मछलीपट्टम मुक़ामोंमें खारी पानीकी कई झीलें थीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२० मन नमककी लागत ४० रुपया पड़ा करती थी। प्लाउडियानने लिखा है कि वेदारण्यम्के नज़दीक ३० मील लम्बी एक झील थी, जिसमें सफ़ेद दानेदार नमक बनता था। जब लोगोंको नमक बनानेसे रोकनेकी सब कोशिशें नाकाम हुईं, तो नमकको नष्ट करनेका जतन किया गया और इस तरह नमक बनानेका धन्धा खतम हुआ। पश्चिमी समुद्र तट पर टिनेवली ज़िलेके लेविंगपुर, सवतलाकुलम्, उरानी, अलापट्टनम्, आरुमुगेनेरी, किरणपुर, और कुलशेखरपट्टनम्में नमक बनानेके कई कारखाने थे, जो सन् १८४४में बन्द कर दिये गये।

सन् १८४७में सिन्धके थर और पारकर ज़िलोंमें और कच्छके रेगिस्तानमें कई जगह नमक बनाया जाता था। सिन्धके रेगिस्तानकी कुई झीलसे सन् १८४५-४६में ६,९२४ मन नमक बनाया गया था। सिन्धमें ऐसी बहुतसी जगहें हैं जहाँ दानेदार नमक पाया जाता है। मि० बर्कने लिखा है कि कोटरी स्टेशनके नज़दीक नमककी २० मील लम्बी और १५ मील चौड़ी एक खदान है। हिसाब लगानेवालोंने बताया है कि उसमें १ अरब ८४ करोड़ ४१ लाख ५१ हज़ार ४३० मन नमक है। सन् १८७८ और १८७९ तक खारी मिट्टीसे नमक बनाया जाता था। वहाँ खारी मिट्टीसे नमक बनानेकी बेशुमार फैक्टरियाँ थीं। उसी साल नमकका महसूल ८ आने मनसे २॥ रु० मन कर दिया गया और ये सभी छोटी फैक्टरियाँ बन्द हो गईं।

परिशिष्ट उ

लिवरपूलका नमक–एक शैतानियत

मि० एफ़० डब्ल्यू० प्रिडीक्स (असिस्टण्ट एक्ज़ामिनर ऑव् इण्डिया, ई० १८१५)ने इण्डियन टेरिटरीज़की सिलेक्ट कमेटीके सामने गवाही देते हुए साफ़-साफ़ कहा था कि ईस्ट इण्डिया कंपनीने बंगालमें नमककी क़ीमत बढ़ानेके बारेमें जो पॉलिसी अख्तियार की थी उसमें नमकके ब्रिटिश उत्पादकों और बेपारियोंको मदद पहुँचानेका ख़याल बराबर रखा जाता था। पूरबी हिन्दुस्तानके साथके बेपारमें जहाज़ी उद्योगको इस तरहसे नुक़सान पहुँचता था कि विलायतसे चलनेवाले जहाज़ोंके पास मालकी कमी हुआ करती थी। जहाज़का तौल कायम रखनेके लिए अक्सर उसमें पत्थर लादने पड़ते थे। बादमें बाहर भेजी जानेवाली चीज़ोंमें नमक सबसे ज़्यादा मुफ़ीद पाया गया, क्योंकि उससे जहाज़का तौल भी बना रहता था और वह तिजारती मालके रूपमें भी काम आता था। नमक पर बैठाई गई सन् १८३६की सिलेक्ट कमेटीके सामने मि० ऐकिनने, जो ख़ुद जहाज़ोंके मालिक थे, नीचे लिखी गवाही दी थी:

"मि० बैगार्शॉ: क्या आप लिवरपूलके बन्दरगाहमें ऐसे बहुतसे जहाज़वालोंको जानते हैं जो कलकत्ते जानेवाले अपने जहाज़ोंमें फ़ौरन ही नमक लादना बहुत पसन्द करते हों, बनिस्बत इसके कि वे उनको हलके मालके लिए बन्दरगाहके पास रोके रहें? . . . "जी हाँ, और चूँकि मैं मानता हूँ कि कमेटीका मक़सद जानकारी हासिल करना है, न कि किसी ठेकेकी कोई शर्त तय करना, इसलिए मैं यह साबित करनेकी कोशिश करूँगा कि जो सबूत मैंने दिये हैं, वे सही हैं। हमको लिवरपूलसे कलकत्तेतकका भाड़ा क़रीब ५००से ६०० पौण्ड तक मिलता है। क़रीब १ महीना या ६ हफ़्ते तक डॉकमें पड़े रहनेके बदले अगर हमको फ़ी टन एक पौण्डके हिसाबसे नमक ले जानेसे हफ़्तोंके बदले कुछ ही दिनके अन्दर इतनी रक़म मिल सकती हो, तो बिलाशक हम इसको पसंद करेंगे। अगर इससे भी कम दरमें हम नमक ले जाना क़बूल करें तो उससे हमें कोई नुक़सान न होगा। क्योंकि इस तरह जो समय बचता है वह हमें पूरा या ज़रूरतसे ज़्यादा मुआवज़ा दे देता है।"

हिन्दुस्तानकी सरकारके होम डिपार्टमेण्टके सेक्रेटरी मि० फ्रेडरिक हैलीडेकी नीचे लिखी रिपोर्टसे पता चलेगा कि देशमें विदेशी नमककी आमदका बंगालकी रिआया पर क्या असर पड़ा:

"इस चीज़के जानकार आमतौर पर समझते हैं और इसकी तफ़सीलमें जानेवाले इस बातसे इनकार नहीं कर सकते कि इस वक़्त बंगालमें सरकारी नमककी जो क़ीमत है, वह आम लोगोंके लिए बहुत ही ज़्यादा है। वजह इसकी यह है कि सरकार जिस तरीक़ेसे नमक तैयार करवाती है उसमें ज़रूरी किफ़ायतसे काम नहीं लिया जाता — फ़ुज़ूल ख़र्चीकी बात ही छोड़िये। इस तरीक़ेसे नमक बनानेमें लोग तरह-तरहका सट्टा करते हैं, लूट मचाते हैं, और रिश्वत देते हैं। जिस तरीक़ेसे और जिन लोगोंकी मददसे यह सब काम होता है, उसमें इन चीज़ोंको टाला नहीं जा सकता। ऐसी हालतमें इस विषयके जानकारोंका यह पक्का ख़याल है कि अगर सरकार बीचसे हट जाय, नमक पर कोई महसूल न लादा जाय और लोगोंको पूरी-पूरी आज़ादी दे दी जाय, तो बंगाली नमकके देशी कारख़ानादार फ़ौरन ही बाहरसे आनेवाले नमकके मुक़ाबले अपना नमक इतना ज़्यादा सस्ता बेचेंगे कि बंगालमें बाहरसे आनेवाले नमकका एक दाना भी कहीं ढूँढ़े न मिलेगा।"

और यह सब इस हक़ीक़तके बावजूद था कि बंगालमें बननेवाला नमक, जैसा कि जाँचसे मालूम हुआ था, बाहरसे आनेवाले नमकसे बेहतर नहीं, तो उसके जैसा तो था ही।

सन् १९३१में केन्द्रीय धारासभामें बाहरसे आये हुए नमक पर कस्टमड्यूटी लगानेका सवाल उठाया गया था और यह तय हुआ था कि मन पीछे साढ़े चार आनेका महसूल बढ़ाया जाय। इससे सरकारको ३४ लाख रुपयेकी ज़्यादा आमदनी होनेवाली थी। इसकी काट करनेके लिए उन्हीं दिनों इतना ही महसूल दूसरे सूबोंसे बंगालमें आनेवाले नमक पर बैठाया गया। यह सन् '३२–'३३ तक चलता रहा। मार्च १९३३में यह महसूल घटाकर २॥ आना फ़ी मन कर दिया गया और आगे चलकर सन् १९३६में मन पीछे डेढ़ आना ही रह गया। आख़िर १९३८के मई महीनेमें यह महसूल बिलकुल उठा दिया गया। नतीजा यह हुआ कि उस साल बंगालमें अदनसे आनेवाले नमककी मिक़दार ८३ लाख ७८ हज़ार ४४० मनसे घटकर ४५ लाख २४ हज़ार ८२९ मन रह गई। इसके बरख़िलाफ़ जहाँ सन् १९३७–३८में पोर्ट सईद, जीबूटी और रास हैफ़ासे थोड़ा भी नमक नहीं आया था, वहाँ सन् १९३८–३९में पोर्ट सईदसे २१ लाख १२ हज़ार ४८० मन, जीबूटीसे ५ लाख ६१ हज़ार ६३० मन और रास हैफ़ासे ४ लाख ५२ हज़ार ६४० मन नमक आया। सन् १९३७–३८में लिवरपूलने सिर्फ़ २२ मन नमक भेजा था, मगर १९३८–३९में वही बढ़कर १ लाख ६९ हज़ार ७१० मन हो गया और १९३९–४०में २ लाख ३४ हज़ार ८७५ मन नमक आया। हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंसे सन् १९३७–३८में बंगालमें कुल ६२ लाख ३४ हज़ार ५९ मन नमक आया था, यानी बंगालकी कुल ज़रूरतका ३९.४३%। मगर १९३८–३९में यही रक़म सिर्फ़ ५ लाख (?) ४९ हज़ार ८७४ मन रह गई, यानी कुल ज़रूरतका ३८.९६%। लेकिन इसी दरमियान अदनसे आनेवाला नमक, जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, आधा रह गया और लिवरपूलसे आनेवाला नमक २२ मनसे बढ़कर १ लाख ६९ हज़ार ७१० मन हो गया। दूसरे लफ़्ज़ों हिन्दुस्तानके और अदनके नमककी आमदमें जो कमी हुई थी उसकी पूरी भरपाई परदेशके नमकने कर दी।

परिशिष्ट ऊ

खाद और ढोरोंकी ख़ूराककी शकलमें नमक

नमक-करकी वजहसे जिस तरह इन्सानोंके खानेमें नमककी मिक़दार कम हो गई उसी तरह खेतीके लिए खादकी शकलमें बरते जानेवाले नमककी मिक़दार भी बहुत ही घट गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारने मि० रॉबर्टसनको कोयम्बटूर में खेतीकी हालतकी छान-बीन करके उसपर अपनी रिपोर्ट देनेका काम सौंपा था । वे अपनी रिपोर्टमें कहते हैं :

"पेड़-पौधोंके विकास के लिए नमकका पुराने ज़मानेसे उपयोग होता आ रहा है । मुल्कके अन्दरूनी हिस्सोंमें खादकी शक्लमें नमक बहुत ही बेशक़ीमती चीज़ है . . . . प्रत्यक्ष प्रयोगों द्वारा यह बात साबित हो चुका है कि समुद्रतटकी कुछ ज़मीनोंको हर साल फ़ी एकड़ ३०० पौण्ड नमक हवाके ज़रिये मिल जाता है । चूनेकी या दूसरी खादोंके साथ नमक मददगार खादके रूपमें आम तौर पर बरता जाता है । विलायतमें 'मैंगोल्ड सर्ज़ेल' नामक चुकन्दर की जातकी वनस्पति की खेतीके लिए तैयारकी जानेवाली ज़मीनमें दूसरी खादों के साथ एकड़ पीछे ६०० पौण्ड नमक भी डाला जाता है । और चरागाह-वाली जमीन पर १०० पौण्ड नाइट्रेट ऑव् सोडाके साथ २०० पौण्ड नमक ऊपर बुरकनेके लिए बरता जाता हैं । चरागाहवाली ज़मीनकी घासको सुधारनेके लिए और उसको नुक़सान पहुँचानेवाले कीड़ोंको मारनेके लिए कभी-कभी काफ़ी बड़ी तादादमें नमक छिड़का जाता है ।"

इंग्लैण्डकी नमक-महसूल सिलेक्ट कमेटीके सामने गवाही देते हुए सन् १८८८में बैरोनेट सर थॉमस बरनाईने इस चीज़की ताईद की थी । चेस्टर परगनेके मि० वेविनके एक खतका हवाला देते हुए उन्होंने बताया है कि एक खेतमें, जिसके अन्दर फ़सलको नुक़सान पहुँचानेवाली 'कोल्टफ़ुट' नामकी और वैसी दूसरी जंगली घास बहुत बढ़ गई थी, नमकके कारखानेकी राख छिड़कनेका प्रयोग किया गया था । उसका जो नतीजा हुआ उसके बारेमें लिखते हुए वे कहते हैं :

"इस प्रयोगकी वजहसे खेतके अन्दरकी जंगली घास तो बिलकुल साफ़ हो ही गई, मगर साथ ही अनाजकी फ़सल पर भी इसका बहुत बड़ा असर पड़ा । खेतके जिस हिस्सेमें यह खाद डाली गई थी उसमें मामूलीसे क़रीब तिगुनी फ़सल पैदा हुई और दाना भी बहुत बढ़िया पड़ा । सच मानिये कि मैंने इसमें ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं की है ।"

नीचे खेतीके लिए दिये गये हलकी जातके नमकके कुछ आँकड़े दिये जाते हैं, जिनसे पता चलेगा कि किस तरह हमारी खेतीको इस ज़रूरी खादसे महरूम रक्खा जाता है :

१९१४-१९१५	२,६४४ मन
१९१५-१९१६	२,६५५ मन
१९१८-१९१९	कमीकी वजहसे नहीं दिया गया
१९१९-१९२०	१७५ मन
१९२०-१९२१	४०२ मन
१९२२-१९२३	७७२ मन
१९२५-१९२६	२,४०७ मन

मवेशियोंमें नमककी भूख कभी-कभी इतनी ज़्यादा पाई जाती है कि उनको अक्सर राहमें पड़ा हुआ इन्सानों या जानवरोंका मैला खाना पड़ता है ।

नमक पर लिखी गई अपनी छोटी-सी किताबमें मि० रैटन लिखते हैं : "मवेशियोंकी इस ग़ैरमामूली भूखको देखकर मुझको बड़ा अचम्भा हुआ, लेकिन बादमें जब मुझे पता चला कि इन मवेशियोंको हलकी जातकी घास पर निभना पड़ता है और न तो उन्हें अपनी क़ुदरती ख़ूराकमें कोई नमक मिलता है और न मामूली नमक ही खानेको मिलपाता है, तो मेरा अचम्भा काफ़ूर हो गया । क्योंकि इस तरहके मैलेमें नमक काफ़ी मिक़दारमें होता है और कुछमें तो बहुत ज़्यादा पाया जाता है । लेकिन मवेशियोंकी इस आदतके नतीजे बहुत ही खतरनाक होते हैं ।"

आगे चल कर मि० रैटनने बताया है कि किस तरह इसकी वजहसे मवेशियोंमें 'हाइटिड' नामकी बीमारी पैदा होती है । उन्होंने यह भी लिखा है कि इस बीमारीसे मरनेवाले सैकड़ों ढोरोंको किस तरह काफ़ी मिक़दारमें नमक खिलाकर बचाया गया है । "इसका यह मतलब नहीं कि नमक अपने आपमें कोई दवा है, लेकिन उसमें बीमारीको रोकनेकी ताक़त है ।"

सन् १८३६में ब्रिटिश हिन्दुस्तानकी नमक पर बैठाई गई सिलेक्ट कमेटीके सामने गवाही देते हुए बंगाल मेडिकल सर्विसके मि० जॉन क्रॉफर्डने कहा था कि देशमें नमककी यह कमी नमक-करकी वजहसे ही है :

"कस्टम्स-बोर्ड बंगालमें नमककी अधिक खपतके ख़िलाफ़ हमेशासे यह दलील देता आया है कि नमक शरीरके पोषणके सिवा और किसी काममें न तो बरता जाता है और न कभी बरता जायगा । असलमें यह बात बिलकुल ठीक नहीं है । आजकी हालत पर इसे घटाने पर भी यह सही नहीं निकलेगी । बहुत-सा नमक (नाइट्रेट ऑव् सोडा नहीं, क्योंकि उस पर बहुत भारी कर बैठा हुआ है और इसलिए वह इस काममें नहीं लाया जा सकता, लेकिन दूसरी तरहका अशुद्ध और बिना महसूलवाला नमक) घोड़ोंको खिलाया जाता है; सींगोंवाले दूसरे मवेशियों और भेड़ोंको भी खिलाया जाता है; अगर लोग खिला सकें तो इसमें शक नहीं कि वे अपने मवेशियोंको खालिस नमक भी बहुत बड़ी मिक़दारमें खिलाना पसन्द करेंगे ।"

('हरिजन'से)

शिमलेके वाल्मीकि

वाल्मीकिके मानी भंगी हैं, सो तो पाठक जानते ही होंगे । उनके रहनेके घर बहुत ही खराब जगहमें हैं । उनकी ओर कोई ध्यान नहीं देते हैं । राजकुमारीजीने मेहनत की है, लेकिन अकेली वे क्या कर सकती हैं ? मैं तो वहाँ तक जा नहीं सका हूँ । बादशाहखान, जो मेरे साथ रहते हैं, उनको जानेकी विनती की थी । उनका अहवाल बताता है कि इन भाई-बहनोंको बुरी तरह रक्खा जाता है । उन भाइयोंमेंसे कई मेरे पास आ गये थे । अपने दूसरे दुःखोंकी कथा भी उन्होंने सुनाई । मेरा ख़याल है कि अगर उनकी रहनेकी हालतमें दुरुस्ती हो जाय, तो बाक़ी सुधार हो ही जायगा । शिमलाके लोगोंका और म्युनिसिपैलिटीका धर्म है कि इस गन्दगीके बारेमें जो हो सकता है, सो जल्दी ही करे । हम उतने ही शुद्ध हो सकते हैं, जितने हममेंके छोटे-से-छोटे शुद्ध हैं ।

शिमला, १३-५-'४६ **मोहनदास करमचंद गांधी**

विषय-सूची

			पृष्ठ
आयुर्वेद और क़ुदरती इलाज	...	गांधीजी	१३[illegible]
बम्बईमें खादीकी तालीम	...	गांधीजी	१३[illegible]
रोमन लिपि और सांस्कृतिक ग़ुलामी	...	प्यारेलाल	१३[illegible]
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	१३[illegible]
शिमलाकी डायरी	...	प्यारेलाल	१३[illegible]
एक अच्छी याददिहानी	...	गांधीजी	१३[illegible]
हिंसा कैसे रोकें ?	...	गांधीजी	१४०
क्या स्वराज्य ठुकराया जाय ?	...	गांधीजी	१४[illegible]
मुकम्मल शराब-बन्दी	...	गांधीजी	१४[illegible]
ज़बरदस्ती और ज़ुल्म	...	प्यारेलाल	१४[illegible]
शिमलेके वाल्मीकि	...	गांधीजी	१४[illegible]
टिप्पणियाँ			
अहिंसा और खादी	...	मो० क० गांधी	१३[illegible]
हरिजन रसोइये	...	मो० क० गांधी	१३[illegible]
'कॉक्टेल' पार्टियाँ	...	मो० क० गांधी	१३[illegible]
खत लिखनेवालोंसे	...	मो० क० गांधी	१३[illegible]
हिन्दुस्तानी प्रचारक मदरसा, वर्धा	...	श्रीमन्नारायण अग्रवाल	१३[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छान-बीन

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजन-सेवक

दो आना

भाग १०] सम्पादक : प्यारेलाल [अंक १६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २६ मई, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हिन्दुस्तान और उसकी मुल्की ज़बान

गांधीजीने हिन्दुस्तानको बहुतसी चीज़ें दी हैं। मगर शायद कम लोगोंका ध्यान इस तरफ़ गया होगा कि एक बड़ी चीज़ जो हिन्दुस्तानको उनके हाथोंसे मिली, वह उसकी मुल्की ज़बान है। बहुतसी बोलियाँ रखने पर भी हिन्दुस्तान अपनी मुल्की बोली नहीं रखता था। गांधीजीने उसकी यह कमी पूरी कर दी।

अंग्रेज़ी ज़बान हुकूमतके दरवाज़ेसे आई। लेकिन आते ही सारे मुल्क पर छा गई। और इस तरह छा गई कि हमारी तालीमी, इल्मी और समाजी ज़बानकी जगह उसीको मिल गई। अब पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी अपनी मुल्की ज़बानमें बातचीत करना शरमकी बात समझने लगे थे। बड़ाई और इज़्ज़तकी बात यही समझी जाती थी कि हर मौक़े पर अंग्रेज़ी ही ज़बानसे निकले। लोग अपनी निजकी बातचीतमें भी अंग्रेज़ीको छोड़ना पसंद नहीं करते थे।

पिछली सदीके आख़िरी हिस्सेमें मुल्ककी नई सयासी जागृति शुरू हुई और इण्डियन नैशनल कांग्रेसकी नींव पड़ी। अब कांग्रेसके जलसे इसलिए होने लगे थे कि मुल्ककी क़ौमी माँगों और क़ौमी फ़ैसलोंकी आवाज़ दुनियाको सुनाई जाये। लेकिन यह आवाज़ भी अपनी ज़बानमें नहीं उठती थी। अंग्रेज़ीमें उठती थी। हिन्दुस्तान अब इंग्लैण्डको यह बात सुनाना चाहता था कि उसका मुल्क .खुद उसके लिए है, दूसरोंके लिए नहीं है। लेकिन यह बात कहनेके लिए भी उसे अपनी हिन्दुस्तानी ज़बान नहीं मिली थी। वह दूसरों ही की ज़बान उधार लेकर अपना काम चलाना चाहता था।

लेकिन ज्यों ही गांधीजीने मुल्कके सयासी मैदानमें क़दम रखा, अचानक एक नया इन्क़िलाब उभरना शुरू हो गया। अब मुल्ककी आवाज़ .खुद उसकी ज़बानमें उठने लगी और मुल्ककी ज़बानमें बातचीत करना शरमकी बात नहीं रही। उन्होंने लोगोंको याद दिलाया कि शरमकी बात यह नहीं है कि हम अपनी ज़बान बोलें, शरमकी बात यह है कि अपनी ज़बान भूल जायँ। उन्होंने १९२०–२१में सारे मुल्कका दौरा किया और सैकड़ों तक़रीरें कीं, लेकिन हर जगह उनकी तक़रीरोंकी ज़बान हिन्दोस्तानी ही रही।

मुझे याद है कि पहली बड़ी लड़ाईके ज़मानेमें, जब मैं राँचीमें क़ैद था, तो मैंने अख़बारोंमें उस कान्फ्रेन्सकी कार्रवाई पढ़ी थी, जो १९१७में लॉर्ड चेम्सफोर्डने दिल्लीमें बुलाई थी। गांधीजी उस कान्फ्रेन्समें शरीक हुए थे, मगर उन्होंने यह बात बतौर शर्तके ठहराई थी कि वह तक़रीर हिन्दोस्तानीमें करेंगे। उस वक़्त अख़बारोंने इस वाक़याको एक नई और अजीब तरहकी बात ख़याल किया था। लेकिन यह नई बात बहुत जल्द मुल्ककी सबसे ज़्यादा आम बात बननेवाली थी। चुनाँचे आज हम सब देख रहे हैं कि जो जगह २५ बरस पहले अंग्रेज़ी ज़बानकी समझी जाती थी वह हिन्दोस्तानी ज़बानने ले ली है।

अबुल कलाम आज़ाद

[ऊपरका लिखान मेरी तारीफ़के लिए नहीं है। जो आदमी अपना धर्म समझकर कुछ सेवा करता है उसमें तारीफ़ क्या? मौलाना साहब विद्वान् हैं। फ़ारसी और अरबीका ज्ञान रखते हैं। इसलिए उर्दू .खूब जानते हैं। लेकिन वह जानते हैं कि न तो अरबी-फ़ारसीमयी उर्दू हिन्दुस्तानकी आम ज़बान हो सकती है और न संस्कृतमयी हिन्दी ही। इसलिए वह उर्दू और हिन्दीका मेल चाहते हैं और दोनोंको मिलाकर बोलते हैं। मैंने उनसे प्रार्थना की है कि हर हफ़्ते एक छोटा-सा हिन्दुस्तानी लेख देते रहें, जिससे हिन्दुस्तानीका एक नमूना 'हरिजन-सेवक' पढ़नेवालोंको मिलता रहे। उस प्रयत्नका पहला नमूना ऊपरका लिखान है।

नई दिल्ली, २१–५–'४६

मो० क० गांधी]

अंग्रेज़ी भाषाका प्रभाव

"आप हिन्दुस्तानीके प्रचारके लिए अनथक प्रयत्न कर रहे हैं। आपको यह भी अच्छा नहीं लगता कि कोई भारतवासी अपने प्रान्तकी भाषामें या हिन्दुस्तानी भाषाके अतिरिक्त विदेशी भाषामें बोलें या लिखें। लेकिन हमारे कहे जानेवाले क़ौमी अख़बारोंका, जो अंग्रेज़ीमें निकलते हैं और साथ ही हिन्दुस्तानी या प्रान्तीय भाषाका अख़बार भी निकालते हैं, क़ौमी भाषाके प्रचारकी ओर जो बरताव है, उसकी तरफ़ मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूँ और पूछना चाहता हूँ कि इस तरह क़ौमी भाषाको कैसे प्रोत्साहन मिल सकता है? आप किसी अंग्रेज़ी भाषाके क़ौमी अख़बारके ख़र्चका और उसी जगहसे निकलनेवाले देशी भाषाके अख़बार के ख़र्चका मुक़ाबला करें। आप देखेंगे कि जो वेतन अंग्रेज़ी अख़बारके महकमेको दिया जाता है, उसका १०वाँ हिस्सा भी देशी भाषाके महकमेवालोंको नहीं दिया जाता। अंग्रेज़ी अख़बारका संपादक २,०००) माहवार पाता है, और हिन्दी अख़बारका संपादक २००) माहवार भी नहीं पाता। अंग्रेज़ी भाषावालोंको सब सहूलियतें मौजूद हैं। ख़बरें सीधी टेलिप्रिण्टर पर आती हैं और उन्हें कम्पोज़ कर दिया जाता है। हिन्दीवालोंको तरजुमा करना पड़ता है। दुगुनी मेहनत करनी पड़ती है। फिर भी न उनकी क़दर है, न उनको कोई प्रोत्साहन है। फिर वे क्यों अपनी भाषाके लिए सरमारी करें, जब कि वे देखते हैं कि अंग्रेज़ीवालोंकी ही सब जगह क़दर है, और उनको कम मेहनत करने पर भी .खूब पैसे दिये जाते हैं? यह भी देखनेकी बात है कि देशी भाषाके अख़बारोंकी बिक्री अंग्रेज़ी अख़बारोंसे कुछ कम नहीं है, बल्कि ज़्यादा ही होगी। मगर जैसे रेलवेवाले तीसरे दरजेके मुसाफ़िरोंसे सबसे ज़्यादा पैसा कमाते हैं और उनके आरामकी तरफ़ ध्यान न देकर दूसरे और पहले दरजेके मुसाफ़िरोंकी तरफ़ ही ध्यान रखते हैं, वैसा ही बरताव ये अंग्रेज़ी अख़बारवाले हिन्दुस्तानी या प्रान्तीय भाषाके जानकारोंके साथ कर रहे हैं। अपनी बहुत दिनोंकी यह शिकायत 'हरिजन'के ज़रिये जवाब पानेके लिए मैंने आपके सामने रक्खी है।"

यह ख़त एक मेहनती सेवकने लिखा है। उसने जो लिखा है, उसे वह जानता है। लेखककी यह शिकायत सारे हिन्दुस्तानको ज़ाहिर है। बात तो यह है कि अंग्रेज़ीका प्रभाव और मोह कैसे मिटे? उसे मिटाना स्वराज्य की लड़ाईका बड़ा हिस्सा है। नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, तो स्वराज्यके मानी बदलने होंगे। गुलामीमें गुलामको अपने सरदारकी रहन-सहनकी नक़ल करनी पड़ती है। उसे सरदारका लिबास, सरदारकी भाषा वग़ैराकी नक़ल करनी होगी, यहाँ तक कि रफ़्ता-रफ़्ता वह और कुछ पसन्द ही नहीं करेगा। जब स्वराज्य आयेगा, जब अंग्रेज़ी हुकूमत उठ जायेगी, तब अंग्रेज़ीका प्रभाव भी उठ जायेगा। इस बीच जिनके दिलमें अंग्रेज़ीका प्रभाव मुल्कके लिए हानिकर सिद्ध हुआ है, वे सिर्फ़ राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीका या अपनी मातृभाषाका ही प्रयोग करेंगे।

अंग्रेज़ी जाननेवाले राष्ट्रभाषा जाननेवालोंसे १० गुना ज़्यादा कमाते हैं, सो सही है। इसका उपाय भी हमारे हाथोंमें है। और, ऐसे लोगोंका दाम तो अंग्रेज़ी सल्तनतके जानेसे एकदम गिरना चाहिये। असलमें तो ऐसा कभी होना ही न चाहिये था, क्योंकि आज अंग्रेज़ी जाननेवाले जितना लेते हैं उतना देने लायक़ यह मुल्क हरगिज़ नहीं है। हम ग़रीब मुल्कके हैं और जब तक ग़रीब-से-ग़रीब भी आगे नहीं बढ़ते हैं तब तक बड़ी तनख्वाह लेनेका हमें कोई हक़ नहीं है। सही बात तो यह है कि राष्ट्रभाषामें या मातृभाषामें जो अख़बार निकलते हैं उन्हें पढ़नेवाले उनकी क़ीमत घटा या बढ़ा सकते हैं। अगर हम अंग्रेज़ी अख़बारोंको धर्मपुस्तक समझना छोड़ दें और जो अख़बार हमारे प्रान्त या राष्ट्रकी भाषामें निकलते हैं, उन्हींका आदर बढ़ा दें, तो अख़बारवाले समझ जायँगे कि अब अंग्रेज़ी अख़बारकी क़ीमत नहीं रही है। ऐसा कुछ हो भी रहा है। एक ज़माना था कि जब मातृभाषामें या राष्ट्रकी भाषामें निकलनेवाले अख़बार कम पढ़े जाते थे। अब तो ऐसे अख़बारोंकी संख्या बढ़ गई है, ग्राहकोंकी संख्या भी बढ़ रही है, लेकिन जैसे जनताका धर्म रहा है, वैसे ही भाषाप्रेमी अख़बारवालोंका भी कुछ धर्म है। यह दुःखकी बात है कि राष्ट्रभाषामें या प्रान्तोंकी भाषामें या कहिये कि मादरी ज़बानमें जो अख़बार निकलते हैं उन्हें चलानेवाले भाषाका गौरव बढ़ाते नहीं। और उनमें छपनेवाले लेखोंमें मौलिकता कम रहती है। इन दोषोंको दूर करना अख़बारवालोंका ही काम है।

नई दिल्ली, २१–५–'४६　　**मोहनदास करमचंद गांधी**

मनका मन्थन

पिछले दिनों गांधीजीसे मिलने आये एक अंग्रेज़ मुलाक़ातीने पूछा: "क्या आप यह समझते हैं कि हम आपके कन्धों परसे उतरने जा रहे हैं?"

जवाबमें गांधीजीने कहा: "मुझे आपके इरादोंकी सच्चाई पर कोई शक नहीं है। सवाल यह है कि क्या अपने वादोंको पूरा करनेकी ज़रूरी हिम्मत और ताक़त आपके अन्दर है? ख़याल और अमलके बँधे रास्तेसे अलग होना मुश्किल है।"

मुलाक़ातीने कहा: "हमें जल्दीमें कोई हल हरगिज़ न सुझाना चाहिये। हिन्दुस्तानको यह मौक़ा मिलना चाहिये कि वह अपने लिए आप फ़ैसला करे। इसके साथ ही, कोई यह नहीं चाहता कि इस वक़्त, जब कि देशके सामने बे-मिसाल अकालका ख़तरा है, उसे अफ़रा-तफ़री या गड़बड़में छोड़ दिया जाय।"

गांधीजीने जवाब दिया: "आपकी यह मुश्किल तब तक बनी रहेगी जब तक आपको यह विश्वास रहेगा कि आपकी सरकारसे हिन्दुस्तानको फ़ायदा पहुँचा है। हममेंसे ऐसा कोई नहीं मानता।"

मुलाक़ातीने फिर कहा: "एक-दोने तो इसके खिलाफ़ ही कहा है।"

गांधीजीने जवाब दिया: "यह एक-दो आदमियोंके माननेकी बात नहीं। उससे कुछ साबित नहीं होता। एक वक़्त था कि मैं भी ऐसा ही समझता था। हिन्दुस्तानको सचमुच जो फ़ायदा पहुँचा है वह विदेशी राजका अंग नहीं, बल्कि एक मेहनती और ज़बरदस्त क़ौमसे वास्ता पड़नेका नतीजा है। जो भलाई हुई है वह इत्तिफ़ाक़िया हुई है और जो बुराई हुई है, वह विदेशी राजका फल है; ... उसने भलाईको दबा दिया है। हिन्दुस्तानके फ़िरक़ावाराना झगड़े ... मिसाल देकर साफ़ तौर पर यह साबित किया जा सकता है कि ... अंग्रेज़ी राजकी देन है। यहाँ तक कि हम तो यह भी मानते ... कि आजकल अनाजका जो अकाल है वह भी आपकी ही देन है।"

इस आख़िरी बातने मुलाक़ातीके कान खड़े कर दिये। गांधीजीने भी अपनी इस बातके असरको भाँप लिया और बोले: "मेरे मतलबकी तहको पहुँचिये। यह कहा जा सकता है कि अकाल ईश्वरने डाल दिया। मगर जो देश काफ़ी साज़-सामान रखता है उसमें मुश्किल और तंगीका वक़्त पूरा करनेकी शक्ति होनी चाहिये, यह नहीं कि वह बेबसीसे मर जाय। आज हिन्दुस्तानमें लगातार जो अकाल पड़ रहे हैं, उनकी वजह सिर्फ़ बारिशका न होना या बहुत ज़्यादा होना ही नहीं है, बल्कि यह सचाई है कि हिन्दुस्तानके पास ख़ुश्कसाली या सूखेका मुक़ाबला करनेके सामान पूरे नहीं हैं। हिन्दुस्तानकी आबादीको बार-बारके अकालके ख़तरोंसे बचानेके लिए कोई कार्रवाई नहीं की गई। आप दक्खिन अफ़्रीकाको ही लें। वहाँ वे टिड्डीदल और ख़ुश्कसालीका बहादुरी और बेहिसाब साज़-सामानके साथ मुक़ाबला करते हैं। लेकिन एक हिन्दुस्तान है कि अगर यहाँ वर्षा न हो, तो दोष इन्द्रदेवताके मत्थे मढ़ दिया जाता है, और इस कमीको पूरा करनेके लिए किया-धरा कुछ नहीं जाता।"

"अगर बरतानिया यहाँ न होता तो क्या इस बारेमें हिन्दुस्तानकी हालत बेहतर होती?" मुलाक़ातीने रोककर पूछा।

"ज़रूर।" गांधीजीने कहा। "उस हालतमें यहाँ रेलें ही न होतीं . . .।"

मुलाक़ातीके लिए यह एक नया धक्का था, क्योंकि बहुतेरे पच्छिमवासियोंकी तरह वह भी यह समझे हुए थे कि हिन्दुस्तानमें रेलोंकी मौजूदगी अकालका मुक़ाबला करनेके लिए अंग्रेज़ी राजकी एक ऐसी सफलता है जिस पर उसे सबसे ज़्यादा नाज़ है। बरतानियाके स्वर्गवासी प्रधानमंत्री मि० राम्से मैक्डॉनल्डकी तरह गांधीजी भी यह मानते हैं कि हिन्दुस्तानमें अकालका ख़ास कारण रेलोंकी मौजूदगी है। आगे चलकर गांधीजीने कहा: "अगर यहाँ रेलें वग़ैरा न होतीं, तो हम भी आज उसी तरहकी क़ुदरती ज़िन्दगी बसर करते जैसी कि आजसे चार-पाँच सौ साल पहले इंग्लैण्ड और युरोपके छोटे-मोटे सरदार और जागीरदार बसर करते थे। वे अपने-अपने क़िलोंमें दाने-पानीके गोदाम रखते थे। हिन्दुस्तानमें भी रेलें बननेसे पहले हरएक गाँवमें अनाजके गोदाम होते थे। इस तरह हमारे गाँव ज़्यादा अच्छी हालतमें रहते थे। फिर हमारे घरोंमें भी छोटे-मोटे काम हाथसे होते रहते थे, जिनसे फ़सल ख़राब होनेकी हालतमें उसकी कमी पूरी हो जाया करती थी। अब रेलोंने गाँवके इन गोदामोंको ख़ाली कर दिया है और दस्तकारियोंको तबाह कर डाला है। किसानको अपनी पैदावारके चाहे जितने भी दाम मिलते हों, वह उसे पानीकी तरह बहा देता है। कुछ लगान वग़ैरा अदा करनेमें और कुछ उस विदेशी मालके ख़रीदनेमें ख़र्च होता है जिसके बारेमें वह समझता है कि उस मालके बग़ैर उसका काम नहीं चल सकता। अंग्रेज़ोंने भी उसे यही समझाया है: "न अनाजके गोदाम रक्खो और न चाँदी ही जमा करो।" अनाजकी कमीको पूरा करनेका कोई प्रबन्ध नहीं किया गया। रेलें एक जाल बन गई हैं और सस्ती ढुलाई एक फन्दा। अगले ज़मानेमें राजालोग बड़े-बड़े ज़ुल्म करते थे, मगर उनका असर दूर तक नहीं पहुँचता था। इन तकलीफ़ोंसे बचने और दाद पानेके लिए उन दिनों रैयतके पास बग़ावत और हिजरत वग़ैराके कुछ ज़रिये थे। उन दिनों लोग निहत्थे या कायर न थे। विषमतायें कम थीं। आज तो इनका पलड़ा इतना भारी है, कि मुट्ठीभर अंग्रेज़ सिपाही लाखोंको डरा और सता सकते हैं। हमें अंग्रेज़ी राजसे यही कुछ मिला है। वह बहुत बड़ी गिरावटका ज़रियाहै। अंग्रेज़ोंको यह बात महसूस करनी चाहिये, और एक मिसाल पेश करके हमें छोड़ चले जाना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। अगर ज़हर इतनी गहराई तक पहुँच गया हो कि छाला डाले बग़ैर निकाला ही न जा सकता हो, तो भी अंग्रेज़ोंको यहाँसे चले जाना चाहिये। अगर इस बीच दो-चार लाख आदमी आपसमें मारे भी जायँ, तो भी आख़िरमें हमें उससे सच्ची शान्ति नसीब होगी। अगर मैं हिन्दुस्तानको अहिंसा अपनाने पर तैयार कर सकूँ, तो यह मामला दो ही दिनमें सुलझ जाय। वरना आज़माइश शायद ज़्यादा देर तक जारी रहे। मगर उस हालतमें भी उतनी तबाही तो न होगी जितनी कि विदेशी राजसे हुई है। और फिर उस हालतमें हिन्दुस्तानको जीने और मरनेके लिए कोई सहारा तो होगा। आज उसके पास जीने और मरनेके लिए सहारा क्या है?"

मुलाक़ातीने झिझकते-झिझकते कहा: "मगर ऐसी अफ़रा-तफ़रीमें हिन्दुस्तानको छोड़ना बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।"

"नहीं, उससे बड़ी ज़िम्मेदारी तो नहीं है, जिसे आपने जंगी हालतसे मजबूर होकर उठानेकी अपनी तैयारी दिखाई थी।" गांधीजीने जवाब दिया और मुलाक़ातीको अपनी बेमेल बातों पर विचार करनेके लिए छोड़ दिया।

दिल्ली, १४–५–'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

एक बिनती

ग्राहकोंसे

पतेमें फेरफार करनेकी इत्तिला **मंगलवार** तक मिलने पर ही उस हफ़्ते उस पर अमल किया जा सकेगा। ग्राहकोंसे विनती है कि वे पत्र-व्यवहार करते वक़्त अपना **ग्राहकनम्बर** ज़रूर लिखा करें।

ध्यान रहे कि **एक महीनेके अन्दर दो बार** पता नहीं बदला जा सकेगा।

छह महीनोंसे कमके लिए ग्राहक नहीं बनाये जाते।

एजण्टोंसे

मुझे यह लिखते हुए ख़ुशी होती है कि सरकारने 'हरिजन' साप्ताहिकोंके लिए काग़ज़के कोटेमें इज़ाफ़ा कर दिया है। इसलिए हम तीनों साप्ताहिकोंकी ज़्यादा कॉपियोंके ऑर्डर ले सकते हैं। जो एजण्ट अपनी कॉपियाँ बढ़ाना चाहते हैं, वे मेहरबानी करके दफ़्तरको लिखें। यहाँ यह याद दिलाना ज़रूरी है कि अपने बढ़े हुए ऑर्डरके साथ उन्हें उसी हिसाबसे डिपॉज़िटकी बढ़ी हुई रक़म भी तुरन्त भेजनी होगी।

एजन्सीके नियमोंमें पहले नियमकी ओर हम आपका ध्यान खींचना चाहते हैं। अनुभवसे पता चला है कि व्यवहारमें इस नियमकी वजहसे कई उलझनें पैदा होती हैं, और बहुत-कुछ ग़ैरज़रूरी पत्र-व्यवहार करना पड़ जाता है। इसलिए उस नियमको इस तरह सुधारा गया है:

१. एजण्टको चाहिये कि वह हमारे पास अपनी ज़रूरतकी कॉपियोंके लिए इतनी रक़म जमा करा दे कि जिससे **कम-से-कम दो महीनों** तक हम उसे उसकी माँगके मुताबिक़ कॉपियाँ भेज सकें। इस रक़ममेंसे एक महीनेकी रक़म उसके नाम बतौर मुस्तक़िल अमानतके सुरक्षित रक्खी जायगी। हर हफ़्ते बाक़ीकी आधी रक़ममेंसे यानी चालू अमानतमेंसे बिलकी रक़म काटी जायगी और जब वह रक़म अगले हफ़्तेकी कॉपियोंके लिए नाकाफ़ी मालूम होगी, तो फ़ौरन ही कॉपियाँ भेजना बन्द कर दिया जायगा।

निवेदन है कि आप इस सुधरे हुए नियमके अनुसार ज़रूरी इन्तज़ाम कर दें। जो वक़्त रहते ऐसा इन्तज़ाम नहीं करेंगे, उनकी एजन्सियाँ रद समझी जायँगी।

२१–५–'४६

जीवणजी डा॰ देसाई

एक वाजिब हमला

"१६ अप्रैलको दिल्लीसे भेजी और १८ अप्रैलके 'टाइम्स ऑव् इण्डिया'में छपी एक ख़बरमें कहा गया है कि मंगलवारकी शामको हुई प्रार्थना-सभामें आपने यों कहा था:

"१. 'मशीनें और इंजीनियर तक सभी परदेशी हैं। मशीनोंसे मुझे कोई दुश्मनी नहीं। मिलें हिन्दुस्तानकी ग़रीबीको मिटा नहीं सकीं, बल्कि असलमें उन्होंने करोड़ों देहातियोंसे उनका धन्धा छीन लिया है और उन्हें क़रीब-क़रीब बरबाद कर डाला है। गाँवोंको बरबाद करनेके लिए जो हिन्दुस्तानी ज़िम्मेदार हैं, वे परदेशी बन गये हैं और इसलिए उन्हें चाहिये कि वे दूसरे देशोंमें जाकर बसें।'"

"कस्तूरबा मेमोरियल फण्डके ट्रस्टी-मण्डलका ख़ास मक़सद गाँवोंकी हालत सुधारना है। इस मण्डलके ज़्यादातर मेम्बर बड़े-बड़े कारख़ानेदार या मिलोंके मालिक हैं। अपने ऊपरके बयानके साथ आप इस चीज़का मेल कैसे बैठा सकते हैं? जिन लोगोंकी वजहसे देहात बरबाद हुए हैं और जो आज भी अपनी मिलोंके ज़रिये उन्हें बरबाद करनेमें लगे हैं, क्या वे कभी देहातियोंकी हालतको बेहतर बनानेमें सच्ची मदद कर सकते हैं?

"२. 'चोर-बाज़ारोंकी बुराईके ख़िलाफ़ आपने कई बार कहा और लिखा है। कस्तूरबा मेमोरियल फण्डके ट्रस्टियोंमेंसे कितने ऐसे हैं जो अपनी छाती पर हाथ रखकर यह कह सकें कि उन्होंने ख़रीददार या बेपारीके नाते चोर-बाज़ारमें कोई सौदा नहीं किया है?'"

यह एक वाजिब हमला है। मेरी अहिंसाकी यह ख़ूबी है कि कस्तूरबा ट्रस्टमें मिल-मालिक और उनके जैसे दूसरे लोग शरीक हुए हैं। गोकि मैं अपनी राय कड़ी ज़बानमें ज़ाहिर करता हूँ, तो भी उसमें कोई डंक या चोट नहीं होती, किसीकी शख़्सियत पर कोई हमला नहीं होता। मैं मानता हूँ कि मिल-मालिकोंका धन्धा ज़ोर-ज़बरदस्तीसे नहीं, बल्कि समझा-बुझाकर ही बन्द किया जाना चाहिये। फिर भी मुझे मिल-मालिकोंको अपना दोस्त बना लेनेमें कोई शरम महसूस नहीं होती। आम रिआयाको तालीम देकर जो नतीजे हासिल किये जा सकते हैं, वे किसी ताक़त या जब्रसे हासिल नहीं हो सकते। पूँजीपति वर्गके ट्रस्टियोंके हक़में मुझे यह कहना चाहिये कि उन्होंने ग़ैर पूँजीपति ट्रस्टियोंके फ़ैसलेमें कभी कोई दख़ल नहीं दिया। सच तो यह है कि उन्होंने अपनी जानकारीसे हमेशा मदद ही पहुँचाई है। ट्रस्टके लिए इन लोगोंका यह मेल अच्छा और फ़ायदेमन्द है। उनकी सचाईमें तो कोई शक किया ही नहीं जा सकता। क्योंकि वे ज़मानेकी हवाको पहचानते हैं और उन्हें अपनी क़ाबलीयतमें यक़ीन है।

जहाँ तक चोर-बाज़ारोंका सवाल है, मैं नहीं जानता कि ट्रस्टियोंमेंसे किसीका भी चोर-बाज़ारोंके व्यवहारसे कोई ताल्लुक़ है। लेकिन अगर मुझे ऐसा कोई मिल जाय, तो उसे या उन्हें ट्रस्टसे अलग होनेको कहनेसे पहले मैं इस चीज़ पर गहराईसे सोचूँगा। बहरहाल यह सच है कि उन्होंने अपने-आपको ट्रस्ट पर लादा नहीं है।

नई दिल्ली, २१–५–'४६
('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

नई किताबें

नई किताबें	मूल्य	डाकख़र्च
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधरी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०–६–०	०–१–०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१–८–०	०–५–०
एक धर्मयुद्ध — (महादेवभाई हरिभाई देसाई)	०–८–०	०–२–०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२–०–०	०–६–०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१–४–०	०–५–०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

२६ मई १९४६

छान-बीन

मंत्रि-मण्डल और वाइसरायने मिलकर ब्रिटिश सरकारकी तरफ़से जो बयान छापा है, चार दिन तक ख़ूब ग़ौरसे छान-बीन करने पर मुझे यक़ीन हो गया है कि आजके हालातमें ब्रिटिश सरकार इससे अच्छी कोई तजवीज़ नहीं दे सकती थी। अगर हम ईमानदारीसे देखें तो उसमें हमारी ही कमज़ोरी झलकती है। कांग्रेस और मुस्लिम लीग राज़ी नहीं हुईं, न हो सकीं। अगर इस वक़्त हम यह कहकर अपनेको समझा लें कि ये तो अंग्रेज़ोंके पैदा किये हुए झगड़े हैं, तो हम बहुत भारी ग़लती करेंगे। मिशन इंग्लैण्डसे इतनी दूर सिर्फ़ हमें धोखा देने नहीं आया है। वह तो अंग्रेज़ी हुकूमतको आसानीके साथ, जल्दीसे, खतम करनेका रास्ता निकालने यहाँ आया है। हममें हिम्मत होनी चाहिये कि जब तक उसके खिलाफ़ कोई चीज़ साबित न हो जाय, हम उसके ऐलान पर भरोसा रक्खें। बहादुरी धोखेबाज़ीको जीत लेती है।

मिशनकी तजवीज़की ऐसी बड़ाई करनेमें मेरा किसी तरह यह मतलब नहीं है कि अंग्रेज़ोंके खयालसे जो चीज़ सबसे अच्छी है वह हिन्दुस्तानियोंके खयालसे भी सबसे अच्छी या ठीक है। उनकी सबसे अच्छी चीज़ हमारे लिए नुक़सानदेह भी हो सकती है। मुझे आशा है कि आगेके मज़मूनसे मेरा मतलब साफ़ हो जायगा।

योजना बनानेवालोंने साफ़ तौरसे यह बता देनेकी कोशिश की है कि उनकी क्या मंशा है। सब दलोंके साथकी अपनी बातचीतसे उन्होंने उन कम-से-कम शर्तोंको ले लिया है, जो उनके खयालसे हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी सनद तैयार करनेके लिए सब पार्टियोंको एक कर देंगी। उनकी एक ही मंशा है: जितनी जल्दी हो सके ब्रिटिश हुकूमतको हिन्दुस्तानसे उठा लिया जाय। अगर वे अपनी कोशिशोंसे एक-दूसरेको मिटा देनेवाले घरेलू झगड़ोंसे हिन्दुस्तानके टुकड़े-टुकड़े न होने देकर एक संगठित हिन्दुस्तान छोड़कर जा सकें, तो वे वैसा करना चाहेंगे। कुछ भी हो, हिन्दुस्तानको तो वे छोड़ेंगे ही। दोनों पार्टियोंको एक कान्फरेन्समें ले आने पर भी, (इसमें कितनी धीरज और होशियारीसे उन्होंने काम लिया होगा, सो तो वे ही बता सकते हैं) चूँकि उनमें कोई समझौता न हो सका, उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। वे शिमलाके पहाड़ोंसे नीचे मैदानमें उतर आये और हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी सनद तैयार करनेके लिए एक ऐसी कान्स्टिटयुएण्ट एसेम्ब्ली बनानेकी माकूल योजना तैयार की कि जो ब्रिटिश हुकूमत या उसके असरसे बिलकुल बाहर रहे। वह योजना एक अपीलकी शकलमें है, एक सलाह है। उसमें दबाव या जब्रकी कोई बात नहीं है। इस तरह सूबोंकी एसेम्ब्लियाँ अपने नुमाइन्दे चुनें या न चुनें। नुमाइन्दे चुने जाने पर वे कान्स्टिटयुएण्ट एसेम्ब्लीमें जायँ या न जायँ। एसेम्ब्ली अपना जलसा करके बयानमें दिये हुए तरीक़ोंको बदल सकती है, उससे जुदा कार्रवाई कर सकती है। किसी शख्स या पार्टी पर जो कुछ पाबन्दी लगाई गई है, वह वक़्तकी माँग समझकर लगाई गई है। कान्स्टिटयुएण्ट एसेम्ब्लीको क़ायम रखनेके लिए ही दोनों बड़ी पार्टियोंके लिए अलग-अलग चुनाव लाज़िमी रक्खे गये हैं, दूसरी किसी वजहसे नहीं। यह मज़मून लिखते वक़्त मैंने मन्त्रि-मण्डलके बयानको फिर बड़े ग़ौरके साथ पढ़ा। पढ़कर मैं इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि उसमें कोई भी चीज़ क़ानूनके तौर पर लाज़िमी नहीं है। इज़्ज़तका खयाल और हमारी अपनी मजबूरी, इन दोका ही बन्धन उसमें है। बाँधनेवाला हिस्सा तो उसका वह है जो ब्रिटिश सरकारको पाबन्द करता है। इसीलिए मैं सोचता हूँ कि ब्रिटिश मिशनके चारों मेम्बरोंने ब्रिटिश सरकारकी और पार्लमेण्टकी दोनों सभाओंकी पूरी-पूरी मंज़ूरी ले लेनेका एहतियात बरता है। यह बयान हिन्दुस्तान छोड़नेके लिए मिशनका पहला क़दम है। इसके लिए उसे बधाई मिलनी चाहिये। चूँकि पूरी तरहसे दस्तबरदार होनेके लिए दूसरे क़दमोंकी ज़रूरत है, इसलिए मैंने इसे 'प्रोमिसरी नोट' कहा है।

अगरचे हिन्दुस्तानको इसका जो जवाब देना है वह उसकी मरज़ी पर है, तो भी इस तजवीज़के बनानेवालोंने यह मान लिया है कि हिन्दुस्तानकी पार्टियाँ अच्छे ढङ्गसे चलनेवाली ज़िम्मेदार संस्थायें हैं। उनमें उनकी मरज़ी पर छोड़े हुए कामोंको भी, अगर ज़्यादा नहीं तो उतनी ही पूरी तरह करनेकी शक्ति है, जितनी लाज़िमी कामोंको। इसलिए जब लॉर्ड पैथिक लॉरेन्सने किसी पत्रकारसे यह कहा, कि "अगर वे उस बुनियाद पर एक हो जाते हैं, तो इसका मतलब यह होगा कि उन्होंने उसे मंज़ूर कर लिया है, लेकिन अगर हरएक पार्टीके बहुमतसे वे चाहें तो उसे अभी भी बदल सकते हैं," तो इस मानीमें उनका यह कहना ठीक था कि जो लोग बयानकी चीज़ोंको अच्छी तरह समझकर नुमाइन्दे बनेंगे, वे तब तक बुनियादी बातों पर डटे रहेंगे जब तक बड़ी-बड़ी पार्टियाँ मुनासिब तरीक़ेसे उन्हें बदल न दें। जब दो या दोसे ज़्यादा विरोधी पार्टियाँ आपसमें मिलती हैं, तो किसी समझौतेकी बिना पर ही मिलती हैं। अपने-आप बना हुआ एक पंच (चूँकि पार्टियोंने किसीको पंच नहीं बनाया, इसलिए मिशनवाले ख़ुद पंच बन गये हैं) सोचता यह है कि विरोधी पार्टियोंमें सिर्फ़ उसी समय मेल हो सकता है जब वह कोई छोटी-से-छोटी शर्त उनके सामने रखे। ऐसा सोचकर वह उन्हें मिलजुलकर उसमें घटाने-बढ़ाने या उसे बिलकुल बदल देनेकी छूट देकर, अपना प्रस्ताव उनके सामने रखता है।

यहाँ तक तो वह बिलकुल ठीक है। लेकिन इकाइयोंका क्या होगा? क्या सिक्खोंको, हिन्दुस्तानमें सिर्फ़ पंजाब ही जिनका अपना घर है, अपनी मरज़ीके खिलाफ़, अपनेको सिन्ध, बलूचिस्तान और सरहदी सूबेके सेक्शनका हिस्सा समझना पड़ेगा? क्या सरहदी सूबेको अपनी मरज़ीके खिलाफ़, पंजाबमें, जिसे मंत्रि-मण्डलके बयानमें 'बी' कहा गया है, शामिल होना पड़ेगा? क्या आसामको, जो साफ़ तौरसे ग़ैरमुसलिम प्रान्त है, 'सी'में आना पड़ेगा? चूँकि इस बयानमें कोई भी चीज़ दबावसे की जानेवाली नहीं है, इसलिए मेरी रायमें अलग-अलग इकाइयोंकी आज़ादीको कम नहीं करना चाहिये। इन सेक्शनोंका हरएक सदस्य उनमें शामिल होने या न होनेके लिए स्वतंत्र होना चाहिये। उससे अलग हो सकनेकी आज़ादी तो एक और बचाव है। यह पैरा १५ (५)में दी हुई आज़ादीके बदलेमें कभी नहीं हो सकता। पैरा १५ (५) इस तरह है:

> "प्रान्तोंको कार्यकारिणी और व्यवस्थापक सभाओंवाले समूह बनानेकी आज़ादी होनी चाहिये और हरएक समूहको यह तय कर सकना चाहिये कि वह प्रान्तोंके कौन-कौनसे विभाग साझेमें रख सकता है।"

यह बिलकुल साफ़ है कि सेक्शन १९, जो क्या होना चाहिये, इस बारेमें सलाह देता है (हुक्म नहीं), इस आज़ादी पर कोई असर नहीं डालता। यह पहलेसे मान लिया गया है कि कान्स्टिटयुएन्ट एसेम्ब्लीके प्रधान पहली ही बैठकमें प्रान्तीय नुमाइन्दोंसे पूछेंगे कि क्या वे समूहके उसूलको मानते हैं? और अगर मानते हैं तो क्या जिस समूहमें उनके प्रान्तको रखा गया है वह उन्हें मंज़ूर है? हरएक प्रान्तकी यह बुनियादी आज़ादी और पैरा १५ (५)के ज़रिये मिली हुई आज़ादी ज्यों-की-त्यों रहेंगी। इन दोनों पैरोंके ऊपरी झगड़े और दबावके इलज़ाम (दोष)को, जो इस तजवीज़की अच्छाईको फ़ौरन बदल डालता है, दूर करनेका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे कोई और रास्ता नहीं सूझता। इसलिए मैं उन सब लोगोंसे, जो ग्रूपबन्दीके प्रस्तावसे और इस मनमाने बँटवारेसे घबराये हुए हैं, कहूँगा कि मैंने जो मतलब लगाया है, अगर वह ठीक है, तो किसीको घबरानेकी कोई ज़रूरत नहीं।

इस तजवीज़में ऐसी भी कुछ चीज़ें हैं जो एक ऐसे जल्दबाज़ पढ़नेवालेको परेशान कर सकती हैं, जो पढ़ते वक़्त यह भूल जाता है कि थोड़े-से-थोड़े वक़्तमें आज़ादी किस तरह ली जा सकती है, यह दिखानेके लिए मौजूदा तजवीज़ हमारे सामने सिर्फ़ एक सलाह या अपीलकी शक्लमें है। उसकी वजह साफ़ है। आजकी अराजकतामेंसे जो नई दुनिया पैदा होगी, उसमें ग़ुलाम हिन्दुस्तान ब्रिटिश ताजका सबसे चमकता हुआ रत्न नहीं रहेगा। वह उसका सबसे काला धब्बा बन जायगा, और वह धब्बा इतना काला होगा कि उसे कूड़ेकी टोकरीमें फेंकने लायक़ बना देगा। मैं पढ़नेवालोंसे कहता हूँ कि वे मेरे साथ यह उम्मीद और प्रार्थना करें कि ब्रिटिश ताजका ब्रिटेन और दुनियाके लिए इससे अच्छा उपयोग हो। 'सबसे ज़्यादा चमकता हुआ रत्न' तो आज एक हड़पी हुई चीज़ है। जब प्रॉमिसरी नोटकी पूरी क़ीमत मिल जायगी, तो अपने फ़र्ज़को मुनासिब तौर पर पूरा कर देनेकी वजहसे ब्रिटिश ताजको एक अनोखा रत्न मिल जायगा।

बयानके बाहर भी कुछ ऐसी चीज़ें हैं, प्रॉमिसरी नोटकी मददके लिए जिनकी ज़रूरत है। लेकिन उन बातोंकी छान-बीन मैं 'हरिजन-सेवक'के अगले अंकमें करूँगा।

नई दिल्ली, २०-५-'४६

('हरिजन'से)   मोहनदास करमचंद गांधी

और भी ख़राब

पिछले हफ़्ते मैंने बहनोंसे अपील की थी कि वे सब जगहोंके हरिजन भाइयों और बहनोंकी तकलीफ़ें कम करनेकी भरपूर कोशिश करें। मैंने यह भी कहा था कि कुछ बहनें नई दिल्लीमें रीडिंग रोड पर बनी हुई हरिजनबस्तीमें जायँ और वहाँ रहनेवाले हरिजनोंकी, ख़ासकर वहाँकी बहनों और बच्चोंकी, सेवा करें।

इसके बाद गांधीजी अजमेरी दरवाज़ेकी हरिजन-बस्ती देखने गये। उनके साथ वहाँ जानेवालोंमें मैं भी थी। दस साल पहले मैं स्व० महादेवभाई देसाईके साथ यह बस्ती देखने गई थी और उन्होंने अपनी मँजी हुई क़लमसे 'हरिजन'में उसकी दर्दनाक हालतका ख़ाका खींचा था। मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि ये अभागे इनसान अपने इर्द-गिर्द रहनेवाले सुअरोंकी तरह आज भी उसी गन्दगी और दल-दलमें सड़ रहे हैं। उनकी इस दर्दनाक हालत पर विश्वास करनेके लिए उनकी असल हालतको अपनी आँखों देखना ज़रूरी है। इस इलाक़ेकी देखरेख रखनेवाली कमेटी और म्युनिसिपैलिटीके हेल्थ अफ़सर अगर अपना काम अच्छी तरह नहीं सँभाल पाते, तो उन्हें हटा दिया जाना चाहिये। इसके अलावा, दिल्लीवालोंको भी इस बात पर शरमिन्दा होना चाहिये कि वे प्लेग फैलानेवाली इन जगहोंकी तरफ़से इतने बेपरवाह हैं। जनताका संगठित आन्दोलन इस ज़ाहिरा बुराईको दूर करनेमें हरगिज़ नाकाम नहीं रह सकता। निश्चय ही यह एक ऐसा मामला है जिसमें हिन्दुस्तानी, युरोपियन, सरकारी अफ़सर और आम लोग मिलकर काम कर सकते हैं। सच्ची बात तो यह है कि प्लेग फैलानेवाले ऐसे स्थान सारे देशमें सब कहीं मौजूद हैं। और इस बुराईके लिए हम सभी ज़िम्मेदार हैं। अगर बहनें सब जगह हरिजन-बस्तियोंमें जायँ, उन्हें सुधारें और उन्हें अपने ही घरों-जैसी साफ़-सुथरी और रहने लायक़ बना दें, तो कहा जायगा कि उन्होंने कुछ हद तक अपना फ़र्ज़ अदा किया है।

शिमला, ३-५-'४६

('हरिजन'से)

अमृतकुँवर

साप्ताहिक पत्र

वापस भंगी-बस्तीमें

रीडिंग रोडवाली भंगी-बस्तीमें एक बार फिर वापस आकर गांधीजीको ख़ुशी हुई। शिमलाके पहाड़ोंके मुक़ाबले उन्हें यहाँ ज़्यादा अच्छा लगता है — ऐसा मालूम होता है मानो वे अपने ही घरमें हों। जिस दिन वे आये, उसी दिनसे आम प्रार्थना फिर शुरू की गई। लेकिन इस बार प्रार्थना-सभायें अजमेरी दरवाज़ेके नज़दीक रामलीलाके मैदानमें नहीं होतीं, बल्कि मेहतरोंके अपने अहातेमें ही होती हैं। क़ुरानकी प्रार्थना फ़क़ीर बादशाहख़ान कराते हैं। (अब वे अपने सूबेको लौट गये हैं।) इस हफ़्ते उन्होंने दो बार प्रार्थना-सभामें भाषण किये। पहले दिन उन्होंने समझाया कि सभी प्रार्थना, फिर वह किसी भी ज़बान या किसी भी मज़हब की क्यों न हो, एक ही ईश्वरसे की जाती है और वह हर इनसानको यह सिखाती है कि सब एक ही परिवारके हैं और सबको एक-दूसरेसे मुहब्बत करनी चाहिये।

प्रार्थना ख़तम होनेके बाद बादशाहख़ानकी बातोंको गुँजाते हुए गांधीजीने कहा: "अपने धर्म या मज़हबको बड़ा और दूसरोंके धर्म या मज़हबको छोटा मानना सच्चे धर्मको ग़लत शकलमें पेश करना है: उसका मज़ाक़ उड़ाना है। सभी धर्मोंमें सब जगह मौजूद एक ही ईश्वर की पूजा करनेकी बात कही गई है। वह तो पानीकी एक बूँदमें या धूलके एक ज़र्रेमें भी मौजूद है। जो लोग मूरतकी या बुतकी पूजा करते हैं वे मूर्तिके पत्थरकी पूजा नहीं करते; बल्कि वे उसमें रहनेवाले ईश्वर को देखनेकी कोशिश करते हैं। इसी तरह पारसियोंको आगकी पूजा करनेवाला या सूरजकी पूजा करनेवाला कहना उनको बदनाम करना है। डॉक्टर दिनशा मेहताने पारसीधर्मका जो मंत्र पढ़ा था, वह हिन्दुओंके गायत्री-मंत्रसे मिलता है। उसमें ईश्वरकी शुद्ध पूजा ही कही गई है। अलग-अलग मज़हब एक ही पेड़के अलग-अलग पत्तोंकी तरह हैं। कोई दो पत्ते एक-से नहीं होते। फिर भी उनमें या जिन डालियोंमें वे लगते हैं उनके बीच कोई दुश्मनी नहीं होती। इसी तरह ईश्वरकी सृष्टिमें हमें जो अनेकता दिखाई पड़ती है उसके अन्दर एक एकता रही है।"

अटकलबाज़ीका ज़ोर

कैबिनेट मिशनके और तीन दलोंवाली कान्फरेन्सके दूसरे मेम्बरोंके शिमलासे लौटने पर दिल्लीमें अटकलबाज़ीका पारा बहुत चढ़ गया। लोग कैबिनेट मिशनके जल्दी ही होनेवाले ऐलानके बारेमें तरह-तरहकी अटकलें लगाने लगे। इसका ज़िक्र करते हुए गांधीजीने कहा: "दोस्त मुझसे बराबर यह पूछ रहे हैं कि मिशनके पैग़ाममें क्या-क्या हो सकता है? मैं इसे नहीं जानता, न मैं अटकल लगाता हूँ। उसमें क्या होगा, इसका खयाल करना भी बेकार है। प्रार्थनामें यक़ीन रखनेवाला आदमी और कुछ कर ही नहीं सकता। भला-बुरा जो कुछ होगा, अगले २६ घण्टोंके अन्दर आप सबको मालूम हो जायगा। तब आप चाहे, उसे मंज़ूर करें, चाहे ठुकरा दें। आपको छूट है। बाहरकी तरफ़ देखनेके बदले आप अपनेको अन्दरसे टटोलिये और ईश्वरसे पूछिये कि भली-बुरी हर हालतमें आपका फ़र्ज़ क्या होना चाहिये। फ़िलहाल तो आपके और मेरे लिए यह जान लेना ही काफ़ी है कि कैबिनेट मिशन अपना घर-बार छोड़कर यहाँ इतनी दूर इस बातका पता लगानेके लिए आया है कि किस तरह हिन्दुस्तानसे ब्रिटेनकी हुकूमत उठे और बरतानियाका आख़िरी सिपाही कब हिन्दुस्तान छोड़कर चला जाय। हिन्दुस्तान छोड़ने या न छोड़नेकी बात पर ग़ौर करनेके लिए वह नहीं आया है। मिशनके लिए यह जान लेना ज़रूरी था कि कांग्रेस और मुस्लिम लीगमें मेल पैदा किया जा सकता है या नहीं। अंग्रेज़ी हुकूमतने ही इन दोनोंको एक-दूसरेसे अलग किया था। ऐसी हालतमें अगर कैबिनेट मिशन उन्हें मिलानेमें नाकाम रहा, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें अचरजकी कोई बात नहीं । ज्यों ही ज़ाहिरा तौर पर हिन्दुस्तानसे अंग्रेज़ी हुकूमत उठ जायगी, त्यों ही हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच मेल पैदा हुए बिना न रहेगा । कैबिनेट मिशनको यह देखना है कि कैसे एक मिनटकी भी देर किये बिना हिन्दुस्तान छोड़ा जा सकता है ।"

तंगख़याली ठीक नहीं

गांधीजीने आगे चलकर कहा: "लेकिन मान लीजिये कि इससे बिलकुल उलटी चीज़ हो जाती है, तो नुक़सान उनका होगा, हमारा नहीं । हमने अपने लिए .खुद तकलीफ़ उठानेका रास्ता चुना है । हम अपनी तकलीफ़ोंके ज़रिये आगे बढ़ते और ऊपर उठते हैं । यह .कुदरतका क़ानून है । जो अपने गन्दे स्वार्थसे या खानदानी हितोंसे चिपके रहते हैं, वे नुक़सान उठाते हैं । इनसान इस दुनियामें इस लिए भेजा जाता है कि ज़रूरत पड़ने पर वह अपनी जानको दाँव पर लगाकर भी अपना फ़र्ज़ अदा करे । इसलिए कर्त्तव्य या फ़र्ज़को पूरा करते हुए जो मुसीबतें पेश आयें उनका हमें दिलेरीके साथ सामना करना चाहिये ।

"हम सब, क्या हिन्दू और क्या मुसलमान, एक हैं — अखण्ड हैं । अगर हममेंसे कोई ग़लती करता है, तो सबको उसका फल भुगतना पड़ता है । ईश्वरने इस दुनियाको कुछ इस तरह बनाया है कि यहाँ कोई भी आदमी अपनी अच्छाई या बुराईको अपने तक ही नहीं रख सकता । समूची दुनिया इनसानके जिस्मकी तरह है, जिसके अपने अलग-अलग हिस्से होते हैं । अगर जिस्मके किसी हिस्सेमें दर्द उठता है, तो सारा जिस्म उसे महसूस करता है । अगर बदनका कोई हिस्सा सड़ गया है, तो वह लाज़िमी तौर पर सारे बदनको सड़ा देगा । इसलिए हमें चाहिये कि हम सिर्फ़ अपनी-ही-अपनी न सोचें, बल्कि सारे मुल्कको सामने रखकर सोचें । हमको ईश्वरमें श्रद्धा (एतक़ाद) रखनी चाहिये और बेफ़िकर बन जाना चाहिये । हमारी तक़दीर हमारे ही हाथमें है, और हम ही उसे बना या बिगाड़ सकते हैं ।"

ऐलानकी घड़ीमें

दूसरे दिन प्रार्थनाके बाद गांधीजीने जो भाषण किया, उसमें भी उन्होंने आनेवाले ऐलानकी बेलाग होकर सही और मुनासिब जाँच–पड़ताल करनेके लिए लोगोंको समझाया और तैयार किया । उन्होंने कहा: "आप अपनेको दूसरोंकी बातोंमें बहा न दीजिये । और पहलेसे कोई ख़याल बनाकर न रखिये, बल्कि मिशनकी ओरसे जो दस्तावेज़ पेश हो उसको आप .खुद ध्यानसे पढ़िये और फिर उस पर अपनी राय क़ायम कीजिये । अख़बारोंसे राय उधार लेनेकी आदतको मैं अच्छा नहीं समझता । अख़बार तो हक़ीक़तोंको समझने और उन पर ग़ौर करनेके लिए हैं । हमें इसका ख़याल रखना चाहिये कि कहीं वे आज़ादीके साथ सोचनेकी हमारी आदतको मिटा न डालें । याद रखिये कि अंग्रेज़ी ज़बान एक ऐसी ज़बान है, जिस पर पूरा क़ाबू पाना मुश्किल है । मेरी ही मिसाल लीजिये । मैं अंग्रेज़ी बोलनेवाले लोगोंके बीच क़रीब २० साल तक रहा हूँ । फिर भी मैं यह दावा नहीं कर सकता कि मुझे उस पर पूरा क़ाबू हासिल है । इसलिए मिशनकी दरख़्वास्तोंवाले दस्तावेज़को आप हिन्दुस्तानीमें पढ़िये, ताकि आप उसके सही-सही मानोंको ठीकसे समझ सकें । मिशनका ऐलान आपको पसन्द पड़े चाहे न पड़े, इसमें कोई शक नहीं कि हिन्दुस्तानकी तवारीख़में वह एक बड़ी मार्केकी चीज़ होगी । इसलिए यह ज़रूरी है कि उस पर बहुत गहराईसे ग़ौर किया जाय । प्रार्थनामें श्रद्धा रखनेवालोंके नाते हमारा-आपका यह फ़र्ज़ है कि हम-आप अपनेको पूरी तरह ईश्वरके हाथोंमें छोड़ दें और उससे प्रार्थना करें कि वह हमें रोशनी बख़्शे और इस क़दर शुद्ध बनावे कि जिससे हम सब दस्तावेज़को सही तौरसे समझ सकें ।"

पंच-फ़ैसला नहीं

१८ मई, बुधवारकी शामको कैबिनेट मिशनका ऐलान छपा । इसलिए सहज ही अगले दिनके प्रवचनमें उस दस्तावेज़की जाँच-पड़ताल की गई ।

उस दिन श्रीमती सुचेता कृपलानीने प्रार्थनाके वक़्त जो भजन गाया था उसको अपने प्रवचनका आधार बनाकर गांधीजीने उसमें सुझाये आदर्शकी रोशनीमें कैबिनेट मिशनके ऐलानकी जाँच-पड़ताल शुरू की । भजनमें एक ऐसे देशका ज़िक्र है, जहाँ न दुःख-शोक है, न आफ़त-मुसीबत । सवाल यह था कि कैबिनेट मिशनका ऐलान हमको कहाँ तक इस आदर्शके नज़दीक ले जाना चाहता है ? गांधीजीने कहा: "कवि कहता है, हम एक ऐसे मुल्कके रहनेवाले हैं, जहाँ न दुःख-शोक हैं, न आफ़त-मुसीबत । इस दुनियामें ऐसा मुल्क कहाँ पाया जा सकता है ? मैं बहुत घूमा-भटका हूँ, लेकिन मैं क़बूल करता हूँ कि मुझे अभी तक ऐसा मुल्क कहीं नहीं मिला । आगे चलकर कविने इस आदर्शको पानेकी शर्तें बयान की हैं । हर आदमी .खुद तो उन शर्तोंका आसानीसे पालन कर सकता है, क्योंकि जो आदमी हक़ीक़तमें और सचमुच ही दिलका साफ़-पाक है उसके लिए तो न कहीं दुःख-शोक है, न आफ़त-मुसीबत । लेकिन करोड़ोंके लिए इस हालतको पहुँचना या पाना मुश्किल है । फिर भी हम चाहते तो हैं कि हमारा हिन्दुस्तान ऐसा ही एक मुल्क बने ।"

पिछले दिन गांधीजी लोगोंसे कह चुके थे कि वे कैबिनेट मिशनके बयानको देखने पर दूसरे लोगोंकी रायका ख़याल न करते हुए स्वतंत्र रीतिसे उसकी जाँच-पड़ताल करें । वे उस मुल्कके नुक़्ते-निगाहसे उसे जाँचें, जिसमें न दुःख-शोक होगा, न आफ़त-मुसीबत । उन्होंने कहा: "मैं इस बारेमें अपने ख़याल आपको सुनाऊँगा । लेकिन अगर मेरी बातें आपको न जँचें, तो मैं आपसे यह न कहूँगा कि आप उन्हें मानें या उन पर अमल करें । ऐसा करना तो मेरी अपनी ही बातको काटना होगा । हरएक मर्द और औरतको .खुद अपने लिए सोचना चाहिये । आप दूसरोंकी रायको अपनी कसौटी पर कसिये और जिसे आप हज़्म कर सकें उसे अपनाइये ।

"कल रात जैसे ही मिशनका ऐलान मेरे हाथमें पड़ा, मैं उसको सरसरी निगाहसे देख गया । आज सुबह मैंने उसे ग़ौरके साथ पढ़ा । वह कोई फ़ैसला नहीं है । मिशनने और वाइसरायने दोनों दलोंको एक जगह लानेकी कोशिश की थी । लेकिन वे उनमें कोई समझौता नहीं करा सके । इसलिए उन्होंने मुल्कसे यह सिफ़ारिश की है कि उनकी रायमें कान्स्टिटयुएण्ट एसेम्ब्लीके लिए किन बातोंको क़बूल करना मुनासिब होगा । इस एसेम्ब्लीको हक़ होगा कि वह इन सिफ़ारिशोंको बदले, नामं.ज़ूर करे या इन्हें सुधारे । उनकी सिफ़ारिशोंमें 'ले लो या छोड़ दो' – जैसी कोई बात नहीं है । अगर उसमें किसी तरहकी पाबंदियाँ हुईं, तो कान्स्टिटयुएण्ट एसेम्ब्ली सार्वभौम सत्तावाली वह संस्था न रह जायगी, जिसे आज़ाद हिन्दुस्तानका विधान बनानेकी पूरी स्वतंत्रता हो । मिसालके तौर पर मिशनने सेण्टर या केन्द्रके लिए कुछ विषय सुझाये हैं । एसेम्ब्लीको हक़ होगा कि वह मुसलमानों और ग़ैर-मुसलमानोंकी अलग-अलग कसरत रायसे इनमें कुछ विषय बढ़ावे या घटा भी दे । साथ ही एसेम्ब्ली उन भेदोंको भी मिटा सकती है जिन्हें मिशनको मजबूरन् मानना पड़ा है । यही बात सूबोंको अलग-अलग गिरोहमें बाँटनेके बारेमें भी है । अगर सूबे चाहें तो वे गिरोहबन्दीके इस ख़यालको ही ठुकरा सकते हैं । गिरोहबन्दीके ख़यालको मंज़ूर कर लेने पर भी किसी सूबेको किसी एक गिरोहमें अपनी मरज़ीके ख़िलाफ़ शामिल होनेके लिए मजबूर नहीं किया जा सकता । अपनी बातको समझानेके लिए सिर्फ़ ये दो मिसालें मैंने आपके सामने रक्खीं । मिशनके ऐलानमें दूसरी भी ऐसी क़ाबिल-एतराज या क़ाबिल-सुधार बहुत-सी बातें हो सकती हैं, लेकिन मैंने उन सबका यहाँ ज़िक्र नहीं किया है ।

"मिशनके ऐलानको इस तरह समझने पर, जो मेरे ख़यालमें उसे समझनेका सही तरीक़ा है, मुझे लगता है कि मिशनने हमारे सामने एक ऐसी चीज़ पेश की है, जिस पर वह हर तरह नाज़ कर सकता है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीनबन्धु एन्ड्रूज़की याद

गांधीजीने और कहा : "हममें कुछ लोग हैं, जो कहते हैं कि अंग्रेज़ कभी कोई सही काम कर ही नहीं सकते । मैं उनकी इस बातको नहीं मानता । ईश्वर से डरकर चलनेका जितना दावा हम अपने लिए करते हैं, कैबिनेट मिशन और वाइसराय भी उतने ही ईश्वरसे डरनेवाले हैं । जब तक कोई आदमी अपनी बातका कच्चा या झूठा साबित न हो जाय, उस पर पहलेसे शक करने लगना इनसानके नाते हमारी शानके ख़िलाफ़ है । स्व० चार्ली एण्ड्रूज़ पूरे पक्के अंग्रेज़ थे । उन्होंने अपने आपको हिन्दुस्तानकी सेवामें खपा दिया । उनके देशके हर आदमी पर पहलेसे शक करना बहुत बड़ी ग़लती होगी । अंग्रेज़ी हुकूमतने हिन्दुस्तानको कितना ही नुक़सान क्यों न पहुँचाया हो, अगर मिशनका बयान सच्चा है, और मैं मानता हूँ कि वह सच्चा है, तो वह एक ऐसे क़र्ज़को चुकानेके लिए है, जो उनकी रायमें ब्रिटेन पर हिन्दुस्तानका है । और वह यह है कि वे हिन्दुस्तानकी पीठ परसे उतर जायँ, यानी हिन्दुस्तान छोड़कर चले जायँ । इसमें वह बीज मौजूद है, जो हमारे मुल्कको एक ऐसे मुल्कमें बदल सकता है, जहाँ न दुःख-शोक होंगे और न आफ़त-मुसीबत ।"

पेड़ोंकी नसीहत

पिछले दिनके भजनवाली बातको आगे बढ़ाते हुए अगले दिन प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने पूछा कि जो हिन्दुस्तान आज दुःख-दर्द और आफ़त-मुसीबतका घर बना हुआ है, उसको आप लोग भजनमें कहे गये आदर्श देशमें कैसे बदल सकेंगे? उन्होंने कहा : "इस सवालका जवाब आपको अभी-अभी गाये गये पेड़ोंके भजनसे मिलेगा । इस भजनमें हमसे कहा गया है कि हम इन पेड़ोंसे सबक़ सीखें । ये सूरजकी तेज़ धूपमें तपते हैं और अपना आसरा लेनेवालोंको छाँव देते हैं । जो इन पर पत्थर फेंकते हैं उनके लिए ये अपने फल गिरा देते हैं । यह सच्ची सख़ावत या दानशीलता है । भजनमें कहा गया है कि ऐसी दानशीलता या सख़ावत सीखनेके लिए हमें हरिजनोंके पास जाना चाहिये । आज समाजने हरिजनोंको गन्दगी और गिरी हुई हालतमें रख छोड़ा है । यह उनके लिए नहीं, बल्कि हमारे लिए शरमिन्दा होनेकी बात है । समाजने उनको अछूत माना है और उन्हें गन्दी बस्तियोंमें रहनेके लिए मजबूर किया है । और फिर भी वे हैं कि बहुत ही क़लील तनख़्वाह लेकर वे समाजकी इतनी बेश क़ीमती और अनमोल सेवा करते रहते हैं । अगर वे चाहते तो ज़्यादा फ़ायदेमन्द पेशे अख़्तियार कर सकते थे, जैसा कि उनमेंसे कुछने किया भी है । लेकिन उनकी, बहुत बड़ी तादादने ऐसा नहीं किया, यह उनके लिए शोभाकी बात है । अगर अपनी अज्ञान और पिछड़ी हुई हालतके बावजूद वे सेवाकी ऐसी स्पिरिट दिखा सकते हैं, तो आप ही कहिये कि सवर्ण कहे जानेवालोंको निस्स्वार्थ सेवा और त्यागकी कितनी ज़्यादा स्पिरिट दिखानी चाहिये?"

ऐलानकी बारीक जाँच

पिछले दिनकी अपनी तक़रीरमें गांधीजीने कहा था कि कैबिनेट मिशनके ऐलानमें उनको उस आदर्श तक पहुँचनेके आसार नज़र आते हैं जिसका ज़िक्र उस दिनके भजनमें कविने किया है । इसमें शर्त यही है कि ऐलानमें जो कुछ कहा गया है वही सब करनेका इरादा भी उसके पीछे रहा हो । उन्होंने ऐलानको एक ऐसा प्रॉमिसरी नोट कहा, जिसकी क़ीमत उसके सच्चे और सिकरने लायक़ होनेमें है । उन्होंने कहा : "प्रॉमिसरी नोट पर लिखा गया वादा पूरा न किया जाय, तो उसकी कोई क़ीमत नहीं रह जाती और वह फाड़कर रद्दीकी टोकनीमें फेंकनेके क़ाबिल ही रह जाता है । मेरे लिए सच ही सब कुछ है । मैं सचाईको छोड़कर स्वराज्य लेना भी क़बूल नहीं करूँगा । क्योंकि इस तरहका स्वराज्य एक धोखा होगा । मैं चाहता और मनाता हूँ, और आपसे भी कहता हूँ, कि आप चाहिये और मनाइये कि कैबिनेट मिशनके ऐलान पर पूरा-पूरा अमल किया जायगा और ईश्वर मिशनके मेम्बरोंको अपने प्रॉमिसरी नोटका भुगतान करनेमें उसी तरह मदद देगा जिस तरह पुराने ज़मानेमें उसने अपने भक्तोंको मदद दी थी ।"

प्रार्थनाके मानी

१९ मई, इतवारको फ़क़ीर बादशाहख़ानने प्रार्थना-सभामें दूसरी बार तक़रार की । उन्होंने प्रार्थनाके मतलब और उसकी अहमियतको समझाया । उन्होंने कहा : "प्रार्थना या नमाज़का एक ही मक़सद है, और वह यह है कि हम अपने–आपको तमाम गन्दगी और कमीनेपनसे बरी कर लें, ताकि हम दुनियाके तमाम इनसानोंके साथ––सारे मानव-परिवारके साथ—अपनी एकताके बन्धनको महसूस कर सकें । बदक़िस्मतीसे आज लोग अपनी इस असली एकताको भूल गये हैं और आपसमें अदावत रखनेवाले गिरोहोंमें बँट गये हैं । यह सब एक दुःखदायी मोहका नतीजा है । प्रार्थनाकी मददसे हमें इस क़ाबिल बनना है कि हम किसी एक क़ौम या फ़िरक़ेकी नहीं, बल्कि ख़ुदाके समूचे ख़ल्क़की ख़िदमत कर सकें । ख़ुदाने इसीलिए हमको इस दुनियामें भेजा है ।"

इसकी तशरीहमें गांधीजीने कहा : "अगर आपने बादशाहख़ानकी बातोंको ग़ौरसे सुना और समझा है, तो आप जान सकेंगे कि प्रार्थनाका मतलब ईश्वरको ख़ुश करना नहीं है । क्योंकि उसे हमारी प्रार्थना या तारीफ़की कोई ज़रूरत नहीं । प्रार्थना तो हम अपने-आपको साफ़-पाक बनानेके लिए करते हैं । ईश्वर सब कहीं है । वह विश्वके ज़र्रे ज़र्रेमें मौजूद है । आत्म-शुद्धिका यानी अपने-आपको साफ़-पाक बनानेका तरीक़ा यह है कि हम ईश्वरकी मौजूदगीको अपने अन्दर गहराईसे महसूस करें । इस तरह जो ताक़त हमें मिलती है उससे बढ़कर दूसरी कोई ताक़त नहीं ।"

इसी सिलसिलेमें गांधीजीने आगे कहा : "आपको इतनी बड़ी तादादमें प्रार्थनामें हाज़िर रहते देखकर मुझे ख़ुशी होती है । लेकिन अगर मुझे पता चला कि आप यहाँ सिर्फ़ तमाशा देखनेके ख़यालसे आते हैं या मेरे राजनीतिक (संयासी) ख़याल सुनने आते हैं, जो कि और भी बुरी चीज़ है, तो मुझे दुःख होगा । वैसे नियम तो यह होना चाहिये कि राजनीति किसी भी तरह प्रार्थना पर हावी न हो पाये — उसमें दख़ल न दे पाये । फिर भी मैं प्रार्थनाके बादकी अपनी बातचीतमें राजनीतिक मसलोंका ज़िक्र किये बिना रह नहीं सकता, उसे टाल नहीं सकता, क्योंकि ज़िन्दगीको इस तरह अलग-अलग ख़ानोंमें बाँटा नहीं जा सकता । ईश्वरकी मौजूदगीको तो हमें अपनी ज़िन्दगीके हर पहलूमें महसूस करना है । अगर आप यह सोचते हैं कि प्रार्थनाकी जगहसे जानेके तुरत बाद आप किसी भी तरह रह और बरत सकते हैं, तो आपका प्रार्थनामें हाज़िर रहना बेकार है । अगर प्रार्थनामें आपकी दिलचस्पी सच्ची है, तो मैं उम्मीद करता हूँ कि आजकी तरह कल भी आप इतनी ही बड़ी तादादमें प्रार्थनामें शरीक होंगे, गोकि कल सोमवारको मेरा मौन-दिन होनेकी वजहसे मैं कुछ कह नहीं सकूँगा ।"

सोमवार गांधीजीके लिए हमेशा ही अपनी जाँच-पड़ताल करनेका और प्रार्थनाका दिन होता है । उस दिन अपने मौनकी बदौलत वे ईश्वरके साथ अकेले रह पाते हैं । अपने अन्दरकी जोतसे रहनुमाई पानेके लिए उसकी आराधना करनेकी जितनी ज़रूरत गांधीजीने अबकी इस अहम मौक़े पर महसूस की, उतनी पहले कभी नहीं की थी । इसलिए हालाँकि अब उनके 'कुनबे'के सब लोग उनके साथ ही हैं, तो भी वे लगातार अन्तर्मुख ही बने रहते हैं । अपने इस मौन और आरामकी गहराईमेंसे उनका वह लिखा हुआ पैग़ाम निकला, जो कलकी प्रार्थना-सभामें पढ़ा गया था । उन्होंने लिखा था : "मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तानके लिए आजका दिन बहुत गम्भीर और गहरे चिन्तनका दिन है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें जल्दीमें कोई काम नहीं करना चाहिये, क्योंकि हमको करोड़ों बेज़बान लोगोंकी तक़दीरका फ़ैसला करना है । इसलिए हमारा यह फ़र्ज़ हो जाता है कि हम ईश्वरको अपना गवाह बनाकर सिर्फ़ अपने मुल्कके ४० करोड़ लोगोंका ही खयाल करें । अपनी-अपनी क़ौमों, फ़िरक़ों, गिरोहों या अपने-आपका कोई खयाल न करें । और जो कुछ भी फ़ैसला हम करें, उस पर बिना डरे या शरमाये अमल करें ।"

नई दिल्ली, २१-५-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

उरुळीकांचनमें .कुदरती उपचार

हिन्दुस्तानके देहातमें .कुदरती उपचार कैसे चल सकता है, कांचन-गाँव उसका एक नमूना बन सकेगा, इस उम्मीदसे और कांचननिवासियोंके कहनेसे मैं वहाँ चला गया और काम शुरू किया। ग्रामवासियोंने मदद की । वहाँ जो ज़मीन मिलनेवाली थी और मकान बननेवाले थे, सो तो कुछ हो नहीं सका है । देहातियोंने पैसे तो दिये हैं, लेकिन पैसे देनेसे काम नहीं निपटता है । लोगोंको ज़मीन ढूँढ़नी चाहिये, मकान बनानेमें मदद करनी चाहिये । लोगोंका इस काममें रस लेना पैसे देनेसे ज़्यादा ज़रूरी है ।

लेकिन जो मैं लिखना चाहता हूँ सो तो दूसरी चीज़ है। वहाँके सेवक मुझे लिखते हैं कि कांचनवासी .कुदरती उपचारको समझने लगे हैं और उसकी क़दर करते हैं । सेवकोंको इतना भरोसा हो गया है कि मैं जून महीने तक भी कांचन गाँवमें न पहुँचूँ, तो कोई फ़िकर नहीं । वे कहते हैं कि कांचन गाँवमें लोगोंकी तरफ़से ऐसा सुन्दर साथ मिल रहा है कि मैं पंचगनी-महाबलेश्वरसे उतरकर ही कांचन जाऊँ, तो भी कोई हर्ज नहीं । यह सब सुनकर मुझे अच्छा लगता है, और इससे ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि दूसरे देहात भी .कुदरती उपचारकी क़दर करेंगे ।

.कुदरती उपचारके दो पहलू हैं : एक ईश्वरकी शक्ति यानी रामनामसे दर्द मिटाना और दूसरे, ऐसे उपाय करना कि दर्द पैदा ही न हो सके । मेरे साथी लिखते हैं कि कांचन गाँवके लोग गाँवको साफ़ रखनेमें मदद देते हैं । जिस जगह शरीर-सफ़ाई, घर-सफ़ाई, और ग्राम-सफ़ाई हो, युक्ताहार हो और योग्य व्यायाम हो, वहाँ कम-से-कम बीमारी होती है। और, अगर चित्त-शुद्धि भी हो, तो कहा जा सकता है कि बीमारी असम्भव यानी नामुमकिन हो जाती है । रामनामके बिना चित्त-शुद्धि नहीं हो सकती । अगर देहातवाले इतनी बात समझ जायँ तो वैद्य, हकीम या डॉक्टरकी ज़रूरत न रह जाय ।

कांचन गाँवमें गायें नामको ही हैं। इसे मैं कमनसीबी मानता हूँ। कुछ भैंसें हैं, लेकिन मेरे पास जितने प्रमाण हैं वे बताते हैं कि गाय सबसे ज़्यादा उपयोगी प्राणी है । गायका दूध भी खानेमें आरोग्यप्रद है और गायका जो उपयोग किया जा सकता है वह भैंसका कभी नहीं किया जा सकता । मरीज़ोंके लिए तो वैद्य लोग गायके दूधका ही उपयोग बतलाते हैं । इसलिए मैं उम्मीद रक्खूँगा कि कांचनवासी उरुळीमें गायोंका एक जूथ रक्खेंगे, जिससे सब लोगोंको गायका ताज़ा और साफ़ दूध मिल सके । सेहत अच्छी रखनेके लिए दूधकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत रहती है ।

मकान जितनी जल्दी बन सकें उतना ही अच्छा है । एक बात तो यह है कि श्री दातारके बंगलेका उपयोग कहाँ तक करना ठीक होगा, और दूसरी व ज़्यादा महत्त्वकी बात यह है कि जब तक मकान नहीं बनता तब तक सब उपचार आसानीसे किये नहीं जा सकते । कभी-कभी मरीज़ोंको उपचारगृहमें रखना भी ज़रूरी हो जाता है । मैं आशा यह रक्खूँगा कि कांचनग्राम सब तरहसे आदर्श गाँव बने । .कुदरती उपचारके गर्भमें यह बात रही है कि मानव-जीवनकी आदर्श रचनामें देहातकी या शहरकी आदर्श रचना आ ही जाती है और उसका मध्यबिन्दु तो ईश्वर ही हो सकता है।

नई दिल्ली, २१-५-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

आमकी गुठलीकी गरी

मुझे एक दोस्तने 'करण्ट सायन्स'की एक कतरन भेजी है, जिसमें यह बताया गया है कि आमकी गुठलीकी गरी अनाज और चारेकी जगह खासा अच्छा काम दे सकती है ।

"हालके अन्दाज़ेके मुताबिक़ हिन्दुस्तानमें खली, ग्वार, कपास वग़ैराकी संगीन .खूराक गायों, बैलों, बछड़ों वग़ैराकी कुल आबादीके २९·१०%के लिए ही काफ़ी होती है और घास-चारा सिर्फ़ ७८·५%के लिए ही पूरा होता है। इसमें भेड़ों, बकरियों, घोड़ों, खच्चरों, गधों वग़ैराकी गिनती शामिल नहीं है। अकालके समय यह कमी और भी बढ़ जाती है । इज़्ज़त-नगरकी ग़िज़ाई तहकीक़ाती संस्था इस कमीको पूरा करनेके लिए दाने-चारेकी नई-नई चीज़ोंकी खोज कर रही है। वहाँ आमकी गुठलीकी गरीको आदमियों और जानवरोंको खिलानेके बारेमें भी तहक़ीक़ात हुई है । आज तो ये गुठलियाँ कूड़ा समझकर फेंक दी जाती हैं । लेकिन क़ीमयावी (रासायनिक) खोजसे यह मालूम हुआ है कि इसमें प्रोटीन, कारबोहाइड्रेट यानी चीनी और चरबी काफ़ी मिक़दारमें पाई जाती है (क्रूड प्रोटीन ८·५%, ईथर एक्स्ट्रैक्ट ८·८५% और घुलजानेवाले कारबोहाइड्रेट ७४·४९%) ।"

* * *

"इस छानबीनसे आमकी गुठलीकी गरी एक अनाजकी गिनतीमें आ गई है। इससे पता चला है कि जो गुठलियाँ आज रद्दी समझकर फेंक दी जाती हैं, उनसे ७ करोड़ पौण्ड पचाया जा सकनेवाला प्रोटीन और तक़रीबन् ७८ करोड़ पौण्ड स्टार्च (निशास्ता) मिल सकता है । यह भी अंदाज़ा लगाया गया है कि यह पचाया जा सकनेवाला प्रोटीन ८० पौण्ड जौमेंसे जितना निकलता है उतना ही १०० पौण्ड आमकी गुठलीकी गरीमेंसे भी निकलता है और ८६ पौण्ड जौके बराबर स्टार्च (निशास्ता) निकलता है ।"

मुझे इस गरीके इस्तेमालका अपने बचपनसे ही पता था । मगर आज तक शायद ही किसीने .खूराककी तौर पर इसका इस्तेमाल करनेके लिए इसे सँभालकर रखनेकी बात सोची हो । आजकल आमका मौसिम है । अगरचे काफ़ी दिन बेकार चले गये हैं, फिर भी क्या ही अच्छा हो अगर हरएक गुठलीको बचाकर रक्खा जाय और उसे अनाजकी जगह सेंक कर खाया जाय या जिन्हें उसकी ज़रूरत हो उन्हें दे दिया जाय? आज तो अनाजका जो भी दाना बचाया जा सके, वह मिला हुआ ही गिना जायगा ।

नई दिल्ली, २१-५-'४६

('हरिजनबंधु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

			पृष्ठ
हिन्दुस्तान और उसकी मुल्की ज़बान	...	अबुल कलाम आज़ाद	१४९
अंग्रेज़ी भाषाका प्रभाव	...	गांधीजी	१४९
मनका मन्थन	...	प्यारेलाल	१५०
एक विनती	...	जीवणजी देसाई	१५१
एक वाजिब हमला	...	गांधीजी	१५१
छान-बीन	...	गांधीजी	१५२
और भी खराब	...	अमृतकुँवर	१५३
साप्ताहिक पत्र	...	प्यारेलाल	१५३
उरुळीकांचनमें .कुदरती उपचार	...	गांधीजी	१५६
आमकी गुठलीकी गरी	...	गांधीजी	१५६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुनियादी दोष

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजन-सेवक

१२ पृष्ठ
दो आना

भाग १०] सम्पादक : प्यारेलाल [अंक १७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद रविवार, ता० २ जून, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

सवाल – जवाब

राम कौन ?

स० — आप कहा करते हैं कि प्रार्थनामें प्रयुक्त 'राम' का आशय दशरथके पुत्र रामसे नहीं। आपका आशय 'जगन्नियंता' से होता है। हमने भलीभाँति देखा है कि 'राम-धुन' में 'राजाराम, सीताराम' 'राजाराम, सीताराम' का कीर्तन होता है। और जयकार तो 'सियापति रामचन्द्रकी जय' का लगता है। मैं विनम्र भावसे पूछता हूँ कि यह सियापति राम कौन है ? यह राजाराम कौन है ? क्या ये दशरथके सुपुत्र राम नहीं हैं ? ऊपरकी पंक्तियोंका अर्थ तो स्पष्टतया यही लगता है कि प्रार्थनामें आराध्य जानकी-पति दशरथ-पुत्र राम ही हैं।

ज० — ऐसे प्रश्नका उत्तर मैं दे चुका हूँ, मगर इसमें कुछ नया भी है जो उत्तरकी अपेक्षा रखता है। रामधुनमें 'राजाराम', 'सीताराम' गाया जाता है, वह दशरथ-नन्दन राम नहीं तो कौन हैं ? तुलसीदासजीने तो इसका उत्तर दिया ही है, तो भी मुझे कहना चाहिये कि मेरी [illegible] बनी है। रामसे रामनाम बड़ा है। हिन्दूधर्म महासागर है। उसमें अनेक रत्न भरे हैं। जितने गहरे पानीमें जाओ, उतने ज्यादा रत्न मिलते हैं। हिन्दूधर्ममें ईश्वरके अनेक नाम हैं। सैकड़ों लोग राम-कृष्णको ऐतिहासिक व्यक्ति मानते हैं, और मानते हैं कि जो राम दशरथके पुत्र माने जाते हैं, वही ईश्वरके रूपमें पृथ्वी पर आये और यह कि उनकी पूजासे आदमी मुक्ति पाता है। ऐसा ही कृष्णके लिए है। इतिहास, कल्पना और शुद्ध सत्य आपसमें इतने ओतप्रोत हैं कि उन्हें अलग करना क़रीब-क़रीब असंभव है। मैंने अपने लिए सब संज्ञायें रक्खी हैं। और उन सबमें मैं निराकार, सर्वस्थ रामको ही देखता हूँ। मेरे लिए मेरा राम सीतापति दशरथ-नन्दन कहलाते हुए भी वह सर्व शक्तिमान ईश्वर ही है, जिसका नाम हृदयमें होनेसे सब दुःखोंका नाश हो जाता है।

नई दिल्ली, २६–५–'४६

शान्त हड़ताल

स० — हड़ताल किस तरह कराई जाय कि जिससे गुण्डेबाज़ी या लूट-मार न हो ?

ज० — हड़ताल बनावटी न होनी चाहिये। जब वह स्वाभाविक और बिना ज़ोर-ज़बरदस्तीके होती है, तो गुण्डेबाज़ी या लूट-मार हो ही नहीं सकती। ऐसी हड़तालमें क़ुदरती तौर पर हड़तालियोंके बीच आपसका सहयोग होगा, शान्ति होगी, बाहरी दिखावे न होंगे, धाँधली न होगी और नारोंका शोर न होगा। हरएक हड़ताली अपनी रोटी कमानेके लिए अकेले या दूसरोंके साथ मिलकर दूसरा कोई काम करता होगा और ऐसे कामका फ़ैसला पहले ही से कर लिया गया होगा। ऐसी शान्त, अचूक और मज़बूत हड़तालमें लूट-मार या गुण्डेबाज़ीकी कोई जगह हो ही नहीं सकती, यह साफ़ समझमें आने जैसी बात है। मैं जानता हूँ कि ऐसी हड़तालें हुई हैं। इसलिए मैंने कोई हवाई बात नहीं कही है।

नई दिल्ली, २६–५–'४६
('हरिजनबन्धु' से)

डॉक्टर क्यों ?

स० — आप डॉक्टरोंसे निदान क्यों करवाते हैं, वैद्योंसे क्यों नहीं ?

ज० — क्योंकि डॉक्टरोंके पास शरीर-शास्त्रका जो ज्ञान है, वह वैद्योंके पास नहीं। वैद्योंका आधार त्रिदोष है। उन्होंने उसकी भी पूरी-पूरी खोज नहीं की है। डॉक्टर हमेशा खोज करते रहते हैं, और या तो आगे बढ़ते हैं या पीछे हटते हैं। वे स्थिर नहीं। जो स्थिर हो जाता है, वह जड़ बन जाता है। दुनियामें कोई भी चीज़ स्थिर नहीं। अकेला ईश्वर स्थिर है, तिस पर वह अस्थिर भी कहलाता है। वह अलौकिक है।

फिर, डॉक्टर और वैद्य मेरे मित्र हैं। उनमें डॉक्टरोंने मुझे कभी छोड़ा नहीं। उनमेंसे एक तो मेरे लिए मेरी सगी लड़कीसे भी ज़्यादा बन गई है। सगी मुझको छोड़ सकती है। यह तो अपनी राज़ी-ख़ुशीसे बनी है, यह मुझे कैसे छोड़े ? इसलिए डॉक्टर निदान करते हैं। वैद्य ख़ुद जैसा-तैसा डॉक्टरी निदान करते हैं या डॉक्टरसे कराते हैं या करानेकी सलाह देते हैं। वैद्योंके पास कुछ दवाइयाँ हैं और वे उनका उपयोग कर लेते हैं। डॉक्टर, हकीम और वैद्य तीनों कमानेका धन्धा करते हैं। दूसरोंका भला करनेके लिए कोई इस धन्धेको सीखता नहीं। यह दूसरी बात है कि इनमेंसे कोई-कोई परोपकार करते हैं। एक क़ुदरती इलाजका जन्म ही परोपकारमेंसे हुआ है। लेकिन आजकल तो वह भी कमाईका ज़रिया बन गया है। इस तरह पैसा परमेश्वर बन बैठा है।

आख़िर यह सच है कि डॉक्टर मित्र मेरा निदान करते हैं। मगर मेरा आधार तो एक ईश्वर पर ही है, और वही मेरी हरएक साँसका स्वामी है। उसे देना होगा तो वह १२५ साल देगा, और न देना होगा, तो वही आज या कल उठा ले जायगा और डॉक्टर-मित्र मुँह बाये देखते रह जायँगे।

नई दिल्ली, २७–५–'४६
('हरिजनबंधु' से) मोहनदास करमचंद गांधी

झण्डे और वर्दियाँ

एक भाई लिखते हैं :

"हालमें चुनावके मौक़े पर कांग्रेस-वालण्टियरोंकी ख़ास क़िस्मकी वर्दियोंके बारेमें तो क्या कहूँ, मगर उनके झण्डोंकी बड़ी तादाद देखकर ही मैं तो दंग रह गया ! क्या कपड़ेकी कमीके इन दिनोंमें झण्डों और वर्दियोंमें कपड़ा ख़र्च करना जुर्म नहीं है ?"

वर्दियाँ और झण्डे अपने वक़्त और जगह पर ही ठीक मालूम होते हैं। जब उनसे रोटी छिनने लगती है, तो वे नफ़रतकी चीज़ बन जाते हैं। भूख मिटानेका सवाल सबसे पहला सवाल है। इसी तरह वर्दियाँ और झण्डे पहननेके कपड़ोंकी जगह नहीं ले सकते। इसलिए अगर इन भाईकी बात सही है, तो कांग्रेसवालोंको और दूसरोंको दिखावेके कामोंमें झण्डों और वर्दियोंका इस्तेमाल निहायत किफ़ायतसे करना होगा।

नई दिल्ली, २६–५–'४६
('हरिजन' से) मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक नया .ज़ुल्म

श्री गजानन नायक अपने एक ख़तमें गांधीजीको लिखते हैं :

"बम्बईमें बोरीबन्दर (वि० टी०) स्टेशन पर आजकल गुण्डे लोग मुसाफ़िरोंको दिन दहाड़े ठगते हैं। रेलवेवाले पहले और दूसरे दरजेकी जगहोंका रिज़र्वेशन पहलेसे ही बाक़ायदा कर देते हैं। बम्बई और पूनाके बीच तीसरे दरजेकी जगह भी रिज़र्व कराई जा सकती है। इसके सिवा बाक़ायदा रिज़र्वेशन करानेका कहीं कोई इन्तज़ाम नहीं। बोरीबन्दरसे लम्बे सफ़रके लिए निकलनेवाली गाड़ियाँ जब साइडिंगमें होती हैं, तभीसे गुण्डे तीसरे दरजेके डब्बोंकी जगहों पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं। और जब गाड़ी स्टेशन पर आकर खड़ी होती है, तब फ़ी आदमी एक रुपया लेकर मुसाफ़िरोंको अपने क़ब्ज़ेकी जगह देते हैं। पैसेदार मुसाफ़िर रुपया देकर अपने लिए सहूलियत हासिल कर लेते हैं। इससे ग़रीब मुसाफ़िरोंको बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। मैंने .ख़ुद कल बोरीबन्दर पर इसका अनुभव किया है। ये लोग न तो रेलवेके कुली मालूम होते हैं, और न दूसरे किसी क़िस्मके नौकर। क्योंकि इनके पास रेलवेकी कोई निशानी नहीं होती। ये लोग कोई ख़ास पोशाक भी नहीं पहनते। इस तरह ये बिलकुल ग़ैरक़ानूनी तरीक़े पर दिन दहाड़े बम्बई शहरमें ठीक आम मुक़ामों पर किस तरह ऐसी गुण्डेबाज़ी कर सकते हैं, कुछ समझमें नहीं आता। अगर पुलिस और रेलवेवालोंके साथ इन लोगोंका अपनी इस छिपी आमदनीमें कोई हिस्सा न हो, तो यह सब हो ही नहीं सकता। आजकल तीसरे दरजेके टिकट बड़ी मुश्किलसे हासिल करने पड़ते हैं। तिस पर इन गुण्डोंने अपनी कमाईके लिए ग़रीबोंको सतानेका एक नया रास्ता ढूँढ़ निकाला है। मेरी यह नम्र प्रार्थना है कि इस ग़लत तरीक़ेको बन्द करानेके लिए आप मुनासिब कार्रवाई करवायें।"

इस तकलीफ़का इलाज हमारे ही हाथमें है। एक .ग़ुलाम क़ौमको छोटे-छोटे मामलोंमें भी राहत पानेके लिए सरकारका सहारा लेनेकी आदत पड़ जाती है। आज़ाद क़ौमकी यह निशानी नहीं होती। वह जानती है कि जितनी उसकी ताक़त होगी, उसी हिसाबसे उसकी सरकार भी उपयोगी होगी। इस वक़्त जब कि हम .ग़ुलामीमेंसे आज़ादीमें दाखिल होने ही वाले हैं, हमें समझ लेना चाहिये कि हम उसी हद तक अपनी आज़ादीसे फ़ायदा उठा सकेंगे, जिस हद तक हममें पुरुषार्थ और जागृति होगी। फ़र्क़ यह होगा कि अब तक सरकार हमारी कोशिशोंमें रोड़े डालती थी, अबसे आगे उसे हमारी मदद करनी चाहिये।

भाई गजाननने जिस तकलीफ़का बयान किया है उसका इलाज सीधा है। अगर बम्बईके रहनेवालोंमें नागरिकताकी भावना ठीक-ठीक पैदा हो चुकी है, तो वे आज ही इस चीज़को रोक सकते हैं। पहली बात तो यह है कि किसी शहरीको इस तरह पैसे देकर गुण्डोंसे जगह लेनी ही न चाहिये। इस और ऐसी दूसरी तकलीफ़ोंको मिटानेके लिए एक निगरानी रखनेवाली कमेटी क़ायम की जानी चाहिये और आम लोगोंको तालीम देनी चाहिये। साथ ही, मुसाफ़िरोंको इस परेशानीसे बचानेके लिए स्टेशन पर स्वयंसेवकोंकी टुकड़ियाँ तैनात की जा सकती हैं। उनका काम होगा कि वे इस तरहके तमाम मामलोंको रेलवे-पुलिसकी नज़रमें लायें। ऐसा मालूम होता है कि रेलवे-पुलिस अपना फ़र्ज़ अदा नहीं कर रही है। रेलवेवालोंको इस मामलेमें फ़ौरन ही मुनासिब कार्रवाई करनी चाहिये। वे भी अपने धर्मका पालन तभी करने लगेंगे, जब हममें पूरी-पूरी लोकजागृति पैदा हो जायगी। यह भी सुना जाता है कि रेलवेवाले ही रक्षक बननेके बदले भक्षक बन जाते हैं।

नई दिल्ली, २७-५-'४६

प्यारेलाल

('हरिजनबन्धु'से)

वर्किंग कमेटीका प्रस्ताव

[२४ मई, १९४६को नई दिल्लीमें कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीने नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया था :]

ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि-मण्डलने और वाइसरायने मिलकर ब्रिटिश सरकारकी ओरसे १६ मई, १९४६के दिन जो बयान दिया है, और उसके सिलसिलेमें प्रतिनिधि-मण्डलके मेम्बरों और राष्ट्रीय कांग्रेसके सदरके बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है, वर्किंग कमेटीने उस पर बारीकीके साथ ग़ौर किया है। शान्ति और सहयोगके साथ हुकूमतको एक हाथसे दूसरे हाथमें देने और पूरे-पूरे स्वराज्यवाले व मुकम्मल आज़ादीवाले हिन्दुस्तानकी स्थापना करनेका रास्ता खोज निकालनेकी अपनी पूरी ख़्वाहिशके साथ कमेटीने बयानको जाँचा-पड़ताला है। ऐसे हिन्दुस्तानके पास, ख़ास तौर पर केन्द्रमें, एक ऐसी मज़बूत हुकूमत होनी चाहिये, जो दुनियाकी व्यवस्थाके लिए होनेवाली चर्चाओंमें सामर्थ्य और शानके साथ मुल्ककी नुमाइन्दगी कर सके। आरज़ी सरकार बनानेके बारेमें पेश की गई तजवीज़ों और ब्रिटिश कैबिनेटके नुमाइन्दोंकी ओरसे की गई सफ़ाईकी बिना पर आगेकी जो तसवीर वर्किंग कमेटीको मिल सकी, उसको उसने बयान पर ग़ौर करते समय अपनी आँखोंके सामने रक्खा है। वह तसवीर अभी अधूरी और अस्पष्ट है। वर्किंग कमेटी जिन लक्ष्योंको पानेका इरादा रखती है, उसके साथ यह बयान किस हद तक मेल खाता है, इसका फ़ैसला और माप तो वह तभी निकाल सकती है, जब उसके पास पूरी-पूरी तसवीर हो। वे लक्ष्य ये हैं: हिन्दुस्तानके लिए पूरा-पूरा स्वराज्य; केन्द्रमें मज़बूत मगर मर्यादित हुकूमत; सूबोंको अपनी हुकूमत .ख़ुद करनेका पूरा-पूरा हक़; केन्द्रमें और प्रान्तोंकी इकाइयोंमें राजकाज चलानेवाले तंत्रकी प्रजातंत्रके ढंग पर स्थापना; व्यक्तिके मौलिक अधिकारोंकी गारण्टी, जिससे हरएक आदमीको सबके साथ समान भावसे अपना विकास करनेके मौक़े मिल सकें; साथ ही, हरएक क़ौमको इस बातका मौक़ा और आज़ादी मिलनी चाहिये कि वह इस बड़ी चौखटके अन्दर रहकर अपनी-अपनी पसन्दकी ज़िन्दगी बिता सके।

इन लक्ष्योंके और ब्रिटिश सरकारकी ओरसे जो तजवीज़ें पेश की गई हैं, उनके बीचके फ़र्क़को देखकर और ख़ासकरके बयानके २३वें पैरेमें जो यक़ीन दिलाया गया है, उसके बावजूद बीचके वक़्तमें जब अस्थायी सरकार राजकाज चलाती होगी, तब कोई महत्वका हेर-फेर नहीं होगा, यह देखकर कमेटीको अफ़सोस हुआ है। अगर लक्ष्य हिन्दुस्तानके पूरे-पूरे स्वराज्यका हो, तो अस्थायी सरकारका कामकाज क़ानूनन् नहीं, तो भी हक़ीक़तमें पूरे-पूरे स्वराज्यसे क़रीब-क़रीब मिलता-जुलता तो होना ही चाहिये। और उसकी राहमें आनेवाली सभी रुकावटें और अड़चनें दूर होनी चाहिये। मुल्क पर अपने क़ब्ज़ेको बनाये रखनेके लिए जो परदेशी फ़ौज यहाँ रक्खी गई है, उसकी मौजूदगी पूरे-पूरे स्वराज्यका निषेध करती है।

ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि-मण्डलने और वाइसरायने जो बयान दिया है, उसमें जहाँ तक विधान बनानेकी बातका ताल्लुक़ है, उसके लिए सर्वोपरिसत्ताके साथ विधान बनानेवाली एक लोक-प्रतिनिधि-सभाकी रचनाके बारेमें ख़ास तरहकी सिफ़ारिशें की गई हैं और यह सुझाया गया है कि उस सभाकी रचना किस तरह और किस सिलसिलेसे की जाय। वर्किंग कमेटी इनमेंसे कुछ सिफ़ारिशोंके साथ सहमत नहीं। कमेटीकी रायमें कुछ ख़ास क़ौमी मामलोंके सिलसिलेमें दोनों ख़ास-ख़ास क़ौमोंकी कसरत रायवाले फ़ैसलेकी ज़रूरी शर्त्तको मानते हुए .ख़ुद विधान बनानेवाली लोक-प्रतिनिधि-सभाको इसमें किसी भी वक़्त फेरफार करनेकी और साथ ही जुदा तरीक़ा अख़्तियार करनेकी छूट रहती है।

विधान बनानेवाली सभाके लिए नुमाइन्दोंका चुनाव करनेका तरीक़ा हर दस लाखकी आबादी पर १ नुमाइन्देके हिसाबसे तय किया गया है। लेकिन ऐसा मालूम होता है कि धारासभाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युरोपियन मेम्बरोंके बारेमें, खास करके आसाम और बंगालमें, इस नीतिको लागु करनेमें कुछ नज़रचूक हुई है। इसलिए कमेटी यह उम्मीद रखती है कि इस नज़रचूकको दुरुस्त कर लिया जायगा।

इरादा यह रक्खा गया है कि विधान बनानेवाली लोक-प्रतिनिधि-सभा पूरी तरह चुने हुए लोगोंकी बने और उसमें शामिल होनेवाले नुमाइन्दोंका चुनाव सूबोंकी धारासभाओंके मेम्बर करें। बलूचिस्तानमें चुनावके ज़रिये बनी हुई धारासभा या दूसरी ऐसी कोई संस्था नहीं है, जो विधान बनानेवाली सभाके लिए नुमाइन्दे चुन सके। जो समूचे बलूचिस्तानके सूबेकी दरअसल किसी भी तरह नुमाइन्दगी नहीं कर सकता, ऐसे किसी भी नामज़द शख्सका सारे सूबेकी ओरसे अकेला नामुनासिब होगा।

कुर्गकी धारासभामें कुछ तो सरकारके नामज़द मेम्बर हैं और कुछ, सिर्फ़ १०० के क़रीब मतदाताओंके बने हुए खास मतदाता-मण्डलसे चुनकर आये हुए, युरोपियन मेम्बर हैं। इसलिए वहाँ आम मतदाता-मण्डलोंसे चुन कर आये हुए मेम्बरोंको ही विधान बनानेवाली सभाके चुनावमें शरीक होना चाहिये।

ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि-मण्डलके बयानमें इस बुनियादी उसूलका इन लफ़्ज़ोंमें ज़िक्र किया गया है कि सूबोंको अपनी हुकूमत .खुद चलाने और शेष सत्ता अपने हाथमें रखनेका अधिकार होगा। आगे चलकर यह भी कहा गया है कि सूबोंको अपने-अपने समूह बनानेकी आज़ादी होनी चाहिये, गोकि बादमें यह सिफ़ारिशकी गई है कि अलग-अलग सूबोंके नुमाइन्दे अलग-अलग ऐसे हिस्सोंमें बँट जायँगे जो 'हरएक विभागके अन्दर आनेवाले सूबोंके लिए विधान बनानेका काम अपने हाथमें लेंगे। और यह भी तय करेंगे कि उस-उस विभागके सूबोंके समूचे समूहका एक विधान बनाया जाय या नहीं।' इन दोनों अलग-अलग तजवीज़ोंमें एक साफ़ दिखाई पड़नेवाला फ़र्क़ ही नहीं है, बल्कि वे एक-दूसरीसे मेल भी नहीं खातीं, और ऐसा मालूम होता है कि इनकी शकलमें प्रान्तीय स्वराज्यके बुनियादी उसूलको साफ़ तौरपर तोड़नेवाला एक ज़बरदस्तीका क़दम इसमें शामिल कर दिया गया है। बयानके सिफ़ारिशी और सलाह देनेवाले रूपको बनाये रखनेके लिए और उसकी धाराओंका एक-दूसरीके साथ मेल बनाये रखनेके लिए कमेटीने १५वें पैरेका यह मतलब किया है कि पहले तो जिस सूबेको जिस विभागमें रक्खा गया है उसमें उसे रहना है या नहीं, इसका फ़ैसला उस सूबेकी रिआया करेगी। इस तरह विधान बनानेवाली लोक-प्रतिनिधि-सभा एक ऐसी सभा मानी जानी चाहिये, जिसे विधान बनानेका और साथ ही उसको अमलमें लानेका आख़िरी हक़ हो और जिसकी सत्ता इस मामलेमें सबके ऊपर हो।

हिन्दुस्तानकी देशी रियासतोंके बारेमें बयानकी तजवीज़ें साफ़ नहीं हैं और बहुत-सी बातें आगे होनेवाली चर्चापर छोड़ दी गई हैं। यहाँ वर्किंग कमेटी यह साफ़ कर देना चाहती है कि बिलकुल अलग या यों कहियेकी बेमेल तरीक़े पर बनाये गये दलोंके ज़रिये विधान बनानेवाली लोक-प्रतिनिधि-सभाकी रचना नहीं हो सकती। इसलिए विधान बनानेवाली सभाके लिए रियासतोंके नुमाइन्दोंको नियुक्त करनेका तरीक़ा जिस हद तक हो सके, सूबोंके लिए अख्तियार किये गये तरीक़ेके साथ मेल खानेवाला होना चाहिये। कमेटीको यह जान कर बड़ी फ़िक्र पैदा हुई है कि ठेठ आजकी घड़ीमें भी कुछ रियासतोंकी सरकारें अपनी रिआयाके जोशको हथियारोंसे लैस फ़ौजकी मददसे कुचल डालनेकी कोशिशमें लगी हुई हैं। रियासतोंमें इधर-इधर यह जो हालत पैदा हुई है, उसमें हिन्दुस्तानकी मौजूदा और आगे आनेवाली हालतके लिए गहरा भेद रहा है; क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि रियासतोंकी सरकारों और सर्वोपरिताके अधिकारों पर अमल करनेवाली हुकूमतमें कोई सच्चा फ़र्क़ नहीं हुआ है।

अस्थाई राष्ट्रीय सरकारकी बुनियाद बिलकुल नई होनी चाहिये और विधान बनानेवाली लोक-प्रतिनिधि-सभामेंसे पूरे-पूरे स्वराज्यका जो सूरज उगनेवाला है, अस्थायी सरकार उसके अरुणोदयकी तरह होनी चाहिये। इस हक़ीक़तको मानकर ही उसे अपना काम करना चाहिये, गोकि इसके लिए इस वक़्त विधानके क़ानूनमें फेरफार करना ज़रूरी नहीं। दरमियानी वक़्तमें गवर्नर-जनरल सरकारके बड़े हाकिमके रूपमें भले बने रहें, लेकिन सरकारका काम तो इस तरह चलना चाहिये, मानो उसका प्रधान-मण्डल केन्द्रीय धारासभाके प्रति ज़िम्मेदार हो। कमेटीके किसी भी तरहका फ़ैसला कर सकनेके लिए अस्थायी सरकारके दरजे, उसकी सत्ता या अधिकार और उसकी बनावट वग़ैरा, सभी बातोंकी साफ़ और पूरी-पूरी व्याख्या हो जानी चाहिये। अल्पमतवाली क़ौमके मनसे डर या वहमके संभवको मिटानेके लिए महत्त्वके क़ौमी मामलोंका फ़ैसला ऊपर बताये गये तरीक़ेसे किया जायगा।

वर्किंग कमेटीकी यह राय है कि अस्थायी सरकारकी और विधान बनानेवाली लोक-प्रतिनिधि-सभाकी स्थापना करते समय इनके साथ जुड़े दूसरे सवालोंका भी साथ-साथ विचार किया जाना चाहिये, जिससे वे एक ही तसवीरके अंग-से दिखाई पड़ें; दोनोंको एक ही नीति पर चलाया जा सके, और इसी तरह हिन्दुस्तानके अधिकार और दावेके रूपमें जो चीज़ अब मान ली गई है, उस पूरे-पूरे स्वराज्यकी बातको स्वीकार कर लिया जाना चाहिये। वर्किंग कमेटी इस काममें इस यक़ीनके साथ ही शामिल हो सकती है कि वह एक स्वतंत्र, महान् और आज़ाद हिन्दुस्तानको खड़ा करनेमें हाथ बँटा रही है, और उसी हालतमें वह हिन्दुस्तानकी रिआयाको इस काममें सहयोग देनेको न्योत सकती है। ऐसे संपूर्ण चित्रके अभावमें समिति आजके मौक़े पर अपनी आख़िरी राय ज़ाहिर करनेमें असमर्थ है।

('हरिजन'से)

रामनामका मज़ाक

स० — आप जानते हैं कि आज हम इतने जाहिल हो गये हैं कि जो चीज़ हमें अच्छी लगती है या जिस महापुरुषको हम मानते हैं, उसकी आत्माको — उसके सिद्धान्तोंको — न लेकर हम उसके भौतिक शरीरकी पूजा करने लगते हैं। रामलीला, कृष्णलीला और हालमें ही बना गांधी-मन्दिर इसके ज़िन्दा प्रमाण हैं। बनारसका रामनाम बैंक, और रामनाम छपा कपड़ा पहनना, या शरीर पर रामनाम लिखकर घूमना 'रामनाम'का मज़ाक और हमारा पतन नहीं है तो क्या है? ऐसी हालतमें 'रामनाम'का प्रचार करके क्या आप इन ढोंगियोंके हाथमें पत्थर नहीं दे रहे? अन्तर-प्रेरणासे निकला हुआ 'रामनाम' ही रामबाण हो सकता है। और मैं मानता हूँ कि ऐसी अन्तर-प्रेरणा सच्ची धार्मिक शिक्षासे ही मिलेगी।

ज० — यह ठीक कहा है। आजकल हमारे अन्दर इतना वहम फैला हुआ है और इतना दम्भ चलता है कि सही चीज़ करनेसे भी डरना पड़ता है। लेकिन इस तरह डरते रहनेसे तो सचको भी छिपाना पड़ सकता है। इसलिए सुनहला क़ानून तो यही है कि जिसे हम सही समझें, उसे निडर होकर करें। दम्भ और झूठ तो जगत्में चलता ही रहेगा। हमारे सही चीज़ करनेसे वह कुछ कम ही होगा, बढ़ कभी नहीं सकता। यह ध्यान रहे कि जब चारों ओर झूठ चलता हो, तब हम भी उसीमें फँसकर अपनेको धोखा न दें। अपनी शिथिलताके कारण हम अनजाने भी ऐसी ग़लती न करें। हर हालतमें सावधान रहना तो कर्त्तव्य ही है। सत्यका पुजारी दूसरा कुछ कर ही नहीं सकता। रामनाम जैसी रामबाण औषध लेनेमें सतत जागृति न हो, तो रामनाम फोकट जाय और हम बहुतसे वहमोंमें एक और वहम बढ़ा दें।

नई दिल्ली, २५–५–'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन-सेवक

२ जून १९४६

बुनियादी दोष

सरकारी बयानके असली और क़ानूनी अर्थको देखकर मुझे लगता है कि यह एक माक़ूल और बेलाग योजना है ; तो भी सरकारी व्याख्या आम जनताकी व्याख्यासे अलग-सी लगती है। अगर यह ठीक है और इस पर अमल होता है तो वह एक बदशगुन होगा। हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ोंके राज्यका लम्बा इतिहास बताता है कि सरकार जो व्याख्या करती है, वही ठीक मानी जाती है और उसी पर अमल किया जाता रहा है। आजसे पहले भी मुझे यह कहनेमें कभी संकोच नहीं हुआ कि हिन्दुस्तानमें जो आदमी क़ानून बनाता है, वही जज और जल्लाद भी है। क्या यह सरकारी योजना साम्राज्यवादियोंके तरीक़ेसे हटी हुई नहीं है? मैंने जवाब दिया है : "हाँ, हटी हुई है।"

सो जो कुछ भी हो। हमें इसके दोषों पर निगाह डालनी है।

मंत्रि-मण्डल कुछ दिन शिमला रह कर १४ मईको वापस दिल्ली आ गया और १६को उसने अपना बयान भी दे दिया। लेकिन फिर भी केन्द्रीय लोकप्रिय सरकार हमसे बहुत दूर है। सोचा जाता था कि बयान जारी करनेसे पहले उन्हें केन्द्रीय (मरकज़ी) सरकार बना देनी चाहिये थी। लेकिन उन्होंने बयान देनेके बाद अस्थायी सरकार बनानेकी कोशिश शुरू की है। जब कि करोड़ों आदमी खाने और कपड़ोंकी कमीसे नंगे और भूखे रह रहे हैं, राष्ट्रीय सरकारके बननेमें बड़ी देर लग रही है, यह इसका पहला दोष है।

सर्वोपरिसत्ताका (इक़्तदार-ए-आलाका) सवाल अभी तय नहीं हुआ है। यह कह देना काफ़ी नहीं है कि हिन्दुस्तानसे ब्रिटिश राज्यके खतम होते ही सर्वोपरिसत्ता भी खतम हो जायगी। अगर बीचके वक़्तमें यह सत्ता बिना किसी रोक-थामके क़ायम रह जाती है, तो यह आज़ाद सरकारके लिए बहुतसी मुश्किलें विरासतमें छोड़ जायगी। अगर आरज़ी (अस्थायी) सरकार बननेके साथ ही यह सत्ता खतम नहीं हो सकती, तो इसका इस्तेमाल आरज़ी हुकूमतके सहयोगसे और खालिस रियासती जनताके फ़ायदेके लिए ही होना चाहिये। रियासतोंकी जनता ही आज़ादी चाहती है और वही उसके लिए लड़ रही है; वे राजा और नवाब नहीं, जिनको जनताकी आज़ादीको कुचलनेके लिए विदेशी ताक़तने क़ायम रख रक्खा है, गोकि वे दावा यह करते हैं कि विदेशी ताक़तने उन्हें पैदा नहीं किया। अगर राजा और नवाब अपने फ़र्ज़को अच्छी तरह अदा करना चाहते हैं, तो उन्हें सर्वोपरिसत्ताके इस लोकप्रिय इस्तेमालका आदर करना चाहिये और इस नई योजनाके मातहत जनताको जो ऊँचे अधिकार मिलें, उनके अनुरूप अपनेको बना लेना चाहिये। यह दूसरा दोष है।

यह ऐलान किया गया है कि बीचके वक़्तमें अन्दरूनी शान्ति रखने और बाहरी हमलोंसे मुल्कको बचानेके लिए अंग्रेज़ी फ़ौजें यहाँ रहेंगी। अगर रिआयतके इस वक़्तमें भी उन्हें ऐसे इस्तेमालके लिए यहाँ रक्खा जाता है, तो उनकी मौजूदगी विधान बनानेवाली परिषद्की आज़ादीको कम कर देगी और बहुत मुमकिन है कि इस नाममात्रकी आज़ादीके क़ायम हो जानेके बाद भी उनकी ज़रूरत बनी रहे। जो राष्ट्र अपनी अन्दरूनी और बाहरी हिफ़ाज़तके लिए विदेशी फ़ौजें रखना चाहता है या उन्हें अपने ऊपर लदवा लेता है, वह आज़ादीके किसी भी मानीमें आज़ाद नहीं कहा जा सकता। वह तो एक निकम्मा और स्वराज्यके लिए नालायक़ राष्ट्र है। उसकी शर्त कसौटी तो यह है कि वह अकेला, अपने बल पर, निडर होकर खड़ा रह सके। अगर आज़ाद होने पर हम अच्छी तरह चलना चाहते हैं, तो बीचके इस वक़्तमें हमें बिना किसीकी मददके उचकना कूदना तो सीख ही लेना चाहिये। अब हमें बच्चोंकी तरह दूसरोंके मुहताज न रहना चाहिये।

जिस तरह हम चाहते थे, काम सब उसी तरह नहीं हो रहे हैं इसकी वजह हमारी कमज़ोरी ही समझी जानी चाहिये। कारण कुछ भी क्यों न हों, ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश रिआयाकी हेंकड़ी इसकी वजह नहीं है। हमें जो कुछ भी मिलेगा, वह हमारी योग्यताकी वजहसे मिलेगा; समुद्रपारके तोहफ़ेके रूपमें नहीं। तीनों मंत्री, जो कुछ उन्होंने ऐलान किया है, उस पर अमल करने आये हैं। जब वे ब्रिटिश ऐलानोंको पूरा करनेमें नाकाम हों — उन्हें झुठलाने लगें — और ब्रिटिश हुकूमतको बनाये रखनेके तौर तरीक़ोंको खोजने लगें, तब उन्हें दोषी कहनेका वक़्त आयगा। गोकि डरकी गुंजाइश है, तो भी अभी ऐसे कोई आसार नज़र नहीं आते कि उन्होंने कहा कुछ हो और चाहा कुछ हो।

नई दिल्ली, २६–५–'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी

दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तानियोंका जो डेप्युटेशन यहाँ आया है, उसने देशमें बड़ी हलचल पैदा कर दी है। वे इस मामलेमें यू० एन० ओ० तक यानी संयुक्त राष्ट्रोंकी संस्था तक पहुँचना चाहते हैं, ताकि अपने लिए उनकी हमदर्दी भी हासिल कर सकें। लेकिन इस बीच क़ानून तो बन ही रहा है। वहाँ रहनेवाले हिन्दुस्तानके हाई कमिश्नरको वापस बुला लिया जायगा, बुला लेना भी चाहिये। वहाँ रह कर जो थोड़ी मदद वे कर सकते हैं, वह उस अपमानके मुक़ाबले कोई चीज़ नहीं जो उस मुल्ककी नुमाइन्दगी करनेमें है, जिसके बाशिन्दे हलकी क़ौम या जातके माने जानेको हैं। यह नई जात हिन्दुस्तानकी उस पुरानी मगर मरनेकी तैयारीमें लगी जात-पाँतकी प्रथासे बदतर है, जिसमें मरते-मरते भी कुछ उजले पहलू मौजूद हैं। लेकिन यह जो नया मुल्क हुआ एडिशन या संस्करण है, उसमें तो कुछ भी नहीं है। वह बेशर्मीके साथ यह ऐलान करता है कि एशियावालों और अफ्रीकनोंसे अपने आपको बचानेके लिए यह ज़रूरी है कि गोरी सभ्यता उनके और अपने बीच क़ानूनी दीवारें खड़ी कर ले। दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी एक भारी बोझ उठा रहे हैं और उसे उठानेकी उनमें पूरी ताक़त है। सत्याग्रह दुनियाका बड़े-से-बड़ा — अमोघ — हथियार है। वह दक्षिण अफ्रीकामें ही पैदा हुआ और वहीं पला-पुसा। अगर वे उसका कारगर उपयोग करेंगे, तो जिस पवित्र हेतुको लेकर वे चले हैं; वह सफल होगा। मुट्ठीभर लोगोंके लिए वहाँ रहने और तिजारत करनेकी आसानी पैदा कर देना इसकी मन्शा नहीं है, क्योंकि इस तरह तो वहाँ वही रह सकते हैं, जो अपने हलकेपनका पट्टा लगा कर रहनेको तैयार हों। बरसों पहले दक्षिण अफ्रीकाके एक अंग्रेज़ने इसे 'कुत्तेका पट्टा' कहा था। हमारे सामने आज जो मसला है, जो मक़सद है, वह तो हिन्दुस्तानकी इज़्ज़तका है, और उसके ज़रिये दुनियाकी तमाम लूटी-खसोटी जानेवाली रंगीन जातियोंकी इज़्ज़तका है, फिर वे भूरी हों, पीली हों या काली हों; और इसके लिए तो जितनी आफ़त-मुसीबत वे बरदाश्त कर सकें, करने लायक़ है।

नई दिल्ली, २७–५–'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौन — सत्संग

पिछले हफ़्ते मैंने हर इतवारको होनेवाली क्वेकरोंकी उस मौन प्रार्थना-सभाका ज़िक्र किया था, जिसमें गांधीजी शरीक हुए थे। यहाँ आनेके बादसे वे हर इतवारको उसमें शरीक होते हैं।

क्वेकरोंका यह विश्वास है कि "एकचित्त हो कर सबके साथ चुपचाप उपासना की जाय, तो ईश्वर हमसे बोलता है और जीवनकी सामान्य गति-विधिमें हम उसकी इच्छाको समझ सकते हैं।" पिछले हफ़्ते एक पुराने क्वेकरकी बातको दोहराते और समझाते हुए प्रार्थनाके शुरूमें श्री रणजीत एम० चेतसिंहने कहा था: "संकल्प-विकल्पों और दुनियादारीमें लगी हुई आत्मा ईश्वरकी आवाज़ नहीं सुनती।" "शान्त होओ और अपने .खुदके बारेमें कुछ मत सोचो।" जॉर्ज फॉक्सने कहा था: "धार्मिक और आध्यात्मिक मौनके यह मानी नहीं कि मन तन्द्रिल और अचिन्तनशील बन जाय; उसका सीधा अर्थ यह है कि इस मौनके द्वारा मनको दुनियाके दृश्य पदार्थों और व्यर्थकी कल्पनाओंसे मुक्त कर दिया जाय।"

जिस क्वेकर मीटिंगमें गांधीजी शरीक हुए थे, उसीको शामकी प्रार्थना-सभाके भाषणका विषय बना कर उन्होंने कहा कि क्वेकरोंके इस तजरबेसे उनका तजरबा कितना मिलता-जुलता है कि "मनको विचारोंकी चेतन क्रियाओंसे मुक्त करने और उसे निराकार ईश्वरकी भावनासे ओतप्रोत करनेसे मनुष्यको अकथनीय शान्ति मिलती है और परब्रह्मसे उसकी आत्माका सम्मिलन होता है।" यहाँ यह सवाल किया जा सकता है: "क्या मनुष्यके समूचे जीवनको ही ईश्वरकी अटूट प्रार्थना और स्तुतिका रूप नहीं ले लेना चाहिये? तब फिर प्रार्थनाके लिए अलग वक़्तकी ज़रूरत ही क्या रह जाती है?" भाई लॉरेन्सने इस बातका सबूत दिया कि "उनके प्रार्थनाके लिए मुक़र्रर किये हुए वक़्त और वक़्तोंसे अलग नहीं होते। वे अपने गुरुजनोंके आदेशसे एकान्तमें प्रार्थना करते हैं। लेकिन न तो वे प्रार्थनाके लिए एकान्त चाहते हैं, न उसकी उन्हें कोई ज़रूरत है। क्योंकि अपने बड़े-से-बड़े कामके वक़्त भी वे ईश्वरसे दूर नहीं होते।" गांधीजी इस दृष्टिकोणसे सहमत हैं। अपने प्रवचनमें उन्होंने कहा: "अगर आदमी चौबीसों घण्टे ईश्वरकी मौजूदगी महसूस कर सके, तो उसके लिए प्रार्थनाके अलग वक़्तकी ज़रूरत नहीं। लेकिन अधिकतर लोगोंके लिए यह नामुमकिन होता है। वे रोज़मर्राकी स्वार्थभरी दुनियादारीमें ही रचे-पचे रहते हैं। ऐसे लोग अगर कुछ मिनटोंके लिए भी रोज़ अपने मनको दुनियवी चीज़ोंसे पूरी तरह अलग रख सकें, तो उन्हें बेहद लाभ हो। मौन-समागमसे वे लोग दुनियाके झगड़े-बखेड़ोंके बीच अखण्ड शान्तिका अनुभव करेंगे, ग़ुस्सेको दबा सकेंगे और सहनशील बनेंगे। जब मन पूरी तरह ईश्वरकी भावनासे भर जाता है, तो आदमी न किसीका बुरा सोचता है न किसीसे नफ़रत करता है, और बदलेमें दुश्मन भी दुश्मनीको भूलकर दोस्त बन जाता है। मैं इस बातका दावा नहीं करता कि मैं हमेशा दुश्मनोंको दोस्त बनानेमें कामयाब हुआ हूँ, लेकिन कई मामलोंमें मैंने यह महसूस किया है कि जब मन ईश्वरीय शान्तिसे पूर्ण होता है, तो सारी नफ़रत ग़ायब हो जाती है। सनातनकालसे पैग़म्बरोंकी जो परम्परा बराबर चली आ रही है, वह इस बातका प्रमाण है। मैं दावा नहीं करता कि मुझमें यह गुण है। मैं जानता हूँ कि यह सिर्फ़ ईश्वर-कृपासे ही मिलता है। इसलिए इस पुण्य सप्ताहमें हम मौन-समागम द्वारा ईश्वरकी कृपाको प्राप्त करें और मुमकिन है कि हमारा यह अनुभव सदा हमारे साथ रहे।"

क्वेकरोंका मौन-सम्मिलन अक्सर तभी टूटता है, जब उनमेंसे कोई प्रार्थना करनेकी प्रेरणा पाता है या यह सोचता है कि उसके विचारोंसे दूसरे भी लाभ उठावें। पिछली बार श्री सुधीर घोषने स्वर्गीय चार्ली एण्ड्रूज़की हृदयस्पर्शी चर्चा चलाकर मौन तोड़ा था। उन्होंने कहा: "सन् १९४०में उनकी मृत्युके वक़्त मैं उनके पास नहीं था। लेकिन लोग कहते हैं कि मरनेसे पहले आधी बेहोशीकी हालतमें वे अक्सर बड़बड़ाया करते थे: 'बापू! स्वराज्य आ रहा है!' यह सोचकर मेरा गला भर आता है कि आख़िर जब स्वराज्य आ रहा है, तो सी० एफ० एण्ड्रूज उसे देखनेके लिए हमारे बीच नहीं है। इन दिनों जब कि देशके एक कोनेसे दूसरे कोनेतक हिंसाकी आग भड़क रही है और लोगोंमें ब्रिटिशोंके ख़िलाफ़ बदलेकी भावना फैल रही है, इस ख़िस्तीकी छोड़ी हुई विरासतको हम ज़्यादा से ज़्यादा याद करें; क्योंकि वे हिन्दुस्तानियों और ब्रिटिशोंके बीच शान्ति स्थापित करनेके लिए जीये और मरे। और इसकी वजहसे उनके देशवासी उनसे नफ़रत भी करने लगे थे। भाग्यनिर्णयके इन दिनोंमें दिल्लीमें भगवान्की इससे बड़ी उपासना और हम क्या कर सकते हैं कि हम उस आदमीके कामोंका विचार करें, जिसकी ज़िन्दगी ब्रिटेन और हिन्दुस्तान की अच्छी भावनाओंको जोड़नेवाली एक रेशमी डोर थी?"

सर हेनरी कैम्पबेल बैनरमॅनकी जीवनी लिखनेवालेने यह लिखा है कि बोअर-युद्धके बुरे-से-बुरे दिनोंमें एक अंग्रेज़ महिला एमिली हॉबहाउसकी स्पष्टवादिताने और साहसके साथ बोअरोंकी रहनुमाईने युद्धकी घटनाओंसे अंग्रेज़ोंके ख़िलाफ़ पैदा होनेवाली नफ़रतको दूर करने और दोनों राष्ट्रोंके बीच आख़िरी समझौता करानेमें कितनी मदद की थी? एमिली हॉबहाउसने बोअरोंके लिए जो किया, वही सी० एफ० एण्ड्रूज़ने हिन्दुस्तानके लिए किया। हिन्दुस्तानकी आज़ादीके लिए उन्होंने जो मेहनत उठाई वह ब्रिटिश साम्राज्यवादको ऐसी प्रेरणा दे, जिससे वह हिन्दुस्तानके साथ इन्साफ़ कर सके।

नई दिल्ली, १७–४–'४६

('हरिजन'से)

प्यारेलाल

मुल्की ख़ूराकका प्रयोग

पहली बड़ी लड़ाईके आख़िरी सालमें डेनमार्कमें एक ऐसा प्रयोग (तजरबा) किया गया था, जिसकी तरफ़ बरबस ध्यान जाता है। यह प्रयोग अनाजकी मौजूदा तङ्गीके इस वक़्तमें हमारे लिए नसीहत लेने लायक़ है। एक क़ौमके नाते डेन लोग पहले ज़्यादातर दूध और साग-सब्ज़ी खाया करते थे। उसके बाद, क़रीब सन् १८७०–८०में प्रेरीज़की यानी घासके मैदानोंकी हाल ही जोती-बोई गई ज़मीनसे उगनेवाले अमेरिकाके गेहूँ और जौ डेनमार्कमें बहुतायतसे आने लगे और उसकी वजहसे डेन लोगोंके लिए यह ज़रूरी हो गया कि वे खेतीके अपने तरीक़ोंको बदलें। उन्होंने सुअरों और मुर्गों-बतकोंकी परवरिश शुरू की और वे अपने यहाँसे अण्डे, मसाला लगाया हुआ मांस (गोश्त) और मक्खन इंग्लैण्ड भेजने लगे। साथ ही, वे .ख़ुद भी बड़ी मिक़दारमें गोश्त और अण्डे खाने लगे।

उस लड़ाईमें जब अमेरिका भी शरीक हो गया तो डेनमार्कके लिए एक घेरेकी-सी हालत पैदा हो गई और वह गंभीर बन गई। उस वक़्त वहाँकी आबादी ३५,००,०००की थी और ढोर या मवेशी कुल ५० लाख थे। अमेरिकासे आनेवाला अनाज और घास अचानक बन्द हो गया था। इसलिए डेनमार्कमें अनाज और घासकी ज़बरदस्त तङ्गी मालूम होने लगी। इस नाज़ुक हालतका सामना करनेके लिए .ख़ूराकके मामलेमें खोजका काम करनेवाले महकमेके सुपरिण्टेण्डेण्ट प्रो० माइकेल हिन्धेड़को डेनमार्ककी सरकारने अपना सलाहकार बनाया। उनके सामने सवाल यह रक्खा गया कि आज तक डेनमार्कके सुअर अंग्रेज़ों और डेन लोगोंको गोश्त दिया करते थे। आजकी इस तङ्ग हालतमें सुअरोंके बोझसे छुटकारा पाकर उनको खिलाया जानेवाला अनाज इन्सानोंको खानेके लिए दिया जाय, तो वह समझदारीकी बात होगी या नहीं? प्रो० हिन्धेड़ने तय किया कि यह तो समझदारीकी बात है। नतीजा यह हुआ कि डेनमार्कके क़रीब ४/५ सुअर और १/६ मवेशी क़तल कर डाले गये। सुअरोंके न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहनेसे उनको दिया जानेवाला चोकर या भूसा फ़ाज़िल रहने लगा। यह मोटा चोकर रोटी बनानेके आटेमें मिलाया जाने लगा। इस आटेकी बनी रोटी बादमें 'क्लीब्रॉट' के नामसे मशहूर हुई। सरकारने इस रोटी पर अपनी मुहर लगाई, यानी इसे इनसानकी .खूराकके तौर पर मंज़ूर किया। डेनमार्कवाले इस रोटीके सिवा दलिया, साग-सब्ज़ी, दूध, मक्खन और फल खाने लगे। शराब तैयार करनेके लिए लोगोंको अनाज और आलू वग़ैराका इस्तेमाल करनेकी आज़ादी नहीं थी। इसकी वजहसे शराबका बनना क़तई बन्द हो गया। 'बीर' नामकी शराब पहले जितनी बरती जाती थी उससे आधी ही बरतनेकी इजाज़त दी गई। गोश्त उन्हीं लोगोंको मिलता था जो अपने खेतों पर रहते थे। शहरियोंको यानी कुल आबादीके ४० फ़ी सदी लोगोंको गोश्त बहुत कम मिलता था और गो-मांस तो पैसेदार लोग ही खरीद पाते थे।

.खूराकके बारेमें जो क़ानून बने उन पर सन् १९१७के मार्च महीनेसे अमल शुरू हुआ और उसी सालके अक्टूबर महीनेसे १९१८के अक्टूबर तकके १२ महीनोंके दरमियान वे क़ानून ज्यादा कड़े बना दिये गये।

जब यह मुल्की .खूराक सबके लिए लाज़िमी कर दी गई, तो इसका एक अचरज पैदा करनेवाला नतीजा निकला। सन् १९१३-१४में वहाँ फ़ी हज़ार १२·५ मौतें हुआ करती थीं। अब वे घटकर १०·४ हो गईं। प्रो० हिन्धेड़ेने लिखा है: "मौतकी यह तादाद युरोपके किसी भी मुल्कमें किसी भी वक़्त जितनी थी उससे कम ही है।" इन नतीजों पर हम दूसरी तरहसे ग़ौर करें। १९०६से १९१६ तककी औसतको १६० मानें, तो ऊपर दिये गये अक्टूबरसे अक्टूबरके सालोंमें वह ६६ रही। "६५ सालसे ऊपरकी उम्रवाले आदमियोंकी मौतकी तादाद लें, तो वह भी ७६ होती है।"

.खूराकके बारेमें इस नये हुक्मके निकलनेसे पहले डेनमार्कवाले महीन आटेकी और चोकरवाले मोटे आटेकी यानी दोनों तरहकी रोटियाँ खाते थे। प्रो० हिन्धेड़ेने उनको मोटे आटेमें ऊपरसे चोकर मिलाकर बनाई गई रोटी खानेकी आदत लगाई। इस आटेमें १००में ६७ हिस्सा राई (एक तरहका हलका अनाज), २१ हिस्सा जौ और १२ हिस्सा चोकर होता था।

प्रो० हिन्धेड़े कहते हैं: "जिन लोगोंको गोश्त बिलकुल नहीं मिलता था या कम मिलता था उनको इस रोटीकी वजहसे वनस्पति प्रोटीन मिला। इसके अलावा, वैसे भी अमेरिकन गेहूँके हमलेसे पहले डेनमार्कवाले इसी तरहकी रोटी खाते थे और सैकड़ों बरससे वह डेनमार्ककी राष्ट्रीय या क़ौमी रोटी थी।"

प्रो० हिन्धेड़े कहते हैं कि डेनमार्कवालोंकी तन्दुरुस्तीमें यह जो मार्केका सुधार हुआ उसकी दो खास वजहें हैं: (१) कम गोश्त। (२) कम शराब। "चूँकि चोकरमें वनस्पति प्रोटीनकी मिक़दार ठीक-ठीक होती है, इसलिए बिलकुल गोश्त न मिलनेकी वजहसे या कम मिलनेसे प्रोटीनकी जो कमी .खूराकमें हो जाती है, चोकरकी वजहसे उसकी ज्यादातर भरपाई हो गई।" प्रो० हिन्धेड़ेने अपने इस प्रयोगको अपनी 'पहलेकी नसीहतकी फ़तह' कहा है। 'ड्यूटेच मिडिज़िनिच वो-चेन्स्क्रीफ्ट' नामके माहवारीके मार्च, १९२०के अंकमें उन्होंने लिखा था: "पाठक जानते हैं कि दूध और साग-सब्ज़ीकी .खूराकके फ़ायदों पर मैंने कितना ज्यादा ज़ोर दिया है। मैं उसूलन् शाकाहारी (साग-पात खानेवाला) नहीं। लेकिन मैं महसूस करता हूँ और मैं यह साबित कर चुका हूँ कि जो लोग ज्यादा मिक़दारमें मांस और अण्डोंकी .खूराक खाते हैं उनकी तन्दुरुस्तीके लिए वह खतरनाक है।"

दिल्ली, ९-५-'४६

('हरिजन' से)

प्यारेलाल

धारासभाके मेम्बरोंकी तनख़्वाह

स०— एसेम्ब्लीके एक मेम्बरकी माहवार तनख्वाह २००) है। चूँकि वह मुफ़स्सलमें रहता है, इसलिए एसेम्ब्लीकी बैठकोंके दिनोंमें वह १५) रोज़के भत्तेका हक़दार है। इसके अलावा, जिस दिन वह एसेम्ब्लीकी मीटिंगमें हाज़िर रहे, उस दिनके लिए सवारी-भत्तेके २॥) ले सकता है। साथ ही, अपने रहनेकी जगहसे शहरमें आने पर उसे पहले दरजेके ड्योढ़े किरायेके हिसाबसे सफ़र-खर्चका भत्ता भी मिल सकता है। लेकिन एक ही दिनके लिए वह सफ़र-खर्चका भत्ता और रोज़का भत्ता नहीं ले सकता।

१. (अ) क्या ग़रीबोंके नुमाइन्दे और सेवककी हैसियतसे ऐसे आदमीको यह तनखवाह लेनी चाहिये?

(आ) अगर वह अपनी पूरी तनखवाह मुक़ामी कांग्रेस-कमेटीको या जिस संस्थामें वह काम करता हो उस संस्थाको रचनात्मक या तामीरी कामके लिए दे दे, तो क्या वह इस दोषसे बरी हो सकेगा?

(इ) अगर ऐसा हो, तो क्या इसका यह मतलब न होगा कि मक़सदके साफ़ होनेसे उसे हासिल करनेका ज़रिया भी साफ़ ठहरता है?

२. एसेम्ब्लीके जलसेके दिनोंमें उसे शहरमें रहना होगा, और एम० एल० ए० के नाते अपने फ़र्ज़ों और ज़िम्मेदारियोंको अदा करनेके लिए उसे कुछ खर्च भी करना पड़ेगा।

(अ) ऐसी हालतमें क्या वह अपने आदर्शके साथ मेल बैठाते हुए इन खर्चोंको पूरा करनेके लिए रोज़ाना भत्ता ले सकता है?

(आ) अगर ऐसा हो सकता हो, और भत्तेका कुछ ही हिस्सा लिया न जा सकता हो, तो क्या उसे पूरा भत्ता लेना चाहिये? और, बची हुई रक़म अपनी संस्थाको, जिसके मातहत वह काम करता हो, दे देनी चाहिये?

(इ) अगर ऐसा किया जा सके, तो क्या अपने आदर्शके साथ मेल रखते हुए वह इस तरह बची हुई रक़मको या उसके कुछ हिस्सेको अपने कुनबेके लिए खर्च कर सकता है? क्योंकि अगर ऐसा न हुआ, तो अपने घरका खर्च चलानेके लिए उसको दोस्तोंकी सखावतका सहारा लेना पड़ेगा।

३. (अ) क्या उसे उस हालतमें भी सवारीका भत्ता लेना चाहिये, जब कि रोज़ाना भत्तेकी रक़म उसके सवारी वग़ैराके सब खर्चोंको पूरा करनेके लिए काफ़ीसे ज्यादा होगी? (सवारीका भत्ता तो शहरमें रहते हुए उसके एसेम्ब्लीकी बैठकोंमें शामिल होनेके लिए ही रक्खा गया है।)

(आ) अगर वह आमतौर पर ट्रामगाड़ियों या मोटर-बसोंमें सफ़र करता है, तो क्या एसेम्ब्लीकी बैठकोंमें शामिल होनेके लिए उसे क़ीमती या खर्चीली सवारीका इस्तेमाल करना चाहिये?

४. अगर कोई मेम्बर उसूलन् तीसरे दरजेमें सफ़र करता है, तो मीलके हिसाबसे सफ़रका भत्ता लेनेके मामलेमें उसे उस हालतमें क्या करना चाहिये, जब कि उसके लिए पहले दरजेके ड्योढ़े किरायेके हिसाबसे कम भत्ता लेना क़ानूनन् मुमकिन न हो?

ज०— मेरी रायमें मुख्तलिफ़ एसेम्ब्लियोंके मेम्बरोंको जो तनख्वाहें और भत्ते दिये जाते हैं, वे उनकी देशसेवाके लिहाज़से हर तरह ज्यादा हैं। तनख्वाहों या भत्तोंके जो पैमाने तय किये गये हैं वे अंग्रेज़ी नमूनेके हैं। दुनियाके इस ग़रीब-से-ग़रीब मुल्ककी आमदनीके साथ उनका कोई मेल नहीं बैठता। इसलिए इन सवालोंका मेरा जवाब तो यही है कि जब तक प्रधानमण्डल सब खर्च कम न करे, तब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या तो ली जानेवाली तनख्वाह या भत्ता उस पार्टीको दे दिया जाय, जिसके मातहत मेम्बर काम करता हो, और वह उतना ही ले जितना पार्टीने उसके लिए तय कर दिया हो; या, अगर यह मुमकिन न हो, तो उतना ले जितना उसे अपने लिए और अपने परिवारके लिए सचमुच ज़रूरी मालूम होता हो। और बची हुई रक़मको रचनात्मक कामकी किसी मदमें या इस तरहके दूसरे किसी पब्लिक काममें लगा दे। तनख्वाह या भत्तेके रूपमें तय की गई रक़म लेना ज़रूरी है, लेकिन किसी पर यह मजबूरी नहीं है कि वह उसे अपने लिए खर्च भी करे। हाँ, अपनी ज़रूरतके मुताबिक़ खर्च किया जा सकता है। मक़सदके साफ़ होनेसे ज़रियेके साफ़ होनेका सवाल यहाँ उठता ही नहीं।

नई दिल्ली, २५-५-'४६
('हरिजन'से)　　　　मोहनदास करमचंद गांधी

बैलके हक़में

देशके माली इन्तज़ाममें नये प्लानके नामसे जो ख़याल फैल रहे हैं उनकी वजहसे हमारी खेतीके तरीक़ोंमें और आमदरफ़्तके ज़रियोंमें जहाँ-तहाँ मशीनोंको दाख़िल करनेकी हवा चल पड़ी है। यानी अगर नये प्लानोंके हिमायतियोंकी मन्शा बर आये, तो बैलोंका मुल्कमें नाम-निशान भी न रह जाये। इसलिए यह ज़रूरी हो गया है कि हम एक बार फिर उन सब बातोंको सोच लें जो हमारे यहाँ बैलके हक़में कही जा सकती हैं।

पहली बात तो यह है कि हमारे मुल्कमें जितना हो सके उतना दूध पैदा करना ज़रूरी है। इसलिए हमें गायोंकी ज़रूरत तो रहेगी ही। और जब गायें रहेंगी, तो उनके साथ बैल भी होंगे। और बैलोंके लिए पूरे कामकी ज़रूरत भी रहेगी। उन्हें पूरा काम तभी मिल सकता है जब हम खेतीमें हलके साथ, सवारियोंमें गाड़ीके साथ और उद्योगोंमें कोल्हूके साथ बैलको जोड़े रहें। अगर हम इन सब तरीक़ोंसे बैलका उपयोग नहीं करेंगे, तो हमारी हालत पछाँही देशोंके जैसी हो जायगी। वहाँ गायोंकी नस्लको बनाये रखनेके लिए जितने साँड़ोंकी ज़रूरत होती है, सिर्फ़ उतने ही बछड़ोंको पाल-पोसकर बड़ा किया जाता है, और बाक़ी सबको कसाईके हवाले कर देना पड़ता है।

हलके ज़रिये बड़े पैमाने पर की जानेवाली खेतीमें बरता जानेवाला ट्रैक्टर एक कल है, और बैलमें जो भी उसके जितनी ताक़त नहीं है, तो भी वह एक कल ही है। यहाँ यह याद रखना चाहिये कि बैल एक जीती-जागती कल है। वह जानदार है। उसके जैसे चौपाये जानवरोंके साथ इन्सानोंके ताल्लुक़ात इन्सानी तहज़ीबकी कूचमें एक ख़ास महत्त्वकी चीज़ हैं और यह बात साबित भी हो चुकी है। पश्चिमी संस्कृति की ख़ास निशानियोंमें जो कई बुराइयाँ पाई जाती हैं उनमें बार-बार होनेवाली ख़ूँख़ार लड़ाइयाँ भी एक हैं। हम देखते हैं कि इन लड़ाइयोंके दौरानमें इन्सान अपनी इन्सानियतको भूलकर हैवान या जानवर बन जाता है। पश्चिमवालोंने जानदारोंकी ताक़तका इस्तेमाल करना छोड़कर उनकी जगह जड़ और बेजान कलोंको जिस तरह क़ायम किया है, वही इस सारी बुराईकी जड़ हो, तो इसमें अचम्भा क्या?

यह तो इन्सानियतकी भावना पर रची गई दलील हुई। लेकिन इसे आर्थिक यानी माली दलीलका सहारा देकर मज़बूत बनाना ज़रूरी है। इसलिए अब हम आर्थिक दलीलों पर ग़ौर करें। इसके लिए हम श्री एन॰ जी॰ आपटेकी 'थॉट्स एण्ड वर्क अबाउट विलेजेस' (देहातके काम और देहातके बारेमें विचार) नामकी समर्थ भारत प्रेसके श्री सरदेसाई द्वारा पूनासे निकाली हुई किताबके 'इकॉनॉमिक्स ऑव् दि बुलक्' (बैलका अर्थशास्त्र) नामवाले हिस्सेका खुलकर उपयोग करेंगे।

बैल सिर्फ़ जानदार ट्रैक्टर ही नहीं, बल्कि वह खादका एक जीता-जागता कारख़ाना भी है, जो हमें गोठमेंसे मिलनेवाली बेश क़ीमती खाद देता है। यह खाद ज़मीनको नाइट्रोजन नामकी एक चीज़ देती है, जिसकी वजहसे ज़मीनके दानों या ज़र्रोंके बीच कुछ फ़ासला रहने लगता है, और पानीको पकड़े रखनेकी उसकी ताक़त बढ़ती है। उसकी बदौलत ज़मीनमें नमी और हवा दोनों काफ़ी मिक़दारमें बने रहते हैं। वनस्पतिके पोषण और उसकी बाढ़के लिए ये तीनों चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं। "ज़मीनको बढ़िया बनानेवाले अलग-अलग तत्त्वोंको इकट्ठा करके उनकी तेज़ खाद तैयार की जाय और वह ज़मीनमें कितनी ही क्यों न डाली जाय, तो भी अगर उससे हवा और पानीको जज़्ब करनेकी उसकी ताक़त बढ़ती नहीं है, तो उस खादसे कोई फ़ायदा नहीं होता।"

जैसा कि इन पन्नोंमें पहले लिखा जा चुका है, बनावटी खाद बिलकुल शापरूप हैं। इसके सिवा, सन-जैसे दो दालोंकी जातके पौधोंको थोड़ा बढ़ने देकर उन्हें हरे-के-हरे ज़मीनमें जोतकर हरी खाद देनेका रिवाज भी हमारे यहाँ मौजूद है। लेकिन कुल मिलाकर गोठसे मिलनेवाली खादके मुक़ाबले यह हरी खाद घटिया दरजेकी होती है। इसकी एक वजह यह है कि बीज बोनेके समयसे लेकर उगे हुए पौधोंको ज़मीनमें मिलाने और उनके सड़ने लगने तक ज़मीन रुकी रहती है और उसका दूसरा कोई उपयोग नहीं किया जा सकता; और न वह सब्ज़ी मवेशियोंको खिलानेके काम ही आती है। इसके बर-ख़िलाफ़ बैल बारहों महीने काम देते हैं और ख़ुद जो घास वग़ैरा चरते हैं उसे गोबर वग़ैराके रूपमें हमको लौटा देते हैं। गोबर वग़ैराकी यह खाद ज़मीनमें आसानीसे घुल जाती है और एक ख़ास बात यह होती है कि ख़ुराककी तरह खाई गई चीज़ोंको बदलनेका जो काम जानदारोंके अन्दर होता रहता है, उसकी वजहसे मुमकिन यह है कि उसमें नाइट्रोजन ज़्यादा मिक़दारमें पैदा होता हो।

घासके मारफ़त बैल नाइट्रोजनके जिस तत्त्वको अपने पेटमें डालता है, वह उसके गोबरसे हमको वापस मिल जाता है, क्योंकि काम करते हुए बैलके शरीरमें सिर्फ़ कारबोहाइड्रेटवाली चीज़ोंका ही इस्तेमाल होता है। खादके रूपमें ये कारबोहाइड्रेट ज़्यादा काम नहीं देते, क्योंकि उगती हुई फ़सलके लिए जितने कारबोहाइड्रेटकी ज़रूरत होती है, उतना बढ़ते हुए पौधे हवामेंसे ले लेते हैं, और ज़मीनके अन्दरसे उसे लेनेकी ज़रूरत नहीं पड़ती। हरे पौधोंको ज़मीनमें जोत डालनेसे जो ताक़त बेकार खर्च होती है, बैल अपनी देहके ज़रिये उसका पूरा-पूरा उपयोग करता है। इसके अलावा, गोठसे मिलनेवाली गोबर वग़ैराकी खाद हरी खादके मुक़ाबले ज़मीनको ज़्यादा ग़िज़ा पहुँचाती है, क्योंकि जब वह जानदारके बदनमेंसे गुज़रती है तब घास-चारेके रूपमें वह जिन चीज़ोंको अपने अन्दर पहुँचाता है उनको शरीरके अन्दरके रस हाज़मेके लिए अलग-अलग कर डालते हैं।

कलोंके मुक़ाबले बैल महज़ इसीलिए बेहतर नहीं है कि वह खेतीको आबाद बनानेवाली बढ़िया खाद देता है, बल्कि इसके अलावा हमें यह भी याद रखना चाहिये कि बैल जितने तरहके काम कर सकता है उन तमाम कामोंको करनेवाली कोई एक कल या मशीन बनाना नामुमकिन है। बैल तेज़ीसे भी काम कर सकता है और धीरे-धीरे भी। यह भी नहीं कि वह सिर्फ़ हलकी मददसे ज़मीन जोतनेके ही काम आता हो। वह तो दावँन चलानेके यानी अनाजके दानोंको बालों या भुट्टोंसे अलग करनेके काम भी आता है और इस तरह तैयार गल्लेको बाज़ार तक ढोकर ले जानेके लिए भी वह गाड़ीमें जोता जा सकता है। इन सब कामोंके साथ वह खली, भूसी, पुआल वग़ैरा ऐसी चीज़ें खाता है, जिनमेंसे आदमी अपने मतलबका दाना और तेल वग़ैरा निकाल चुकता है। बैलकी एक जोड़ीकी क़ीमत ज़्यादा-से-ज़्यादा कुछ सौ रुपये होती है, लेकिन बैल जितने काम कर सकता है उन तमाम कामोंको कलोंसे करना हो, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसानको कम-से-कम एक ऑइल एन्जिन, एक मोटर लॉरी, एक ट्रैक्टर, मोटरसे चलनेवाले छोटे-छोटे पहटे और ऐसी न जाने कितनी चीज़ें बसानी होंगी और इन सबकी क़ीमत वैलकी क़ीमतसे कितनी ज़्यादा होगी, भगवान् ही जाने! इसके सिवा, अपनी कलोंको चलानेके लिए किसानको बतौर ईंधनके क्रूड ऑइल या पेट्रोल खरीदना होगा, जो न किसानके खेतमें पैदा होते हैं न देशमें कहीं मिलते हैं। यह भी एक सोचनेकी बात है।

खेतीमें ख़ास तौर पर हल चलाने, हेंगा फेरने, और बोने वग़ैराके काम होते हैं। इन सब कामोंकी वजहसे बैलको सालमें कुल तीनसे चार महीनोंका काम मिलता है। बाक़ी वक़्तमें उसका उपयोग माल ढोने, लोगोंको एक जगहसे दूसरी जगह ले जाने और तेल वग़ैरा पेरनेमें किया जा सकता है, और किया जाना चाहिये। बैल ये सब काम कर सकते हैं। लेकिन कलें, जो सिर्फ़ अपना-ही-अपना काम कर सकती हैं, खेतीका काम ख़तम होनेके बाद बाक़ीके लम्बे अरसे तक बेकार ही पड़ी रहती हैं।

कलोंसे तेल पेरनेमें ऊपर-ऊपरसे फ़ायदा नज़र आता है, लेकिन वह मुनाफ़ा दूसरे तरीक़ेसे ख़तम हो जाता है, क्योंकि बेकार पड़ी रहनेवाली मशीनोंसे किसानोंको और किसी तरहका कोई बदला नहीं मिलता।

श्री आपटेकी क़ीमती और अभ्यासपूर्ण किताबसे नीचेकी सतरें देकर हम बैलकी अपनी हिमायत पूरी करेंगे :

"कलों या मशीनोंको हम तभी अपने इस्तेमालमें लाना शुरू करें कि जब इन्सानों और जानदारोंके रूपमें जो ताक़त हमारे पास मौजूद है, उसको पूरा-पूरा काम मिल जाय। आज हमारे यहाँ इस ताक़तका पूरा उपयोग नहीं होता। इसलिए कलें दाखिल करनेकी यहाँ अभी कोई ज़रूरत नहीं।"

('हरिजन'से) वालजी गोविन्दजी देशाई

तामिलनाड़में खादीकी प्रगति—१९४४-'४५

अखिल भारत-चरखा-संघकी तामिलनाड़ शाखा, तिरुपुर, की १९४४-'४५ की सालाना रिपोर्टकी एक कॉपी हमें मिली है। यह बड़ी अच्छी बात है कि वह ख़ुद शाखा द्वारा तैयार किये हुए हाथकाग़ज़ पर छापी गई है।

जिस सालकी रिपोर्ट है उस सालमें तामिलनाड़ने रु० ३२ लाखकी खादी तैयारकी और रु० ३६ लाखकी खादी बेची। इसमेंसे ३२ लाखकी खादी प्रान्तमें ही खप गई। उसने लगभग ३५०० गाँवोंमें ७५ हज़ार कत्तिनों, २ हज़ार ५ सौ जुलाहों और लगभग ५०० दूसरे कारीगरोंको रोज़ी दी। इन लोगोंमें मज़दूरीके तौर पर शाखाने रु० २१ लाख बाँटे, जब कि ४४० कार्यकर्त्ताओंके स्टाफको सिर्फ़ १॥ लाख रुपये बतौर तनख्वाहके दिये गये। दर असल जब हम एक रुपयेकी तामिलनाड़ी खादी ख़रीदते हैं, तो हम २ आने कपासके लिए देते हैं, १२ आने धुनाईसे लेकर बुनाई तककी क्रियाओंके लिए देते हैं और २ आने सारे ऊपरी खर्चके लिए देते हैं, जिसमें रेल या गाड़ीभाड़ा, पैकिंग खर्च और दफ़्तरका खर्च शामिल है। हमारा यह सुझाव है कि जब अगले सालकी रिपोर्ट छपे तो उसमें मिलके कपड़ेके भी इसी तरह आँकड़े दिये जायँ। शाखाने जितनी खादी तैयारकी, उसकी ७५ फ़ी सदी सिर्फ़ कोयम्बतूर ज़िलेमें ही पैदा की गई थी।

सन् १९२३में तामिलनाड़ने रु० ५ लाखसे भी कमकी खादी तैयारकी थी। लड़ाईके ज़मानेकी बढ़ी हुई क़ीमतोंका ख़याल रखते हुए यह कहा जा सकता है कि पिछले २२ सालमें सूबेमें खादीकी पैदावार तिगुनी बढ़ गई है।... (वर्गगज़ों और रुपयोंमें सालवार खादी-उत्पत्तिके आँकड़े दिये जाने चाहिये।) दरअसल आज सब प्रान्तोंमें तामिलनाड़ सबसे ज़्यादा खादी तैयार करता है (३० लाख वर्ग-गज़)। दूसरा नम्बर बिहारका आता है, जो तामिलनाड़की आधीसे भी कम यानी लगभग १२॥ लाख वर्गगज़, खादी पैदा करता है। खादी पैदा करनेवाले चार बड़े प्रान्तोंमें महाराष्ट्र और संयुक्त प्रान्तका क्रमशः तीसरा और चौथा नम्बर आता है।

यह बड़े दुःखकी बात है कि योग्य और निपुण लोगोंकी देखरेखमें २५ साल तक खादी पैदा करते रहनेके बाद भी तामिलनाड़-शाखा 'मिल जाने पर हाथकते सूतसे मिलके सूतको तरजीह देने और उसके न मिलने पर ही हाथकता सूत बुनने की जुलाहों की हमेशा की मनोवृत्ति को नहीं बदल सकी है।' रिपोर्टके मुताबिक़ जुलाहोंकी इस मनोवृत्तिका ख़ास कारण उत्पादनका उतार-चढ़ाव है। यह वृत्ति खादी-प्रचारकी सफलतामें रोड़ा अटकाती है।

एक जंज़ीर अपनी कमज़ोर-से-कमज़ोर कड़ीसे ज़्यादा मज़बूत कभी नहीं हो सकती। अगर हम हरएक कड़ीका ख़याल रक्खें, तो जंज़ीरकी मज़बूती हर हालतमें बनी ही रहेगी। अब वक़्त आ गया है कि अखिल भारत-चरखा-संघके कार्यकर्त्ता सूतको तकुएसे निकालते वक़्त ही दुबटा करना शुरू कर दें। यह सूत मिलके किसी भी सूतकी हर तरह बराबरी कर सकता है।

बिक्रीके हिसाबसे देखा जाय तो रु० ३३ लाखसे ऊपर की जो खादी १९४४में बिकी, उसमेंसे गाँवोंने ४ लाखसे भी कमकी खादी ख़रीदी। 'बँटवारेकी नई नीति'के मुताबिक़ हमारा ध्येय यह होना चाहिये कि हम तमाम खादी गाँवोंमें ही खपावें। ख़ुद कातनेवालों और बुननेवालोंको भी खादी पहननी चाहिये।

हम दूसरे प्रान्तोंमें खादीकार्यकी देखरेख करनेवाले कार्यकर्त्ताओंसे तामिलनाड़-खादी-उत्पादनकी एक नई बातकी सिफ़ारिश करते हैं: सालभरमें जो ६ लाख पौण्ड कपास काममें ली गई, उसमेंसे अखिल भारत-चरखा-संघने केवल एक तिहाई कपास ही दी। बाक़ी की दो-तिहाई कातनेवालोंने ख़ुद दी। इससे शाखा कपास इकट्ठा करनेमें लगनेवाली पूँजीका बहुत बड़ा भाग बचा सकी।

स्वावलम्बी कतवैयोंके लिए १८ महीनोंमें १० हज़ार वर्ग-गज़से भी कम खादी बुनी गई। अपने लिए ख़ुद कातनेवालोंका सूत मज़दूरी पर काते गये सूतसे ज़्यादा बुरा था, इसलिए नियत दामों पर जुलाहे उनके सूतको बुनते नहीं थे।

शाखाने सस्ते अनाजकी दुकानें चलाईं और मगन-चरखे के ज़रिये कताईकी तालीम भी दी। कताईकी क्लासोंके बारेमें ब्योरेवार जानकारी दी गई होती, तो अच्छा होता।

श्री शंकरलाल बैंकर द्वारा संकलित स्त्री-हित-विषयक गांधीजीके विचारोंका संग्रह कारीगरोंको मुफ़्त बाँटा गया।

शाखाने कस्तूरबा-कोशके लिए रु० ११ हज़ारके लागतकी ७५ हज़ार गुण्डियाँ इकट्ठा कीं।

मेलों और उत्सवों पर नुमाइशोंका आयोजन किया गया, जिनमें २ लाख जनता दर्शकके रूपमें आई। इनका असल मक़सद खादी बेचना ही नहीं, बल्कि उद्योग-धन्धोंका प्रदर्शन करना और उसके ज़रिये लोगोंको प्रभावित करना था।

तिरुपुरके शंकरलाल चरखावर्क्सने १८ महीनोंमें लगभग १ लाख २५ हज़ारका सरंजाम तैयार किया।

जमनालाल-विद्यालयने रेशमके कीड़ोंकी परवरिशके प्रयोग किये और एँडी रेशमके १८ पौण्ड कोवे तैयार किये, जो उसी संस्थामें कते और बुने गये।

हम यहाँ रिपोर्टका एक पैरा देकर ख़तम करेंगे, जो थोड़े शब्दोंमें खादीके पुनरुत्थान पर प्रकाश डालता है :

"कातना मज़दूरी पानेके लिए नहीं, बल्कि कपड़ोंकी ज़रूरतें पूरी करनेके लिए है। खादी बिक्रीकी चीज़ नहीं है; वह कातनेवालेके ख़ुदके कामकी चीज़ है। हरएक कातनेवालेको खादी पहननी चाहिये और हरएक खादी पहननेवालेको कातना चाहिये। चरखा अहिंसाका प्रतीक है और उसका उद्देश्य ऐसे अहिंसक समाजका निर्माण करना है जो हर तरहके शोषणसे मुक्त हो।"

('हरिजन'से) वालजी गोविन्दजी देशाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग़रीबोंके लिए .कुदरती इलाज

स०— "जब आप ग़रीब आदमियोंसे जुवारकी 'भाखरी' छोड़कर मोसम्बीका रस या दूसरे फल और दूध लेनेको कहते हैं, तो यह ग़रीबीका उपहास करने जैसा लगता है। मैंने देखा है कि ग़रीब देहाती अपनी तंगदस्तीको छिपानेके लिए 'भाखरी' खाकर भी हमसे कहते थे कि उन्होंने दूध पिया है। इन ग़रीब आदमियोंके लिए तो जीवनका मतलब दिन-रात काममें जुटे रहकर किसी तरह अपने बच्चोंका और अपना पेट भर लेना ही है। उन्हें अपनी जानकी इतनी परवाह नहीं होती जितनी अपने खेत और बच्चोंकी। कई देहातियोंने मुझे बतलाया है कि वे ज़मींदार और साहूकारके नौकरोंकी गाली और लात-घूँसे सहनेकी बनिस्वत बुखारसे मर जाना ज़्यादा पसन्द करते हैं। देहातियोंकी आजकी माली हालतको देखकर मैं कह सकता हूँ कि .कुदरती इलाज सिर्फ़ उन लोगोंके लिए है, जिनके पास पैसा है और वक़्त है; उन ग़रीबोंके लिए नहीं, जो एक घण्टेकी भी देर कर दें, तो उन्हें मज़दूरी न मिले और उनको व उनके बाल-बच्चोंको फ़ाक़ा करना पड़ जाय।

अगर वाक़ई आप .कुदरती इलाजके ज़रिये ग़रीब देहातियोंकी सेवा करना चाहते हैं, तो आपको ऐसे उपचार-गृह खोलने चाहिये, जहाँ रोगियोंके रहनेकी व्यवस्था हो, उन्हें खाने-पीनेको रस और दूध मिल सके और ओढ़ने-बिछानेको साफ़ कपड़े मिलें। यही नहीं, बल्कि अगर रोगी कमानेवाला आदमी है, तो जितना वह रोज़ कमाता है, कम-से-कम उतने पैसे भी उसके घरवालोंको मिलने चाहिये।

जैसा कि आप कहते हैं, .कुदरती इलाज जीवन बितानेका एक नया ढंग है। तो क्या इलाजके साथ ही वैसा जीवन बितानेकी तालीम और उसको अमलमें लानेके साधन भी उन्हें देनेकी ज़रूरत नहीं है?"

ज०— यह शंका उठाकर सवाल पूछनेवाले अपना अज्ञान ज़ाहिर करते हैं। मैंने जो लिखा है, उसे विचारपूर्वक पढ़नेकी कोशिश तक नहीं की गई है। .कुदरती उपचारके गर्भमें यह बात रही है कि उसमें कम-से-कम खर्च और कम-से-कम व्यवसाय होना चाहिये। .कुदरती उपचारका आदर्श ही यह है कि जहाँतक संभव हो, उसके साधन ऐसे होने चाहिये कि उपचार देहातमें ही हो सके। जो साधन नहीं हैं, वे पैदा किये जाने चाहिये। .कुदरती उपचारमें जीवन-परिवर्तनकी बात आती है। यह कोई वैदकी दी हुई पुड़िया लेनेकी बात नहीं है, और न अस्पताल जाकर मुफ़्त दवा लेने या उसमें रहनेकी ही बात है। जो मुफ़्त दवा लेता है, वह भिक्षुक बनता है। जो .कुदरती उपचार करता है वह कभी भी भिक्षुक नहीं बनता। वह अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाता है और अच्छा बननेका उपाय .खुद ही कर लेता है। वह अपने शरीरमेंसे ज़हर निकालकर ऐसी कोशिश करता है कि जिससे दुबारा बीमार न पड़ सके। और .कुदरती इलाजमें मध्य-बिन्दु तो रामनाम ही है न? रामनामसे आदमी सुरक्षित बनता है। शर्त यह है कि नाम भीतरसे निकलना चाहिये। और, रामनामके भीतरसे निकलनेके लिए नियम-पालन ज़रूरी हो जाता है। उस हालतमें मनुष्य रोग-रहित होता है। इसमें न कष्टकी बात है, न खर्चकी! मोसम्बी खाना उपचारका अनिवार्य अंग नहीं। पथ्य खाना — युक्ताहार लेना — अवश्य अनिवार्य अंग है। हमारे देहात हमारी तरह ही कंगाल हैं। देहातमें साग-सब्ज़ी, फल, दूध वग़ैरा पैदा करना .कुदरती इलाजका खास अंग है। इसमें जो वक़्त खर्च होता है वह व्यर्थ तो है ही नहीं; बल्कि उससे सभी देहातियोंको और आखिरकार सारे हिन्दुस्तानको लाभ होता है। यह बात ठीक है कि देहातमें और शहरोंमें भी ऐसे उपचार-गृह होने चाहिये। ईश्वरकी कृपा होगी, तो सब हो जायगा। हरएक व्यक्तिका काम तो यह है कि वह अपना फ़र्ज़ अदा करे और फल ईश्वर पर छोड़ दे।

नई दिल्ली, २५-५-'४६ — मोहनदास करमचंद गांधी

डॉक्टर मेहताकी संस्था

इस संस्थाके बारेमें मुझे कुछ सवाल भेजे गये हैं। उनमेंसे दो, जो जवाब देने लायक़ हैं, नीचे देता हूँ:

स० — इस संस्थाको ज़्यादा शास्त्रीय, ज़्यादा आधुनिक और ज़्यादा लोकोपयोगी बनानेके लिए संस्थाकी तरफ़से किसी उत्साही और लायक़ .कुदरती इलाज करनेवालेको या वालोंको ज़्यादा पढ़ाई करनेके लिए दूसरे देशोंमें भेजा जाय, तो इस तरह तैयार होकर आये हुए निष्णात या माहिर हमारे देशमें हमारे ढंगसे .कुदरती इलाजको अपने पैरों पर खड़ा करनेमें और उसे आम लोगोंके लिए मुफ़ीद बनानेमें ज़्यादा उपयोगी हो सकेंगे या नहीं? गाँवोंके लिए आप .कुदरती इलाजका जो सादा, आसान और सस्ता तरीक़ा चाहते हैं, जुस्ट, क्यूने और क्नाइप वग़ैराके तरीक़े उसकी जगह ले सकते हैं या नहीं? ये तरीक़े गाँवोंके लिए कामके और उनके मुआफ़िक़ या अनुकूल हो सकते हैं या नहीं?

पूनामें जो काम चल रहा था, ट्रस्टियोंके ख़यालसे वह गाँवोंके लायक़ नहीं था। इसलिए उसे उरुळीकांचन ले जाया गया और वहाँ छोटे पैमाने पर, मगर ठीक काम चल रहा है। अभी वह इस लायक़ नहीं है कि कोई उसे देखने वहाँ जाय। अभी न तो ज़मीन मिल पाई है, न मकान बने हैं।

अब सवाल पर ग़ौर करें। हमें अपना यह वहम दूर करना होगा कि जो कुछ करना है उसके लिए पच्छिमकी तरफ़ नज़र दौड़ाने पर ही आगे बढ़ा जा सकता है। अगर .कुदरती इलाज सीखनेके लिए पच्छिम जाना पड़े, तो मैं नहीं मानता कि वह इलाज हिन्दुस्तानके कामका होगा। यह इलाज तो सबके घरमें मौजूद है। हमेशा .कुदरती इलाजकी ज़रूरत भी न रहनी चाहिये। वह इतनी आसान चीज़ है कि हरएक आदमीको उसे सीख लेना चाहिये। अगर रामनाम लेना सीखनेके लिए विलायत जाना ज़रूरी हो, तब तो हम कहींके भी न रहें। रामनामको मैंने बुनियाद माना है। इसी तरह यह सहज ही समझमें आने लायक़ है कि पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और वायुके इलाजके लिए समन्दर पार जानेकी ज़रूरत हो ही नहीं सकती। दूसरा जो कुछ सीखनेको है वह यहीं है — गाँवोंमें मौजूद है। देहाती दवायें, जड़ी-बूटियाँ, दूसरे देशोंमें नहीं मिलेंगी। वे तो आयुर्वेदमें ही हैं। अगर आयुर्वेदवाले धूर्त हों, तो पच्छिम जाकर आनेसे वे कुछ भले नहीं बन जायँगे। शरीर-शास्त्र पच्छिमसे आया है। सब कोई क़बूल करेंगे कि उसमेंसे बहुत कुछ सीखने लायक़ है। लेकिन उसे सीखनेके बहुतसे ज़रिये इस मुल्कमें मिल सकते हैं। मतलब यह कि पच्छिममें जो कुछ अच्छा है, वह ऐसा है, और होना चाहिये कि सब जगह मिल सके। साथ ही, यहाँ यह भी कह देना ज़रूरी है कि .कुदरती इलाज सीखनेके लिए यह बिलकुल ज़रूरी नहीं कि शरीर-शास्त्र सीखा ही जाय।

क्यूने, जुस्ट, फादर क्नाइप वग़ैरा लिखनेवालोंने जो लिखा है, सो सबके लिए है और सब जगहोंके लिए है। वह सीधा है। उसे जानना हमारा धर्म है। .कुदरती इलाज जाननेवालोंके पास उसकी थोड़ी-बहुत जानकारी होती है, होनी चाहिये। .कुदरती इलाज अभी गाँवोंमें तो दाखिल हुआ ही नहीं है। उस शास्त्रमें हम गहरे पैठे ही नहीं हैं। करोड़ोंको ध्यानमें रखकर उस पर सोचा नहीं गया है। अभी वह शुरू ही हुआ है। आखिर वह कहाँ जाकर रुकेगा, सो कोई कह नहीं सकता। सभी शुभ साहसोंकी तरह उसके पीछे भी तपकी ताक़त ज़रूरी है। नज़र पच्छिमकी ओर न जाय, बल्कि अपने अन्दर जाय।

नई दिल्ली, २४-५-'४६
('हरिजनबन्धु'से) — मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक पत्र

छुटकारेकी शर्तें

कैबिनेट मिशनके ऐलानके बादका गांधीजीका क़रीब-क़रीब सारा वक़्त वर्किंग कमेटीके साथकी चर्चाओंमें बीता। वर्किंग कमेटीका प्रस्ताव इसी अंकमें दूसरी जगह दिया गया है। आम लोगोंके नुमाइन्दोंकी बनी हुई विधान बनानेवाली सभाके अपनी चर्चाओंमें कामयाब होने पर हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी जो सनद उसके ज़रिये तैयार होगी, वह हमको सर्वोपरिसत्ताके रास्ते पर खड़ा कर देगी। मगर इस सर्वोपरिसत्ता और आज़ादीका सार तो उसी हद तक हासिल किया जा सकेगा, जिस हद तक हम उसके लिए कोशिश करेंगे। पिछले हफ़्ते सोमवारको अपने मौनके दिन लिखकर दिये पैग़ामके बाद गांधीजीने प्रार्थनामें जो पहला भाषण किया, उसमें उन्होंने बताया कि किस तरह कोई शख़्स या कोई क़ौम अपनेको .गुलामीसे छुड़ा सकती है — अपना उद्धार कर सकती है। ओखलाके बालिकाश्रमकी कुछ हरिजन लड़कियोंने प्रार्थनाके वक़्त जो भजन गाया था, उसमें कहा गया था कि चूँकि भगवान् सबका उद्धार करनेवाला है — पतित उधारन है — इसलिए किसी दिन वह हमारा भी उद्धार करेगा। गांधीजीने कहा: "मुक्ति या नजातका पुराना खयाल आनेवाली ज़िन्दगीमें मुक्ति पानेका है। लेकिन मैं तो आपसे यह कहना चाहता हूँ कि अगर हम मुक्तिकी ज़रूरी शर्तोंको पूरा करें, तो भजनमें जिस मुक्तिका वादा किया गया है, वह हमें यहीं और आज ही मिल सकती है। वे शर्तें ये हैं — (१) अपनी आत्म-शुद्धि करना और (२) ईश्वरके क़ानूनको मानना। यह सोचना फ़ज़ूल है और हमें गिरानेवाला है कि हमारी आनेवाली ज़िन्दगीमें ईश्वर मुक्ति देनेवालेकी हैसियतसे हमको बचाकर अपने बिरदको सँभालेगा, जब कि इस ज़िन्दगीमें हम अपने सिर पापके बोझको लादते चले जायँगे। जो व्यापारी अपने भोलेभाले और नासमझ गाहकोंको धोखा देता है और झूठ बोलता है, उसे अपने उद्धारकी कोई उम्मीद नहीं रखनी चाहिये — वह रख नहीं सकता।"

गांधीजीने आगे चलकर और कहा: "कहा जाता है कि जो .खुद अच्छा है उसके लिए सारी दुनिया अच्छी बन जाती है। जहाँ तक एक आदमीका सवाल है, यह बात सच है। लेकिन भलाई या अच्छाई तभी बा-असर बनती है, जब वह बुराईके मुक़ाबलेमें बरती जाती है। अगर आप सिर्फ़ भलाईके बदलेमें भलाई करते हैं, तो वह एक सौदा हो जाता है और उसमें कोई खासियत नहीं रहती। लेकिन अगर आप बुराईके बदलेमें भलाई करते हैं, तो वह एक नजात बख्शनेवाली ताक़त बन जाती है। उसके सामने बुराई ख़त्म हो जाती है और वह बरफ़की गेंदकी तरह अपने क़द और चालमें इस हद तक बढ़ती चली जाती है कि फिर कोई उसे रोक नहीं सकता।"

"यह तो एक आदमीके उद्धारकी बात हुई। लेकिन हिन्दुस्तानके जैसा एक .गुलाम मुल्क अपनेको .गुलामीसे किस तरह छुड़ा सकता है?" गांधीजीने पूछा। जवाबमें उन्होंने कहा: ".गुलामीकी वजहसे .गुलाम क़ौमोंमें जो बुराइयाँ पैदा हो जाती हैं, वे ही मुल्कको .गुलाम बनाये रखती हैं। इसलिए अपने-आपको सुधारनेका रास्ता ही .गुलाम मुल्कको उसकी .गुलामीसे छुड़ानेका रास्ता भी है। आनेवाले जीवनमें मुक्ति पानेकी उम्मीदसे अपनी मुक्तिके दिनको आगे ठेलते रहना फ़ज़ूल है। अगर आप यहाँ, इस जीवनमें, मुक्ति पानेमें नाकाम रहे हैं, तो बहुत मुमकिन है कि वहाँ भी वह आपके हाथसे सटक जाय। इसलिए हमें अपने दिलको अन्दरसे टटोलना चाहिये और उसे सब तरहकी गन्दगीसे बरी करना चाहिये। अगर हम अपने छोटे-छोटे झगड़ोंको और दुश्मनियोंको भुला दें और सब तरहके क़ौमी तफ़रक़ों व छोटे-छोटे मेदभावोंको ठुकरा दें, तो परदेसी फ़ौजोंके लिए यहाँ कोई काम ही न रह जाय, और किसीकी यह ताक़त न रहे कि वह एक दिनके लिए भी हमको .गुलामीमें रख सके।"

धूप और छाँह

पिछले हफ़्ते अपने भाषणोंमें उन्होंने एक ऐसे मुल्ककी तसवीर खींची थी, जिसमें न दुःख होंगे और न पछतावा होगा। इस तसवीरने गांधीजीको मोह लिया है। उन्होंने उस भजनको छपवाया और प्रार्थनाकी सभामें तक़सीम करवाया।

एक भाईने भजनकी छपी हुई कॉपियोंको मुफ़्त तक़सीम करानेके लिए ५१) दिये थे। लेकिन गांधीजी नहीं चाहते थे कि लोग उसे महज़ एक परचा समझें। इसलिए उन्होंने तय किया कि जो लोग उसे लेना चाहें वे उसे उसकी क़ीमतका एक पैसा देकर खरीदें और इस तरह उसके लिए अपनी दिलचस्पीका इज़हार करें। गांधीजीका कुछ ऐसा खयाल रहा कि दानकी रक़म, जिसका वादा किया गया था, १०१) थी। इसलिए उन्होंने इतनी रक़मका ऐलान कर दिया। लेकिन जब उनसे कहा गया कि दानकी रक़म तो सिर्फ़ ५१) ही थी, तो उन्होंने फ़ौरन ही जवाब दिया कि जिस रक़मका ऐलान कर चुके हैं, उस पूरी रक़मके लाभसे वे हरिजनोंको महरूम नहीं रहने दे सकते। इसलिए उन्होंने दान देनेवाले भाईसे चाहा कि वह आगे आयें और कमी पूरी कर दें। इस परचेके छपाने और तक़सीम करनेमें जो देर हुई थी, उसके लिए गांधीजीने लोगोंसे माफ़ी चाही और दिल्लीवालोंको उनकी ढिलाईके लिए आड़े हाथों लिया। उन्होंने परचेके छापनेवालोंको भी काग़ज़ और छपाईके दाम वसूल करनेके उनके 'लालच' के लिए डाँटा। जब उनसे कहा गया कि छपाईकी कोई उजरत नहीं ली गई है, तो भी उन्होंने काग़ज़की क़ीमत लेनेके लिए उनको आड़े हाथों लिया। इस पर जिन भाईने परचा छाप कर दिया था उन्होंने ऐलान किया कि काग़ज़के दाम भी नहीं लिए जायँगे!

गांधीजीसे किसीने कहा था कि वह प्रार्थना-सभामें देर करके आते रहे हैं। इस पर गांधीजीने कहा: "नहीं, ऐसी बात नहीं है। बात यह है कि मेरी घड़ी धीमी चलती है और मैं अपनी घड़ीके मुताबिक वक़्तकी पाबन्दी करता हूँ। मैं देरसे आनेका आदी नहीं हूँ। प्रार्थनाकी सभामें तो मैं किसी भी हालतमें जान-बूझ कर देरसे आ ही नहीं सकता; क्योंकि यहाँ तो हम ईश्वरके साथ अपने रिश्तेको ताज़ा करनेके पवित्र हेतुसे इकट्ठा होते हैं। अगर हमें किसी ट्रेनमें सवार होना है, तो हम वक़्तसे पहले स्टेशन पर पहुँचनेकी कोशिश करते हैं; क्योंकि रेलगाड़ी किसीके लिए ठहरती नहीं। ईश्वरके बारेमें यह और भी सच है — क्योंकि उसके क़ानूनका पहिया या चक्र न तो कभी रुकता है, न धीमा पड़ता है।"

शोकरहित देश

छपाकर बाँटे गये भजनकी वस्तुका ज़िक्र करते हुए गांधीजीने एक बार फिर उसमें पेश किये गये आदर्शके अन्दरूनी मतलबको तफ़सीलके साथ समझाया। उन्होंने कहा: "एक ऐसे देशकी कल्पना जिसमें दुःख-शोक कुछ भी न हो, शुरूमें तो निरी खयाली चीज़ ही मालूम होगी। फिर भी हम चाहते हैं कि हमारा देश ऐसा देश बने, और मैं तो उस दिन आपसे यह कह भी चुका हूँ कि कैबिनेट मिशनके ऐलानमें ऐसे देशके बीज मौजूद हैं। कविने भजनमें सिर्फ़ एक आदर्श ही पेश नहीं किया है, बल्कि उस तक पहुँचने, उसे पानेकी शर्तोंका ज़िक्र भी किया है। शर्त यह है कि हम अपने-आपको भ्रम और शोक, मोह और तृष्णासे छुड़ायें। सच है कि आज दुनियामें कहीं भी ऐसा मुल्क पाया नहीं जाता। इसलिए कविने सचाई और संगतिका खयाल रखकर यह कहा है कि ऐसा देश हमारे अन्दर है। अन्तरात्माके राज्य यानी रूहानी सल्तनतके साथ उसका मेल बैठाया जा सकता है। उसका मतलब होता है, स्व-राज, यानी अपनी हुकूमत या अपने ऊपर हुकूमत। जिस आदमीने अपने ऊपर पूरा क़ाबू पा लिया है, वह इस भजनमें दिये गये आदर्शको अपने जीवनमें उतार सकता है। जैसा कि मैं कल आपसे कह चुका था, भले आदमीके लिए सारी दुनिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भली बन जाती है। अगर करोड़ों लोग ऐसा करने लगे, तो स्वर्गका राज्य पृथ्वी पर क़ायम हो जाय। लेकिन अगर सब ऐसा न करें, तो भी किसीको उससे नाउम्मीद नहीं होना चाहिये। जो आदमी अपनेको ऐसा बनाना चाहता है, वह .खुद ही इस विश्वासके साथ काम करने लगेगा कि जो कुछ वह आज करता है, कल बाक़ीकी समूची दुनिया उसीको करने लगेगी।"

सूक्ष्म प्रलोभन

पिछले बुधके दिन गांधीजीने प्रार्थना-सभामें १०१) के जिस इनामका ऐलान किया था, उसकी वजहसे ५१) देनेवाले भाई १०१) पूरे करनेके लिए अगले दिन ५०) और लेकर आये। चूँकि भजनकी सभी छपाई हुई कॉपियाँ बिक चुकी थीं, इसलिए लोगोंमें तक़सीम करनेकी ग़रज़से वह दुबारा एक बड़ी तादादमें छपाया गया। लेकिन गांधीजीने तय किया कि उसे फ़ी कॉपी एक पैसेकी तय शुदा क़ीमतसे ही बेचा जाय और किसी भी हालतमें उसकी बढ़ी-चढ़ी क़ीमत न ली जाय। इसी तरह उन्होंने कहा कि अबसे आगे वह इस बात पर ज़ोर देंगे कि छापनेवालेको छपाई और काग़ज़का वाजिब दाम दिया जाय। वह लालची नहीं बनना चाहते थे। यह एक ऐसा भुलावेमें डालनेवाला जाल है, जिसमें लोक-सेवा करनेवाले कार्यकर्त्ता कभी-कभी फँस जाते हैं। उन्होंने कहा: "अगर मैं उस भजनके परचेकी क़ीमत उस पर छपी क़ीमतसे ज़्यादा लेता हूँ, तो इस तरह हासिल किया पैसा दूषित या नापाक हो जायगा और वह छूत-छातको मिटानेके काममें मदद करनेके बदले उसमें रुकावट पैदा करेगा। छूत-छात करोड़ों रुपये खर्च करनेसे नहीं मिटाई जा सकती। लेकिन अगर ऊँची जातवाले हिन्दुओंके दिलमें सच्चा फेरफार हो जाय, तो बिना एक पाई खर्च किये वह बात-की-बातमें मिटाई जा सकती है। इससे सवर्ण और हरिजन दोनों ऊपर उठेंगे। आज तो ऊँची जातवाले लोग अछूत यानी हरिजनोंके कन्धों पर सवार हैं। यह इन दोनोंको गिरानेवाली चीज़ है; क्योंकि .कुदरतका क़ानून यह है कि अपने-आपको गिराये बिना कोई दूसरेको गिरा नहीं सकता। आप मुझे इस परचेके ऊँचे दाम देकर ललचायें नहीं। अगर आपमेंसे कोई भजनके परचेकी एकसे ज़्यादा कॉपीके दाम देना चाहते हैं, तो आपको उनके उतने ही सच्चे खरीददार पेश करने होंगे। जिस तरह यह परचा मुफ़्त नहीं बाँटा जायगा, उसी तरह यह इस पर छपी क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत लेकर बेचा भी नहीं जायगा। पुण्य कमाने या सवाब लूटनेका सच्चा तरीक़ा तो यह है कि आप इस भजनमें दिये गये उपदेशों यानी नसीहतोंको अपने जीवनमें उतारें।"

प्रेमका बन्धन

उस दिन प्रार्थनामें 'सबसे ऊँची प्रेम सगाई', भजन गाया गया था। इस पर बोलते हुए गांधीजीने कहा: "इस भजनमें कविने प्रेमके बन्धनकी या अहिंसाकी महिमा गाई है। प्रेमसे बढ़कर ऊँचा और मज़बूत दूसरा कोई बन्धन नहीं। सुदामाके प्रेमके वश होकर भगवान् श्रीकृष्णने एक मैले चिथड़ेमें बँधे टूटे चावलोंको बड़े शौक़से खाया था, और दुर्योधनके अनूठे और ज़ायक़ेदार फलोंको छोड़कर उन्होंने विदुरके घरका साग-पात खाना पसन्द किया था। इसी तरह अर्जुनकी प्रेमभरी भक्तिके वश होकर श्रीकृष्ण अपने ऊँचे शाहीपदको भूल गये और उन्होंने अर्जुनके सारथीका काम करना क़बूल किया। कहा जाता है कि महाभारतकी लड़ाईमें अर्जुन अपने गाण्डीवके बल पर नहीं, बल्कि खासकर रथ हाँकनेकी श्रीकृष्णकी कुशलताके कारण ही विजय हासिल कर सके थे। प्रेमकी सेवासे बढ़कर ऊँची दूसरी कोई सेवा नहीं, जो आदमी आदमीकी कर सके। ऐसी सेवा अपने लिए बदलेमें कुछ नहीं चाहती। जब प्रेम बदलेकी या मुआवज़ेकी उम्मीद रखता है, तो वह एक गन्दा सौदा बन जाता है — अपनी ऊँची जगहसे गिर जाता है। लेकिन सहज प्रेमके साथ की गई सेवा आदमीको बुलन्द बनाती और ऊँचा उठाती है।"

अन्धविश्वास या बातिलअक़ीदा

अपने अगले दो भाषणोंमें गांधीजीने .कुदरती इलाजका ज़िक्र किया। यानी तन, मन और आत्माकी बीमारियोंको .खास तौर पर राम-नामकी मददसे मिटानेके बारेमें समझाया। एक भाईने लिखा था कि कुछ लोग अन्धविश्वासकी वजहसे कपड़ों पर राम-नाम छपवा लेते हैं, और उन्हें अपने बदन पर, खासकर छाती पर पहनते-ओढ़ते हैं। दूसरे कुछ लोग काग़ज़के टुकड़ों पर बारीक हरूफ़ोंमें करोड़ोंकी तादादमें राम-नाम लिखते हैं और उन्हें काट-काटकर उनकी छोटी-छोटी गोलियाँ इस ख़यालसे निगल जाते हैं कि इस तरह वे यह दावा कर सकेंगे कि राम-नाम उनके दिलमें छप गया है। एक और भाईने उनसे पूछा था कि क्या उन्होंने रामनामको सब तरहकी बीमारियोंका एक ही रामबाण इलाज कहा है? और, क्या उनके ये राम ईश्वरके अवतार और अयोध्याके राजा दशरथके पुत्र थे? कुछ ऐसे भी लोग हैं, जो मानते हैं कि गांधीजी .खुद भुलावेमें पड़े हुए हैं और अन्धविश्वासोंसे भरे इस देशके हज़ारों अन्धविश्वासोंमें एक और अन्धविश्वास बढ़ाकर दूसरोंको भी भुलावेमें डालनेकी कोशिश कर रहे हैं। गांधीजीने कहा: "इस तरहकी टीकाका मेरे पास कोई जवाब नहीं है। मैं तो अपने दिलसे यह कहता हूँ कि अगर लोग सचाईका बेजा इस्तेमाल करते हैं और धोखे-धड़ीसे काम लेते हैं, तो मैं उसकी परवाह क्यों करूँ? जब तक मुझे अपनी सचाईका पक्का भरोसा है, मैं इस डरसे कि लोग उसे ग़लत समझेंगे या उसका ग़लत इस्तेमाल करेंगे, उसका ऐलान करनेसे रुक कैसे सकता हूँ? इस दुनियामें ऐसा कोई नहीं है, जिसने पूरी-पूरी सचाईको जाना हो। यह तो अकेले एक ईश्वरका ही विशेषण है। हम सब तो सिर्फ़ सापेक्ष सत्यको ही जानते हैं। इसलिए जिसे हम जानते हैं उसीके मुताबिक़ हम अपना बरताव रख सकते हैं। इस तरह सचाईका पालन करनेसे कोई कभी गुमराह नहीं हो सकता।"

राम कौन है?

गांधीजीने कहा: "जिस राम-नामको मैं सब बीमारियोंकी रामबाण दवा कहता हूँ, वह राम न तो ऐतिहासिक या तवारीखी राम है, और न उन लोगोंका राम है, जो उसका इस्तेमाल जादू-टोनेके लिए करते हैं। सब रोगोंकी रामबाण दवाके रूपमें मैं जिस रामका नाम सुझाता हूँ, वह तो .खुद ईश्वर ही है, जिसके नामका जप करके भक्तोंने शुद्धि और शान्ति पाई है, और मेरा यह दावा है कि राम-नाम सभी बीमारियोंकी, फिर वे तनकी हों, मनकी हों या रूहानी हों, एक ही अचूक दवा है। इसमें शक नहीं कि डॉक्टरों या वैद्योंसे शरीरकी बीमारियोंका इलाज कराया जा सकता है। लेकिन राम-नाम तो आदमीको .खुद ही अपना वैद या डॉक्टर बना देता है, और उसे अपनेको अन्दरसे नीरोग बनानेकी संजीवनी हासिल करा देता है। जब कोई बीमारी इस हद तक पहुँच जाती है कि उसे मिटाना मुमकिन नहीं रहता, उस वक़्त भी राम-नाम आदमीको उसे शान्त और स्वस्थ भावसे सह लेनेकी ताक़त देता है।" उन्होंने और कहा: "जिस आदमीको राम-नाममें श्रद्धा है, वह जैसे-तैसे अपनी ज़िन्दगीके दिन बढ़ानेके लिए नामी-गरामी डॉक्टरों और वैद्योंके दरकी खाक नहीं छानेगा और यहाँ-से-वहाँ मारा-ढकेला नहीं फिरेगा। राम-नाम डॉक्टरों और वैद्योंके हाथ टेक देनेके बाद लेनेकी चीज़ भी नहीं। वह तो आदमीको डॉक्टरों और वैद्योंके बिना भी अपना काम चला सकनेवाला बनानेकी चीज़ है। राम-नाममें श्रद्धा रखनेवालेके लिए वही उसकी पहली और आखिरी दवा है।"

राम-नाम कैसे लें?

दूसरे दिनके अपने भाषणमें इसी चीज़को समझाते हुए गांधीजीने बताया कि किस तरह इनसानको सतानेवाली तीनों तरहकी बीमारियों के लिए अकेले राम-नामको ही रामबाण इलाज बनाया जा सकता है। इसकी पहली शर्त तो यह है कि राम-नाम दिलके अन्दरसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलना चाहिये। लेकिन इसका मतलब क्या? लोग अपनी जिस्मानी बीमारियोंका इलाज खोजनेके लिए दुनियाके आखिरी छोर तक जाने से भी नहीं थकते, जब कि मन और आत्माकी बीमारियोंके मुक़ाबले ये जिस्मानी अलालतें बहुत कम अहमियत रखती हैं। उन्होंने कहा: "मनुष्यका भौतिक शरीर तो आखिर एक दिन मिटने ही वाला है। उसका स्वभाव ही है कि वह हमेशाके लिए रह ही नहीं सकता। और तिस पर भी लोग अपने अन्दर रहनेवाली अमर आत्माको भुलाकर उसीका ज़्यादा प्यार-दुलार करते हैं। राम-नाममें श्रद्धा रखनेवाला आदमी अपने शरीरको ऐसे झूठे लाड़ नहीं लड़ायेगा, बल्कि उसे ईश्वरकी सेवा करनेका एक ज़रिया-भर समझेगा। उसको इस तरहका मा.कूल ज़रिया बनानेके लिए राम-नामसे बढ़कर दूसरी कोई चीज़ नहीं। राम-नामको हृदयमें अंकित करनेके लिए अनन्त धीरजकी, बे-इन्तिहा सब्रकी, ज़रूरत है। इसमें जुग-के-जुग लग सकते हैं, लेकिन यह कोशिश करने जैसी है। इसमें कामयाबी भी भगवान्की कृपासे ही मिल सकती है।

"जब तक आदमी अपने अन्दर और बाहर सचाई, ईमानदारी और पाकीज़गी या पवित्रताके गुणोंको नहीं बढ़ाता, उसके दिलसे राम-नाम नहीं निकल सकता। हम लोग रोज़ शामकी प्रार्थनामें स्थितप्रज्ञका यानी साबित-अक़्ल इनसानका बयान करनेवाले श्लोक पढ़ते हैं। हममेंसे हरएक आदमी साबित-अक़्ल या स्थितप्रज्ञ बन सकता है, बशर्ते कि वह अपनी इन्द्रियोंको अपने क़ाबूमें रक्खे और जीवनको सेवामय बनानेके लिए ही खाये, पीये और मौज-शौक़ या हँसी-विनोद करे। मसलन्, अगर अपने विचारों पर आपका कोई क़ाबू नहीं है और अगर आप एक तंग-अँधेरी कोठरीमें उसकी तमाम खिड़कियाँ और दरवाज़े बन्द करके सोनेमें कोई हर्ज़ नहीं महसूस करते और गन्दी हवा लेते हैं या गन्दा पानी पीते हैं, तो मैं कहूँगा कि आपका राम-नाम लेना बेकार है।

"लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि चूँकि आप जितने चाहिये उतने पवित्र नहीं हैं, इसलिए आपको राम-नाम लेना छोड़ देना चाहिये। क्योंकि पवित्रता या पाकीज़गी हासिल करनेके लिए भी राम-नाम लेना मुफ़ीद है। जो आदमी दिलसे राम-नाम लेता है, वह आसानीसे अपने-आप पर क़ाबू रख सकता है और 'डिसिप्लिन' या अनुशासनमें रह सकता है। उसके लिए तन्दुरुस्ती और सफ़ाईके क़ानूनोंका पालन करना सहल हो जायगा। उसकी ज़िन्दगी सहज भावसे बीत सकेगी — उसमें कोई विषमता न होगी। वह किसीको सताना या दुःख पहुँचाना पसन्द नहीं करेगा। दूसरोंके दुःखोंको मिटानेके लिए, उन्हें राहत पहुँचानेके लिए, .खुद तकलीफ़ उठा लेना उसकी आदतमें आ जायगा और उसको हमेशाके लिए एक अमिट सुखका लाभ मिलेगा — उसका मन एक शाश्वत और अमर सुखसे भर जायगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि आप लगे रहिये और जब तक काम करते हैं, तब तक सारा समय मन-ही-मन राम-नाम लेते रहिये। इस तरह करनेसे एक दिन ऐसा भी आयेगा कि जब राम-नाम आपका सोते-जागतेका साथी बन जायगा और उस हालतमें आप ईश्वरकी कृपासे तन, मन और आत्मासे पूरे-पूरे स्वस्थ और तन्दुरुस्त बन जायँगे।"

चन्द दिनोंकी छुट्टी

पिछले कुछ दिनोंसे कैबिनेट मिशनके साथकी चर्चायें बन्द रही हैं, इससे गांधीजीको आरामका और अपनी तबियत सँभाल लेनेका थोड़ा मौक़ा मिल गया है। कुछ दिन पहले डॉक्टरोंने उन्हें सलाह दी थी कि वे गरमियोंके दो महीने किसी पहाड़ी मुक़ाम पर बितायें, ताकि बाक़ी सालके लिए वे अपने वास्ते ज़रूरी ताक़त या शक्ति इकट्ठा कर सकें। लेकिन जैसा कि ज़ाहिर है, गांधीजी इस साल ऐसा कर नहीं सके। उन्होंने पंचगनी या शिमलाके बदले मसूरी जाना तय किया है, क्योंकि वह ज़्यादा नज़दीक है। अब जब मौलाना साहबको या कैबिनेट मिशनको उनकी फिर ज़रूरत होगी, तब वे लौट आयेंगे।

इतवारके दिन प्रार्थना-सभामें अपने इस इरादेका ऐलान करते हुए गांधीजीने कहा: "आप सब मेरे साथ राम-नाम लेने या राम-नाम लेना सीखनेके लिए रोज़-ब-रोज़ इन प्रार्थना-सभाओंमें आते रहे हैं। लेकिन राम-नाम सिर्फ़ ज़बानसे नहीं सिखाया जा सकता। मुँहसे निकले बोलके मुक़ाबले दिलका खामोश खयाल या मौन-विचार कहीं ज़्यादा ताक़त रखता है। एक सच्चा विचार सारी दुनिया पर छा सकता है — उसे प्रभावित कर सकता है। वह कभी बेकार नहीं जाता। विचार या खयालको बोल या कामका जामा पहनानेकी कोशिश ही उसकी ताक़तको महदूद कर देती है। ऐसा कौन है जो अपने विचार या खयालको शब्द या कार्यमें पूरी तरह प्रकट करनेमें कामयाब हुआ हो?"

आगे चलकर गांधीजीने कहा: "आप यह पूछ सकते हैं कि अगर ऐसा है, तो फिर आदमी हमेशाके लिए मौन ही क्यों न ले ले? उसूलन् तो यह मुमकिन है; लेकिन जिन शर्तोंके मुताबिक़ मौन-विचार पूरी तरह क्रियाकी जगह ले सकते हैं, उन शर्तोंको पूरा करना बहुत मुश्किल है। मैं .खुद अपने विचारों पर इस तरहका पूरा-पूरा क़ाबू पा लेनेका कोई दावा अपने लिए नहीं कर सकता। मैं अपने मनसे बेमतलब और बेकारके खयालोंको पूरी-पूरी तरह दूर नहीं रख सकता। इस हालतको पाने या इस तक पहुँचनेके लिए तो अनन्त धीरज, जागृति और तपश्चर्याकी ज़रूरत है।

"कल जब मैंने आपसे यह कहा था कि राम-नामकी शक्तिका कोई पार नहीं है, तब मैं किसी आलंकारिक भाषामें नहीं बोल रहा था, बल्कि मैं सचमुच यही कहना भी चाहता था। मगर इस चीज़को महसूस करनेके लिए बिलकुल शुद्ध और पवित्र हृदयसे राम-नामका निकलना ज़रूरी है। मैं .खुद इस हालतको पानेकी कोशिशमें लगा हुआ हूँ। मेरे दिलमें तो इसकी एक तसवीर खिंच गई है, लेकिन मैं इसे पूरी तरह अमलमें ला नहीं सका हूँ। जब वह हालत पैदा हो जायगी, तब तो राम-नाम रटना भी ज़रूरी न रह जायगा।

"मुझे उम्मीद है कि मेरी ग़ैरहाज़िरीमें भी आप अपने घरोंमें अलग-अलग और एक साथ बैठकर राम-नाम लेते रहेंगे। सबके साथ मिलकर, मजमेंकी शकलमें, प्रार्थना करनेका राज़ या रहस्य यह है कि उसका एक-दूसरे पर जो शान्त प्रभाव पड़ता है, वह आध्यात्मिक उन्नति या रूहानी तरक़्क़ी की राहमें मददगार हो सकता है।"

नई दिल्ली, २७-५-'४६

('हरिजन' से) प्यारेलाल

विषय-सूची

विषय		लेखक	पृष्ठ
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	१५७
एक नया .ज़ुल्म	...	प्यारेलाल	१५८
वर्किंग कमेटीका प्रस्ताव	...		१५८
राम-नामका मज़ाक	...	गांधीजी	१५९
बुनियादी दोष	...	गांधीजी	१६०
दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी	...	गांधीजी	१६०
मौन-सत्संग	...	प्यारेलाल	१६१
मुल्की .खूराकका प्रयोग	...	प्यारेलाल	१६१
धारासभाके मेम्बरोंकी तनख्वाह	...	गांधीजी	१६२
बैलके हक़में	...	वालजी गोविन्दजी देशाई	१६३
तामिलनाड़में खादीकी प्रगति-१९४४-'४५	...	वालजी गोविन्दजी देशाई	१६४
ग़रीबोंके लिए .कुदरती इलाज	...	गांधीजी	१६४
डॉक्टर मेहताकी संस्था	...	गांधीजी	१६
साप्ताहिक-पत्र	...	प्यारेलाल	१६
टिप्पणी			
झण्डे और वर्दियाँ	...	मो० क० गांधी	१५७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…और अधर्मका विवेक

रजि० नं० बी. ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक : प्यारेलाल

भाग १०

अंक १८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद रविवार, ता० ९ जून, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डालर ३

आज़ाद हिन्द फ़ौजवालोंकी उलझन

गांधीजीके दिल्ली रहते हुए उस दिन भंगी-बस्तीमें आज़ाद हिन्द फ़ौजके कोई ५०-६० सीनियर अफ़सर उनसे मिलने आये। आते ही उन्होंने पहले गुरुदेवके 'जनगण-मन-अधिनायक जय हे भारत-भाग्य-विधाता' गीत का हिन्दुस्तानी रूप मिलकर गाया। पहले जब ये सब क़ैद थे और इनकी तक़दीरका फ़ैसला होना बाक़ी था, तब क़ाबुली लाइन्सके कँटीले तारोंवाले अहाते में भी, गांधीजीके इनसे वहाँ मिलने जाने पर, इन्होंने यही गीत गाया था। इसके बाद गांधीजीने उनसे चन्द बातें हिन्दुस्तानीमें कहीं।

गांधीजी बोले: "कुछ दोस्तोंने अपनी कुछ उलझनें मेरे सामने रखी हैं, और मुझसे कहा गया है कि ऐसी ही कुछ उलझनें आपको भी सता रही हैं। अलबत्ता, यह ठीक है कि कांग्रेस अहिंसा और सत्यके ज़रिये स्वराज्य हासिल करनेमें मानती है; मगर कांग्रेसके बाहर और उसके अन्दर भी ऐसे बहुतसे लोग मौजूद हैं, जिन्हें यह शक होने लगा है कि क्या कांग्रेसकी यह नीति या पॉलिसी अब अपना काम खतम नहीं कर चुकी है और क्या आगे पड़े हुए कामोंके लिए वह निकम्मी नहीं हो चुकी है, खासकर उस हालतमें जब कि ज़माना बदल गया है और बदलता चला जा रहा है।

"आप लोगोंने सुभाषबाबूके मातहत काम किया है और बहादुर लड़वैयोंके नाते लड़ाईके मैदानमें अपने जौहरको साबित किया है। मगर कामयाबी और नाकामी हमारे हाथकी बात नहीं। वह तो भगवान्के ही हाथमें है। आपसे बिदा होते वक़्त नेताजीने कहा था कि हिन्दुस्तान लौटने पर आपको कांग्रेसके क़ानून मानकर चलना है, और उसकी नीतिके मुताबिक़ बरतना है। मुझसे कहा गया है कि हिन्दुस्तान को आज़ाद करना ही आप लोगोंका मक़सद या ध्येय था — जापानकी मदद करना नहीं। आप अपने असल मक़सदमें यानी अंग्रेज़ोंको हरानेमें नाकाम रहे, लेकिन आपको यह देखकर सन्तोष होना चाहिये कि मुल्क इस छोर से उस छोर तक जाग उठा है; यही नहीं, बल्कि सरकारी फ़ौजों में भी एक नई सियासी यानी राजनीतिक जागृति पैदा हो गई है, और वे लोग भी अब हिन्दुस्तानकी आज़ादी के बारेमें सोचने लगे हैं। आपने अपने बीच हिन्दुओं, मुसलमानों, पारसियों, ईसाइयों, एंग्लोइंडियनों और सिक्खोंके दरमियान पूरी-पूरी एकता क़ायमकी है। यह कोई मामूली कामयाबी नहीं। मगर हिन्दुस्तानके बाहर आज़ादीकी हवामें जो कुछ आप कर सके, उसको यहाँ हिन्दुस्तानकी इस हवामें ज़िन्दा रखना अब आपका ज़िम्मा है। यह आपकी सच्ची कसौटी होगी।

"अगर आप अहिंसाकी भावनाको अपना लेंगे, उसे हज़म कर लेंगे, तो यहाँ भी आप दिलसे आज़ाद रह सकेंगे। मसलन्, दुनियाकी कोई ताक़त या हुकूमत उन लोगोंको सलाम करनेके लिए मजबूर नहीं कर सकती, जिन्होंने दिलकी आज़ादीको हासिल कर लिया है। अगर कोई हुकूमत उन्हें मार डालनेकी धमकी दे, तो वे अपनी गरदन आगे बढ़ा देंगे, मगर सलाम तो हरगिज़ न करेंगे। इस तरह ख़ामख़ा किसीको क़त्ल करनेके खिलाफ़ तो सिपाहीके दिलमें भी बग़ावत खड़ी हो सकती है। इसलिए मैं कहता हूँ कि आप आज़ाद आदमियोंकी तरह ही ज़िंदा रहें, और ज़रूरत पड़ने पर उसी तरह मरें भी। आप .गुलाम तो हरगिज़ न रहें। अगर आप सब दिलसे आज़ाद हो जायँ, तो सारा हिन्दुस्तान आज़ाद हो जायगा। वे आपको क़ैद कर सकते हैं। आप चाहें, .खुशी-.खुशी जेल चले जायँ, या उनसे साफ़-साफ़ कह दें कि वे आपकी लाशको ही जेलमें डाल सकते हैं। अहिंसक सिपाहीके लिए ये दोनों रास्ते खुले हैं, और इनके लिए ऊँचे-से-ऊँचे दरजेकी बहादुरी ज़रूरी है। हिन्दुस्तानके ४० करोड़ लोगोंमें नई जान डालनेका महान् काम हमारे सामने पड़ा है। हमें इन चालीसों करोड़के दिलसे डरको मार भगाना है। जिस दिन वे सब तरहके डरसे बरी हो जायँगे, उसी दिन .गुलामीकी हमारी बेड़ियाँ भी कट जायँगी, और मुल्क सारा आज़ाद हो जायगा।

"बरसों पहले ननकानासाहबमें मैंने कहा था: 'सिक्खोंने सिपाहीके नाते अपनी बहादुरी साबित कर दिखाई है। लेकिन गुरु गोविन्दसिंहके आदर्शकी पूरी सार्थकता तो तभी होगी जब वे अपनी इन कृपाणोंके बदले आत्माकी यानी अहिंसाकी कृपाण या तलवार बाँधने लगेंगे।' जब तक आप अपनी तलवार अपने हाथमें रखना चाहते हैं, तब तक आप पूरे-पूरे निडर या बेख़ौफ़ नहीं बने हैं। जब आप अहिंसाकी तलवार बाँधे होंगे, तो दुनियाकी कोई ताक़त आपको दबा नहीं सकेगी। अहिंसा जीतनेवालोंकी तरह ही हारनेवालोंको भी ऊपर उठाती है। नेताजीने आपके अन्दर एक नई आग नया जज़्बा, पैदा कर दिया है। उसे अब आप अहिंसाके ज़रिये ही ज़िंदा रख सकते हैं।"

इस तरह फ़ौजी हिम्मतकी शक्लमें अहिंसा महत्त्वको, उसकी अहमियतको, समझानेके बाद गांधीजीने उन्हें बताया कि एक बा-इज़्ज़त और नमूनेदार नागरिक बननेके लिए एक सत्याग्रहीमें किस ऊँचे दरजेकी हिम्मत ज़रूरी होती है। उन्होंने कहा: "सबसे बड़ी बात तो यह है कि आपको कभी भीख न माँगनी चाहिये और न किसीसे दान लेकर अपनी गुज़र करनी चाहिये। चूँकि हिन्दुस्तानके लिए आपने अपनी जान जोखिममें डाली है और इम्फालके मैदान पर आप उसकी आज़ादीके लिए लड़े हैं, इसलिए इस सबके बदलेमें आपको मुल्कसे अपने लिए बहुत लाड़-दुलारकी या रिआयत-सहूलियतकी उम्मीद न रखनी चाहिये। अगर आप ऐसा करेंगे, तो अपनी क़ीमत खो बैठेंगे — निकम्मे बन जायँगे। जो नमकीन न रहा वह नमक कैसा? वह तो मिट्टी हो गया। आपको अपने पसीनेकी रोटी कमाना पसन्द होना चाहिये और भीख माँगने या दान लेनेसे क़तई परहेज़ करना चाहिये। थोड़ेमें मुझे यही कहना है कि अब तक हथियार चलानेमें आपने जो हिम्मत और बहादुरी दिखाई है, वैसी ही हिम्मत और बहादुरी अब आपको अहिंसाके मैदानमें भी दिखानी है।

"अगर ज़मीनकी ज़रूरत है, तो वह आपको मिलेगी। आप उसे साफ़ और समतल करके उसको नमूनेके खेतोंमें बदल डालिये। सदियों पुरानी जो काहिली या सुस्ती हमारे लाखों-करोड़ोंको घेरे हुए है, उसे आपको मिटाना है, उस पर फ़तह पानी है। यह आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी कर सकेंगे, जब ख़ुद दिन-रात काम-धन्धेमें डूबे रहकर कड़ी मेहनतकी ज़िन्दगी बितायेंगे। आपको भंगी या मेहतरकी तरह झाड़ू और डोल सँभालने होंगे, और बड़ी होशियारी व तनदेही से इन कामोंमें कमाल हासिल करना होगा। झाड़ू लगाने या पाखाना साफ़ करनेका काम आपके नज़दीक गन्दा या हलका काम हरगिज़ न होगा। इन कामोंमें कमाल हासिल करना विक्टोरिया क्रॉस हासिल करनेसे कहीं बढ़कर है।"

इसके बाद सवाल-जवाब शुरू हुए:

स० — जिसने सारी ज़िन्दगी लड़नेमें बिताई है, वह कामयाबी के साथ अहिंसाको कैसे अपना सकता है? क्या ये दोनों आपसमें बेमेल नहीं?

ज० — मैं इसे नहीं मानता। बादशाहखान पठान हैं। मगर आज वे अहिंसाके सिपाही बन गये हैं। टॉल्स्टॉयने भी फ़ौजमें नौकरी की थी। फिर भी युरोप में वह अहिंसाके सबसे बड़े प्रचारक रहे। अहिंसाकी ताक़तको हम अभी पूरी तरह पहचान नहीं पाये हैं। अगर सन् '४२में सरकारने मुझे गिरफ़्तार न कर लिया होता, तो मैं दिखा देता कि अहिंसा के तरीक़ेसे जापान के साथ कैसे लड़ा जा सकता है।

स० — अपने बचावके लिए तलवार चलाना तो अहिंसा ही है न?

ज० — यों तो वेवल, ऑकिनलेक और हिटलर भी बिला वजह तलवार नहीं चलाते। फिर भी मेरे नज़दीक वह अहिंसा नहीं। उसके बचावमें कुछ भी क्यों न कहा जाय, आख़िर वह हिंसा ही है।

स० — आप अहिंसाको अपनाकर दुनियाके साथ नहीं चल सकते। आपको दो में से किसी एकको पसन्द कर लेना होगा।

ज० — मैं इसे नहीं मानता। सुधारकको दुनियाकी चाल से नहीं चलना है, उसे तो दुनियाके सामने होकर चलना है, फिर चाहे ऐसा करते हुए उसे मरना ही क्यों न पड़े। लोग तालियाँ बजाकर आपका स्वागत करते हैं, इससे आपको भुलावेमें न पड़ना चाहिये। मुल्कको जो ख़ास पैग़ाम आपकी ओर से मिलना है, वह तलवार चलानेका नहीं, बल्कि लोगोंको मर्द और निडर बनानेका है — तलवार के डरको मिटानेका है।

स० — अगर सुभाषबाबू जीतकर आये होते तो आप क्या करते?

ज० — मैं उनसे कहता कि वे आपके तमाम हथियार मेरे सामने जमा करवा दें।

मसूरी, ३०-५-'४६

('हरिजन'से)

प्यारेलाल

उरुळीकांचन

कांचन गाँवसे मेरे साथी मुझे ख़बर देते हैं कि वहाँ दूर-दूरसे लोग इलाजके लिए आ रहे हैं। मैंने 'हरिजन-सेवक'में लिखा तो है कि अबतक वहाँ जगहका भी ठिकाना नहीं है। अब ख़बर आई है कि थोड़ी ज़मीन मिल गई है, लेकिन उस पर मकान वग़ैरा बनाना अभी बाक़ी है; और, वहाँ ऐसा कोई मकान भी नहीं है, जिसमें मरीज़ोंको रक्खा जा सके। बाहरके मरीज़ोंको लेनेका प्रबन्ध तो वहाँ हो ही नहीं सकेगा। यह देहातको शहर बनानेका साहस नहीं। ध्येय तो यह है कि हर देहातमें जैसे पाठशाला होनी चाहिये, वैसे ही वहाँ एक नैसर्गिक उपचार-गृह भी बने। वह देहातकी शोभा बनेगा। इसके पढ़नेवाले याद रक्खें कि उरुळीकांचन गाँवमें रहनेवाले मेरे साथी पत्र-व्यवहारसे भी मरीज़ोंको सलाह देनेमें, उनकी रहनुमाई करनेमें, असमर्थ हैं। दूरवाले समझें कि वे अपने लिए क़ुदरती इलाज ख़ुद ही कर सकते हैं। राम-नाम कौन नहीं ले सकता? यानी कटि-स्नान कौन नहीं कर सकता?

मसूरी, २-६-'४६

मो० क० गांधी

सवालनामा

स० — मेहनत करने पर भी पेट भर अनाज न मिले, तो क्या किया जाय?

ज० — जो मेहनत करता है, उसे पेट भर अनाज मिलना ही चाहिये। यह हमेशाका क़ानून है। लोगोंको फ़ायदा पहुँचानेवाली सब मेहनतका एक ही दाम होना चाहिये। जब तक यह नहीं हो पाता, मेहनत करनेवालेको कम-से-कम अपना और अपने कुटुंबका पेट भरनेके लिए अनाज और तन ढँकनेके लिए कपड़ा तो मिलना ही चाहिये। जहाँ इतना भी नहीं हो सकता, वहाँ राजका इन्तज़ाम होते हुए भी अराजकता चलती है। अराजकता मिटानेके लिए लोग क्या करें? उन्हें शान्तिसे अराजकताका सामना करना चाहिये। लोग अशान्त होकर दुकानें लूटने लगें या मारामारी करने लगें, उससे काम नहीं बन सकता। ऐसा करनेसे लोग बे-मौत मरते हैं; और अगर डरके मारे सरकार झुक भी जाय, और लोगोंकी माँग पूरी भी कर दे, तो भी उससे न लोगोंको फ़ायदा पहुँचता है, न सरकारको। अराजकता तो मिटती ही नहीं। और आख़िर जहाँ थे, वहीं रह जाते हैं। दुनिया पर एक सरसरी नज़र डालनेसे भी यह चीज़ सब जगह साफ़-साफ़ दिखाई देगी।

अनाज पड़ा हो और फिर भी वह भूखोंको न मिले, तो वे सत्याग्रह कर सकते हैं। ख़ुद होकर वे उस पर क़ब्ज़ा न करें। डाका न डालें। भीख माँगने या डाका डालनेके बदले मरने तक उपवास करें, और इस तरह अपने लिए व दूसरोंके लिए न्याय हासिल करें। इतनी धीरज ही न हो तो बात अलग है; मगर हो, तो यहाँ बताया हुआ रास्ता ज़रूर सफल होगा।

मसूरी, २९-५-'४६

('हरिजनबन्धु'से)

क्या किसी भी हालतमें झूठ बोलना मुनासिब है?

स० — मशहूर अंग्रेज़ लेखक मि० बर्ट्रेण्ड रसेलके नीचे लिखे बयानके बारेमें आपकी क्या राय है? "एक दफ़ा देहातकी तरफ़ घूमते हुए मैंने देखा कि एक थकी हुई लोमड़ी लस्त-पस्त होनेकी हालतमें भी ज़बरदस्ती दौड़ी चली जा रही थी। इसके कुछ ही मिनट बाद मुझे शिकारियोंकी एक टोली दिखाई पड़ गई। उन्होंने मुझसे पूछा: 'क्या आपने लोमड़ी देखी है?' और मैंने कहा: 'हाँ, देखी है।' उन्होंने फिर पूछा: 'किधर गई है?' और मैं उनसे झूठ बोल गया। मैं नहीं समझता कि उनसे सच बात कहकर मैं ज़्यादा भला आदमी बन गया होता।"

ज० — मि० बर्ट्रैण्ड रसेल एक बड़े लेखक और फ़िलॉसफ़र हैं। उनकी पूरी-पूरी इज़्ज़त करते हुए भी मुझे ऊपर दी गई उनकी रायसे अपनी नाइत्तिफ़ाक़ी ज़ाहिर करनी चाहिये। शुरूमें ही उन्होंने यह कहकर ग़लती की कि उनने लोमड़ी देखी है। पहले सवालका जवाब देना उनके लिए लाज़िमी नहीं था। अगर वह शिकारियोंको जान-बूझकर ग़लत रास्ते चढ़ाना नहीं चाहते थे, तो वे दूसरे सवालका जवाब देनेसे भी इनकार कर सकते थे। मैं हमेशासे यह मानता और कहता आया हूँ कि हमें पूछे जानेवाले सब सवालोंका जवाब देना हमेशा ही लाज़िमी नहीं होता। सच बात कहनेमें अपवादकी कोई गुंजाइश नहीं।

मानपत्र और फूलोंके हार

स० — एक भाई शिकायत करते हैं: "बहुतसे सूबोंमें कांग्रेसी वज़ारतें हो गई हैं, और आम रिआयाको इस हक़ीक़त पर नाज़ है। इसलिए जब कोई मंत्री या वज़ीर किसी जगह जाते हैं, तो वहाँकी मुक़ामी कमेटियाँ या दूसरी संस्थायें उन्हें क़ीमती मानपत्र या एड्रेस देकर उनके तईं अपना आदर प्रकट करती हैं। क़रीब-क़रीब सभी मामलोंमें इस तरह दी जानेवाली चीज़ें वज़ीरकी अपनी मिल्कियत बन जाती हैं। मेरी रायमें यह तरीक़ा ठीक नहीं। या तो इस तरह मानपत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेनेका यह सिलसिला बन्द किया जाना चाहिये, या इस तरह दी गई चीज़ें मुक़ामी कांग्रेस कमेटीको मिलनी चाहिये। वज़ीरों या कांग्रेसके लीडरोंको फूलोंके हार वग़ैरा पहनानेके बारेमें भी कोई तयशुदा पॉलिसी होनी चाहिये। मैंने कई जगह देखा है कि मंत्रियोंका स्वागत करते समय उनको ऐसे हार पहनाये गये हैं, जिनकी क़ीमत ३००) या ४००) से कम नहीं। यह पैसेकी निरी बरबादी है।"

ज०—यह एक वाजिब शिकायत है। आम रिआयाकी खिदमत करनेवाले किसी भी सेवकको अपने कामके लिए न तो क़ीमती मानपत्र लेने चाहिये और न बेशक़ीमती फूलोंके हार वग़ैरा। बहुत ही बड़ी चीज़ नहीं, तो भी यह एक अफ़सोसनाक चीज़ तो बन ही गई है। इसके बचावमें अक्सर यह दलील दी जाती है कि मानपत्रकी क़ीमती चौखटों और फूलोंके बेशक़ीमती हारों व गुलदस्तोंकी बदौलत इन चीज़ोंको बनानेवाले कारीगरोंको पैसा मिलता है। लेकिन ये कारीगर तो वज़ीरों और उनके-जैसे दूसरोंकी मददके बिना भी अच्छी तरह अपना काम चला सकते हैं। वज़ीर वग़ैरा अपने मौज-शौक़के लिए दौरा नहीं करते। उनके दौरे कामके सिलसिलेमें होते हैं, और उनके पीछे अक्सर यह ख़याल रहा है कि वे लोगोंसे रूबरू उनकी बातें सुन सकें। उनको दिये जानेवाले मानपत्रोंमें उनके गुणोंकी तारीफ़ करना ज़रूरी नहीं, क्योंकि गुण तो ख़ुद ही अपने इनाम हैं। मानपत्रोंमें तो मुक़ामी ज़रूरतों और शिकायतोंका, अगर वैसी कोई शिकायतें हों, ज़िक्र किया जाना चाहिये। वज़ीरों और उनके सेक्रेटरियोंके सामने बड़े-बड़े काम पड़े हैं। लोगोंकी ख़ुशामदभरी तारीफ़ोंसे उनके कामोंमें मदद पहुँचनेके बदले रुकावटें पैदा होंगी।

मसूरी, ३१-५-'४६

('हरिजन' से)

मोहनदास करमचंद गांधी

आम रिहाइयाँ

सूबोंमें ज़िम्मेदार वज़ारतें (मंत्रिमंडल) काम करने लगी हैं। सहज ही इसका यह मतलब होता है कि सियासी या राजनीतिक क़ैदियोंकी आम रिहाइयाँ हों। इनमें हत्या करने, आग लगाने और डाका वग़ैरा डालनेके सिलसिलेमें सज़ा पाये हुए क़ैदी भी शामिल हैं। लोग मुझसे पूछते हैं कि इस तरह रिहाई पाये हुओंको जनता किस हदतक बहादुर और शहीद माने और उनका जय-जयकार करे।

इस तरहके जुर्मों में सज़ा पाये हुओंको अलग-अलग कारणोंसे रिहा करना एक बात है। लेकिन इन कामोंको हर तरहकी इज़्ज़त देनेवाले बहादुरोंके कामके साथ मिलाना और उनकी वैसी ही तारीफ़ करना बिलकुल दूसरी बात है। मुझे इसमें कोई शक नहीं कि ऐसा करना बेसमझी है और ग़लत है। अगर किसी पब्लिक कामके लिए मुझे पैसेकी ज़रूरत है और मैं उसे डाका डालकर हासिल करता हूँ, तो महज़ इसलिए कि डाका पब्लिक कामके लिए डाला गया था, मैं डाकू होनेसे बच नहीं सकता। देशभक्तिके ऊँचे नाम पर किये गये ऐसे हरएक जुर्मकी बिना सोचे-समझे की जानेवाली तारीफ़ एक ऐसा क़ातिल हथियार है, जो अपनी दूनी ताक़तसे सारी क़ौम पर आ गिरेगा और मुल्कको उसकी गहरी क़ीमत चुकानी पड़ जायगी। वैसे आज़ादीमें गुनाह करनेकी छूट भी शामिल है, लेकिन अगर उसके साथ अपना अपनाया हुआ कड़ा संयम न हो, तो वह आसानीसे शाप बन सकती है। आम लोगोंकी ओरसे दिया जानेवाला यह स्वागत-सत्कार लोगोंको ग़लत तालीम देगा और सच्ची आज़ादीको नुक़सान पहुँचानेवाली तैयारी साबित होगा, जो कइयोंकी उम्मीदसे कहीं पहले आ रही है।

मसूरी, ३१-५-'४६

('हरिजन' से)

मोहनदास करमचंद गांधी

कुछ और सुझाव

यह एक अच्छी निशानी है कि अनाज की कमी पर बहुत से लोग सोच-विचार कर रहे हैं। हर तरफ़ से इस कमीको पूरा करने के लिए सुझाव आते रहते हैं। एक भाईने, जो अपने विषय (मज़मून) को अच्छी तरह जानते हैं, नीचे लिखे सुझाव भेजे हैं:

(१) जब अनाज बहुत कम मिलने लगे, तो मांस खानेवालों को दूसरों के बराबर अनाज देनेकी क्या ज़रूरत? जितनी ख़ूराक वे मांस से हासिल कर सकें, अनाज की उनकी रसद उतनी कम कर दी जाय, तो काफ़ी अनाज बच सकता है।

(२) अनाजकी रसद कम कर दी गई है। मेरा ख़याल है कि इससे बहुत से मेहनत करनेवालों का पेट नहीं भरता। बहुत से तो इस कमी को इस तरह पूरा करते हैं कि गेहूँमें मूँग, चना और जौ मिलाकर इनका आटा बना लेते हैं। लेकिन इन तीनों चीज़ों की क़ीमत गेहूँसे ज्यादा है। इस-लिए बहुत से उन्हें ख़रीद नहीं सकते। इससे यह नतीजा निकलता है कि मांस खानेवालों के लिए जितना अनाज कम किया जाय, उतनी ही पौष्टिक (क़ुवतबख़्श) मांसकी ख़ूराक कम किये अनाजकी क़ीमत में मिलनी चाहिये। मैंने इस तजवीज़का ख़र्च निकाला है। अगले कुछ महीनों में १५ करोड़ रुपये से ज़्यादा ख़र्च नहीं आयेगा। आदमियों को बचानेके लिए तो कोई भी क़ीमत ज़्यादा नहीं हो सकती। कहा जाता है कि हिन्दुस्तान में अनाजकी कमी की वजह से शायद १से १॥ करोड़ तक आदमी मर जायँगे।

(३) मुझे जीव-हत्या बहुत बुरी लगती है। लेकिन अगर आदमी या जानवर में से सिर्फ़ एक को बचाया जा सके, तो मेरे ख़यालमें आदमी को बचाना चाहिये। हिरन, खरगोश, सुअर और कबूतर फ़सलोंको काफ़ी नुकसान पहुँचाते हैं। अगर इनके शिकारका ठीक बंदोबस्त किया जाय, तो कुछ इलाक़ों को, खासकर बड़े शहरों को, मांस लगातार मिल सकता है। यह बन्दोबस्त मुश्किल तो है, पर नामुमकिन नहीं। अगर ये जानवर इतने बड़े पैमाने पर मारे जायें, तो लगे हाथों यह भी फ़ायदा होगा कि जो फ़सलें ये जानवर तबाह करते हैं, वे बच जायँगी।

(४) ऐसे बहुत कम लोग हैं जो इस बातको पसन्द करें कि ख़ूराक बचाई जाय और रसद बाँटनेके चालू तरीक़े के मुताबिक़ कालवाले इलाक़ों में भेजी जाय। काला बाज़ार और बेईमानी इतनी चलती है और लोगों को ऐसा लगता है कि जो कुछ वे बचायेंगे, सो काले बाज़ार में पहुँच जायगा। अगर बचाया हुआ अनाज इकट्ठा किया जाय, और विश्वास दिलाया जाय कि वह कालवाले इलाक़े में जरूर पहुँच जायेगा, तो लोगों के दिलों पर इसका बहुत अच्छा असर होगा। इसके लिए बन्दोबस्त तो करना पड़ेगा, पर मुझे ऐसा लगता है कि काफ़ी अनाज इकट्ठा हो जायगा।

पहला सुझाव ऐसा है कि हुकूमत उस पर चले या न चले, ईमानदार मांसखानेवाले उस पर चल सकते हैं। अगर वे आज अनाजका अपना पूरा हिस्सा ले रहे हैं, तो उसमेंसे कुछ आसानीके साथ ज़्यादा ज़रूरतमन्द लोगोंको दे सकते हैं। ऐसे मौक़ों पर आपसके सहयोग (तआवुन) से ज़रूरतवालोंको जल्दी-से-जल्दी मदद पहुँच सकती है।

दूसरा सुझाव पहले से निकलता है।

तीसरे सुझाव के बारेमें अलग-अलग राय होगी। हिन्दुस्तान एक ऐसा मुल्क है जहाँ बहुतसे लोग हर क़िस्मकी जानको पवित्र (मुतबर्रिक़) मानते हैं, और जो ऐसा नहीं भी मानते, उनकी भी यह आदत बन गई है कि वे जीव-हत्या करना पसन्द नहीं करते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे देशमें शायद मांस खानेवालों के लिए भी इस सुझाव पर चलना मुश्किल होगा। सब जानते हैं कि मैं हर क़िस्मके जीवको पवित्र मानता हूँ। फिर भी मैं बड़ी आसानीसे इस बातकी सिफ़ारिश कर सकता हूँ कि जो लोग मांस खाते हैं, वे लेखक की सुझाई हुई तदबीर पर चलें। 'हरिजनबन्धु'में मैं एक ऐसी दलील पर चर्चा करने की आशा रखता हूँ, जो ख़तरनाक जानवरोंको भी मारने के खिलाफ़ है। गो इसका .ख़ूराककी बात के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं।

चौथा सुझाव अच्छा है। लेकिन उससे कोई ख़ास नतीजा निकलनेवाला नहीं, क्योंकि सरकारमें हर जगह बेईमानी, नालायक़ी और ग़ैरज़िम्मेदारी छाई हुई है। यह मुश्किल तब तक दूर नहीं हो सकती, जब तक हमारी अपनी सरकार न हो। उसे जनता को हर बातका जवाब देना पड़ेगा और लोग उस पर भरोसा कर सकेंगे। बहुत दिनोंसे ऐसी हुकूमतका इन्तज़ार है। क्या वह कभी आयेगी भी?

मसूरी, २९-५-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

हरिजनसेवक

९ जून १९४६

धर्म और अधर्मका विवेक

एक भाई लिखते हैं:

"५ मईके 'हरिजनबन्धु'में आपने लिखा है कि आपकी अहिंसामें भयानक प्राणियोंको, मसलन्, शेर, भेड़िया, साँप, बिच्छू वग़ैराको मार डालनेकी गुंजाइश है।

"आप कुत्तों वग़ैराको खाना नहीं देते। गुजराती समाजके अलावा और भी बहुतसे लोग हैं, जो जानवरोंको खिलाना पुण्य समझते हैं। आजकल जब कि .ख़ूराककी इतनी तंगी है, ऐसा खयाल नामुनासिब हो सकता है। मगर इतनी बात तो है कि ये जानवर (कुत्ते वग़ैरा) आदमीकी काफ़ी सेवा करते हैं। इन्हें खिलाकर इनसे काम लिया जा सकता है।

"आपने डरबनसे स्व० श्री रायचन्दभाईको २७ सवाल पूछे थे। उनमें एक सवाल यह भी था कि जब साँप काटने आये, तो क्या किया जाय? उन्होंने जवाब दिया था कि आत्मार्थी साँपको नहीं मारेगा। साँप काटे, तो उसे काटने देगा। मगर अबकी तो आप दूसरी ही बात कह रहे हैं। ऐसा क्यों?"

इस बारेमें मैं काफ़ी लिख चुका हूँ। उन दिनों सवाल पागल कुत्तोंको मारनेका था। काफ़ी चर्चा हुई थी। मगर मालूम होता है कि वह सब भूल गई है।

मैं जिस अहिंसाका पुजारी हूँ, वह निरी जीव-दया ही नहीं है। जैनधर्ममें जीव-दया पर .ख़ूब वज़न दिया गया है। वह समझमें आता है, मगर उसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि इनसानको छोड़ कर हैवानों पर दया की जाय। मैं मानता हूँ कि जहाँ जानवरों पर दया करनेकी बात लिखी है, वहाँ मनुष्य पर दया करनेकी बात तो मान ही ली गई है। ऐसा करनेमें हद छूट गई है, और अमलमें तो जीव-दयाने टेढ़ा रूप ही लिया है। जीव-दयाके नाम पर अनर्थ हो रहा है। बहुतसे लोग चींटियोंको आटा डालकर सन्तोष मानते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो आजकलकी जीव-दयामें जान ही नहीं रही। धर्मके नाम पर अधर्म चल रहा है, पाखण्ड फैल रहा है।

अहिंसा सबसे ऊँचा धर्म है। वह बहादुरोंका धर्म है, कायरोंका कभी नहीं। दूसरे मारें, हिंसा करें, और हम उससे फ़ायदा उठायें, और मानें कि हमने धर्मका पालन किया है, तो यह अपने-आपको धोखा देना नहीं हुआ, तो और क्या हुआ?

जिस गाँवमें रोज़ बाघ आता है, वहाँ नामका अहिंसावादी नहीं रहेगा। वह तो वहाँसे भाग जायगा और जब कोई दूसरा आदमी उस बाघको मार डालेगा, तब वापस आकर अपने घर-बार पर क़ब्ज़ा करेगा। यह अहिंसा नहीं है। यह तो डरपोककी हिंसा है। बाघको मारनेवालेने कुछ बहादुरी तो दिखाई। मगर जो दूसरेकी हिंसासे लाभ उठाता है, वह कायर है। वह कभी अहिंसाको पहचान नहीं सकता।

देहधारीको कुछ न-कुछ हिंसा तो करनी ही पड़ती है। असल धर्म एक होते हुए भी उसके बारेमें हरएककी समझ अलग-अलग होती है। इसलिए सब अपनी शक्ति और समझके मुताबिक़ उस पर चलते हैं। एकका धर्म दूसरेके लिए अधर्म हो सकता है। मांस खाना मेरे लिए अधर्म है, मगर जो मांस पर ही पला है, जिसने मांस खानेमें कभी बुराई नहीं मानी, वह मुझे देखकर मांस छोड़ दे, तो उसके लिए वह अधर्म होगा।

मुझे खेती करनी हो, जंगलमें रहना हो, तो खेतीके लिए लाज़िमी (अनिवार्य) हिंसा मुझको करनी ही पड़ेगी। बन्दरों, परिन्दों और ऐसे जन्तुओंको, जो फ़सल खा जाते हैं, .ख़ुद मारना होगा, या कोई ऐसा आदमी रखना होगा जो उन्हें मारे। दोनों एक ही चीज़ हैं। जब अकाल सामने हो, तब अहिंसाके नाम पर फ़सलको उजड़ने देना मैं तो पाप ही समझता हूँ। पाप और पुण्य स्वतंत्र चीज़ें नहीं हैं। एक ही चीज़ एक समय पाप और दूसरे समय पुण्य हो सकती है।

आदमीको शास्त्ररूपी कुएँमें डूब नहीं जाना है, बल्कि गोताखोर बनकर शास्त्ररूपी समुद्रमेंसे मोती निकालने हैं।

इसलिए क़दम-क़दम पर आदमीको हिंसा और अहिंसाका विवेक (तमीज़) करना होता है। इसमें न शर्मकी गुंजाइश है, न डरकी।

'हरिनो मारग छे शूरानो, नहिं कायरनुं काम जोने'

(हरिका रास्ता बहादुरोंका है, डरपोकोंका उसमें कोई काम नहीं।)

आख़िर श्री रायचन्द भाईने तो यह लिखा था कि अगर मुझमें शक्ति हो और मैं आत्माको पहचानना चाहता होऊँ, तो साँपके काटने आने पर मुझे चाहिये कि मैं उसे काटने दूँ। मैंने तो उनका ख़त मिलनेसे पहले या बादमें आज तक कभी साँपको मारा ही नहीं। इसे मैं अपनी बहादुरी नहीं समझता। मेरा आदर्श तो यह है कि मैं साँप और बिच्छूसे बेधड़क खेल सकूँ। मगर आज तो यह मेरा एक मनोरथ ही है। मैं नहीं जानता कि यह मनोरथ कभी फलेगा या नहीं, और अगर फला तो कब? मैंने अपने आदमियोंको सब जगह साँप और बिच्छू मारने दिये हैं। मैं चाहता तो उन्हें रोक सकता था। मगर रोकता कैसे? इन जानवरोंको अपने हाथमें पकड़कर दूसरोंको निडर बनानेकी हिम्मत मुझमें नहीं थी। न होनेकी मुझे शर्म थी। मगर वह मेरे या उनके किस कामकी? राम-नामकी कृपा होगी, तो मुझे आशा करनी चाहिये, कि किसी रोज़ ऐसा करनेकी भी हिम्मत आ जायगी। मगर तब तक मैं तो ऊपर बताया हुआ धर्म ही जानता हूँ। धर्म भी तजरबेसे सीखा जाता है, कोरी पंडिताईसे नहीं।

मसूरी, २९-५-'४६

('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खादीके बारेमें संवाद

एक खादी-सेवक लिखते हैं :

"एक खादी-भण्डारके संचालक और ग्राहकोंके बीच हुई हालकी एक बातचीत नीचे देता हूँ। कृपया लिखें कि क्या इन ग्राहकोंको खादी बेची जा सकती है?

सवाल-जवाब यों हैं :

स० — क्या यह सूत आपने .खुद काता है?

ज० — नहीं, मैं १० रुपयेकी ८ गुण्डी ख़रीदकर लाया हूँ।

स० — दूसरेसे पूछा : क्या आप यह सारा सूत कात लेते हैं?

ज० — नहीं, इसे मेरी लड़कीने काता है। हम तो बारह आनेकी एक गुण्डीके हिसाबसे बेचते भी हैं।

स० — तीसरेसे कहा : यदि आपके पास सूत नहीं है, तो आपको खादी नहीं मिलेगी।

ज० — कोई परवाह नहीं। जब तक मुझे सूत नहीं मिलता, मैं अप्रमाणित खादी ही पहनूँगा।

स० — चौथेसे पूछा गया : आप खादी क्यों ख़रीदते हैं?

ज० — क्योंकि वह आसानीसे मिल जाती है।

स० — पाँचवेंसे बात हुई : आप तो खादीधारी नहीं; फिर इस खादीका क्या होगा?

ज० — आजकल कुछ खादी पहनना भी फ़ैशनमें शरीक है।

स० — छठेसे कहा : आप तो कातते ही नहीं, फिर यह सूत कहाँ से?

ज० — मेरे एक भले दोस्त हमेशा सूत देते रहते हैं।

स० — सातवेंसे पूछा : आप हमेशा रेशमी या ऊनी खादी ही क्यों पहनते हैं?

ज० — क्योंकि इसके लिए सूत नहीं देना पड़ता।

स० — आठवेंने बहुत-सी खादी ख़रीदी। उनसे पूछा गया : इतनी सारी खादी ख़रीदकर क्या करेंगे?

ज० — इकट्ठा करके रक्खूँगा। दो-तीन साल चलेगी। फिर मिले या न मिले।"

ये सब सवाल-जवाब बहुत सूचक हैं। अगर खादीकी नई नीति सही है और सब ग्राहक इस प्रकारके हैं, तो वे खादीको कांग्रेसके विधानसे निकाल देनेकी आवश्यकता सिद्ध करते हैं। याद रहे कि इस सवाल-जवाबमें खादीके आठ ग्राहक आ जाते हैं। इनमेंसे एकके लिए भी चरखा-संघके खादी-भण्डारकी आवश्यकता सिद्ध नहीं होती। चरखा-संघकी हस्ती ही ग़रीबोंके लिए है। जो खादी पहनते हैं, वे न तो ग़रीबोंके लिए पहनते हैं या स्वराज्यके लिए। इन आठ ग्राहकोंको न स्वराज्यकी पड़ी है, न ग़रीबोंकी। खादीकी जड़में जो कल्पना रक्खी गई है, यदि उसे साबित करके दिखाना है, तो चरखा-संघवालोंको अपनी नीति पर इस हद तक क़ायम रहना पड़ेगा कि वे खादी बेचनेके भण्डारोंको बन्द करनेसे भी न डरें। जो प्रतिज्ञा हमने की है, उसके लिए सब सहनेकी तैयारी हममें होनी चाहिये। इन सवाल-जवाबोंका एक सार यह भी है कि खादी-भण्डारोंके संचालक जाग्रत रहें। वे खादी-शास्त्रका भलीभाँति पठन करें और इन ग्राहकोंको विनय और धीरजसे खादीका रहस्य समझा दें। इसमें जो थोड़ा समय जायगा, उसकी परवाह न करें। अगर हमें खादीकी शक्तिमें विश्वास है, तो मुझे कोई शक नहीं कि हमारे दृढ़ रहनेसे ये लोग उसे समझ जायँगे। अगर हममें ही विश्वास नहीं है, तो हमारा दावा अपने-आप ख़तम हो जायगा।

मैंने यह मान लिया है कि संवाद जैसा हुआ है, वैसा ही खादी-सेवकने दिया है।

मसूरी, १-६-'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

विश्वास-चिकित्सा (इलाजे-बिल एतक़ाद)* और राम-नाम

एक दोस्त शिकवा करते हुए लिखते हैं :

"मैंने १७-३-'४६ के 'हरिजन' में आपका लेख 'जब जागे तभी सवेरा' पढ़ा है। क्या आपका .कुदरती इलाज और विश्वासी चिकित्सा कुछ मिलती-जुलती चीज़ें हैं? बेशक मरीज़को इलाजमें श्रद्धा (एतक़ाद) तो होनी ही चाहिये, लेकिन कई ऐसे इलाज हैं, जो सिर्फ़ विश्वाससे ही रोगीको अच्छा कर देते हैं; जैसे, माता (चेचक), पेटका दर्द, वग़ैरा बीमारियोंके। शायद आप जानते हों, माताका, ख़ासकर दक्षिण प्रान्तोंमें,[1] कोई इलाज नहीं किया जाता। इसे सिर्फ़ ईश्वरकी माया मान लिया जाता है। हम मरिअम्मा देवीकी पूजा करते हैं। बहुतसे रोगी अच्छे हो जाते हैं। यह चीज़ एक करामात-सी लगती है। जहाँ तक पेट-दर्दकी बात है, बहुत-से लोग तिरुपतिमें देवीकी मिन्नतें मानते हैं। अच्छे होने पर उसकी मूर्तिके हाथ-पाँव धोते हैं, और दूसरी मानी हुई मिन्नतोंको पूरा करते हैं। मेरी ही माँकी मिसाल लीजिये। उनको पेटमें दर्द रहता था। पर तिरुपति हो आनेके बाद उनकी वह तकलीफ़ दूर हो गई।

"कृपा करके इस बात पर रोशनी डालिये और यह भी कहिये कि .कुदरती इलाज पर भी लोग ऐसा ही विश्वास क्यों न रक्खें? इससे डॉक्टरोंका बार-बारका ख़र्च बच जायगा, क्योंकि, जैसा कि चॉसर कहता है, डॉक्टरका तो काम ही है कि वह दवाई बेचनेवालेसे मिलकर बीमारको हमेशा बीमार बनाये रक्खे।"

जो मिसालें ऊपर दी गई हैं, वे न तो .कुदरती इलाजकी ही हैं, और न ही 'राम-नाम' की, जिसको मैंने इसमें शामिल किया है। पर उनसे यह पता ज़रूर चलता है कि .कुदरत बहुतसे रोगियोंको बिना किसी इलाजके भी अच्छा कर देती है। मिसालें यह भी दिखाती हैं कि हिन्दुस्तानमें वहम हमारी ज़िन्दगीका कितना बड़ा हिस्सा बन गया है। .कुदरती इलाजका मध्य-बिन्दु (मरकज़ी नुक़्ता) यानी राम-नाम तो वहमका दुश्मन है। जो बुराई करनेसे झिझकते नहीं, वे राम-नामका नाजायज़ फ़ायदा उठायेंगे। पर वे तो हर चीज़ या हर उसूलके साथ ऐसा ही करेंगे। खाली ज़बानसे राम-नाम रटनेसे इलाजका कोई लेन-देन नहीं। अगर मैं ठीक समझा हूँ, तो, जैसा कि लेखकने बताया है, विश्वास-चिकित्सामें यह माना जाता है कि रोगी अन्ध-विश्वाससे अच्छा हो जाता है। यह मानना तो ज़िन्दा .खुदाके नामकी हँसी उड़ाना है। राम-नाम सिर्फ़ कल्पना (तख़ैयुल) की चीज़ नहीं, उसे तो दिलसे निकलना है। परमात्मामें ज्ञानके साथ विश्वास हो और उसके साथ-साथ .कुदरतके नियमों (क़ानूनों) का पालन किया जाय, तभी किसी दूसरी मददके बिना रोगी बिलकुल अच्छा हो सकता है। उसूल यह है कि शरीरकी सेहत तभी बिलकुल अच्छी हो सकती है, जब मनकी सेहत पूरी-पूरी ठीक हो। और मन पूरा-पूरा ठीक तभी होता है जब दिल पूरा-पूरा ठीक हो। यह वह दिल नहीं, जिसे डॉक्टर टोटियोंसे देखते हैं, बल्कि वह दिल है, जो ईश्वरका घर है। कहा जाता है कि अगर कोई अपने अन्दर परमात्माको पहचान ले, तो एक भी गन्दा या फ़ुज़ूल ख़याल मनमें नहीं आ सकता। जहाँ विचार शुद्ध हों वहाँ बीमारी आ ही नहीं सकती। ऐसी हालतको पहुँचना शायद कठिन हो। पर इस बातको समझ लेना सेहत की पहली सीढ़ी है। दूसरी सीढ़ी है, समझनेके साथ-साथ कोशिश भी करना। जब किसीके जीवनमें यह बुनियादी तबदीली (परिवर्तन) आती है, तो उसके लिए स्वाभाविक (फ़ितरती) हो जाता है कि वह उसके साथ-साथ .कुदरतके

* जिस इलाजकी नींव एतक़ाद (विश्वास) पर हो।

१. मद्रास प्रेसीडेन्सी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन तमाम क़ानूनोंका पालन भी करे, जो आज तक मनुष्यने ढूँढ़ निकाले हैं। जब तक उनमें बेपरवाही की जाय, तब तक कोई यह नहीं कह सकता कि उसका हृदय पवित्र है। यह कहना ग़लत न होगा कि अगर किसीका हृदय पवित्र है, तो उसकी सेहत राम-नाम न लेते हुए भी उतनी ही अच्छी रह सकती है। बात सिर्फ़ यह है कि सिवा राम-नामके पवित्रता पानेका और कोई तरीक़ा मुझे मालूम नहीं। दुनियामें हर जगह पुराने ऋषि भी इसी रास्ते पर चले हैं। और वे तो ख़ुदाके बन्दे थे, कोई वहमी या ढोंगी आदमी नहीं।

अगर इसीका नाम 'क्रिश्चियन सायन्स' है, तो मुझे कुछ कहना नहीं। मैं यह थोड़े ही कहता हूँ कि राम-नाम मेरी ही शोध (दरियाफ़्त) है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, राम-नाम तो ईसाई धर्मसे भी पुराना है।

एक भाई पूछते हैं कि क्या राम-नाममें जर्राही (शस्त्र-क्रिया) इलाजकी इजाज़त नहीं? क्यों नहीं? एक टाँग अगर हादसे (दुर्घटना)में कट गई है, तो राम-नाम उसे थोड़े ही वापस ला सकता है। लेकिन बहुत सी हालतोंमें ऑपरेशन ज़रूरी नहीं होता। मगर जहाँ ज़रूरी हो, वहाँ करवा लेना चाहिये। सिर्फ़ इतनी बात है कि अगर ख़ुदाके किसी बन्देका हाथ-पाँव जाता रहा, तो वह इसकी चिन्ता नहीं करेगा। राम-नाम कोई अटकलपच्चू तजवीज़ नहीं है, न ही कोई कामचलाऊ चीज़।

मसूरी, ३०–५–'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

इनसानकी सच्ची सेवा

बड़ी-बड़ी सचाइयाँ तमाम दुनियामें एक-सी ही होती हैं। वे किसी एक ख़ानदान या किसी ख़ास मज़हबकी नहीं होतीं। सर फिलिफ सिडनीकी बात तो हमारा हरएक विद्यार्थी (तालिब-इल्म) जानता है। वह लड़ाईके मैदान पर मौतकी राह देखते पड़े थे। मरते वक़्त उन्हें प्यास लगी। ज्यों ही पानीका प्याला मुँहसे लगानेको हुए, पास ही पड़े हुए दूसरे एक सिपाहीने 'पानी, पानी'की पुकार मचाई। अपने मुक़ाबले अपने भाईकी ज़रूरत ज़्यादा है, यह देखकर सर फिलिफ सिडनीने अपना प्याला उसे दे दिया। एक भाई भागवतके नवें स्कन्धकी ऐसी ही एक कहानीकी तरफ़ हमारा ध्यान खींचते हैं। उसमें राजा रन्तिदेवका ज़िक्र है। वे लिखते हैं:

"श्रीमद्भागवत महाकाव्यके नवें स्कन्धमें राजा रन्तिदेवकी जो कहानी कही गई है वह आपको और आपका 'हरिजन' पढ़नेवालोंको दिलचस्प मालूम होगी, क्योंकि अनाजकी हमारी मौजूदा तंगीके ख़यालसे वह बहुत ही नसीहत-आमेज़ है।

वियद्वित्तस्य ददतो लब्धं-लब्धं बुभुक्षतः।
निष्किञ्चनस्य धीरस्य सकुटुम्बस्य सीदतः॥

राजा रन्तिदेव अपने पासका सब कुछ ज़रूरतमन्दोंको दे डालता था, और इसकी वजहसे उसके घरके लोगोंको भूखों मरना पड़े, तो उसकी भी वह परवाह नहीं करता था।

व्यतीयुरष्टचत्वारिंशद्अहान्यपिबतः किल।
घृतपायससंयावं तोयं प्रातरुपस्थितम्॥
कृच्छ्रप्राप्तकुटुम्बस्य क्षुत्तृड्भ्यां जातवेपथोः।
अतिथिर्ब्राह्मणः काले भोक्तुकामस्य चागमत्॥
तस्मै संव्यभजत् सोऽन्नमादृत्य श्रद्धयान्वितः।
हरिं सर्वत्र संपश्यन् स भुक्त्वा प्रययौ द्विजः॥

उसने बिना पानीके ४८ दिन बिताये। एक दिन उसके सामने घी, पायस और पानी रक्खा गया। जिस वक़्त वह खानेकी तैयारी कर रहा था, उसी वक़्त एक भूखा-प्यासा ब्राह्मण उसके पास आ पहुँचा। यह समझकर कि ईश्वर सब किसीमें रहता है, रन्तिदेवने ब्राह्मणको थोड़ा खाना दिया और पानी पिलाया।

अथान्यो भोक्ष्यमाणस्य विभक्तस्य महीपतेः।
विभक्तं व्यभजत् तस्मै वृषलाय हरिं स्मरन्॥

इसके बाद जो कुछ बच रहा था, रन्तिदेव उसे खानेकी तैयारीमें था कि इतनेमें एक शूद्र खाना माँगता हुआ आ पहुँचा; इसलिए उसने बचे हुए में से थोड़ा खाना उसको दे दिया।

याते शूद्रे तमन्योऽगाद्अतिथिः श्वभिरावृतः।
राजन् मे दीयतामन्नं सगणाय बुभुक्षते॥
स आदृत्यावशिष्टं यद्बहुमानपुरस्कृतम्।
तच्च दत्वा नमश्चक्रे श्वभ्यः श्वपतये विभुः॥

इसके बाद एक कुत्तोंवाला अतिथि (मेहमान) आ पहुँचा, और खाना माँगता हुआ खड़ा रहा। रन्तिदेवने उसकी माँग पूरी की। उसे और उसके कुत्तोंको खिलाया।

पानीयमात्रमुच्छेषं तच्चैकपरितर्पणम्।
पास्यतः पुल्कसोऽभ्यागाद्अपो देह्यशुभस्य मे॥
न कामयेऽहं गतिमीश्वरात्पराम् अष्टर्द्धियुक्तामपुनर्भवं वा।
आर्त्तिं प्रपद्येऽखिलदेहभाजाम् अन्तःस्थितो येन भवन्त्यदुःखाः॥

फिर तो एक आदमीकी प्यास बुझने जितना पानी ही बच रहा। इतनेमें एक चाण्डालने आकर कहा: 'मैं प्यासा हूँ, मुझे पानी दो।' रन्तिदेव बोले: 'मैं मोक्ष या सिद्धि नहीं चाहता। मेरी दिली इच्छा यह है कि मुझे ख़ुद कितनी ही तकलीफ़ क्यों न उठानी पड़े, तो भी मैं दुःखियोंके दुःख दूर करूँ।'

क्षुत्तृट्श्रमो गात्र परिश्रमश्च दैन्यं क्लमः शोकविषादमोहाः।
सर्वे निवृत्ताः कृपणस्य जन्तोः जिजीविषोः जीवजलार्पणान्मे॥

रन्तिदेवने चाण्डालसे कहा: 'भाई, तुझे पानी न मिला होता, तो तू मौतकी शरण जाता। इसलिए तू बचे और तेरी प्यास बुझे तो मेरी भी बुझी ही है।'

दिल्ली, ११–५–'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

हफ़्तेवार ख़त

फैलता साया

जब गांधीजी मसूरीके लिए रवाना हुए तो हिन्दुस्तानके बहुतसे शहरों पर मज़हबी फ़सादके बादल ज़्यादा घने हो रहे थे। इस वाहियात दंगा-फ़सादसे उनके मनपर बहुत बोझ पड़ता है। वह जानते हैं कि अक्सर या तो ये फ़साद बेईमान आदमी सीनाज़ोरीसे अपना काम निकालनेके लिए खड़े करते हैं, या जनता बेसमझ प्रोपेगैण्डेसे पागल होकर यह फ़साद बरपा कर देती है; और इसमें मारा जाता है बेचारा आम आदमी, जो इन बेईमान आदमियोंके धोखेमें आ जाता है, और असल लड़ाई करानेवाले सफ़ेदपोशीकी आड़में बचे रहते हैं।

एक अंग्रेज़ लेखक सन् १६७८–८०की 'पोपिश प्लॉट' (साज़िश)की खलबलीवाले ज़मानेका बयान करते हुए लिखता है कि उसके ज़मानेमें सैकड़ों पट्टे रोमन कैथोलिक लोगोंके खिलाफ़ मरते दमतक लड़नेको तैयार थे, लेकिन वे यह नहीं जानते थे कि पोप कौन है — आदमी है या घोड़ा? आजकल जो फ़िरक़ावाराना बलवे होते हैं, उनपर भी यही बात लागू होती है। गांधीजीका जो सन्देश (पैग़ाम) दिल्लीमें आखिरी दिन प्रार्थनाके बाद पढ़ा गया (क्योंकि वह उनका मौन दिन था), उसमें उन्होंने यह सवाल उठाया था कि जो आदमी ईश्वरकी हस्तीको सबसे ज़्यादा मानता है, हमेशा प्रार्थना करता है, राम-नाम रटता है, उसे ऐसे मौक़ोंपर क्या करना चाहिये? जवाब देते हुए उन्होंने लिखा था: "वह फ़सादकी सब जगहों पर नहीं जा सकेगा, लेकिन मनसे, वचन (लफ़्ज़)से और कर्म (फ़ेल)से फ़सादको अनुमोदन (ताईद) न देगा। अपनी नज़रके सामने होता हो, तो उसे रोकेगा। रोकते हुए मरे भी, लेकिन किसीको मारनेकी कोशिश तक न करे। मैंने कल ही कहा था कि शुद्ध (साफ़ और पाक) विचारकी गति (रफ़्तार) वचनसे बहुत ज़्यादा है। क्या आप इसे मानते हैं? और मानते हैं, तो क्या वैसा बरताव करेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसूरी

दिल्लीमें कड़ाकेकी धूप और आँधीने नाकों दम कर रक्खा था। मसूरीमें आकर ठण्डी और चीड़की .खुशबूसे लदी हवायें मिलीं। सड़कों और पगडण्डियों पर सायेदार दरख़्त हैं, पहाड़ियों और चट्टानों पर घने जंगल हैं। यह गांधीजीका इस पहाड़ पर तीसरी दफ़ा आना है। इससे अठारह साल पहले जब गांधीजी यहाँ आये थे, तब पूर्णस्वराज्य (मुकम्मल आज़ादी)का प्रस्ताव (क़रारदाद) लाहौर कांग्रेसमें पास किया गया था। आजकल वह बिड़ला हाउसमें ठहरे हुए हैं। उसके यहाँ हुई पहली प्रार्थनाके बाद उनकी जो तक़रीर (भाषण) हुई थी, उसमें उनके मनकी उदासी और वैराग टपकते थे, मानो वे अन्तर्मुख होकर अपनेसे पूछ रहे हों: मसूरी शौक़का घर है, यहाँ तेरा क्या काम है?

गांधीजी प्रार्थनाके बाद

उन्होंने कहा: "आज मसूरी आया हूँ। यह मेरी पहली यात्रा नहीं। पहले भी दो दफ़ा आ चुका हूँ। तब कांग्रेसके कामसे आया था, लेकिन आज सिर्फ़ अपने मतलबके लिए आया हूँ। आपको मालूम है कि आजकल तो मैं कांग्रेसका मेम्बर भी नहीं हूँ। उसका सेवक ज़रूर हूँ। ऐसे सेवक करोड़ों लोग हैं। उनको जनता जानती भी नहीं, और न वे चवन्नी ही देते हैं। सिर्फ़ अपनी शक्तिके मुताबिक़ सेवा करना जानते हैं। न नामकी इच्छा है, न इनामकी आशा। ऐसे लोग फिर कांग्रेसकी सेवा क्यों करते हैं? आज़ादी तो हरएकको चाहिये, लेकिन सब समझते नहीं कि आज़ादी कैसे लेनी है। उन्होंने सुन रक्खा है कि कांग्रेस एक बड़ी जमात है, जो ६० बरससे आज़ादीके लिए, सबकी आज़ादीके लिए, लड़ रही है। इसलिए करोड़ों लोग कांग्रेसके साथ रहते हैं, और जो सेवा उनसे बन पड़ती है, करते हैं। इन लोगोंके जैसा ही मैं भी एक सेवक हूँ। यह अलग बात है कि बड़ा होकर हूँ, नाम मशहूर हो गया है और बहुत जगह घूमा हूँ। मैंने अपने मनकी आजकी हालत आपको बताई है। मैं ऐसा एक सेवक अपने आपको मानता हूँ।

"यही वजह है कि मैंने यहाँकी कांग्रेसको लिखा तक नहीं, और न मैं किसी क़िस्मकी आशा उनसे रखता हूँ। यह अलग बात है कि वे मेरी सेवा कर रहे हैं। लेकिन मैं कोई आशा नहीं करता कि वे मेरा कुछ काम करें; जैसे कि मेरी रक्षा करना। मेरी रक्षा कौन कर सकता है? न कांग्रेस कर सकती है, न सल्तनत, न बिड़ला ब्रदर्स। मेरी रक्षा तो भगवान् ही कर सकता है। आपकी भी रक्षा भगवान् ही करता है। आदमी कहे कि वह किसीकी रक्षा करता है, तो ग़लत बात है। जिसको .खुद यह पता नहीं कि कल ज़िन्दा रहेगा या मर जायगा, वह किसीकी क्या रक्षा कर सकता है? ईश्वर चाहे तो हमारी रक्षा करे, और चाहे तो हमें मार डाले। असलमें वह मारकर भी हमारी रक्षा करता है। हर तरहसे वही रक्षा करनेवाला है, और कोई नहीं।"

मसूरीके अमीर और शौक़ीन लोगोंके मौज-शौक़का हाल उन्होंने पिछली बार भी सुना था। अबकी फिर सुना। हिमालयके दूसरे पहाड़ी मुक़ामोंकी तरह ही मसूरी भी ग़रीबोंके लिए नहीं है। वे बोले: "यहाँ ग़रीब हैं, लेकिन सिर्फ़ आपकी .गुलामी करनेके लिए, आपकी रिक्शा खींचनेके लिए। कोई बीमार हो और रिक्शामें बैठे तो और बात है। पर जब एक भला-चंगा आदमी रिक्शामें बैठता है, तो मुझे बुरा लगता है। आपको भी बुरा लगना चाहिये। हम क्यों किसीको बैल समझकर उसकी पीठपर सवार हों? मैं आपकी शिकायत नहीं करता। सिर्फ़ यह कहता हूँ कि ग़रीबोंके जीवनमें प्रवेश कीजिये, और जानिये कि हिन्दुस्तान क्या है?

"मैं चाहता हूँ कि राम-नाम मुझे पहाड़ों पर आनेसे भी बचाये। करोड़ों यहाँ थोड़े ही आ सकते हैं? वे बीमार भी हों, तो भी उन्हें तो मैदानमें ही जीना या मरना होता है।

"मैं यहाँ मौज-शौक़के लिए नहीं आया, सिर्फ़ शरीरकी मजबूरीसे आया हूँ। अगर आराम कर लिया, तो ज़्यादा काम कर सकूँगा। इसमें आप लोगोंका आशीर्वाद चाहता हूँ। आप मुझे आराम लेने दीजिये। कुछ काम तो रहता ही है। बाक़ी एकान्त (तनहाई)में ईश्वरका नाम लेना चाहता हूँ।"

ग़रीबोंके लिए जगह

गांधीजीने मामला यहीं रहने न दिया। दूसरे दिन फिर उसका ज़िक्र करते हुए बोले कि मसूरीमें एक ऐसी जगह होनी चाहिये, जहाँ ग़रीब आ सकें और पहाड़की आबहवाका फ़ायदा उठा सकें: "मैं जान-बूझकर हरिजन बना हूँ। मुझे ऐसी जगह रहना बहुत पसन्द आयेगा, जहाँ हरिजन भी आ सकें और आकर रह सकें। जो जन्मसे हरिजन है वह अपने वर्णको छोड़ सकता है, लेकिन जो आप हरिजन बना हो, वह उसे कैसे छोड़ सकता है? मैं तो बग़ैर झिझक सब सवर्णोंको कहता हूँ कि वे अतिशूद्र बन जायँ। तभी ऊँच-नीचका भाव मिट सकेगा। और अगर यह नहीं मिटा, तो हिन्दू धर्मका नाश हो जायगा।" अगर मसूरीमें कोई ऐसी जगह हो, जहाँ हरिजन भी बिना रोक-टोकके आ सकें, तो गांधीजीने कहा कि वे वहाँ रहना पसन्द करेंगे। पंचगनीमें भी उन्होंने यही सुझाया था। वहाँके लोग इस क़िस्मकी जगह बनानेकी सलाह कर रहे हैं। उन्होंने कहा: "आप लोगोंको सुनकर .खुशी होगी कि इसी कामके लिए मसूरीके लोगोंकी भी एक कमेटी बनानेकी बात चल रही है।"

रंगमें भंग

लेकिन इससे भी ज़्यादा फ़िक्र गांधीजीको सर पर खड़े कालकी लग रही है। उन्होंने मसूरीके शौक़ीन लोगोंसे कहा कि उनकी ज़ियाफ़त पर मौतका साया मँडरा रहा है। वे उसका ध्यान करें। वे बोले कि सच्ची बात तो यह है कि काल आगे ही मुल्कमें है, करोड़ोंको पूरा खानेको नहीं मिलता। अमीर लोग शायद पैसा दे सकें, लेकिन पैसेसे किसीका पेट थोड़े ही भरता है। जितना अनाज चाहिये उतना मुल्कमें नहीं है। जो है भी, वह भी आसानीसे भूखे इलाक़ोंमें नहीं भेजा जा सकता। गवर्नमेण्टका इन्तज़ाम कितना निकम्मा है! फिर कई ऐसी जगहें हैं, जहाँ .खूराकके ढेर पड़े हैं, पर लोग भूखों मर रहे हैं। क्योंकि हमारे अपने लोग ही बेईमान और लालची हो गये हैं। जो लोग अमीर हैं और किसी-न-किसी तरह अपनी ज़रूरतें हासिल कर लेते हैं, गांधीजीने उनसे अपील की कि वे जितना अनाज बचा सकें, बचायें। "अगर लोग सहयोग करें और काला बाज़ार, रिश्वत और बेईमानी खत्म हो जाय, तो शायद इस मुश्किलको पार करनेके लिए मुल्कमें काफ़ी अनाज निकल आये। कुछ लोग हैं, जो इस बातको नहीं मानेंगे। वे कहते हैं कि अगर बाहरसे अनाज न आया, तो हम भूख और मौतसे नहीं बच सकेंगे। मेरी राय इससे अलग है। अव्वल तो मालको हिन्दुस्तान पहुँचनेमें कुछ देर लगेगी और फिर बन्दरगाहसे ज़रूरतकी जगह तक पहुँचानेमें तक़रीबन् ६ हफ़्ते लग जायँगे। इसका इलाज सिर्फ़ एक ही है कि आपसमें सहयोग हो और बेईमानी खत्म हो जाय। मसूरीके अमीर लोगों को चाहिये कि जितना अनाज वे भूखोंके लिए बचा सकें, बचायें। अगर सब सिर्फ़ उतना ही खायँ, जितना सेहतके लिए ज़रूरी है, तो मुल्क इन सब मुश्किलोंको पार कर सकेगा।"

मसूरी, १–६–'४६

('हरिजन' से)

प्यारेलाल

नई किताबें

	मूल्य	डाकखर्च
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधरी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०–६–०	०–१–०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१–८–०	०–५–०
एक धर्मयुद्ध — (महादेवभाई हरिभाई देसाई)	०–८–०	०–२–०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२–०–०	०–६–०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१–४–०	०–५–०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़रूरतसे ज़्यादा तारीफ़

एक फ़ौजी अफ़सर अपने एक दोस्तको लिखते हैं :

"...कितने अफ़सोसकी बात है कि उन तमाम मुल्कोंमें, जहाँ प्रजा-राज है, राजनीति जाननेवाले फ़ौजके बारेमें इतना कम जानते हैं, और उसमें इतना कम रस लेते हैं! फ़ौजसे वे बहुत-कुछ सीख सकते हैं। उन्हें कम-से-कम यह तो सोचना चाहिये कि दूसरे सरकारी नौकरोंकी बनिस्बत सिपाही क्यों अपनी नौकरीसे इतनी मुहब्बत और नमकहलाली रखता है, हालाँकि फ़ौजमें दूसरी नौकरियोंसे कहीं ज़्यादा तकलीफ़, खतरा और मुसीबत उठानी पड़ती है? आपके पास एक शानदार फ़ौज है, और जब आपके सबसे लायक आदमी काफ़ी तादादमें इसके अफ़सर बनेंगे, तो वह और भी शानदार हो जायगी। अगर आप लोग ठीक क़िस्मके अफ़सर ढूँढ़ सकें, तो आपको इसके बारेमें किसी क़िस्मकी फ़िक्र करनेकी ज़रूरत नहीं होगी। मुक़ाबलेमें यह फ़ौज किसीसे कम नहीं होगी। पर अगर ग़लत क़िस्मके अफ़सर रख लिये या राजनीतिको इसमें घुसने दिया, तो भारी नुक़सान उठाना पड़ेगा। अभी बहुत बरसों तक हिन्दुस्तानको काफ़ी मुश्किलोंमेंसे गुज़रना है। मुझे यक़ीन है कि आपकी फ़ौज ही इस आड़े वक़्तमें आपके काम आयेगी। ख़ून भी कम-से-कम बहेगा। पर शर्त यह है कि इसके लिए ठीक क़िस्मके अफ़सर ढूँढ़े जायँ और सियासी (राजनीतिक) और मज़हबी झगड़े इससे अलग रक्खे जायँ।"

अगर यह ठीक है कि तमाम प्रजा-राजवाले मुल्कोंमें राजनीतिमें हिस्सा लेनेवाले फ़ौजमें दिलचस्पी नहीं लेते, तो कोई अफ़सोसकी बात नहीं। अफ़सोसकी बात तो यह है कि वे फ़ौजमें ग़लत क़िस्मकी दिलचस्पी लेते हैं। वे समझते हैं कि फ़ौज उन्हें बचाती है, प्रजा-राजको बचाती है, दौलत लाती है, दूसरे मुल्कों पर अपना राज जमाती है, और मुल्कमें फ़सादके वक़्त हुकूमतको अपने सहारे खड़ा रखती है। क्या ही अच्छा हो कि लोक-राज किसी भी चीज़के लिए फ़ौजका सहारा न ले, ताकि वह सच्चा लोक-राज हो सके!

आखिर जिस फ़ौजकी वकालत ऊपर की गई है, उसने हिन्दुस्तानके लिए यहाँ क्या किया है? मुझे डर है कि किसी मानीमें भी उसने हिन्दुस्तानको फ़ायदा नहीं पहुँचाया। उसने बेचारे लाखों-करोड़ों निहत्थोंको ग़ुलामीमें रक्खा है। उन्हें कौड़ी-कौड़ीका मुहताज बना दिया है। उसका अंग्रेज़ी हिस्सा जितनी जल्दी यहाँसे वापस भेज दिया जाय और किसी ज़्यादा अच्छे काममें लगा दिया जाय, उतना ही हिन्दुस्तान, इंग्लैण्ड और दुनियाका भला होगा। उसके हिन्दुस्तानी हिस्सेका दिमाग़ भी जितनी जल्दी ढाने-मिटानेके कामसे हटाकर बनानेके काममें लगाया जाय, उतना ही प्रजा-राजके लिए मुफ़ीद होगा। जो लोक-राज फ़ौजके सहारे ही जी सके, वह एक निकम्मी चीज़ है। फ़ौजी ताक़त मनके विकासको यानी नशोनुमाको रोकती है। मनुष्यकी आत्मा घुट जाती है। इस 'क़ाबिल फ़ौज' ने इतने बरसोंसे मुल्कमें विदेशी हुकूमत क़ायम रक्खी है। इसकी मेहरबानीसे आज यह हालत हो गई है कि मिशनकी कोशिशोंके होते हुए भी हिन्दुस्तानको शायद एक छोटी या लम्बी घरेलू लड़ाईमेंसे गुज़रना पड़े; उसका कड़ुआ तजरबा ही शायद हमें हथियारबन्द फ़ौजके मोहसे छुड़ा सके। फ़ौजमें हुक्म या नियमके मुताबिक़ चलनेकी जो ख़ूबी है, वह तो समाजके हर हिस्सेमें होनी चाहिये। इसको निकाल दें, तो फ़ौज आदमीको हैवान बनानेके सिवा और कुछ नहीं सिखाती। अगर आज़ाद हिन्दुस्तानको भी आजके बराबर ही फ़ौजी खर्च उठाना पड़ा, तो भूखों मरनेवाले करोड़ोंको उस आज़ादीसे कोई फ़ायदा न पहुँचेगा।

मसूरी, ३०-५-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

वज़ीरोंकी तनख्वाहें

थोड़े दिन हुए मैंने 'हरिजन' में दबी क़लमसे एक पैरा मंत्रियोंकी तनख्वाहके बढ़ानेके बारेमें लिखा था, उसकी मुझे काफ़ी क़ीमत अदा करनी पड़ी है। बहुत लम्बे-लम्बे खत पढ़ने पड़ते हैं, जिनमें मेरी एहतियात पर अफ़सोस ज़ाहिर किया जाता है, और मुझे समझाया जाता है कि मैं अपनी राय बदल दूँ। मंत्रियोंकी तनख्वाहें आगे ही बहुत ज़्यादा हैं। इनको और भी बढ़ा देना कहाँ तक ठीक है, जब कि ग़रीब चपरासियों और क्लर्कोंको सिर्फ़ इतनी तरक़्क़ी मिली है कि जिसमें उनका गुज़ारा भी नहीं हो पाता। मैंने अपने नोटको फिर पढ़ा है, और मेरा दावा है कि जो कुछ लेखक चाहते हैं, वह सब उस छोटेसे नोटमें है। पर कोई ग़लतफ़हमी न हो, इसलिए मतलब खोलकर बयान करता हूँ।

मुझे ताना मिला है कि मैंने कराँचीवाले प्रस्ताव (क़रारदाद) पर सोचा ही नहीं। वज़ीरोंको जो थोड़ी तनख्वाहें लेनी चाहियें, सो सिर्फ़ इसलिए नहीं कि कांग्रेसने एक प्रस्ताव करके हुक्म दिया है, बल्कि उसके लिए इससे बहुत ऊँचे दरजेके कारण हैं। खैर कुछ भी हो, जहाँ तक मैं जानता हूँ, कांग्रेसने उस प्रस्तावको कभी बदला नहीं और वह आज भी उतना ही लागू होता है, जितना कि पास होनेके वक़्त होता था।

मैं यह नहीं कहता कि जो तनख्वाहें बढ़ाई गई हैं, वह ठीक हुआ है। लेकिन मैं वज़ीरोंकी बात सुने बग़ैर इसको बुरा-भला नहीं कह सकता। टीका (नुक्ताचीनी) करनेवालोंको यह समझ लेना चाहिये कि मेरा उनपर, या अपने सिवा किसी और पर भी, कोई क़ाबू नहीं। न ही मैं कार्यकारिणी-समिति (वर्किंग कमेटी) के सब जलसोंमें होता हूँ। जब सदर (सभापति) चाहते हैं तभी जाता हूँ। मैं तो सिर्फ़ अपनी राय दे सकता हूँ, जो कुछ भी उसकी क़ीमत हो। और उसकी क़ीमत तभी हो सकती है, जब सोच-विचार कर हक़ीक़त पर नींव रखकर राय दी जाय।

अमीर और ग़रीबमें, ऊँची नौकरियों और छोटी नौकरियोंमें भयानक फ़र्क़का सवाल एक अलग विषय (मज़मून) है। इसमें बहुत सोच-विचारकी ज़रूरत है, और तबदीली जड़में करनी पड़ेगी। थोड़े वज़ीरों और उनके सिक्तरोंकी तनख्वाहोंके सिलसिलेमें लगे हाथ इसका निपटारा नहीं हो सकता। दोनों चीज़ोंका अपने-अपने महत्त्व (अहमियत) के मुताबिक़ फ़ैसला होना चाहिये। वज़ीरोंकी तनख्वाहोंका सवाल तो वज़ीर आप ही हल कर सकते हैं। दूसरा प्रश्न तो इससे बहुत लम्बा-चौड़ा है, और उसमें बहुत बारीकीसे जाँच-पड़ताल करनेकी ज़रूरत होगी। मैं तो यह माननेको हमेशा तैयार हूँ कि वज़ीरोंको फ़ौरन ही अपने-अपने सूबेमें इस कामको अपने हाथमें लेना चाहिये और सबसे पहले नीची नौकरीवालोंकी तनख्वाहों पर सोच-विचार करके, जहाँ ज़रूरी हो, तनख्वाहें बढ़ा दी जानी चाहिये। मसूरी, ३१-५-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

आज़ाद हिन्द फ़ौजवालोंकी उलझन ... प्यारेलाल
सवालनामा ... गांधीजी
आम रिहाइयाँ ... गांधीजी
कुछ और सुझाव ... गांधीजी
धर्म और अधर्मका विवेक ... गांधीजी
खादीके बारेमें संवाद ... गांधीजी
विश्वास-चिकित्सा और राम-नाम ... गांधीजी
इनसानकी सच्ची सेवा ... प्यारेलाल
हफ़्तेवार खत ... प्यारेलाल
ज़रूरतसे ज़्यादा तारीफ़ ... गांधीजी
वज़ीरोंकी तनख्वाहें ... गांधीजी
टिप्पणी
उरुळीकांचन ... मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी

युरोपियन वोट

रजि० नं० बी, ४४४६

। और हक़को बेच डाले, तो राजनीतिक हत्या या .खुदकुशी करनेकी बात होगी। उसे यह हक़ मिला है । इसी तरह वह ने आज़माये हुए और वफ़ादार दोस्तोंका

मरकज़ी (केन्द्रीय) क़ानूना समान एक विद मक़सद (उद्देश्य) यह है कि हमारे देशमें सिक्के (दशमलव) पर हो ।

इस युनिवर्सिटीके खयालमें यह एक पीछे हिन्दुस्तानमें सिक्के और ...

१६ पृष्ठ

दो आना

भाग १० सम्पादक : प्यारेलाल अंक २०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २३ जून, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हफ़्तेवार ख़त

आशायें और डर

मसूरीमें कुछ दिन आराम करनेके बाद काफ़ी ताज़ा होकर पिछले सनीचरको आधी रात बीतने पर गांधीजी मोटरसे दिल्ली वापस आये और आकर उन्होंने फिर अपना काम हाथमें लिया। तबसे जो दिन बीते हैं, उनमें आशायें और निराशायें धूप-छाँवकी तरह लोगोंके दिलोंमें आती-जाती रही हैं । हर शामको लोग बहुत उत्सुकता और शौक़से खबर सुननेकी उम्मीद लिये प्रार्थनामें आते हैं। गांधीजी उन्हें धीरज और श्रद्धा या एतक़ाद रखनेकी सलाह दे रहे हैं: "शायद आपके दिलमें यह खयाल होगा कि मैं कुछ सुनाऊँगा। मैं भी चाहता तो हूँ कि आपको कुछ सुना दूँ । लेकिन जब तक रसोई पक न जाय, रसोइया अपने मेहमानोंको क्या परोस सकता है ? अभी रसोई पकी नहीं, कैसे परोस दूँ ? इतना कहूँगा कि हम आखिरी वक़्त तक आशा न छोड़ें । अगर आखिरमें कुछ न मिला, तो भी समझना चाहिये कि उसमें ग़लती हमारी अपनी है। दूसरोंको ग़लत कहकर आदमी अच्छा नहीं बन सकता । अपनी ग़लती माननेसे आदमी अच्छा बनता है । अगर मैं मान लूँ कि मैं टेढ़ा हूँ, तो सीधा हो जाऊँगा । और, अगर मैं यह समझूँ कि मैं सीधा हूँ और सारा जग टेढ़ा है, तो वह सिर्फ़ झूठा घमण्ड होगा। इसलिए मैं कहता हूँ कि अगर कुछ न मिला, तो हमें समझना चाहिये कि हम नालायक़ हैं। इतने बरसों से हम अहिंसक तरीक़ेसे लड़ते रहे हैं, लेकिन इतनी शक्ति पैदा नहीं कर पाये कि अंग्रेज़ोंको सीधा कर सकें ।

"एक और बात आपसे यह कह दूँ कि हम हिन्दू और मुसलमान लड़ते ही आये हैं । अगर अब भी हम अंग्रेज़ोंकी तरफ़ ही देखें और चाहें कि वे हमें एक-दूसरेसे मिला दें, तो यह हमारी इन्सानियत पर एक बड़ा धब्बा होगा । हिन्दू क्या? मुसलमान क्या? यह फ़र्क़ क्यों? हम ईश्वरसे ऐसी प्रार्थना करें, जिससे हम दोनों समझ बूझें और एक हो जायँ । अगर ऐसा हो गया, तो अंग्रेज़ोंके साथ आसानीसे फ़ैसला हो जायगा । यह ख़याल रखिये कि यह वही आदमी कह रहा है, जिसने कहा था कि जब तक अंग्रेज यहाँसे न जायँ, तब तक दोनोंका आपसमें मिलना मुश्किल है । यह सिर्फ़ उसकी अपनी कमज़ोरीका ऐलान था । मेरी समझमें नहीं आता कि हम इतने पागल, इतने हैवान, क्यों बन गये हैं? लेकिन हम दीवाने न हों । भगवान्‌की ओर देखें । जो होना हो, सो हो । अगर भगवान्‌ की मदद हुई तो सब ख़ैर-ही-ख़ैर है ।"

मौनके दिन हिन्दुस्तानीमें लिखा हुआ गांधीजीका जो सन्देश पढ़ा गया, उसमें उन्होंने इस बातको और भी खोलकर बयान किया: "आज भी मैं आपको कुछ सुना नहीं सकता । जैसा कि मैंने कल कहा था, कुछ भी क्यों न हो, अगर हम मान लें कि जो कुछ होता है, सब ईश्वरका किया ही होता है, तो हमारे लिए घबरानेका कोई कारण नहीं हो सकता । शर्त यह है कि हम जो कुछ करें, ईश्वरको बीचमें रखकर करें । वही दुनियाको चलाता है, और हमारे कामोंके मुताबिक़ हमें उनका नतीजा भी मिलता है । इसलिए हमारा फ़र्ज़ है कि उसके क़ानूनकी पाबन्दी करें और नतीजेके बारेमें बे-फ़िकर रहें ।"

दूसरे दिन सिलसिला जारी रखते हुए गांधीजीने कहा: "तीनों फ़रीक़ (पक्ष) कोशिश कर रहे हैं कि बात न टूटे। मिशन यहाँ विलायतसे आया है। अगर यह सब मामला तय न हुआ, तो उसकी सारी आबरू धूलमें मिल जायगी। कांग्रेस और लीग भी अपनी-अपनी निगाहसे कोशिश कर रही हैं। और क्यों न करें? क्योंकि पहुँचना तो सबको एक ही जगह है, यानी हिन्दुस्तानकी आज़ादी ही सबका मक़सद है । अगर किसीका यह मक़सद या ध्येय नहीं, तो उसके साथ हमें लड़ना है । और अगर हरएकका मक़सद एक नहीं है, तो फिर फ़ैसला क्या हो सकता है? पर सबका दावा इससे उलटा है । इसलिए हम आशा रखें । जब तक साँस तब तक आस । बचपन ही से मेरी यह आदत रही है ।

"बहुत धीरजकी ज़रूरत है । क्योंकि मामला पेचीदा है । आमके एक असल पेड़को लगानेमें कितनी मेहनत पड़ती है? फिर यह तो करोड़ों गूँगोंकी आज़ादीका सवाल है । उनके खाने और पहननेका प्रश्न है । तोड़ना आसान है, बनाना मुश्किल है ।

"कांग्रेस पूरी कोशिश कर रही है कि बात न टूटे । लेकिन इतने पर भी टूट ही गई, तो मैं सीधे-सीधा आपसे कह दूँगा । और कहूँगा कि बात बनती, तो भी बनानेवाला ईश्वर ही था और टूट गई है, तो भी उसीकी तोड़ी टूटी है । इसमें घबराना क्या? निराश होना क्या? अगर हम ईश्वरके भरोसे छोड़ दें, तो सब ठीक ही होगा ।"

रास्तेकी रुकावटें

लेकिन गांधीजीके आशावाद और श्रद्धा (एतक़ाद)की बहुत जल्दी एक कड़ी परीक्षा (इम्तहान) हुई । एक दोस्तसे यों ही बातचीत करते हुए उन्होंने कहा: "एक बेनाम डरने मुझे घेर लिया है । ऐसा लगता है, दालमें कहीं-न-कहीं कुछ काला ज़रूर है । इसने मेरी शक्तिको पंगु (अपंग) बना दिया है । लेकिन इस शकका मेरे पास कोई सबूत नहीं । इसलिए तुमसे कहकर तुम्हारे मनमें मैल क्यों पैदा करूँ?" युरोपियनोंके इस ऐलानने कि वे विधान (आईन) बनानेमें अपने हक़का उपयोग (इस्तेमाल) करेंगे, गांधीजीको पहली दफ़ा खबरदार किया कि खतरा आ रहा है। क्योंकि यह हक़ उनका है ही नहीं।

गांधीजीने इस बातको इसी अंकमें दूसरी जगह .खूब खोलकर समझाया है । विधान बनानेवाली सभाके मेम्बर वे लोग होंगे, जिन्हें सूबोंकी एसेम्ब्लियाँ चुनेंगी । हिन्दुस्तानकी सरकारके १९३५ के ऍक्टके, मुताबिक एसेम्बिलयोंमें कुछ जगहें युरोपियनोंको मिली हैं । मसलन्, सिर्फ़ बंगालमें ही २५ युरोपियनोंका ठोस दल है । आसाममें ९ हैं । ये विदेशी हैं, और हाकिम क़ौम (शासक वर्ग)के हैं । इसलिए विधान बनानेवाली सभामें इनका कोई हिस्सा नहीं हो सकता — न वोट देनेमें, और न उम्मीदवारकी हैसियतसे खड़े होनेमें । मिशनकी तजवीज़में यह साफ़-साफ़ कहा गया है कि हिन्दुस्तानका विधान हिन्दुस्तानी ही बनायेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वकील दोस्त कहते हैं कि अगर युरोपियन लोग विधान बनानेवाली सभामें आयेंगे, तो हम मामला अदालतमें ले जायेंगे और
साबित कर देंगे कि स॰ कितने अफ़सोसकी बात है कि उन तमाम
हक़ नहीं । मैं मानता प्रजा-राज है, राजनीति जाननेवाले फ़ौजके बारेमें
हम उन्हें कचहरी तक नते हैं, और उसमें इतना कम रस लेते हैं !
यह प्रार्थना करूँगा कि त-कुछ सीख सकते हैं । उन्हें कम-से-कम यह
डालें और अपनी टाँग अड़ाकर कैबिनेट मिशनके काम पर पानी
न फेरें । मैं उनसे कहूँगा : 'आप शराफ़त दिखाइये । आज तक आपने हिन्दुस्तानको लूटा है । आप कहते हैं, आपने हिन्दुस्तानका भला किया है, तो ईश्वर आपका भला करे ! वह तो बड़ा रहम करनेवाला, रहमान और रहीम है । दयाका भण्डार और सागर है । जो कुछ आपने किया, आपको मुबारक़ हो । अब दया करके यह ऐलान कर दीजिये कि जितनी आपसे बन पड़ेगी, आप क़ौमी ज़हरको बढ़ानेकी नहीं, बल्कि कम करनेकी ही कोशिश करेंगे, और हिन्दुस्तानियोंमें फूट नहीं डालेंगे । आज तक आपने फूट डालनेका ही काम किया है । बंगालमें किया है, आसाममें किया है । लेकिन अब आपको चाहिये कि ऐसा न करें । ज़माना बदल रहा है । उसे पहचानिये और शराफ़त दिखाइये । दुनियामें एक ही धर्म है । .ख़ुदाई धर्म । आप उसी .ख़ुदाको सामने रखकर विधान बनानेवाली सभामें न जाइये ।"

आख़िरमें गांधीजी ने कहा कि यह देखना कैबिनेट मिशनका और वाइसरायका फ़र्ज़ है कि ये विदेशी लोग किसी तरह चुनाव पर असर न डाल सकें ।

तजरबेमें बच्चा मर रहा है

आज़ाद हिन्द फ़ौजवालोंने देखा कि जब वे आज़ाद हुए और उन्हें असलियतसे वास्ता पड़ा, तो उनका सारा स्वभाव और मानस (ज़हनियत) बदल गया । आज़ाद हिन्द फ़ौजमें हिन्दू-मुस्लिम सवाल ही मिट गया था । कैबिनेट मिशनकी नाकाम मेहनतें इसकी उलटी मिसाल हैं । कांग्रेस और मुस्लिम लीगको मिलानेके लिए वह सुबहसे लेकर शाम तक कोशिश करते रहे हैं । लेकिन वह काम ही ऐसा है कि कभी बन नहीं सकता । गांधीजीने कहा : "मैंने अख़बारोंमें लिखा था कि जब तक तीसरी ताक़त यहाँ है, हिन्दू-मुसलमानका मेल हो ही नहीं सकता । . . . .ग़ुलाम और मालिक दोनोंकी हालत .क़ुदरतके विरुद्ध (ख़िलाफ़) होती है । वे न .क़ुदरती तौर पर सोच सकते हैं, न काम कर सकते हैं ।

"माँको मालूम भी हो जाय कि उसका बच्चा मरनेवाला है, तो भी वह उसका गला नहीं घोट देती । आख़िरी दम तक हकीम या वैदकी दवा करती रहती है । उसका जतन चालू रहता है । इसी तरह हमारा भी धर्म है कि कोशिश करते चले जायँ । मिशन भी कांग्रेस और लीगको मिलानेकी पूरी कोशिश कर रहा है । मिशनवाले मौलाना साहबके पास जाते हैं । जिना साहबके पास जाते हैं । युरोपियनोंको सीधे रास्ते लानेकी कोशिश करते हैं । युरोपियन कहते हैं, वे अपने हक़का इस्तेमाल करेंगे, जो असलमें उनका है ही नहीं । लेकिन हाँ, अगर कांग्रेस और लीग दोनों उनको मनायें, तो मुमकिन है, वे उस पर ग़ौर करें ।" गांधीजीने बात जारी रखते हुए कहा : "उन्हें यह समझ लेना चाहिये कि कोई उनके पास भीख माँगने नहीं जायगा । वकीलोंकी रायके मुताबिक़, कैबिनेट मिशनके ऐलानमें विधान बनानेवाली सभामें उनके लिए कोई जगह नहीं है ।"

आख़िरमें उन्होंने कहा : "किसी दूसरे मुल्कको .ग़ुलाम बनाना .क़ुदरती क़ानूनके ख़िलाफ़ है । हिन्दुस्तानियोंके कन्धेसे उतरनेके लिए नेक इरादे ही काफ़ी नहीं । पक्के इरादेके साथ कोशिश करनेकी ज़रूरत है । वे (मिशनवाले) पूरी कोशिश कर रहे हैं । कम-से-कम हम इतना समझ लें कि धोखा देनेकी उनकी नीयत नहीं । काम ही कठिन है । कांग्रेस, लीग और मिशन जिन हालतोंमें काम कर रहे हैं, वे .क़ुदरतके ख़िलाफ़ हैं ।"

वाइसरायका ऐलान

१६ जूनको वाइसरायने ऐलान किया कि उन्होंने १४ आदमियोंको
थोड़े दिन हुए मैंने 'हरिजन' में
तनख़्वाहके बढ़ानेके बारेमें लिखा था, वाइसरायकी कैबिनेट बनायें ।
करनी पड़ी है । बहुत लम्बे-लम्बे "उन्होंने (मिशनने) दोनों
एहतियात पर अफ़सोस ज़ाहिर कि[…]रा की, लेकिन कामयाब नहीं
जाता है कि मैं अपनी राय बद[…]ना पड़ा । उन्हें नाकाम तो
होना ही था, क्योंकि उन्होंने सीधा रास्ता नहीं पकड़ा । मैं उन्हें दोष नहीं देता । उन्हें पता ही नहीं । अगर मैं हिन्दुस्तानी बोली बोलूँ और वे अंग्रेज़ी बोली बोलें, और फिर वे मुझे न समझें, तो उनका कसूर क्या ? वे मेरी ज़बान जानते ही नहीं । हमारी रस्म पहचानते ही नहीं ।

"उन्हें चाहिये था कि मौलाना साहबसे पूछते, जिना साहबसे पूछते और उनमेंसे किसी एकको भी सरकार बनानेके लिए कहते । लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया । एक तीसरी ही चीज़ निकाली । अपने हुक्मसे एक चीज़ लादनेकी कोशिश की है । इसका उन्हें हक़ नहीं है । जो नाहक़की बात करता है, वह कसूर करता है ।" हो सकता है कि ऐसी बेमेल चीज़ बने कि भक्-से उड़ जाय । लेकिन हर तसवीरके दो पहलू होते हैं । आप उसका .ख़ूबसूरत पहलू भी देख सकते हैं और बदसूरत पहलू भी । गांधीजीने कहा कि वे तो किसी चीज़का अच्छा पहलू देखनेमें विश्वास रखते हैं और उनकी रायमें दूसरोंको भी ऐसा ही करना चाहिये । बोले : "अगर हम इस तरह देखें तो वाइसरायके ऐलानमें जो दोष मालूम होते हैं, वे असलमें उसकी .ख़ूबियाँ बन जायँगे ।" लेकिन गांधीजीने कहा, "हो सकता है कि इस ऐलानका कोई चमकदार पहलू ही न हो । उस हालतमें मिशनकी कलई खुल जायगी । लोग विश्वास करनेसे कुछ खोयेंगे नहीं ।" उन्होंने वर्किंग कमेटीको कुछ कसौटियाँ बताई हैं, जिन पर ऐलानको कसना चाहिये । गांधीजीकी पक्की राय है कि अगर वे शर्तें पूरी न हों, तो कांग्रेसको बातचीत तोड़ देनी चाहिये । गांधीजीने कहा : "लेकिन मैं नहीं कह सकता कि आया वे शर्तें दोनों फ़रीक़ों (कांग्रेस और मिशन)को पसन्द होंगी या नहीं । इतना मैं बेझिझक कह सकता हूँ कि कांग्रेसने कभी ढील डालनेकी कोशिश नहीं की । कांग्रेसको करोड़ों हिन्दुस्तानियोंका खयाल करना पड़ता है । वह बहुत-सी जमातोंकी नुमाइन्दा है । उसे एक-एक गिरोहका खयाल रखना पड़ता है । अगर वह सबको भूल जायगी, तो वे गिरोह भी कहेंगे कि हमें कांग्रेससे क्या ? मौलाना साहब वाइसरायकी तरह कोई हुक्म थोड़े ही दे सकते हैं ?

"पर आपको मिशनके साथ भी धीरज नहीं खोनी चाहिये । यह तो अच्छी बात है कि उन्होंने यहाँसे चले जानेका पक्का इरादा कर लिया है । फिर, वाइसरायका जो ऐलान है, वह भी निमंत्रण है, हुक्म नहीं । अगर हम क़बूल करें, तो जायँ, वरना आज़ाद हैं । मिशनके पहले ऐलानकी तरह यह भी हमें किसी तरह बाँधता नहीं ।

"जहाँ तक उनसे बन सकता है, वे कोशिश कर रहे हैं । लेकिन जो चीज़ सदियोंसे चली आई है, वह एकाएक निकल नहीं सकती । वे हम पर आज तक राज करते आये हैं । उसका उन्हें अधिकार नहीं था । हमने उन्हें सन् '४२में यहाँसे चले जानेको कहा था । लेकिन वे गये नहीं । वह हमारा गुनाह था । कमज़ोरी भी एक गुनाह है । .ग़ुलाम भी गुनहगार होता है, और उसका सरदार भी । लेकिन तो भी वे लोग सोच रहे हैं कि यहाँसे किस तरह जाना चाहिये । कोशिश कर रहे हैं । हमें उनपर विश्वास करना चाहिये । सिर्फ़ शक करनेसे काम नहीं चल सकता । हमें चाहिये कि सब मिलकर ईश्वरसे प्रार्थना करें कि वह सब फ़रीक़ों (पक्षों)को बुद्धि और दिलकी सफ़ाई दे ।"

कसौटी

जब यह लेख लिखा जा रहा है, कांग्रेस वर्किंग कमेटी अ[…] गांधीजीकी सुझाई हुई कसौटी पर विचार कर रही है । कांग्रेसने इन[…]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दावा किया है कि वह एक क़ौमी सभा है। अगर वह किसी सियासी (राजनीतिक) दाव-पेचके विचारसे सारे फ़रीक़ों और पार्टियोंकी नुमाइन्दगी करनेके अपने फ़र्ज़ और हक़को बेच डाले, तो राजनीतिक दृष्टिसे वह उसके लिए आत्महत्या या .खुदकुशी करनेकी बात होगी। लगातार ५० बरसकी सेवासे उसे यह हक़ मिला है। इसी तरह वह किसी सियासी फ़ायदेके लिए अपने आज़माये हुए और वफ़ादार दोस्तोंका साथ नहीं छोड़ सकती। इस तरह हाथ आये मौक़ेसे फ़ायदा उठानेकी नीति तो उसकी आत्माको खोखला बना देगी, और उसकी मौतका असली कारण होगी। क्या युधिष्ठिरने अपने कुत्तेको छोड़कर स्वर्गमें जानेसे इनकार नहीं कर दिया था? आत्माको बेचकर जगत्को पाना महंगा सौदा है।

इन सब बातों पर तो वर्किंग कमेटी विचार करेगी ही। लेकिन गांधीजी लोगोंको समझाते रहते हैं कि इस मौक़े पर उनका क्या फ़र्ज़ है। एक साथ मिलकर प्रार्थना करनेमें वे बहुत मानते हैं, इसलिए वे सबको एक साथ रामधुन गानेको कहते हैं। पर क्या लोग अपनी रोज़की ज़िन्दगीमें भी 'रामका काम करते हैं?' यह सवाल उनके मनमें उठा करता है। रामका नाम लेना और रावणका काम करना निकम्मी-से-निकम्मी चीज़ है। हम अपने आपको धोखा दे सकते हैं, दुनियाको धोखा दे सकते हैं, लेकिन रामको धोखा नहीं दे सकते। उन्होंने कहा: "आज पश्चिममें लोग नाम ईसामसीहका लेते हैं, मगर काम उसके उसूलोंके खिलाफ़ करते हैं। इसी तरह लोग इस्लाममें नाम .खुदाका लेते हैं और काम शैतानका करते हैं। यह बड़े दुःखकी बात है। जिन लोगोंका धर्म हमसे अलग है, हम उनसे डरते हैं। हम समझते हैं कि वे हमें मलियामेट कर देंगे। हम भूल जाते हैं कि अगर हमने ईश्वरका सहारा लिया, तो हमें कोई कुचल नहीं सकता। जो भजन आपने अभी सुना है, उसमें कहा गया है कि ईश्वरने पापियोंको भी तारा (बचाया) है। फिर अपने भक्तोंको बचानेकी तो वह और भी ज़्यादा कोशिश करेगा। लेकिन इसके लिए हमें रामका सच्चा भक्त बनना पड़ेगा।"

गांधीजीने बात जारी रखते हुए कहा: "अगर लोग ईश्वरका रास्ता अपनाते, तो आज दुनियामें रिश्वतका जो बाज़ार गर्म है, वह न होता, और लोगोंका .खून चूसकर जो नाजायज़ नफ़ा कमाया जा रहा है, वह न कमाया जाता। आज अमीर ज़्यादा अमीर बन रहे हैं और ग़रीब ज़्यादा ग़रीब। यह राम-राज्यकी निशानी नहीं, बल्कि शैतान, रावण या 'एण्टी-क्राइस्ट' के राजकी निशानी है।"

नई दिल्ली, १६-६-'४६

(हरिजन 'से)

प्यारेलाल

ग्राहक ध्यान दें

चालू हफ़्तेमें पता बदलवानेके लिए हमें उसकी इत्तिला यहाँ मंगलवार तक मिल जानी चाहिये। इस बारेमें खत लिखते समय अपना ग्राहक नम्बर ज़रूर लिखिये और याद रखिये कि एक महीनेमें एक बार पता नहीं बदला जा सकेगा।

छह महीनोंसे कमके लिए ग्राहक नहीं बनाये जाते।

नये ग्राहकोंको मनीऑर्डर कूपन पर अपना पूरा पता साफ़ हरूफ़ोंमें लिखना चाहिये, और 'हरिजन', 'हरिजनबन्धु' या 'हरिजनसेवक' हिन्दी या नागरीमेंसे जिसके ग्राहक बनना चाहते हों, उसका नाम खास तौर पर साफ़-साफ़ लिखना चाहिये।

एजण्टोंको चाहिये कि वे छपी हुई क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत न लें। खरीदारोंसे निवेदन है कि वे छपी हुई क़ीमतसे ज़्यादा क़ीमत न देकर इसमें हमारा हाथ बँटायें।

जी० देसाई

आधोंकी तारीफ़

मरकज़ी (केन्द्रीय) क़ानूनी सभामें एक बिल लाया गया है, जिसका मक़सद (उद्देश्य) यह है कि हमारे देशमें सिक्कोंकी बुनियाद आशारिया (दशमलव) पर हो।

इस युनिवर्सिटीके खयालमें यह एक पीछे हटानेवाला क़दम होगा। हिन्दुस्तानमें सिक्के और माप-तौलके पैमाने सायन्सके मुताबिक़ हैं, एक-से हैं, और सबकी बुनियाद इकाईको सोलह हिस्सोंमें बाँटने पर है। इस तरह क़ीमतों और किरायोंका हिसाब अपने-आप और बड़ी आसानीसे निकल आता है। सिर्फ़ सिक्कोंमें ही आशारियाका पैमाना शुरू करनेके खिलाफ़ कम-से-कम यह तो कहा जा सकता है कि अभी उसका वक़्त नहीं आया। अगर माप-तौलमें भी 'मेट्रिक' सिस्टम (पद्धति)का इस्तेमाल होता, तो सिक्कोंमें भी आशारिया दाखिल करना आदमी समझ सकता था। लेकिन सिर्फ़ सिक्कोंमें आशारिया दाखिल करनेसे आम जनताको काफ़ी तंगी और तकलीफ़ होगी। नीचे लिखेको देखनेसे झट समझमें आ जायगा कि आजकलके पैमानोंमें कितनी आसानी है।

(१) रुपया = २ अठन्नियाँ = ४ चवन्नियाँ = ८ दुअन्नियाँ = १६ आने
(२) सेर = २ आधासेर = ४ पाव = ८ आधपाव = १६ छटाँक
(३) गज़ = २ आधगज़ = ४ पावगज़ = ८ आधपावगज़ = १६ गिरह
(४) मील = २ आधमील = ४ पावमील = ८ फर्लांग

आजकलके उसूलके मुताबिक़ क़ीमतें अपने-आप निकल आती हैं। कोई लम्बा-चौड़ा हिसाब नहीं करना पड़ता। लेकिन अगर सिक्कोंमें आशारियाका तरीक़ा लाया गया, तो सिर्फ़ छटाँक और गिरह खरीदते वक़्त अनपढ़ जनताको क़ीमतें निकालनेमें काफ़ी मुश्किल पड़ेगी और मुझे पक्का विश्वास है कि आम जनता नये सिक्कोंको कभी पसन्द न करेगी।

मुझे अभी अमेरिकासे 'स्कूल सायन्स एण्ड मैथेमेटिक्स' नामके रिसाले (पत्र)की एक ज़िल्द (प्रति) मिली है। इस सिलसिलेमें उसमेंसे कुछ पैरे आपकी जानकारीके लिए नीचे देता हूँ:

"सब जानते हैं कि आधा चीज़ोंका सबसे आसान हिस्सा है। चौथाई आधेका आधा है और आठवाँ हिस्सा चौथाईका आधा। आधा करनेका यह तरीक़ा अनगिनत बार दुहराया जा सकता है।

"बाटोंमें जो दिक़्क़त पेश आती है, उसका इलाज यह है कि मापोंमें और सिक्कोंमें सिर्फ़ आधोंका ही इस्तेमाल किया जाय और इकाई हमेशा आठ हिस्सोंमें ही बँटे।

"जिस हालतमें आज आधा इस्तेमाल होता है, वह कुछ ऐसी ही है, जैसे अपनी ज़बानमें (आधों)में सोचा जाय और विदेशी ज़बान (आशारिया और मेट्रिक सिस्टम)में लिखा जाय।

"दूसरे सलाह देते हैं कि हम विदेशी मेट्रिक सिस्टमको सीख लें, जिसमें १०वें, १००वें वग़ैरा हिस्से होते हैं, और उसीका इस्तेमाल करें। यह एक विदेशी भाषा सीखनेकी बात नहीं है। यह तो अपनी जिस्मानी (शारीरिक) बनावटको बदलनेका सवाल है, जो बन नहीं पड़ता। सब जानते हैं कि जहाँ तक हो सके, हमारे मन और तन माद्दी (भौतिक) चीज़ोंके मेट्रिक टुकड़े करनेसे बचते हैं।"

असलमें अमेरिकाके तालीमके माहिर तो आजकल यह सोच रहे हैं कि गिनतियों, हिसाब और माप-तौलके पैमानोंकी नींव आठ-आठ पर रक्खें। इसलिए मुझे लगता है कि आशारियाके तरीक़ेको अपनाना एक निकम्मी बात होगी, जब कि दुनियाके दूसरे हिस्सोंमें सोच-विचार करनेवाले यह तजवीज़ कर रहे हैं कि इसकी जगह पर एक ज़्यादा .क़ुदरती और सायन्सके मुताबिक़ तरीक़ा रक्खा जाय।

("हरिजन 'से)

श्री रंगबिहारीलाल
प्रोवाइस चान्सलर
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२३ जून १९४६

युरोपियन वोट

किसी छोटे-मोटे आदमीने नहीं, बल्कि युरोपियन एसोसियेशनके सदर (सभापति)ने शेरका पंजा दिखाया है। खरी बात यही है। अगर कोई विधान या आईन बनानेवाली कार-आमद सभा बननी है, तो इतनी बात साफ़ है कि उसमें युरोपियन लोगोंको न तो वोट देनेका और न चुनावके लिए खड़े होनेका ही हक़ हो सकता है। हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश ताक़तके चार बा.ज़ू हैं — सरकारी फ़ौजी अमला, सरकारी दीवानी अमला, ग़ैरसरकारी फ़ौज और युरोपियन आबादी। इसलिए जब हाकिम जमात कहती है कि ग़ैरसरकारी युरोपियन उसके क़ाबूमें नहीं हैं, तो वह एक वाहियात बात हो जाती है। सरकार युरोपियन आबादीके लिए ही यहाँ है। अगर वे यहाँ न हों, तो सरकारका क्या काम? अंग्रेज़ी जंगी जहाज़ अंग्रेज़ी व्यापारके पीछे-पीछे यहाँ आये। सारे हिन्दुस्तान पर विदेशी फ़ौजका क़ब्ज़ा है। युरोपियन प्रेसिडेण्टके कारनामे हमें इस रोशनीमें देखने हैं। ऐसा मालूम होता है कि ताक़तके नशेमें उन्होंने यह जाननेकी भी तकलीफ़ गवारा नहीं की कि आया सरकारी ऐलान उनकी जमातको वह क़ानूनी हक़ देता भी है या नहीं, जिससे तजवीज़ की हुई विधान (आईन) बनानेवाली सभामें वे वोट दे सकें और उसमें चुने जानेके लिए खड़े हो सकें। युरोपियन जमातके और उसके वोटरोंकी ख़ातिर मैंने दिल्लीके एक बड़े वकीलकी राय हासिल की है, जो इसी अंकमें मिलेगी।

क्या प्रेसिडेण्टने इतनी नम्रता (इन्कसार) भी दिखाई है कि वे मिशनसे पता लगा लें कि इख़लाक़ी (नैतिक) और क़ानूनी हैसियतसे उनका क्या हक़ है? या क्या उन्होंने मिशनको निकम्मा समझा, क्योंकि वे .ख़ुद असली साम्राज्यके नुमाइन्दे हैं, और वाइसराय व कैबिनेट मिशन, जो ब्रिटिश लेबरके नुमाइन्दे हैं, उस साम्राज्यको उतार फेंकनेके लिए हाथ-पैर मार रहे हैं?

तिनकेसे हवाके रुख़का पता चलता है। मेरे ख़यालमें युरोपियन एसोसियेशनका यह बे-मौक़ा करतब चिन्ता पैदा करनेका सबसे बड़ा कारण है। इससे यह विश्वास हिल जाता है कि मिशनके कामकी कोई असलियत है। सवाल उठता है कि क्या मिशन अपने वक़्तसे पहले आ गया है? क्या हिन्दुस्तानके युरोपियन लोग, जो अभी तक यहाँ तोपोंके सहारे रहे, तोपें शान्त करके अपनी सारी क़िस्मतका फ़ैसला, स्व० एण्ड्रूज़की तरह, हिन्दुस्तानी जनताकी दोस्ती पर छोड़ देंगे? या क्या वे अपने ज़मानेमें हिन्दुस्तान पर विदेशी राज जमाये रखनेकी आशा करते हैं?

वे यह कैसे कह सकते हैं कि वे हठधर्मी नहीं कर रहे? उनके सारे ऐलानसे इसकी बू आती है। वोटका जो हक़ उन्हें मिला है, वह उनकी जमातकी तादादसे कहीं ज़्यादा है। और, बंगाल व आसाममें तो वह बहुत ज़्यादा खटकता है। एसेम्बिलयोंमें जानेका उनको हक़ ही क्या था? उन दोनों एसेम्बिलयोंमें जाकर उन्होंने किया ही क्या है, सिवा इसके कि पार्टियोंको आपसमें लड़ाकर बंगाल और आसामके लोगोंको परेशान किया? यह बोझ कोई उनपर ज़बरदस्ती नहीं लादा गया था। बात तो यह है कि अगर वे इसको उठानेसे इनकार कर देते, तो उनकी इज़्ज़त बढ़ जाती। ऐसा करनेके बजाय वे 'गोरे आदमीका बोझ' शौक़िया अपने सिर ले बैठे, और अब भी, जब कि आज़ादीका सवेरा होता मालूम हो रहा है, बड़ी मेहरबानीसे कहते हैं कि हम तुम्हारा विधान बनानेमें मदद देंगे!!! सिर्फ़ कहनेसे वे हठधर्मीके इल्ज़ामसे थोड़े ही बच सकते हैं? जो सचमुच हठधर्मी नहीं करते, उनके अपने काम, बग़ैर एक लफ़्ज़ कहे, .ख़ुद ही इस चीज़का सबूत देते हैं।

अपने ताज़ा बयानसे युरोपियन .ख़ुद बेवक़ूफ़ बनते हैं; गोया वे यह कह रहे हैं कि वे अपने लोगोंको चुनावके लिए तो खड़ा नहीं करेंगे, पर अपने इशारे पर चलनेवाले हिन्दुस्तानियोंको वोट देंगे। अगर हो सके, तो वे चाहते हैं कि फिरसे वही चालाकी करें, जिससे वे, मुट्ठीभर लोग, हिन्दुस्तानके करोड़ों बेज़बान लोगोंका गला घोट सकें। इस सूली पर हम कब तक चढ़े रहेंगे? क्या मिशन इस नापाक हवसको शह देनेका ख़याल रखता है? और फिर भी आशा रखता है कि विधान बनानेवाली सभाकी नाज़ुक नावको वह चला सकेगा? ज़ाहिर है कि युरोपियनोंको सीधे रास्ते पर लाना मिशनका काम है; हिन्दुस्तानवाले उसका यह काम नहीं कर सकते।

नई दिल्ली, १७-६-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

युरोपियन वोट पर क़ानूनी सलाह

सवाल उठा है कि क्या युरोपियन उस विधान या आईनके बनानेमें हिस्सा ले सकते हैं, जिसका ढाँचा १६ मई, १९४६के सरकारी ऐलानमें पेश किया गया है। युरोपियन दावा करते हैं कि इस ऐलानने उन्हें यह हक़ दिया है। गांधीजीने एक वकीलकी राय पूछी थी। नीचे उनका जवाब दिया जाता है:

"ब्रिटिश वज़ारत (मंत्रि-मण्डल)के वज़ीरोंने १६ मई, १९४६को जो ऐलान किया, उसके सिलसिलेमें नीचे लिखे सवालों पर मेरी राय पूछी गई है:

'क्या युरोपियन लोगोंको, (जो विदेशी हैं और यहाँके नागरिक (शहरी) नहीं) यह हक़ है कि तजवीज़ की हुई विधान बनानेवाली सभामें

(१) चुनावके वक़्त अपना वोट दे सकें

या (२) चुनावके लिए उम्मीदवारकी तरह खड़े हो सकें?'

"मुझे ऐसा लगता है कि इस सवालका इशारा उस आईन या विधान बनानेवाली सभाकी तरफ़ है, जो हिन्दुस्तानका भावी (आइन्दा) विधान बनानेके लिए खड़ी की जा रही है।

"मेरा जवाब थोड़ेमें नीचे लिखा है:

"१. ३रा पैरा कहता है कि फ़ौरन ऐसा बन्दोबस्त किया जाय, जिससे **हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तानके भावी विधानके बारेमें फ़ैसला कर सकें**। दूसरे लफ़्ज़ोंमें इसका मतलब यह है कि विधान बनानेवाली सभामें सिर्फ़ हिन्दुस्तानी ही होंगे।

"२. १६वाँ पैरा कहता है: 'मुद्दा यह है कि ऐसा साधन तैयार किया जाय, जिससे **हिन्दुस्तानी .ख़ुद ही हिन्दुस्तानियोंके लिए आइन्दाका विधान** बना सकें।'

"१८वाँ पैरा कहता है: 'इसके सिवा, दूसरा यही एक अमली रास्ता है कि सूबोंकी लेजिस्लेटिव एसेम्बिलयाँ, जो हालमें चुनी गई हैं, **नया विधान बनानेवालोंको चुनें**।'

"४. १८वाँ पैरा यह भी कहता है कि इस कामके लिए यह मान लेना काफ़ी है कि हिन्दुस्तानमें सिर्फ़ तीन ख़ास फ़रीक़ हैं, यानी जनरल (आम), मुसलमान और सिक्ख। दूसरे छोटे फ़रीक़ोंके लिए २०वें पैरेमें बन्दोबस्त किया गया है।

"१९वें पैरेमें नुमाइन्दगीकी फ़ेहरिस्त दी गई है, और अब तय करनेकी बात सिर्फ़ यह रह जाती है कि विदेशी और अ-राष्ट्रीय (ग़ैर हिन्दुस्तानी) लोगोंको चुनावमें वोट देने या उम्मीदवारके तौर पर खड़े होनेका हक़ है या नहीं?

"मेरी रायमें १८वाँ और १९वाँ पैरा, ३रे और १६वें पैरेके मातहत आ जाते हैं, जिनमें विधान बनानेवाली सभा बनानेके बारेमें कहा गया है, और जो सिर्फ़ हिन्दुस्तानियोंको ही विधान बनानेका हक़ देते हैं, ग़ैर हिन्दुस्तानियोंको नहीं।"

शिवनारायण (सीनियर)
बी० ए० एल-एल० बी०
एडवोकेट हाईकोर्ट और
सीनियर एडवोकेट फेडरल कोर्ट ऑव् इण्डिया

('हरिजन'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थोड़ेमें बहुत कुछ

"त्रावणकोरके मन्दिरोंमें आने-जानेके ऐलान पर स्व० श्री महादेवभाई देसाईने जो किताब लिखी है, उसमें आपकी वे तक़रीरें (भाषण) पाता हूँ, जो आपने त्रावणकोरमें जगह-जगह की थीं। उनमें आपने ईशोपनिषद्के पहले श्लोकका ज़िक्र करते हुए कहा है कि अगर हिन्दुओंके तमाम वेद-शास्त्र बरबाद हो जायँ और सिर्फ़ यह श्लोक बच जाय, तो अकेला यही धर्मको मिटनेसे बचा सकता है। शायद आप जानते होंगे कि इस श्लोकने गुरुदेवके पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुरका जीवन बदल दिया था। जब नौजवान देवेन्द्रनाथके पिताका स्वर्गवास हुआ, तो खानदानकी जायदाद क़र्ज़से काफ़ी दबी हुई थी। वह बहुत उदास रहने लगे थे। एक दिन जब वह इसी उदासीकी हालतमें बैठे थे, तो हवाने उनके पास छपे हुए काग़ज़का एक टुकड़ा ला फेंका। उन्होंने उसे उठा लिया। उस पर संस्कृतमें कुछ लिखा था, जो उन्होंने उस वक़्त तक सीखी नहीं थी। वह उसे अपने कुटुम्बके पंडितके पास ले गये। पण्डितने उसे पढ़कर सुनाया। वह ईशोपनिषद्का पहला श्लोक था। महर्षि अपनी आपबीतीमें लिखते हैं कि जब उन्होंने वह सुना, तो उन्हें ऐसा मालूम हुआ, मानो उनकी आत्मामें अमृत उँड़ेल दिया गया हो।

"त्याग करके भोग करनेकी बातने मुझे बहुत दिनों तक चक्करमें डाले रखा। एक दिन (एक रात कहना ज़्यादा ठीक होगा) मुझे एकाएक यह सूझा कि बात तो रोज़के तजरबेकी है। जिससे प्यार हो, चाहे वह मनुष्य हो या कोई ध्येय (मक़सद), उसके लिए अपनी सबसे क़ीमती चीज़का त्याग करनेसे बढ़कर .खुशीकी बात और क्या हो सकती है?"

कोई तीन महीने पहले यह खत श्री के० नटराजन्की तरफ़से आया था। 'हरिजनसेवक' में इसकी चर्चा करनेकी बात बहुत पहले सोची थी, पर बन नहीं पड़ी। लेकिन कोई हर्ज़ नहीं। क्योंकि इस श्लोकका मज़मून मेरे लिए हमेशा ताज़ा ही है। जो मतलब मैंने इस श्लोकका अपनी अनगढ़ भाषामें लगाया है, उसको अपनी शक्तिके मुताबिक़, ज़्यादा-से-ज़्यादा अपने जीवनमें उतारनेकी कोशिश करता हूँ। पर मुझे बहुत किताबें पढ़नेका शौक़ नहीं है। इसलिए मुझे वह मिसाल मालूम न थी, जो श्री नटराजन्ने महर्षि देवेन्द्रनाथके जीवनसे दी है। इससे मेरा यह विचार पक्का हो जाता है कि जो कुछ सच्चे हिन्दूमत—मेरे लिए सच्चे धर्म—में है, वह सब कुछ ईशोपनिषद्के पहले श्लोकमें आ जाता है। सुबहकी प्रार्थनामें गीताके १८ अध्याय (पाठ) पढ़कर एक हफ़्तेमें खत्म किये जाते हैं, और कुछ बरसोंसे हम ऐसा करते आते हैं। गीता ईशोपनिषद्के पहले श्लोक पर लिखी गई टीका है। मुझे ऐसा लगता है, गो उसे कहनेमें कुछ झिझकता-सा हूँ, कि इसका जो मतलब श्री नटराजन्की समझमें आया है, वह श्लोकका सिर्फ़ एक पहलू है। मेरी समझमें उन्होंने जो मतलब लगाया है, वह तो सिर्फ़ .कुरबानी या बलिदानका एक उसूल है, जो एक आम तजरबेकी बात है। सिर्फ़ एक मिसाल लीजिये। सभी मातायें अपने बच्चोंके लिए सब कुछ .कुरबान कर देती हैं। जिस मंत्रका ज़िक्र किया गया है, वह इस दस्तूरकी हामी भरनेके लिए नहीं बनाया गया। यह दस्तूर तो उस वक़्त भी आम था, जब यह मंत्र हमें मिला। इस श्लोक तक पहुँचनेका मतलब है नया जीवन, जिसका ज़िक्र नई इंजीलमें आया है, और जिसे हिन्दूधर्ममें ब्रह्म-समर्पण (अपने-आपको बिलकुल ईश्वरके हवाले कर देना) का नाम दिया गया है। इसलिए इस श्लोकका मतलब मेरी समझमें एक ही है। मान लीजिये कि जो कुछ आप अपना समझते हैं, असलमें वह .खुदाका है और .खुदासे है। फिर जितना आपको जीवनके लिए निहायत ज़रूरी हो, वह उसमेंसे ले लीजिये। दूसरे लफ़्ज़ोंमें, यानी गीताकी ज़बानमें, यह श्लोक हमें बिलकुल बेलाग रहना सिखाता है। तभी ज़िन्दगी एक रहनेके क़ाबिल चीज़ बन जाती है।

नई दिल्ली, १३-६-'४६
('हरिजन' से)

मोहनदास करमचंद गांधी

नागथातकी यात्रा

श्री धर्मदेव शास्त्री कुछ सालोंसे जौनसार-बावरकी पिछड़ी हुई जातियोंकी सेवा कर रहे हैं। उनकी बड़ी इच्छा थी कि गांधीजी उनका काम देखें। यह न हो सके, तो वे अपनी टुकड़ीमेंसे किसीको वहाँ भेजें। एक डॉक्टरकी और कस्तूरबा ट्रस्टके डॉक्टरी विभागके सेक्रेटरी और कन्वीनरकी हैसियतसे गांधीजीने शास्त्रीजीके साथ भेजनेके लिए मुझे चुना।

चढ़ाई

श्रीमती आभा गांधीके साथ मैं तीन जूनको सुबह ६ बजे शास्त्रीजीकी रहनुमाईमें मसूरीसे चली। शास्त्रीजीके मित्र श्री वर्माजीकी एक लड़की, एक लड़का और उनके एक दोस्त देहरादूनसे हमारे साथ हो लिये। साहिया तक मोटर जाती है। १० बजे वहाँ पहुँचे। १०॥ बजे हम लोग नागथातके रास्ते पर थे। शास्त्रीजीने दो पहाड़ी टट्टू, एक डण्डी, और दो कुलियोंका इन्तज़ाम कर लिया था। शास्त्रीजी और उनके एक पहाड़ी मित्र श्री सेवकसिंहजी सारा रास्ता चलकर गये। बाक़ी लोग बारी-बारीसे सवारी करते थे या पैदल चलते थे।

चढ़ाई सख्त थी। एक छोटी-सी पगडण्डी थी। एक तरफ़ पहाड़ थे, दूसरी तरफ़ गहरी खाई। कई जगह तो रास्ता इतना खराब था कि ज़रा-सी लापरवाहीसे पाँव फिसल सकता था। नीचे सीधी सैकड़ों फुट गहरी खाई थीं, जिसमें गिरनेसे इनसान चकनाचूर हो सकता था। कई जगह तो खाईकी तरफ़ देखनेसे सिर चक्कर खाने लगता था। सो हम अपने रास्ते पर नज़र जमाकर चलते जाते थे। एक जगह पगडण्डी टूटी हुई थी। श्री सेवकसिंहजीकी और कुलियोंकी मददसे हमने वह हिस्सा पार किया। उनके पास डर नामकी कोई चीज़ न थी, न ही वे थकानका नाम जानते थे। रास्तेमें अलग-अलग जगहोंसे हमने जमुनामें मिलनेवाली अमला और टॉंस नदियोंका और जमुनाका दर्शन किया।

अजीब रिवाज़ोंका देश

जौनसार-बावर आधा पिछड़ा हुआ प्रदेश है। इस इलाक़ेका क्षेत्रफल कोई ५०० वर्ग मील है। कुल ४५० गाँव हैं, जो पहाड़ोंकी चोटियों पर बसे हुए हैं। रास्ते खराब हैं। जनसंख्या ५६ हज़ार है। जौनसार-बावर ब्रिटिश इण्डियामें है, मगर तीन तरफ़से टेहरी, नाहना, जुब्बल वग़ैरा देसी रियासतोंसे घिरा हुआ है। लोगोंका मुख्य धन्धा, या तो यों कहिये कि उनका एकमात्र धन्धा, खेती है। आलू, अदरक, मकई, गेहूँ, और मूँडवाकी फ़सल होती है। बाज़में अफ़ीमकी खेती भी होती है। पहाड़ोंमें खेती करना सख्त मेहनतका काम है। ज़मीन कम है। कहा जाता है कि इस इलाक़ेमें जो बहुपति-प्रथा (बहुतसे खाविन्द करनेका रिवाज) चलती है, उसकी जड़में भी यही चीज़ है। कहते हैं, सब भाइयोंकी एक ही पत्नी होती है। इसलिए जायदाद-ज़मीन वग़ैराको बाँटनेका सवाल पैदा नहीं होता, और बच्चोंकी संख्या भी अपने-आप कम हो जाती है।

औरतोंकी तिजारत

इस रिवाजसे फ़ायदा कुछ हो या न हो, इसके नुक़सान काफ़ी हैं। सूज़ाक, गरमी वग़ैरा बीमारियाँ बहुत फैली हुई हैं। कई मर्दोंकी एक ही औरत होनेसे काफ़ी औरतें बिन ब्याही रह जाती हैं। कुछ बेईमान लोगोंने मैदानोंसे जाकर वहाँ औरतोंको तिजारत शुरू कर दी है। सैकड़ों लड़कियाँ हर साल बाहर भेजी जा रही हैं। जब तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगोंकी आर्थिक स्थिति (माली हालत) न सुधरे, सुधारक उनसे बहुपति-प्रथा नहीं छुड़वा सकेंगे। आज तो कई पतियोंका होना इज़्ज़तका एक निशान समझा जाता है। एक गाँवमें हम लोग पानी पीने ठहरे। जिस लड़कीने हमें पानी पिलाया, उसकी शादी हाल ही हुई थी। हमने पूछा: "तुम्हारे कितने पति हैं?" "दो," उसकी माँने कुछ अफ़सोसके साथ कहा। "मगर इसके पाँच ससुर हैं!" 'पाँच ससुर' कहते समय बुढ़िया गर्व (फ़ख़्र) अनुभव (महसूस) कर रही थी।

घरेलू दस्तकारियोंके लिए यहाँ बहुत गुंजाइश है। शास्त्रीजी ऊन कातनेकी दस्तकारी बढ़ा रहे हैं।

अपनी संस्कृति (तहज़ीब)का गर्व (फ़ख़्र)

इन लोगोंके लिए पढ़ाईका या डॉक्टरी मददका कोई इन्तज़ाम नहीं है। मगर उन्हें अपनी संस्कृति (तहज़ीब)का बहुत गर्व (फ़ख़्र) है। वे कहते हैं, उनकी संस्कृति पाण्डवोंसे उतरी है। कहा जाता है कि पाण्डवोंके ज़मानेके कई पुराने खँड़हर यहाँ मौजूद हैं। यहाँ लाखामण्डल नामकी एक जगह है। कहते हैं, यही वह जगह है, जहाँ पाण्डवोंको लाखके महलमें जलानेकी कोशिश की गई थी। वहाँ कई मील लम्बी एक सुरंग है। कहा जाता है कि उस सुरंगके रास्ते भागकर पाण्डवोंने अपनी जान बचाई थी। आज भी खोदनेसे वहाँ सैकड़ों मूर्तियाँ निकलती हैं।

पहाड़की चोटी पर हमें विराट्गढ़के खँड़हर दिखाये गये। कहते हैं, वहाँ राजा विराट्का क़िला था, जहाँ वनवासके दिनोंमें पाण्डवोंने आश्रय लिया था।

कालसीके पास एक कुआँ बताया जाता है, जिसमें छिपकर रहनेके एक सालके अरसेमें पाण्डवोंने अपने हथियार छिपाये थे।

आधी ग़ुलामी

जौनसार-बावरमें चार जातियाँ रहती हैं: ब्राह्मण, राजपूत, बाजगी और कोल्टा। पिछली दो जातियाँ हरिजन हैं। शादी-ब्याह या ऐसे किसी मौक़े पर किसी ब्राह्मण या राजपूतने किसी बाजगी या कोल्टेको कभी रु० २५-३० उधार दे दिये, तो उधार लेनेवाला और उसके परिवारके सब लोग उधार देनेवालेके ग़ुलाम-से बन जाते हैं। मालिक उन्हें खाना-कपड़ा देता है और इसके बदले उनको जो काम दिया जाता है, वह उन्हें करना पड़ता है। बेचारे कोल्टे इतने पिछड़े हुए हैं कि बहुत-से तो इस ग़ुलामीमें भी ख़ुश हैं, क्योंकि उन्हें रोटीकी फ़िक्र नहीं करनी पड़ती। औरतोंकी तिजारत भी कोल्टोंमें ही होती है।

शराबका पव

वहाँ शराब पीना आम बात है। क़रीब-क़रीब सभी औरत-मर्द शराब पीते हैं। श्री महावीर त्यागीने हमें बताया कि एक बार वे और डॉक्टर काटजू शराब-बन्दीके बारेमें जौनसार-बावरके इलाक़ोंमें लेक्चर देने गये थे। क़रीब घण्टाभर लेक्चर देनेके बाद उन्होंने शराब-बन्दीका प्रस्ताव पास करनेके लिए लोगोंसे हाथ उठानेको कहा। एक भी हाथ न उठा। उन्होंने सोचा, शायद लोग बात समझे नहीं। इसलिए उन्हें सारी बात पहाड़ी भाषामें समझाई गई। फिर भी किसीने हाथ नहीं उठाया। तब त्यागीजीने कहा, जो शराब पीकर आये हैं, वे अपने हाथ उठायें। सब हाथ एकदम उठ गये। लोग मारे ख़ुशीके नाचने-से लगे। बोले: "जी हाँ, पीकर आये हैं।"

नागथात

शामको ६ बजे नागथात पहुँचे। नागथात सुन्दर जगह है। यह चक्रोतासे १६ मील और मसूरीसे २२ मील है। पहाड़की चोटीसे जमुनाजीके दर्शन होते हैं। वहाँके क़ुदरती नज़ारेका और वहाँकी शान्तिका मन पर गहरा असर होता है। नागथातमें शास्त्रीजीको किसी ज़मींदारसे मुफ़्त ज़मीन मिली थी। पुलिस कमिश्नरने ज़मींदारको बहुत धमकाया, मगर उसने जवाब दिया कि वह अपने वचनसे हटकर वहाँ रह नहीं सकेगा। शास्त्रीजीने वहाँ एक स्कूल खोल रखा है, और माता कस्तूरबाकी यादगारमें एक दवाखाना खोला है। फ़िलहाल तो दवाखाना एक डिस्पेन्सरीके रूपमें ही चल रहा है। लोग बाहरसे आकर दवा ले जाते हैं। कभी-कभी किसीको दवाखानेमें रखना पड़ जाय, तो रख लेते हैं। दवाखाना चलानेवाली बहन नेपाली हैं। उन्होंने कलकत्तेमें होमियोपैथी सीखी है। दाईके कामकी भी थोड़ी तालीम पाई है। डिस्पेन्सरीमें दवा देनेके अलावा वे देहातमें भी घूमती हैं, और लोगोंको जितनी हो सकती है, उतनी डॉक्टरी मदद पहुँचाती हैं। पहाड़ोंमें घूमना उनके लिए सहज बात है।

स्त्रियोंकी दुर्दशा

स्त्रियोंकी हालत बहुत बुरी है। कई पतियोंकी सेवाके बोझके अलावा उन्हें घरका काम भी करना पड़ता है और खेतका भी। अगर किसी आदमीको नौकरकी ज़रूरत पड़ती है, तो वह एकाध सौ रुपयोंमें एक बीवी ख़रीद लाता है। अगर बादमें उससे न बनी, तो उसे निकालकर दूसरी ले आता है।

इस इलाक़ेमें सीखी हुई या बिनसीखी दाइयाँ हैं ही नहीं। बच्चा होनेके वक़्त पड़ोसिनें एक-दूसरीकी मदद करती हैं। उन्हें सफ़ाई वग़ैराका तो कुछ पता ही नहीं रहता। इसलिए कई औरतें पहला बच्चा होनेके बाद बाँझ हो जाती हैं। यहाँ एक अच्छे अस्पतालकी ज़रूरत है, जहाँ ऑपरेशन वग़ैरा किये जा सकें और 'जचकी' के टेढ़े केसोंका इलाज भी हो सके।

नागथातके सिवा शास्त्रीजीने बागी, किरतूल और भैंगरमें भी स्कूल खोल रखे हैं। ये स्कूल बुनियादी तालीमके उसूल पर नहीं चलते, मगर इनमें कताई सिखाई जाती है।

वापसी

मेरे आनेकी ख़बर पाकर नागथातमें कई मरीज़ इकट्ठा हो गये थे। मैं उन्हें रात ९ बजे तक देखती रही। रास्तेमें भी कई गाँवोंके मरीज़ मेरे पास आये थे। मैंने वहाँकी डॉक्टर बहनको उन मरीज़ोंकी एक फ़ेहरिस्त दी और उनसे दवाइयाँ भेजनेको कहा। दूसरे दिन सुबह पौने पाँच बजेसे मरीज़ आने लगे। ७ बजे तक ब-मुश्किल उन्हें देखनेका काम पूरा किया और हम वापस चले। मुझसे कहा गया कि मैंने नजदीक़के दो-चार गाँवोंके मरीज़ ही देखे थे। अगर मैं एकाध रोज़ ठहर जाती, तो दूरके देहातसे भी मरीज़ मेरे पास आते। इससे मालूम होता है कि वहाँ डाक्टरी मददकी कितनी ज़रूरत है।

एक दयालु डॉक्टर

एक मरीज़को बवासीरकी बीमारी थी। रोज़-रोज़ लहू जानेसे वह फ़ीका पड़ गया था। मैंने उसे बवासीरका ऑपरेशन करवानेको कहा। वह मान गया। मैंने पूछा: "किसी अस्पतालका नाम जानते हो?" उसने जवाब दिया: "जी हाँ, दिल्लीमें डॉक्टर जोशीके अस्पतालमें जाऊँगा।" कुछ समय पहले डॉ० जोशी पासकी एक रियासतमें किसी मरीज़को देखने आये थे। जिसे देखने आये थे, उसके सिवा दूसरे कई ग़रीब भी उनकी सलाह लेने पहुँच गये। उन्होंने सबको प्रेमपूर्वक देखा। तीन जनोंको अपने साथ ले गये और ऑपरेशन किया। दूसरे इलाज भी किये। इलाजका और किरायेका सब ख़र्च अपनी जेबसे दिया। वापस भेजते समय उनको वापसीका किराया दिया और जिन्हें ज़रूरत थी, उनको पहचानके ख़त दिये, ताकि वापस जाकर वे अपना इलाज चालू रख सकें। नतीजा यह हुआ कि वहाँके लोग डॉ० जोशीको अपना मित्र समझने लग गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही वजह थी कि इस मरीज़को भी डॉ० जोशीके अस्पतालके सिवा दूसरी जगह जानेका सूझा ही नहीं। क्या ही अच्छा हो कि हम डॉक्टरोंमें कुछ और ऐसे जोशी निकलें!

वापसी पर शास्त्रीजी हमें कालसी ले गये। वहाँ उन्होंने महाराज अशोकके एक पुराने शिलालेखके पास अशोक आश्रम खोला है। शिलालेखमें लिखा है कि किस तरह कलिंग जीतनेके बाद महाराज अशोकको .खून बहानेसे नफ़रत हो गई थी। उन्हें लगा, .खून बहाकर पाई हुई जीत हारसे भी बदतर है। इसलिए उन्होंने अहिंसा-धर्मको अपनाया। कहा जाता है कि बादमें अफ़गानिस्तानके साथ सारा-का-सारा हिन्दुस्तान अपने-आप महाराज अशोकके झण्डेके नीचे आ गया।

अशोक आश्रम, कालसी

अशोक आश्रम एक सुन्दर जगह पर बना हुआ है। एक तरफ़ पहाड़ हैं, दूसरी तरफ़ जंगल। पास ही जमुना बहती हैं। वहीं जमुनाके किनारे महाराज अशोकका लिखवाया शिलालेख है। शास्त्रीजी आश्रममें घरेलू दस्तकारियाँ सिखानेका एक बड़ा केन्द्र (मरकज़) खड़ा करना चाहते हैं। अभी तो वहाँ ऊनकी ही दस्तकारी चलती है। हमें कहा गया था कि इस दस्तकारीसे एक देहाती रोज़ाना एकसे लेकर डेढ़ रुपये तक घर बैठे कमा लेता है। अशोक आश्रम १० जुलाई, १९४२के दिन खुला था। ९ अगस्त, ४२को शास्त्रीजी पकड़े गये। ३॥ सालके बाद रिहा होकर आये और अपने शुरू किये कामको आगे बढ़ानेमें लग गये। जौनसार-बावरके देहाती उनकी सेवाओंकी बहुत क़दर करते हैं। उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी उन लोगोंकी सेवामें दे रक्खी है।

मसूरी, ६-६-'४६

('हरिजन' से)

सुशीला नय्यर

आदर्श स्त्री

अच्छे चाल-चलनवाली औरत मिलती कहाँ है? क्योंकि उसकी क़ीमत जगमगाते जवाहरोंसे भी ज़्यादा है।

उसका पति या ख़ाविन्द उस पर पूरा-पूरा भरोसा करता है, इसलिए उसे किसी तरहकी नुक़सानी नहीं उठानी पड़ती।

वह ज़िन्दगीभर अपने पतिका भला ही करती है, कभी बुरा नहीं करती।

वह सन और ऊन खोज निकालती है, और अपने हाथों दोनोंको .खुशी-.खुशी कातती है।

वह दरियाका सफ़र करनेवाले तिजारती जहाज़की तरह दूर-दूरसे घरके लिए नाज लाती है।

वह मुँहअँधेरे, बड़े सवेरे, उठकर अपने कुनबेके लिए खाना पकाती है, और लड़कियोंको घरका काम अलग-अलग सौंप देती है।

वह जाकर एकाध खेत देखती है, हिसाब लगाती है और खेत खरीदती है; अपने हाथों वह उस खेतमें अंगूरकी बेलें रोपती है।

उसका शरीर (जिस्म) ताक़तवर है, उसके हाथ मज़बूत हैं और वह कमर कसकर मेहनत-मज़दूरी करती है।

वह इस बातकी फ़िकर रखती है कि उसकी पैदा की हुई फ़सल मुनाफ़ा दे।

उसके घरमें सारी रात चिराग़ जलता रहता है।

वह अपने हाथों तकली घुमाती और चरखा चलाती है।

ग़रीबोंके लिए वह अपने हाथ बढ़ा देती है, और सचमुच ही ग़रज़मन्दोंके पास दौड़ी जाती है, और उनकी मदद करती है।

उसके घरको बरफ़के तूफ़ानोंसे कोई अन्देशा नहीं, क्योंकि उसने अपने घरके सब लोगोंको लाल ऊनके कपड़ोंसे ढँक रक्खा है।

वह अपने हाथों तरह-तरहकी शतरंजियाँ बुनती और ग़ालीचे बनाती है।

उसके कपड़े बढ़िया सनके और .खुशनुमा लाल रंगके हैं।

मुल्कके बड़ोंकी मजलिसमें बैठनेवाले उसके ख़ाविन्दका नाम चारों तरफ़ मशहूर है।

वह सनके कपड़े बनाती और बेचती है, और कमरबन्द तैयार करके सौदागरोंको देती है।

बल और गौरव (ताक़त और शान) उसके वस्त्र (कपड़े) हैं, और आनेवाले ज़मानेके सामने वह मुँह पर मुसकान लिए खड़ी रहती है।

उसके चेहरेसे दानाई टपकती है, उसकी ज़बानसे करुणाका अमृत बहता है।

वह अपनी घर-गिरस्तीकी मुनासिब फ़िकर रखती है, और कभी काहिल बनकर काहिलीकी रोटी नहीं खाती।

उसे नज़दीक आते देखकर उसके बच्चे खड़े हो जाते हैं, और उससे कहते हैं, माँ तुझ पर ईश्वरकी कृपा (.खुदाका रहम) है। उसका पति भी उसकी इज़्ज़त करता है। और कहता है: बहुतेरी लड़कियोंने अपने मायकेवालोंका नाम रोशन किया है, पर उन सबमें तेरी कोई जोड़ नहीं।

इनसानकी मुहब्बतका कोई ठिकाना नहीं, वह किसी भी वक़्त बदल जाती है, और शरीरका रूप, उसकी .खूबसूरती, झूठी है। मगर ईश्वरसे डरकर चलनेवाली औरतकी सब कोई तारीफ़ करते हैं।

उसे उसके अपने पैदा किये हुए फल भेंटमें दो, क्योंकि अपने कामोंसे ही वह चारों दुनियाओंमें मशहूर होगी।

औरतकी यह तसवीर सदियों पुरानी है। यह हिब्रू ज़बानमें लिखी गई है और सयाना सोलोमन इसका लिखनेवाला है। हिन्दुस्तानके साधु-सन्तोंकी लिखी चीज़ोंसे भी ऐसे बयान मिल सकते हैं। इससे पता चलेगा कि उस ज़मानेमें औरतें क़ाबलीयत और होशियारीके साथ काम करती थीं, मर्दोंके बोझमें उनकी भागीदार बनती थीं, उन्हींकी तरह दिनकी धूप सहती थीं और इस तरह ज़िन्दगीको जीने लायक़ बनाती थीं। दानाईकी ये बातें ग़रीबोंकी बनिस्बत खासकर .खुशहाल लोगोंके लिए लिखी गई हैं। सो कुछ भी हो, इसमें शक नहीं कि यह एक ऐसा आदर्श है, जिसे अपनाकर इस ज़मानेकी हरएक बहन फ़ायदा उठा सकती है। इस तसवीरमें औरतकी जिस ताक़तका खाका खींचा है, उसके कामोंकी विविधताका जो बयान किया गया है, अपने घरको ही नहीं, बल्कि समाजको बनानेवालीके नाते उसकी जो जगह इस तसवीरमें दी गई है, उस सबको, और नहीं, तो कम-से-कम पूरबी देशोंकी औरतें तो गँवा ही बैठी हैं। अपने घरकी नींव-बुनियाद बननेके बदले वे कमज़ोर और मुहताज बन गई हैं। उन्हें दूसरोंका आसरा तकना पड़ता है। यह ज़रूरी है कि वे अपनी ज़िन्दगीके फटे-टूटे मगर रंग-बिरंगी तसवीरोंवाले परदेको रफ़ू करनेके लिए फ़ौरन ही फिरसे अपने हाथोंमें चरखा थाम लें और कातनेके लिए रूई, ऊन और सन हासिल कर लें। अगर हिन्दुस्तानकी बहनें ऊपरकी तसवीरमें दिये गये ऊँचे दरजेको पा लें, तो वे न सिर्फ़ अपने मुल्ककी, बल्कि सारी दुनियाकी तरक़्क़ीमें हाथ बँटा सकेंगी। अगर सच्ची समाज-व्यवस्थाके लायक़ बननेकी हम सबसे पहले और तुरत कोशिश नहीं करेंगी, तो नई दुनिया रचनेके लिए सोची जानेवाली सभी तरकीबें बेकार हो जायँगी।

मसूरी, २९-५-'४६

('हरिजन' से)

अमृतकुँवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँधेरेमें उजाला

नई दिल्लीसे ७ मील दूर, मथुरा जानेवाली सड़क पर, ओखला स्टेशनके नज़दीक 'कस्तूरबा-बालिकाश्रम' नामकी एक छोटी-सी संस्था है। अपनी धीमी और ठण्डी जोतसे वह राजधानीकी अँधेरेसे घिरी छाया (साया)को उजालती है। इस सायेके नीचे गन्दी और मैली-कुचैली हालतमें शहरके हरिजन आबाद हैं। समाजकी सबसे ज़्यादा मुफ़ीद ख़िदमत करनेवाले लोगोंको, औरतों और मर्दोंको, वहाँ जानवरों-जैसी हालतमें रहना पड़ता है। यह एक ऐसी चीज़ है, जो इनसानको चाहनेवाले हर आदमीको शरमिन्दा बनाती और नाउम्मीद करती है। कई तरहके कामोंमें फँसे रहने पर भी गांधीजीने पिछली २० अप्रैलको सनीचरके दिन थोड़ा वक़्त निकाला और वे इस आश्रमको देखने गये। हरिजनोंको ऊपर उठानेकी श्रीमती रामेश्वरी नेहरूकी लगनकी बदौलत यह आश्रम क़ायम हुआ है। चार साल पहले उन्होंने हरिजन लड़कियोंको दस्तकारी सिखानेका एक मदरसा खोलनेके लिए १०,०००) रुपयेकी सखावत की थी। श्रीमती सुमित्रादेवी (श्री माधवप्रसाद बिड़लाकी पत्नी) ने अपने अकाल और करुण अवसानसे पहले ही इस आश्रमके लिए सवा लाख रुपयेकी एक वसीयत कर दी थी। जिन लम्बे-चौड़े मकानोंमें आज यह आश्रम बसा हुआ है, वे दिल्लीके एक सज्जनने संस्थाको दे दिये हैं।

श्रीमती कस्तूरबा गांधीकी मौतके कोई डेढ़ बरस बाद श्रीमती रामेश्वरी नेहरूके हाथों यह आश्रम खोला गया था। उस वक़्त आश्रमका काम १२ हरिजन लड़कियोंसे शुरू किया गया था। आज वहाँ ४० लड़कियाँ तालीम पाती हैं। उनमेंसे १४ मध्यप्रान्त और बरारकी, १० यू० पी० की, ८ राजपूतानेकी, ५ पंजाबकी, १ महाराष्ट्रकी और २ गुजरातकी हैं। ४० में ३ ऊँची जातके हिन्दुओंकी लड़कियाँ हैं, बाक़ी सब हरिजन हैं। हरिजन लड़कियोंका सारा खर्च हरिजन-सेवक-संघ देता है। दूसरे दरजे तक पढ़ी हुई ७ से १२ सालकी उमरवाली क्वाँरी लड़कियोंको आश्रममें दाख़िल किया जाता है। लेकिन चूँकि कम-से-कम इतनी पढ़ी-लिखी हरिजन लड़कियोंका मिलना भी मुश्किल पाया गया है, इसलिए बिलकुल अनपढ़ लड़कियोंको भी दाख़िल करना पड़ा है। आश्रममें फ़िलहाल ६ठे दरजे तककी पढ़ाईका इन्तज़ाम है। आश्रममें लड़कियोंको घरका इन्तज़ाम करने, कसीदा काढ़ने, फूल-पत्ती या बेल-बूटा निकालने, रसोई बनाने, साग-सब्ज़ी पैदा करने, कातने और कताईसे ताल्लुक़ रखनेवाले तमाम काम सिखानेके साथ-साथ 'बातिक' काम सिखानेका भी इन्तज़ाम है। पढ़ाई-लिखाईकी तालीम अब तक ज़िला बोर्डके कोर्सके मुताबिक़ दी जाती थी। लेकिन अब यह तय किया गया है कि लड़कियोंको प्रयाग महिला विद्यापीठके इम्तहानोंके लिए तैयार किया जाय।

पढ़ाईमें दस्तकारीकी तालीमको खास जगह दी गई है। कातनेके लिए रोज़ एक घण्टेका वक़्त रक्खा गया है। पिछले अक्तूबरकी गांधी-जयन्तीसे लेकर अब तक ७९० गुण्डी सूत काता गया है। इसकी मज़दूरी ९०) होती है। इस दरमियान सबसे ज़्यादा कातनेवाली लड़कीने ८६ गुण्डी सूत काता है। दूसरे नम्बरकी लड़कीने ८२ गुण्डी सूत काता। यह सूत २० नम्बरका है और .ख़ुद रूई धुनकर और उसकी पूनी बनाकर काता गया है। कताईकी इनकी मज़दूरी क्रमसे रु० १३-१२-०, और रु० १२-१५-० होती है। किताबी पढ़ाईमें भी ये दोनों लड़कियाँ सबसे आगे रही थीं। बालिकाश्रमके इस तजर ने यह बात अच्छी तरह साबित कर दिखाई है कि कताईके लिए रोज़ १ घण्टा खर्च करनेसे स्कूल या कॉलेजमें पढ़नेवाली बहनें अपनी ज़रूरतका कपड़ा .ख़ुद पैदा कर सकती हैं।

इसके अलावा इन बहनोंने दस्तकारीके क्लासमें ६४३ कपड़ोंकी सिलाई की। फूल-पत्ती या बेल-बूटेके ४० नमूने तैयार किये और ६ खिलौने बनाये। इन सबकी कुल मज़दूरी १५८) हुई। पिछले दो सालमें आश्रमकी कुल आमदनी रु० ५६,२६१-१-३ रही और इस अरसेमें कुल खर्च रु० ४५,०६७-२-९ हुआ।

गांधीजीकी तरह हिन्दुस्तानके अव्वल नम्बरके हरिजन होनेका दावा करनेवाले श्री ठक्कर बापा और श्रीमती रामेश्वरी नेहरूकी निजी देखरेखमें यह आश्रम चलता है। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू हर दूसरे या तीसरे महीने वहाँ आती हैं और एक-दो हफ़्ते वहीं रहती हैं। .ख़ुशक़िस्मतीसे आश्रमको श्री प्रभुदास गांधी और श्रीमती अनसूया देसाईकी सेवायें (ख़िदमतें) मिल गई हैं। श्री प्रभुदास गांधी गृहपति यानी सुपरिण्टेण्डेण्ट हैं और श्रीमती देसाई हेडमास्टरनी हैं।

आश्रममें पढ़नेवाली लड़कियोंकी अपनी बनाई दस्तकारीकी चीज़ों की एक छोटी-सी नुमाइश भी की गई थी। उसमें बेल-बूटोंके, कसीदेके, बातिक कामके और लड़कियोंकी बनाई तसवीरों और नक़्शों वग़ैराके नमूने रक्खे गये थे। इन नमूनोंको देखनेसे पता लगता था कि लड़कियोंमें ऊँचे दरजेकी कला और दस्तकारीका माद्दा पैदा हुआ है। उन्होंने बहुत अच्छे ढंगसे भजन गाये, संस्कृत श्लोकों को पढ़नेका उनका तरीक़ा ऊँची जातकी लड़कियोंसे ज़्यादा अच्छा नहीं, तो उनके जैसा तो था ही। उच्चारण यानी तलफ़्फ़ुज़ क़ाफ़ी सही और साफ़ थे। खासकर इन लड़कियोंकी सफ़ाई और सुघड़ता देखकर गांधीजीको बहुत .ख़ुशी हुई। कुछ दिन पहले आश्रमकी सब बहनें ७ मील पैदल चलकर गांधीजीसे भंगीबस्तीवाले उनके मुक़ाम पर मिलने आई थीं और वापस पैदल ही अपने आश्रमको गई थीं।

शिक्षामें संस्कार (तालीममें तरबियत)के पहलूको अपने भाषणका विषय (मज़मून) बनाकर गांधीजीने इन बहनोंसे हिन्दुस्तानीमें कहा था:

"अक्षरज्ञान या किताबी पढ़ाईके मुक़ाबले मैं संस्कारकी शिक्षा या तालीमको ज़्यादा महत्त्व (अहमियत) देता हूँ। संस्कारिता बुनियादी चीज़ है। तुम लड़कियों को यह महत्त्वकी (अहम) चीज़ यहाँ हासिल करनी चाहिये। तुम्हारे उठने-बैठनेमें, तुम्हारी बातचीतमें, कपड़े पहननेके तुम्हारे तौर-तरीक़ोंमें, मतलब, तुम्हारे बरतावकी छोटी-से-छोटी चीज़में भी तुम्हारी संस्कारिता साफ़ दिखाई पड़नी चाहिये, ताकि कोई भी आदमी तुम्हें देखते ही यह जान सके कि तुम इस आश्रममें पढ़ी हो। तुम्हारे बोलने में, यहाँ आनेवाले मुलाक़ातियोंके साथ तुम्हारे बरतावमें, आपसमें एक-दूसरेके साथ और अपने शिक्षकों (उस्तादों) और बड़ों व बु.ज़ुर्गोंके साथके अपने व्यवहारमें तुम्हारे दिलकी संस्कारिता का असर साफ़ नज़र आना चाहिये।

"मुझे यह जानकर .ख़ुशी हुई कि तुम पैदल चलकर भंगी-बस्तीमें मुझसे मिलने पहुँची थीं और वहाँसे लौटते वक़्त भी यहाँ तक पैदल ही आई थीं। लेकिन अगर मुझे .ख़ुश करनेके लिए ही तुमने ऐसा किया हो, तो कहना होगा कि तुम्हारे उस पैदल चलनेमें कोई .ख़ूबी नहीं थी। उससे तुम्हें कोई फ़ायदा नहीं होगा। सवारीका इस्तेमाल करनेके बदले तुम्हें तो चलनेका ही नियम या क़ानून बना लेना चाहिये। हमारे देशके करोड़ों लोगोंको मोटरकी सवारी नहीं मिलती। इसलिए तुमको उसके इस्तेमालसे बचना चाहिये। देशके करोड़ों लोगोंके पास तो रेलमें बैठकर सफ़र करनेकी भी गुंजाइश नहीं होती। उनका गाँव ही उनकी दुनिया होता है। यह एक बहुत मामूली चीज़ है। लेकिन अगर तुम इस क़ानून या नियम पर सच्चे दिलसे डटी रहोगी, यानी इसपर सही-सही अमल करोगी, तो यह तुम्हारी सारी ज़िन्दगीको बदल डालेगा और उसे .क़ुदरती सादगीकी मिठाससे भर देगा।

"यहाँकी तालीम तुम्हें मौज़शौक़ और शान-शौक़तकी ज़िन्दगीके लायक़ नहीं बनायेगी। मैं यह चाहता हूँ कि यहाँकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजन बहनें अपने रोज़के जीवनमें ऊँचे दरजेकी ऐसी संस्कारिता दिखायें कि जिससे उनको अछूत समझनेमें सब कोई शरम महसूस करें। हरिजन-सेवक-संघके कामोंका यही मक़सद है। अगर हरिजनोंको छूत-छातके कलंकसे वरी किया जाय, तो वे लोग किस हद तक ऊपर उठ सकते हैं, और इसके खिलाफ़, छूत-छातका रिवाज़ कितना बेरहमीसे भरा और हलका है, इसका एक नमूना इस आश्रमको सारी दुनियाके सामने पेश करना चाहिये। मैं उस दिनकी राह देखता हूँ, जब यह आश्रम अपनी ख़ुशबू सारे मुल्कमें फैलायेगा और दूर-दूरकी व पास-पड़ोसकी जगहोंसे लड़कियोंको अपनी तरफ खींचनेवाला एक उम्दा केन्द्र (मरकज़) बन जायगा।"

नई दिल्ली, २२–४–'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

नई दिल्लीके भंगियोंका सवाल

[जब गांधीजीके दलके लोग उनके साथ शिमला गये, तो हिन्दुस्तानी तालीमी संघके श्री देवप्रकाश नय्यर उनके पीछे दिल्ली ही रह गये। वे गांधीजीके साथ गरमीकी छुट्टियाँ बिताने यहाँ आये थे। अपने साथ शिमला जाने न जानेका फ़ैसला करनेकी बात गांधीजी ने उन्हीं पर छोड़ दी थी। लेकिन वे कोई फ़ैसला न कर सके। गांधीजीके सुझाने पर उन्होंने सिक्का उछाल कर फ़ैसला करना तय किया और सिक्केका फ़ैसला शिमलाके खिलाफ़ रहा। इस तरह उनका दिल्ली रुकना तय पाया। उन्हें लगा कि भगवान् ने ही उनको यह मौक़ा दिया है। इसलिए इसका अच्छे-से-अच्छा उपयोग करनेकी ग़रज़से वे बार-बार रीडिंगरोडवाली भंगी-बस्तीको देखने जाने लगे। कुछ दिन बाद उनकी बहन भी उनके साथ हो गईं। वे डॉक्टर हैं। बिहारके बेतिया शहरसे कुछ दिनकी छुट्टी पर वे यहाँ आई थीं। भंगी-बस्तीकी हालतके बारेमें उन्होंने जो ब्योरा तैयार किया था, उसका सार थोड़ेमें नीचे दिया गया है।

प्यारेलाल]

माली हालत

नई दिल्लीमें कुल ६ ख़ास हरिजन बस्तियाँ है। हरएकमें क़रीब ३२५ घर हैं। रीडिंगरोडवाली बस्तीको छोड़कर बाक़ीकी बस्तियोंमें हरिजन दूसरी जातवालोंके साथ ही रहते हैं।

सभी हरिजन परिवार म्युनिसिपैलिटीकी नौकरी करते हैं। ज़्यादातर हरिजन झाड़ू लगानेका काम करते हैं। उन्हें हर महीने १३) की तनख़्वाह मिलती है। आम रास्तोंको झाड़ना और ...सकी सफ़ाई करना उनका काम है। इकट्ठे कूड़े-करकटको ...लॉरियोंमें भरकर बाहर डाल आनेका काम करनेवालेको महीनेके १५) मिलते हैं।

म्युनिसिपैलिटीमें बहुत ही कम हरिजन बहनोंको नौकरियाँ दी गई हैं। इसकी वजह भी अजीब-सी है। उनको तनख़्वाह मरदोंके बराबर ही दी जाती है, लेकिन औरतोंकी मज़दूरीके लिए जो नियम बने हुए हैं उनकी वजहसे बहनोंकी मज़दूरी महँगी पड़ती है। कहा जाता है कि इसी वजहसे म्युनिसिपैलिटीने हरिजन बहनोंको ज़्यादा तादादमें नौकरी देना बन्द कर दिया है। आजकल म्युनिसिपैलिटीमें कुल ६०० मर्द काम करते हैं, जब कि काम करनेवाली बहनोंकी तादाद सिर्फ़ ४० है।

इसकी वजहसे बहनोंको ख़ानगी तौर पर लोगोंके घरोंमें काम करना पड़ता है। इस तरह उनको घर पीछे हर महीने ८ आने से १ रुपया मेहनतानेका मिलता है। बँगलोंमें काम करनेवाली बहनोंको महीनेके ५) तक की मज़दूरी भी मिल जाती है। लेकिन आम तौर पर बँगलोंमें पूरे वक़्त काम करनेवाला भंगी या मेहतर रक्खा जाता है। कुल मिलाकर झाड़ू लगानेवाली बहनकी औसत आमदनी फ़ी महीना ५) से लेकर १२) तक होती है।

आम तौर पर एक परिवारमें मर्द, औरत और चार बच्चे होते हैं। उनकी कमाई नीचे लिखे मुताबिक़ मानी जा सकती है:

बाप रु० १३) तनख़्वाह+रु० १६) महँगाई	रु० २९)
माँ	रु० ७)
एक बच्चा	रु० ५)
कुल	रु० ४१)

इस तरह सारे कुनबेकी फ़ी आदमी रोज़ाना आमदनी ४ आना हुई। लेकिन यह तो औसत आमदनी है। बहुतोंको इससे भी कम मिलता है, और उन्हें पेट पर पट्टी बाँध कर जीना पड़ता है। ८ बच्चोंवाले एक कुनबेकी आमदनीकी जाँच करनेसे मालूम हुआ कि बापको महीनेके १३) (आजकल महँगाईके साथ रु० २९) और माँको ६) मिलते हैं। इस तरह दस आदमियोंको महीनेके १९)में (आजकल रु० ३५ में) अपना गुज़ारा करना पड़ता है। इस तरह मामूली दिनोंमें उन्हें फ़ी आदमी रोज़का १ आना और आजकल क़रीब २ आने मिलते हैं। और, सो भी ८ घण्टोंकी कड़ी मेहनतके बाद!

कुछ परिवारोंकी हालत अच्छी है। उनकी माहवार आमदनी क़रीब २००) है। लेकिन ऐसे परिवारोंकी तादाद इतनी कम है कि उनका ज़िक्र करना कोई मानी नहीं रखता। इन लोगोंकी अच्छी हालतकी वजह यह है कि इनमेंसे कुछ लोगोंको सरकारी नौकरोंके चपरासीका काम मिल गया है।

उनके जीवनकी मामूली हालत

रीडिंगरोडवाली भंगी-बस्तीमें १०० घर हैं और २५ काम-चलाऊ झोंपड़े हैं। इनमें क़रीब ८०० आदमी रहते हैं। ऐसी दशामें उनकी रहन-सहनकी आम हालत घिनौनी हो, तो उसमें ताज्जुब क्या? हरएक परिवारको १३ फुट लम्बी और १० फुट चौड़ी एक कोठरी रहनेको दी जाती है। लेकिन चूँकि ऐसी कोठरियाँ भी काफ़ी तादादमें नहीं हैं, इसलिए एक कोठरीमें दो या दोसे ज़्यादा परिवारोंको एक साथ रहना पड़ता है। बाक़ीके लोगोंको घास-फूसके छप्परोंमें रक्खा गया है। इस तरह औसतन् एक घरमें ७ आदमी रहते हैं। गरमियोंमें तो ये लोग बाहर खुलेमें सो सकते हैं, लेकिन जाड़ोंमें तो माँ-बाप और बच्चोंको, और कभी-कभी दूसरे परिवारके लोगोंको भी, एक छोटी-सी कोठरीमें बन्द हो जाना पड़ता है। आम तौर पर जाड़ेसे बचनेके लिए कोठरीका दरवाज़ा बन्द कर दिया जाता है। इस तरह घरकी छतके नज़दीक बना हुआ एक छोटा-सा उजालदान ही हवा और उजेलेका एकमात्र साधन रह जाता है। घर बहुत गन्दे हैं, कपड़े और भी ज़्यादा गन्दे और बदबू देते हैं। उनके बदन भी गन्दे होते हैं।

पाख़ानेका और नहानेके कमरेका कोई मा़क़ूल इन्तज़ाम नहीं है। क़रीब ८०० लोगोंकी बस्तीके लिए १३ टट्टियाँ और ४ ग़ुसलख़ाने हैं। इसकी वजहसे सहज ही लोग ज़्यादातर पाख़ानोंके बाहर ही टट्टी फिरते हैं। और इस कारण वह जगह बेहद गन्दी हो जाती है। 'फ्लश'की व्यवस्था पर कोई ध्यान नहीं देता। और सीमेण्टके फ़र्श टूटी हुई हालतमें हैं। गांधीजीके वहाँ रहने जानेसे एक दो दिन पहले ही सभी पाख़ानोंकी मरम्मत वग़ैरा कराई गई थी। डॉक्टरी मददका वहाँ कोई इन्तज़ाम नहीं किया गया है और गन्दगी, ग़रीबी और मैले-कुचैलेपनकी वजहसे पैदा होनेवाली बीमारियोंका वहाँ ख़ासा अच्छा दौर रहता है।

डॉक्टरी जाँच

ता० ११ की शामको डॉ० प्रकाश नय्यरके साथ जाकर मैंने भंगी-बस्तीमें शुरू-शुरूकी डॉक्टरी जाँच की। कुल २३ मरीज़ आये। जाँच करनेसे मालूम हुआ कि उनमेंसे कुछ आँख और कानकी बीमारियोंसे परेशान थे और कुछको फोड़े-फुंसीकी शिकायत थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन मरीज़ोंकी हालत ज़्यादा खराब मालूम हुई, उनको खास जाँचके लिए लेडी हार्डिंज और इरविन अस्पतालोंमें भेज दिया गया।

इस जाँचमें भंगी-बस्तीके सभी बीमार शामिल नहीं थे। फिर भी इससे यह पता चल सकता है कि इस बस्तीकी तन्दुरुस्ती कैसी है। बस्तीवालोंको खबर करते ही क़रीब ३० बीमार अपना इलाज करानेके लिए इकट्ठा हो गये। इससे मालूम होता है कि इस बस्तीमें रहनेवालोंकी तन्दुरुस्ती आम तौर पर बहुत ही खराब होनी चाहिये। हम जानते हैं कि ग़रीब और अनपढ़ लोग आम तौर पर डॉक्टरोंके पास जाना पसन्द नहीं करते। दूसरी चीज़ यह मालूम होगी कि बहुत-सी बीमारियाँ तो सफ़ाई और तन्दुरुस्तीके नियमोंका पालन करनेसे ही मिट सकती हैं। दवासे भी ज़्यादा ज़रूरत तो उनको सफ़ाई और तन्दुरुस्तीके नियमोंकी तालीम देने और उनकी माली हालत सुधारनेकी है। ज़ाहिर है कि जब तक एक भंगीकी एक दिनकी मज़दूरी सिर्फ़ ४ आना रहेगी, तब तक उससे यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह साबू वग़ैरा पर पैसे खर्च करे।

शिकायतें और माँगें

उनकी खास शिकायतें और माँगें ये हैं :

१. **समाजी दिक़्क़तें :** इनमें रेल, मोटर वग़ैरा आम सवारियोंमें दूसरे मुसाफ़िरोंका उनके साथ होनेवाला बरताव और सरकारी कचहरियोंमें, जहाँ वे नौकरी करते हैं, दूसरे नौकरोंका उनके साथका बरताव शामिल है।

२. **माली दिक़्क़तें :** इन लोगोंको मोटरलॉरी चलानेकी या चपरासीकी नौकरियाँ दी जाने लगी हैं। इसकी वजहसे इन नौकरियोंमें लगे हुए दूसरे हिन्दू और मुसलमान इनकी मुख़ालिफ़त करने लगे हैं। अगर इन लोगोंके आला अफ़सर इस मामलेमें सख्तीसे काम न लेंगे, तो इन्हें तकलीफ़ उठानी पड़ेगी। खास तौर पर झाड़ूवालोंको एक दूसरी तरहका पक्षपात अखरता है। और, वह यह है कि अब तक नौकरीकी मुद्दतके हिसाबसे इन लोगोंको दारोग़ा बनाया जाता था। लेकिन कहा यह जाता है कि इस बार नौकरीकी मुद्दतके खयालसे इस जगहके लिए सब भंगी ही हक़दार होते हैं। इसलिए भंगियोंको छोड़कर दूसरे लोगोंमेंसे दारोग़ा मुकर्रर करनेकी बात तय की गई है।

३. उनकी दूसरी एक माँग यह है कि उन्हें घर बनानेके लिए वाल्मीकि-मन्दिरके आसपास मुफ़्तमें, क़िरायेसे, या क़ीमतसे ज़मीन दी जाय। उस ज़मीन पर किस तरहके घर बनाये जायँ, इसके बारेमें म्युनिसिपैलिटी जो भी शर्तें रक्खे, उनपर अमल करनेको ये लोग तैयार हैं।

सुधारका काम

कहा जा सकता है कि इन लोगोंमें सुधारके खयालसे कुछ भी काम नहीं हुआ। अलग-अलग संस्थाओंके बहुतेरे लोग इनके बीच काम करने आये, लेकिन कुछ ही वक़्तमें लौट गये। इसलिए सहज ही यहाँके हरिजन नाउम्मीदी महसूस करते हैं। लेकिन अगर कोई उनमें सच्ची दिलचस्पी लेने लगे, तो मेरा खयाल है कि वे उसका स्वागत करेंगे। तालीमके मामलेमें यह याद रखना चाहिये कि जो तालीम उनकी ज़िन्दगीके साथ नज़दीकका सम्बन्ध रखती हो, और जो उनकी माली हालत सुधार सके, उसे छोड़कर दूसरी किसी तालीमकी ओर उनका खिंचना मुमकिन नहीं।

कुदरती तौर पर ही उनकी खास दिलचस्पी तो अपनी माली हालत सुधारनेमें ही है, फिर भी अपनी समाजी दिक़्क़तें भी उनको बुरी तरह खटकती हैं। उनमें जो थोड़ा सुधार हो पाया है, उसकी वजहसे वे कुछ जागे हैं और समाजमें अपने हलके दरजेका दुःख उन्हें ज़्यादा तेज़ीके साथ खटकता है। ज़्यादातर हरिजन अनपढ़ हैं। पहले वाल्मीकि-मंदिरमें दिन और रातका एक-एक मदरसा लगता था। लेकिन आखिर हरिजन-बालकोंको आम मदरसोंमें दाखिल करनेका फ़ैसला किया गया और तबसे बस्तीके वे मदरसे बन्द कर दिये गये।

(' हरिजन 'से)

औद्योगिक चिकित्सा (दस्तकारीसे इलाज)में कताईकी जगह

कताईके कई फ़ायदे हैं। औद्योगिक चिकित्सामें भी इसका फ़ायदा काफ़ी दिलचस्प है। इसकी एक मिसाल एक भाई देते हैं, जो खुद बीमार हैं और गवर्नमेण्ट अस्पताल मदुराके आर्थोपेडिक वार्डमें रीढ़की हड्डीकी तकलीफ़का इलाज करवा रहे हैं। वे लिखते हैं :

"क़ौमी हफ़्तेमें मैं बिस्तर पर पड़ा था, तो भी मैंने यज्ञके तौरपर तकली पर कातना शुरू किया। दो और बीमार भी खिंच आये। और जो तकलियाँ हमारे पास थीं, उनपर हमने बारी-बारीसे काता। पिछले साल भी जब मैं आयुर्वेदिक आश्रममें इलाज करवा रहा था, तो क़ौमी हफ़्ते और गांधी-जयन्तीके हफ़्तेमें मैंने यही सब किया था। उस वक़्त भी कुछ बीमार साधु और आश्रमके कुछ लोग यज्ञमें शामिल हुए थे। हम कुल १७के क़रीब थे। और ज़्यादातर लोगोंके पास तकलियाँ थीं। वे उसी वक़्त बनाई गई थीं। जो सूत काता गया, वह हमने बतौर चन्देके कस्तूरबा-फण्डमें भेज दिया। इससे मेरा हौसला बढ़ा। जब मैंने देखा कि इस दफ़ा हमें देखकर दिन-ब-दिन ज़्यादा मरीज़ कातनेकी तरफ़ खिंच रहे हैं, तो मैंने बाँस और ठीकरीसे तकलियाँ बनानी शुरू कर दीं। मई, सन् '४६में तक़रीबन् १२ मरीज़ोंने, जो टूटी टाँगों और रीढ़की हड्डियोंकी वजहसे बिस्तर पर पड़े थे, ६ गुण्डियाँ कातीं। दूसरे हफ़्तेके खतम होते-होते कुल ३० तकलियाँ चलने लगीं और दोनों हफ़्तोंको मिलाकर कुल २४ गुण्डियाँ काती गईं। ये मैंने अखिल भारतीय चरखा-संघको उन चार लोगोंकी मेम्बरीकी फ़ीसके रूपमें भेज दीं, जिन्होंने सबसे ज़्यादा काता था।

"यह एक सरकारी अस्पताल है, जिसमें ८०० बीमार हैं। इसमेंसे मेरे वार्डमें ७५ बीमार हैं। यह आर्थोपेडिक वार्ड है, जिसमें टूटी हुई हड्डियों और हड्डियोंके तपेदिक वग़ैराका इलाज किया जाता है और बीमारोंको महीनों तक, कई दफ़ा बरसों तक, बिस्तर पर रहना पड़ता है। आजकलके कातनेवालोंमेंसे तिहाई हिस्सा बच्चे हैं। ऐसा पाया गया है कि दूसरी चीज़ोंके सिवा कताईमें मरीज़को चंगा करनेकी भी शक्ति है। बीमारोंको एक ऐसा काम मिल जाता है, जो उन्हें अच्छा लगता है। वे अपना दर्द और फ़िक्र भूल जाते हैं। इतनी बातका ध्यान ज़रूर रखता हूँ कि बीमार जोशमें आकर कहीं अपनी ताक़तसे ज़्यादा काम न कर लें। हाल ही में आँखोंके वार्डका एक मरीज़ हमारे साथ इस काममें शामिल हो गया है।"

आखिरमें लेखक पूछते हैं कि क्या इस क़िस्मके कामको एक अस्पतालमें प्रोत्साहन देना (हौसला अफ़ज़ाई करना) ठीक होगा! और जो सूत निकले उसका अच्छे-से-अच्छा इस्तेमाल क्या हो सकता है?

पश्चिममें डॉक्टर लोग इस बातको आम मानने लगे हैं कि औद्योगिक चिकित्सा मरीज़के अच्छे होनेमें बड़ी मदद देती है, और कुछ अस्पतालोंमें, खास कर अमेरिकामें, यह इलाजका एक ज़रूरी हिस्सा बन गई है। हिन्दुस्तानमें अभी तक इसको अपनाया नहीं गया। जो भला करनेवाली मजलिसें बीमारोंके फ़ायदेमें दिलचस्पी लेती हैं, उन्हें इसको ज़्यादा रिवाज़ देना चाहिये और अस्पताल चलानेवालोंको भी इस इलाजके तरीक़ेको बढ़ावा देना चाहिये। वे लोग कपास, कातने, तुनाई करने वग़ैरा के साधन और हुनरकी तालीम देनेके ज़रिये मुहैया करनेमें मदद दे सकते हैं। जितना सूत काता जाय, वह खैरातकी संदूकचीमें डाल दिया जाय। इससे या तो अस्पतालके लिए सच्ची खादी खरीदी जाय और अगर सूत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफ़ी है, तो अस्पतालके लिए कपड़ा बुनवा लिया जाय। अगर बीमार अपने उत्साह (जोश)का असर अपने रिश्तेदारों और अपनी सेवा करनेवालों पर भी डाल सके, तो वे यह महसूस करेंगे कि बीमारीसे अच्छा होनेका समय बेकार नहीं गया, बल्कि एक क़ीमती सेवामें लगा है।

मसूरी, ७-६-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

सत्यव्रतका इतिहास

मामूली तौर पर समूची आर्य जनता और ख़ासकर हिन्दुस्तानमें रहनेवाले आर्य बहुत सत्यप्रिय (सचाईपसन्द) और सत्यकी विजय (सचाईकी फ़तहमें) में श्रद्धा रखनेवाले थे। इस सत्यप्रेम और सत्य-श्रद्धाका प्रतिबिम्ब (अक्स) उनके धर्मशास्त्रों पर पड़ा है। रोमन लोग कहते थे कि 'सत्य महान् है और उसकी जय है,' लेकिन जिन दिनों दुनियामें किसीने रोमका नाम तक न सुना था, उन दिनों मुण्डक उपनिषद्के ऋषिने यह साक्षात्कार किया था:

सत्यमेव जयते नानृतम्।
सत्येन पन्था विततो देवयानः॥

'सत्यकी ही जय होती है, असत्यकी नहीं। सत्यसे देवलोकका मार्ग खुल जाता है,' और इस ऋषिने भी ऋग्वेदकी एक ऋचाका ही प्रतिघोष किया था:

सत्यासत्ये वचसी पस्पृधाते।
तयोर्यत्सत्यं यतरदृजीयस्।
तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत् ॥ ७-१०४-१२॥

'सत्य और असत्यमें होड़ बँधती है। इनमें जो सच्चा और सीधा होता है, उसकी सोम (भगवान्) रक्षा करता है, और असत्यका हनन करता है (मारता है)।'

मनुष्य-जातिको वाक् या वाणी (बोलनेकी शक्ति) प्राप्त होने पर उसने अपनी उन्नतिके पथ पर बहुत बड़ा डग बढ़ाया। हर्डरके शब्दोंमें कहें तो, 'एम्फियनकी बाँसुरीसे नगर-रचना नहीं हुई, किसी इन्द्रजालसे रेगिस्तानकी जगह फुलवारी नहीं बनी। यह सब भाषाका प्रताप है, जो समष्टिकार्यकी जननी है।' इसीलिए तो हमारे यहाँ वाणीको देवी-स्वरूप माना है। वाणी प्राप्त होनेके बाद मनुष्यने अग्निका उपयोग करना और अपनी इच्छासे उसे सुलगाना जाना। अग्निके प्रतापसे मनुष्य वानरसे नर बना। अगर किसी एक मनुष्यने अग्निका पता लगाया है, तो उससे बढ़कर कोई शोधक (खोजी) हुआ नहीं। आगसे मनुष्यने अन्न राँधना, अलाव जलाना और जंगली जानवरोंको डराना सीखा। अग्निका सेवन करके मनुष्य जातिने दिग्विजय किया। आग न होती, तो मनुष्य बीचके अक्षांश (लैटिट्यूड्स)का जाड़ा बरदाश्त न कर पाता। साथ ही, एक लोहा ही नहीं, बल्कि सोना धन सी मनुष्यको अग्निके प्रतापसे ही प्राप्त हुआ। इस तरह अग्नि मनुष्यके लिए बहुत ही ज़रूरी चीज़ बन गई। ऐसी हालतमें पारसियों और हिन्दुओंके पुरखोंने उसे देव समझकर पूजना शुरू किया, तो उसमें कोई आश्चर्य नहीं। लकड़ीके दो टुकड़ोंको आग पैदा होने तक रगड़नेकी, उनका मन्थन करके आग प्रगटानेकी, प्राचीन पद्धतिने धार्मिक क्रियाका रूप धारण कर लिया। रोज़-रोज़ आग जलानेकी मेहनतसे बचनेके लिए हरएक आर्य गृहस्थ सारी रात आग बचाये रखता था, और आज भी ऐसा करनेवाले अग्निहोत्री हमारे बीच मौजूद हैं। पारसी भाइयोंकी अगियारी (अग्नि-आगारी) तो मशहूर ही है, जहाँ १२०० बरस पहले उनके पुरखों द्वारा ईरानसे लाई गई अग्नि आज भी बराबर जलती है।

इसमें अचरजकी कोई बात नहीं; लेकिन हमारी अग्निपूजामें अचरजकी बात यह है कि शतपथब्राह्मणके अनुसार जिस मनुष्यने अग्निकी स्थापना की है, उसे कभी झूठ न बोलना चाहिये:

नवाऽऽहिताग्निनाऽनृतं वदितव्यम्। २-२-२-२०।

बल्कि सच ही बोलना चाहिये।

सत्यमेव वदेत्।

और इसी सिलसिलेमें यह भव्य घोषणा (शानदार ऐलान)की है कि सत्यका आचरण ही अग्नि-स्थापनाकी विधि है:

तस्य वा एतस्याग्न्याधेयस्य सत्यमेवोपचारः।

कहा जाता है कि मनुष्य भगवान्की मूर्ति अपने-जैसी ही बनाता है। इसके अनुसार हम देखें कि हमारे पुरखे देवोंके आचारके बारेमें कैसी कल्पना करते थे। उसी ब्राह्मणमें आसुरी नामके आचार्यका यह वचन मिलता है: 'देव एक ही व्रतका पालन करते हैं, और वह है, सत्य; इसलिए सच ही बोलना चाहिये':

उवाचासुरिरेकं ह वै देवा व्रतं चरन्ति यत्सत्यं
तस्मादु सत्यमेव वदेत्। १४-१-१-३३।

फिर कहा है कि देवोंने असत्यको छोड़ा और सत्यको अपनाया:

ते देवा उत्सृज्यानृतम् सत्यमन्वालेभिरे। ९-५-१-१३।

इससे भी आगे बढ़कर लिखा है कि सत्य ही ब्रह्म अथवा परमेश्वर है:

सत्यमेव ब्रह्म। २-१-४-१०।

शतपथब्राह्मणकी रचनाके बाद शायद ३ हज़ार बरस बीतने पर गांधीजीने अनजाने इस सिद्धान्तका पुनरुद्धार किया है।

बाह्य शौच (बाहरी सफ़ाई)के सब नियम तो धर्ममें गूँथ लिये गये हैं, किन्तु शतपथब्राह्मण इससे भी आगे बढ़कर कहता है कि जो झूठ बोलता है, वह अशुचि या नापाक है:

अमेध्यो वै पुरुषो यदनृतं वदति। ३-१-२-९०।

हमारी सत्य-प्रीतिका यह प्रमाण (सबूत) ३ हज़ार बरस पहलेका है। इससे आगे बढ़ने पर प्राचीन भारतमें आकर लौटे हुए ग्रीक लोग गवाही देते हैं कि 'चोरी क्वचित् ही होती है। भारतवासी कचहरीमें (अदालतमें) क्वचित् ही जाते हैं। . . . वे अपने घर और अपना धन ज़्यादातर खुला रखते हैं। सत्य और सदाचारके लिए उनके मनमें इज़्ज़त है' (स्ट्रेबो)। और कहा है, 'वे इतने प्रामाणिक (ईमानदार) हैं कि उनके घरोंको तालोंकी और उनके वादोंको लेखी दस्तावेज़ोंकी ज़रूरत नहीं पड़ती,' और एरिअन अपनी 'इन्दिका'में लिखता है: 'किसी हिन्दुस्तानीको झूठ बोलते नहीं देखा।'

बादके ज़मानेमें हमारी सत्यप्रीति इतनी तीव्र नहीं रही, लेकिन भगवान्का अनुग्रह है कि आज भी मामूली लोगोंमेंसे यह शुभ लक्षण बिलकुल लुप्त नहीं हो गया है। इसकी दो मिसालें मेरे मामा श्री चतुरभुज लक्ष्मीचन्द बावीशीने मुझे दी थीं:

मेंदरडावाले पुरुषोत्तम मावाणीने काठी दरबार श्री वालाभाई पर ४,४०० रुपयेका दावा दायर किया। वालाभाईने कहा, पुरुषोत्तमके पिता दामोदर मवाणी जो कह देंगे, सो मुझे मंज़ूर होगा। दामोदरभाई अदालतमें हाज़िर हुए और बोले, जहाँ तक मैं जानता हूँ पुरुषोत्तमने दरबारको २ हज़ार रुपये दिये थे। इस पर वालाभाईने पुरुषोत्तमको पूरे ४,४०० रुपये गिन दिये।

जेतपुरके बड़े चौकमें ढोरोंके पानी पीनेकी किसी जगहके बारेमें हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच झगड़ा पैदा हो गया था। हिन्दुओंने कहा, ९५वें बरसके दाउद बेगा और दूसरे अबा अबू, ये दो मेमन जो कह देंगे, सो हमें मंज़ूर होगा। इन सज्जनोंने कहा कि जगह हिन्दुओंकी है। इस तरह जेतपुरके हिन्दुओंको जो जगह मिली थी, वहाँ आज भी एक साधुकी कोठरी मौजूद है।

Fiat Justitia ruat coelum=इन्साफ़ करो, फिर चाहे आसमान ही क्यों न टूट पड़े।

('हरिजनबन्धु'से) वालजी गोविन्दजी देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताड़के गुड़का धन्धा

ताड़के गुड़के धन्धेके बारेमें श्री गजानन नायकके पत्रका निचोड़ नीचे दिया है । श्री नायक इस बातकी हिमायत करते हैं कि इस ज़रूरी देहाती उद्योग या दस्तकारीके खास-खास पहलुओं पर ठीक तरहसे सोचा जाना चाहिये और बग़ैर किसी बदज़नीके इसे हाथमें लिया जाना चाहिये ।

ताड़के गुड़का धन्धा —

(१) **मुल्कके लिए .खुराक पैदा करनेमें ज़बरदस्त मदद पहुँचा सकता है ।** आज मुल्कमें ईखकी फ़सलके लिए जो क़रीब ४० लाख एकड़ उपजाऊ ज़मीन रुकी हुई है, वह सब नाज उगानेके काम आ सकती है ।

(२) **शराब-बन्दीके काममें सच्ची मदद पहुँचा सकता है ।** अगर ताड़ और खजूरके पेड़ोंका सोच-समझकर इस्तेमाल किया जाय, तो ताड़ी चुआनेवालोंकी बेकारीके सवालको काफ़ी हद तक हल किया जा सकता है ।

(३) **एक समाजवादी काम है ।** यह ईखके उस धन्धेसे अलग ढंगका धन्धा है, जिसमें मुट्ठीभर लोगोंको ही फ़ायदा होता है । यह सच्चा देहाती धन्धा है और अगर इसको ठीक तरहसे संगठित किया जाय, तो गाँवके लोगों पर इसका दूर तक पहुँचनेवाला अच्छा असर पड़े बिना न रहे ।

सूबोंकी सरकारोंको नीचे लिखे काम जल्दी-से-जल्दी करने चाहिये :

(१) चुंगी उठा ली जाय :

(क) ताड़ और खजूरके जिन पेड़ोंके रससे गुड़ बनाया जा सकता हो, उनको बिना किसी लागके छेदने या चुआनेकी छूट दी जानी चाहिये । इन पेड़ चुआनेवालोंको कच्चा माल पानेके लिए ज़रूरी सहूलियतें न दी जायँ, तो यह धन्धा तरक़्क़ी नहीं कर सकता । ताड़के गुड़की पैदावारके, बिक्रीके, उसे एक जगहसे दूसरी जगह ले जाने और उसे अपने पास रखने वग़ैराके बारेमें जो रिआयतें ईखके गुड़को दी जाती हैं, वे सब इसके लिए भी दी जानी चाहिये ।

(ख) **सताना बन्द किया जाय :** दी गई रिआयतके दुरुपयोगको रोकनेके लिए और ज़रूरी निगरानी रखनेके लिए तैनात की गई आबकारी पुलिसके हाकिमोंको चाहिये कि वे गुड़ बनानेके लिए ताड़ या खजूर छेदनेवालोंको सताना छोड़ दें ।

(२) कच्चा माल मुहैया करनेके बारेमें :

(क) ताड़ या खजूरके ऐसे किसी पेड़को, जिसे छेदकर रस चुआया जा सकता है,— फिर उसका मालिक कोई भी क्यों न हो — काटने पर पुलिसको चाहिये कि वह इस कार्रवाईको नोट करे और इसे एक तरहका जुर्म समझे ।

(ख) गुड़ या खाँड बनानेके लिए नामका मुआवज़ा लेकर लोगोंको सरकारी पेड़ इस्तेमालके लिए दिये जाने चाहिये । ऐसे पेड़ोंके खानगी मालिक उन्हें छेदनेके लिए जो दाम लें, उस पर सरकारी रोक लगनी चाहिये । अगर मालिक .खुद ही उन पेड़ोंका गुड़ बनानेमें इस्तेमाल न करते हों, तो उनसे कहा जाना चाहिये कि वे अपने पेड़ दूसरोंको किरायेसे दें ।

(ग) जो झाड़ आज मौजूद हैं उनमेंसे कितने गुड़ बनानेके काम आ सकते हैं और कितने नये झाड़ रोपनेकी ज़रूरत है, यह जाननेके लिए ताड़ और खजूरके उन पेड़ोंकी तफ़सीलवार तहक़ीक़ात होनी चाहिये, जिनके रससे गुड़ बनाया जा सकता है ।

(घ) पुनर्निर्माणके लिए तैयार की गई योजनाओंमें ताड़ और खजूरके उन पेड़ोंकी बाक़ायदा परवरिशका खयाल रक्खा जाना चाहिये, जिनके रससे गुड़ बन सकता है ।

(३) तालीम और सरंजामकी मदद :

(क) ताड़का गुड़ बनानेकी तरकीब सीखना चाहनेवाले सभी देहातियोंको इसकी तालीम देनेका मा.कूल इन्तज़ाम किया जाना चाहिये । इसके लिए ज़रूरी साहित्य (अदब) मुक़ामी ज़बानोंमें मुहैया किया जाना चाहिये । और दस्तकारीकी तालीम देनेवाले मदरसोंमें प्रयोगोंके ज़रिये गुड़ बनानेका तरीक़ा सिखानेकी सहूलियत दी जानी चाहिये ।

(ख) ऐसा इन्तज़ाम किया जाना चाहिये, जिससे गुड़ बनानेका ज़रूरी सामान मुक़र्रर क़ीमत पर मिल सके ।

(ग) मुनासिब देख-रेख रखते हुए सरकारी जंगलोंसे ईंधनके लिए सूखी पत्तियाँ और डालियाँ वग़ैरा मुफ़्त दी जानी चाहिये ।

(४) बिक्रीकी सहूलियतें :

(क) बीचके व्यापारियों या दलालोंको टालनेके लिए ताड़का गुड़ बनानेवालोंकी कोऑपरेटिव सोसाटियाँ क़ायम की जानी चाहिये ।

(ख) तैयार मालको एक जगहसे दूसरी जगह ले जानेकी सहूलियतें दी जानी चाहिये ।

(ग) अस्पतालों और जेलों जैसी सरकारी संस्थाओंको चाहिये कि वे ताड़के गुड़ और ताड़ या खजूरकी खाँडके इस्तेमालको तरजीह दें ।

(५) .खुराककी पैदावारको बढ़ानेवाला :

जो सरकारी ज़मीन खेतीके काममें नहीं आती है, या पड़ती पड़ी रहती है, ताड़ और खजूरके पौधोंको उगानेमें उसका इस्तेमाल किया जाना चाहिये, ताकि ताड़का गुड़ ईखके गुड़की जगह ले सके । इसके लिए खानगी ज़मीनके मालिकोंको सरकारकी तरफ़से माली इमदाद दी जा सकती है ।

('हरिजन' से)

आसाममें कस्तूरबा स्मारकका काम

श्रीमती अमलप्रभादेवीने सरानियाके अपने कामका जो ब्योरा भेजा है, नीचे उसका सार दिया जाता है :

" देहातसे आई हुई १६ नौजवान बहनें तालीम हासिल कर रही हैं । इनमें ज़्यादातर बहनें शिक्षिकायें हैं, और उनमें दो हरिजन हैं । दो बहनें हमेशा काम करनेवाली हैं । ये दूसरी बहनोंके साथ ही रहती हैं और उनके जैसी ज़िन्दगी बिताती हैं । कार्यकर्त्ता बहनोंकी और श्रीमती अमलप्रभादेवीकी देखरेखमें ये बहनें रसोईका और घरका दूसरा सब काम .खुद ही करती हैं । सिर्फ़ पानी लानेके लिए बाहरवालोंकी मदद ली जाती है, क्योंकि वह कुछ दूरसे और चढ़ाई चढ़कर लाना पड़ता है ।

रेशमकी कुकड़ियाँ भरना और रेशम बुनना, ये दो खास घरेलू दस्तकारियाँ हैं । चूँकि यह काम नया था, इसलिए शुरूके डेढ़ महीनेमें कम पैदावार हुई । फिर भी ३०) रुपयेकी क़ीमतका एक थान बुना गया है और दूसरे दो थानोंके लिए १२०) रुपयेकी क़ीमतका रेशम तैयार हो चुका है । इसमेंसे कोशेटोंकी क़ीमत घटाने पर असल मुनाफ़ा ८२) रुपये हुआ है । सूती खादी भी तैयार हो रही है, और बहनोंको उसकी सब क्रियाएँ सिखाई जाती हैं । रोज़के काममें पिंजाईको भी शामिल किया गया है । फरवरी महीनेमें कुल ३५ सेर साग-सब्ज़ी पैदा की गई । रोज़की तालीममें शारीरिक (जिस्मानी) क़वायद भी रक्खी गई है । तालीम पानेवाली बहनें हफ़्तेमें एक दिन गाँवके लोगोंकी सेवा करनेके लिए गाँवमें जाती हैं ।

बौद्धिक पढ़ाईके दरजोंमें बहनोंको नीचे लिखी चीज़ें सिखाई जाती हैं : हिन्दुस्तानी, .खुराक, रसोई और बगीचा वग़ैरा तैयार करनेका प्राथमिक विज्ञान, तन्दुरुस्ती और सफ़ाईके नियम, रचनात्मक कार्यक्रमके सिद्धान्त (उसूल) वग़ैरा । बाहरके कुछ दोस्तोंने इन विषयों पर भाषण करके हमारी मदद की है ।

.खुराक सादी लेकिन ताक़त और तन्दुरुस्ती देनेवाली है । उम्मीद की जाती है कि कुकड़ियाँ भरनेकी कलों और करघोंकी तादाद बढ़ने पर कपड़ेके मामलेमें हम पूरी तरह अपने पैरों खड़े हो सकेंगे । "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवाल-जवाब

उस पार झाँकनेका ख़ब्त

स०—एक कवि (शायर) लिखते हैं :

"ऐ ईसामसीह, काश कि हम अपने गुज़रे हुओंको दम भरके लिए ही देख सकते, और उनसे जान सकते कि वे क्या हैं और कहाँ हैं ?"

इसके बारेमें आपकी क्या राय है ?

ज०—ऊपरकी सतरोंमें कवि कई दुःखभरे दिलोंकी पुकार ज़ाहिर करता है। फिर भी जो मन पूरी तरह बेलाग है, वह इस बातकी परवाह ही नहीं करता कि आगे क्या होगा। दूसरे लफ़्ज़ोंमें यह कहा जा सकता है कि ऐसी ख्वाहिश (इच्छा) रखनी ठीक नहीं। कार्डिनल न्यूमनके नीचे लिखे भजनमें बताया गया है कि असलमें हमारे मनकी हालत कैसी होनी चाहिये :

"मुझे दूरका दृश्य या नज़ारा देखनेकी ख्वाहिश नहीं,
मेरे लिए एक क़दम बस है।"

नई दिल्ली, १५-६-'४६

लूट-मार

एक भाई लिखते हैं :

"फ़र्ज़ कीजिये कि एक तरफ़ एक सरकारी या ग़ैर-सरकारी गोदाममें अनाज पड़ा सड़ रहा है, और दूसरी तरफ़ लोग इसलिए भूखों मर रहे हैं कि बाज़ारमें अनाज नहीं मिलता। उस हालतमें कार्यकर्त्ताओं (कारकुनों)को क्या करना चाहिये ? जिस तरह आपने धरासणाके नमक पर धावा बोला था, क्या उस क़िस्मकी कोई तजवीज़ काममें लानेकी इजाज़त है ? नहीं तो नाज लूटने या बेज़बान जानवरोंकी तरह मर जानेके सिवा लोगोंके पास और क्या चारा है ? पर ये दोनों बातें आपको पसन्द नहीं।"

यह तो सबको मानना चाहिये कि लूट-मार अपने-आप कभी फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती। जहाँ कहीं यह दावा किया जाता है कि इससे फ़ायदा पहुँचा, वहाँ इसका असर सिर्फ़ इतना ही हुआ कि सरकारका ध्यान एक सख्त ज़रूरतकी तरफ़ खिंच गया। जो तरीक़ा मैंने सुझाया है, वह सबसे ज्यादा कारगर है; क्योंकि वह .खुद भी अच्छा है और मुज़ाहिरे (प्रदर्शन)की नज़रसे भी असरकारी है। वह तरीक़ा .खुद भी अच्छा है, क्योंकि जो लोग भूख-हड़ताल करते हैं, वे अपने इरादेका पक्कापन दिखाते हैं, जो उन्हें भूखसे बेकल नहीं होने देता। वह लोगों और सरकारके ज़मीर या आत्माको भी जगाता है, बशर्ते कि यह मान लिया जाय कि सरकारके भी कोई आत्मा हो सकती है। मेरी निगाहमें धरासणा पर नमकके धावेमें काफ़ी ग़लतियाँ हुईं। लेकिन उन्हें छोड़ दें, तो वह अपनी क़िस्मकी एक अनोखी चीज़ थी। वह एक बहादुराना लड़ाई थी, जिसकी तकलीफ़ें बड़ी दिलेरीके साथ सही गईं। लेकिन उसमें और लूट-मारमें जो फ़र्क़ है, उसे अच्छी तरह समझकर ध्यानमें रखना चाहिये। धरासणामें नमकके कारखानोंको हमने देशकी मिल्कियत (सम्पत्ति) मान लिया था। उनको ज़बरदस्ती छीन लेनेका कोई इरादा न था। लड़ाई तो यह जतानेके लिए लड़ी गई थी कि ज़मीन या समन्दरसे जितना नमक निकलता है, उस पर क़ौमका हक़ है। अगर वह धावा कामयाब हो जाता, यानी अगर सरकार हमारी बात मान लेती, तो किसी कारण वे मुसीबतें होतीं, जो क़ौमने इस धावेके सिलसिलेमें सहीं। और असल बात तो यह है कि जो तकलीफ़ें लोगोंने सारे देशमें सहीं, उन्हींकी वजहसे गांधी-इरविन समझौता हो सका। इससे यह बात साफ़ हो गई होगी कि जिस लूटका खयाल इन भाईके दिमाग़में है, वह लूट और धरासणाका धावा दो बिलकुल अलग-अलग चीज़ें हैं।

नई दिल्ली, १३-६-'४६

भंगियोंकी हड़ताल

जिन लेखकने यह पूछा है कि नाज लूटना ठीक है या नहीं, वे यह भी पूछते हैं कि अगर हड़तालके सिवा कोई चारा न रह जाय, तो बेचारे भंगियोंको क्या करना चाहिये ? वे .गुस्सेमें आकर पूछते हैं : "क्या भंगी गन्दगीमें सड़ते हुए अपना काम उसी तनख्वाह पर करते जायँ, जिससे उनका पेट भी नहीं भरता ?"

सवाल ठीक है। मेरा यह दावा है कि ऐसी हालतोंमें हड़ताल ठीक इलाज नहीं। भंगियोंको चाहिये कि वे जनताको, और खासकर उस म्युनिसिपल कमेटीको, जिसमें वे नौकर हैं, एक नोटिस दें, कि उनको अपना काम छोड़ देना पड़ेगा, क्योंकि इस कामके करनेवालोंको ज़िन्दगीमें भूखों मरनेके सिवा कुछ नहीं मिलता। अपना काम हमेशाके लिए छोड़ देने में और हड़ताल करनेमें बड़ा फ़र्क़ है। हड़ताल थोड़ी देरके लिए होती है, और उसमें आशा रहती है कि तकलीफ़ दूर हो जायगी। एक कामको हमेशाके लिए इसलिए छोड़ दिया जाता है कि तकलीफ़के दूर होनेकी कोई आशा नहीं होती। अगर काम ठीक तरीक़ेसे बन्द किया जाय, तो बन्द करनेवालोंको काफ़ी दिन पहले नोटिस देना चाहिये। और यह भी आशा होनी चाहिये कि किसी और काममें उन्हें ज्यादा पैसे मिल जायँगे और वे साफ़-सुथरी ज़िन्दगी बिता सकेंगे। ऐसा क़दम समाजको एक शर्मनाक नींदसे झँझोड़कर जगा देगा। वह जनताके ज़मीर (अन्तरात्मा) पर जमी हुई काईको साफ़ कर देगा। आज इससे आत्मा घुटी जाती है। एक ही बारमें भंगियोंके कामका दरजा बढ़ जायगा और वह एक सुन्दर हुनर गिना जाने लगेगा। यह दरजा उसे बहुत पहले मिलना चाहिये था।

नई दिल्ली, १५-६-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

बलि

एक भाई मैसूरसे लिखते हैं :

"मैसूरके हरिजन मन्दिरोंमें पशुओंकी बलि दिया करते हैं। मैसूर ज़िलेके कृष्णराजनगर ताल्लुक़ेमें बारी-बारीसे एक-एक क्षेत्रकी यात्रा हर साल चला करती है। इस साल यह यात्रा ३ जनवरीसे २५ जनवरी तक चली थी, जिसमें हर रोज़ तीन-चार बकरोंकी बलि दी जाती थी।

"दूसरी बलि सावन महीनेमें हर सनीचरको दी जाती है। इस मौक़े पर हरिजन ही नहीं, बल्कि हिन्दू-धर्मके ऊँचे ठेकेदार भी बलि दिया करते हैं। इसके साथ वे मदिरा-पान (शराब-नोशी) भी करते हैं।

"सबसे ज्यादा दुःखकी बात तो यह है कि वे गोमांस भी खाते हैं। मेरे लिए ही नहीं, बल्कि सारे हिन्दुओंके लिए यह एक शर्मकी बात है कि भगवान् रामके मन्दिरके सामने भी बकरों वग़ैराका वध (ज़बह) होता है।"

अगर यह बात सही है, तो एक दृष्टि (नज़र) से ठीक ही सारे हिन्दुओंके लिए शर्म की बात है। लेकिन सिर्फ़ इतना कह देनेसे पाप थोड़े ही धुल जाता है। सबका कह देनेसे एककी ज़िम्मेदारी मिट नहीं सकती। इसलिए मेरा कहना है कि पहला काम लेखकका है, बादमें जिस जगह बलि दी जाती है, वहाँवालोंका है, फिर मैसूरके राजा और वहाँकी प्रजाका और इसी तरह सिल-सिलेवार कर्नाटक, मद्रास प्रांत (सूबा) और हिन्दुस्तानका। इस तरीक़ेसे चलने पर ही कामयाबी हो सकती है। ऐसा काम अहिंसासे ही किया जा सकता है। तभी एक ज़मानेसे चलते आये पापका नाश हो सकता है। इसलिए लेखकसे ही काम शुरू हो सकता है। सो कैसे हो ? इस बारेमें काफ़ी लिख चुका हूँ।

नई दिल्ली, १५-६-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुसावल ताल्लुकेमें हरिजन-कार्य

श्री ठक्कर बापा लिखते हैं :

"भुसावल ताल्लुकेमें बड़े पैमाने पर सुन्दर हरिजन-कार्य करनेका इरादा किया है । इसके लिए पिछली १४वीं मईको दो सभाएँ रक्खी गई थीं । श्री वैकुण्ठभाई मेहता, श्री गणपतराव तापसे, श्री बर्वे, श्री दास्ताने और मैं, इतने लोग हाज़िर थे । आशा है कि देहातमें हरिजनोंके लिए कुएँ खुल जायँगे । देहातियोंने अच्छा उत्साह दिखाया है, इससे सफलताकी आशा रक्खी जाती है । चिह्न (निशानियाँ) अच्छे हैं ।"

यह बात ठीक है । अच्छी निशानियोंमें सबसे पहली तो शायद कांग्रेस मिनिस्ट्रीका होना ही है । इसका यह अर्थ नहीं कि अब ज़बरदस्तीसे काम लिया जायगा । ऐसे कामोंमें ज़बरदस्तीकी कम-से-कम गुंजाइश होती है । जो चीज़ लोगोंकी हड्डियोंमें घुस गई है, और जिसने धर्मका बाना पहन रक्खा है, उसे ज़बरदस्तीसे निकाला नहीं जा सकता । मगर जब राज विरुद्ध (मुख़ालिफ़) होता है, तो उसकी ताक़त दबे हुओंको और दबानेमें खर्च होती है, और अगर दबी हुई रिआयाकी मदद भी की जाती है, तो वह भी या तो ताक़तके ज़ोरसे की जाती है या अपना स्वार्थ साधनेके लिए । ऐसी सरकार जो कुछ करती है, ज़बरदस्तीसे ही करती है । कांग्रेसने यही ज़ोर आज़माईसे नहीं पाई । उसकी बुनियाद लोकमत पर टिकी हुई है । इसलिए हम उम्मीद रक्खें कि कांग्रेसी प्रधान लोगोंको समझाकर उनकी मददसे ही अपना काम आगे बढ़ायेंगे । इसका नतीजा यह होना चाहिये कि उनके इलाक़ेमें हरिजन-सेवा और ऐसे दूसरे काम ज़्यादा ज़ोरसे चलें और उनमें रुकावट डालनेवाली ताक़तें अपने आप बैठ जायँ । भुसावल जैसे छोटे-से इलाक़ेमें भी काम पक्की तरह चले, तो फल ज़्यादा निकलेगा । सारे देशमें, एक ही साथ, सब जगह काम हाथमें नहीं लिया जा सकता । जहाँ काम करनेवाले ज़्यादा होशियार और असरवाले होंगे, वहाँ काम ज़्यादा तेज़ीसे चलेगा । एक छोटे-से इलाक़ेमें भी .खूब अच्छा काम हो सके, तो दूसरे भी उसकी नक़ल करने लग जायँगे और सफलता जल्दी मिलेगी । हम उम्मीद रक्खें कि भुसावल ताल्लुक़ेमें ऐसा ही होगा ।

मसूरी, २९-५-'४६

('हरिजनबंधु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

मसूरीकी कुछ यादें

गांधीजी मसूरीमें दस दिनकी छुट्टी बिताने गये थे । इस छुट्टीसे उनका मतलब सिर्फ़ पब्लिक जलसों और मुलाक़ातोंसे बचना ही था । लेकिन इसमें वह पूरे-पूरे कामयाब नहीं हुए । कुछ विदेशी अख़बार-नवीसोंने उन्हें उनके एकान्तमें भी जा ढूँढ़ा और उनके साथ ऐसे मामलों पर बातचीत की, जिनमें उन्हें भी और गांधीजीको भी ख़ास दिलचस्पी थी । हाँ, राजनीति (सियासत) की मनाही थी । गांधीजी उनसे सुबह टहलते वक़्त मिला करते थे ।

तरक़्क़ीके रास्तेमें रोड़ा

एकने कहा : "आपका खादीका ग्राम-उद्योग (देहाती दस्तकारी) और देहातका आर्थिक (इक़्तिसादी) प्रोग्राम खेती-बारी करनेवाले मुल्कोंको बहुत पसन्द आयेगा । मसलन्, बाल्कनके मुल्क । लेकिन हममेंसे बहुतोंको, और आपके मुल्कके बहुतेरे लोगोंको भी ऐसा लगता है कि यह तरक़्क़ीके रास्तेमें एक रोड़ा है । बहुतसे लोगोंका ख़याल है कि बहुत बड़े पैमानों पर तजवीज़ोंके नक़्शे बनने और कारख़ाने खुलने ज़रूरी हैं ।"

गांधीजीने जवाबमें पूछा : "मेरी समझमें नहीं आता कि मेरा कार्यक्रम (प्रोग्राम) कैसे हिन्दुस्तानकी तरक़्क़ीमें रुकावट डाल सकता है ? हिन्दुस्तान तो ख़ासकर देहाती मुल्क है, जिसकी ज़्यादातर आबादी उसके सात लाख गाँवोंमें बसी हुई है ।"

मुलाक़ातीने बहस बदलते हुए यह दलील पेशकी कि यह शहरोंके साथ बेइन्साफ़ी होगी । भला, कलकत्ता और बम्बई-जैसे बड़े शहरोंका क्या होगा ?

गांधीजीने जवाब दिया: "हक़ीक़त इससे उलटी है । मेरी निगाहमें शहरोंका बढ़ना एक बुरी चीज़ है । यह मनुष्य-जातिकी और दुनियाकी एक बदक़िस्मती है, इंग्लैण्डकी बदक़िस्मती है, और हिन्दुस्तानकी बदक़िस्मती तो है ही; क्योंकि अंग्रेज़ोंने हिन्दुस्तानको उसके शहरोंकी मारफ़त ही चूसा है । शहरोंने गाँवोंको चूसा है । देहातका .खून वह सिमेण्ट है, जिससे शहरोंकी बड़ी-बड़ी इमारतें बनी हैं । मैं चाहता हूँ कि जिस .खूनने आज शहरोंकी नाड़ियोंको फुला रखा है, वह फिरसे देहातकी नाड़ियोंमें बहने लगे ।"

भूलका सुधार

लेकिन उन भाईको तसल्ली न हुई । उन्होंने दलील की : "माना कि एक बार ग़लती हो चुकी । पर मेरे ख़यालमें अब आपका यह मतलब तो नहीं है कि जहाँसे चले थे, ठीक वहीं वापस लौट आया जाय; चाहे इसमें आज तकका बना-बनाया सब काम चौपट ही क्यों न हो जाय ।"

गांधीजीने जवाब दिया : "क्यों नहीं ? एक बार ग़लतीका पता लगने पर हमारे पास एक ही रास्ता रहता है कि अपनी ग़लतीको मान लें, अपने क़दम वापस लौटा लें, और फिरसे काम शुरू करें ।"

लेकिन वे भाई अपनी बात पर डटे रहे । बोले : "सो कुछ भी हो । मगर आजके ज़मानेमें ख़याल यह किया जाता है कि इस मामलेमें पीछे क़दम हटाना तरक़्क़ीका रास्ता नहीं ।"

गांधीजीने जवाबमें पूछा : "अगर कोई जहाज़ समन्दरमें अपना रास्ता खो बैठता है, तो आप क्या करते हैं ? वह ग़लत रास्ते पर बढ़ता तो नहीं जाता, बल्कि जिस रास्तेसे आया था, उसी रास्ते फ़ौरन लौट पड़ता है, और फिर सही रास्ते चलना शुरू करता है । कोलम्बसने ऐसा कितनी ही दफ़ा किया होगा । नहीं तो वह हमेशाके लिए अपना रास्ता खो बैठता ।"

वे भाई पूछने लगे : "क्या इसका मतलब यह है कि आप शहरोंको उजाड़कर वहाँकी तमाम बस्तीको देहातमें वापस भेज देंगे ?"

"नहीं, ऐसा तो मैं नहीं करूँगा । मैं तो सिर्फ़ यही चाहता हूँ कि वे अपनी ज़िन्दगीको इस तरह बदलें, जिससे देहातियोंको चूसते न रहें, और अब भी पुरानी बेइन्साफ़ीका जितना बदला उन्हें दे सकते हैं, दे दें और उनके बरबाद हुए आर्थिक जीवन (इक़्तिसादी ज़िन्दगी) को फिरसे आबाद करनेमें मदद दें ।"

'अगर मैं डिक्टेटर होता'

इसके बाद मुलाक़ातीने बातचीतका मज़मून बदलते हुए पूछा : "अगर आपको एक दिनके लिए हिन्दुस्तानका डिक्टेटर बना दिया जाय, तो आप क्या करेंगे ?"

गांधीजीने जवाब दिया : "पहले तो मैं डिक्टेटर बनूँगा ही नहीं, और अगर एक दिनके लिए बना भी, तो उसे वाइसरायके अस्तबल साफ़ करनेमें लगाऊँगा, क्योंकि हरिजनोंके इन तंग और अँधेरे झोंपड़ोंको दूसरा और क्या नाम दिया जा सकता है ? यह बड़ी शर्मकी बात है कि वाइसरायके सायेमें ही हरिजनोंके इन झोंपड़ोंमें इतनी ग़रीबी और गन्दगी मौजूद है । वाइसरायको इतने बड़े घरकी ज़रूरत ही क्या है ? अगर मेरा बस चले, तो मैं उसको अस्पताल बना दूँ ।" और उन्होंने प्रेसीडेण्ट क्रूगरकी मिसाल दी, जिनके घरसे तो बिड़लाजीका 'बंगला' भी, जिसमें गांधीजी ठहरे हुए थे, ज़्यादा अच्छा था ।

बातको जारी रखते हुए वे भाई कहने लगे : "अच्छा जनाब, फ़र्ज़ कीजिये कि आपको दूसरे दिन भी डिक्टेटर रक्खा जाय, तो आप क्या करेंगे ?"

गांधीजीने हँसते हुए जवाब दिया : "दूसरा दिन भी पहले दिनकी तरह ही खर्च होगा ।" इसके बाद बहुत-सी दूसरी चीज़ों पर बातचीत चली, हिन्दुस्तानकी क़ौमी ज़बान (राष्ट्र-भाषा), अंग्रेज़ोंकी जगह, आज़ाद हिन्दुस्तानके सामने आनेवाली इन्तज़ामी (शासन-प्रबन्धकी) कठिनाइयाँ, और हिन्दुस्तान व इंग्लैण्डके आइन्दा तिजारती सम्बन्ध । हिन्दुस्तानकी ग़रीबीकी बात करते हुए बन्दरोंकी चर्चा भी आ गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलाक़ाती एकाएक पूछने लगे : "क्या हिन्दुस्तानियोंकी ग़रीबी बन्दरोंकी वजहसे नहीं है ?"

गांधीजी खिलखिलाकर हँस पड़े और कहने लगे : "हाँ ।" इसके बाद भी वे कुछ देर हँसते रहे । बेचारे मुलाक़ाती घबरा-से गये और कहने लगे : "श्रीमती नायडूने मुझे आपके विनोदी (ज़रीफ़) स्वभावसे आगाह कर दिया था ।"

"मैं अभी उसीकी एक बानगी आपको चखानेवाला था, लेकिन मैंने अपनेको रोक लिया ।" थोड़ी देर और हँसनेके बाद कहने लगे : "अच्छा, आपको असल कहानी ही सुना दूँ । हमारे मुल्कमें लोगोंको बन्दर कहते हैं । रावणकी लड़ाईमें बन्दरोंने रामचन्द्रजीकी मदद की थी । उसके बदलेमें उन्हें आशीर्वाद मिला था कि उन्हें चक्रवर्ती राज मिलेगा ।" सब हँस पड़े और मुलाक़ाती भी इस हँसीमें शामिल हो गये ।

इसके बाद अहिंसा पर बात चली ।

मुलाक़ाती पूछने लगे : "मसलन्, रूसके साथ हिन्दुस्तानका क्या सम्बन्ध (ताल्लुक़) होगा ? अगर वह हिन्दुस्तान पर हमला करे, तो आप क्या करेंगे ?"

"अगर मैं डिक्टेटर रहा, तो रूसके लिए यहाँ कोई काम ही न होगा । और अगर रूस आ ही गया, तो देखेगा कि यहाँ रहनेमें उसे कोई फ़ायदा नहीं । लेकिन ज़ाहिर है कि यह सपना इतना ऊँचा है कि कुछ दिनोंमें हम इस तक नहीं पहुँच सकते ।"

क्या विद्यार्थियों (तालिब-इल्मों)को विलायत भेजेंगे ?

फिर वे भाई पूछने लगे : "पुरानी पीढ़ीके तमाम लायक़ हिन्दुस्तानियोंने तो विलायतमें ही ऊँची तालीम पाई; जैसे, आपने । क्या हिन्दुस्तानके आज़ाद हो जाने पर भी आप चाहेंगे कि वह अपने नौजवानोंको तालीमके लिए पहलेकी तरह इंग्लैण्ड भेजता रहे ?"

गांधीजीने जवाब दिया : "नहीं, अभी नहीं । मैं ४० सालके बाद उन्हें बाहर भेजनेकी सलाह दूँगा ।"

वे भाई कहने लगे : "इसका मतलब यह है कि हिन्दुस्तानकी दो पीढ़ियाँ पच्छिमसे कोई फ़ायदा नहीं उठा सकेंगी ।"

इस पर गांधीजीने फिर वही अपने १२५ साल तक ज़िन्दा रहनेकी बात छेड़ी ।

गांधीजीने पूछा : "दो पीढ़ियाँ क्यों ? एक आदमीकी ज़िन्दगीमें १०० साल तो ठीक, ६० साल भी बहुत ज़्यादा नहीं होते । अगर हम ठीक क़िस्मका जीवन बितायें, तो हम ६० बरसमें बूढ़े नहीं हो जायँगे । बदक़िस्मतीसे इस मुल्कमें हम इस उम्रमें बूढ़े हो जाते हैं । मैं फिर कहूँगा कि उन्हें (विद्यार्थियोंको) तभी विलायत जाना चाहिये, जब वे पक्की उम्रको पहुँच जायँ । क्योंकि जब वे अपनी सभ्यता (तहज़ीब)की अच्छाईको समझ लेंगे, तभी वे अमेरिका और इंग्लैण्डकी अच्छाईको ठीक तरहसे समझकर अपना सकेंगे । ज़रा ख़याल कीजिये कि एक १७ सालका लड़का विलायत जाता है, जैसे मैं गया था, तो क्या होगा ? वह तो वहाँ पहुँचकर बिलकुल घबरा जायगा ।"

सचाई या अहिंसा

एक और दोस्तने गांधीजीसे एक शामको कहा : "गांधीजी, आप हमें आज़ादीकी ड्योढ़ी तक ले आये हैं, और इसके लिए हम आपको जितना धन्यवाद दें, कम है । मुझे पक्का विश्वास है, कि लोग इसका सारा जस अहिंसाको ही देंगे । क्योंकि वह आपकी सबसे प्यारी चीज़ है । लेकिन हमें ऐसा लगता है कि हमको अहिंसाके बजाय सचाईसे ज़्यादा ताक़त मिली है ।"

गांधीजीने जवाब दिया : "आपका यह ख़याल ग़लत है कि मैंने अहिंसाकी तरफ़दारी करके सचाईको दूसरी जगह दी है । आपका यह समझना भी उतना ही ग़लत है कि हमें सचाईने अहिंसासे ज़्यादा शक्ति दी है । इसके बरख़िलाफ़ मुझे तो पूरा विश्वास है कि जो कुछ तरक़्क़ी देशने की है, वह इसी वजहसे की है कि उसने अहिंसाको अपनी लड़ाईका हथियार बना लिया है ।"

उन दोस्तने जवाब दिया : "मेरा मतलब यह है कि मुल्कने आपकी अहिंसाको नहीं समझा; लेकिन सचाईको समझ लिया है और उसने मुल्ककी ताक़त बढ़ाई है ।"

गांधीजीने जवाब दिया : "बात तो बिलकुल इससे उलटी है । मुल्कमें इतना असत्य भरा है कि कई दफ़ा मेरा तो दम घुटने लगता है । मेरा विश्वास है कि अहिंसाका पालन ही हमें यहाँ तक ले आया है, चाहे उसमें कितने ही दोष (ख़ामियाँ) क्यों न रहे हों ।"

"और फिर, जैसा कि आपका ख़याल है, मैंने सचाईको दूसरा स्थान नहीं दिया ।" गांधीजीने बताया कि किस तरह जिनेवाके एक जलसेमें उन्होंने लोगोंको यह कहकर चक्करमें डाल दिया था कि पहले तो वे यह कहा करते थे कि परमेश्वर सत्य है, मगर अब वे इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि सत्य ही परमेश्वर है ।

लेकिन दोस्त हार माननेको तैयार नहीं थे । इसलिए दलील करते गये : "फिर भी आपका ज़ोर हमेशा अहिंसा पर रहा है । आपने अहिंसाको फैलाना अपना ध्येय (मक़सद) बना लिया है ।"

गांधीजीने जवाब दिया : "आप यहाँ भी ग़लती पर हैं । अहिंसा साध्य (मक़सद) नहीं है । साध्य सत्य है । लेकिन हम सचाईका दर्शन सिर्फ़ अहिंसाका पालन करते हुए ही कर सकते हैं । मगर हिंसाका यह ज़रूरी नतीजा नहीं । अगर हम एकदिल होकर अहिंसाके पीछे चलें, तो वह लाज़िमी तौर पर हमें सत्यके पास ले जायगी । इसीलिए मैं अहिंसाकी हिमायत करता हूँ । सचाई मेरे स्वभावमें थी । मगर अहिंसा मुझे बड़े कष्ट और मेहनतसे मिली है । लेकिन चूँकि अहिंसा साधन या ज़रिया है, इसलिए रोज़मर्राकी ज़िन्दगीमें इसीसे हमारा वास्ता पड़ता है । इसलिए हमें जनताको अहिंसाकी तालीम देनी है । सत्यकी तालीम इससे अपने-आप मिल जाती है, क्योंकि वह उसका क़ुदरती नतीजा है ।

नई दिल्ली, १७–६–'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रह पर कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीका ठहराव

दक्षिण अफ्रीकामें जो हिन्दुस्तानी सत्याग्रह कर रहे हैं, उनके बारेमें कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीने १५ जून, '४६ को नीचे लिखा ठहराव पास किया है :—

"कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीको इस बातसे काफ़ी तसल्ली है, गो कुछ फ़िक्र भी है, कि दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंने वहाँकी यूनियन पार्लमेण्टके उस क़ानूनके ख़िलाफ़ सत्याग्रह शुरू किया है, जिससे हिन्दुस्तानियोंके रास्तेमें काफ़ी रुकावटें पड़ गई हैं । कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीका ख़याल है कि इस आन्दोलनसे चाहे माली नुक़सान हो, लेकिन जहाँ तक हिन्दुस्तानियोंकी इज़्ज़त बचानेका सवाल है, इस आन्दोलन या तहरीकमें उसकी कामयाबीके बीज हैं ।

"कमेटी आशा करती है कि एक बार लड़ाई शुरू कर देनेके बाद सत्याग्रही उसे बग़ैर झुके आख़िर तक लड़ लेंगे । कमेटी सत्याग्रहियोंको यक़ीन दिलाती है कि उनकी इस बहादुराना लड़ाईमें वह उनके साथ पूरी-पूरी हमदर्दी रखती है । वह यह भी आशा करती है कि जो लोग ख़ुद सत्याग्रही नहीं हैं, वे किसी हालतमें उस लालचमें नहीं फँसेंगे, जो क़ानून उनके रास्तेमें डालता है, न ही वे उन रिआयतोंके फन्देमें आयेंगे, जो यूनियन गवर्नमेण्ट शायद उन्हें देनेका वादा करे । इस क़ानूनसे हिन्दुस्तानियोंको जो निचला दरजा दिया गया है, वह तभी मिट सकता है, जब यह क़ानून बिलकुल हटा दिया जाय । कमेटी आशा करती है कि जब तक हिन्दुस्तानकी हुकूमत अंग्रेज़ोंके हाथमें है, तब तक हिन्दुस्तानके वाइसराय खुल्लम-खुल्ला अपना पूरा-पूरा असर इन बहादुर सत्याग्रहियोंकी तरफ़से डालेंगे, और इस तरह वह इन बहादुरोंके लिए, जो मानवी अधिकारों (इनसानी हक़ों)के वास्ते एक शानदार लड़ाई लड़ रहे हैं, सारी दुनियाकी हमदर्दी हासिल कर लेंगे ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेसने क्या किया है ?

गुजरातके एक हरिजनभाई यों लिखते हैं :

" पिछले चुनावोंसे यह साफ़ हो गया है कि आज हिन्दुस्तानमें खासकर दो पार्टियोंका ज़ोर है — एक मुस्लिम लीग और दूसरी कांग्रेस । मुस्लिम लीगमें कोई हरिजन नहीं, मगर कांग्रेसमें बहुतसे हरिजन हैं । चुनावोंसे भी यह जाना जा सकता है कि कांग्रेसमें हरिजन ज़्यादा हैं, क्योंकि चुनावमें आम्बेडकर-दलकी बहुत कम जीत हुई है । मगर कांग्रेसमें इन कांग्रेसी हरिजनोंकी क्या जगह है ? जब कांग्रेसकी अलग-अलग कमेटियोंके चुनाव होते हैं, तो उनमें हरिजनोंको क्यों नहीं खड़ा किया जाता ? कहीं खड़ा किया भी जाता है, तो उनके खिलाफ़ सवर्ण (ऊँची जातवाले) कांग्रेसियोंको क्यों खड़ा होने दिया जाता है ? क्या यह मुनासिब है कि चूँकि हरिजन लायक़ नहीं, और सवर्ण लायक़ हैं, इसलिए हरिजनोंको इन कामोंसे अछूता रक्खा जाय ? कांग्रेस एक अरसेसे हरिजनोंमें काम कर रही है, फिर भी वह उन्हें ज़रूरी तालीम क्यों नहीं दे सकी ? "

इस खतमें अज्ञान है और कसक है । दोनों साफ़ करने लायक़ हैं । हम इस चीज़के भेद (राज़)को समझ लें । कांग्रेसको जो इतने सारे हरिजन मिले हैं, उसका मतलब ही यह है कि कांग्रेसने उनकी कुछ-न-कुछ सेवा की है । आज हरिजन दूसरोंके मुहताज हैं — पराधीन हैं । वे हिन्दूधर्म और हिन्दू समाजके कभी अलग न किये जा सकनेवाले अंग हैं । अगर वे अलग हो जायँ, तो समझिये कि हिन्दूधर्म और हिन्दू समाजका नाश हो जाय — होना चाहिये । खत लिखनेवाले भाईकी मन्शा यह दिखानेकी है कि सवर्ण कहे जानेवाले हिन्दुओंको अवर्ण या हरिजन कहलानेवालोंके तईं जो फ़र्ज़ जितना अदा करना चाहिये, उतना उन्होंने नहीं किया । मैं अपनी मरज़ीसे हरिजन बना हूँ और हरिजनोंमें भी अपनेको भंगी मानता हूँ । अपनी इस हैसियतसे मैं यह कहता हूँ कि सवर्ण और अवर्णका यह भेद या फ़र्क़ मिटना चाहिये । अवर्णों या हरिजनोंमें भी बहुतसी छोटी-छोटी जातियाँ हैं, वे मिटनी चाहियें । आज सबकी एक ही जात है — भंगी । भंगी सबका — अकेले हिन्दुओंका ही नहीं, बल्कि सारी मनुष्य-जातिका — सेवक है । जब हम ऐसे भंगी बन जायँगे, तो सब वाद मिटकर एक ही वाद रह जायगा; यानी फिर कोई वाद न रहेगा । जहाँ सभी सेवक हों, वहाँ स्वामी कौन ?

लेकिन फ़िलहाल तो यह एक सपना है, मनोरथ है । मगर कोई समाज महज़ सपनों या मनोरथों पर जी नहीं सकता । उसे तो ठोस चीज़ चाहिये ।

हिन्दुओंकी दुनियामें कांग्रेस ही एक ऐसी जमात है, जिसके नज़दीक सब बराबर हैं, फिर वे हिन्दू हों, मुसलमान हों, या किसी भी जातके हों । चुनाँचे कांग्रेसका तो यह काम है कि जो नीचे पड़े हुए हैं, उनको ऊपर उठाये, और जो ऊपर चढ़कर बैठे हैं, उन्हें नीचे उतारे, जो ठेठ पातालमें हैं, उन्हें सतह पर लाये और इस तरह सबको बराबरीकी जगह पर लाकर खड़ा कर दे । इस कोशिशमें बीचका रास्ता मिल जायगा । न किसीको हिमालयकी चोटी पर रहना है, न नीचे पातालमें । सबको धरती माताकी सुन्दर, हमवार सतह पर रहना है । यह कांग्रेसकी प्रतिज्ञा (अहद) है । कांग्रेस अभी इसे पूरा नहीं कर पाई है । 'हरिजन' के इन पन्नोंसे यह साबित होता है कि जब तक कांग्रेस अपने इस अहदको पूरा नहीं करती, तब तक उसके खिलाफ़ ऐसी शिकायतें करनेके मज़बूत कारण हरिजनोंके पास रहेंगे ।

इन भाईसे तो मुझे एक ही बात कहनी है । वे जो इतनी अच्छी लिखावटवाला खत लिख सके, सो किसकी बदौलत ? हरिजनोंके लिए कांग्रेससे बढ़कर काम और किस संस्थाने किया है ? सच है कि कांग्रेसने सब कुछ नहीं किया, बहुत करना बाक़ी है, लेकिन साथ ही यह भी सच है कि जितना उसने किया उतना और किसीने नहीं किया । इसलिए हरिजनोंको सबसे काम लेना चाहिये । इसमें शक नहीं कि सबकी भी हद होती है । मगर अभी वह घड़ी आई नहीं ।

नई दिल्ली, १५-६-'४६

('हरिजनबन्धु'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

'मनका भूत'

हम लोगोंमें जन्तर-मन्तरके और दूसरे बहुतसे भूत हैं, जो मन-माने होते हैं । लेकिन अगर मनका भूत निकाला न जाय, तो वह दुःख देता है । अगर रस्सीको साँप मानकर उसे मारने जाते हैं, तो हाथ उतर जाता है; जो साँप ज़हरीला नहीं है, उसे ज़हरीला मानकर मारने जाते हैं, तो अपना एक दोस्त गँवाते हैं; साहूकारको चोर समझकर उससे डरते हैं और उसे मारने दौड़ते हैं। कौन है, जो इन सब मिसालों को जानता न हो ? गाँवमें महामारी या बीमारी गाँववालोंकी अपनी ग़लतियोंसे फैलती है, मगर अक्सर बेक़सूर हरिजनों पर जादू-टोनेका शक करके उन्हें पीटा जाता है । इसी तरह जब पढ़े-लिखे लोग या पढ़नेवाले विद्यार्थी (तालिब-इल्म) अपने छात्रावासों यानी बोर्डिंगोंमें हरिजनोंको लेनेसे इनकार करते हैं, तो मैं उसे भूतोंका भी भूत मानता हूँ । इस बारेमें भाई परीक्षितलाल मजमूदार और भाई हेमन्तकुमार नीलकण्ठकी सहीसे छपा परचा मैंने देखा है । यह परचा तालिब-इल्मों और बोर्डिंग चलानेवालोंके लिए लिखा गया है । मैं सभी छात्रों और बोर्डिंग चलानेवालोंसे इसे पढ़ जानेकी सिफ़ारिश करता हूँ । वे इसे सिर्फ़ पढ़नेके लिए न पढ़ें, बल्कि इस पर अमल करनेके खयालसे पढ़ें । मुझे लगता है कि परचेमें उन छात्रावासों या बोर्डिंगोंको छोड़ दिया गया है, जो कुछ खास जातोंके लिए हैं । मैं तो उन्हें भी सलाह दूँगा कि वे अपने यहाँ हरिजनोंको ज़रूर लें । हरिजनोंको ऐसे बोर्डिंगोंमें जगह देनेकी खास वजह तो यह है कि उससे यह साबित हो सकेगा कि उन्होंने छूत-छातके भूतको हमेशाके लिए भगा दिया है ।

नई दिल्ली, १५-६-'४६

('हरिजनबन्धु'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

विषय-सूची

हफ़्तेवार खत	...	प्यारेलाल
आधोंकी तारीफ़	...	श्री रंगबिहारीलाल
युरोपियन वोट	...	गांधीजी
युरोपियन वोट पर क़ानूनी सलाह	...	शिवनारायण
थोड़ेमें बहुत कुछ	...	गांधीजी
नागथातकी यात्रा	...	सुशीला नय्यर
आदर्श स्त्री	...	अमृतकुँवर
अँधेरेमें उजाला	...	प्यारेलाल
नई दिल्लीके भंगियोंका सवाल	...	प्यारेलाल
औद्योगिक चिकित्सा (दस्तकारीसे इलाज)में कताईकी जगह	...	प्यारेलाल
सत्यव्रतका इतिहास		वालजी गोविन्दजी देसाई
ताड़के गुड़का धन्धा	...	
आसाममें कस्तूरबा-स्मारकका काम	...	
सवाल–जवाब	...	गांधीजी
बलि	...	गांधीजी
भुसावल ताल्लुकेमें हरिजन-कार्य	...	गांधीजी
मसूरीकी कुछ यादें	...	प्यारेलाल
कांग्रेसने क्या किया है ?	...	गांधीजी
'मनका भूत'	...	गांधीजी
टिप्पणियाँ		
कृपाकर ध्यान दें	...	जी० देसाई
दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रह पर कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीका ठहराव	...	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक : प्यारेलाल

भाग १० अंक २१

मुद्रक और प्रकाशक जीवणजी डाह्याभाई देसाई नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ३० जून, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६, विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

टिप्पणियाँ

यह कैसा द्वेष ?

प्र०—भोले-भाले जैन आपको जैनोंमें शुमार करते हैं। इस तरह [illegible] आपको जैन मानते हैं, उससे आप शरमाते भी नहीं। फिर भी [illegible] होता है कि 'हरिजन'में महावीरका नाम लेते भी आपको छूत [illegible] है। क्या आपके-जैसे महात्माको यह शोभा देता है?

उ०—यह सवाल इसके पूछनेवालेकी ज़वानमें नहीं लिखा गया है, [illegible] यहाँ उसका निचोड़ ही दिया है। असल सवाल कैसा होगा, इसका [illegible] पढ़नेवाले .खुद लगा लें। मैं मानता हूँ कि मैं जैन नहीं हूँ। [illegible] तोहमत मुझे मंजूर है। लेकिन मुमकिन है कि जो बहुत-से अपनेको [illegible] मानते हैं, रोज़ उपासरेमें जाते हैं, उनके मुक़ाबले शायद मैं [illegible] ज़्यादा समझदार भक्त होऊँ। लेकिन अगर मैं भगवान् [illegible] द्वेष करनेवाला हुआ, तो महावीरको तो उससे कोई नुक़सान [illegible] नहीं। उनके भक्त भी कुछ खोयेंगे नहीं। नुक़सान तो [illegible] हो सकता है। इस सवालके जवाबमें इससे ज़्यादा कहनेकी [illegible] नहीं। इतना भी इस ख़यालसे लिखा कि जो अन्धभक्त हैं, [illegible] आँखें खुल जायँ। मैं यह सुझाना चाहता हूँ कि हम जिसे [illegible] मानते हों, उसे दूसरे वैसा मानते हैं या नहीं, यह सवाल उठानेमें [illegible] अपनी ही कमज़ोरी दिखाते हैं।

देखादेखी

प्र०—आप कहते हैं, 'मांस खानेवाला मुझे देखकर मांस खाना [illegible] तो उसका वह काम अच्छा न कहा जायगा।' क्या इसमें [illegible] नहीं?

उ०—मुझे इसमें कोई दोष (नुक़्स) नज़र नहीं आता। क्या दूसरोंको [illegible] खाते देखकर वह फिर खाने न लग जायगा? ऐसे आदमीके [illegible] कहा जाता है कि वह 'न घरका है, न घाटका'। मेरे कहनेका [illegible] इतना ही है कि जो किया जाय, मनसे किया जाय। दूसरे [illegible] कहें या करें, उस पर हम सोचें, उसे तौलें और फिर अगर [illegible] जँचे, तो वैसा करें। इस तरह करना देखादेखी न कहा [illegible]। लेकिन एक आदमीको खाईमें पड़ते देखकर हम भी खाईमें [illegible], तो कहा जायगा कि हमने बिना सोचे-समझे ऐसा किया और [illegible] अपनी हड्डियाँ भी तुड़वाईं।

हरिजनोंके लिए चन्दा

प्र०—आप जहाँ-तहाँ हरिजनोंके लिए चन्दा माँगा करते हैं। [illegible] पता चलता है कि कभी-कभी आपको चन्देमें बड़ी-बड़ी [illegible] मिलती हैं। इस तरह आपको अब तक कुल कितनी रक़म [illegible] है? वह किस तरह खर्च की जाती है? उसके हिसाबकी जाँच- [illegible] होती है या नहीं? मैं यह नहीं कहता कि आप इस तरह [illegible] उसका दुरुपयोग करते हैं, लेकिन लोगोंको इसका कोई पता [illegible], तो क्या यह चीज़ आप-जैसेके लिए ठीक कही जायगी?

उ०—इसका जवाब देनेकी ज़रूरत न होनी चाहिये। लेकिन [illegible] तरह बहुत-से ऐसे होंगे, जो इस बारेमें कुछ नहीं जानते। [illegible] दिलमें यह सवाल पैदा हो सकता है। मैं इसे वाजिब समझता हूँ। [illegible] जवाब सीधा है। हरिजनोंके लिए जितना धन मुझे मिलता है, वह सब हरिजन-सेवक-संघमें जमा होता है। ठक्कर बापा उसके चौकीदार हैं। हरिजन-सेवक-संघ जिन कामोंके लिए मंज़ूरी देता है, उनमें यह रक़म खर्च होती है। कुछ रक़म मेरी मरज़ीके मुताबिक़ खर्च होती है। लेकिन वह भी हरिजनोंके लिए ही। इसी तरह मुझको दूसरे कामोंके लिए भी पैसे मिलते हैं। उनका पाई-पाईका हिसाब रक्खा जाता है। इस तरह मिलनेवाले और खर्च होनेवाले रुपयोंका सारा हिसाब वक़्तन्-फ़-वक़्तन् हिसाब जाँचनेवालोंसे जँचवाया जाता है और वे उसे प्रमाणित (सर्टिफ़ाय) करते हैं। यह सारा हिसाब जब-तब छपता है। मैं मानता हूँ कि इसका इससे ज़्यादा .खुलासा मुमकिन नहीं।

नई दिल्ली, २१-६-'४६ मो० क० गांधी

('हरिजनबन्धु'से)

डॉक्टर लोहियाकी ललकार

अख़बारी ख़बरोंसे पता चलता है कि गोआवालोंका न्योता पाकर डॉ० राममनोहर लोहिया पिछले दिनों गोआ गये थे। वहाँ उन पर यह नोटिस तामील किया गया कि गोआमें रहते हुए वे कहीं कोई भाषण या तक़रीर न करें। डॉक्टर लोहिया अपने एक बयानमें कहते हैं कि पिछले १८८ सालोंसे पुर्तगाल सरकारने गोआवालोंका सभायें करने या संस्थायें (जमातें) क़ायम करनेका हक़ छीन रक्खा है। सहज ही उन्होंने उस हुक्मको माननेसे इनकार किया— उसे तोड़ा। अपने इस कामसे उन्होंने नागरिक अधिकारों या शहरी हक़ोंकी, और खासकर गोआवालोंकी, एक ख़िदमत की है। पुर्तगालियोंकी इस छोटी-सी बस्तीको, जो यहाँ महज़ अंग्रेज़ोंकी दया पर निभ रही है, अंग्रेजोंकी बुराइयोंकी नक़ल नहीं करनी चाहिये — ऐसी नक़ल उसे पुसा नहीं सकती। आज़ाद हिन्दुस्तानमें गोआ हिन्दुस्तानसे बिलकुल अलग रहकर अपनी मनमानी नहीं कर सकेगा। गोआवाले आज़ाद हिन्दुस्तानकी नागरिकताके हक़ोंका दावा कर सकेंगे, और वे उन हक़ोंको पा भी सकेंगे। और इसके लिए उन्हें न तो एक गोली चलानी होगी और न एक क़तरा ख़ून बहाना होगा। उस हालतमें मौजूदा पुर्तगाल सरकार न तो अंग्रेज़ी बन्दूक़ोंकी मददसे गोआवालोंको बाक़ी हिन्दुस्तानसे अलग रख सकेगी, और न उन्हें उनकी मरज़ीके ख़िलाफ़ .गुलाम बनाये रह सकेगी। इसलिए गोआकी पुर्तगाली सरकारको मैं यह सलाह दूँगा कि वह बदलते हुए ज़मानेकी निशानियोंको पहचाने और ब्रिटिश सरकारके साथ की गई किसी सुलह पर भरोसा न रखकर गोआके बाशिन्दोंके साथ बा-इज़्ज़त समझौता कर ले।

गोआवालोंसे मैं यह कहूँगा कि उन्हें पुर्तगाल सरकारसे उसी तरह डरना छोड़ देना चाहिये, जिस तरह बाक़ी हिन्दुस्तानके लोगोंने महान् ब्रिटिश सल्तनतसे डरना छोड़ दिया है। और, उन्हें नागरिक स्वतंत्रताके अपने बुनियादी हक़ोंके लिए डटकर आवाज़ उठानी चाहिये। गोआवालोंके सबके साथ आपसमें मिल-जुलकर रहनेमें अलग-अलग धर्मों या मज़हबोंकी वजहसे कोई रुकावट पेश न होनी चाहिये। मज़हब या धर्म हरएक औरत या मर्दके लिए अमल करनेकी चीज़ है। उसे अलग-अलग पन्थों या फ़िरक़ोंके बीच लड़ाई-झगड़ा करानेवाली चीज़ हरगिज़ न बनना चाहिये।

नई दिल्ली, २६-६-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ और क़ानूनी सलाहें

विधान बनानेवाली सभाके चुनावमें वोट देने या उसके मेम्बर बननेकी उम्मीदवारी करनेके बारेमें युरोपियनोंके हक़के मसले पर श्री शिवनारायणकी क़ानूनी सलाहके बाद गांधीजीकी विनती पर श्री डी० एन० बहादुरजी, श्री कन्हैयालाल मुंशी, सर अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर और सर बख्शी टेकचन्दने अपनी क़ानूनी सलाहें उन्हें भेजी हैं। अलग-अलग दृष्टिसे (नुक़्त-ए-निगाहसे) इस सवालकी छान-बीन करनेके बाद वे सब श्री शिवनारायणके जैसे ही नतीजे पर पहुँचे हैं। उनकी क़ानूनी सलाहोंसे लिये गये नीचे लिखे हिस्से बोधप्रद (नसीहत-आमेज़) साबित होंगे।

१६ मईके सरकारी दस्तावेज़के पहले, तीसरे और १६ वें पैरोंकी जाँच करनेके बाद श्री डी० एन० बहादुरजी लिखते हैं:

"ऊपर दिये गये पैरों परसे साफ़ पता चलता है कि इस दस्तावेज़को तैयार करनेवालोंका यह साफ़ इरादा था कि हिन्दुस्तानकी सरकारका आइन्दा आईन (भावी विधान) हिन्दुस्तानी ही बनायें।

"इस दस्तावेज़के शुरूके पैरोंमें जिन इरादों पर ज़ोर दिया गया है, मैं नहीं समझता कि उनकी काट करनेवाला कोई मतलब इस दस्तावेज़के १८वें पैरेका किया जा सकता है। इज़्हारकी सहूलियतके लिए १८वें पैरेमें हिन्दुस्तानके नागरिकों या बाशिन्दोंको तीन हिस्सोंमें बाँटा गया है: (१) मुसलमान, (२) सिक्ख, (३) 'जनरल कम्युनिटी' यानी हिन्दू वग़ैरा आम जातियाँ। १८वें पैरेमें जिस तरह मुसलमानों और सिक्खोंको हिन्दुस्तानके नागरिक या बाशिन्दे मान लिया गया है, उसी तरह 'जनरल कम्युनिटी'के बारेमें भी यह मान लेना चाहिये कि उसमें जिन लोगोंकी गिनती होती है, वे सब भी हिन्दुस्तानके नागरिक ही होने चाहिये।

"मेरी रायमें युरोपियनोंको उनके परदेशी होनेकी वजहसे तजवीज़शुदा आईन बनानेवाली मजलिसके चुनावमें मत देनेका या उस मजलिसके मेम्बरोंके चुनावमें उम्मीदवारके तौर पर खड़े होनेका हक़ नहीं है।"

श्री कन्हैयालाल मुंशीकी राय यों है:

"अपने बयानके आखिरी हिस्सेमें कैबिनेट मिशनने यह भी कहा है: 'हमें यह उम्मीद है कि किसी भी हालतमें **आप** (हिन्दुस्तानी) **हमारी** जनताके साथ नज़दीकके और दोस्ताना रिश्तेसे जुड़े रहेंगे। लेकिन यह पूरी तरह आपकी अपनी मरज़ीकी बात है।'

"जो ब्रिटिश रय्यत मुल्कमें ग़ैर-शहरी ब्रिटिशोंके नाते रहती है, उसकी गिनती साफ़ ही 'हमारी जनता' और 'देशवासियों'में हो जाती है, और 'वे' (हिन्दुस्तानी) और 'हिन्दुस्तानकी जनता' उससे अलग हैं।"

सरकारी दस्तावेज़के १८वें पैरेका हवाला देते हुए श्री मुंशी लिखते हैं:

"विधान या आईन बनानेवाली सभाके लिए यह पैरा हिन्दुस्तानियोंकी जनरल यानी हिन्दू वग़ैरा आम जातों, मुसलमानों और सिक्खोंकी तीन खास क़ौमोंको मंज़ूर करता है। १९वें पैरेकी (१ ली) धाराके इन लफ़्ज़ों, 'इसलिए हम यह तजवीज़ करते हैं कि हरएक सूबेकी एसेम्ब्ली उन्हें चुनेगी'का मतलब यही होता है कि इनमेंसे हरएक क़ौमके लिए तय किये गये नुमाइन्दे ही यह चुनाव करेंगे।

"'जनरल कम्युनिटी' यानी हिन्दू वग़ैरामें उन लोगोंकी गिनती की गई मालूम होती है, जो न तो मुसलमान हैं, न सिक्ख। इनमें हिन्दुओंका और इसी पैरेमें जिन्हें 'छोटी अल्पमतवाली जातियाँ' (स्मॉलर माइनॉरिटीज़) कहा गया है, उन सब दूसरे गिरोहोंका समावेश होता है। 'अल्पमत'के साथ जो 'छोटा' विशेषण बरता गया है, वह हिन्दुस्तानके मुसलमानों और सिक्खोंकी बड़ी मानी गई क़ौमोंसे उन्हें अलग दिखानेके लिए बरता गया है। मुसलमानों और सिक्खोंके 'अल्पमत'के लिए 'क़ौम' लफ़्ज़का इस्तेमाल इसी ख़यालसे करना पड़ा है कि हिन्दुओं और दूसरी अल्पमतवाली जातोंका मिलकर बना हुआ 'जनरल कम्युनिटी'के नामसे पहचाना जानेवाला एक बनावटी गिरोह तैयार करना ज़रूरी था।"

इसके बाद श्री मुंशी सरकारी दस्तावेज़के १९वें और २०वें पैरेमें बरते गये 'अल्पमत' शब्दकी चर्चा करते हैं:

"सरकारी आईनकी किताबों, क़ानूनों और दस्तावेज़ोंमें बरते गये 'अल्पमत' शब्दका मतलब नागरिकोंका वह छोटा समूह या गिरोह है, जिसके हित 'बहुमत'के नामसे पहचाने जानेवाले नागरिकोंके ज़्यादा बड़े गिरोहके हितोंके मुक़ाबले अलग होते हैं। लेकिन सभी जगह इस तरहके दोनों गिरोहोंको हमेशा एक ही वतन और एक-सी नागरिकताके हक़ोंवाला और एक ही सरकारकी रिआया माना गया है। मित्र राष्ट्रोंने सन् १९१९के जून महीनेकी २८वीं तारीखको पोलैण्डके साथ जो सुलह की थी, उसमें अल्पमत या माइनॉरिटीके बारेमें एक दफ़ा है। पोलैण्डने उसे मुल्कके बुनियादी क़ानूनके रूपमें मानना मंज़ूर किया है। तबसे सुलहकी वह दफ़ा (धारा) अल्पमतवालोंके हक़की एक प्रमाणभूत मिसाल मानी गई है। इस सुलहकी सातवीं धारामें यह कहा गया है कि 'पोलैण्डके सभी शहरी या नागरिक क़ानूनकी नज़रमें बराबर हैं,' वग़ैरा। ८वीं धारा (दफ़ा)में कहा गया है कि जाति, धर्म और भाषाकी भिन्नतावाले अल्पमतके नागरिक क़ानूनमें और हक़ीक़तमें पोलैण्डके दूसरे नागरिकोंके जैसी ही सलामती या सुरक्षा पायेंगे और उनके साथ बराबरीका बरताव किया जायगा। मित्र राष्ट्रोंने ज़ेकोस्लोवाकिया, रुमानिया, बलगेरिया, तुर्किस्तान वग़ैरा मुल्कोंके साथ जो सुलहें की हैं, उनमें भी इसी मतलबकी धारायें दाखिल की गई हैं। व्हीटनके 'इण्टर नैशनल लॉ' (आन्तर राष्ट्रीय क़ानून)का ८०वाँ सफ़ा देखिये। इससे ज़ाहिर होता है कि नागरिकोंके हक़ों और बुनियादी हक़ोंके बारेमें दस्तावेज़के १९ (४) और २०वें पैरोंमें बरते गये 'अल्पमत' या 'माइनॉरिटी' लफ़्ज़का मतलब देशकी रिआयाका 'अल्पमत' होता है।"

"हमें इस सिलसिलेमें यह बात भूलनी न चाहिये कि देशके नागरिकोंके अल्पमत और बहुमतका उसूल 'फेडरालिस्ट'के नामसे मशहूर राजनीतिक (सियासी) दलके जितना ही पुराना है; और, पहली बड़ी लड़ाईके बाद जर्मनीके 'वीमर विधान' (आईन)में उसे जगह मिली है। ऊपरकी सुलहोंमें जिन अल्पमतवालोंके हक़ोंकी रक्षाका इन्तज़ाम किया गया है, उन पर ग़ौर करते हुए विलियम एडवर्ड हॉल नामके आन्तर राष्ट्रीय क़ानूनके बड़े भारी पण्डित 'आन्तर राष्ट्रीय क़ानून' पर लिखी गई अपनी किताबमें कहते हैं कि 'इन सुलहोंमें अल्पमतवालोंके हक़ों पर ज़रूरतसे ज़्यादा ज़ोर दिया गया है, जब कि देशके दूसरे सारे बाशिन्दोंके साथ वफ़ादारी भरे सहयोग करनेके इन अल्पमतवालोंके फ़र्ज़ पर शायद ही कोई ज़ोर दिया गया है।' किसी राज्यमें जाति, धर्म और भाषाकी वजहसे बनी हुई माइनॉरिटीके इन फ़र्ज़ों पर ज़ोर देनेवाले 'लीग ऑव् नेशन्स' (राष्ट्रसंघ)के तीसरे जलसेमें मंज़ूर हुए ठहरावका विद्वान् लेखकने अपनी किताबके ६४वें सफ़े पर ज़िक्र किया है। देखिये, 'हॉलका आन्तर राष्ट्रीय क़ानून' ८वीं एडीशन, सफ़ा ६४। इसलिए सरकारी दस्तावेज़में बरते गये 'अल्पमत'का मतलब होता है, राज्यके नागरिकोंका औरोंके मुक़ाबले एक छोटा गिरोह। उसकी हदमें रहनेवाले दूसरे राज्यके नागरिकोंका गिरोह 'अल्पमत' नहीं कहा जा सकता।

"हिन्दुस्तानके वैधानिक सुधार पर ग़ौर करनेके लिए बैठाई गई 'जॉइण्ट कमेटी' अपनी रिपोर्टके १४वें सफ़े पर सूबोंके गवर्नरों और गवर्नर जनरलकी खास ज़िम्मेदारियों और सत्ताओंका ज़िक्र करते हुए हिन्दुस्तानकी 'अल्पमत' जातियोंका भी ऐसा ही अर्थ करती है। उसमें यह बताया गया है कि सूबोंके गवर्नरों और गवर्नर जनरलकी सत्ता सुलह और शान्तिकी और 'उसकी (हिन्दुस्तानकी) रिआयामें जो कमज़ोर या असहाय हों, उनकी हिफ़ाज़तकी' ताज और पार्लमेण्टके तईं अपनी ज़िम्मेदारीके ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुड़ी हुई है। इस रिपोर्टके ३२१वें पैरेमें एंग्लो-इण्डियन क़ौमकी और उसकी तालीमके सवालकी चर्चा करते हुए कमेटी 'युरोपियनों' और 'हिन्दुस्तानके बाशिन्दे बनकर रहे हुए युरोपियनों' में भेद करती है। यह हक़ीक़त इस बातको साफ़ तौरसे साबित करती है कि इस मुल्कको अपना वतन बनाकर रहनेवाले युरोपियनोंके अलावा दूसरे युरोपियनोंको 'जॉइण्ट कमेटी' ने हिन्दुस्तानके ग़ैर-शहरी या ग़ैर-बाशिन्दे समझा है।"

श्री मुंशी आगे चलकर लिखते हैं :

"सन् १९३५के गवर्नमेण्ट ऑव् इण्डिया ऐक्टमें और उससे पहलेके क़ायदोंमें हिन्दुस्तानके सूबोंकी अलग-अलग एसेम्ब्लियोंमें युरोपियनोंको जो प्रतिनिधित्व (नुमाइन्दगी) दिया गया था, वह उनकी जातको अल्पमतवाली जात समझकर नहीं, बल्कि देशका विधान बनाते समय देशमें रहनेवाले स्थापित या निहित हितोंके नुमाइन्दोंके नाते दिया गया था। इसमें तो कोई शक नहीं कि वह विधान 'सेल्फ डिटरमिनेशन' यानी आत्मनिर्णयके उसूल पर, या यह मानकर कि हिन्दुस्तानियोंको अपना विधान ख़ुद बनानेका हक़ है, नहीं बनाया गया था।

"मंत्रि-मिशनके बयानके १८वें पैरेसे यह साफ़ हो जाता है कि वह अल्पमतवालोंके माने हुए अर्थसे हटना नहीं चाहता था। अपने बयानमें वह कहता है कि 'बालिग़ मताधिकारके ढंग पर लोक-प्रतिनिधि सभाका चुनाव करनेका तरीक़ा सबसे ज़्यादा सन्तोष-जनक है।' इस धारामें बालिग़ मताधिकारका एक ही मतलब हो सकता है — वह मताधिकार, जिसका इस्तेमाल हिन्दुस्तानके नागरिक कर सकें। लेकिन बालिग़ मताधिकार देनेका तरीक़ा उनको अव्यावहारिक मालूम हुआ। इसलिए मिशनने दूसरा रास्ता अख़्तियार किया है। इससे भी यही नतीजा निकलता है कि जो हिन्दुस्तानके शहरी या हिन्दुस्तानके नागरिक नहीं हैं, उन लोगोंके ज़रिये विधान बनवानेका उसका इरादा नहीं था।

"इसलिए मेरी रायमें 'अल्पमत' और 'बहुमत' शब्द ब्रिटेनके प्रधानमंत्री या वज़ीरेआज़मने अपने मौजूदा बयानमें **हिन्दुस्तान या हिन्दुस्तानकी जनता**को ध्यानमें रखकर और मिशनने अपने ऐलानमें 'हिन्दुस्तानियों' को सामने रखकर बरते हैं। और इनमें हिन्दुस्तानमें रहनेवाले ग़ैर-शहरी लोगोंका शुमार नहीं होता। इन शब्दोंका दूसरा कोई भी अर्थ उस इरादेसे बेमेल साबित होगा, जिसमें हिन्दुस्तानियोंको ही अपना 'विधान बनानेकी बात कही गई है।

"इसलिए मेरी रायमें १८वें और १९वें पैरेके 'हरएक प्रान्तीय एसेम्ब्ली द्वारा चुने गये' और 'छोटी अल्पमतवाली जातियों द्वारा,' इन शब्दोंका मतलब लाज़िमी तौर पर यह किया जाना चाहिये कि मताधिकार हिन्दुस्तानको अपना वतन बनाकर रहनेवालों, और जो युरोपियन हिन्दुस्तानके नागरिक हैं, उनको मिलाकर एसेम्ब्लियोंके हिन्दुस्तानी मेम्बरों तक ही महदूद है, और हिन्दुस्तानमें रहनेवाले जो युरोपियन ब्रिटिश प्रजाजन हिन्दुस्तानको अपना मुल्क नहीं मानते, उनको यह मताधिकार नहीं दिया जा सकता।

"शायद यह दलील की जायगी कि १९वें पैरेके 'हर-एक एसेम्ब्ली द्वारा चुने गये' शब्दोंका दूसरा मतलब निकलता है। मगर जैसा कि ऐलानमें मान लिया गया है, चुनाव सूबेकी एसेम्ब्लियोंको नहीं, बल्कि तीन गिरोहोंकी नुमाइन्दगी करनेवाले उनके मेम्बरोंको करना है।

"इससे यह भी नतीजा निकलता है कि 'विधान बनाने-वाली सभाके नुमाइन्दे' हिन्दुस्तानी ही होने चाहिये।"

ब्रिटिश सरकारके कैबिनेट मिशनके बयानवाले सरकारी दस्तावेज़के १८वें और १९वें पैरोंमें बरते गये 'क़ौम' और 'क़ौमों' शब्दोंका ज़िक्र करनेके बाद सर बख्शी टेकचन्द मुद्देके सवालको इस तरह पेश करते हैं :

"ग़ौर करनेकी बात यह है कि 'जो मुसलमान या सिक्ख नहीं हैं, उन सब लोगों,' इस फ़िक़रेमें सिर्फ़ हिन्दुस्तानियोंका ही शुमार होता है, या जो लोग १९३५के वैधानिक क़ानूनके मुताबिक़ सूबोंकी एसेम्ब्लियोंके मेम्बर हों, उन युरोपियनों या दूसरे परदेसियोंका भी शुमार होता है?

"यह तो साफ़ है कि १८वें पैरेका मतलब एक बिलकुल स्वतंत्र या अलग धाराकी शक़्लमें नहीं करना है, बल्कि सारे दस्तावेज़के सिलसिलेमें और समूचे दस्तावेज़के 'लक्षणों और योजना' के मुताबिक़ करना है। भाषाकी रचनाका नियम यह है कि भाषा हमेशा अर्थसे गौण स्थान ग्रहण करती है और उसके अधीन होती है, और विषयके मुद्दोंके साथ जिसका अच्छे-से-अच्छा मेल बैठता है, उस अर्थमें उसे समझना होता है। जहाँ बड़ी व्याप्तिवाले यानी सामान्य अर्थके शब्द या पद बरते गये हों, वहाँ उनका मतलब उन शब्दों या पदोंके आगे और पीछेके सन्दर्भके अनुसार करना पड़ता है, और उसके मुताबिक़ उन शब्दों या पदोंका अर्थ बैठाना पड़ता है। इसलिए 'जनरल कम्युनिटी' पदमें शुमार किये गये सब लोग यानी जिन-जिन एसेम्ब्लियोंका इससे ताल्लुक़ है, उनके हिन्दुस्तानी मेम्बरोंसे ही मतलब है, परदेसी या अ-राष्ट्रीय मेम्बरोंसे नहीं।

"सरकारी बयानके २२वें पैरेसे भी यह बात ख़ास तौर पर साफ़ होती है कि इस पदका यही मतलब है। वह पैरा यों है :
'यूनियन सरकारका विधान बनानेवाली लोक-प्रतिनिधि सभा और युनाइटेड् किंग्डम यानी इंग्लैण्ड, इन दो दलोंके बीच हुकूमतको एक हाथसे दूसरे हाथमें देनेके सिलसिलेमें जो सवाल खड़े होंगे, उनके बारेमें समझौतेकी बातचीत करना ज़रूरी होगा।'

"सचमुच ही जिसके साथ युनाइटेड् किंग्डम यानी इंग्लैण्ड समझौतेकी चर्चा चलायेगा, उस विधान बनानेवाली सभामें ऐसे लोगोंको मेम्बर बनानेका इरादा तो रक्खा ही नहीं जा सकता, जो हिन्दुस्तानी नहीं हैं, बल्कि उस युनाइटेड् किंग्डमके यानी इंग्लैण्डके नागरिक हैं, जो समझौता करनेवाले दो दलोंमेंसे दूसरा दल होगा।"

हिन्दुस्तानके आइन्दा विधानके लिए जो मशीनरी खड़ी की जानेवाली है, उसका मक़सद यह बताया गया है कि हिन्दुस्तानी उसे तैयार करेंगे। इसका ज़िक्र करनेके बाद सर अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर लिखते हैं :

"आम तौर पर दूसरे विधान या आईन बनानेके लिए जो तरीक़ा अख़्तियार किया जाता है, अगर वह अपनाया जाता, तो उसके लिए एक ऐसी परिषद् बुलाई जाती, जिसमें हिन्दुस्तानके बाशिन्दों या कम-से-कम उन लोगोंको बालिग़ मताधिकार होता, जिन्होंने हिदुस्तानको अपना वतन माना है। लेकिन दर असल जो तरीक़ा अख़्तियार किया गया है, उसमें विधान बनानेवाली सभाके मेम्बरोंको मौजूदा एसेम्ब्लियोंके मेम्बर चुन देंगे। इस तरीक़ेको अपनानेका मतलब यही है कि हिन्दुस्तानकी मुकम्मल आज़ादीके हक़को व्यावहारिक रूप देकर हिन्दुस्तानकी आज़ादी जल्दी-से-जल्दी सिद्ध की जाय। इसलिए जो लोग हिन्दुस्तानके बाशिन्दे नहीं हैं, वे विधान बनानेवाली सभाके लिए तय किये गये मताधिकारको बरतने या विधान बनानेके लिए बुलाई गई सभामें शरीक होनेका फ़ायदा किसी हालतमें नहीं उठा सकते; क्योंकि यह तो इस तरीक़ेके कारण पैदा हुई एक आगन्तुक चीज़ है।"

नई दिल्ली, २६-६-'४६
('हरिजन' से)

प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

३० जून १९४६

गोरोंकी ठेकेदारी

रूटरकी खबर है कि दक्षिण अफ्रीकाके चुने हुए मर्दों और औरतोंने डॉक्टर नायकरकी सरदारीमें १४ जूनसे दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन पार्लमेण्टके 'सेग्रिगेशन लॉ' (काले लोगोंको गोरोंसे अलग बसानेके क़ानून)के खिलाफ़ सत्याग्रह शुरू किया है। वहाँ सत्याग्रहको 'पैसिव रेज़िस्टन्स' (यानी बिना हाथ उठाये सामना करना) कहते हैं। वही एजन्सी यह भी कहती है कि सरकारने या म्युनिसिपैलिटीने सत्याग्रहियोंके खिलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की, मगर डरबनके चन्द गोरोंने क़ानूनको अपने हाथमें लेकर रात सत्याग्रहियोंके कैम्प पर हमला किया, तम्बुओंकी रस्सियाँ काट डालीं और उन्हें लेकर जल्दीसे भाग गये। "१०० नौजवान गोरोंका एक दल ५० सत्याग्रहियोंके घेरेको तोड़कर भीतर घुस गया। उसने तम्बू खींचकर नीचे गिरा दिये और वह फटे हुए तम्बुओंको घसीटकर ले गया। वे लोग कैम्पमें रक्खे हुए कुछ स्ट्रेचर भी तोड़ गये और कम्बल और तकिये उठा ले गये। इस हुड़दंगकी चपेटमें दो सत्याग्रही बहनें भी आ गईं। कहा जाता है कि उन्हें लातें मारी गईं, मगर किसीको चोट नहीं आई।"

अखबारी खबर है कि तीन दिनकी इस गुण्डेबाज़ीके बाद वहाँकी बरो पुलिस सत्याग्रहियोंकी छावनीके पास आ डटी है, और उसने गुण्डोंको चेतावनी दी है कि वे सत्याग्रहियों पर हमला करने और उन्हें डराकर दबानेकी कोशिश न करें। इस खबरसे सबको तसल्ली होगी। हम उम्मीद करें कि यह खबर पूरी-पूरी सच साबित होगी और पुलिसवाले गुण्डोंकी इक्की-दुक्की या मिली-जुली हुड़दंगशाहीसे सत्याग्रहियोंकी हिफ़ाज़त करेंगे। जब आम रिआया एक होकर कोई ग़ैरक़ानूनी बरताव करती है, यानी हुड़दंग मचाती है, तो अमेरिकामें उसे 'लिंचिंग' कहा जाता है। वहाँ इस तरहकी शर्मनाक वारदातें अक्सर हुआ करती हैं।

दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंके लिए भंगी-बस्तियोंके ढंगकी अलग बस्तियाँ बनानेका क़ानून पास होनेसे पहले वहाँके अच्छे-से-अच्छे और इज्ज़तदार गोरोंने एशियावालोंके खिलाफ़ पागलपनकी हद तक पहुँचनेवाली एक ज़ोरदार तहरीक चलाई थी। मगर ज़बरन् अलहदगीके इस क़ानूनके पास हो जानेसे ही उन्हें तसल्ली नहीं हुई, हालाँकि इसमें उन्हें उनकी उम्मीदसे शायद ज़्यादा ही कामयाबी मिली थी। लेकिन उनमें जो ज़्यादा तेज़-मिजाज़ लोग थे, उनका पेट इतनेसे भी न भरा, और उन्होंने क़ानून अपने हाथमें ले लिया। वे नहीं समझते कि अपनी इन करतूतोंसे वे गोरोंके नामको बट्टा लगा रहे हैं!!!

जिन गोरे स्त्री-पुरुषोंके दिलमें अपने वोटकी मददसे बने क़ानूनोंकी कुछ भी इज्ज़त हो, उनसे मेरी यह अर्ज़ है कि वे गुण्डेबाज़ी और 'लिंच लॉ'के खिलाफ़ आम राय पैदा करें।

सत्याग्रहका मक़सद (हेतु) बुरे क़ानूनों, रिवाजों और दूसरी बदियोंको एक आज़माये हुए तरीक़ेसे दूर करना है। सत्याग्रह ज़ोर-ज़बरदस्तीका एवज़ है। और इस ज़ोर-ज़बरदस्तीमें गुण्डेबाज़ी और 'लिंच लॉ' जैसी चीज़ें भी शामिल हैं। सत्याग्रहका तरीक़ा इनसानके दिलको हिलानेका तरीक़ा है। अक्सर अक़्ल जवाब दे देती है। अहंकार या ख़ुदी अक़्लको जकड़ लेती है। सत्याग्रहका बुनियादी उसूल यह है कि कोशिश करनेसे पत्थर-से-पत्थर दिल भी पिघलाया जा सकता है। जहाँ विफलता या नाकामी दिखाई देती है, वहाँ वह सत्याग्रहके उसूलकी नाकामी नहीं होती, बल्कि उसकी वजह सत्याग्रहीकी अपनी खामी होती है, फिर वह किसी भी तरहकी क्यों न हो। इतिहास (तवारीख)से इस चीज़की कोई मुकम्मल (पूर्ण) मिसाल शायद न दी जा सके, मगर इस सिलसिलेमें तुरन्त ही ज़बान पर ईसा मसीहका नाम आता है। ईसा मसीहकी नाकामी एक उजली — चमत्कारसे भरी — नाकामी थी। पच्छिमी मुल्कोंमें सत्याग्रहियोंके राजा माने गये हैं। बरसों पहले दक्षिण अफ्रीकामें मैंने कहा था कि ईसा मसीहके इस सत्याग्रहको 'पैसिव' (निष्क्रिय या बे-अमल) कहना ग़लत है। मेरे खयालमें तमाम तवारीखमें वह शायद सबसे ज़्यादा मुस्तैद सत्याग्रही थे। उनकी क़ुर्बानी बेजोड़ थी। लेकिन मुझे अब अपने असल मज़मून पर आना चाहिये। दक्षिण अफ्रीकाके गोरे गुण्डे जिस सत्याग्रहको नाकाम बनानेकी कोशिश कर रहे हैं, वह हज़रत मसीहके नमूनेका सत्याग्रह है। हम उम्मीद करें कि हमारे भाइयोंका बहादुराना मुक़ाबला सिर्फ़ इन गुण्डोंकी शर्मनाक हरक़तोंको बन्द कर देगा, बल्कि उसका एक नतीजा यह भी होगा कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंके लिए भंगी-बस्तियाँ खड़ी करनेका जो क़ानून वहाँकी क़ानूनी किताबको कलंकित कर रहा है, वह क़ानून भी रद कर दिया जायगा। आम बिलकुल साफ़ दिलसे सही गई एक तरफ़की मुसीबतें लोगोंके दिलमें अन्यायके खिलाफ़ ज़ोरकी हलचल या मुखालिफ़त पैदा करती हैं। क़ानून बनानेवाले भी आखिर आम लोगोंके नुमाइन्दा ही होते हैं। लोगोंका हुक्म मानकर उन्होंने यह ग़लत क़ानून बनाया है। जब आम लोग उस ग़लतीको महसूस करने लगेंगे और उसे दुरुस्त करनेकी माँग करेंगे, तब उन्हें अपना यह क़ानून बदलना पड़ेगा।

गोरोंकी सच्ची ज़िम्मेदारी यह नहीं है कि वे कालोंकी हिफ़ाज़त करनेके बहाने उनके कन्धों पर सवार हों, बल्कि उनकी ज़िम्मेदारी, उनका फ़र्ज़ तो यह है कि वे अपने अन्दरसे उस ढोंग या पाखण्डको दूर करें, जो अन्दर-ही-अन्दर उन्हें खोखला बना रहा है। वक़्त आ गया है कि जब गोरे लोगोंको दुनियाके हर आदमीको अपनी बराबरीका समझना होगा। चमड़ीके गोरेपनमें कोई रहस या राज़ नहीं। बार-बार यह साबित हो चुका है कि बराबरीका मौक़ा मिलने पर कोई भी आदमी, फिर वह किसी भी रंग या मुल्कका क्यों न हो, दूसरे किसी आदमीसे किसी क़दर कम नहीं ठहरता।

इसलिए सारी दुनियाके और खासकर हिन्दुस्तानके गोरोंका फ़र्ज़ है कि वे दक्षिण अफ्रीकाके अपने भाइयोंको समझायें, ताकि वहाँके हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोंको सताना छोड़ दें। वे लोग दक्षिण अफ्रीकाके यूनियनमें हिन्दुस्तानियोंके स्वाभिमानकी और अपने मुल्ककी इज्ज़तको बचानेके लिए एक बहादुराना लड़ाई लड़ रहे हैं। "दूसरोंके साथ वैसा ही सलूक करो, जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें," क्या इस अमर वाक्यके कर्त्ताका नाम वे यों ही लेते हैं? क्या दुनियाको ऐसा सन्देश देनेवाले एशियाके इस महान् पुरुषको उन्होंने अपने दिलोंसे निकाल दिया है? क्या वे भूल गये हैं कि दुनियाके सब बड़े-से-बड़े गुरु या उस्ताद एशियामें ही पैदा हुए थे, और उनमें कोई गोरी चमड़ीवाला नहीं था? अगर आज वे दुनियामें पैदा हों और दक्षिण अफ्रीका जायँ, तो क्या उन्हें भी इन नई भंगी-बस्तियोंमें रहना पड़ेगा? और क्या उनकी गिनती भी उन काले और एशियाई लोगोंमें होगी, जो वहाँके क़ानूनके मुताबिक़ गोरोंकी बराबरी नहीं कर सकते?

जिस सभ्यता या तहज़ीबको ज़िन्दा रखनेके लिए जात-पाँतके 'लिंच'के क़ानूनकी मदद लेनी पड़ती है, वह भी कोई सभ्यता कही जा सकती है? हमारे इन सत्याग्रही भाइयोंके सिर पर मुसीबतोंके बादल मँडरा रहे हैं, उनमें रोशनीकी एक ही किरण नज़र आती है, और वह है, गोरे पादरी स्कॉट साहबका हिम्मत और बहादुरीसे भरा बरताव। उन्होंने और उनके दूसरे गोरे साथियोंने वहाँके हिन्दुस्तानियोंकी मुसीबतोंमें हाथ बँटानेका फ़ैसला किया है।

नई दिल्ली, २६–६–'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनसानकी इनसानके साथ बेदर्दी

हाल ही अखबारोंमें एक खबर छपी है, जिससे पता चलता है कि इनसानकी इनसानके साथ की जानेवाली बेदर्दीको किस तरह क़ानूनके ज़ोरसे क़ायम रक्खा जाता है, और लोगोंमें यह बुराई किस हद तक घर कर गई है। १० जूनके 'हिन्दू'में छपी नीचे लिखी खबर अपनी कहानी आप कहती है:

"श्री ए० वैद्यनाथ अय्यर, एम० एल० ए० एक अखबारी बयानमें लोगोंका ध्यान एक ऐसे वाक़येकी ओर दिलाते हैं, जिसमें छूत-छातकी वजहसे हरिजनोंके साथ बेदर्दीका बरताव किया गया है। मिसालके तौर पर उन्होंने एक फ़ौजदारी मुक़दमेका हवाला दिया है, जिसमें मदुराके दो हरिजनोंको ४ महीनोंकी सख्त सज़ा एक ऐसे कामके लिए दी गई है, जिससे दूसरोंके दिलको चोट पहुँचनेका अँदेशा था।

"श्री वैद्यनाथ अय्यर कहते हैं: 'मदुराके एक हरिजनका सबसे बड़ा बच्चा मर गया। उसने बच्चेकी लाशको हरिजनोंके मरघटमें जलानेके बदले मदुरा म्युनिसिपैलिटीके उस सायेदार मरघटमें जलाया, जो ऊँची जातके हिन्दुओंके लिए बनाया गया कहा जाता है। हरिजनका कहना यह था कि उसको इस तरहके भेदका कोई इल्म न था। दूसरे, उस वक़्त रिमझिम पानी बरस रहा था, इसलिए उसने खुली जगहकी बनिस्बत सायेदार जगहको बेहतर समझा था। किसी ऊँची जातके हिन्दूने इस पर कोई एतराज़ नहीं किया था, और किसीके दिल दुखनेकी बातका कोई सबूत भी न था। मदुराकी पुलिसका ध्यान इस घटना (वाक़ये)की तरफ़ गया और उसने बच्चेके बाप पर और उसके एक नज़दीकी रिश्तेदार पर यह कहकर मुक़दमा चलाया कि इस कामकी वजहसे दूसरोंके दिल दुख सकते हैं, क्योंकि हरिजन अछूत माने जाते हैं। दूसरे दरजेके मजिस्ट्रेटने दोनोंको क़सूरवार पाया और चार-चार महीनोंकी सख्त सज़ा सुना दी। अपीलमें सिटी मजिस्ट्रेटने सज़ा और तोहमत दोनों बहाल रक्खे, गोकि अदालतके सामने यह दलील पेश की गई थी कि सन् १९३८के 'मद्रास सिविल डिसएबिलिटीज़ रिमूवल ऐक्ट'के मुताबिक़ हरिजनों या अछूतोंको उन जगहों पर जानेसे या उनका इस्तेमाल करनेसे रोका नहीं जा सकता, जो सरकारी या मुक़ामी हुकूमतके खर्चेसे बनाई गई हैं। चुनाँचे अदालतको चाहिये कि वह उन रिवाजों या रूढ़ियोंको माननेसे इनकार कर दे, जो हरिजनोंको उनके नागरिक अधिकारों (हक़ों)से महरूम रखती हों।'

"श्री वैद्यनाथ अय्यर कहते हैं कि उन्होंने मद्रासके मंत्रि-मण्डलका ध्यान इस मामलेकी ओर खींचा है।"

इस बर्बरता भरे मामलेमें मद्रासके मंत्रि-मण्डलको पहला काम यह करना चाहिये कि वह दया दिखलानेके अपने अधिकारकी रूसे सज़ा माफ़ कर दे और अगर इस मामलेमें आगे कोई क़ानूनी कार्रवाई की जा सकती हो, तो सरकारकी ओरसे पैरवी कराकर हाईकोर्टसे इस सज़ाको मन्सूख करवा दे।

नई दिल्ली, २३-६-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

नई किताब

	मूल्य	डाकखर्च
ईशु ख्रिस्त — (किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०-१-०
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधरी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१-८-०	०-५-०
एक धर्मयुद्ध — (महादेवभाई हरिभाई देसाई)	०-८-०	०-२-०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०

कसौटी और चुनौती

दुर्गसे श्री घनश्यामसिंह गुप्त लिखते हैं:

"दुर्ग म्युनिसिपैलिटीके कर्मचारियोंने (कारकुनोंने) तनख्वाह (हरएककी तनख्वाह) तिगुनी करनेकी अपनी माँग पूरी न होनेसे ता० ७से हड़ताल की। इसमें मेहतरभाई भी शामिल थे। इस परिस्थितिके लिए कमेटी तैयार न थी। कमेटीवालोंकी इस प्रार्थनाको कि सफ़ाईवाले हड़तालमें शामिल न किये जायँ, कर्मचारी-संघने क़बूल नहीं किया। संघने उनकी इस बातको भी क़बूल नहीं किया कि माँगका विषय एक निष्पक्ष कमेटीके सिपुर्द कर दिया जाय। कुछ लोगोंका यह क़यास है कि मेहतरभाइयों-को शामिल करनेमें इनका उद्देश्य (मक़सद) यह था कि इसीसे म्युनिसिपैलिटी जल्दी झुकेगी। कमेटीवाले बड़ी चिन्तामें पड़े और शहरमें तहलका मचा — घबराहट हुई। ता० ५को मैं बाहरसे आया था; उसी दिन कमेटीको संघने ता० ७से हड़ताल करनेकी सूचना दी थी।

ता० ७को आम सभा हुई। कमेटीके प्रधान और संघके प्रधानने अपने-अपने दृष्टिकोण (नुक़्त-ए-निगाह) रक्खे। मैं भी था। हालाँकि मैं हड़तालियोंके पक्षको कमज़ोर मानता था, फिर भी मेरा यह रुख़ रहा कि हमें यानी शहरके बाशिन्दोंको उनके झगड़ेमें न पड़कर अपनी रक्षा या हिफ़ाज़त आप करनी चाहिये। हम शहरको गँदला न रहने दें और ख़ुद ही उसे साफ़ करें। मैंने यह भी कहा कि बाहरसे मेहतर लाना नामुनासिब होगा। इसमें झगड़ा उठ सकता है। बाहरसे कोई मेहतर नहीं आया — नहीं लाया गया, या नहीं मिला। और हम रोज़-रोज़ अपनी सफ़ाई अपने-आप करनेमें लग गये। नतीजा यह हुआ कि चार दिनके बाद हड़ताल टूट गई और पाँचवें दिन सब अपने काम पर आ गये। शहरमें हर तरह पूरी शान्ति (अमन) रही।

हड़ताल तोड़नेका ऐलान करते हुए संघके प्रधानने आम सभामें मेरे और मेरे साथियोंके बारेमें यह कहा कि पाखाना झाड़कर और सड़क साफ़ करके इन्होंने हिंसाका काम किया। मतलब शायद यह था कि हम मेहतरका काम न करते, तो कमेटी झुकती और उनकी माँग पूरी करती। ऐसा न होनेसे उनका पेट मारा गया, इसलिए हिंसा हुई। यही ख़ास वजह है, कि आपको यह ख़त लिख रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि मैंने और मेरे साथियोंने हिंसाका कोई काम नहीं किया। इसमें कोई ग़लती हुई हो, तो मेहरबानी करके बतायें। मैं इतना और लिखना चाहता हूँ कि मेरे मनमें उनके लिए कोई विरोध या बैर भाव नहीं। उनकी थोड़ी-सी सेवा मैंने भी की है। सन् १९२४में जब मैं म्युनिसिपल कमेटीका प्रधान था, तब मैंने उनके बच्चोंको दूसरे बच्चोंके साथ-साथ स्कूलमें पढ़ाया और ख़ुद आफ़त झेली।"

श्री घनश्यामसिंहजीका यह सवाल एक अहम सवाल है। आजकल भंगियोंकी हड़तालें रोज़मर्राकी चीज़ें बन रही हैं। वे हमारी नागरिक भावनाको, शहरीके नाते हमारे जज़्बातको, चुनौती देती हैं, और आज़ादीकी हमारी पुकारकी सचाईको कसौटी पर चढ़ाती हैं। अहमदाबादमें हाल ही शुरू हुई भंगियोंकी हड़तालके सिलसिलेमें वहाँके शहरियोंने इसी ढंगका जो क़दम उठाया है, श्री खण्डुभाई देसाईने उसका एक बयान भेजा है। हमारी समाजी और म्युनिसिपल ज़िंदगीमें भंगियोंकी जगह एक बुनियादी जगह है। हमें चाहिए कि हम उनकी रहन-सहनकी हालतों और काम-काजके औज़ारों या साधनोंको सुधारनेकी तरफ़ सबसे पहले तवज्जह दें। इससे पहले कि अपनी शिकायतोंको दूर करानेके लिए वे कोई सीधी कार्रवाई करें, शहरियों और म्युनिसिपैलिटीके करदाताओं (महसूल देनेवालों)का यह फ़र्ज़ है कि वे ख़ुद इस मामलेमें पहल करके मुनासिब इन्तज़ाम करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ज़रूरी नहीं कि हड़तालियोंकी सभी माँगें मुनासिब हों और इन्साफ़ लिये हों, इसलिए तनख़्वाहके झगड़ेको किसी निष्पक्ष पंचके सामने रखनेसे इनकार करना ग़लत है। अगर दुर्ग और अहमदाबादके इन दोनों मामलोंमें शहरियोंने हड़तालियोंको ज़बरदस्ती झुकानेके इरादेसे सफ़ाई वग़ैराका काम ख़ुद किया है, तो हड़तालियोंके नुक़्त-ए-निगाह (दृष्टिकोण) से ऐसा करना निन्दनीय था। लेकिन अगर हड़तालियोंकी माँगें ग़ैरवाजिब और अन्यायपूर्ण थीं, तो उनकी इस ज़बरदस्तीकी मुख़ालिफ़त करनेका शहरवालोंको पूरा हक़ था।

चूँकि हड़ताल ख़त्म हो चुकी है, इसलिए शहरियोंने शहरकी सफ़ाईके मामलेमें जो दिलचस्पी दिखाई है, वह वहीं ख़त्म न हो जानी चाहिये। उनका फ़र्ज़ है कि वे इस चीज़की तह तक जायँ, और जिन वजहोंसे बार-बार ऐसी हड़तालें होती हैं, उन्हें जड़से दूर कर दें। कई शहरोंमें रहन-सहनके ख़यालसे भंगी-बस्तियोंकी जैसी शर्मनाक हालत है, उसका तो फ़ौरन ही ख़ात्मा किया जाना चाहिये। भंगियोंको अच्छे-से-अच्छे ढंगसे सफ़ाईका काम करनेके तरीक़े सिखाये जाने चाहिये। उनको अपने लिए और अपने बच्चोंके लिए पढ़ाई-लिखाईकी और डॉक्टरी मददकी वे सब सहूलियतें मिलनी चाहिये, जिनसे वे अच्छे शहरी बन सकें। अगर तनख़्वाहें कम हैं, तो वे बढ़ाई जानी चाहिये। और सबसे बड़ी बात यह है कि चूँकि अब लोग अपने ज़ाती तजरबेसे यह जान चुके हैं कि सफ़ाईके काममें क्या मुश्किलें हैं, इसलिए सुधारकोंको अब यह तय करनेमें ज़्यादा आसानी हो जानी चाहिये कि मैला और कूड़ा-करकट साफ़ करनेके वे कौनसे तरीक़े हैं, जिन्हें अपनानेसे सफ़ाईका यह धन्धा या पेशा आजकी तरह गन्दा न माना जाय। अगर यह ज़रूरी सुधार वक़्त रहते न किया गया, और इस सिलसिलेमें होनेवाले नये-नये आन्दोलनों (तहरीकों) को टाला न गया, तो जो उम्दा काम किया गया है, वह बेकार हो जायगा।

नई दिल्ली, २३-६-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

हिन्दुस्तानी-प्रचार-परीक्षाओंकी पाठ्यपुस्तकें

यह ऐलान किया गया है कि गूजरात विद्यापीठकी ओरसे ली जानेवाली हिन्दुस्तानीकी 'पहली,' 'दूसरी,' और 'तीसरी' परीक्षायें इतवार, ता० ८ सितंबर, १९४६के दिन होंगी। और, इस बार हिन्दुस्तानीकी 'चौथी' परीक्षा भी शुरू होगी। इन सब इम्तहानोंके लिए तय की गई पढ़ाईकी किताबें नवजीवन कार्यालयकी तरफ़से छापी जाती हैं। इन परीक्षाओंकी नीचे लिखी किताबें नवजीवन कार्यालयकी तरफ़से गूजरात विद्यापीठ-ग्रन्थावलीमें निकाली गई हैं:

१. उर्दू लिपि शिक्षिका
२. हिन्दुस्तानी बाल कहानियाँ
३. हिन्दुस्तानी बाल पाठावली
४. ,, पाठावली पहली किताब
५. ,, ,, नागरी लिखावटमें
६. ,, ,, फ़ारसी लिखावटमें
७. ,, कहानियाँ

इन इम्तहानोंमें आम तौर पर बैठनेवालोंकी तादादका अन्दाज़ा लगाकर कुछ महीनों पहले ये किताबें काफ़ी तादादमें छपाकर रक्खी गई थीं। लेकिन पिछले चार महीनोंमें हिन्दुस्तानीके प्रेमियोंने इन्हें इस तरह ख़रीद लिया, जिसकी कोई उम्मीद न थी। एक तरहसे यह चीज़ स्वागत योग्य है, क्योंकि इससे यह साबित होता है कि हिन्दुस्तानीके इम्तहानोंमें न बैठनेवाले लोग भी अपने-आप दोनों लिखावटोंमें हिन्दुस्तानी सीख लेते हैं। ऐसे लोगोंकी तादादको ध्यानमें रखकर ही ऊपर दी गई किताबें छापी गई थीं। मगर मालूम होता है कि इधर उनकी तादाद और भी बढ़ गई है। नतीजा यह हुआ है कि इन इम्तहानोंकी तैयारी करनेवाले जो विद्यार्थी स्कूलोंके खुलने पर इन किताबोंकी माँग करेंगे, उनके लिए किताबें रही नहीं हैं। इसलिए उनको थोड़ी राह देखनी पड़ेगी। ऊपरकी सभी किताबें फिरसे छापी जा रही हैं, और कोशिश यह रहेगी कि वे जल्दी-से-जल्दी सबको मिल जायँ। उम्मीद है कि १५ जुलाई तक सब किताबें तैयार हो जायँगी। जैसे-जैसे वे छपती जायँगी, वैसे-वैसे मिलने भी लगेंगी। उम्मीद यह है कि १५ जुलाई तक सब किताबें मिल सकेंगी। इस अनसोची मुश्किलकी वजहसे मुमकिन है कि इम्तहान देनेवालोंको थोड़ी तकलीफ़ हो। इसके लिए वे हमें माफ़ करें। लेकिन इससे हिन्दुस्तानीके कामको कोई धक्का नहीं पहुँचेगा, क्योंकि प्रचारकोंसे हम यह बिनती कर रहे हैं कि वे अपने-अपने केन्द्रोंमें पुरानी किताबें इकट्ठा करके काम शुरू कर दें।

('हरिजनबन्धु'से) जीवणजी देसाई

सूतकी दुकान

मढ़ीसे श्रीमती अन्नपूर्णा बहन मेहताने वहाँके कामका नीचे लिखा ब्योरा भेजा है:

"शुरूमें मेरा यही ख़याल और आग्रह था कि इस गाँवकी लड़कियोंमें ही काम करूँ और गाँववालोंके साथ थोड़ा भी सम्बन्ध बँधे, तो उस थोड़े ही सम्बन्धके सहारे गाँवके घरोंमें प्रवेश करूँ। पूज्य जुगतरामभाई जब ज़्यादा बहनोंको फ़ायदा पहुँचानेकी बात कहते, तो मैं तनिक दुविधामें पड़ जाती। लेकिन आपके ख़याल जाननेके बाद तो मेरा हौसला बहुत बढ़ा है, और मुझे अपने विचारोंमें श्रद्धा (एतक़ाद) पैदा हुई है।

"यहाँ गाँववालोंके साथ काफ़ी अच्छे सम्बन्ध (ताल्लुक़ात) पैदा हो गये हैं। लोग मुहब्बतके साथ इस कामको देखने और हमारी बातें सुनने लगे हैं। लेकिन इस सबकी चर्चा यहाँ कैसे करूँ? आज तो यहाँ छोटे पैमाने पर गुण्डीकी दुकानका जो काम शुरू हुआ है, उसका ब्योरा भेजती हूँ। इस दुकानमें लोगोंसे सूतकी गुण्डियाँ लेकर बदलेमें उन्हें उनकी ज़रूरतकी चीज़ें दी जाती हैं; इसलिए हम इसे गुण्डीकी दुकान कहते हैं। कोई १२ महीने पहले यह काम शुरू किया गया था। उस वक़्त गाँवमें प्रार्थनाके बाद दिल-बहलावका जो प्रोग्राम रक्खा जाता था, उसमें हम गुण्डीकी दुकानका नाटक खेला करते थे। लेकिन तब यहाँ गुण्डीकी कोई दुकान शुरू नहीं हो पाई थी। मई महीनेमें इसके लिए फिर कोशिश की गई और दुकान शुरू हुई। इस बीच उसने जो तरक़्क़ी की है, वह यों है:

महीना	गुण्डीकी कुल आमद
मई	४३
जून	५५
जुलाई	२२१
अगस्त	२२८
सितम्बर	२३३
अक्तूबर	५९

"गुण्डीके बदलेमें रोज़के कामकी चीज़ें, जैसे, तेल, गुड़, साबुन, मिर्च, हल्दी, दाल वग़ैरा दी गईं।

"आख़िरी महीनेमें लोगोंको धान-कटाई और घास-कटाईका काम रहा, इसलिए मेरा ख़याल है कि वे कम कात पाये।

"गुण्डीकी यह दुकान यहाँके विद्यालयमें आनेवाली ९ से १० सालकी उम्रकी लड़कियाँ चलाती हैं। जो लड़कियाँ यहाँ आनेसे पहले सिर्फ़ धूलमें खेला करती थीं, वे अब उत्साहके साथ गुण्डीकी दुकान चलाती हैं।"

('हरिजनबन्धु'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हफ़्तेवार ख़त

पत्रकार-मित्रोंकी बेलगाम और अक्सर ग़ैरज़िम्मेदारीसे भरी हुई हलचलोंकी वजहसे इस हफ़्ते नई दिल्लीमें अटकलों, अफ़वाहों और ख़तरेकी झूठी चेतावनियोंका बाज़ार बहुत ही गरम रहा। गांधीजीको कई बार अख़बारवालोंसे अपील करनी पड़ी कि वे इस तरहकी अख़बार-बाज़ी करके अपना और मुल्कके कामका नुक़सान न करें। एक दफ़ा उन्होंने कहा: "अगर वाइसरायकी जगह मुझको एक दिनके लिए डिक्टेटर बना दिया जाय, तो मैं सब अख़बार बन्द कर दूँ। अलबत्ता, 'हरिजन' को छोड़कर," उन्होंने मुस्कराते और आँख मिचकाते हुए कहा। इसी सिलसिलेमें वह यह भी कह गये कि अगर उन्हें अपने पत्रका नया नाम रखना पड़े, तो वे उसे 'हरिजन' न कह कर 'भंगी' कहेंगे, क्योंकि उनके ख़यालसे यह नाम उनके मौजूदा विचारों और मौजूदा घड़ीके साथ ज़्यादा मेल खानेवाला है। इस तरहकी ग़ैर-ज़िम्मेदारीसे भरी अख़बारनवीसीसे जो बेहद नुक़सान हो सकता है, उसकी एक मिसाल देते हुए उन्होंने कहा: "अख़बारोंमें वर्किंग कमेटीके साथ होनेवाली मेरी बातचीतके जैसे बयान छप रहे हैं, अगर लोग उन्हें मानने लगें, तो सहज ही हिन्दू यह ख़याल कर सकते हैं कि मैं उनके हितोंका दुश्मन हूँ। अख़बारोंमें यह भी कहा गया है कि वर्किंग कमेटीमें एक मैं ही हूँ, जो समझौतेके ख़िलाफ़ आवाज़ उठा रहा हूँ। आप यक़ीन रखिये कि ये सब निरी ख़याली बातें हैं। आप इन्हें भूल जाइये। अख़बारवालोंसे मैं अपील करूँगा कि वे अपनी क़लम पर रोक लगायें। अगर वे ऐसा न करें, तो आम लोगोंका यह फ़र्ज़ है कि वे ऐसी मसालेदार ख़बरोंको पढ़नेका ख़याल छोड़ दें और इस तरहकी ख़बर देनेवाले अख़बारोंको अपनाना बन्द कर दें, या कम-से-कम उनमें छपनेवाली बातोंसे किसी तरह गुमराह न हों।"

एक दूसरे मौक़े पर गांधीजीने कहा: "कुतूहल दो तरहका होता है, एक, तन्दुरुस्त और दूसरा, ना-तन्दुरुस्त। इनसानको चाहिये कि वह अपने फ़र्ज़को जाननेके लिए हर क़दम पर तैयार रहे। मगर झूठी-सच्ची ख़बरोंको जाननेकी बेक़रारी एक ऐसी कमज़ोरी है, जिसे अगर क़ाबूमें न रक्खा जाय, तो वह आदमीके मन और उसकी आत्माको दुर्बल बनाती है।"

बदगोईकी आँधी

कांग्रेसने अपनी तरफ़से कैबिनेट मिशनकी तजवीज़ों पर जल्दी-से-जल्दी कोई फ़ैसला करनेके बारेमें कुछ उठा नहीं रक्खा। फिर भी वह बदनामीसे बच नहीं सकी। क्योंकि कुछ अख़बारोंमें उसके ख़िलाफ़ कीनेसे भरी बदगोईकी एक तहरीक इधर बराबर चलती रही। कांग्रेस पर अड़ंगेबाज़ीका, टाल-मटोलका और देर लगानेका इल्ज़ाम लगाया गया है। और, जब इससे काम न चला, तो यह कहा जाने लगा कि देरकी वजह वर्किंग कमेटीकी अन्दरूनी नाइत्तफ़ाक़ी है। प्रार्थनाके बादकी अपनी एक तक़रीरमें गांधीजीने इस सारी छींटाकशीको बेबुनियाद साबित करते हुए कहा कि यह कहना बिलकुल ग़लत है कि वर्किंग कमेटीको किसी आख़िरी फ़ैसले पर पहुँचनेके लिए जो देर लग रही है, वह उसके अन्दरके झगड़ों या मतभेदोंकी वजहसे है। किसी भी ज़िन्दा जमातमें अलग-अलग रायोंका होना लाज़िमी है। मैं ख़ुद नहीं जानता कि वर्किंग कमेटीका आख़िरी फ़ैसला क्या होगा? अगर कांग्रेसके रजिस्टरोंमें मुसलमानोंके मुक़ाबले हिन्दू ज़्यादा दर्ज हैं, तो यह ठीक ही है, क्योंकि हिन्दुस्तानमें हिन्दुओंकी आबादी ही सबसे ज़्यादा है। लेकिन किसी भी ख़यालसे इस बिना पर कांग्रेसको हिन्दुओंकी जमात तो हरगिज़ नहीं कहा जा सकता। कांग्रेसकी तारीख़में मौलाना आज़ाद ही ऐसे हैं, जिन्होंने इतने लम्बे अरसे तक कांग्रेसके प्रेसिडेण्टकी गादी सँभाली है। अपनेको कांग्रेसी कहनेवाले सब कोई उनकी पूरी-पूरी इज़्ज़त करते हैं। कांग्रेसने अपनेको किसी एक जमात या क़ौमका नहीं, बल्कि समूचे हिन्दुस्तानका ट्रस्टी बना रक्खा है। इस तरहकी जमातमें बहुमत रखनेवालोंका हमेशा यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वे अल्पमतवालों और पिछड़े हुओंके लिए ज़रूरी क़ुरबानियाँ करें। मगर उनकी ये क़ुरबानियाँ किसी मेहरबान सरपरस्तके ढंगकी नहीं, बल्कि शानके साथ अपना फ़र्ज़ अदा करनेवालेके ढंगकी होनी चाहिये। कांग्रेसकी निगाहोंमें हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई और सिक्ख, सभी हिन्दुस्तानी हैं, और इसलिए सबको हक़ है कि वे उससे बराबरीके बरतावकी उम्मीद रक्खें। एक अहिंसाकी ताक़तको छोड़कर कांग्रेसके पास दूसरी कोई ताक़त नहीं। वाइसरायके पास ब्रिटिश सल्तनतकी समूची फ़ौजी ताक़त पड़ी है। मगर कांग्रेसके प्रेसिडेण्टके पास ऐसी कोई ताक़त नहीं। उन्हें तो हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी ख़्वाहिशको कारगर बनानेके लिए मुल्ककी सभी क़ौमों और फ़िरक़ोंके मिले-जुले और दिली सहयोगका ही भरोसा रखना पड़ता है। इसलिए वर्किंग कमेटी दिलसे यह चाहती है कि मुल्ककी सभी क़ौमोंकी एक रायसे और सदिच्छासे केन्द्र या मरकज़में ज़िम्मेदारी सँभाली जाय। यही वजह है कि वे सब लोगोंके हित पर इतनी संजीदगीके साथ ग़ौर कर रहे हैं। और, इसमें शक नहीं कि यह एक बहुत नाज़ुक काम है। वर्किंग कमेटी नहीं चाहती कि थोड़े वक़्तके लिए जो आरज़ी सरकार बने, वह हमारे आपसके बेहूदा झगड़ोंका अखाड़ा बनकर रह जाय।"

दक्षिण अफ़्रीका

दक्षिण अफ़्रीकामें जो बहादुराना लड़ाई छिड़ी है, पिछले दिनों गांधीजी प्रार्थनाके बादकी अपनी तक़रीरोंमें अक्सर उसका ज़िक्र करते रहे हैं। २१ अप्रैल, १९४६ को जोहानिस्बर्गमें ट्रान्सवाल इण्डियन कांग्रेसने अपने एक जलसे में 'पैसिव रेज़िस्टन्स' या सत्याग्रहके बारेमें एक ठहराव किया था, जिसमें और बातोंके साथ यह भी कहा गया है:

"सेग्रिगेशनकी पॉलिसी (यानी कालोंको गोरोंसे दूर और अलग बस्तियोंमें रखनेकी पॉलिसी) हमारे मुल्क और हमारे लोगोंको बेहद नुक़सान पहुँचा रही है। इसलिए उसे चुपचाप बरदाश्त कर लेना हम इनसान के और ईश्वरके ख़िलाफ़ गुनाह करना समझते हैं। उन्हें याद रखना चाहिये कि यह आन्दोलन या तहरीक अहिंसाकी बुनियाद पर शुरू की गई है, और इसका मक़सद अलग बस्ती बसानेकी नीतिका विरोध करना है। इस मुल्कके गोरे बाशिन्दोंके ख़िलाफ़ लड़ना हमारा मक़सद नहीं।"

जमहूरियत या लोकशाहीको माननेवाले दक्षिण अफ़्रीकाके युरोपियनोंकी और वहाँके हब्शी लोगोंकी इस लड़ाईके साथ पूरी हमदर्दी है। ट्रान्सवाल इण्डियन कांग्रेसकी तरफ़से की गई एक आमसभामें दक्षिण अफ़्रीकाकी क़ौमी कांग्रेसके प्रेसिडेण्ट जनरलने कहा था:

> "इस मंच या प्लैटफ़ॉर्मसे मैं यह ऐलान करता हूँ कि हम अफ़्रीकावाले इस जंगली क़ानूनके ख़िलाफ़ छेड़ी गई हिन्दुस्तानियोंकी इस लड़ाईके साथ न सिर्फ़ हमदर्दी रखते हैं, बल्कि हम हर तरह इस काममें उनकी मदद करने और उन्हें सहारा देनेका वादा करते हैं।"
>
> उन्होंने और कहा: "कल अफ़्रीकावालोंकी बारी थी। आज हिन्दुस्तानियोंकी बारी है। अगले कल दूसरे रंगीन लोगोंकी बारी होगी, और कोई नहीं जानता कि रंग-भेद और जाति-भेदकी यह पॉलिसी कहाँ जाकर ख़तम होगी?"

इस लड़ाईकी जो ख़बरें रोज़ाना अख़बारोंमें छपी हैं, उनका हवाला देते हुए २१ जूनकी शामको गांधीजीने प्रार्थनाके बाद बताया कि किस तरह कुछ गोरोंने वहाँ क़ानूनको अपने हाथमें ले लिया है, और वे सत्याग्रहियोंको हैरान करने लगे हैं। उन्होंने कहा: "मालूम होता है, दक्षिण अफ़्रीकाकी यूनियन सरकार सिर्फ़ खड़ी रहकर तमाशा देख रही है। यह ग़लत चीज़ है। एक अन्यायपूर्ण क़ानून पास करना ख़ुद ही काफ़ी बुरी चीज़ है, मगर गोरोंका उस क़ानूनको अपने हाथमें ले लेना और उन्हें ऐसा करने देना तो और भी बुरा है। उन्हें महसूस करना चाहिये कि हिन्दुस्तानके लोग उनसे किसी भी तरह हलके नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। वे अलग बस्तियोंमें रहना न तो मंज़ूर कर सकते हैं, न करेंगे।"

गांधीजीने आगे कहा: "कुछ गोरे रोज़ सत्याग्रहियोंकी छावनी पर धावा बोलते हैं, उनके डेरे-तम्बुओंको नुक़सान पहुँचाते हैं, और उन्हें सताते या डराते-धमकाते हैं। सत्याग्रहियोंमें कुछ बहनें भी हैं। इन बहनोंने अपने साथियोंसे हिम्मतके साथ यह कहा है कि वे हर तरहकी आफ़त-मुसीबतमें बराबर उनके साथ रहेंगी और उसमें हाथ बँटायेंगी। सत्याग्रही चोर-डाकू नहीं हैं, बल्कि इज़्ज़तदार शहरी हैं। अपनी इज़्ज़तका ख़याल रखनेवाले लोगोंके नाते वे भंगियोंकी-सी अलग बस्तियोंमें रहनेके बदले जेलोंमें रहना ज़्यादा पसन्द करेंगे। वे आख़िरी दम तक अन्याय और अत्याचारका मुक़ाबला करेंगे। दक्षिण अफ़्रीकाकी सरकार चाहे, तो वह उनको क़ानून तोड़नेके लिए सज़ा कर सकती है या अपने बनाये उस सेग्रिगेशन ऐक्टको रद कर सकती है, जो इनसानियतके क़तई ख़िलाफ़ है। अगर दक्षिण अफ़्रीकामें अमेरिकाके ढंगपर लोगोंको खुले आम जलाने और सतानेके क़ानूनको अपना काम करने दिया गया, तो गोरोंकी तहज़ीबके इतिहास पर हमेशाके लिए एक काला धब्बा लग जायगा।" गांधीजीने यह उम्मीद ज़ाहिर की कि दक्षिण अफ़्रीकाकी सरकार और दुनियाके सुधरे हुए लोग ऐसा न होने देंगे।

प्रार्थनाके बादकी एक दूसरी तक़रीरमें गांधीजीने कहा: "आज दक्षिण अफ़्रीकामें जो कुछ हो रहा है, वह फ़ौजी क़ानूनसे भी बुरा है। मैं ये सब बातें आप लोगोंको दक्षिण अफ़्रीकाके गोरोंके ख़िलाफ़ ग़ुस्सा दिलाने या भड़कानेके लिए नहीं कह रहा हूँ। अगर हमने ऐसा किया, तो हम प्रार्थनामें शरीक होनेके लायक़ न रह जायँगे। आप लोग अपने-अपने घर जाकर भगवान्से प्रार्थना कीजिये कि वह दक्षिण अफ़्रीकाके हमारे इन भाई-बहनोंको, जो हिन्दुस्तानकी इज़्ज़तके लिए लड़ रहे हैं, ऐसी ताक़त दे, जिससे वे सब मुसीबतोंको बहादुरीसे बरदाश्त कर सकें। और, साथ ही यह मनायें कि भगवान् वहाँके गोरोंको रास्ता दिखाये, ताकि वे अपनी इनसानियतको छोड़कर बरतना बन्द कर दें; और वहाँकी सरकारकी आँखें खुलें, जिससे वह हिन्दुस्तानियोंके साथ अपनी बराबरीके इनसानों-जैसा बरताव कर सके। दक्षिण अफ़्रीकाके गोरे भी हमारे भाई ही हैं, क्योंकि हम सब एक ही ख़ुदाके बच्चे हैं।"

आख़िरमें गांधीजीने कहा: "जब हिन्दुस्तानकी हुकूमत हमारे हाथमें आ जायगी, तब इस तरहकी चीज़ें नामुमकिन हो जायँगी। सचाई और अहिंसाके रास्ते चलनेवाला आज़ाद हिन्दुस्तान दक्षिण अफ़्रीकाके बाशिन्दोंको अमन या शान्तिका सबक़ सिखायेगा। लेकिन यह तो आपको और कांग्रेसको तय करना होगा कि आया आज़ाद हिन्दुस्तान शान्तिके रास्ते चलेगा या तलवारका रास्ता अपनायेगा। छोटे-छोटे मुल्कों या राष्ट्रोंका दुनियाके लोगोंको उनकी क़ीमती विरासतसे महरूम रखना यों ही एक काफ़ी बुरी चीज़ है, लेकिन अगर क़रीब ४० करोड़ लोगोंसे बसा हुआ हिन्दुस्तानके जैसा बड़ा मुल्क तोप और बन्दूकको अपनाकर ख़तरनाक ज़िन्दगी बिताना तय करे, तो वह एक बहुत ही डरावनी चीज़ होगी।"

नई दिल्ली, २४-६-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

[**फिरसे:** अबकी एक डर ऐसा निकला, जो आख़िरकार झूठा साबित हुआ। कलकी प्रार्थनामें गांधीजीने उस नीम-सरकारी बयानकी तरफ़ लोगोंकी तवज्जह दिलाई, जो हाल ही अख़बारोंमें छपा था। इस बयानमें यह कहा गया है कि विधान बनानेवाली सभाके उम्मीदवारोंको चुननेके लिए जारी की गई हिदायतें उन्हें मिशनके बयानकी १९वीं धाराकी किसी चीज़से बाँधती नहीं हैं। अख़बारोंमें छपे ऐलानमें यह बात साफ़ तौरसे कही गई थी। गांधीजीने कहा: "मुझे अफ़सोस है कि इतवारके दिन यहाँ भाषण करनेसे पहले मैं इस ऐलानको देख नहीं पाया था। मुझे यह कहते हुए ख़ुशी होती है कि इस मसलेको लेकर जो डर मेरे मनमें पैदा हो गया था, वह बेबुनियाद साबित हुआ है। मैं कैबिनेट मिशनके सामने अपनी इस ग़लतीको क़बूल करना अपना फ़र्ज़ समझता हूँ, फिर भले यह ग़लती कितने ही नेक इरादेसे क्यों न हुई हो।"

उसी दिन प्रार्थना-सभामें उन्होंने वर्किंग कमेटीकी चर्चाओंके अख़बारोंमें छपे बयानका ज़िक्र किया। उन्होंने कहा: "सच है कि बीचके वक़्तके लिए आरज़ी सरकार बनानेकी ग़रज़से पेश की गई तजवीज़ोंको नामंज़ूर कर देनेका फ़ैसला वर्किंग कमेटीने किया है। लेकिन साथ ही उसने तजवीज़शुदा विधान बनानेवाली सभामें शामिल होनेका निश्चय किया है। विधान बनानेवाली सभाके लिए पेश की गई दरख़्वास्तमें कई ख़ामियाँ हैं, लेकिन वर्किंग कमेटीने बहुत सोच-समझकर यह तय किया है कि आख़िरकार विधान बनानेवाली सभा लोगोंके चुने हुए नुमाइन्दोंकी बनेगी। इसलिए इस मसलेके सब पहलुओं पर ग़ौर करनेके बाद कमेटीने यह तय किया है कि इन दरख़्वास्तोंको ठुकराया न जाय।"

गांधीजीने इसी सिलसिलेमें आगे कहा: "अख़बारोंमें यह ख़बर छपी है कि वर्किंग कमेटीने अपना यह फ़ैसला मेरी मरज़ीके ख़िलाफ़ किया है। यह एक ग़लतफ़हमी पैदा करनेवाला बयान है। हक़ीक़त यह है कि पिछले ४-५ दिनसे मेरे मनमें एक ऐसा अँदेशा पैदा हो गया है, जिसके सिर-पैरका ख़ुद मुझीको कोई पता नहीं है। जहाँ पहले मुझे उजाला दिखाई पड़ता था, वहाँ आज मैं अँधेरा देख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि यह अँधेरा ईश्वरमें श्रद्धाकी कमीका सूचक है। जिसका रोम-रोम अपने मालिककी हस्तीसे भरा है, उसके पास तो अँधेरा कभी फटक नहीं सकता।"

गांधीजीने फिर कहा: "सो जो भी हो, असल बात यह है कि इस वक़्त मुझे कोई रोशनी नज़र नहीं आ रही है। तिस पर बड़ी बात यह है कि मैं अपने इस डर या अँदेशेको न तो समझा सकता हूँ, और न इसकी कोई वजह दे सकता हूँ। इसलिए मैंने सिर्फ़ अपने दिलका शक वर्किंग कमेटीके सामने ज़ाहिर कर दिया और कहा कि वह मेरा ख़याल छोड़कर अपने तौर पर जो फ़ैसला करना चाहे, करे। जिन लोगोंको सारे मुल्ककी रहनुमाई करनी है, वे दूसरे किसीकी समझमें न आनेवाली प्रेरणाके सहारे चल नहीं सकते। अगर उनमें ख़ुद सोचने और दूसरोंको अपनी बात दलीलोंसे जँचानेका माद्दा न हो, तो वे मुल्कके भाग्यका कोई निपटारा न कर सकें। वर्किंग कमेटीके मेम्बर देशके सेवक हैं। जिन लोगोंकी सेवा या ख़िदमत करनेकी उन्होंने अब तक कोशिश की है, उनकी राज़ी-रज़ामन्दीको छोड़कर दूसरी कोई ताक़त वर्किंग कमिटीके हाथमें नहीं है। लोग जब चाहें तब उन्हें उनकी जगहसे हटा सकते हैं। इसलिए आप लोगोंको मैं यह सलाह दूँगा कि आप वर्किंग कमिटीके बताये या तय किये रास्ते पर चलें। जब मुझे कोई रोशनी दिखाई पड़ेगी, मैं आपसे उसका ज़िक्र करूँगा। लेकिन जब तक किसी भी मामलेमें मैं अपनेको अँधेरेसे घिरा पाता हूँ, तब तक किसीको मेरे साथ उस रास्ते चलना न चाहिये।" प्या०]

विषय-सूची

		पृष्ठ
डॉक्टर लोहियाकी ललकार ...	गांधीजी	२०१
कुछ और क़ानूनी सलाहें ...	प्यारेलाल	२०२
गोरोंकी ठेकेदारी ...	गांधीजी	२०४
इनसानकी इनसानके साथ बेदर्दी ...	प्यारेलाल	२०५
कसौटी और चुनौती ...	प्यारेलाल	२०५
हिन्दुस्तानी-प्रचार-परीक्षाओंकी पाठ्यपुस्तकें ...	जीवणजी देसाई	२०६
हफ़्तेवार ख़त ...	प्यारेलाल	२०७
टिप्पणियाँ		
यह कैसा द्वेष? ...	मो० क० गांधी	२०१
देखादेखी ...	मो० क० गांधी	२०१
हरिजनोंके लिए चन्दा ...	मो० क० गांधी	२०१
सूतकी दुकान ...		२०६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल कांगड़ी
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एटम बम और अहिंसा

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०　　　सम्पादक : प्यारेलाल　　　अंक २२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ७ जुलाई, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डालर ३

खादीके पीछे पागल

राजकोट-राष्ट्रीय शाला (क़ौमी मदरसे)की चरखा-जयन्तीका निवेदन (अपील) नीचे दिया जाता है :

"'रेंटिया (चरखा) बारस' ता. ८-७-'४६ से २२-९-'४६ तक (७७ दिन)।

"भादों वद बारसके दिन गांधीजीका ७८वाँ जन्मदिन या सालगिरह होगी। गांधी-जयन्तीका मतलब है चरखा-जयन्ती।

"अहिंसक समाज-रचनामें गांधीजीने चरखेको अहिंसाके प्रतीक (निशानी)के तौर पर देशके सामने रक्खा है। जो चरखा बरसोंसे ग़रीबी, लाचारी और ज़ुल्मकी निशानी था, वह अब राजकाजी (सियासी), आर्थिक (माली) और सामाजिक स्वतंत्रता (आज़ादी)का अच्छे-से-अच्छा प्रतीक (निशानी) बन गया है। यह टेढ़ी बातको सीधी बनानेकी कोशिश है। इस कोशिशको सफल करना हमारी श्रद्धा (एतक़ाद) पर मुनहसर है। जितनी श्रद्धा होगी, उतना ही चरखेका वेग (रफ़्तार) बढ़ेगा।

"यह शाखा बारह बरसोंसे चरखा-जयन्ती मनानेका कार्यक्रम (प्रोग्राम) बनाती आई है। और इस कार्यक्रमसे चरखेके वातावरण (फ़िज़ा)को काफ़ी तेज़ी मिली है। अखिल भारत चरखा-संघने सारे हिन्दुस्तानके लिए इस योजना (तजवीज़)को अपनाया है।

"इस सालका कार्यक्रम ८ जुलाईको सुबह साढ़े-सात बजे प्रार्थनासे शुरू होगा। ७७ दिन तक पूरी ताक़तसे कातनेका सब लोग संकल्प (इरादा) करें। मैं आशा लिए बैठा हूँ कि हररोज़ एक आँटी कातनेवाले काफ़ी निकलेंगे। जो लोग इतना वक़्त न दे सकें, वे जितना बने उतने ही वक़्त तक कातनेका संकल्प करें।

"इस सूतका इस्तेमाल हरकोई अपने कपड़ोंके लिए खादी बनवानेमें कर सकेगा। काती हुई आँटियोंमेंसे कम-से-कम आंटियाँ यहाँ भेजी जायँ। जो हरसाल सिक्के दान करते हैं, वे ७७ सिक्के भेज सकते हैं। मगर दानमें बापूजी सूतके दानको ही सबसे अच्छा समझते हैं।

"हररोज सुबह साढ़े-सात बजे मिलकर प्रार्थना होती है और बादमें सब मिलकर कताई करते हैं। उसमें पहले नम्बरके भाई और बहनें हिस्सा लेती हैं। उम्मीद है कि इन ७७ दिनोंमें राजकोटवासी ज़्यादा-से-ज़्यादा तादादमें प्रार्थना और सामुहिक कताईमें हिस्सा लेंगे।

"हमारे काठियावाड़के पहले नम्बरके नेता श्री दरबार साहबने ७७ आँटी कातनेका संकल्प किया है। आशा है, इस योजनाको सब अपना लेंगे और कितना कातनेका इरादा किया है, उसकी ख़बर यहाँ भेजेंगे।

"हमने हिसाब लगाया है कि राष्ट्रीय शालाके कार्यकर्त्ता और छोटे विद्यार्थी २० लाख गज सूत कातेंगे। उम्मीद है कि वीराणी कन्या विद्यालय और वीराणी हाईस्कूलमें भी, जहाँ कताईको पढ़ाईके कार्यक्रममें रक्खा गया है, अच्छे पैमाने पर इन दिनोंमें कताई होगी।

"ईश्वरकी मरज़ी होगी, तो यह संकल्प सफल होगा।

राष्ट्रीय शाला, २४-६-'४६　　　सेवक,
नारणदास खु० गांधी"

श्री नारणदास गांधी खादीके पीछे पागल हैं। सूतकी दुकानकी मेरी कल्पना (ख़याली तसवीर)में दो विचार समाये हुए हैं। एक तो यह कि जहाँसे जितना और जैसा सूत मिले, इकट्ठा करना। यह सूत सूतकी शकलमें सिर्फ़ जुलाहेके घर ही जाय और ऐसी हालतमें जाय कि जितनी तेज़ीसे मिलका सूत बुना जा सकता है, उतनी ही तेज़ीसे बुना जा सके। ऐसा करनेके लिए सब हाथकता सूत दोहरा करके उसे फिर चरखे पर बल चढ़ाकर जुलाहेके वहाँ भेजा जाय। जिस सूत पर यह सब नहीं किया गया हो, उसे मैं सूत ही नहीं मानता। आखिर तो दोहरे और इकहरे सूतको अलग-अलग हिस्सोंमें रखना पड़ेगा, जिससे कि दोहरेकी क़ीमत ही अलग लगाई जा सके। वह दिन अभी दूर है। अभी फ़ौरन तो जिस जगह सूतका भण्डार, दुकान या बैंक हो, वहाँ पर नंबरके हिसाबसे सूतको अलग-अलग किया जाय। सूतको दोहरा करके बल चढ़ानेकी क्रिया (अमल) भी वहाँ होनी चाहिये। और उस सूतकी खादी बुननेकी सहूलियत भी होनी चाहिये।

दूसरी बात याद रखनेकी यह है कि टकसालमें सोना-चाँदी सब आता है, लेकिन बाहर तो सोने-चाँदीके सिक्के ही जाते हैं। इसी तरह सूतके भण्डारमेंसे भी सिर्फ़ खादीरूपी सिक्के ही बाहर जा सकते हैं। ऐसा हो तभी हाथके सूतके दोष (नुक़्स) दूर हो सकते हैं और खादी भी हमारी मानी हुई हदसे ज़्यादा सुधर सकती है। यह काम ज़बरन् तो हो नहीं सकता। इसके लिए खादीसेवकको सच्चा, निस्स्वार्थ (बेगरज़) और शास्त्रीय दृष्टिवाला (सायन्सकी निगाहसे देखनेवाला) बनना होगा। चरखा-संघका यही काम होना चाहिये। ऐसा करनेसे अगर खादी बेचनेके सब भण्डार बन्द हो जायँ और खादी पहननेवाले इने-गिने ही रह जायँ, तो उसमें शरमकी कोई बात न होगी। मगर खादी दंभ (दिखावे) और झूठका प्रतीक (निशानी) बनकर खपे, तो वह चरखा-संघ और कांग्रेसके लिए शर्मकी बात होगी। इतना ही नहीं, खादी स्वराजकी शान और ग़रीबोंकी साथिन भी नहीं रहेगी। ऐसा ही हो तो खादीके पीछे इतनी मेहनत क्यों की जाय? दूसरे बहुत-से धन्धोंकी तरह खादी भी रह जाय तो भले रह जाय। जो खादीके पीछे पागल हैं, वे तो सिर्फ़ खादीके शास्त्र (सायन्स)का रहस (राज़) समझ लें। और उसके पीछे फ़क़ीरी लेकर यह साबित करें कि खादी अहिंसाकी मूर्ति है।

पूना जाते हुए रेलमें, ३०-६-'४६
('हरिजनबन्धु'से)　　　मोहनदास करमचन्द गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयानक ख़्वाब

जब गांधीजी मसूरीमें ठहरे हुए थे, तो वहाँ एक अंग्रेज़ भाईने उनसे पूछा कि क्या अणु-बमका आतंक (दहशत) लोगोंको अहिंसा अपनानेके लिए मजबूर न कर देगा? अगर सब लोगोंके पास अणु-बम हुआ, तो वे उसे इस्तेमाल नहीं करेंगे। क्योंकि उन्हें पता होगा कि उसके इस्तेमालसे वे सब तबाह हो जायँगे। गांधीजीकी राय थी कि ऐसा नहीं होगा। उन्होंने कहा: "हिंसक आदमीकी आँखें .ख़ुशीसे चमक उठेंगी, क्योंकि वह देखेगा कि अब वह पहलेसे बहुत ज़्यादा तबाही और मौत फैला सकता है।

"डर तो यह है कि पहले अणु-बमके अपने निशाने पर बैठनेसे पहले ही अणु-बमके भेदको जाननेकी दौड़का नतीजा यह होगा कि हिंसाका दौर ख़त्म होनेके बजाय, व्यक्ति (फ़र्द) की सब आज़ादी ख़त्म हो जायगी और ऐसी दहशत फैलेगी, जो आज तक देखी नहीं गई। १७ सायन्सदाओं (जिनमें ५ नोबल प्राइज़ पाये हुए हैं), जनरलों और पण्डितों (आलिमों) ने 'अणु-बमके पूरे अर्थ पर रिपोर्ट' दी है। उस रिपोर्टका नाम है, 'एक दुनिया, या कोई नहीं।' उसमें वे हमें बहुत दबी ज़बानसे उस तबाहीके बारेमें ख़बरदार करते हैं, जो बड़ी तेज़ीसे हमारी तरफ़ लपकी चली आ रही है। उसे पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। जनरल ऑर्नल्ड उन नये क़िस्मके अणु-बमोंका ज़िक्र करते हैं, जिनके बारेमें पहली तहक़ीक़ात हो चुकी है। उन्हें बनाना हदसे ज़्यादा सस्ता पड़ता है। पर वे इतनी तबाही ढा सकते हैं कि उस पर यक़ीन नहीं होता। इसके बाद वे कहते हैं: "हवाई ताक़तसे तबाही बेहद सस्ती और आसान हो गई है . . . सभ्यता (तहज़ीब) के जीने या मरनेका सवाल उन लोगोंकी दोस्ती और समझ पर निर्भर या मुनहसर होगा, जिनके हाथमें हवाई ताक़त होगी। रेडार (बिजलीकी किरणोंसे अँधेरेमें फ़ासले पर आती हुई चीज़को टटोलनेका एक आला या यंत्र) के माहिर सायन्सदाँ लुई एन० रिडेनॉरने बताया है कि किस तरह बेहद एहतियात या सावधानी बरतने पर भी बहुतसे बम अपने निशाने पर बैठ ही जायँगे। और सायन्सदाँ एडवर्ड यू० कॉण्डन लिखते हैं: "थोड़ेसे बम ही तबाहीके लिए काफ़ी होते हैं। जो लोग तोड़-फोड़का काम करना चाहें, वे सारे युनाइटेड् स्टेट्समें जगह-जगह ज्वालामुखी छिपा सकते हैं, जो एक मुक़र्ररा (नियत) दिन पर फटकर क़यामत ढा देंगे, जैसा कि पर्ल हार्बर पर हुआ था। . . . जिस जगह ऐसा एक बम फटेगा, वहाँ कम-से-कम एक मीलके दायरेमें कोई चीज़ मह.फ़ूज़ नहीं रह सकेगी। पन्सारीकी दुकानकी मेज़के नीचे टी० एन० टी० (एक क़िस्मकी फटनेवाली बारूदका २० हज़ार टनके बराबर अणु-बम) छिपाया जा सकता है।"

मि० कॉण्डन अपना बयान जारी रखते हुए कहते हैं: "ऐसी तोड़-फोड़से बचनेके लिए युनाइटेड् स्टेट्सको जो हुकूमत क़ायम करनी होगी, उसमें पुलिसका राज इतना कड़ा होगा, जिसकी इतिहास (तवारीख़) में कोई मिसाल नहीं मिल सकती।" डॉ० हेराल्ड सी० यूरे एक आख़िरी बाब (अध्याय) में इन अणु-यंत्रोंकी दौड़के इस पहलूको .ख़ूब विस्तारसे (तफ़सीलसे) समझाते हैं: "बम पड़नेसे बहुत पहले युनाइटेड् स्टेट्सके लोग अपनी आज़ादी खो बैठे होंगे, और एक कड़ी नादिरशाही हुकूमत क़ायम हो चुकी होगी। परमाणु-यंत्रों (एटम) के जनरल आपसमें मिलकर निहायत .ख़ुफ़िया और काली सलाहें किया करेंगे; घर और कारख़ानों पर उनका पूरा-पूरा क़ब्ज़ा होगा। .ख़ुफ़िया पुलिस जासूसों और तोड़-फोड़ करनेवालोंको कोने-कोनेमें सूँघती फिरेगी। दूसरे मुल्कोंमें भी ऐसा ही होगा। और आख़िरमें हर जगह आतंक और दहशत छा जायगी।"

इन सायन्सदाओंकी रायमें इसका सिर्फ़ एक इलाज है। यह कि "सारी दुनियाके लिए एक ही इतनी मज़बूत हुकूमत हो कि लड़ाई हो ही न सके।" "यह समस्या हमें इतिहासके एक बड़े ना.ज़ुक मौक़े पर ले आई है। ज़्यादा इन्तज़ार करनेका मौक़ा नहीं रहा।"

नई दिल्ली, १७-६-'४६

('हरिजन' से)

प्यारेलाल

फिरसे: ऊपरका मज़मून लिख चुकनेके बाद पता चला कि एम० फ्रेडरिक जूलियो क्यूरीने अपीलकी है कि अगर दुनियाकी हुकूमतें अणु-बमको क़ाबूमें करनेके किसी फ़ैसले पर न पहुँचें, तो सायन्सदाओंको चाहिये कि वे अणु-शक्तिके बारेमें और खोज करना बन्द कर दें। यह सायन्सदाँ फ्रान्सके उन नुमाइन्दोंके सरदार हैं जो 'युनाइटेड् नेशन्स एटॉमिक एनरजी कमीशन' पर काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा: "अगर कोई फ़ैसला नहीं होता, . . . तो हम सायन्दाओंका यह फ़र्ज़ होगा कि हम इस मैदानमें खोज करनी बन्द कर दें और सायन्सकी इज़्ज़त न बेचें।"

तारीफ़के लायक़ मिसाल

ख़ासकर केरल (मलाबार) के रहनेवाले और बम्बईके अलग-अलग दफ़्तरोंमें काम करनेवाले सच्चे दिलके कुछ नौजवानोंने एक होकर गाँवकी तरक़्क़ी और बेहबूदीके लिए एक स्कीम तैयारकी और उस पर अमल करनेकी ग़रज़से सन् १९४५के जुलाई महीनेमें एक ग्राम-सेवा-समिति क़ायम की। समितिका काम सात मेम्बरोंसे शुरू हुआ। इस वक़्त कुल १५ मेम्बर हैं और हरएक मेम्बर अपनी मामूली तनख़्वाहमेंसे कुछ बचाकर हर महीने १०) बतौर चन्देके देता है।

अपने कामका सिलसिला जमानेके लिए उन्होंने अपनेमेंसे एक भाई श्री के० कुमारन्‌को ग्रामोद्योगकी यानी देहाती दस्तकारियोंकी तालीम लेने भेजा। अक्तूबर १९४५में अपनी तालीम पूरी करके उन्होंने दक्षिण मलाबारके पेरुर गाँवमें तजरबेके तौर पर एक केन्द्र या सेण्टर शुरू किया। गाँवकी एक रहमदिल और दरियादिल बहनने अपना एक छोटा घर इस कामके लिए दे दिया। इस तरह गाँवमें तामीरी कामका एक सेण्टर खुला और वहाँ कताईका क्लास शुरू किया गया। धीमे-धीमे वहाँ एक वाचनालय और पुस्तकालय, हिन्दुस्तानीके क्लास, मुफ़्त दवा देनेका एक केन्द्र, बुनाईका एक सेण्टर और खादी-भण्डार शुरू हो गया। इन लोगोंके इन तरह-तरहके कामोंका ब्योरा नीचे दिया गया है:

"९॥से ४॥ तक कताईके क्लास चलते हैं। बीचमें एक घण्टा आरामका रक्खा गया है। पींजना भी सिखाया जाता है। और सीखनेवालोंको .ख़ुद ही अपनी पूनी बनाकर कातना होता है। हर एक क्लास क़रीब १॥ महीने तक चलाया जाता है, और इस अरसेमें सीखनेवाले अच्छा कातने लगते हैं।

"अब तक ऐसे ३ क्लास चलाये गये, जिनमें कुल ३० सीखनेवाले शरीक हुए थे। १० सीखनेवालोंका चौथा क्लास फ़िलहाल चल रहा है। क्लासमें सीखनेवालोंको कातने और पींजनेके लिए चरखा और पींजन वग़ैरा जो सरंजाम दिया जाता है, वह क्लास ख़तम होने पर उन्हें अपने साथ घर ले जानेको दिया जाता है।

"हर हफ़्ते कता हुआ सूत उन्हें केन्द्रमें जमा करना होता है। उस सूतकी क़ीमतमेंसे एक तिहाई रक़म सरंजामकी क़ीमत पेटे और एक तिहाई उनको दी गई खादी पेटे जमा होती है—हम चाहते हैं कि हरएक कतवैया या कत्तिन खादी ही पहने—और बाक़ीकी एक तिहाई रकम उन्हें नक़द दी जाती है; या उसके बदलेमें कपास दी जाती है या थोड़ी रक़मकी कपास और बाक़ी नक़द रक़म दी जाती है। इस तरीक़ेसे कुछ ही महीनोंमें सीखनेवाले गाँठकी कोई पूँजी न लगाकर कातने और पींजनेके औजार बसा सकते हैं, और समय पाकर वे अपने घरके लोगोंको कपड़ेके बारेमें स्वावलम्बी बना सकते हैं। दूसरी तरफ़ इस तरीक़ेसे समितिको बार-बार पूँजी लगानेकी ज़रूरत नहीं पड़ती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तक समितिने ४०से ज़्यादा कातनेवाले तैयार किये हैं और हर हफ़्ते औसतन् १५० गुण्डी सूत कतता है।

"कपड़ेके मामलेमें गाँवको स्वावलम्बी बनानेकी ग़रज़से मार्च १९४६ में एक बुनाई केन्द्र भी शुरू किया गया है, जो गांधीनगर (तिरुपुर)के मशहूर खादी–उत्पत्तिकेन्द्रमें तालीम पाये हुए एक होशियार जुलाहेकी देखरेखमें चल रहा है।

"कातनेवालोंको खादी देने और गाँववालोंमें खादीको लोकप्रिय (आम पसन्द) बनानेके लिए हमने गाँवमें एक खादी-भण्डार भी खोला है। फ़िलहाल तो हम खादीकी कम-से-कम माँग भी पूरी नहीं कर पाते हैं।

"गाँवके एक हिन्दी पण्डितकी मददसे एक हिन्दुस्तानी क्लास खोला गया है और वह बराबर चलता है। नई हिन्दुस्तानी सभाकी ओरसे हाल ही लिये गये इम्तहानोंमें हमारे केन्द्रसे २१ विद्यार्थी बैठे थे, और वे सब पास हुए हैं। आजकल हम २० विद्यार्थियोंको हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा, मद्रासकी मध्यमा परीक्षाके लिए तैयार कर रहे हैं।

"वाचनालयमें आजकल ३ रोज़ाना और २ हफ़्तेवार अख़बारोंके अलावा २ मासिक पत्र या रिसाले भी आते हैं। ज़्यादातर अख़बार या रिसाले उन-उन अख़बारवालोंकी तरफ़से मुफ़्त आते हैं। इनके अलावा, हम अपना एक हाथसे लिखा मासिक—ग्रामसेवकम्—भी निकालते हैं, और वह गाँववालोंमें घुमाया जाता है। पुस्तकालयमें राजनीति, और अर्थशास्त्र पर अंग्रेज़ीमें और मुल्की ज़बानोंमें लिखे गये साहित्य (अदब)का अच्छा-सा संग्रह है।

"पेरुर गाँवके चारों ओर सात मीलके घेरेमें एक भी अस्पताल नहीं है। फिर ग़रीबोंको मुफ़्त दवा देनेवाले अस्पतालकी तो बात ही क्या? इसलिए हमने एक मुफ़्त दवाखाना भी खोला है। शुरूमें मरीज़ोंकी तादाद औसतन् हर रोज़ ३से ५ तक रहती थी। अब वही बढ़कर ५०–६० हो गई है। हमें एक होमियोपैथ डॉक्टरकी सेवायें भी मिल जाती हैं।

"मरीज़ोंकी बढ़ती हुई तादादको देखते हुए हम दवाखानेके साधनोंको बढ़ानेका और एक ज़्यादा डॉक्टर रखनेका इरादा करते हैं। कताईके क्लासोंमें, हिन्दुस्तानीके क्लासोंमें और मुफ़्त दवाखाने वग़ैरामें किसी भी धर्म या जातिके लोग शामिल हो सकते हैं। और यह एक ध्यान देनेकी बात है कि हमारे दवाखानेमें आनेवाले बीमारोंमें ज़्यादा तादाद हरिजनों और मुसलमानोंकी होती है।

"हमारे कामके इस थोड़े अरसेमें हमें अब तक कुल (रु० १,४००) बतौर दानके नक़द मिले हैं। और हमारे बढ़ते हुए केन्द्रके लिए मकान बनानेके वास्ते गाँववालोंकी तरफ़से हमको (रु० ४००) की क़ीमतका सामान मिला है।

"संस्थाके काममें ४ भाई अपना सारा वक़्त देते हैं, (उन्हें मेम्बरोंके चन्देकी रक़मसे मेहनताना दिया जाता है) और ३ भाई थोड़ा वक़्त देकर काममें मदद पहुँचाते हैं।"

इस कामको लोगोंने जिस तरह अपनाया है, उससे पता चलता है कि फ़सल तो ख़ूब पकी है, मगर उसे काटनेवालोंकी कमी है।

...पूरी, ३०-५-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

नई किताब

	मूल्य	डाकखर्च
...ईशु ख्रिस्त—(किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०–१–०
...रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधरी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०–६–०	०–१–०
...सेवा—(गांधीजी)	१–८–०	०–५–०
...धर्मयुद्ध—(महादेवभाई हरिभाई देसाई)	०–८–०	०–२–०

निराशाजनक चित्र

एक पत्र-लेखक (ख़त लिखनेवाले) भाई, जो अपने विषयके जानकार हैं, गांधीजीके नाम लिखे एक पत्रमें बताते हैं कि एक ओर जब कि सरकार अकालकी पहली अवाईका ऐलान करके अख़बारी बयान निकाल रही थी, उसी वक़्त दूसरी ओर बंगालके बन्दरगाहोंसे चावल बाहर भेजा जा रहा था। जब यह ख़बर अख़बारोंमें छपी कि जनवरी १९४६में कलकत्ता बन्दरसे चावल बाहर भेजा जा रहा था, तो उससे बड़ी सनसनी फैली। और अलग-अलग हलक़ोंसे सरकार पर जो दबाव डाला गया, उसका नतीजा यह हुआ कि केन्द्रीय (मरकज़ी) और प्रान्तीय (सूबेकी) सरकारोंने इस बातका यक़ीन दिलाते हुए बयान निकाले कि आइन्दा बंगालसे कभी चावल बाहर नहीं भेजा जायगा। इतने पर भी चटगाँवके बन्दरगाहसे चावलका बाहर भेजा जाना चालू रहा। 'बंगाल मॅन्युफ़ॅक्चरर्स ॲण्ड ट्रेडर्स फ़ेडरेशन' (बंगालके उत्पादकों और बेपारियोंके संघ)ने २६ मईको कलकत्ताके श्रद्धानन्द पार्कमें हुई एक आम सभामें यह बात ज़ाहिर की थी। इसके जवाबमें २८ मईको बंगाल सरकार इस मतलबका एक अख़बारी बयान निकालकर ही रह गई कि "टिपरा स्टेट एजेन्सी चटगांवसे चावल बाहर भेज रही है और बंगाल सरकार इसके लिए जवाबदार नहीं।"

सरकारके निकम्मे और कठोर इन्तज़ामकी एक और मिसाल देते हुए ख़त लिखनेवाले भाई बताते हैं कि "पिछले बारह महीनोंमें लगभग तीस लाख मन गेहूँ सरकारी गोदामोंमें सड़ गये हैं।" आज यह बात सब कोई जानते हैं। वे भाई यह सुझाते हैं कि अनाजके वितरण (बँटवारे) और रक्षण (हिफ़ाज़त)का काम बेपारियोंको सौंप देना चाहिये, जो जनताके नुमाइन्दोंकी बनी कमेटियोंके मातहत उनकी सख़्त निगरानीमें नामके कमीशन पर यह काम करें।

आगे वे भाई लिखते हैं कि सरकार मामूली क़िस्म और अच्छी क़िस्मके चावलों पर प्रति मन क्रमशः ४) और १०) के हिसाबसे नफ़ा कमाती है, जब कि बेपारी और चावलका रोज़गार करनेवाले पहले मन पीछे सिर्फ़ २ से ४ आने नफ़ा कमाते थे। इस सबके अलावा, वे भाई लिखते हैं कि सरकार जूटकी खेती और कारख़ानोंके लिए धानके खेतों पर कब्ज़ा कर रही है। "पिछले अरसेमें सरकारने धानके खेतोंके एक बहुत बड़े हिस्से पर फ़ौजी छावनियों, हवाई अड्डों और कारख़ानोंके लिए कब्ज़ा कर लिया है। इन खेतोंको तुरन्त ही जुताईके लिए छोड़ देना चाहिये। १९४५ में करीब ९ लाख बीघा ज़मीन, जो १९४४ में जोती गई थी, बिनजोती रह गई। इसके अलावा चालीस लाख बीघा ज़मीन ऐसी है जो अब तक कभी जोती ही नहीं गई है। इसे अगर जोता जाय तो बहुत बड़ी मात्रा (मिक़दार)में अनाज पैदा किया जा सकता है।"

इस दरमियान गाँवोंमें मौतकी छाया पड़नी शुरू हो गई है और कलकत्तेमें तो भुखमरीके कारण लोगोंके मरनेकी ख़बरें भी आने लगी हैं। ख़त लिखनेवाले भाई बताते हैं कि, "ढाकामें चावल ५०) मन और मैमनसिंगमें ४५) मन बिक रहा है। दूसरे ज़िलोंमें चावल ४०)से ३०) मन तक बिकता है। बचतवाले ज़िलोंमें भी चावल २०) मन बिक रहा है। इससे पहले चावलका मामूली भाव ४) मन था। सरकारके निकम्मेपन और इनसानकी तकलीफ़ोंके प्रति कठोर लापरवाहीका इससे ख़राब चित्र मिलना मुश्किल है। इससे सारे सूबेमें रोष (ग़ुस्सा) पैदा हुए बिना नहीं रहेगा। हम उम्मीद करें कि इस बातसे ताल्लुक़ रखनेवाले अधिकारी (अफ़सर) तुरत ही इन शिकायतों पर ध्यान देंगे और उन्हें दूर करनेके लिए ठोस क़दम उठायेंगे।

पूना जाते हुए रेलमें, २९-६-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक
७ जुलाई १९४६

एटम बम और अहिंसा

कुछ अमेरिकन दोस्त कहते हैं कि एटम बमसे ही अहिंसा निकलेगी। शायद वे यह कहना चाहते हैं कि जिस तरह ठूँस-ठूँसकर मिठाइयाँ खानेसे आदमीका मन मिठाईसे ऊब जाता है, उसे मतली होने लगती है, उसी तरह एटम बमकी तबाहीको देखकर दुनियाके दिलमें हिंसाके लिए नफ़रत पैदा हो जायगी। मगर वह थोड़े दिनोंके लिए होगी। जैसे ऊब मिटते ही आदमी फिर मिठाइयाँ खाने बैठ जाता है, उसी तरह एटम बमकी तबाहीके नज़ारेका असर दूर होते ही दुनिया दूनी रफ़्तारसे हिंसाकी तरफ़ दौड़ेगी।

कई बार बुराईमेंसे भलाई निकलती है। मगर वह .खुदाकी हिकमत है, इनसानकी नहीं। इनसानके हाथों तो हम यही देखते हैं कि भलाईका नतीजा भला और बुराईका बुरा होता है। बेशक यह संभव है कि एटॉमिक ताक़त (अणुशक्ति)का—जिसे अमेरिकन वैज्ञानिकों (सायंसदानों)ने और फ़ौजियोंने तबाहीके लिए इस्तेमाल किया है—इस्तेमाल भलाईके लिए भी हो सके। मगर अमेरिकन दोस्तोंके कहनेका यह मतलब न था। वे ऐसे भोले न थे कि कोई ऐसा सवाल पूछते जिसका एक ही जवाब हो सकता है। आग लगानेवाला तबाही और नुक़सानके लिए आगका इस्तेमाल करता है, जब कि गृहिणी उसी आगका इस्तेमाल इनसानको .कुवत देनेवाला खाना पकानेमें करती है। जहाँ तक मैं देख सकता हूँ, एटम बमने इनसानकी ऊँचीसे ऊँची भावनायें, जो उसे युगोंसे क़ायम रखती चली आ रही हैं, खतम कर डाली हैं। पुराने जमानेमें लड़ाईके कुछ ऐसे क़ानून ज़रूर होते थे जो उसे कुछ बरदाश्त करने लायक़ बनाते थे। अब हम उसका असल रूप देख रहे हैं। आज ज़ोर-ज़बरदस्तीको छोड़कर लड़ाईका दूसरा कोई क़ानून ही नहीं है। एटम बमने मित्रराज्योंको एक खोखली जीत तो दी, पर साथ ही उसने थोड़े वक़्तके लिए तो जापानकी आत्माका .खून कर दिया है। लेकिन बरबाद करनेवाले राष्ट्र की आत्माका क्या हाल हुआ, यह कहना आज कठिन है। .कुदरत किस तरह अपना काम करती है, यह समझना बड़ा मुश्किल है। इस रहस्य (राज़)का पता तो हम इस क़िस्मकी दूसरी चीज़ोंके अपने तजरबेसे ही लगा सकते हैं। अपनेको या अपने नुमाइन्देको .गुलामीके पींजरेमें रखे बिना कोई आदमी किसीको गुलाम नहीं रख सकता। इससे कोई यह न समझे कि जापानने अपने निन्दनीय (मज़म्मतके क़ाबिल) सपनोंको पूरा करनेके लिए जो बुरे काम किये, उनका मैं बचाव करना चाहता हूँ। दोनों पक्षों (फ़रीक़ों)में फ़रक़ तो सिर्फ़ दरजेका ही था। मैं मान लेता हूँ कि जापानका लालच ज़्यादा बुरा था। मगर इससे जिनका लालच कम बुरा था, उन्हें यह हक़ हासिल नहीं हो जाता कि वे राक्षस बनकर जापानके एक इलाक़ेमें समूचे मर्द, औरतों और बच्चोंका नाश कर डालें।

एटम बमकी इस बेहद दर्दनाक कहानीसे हमें सबक़ तो यह सीखना है कि जिस तरह हिंसासे हिंसाको नहीं मिटाया जा सकता, उसी तरह एक बमको दूसरे बमसे नहीं मिटाया जा सकता। इनसान सिर्फ़ अहिंसाकी मारफ़त ही हिंसाके गढ़ेमेंसे निकल सकता है। नफ़रतको सिर्फ़ प्यारसे ही जीता जा सकता है। नफ़रतके सामने नफ़रत दिखानेसे वह और भी फ़ैलती और गहरी होती है। मैं जानता हूँ कि जो बात मैं कई बार कह चुका हूँ और जिस पर अमल करनेकी मैंने भरसक कोशिश भी की है, उसीको मैं आज दुहरा रहा हूँ। असलमें तो पहले भी मैंने कोई नई बात नहीं कही थी। मैंने जो कहा था, वह तो सनातन सत्य (क़दीमी सचाई) है। हाँ, इतनी बात ज़रूर है कि मैंने कोई किताबी बात नहीं कही थी। मैं यह मानता हूँ कि जो चीज़ मेरी रग-रगमें भरी है, उसीको मैंने ज़ोरदार शब्दोंमें कहा है। साठ साल तक इस चीज़को जीवनके हरएक क्षेत्रमें आज़माकर मेरी श्रद्धा (एतक़ाद) और भी पक्की हुई है, और दोस्तोंके तजरबेसे भी उसे ताक़त मिली है। यह एक ऐसी जड़की सचाई है कि आदमी अगर अकेला हो तो भी बग़ैर किसी झिझकके इस पर डटकर खड़ा रह सकता है। मैक्समूलरने बरसों पहले कहा था: "जब तक सत्य पर अविश्वास रखनेवाले मौजूद हैं, सत्यको दुहराना ही पड़ेगा।" मैं इस बातको मानता हूँ।

पूना, १–७–'४६
('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

ख़ामख़ाह क्यों मारें?

अलीगढ़से यह सूचना आई है:

"९ जूनके 'हरिजन-सेवक'में चौथे पृष्ठ पर आप लिखते हैं कि 'बन्दरों, परिन्दों और ऐसे जन्तुओंको, जो फ़सल खा जाते हैं, .खुद मारना होगा, या कोई ऐसा आदमी रखना होगा जो उन्हें मारे।' इस सम्बन्धमें मैं यह निवेदन (दरख़्वास्त) करना चाहता हूँ कि अगर फ़सलको खा जानेवाले जानवरोंको मारे बग़ैर ही फ़सलकी रक्षा आसानीसे हो सकती हो, तो उन्हें मारना ज़रूरी नहीं होना चाहिये। मिसालके लिए मैं आपको सूचना देना चाहता हूँ कि मेरे चाचाने रातको बैटरीकी रोशनी बन्दरोंकी ओर फेंक-फेंककर उन्हें अपने खेत छोड़नेके लिए मज़बूर कर दिया। इसलिए बन्दरोंको मारनेके बजाय उन्हें बैटरीके प्रयोगसे भगानेका मार्ग (रास्ता) आप क्यों न स्वीकार करें और पेश करें?"

यह सूचना पहले विचारसे तो अच्छी लगती है। लेकिन दूर तक विचार करनेसे लगता है कि बैटरीसे काम नहीं चल सकेगा। उससे मेरे खेतकी कुछ रक्षा हो सकेगी, मगर इर्द-गिर्दकी नहीं। स्वार्थी (.खुदग़रज़) बनकर दूसरोंका नुक़सान करना तो मेरे लिए ठीक नहीं होगा। वह भी हिंसा होगी। अहिंसाके नाम पर ऐसी हिंसा करनेमें हम झिझकते नहीं, जैसे कि हम अपने आँगनसे दूसरोंके आँगनमें साँप फेंकते हैं, कचरा डालते हैं। शुद्ध (पाक) अहिंसा बताती है कि अगर बन्दर वग़ैरासे बचना और समाजको बचाना आवश्यक (ज़रूरी) है, तो उनको मार डालना आवश्यक हो जाता है। सामान्य नियम तो यही है कि जितनी हिंसासे हम बच सकें, उतनीसे बचना हमारा धर्म (फ़र्ज़) है। सामाजिक अहिंसा ही समाजके लिए हो सकती है। व्यक्ति (शख़्स) जहाँ तक वह जा सकता है, जाना होगा। हर समय हर बात पर ध्यानसे विचार करना सबका परम कर्त्तव्य है। बग़ैर विचारे रूढ़ धर्म पर चलनेसे हमारी गति रुक जाती है।

३०–६–'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्याह और ब्रह्मचर्य

सूरतके पाटीदार आश्रमसे जिन भाईने श्री नरहरि परीखको 'हरिजनों और सवर्णोंके ब्याह'के बारेमें सवाल पूछा है, उन्हींने यह दूसरा सवाल भी उठाया है :

"शादी करना, और जब तक स्वराज न मिले, ब्रह्मचर्यका पालन करना, ये दोनों चीज़ें एक साथ बैठती नहीं हैं। अगर ब्रह्मचर्य ही रखना हो तो शादी करनेकी क्या ज़रूरत? और अगर शादी करना हो, तो ब्रह्मचर्यको बीचमें क्यों लाया जाय? इनसान सभ्य (सुधरा हुआ) प्राणी है। ब्याह जैसा पवित्र रिवाज दाखिल करके उसने समाजमें व्यवस्था (इन्तज़ाम) और इन्साफ़ (न्याय) क़ायम करनेकी कोशिश की है। अगर शादीका रिवाज न होता, तो जातीय (मर्द-औरतके) सवाल पर घर, बाज़ार और गाँवमें तरह-तरहके झगड़े खड़े होते रहते। शादी करनेके बाद कामवृत्ति (नफ़्स)की बागडोर खुली छोड़ देनेको तो कोई नहीं कहता। उसमें संयम (रोक)के लिए जगह है। और संयमसे ही गृहस्थाश्रमकी ख़ूबसूरती बढ़ती है। शादीका पहला मक़सद (हेतु) तो साथ रहकर एक-दूसरेको आगे बढ़ाना है। यह मानना ही पड़ेगा कि इसमें कामवृत्ति (नफ़्स)को मर्यादा (क़ाबू)में रखकर उसकी प्यास बुझाना मुख्य उद्देश्य (खास मक़सद) रहा है। स्वराज न मिलने तक नये ब्याहे जोड़ेसे ब्रह्मचर्य पालनेका अहद (प्रतिज्ञा) कराना उनकी ज़िन्दगीमें झूठ और दिखावा दाखिल करना है। इससे उनमें विकृति (बिगाड़) भी पैदा हो सकती है। जो मर्द-औरत अनोखे दरजेके होंगे, वे तो शादीके बन्धनमें पड़ेंगे ही नहीं। शादी करनेवाले तो आम लोग ही होंगे। . . . अच्छा हुआ कि पतिने बादमें बापूजीको कह दिया कि वह पत्नीके माता बननेके हक़को छीन नहीं सकते। इससे बापूजीकी एक तरहसे इज़्ज़त बच गई। नहीं तो इस तरह ब्रह्मचर्यकी बातसे झूठ और दिखावे या ढोंगको मदद मिलनेके सिवा दूसरा नतीजा शायद ही निकलता।

"स्वराज मिलने तक ब्रह्मचर्य पालनेकी प्रतिज्ञा (अहद)का मर्म या भेद बापू समझावें, यह ज़रूरी है। मुझे तो यह एक हँसीकी बात लगती है।"

इस सवालमें यह मान लिया गया है कि ब्याह करनेमें पहली चीज़ विषय-भोग है। यह दुःखकी बात है। सचमुच तो ब्याहका मतलब औरत और मर्दकी गाढ़ी-से-गाढ़ी मित्रता (दोस्ती) होना चाहिये, और है। उसमें विषय-भोगको तो जगह ही नहीं। जिस शादीमें विषय-भोगको जगह है, वह सच्ची शादी ही नहीं, सच्ची मित्रता ही नहीं। ऐसी शादियाँ मैंने देखी हैं, जहाँ शादीका हेतु (मक़सद) सिर्फ़ एक-दूसरेका साथ और सेवा ही रहा है। यह सच है कि ऐसी शादियाँ मैंने इंग्लैण्डमें ही देखी हैं। मेरी अपनी मिसाल यहाँ बेमौक़ा न गिनी जाय, तो मैं कहूँगा कि भर जवानीमें विषय-भोगको छोड़नेके बाद ही हम ज़िन्दगीका सच्चा रस लूट सके। तभी हमारी जोड़ी सचमुच खिली और हम साथ मिलकर हिन्दुस्तानकी और इनसानकी सच्ची सेवा कर सके। यह बात मैं 'मेरे सत्यके प्रयोगों' (तलाशे हक़)में लिख चुका हूँ। हमारा ब्रह्मचर्य अच्छी-से-अच्छी सेवा-भावनामेंसे पैदा हुआ था।

हज़ारों ब्याह तो आम तौर पर जैसे हुआ करते हैं, हुआ करेंगे। उनमें विषय-भोग पहली चीज़ रहेगी। अनगिनत लोग स्वादकी ख़ातिर खाते हैं। इससे स्वाद इनसानका धर्म नहीं बन जाता। थोड़े ही लोग ऐसे हैं कि जो ज़िन्दा रहनेके लिए खाते हैं। वे ही खानेका धर्म जानते हैं। इसी तरह थोड़े ही लोग औरत और मर्दके पवित्र रिश्तेका स्वाद लेनेके लिए, ईश्वरको पहचाननेके लिए शादी करते हैं। सच्चे शादीका धर्म तो वही पहचानते हैं और पालते हैं।

मालूम होता है कि तेन्दूलकर और इन्दुमतीके ब्याहके बारेमें पूरी बातें सवाल पूछनेवाले भाई नहीं जानते। उनके ब्याहकी प्रतिज्ञा (अहद) में दोनों की इच्छा (ख्वाहिश) की बात थी। प्रतिज्ञा हिन्दुस्तानीमें लिखी गई थी। अखबारवालोंने अपना ही अंग्रेज़ी तरजुमा छापा। इतनी बात पक्की है कि दोनोंकी ब्रह्मचर्य पालनेकी इच्छा थी। वह शादी विषय-भोगकी खातिर नहीं थी। दोनों एक-दूसरेको बरसोंसे पहचानते थे। इन्दुमतीके घरके लोगोंकी इजाज़त कड़ी कसौटीके बाद मिली थी। बादमें तेन्दूलकरकी क़ैद उनके रास्तेमें आई। दोनोंके बड़ोंकी ख्वाहिश थी कि शादी आश्रममें हो तो अच्छा। इन्दुमतीको आश्रममें आसरा मिला था, वहाँ उसे तसल्ली (आश्वासन) मिली थी। मैंने माना था कि दोनोंमें ख़ूब सेवाभाव है। मैं समझता हूँ कि अभी भी ऐसा ही है। मैंने उनके लिए ब्रह्मचर्य स्वाभाविक (क़ुदरती) चीज़ मानी थी।

यह सब होते हुए भी ब्रह्मचर्यमें ढोंगको जगह हो सकती है। इसमें क़सूर ब्रह्मचर्यका नहीं, ढोंगका है। एक अंग्रेज़ी कवि (शायर)ने कहा है कि ढोंग (दंभ) अच्छे गुणोंकी तारीफ़ है। जहाँ सच्चे सिक्केकी क़ीमत है, वहाँ झूठा सिक्का सच्चेकी छायामें रहेगा ही। जहाँ अच्छे गुणोंकी क़दर है वहाँ अच्छे गुणोंका दिखावा भी रहेगा। दिखावेके डरसे अच्छे गुणोंको छोड़ना, यह कैसी दुःखकी और हैरानीकी बात है?

पूना जाते हुए रेलमें, ३०-६-'४६

('हरिजनबन्धुसे') **मोहनदास करमचंद गांधी**

हरिजनों और सवर्णोंका ब्याह

सूरतके पाटीदार आश्रमसे एक भाई श्री नरहरि परीखको लिखते हैं:

"बापूजीके राजनीति (सियासत) में दाखिल होनेके बाद छुआछूत मिटानेका काम काफ़ी तेज़ीसे आगे बढ़ा है। बापूजी पढ़ी-लिखी हरिजन लड़की सवर्ण हिन्दूके लिए ढूँढ़ सकेंगे, तो एक तरहसे यह काम आगे बढ़ेगा। मगर इस सवालका दूसरा पहलू भी है। हमारे मुल्कमें लड़कियोंकी तालीम पिछड़ी हुई है; तिस पर भी हरिजन जैसी पिछड़ी हुई क़ौममें तो पढ़ी-लिखी लड़कियाँ इनीगिनी ही हैं। अगर उनकी शादी सवर्णोंसे हो जाय, तो एक तरहसे वे अपने समाजसे अलग पड़ जायँगी और सवर्ण समाजमें मिल जायँगी। इससे हरिजनोंमें रहकर हरिजन बहनोंको आगे बढ़ानेमें वे मदद नहीं दे सकेंगी। ऐसी एक-दो मिसालें मैं जानता भी हूँ। इस तरह ऐसे ब्याहोंके ज़रिये हम एक तरहसे हरिजनोंको अँधेरेमेंसे निकलनेसे रोकते हैं। बहनोंके आगे बढ़नेसे समाज आगे बढ़ता है। ऐसी दलीलकी जा सकती है कि हरिजन समाजकी हीरे-जैसी बहनोंको सवर्णोंको देकर बापूजी हरिजनोंके लिए अँधेरे, अज्ञान (जहालत) और वहममेंसे निकलनेका दरवाज़ा बन्द कर देंगे। मुझे लगता है कि इस प्रकारके ब्याह बन्द होने चाहिये। एक ही शर्त पर सवर्णको हरिजन लड़कीसे शादी करनेकी इजाज़त होनी चाहिये। वह यह कि शादी करनेके बाद दोनों अपनी ज़िन्दगी हरिजनोंकी सेवामें लगा देंगे। वरना पढ़ी-लिखी हरिजन लड़कीकी शादी पढ़े-लिखे हरिजनसे ही कराना अच्छा होगा। ऐसा करनेसे वह बहन अपने ही समाजमें रहेगी और अगर वह सच्चे मानीमें तालीमयाफ़्ता (शिक्षित) होगी, तो अपनी क़ौमकी बहनोंके सामने एक मिसाल पेश करेगी।

"आपको पता होगा कि हमारे विद्यालयमें हरिजन विद्यार्थी सवर्णोंके साथ बिना किसी क़िस्मके भेदभाव (तमीज़)के रक्खे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते हैं। श्री परीक्षितलाल हर साल एक-दो विद्यार्थी भेजते रहते हैं। इस साल हमारे यहाँ दो ऐसे लड़के हैं। उनमेंसे एकने मुझे पूछा: 'बापूजी पढ़ी-लिखी सवर्ण लड़कियोंका ब्याह पढ़े-लिखे हरिजन लड़कोंके साथ क्यों नहीं कराते? करने जैसी चीज़ तो यही है। अगर पढ़ी-लिखी सवर्ण बहनें हरिजन बन कर हरिजनोंके बीच रहें, तो हरिजन बहनें उनसे बहुत कुछ सीख सकती हैं और हरिजन-सेवाका काम तेज़ीसे आगे बढ़ सकता है।' मैं इसका जवाब दे सकता था, पर अच्छा होगा कि बापूजी ख़ुद ही जवाब दें। कुछ भी हो, इस सवाल पर गहरा विचार करनेकी ज़रूरत है।"

अगर कोई पढ़ी-लिखी हरिजन लड़की किसी सवर्णके साथ शादी करे, तो दोनोंको हरिजन-सेवाका इक़रार करना ही चाहिये। ऐसा ब्याह मनमानी मौज़ उड़ानेके लिए नहीं हो सकता। मैं तो ऐसा ब्याह करा ही नहीं सकता। अच्छे इरादेसे किये हुए ब्याहका भी नतीजा बुरा निकल सकता है। मगर इस पर हमारा कोई बस नहीं। एक भी हरिजन लड़की किसी अच्छे सवर्णसे शादी करे तो, इससे हरिजन समाज और सवर्ण समाजका फ़ायदा ही है। वे एक अच्छी मिसाल पेश करेंगे। हरिजन लड़की जहाँ जाय वहाँ अपनी ख़ुशबू फैलाये, तो ऐसी दूसरी शादियाँ होनेमें मदद मिल सकती है। छुआ-छूतका डर भाग जायगा। समाज समझने लगेगा कि इस तरहकी शादी करनेमें कोई बुराई नहीं है। ऐसी शादीसे जो बच्चे पैदा होंगे, वे अगर अच्छे निकले, तो छुआछूतको दूर करनेमें मदद करेंगे। हर एक सुधार आहिस्ता-आहिस्ता ही होता है। धीमी गति (रफ़्तार)से बेसब्र होना सुधारकी गति (रफ़्तार)के क़ानूनको न समझनेकी निशानी है।

सवर्ण लड़की हरिजनसे शादी करे, यह करने लायक़ चीज़ है। यह ज़्यादा अच्छा है, ऐसा कहते हुए मुझे हिचकिचाहट होती है। ऐसा कहनेमें यह बात आ जाती है कि औरतें मर्दोंसे नीची हैं। यह तो मानना पड़ेगा कि आज औरतें आम तौर पर नीची मानी जाती हैं। इस वजहसे मैं क़बूल कर सकता हूँ कि सवर्ण लड़कीका हरिजनसे शादी करना हरिजन लड़कीके सवर्णसे शादी करनेसे ज़्यादा अच्छा है। मुझसे बन पड़े तो अपने असरकी तमाम सवर्ण लड़कियोंको अच्छे हरिजनोंसे शादी करनेको ललचाऊँ। मैं तजरबेसे जानता हूँ कि यह कितना मुश्किल है। पुरानी नापसन्दगी निकालनी कठिन होती है। यह नापसन्दगी ऐसी भी नहीं कि हँसकर टाल दी जा सके। यह तो धीरजसे ही दूर हो सकती है। और अगर सवर्ण लड़की यह मान ले कि हरिजनसे शादी करनेसे ही सारा काम पूरा हो जाता है, और पीछे मनमानी मौज़शौक़में फँस जाय, तो उसका घर और घाट दोनों बिगड़े। हर एक इनसानमें सेवाभाव कितना है, आख़िर इसी पर तो ऐसी शादियोंकी कसौटी होगी। सेवाभावके आधार पर हुई हर एक शादीसे हरिजन-सवर्ण ब्याहकी तरफ़ तिरस्कार (हिक़ारत) कम होगा। अख़ीरमें एक ही जात रह जायेगी, जिसका ख़ूबसूरत नाम होगा भंगी, यानी सुधारक, — हर एक क़िस्मकी गन्दगी दूर करनेवाला। हम सब चाहते हैं कि वह शुभ दिन जल्द आवे।

सवाल पूछनेवालेको यह समझना चाहिये कि मेरी अच्छी-से-अच्छी ख़्वाहिश भी, ख़्वाहिश करते ही पूरी नहीं हो सकती। अपना इरादा ज़ाहिर करनेके बाद मैं अभी तक एक भी हरिजन लड़कीकी शादी किसी सवर्णसे करा नहीं सका। एक सवर्ण लड़कीकी एक हरिजनसे शादी करानेका मौक़ा मेरे हाथ आया है सही। ईश्वरकी मरज़ी होगी तो वह काम पूरा होगा।

('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

गोशालायें और पिंजरापोल

सरदार सर दातारसिंहने एक स्कीम (योजना) पेश की है। थोड़ेमें वह नीचे दी जाती है। आम तौर पर यह स्कीम सबको दिलचस्प लगनी चाहिये।

हिसाब लगानेसे पता चला है कि आज हिन्दुस्तानमें ६ लाखसे भी ज़्यादा ढोरोंकी बस्तीवाली कुल ३,००० गोशालायें हैं। ये सब गोशालायें हिन्दुस्तान सरकारकी कल्पनाके मुताबिक़ अपने यहाँ सुधार करने लगें, और साथ ही, आज, जब कि मुल्क पर अकालकी आफ़त मँडरा रही है, अपने यहाँ दूधकी पैदावार बढ़ायें, तो वे मुल्ककी आबादीको बहुत मदद पहुँचा सकती हैं। कहा जा सकता है कि इन गोशालाओंमेंसे आधी, यानी क़रीब १,५०० गोशालाओं या पिंजरापोलोंमें अच्छा इन्तज़ाम है। इनमें रहनेवाले मवेशियोंको नीचे लिखी क़िस्मोंमें बाँटा जा सकता है:

१. अच्छे दुधार	२०	फ़ी सदी	१,२०,०००
२. मामूली, जो दूध बहुत ज़्यादा नहीं देते, लेकिन जो नई औलादके लिए काम आ सकते हैं	२०	,,	१,२०,०००
३. बूढ़े, अपाहिज और औलादके लिए निकम्मे	६०	,,	३,६०,०००

इनमेंसे दूधकी पैदावार बढ़ाने और नई औलाद पैदा करनेके लिए पहली और दूसरी क़िस्मके मवेशी काम आ सकते हैं। इन २,४०,०००मेंसे आधे दूध देनेवाले होंगे और आधे सूख चुके होंगे।

अगर इन मवेशियोंको ज़्यादा अच्छी ख़ूराक दी जाय, गोशालाओंके इन्तज़ाममें ज़रूरी सुधार किये जायँ, कामकाजका ढंग ठीक किया जाय और ऐसी ही दूसरी ज़रूरी कार्रवाइयाँ की जायँ, तो दूधकी पैदावारमें आसानीसे १,२०,००० सेर या ३,००० मन दूधकी बढ़ोतरी हो सकती है।

इस हेतु या मक़सदको जल्दी ही पूरा करनेके लिए नीचे एक स्कीम (योजना)का ढाँचा दिया जाता है:

(१) दुधार ढोरोंको बूढ़े, अपाहिज, कमज़ोर और दूसरी तरह बेकार बने हुए मवेशियोंसे अलग कर दिया जाय, और इन बूढ़े, अपाहिज और कमज़ोर ढोरोंको दूर देहातमें भेज दिया जाय; या बेहतर यह हो कि उन्हें उनके लिए जंगलोंमें अलगसे निकाली गई गोचर-भूमियों (चरागाहों)में भेज दिया जाय। इससे गोशालाओं और पिंजरापोलोंकी भीड़ कम होगी और दुधार गायोंको ज़्यादा अच्छा दाना और चारा वग़ैरा दिया जा सकेगा। इन मवेशियोंकी तादाद बढ़ने न दी जानी चाहिये। इनकी और सूखे हुए ढोरोंकी व्यवस्था (इन्तज़ाम)का काम एक कमेटीके सिपुर्द किया जाना चाहिये।

(२) इस मक़सदको पूरा करनेके लिए मवेशियोंको नीचे लिखे मुताबिक़ बाँट देना चाहिये:

(क) दूध देने या ब्यानेवालोंको गोशालामें ही रखना चाहिये। जिनका दूध सूख गया है, मगर जो औलाद बढ़ानेके काम आ सकते हैं, उन मवेशियोंको गोशालाके नज़दीक, पास-पड़ोसकी, अपनी किसी ज़मीन पर रखना चाहिये, या ऐसी जगह रखना चाहिये जहाँसे ब्यानेका वक़्त नज़दीक आने पर उन्हें वापस गोशालामें लाया जा सके। और, जो गायें सूख जायँ, यानी दूध देना बन्द कर दें, उन्हें गोशालासे हटाकर वहाँ भेज देना चाहिये।

(३) जिन गोशालाओं और पिंजरापोलोंमें मवेशियोंकी भीड़ छँटी होगी, वे अपने मवेशियोंको मुनासिब तरीक़ेसे रखनेके लिए ज़रूरी जगहका इन्तज़ाम कर सकेंगी, उनको शास्त्रीय ढंगसे चारा-दाना दे सकेंगी और दूसरे ज़रूरी सुधार भी कर सकेंगी।

(४) इन गोशालाओंको इससे भी ज़्यादा मदद देने, बढ़ावा देने, और ज़्यादा अच्छा काम करनेकी प्रेरणा देनेके लिए एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजवीज़ यह पेश की गई है कि जो लोग अकाल या क़हतसालीके दिनोंमें अपने दुधार ढोरोंको सँभाल न सकें, उनके ढोर सार-सँभालके लिए ये संस्थायें .खुद रख लें, या जहाँ ज़रूरी पैसोंका इन्तज़ाम हो सके, वहाँ इस तरहके ढोरोंको खरीद लें और अपनी दूधकी पैदावारको तावड़तोड़ बढ़ानेकी शर्त क़बूल करें। इन गोशालाओंको पैसेकी मदद दी जाय और ५० फ़ी सदी क़ीमतें घटाकर मवेशियोंके लिए तैयार दाने और चारेका इन्तज़ाम किया जाय। इस शर्तके बदलेमें, ज़रूरतके मुताबिक़, अगर सरकार चाहे, तो वह आसपासके हलक़ोंमें ग़रज़मन्द लोगोंको दूध पहुँचानेके लिए गोशालाओंमें पैदा होनेवाले दूधका तीसरा हिस्सा .खुद खरीदनेका हक़ अपने लिए हासिल कर सकती है।

(५) खली, बिनौले वग़ैरा ऐसी चीज़ोंके बदले, जो आम तौर पर सीधी इनसानोंके खानेके काम आती हैं, मवेशियोंको दूसरी चीज़ें खिलाई जायँ।

(६) यहाँ एक बात नोट करने लायक़ है कि नाजसे मिलनेवाली भूसी, चोकर, चूरी जैसी चीज़ोंको .खूराकके तौर पर इस्तेमाल करनेके बजाय ढोरोंको खिलानेसे हमें कहीं ज़्यादा ताक़त पहुँचानेवाला दूध मिलता है। और, इस तरह आज हमारे पास खानेकी जो चीज़ें मौजूद हैं, उनमें सिर्फ़ इज़ाफ़ा ही नहीं होता, बल्कि इन चीज़ोंका ऐसा इस्तेमाल करनेमें किफ़ायत भी होती है। इस तरीक़ेसे एक तरह दोहरा फ़ायदा होता है। एक तरफ़ इसकी वजहसे इनसानके लिए ज़रूरी खानेकी चीज़ोंमें इज़ाफ़ा होता है और दूसरी तरफ़ तंगी या कमीके दिनोंमें मवेशियोंको भरपेट .खूराक मिल जाती है, और उन्हें भूखों मरनेकी नौबत नहीं आती।

(७) ढोरोंकी .खूराकका काम देनेवाली तैयार चीज़ों और रोज़के काम आनेवाली दूसरी मामूली चीज़ोंको लाने-मँगानेके लिए इन संस्थाओं या जमातोंको ढुलाईके साधनोंकी जितनी सहूलियतें दी जा सकें, दी जानी चाहिये। गोशालाओं या पिंजरापोलोंमें ढोरोंके कामकी .खूराक या चारेका कितना संग्रह है और उनकी ज़रूरतें कितनी हैं, इसकी जाँचके लिए और ज़रूरी ब्योरे व आँकड़े इकट्ठा करनेका काम फ़ौरन ही शुरू किया जाना चाहिये। घास, चारा वग़ैरा ज़रूरी चीज़ें इफ़रातवाली जगहोंसे तंगीवाली जगहोंमें पहुँचानेका इन्तज़ाम बहुत पहलेसे कर लिया जाना चाहिये। गोशालाओंके डेवलपमेण्ट (विकास या नशोनुमा)के लिए मुकर्रर किये गये अफ़सरोंकी मारफ़त पहलेसे इन सब बातोंका इन्तज़ाम किया जाना चाहिये और उन्हें इस योजना पर अमल करनेकी ज़िम्मेदारी सौंपनी चाहिये।

सरदार सर दातारसिंहने हरएक सूबेमें गोशालाओंके लिए डेवलपमेण्ट अफ़सर रखने, काम करनेवालोंको ज़रूरी तालीम देने और मुनासिब जगहोंमें अच्छी नसलके लिए बढ़िया साँड़ भेजनेकी तीन सूचनायें ख़ास तौरसे की हैं। सरदार साहबका यह कहना बिलकुल सही है कि इस योजनाको अच्छी तरह कामयाब बनानेके लिए सरकार और रिआयाके दिली सहयोगकी ज़रूरत है। उन्हें यक़ीन है कि दयाका काम करनेवाले, मवेशियोंकी सार-सँभाल रखनेवाले और इस तरहके दूसरे काम करनेवाले मण्डलोंसे कहा जाय, तो वे सब ज़रूर ही इस योजनाको कामयाब बनानेमें हाथ बँटायेंगे।

मवेशियोंका भला चाहनेवाले एक दूसरे भाई यों लिखते हैं:

"ऐसा मालूम होता है कि आनेवाले कालके दिनोंमें कालवाले कुछ इलाक़ोंमें मवेशियोंके लिए घास-चारेकी बहुत तंगी रहेगी। अपने मवेशियोंको इस तंगीसे बचा लेनेके लिए चन्द सुझाव पेश करता हूँ। उम्मीद है कि आप उन पर ग़ौर करेंगे। सब कोई जानते हैं कि पहले 'बच्चोंको बचाओ' नामकी एक तहरीक शुरू हुई थी। क्यों न हम हिन्दुस्तानमें इसी तरह 'ढोरोंको बचाने'की एक तहरीक शुरू करें? आप जानते हैं कि लड़ाईके दिनोंमें हमारे बहुत-से ढोर क़त्ल कर डाले गये हैं। इसलिए अब जो बच रहे हैं, उन्हें भूखों मरने देना हमें पुसायेगा नहीं।

"मेरी एक ख़ास दरख्वास्त यह है कि जिन .खुशहाल लोगोंके पास घासवाली ज़मीनके चक हों, उन्हें चाहिये कि वे उदारतापूर्वक अपने अहातोंमें कमज़ोर ढोरोंको चरनेकी या चरानेकी इजाज़त दें। क्योंकि इस तरीक़े पर ख़ासकर शहरी इलाक़ोंमें ही अमल किया जा सकता है, इसलिए ज़ाहिर है कि इससे बहुत बड़े पैमाने पर राहत नहीं मिलेगी। फिर भी मेरे खयालमें यह चीज़ सोचने लायक़ तो है ही।

"सूबेकी सरकारें अपने-अपने इलाक़ोंकी चुनी हुई जगहोंमें गोशालायें शुरू करें। जो लोग कालके ज़मानेमें अपने मवेशियोंको खिला-पिला न सकें, वे उन्हें इन गोशालाओंमें भरती करा आवें, और अकालकी साँसत खतम होने तक सरकारी खर्चसे इन ढोरोंको खिला-पिला कर जिलाया जाय। ऐसे मवेशियोंको बिलकुल मुफ़्त पाला जाय या बादमें उनके मालिकोंसे कुछ खर्च वसूल कर लिया जाय। यह एक तफसीलका सवाल है, जिसे सूबेकी सरकारें .खुद अपने ढंग पर हल कर सकती हैं। मवेशियोंके जुदा-जुदा मालिकोंको अलग-अलग चारा देनेके बदले एक जगह बहुतसे मवेशियोंको इकट्ठा करके उन्हें एक साथ खिलाने और उनकी परवरिश करनेका इन्तज़ाम करना सूबोंकी सरकारोंके लिए ज़्यादा आसान होगा।"

नई दिल्ली, २०–४–'४६

('हरिजन'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

हफ़्तेवार ख़त

अहिंसाका तरीक़ा

जो लोग यह मानकर कि गांधीजी और कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीमें फूट पड़ गई है, वक़्तसे पहले बगलें बजा रहे थे, उनको बहुत जल्द मायूस (निराश) होना पड़ेगा। वे यह जानते ही नहीं कि अहिंसा कैसे काम करती है। मतभेदका मतलब फूट नहीं होता। 'अनेकतामें एकता' .क़ुदरतका क़ानून है। फूट डालनेवाली चीज़ तो अहंकार (.खुदी) होता है। वफ़ादारीका सबूत हर बातमें हाँ-में-हाँ मिलाना नहीं, बल्कि देशके लिए अपना सब कुछ लगा देना है। इसलिए गांधीजीका मतभेद कांग्रेसको कमज़ोर बनानेवाला नहीं हो सकता था। वह तो उसे और मज़बूत बनानेके लिए ही था। एक दिन शामकी प्रार्थनाके बाद उन्होंने कहा: "वर्किंग कमेटीने बहुत सोच-समझकर अपना फ़ैसला किया है। उनका एक ही मक़सद है — हिन्दुस्तानकी भलाई। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप विश्वास रखें कि उन्होंने जो कुछ किया है, वह नेकनीयतीसे हिन्दुस्तानके भलेके लिए ही किया है, और उससे हिन्दुस्तानका भला ही होगा। कांग्रेसने साठ साल तक जो लगातार मुल्ककी सेवा की है, उससे आपकी इस श्रद्धाको ताक़त मिलनी चाहिये।"

बाक़ीके जितने रोज़ वे दिल्लीमें रहे, उन्होंने प्रार्थनाके बादके प्रवचनों (तक़रीरों)में दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके बारेमें कई बार लोगोंको कहा: "वहाँ पर कुछ गोरे गुण्डे सत्याग्रहियोंको सता रहे हैं। सत्याग्रही बड़ी शान्तिसे उनका सामना कर रहे हैं, मगर गुण्डोंका ज़ोर बढ़ता ही जाता है। दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानी मुट्ठी भर ही हैं — सारे मुल्कमें दो लाखसे थोड़े ही ज़्यादा होंगे। जरा ख़याल कीजिये कि डॉक्टर नायकर और डॉक्टर दादू जैसोंके लिए हिन्दुस्तानियोंके लिए ख़ास बनाई हुई बस्तियों — भंगीबासों — में रहना क्या मानी रखता है? आप लोग ईश्वरसे प्रार्थना करें कि वह हमारे भाइयोंको आख़िर-दम तक बहादुरीसे जमे रहनेकी ताक़त दे, और गोरोंको सन्मति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(समझ) दे । सच्चे दिलकी प्रार्थना वह कर सकती है, जो दुनियामें दूसरी कोई चीज़ नहीं कर सकती ।"

उन्होंने सत्याग्रहियोंको उनकी हिम्मत और सहनशक्तिके लिए बधाई दी, जिन्होंने गुण्डोंकी बढ़ती हुई ज़्यादतियोंके बावजूद हाथ तक नहीं उठाया। गांधीजीने कहा कि वह ख़ुद पैदा तो हिन्दुस्तानमें हुए थे, मगर दक्षिण अफ्रीकाने उन्हें बनाया था । वह वहाँके कोने-कोनेसे वाक़िफ़ हैं । उन्होंने अपनी भरी जवानीके बीस साल वहाँ गुज़ारे थे। वे दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंको पहचानते हैं । उनके दिलमें जितनी मुहब्बत हिन्दुस्तानियोंके लिए है, उतनी ही वहाँके गोरोंके लिए भी है । उन्हें यह जानकर शर्म आती है कि कुछ गोरे वहाँ गुण्डोंका काम कर रहे हैं । उन्हें डर है कि यूनियनके बाक़ी गोरोंकी गुण्डोंके साथ हमदर्दी है । कम-से-कम मूक (खामोश) हमदर्दीके बिना इस तरहकी गुण्डाशाही चल नहीं सकती। उन्हें आशा है कि गोरे जल्द ही सत्याग्रहियोंकी ताक़त और ईमानदारीको पहचानेंगे और उनके दिलोंमें सत्याग्रहियोंके लिए इज़्ज़त और हमदर्दी पैदा होगी । उन्होंने लोगोंसे अपील की कि वे ईश्वरसे प्रार्थना करें कि वह गुण्डों पर रहम करे। उन्होंने बताया कि आज हमें सत्याग्रहियोंको रुपये-पैसेकी मदद भेजनेकी ज़रूरत नहीं । उनके पास रुपया क़ाफ़ी है । रुपयेसे वे जीत नहीं सकते । "लेकिन वक़्त आ सकता है जब कि दक्षिण अफ्रीकाके अपने भाइयोंकी मददके लिए हिन्दुस्तानमें शुद्ध सत्याग्रह करना आपका फ़र्ज़ हो जाय । मैं आज नहीं बता सकता कि उसका क्या रूप होगा । हिन्दुस्तान तेज़ीसे सारी मनुष्य-जातिकी इज़्ज़तके रखवालेका दरजा हासिल कर रहा है । अगर दक्षिण अफ्रीकाके बहादुराना सत्याग्रहके जंगमें अपने भाइयोंकी मदद करनेका बोझ आपको ही उठाना पड़े, तो वह कोई बड़ी बात न होगी । मगर उसके लिए पहले आपका रास्ता साफ़ होना चाहिये । जब वह दिन आवेगा, तो मुझे पता चल जायगा । इस दरमियान मैं वाइसराय साहब और हिन्दुस्तानके गोरोंसे अपील करता हूँ कि वे इस बारेमें अपना फ़र्ज़ बजावें ।"

उनकी विदाईके भाषण (तक़रीर)से लोगोंके दिल भर आये थे । दो बारके थोड़े दिनोंके अंतरके सिवाय वे क़रीब तीन महीने दिल्लीके लोगोंके बीच रहे थे । उन्होंने जो क़ीमती-से-क़ीमती सौगात उन्हें दी थी, वह थी, मिलकर प्रार्थना करना । उसकी तरफ़ इशारा करते हुए उन्होंने कहा: "आप इस आदतको चालू रक्खें । प्रार्थनाके श्लोक आप बोलें चाहे न बोलें, उसकी मुझे परवाह नहीं । मगर आप अपने परिवारके साथ मिलकर, जिस वक़्त भी आपको सुभीता हो, पांच मिनट आँखें बन्द करके शान्तिसे बैठें और रामका ध्यान करें, तो मेरे लिए यह बस होगा ।"

श्रद्धाका मर्म

दिल्लीकी धूल और गरमीमें तीन महीनोंकी अथक मेहनतके बाद आख़िर गांधीजीको पंचगनी जाकर अपनी थकी हुई कायाको फिरसे ताज़ा करनेकी फ़ुरसत मिली है । दिल्लीमें आख़िरी रोज़ उन्होंने कहा: "दो महीने पहाड़की हवा खाकर मैं बाक़ी सालके लिए तैयार हो सकता हूँ । मुझे ताज्जुब होता है कि इससे कितना फ़र्क़ पड़ जाता है । मगर मैं नहीं जानता कि सचमुच मेरी तबीयतको अच्छी रखनेवाली चीज़ पहाड़की हवा है या राम-नाम ।" इससे पहले भी एक दिन उन्होंने अपने भाषणमें ईश्वर पर उनकी अपार श्रद्धाकी बात कही थी । गजेन्द्र-मोक्षकी कथा पर टीका करते हुए उन्होंने कहा था: "इस कथाका निचोड़ यह है कि इम्तहानके वक़्त ईश्वर हमेशा अपने भक्तकी मदद करता है । शर्त यह है कि ईश्वर पर जीती-जागती श्रद्धा हो और उसीका इनसान आसरा ले । श्रद्धाकी कसौटी यह है कि अपना फ़र्ज़ अदा करनेके बाद जो कुछ भी भला या बुरा नतीजा हो, इनसान उसे मान ले । सुख आये या दुःख आये, उसके लिए सब बराबर होना चाहिये । जनक राजाके बारेमें कहा जाता है कि एक बार उन्हें किसीने आकर कहा: 'महाराज, आपकी राजधानी मिथिला जल रही है।' उन्होंने जवाब दिया: 'मिथिलायां प्रदग्धायां न मे दह्यति किंचन —' मिथिलाको आग लगी है, तो मुझे उससे क्या? उनकी इस धीरज और शान्तिका रहस्य (राज़) यह था कि वह हमेशा जाग्रत रहते थे, हमेशा अपना फ़र्ज़ अदा करते थे । इसलिए बाक़ी सब कुछ वे ईश्वर पर छोड़ सकते थे । तो आप यह जान लें कि अव्वल तो ईश्वर अपने भक्तको मुसीबतोंसे बचा ही लेता है, और अगर मुसीबत आ ही पड़े तो भक्त शान्तिसे उसकी मरज़ीके सामने सिर झुकाकर ख़ुशीसे उसे सह लेता है।"

एक सबूत

अगर गांधीजीकी इस श्रद्धाके लिए कि ईश्वर जिसे बचाता है, उसे कोई मार नहीं सकता, सबूत की ज़रूरत थी तो वह पूना लौटते वक़्त सफ़रमें मिल गया। रातके एक बजेके क़रीब जब गांधीजीकी स्पेशल गाड़ी पूरी रफ़्तारसे जा रही थी, वह एकाएक नेरल और कर्जत स्टेशनोंके दरमियान पटरी पर रखे हुए बड़े-बड़े पत्थरोंसे टकराई । ये पत्थर ज़रूर किसीने जानबूझकर गाड़ीको उलटानेके लिए रक्खे थे । इन्जनको नुक़सान पहुँचा। आख़िरी डिब्बेका डायनेमा टूट गया । इन्जन-ड्राइव्हरने होशियारीसे गाड़ीको ठीक समय पर थाम न लिया होता, तो वह ज़रूर पटरीसे उतर जाती और उसमें बैठे हुए मुसाफ़िरों पर क्या बीतती, यह कहा नहीं जा सकता । मगर ख़ुश-क़िस्मतीसे गाड़ी और मुसाफ़िर दोनों बच गये । तक़रीबन दो-तीन घंटे हथौड़ोंसे टूटे हुए हिस्सेकी मरम्मत होती रही, मगर गांधीजी मासूम बच्चेकी तरह बेख़बर सोते रहे । सुबह उठे तो उन्हें पता भी न था कि रातको क्या हुआ था ।

पूनामें प्रार्थनाके बाद उन्होंने कहा: "शायद यह सातवाँ मौक़ा है जब मैं इस तरह बालबाल बचा हूँ । मैंने किसीको कभी नुक़सान नहीं पहुँचाया । किसीसे मेरा बैर नहीं । मेरी जान लेनेकी कोशिश कोई क्यों करे? मगर दुनियाका ऐसा ही रवैया रहा है । आदमीकी सारी ज़िन्दगी ख़तरों और जोखिमोंसे भरी है । क़ुदरतमें रचना और संहारके बीच निरंतर द्वन्द्व (जद्दोजहद) चलता रहता है। इससे छुटकारेका रास्ता मोक्ष (निजात) ही है । इस दुर्घटना (हादसे)से मेरी यह श्रद्धा और भी बढ़ी है कि शायद ईश्वर मुझे आपकी ख़िदमतके लिए १२५ साल तक ज़िन्दा रखना चाहता है । मेरे पास एक राम-नामके सिवा कोई ताक़त नहीं है । वही मेरा एक आसरा है । आप भी मेरे साथ रामका नाम लें और उसे अपने दिलमें जगह दें । राम टेढ़ेको सीधा बनानेवाला और बिगड़ीको सँवारनेवाला है ।"

पूना, ३०-६-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

विषय-सूची

खादीके पीछे पागल	...	गांधीजी
भयानक ख्वाब	...	प्यारेलाल
तारीफ़के लायक़ मिसाल	...	प्यारेलाल
निराशाजनक चित्र	...	प्यारेलाल
एटम बम और अहिंसा	...	गांधीजी
ख़ामख़ाह क्यों मारें?	...	गांधीजी
ब्याह और ब्रह्मचर्य	...	गांधीजी
हरिजनों और सवर्णोंका ब्याह	...	गांधीजी
गोशाला और पिंजरापोल	...	गांधीजी
हफ़्तेवार ख़त	...	प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल कांगड़ी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा ख़तरा

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०

सम्पादक : प्यारेलाल

अंक २३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १४ जुलाई, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८ या शि० १४ या डालर ३

हिन्दी और उर्दूका अन्तर

भाई रामनरेश त्रिपाठीको मैं काफ़ी जानता हूँ। एक रोज़ वे मुझसे मिलने आये थे। मुझे डर था कि हिन्दुस्तानीके प्रचारके लिए वे मुझे डाँटेंगे। लेकिन बातें करनेसे मैंने उलटा ही पाया। वे मुझसे कहने लगे कि अगर मैं हिन्दी और उर्दूके मेलसे सच्ची हिन्दुस्तानीकी [illegible] रखता हूँ, तो मुझे उर्दूसे ज़्यादा मदद मिलेगी। शर्त यह कि उर्दूको नया जामा पहनाकर बिगाड़नेकी जो कोशिश हो रही है, उसे मैं उसी तरह समझ लूँ, जिस तरह हिन्दीको बिगाड़नेकी कोशिशको समझता हूँ। उस हालतमें हिन्दुस्तानी अपने-आप फिर ज़िन्दा हो जायगी। इस पर मैंने उनसे कहा कि वे मुझको कुछ मिसालें दें, जिससे मैं समझ सकूँ कि उनके कहनेका मतलब क्या है। सोचने लगे, तो कुछ दिक़्क़त मालूम हुई। तब मैंने कहा कि मुझको कुछ लिखकर समझावें। इसका नतीजा यह है कि उन्होंने मुझे नीचेका खत भेजा है:

"पूज्य बापू,

"हिन्दी और उर्दूके ढाँचेका अन्तर आपने माँगा था। पर [illegible] तो मुझे अनुभवगम्य-सा जान पड़ता है। उसकी कोई [illegible] नहीं दिखा सकता हूँ। 'हरिजन'के किसी एक पैरेग्राफका अनुवाद हिन्दी और उर्दूके किन्हीं दो योग्य लेखकोंसे कराकर देख लीजिये। ढाँचोंका अन्तर दिखाई पड़ने लगेगा।

"मैंने उस दिन कहा था कि उर्दू हिन्दीसे अधिक परिमार्जित है। इसका एक उदाहरण लिखता हूँ। हिन्दीके एक प्रसिद्ध लेखकका यह वाक्य है: 'समझमें न आनेसे घबराहट-सी लगने लगती है'। उर्दूमें घबराहट 'लगती' नहीं, 'होती है' या 'पैदा होती है'। उर्दूका कोई प्रसिद्ध लेखक कभी ग़लत मुहावरा नहीं लिखेगा। और अगर लिख देगा, तो उसको ज़बरदस्त मोरचा लेना पड़ेगा। हिन्दीमें भाषाके संशोधनका आन्दोलन ही नहीं है। कोई आन्दोलन क़ायम करनेकी अपेक्षा उर्दू भाषाकी पुस्तकें या लेख हिन्दी अक्षरोंमें छपने लगें, तो हिन्दी भाषाका बड़ा उपकार होगा। उर्दू भाषाके सुधारने और सँवारनेमें उर्दूके शायरों और लेखकोंने पिछले कई सौ बरसोंमें जो हाथापाई की है, उसका लाभ हिन्दी भाषाको सहज ही मिल जायगा। और इस प्रयोगसे वह आप-से-आप हिन्दुस्तानी बन भी जायगी।"

यह खत विचार करनेके लायक़ है। मैं भाषाका प्रेमी हूँ, भाषाका [illegible] नहीं हूँ। हिन्दीका मेरा ज्ञान ऐसा ही है। मैंने कोई पुस्तक [illegible] हिन्दी सीखी नहीं। इसके लिए समय ही नहीं मिला। मेरा [illegible] देवदास, जो मेरे प्रोत्साहनसे और आशीर्वादसे हिन्दी सीखनेके [illegible] मद्रास चला गया था, मुझसे बहुत ज़्यादा हिन्दी जानता है। [illegible] दूसरे भी हैं, जिनके नाम मैं दे सकता हूँ। उर्दूका ज्ञान मुझे [illegible] भी बहुत कम है। नागरी लिपि बचपनसे जानता हूँ। फ़ारसी [illegible] तो मेहनत करके सीखा हूँ। लेकिन उसका मुहावरा न होनेसे [illegible] थोड़ी मुश्किलसे पढ़ पाता हूँ। जैसे-तैसे लिख भी लेता हूँ। [illegible] तरह उर्दूका ज्ञान तो बहुत ही कम है। जो है, सो प्रेम है, और किसीका पक्षपात नहीं है। इसलिए अगर भगवान्‌की कृपा हुई, और भाषा-शास्त्रियोंकी मदद मिली, तो मेरा यह साहस सफल होगा। इसी खयालसे त्रिपाठीजीका यह खत मैंने छापा है, जिससे वे इस काममें मदद दें और दूसरे भी हाथ बँटायें।

एक दूसरे हिन्दी भाषा-प्रेमीने भी मुझे यह बताया है कि उर्दूमें भाषा पर जो मेहनत हुई है, वह हिन्दीमें शायद ही हुई हो। अब अगर दोनों खींचातानीमें न पड़ें और समझ लें कि दोनों भाषाओंकी जड़ एक ही है, और जिसे करोड़ों देहाती बोलते हैं, उसीके लिए शास्त्रियों और शायरोंको मेहनत करनी है, तो हम जल्दीसे आगे कूच कर सकते हैं।

पूना, ३–७–'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

हफ़्तेवार ख़त

नया अन्धा विश्वास ?

पिछले दिनों पूनामें प्रार्थनाके बादकी अपनी एक तक़रीरमें गांधीजीने पूछा था: "क्या मैं एक नई क़िस्मके अन्धे विश्वासका प्रचार कर रहा हूँ? ईश्वर कोई व्यक्ति [illegible] है और सर्वशक्तिमान (क़ादिरे मुतलक़) है। जो भी कोई उसे अपने दिलमें जगह देता है, वह ऐसी अजीब उम्मीदों और उमंगोंसे भर जाता है, जिनकी ताक़तका मुक़ाबला भाप और बिजलीकी ताक़तसे नहीं किया जा सकता। वह ताक़त तो उससे भी ज़्यादा सूक्ष्म होती है।" राम-नाम कोई जादू-टोना नहीं। वह तो अपने समूचे अर्थके साथ ही लिया जाना चाहिये। गांधीजीने कहा कि राम-नाम गणितका एक ऐसा सूत्र या फ़ॉर्मूला है, जो थोड़ेमें बेहिसाब खोज और तजरबे (प्रयोग)को ज़ाहिर कर देता है। सिर्फ़ मुँहसे राम-नाम रटनेसे कोई ताक़त नहीं मिलती। ताक़त पानेके लिए ज़रूरी यह है कि सोच-समझकर नाम जपा जाय और जपकी शर्तोंका पालन करते हुए ज़िन्दगी बिताई जाय। ईश्वरका नाम लेनेके लिए इनसानको ईश्वरमय या ख़ुदाकी ज़िन्दगी बितानी चाहिये।

ख़राब शगुन

दक्षिण अफ़्रीकाका सत्याग्रह एक ख़राब शगुन और एक चेतावनी है। जैसा कि अभी उस दिन ए० आई० सी० सी०की बैठकमें पण्डित जवाहरलालजीने कहा था, मुमकिन है, आज भी हिन्दुस्तानका भविष्य परदेशमें बसे हुए हिन्दुस्तानियोंकी, खासकर दक्षिण अफ़्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी, लड़ाईके ज़रिये तय हो रहा हो। वहाँ 'लिंच लॉ'ने एक आदमीकी जान तो ले ही ली है। कहा जाता है कि वहाँके गोरे गुण्डोंने एक हिन्दुस्तानीको ग़लतीसे सत्याग्रही समझकर इतना पीटा कि वह मर गया। इस पर रायज़नी करते हुए गांधीजीने कहा: "यह एक अफ़सोसनाक वाक़िया है। लेकिन फिर भी मुझे इससे ख़ुशी होती है। सत्याग्रहीको हमेशा हँसते-हँसते मरनेके लिए तैयार रहना चाहिये और दिलमें बदले या कीनेका कोई ख़याल न रखना चाहिये। कुछ लोग ग़लतीसे यह सोचने लगे हैं कि सत्याग्रहका मतलब सिर्फ़ जेल जाना या शायद लाठी खाना है, इससे ज़्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ नहीं । इस तरहके सत्याग्रहसे आज़ादी नहीं आ सकती । आज़ादी हासिल करनेके लिए तो आपको बिना मारे मरनेकी कला सीखनी होगी ।"

दक्षिण अफ्रीकामें गोरों और हब्शियोंकी बहुत बड़ी आबादीके बीच मुट्ठीभर हिन्दुस्तानी बसे हुए हैं । वहाँके गोरोंने हुकूमतके नशेमें चूर होकर न सिर्फ़ एक जंगली क़ानून पास किया है, बल्कि .ख़ुद उस क़ानूनको अपने हाथमें भी ले लिया है । इस बदनाम क़ानूनके बचावमें दलील यह दी जाती है कि गोरी तहज़ीब को रंगीन लोगोंकी बढ़ती हुई बाढ़में बह जानेसे बचानेके लिए उसकी ज़रूरत थी । इस पर टीका करते हुए गांधीजीने कहा : "मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूँ कि जिस तहज़ीबको अपनी हिफ़ाज़तके लिए ऐसे जंगली क़ानूनकी ज़रूरत महसूस होती है, वह असलमें तहज़ीब ही नहीं है । दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी वहाँ अपनी इज़्ज़तके लिए लड़ रहे हैं । वहाँकी ज़मीन असलमें गोरोंकी ज़मीन नहीं । क्योंकि ज़मीन तो उसीकी होती है, जो उस पर मेहनत करता है । अगर दक्षिण अफ्रीकाके सभी सत्याग्रही काम आ गये, तो भी मैं उनकी मौत पर कोई आँसू नहीं बहाऊँगा । ऐसा करके वे न सिर्फ़ अपने-आपको मुक्त या आज़ाद करेंगे, बल्कि वहाँके हब्शियोंको भी रास्ता दिखायेंगे और हिन्दुस्तानकी इज़्ज़तको सलामत रक्खेंगे । मुझे उन पर नाज़ है । और आपको भी होना चाहिये । यह सब मैं आपसे इसलिए नहीं कह रहा हूँ कि आप इन बातोंको सुनकर रो पड़ें या गोरों के ख़िलाफ़ .ग़ुस्सेसे और नफ़रतसे भर जायँ । बल्कि मैं तो यह चाहूँगा कि आप ईश्वरसे यह मनायें कि वह गोरोंको सही रास्ता दिखाये और हमारे भाइयोंको इतनी ताक़त और हिम्मत बख़्शे कि वे अख़ीर तक अपनी आन पर सचाई के साथ डटे रह सकें ।"

चन्द उजली मिसालें

सत्याग्रही जिस क़दर अवसरके अनुरूप हिम्मत और त्यागका परिचय दे रहे हैं, उससे हरएक हिन्दुस्तानीका दिल गर्वसे भर उठेगा । श्रीमती डॉक्टर गुणम्‌को सत्याग्रही के नाते छह महीनोंकी सख़्त क़ैदकी सज़ा दी गई थी । फ़ैसला सुनानेवाले मजिस्ट्रेटने उनकी सज़ा घटाकर दो महीने कर दी । इस पर उन्होंने एतराज़ किया और कहा कि औरत होनेके नाते वे अपने साथ किसी तरहकी रियायत नहीं चाहतीं । उन्होंने भी वही क़सूर किया है — बशर्ते कि वह क़सूर कहा जा सके — जो उनके दूसरे सत्याग्रही भाइयोंने किया है । मगर मजिस्ट्रेटने उनके इस एतराज़ पर ध्यान नहीं दिया । नौजवान सोहराबजी भी जेल चले गये हैं । अभी कुछ दिन पहले ही वे दक्षिण अफ्रीकाके नुमाइन्दोंके सरदार बनकर यहाँ आये थे । वे मरहूम पारसी रुस्तमजीके एक लायक़ सपूत हैं । जिन दिनों गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहकी तहरीक चलाई थी, उन दिनों सोलह सालके सोहराबजीने अपने असाधारण साहसका परिचय देकर बड़ा नाम कमाया था । एक गोरा घुड़सवार सत्याग्रहियों पर अपना घोड़ा दौड़ानेकी धमकी दे रहा था । सोहराबजीने उसके घोड़ेकी लगाम थाम ली और उससे साफ़-साफ़ कह दिया कि वह अपने ऐसे तरीक़ोंसे न तो सत्याग्रहियोंको डरा सकता है और न झुका सकता है । उनकी इस हिम्मतसे एक मनहूस हालत पैदा होते-होते बच गई ।

यह देखकर .ख़ुशी होती है कि दक्षिण अफ्रीकामें जोहानिसबर्गके पादरी स्कॉट एक ऐसे गोरे सज्जन हैं, जिनकी ईसाइयत रंग-भेदकी असमानता और सत्याग्रहियोंके साथ होनेवाले बुरे बरतावको देखकर बग़ावत कर उठी है । इन सब ज़्यादतियोंके ख़िलाफ़ अपना विरोध ज़ाहिर करनेके लिए वे सत्याग्रहियोंके दलमें शामिल हो गये हैं और एक ऐसी जगह चले गये हैं, जो बकौल थोरो बेइन्साफ़ सरकारके राजमें इन्साफ़-पसन्द आदमीके लिए एक ही मौज़ूँ जगह है, मतलब यह कि वे जेलमें जा बैठे हैं । गांधीजीने उनके इस कामकी सराहना करते हुए कहा : "दक्षिण अफ्रीकामें किसी गोरे आदमीका रंगीन लोगोंसे मिल जाना कोई मामूली बात नहीं है । अगर सत्याग्रही अख़ीर तक मज़बूत और अहिंसक बने रहे, तो उनका भला ही होगा ।"

बम्बईमें कांग्रेसकी महासमितिके सामने बोलते हुए गांधीजीने कहा था : "मुमकिन है कि दक्षिण अफ्रीकाकी लड़ाई आज बहुत मामूली चीज़ मालूम हो, मगर उसके नतीजे बहुत बड़े हो सकते हैं । जिस भूमिमें सत्याग्रहका जन्म हुआ था, वहीं आज वह कसौटी पर कसा जा रहा है । मुट्ठीभर हिन्दुस्तानियोंकी सफलताने, जिनमें ज़्यादातर लोग गिरमिटिया मज़दूरोंकी औलाद हैं, दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंकी ईर्ष्याको भड़का दिया है । चुनांचे वे अब उनको बुरी तरह ज़लील करनेमें लगे हैं । कोशिश यह की जा रही है कि उनको बिलकुल अलग, गन्दी बस्तियोंमें रहनेको मजबूर किया जाय । साथ ही, उन्हें हलके दरजेका मताधिकार देकर [illegible] ज़लील करनेकी कोशिश हुई है । मैं यह सोचकर शर्म और [illegible] भर जाता हूँ कि ये तमाम बातें फील्ड मार्शल स्मट्सकी हुकूमतमें हो रही हैं । हमारे पाप एक अजीब ढंगसे हमारे पास लौट आते हैं । हमने अपने ही कुछ लोगोंको अछूत बना रक्खा है । नतीजा इसका यह हुआ है कि आज दक्षिण अफ्रीकाके गोरे हमारे देश-भाइयोंके साथ वहाँ अछूतोंके जैसा बरताव कर रहे हैं । हमें अपने इस कलंकको धो डालना चाहिये, और दक्षिण अफ्रीकाके अपने भाइयोंकी बहादुराना लड़ाईकी कामयाबीके लिए दुआ माँगनी चाहिये । उन्हें हमारे पैसोंकी ज़रूरत नहीं है; लेकिन हमारी पूरी-पूरी हमदर्दी और हिमायतकी ज़रूरत तो है ।"

तिनका और शहतीर

जिस वक़्त गांधीजी ए० आई० सी० सी०के सामने ये बातें कह रहे थे, उनके मनमें एक दृश्य चक्कर काट रहा था । वह उन्होंने अगले दिन हरिजनोंकी उस बस्तीमें देखा था, जहाँसे मोटर पर सवार होकर वे ए० आई० सी० सी० की बैठकमें गये थे । बारिशका मौसिम होनेकी वजहसे उस दिन प्रार्थना-सभा पासके उस 'देवे[illegible] वेल्फेअर हॉल'में हुई थी, जो पिछली कांग्रेसी वज़ारतने बनवाया था । छठी जुलाईको प्रार्थनाके बाद गांधीजीने पूछा कि हॉलमें कितने हरिजन मौजूद हैं । जवाबमें एक भी हाथ न उठा । इससे उन्हें [illegible] नाउम्मीदी हुई । चूँकि वे .ख़ुद भंगी बन गये हैं, इसलिए [illegible] हरिजनोंकी बस्तीमें रहने गये थे । लेकिन भंगियोंकी बात तो दूर, [illegible] उस सभामें कोई हरिजन भी न था । उन्होंने लोगोंकी ओर मुख़ातिब होकर कहा : "इसके लिए मैं दोष आपको दूँगा, जो ग़ैरहाज़िर हैं उनको नहीं । उनकी ग़ैरहाज़िरीकी वजह तो यह है कि [illegible] कहलानेवाले हिन्दुओंने अछूत कहे जानेवाले लोगोंको सदियोंसे दबा रक्खा है, और सो भी धर्म या मज़हबके नाम पर । यह हॉल हरिजनोंके इस्तेमालके लिए बनाया गया है । जो हरिजन नहीं हैं, वे तो यहाँ हरिजनोंकी मेहरबानीसे ही आ सकते हैं । इसलिए यहाँ आनेवालोंको चाहिये कि वे अपने साथ कम-से-कम एक हरिजनको तो ही लायें । अगर आप हरिजनोंके साथ अपना मेलजोल बढ़ायेंगे, तो छूतछात बात-की-बातमें मिट जायगी । मगर मुझे यह देखकर दुःख होता है कि आपने दरअसल ऐसा किया नहीं । हरिजनोंमें भी बैरिस्टर और वकील हैं, मगर मैं देखता हूँ कि आज भी वे मलबार हिलके बंगलोंमें रह नहीं पाते हैं । मेरी छावनीमें एक हरिजन लड़की स्वयंसेविकाका काम कर रही है । वह बी० ए०में पढ़ती है । उसमें और दूसरी लड़कियोंके दिखावेमें ऐसा कोई फ़र्क़ नहीं, जो [illegible] जात बताये । फिर क्या वजह है कि यह जानने-भरसे कि [illegible] हरिजन है, उसके साथ दूसरी लड़कियोंसे अलग ढंगका [illegible] किया जाय ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीने आगे कहा : "मेरी छावनीका इन्तज़ाम रखने और निगरानी करनेवाले लोग मेरे आरामका जितना और जैसा खयाल रखते हैं, उससे मैं घबरा उठता हूँ। फिर भी मुझे यहाँ रहना बहुत भारी मालूम होता है। यहाँ मेरे आस-पास हद दरजेकी गन्दगी फैली हुई है। डॉ॰ दिनशा महेताने मुझसे कहा है कि यहाँके पाखाने इतने गन्दे हैं कि वे उनका इस्तेमाल नहीं कर सकते। यहाँ चारों तरफ़ इतनी मक्खियाँ हैं कि उन्हें डर लगता है, कहीं मैं उन मक्खियोंकी फैलाई छूतका शिकार बनकर बीमार न पड़ जाऊँ! मुझे .खुद अपनी कोई फ़िकर नहीं है। गोकि दो-दो डॉक्टर मेरी तबियतका खयाल रखते हैं, फिर भी मैं ईश्वरको छोड़कर और किसीका भरोसा नहीं करता। वह सर्व शक्तिमान् भगवान् मेरी तन्दुरुस्तीका खयाल रक्खेगा। लेकिन मेरे साथियोंको ईश्वरमें इस तरहकी श्रद्धा नहीं है। मुझे उनकी फ़िकर रहती है। मेरे लिए तो एक अच्छे साफ़ पाखानेका इन्तज़ाम है, लेकिन मेरे सब साथी उसका इस्तेमाल नहीं कर सकते। चुनाँचे मैं यह सोच रहा हूँ कि अगर दुबारा मुझे यहाँ आना पड़ा, तो मैं अकेला ही आऊँगा। जिस मकानमें यहाँ मैं रहता हूँ, वह एक ओवरसियरका मकान है। मेरी समझमें नहीं आता कि क्यों ये ओवरसियर और यहाँकी सफ़ाईका इन्तज़ाम करनेवाले यानी म्युनिसिपैलिटी और पी॰ डब्ल्यू॰ डी॰ के लोग इस सारी गन्दगीको बरदाश्त करते हैं? मेरे यहाँ आने और रहनेसे फ़ायदा ही क्या, अगर मैं उन्हें इस जगहको साफ़ और स्वास्थ्यप्रद बनानेके लिए राज़ी न कर सकूँ?"

सत्याग्रहका विषय

गांधीजीने इस बातको यहीं नहीं छोड़ा; बल्कि उन्होंने डॉक्टर सुशीला नय्यर और डॉक्टर दिनशा महेतासे कहा कि वे हरिजन-बस्तीका मुआयना करके उन्हें अपनी रिपोर्ट दें। दोनों डॉक्टरोंने वहाँ जो गन्दगी और कूड़ा-करकट देखा, वह असह्य था। कई जगह पाखानोंकी नालियाँ कचरेसे भर गई थीं, और इस वजहसे वे ठीक तरह काम नहीं कर रही थीं। कुछ जगहें ऐसी भी थीं, जहाँ दुमंज़िलेकी नालियाँ चूती थीं और नीचे रहनेवालोंको उनकी वजहसे तकलीफ़ होती थी। वहाँ पानीकी बेहद तंगी थी। नल दिनमें २ या ३ घंटेसे ज़्यादा चलते ही नहीं। फ्लशका इन्तज़ाम ठीक नहीं था, इसलिए सहज ही फ्लशवाले पाखाने इतने गन्दे थे कि पूछिये न पूछिये। गांधीजीने कहा कि उनकी समझमें नहीं आता कि इस हालतमें कोई इन पाखानोंका इस्तेमाल कर सकता है? कूड़े-करकटको दूर करने और ठिकाने लगानेका इन्तज़ाम भी बहुत ही खराब था। कूड़ा-करकट डालनेके खुले डिब्बोंसे सड़ाँध-भरी बदबू आती थी। वहाँ रहनेवाले लोगोंकी तादाद इतनी ज़्यादा थी कि उतनी थोड़ी जगहमें वे सब कैसे रह सकते होंगे, भगवान् ही जाने! बम्बईमें आखिरी दिन प्रार्थनाके बादकी अपनी तक़रीरमें गांधीजीने कहा था : "म्युनिसिपल हाकिमोंका फ़र्ज़ है कि वे इन चालोंको सफ़ाईके लिहाज़से सुधारें और अगर म्युनिसिपैलिटी अपना फ़र्ज़ अदा करनेमें चूके, तो लोगोंको यह हक़ है कि वे सत्याग्रह करके भी इसका इलाज करवायें। चालोंके मालिकों, ओवरसियरों और मुन्तज़िम कारकुनोंको चाहिये कि वे इस ग़लतीको सुधारनेके लिए अपनी तरफ़से कोई बात उठा न रक्खें।"

इसी सिलसिलेमें गांधीजीने आगे कहा : "मुझे यह देखकर शरम आती है और दुःख होता है कि मेरे मुक़ाम पर रात-दिन पुलिसका पहरा रहता है। यह तो आप लोगोंके लिए भी शर्मकी बात होनी चाहिये। आपको पुलिससे कह देना चाहिये कि मैं आपकी रखवालीमें हूँ, और आप मेरी हिफ़ाज़त करेंगे। हरिजनोंको ऊँची जातवाले हिन्दुओंसे शिकायत हो सकती है, और इसलिए मुझ पर भी उनका नाराज़ होना वाजिब ही है, गोकि मैं .खुद तो भंगी बन गया हूँ। अगर हरिजन मुझसे नाराज़ होते है, और अपनी नाराज़ी मुझ पर उतारते हैं, तो इसके लिए मैं अपने मनमें उनके खिलाफ़ कोई कीना नहीं रक्खूँगा। मैं अपने बसभर बराबर ऊँची जातवाले हिन्दुओं और हरिजनोंको उनका धर्म समझाता रहा हूँ। मेरी इन तमाम कोशिशोंके बावजूद हरिजन मेरे खिलाफ़ अपने दिलमें कड़ुवाहट रख सकते हैं, क्योंकि आज भी छूतछात जड़मूलसे मिटी नहीं है।" अखीरमें उन्होंने कहा : "आगे जब कभी मैं यहाँ आऊँगा, तो यह उम्मीद रक्खूँगा कि यहाँ सिर्फ़ मेरे रहनेके कमरोंमें ही नहीं, बल्कि चारों तरफ़ सफ़ाई नज़र आयेगी। और, मैं यह चाहूँगा कि मेरी हिफ़ाज़तके लिए यहाँ कोई पुलिस न रहे। इन चालोंमें रहनेवाले अपने लोगोंके लिए मैं किसी तरह बोझ बनना नहीं चाहता।"

भगवान् रूठा है

जिस अहमदाबाद पर सरदार वल्लभभाई पटेलको नाज़ रहा है, और जिसकी म्युनिसिपैलिटीमें उन्होंने अव्वल दरजेका बुनियादी काम किया है, आज भगवान् उससे रूठा है। अहमदाबादके हिन्दू और मुसलमान हमेशा एक-दूसरेके साथ मिल-जुलकर शान्तिसे रहते आये हैं। लेकिन मालूम होता है कि इधर अहमदाबादवालों पर पागलपन सवार हो गया है। इससे गांधीजीको बेहद तकलीफ़ हुई है। प्रार्थनाके बादकी अपनी एक तक़रीरमें उन्होंने कहा था : "मालूम होता है कि अहमदाबादके हिन्दू और मुसलमान हैवान बन गये हैं। अहमदाबादमें पिछले दिनों जो लोग मारे गये हैं, वे सब छुरीसे या ऐसे ही दूसरे हथियारोंसे किये गये हमलोंसे नहीं मरे हैं। सचमुच यह एक शर्मकी बात है कि उनको एक-दूसरेका गला काटनेसे रोकनेके लिए पुलिस और मिलिटरीकी मदद लेनी पड़ती है। अगर एक तरफ़के लोग बदला लेना बन्द कर दें, तो दंगा आगे बढ़े ही नहीं। हिन्दुस्तानके चालीस करोड़ लोगोंमेंसे कुछ लाख लोग सही तरीक़ेसे मारे जायँ, या मर मिटें, तो उसमें हर्ज क्या है? अगर वे बिना मारे मरनेका सबक़ सीख सकें, तो हिन्दुस्तान, जो इतिहासों और पुराणोंमें कर्मभूमिके नामसे मशहूर है, स्वर्गभूमि बन जाय।"

गांधीजीने बम्बई सरकारके होम मिनिस्टर श्री मोरारजी देसाईसे, जो अहमदाबाद जानेसे पहले उनसे मिलने आये थे, कहा था कि उन्हें अकेले एक ईश्वरके भरोसे इस आगका सामना करना चाहिये, और इसे बुझानेमें पुलिस या मिलिटरीकी मदद न लेनी चाहिये। अगर ज़रूरत समझें, तो वे .खुद इस आगको बुझानेकी कोशिशमें श्री गणेशशंकर विद्यार्थीकी तरह मर मिटें। श्री मोरारजी देसाईने अहमदाबाद पहुँचकर वहाँके मुसलमानों और हिन्दुओंके नुमाइन्दोंकी एक मुश्तरक कान्फरेन्स बुलाई और उनसे कहा कि अगर वे चाहें, तो शहरसे पुलिस और मिलिटरीको उठा लेनेकी उनकी तैयारी है। लेकिन आये हुए लोगोंने एक राय होकर उनसे यह कहा कि वे ऐसी कोई जोखिम उठानेको तैयार नहीं हैं। नतीजा यह हुआ कि शहरमें पुलिस और मिलिटरी बनी रही। इस पर गांधीजीने बहुत व्यथित होकर कहा : "इस तरीक़ेसे अहमदाबादमें थोड़े वक़्तके लिए दंगा-फ़सादकी रोक-थाम ज़रूर हो गई है। लेकिन आज वहाँ जो शान्ति नज़र आती है, वह तो मरघटकी शान्ति है। उस पर किसीको कोई नाज़ नहीं हो सकता। काश, हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल जाते और उन्हें आपसके झगड़ोंसे दूर रखनेके लिए बुलाई गई पुलिस और मिलिटरीकी मदद लेनेसे वे इनकार कर देते!" गांधीजीने लोगोंको चेतावनी देते हुए कहा कि जब तक वे अमन और क़ानूनकी हिफ़ाज़तके लिए पुलिस और मिलिटरीकी मदद लेते रहेंगे, तब तक सच्ची आज़ादीकी बात निरी बकवास ही रहेगी।

पूना, ९-७-'४६

('हरिजन'से)

प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

१४ जुलाई १९४६

सच्चा ख़तरा

बम्बईमें कांग्रेसकी महासमितिमें यानी ए० आई० सी० सी० की दो दिनकी बैठकोंमें महासमितिकी मंज़ूरीके लिए पेश की गई वर्किंग कमेटीकी तजवीज़के ख़िलाफ़ की गई कुछ जोशीली तक़रीरोंको मैंने ध्यानसे सुना, मगर मैं तजवीज़की मुख़ालिफ़त करनेवालोंकी ओरसे पेश किये गये ख़तरोंकी तसवीरको समझ नहीं सका — उनकी बातसे सहमत नहीं हो सका। कोई भी सच्चा और पक्का सत्याग्रही अपने विरोधीकी ओरसे आनेवाले जाने-अनजाने ख़तरोंसे घबराता नहीं। हरएक फ़ौजकी तरह उसके लिए भी सच्चा डर तो अन्दरके ख़तरेका है, और होना चाहिये।

अगर विरोध या मुख़ालिफ़त पूरी जानकारीके साथ, तौल सँभालकर और पक्की बुनियाद पर न की जाय और जिस चीज़की मुख़ालिफ़त की जाती है, उससे बढ़कर काम और नतीजेका यक़ीन न दिलाया जाय, तो वह कितनी ही चतुराईके साथ क्यों न की जाय, अपने मक़सदमें नाकाम ही रहेगी। लोग देखें कि इस बारका विरोध इस क़िस्मका था या नहीं।

इस लेख में तो मैं अन्दर के ख़तरे की तरफ़ ही तवज्जह दिलाना चाहता हूँ। अहमियत के ख़याल से पहला ख़तरा तन और मनकी सुस्ती या काहिली का है। मस्त और सन्तुष्ट होकर जब यह सोचा जाता है कि चूँकि कांग्रेसवाले जेलख़ानोंमें रह आये हैं, इसलिए अब आज़ादी हासिल करनेके लिए उन्हें और कुछ करना ज़रूरी नहीं है, और कांग्रेस-जैसी एहसानमन्द जमातको चाहिये कि वह चुनावोंमें और ओहदोंके बँटवारेमें ऐसे कांग्रेसियोंको तरजीह देकर उनकी सेवाओंकी क़दर करे, तब उसमेंसे जड़ता पैदा होती है। यही वजह है कि लोग इनामी मानी जानेवाली जगहें पानेके लिए बेहूदे और गँवारू ढंगसे होड़ा-होड़ीमें शरीक होते हैं। इस तरह लोग दोहरी ग़लती करते हैं। कांग्रेसके कोश या लुग़तमें इनाम नामकी कोई चीज़ होनी न चाहिये। और जेल जाना तो अपने आपमें एक इनाम माना जाना चाहिये। सत्याग्रहीका वह दर्दनाक इम्तहान है। बेक़सूर मेमनेकी तरह उसकी आख़िरी मंज़िल भी क़तलख़ाना ही है। लेकिन होता यह है कि जेलके सफ़रका इस्तेमाल कांग्रेसकी पहुँचके हर ओहदेको पानेके लिए पासपोर्ट या परवानेकी तरह किया जाता है। इसलिए इस बातका अँदेशा रहता है कि कहीं सत्याग्रहीकी जेलयात्रा पेशेदार चोरों और डाकुओंकी तरह उसे गिरानेवाला पेशा न बन जाय। ऐसी हालतमें 'अण्डर ग्राउण्ड' या भूगर्भवासी रहकर काम करनेवाले मेरे मित्र जेल-यात्राको फूलोंकी सेज समझकर उससे बचना या उसे टालना चाहें, तो उसमें अचरजकी कोई बात नहीं। यह कांग्रेसके लिए उस ख़तरेकी चेतावनी है, जिसके नज़दीक वह पहुँच रही है।

जिन दोस्तोंने ब्रिटिश कैबिनेट मिशनकी दरख़्वास्तवाली तजवीज़का विरोध किया, मालूम होता है, उन्हें अपने लक्ष्य या मक़सदका ठीक ख़याल नहीं। क्या फ़रासीसी, रूसी या कहिये कि अंग्रेज़ी क्रान्ति यानी इन्क़िलाबकी तरह हिन्दुस्तानकी आज़ादी भी ख़ूनसे सने इन्क़िलाबकी क़ीमत चुकाकर हासिल की जायगी? अगर ऐसा है, तब तो सीधे और सच्चे कामकी शुरुआत अभी बाक़ी है। कांग्रेसको खुल्लमखुल्ला ऐसी जमात बनानेके लिए उनको बहुत ही ख़तरनाक रास्ते पर चलना होगा। अगर छिपकर या भूमिगत होकर काम करनेका उसूल एक ... उसूल हो, और अब उसका इस्तेमाल कांग्रेसके ख़िलाफ़ भी ... जा रहा हो, तो कहना होगा कि मेरी दलीलमें कोई सार नहीं। ... इसके विचारमात्रसे काँप उठता हूँ। अपनी समझदारी या चाहो... ख़ातिर मैं यह उम्मीद करता हूँ कि मेरा यह ख़याल बेबुनियाद है। ... फिर साफ़ ही इन दोस्तोंका यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वे कांग्रेसियोंसे ... कि चूँकि अब मुल्कमें कांग्रेसी राज या नुमाइन्दोंका राज है, फिर ... कांग्रेसकी क़िस्मका हो या मुस्लिम लीगी, इसलिए उन्हें चाहिये कि वे ... तफ़सीली सुधार करें और उसको क़तई ठुकरानेसे या उसकी पूरी-पूरी निन्दा करनेसे बचें। जनताकी सरकारमें, फिर वह किसी भी दलकी क्यों न हो, मुकम्मल अहिंसक असहयोगकी कोई गुंजाइश नहीं।

मदुरामें और इधर नज़दीक ही अहमदाबादमें आज जो पागलपन... भरी ख़ूँरेज़ी चल रही है, उसके लिए ज़िम्मेदार कौन है? तमा... बुरी चीज़ोंको अंग्रेज़ोंकी करतूत कहकर उनके मत्थे मढ़ना बेवकूफ़ी होगी। अगर हम इस बेमानी उसूलको पकड़े रहे, तो इससे मुल्क... परदेसी हुकूमत की, और ख़ासकर अंग्रेज़ी हुकूमतकी, जड़ हमेशा... लिए जमी रहेगी। हर हालतमें अंग्रेज़ हिन्दुस्तानसे जायँगे ही। ब्रिटि... सरकारके ऐलानसे मैं तो यह समझा हूँ कि अंग्रेज़ यहाँसे व्यवस्थि... रीतिसे जाना चाहते हैं। या वे चले जायँगे, और यह मानकर ... हिन्दुस्तानने अहिंसाके रास्तेको छोड़ दिया है, वे उसे उसकी तक़दीर... भरोसे छोड़ जायँगे। इसका एक ही नतीजा होगा कि कई सरका... हुकूमतें मिलकर हिन्दुस्तानके मामलेमें दस्तन्दाज़ी करेंगी। इसलि... विरोधियोंको चाहिये कि वे कांग्रेसजनोंको बतायें कि हिन्दुस्तानके लिए ... किस तरहकी आज़ादी चाहते हैं! सचमुच ही आम तौर पर सब कांग्रेसी ... नहीं जानते कि वे किस तरहकी आज़ादी चाहते हैं। वे तो तोतेकी तरह आज़ादीके मंत्रको रटते भर हैं। या आज़ादीका उनका ख़या... यह कहनेसे पूरी तरह ज़ाहिर हो जाता है कि उनकी आज़ादीका मतलब है, कांग्रेस-राज। और, उनका यह सोचना ग़लत ... होगा। उन्होंने आगेकी बात सोचनेका भार वर्किंग कमे... पर डाल दिया है। उनका यह तरीक़ा डिमॉक्रेसी या प्रजातंत्र... तरीक़ा तो हरगिज़ नहीं। सच्चे प्रजातंत्र या जमहूरियतमें हरए... मर्द और औरतको सब कुछ ख़ुद-ब-ख़ुद सोचनेकी तालीम दी जा... है। मैं नहीं जानता कि यह सच्चा इन्क़िलाब कैसे पैदा किया ... सकता है। लेकिन मैं यह जानता हूँ कि सख़ावत या दानकी त... हर तरहका सुधार भी घर ही से शुरू होना चाहिये।

ऐसी हालतमें अगर 'कान्स्टिटयुएण्ट एसेम्ब्ली' या विधान बना... वाली सभा फ़िस हो जाती है, तो वह इसलिए फ़िस नहीं हो... कि अंग्रेज़ हर बार बदमाशी करते हैं, बल्कि इसलिए होगी कि ह... बेवक़ूफ़ हैं, या क्या मैं कहूँ कि बदमाश भी हैं? हम चाहे बेवक़ू... हों, बदमाश हों, या दोनों हों, इतनी बात मुझे साफ़ नज़र आ... है कि हमें बाहरके ख़तरेकी उतनी फ़िकर नहीं करनी चाहिये, जि... अन्दरके ख़तरेकी। अन्दरका ख़तरा हमारी आत्माको कुरेद खाता है, जब कि बाहरका उसे चमकाता है।

बम्बई, ९-७-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

नई किताबें

	मूल्य	डाकख़र्च
ईशु ख़्रिस्त — (किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०-१-
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधरी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०-६-०	०-१-
गो-सेवा — (गांधीजी)	१-८-०	०-
एक धर्मयुद्ध — (महादेवभाई हरिभाई देसाई)	०-८-०	०-१-
हिन्दुस्तानी बालपाठावली —	०-५-०	०-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कुछ खादी-भण्डारके बारेमें'

३ जूनकी 'खादी-पत्रिका' में इस नामका एक लेख छपा है, जो कामका है। वह नीचे दिया जाता है :

"भण्डारके कामकाजमें बहुत फुर्तीसे कुछ फेरफार करनेका इरादा है। अब तक बम्बईके भण्डारोंमें बदलेमें थोड़ा सूत लेकर खादी बेचनेका सिलसिला रक्खा था। फिर भी लोग .खुद सूत कातने नहीं लगे हैं। हमें ऐसा मालूम होता है कि भण्डारमें आनेवाला ज़्यादातर सूत ख़रीदा हुआ होता है। १ ली जुलाईसे एक गुण्डी सूतमें सिर्फ़ २ रुपयेकी खादी ख़रीदी जा सकेगी, और इस वजहसे खादीकी बिक्री पहलेके मुक़ाबले बहुत कम हो जायगी। आजकल जो खादी बिकती है, उसकी कई वजहोंमें एक ख़ास वजह मिलके कपड़ेका मौजूदा कण्ट्रोल है। हमारा तजरबा है कि इस वजहसे भी मिलका कपड़ा पहननेवाले बहुतसे लोग खादी ख़रीदकर ले जाते हैं। ख़रीदारोंसे सूत लेते वक़्त हम उनसे यह लिखवाते तो हैं कि आया सूत .खुद उनका काता है, उनके घरवालोंका काता है या घरके नौकरसे कतवाया हुआ है। फिर भी हमें अफ़सोसके साथ यह कहना पड़ता है कि सिर्फ़ खादी ख़रीदनेके ख़यालसे बहुतसे गाहक इस मामलेमें 'जितनी ख़बरदारी और जवाबदारी उन्हें रखनी चाहिये, रखते नहीं हैं। खादीकी सच्ची दृष्टिके तईं ख़रीदारोंकी ऐसी लापरवाहीको निबाह लेना खादीके हितकी दृष्टिसे हमको मुनासिब नहीं मालूम होता। भण्डारमें अब दूसरे सूबोंकी खादी कम ही आयेगी। खादी स्वावलम्बनके ख़यालसे ही पैदा की जाती है। 'खादीकी बिक्री,' यह मुहावरा क़रीब-क़रीब बेमेल चीज़ है — माना जाना चाहिये। ऐसी हालतमें' हमको भण्डारके इन्तज़ाममें ज़रूरतके मुताबिक फेरफार करने पड़ते हैं। १ली जुलाईसे हम दादर और माटुंगाकी अपनी दोनों दुकानोंको बन्द कर देंगे। पिछले ३ महीनोंसे माटुंगामें सिर्फ़ कातनेकी और उससे पहलेकी क्रियाओंकी तालीम दी जाती थी, और दादर-भण्डारमें खादी बिकती थी; लेकिन अब १ली जुलाईसे ये दोनों शाखायें क़तई बन्द कर दी जायँगी। इसके अलावा, गिरगाँववाली खादी-प्रिंटिंगकी दुकानमें चरखा-संघकी तरफ़से तालीमका जो इन्तज़ाम किया गया था, संघकी ओरसे वह भी बन्द कर दिया जायगा, और वह दुकान खादी-प्रिंटिंगके ट्रस्टियोंको फिर सौंप दी जायगी। खादी-प्रिंटिंगके ट्रस्टी उसी जगह इस तालीमका काम जारी रक्खेंगे, और साथ ही वहाँ खादी-बिक्रीका भी थोड़ा इन्तज़ाम करेंगे।

"इस तरह काम कम कर देनेकी वजहसे हमें तुरन्त ही अपने १५ कारकुनोंको रुख़सत देनी पड़ी है।

"जिस दिनसे नई नीतिका अमल शुरू हुआ, उसी दिनसे पूज्य गांधीजी कहते रहे हैं कि 'भण्डारोंकी शकल बदलो'। इस ख़यालसे हमने भी कहीं बुनाईका और कहीं तालीमका इन्तज़ाम किया। मगर यह नहीं कहा जा सकता 'कि इस तरहके मोटे फेरफारोंसे भण्डारकी शकल बदली है। ऐसे फेरफार करनेके बाद हमने महसूस किया कि भण्डारमें इस तरहकी उलटा-पलटीके बाद हमारे अपने ख़यालोंमें महत्त्वका उलट-फेर होना ही चाहिये। चुनाँचे भण्डारोंमें काम करनेवालोंके लिए खादीके इम्तहान शुरू किये गये और कुछ दूसरी बातों पर भी अमल किया गया।

"लेकिन मोटे तौर पर भण्डारकी शकल बदलनेसे या कारकुनोंके लिए बनाये गये क़ानूनोंमें रद्दोबदल करनेसे यह चीज़ बनती नहीं। और जब तक यह नहीं होता, भण्डारोंका मोटा फेरफार बेकार ही माना जायगा। जिन दिनों गाहक तरह-तरहकी फैशनेबल खादी ख़रीदनेकी तबियत रखनेवाले थे, उन दिनों भण्डारकी शकल वैसी दुकानकी थी। आज भण्डार चाहता है कि खादी पहननेवालोंकी मनोवृत्ति बदले। अब भण्डार खादी-बिक्रीकी जगह बनना नहीं चाहता। अब वह लोगोंको कातनेके कामोंकी तालीम देनेकी जगह बनना चाहता है। भण्डार उम्मीद करता है कि अब वह जुलाहों और दूसरे कारीगरोंके मिलनेकी और मिलकर काम करनेकी जगह बने। हम भण्डारकी शकल बदलते रहेंगे। उसी तरह अगर बम्बईके खादी पहननेवाले लोग अपने ख़यालोंको भी बदलते रहें, तो भण्डारको एक सच्ची शकल मिले और यह माना जा सके कि वह बम्बईवालोंके मनका सच्चा अक्स बन गया है। हम उम्मीद करते हैं कि बम्बईके गाहक दोनोंके बीच ऐसा मेल बनाये रहेंगे।"

पढ़नेवाले देखेंगे कि इसमें जिस मक़सदका ज़िक्र है, उसकी कामयाबी काम करनेवालोंकी श्रद्धा (एतक़ाद) और कुशलता (हुनरमन्दी) पर मुनहसिर है।

बम्बई, ६–७–'४६
('हरिजनबन्धुसे')

मोहनदास करमचंद गांधी

नई वर्किंग कमेटीकी कामयाबी

कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीमें इस बार कुछ नये भाई-बहन आये हैं। इस नये दलकी कामयाबी जितनी काम करनेके इसके तरीक़े पर मुनहसिर है, उतनी ही पुरानोंके रुख़पर भी मुनहसिर है। अगर नया दल पुराने दलसे अलग होकर काम करेगा, तो वह अपने बापकी विरासतसे इनकार करनेवाले लड़केकी तरह ज़रूर ही नाकाम होगा। जो लोग वर्किंग कमेटीसे हट गये हैं, अगर वे अपनी जगह लेनेवालोंकी हर तरह मदद न करेंगे, तो भी नया दल नाकाम रहेगा। मौलाना साहबने उनको बड़प्पन बख़्शनेके ख़यालसे नहीं, बल्कि अपने-अपने सूबोंमें उन्होंने जो सेवायें की थीं उनकी वजहसे अपनी कमेटीमें लिया था। जब नया .खून दाख़िल करनेकी ग़रज़से या ऐसे ही किसी दूसरे मुनासिब और ज़रूरी कारणसे कोई सेवक दूसरे सेवकके लिए अपनी जगह ख़ाली करता है, तो इसका यह मतलब नहीं कि वह अपनी सेवकाईको भी छोड़ देता है। इसलिए उम्मीद की जानी चाहिये कि वर्किंग कमेटीके पुराने मेम्बर नये मेम्बरोंको अपने तजरबेसे पूरा-पूरा फ़ायदा पहुँचायेंगे।

नई कमेटीमें जो सबसे बड़ा फेरफार हुआ है वह है, उसके जनरल सेक्रेटरीका रिटायर होना। पिछले दस सालोंसे लगातार वे इस ओहदे पर काम करते रहे हैं। उनकी जगह काम करनेवालोंको, जिनके लिए यह काम बिलकुल नया है, और जो वर्किंग कमेटीके नये मेम्बर भी हैं, उनकी मददकी ज़रूरत बराबर बनी रहेगी। मैं जानता हूँ कि आचार्य कृपालानीसे उनको सब तरहकी ज़रूरी मदद मिलती रहेगी। कांग्रेसकी तवारीख़में यह पहला ही मौक़ा है कि जब एक बहनने जनरल सेक्रेटरीका ओहदा सँभाला है। और यह एक अच्छी चीज़ है। गुजरात विद्यापीठके शुरूके दिनोंमें श्रीमती मृदुला साराभाई आचार्य कृपालानीकी विद्यार्थिनी (तालिब-इल्म) रह चुकी हैं। इसलिए अपने हिस्से आये कठिन काममें उन्हें अपने आचार्यकी पूरी रहनुमाई मिलती रहेगी।

इस नये फेरफारसे जिनका मन शंकित हो उठा हो, उनसे मैं यह कहूँगा कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू .खुद ही नयों और पुरानोंके बीच एक उम्दा और मज़बूत पुल बनकर रहेंगे; और उन्हें पुराने दलके कुछ क़ाबिल-से-क़ाबिल साथियोंकी मदद रहेगी ही। इसलिए किसीको अपने मनमें यह डर नहीं रखना चाहिये कि नई कमेटी पुरानी परम्पराको छोड़कर चलेगी। एक इनसानकी तरह राजनीतिक संस्था या सियासी जमातके लिए भी .खूनका तन्दुरुस्त दौर ज़रूरी है।

पूना, १०–७–'४६
('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन शुद्ध बलिदान

अहमदाबादसे श्री हेमन्तकुमारभाई अपने एक खतमें गांधीजीको लिखते हैं :

"कलके दंगेमें श्री वसन्तराव हेगिष्टे और जनाव रजबअलीका दंगा रोकनेकी कोशिश करते हुए एक साथ एक ही जगह .खून हो गया। पहले वे दंगेको रोकनेके लिए रीचीरोड (गांधीरोड)की तरफ़ रवाना हुए। रास्तेमें उन्होंने देखा कि हिन्दुओंका एक दल किसी मुसलमानका .खून करनेके लिए उस पर टूट पड़ा है। उन्होंने हमलावर हिन्दुओंसे कहा : 'पहले हमींको मार डालो, फिर इन्हें मारना।' अपने इन दृढ़ता भरे शब्दों और ऐसे मज़बूत रुखकी वजहसे वे उस मुसलमानको बचा सके। वहाँसे वे सूबा कांग्रेस कमेटीके भद्रवाले मकान पर पहुँचे। वहाँ उन्हें मालूम हुआ कि जमालपुरमें एक हिन्दू मुहल्लेके चारों तरफ़ मुसलमानोंकी बस्ती है और वहाँके हिन्दुओंकी जान और माल खतरेमें है। इसलिए वे मुसलमानोंको समझाने चल पड़े। वहाँ दोनों पर खंजरोंसे सख्त हमले किये गये और दोनों वहीं काम आये। हिन्दू-मुसलमान दोनोंका .खून साथ ही बहा। श्री वसंतराव कोई बत्तीस सालके नौजवान थे। सन् १९३० में धरासणाके हमलेके वक़्तसे वे कांग्रेसकी लड़ाइयोंमें हमेशा शामिल होते रहे थे। वे हिन्दुस्तानी-सेवादलके एक अगुआ थे। जनाब रजबअली भी भावनगर और धन्धुकाके एक खास काम करनेवाले थे। उन्होंने भी कांग्रेसकी लड़ाइयोंमें खासा हिस्सा लिया था। वे भी हिन्दुस्तानी-सेवादलके मेम्बर थे। उनकी उमर क़रीब पचीस सालकी थी।

"इस तरह एक हिन्दू और एक मुसलमानने हाथसे हाथ मिलाकर दंगेका शुद्ध अहिंसक रीतसे सामना किया और अपनी जान .क़ुरबान करके दोनों शहीद हुए।"

गांधीजीको इन दो भाइयोंकी मौतकी खबर पहले ही मिल चुकी थी। दूसरी तारीखको पूनामें प्रार्थनाके बाद भाषण करते हुए उन्होंने अहमदाबादके दंगे पर अपना अफ़सोस ज़ाहिर किया और कहा था: "अहमदाबाद पुराना शहर है। वहाँ एक बढ़िया म्युनिसिपैलिटी काम कर रही है। उसे बनानेमें सरदार पटेलका बहुत हाथ रहा है। वहाँ सब क़ौमोंके लोग शान्ति (अमन)से रहते थे। आज वहाँके हिन्दू और मुसलमान दोनों पागल हो गये हैं। यह कितनी शर्म और अफ़सोसकी बात है कि वे एक-दूसरेको छुरियोंसे मारते हैं? अगर दोमेंसे एक भी अपना पागलपन छोड़ दे, तो सारा झगड़ा एक मिनटमें खतम हो जाय।

"तीन कार्यकर्ता — दो हिन्दू और एक मुसलमान — दंगा मिटानेके खयालसे गये और उसी कोशिशमें काम आये। मुझे उनकी मौतका दुःख नहीं होता। रुलाई नहीं आती। इसी तरह श्री गणेशशंकर विद्यार्थीने कानपुरके दंगेमें अपनी जान .क़ुरबान की थी। दोस्तोंने उनको रोका और कहा था: 'दंगेकी जगह न जाइये। वहाँ लोग पागल हो गये हैं। वे आपको मार डालेंगे।' लेकिन गणेशशंकर विद्यार्थी इस तरह डरनेवाले नहीं थे। उन्हें यक़ीन था कि उनके जानेसे दंगा ज़रूर मिटेगा। वे वहाँ पहुँचे और दंगेके जोशमें पागल बने लोगोंके हाथों मारे गये। उनकी मौतके समाचार सुनकर मुझे .खुशी ही हुई थी। यह सब मैं आपको भड़कानेके लिए नहीं कहता। मैं तो आपको यह समझाना चाहता हूँ कि आप मरनेका सबक़ सीख लें, तो सब खैर-ही-खैर है। अगर गणेशशंकर विद्यार्थी, वसन्तराव और रजबअली-जैसे कई नौजवान निकल पड़ें, तो दंगे हमेशाके लिए मिट जायँ।

"आज अहमदाबादमें पुलिस और मिलिटरीकी मददसे काम हो रहा है। लेकिन आपको समझना चाहिये कि पुलिस और मिलिटरीकी मदद लेकर हम उनके .गुलाम बनते हैं। अगर आपको सच्ची आज़ादी हासिल करनी है, तो आप उनका आसरा छोड़कर अकेले ईश्वरके भरोसे मरनेका सबक़ सीख लीजिये। इसमें सब बातें आ जाती हैं। मारकर मरना तो बहुत लोग जानते हैं। आपको बिना मारे मरना है। हिन्दुस्तानके चालीस करोड़ लोगोंमेंसे कुछ लाख लोगोंका इस तरह मर जाना कौन बड़ी बात है? अगर ऐसा हुआ, तो हिन्दुस्तानकी यह कर्मभूमि स्वर्गभूमि बन जायगी।"

पूना, ८-७-'४६
('हरिजनबन्धु'से)

प्यारेलाल

दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रह पर
कांग्रेसकी महासमितिका ठहराव

७ जुलाई, '४६को बम्बईमें कांग्रेसकी महासमिति यानी ए० आइ० सी० सी०ने दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहके बारेमें नीचे लिखा ठहराव मं.जूर किया है:

कांग्रेसकी महासमितिकी इस बैठकको यह जानकर रंज हुआ कि दक्षिण अफ्रीकाके प्रवासी हिन्दुस्तानियोंको एक बार फिर सत्याग्रहकी जन्मभूमिमें एक ऐसे क़ानूनके खिलाफ़ सत्याग्रह छेड़ना पड़ा है, जिसके मुताबिक़ उन पर रंग-भेदकी वजहसे लगी रोक उस रोकसे भी ज्यादा बुरी है, जिसके खिलाफ़ उन्होंने सन् १९०७ से १९१४ तक बहादुराना लड़ाई लड़ी थी। वहाँके मुट्ठीभर सत्याग्रहियोंने अपनी राहमें आनेवाली ज़बरदस्त मुश्किलोंके खिलाफ़ जो बहादुराना मगर असमान लड़ाई छेड़ रक्खी है, उस पर यह महासमिति उन्हें मुबारकबाद देती है।

महासमितिको यह जानकर .खुशी हुई है कि इस बहादुराना तहरीककी रहनुमाई कुछ डॉक्टर और दूसरे ऐसे भाई-बहन कर रहे हैं, जिनमें पारसी, ईसाई, मुसलमान और हिन्दू, सभी शामिल हैं।

महासमितिको यह जानकर भी .खुशी हुई कि पादरी स्कॉट-जैसे कुछ गोरे लोगोंने भी सत्याग्रहियोंका साथ दिया है। महासमितिकी यह बैठक उन चन्द गोरोंकी उस करतूतकी निन्दा करती है, जिसके ज़रिये उन्होंने 'लिंच लॉ'के नामसे बदनाम जंगली तरीक़ेका इस्तेमाल करके सत्याग्रहियोंमें दहशत भरना और उनसे उनको ज़लील करनेवाला क़ानून मनवाना चाहा है।

यहाँ यह ज़िक्र करना ज़रूरी है कि वहाँके ज्यादातर हिन्दुस्तानी दक्षिण अफ्रीकामें ही पैदा हुए हैं, और उनकी परवरिश भी वहीं हुई है। हिन्दुस्तानकी हस्ती तो सिर्फ़ उनकी कल्पनामें ही है। परदेसमें बसे इन हिन्दुस्तानियोंने यूरोपियन तौर-तरीक़ोंको अपना लिया है, और अंग्रेज़ी ज़बान उनकी अपनी ज़बान-सी बन चुकी है।

महासमितिकी इस बैठकको यह जानकर बहुत सन्तोष है कि हिन्दुस्तानी सत्याग्रही अपनी तहरीकको हर तरहकी हिंसासे दूर रखकर बिलकुल अहिंसक तरीक़ेसे, शानके साथ और मनमें किसी तरहकी कड़ुवाहट न रखते हुए चला रहे हैं। इस तरह वे न सिर्फ़ अपनी इज़्ज़तके लिए, बल्कि हिन्दुस्तानकी इज़्ज़तके लिए भी मुसीबतोंका सामना कर रहे हैं। अपनी इस बहादुराना मुखालिफ़तके ज़रिये उन्होंने दुनियाके तमाम शोषित या लुटे-खसोटे लोगोंके लिए एक बढ़िया मिसाल क़ायम कर दी है।

महासमितिकी यह बैठक दक्षिण अफ्रीकामें बसे हुए हिन्दुस्तानियोंको यक़ीन दिलाती है कि उनके इस असमान संघर्षमें हिन्दुस्तान पूरी तरह उनके साथ है, और इस बैठककी यह मज़बूत राय है कि अगर वे इस संघर्ष या जद्दोजहदमें बराबर लगे रहे, तो उनकी कोशिशें ज़रूर ही कामयाब होंगी।

यह बैठक वाइसरायसे अपील करती है कि वे इसके हक़में अपनी तमाम कोशिशोंका इस्तेमाल करें और ब्रिटिश सरकारको भी इस तहरीककी ताईद करनेके लिए तैयार करें। कमेटी हिन्दुस्तानमें बसे हुए यूरोपियनोंसे अपील करती है कि वे दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंकी गुण्डागीरीके और एशियावालोंके और रंगीन लोगोंके खिलाफ़ बनाये गये क़ानूनके विरोधमें अपनी आवाज़ उठायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसूरीका कलंक

किसी भी शौक़ीन मुसाफ़िरको किन्क्रेग (मसूरी) स्टेशन पर उतरते ही सबसे पहला दृश्य (नज़ारा) चिथड़ोंमें लिपटे, अधनंगे, मैले-कुचैले, बदबूवाले आदमियोंके गिरोहका दिखाई देता है। भूखे कुत्ते जिस तरह रोटीके टुकड़े पर झपटते हैं, उसी तरह वे मुसाफ़िरके सामान पर टूट पड़ते हैं, और पुलिसका जवान उन्हें अपने कोड़ेसे रोकनेकी कोशिश करता है। लेकिन सामान उठानेके लिए होनेवाली इस धक्का-मुक्कीमें अगर कोई 'गन्दा' कुली मुसाफ़िरसे टकरा जाता है, तो उसे लाल-पीली आँखें दिखानेके सिवा वह कुलियोंकी और किसी बात पर शायद ही ध्यान देता है। आख़िर कोई नसीबवर कुली सामान उठा लेता है, दूसरा कोई नसीबवर रिक्शावाला इस मानवी (इनसानी) बोझको उठा लेता है, और दोनोंको किसी फ़ैशनेबल होटलके सामने उतार दिया जाता है। कुछ आने या एक-दो रुपये उन मज़दूरोंकी तरफ़ फेंक दिये जाते हैं, और वह मौजी मुसाफ़िर जल्दी ही मसूरीके राग-रंगमें खो जाता है। वह कहता है: "यह सब कितना सुन्दर है! ये सिनेमाघर, नाच-गानके ये जलसे, स्केटिंग, घुड़सवारी और इन सबसे बढ़कर यह फ़ैशनेबल समाज, मौज-शौक़के सिवा जिसका दूसरा कोई मक़सद नहीं!" देखते-देखते छुट्टियाँ ख़तम हो जाती हैं, और एक रोज़ फिर वह गन्दा, फटेहाल कुली बुलाया जाता है। वह सामान उठा लेता है और वापस जानेवाला मुसाफ़िर प्यासी और आतुर आँखोंसे सेवाय और हैकमेन होटलोंकी तरफ़ देर तक देखता रहता है। लेकिन अपने सामने चलनेवाले दुख-दर्दभरे आदमियों पर वह शायद ही ख़याल करता है। वह यह कभी नहीं सोचता कि ये फटेहाल, गन्दे कुली भी उसीके जैसे आदमी हैं।

हमारे मसूरीमें रहनेके दिनोंमें गांधीजीने मुझे इन्हीं अभागे, ईश्वर द्वारा भुलाये गये, रिक्शावालों, सामान ढोनेवाले कुलियों और मज़दूरोंके घरोंकी जाँच करनेके लिए भेजा था। दिल्लीके श्री ब्रजकिशन चाँदीवाले मेरे साथ थे। रातमें जहाँ उजालेका कोई इन्तज़ाम नहीं रहता और दिनमें भी जिन पर चलनेमें घिन आती है, ऐसे गन्दे, बदबूदार, सैंकड़े रास्तोंपरसे गुज़रते हुए हम आदमियोंकी उन माँदोंमें पहुँचे, जहाँ मसूरीके मौज-शौक़में ज़रा भी ख़लल न डाल सकनेवाले फ़ालतू लोग सही-सलामत तरीक़ेसे ठूँस कर रखे जाते हैं।

घरोंकी हालत

इन मज़दूरोंके घरोंकी हालत किसीके भी मनमें उथल-पुथल मचा देनेवाली है। घरोंकी तादाद बहुत थोड़ी है। इनमें न काफ़ी हवा आती है, न काफ़ी उजाला। उनकी बनावट भी बहुत बुरी है। छठे-चौमासे ही कभी उनकी मरम्मत होती है। बरसातके दिनोंमें नीचेके कोठेकी दीवारोंसे अक्सर पानी झरता रहता है, और फ़र्श पर बाहरका पानी भर जाता है। आम तौर पर ७'×७'×८'के कमरोंमें सोलह-सोलह लोगोंको अपनी गिरस्ती, जलाऊ लकड़ी, चूल्हे और दूसरी कई चीज़ोंके साथ रहना पड़ता है। ज़ाहिर है कि इनमेंसे ज़्यादातर लोगोंको बाहर खुलेमें, पहाड़ी चट्टानोंके नीचे, दुकानोंके बरामदोंमें या फुटपाथ पर भी सोना पड़ता है। उनके पास ओढ़नेको भी पूरे कपड़े नहीं होते। हमें कहा गया कि वहाँ क़रीब १० आदमी हर साल सर्दियोंमें ठिठुर कर मर जाते हैं।

रोज़ी कमानेकी उम्मीद लेकर मसूरीमें दाख़िल होनेवाले एक मज़दूरकी जेबमें सिर्फ़ चार-छह आने होते हैं। शहरमें उसे पाँव रखनेकी भी जगह नहीं मिलती। अक्सर उसे जाड़ेमें और कभी-कभी पड़ते पानीमें पहाड़की चट्टानोंकी आड़में रात काटनी पड़ती है। अगर उसकी तक़दीरसे पहलेसे ही उसके कोई दोस्त मसूरीमें आ बसे हों, तो उसे अपना सामान रखने और खाना पकाने भरकी जगह मिल जाती है। मगर रातमें तो उसे निर्दय आसमानकी ही शरण लेनी पड़ती है। ७'×७'×८' के कमरेमें १६ जनोंका सो सकना नामुमकिन है।

पाख़ाने

पाख़ानोंकी तादाद नाकाफ़ी है, और कई जगह वे रहनेके मकानोंसे बड़ी दूर होते हैं। एक जगह तो लगभग १०० आदमियोंके लिए सिर्फ़ एक पाख़ाना है, वह भी फ्लश सिस्टमवाला नहीं, जिससे टंकीमेंसे पानी छोड़कर मैला बहाया जा सके। पाख़ानों तक जानेके रास्ते जोखिमवाले और बिना बत्तीके हैं। इसलिए रातमें वहाँ तक पहुँचना लोगोंके, ख़ासकर औरतों और बच्चोंके, लिए बहुत मुश्किल होता होगा।

पानी

घरोंसे बड़ी दूर म्युनिसिपैलिटीके कुछ नल लगे हुए हैं। उनके नीचे नहानेकी मनाई है। इन मज़दूरोंके लिए आम ग़ुसलख़ानोंका इन्तज़ाम नहीं है। इसलिए नहाने-धोनेका 'शौक़' वे कभी-कभी ही पूरा कर पाते हैं। गरमियोंमें पानीका ख़र्च घटानेके लिए म्युनिसिपैलिटीके नल दिनमें थोड़े वक़्तके लिए बन्द कर दिये जाते हैं। इससे मज़दूरों और रिक्शाकुलियोंकी बेहालीका अन्दाज़ा आसानीसे लगाया जा सकता है।

नेपालियोंके मकान

किन्क्रेगके रास्तेसे नीचेकी ओर नज़र डालने पर हमने कई कुलियोंको धूप खाते हुए देखा। कुछ बैठे हुए थे, कुछ लेटे हुए थे, और कुछ अपने कपड़ोंमेंसे या एक-दूसरेके सिरोंसे जूँ निकाल रहे थे। वे सब लगभग ३५'×१०'×११'के एक कमरेमें रहते थे, जिसके ३ हिस्से कर दिये गये थे। मुझसे कहा गया कि हरएक हिस्सेमें क़रीब ३० कुली रहते हैं। उस दो खिड़कियों और तीन दरवाज़ोंवाले एक कमरेमें कुल मिलाकर १०० कुली रहते हैं। छतमें गन्दे चिथड़ों और जलाऊ लकड़ीके गट्ठर लटक रहे थे। इससे कमरेकी खुली जगह बहुत कुछ रुक गई थी। सारा घर धुएँसे भरा हुआ था। हमारा तो वहाँ दम घुटने लगा था।

वे जो खाना खा रहे थे, वह घिनौना और अरुचिकर था। आटा अजीब-सी भोंड़ी मिलावटका दिखाई देता था, और रोटियाँ खाने लायक़ नहीं थीं। गांधीजीको हमने उसका नमूना लाकर दिखाया। उन्होंने कहा: "इसके बुरेपनका बयान नहीं किया जा सकता।" साग-सब्ज़ी उनके लिए शौक़की चीज़ है। आमतौर पर वे लोग आटे, प्याज, नमक और मसालेको घोलकर उसकी रबड़ी बना लेते हैं और पी जाते हैं। ऐसी हालतमें कब्ज़ियत और आँतोंके वायुगोला वग़ैरा दर्द उन्हें तकलीफ़ दें, तो कोई ताज्जुब नहीं। खुजली, जूँ और फेफड़ोंके दर्दकी शिकायत उनमें आमतौरसे पाई जाती है। रिक्शा खींचनेवाला कुली २ या ३ साल बाद ज़िन्दगी भरके लिए निकम्मा हो जाता है। बोझा ढोनेवाला कुली एकाध साल ज्यादा खींच ले जाता है। भारी बोझ उठानेके कारण और सामानसे बँधी हुई रस्सीको सिरपर लपेटनेकी वजहसे लम्बे अरसे तक सिरपर जो दबाव पड़ता है, उससे कुलीके चेहरे पर मूढ़ताकी छाप-सी बैठ जाती है।

मापबन्दी

वे लोग आम तौर पर भुखमरीकी शिकायत करते हैं और बद-इन्तज़ामी पर तमतमा उठते हैं। ख़ूराकके नाते वे सिर्फ़ रोटी पर ही जीते हैं। इसलिए अनाजका उनका राशन एक सेरसे घटाकर छह छटाँक कर देनेसे उन्हें बड़ा दुःख होता है। परवानेवाले मज़दूरोंका राशन आठ छटाँक नियत किया गया है। लेकिन रास्तों पर काम करनेवाले लद्दाखी मज़दूरोंको अभी तक छह छटाँक अनाज ही दिया जाता है। मुझसे कहा गया है कि इसकी वजहसे कई मज़दूर मसूरी छोड़कर चले गये हैं।

डॉक्टरी मदद

वहाँ एक सिविल अस्पताल और दो धर्मादा दवाख़ाने हैं। ये दो दवाख़ाने अच्छा काम कर रहे हैं। लेकिन मज़दूरोंकी घनी और दूर-दूर फैली हुई आबादीको देखते हुए यह मदद काफ़ी नहीं कही जा सकती। वे मुक़र्रर वक़्त पर दवाख़ानोंमें जा नहीं सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरअसल देखा जाय, तो डॉक्टरी मदद और सेहतसे ताल्लुक़ रखनेवाली जानकारी उनके घरों तक पहुँचाई जानी चाहिये ।

माली हालत

ज्यादातर मज़दूर आसपासके पहाड़ोंसे आते हैं । वहाँके लोगोंकी खेती इतनी कम फ़सल देनेवाली होती है कि कुनबेके ज्यादातर लोगोंको नौकरीकी तलाशमें बाहर निकलना पड़ता है । मसूरी पहुँचने पर उन्हें शुरूके खर्चके लिए थोड़ा क़र्ज़ लेना पड़ता है । इस तरह वे उन सूदखोर बनियोंके पंजेमें फँस जाते हैं, जो शुरूसे ही उन पर अपना क़ाबू जमा लेते हैं । ऐसे लोग जब मसूरी आवें, तो यह निहायत ज़रूरी है कि शुरूमें उन्हें म्युनिसिपैलिटी या दूसरी किसी संस्था या जमातकी तरफ़से नफ़ेका ख़याल छोड़कर पैसेकी मदद दी जाय ।

उनकी आमदनी हर महीने बदलती रहती है । कामके मौसिममें उन्हें महीनेके ६०) तक मिल जाते हैं, और कामकी कमीके दिनोंमें आमदनी २५) माहवार तक उतर आती है । उनकी औसत माहवारी आमदनी ४०) तक मानी जा सकती है, और ख़र्चेका औसत ३०) । आमतौर पर गरमीके मौसिममें वे क़रीब ५०) बचा लेते हैं । यह रक़म वे सरदियोंमें अपने लिए .ख़ूराक हासिल करनेमें और घर पर रहनेवाले परिवारके लोगोंकी मदद करनेमें खर्च करते हैं । सरदीके मौसिममें उनके परिवारवालोंको मजबूरन् कुछ महीने बेकार रहना पड़ता है । बाक़ी महीनोंमें वे लोग थोड़ी खेती करते हैं । लेकिन खेतीकी उपज इतनी कम होती है कि उसके लिए की गई मेहनत बेकार-सी हो जाती है । रिश्वतखोर पुलिस अलग उनकी इस न-कुछ-सी पूँजीमेंसे कुछ हिस्सा छीन लेती है । मेरे मसूरीमें रहते मैंने इस तरहकी कई शिकायतें सुनीं । मज़दूर-संघ-जैसी किसी संस्थाको चाहिये कि वह इस तरहकी शिकायतोंको दर्ज करके उनकी जाँच करे और इस बुराईको मिटानेकी कोशिश करे । यह भी कहा जाता है कि मसूरीसे थोड़ी खरीदी करके जब मज़दूर अपने घर लौटते हैं, तो टेहरी राजके जकाती नाके पर घूसखोर अफ़सर भी उन्हें मूँड़ लेते हैं ।

इसके अलावा, रिक्शाके मालिक रिक्शा कुलियोंसे उनकी आमदनीका ३२% ले लेते हैं । कुलियोंके लिए यह बहुत भारी पड़ता है । माल लाने-लेजानेवाली कंपनियों या रेलवेका माल ढोनेवाले कुलियोंको छोटे-छोटे अफ़सरोंको जो रिश्वत देनी पड़ती है, वह उन्हें बहुत महँगी पड़ती है ।

यह तो रिक्शा खींचनेवाले और बोझा ढोनेवाले मज़दूरोंकी बात हुई । सड़क पर काम करनेवाले लद्दाखी मज़दूरोंकी आमदनी भी क़रीब-क़रीब इतनी ही होती है, यानी वे ३०से ४० रुपये माहवार तक कमा लेते हैं । इनके अलावा, १०-१२ बरसके 'टोकरीवाले' लड़के होते हैं, जो बाज़ारमें ख़रीदी करने आये लोगोंका माल ढोते हैं । कभी-कभी उन्हें खानेभरको पैसे मिल जाते हैं । कभी उन्हें अपने बड़ोंकी कमाई पर जीना पड़ता है । झाड़ू लगानेवाले भंगियोंकी बात इनसे अलाहिदा है । म्युनिसिपैलिटीके नौकर होनेके कारण उन्हें हर माह २७) से ३१) तक निश्चित तनख्वाह मिलती है, साथ ही उन्हें कामके मुताबिक़ २७) महँगाई भत्ता भी दिया जाता है ।

कुछ सुझाव

थोड़ेमें :

(१) अपनी ज़रूरतके मुताबिक़ सरकारकी मदद लेकर भी म्युनिसिपैलिटीको इन कुलियोंके लिए ऐसे आरोग्यप्रद (सेहत बढ़ानेवाले) मकान बनवाने चाहिये, जिनमें .ग़ुसलखानों और पाखानोंका ठीक-ठीक इन्तज़ाम हो । अगर इसके लिए काफ़ी रक़म न मिले, तो मौज-शौक़के साधनों पर ज्यादा कर लगाकर यह रक़म पूरी की जानी चाहिये — मसूरीमें इसके लिए काफ़ी गुंजाइश है । परोपकारी धनी लोग भी इनके लिए साफ़-सुथरे मकान बनवा सकते हैं, और नफ़ेका ख़याल छोड़कर इनसे वाजिब भाड़ा ले सकते हैं ।

(२) मज़दूरोंको संगठित करना चाहिये और उन्हें सहकारिताकी व साफ़-सुथरी रहन-सहनकी तालीम देनी चाहिये । उनमें तकली और ऊनकी कताईका काम शुरू किया जा सकता है । खासकर रिक्शा खींचनेवाले कुलियोंको इससे बड़ा फ़ायदा होगा, जिन्हें दिनमें कई बार बड़ी देर तक बेकार बैठे रहना पड़ता है । ऊन खरीदना, सूत बुनवाना, और कपड़ा बेचना, ये सब काम सहकारी तरीक़े पर चलाने चाहिये ।

(३) मज़दूर-संघके प्रोग्राममें कामकी पाली व कामके घण्टे बाँधना और कंपनियोंके मुकादमोंके .ज़ुल्मोंसे मज़दूरोंको बचाना वग़ैरा काम शामिल किये जाने चाहिये ।

(४) रिक्शा-मालिकोंका भाड़ा चुकानेके बाद हरएक कुलीको एक घण्टा रिक्शा खींचनेके लिए जो सवा चार आने मेहनताना मिलता है, वह बहुत कम है । अगर वह दूसरे घण्टे रिक्शा खींचता है, तो उसे उस घण्टेके सिर्फ़ तीन पैसे मिलते हैं (सिंगल रिक्शा) ये दरें बढ़ाई जानी चाहिये यहाँ यह दलील पेश की जा सकती है कि रिक्शा कुलियोंकी दरें दूसरे धन्धोंकी दरोंसे कम नहीं हैं । यह सच है । लेकिन दूसरे धन्धे आदमीको दो या तीन सालमें ज़िन्दगीभरके लिए निकम्मा नहीं बना देते ।

(५) गरमीके मौसिममें जब पानीकी फ़.ज़ूलखर्चीको रोकनेके लिए नलोंको बन्द करना ज़रूरी हो जाता है, तब म्युनिसिपैलिटीकी तरफ़से जगह-जगह पानीकी सबीलोंका इन्तज़ाम किया जाना चाहिये । लेकिन सच बात तो यह है कि अगर ठीक-ठीक बन्दोबस्त किया जाय और बारिशमें .ख़ूब पानी इकट्ठा कर लिया जाय, तो मसूरीमें कभी पानीकी कमी महसूस ही न हो ।

(६) रिक्शा खड़ी रखनेकी जगहों पर आसरेका इन्तज़ाम किया जाना चाहिये और कुलियोंके मकान उनके पास ही होने चाहिये ।

(७) डॉक्टरी मददका ठीक-ठीक बन्दोबस्त किया जाना चाहिये ।

ऊपरकी बातें सिर्फ़ मिसालके तौर पर दी गई हैं । समझदार और उत्साही कार्यकर्ता विचार करके इस फ़ेहरिस्तमें दूसरी कई बातें शामिल कर सकते हैं ।

('हरिजन'से) देवप्रकाश नय्यर

गुरुदेवके दिलका दर्द

आजकल हमारा मुल्क अकालके पंजेमें फँसा है । ऐसे वक़्तमें गुरुदेवकी एक कवितासे ली गई नीचे लिखी कड़ियाँ मौज़ूँ होंगी । वे अंग्रेज़ीमें लिखी गई हैं और गुरुदेवके हाथकी लिखावटवाला असल मज़मून सौभाग्य (.ख़ुश-क़िस्मती)से श्री अमिय चक्रवर्तीके पास मौजूद है :

कालसे परेशान और घरबारसे महरूम वे,
मालिकको पुकारते हैं, हाथ ऊपर उठा करके;
जिस मुल्कमें मालिक जनम लेता है इनसानके दिलमें —
बहादुराना खिदमत और मुहब्बतकी शकलमें,
उस मुल्कमें पुकार यह कभी बेकार जा नहीं सकती ।

अपने दिलका दर्द जतानेके लिए गुरुदेवने जिनको ध्यानमें रखकर ये सतरें लिखी हैं, वे अंग्रेज़ीदाँ 'बहादुराना खिदमत और मुहब्बत'की इस पुकारको ठीकसे गुनेंगे क्या ? पूना, ३०-६-'४६

('हरिजन'से) अमृतकुँवर

विषय-सूची

			पृष्ठ
हिन्दी और उर्दूका अन्तर	...	गांधीजी	२१७
हफ़्तेवार खत	...	प्यारेलाल	२१९
सच्चा खतरा	...	गांधीजी	२२०
'कुछ खादी-भण्डारके बारेमें'	...	गांधीजी	२२१
नई वर्किंग कमेटीकी कामयाबी	...	गांधीजी	२२१
तीन शुद्ध बलिदान	...	प्यारेलाल	[illegible]
दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रह पर कांग्रेसकी महासमितिका ठहराव	...		[illegible]
मसूरीका कलंक	...	देवप्रकाश नय्यर	[illegible]
टिप्पणी — गुरुदेवके दिलका दर्द	...	अमृतकुँवर	[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहरोंमें खादी

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक : प्यारेलाल

भाग १० | अंक २४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २१ जुलाई, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

"एक गन्दी आदत"

एक बहन लिखती हैं :

"कुछ सालोंसे मैं लोगोंको जहाँ-तहाँ थूकनेका खतरा समझानेकी कोशिश कर रही हूँ। लोग हर जगह थूकते और नाक साफ़ करते हैं। इससे बेहद गन्दगी फैलती है। छोटे-छोटे लड़कों, लड़कियों और अनपढ़ोंकी तो बात ही क्या, पढ़े-लिखे भाई-बहन भी रेलवे प्लॅटफार्मों पर, रेलगाड़ीके अन्दर, ट्राम गाड़ियोंमें, दुकानोंके सामने, घरोंके सामने, आम रास्तों पर, मतलब हर जगह थूकते हैं। इस गन्दी आदतकी वजहसे हमारा मुल्क दिन-दिन ज्यादा गन्दा होता जा रहा है, और बीमारियाँ हर जगह फैल रही हैं। आम लोगों तक सफ़ाईका पैग़ाम पहुँचानेके लिए स्वयंसेवक मैदानमें क्यों नहीं आते?"

जहाँ-तहाँ थूकना एक गन्दी आदत है। इसके बारेमें मैं बहुत कह चुका हूँ। हमारे मुल्कमें ऊपरसे नीचे तक क़रीब-क़रीब सभी लोग सेहत और सफ़ाईके पहले उसूल भी नहीं जानते। जहाँ-तहाँ थूकना इसी जहालतकी निशानी है। अगर हमें बीमारियोंसे बचना है, तो अपनी यह आदत हमको छोड़नी ही होगी। इन बहनके सुझाव पर अमल किया जाना चाहिये।

पंचगनी, १४-७-'४६
('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

कस्तूरबा-स्मारक-निधि

कुछ लोगोंकी शिकायत है कि इस निधिके पैसे जितनी शीघ्रतासे खरचे जाने चाहिये, उतनी शीघ्रतासे खरचे नहीं जाते, और जिस तरह खरचे जाते हैं, उसका कुछ पता नहीं चलता। लेकिन ये दोनों इलज़ाम बेबुनियाद हैं। इसमें एक बात यह है कि अगरचे जितना धन आया है, वह सब क़रीब-क़रीब शहरोंसे ही आया है, तो भी इसका हेतु यह रहा है कि वह देहाती स्त्रियों और उनके बाल-बच्चोंके लिए, और सो भी देहातमें ही, खर्च किया जाय। इस तरह इस काम पर देहातमें जो खर्च होता है, उसका पता उन लोगोंको नहीं लग सकता, जो खर्चका हिसाब नहीं देखते। क्योंकि टीका करनेवाले सब शहरोंमें रहते हैं। देहातके लोग अखबार नहीं पढ़ते, और उन्हें इसकी पड़ी भी नहीं कि पैसा किस तरह खरचा जाता है। अगर उनके देहातमें कुछ होता है, तो वे उसे अपनी आँखों देख सकते हैं। शहरवालोंके लिए कोई काम होता है, तो उसका ढिंढोरा पीटा जाता है। अगर कोई इमारत या पुतला बनाया जाता है, तो वह जब बन रहा है, इसकी चर्चा अखबारोंमें की जाती है; और जब वह बन चुका है, तो उसे खोलनेकी रस्म धूमधामसे अदा की जाती है, ताकि सब लोगोंको पता लग जाय कि जिस कामके लिए पैसा इकट्ठा किया गया था, वह पूरा हुआ। देहातकी बहनोंके लिए गाँवोंमें जो काम चल रहा है, उसके लिए ऐसा दिखावा हो ही नहीं सकता। इसलिए जो कुछ हो रहा है, वह किनकी मारफ़त हो रहा है, इतना जानकर ही फ़िलहाल अखबार पढ़नेवालोंको सन्तुष्ट रहना पड़ेगा। जब सात लाख देहातमेंसे चन्द हज़ार देहातमें कुछ काम होगा, वहाँकी औरतें और वहाँके बच्चे तैयार होंगे, तब तो इसकी जानकारी सबको मिल ही जायगी। एक ही मिसाल लीजिये। देहाती औरतोंमें दाइयोंको तालीम देनेका काम हो रहा है। देहातमें काम करनेवाली नर्सें तैयार की जाती हैं। अगर इतनी जानकारी भी काफ़ी न हो, तो इससे ज़्यादा खबर क्या दी जा सकती है?

इस बार जब पूनामें कस्तूरबा-स्मारक-निधिकी कार्यकारिणीकी बैठक हुई, तो २१ प्रान्तोंमेंसे काफ़ी प्रान्तोंके लिए देहातमें काम करनेवालोंके वास्ते तालीमी छावनियाँ चलानेके बजट मंज़ूर किये गये। लेकिन इस तरह जो बहनें तैयार होंगी, उन्हें तो देहातमें जाना है। शहर-वालोंको तो इसका पता तभी चल सकता है, जब वहाँ इनका प्रदर्शन किया जाय। लेकिन ऐसा करनेका न इरादा है, और न ऐसा करना मुनासिब ही होगा। एक बात और है। देहातमें जो काम होनेवाला है, वह नये ढंगका और नये सिरेसे ही हो सकता है। इसलिए वह आहिस्ता-आहिस्ता ही चलेगा, जैसा कि खादीका चला और चल रहा है, और दूसरे ग्रामोद्योगोंका चलता है। देहातकी तरफ़ हमारा ध्यान ही कम गया है। आज भी कम जाता है। जब शहरियोंका मन ख़ुद देहातकी तरफ़ जायगा, तब दूसरी सूरत निकलेगी। जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक इस तरहका काम करनेवाली संस्थाकी तरफ़ न तो अखबारोंका ध्यान जायगा, और न शहरी लोग ही इसमें ज़्यादा दिलचस्पी लेंगे।

बाज़ दफ़ा ऐसा भी होता है, और होना भी चाहिये, कि ज्यों ही पैसे जमा हुए, त्यों ही उनको खर्च कर डालनेमें कोई ख़ूबी नहीं होती। मगर देख-भाल करके, आहिस्ता-आहिस्ता खर्च करनेमें ख़ूबी रहती है, जैसा कि इस निधिके मामलेमें हुआ है। देनेवाले हज़ार, दो हज़ार या दस-बीस हज़ार हो सकते हैं, लेकिन खर्च करनेका क्षेत्र लम्बाईमें उन्नीस सौ मील है, और उसका फैलाव भी चालीस करोड़में करना है। वहाँ काम किस तरह करना, कहाँ करना, इसे सोचनेमें थोड़ा समय जाना चाहिये था। काम करनेवालोंको ढूँढ़नेके लिए भी समय चाहिये था। और अब उनके मिल जानेके बाद उन्हें तैयार करनेमें वक़्त जा रहा है। इसलिए जिन्होंने पैसे दिये हैं, उन्हें विश्वास रखना चाहिये कि जो लोग ट्रस्टी बने हैं, वे निकम्मा खर्च नहीं करेंगे और आलसी बनकर ज़रूरी खर्च रोकेंगे भी नहीं।

जबसे काम करनेवाली कमेटियाँ शुरू हुईं, तभीसे शिकायत आ रही है कि जिन्होंने दान दिया, उन्हींमेंसे कमेटियाँ नहीं बनाई गईं; और जहाँ कमेटियोंमें दानियोंको लिया गया है, वहाँ उनकी तादाद बहुत कम है। सच तो यह है कि जो दान देते हैं, वे हमेशा ही यह नहीं जानते कि उनका दिया दान किस तरह और किस काममें खर्च होता है। मसलन्, फ़र्ज़ कीजिये कि कई दानियोंने मिलकर दस करोड़ रुपये एक बड़ा तालाब बनवानेके लिए दिये। इसके बाद वे इस बारेमें क्या कर सकते हैं? उनका दिया रुपया तो उन लोगोंके हाथमें ही जायगा, जो तालाब बनानेका ज्ञान रखते हैं। ऐसे लोग ही एक कमेटी बनायँगे और खर्च भी करेंगे। ऐसे बहुत उदाहरण दिये जा सकते हैं। ट्रस्टियोंने जो कमेटियाँ बनाईं, वे शुरूमें इसी तरह बनीं। आगे अनुभवसे यह भी देखा गया कि जितना काम औरतोंकी मारफ़त हो सकता है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतना उन्हींसे करवाना चाहिये, और सो भी उनकी कमेटियाँ बनाकर नहीं, बल्कि एजण्टोंकी मारफ़त। ऐसा करनेसे ही औरतोंको तालीम मिलेगी और सारी संस्था औरतोंके हाथमें चली जायगी। इस तरह ज़िम्मेवारीका काम उनके हाथमें पहुँचेगा। इसकी कोशिश हो रही है। उसमें देर तो लगने ही वाली थी और अब भी लगेगी। मुश्किलें काफ़ी हैं, लेकिन उम्मीद की जाती है कि आखिर काम बढ़ जायगा, और औरतें भी तैयार हो जायँगी। नतीजा अनुभवसे ही देखा जायगा।

पंचगनी, १४–७–'४६ **मोहनदास करमचंद गांधी**

कांग्रेसकी महासमितिमें गांधीजीका भाषण

७ जुलाई, १९४६के दिन बम्बईमें कांग्रेस-महासमितिकी बैठकमें गांधीजीने नीचे लिखा भाषण किया था:

"मैंने अक्सर कहा है कि आदमी तजवीज़ें बनाता है, लेकिन अपनी तजवीज़ोंको पूरा करना उसके हाथमें नहीं, बल्कि उस सरजनहारके हाथमें है, जो हमारी सबकी तक़दीरका फ़ैसला करनेवाली सबसे बड़ी हस्ती है। आप लोगोंकी तरह यहाँ मैं अपने हक़से नहीं, बल्कि इसलिए आया हूँ कि आप सब मुझे निबाह लेते हैं। मुझसे कहा गया है कि ब्रिटिश सरकारके कैबिनेट मिशनकी तरफ़से पेश की गई दरख्वास्तोंके बारेमें मैं पहले जो कुछ कह चुका हूँ, उससे आम लोगोंके दिलमें काफ़ी उलझन पैदा हो गई है। सत्याग्रहीकी हैसियतसे मेरी कोशिश हमेशा सचाईको उसकी असल शकलमें, ज्यों-की त्यों, बयान करनेकी रहती है। सचाईके सिवा और कुछ कहनेकी मुझे मुतलक़ इच्छा नहीं होती। आप लोगोंसे कुछ भी छिपानेकी ख़ाहिश मेरे मनमें कभी पैदा नहीं होती। दिल चुराकर बात करनेसे मुझे सख्त नफ़रत है। मगर अच्छी-से-अच्छी कोशिश करने पर भी आख़िर भाषा या ज़बान एक ऐसा नाकाफ़ी ज़रिया है, जिसकी मददसे दिलकी सब बात पूरी तरह कही नहीं जा सकती। कोई भी आदमी अपने खयालोंको या अपने दिलकी बातको पूरी तरह अपनी ज़बानसे ज़ाहिर नहीं कर सकता। हम जानते हैं कि पुराने ज़मानेके ऋषि-मुनियों और पैग़म्बरोंके सामने भी यही दिक़्क़त थी।

बेमेल नहीं

"ब्रिटिश कैबिनेट मिशनकी दरख्वास्तोंके बारेमें जो कुछ मैंने कहा माना जाता है, उसके सिलसिलेमें अखबारोंमें क्या-क्या छपा है, सो मैं पढ़ नहीं पाया हूँ। मैं सभी अखबार पढ़ नहीं सकता। मेरे साथी और मददगार जो कुछ मेरे सामने रख देते हैं, उतना ही देखकर मैं सन्तोष कर लेता हूँ। और, मैं मानता हूँ कि इससे मेरा कोई नुक़सान नहीं हुआ। अखबारोंमें जो बातें छपी हैं, शायद आम लोगों पर उनका असर यह हुआ है कि दिल्लीमें मैंने एक बात कही थी, और अब कुछ और ही कह रहा हूँ। ब्रिटिश कैबिनेट मिशनकी दरख्वास्तोंके बारेमें दिल्लीकी अपनी एक तक़रीरमें मैंने कहा था कि जहाँ पहले मुझे उजेला दिखाई पड़ता था, वहाँ अब अँधेरा नज़र आता है। और यह सच है। वह अँधेरा अब भी दूर नहीं हुआ है, बल्कि अगर हो सकता है, तो ज़्यादा गहरा हो गया है। अगर मुझे अपना रास्ता साफ़ दिखाई पड़ता, तो मैं ज़रूर ही वर्किंग कमेटीसे कहता कि वह विधान बनानेवाली सभाकी दरखास्तको नामंज़ूर कर दे। आप सब जानते हैं कि वर्किंग कमेटीके मेम्बरोंके साथ मेरे ताल्लुक़ात कैसे हैं। बाबू राजेन्द्रप्रसाद हाईकोर्टके जज बन सकते थे, मगर उन्होंने उसके बदले चम्पारनमें मेरे दुभाषियेका और मुहर्रिरका काम करना पसन्द किया। दूसरे सरदार पटेल हैं। लोग कहते हैं कि वे मेरी हाँ-में-हाँ मिलानेवालोंमें हैं। मगर उन्हें इसकी परवाह नहीं। वे .खुद तो इसे अपनी तारीफ़ समझकर जहाँ-तहाँ इसका ज़िक्र करते रहते हैं। कुछ लोग हैं, जो उन्हें तूफ़ानी आदमी समझते हैं। एक ज़माना था, जब वे पच्छिमी ढबकी पोशाक पहनते थे और उसी ढबसे खाते-पीते थे। लेकिन जबसे उन्होंने अपनी तक़दीरको मेरी तक़दीरके साथ मिलानेका फ़ैसला किया है, तबसे मेरी बात उनके लिए क़ानून बन गई है। मगर इस मामलेमें हम एकराय नहीं हो पाये हैं। राजेन्द्रबाबू और सरदार दोनों मुझसे कहते हैं कि आजसे पहले जब-जब ऐसे मौक़े आये, 'आपने अपनी स्वयंस्फूर्तिको दलीलोंसे पुख्ता करके हमारे दिल और दिमाग़ दोनोंको सन्तुष्ट किया है। मगर इस बार आप ऐसा नहीं कर पाये।' इसके जवाबमें मैंने उनसे कहा कि मेरा अपना मन शक्की बन गया है, और उसके लिए मैं कोई वजह नहीं दे सकता हूँ। अगर दे सका होता, तब तो इन दरख्वास्तोंको कतई नामंज़ूर कर देनेकी बात मैंने साफ़ लफ़्ज़ोंमें उनसे कही होती। मेरा फ़र्ज़ था कि उनको चौकन्ना बनानेके लिए मैं अपने दिलके उठा शक उन पर ज़ाहिर कर दूँ। लेकिन साथ ही मैंने उनसे यह भी कहा था कि वे मेरी बातको ठण्डे दिलसे, बुद्धिकी कसौटी पर कसकर देखें और अगर मेरी दृष्टि उनकी बुद्धिको पटे, तो वे उसे मंज़ूर करें। लम्बे सोच-विचारके बाद वर्किंग कमेटीने लगभग एकमत होकर जो फ़ैसला किया है, वह आपके सामने है। वर्किंग कमेटीके मेम्बर आपके वफ़ादार और परखे हुए सेवक हैं। आपको उनकी ओरसे पेश किये गये ठहरावको यों ही, बिना सोचे-समझे, नामंज़ूर न करना चाहिये।

हारे दिलकी दलीलें

"मैं यह माननेको तैयार हूँ कि विधान बनानेके लिए जिस 'कॉन्स्टिटयुएण्ट एसेम्बली'की तजवीज़ पेश हुई है, वह आम लोगोंकी हुकूमतवाली पार्लमेण्ट नहीं है। उसमें बहुत-सी ख़ामियाँ हैं। लेकिन आप सब तजरबेकार और पुराने व परखे लड़वैया हैं। लड़नेवाला सिपाही खतरोंसे कभी नहीं डरता, बल्कि वह तो खतरेको सामने देखकर .खुश होता है। तजवीज़शुदा विधान-सभामें अगर कुछ खामियाँ हैं, तो उन्हें दूर करानेका काम आप लोगोंका है। उसकी खामियाँ हमें उनसे लड़ लेनेके लिए ललकारनेवाली होनी चाहिये। यह नहीं कि उन खामियोंके खयालसे हम समूची दरख्वास्तोंको ही ठुकरा दें। कल भाई जयप्रकाश नारायणने कहा था कि तजवीज़शुदा विधान-सभामें शरीक होने या उसमें हिस्सा लेनेमें खतरा है। इसलिए मेम्बरोंको चाहिये कि वे वर्किंग कमेटीके ठहरावको नामंज़ूर कर दें। उनकी यह बात सुनकर मुझे ताज्जुब हुआ। जयप्रकाश जैसे कसे और परखे हुए लड़वैयासे इस तरहकी हारी-थकी बात सुननेके लिए मैं तैयार न था। मरहूम रामभजदत्त चौधरीके लिखे एक पंजाबी गीतकी इस कड़ीने मेरे दिल पर हमेशा बहुत असर किया है: 'कदी नहीं हारना, भावे साड़ी जान जावे।' मैं आप लोगोंसे यह उम्मीद रखता हूँ कि आप इस स्पिरिटमें इस ठहराव पर ग़ौर करेंगे। सत्याग्रही हार नामकी कोई चीज़ जानता ही नहीं।

"एक दूसरी चीज़ मैं आपसे यह चाहूँगा कि एक सत्याग्रहीके नाते आप यह कभी न कहें कि अंग्रेज़ जो कुछ करते हैं, सो सब बुरा ही होता है। यह ज़रूरी नहीं कि सब अंग्रेज़ बुरे ही हों। दूसरोंकी तरह अंग्रेज़ोंमें भी अच्छे और बुरे दोनों तरहके लोग पाये जाते हैं। .खुद हम भी खामियों या कमज़ोरियोंसे बरी नहीं। अगर अंग्रेज़ोंमें कोई भी अच्छाई न होती, तो आज ऊँचे दरजेकी जो ताक़त उन्हें हासिल है, उस तक वे पहुँचे ही न होते। उन्होंने यहाँ आकर हिन्दुस्तानको लूटा-खसोटा, क्योंकि हम आपसमें लड़ते-झगड़ते थे और हमने .खुद ही अपनेको लुटवाया और चुसवाया। ईश्वरके राजमें बुराई कभी टिकती नहीं। जहाँ .खुद शैतानकी हुकूमत चलती नज़र आती है, वहाँ भी राज्य तो ईश्वरका ही होता है। क्योंकि बेचारा शैतान भी तभी तक निभता है, जब तक ईश्वर या .खुदा उसे निभाता है। कुछ लोग कहते हैं कि जिसमें थोड़ी भी नैतिकता या इखलाक़ी माद्दा नहीं, उसके खिलाफ़ सत्याग्रह करना बेकार है; क्योंकि उस पर उसका कोई असर न होगा। मैं इसे माननेको तैयार नहीं। अगर हम सच्चे हैं और हममें काफ़ी सब्र या धीरज है, तो हमें संग दिल भी पिघले बिना रह नहीं सकता। सत्याग्रही अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे देगा, लेकिन अपने माथे लिये कामको कभी न छोड़ेगा। 'करेंगे या मरेंगे'का यही मतलब है। इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि 'मारो, वरना मर जाओगे।' यह तो इसके सच्चे मतलबका जानबूझ-कर तोड़ा-मरोड़ा हुआ और हँसी लानेवाला उलटा अर्थ होगा। इसका सच्चा मतलब तो यह है कि हमें अपना फ़र्ज़ अच्छी तरह अदा करना चाहिये और अगर ज़रूरत पड़े, तो उसके लिए मर मिटना चाहिये। बिना मारे मरना, सत्याग्रहीका मंत्र है। अगर हमने इस मंत्र पर पूरा-पूरा अमल किया होता, तो आज स्वराज हमारे हाथमें होता। लेकिन हमारी अहिंसा लँगड़ी थी। वह बैसाखीका सहारा लेकर अपना काम कर रही थी। फिर भी उसके सहारे हम अपनी मौजूदा ताक़तको हासिल कर सके हैं। सन् १९४२में जो कुछ हुआ, सो मैं जानता हूँ। शायद आप कहेंगे कि तोड़-फोड़के और लुक-छिपकर किये गये कामोंकी बदौलत ही मुल्ककी ताक़त आज इतनी बढ़ सकी है। इस बातसे इनकार नहीं किया जा सकता है कि सन् १९४२की लड़ाईमें कॉंग्रेसके नाम पर तोड़-फोड़का काम किया गया था। लेकिन मैं इसे माननेको तैयार नहीं कि इसकी वजहसे आम रिआयाकी ताक़त बढ़ी है। अहिंसाका अमल कितना ही अधकच्चरा और ख़ामियोंवाला क्यों न रहा हो, फिर भी आज आम लोगोंमें जो भी ताक़त नज़र आती है, वह सब अहिंसाकी ही बदौलत है। हमारी अहिंसा अपूर्ण थी, क्योंकि हम सब अपूर्ण थे, और मेरे-जैसे अपूर्ण आदमीने यह अहिंसा आपके सामने पेश की थी। अगर अधकचरे लोगोंके हाथमें पड़ने पर भी अहिंसाके इतने उजले नतीजे निकले हैं, तो संपूर्ण सत्याग्रहीके हाथमें पड़कर वह क्या न कर दिखायेगी?

"सन् १९४२में हमारे लोगोंने बहुत बहादुरी दिखाई, लेकिन अपने मक़सद तक पहुँचनेसे पहले अभी हमको कहीं ज़्यादा बहादुरी दिखानी होगी। हमने बहुत कुछ किया है, मगर अभी बहुत करना बाक़ी है। इसके लिए हमें अपने अन्दर शान्ति या खामोशी, नम्रता और अनासक्ति यानी बेलाग रहकर काम करनेकी ताक़त बढ़ानी होगी। साथ ही, आपको यह समझनेकी कोशिश करनी होगी कि सन् १९४२में क्या हुआ, उस लड़ाईका असली मरम क्या था और जहाँ जाकर वह अधबीचमें रुक गई, वहाँ क्यों और किस लिए रुकी?

फूलोंकी सेज नहीं

"यह वक़्त आराम करने या मौज-शौक़में दिन गुज़ारनेका वक़्त नहीं। मैंने पंडित जवाहरलाल नेहरूसे कहा कि वे राष्ट्र या क़ौमकी ख़ातिर काँटोंका ताज पहनें, और उन्होंने मेरी बात क़बूल की। विधान बनानेवाली सभा आप सब लोगोंके लिए फूलोंकी नहीं, बल्कि निरे काँटोंकी सेज साबित होनेवाली है। लेकिन आप उसकी ज़िम्मेदारीसे छटक नहीं सकते।

"मगर इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि आपमेंसे हरएकको वहाँ जाना ही चाहिये। वहाँ तो सिर्फ़ उन्हीं लोगोंको जाना चाहिये, जो अपनी क़ानूनी तालीमकी वजहसे या दूसरी किसी ख़ास लियाक़तकी वजहसे वहाँ जाने और सभाका काम करनेकी क़ाबलीयत रखते हों। अपनी क़ुरबानियोंके बदलेमें मिलनेवाले इनामके ख़यालसे किसीको विधान-सभामें नहीं ज़ाना चाहिये। वहाँ तो धर्म समझकर इस तरीक़ेसे जाना चाहिये, मानो फाँसी पर लटकना हो, या सेवाके यज्ञमें अपना सब कुछ होम देना हो।

"इसके अलावा, आप लोगोंके विधान बनानेवाली सभामें जानेकी एक और भी वजह है। अगर आप मुझसे यह पूछें कि विधान बनानेवाली सभामें शामिल होनेकी दरख़ास्तको आप लोग नामंज़ूर कर दें, और वह सभा बन ही न पाये, तो क्या उस हालतमें मैं लोगोंको अकेले या मिलकर सत्याग्रहकी लड़ाई शुरू करनेकी सलाह दूँगा? या क्या मैं ख़ुद उपवास शुरू करूँगा? आपके इस सवालका जवाब मेरे पास एक ही है: 'नहीं,— मैं ऐसा कुछ न करूँगा'। मैं उन लोगोंमें हूँ, जो अकेले चलनेमें मानते हैं। इस दुनियामें मैं अकेला आया हूँ। दुःखके सागर-जैसे इस संसारमें मैं अकेला तैरा हूँ। और वक़्त आने पर मैं यहाँसे अकेला ही चल दूँगा। मैं यह भी जानता हूँ कि बिलकुल अकेला होने पर भी मैं सत्याग्रहकी लड़ाई शुरू करनेमें पीछे न हटूँगा। पहले मैं ऐसा कर चुका हूँ। लेकिन यह वक़्त न तो सत्याग्रहकी लड़ाई छेड़नेका है और न उपवास शुरू करनेका। विधान बनानेवाली सभाके कामको मैं सत्याग्रहका एवज़ी काम समझता हूँ। वह रचनात्मक या तामीरी सत्याग्रह है।

सत्याग्रहीका फ़र्ज़

"इसका दूसरा एवज़ रचनात्मक काम है। लेकिन उसको आप लोगोंने कभी ठीकसे आज़माया नहीं। अगर आपने रचनात्मक कार्यक्रम पर पूरी तरह अमल किया होता, तो तजवीज़शुदा विधान-सभाके बदले आपको आज ही वह विधान-सभा मिली होती, जो भाई जयप्रकाश चाहते हैं। लेकिन सत्याग्रही पूरे-पूरे मुसीबतवाली हालतोंकी राह देखता खड़ा नहीं रह सकता, और न ही वह काम शुरू करनेमें ढिलाई कर सकता है। उसे तो जो साधन मिल जायँ, उन्हींसे अपना काम शुरू कर देना चाहिये। और इन साधनोंमें पाई जानेवाली ख़राबीको दूर करके उन्हें सब तरह अपने कामका यानी मुकम्मल बना लेना चाहिये। १६ मईके दिन सरकारकी तरफ़से जिस तजवीज़का ऐलान किया गया था, उसमें दूसरी कई ख़ामियाँ हो सकती हैं, लेकिन उसे पेश करवानेवालोंकी ईमानदारीके बारेमें मुझे जरा भी शक नहीं। वे इस बातको अच्छी तरह समझ गये हैं कि अब उनके लिए हिन्दुस्तान छोड़े बिना छुटकारा नहीं। उन्हें यहाँसे बातरतीब चले जाना है। यही वजह है कि मौजूदा हालतमें जिस तरहकी दरख़ास्तें तैयार की जा सकती हैं, वैसी उन्होंने की हैं। ठेठ इंग्लैण्डसे यहाँ तक वे हमें धोखा देनेके लिए ही आये थे, इस चीज़को माननेसे मैं क़तई इनकार करता हूँ।

"आज ही एक पोलिश बहनने मुझे एक ख़त दिया है। उसमें वे लिखती हैं कि यहाँके सभी यूरोपियनोंको छिपे तौर पर यह इत्तला दी गई है कि वे हिन्दुस्तान छोड़कर चले जायँ। वजह इसकी यह बताई गई है कि अब ब्रिटिश फ़ौजें यहाँ उनकी हिफ़ाज़त नहीं कर सकेंगी। अगर यह बात सच हो, तो यह हमें ग़मग़ीन बनानेवाली बात है। अगर एक अंग्रेज़ बच्चा भी अपनेको हमारे बीच सही-सलामत न समझे, तो हम सत्याग्रही कहलाने लायक़ न रह जायँ। मुमकिन है कि ऐसे तरीक़ोंसे हम यूरोपियनोंको यहाँसे खदेड़ देनेमें कामयाब हों, मगर डर है कि कहीं उनकी जगह उनसे भी ज़्यादा बुरा कोई यहाँ आ न डटे। हमारे 'हिन्दुस्तान छोड़ो' ठहरावमें डाह या दुश्मनी-जैसी कोई चीज़ नहीं। उसका मतलब तो यही है कि अब हम किसीको अपना शोषण करने देना नहीं चाहते।

"हम डरपोक न बनें। हम अपना काम विश्वास और हिम्मतके साथ करें। इस डरसे कि कोई हमें ठग लेगा, हम दब न जायँ, नाउम्मीद न हो जायँ। सत्याग्रहीको कोई ठग नहीं सकता। मेरे सामने जो अँधेरा छाया हुआ है, उसकी आप फ़िकर न करें। ईश्वर उसे उजेलेमें बदल डालेगा।"

('हरिजन' से)

भूल-सुधार

१४ जुलाईके 'हरिजनसेवक'के २२०वें सफ़े पर छपे 'सच्चा ख़तरा' नामक लेखके दूसरे पैरेके आख़िरी वाक्यमें 'लोग'के पहले **मुख़ालिफ़** जोड़ कर पढ़ें।

उसी लेखके दूसरे कॉलमके दूसरे पैरेकी चौथी सतरमें 'अगर हम . . .'से शुरू होनेवाले वाक्यको इस तरह सुधार लें: '**अगर हम इस बेमानी उसूलको पकड़े रहे, तो इससे मुल्कमें अंग्रेज़ी हुकूमतकी नहीं, तो किसी परदेशी हुकूमतकी जड़ हमेशाके लिए जमी रहेगी।**' सं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२१ जुलाई १९४६

शहरोंमें खादी

"कपड़ेके मामलेमें हिन्दुस्तानके देहातको अपनी ज़रूरतें .खुद पूरी करनेवाला बनानेकी आपकी योजना या स्कीमने शहरों और क़स्बोंमें रहनेवाले खादी-प्रेमियोंको बड़ी मुसीबतमें डाल दिया है। आप तो यहाँ तक कह गये हैं कि खादीके बिक्री-भण्डार बन्द किये जा सकते हैं, और शहरवाले चाहें तो वे फिरसे मिलके कपड़े पहनना शुरू कर सकते हैं।

"खादीके बारेमें इधर जिस नये ढंगसे सोचा जाने लगा है और उसकी वजहसे खद्दर-भण्डारोंको चलानेके तरीक़ोंमें जो बुनियादी फेरफार करना ज़रूरी हो गया है, उससे किसीको कोई शिकायत नहीं। और, न खादी खरीदनेके लिए जो थोड़ा सूत देनेका रिवाज चलाया गया है, उसके खिलाफ़ ही कोई शिकायत है। फिर भी मैं चाहूँगा कि आप शहरोंके उन खरीदारोंकी दिक़्क़तको हल करेंगे, जिन्हें हर हालतमें खादी ही पहननी है।"

खादीकी जो नई योजना कही जाती है, मैं चाहता हूँ कि पाठक उसे पूरी तरह समझ लें। मैं उसे 'कही जाती है' इसलिए कहता हूँ कि जो कुछ आज किया जा रहा है, वह तो एक लाज़िमी चीज़ है, बशर्ते कि खादीको मुल्कके सभी देहातियोंके तन ढँकने हों। और खादीके बारेमें यह इरादा तो शुरूसे ही रक्खा गया है। खादी सिर्फ़ शहरों या क़स्बोंमें रहनेवालोंके लिए पैदा नहीं की जाती थी। खादीके ज़रिये गाँववालोंको चूसनेका कोई इरादा नहीं था, जैसा कि आज हो रहा है, — यानी शहरवालोंको ज़िन्दा रखनेके लिए गाँववालोंका .खून चूसा जा रहा है। शुरूसे ही खादीके पीछे यह खयाल रहा है कि वह इस चक्करको उलट दे, गोकि यह कभी सोचा नहीं गया कि उसके ज़रिये शहरवालोंको चूसा जाय। आज जो चक्कर चल रहा है, उसको उलटानेके पीछे खयाल यह था कि समाजमें लोगोंके बीच .क़ुदरती रिश्ता फिर क़ायम हो जाय। मुल्कमें अंग्रेज़ोंके आनेसे पहले भी शहर और क़स्बे मौजूद थे। उस वक़्त हालत काफ़ी खराब थी। अब तो वह बहुत ही खराब हो गई है। छोटे-छोटे शहर जंगी शहर बन गये हैं। ये जंगी शहर खासकर अपने अंग्रेज़ मालिकोंके लिए ही जीने लगे हैं, गोकि इनमें कई करोड़पति हिन्दुस्तानी भी रहते हैं। खादी इस गंभीर बुराईको मिटाना चाहती थी। मिलका कपड़ा देहाती हिन्दुस्तानकी .गुलामीकी निशानी है, जब कि खादी उसकी आर्थिक या इक़्तिसादी और राजनीतिक या सियासी आज़ादीकी निशानी है या होनी चाहिये। अगर खादीसे यह चीज़ पैदा नहीं होती, तो वह निकम्मी चीज़ बन जाती है। इसलिए खादीके विकासके सिलसिलेमें जो भी तन्दुरुस्त हेरफेर किया जाय, वह अच्छा (स्वागत योग्य) माना जाना चाहिये।

अब तक खादीकी जो तरक़्क़ी हुई है, अगरचे वह दीखनेमें अच्छी दीखती थी, फिर भी वह उन देहातियोंके लिए काफ़ी अच्छी चीज़ नहीं थी, जो सूत कातते और खादी बुनते तो थे, मगर .खुद उसका इस्तेमाल नहीं करते थे। यह उसकी एक खामी थी। देहाती कत्तिनें और जुलाहे खादीके इस्तेमालकी अहमियतको और उसकी शानको न तो समझ पाये, और न उसकी दाद दे पाये। इसमें क़सूर उनका नहीं था। खादीका काम करनेवाले सेवक .खुद ही इन बातोंको नहीं समझते थे। शहरवालोंको खादी पहननी पड़ती थी और प्रायश्चित्त करना पड़ता था। वे अपने जेबसे चन्द रुपये ज़्यादा खर्च करके इस तरहका प्रायश्चित्त खरीदनेको तैयार थे, क्योंकि वे इतने रुपये आसानीसे बचा सकते थे और बदलेमें देशभक्त कहलाते थे। लेकिन चरखा-संघ खादीकी असल बुनियादको भुलाकर अपने विश्वासको क्यों कर झुठला सकता था? यही वजह है कि आज वह अपनी ताक़त गाँववालोंको खादी पहनानेमें खर्च कर रहा है। .क़ुदरती तौर पर अभी इसकी शुरुआत उन कत्तिनों और जुलाहोंसे हुई है, जो हाथसे सूत कातते और बुनते हैं। अगर यह कोशिश कामयाब हुई, और होगी ही, तो थोड़े वक़्तके बाद शहरों और क़स्बोंके बाज़ारोंमें कहीं खादी मिलने लगेगी। उस हालतमें हिन्दुस्तानमें एक ही क़िस्मका कपड़ा मिलेगा, और वह खद्दर होगा। चरखा-संघ इस हालतको पैदा करनेके लिए पूरी तनदेहीके साथ काम कर रहा है। अगर उसकी खोजोंसे यह मालूम हुआ कि खादीमें ऐसी कोई ताक़त नहीं है, तो उसे अपनी लाचारीका या दिवालियेपनका ऐलान करनेमें कोई हिचकिचाहट न होगी। पाठक याद रक्खें कि यह एक ऐसी साधना है, जिसे मशीनोंके इस ज़मानेमें चालीस करोड़ लोगोंके मनसे काम लेना है। इस तरह सोचने पर यह एक बहुत ही बड़ा सवाल बन जाता है, मगर साथ ही यह दिलचस्प और लुभानेवाला भी है। अगर इसमें नाकामी हुई ही, तो वह नाकामी भी असलमें नाकामी न होगी। इससे कोई यह न समझे कि इन सब कोशिशोंका मन्शा मुल्कको वापस उस अँधेरे ज़मानेकी तरफ़ ले जानेका है, जिसमें चरखा आम लोगोंकी .गुलामीकी निशानी बना हुआ था। जब हिन्दुस्तान चरखेके ज़रिये अपनी .गुलामीकी जंज़ीरोंको तोड़ फेंकनेकी कोशिश करेगा, तो सचमुच ही वह इनसानकी समझदारीकी, यानी हिन्दुस्तानकी रूह या आत्माकी, जीत होगी। आज़ाद आदमी भी वही रोटी खाता है, जो एक .गुलाम आदमी खाता है। मगर एक आज़ादीकी रोटी खाता है, जब कि दूसरा .गुलामीकी।

लेकिन अगर शहरों और क़स्बोंके लोग चरखेके शुभ सन्देश या नेक पैग़ामको सुनें, उस पर ध्यान दें, तो वे घुड़दौड़के मैदानोंमें जुआ खेलने या क्लबोंमें शराब पीने और आलसमें अपना वक़्त बरबाद करनेके बजाय अपनी .फ़ुरसतके वक़्तका इस्तेमाल पींजने, कातने और बुननेमें करें। और उनके बच्चे? हाँ, वे चाहें तो अपने माँ-बापके लिए और हिन्दुस्तानकी आज़ादीके लिए कात सकते हैं, और हिन्दुस्तानको जैसी तालीमकी ज़रूरत है, वैसी तालीम हासिल कर सकते हैं। जब मैं रोममें था, तो वहाँके छोटे-छोटे बच्चोंके नाव चलानेके सिफ़तभरे दाव-पेंच दिखानेमें मुसोलिनीके अफ़सर गर्व या फ़ख्र अनुभव करते थे। उनको नौ-विद्याकी सब सीधी-टेढ़ी तरकीबें सिखाई जाती थीं। उधर अंग्रेज़ बच्चे इंग्लैण्डमें जिन चीज़ोंकी ज़रूरत है, उन्हें अपनी मादरी ज़बानमें सीखनेके अलावा और क्या करते हैं? अपने बच्चोंको दूसरोंकी ज़बानमें तालीम देनेका काम तो हिन्दुस्तानके लिए ही मह.फ़ूज़ रक्खा गया है। और परदेसी ज़बानके ज़रिये यहाँ वालोंको वही सब सिखाया जाता है, जिसकी परदेसियोंको ज़रूरत होती है। हमारी तालीमका क़ानून भी तो परदेसियोंने ही बनाया है न?

चरखा-संघके खद्दर-भण्डारोंका इस्तेमाल अब पहलेसे ज़्यादा अच्छे कामके लिए किया जायगा। वे लोगोंको कातने और बुननेकी तरह-तरहकी तरकीबें सिखायेंगे। मुझे उम्मीद है कि दल-के-दल लोग इन कामोंको सीखनेके लिए खद्दर-भण्डारोंमें जायँगे। अगर उन्होंने ऐसा किया, तो उन्हें अपनी ज़रूरतकी तमाम खादी मिल जायगी। जहाँ चाह होती है, वहाँ राह निकल ही आती है।

एक बात और। पाठक यह भी समझ लें कि आज मिलके कपड़ेकी तरह खादीकी भी तंगी है। इसके कारणोंकी चर्चा मैं यहाँ नहीं करूँगा।

पंचगनी, १४-७-'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहूदी और फिलिस्तीन

यहूदियों और अरबोंके झगड़ेके बारेमें म आज तक खामोश रहा हूँ। इसकी अपनी वजह थी। इसका यह मतलब हरगिज़ नहीं कि मुझे इस मसलेमें कोई दिलचस्पी न थी। मगर यह सच है कि इसके बारेमें मेरी जानकारी इतनी नहीं है कि मैं इस पर कुछ कह सकूँ। इसी वजहसे मैंने दुनियाके और भी कई मसलों पर अपनी राय न देना ही पसन्द किया है। मेरे पास दूसरे बहुत-से काम पड़े हैं। जिन मसलोंके बारेमें मेरा ज्ञान अधूरा है, उन पर अपनी राय ज़ाहिर करनेसे फ़ायदा क्या? मगर अखबारोंमें छपी चन्द सतरोंने मेरी खामोशी छुड़वाई है। एक दोस्तने अपने खतमें उनकी कतरन भेजी है। वे न भेजते, तो शायद यह चीज़ मेरी नज़रसे गुज़रती भी नहीं। यह सच है कि मि॰ लुई फिशरके साथ की अपनी लम्बी बातचीतके दरमियान मैंने इस क़िस्मकी कोई बात कही थी। मैं मानता हूँ कि दुनियामें यहूदियोंके साथ सख्त बेइन्साफ़ी हुई है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, यूरोपके कई हिस्सोंमें यहूदियोंके रहनेकी जगहको 'घेटो' यानी भंगीबस्ती कहा जाता है। अगर उनके साथ बेदर्दीसे .ज़ुल्म न किया जाता, तो उनके फिलिस्तीन लौटनेका सवाल शायद पैदा ही न होता। उस हालतमें समूची दुनिया उनका घर होती। उन्होंने दुनियाके लिए बहुत कुछ किया है।

मगर मेरी रायमें उन्होंने अमेरिका और यूरोपकी मददसे, और खुली गुण्डेशाहीके ज़ोरसे, फिलिस्तीन पर अपना क़ब्ज़ा जमानेकी कोशिश करनेमें सख्त ग़लती की है। समूची दुनियाके बाशिन्दोंके नाते कोई भी मुल्क उन्हें .खुशीके साथ बाइज़्ज़त अपना मेहमान बनाता—उसे बनाना चाहिये था। अपनी किफ़ायतसारी और तरह-तरहकी हुनरमन्दी व मेहनत-पसन्दीके कारण दुनियामें कहीं भी उनका स्वागत होता। ईसाई दुनिया पर यह एक बड़ा धब्बा लगा है कि उसने 'न्यूटेस्टामेण्ट' या नये इक़रारको ग़लत तरीक़ेसे पढ़कर यहूदियोंके खिलाफ़ अपने दिलमें बदज़नी पैदा कर ली है। "अगर कोई यहूदी कोई ग़लती करता है, तो यहूदियोंकी सारी दुनिया पर उसका इलज़ाम आयद होता है।" अगर आइन्स्टीनके दरजेका एक यहूदी कोई बड़ी खोज या ईजाद करता है, या कोई दूसरा यहूदी अच्छे-से-अच्छा गीत रचता है, तो उसका जस अकेले उस खोजी या गवैयेको ही मिलता है, समूचे यहूदी जगत्को नहीं।

इसलिए कोई अचरजकी बात नहीं कि यहूदियोंकी इस दर्दनाक हालतमें मेरी हमदर्दी उनके साथ है। मगर मुझे उम्मीद थी कि अपनी मुसीबतसे वे शान्तिका सबक़ सीखेंगे। अमेरिकाकी दौलत या इंग्लैण्डकी तोपोंकी मददसे वे एक ऐसे मुल्क पर अपने-आपको क्यों लादना चाहते हैं, जहाँ उन्हें कोई नहीं चाहता? क्यों वे गुण्डेशाहीकी मददसे ज़बरदस्ती फिलिस्तीनकी ज़मीन पर उतरते हैं?

अगर वे अहिंसाके बेनज़ीर हथियारको अपनायेंगे, तो सारी दुनिया उनका साथ देगी। उन्होंने दुनियाको बहुत-कुछ दिया है, मगर अहिंसाको अपनाकर वे दुनियावालोंको अच्छी-से-अच्छी और .खूबसूरत-से-खूबसूरत चीज़ देंगे। उनके अच्छे-से-अच्छे पैग़म्बरोंने इस हथियारके इस्तेमालका सबक़ सिखाया है। ईशु खिस्त यहूदी थे। उन्होंने हँसते-हँसते काँटोंका ताज पहना था। दुःखसे कराहती दुनियाको वे अहिंसाकी विरासत दे गये हैं। अगर आजके यहूदी अहिंसाको अपनायेंगे, तो उनका यह क़दम उनके लिए दोहरी देन साबित होगा। वे सच्चे मानीमें सुखी और धनी बनेंगे और दुःखी दुनियाके दर्दको मिटानेवाली संजीविनी साबित होंगे। पंचगनी, १४–७–'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

[नोट–ऊपर जिन चन्द सतरोंका ज़िक्र आया है, वे यों हैं:

"गांधीने फिलिस्तीनके मसले पर भी बातचीत की। उन्होंने कहा कि यहूदियोंका केस अच्छा है। मगर साथ ही उन्होंने यह उम्मीद भी ज़ाहिर की कि अरबोंके साथ अन्याय न होगा।"]

हफ़्तेवार ख़त

ए॰ आई॰ सी॰ सी॰ की यानी कांग्रेस-महासमितिकी अपनी तक़रीरमें पंडित जवाहरलाल नेहरूने एक बहुत ही अर्थगर्भ बात कही थी। वे निहायत ज़ोरदार शब्दोंमें इस बातकी अपील कर रहे थे कि कमेटी अपने सामने पेश मसलों पर दूसरोंसे अलग-थलग रहकर काम करनेवाली तंग या संकुचित दृष्टिसे न सोचे, बल्कि दुनियामें जो बातें आजकल हो रही हैं, उनको अपने सामने रखकर उन पर ग़ौर करे। आजकी दुनिया उलट-पुलट हो गई है। पुरानी हदोंका नाम-निशान नहीं रहा। पुराने खयाल या तो चूर-चूर हो गये हैं, या एक तरफ़ पटक दिये गये हैं। मगर हिन्दुस्तान आज भी अपनी बुनियादी बातों पर डटा हुआ है। एक आज़ाद मुल्कके नाते जल्दी ही हमको और आपको दुनियाके मामलोंको सुलझाने और बनानेमें अपना वाजिब हिस्सा लेना होगा। दुनियाके इन मसलोंको सुलझानेमें हिन्दुस्तान अपनी तरफ़से क्या मदद करेगा? ऐसे वक़्त वह अपने सामने किन उसूलोंको रक्खेगा? उन्होंने कहा: "ये ही बाते हैं, जिन्हें ध्यानमें रखकर आपको अपनी मौजूदा पॉलिसी तय करनी होगी। हमारा मुल्क एक बड़ा मुल्क है। जिस ओर भी हम अपना वज़न डालेंगे, उधरका पलड़ा भारी हो जायगा और वह दुनियाकी तवारीख पर अपना असर डालेगा।"

दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह

महासमितिकी बैठकसे लौटनेके बाद पूनामें पहली बार गांधीजीने अपने जो खयाल ज़ाहिर किये, वे मानो पंडित जवाहरलालकी ऊपर कही गई बातोंकी यथार्थ व्याख्या या तशरीह-से थे। उनकी तक़रीरका विषय या मज़मून यह था कि दुनियाके लिए दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहका महत्त्व या अहमियत क्या है। दक्षिण अफ्रीकाका सत्याग्रह बड़ी तेज़ीसे एक अहम मसला बनता जा रहा है। उसने वहाँके हब्शियोंका ध्यान भी अपनी ओर खींच लिया है। आज वहाँके सब हब्शी निहत्ये हैं, लाचार या बेबस हैं, और गोरोंकी छीना-झपटीके .ज़ुल्मोंके नीचे कराह रहे हैं। वे लोग भी अब सत्याग्रहकी शकलमें एक ऐसी चीज़ देखने लगे हैं, जो उन्हें उनकी .ग़ुलामीसे छुड़ानेकी उम्मीद बँधाती है। चुनाँचे उन्होंने हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियों के दलमें शामिल होनेका फ़ैसला किया है। इस तरह दक्षिण अफ्रीकाके सत्याग्रहने दुनियाके मज़लूम लोगोंके बारेमें आज़ाद हिन्दुस्तानके आइन्दा मिशनके लिए एक रास्ता खोल दिया है। इस चीज़की अहमियतको पूरी तरह समझनेके लिए इसके तवारीखी पहलूको थोड़ेमें जान लेना ज़रूरी है। सन् १८४० में या उसके आसपास पहली दफ़ा हिन्दुस्तानके लोग 'गिरमिटिया' मज़दूरकी हैसियतसे दक्षिण अफ्रीका गये थे। गोरे लोग वहाँके हब्शियोंको अपना काम करनेके लिए राज़ी नहीं कर सके थे। इसलिए उन्होंने 'गिरमिट'के तरीक़े पर हिन्दुस्तानसे मज़दूरोंको वहाँ ले जाना शुरू किया। यह एक तरहकी नीम .ग़ुलामी थी। फ़र्क़ इतना ही था कि .ग़ुलाम सारी ज़िन्दगीके लिए बँध जाता है, जब कि ये लोग गिरमिटकी शर्तोंके मुताबिक़ ५ सालके लिए काम करनेको बँधते थे। इस तरह जो हिन्दुस्तानी मज़दूर वहाँ पहुँचे, उनके पीछे-पीछे हिन्दुस्तानके कुछ सौदागर भी वहाँ गये। सबसे पहले पोरबन्दरके हाज़ी साहब अबूबकर अहमद झवेरी पहुँचे। उनके बाद काठियावाड़के कुछ छोटे-छोटे बेपारी गये और फिर सूरतके मेमन और बारडोलीके पाटीदार भी पहुँचे। ये लोग वहाँ बस गये और काम-धन्धा करने लगे। इनमेंसे कुछने तिजारत शुरू की और कुछ घर-घर जाकर माल बेचने और फेरी लगाने लगे। यह सन् १८८२की और उसके बादकी बात है। इन लोगोंने दक्षिण अफ्रीकाकी तरक़्क़ीमें मदद पहुँचाई और कुछ पैसा भी कमाया। इनके बच्चोंने वहाँ रहकर नये-नये धन्धोंकी तालीम ली, और वे डॉक्टर और वकील बने। गांधीजीने कहा कि आज ये ही डॉक्टर और वकील वग़ैरा लोग दक्षिण अफ्रीकामें सत्याग्रहकी लड़ाई लड़ रहे हैं, और उनकी यह लड़ाई उनके अपने लिए उतनी नहीं है, जितनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानकी इज़्ज़तके लिए है। वे बोले: "मैं जानता हूँ कि आजकल वहाँ क्या हो रहा है, क्योंकि एक तरहसे मैं .खुद दक्षिण अफ्रीकाका वतनी हूँ — मैंने अपनी जवानीके पूरे २० बरस वहाँ बिताये हैं। वहीं सत्याग्रहका जन्म हुआ था। आज पांच्छमवाले एक तरहके नरकमेंसे गुज़र रहे हैं। जो हारे हैं, वे जीते हुओंके सामने बेदम होकर पड़े हैं। लेकिन जो इस लड़ाईमें जीते हैं, उन्हें भी यह पता चल गया है कि वे हारनेवालोंसे किसी तरह अच्छे नहीं हैं। फिर भी कहना होगा कि पच्छिमी तहज़ीबकी क़ब्र दूसरी बड़ी लड़ाईमें नहीं खुदी। वह तो आजकल दक्षिण अफ्रीकामें खोदी जा रही है। रंगीन या एशियाई तहज़ीबके मुक़ाबले, जो काफ़ी उजली है, दक्षिण अफ्रीकाकी गोरी तहज़ीब काली नज़र आती है। अगर हमारे लोग अख़ीर तक सीधे-सच्चे और अहिंसक बने रहे, तो मुझे इसमें ज़रा भी शक नहीं कि उनकी बहादुराना लड़ाई उस पच्छिमी तहज़ीबके क़फ़न पर ठुकनेवाली आखिरी कील होगी, जो आज दक्षिणी अफ्रीकामें अपनी असली शकलमें बाहर आ रही है।

फील्ड मार्शल स्मट्सकी सफ़ाई

"दक्षिण अफ्रीकाके गोरे हैवान बनते जा रहे हैं। वहाँ पूरबी और पच्छिमी तहज़ीबोंकी आपसमें मुठभेड़ हो रही है। और उन दोनोंमें कितना फ़र्क़ नज़र आ रहा है! गोरोंने हिन्दुस्तानियोंको भंगी-बस्तियोंमें रहनेके लिए मजबूर करनेकी ग़रज़से जंगली क़ानून पास किये हैं। फील्ड मार्शल स्मट्स एक बड़े फ़िलॉसफ़र हैं। वे मुझे अपना दोस्त मानते हैं। एशियाई तहज़ीबके खिलाफ़ उन्हें कोई शिकायत नहीं। लेकिन गोरी सभ्यता या तहज़ीबकी हिफ़ाज़तके लिए उनको कुछ कार्रवाई करनी पड़ी है। उन्होंने मुझसे कहा था कि वे रंगीन लोगोंको हिक़ारतकी नज़रसे नहीं देखते। श्रीमती सुब्बारायन जब विलायत पढ़ने गई थीं, तो वे फील्ड मार्शलके ही मकानमें रही थीं। यह हक़ीक़त इस बातका सबूत है कि फील्ड मार्शल रंगीन लोगोंसे नफ़रत नहीं करते। मगर फील्ड मार्शलका कहना यह है कि अगरचे उनके दिलमें रंगीनोंके खिलाफ़ कोई बदज़नी नहीं है, तो भी उनका यह फ़र्ज़ है कि वे दक्षिण अफ्रीकामें पच्छिमी तहज़ीबकी हिफ़ाज़त करें। और वे यह उम्मीद करते हैं कि चूँकि मैं एक समझदार आदमी हूँ, इसलिए मैं उनकी इस बातकी क़द्र करूँगा।"

गांधीजीकी समझमें यह बात नहीं आ रही कि किसी सच्ची तहज़ीब या तमद्दुनको, सभ्यता या संस्कृतिको, क़ानूनी हिफ़ाज़तकी ज़रूरत क्यों होनी चाहिये। हिन्दुस्तानी लोग वहाँके 'घेटो' क़ानूनका शान्तिके साथ यानी अहिंसक रीतिसे विरोध कर रहे हैं, इसलिए उनका यह तरीक़ा तहज़ीबपसन्द लोगोंका तरीक़ा है। नीति या इख़लाकके ख़यालसे जिस क़ानूनका कोई बचाव नहीं किया जा सकता, उसको तोड़कर वे .खुशी-.खुशी उन सज़ाओं या जुरमानोंको भुगत रहे हैं, जो उन्हें दी जाती हैं। लेकिन वहाँके गोरे गुण्डे अपने ही बनाये क़ानूनोंको तोड़ रहे हैं। उनका यह काम सचमुचका गुनाह है। हिन्दुस्तानके लिए यह गर्व या फ़.ख्रकी बात है कि गिरमिटिया मज़दूरोंके और सौदागरोंके बच्चे, जिनमें बहुतसे हरिजनोंकी सन्तान हैं, अपने-आपको बहादुर सत्याग्रही साबित कर रहे हैं। उधर गोरे लोग 'लिंच लॉ'से, यानी लोगोंको मारने-पीटनेकी हिंसक और जंगली रीतसे काम लेने लगे हैं। गांधीजीने कहा: "आखिर सत्याग्रहका जन्म एशियामें हुआ था। ईसू एशियाका बाशिन्दा था। अगर वह फिरसे पैदा होकर आज दक्षिण अफ्रीका जाय और वहाँ रहे, तो उसे वहाँकी किसी भंगी-बस्तीमें ही रहना होगा।"

इसके बाद गांधीजी बोले कि उन्हें उम्मीद है कि सन् १९१४की तरह इस बार भी आखिरकार फील्ड मार्शल स्मट्स यह महसूस करेंगे कि वे दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको क़यामत तक सता नहीं सकते; और उनकी पूरी-पूरी कसौटी कर लेनेके बाद वह उनके साथ बाइज़्ज़त समझौता करेंगे। दक्षिण अफ्रीकामें हाल हीं गोरोंकी एक कमेटी बनाई गई है। इस कमेटीका मन्शा हिन्दुस्तानी सत्याग्रहियोंके लिए अपनी हमदर्दीका इज़हार करना और उनके काम या मिशनको अपनाना है। गांधीजीने कहा: "मेरे वक़्तमें भी इस तरहकी एक चीज़ बनी थी, लेकिन इस बार वह कुछ बड़े पैमाने पर बनी मालूम होती है। अगर इस चीज़का फैलाव हो, गुण्डेशाही ख़तम हो, और एशियावालोंकी मुख़ालिफ़त करनेवाले क़ानून रद कर दिये जायँ, तो उम्मीद है कि पूरब और पच्छिमकी संस्कृतियाँ आपसमें मिल सकेंगी। वरना दक्षिण अफ्रीका पच्छिमी तहज़ीब और तमद्दुनकी क़ब्र बन सकता है।"

खादी किधर?

कांग्रेस-महासमितिकी बैठकसे वापस आनेके बाद गांधीजीने पूनामें जो चार दिन बिताये, वे सिलसिलेसे अखिल भारत (कुल हिन्द) चरखा-संघ और कस्तूरबा-स्मारक-ट्रस्टके ट्रस्टियोंकी बैठकोंके काममें बीते। हिन्दुस्तानने २५ बरस पहलेसे जो कोशिश शुरू की थी, उसकी वजहसे आज उसे कपड़ेकी तंगीके मामलेमें दुनियाके दूसरे कुछ मुल्कोंकी तरह, जिनका सारा तंत्र लड़ाईके सालोंमें गड़बड़ा गया था, लाचार होकर और हाथ-पर-हाथ धरकर बैठनेकी ज़रूरत नहीं रही है। हिन्दुस्तानमें पुराने ज़मानेसे कताईका सिलसिला चला आया है, और कपड़ा बुनने व सूत कातनेके कामोंको और उनके तरीक़ोंको लोग बड़े पैमाने पर जानते हैं। अपनी इस अनमोल विरासतकी वजहसे हिन्दुस्तानकी हालत इस मामलेमें ख़ास तौर पर अच्छी है। उसके पास तरह-तरहकी जानकारी और कला-कारीगरीका जो ख़ज़ाना या पूँजी पड़ी है, अगर वह उसका पूरा और अच्छा इस्तेमाल करे, तो न सिर्फ़ उसकी अपनी ज़रूरतें पूरी हों, बल्कि अपने पड़ोसमें रहनेवाले कुछ दूसरे मुल्कोंको भी कपड़ेकी तंगीका सामना करनेमें वह मदद पहुँचा सके। १० जुलाईको प्रार्थनाके बादकी सभामें बोलते हुए गांधीजीने लोगोंके सामने अपनी उस योजना या स्कीमका ढाँचा रक्खा, जिसकी चर्चा उसी शामको हुई कुल हिन्द चरखा-संघकी कार्यकारिणी समितिकी बैठकमें हो चुकी थी।

अखिल भारत चरखा-संघने ग़रीब कत्तिनों-कतवैयों और जुलाहों वग़ैरामें अब तक कुल ७ करोड़ रुपये तक़सीम किये हैं। इस तरह चरखा-संघने काफ़ी बड़ा काम किया है, मगर जो काम उसके सामने पड़ा है, उसके मुक़ाबले यह कुछ नहीं है। एक ज़माना था जब हिन्दुस्तानके लोग हिन्दुस्तानका बना कपड़ा ही पहनते थे। इसी तरह अब भी सारे हिन्दुस्तानको खद्दरपोश बनानेका काम संघके सामने है। पुराने ज़मानेमें हिन्दुस्तान न सिर्फ़ अपनी ज़रूरतका कपड़ा पैदा कर लेता था, बल्कि ज़ायद कपड़ा दूसरे देशोंमें भेजा जाता था। उन दिनों हिन्दुस्तानमें मिलें नहीं थी। "या इस चीज़को मैं इस तरह कहूँगा कि उन दिनों हिन्दुस्तानकी हरएक बहनके पास अपने चरखे या अपनी तकलीकी शकलमें एक-एक मिल मौजूद थी।" आजकी ये मिलें चरखेमेंसे ही निकली और विकसी हैं। इनसानकी बनावटमें ईश्वर और शैतान दोनोंकी ताक़तोंकी मिलावट रही है। चरखेके पीछे जो ताक़त है, वह ईश्वरकी या .खुदाकी ताक़त है, और उसमें दूसरोंको लूटने या चूसनेकी कोई गुंजाइश ही नहीं। परदेशियोंने चरखेमें छिपी हुई इस ताक़तको पहचाना और भाप व बिजलीकी ताक़तके इस्तेमालसे मिलें खड़ी कीं। इन मिलोंका इस्तेमाल उन्होंने दुनियाकी भोली-भाली और सीधी-सादी क़ौमोंको लूटने और चूसनेके साधनकी तरह किया। इस तरह मिलें शैतानी ताक़तकी नुमाइन्दा बनीं। हिन्दुस्तानमें आज बहुत-सी मिलें हैं। फिर भी यहाँके लोगोंको क़रीब-क़रीब नंगा रहना पड़ता है। आज दुनियामें जहाँ-तहाँ कपड़ेका काल है। इण्डोनेशियाके प्रजासत्ताक राज्यके प्रधान मंत्री या वज़ीरे आज़म सुलतान शहरयारने पं० नेहरूके नाम सँदेशा भेजा है कि इण्डोनेशियावालोंके पास ज़ायद चावल हैं। इसलिए आपके यहाँ फैली हुई अकालकी मुसीबतका सामना करनेके लिए बतौर मददके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम अपना तमाम ज़ायद चावल .खुशी-.खुशी आपको भेज देंगे। इसके बदलेमें हमें पैसोंकी ज़रूरत नहीं। हम लोगोंको यहाँ कपड़ेकी ज़बर तंगीका सामना करना पड़ रहा है, और कपड़ा यहाँ बनता नहीं है। इसलिए हमारे चावलके बदलेमें आप कपड़ा भेजेंगे, तो हम उसे ब.खुशी लेंगे। हमारे यहाँ कपड़ेकी मिलें नहीं हैं, और हमने चरखा चलानेकी आदत भी नहीं डाली है। इस पर पं० नेहरूने चन्द मिल-मालिकोंके साथ इस बारेमें बातचीत शुरू की, और उन लोगोंने जावा भेजनेके लिए कपड़ेकी गाँठें .खुशी-.खुशी दीं। हिन्दुस्तानके ४० करोड़ लोगोंकी बस्तीमेंसे ७ लाख गाँवोंके सिर्फ़ २० करोड़ लोग हर रोज़ १ या २ घण्टा कातने लगें, तो इतनी कताईसे न सिर्फ़ देहातमें रहनेवालोंकी कपड़ेकी ज़रूरत पूरी होगी, बल्कि वे शहरवालोंको भी कपड़ा दे सकेंगे। "हिन्दुस्तान आनेसे पहले ही मेरे दिलमें यह बात बैठ गई थी कि हाथ-कताईको फिरसे जिलाकर ही हिन्दुस्तान अपनी पुरानी शान और सहज शोभाको दुबारा पा सकेगा। उसके बाद मैंने चरखेको सूरजकी उपमा दी और उसको बीचमें रखकर उसके आसपास हिन्दुस्तानकी अर्थ-व्यवस्थाका सौर-मण्डल क़ायम किया। चरखा ग़रीब और अमीरको मिलानेवाला सुनहला पुल है। इस वक़्त हमारे सामने जो ना.जुक हालत पेश है, उसका सामना करनेके लिए मैंने एक सुझाव रक्खा है। वह यह है कि सूबोंकी लोकप्रिय सरकारें यह ऐलान कर दें कि अबसे आगे देहातके लोगोंको अपना कपड़ा .खुद पैदा कर लेना होगा। कपास या रूई उन्हें दी जायगी, और उन्हें उससे सूत कातकर कपड़ा बना लेना होगा। इस तरीक़ेसे वे लोग मानो मुफ़्त ही में कपड़ा पा सकेंगे। इसके लिए अखिल भारत चरखा-संघको एक ब्योरेवार स्कीम तैयार करके सूबोंकी सरकारोंके सामने पेश करनी होगी। अगर वज़ीर लोग यह समझ लें कि हिन्दुस्तानके करोड़ों नंगे लोगोंका तन ढँकने या उन्हें कपड़ा पहनानेका दूसरा कोई रास्ता नहीं है, तो बिना किसी दिक़्क़तके इस स्कीम पर ताबड़तोड़ अमल होने लगे। आज शहरमें रहनेवालोंकी शिकायत है कि उन्हें खद्दर-भण्डारोंसे खादी नहीं मिलती, और खादी ख़रीदनेके लिए उन्हें उसकी थोड़ी क़ीमत अपने हाथ-कते सूतकी शकलमें चुकानी पड़ती है। खादीकी हलचलमें इधर जो नया सुधार हुआ है, उसकी तहमें छिपे मुद्दे या मरमको लोग समझ जायँ, तो उनकी ये शिकायतें अपने-आप दूर हो जायँ। जिस तरह गाँववालोंसे उम्मीद रक्खी जाती है कि उन्हें अपनी ज़रूरतका कपड़ा .खुद पैदा कर लेना चाहिये, उसी तरह अगर शहरवाले भी अपनी ज़रूरतकी खादी .खुद पैदा करना चाहें, तो उन्हें उसमें कोई दिक़्क़त न होनी चाहिये।"

कस्तूरबा ट्रस्ट

अपने इसी भाषणमें उन्होंने कस्तूरबा-स्मारक-ट्रस्टके कामका ज़िक्र किया। उन्होंने कहा कि इस ट्रस्टका काम चरखा-संघके कामसे भी मुश्किल है। ट्रस्टने सवा करोड़ रुपया इकट्ठा किया है, लेकिन ये रुपये गाँवोंमें औरतों और बच्चोंके भलेके लिए ख़र्च किये जानेवाले हैं। मसलन्, गाँवोंमें बच्चा जनानेके या ज़चकीके कामको ही लीजिये। देहातकी दाइयाँ नासमझ और गन्दी होती हैं। गाँवकी औरतें शहरी औरतोंके मुक़ाबले ज़्यादा मज़बूत और मेहनती होती हैं, फिर भी क़ुदरतके क़ानूनोंको तोड़ते रहनेसे काम नहीं चल सकता। देहातकी दाइयोंको साफ़-सुथरे तरीक़ेसे काम करनेकी तालीम देना आसान नहीं। असलमें यह बड़ोंकी तालीमका सवाल है, और सब कोई जानते हैं कि बच्चोंके मुक़ाबले बड़ोंको सिखानेका काम ज़्यादा मुश्किल होता है। शहरी ढंगके एक या दो अस्पताल बनवाकर इन सवा करोड़ रुपयोंको मैं आज ही ख़र्च कर सकता हूँ। लेकिन इससे देहातकी औरतों और देहातके बच्चोंकी सच्ची सेवा न होगी। इस रक़मको मैं यों ही बरबाद न करूँगा। मैं जानता हूँ कि लोगोंकी यह शिकायत है कि ट्रस्टका काम बहुत धीमी चालसे चल रहा है। मगर लोगोंको सब्रसे काम लेना चाहिये। उन्हें जानना चाहिये कि काम धीमी मगर मज़बूत चालसे चल रहा है। हमारे लिए यह एक बिलकुल नया काम है — एक ऐसे समन्दरका सफ़र है, जिसमें पहले कोई जहाज़ गया नहीं, कोई रास्ता बना नहीं। इसलिए हमें बहुत होशियारीके साथ आगे बढ़ना है।"

सोनेकी लंका

पूनाकी अपनी आख़िरी प्रार्थना-सभामें भाषण करते हुए गांधीजीने लंकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंकी हालतका बयान किया। उन्होंने कहा: "बरसों पहले मैं एक बार लंका गया था। बरफ़से ढके हुए हिमालयकी चोटियोंवाला काश्मीर अगर भारतमाताके सिरपर शोभा देनेवाला मुकुट है, तो लंका उसके गलेमें पड़े हुए हार के छोर पर झूलनेवाला रत्नोंसे जड़ा लटकन है। उसका सोनेकी लंका नाम ठीक ही है। इस लंकाकी तरक़्क़ीमें हिन्दुस्तानियोंने बहुत-कुछ हाथ बँटाया है। अब लंकावालोंको अपनी हुकूमत चलानेके लिए एक तरहका विधान मिल गया है, (और इसमें अचरजकी कोई बात नहीं) इसलिए वे हिन्दुस्तानियोंको लंकासे निकाल भगाना चाहते हैं। दक्षिण अफ़्रीकाकी तरह लंकामें भी हिन्दुस्तानी मज़दूरी करने गये थे। वहाँ उनको बहुत ही मुश्किलोंवाली और तन्दुरुस्तीको नुक़सान पहुँचानेवाली हालतोंमें मज़दूरी करनी पड़ती है। वे लोग वहाँ घर बनाकर अपने बाल-बच्चोंके साथ हमेशाके लिए बस गये हैं। इसलिए आज जब अचानक उनसे यह कहा जा रहा है कि वे लंका छोड़कर चले जायँ, तो उन्हें यह बहुत बुरा मालूम होता है। वे भी अपने लिए लंकावालोंकी तरह ही वहाँ के शहरी होनेका दावा करते हैं और उस नाते नागरिक अधिकार चाहते हैं। लंकावालोंकी दलील यह है कि हिन्दुस्तानवाले यहाँ रहकर एक साथ दो घोड़ोंपर सवार नहीं हो सकते। अगर वे हिन्दुस्तानको अपना वतन मानते हैं, तो वापस हिन्दुस्तान चले जायँ; और हिन्दुस्तान न जाना हो, तो लंकावाले बन जायँ। उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो हिन्दुस्तानियोंको किसी हालतमें लंकामें रहने ही नहीं देना चाहते — उनका वहाँ रहना उनसे सहा नहीं जाता। यह एक अजीब बात है। हिन्दुस्तानी और सिंहली भाई-भाई हैं। पानीकी एक बहुत ही तंग पट्टी हिन्दुस्तान और लंकाके बीच फैली हुई है, और वही दोनोंको एक-दूसरेसे अलग करती है। एक अच्छा ताक़तवर और मज़बूत आदमी तो इस खाड़ीको तैरकर पार कर सकता है। फिर, इन दोनों देशोंके रहनेवाले रंगीन लोग हैं। लंकावाले जिस धर्मको मानते हैं, उस बौद्ध धर्मका जन्म हिन्दुस्तानमें हुआ था। इसलिए हिन्दुस्तानियों और लंकावालोंके बीच कोई झगड़ा हो ही कैसे सकता है? हम सब मनायें कि दोनोंके बीचका फ़र्क़ मिटे और दोनों एक हो जायँ। इस मसलेकी गहराईमें जाकर इसकी जाँच करनेके लिए कांग्रेसकी महासमितिने चार जनोंकी एक कमेटी क़ायम करनेका ठहराव मंज़ूर किया है। कांग्रेसके सदर पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री राजगोपालाचार्य, श्री रामचन्द्रन् और श्री आर्यनायकम्, ये चार उसके मेम्बर हैं। लंकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानी मज़दूरोंने पिछले दिनों हड़ताल कर दी थी। कांग्रेसने उन्हें सलाह दी है कि वे अपनी हड़ताल ख़तम करके काम पर चले जायँ। कांग्रेस लंकावालोंको किसी मुसीबतमें नहीं डालना चाहती। कांग्रेस तो भाई-भाईके बीच होनेवाला समझौता चाहती है।"

इसके बाद उन्होंने सभामें बैठे हुए लोगोंसे पूछा: "इस मामलेमें हमारा फ़र्ज़ क्या है? हम सब ईश्वरसे मनायें कि वह दोनोंको अच्छी अक़्ल और समझ दे।" समन्दर पारके मुल्कोंमें रहनेवाले अपने भाइयोंकी हालतके बारेमें ज़रूरी जानकारी हासिल करना हमारा फ़र्ज़ है। यही वजह है कि गांधीजीने सभामें आये लोगोंसे लंकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानियोंके बारेमें ये तमाम बातें कहीं।

आख़िर पंचगनी पहुँचे

गांधीजी हर साल पंचगनी जाया करते हैं। इस बारकी उनकी पंचगनी-यात्रा बार-बार आगे ठिलती गई। मगर इसकी वजहसे गांधीजीके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनमें पंचगनी पहुँचनेके लिए कभी कोई बेकली पैदा नहीं हुई, क्योंकि गांधीजी वहाँ मौज-शौक़के लिए जाना नहीं चाहते। असलियत यह है कि अब वे इस बातको अच्छी तरह समझ गये हैं कि बाक़ीका सारा साल कामका बोझ ढोनेकी ताक़त पानेके लिए पंचगनी जाना उनका धर्म है। पिछले साल जब गांधीजी पंचगनी गये थे, तो वहाँ ग़रीबोंके लिए एक धरमशाला या मुसाफ़िरखाना बनानेकी बात तय हुई थी। वह मुसाफ़िरखाना अब तैयार-सा है। गांधीजी उसीमें ठहर सके होते, तो उन्हें बहुत अच्छा लगता, लेकिन अभी वह इस क़ाबिल नहीं है कि उसमें रहा जा सके। हालाँ कि एक अच्छा-सा घर ख़रीदा जा चुका है, फिर भी उसमें अभी मरम्मत और दुरुस्तीका काम बाक़ी होनेसे वह अगली मौसिम तक तैयार नहीं हो सकेगा। पिछले ३ महीनोंकी लगातार मेहनत और थकानके बाद गांधीजी एक बार फिर यहाँकी ताज़गी पैदा करनेवाली शान्तिमें रहने और इस जगहके चारों ओर फैली हुई हरी-भरी पहाड़ियोंसे बहकर आनेवाली प्राणवायुसे भरी हवा खानेके लिए यहाँ आये हैं। पहलेकी तरह प्रार्थनाकी आम सभायें बाथा गर्ल्स हाईस्कूलके मकानमें ही होती हैं, क्योंकि वह हमारे पड़ोसमें ही है। बाथा हाईस्कूलकी पारसी बहनोंने प्रार्थना-सभामें जिस सुरीले और दर्दभरे सुरसे भजन गाये, उसने गांधीजीके दिलको छू लिया। पिछले दो दिनोंसे गांधीजी प्रार्थनाके बाद जो कुछ कहते हैं, उसमें एक तरहकी बेकली या उदासी (ग़मग़ीनी) का सुर रहता है। इसकी वजह या तो वे भजन हैं, जिन्हें सुनकर गांधीजीका दिल हिल उठा, या फिर वह .कुदरती ख़ाहिश है, जो एक लम्बे अरसे तक दुनियवी मामलोंमें कड़ी मेहनत करनेके बाद आत्माको .खुद अपनेमें डूब जाने और थिर होनेके लिए पैदा होती है।

"या क्या इनसानकी आत्मा लम्बा सफ़र पूरा करके जब अपनेमें डूबती है, तो उदास हुए बिना नहीं रहती?"

पहले दिन गांधीजीने कहा: "अभी जो भजन गाया गया था, उसमें दुनियाको दुःखका सागर कहा है। और वह बिलकुल सही है। ईश्वरकी करुणा, कृपा या मेहरबानीके ज़रिये ही हम इन तमाम दुःखोंका सामना कर पाते हैं। लेकिन आगे चलकर कविने दुनियाको माया और सपना कहा है। इस फ़ानी और चंचल दुनियामें, जहाँ हर चीज़ एक-के-बाद-एक आती और कुछ ही देरमें हवामें मिलकर धुँधली शकलोंमें बदल जाती है, वहाँ आनन्द या, मनुष्य जिसे सुख कहता है, वह सुख तो सपना ही हो सकता है — नहीं, वह सपना ही है। लेकिन हमारे ही जैसे जानदारों पर जो मुसीबतें आती हैं, उन्हें झूठी कहकर हम टाल नहीं सकते। और न इस तरह अपनी नैतिक ज़िम्मेदारीसे बच निकलनेका कोई बहाना ही हम कर सकते हैं, न हमें करना चाहिये। सपने भी जब तक दीखते हैं, तब तकके लिए तो सच्चे ही होते हैं। और जिसे तकलीफ़ सहनी पड़ती है, उसके लिए तो वह तकलीफ़ ही एक ठोस सचाई होती है। सो जो भी हो, दुनिया सच्ची हो या झूठी हो, जब तक हम इस दुनियामें रहते हैं, तब तक जीवनमें हमारे कुछ कर्त्तव्य या फ़र्ज़ होते हैं, जिन्हें अच्छी तरह समझकर, ठीकसे, हिम्मतके साथ हमें अदा करना ही चाहिये।"

दूसरे दिनकी अपनी तक़रीरमें गांधीजीने ग़रीबीका गौरव (शान) समझाया। उस दिन जो भजन गाया गया था, उसमें कहा गया था कि ईश्वर ग़रीबोंका साथी या दोस्त है। गांधीजीने कहा: "हमारे देशमें ग़रीबीकी अपनी एक शान है। यहाँ ग़रीबको अपनी ग़रीबीकी शरम नहीं मालूम होती। वह अमीरके महलसे अपनी झोंपड़ीको ज़्यादा पसन्द करता है। यही नहीं, बल्कि उसे उस पर नाज़ भी होता है। दुनियवी चीज़ोंके मामलेमें ग़रीब होने पर भी उसकी रूह या आत्मा ग़रीब नहीं होती। उसके पास सन्तोषका ख़ज़ाना रहता है। ग़रीब चाहें, तो वे यह भी कह सकते हैं कि 'चूँकि हम सब-के-सब न तो अमीर बन सकते हैं, और न सबके अपने महल ही हो सकते हैं, इसलिए चलो, हम अमीरोंके महलोंको ढाह दें और उन्हें अपने जैसा बना लें।' लेकिन इस तरीक़ेसे न तो .खुद उन्हें सुख या शान्ति मिल सकती है, न दूसरे किसीको। और सच तो यह है कि ईश्वर भी इस तरहके ग़रीबोंका दोस्त और मददगार नहीं बन सकता। दुनियवी चीज़ोंकी विषमताके रूपमें तो ग़रीबी दुनियाके हरएक हिस्सेमें मौजूद है, और शायद एक हद तक यह अनिवार्य है। क्योंकि सभी आदमी न तो एक-से अक़लमन्द होते हैं, और न सबकी ज़रूरतें एक-सी होती हैं। अमेरिका-जैसे मुल्कमें भी, जहाँ क़िस्से-कहानीकी तरह दौलतके पहाड़ रचे गये हैं, और जहाँ ईश्वरकी जगह दौलत या धनकी ही पूजा होती है, बहुत-से लोग ग़रीब पाये जाते हैं। पारसी कवि मलाबारीको एक बार बादशाह शाहआलमके रिश्तेदार रंगूनकी गलियोंमें भीख माँगते दिखाई पड़ गये थे। इस पर उन्होंने एक बढ़िया कविता (नज़्म) लिखी है। उस कविताका मेरे दिल पर गहरा असर हुआ है। उसमें कुछ इस मतलबकी बात कही गई है कि जिसका दोस्त और मददगार ईश्वर है, वही सच्चा दौलतमन्द है। हिन्दुस्तानमें लोगोंका एक ऐसा ख़ास दल पाया जाता है, जो अपनी ज़रूरतोंको कम-से-कम करनेमें .खुशी महसूस करता है। इस तरहके लोग कपड़ेके छोटे-से टुकड़ेमें अपने लिए मुट्ठीभर आटा, चुटकी भर नमक और मिर्च लेकर निकल पड़ते हैं। ये लोग कुएँसे पानी खींचने और पीनेके लिए अपने कन्धे पर डोरी-लोटा लिये चलते हैं। उनके पास इन्हें छोड़ और कोई चीज़ नहीं होती। हर रोज़ वे १०–१२ मील पैदल चल लेते हैं। अपने पासके कपड़ेमें ही वे अपनी ज़रूरतका आटा सान लेते हैं। ईंधनके लिए पेड़ोंकी सूखी टहनियाँ इधर-उधरसे चुन कर ले आते हैं, और उसकी आँच पर वे अपने साने आटेके टिक्कड़ सेंक लेते हैं। इस तरह सिके हुए टिक्कड़ बाटी कहलाते हैं। मैंने यह बाटी चखी है, और मुझे वह बहुत ज़ायक़ेदार लगी है। असलमें स्वाद या ज़ायक़ा खाई जानेवाली चीज़में नहीं होता, बल्कि ईमानदारीसे की गई मज़दूरी और मनके सन्तोषसे जो भूख पैदा होती है, वही खाने की चीज़ोंको एक ज़ायका दे देती है। ईश्वर ऐसे ही लोगोंका साथी, मित्र या मददगार बनता है। ये लोग अपनेको किसी राजा या बादशाहसे भी ज़्यादा अमीर समझते हैं। जो लोग दिलमें दूसरोंकी दौलतकी चाह रखते हैं, और उनसे जलते हैं, ईश्वर कभी उनका मित्र नहीं बनता। इस मिसालके मुताबिक़ हरकोई बरताव कर सकता है, और .खुद बयानके बाहर सुख और शान्तिका अनुभव करके दूसरोंको भी सुख और शान्तिका मीठा प्रकाश या उजेला पहुँचा सकता है। इसके बरख़िलाफ़, जो दौलतकी चाहमें उसके पीछे मारे-मारे फिरते हैं, उनके लिए दूसरोंको लूटे और चूसे बिना, फिर इस लूट-खसोटको कितना ही उम्दा नाम क्यों न दिया जाय, छुटकारा नहीं। और इतना सब करनेके बाद भी यह मुमकिन नहीं कि दुनियाके करोड़ों लोग लखपति बन जायँ। इसलिए सच्चा सुख तो संतोष और सब्रमें और ईश्वर या .खुदाके साथ चौबीसों घण्टेकी दोस्ती बनाये रखनेमें है।"

पंचगनी, १५–७–'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

विषय-सूची

		पृष्ठ
एक गन्दी आदत	... गांधीजी	[illegible]
कस्तूरबा-स्मारक-निधि	... गांधीजी	[illegible]
कांग्रेसकी महासमितिमें गांधीजीका भाषण		[illegible]
शहरोंमें खादी	... गांधीजी	[illegible]
यहूदी और फिलिस्तीन	... गांधीजी	[illegible]
हफ़्तेवार ख़त	... प्यारेलाल	[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१ अगस्त

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

८ पृष्ठ
दो आना

सम्पादक : प्यारेलाल

भाग १० अंक २६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ४ अगस्त, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

पहले .खुद कूदो

अहमदाबादकी खूँरेज़ीके बारेमें एक भाईने जो ख़त लिखा है, उसमेंसे आवश्यक भाग नीचे देता हूँ :

"हुल्लड़के अवसरों पर क्या उपाय किया जाय, इस बाबत मैं लिखना चाहता हूँ। आजसे ठीक दो मास पहले 'हरिजन'में आपने अहिंसक सेवादल पर एक लेख लिखा था। मगर आज-कलकी हालतको देखते हुए इतनेसे काम नहीं चल सकता। जिस तरह आपने सरकारसे लड़नेका रास्ता हमें दिखा दिया है, उसी तरह ऐसे अवसरों पर आप किसी एक जगह पहुँच कर अहिंसक रीतिसे हुल्लड़को शान्त करके हमारे सामने नमूना रख दें। अगर आप इस अवसर पर अहमदाबादमें हों, और स्वयंसेवकोंके साथ इस कामके लिए शहरमें निकल पड़ें, तो ज़रूर आपको स्वयंसेवकोंकी कमी न रहे। यहाँके दो कांग्रेसी कार्यकर्त्ता श्री वसंतराव और रज्जबअली लोगोंको समझानेके लिए गये और दोनों गुण्डोंके छुरोंकी भेंट हुए। बादमें किसीकी जानेकी हिम्मत न हुई। उन दोनोंने अपने आदर्शके लिए जान दे दी, और वे धन्य हैं! यह ठीक है कि दूसरे लोगोंमें इतना आत्म-विश्वास नहीं। अगर सबमें हो, तो हुल्लड़ ही क्यों हो? और अगर कभी हो भी तो वह आजकलके हुल्लड़ोंकी शकल तो ले ही नहीं। मगर यह तो उस स्थितिकी बात हुई, जो सिर्फ़ कल्पनामें ही है।

"आपकी रहनुमाई मेरे-जैसे बहुतसे लोगोंमें साहस पैदा कर सकती है। और आपके रास्ता दिखानेके बाद दूसरे मुक़ामी नेता अवसर पड़ने पर अपनी-अपनी जगह उस रास्ते पर चल सकेंगे। मुझे महसूस होता है कि प्रत्यक्ष रास्ता दिखाये बिना आपके लेख और बयान लोगोंको—पक्के कांग्रेसियोंको—सामाजिक रक्षणके ख़यालसे उपयोगी साबित न होंगे।"

मुझे ऊपरकी सूचना जँचती है। मैंने अंग्रेज़ी सल्तनतका सामना करनेका जो रास्ता बताया, वह चला, क्योंकि सब लोग उसका सामना करना चाहते थे। मैं स्वीकार करता हूँ कि वह अहिंसा लाचारीकी थी, इसलिए वह दुर्बलोंका ही साधन बनी। और, इसी कारण आज हम नेताजी सुभाषबाबूकी और आज़ाद हिन्द फ़ौजकी पूजा करते हैं। लेकिन यह बात हम भूल जाते हैं कि .खुद सुभाषबाबूने ही अपने फ़ौजियोंसे कहा और फ़ौजियोंके सरदारोंने ही मुझे सुनाया कि हिन्दुस्तानके भीतर तो उन फ़ौजियोंको अहिंसाका रास्ता ही लेना चाहिये। इस विवेक बुद्धिका हम उपयोग नहीं करते। वह तो तभी होगा, जब आज़ाद हिन्द फ़ौजके आदमी, जो हिन्दुस्तानमें आये हैं, अहिंसाका रास्ता अख्तियार करके नेताजीके आदेशको अपने जीवनमें अमल करके बता दें। ऐसे हिंसाके वायुमण्डलमें अहिंसाको माननेवालोंका काम ज़रूर मुश्किल हो जाता है। लेकिन सच्ची अहिंसाका काम हमेशा ही मुश्किल रहनेवाला है, क्योंकि अहिंसामें ज़्यादा बहादुरीकी ग़रज़ रहती है, और ऐसी अहिंसा आज तक स्पष्ट रूपमें हम दिखा नहीं सके। इस दावेके साथ यह कह सकते हैं कि गणेशशंकर विद्यार्थी, वसंतराव और रज्जबअली वग़ैराकी अहिंसा ऐसी थी। लेकिन जब क़ौमी उभार आ जाता है, तब हम प्रत्यक्ष रूपमें कुछ फल नहीं बता सकते। ऐसा फल बतानेके लिए अनेक 'विद्यार्थियों'को बलिदान देना होगा। वसंतराव और रज्जबअलीने जो नमूना पेश किया, उस पर अहमदाबादमें दूसरे अमल नहीं कर सके। यही बताता है कि हममें अब तक सचमुच प्राणोंकी बलि दे देनेका माद्दा नहीं आया है। ऐसी हालतमें यह ठीक कहा गया है कि मुझे ही कुछ करके दिखाना होगा। फिर कोई मेरा साथ दे या न दे। मैं घरमें बैठकर दूसरोंको मरनेके लिए भेजता रहूँ, यह मेरे लिए शरमकी बात होगी। मेरा यह काम कभी अहिंसाकी निशानी नहीं बन सकता। मेरा ख़याल है कि ऐसा मौक़ा मुझे कभी मिला नहीं। या कोई ऐसा भी कह सकते हैं कि अगर मौक़ा नहीं मिला तो इसकी वजह मेरी कायरता या डरपोकपन होना चाहिये। जो कुछ भी हो, ईश्वरकी कृपा होगी, तो वही मुझे ऐसा अवसर देगा; ऐसी किसी आगमें मुझे झोंक कर शुद्ध करेगा और अहिंसाका रास्ता बिलकुल साफ़ करेगा। इसका मतलब कोई यह न समझे कि मेरे ऐसे बलिदानसे हिंसा रुक ही जायगी। आजकल इतनी घोर हिंसा चल रही है कि उसमेंसे अहिंसा प्रगट होनेके लिए मेरे-जैसे अनेकोंके बलिदानकी आवश्यकता रह जायगी। इसी कारण 'प्रीतम'ने गाया है :

'हरिनो मारग छे शूरानो, नहीं कायरनुं काम जोने।'

और, हरिका मार्ग ही अहिंसाका मार्ग है।

पंचगनी, २५-७-'४६ — मोहनदास करमचंद गांधी

हरिजन-सेवक-संघकी कसौटी

"सवर्ण हिन्दुओंके ज़रिये हरिजनोंमें सुधारका काम करानेकी नीतिके लिए मैं जवाबदार हूँ। सवर्ण हिन्दुओंको अपने पापोंका प्रायश्चित्त करना है। उसके लिए ज़रूरी लियाक़त न होनेसे समूचे ऊँची जातके हिन्दू कोई सीधी सेवा या खिदमत नहीं कर सकते, लेकिन पैसे देकर तो वे सब इस काममें मदद दे सकते हैं। प्रायश्चित करनेका यह एक रास्ता माना जायगा।" इन शब्दोंमें गांधीजीने हरिजन-सेवक-संघकी—जिसे वे सही मानोंमें 'प्रायश्चित्त करनेवालोंका संघ' कहा करते हैं—मौजूदा पॉलिसी या नीति समझाई थी। इस बैठकमें संघके मेम्बरोंने गांधीजीको कई सवाल पूछकर और गांधीजी द्वारा उनके जवाब पाकर आत्म-निरीक्षण किया। इसलिए इस बैठकका खास महत्त्व (अहमियत) है। यह खुले दिलसे खुले शब्दोंमें विचार करनेकी क्रिया थी। बैठकके सवाल-जवाब नीचे दिये जाते हैं

आत्म-निरीक्षण

स० — कम्युनिस्ट पार्टीने कामयाबीके साथ भंगी-मेहतरोंके संघ क़ायम किये हैं और हड़ताल वग़ैराके ज़रिये उनके हक़ दिलानेमें उनकी मदद की है। लेकिन हरिजन-सेवक-संघकी प्रवृत्तियाँ (काम) ज़्यादातर हरिजनोंके भलेके कामोंसे ही निस्बत रखती हैं। इसलिए संघ हरिजनोंमें लोकप्रिय बननेमें कम्युनिस्टोंका कामयाबीके साथ मुक़ाबला नहीं कर सकता। इसे मद्देनज़र रखते हुए क्या आप यह नहीं मानते कि हरिजन-सेवक-संघको अपनी नीति और काम करनेका तरीक़ा बदल देना चाहिये?

ज० — सस्ती ख्याति या शोहरतका लालच छोड़कर सिर्फ़ न्याय या इन्साफ़की भावनासे ही हमें अपनी पॉलिसी तय करनी चाहिये। अगर हरिजन-सेवक-संघको यह यक़ीन हो जाय कि जो कुछ वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है ठीक करता है, तो दूसरे क्या करते हैं या क्या नहीं करते, इसकी परवाह किये बिना वह अपना काम करता रहेगा। इस तरह काम करते हुए हम भंगियोंके संघ क़ायम कर सकते हैं या हड़ताल भी करवा सकते हैं। लेकिन ऐसा हम सिर्फ़ हरिजनोंकी समाजी व आर्थिक (माली) हालतको सुधारनेके लिए ही करेंगे, किसी सियासी (राजनीतिक) या दूसरे ऐसे मक़सदसे नहीं।

स० — हरिजनोंमें यह धारणा बढ़ती जा रही है कि कांग्रेस हरिजनोंके वाजिब हक़ोंके बनिस्बत मुसलमानोंकी माँगोंका ज़्यादा खयाल रखती है। इस बाबत आपकी क्या राय है?

ज० — एक राजनीतिक (सियासी) संस्था या इदारा होनेकी वजहसे कांग्रेस पर सियासी दबावका ज़्यादा असर पड़ सकता है। और हरिजनोंकी बनिस्बत मुसलमान ऐसा दबाव कांग्रेस पर बहुत ज़्यादा डाल सकते हैं। अगर कांग्रेस इस दबावके सामने झुक जाती है, तो उसे इसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ेगी। सो जो कुछ भी हो, हरिजन-सेवक-संघ तो एक ग़ैर-सियासी संस्था है। इसलिए फ़ायदे या नुक़सानका खयाल छोड़कर उसे हरिजनोंके लिए अपने शुरुआती फ़र्ज़ोंका ही खयाल रखना चाहिये।

छुआछूत और सवर्ण हिन्दू

स० — श्री श्यामलालके साथ हुए अपने अभी-अभीके पत्र-व्यवहार (खतो-किताबत)में आपने कहा है कि अगर छुआछूतको नाबूद करना हो, तो जात-पाँतको जड़से मिटा देना होगा। तो फिर अस्पृश्यता-निवारण-कार्य (छुआछूत मिटानेके काम)को आप जात-पाँत मिटानेकी व्यापक और पवित्र लड़ाईका एक हिस्सा क्यों नहीं बनाते? अगर आप जड़को खोद डालते हैं, तो टहनियाँ अपने-आप सूख जायँगी।

ज० — अमुक विचार रखना यह मेरे लिए एक बात है, और उन विचारोंको सारे समाजसे मनवाना बिलकुल दूसरी बात है। मैं उम्मीद रखता हूँ कि मेरी बुद्धि हमेशा विकसती और आगे बढ़ती रहती है। मुमकिन है कि सब लोग इस दिशामें मेरा साथ न दे सकें। इसलिए ज़्यादा-से-ज़्यादा धीरज रखकर धीमी चालसे आगे बढ़नेमें ही मुझे संतोष मानना चाहिये। नवजीवन-प्रकाशन-मन्दिरने 'वर्णव्यवस्था' नामका मेरे लेखोंका जो संग्रह अभी-अभी छापा है, उसमें लिखी मेरी भूमिका (तमहीद)में आपने देखा होगा कि उसूलन् (सिद्धान्तकी दृष्टिसे) मैं आपके साथ हूँ। अगर मैं १२५ साल तक जीया, तो मुझे उम्मीद है कि मैं समूचे हिन्दू-समाजको अपने विचारका बना दूँगा।

स० — क्या आप मौजूदा हालतमें भी तथाकथित (नामनिहाद) सवर्ण हिन्दुओंको यह राय देंगे कि वे खास-खास जगहोंमें हरिजनोंको प्राथमिक (शुरुआती) समाजी और शहरी हक़ दिलानेका आन्दोलन खड़ा करें? इसके लिए अगर ज़रूरी हो तो क्या आप हरिजन-सेवक-संघको सवर्ण हिन्दुओंके खिलाफ़ सत्याग्रह करनेकी सलाह देंगे?

ज० — संघको एक संस्थाके नाते सवर्ण हिन्दुओंके खिलाफ़ सत्याग्रह करनेकी सलाह मैं नहीं दूँगा। लेकिन संघके मेम्बर अपनी-अपनी जगहोंमें व्यक्तिगत रूपसे (ज़ाती तौर पर) ऐसा सत्याग्रह करें, इसकी न सिर्फ़ मैं सलाह दूँगा, बल्कि उम्मीद भी रक्खूँगा। अगर वे सही स्पिरिटसे ऐसा करेंगे, तो मैं उनके इस कामकी ताईद करूँगा। यह उनका फ़र्ज़ है।

रफ़्तारको और बढ़ाओ

स० — क्या आप सूबोंमें लोक-प्रिय सरकारोंकी ग़ैरमौजूदगीमें भी हरिजन-सेवक-संघको यह सलाह देंगे कि वह हरिजनोंके मंदिर-प्रवेश (मंदिरोंमें दाखिल होने)के प्रोग्रामको ज़ोरशोरसे चलावे?

ज० — ज़रूर दूँगा। मैं मानता हूँ कि आज भी यह काम हो रहा है। लेकिन उसकी रफ़्तार बहुत धीमी है। उसकी रफ़्तार बढ़े, तो मुझे सचमुच बड़ी खुशी होगी।

स० — क्या संघके मेम्बर हरिजनोंके साथ बैठकर खाना खानेसे इनकार कर सकते हैं? क्या इस बारेमें आपके विचारोंमें कोई फेरफार हुआ है?

ज० — एक वक़्त विलाशक मैंने यह कहा था कि सहभोज (साथमें बैठकर खाना) छुआछूतको मिटानेके आन्दोलन (तहरीक़)का ज़रूरी हिस्सा नहीं। फिर भी मेरे ज़ाती विचार तो सहभोजके पक्षमें थे। लेकिन आज मैं उसको बढ़ावा देता हूँ। असलमें आज तो मैं इससे भी आगे बढ़ गया हूँ। 'वर्णव्यवस्था' पर लिखी मेरी भूमिका या तमहीदसे यह बात साफ़ ज़ाहिर होती है।

स० — क्या हरिजन-सेवक-संघका यह फ़र्ज़ नहीं है कि वह ग्राम-पंचायतों, म्युनिसिपैलिटियों और धारासभाओंमें हरिजनोंकी वाजिब नुमाइन्दगी (प्रतिनिधित्व)की माँग करके उन्हें राजनीतिक या सियासी हुकूमत दिलानेकी कोशिश करे?

ज० — बेशक ऐसा किया जाना चाहिये। इसके लिए जितनी कोशिश की जाय, थोड़ी है।

स० — क्या हरिजन-छात्रालयों (बोर्डिंग हाउस)में और बड़ी उमरके हरिजनोंकी आमसभाओंमें हिन्दूधर्मके बुनियादी उसूलोंकी तालीम देना हरिजन-सेवक-संघका फ़र्ज़ नहीं?

ज० — हरिजन बच्चों और बड़ी उमरके हरिजनोंको हिन्दूधर्मके बुनियादी उसूलोंका इल्म कराना संघका पहला फ़र्ज़ है। अगर ऐसा न किया गया, तो मुमकिन है कि बड़े होने पर वे हिन्दूधर्मको छोड़ दें। और इसकी सारी ज़िम्मेदारी उन लोगों पर होगी, जिन्होंने उन्हें इस ज्ञानसे वंचित या महरूम रक्खा।

गंतूरके विनय-आश्रमवाले श्री सीताराम शास्त्रीने पूछा: "क्या हरिजन-सेवक-संघको सवर्ण हिन्दुओंमें प्रचार (प्रोपेगैण्डा) करनेके लिए खास तालीम देकर मिशनरी (प्रचारक) तैयार करने चाहिये? अगर मुझे पूरी-पूरी मदद दी जाय, तो मेरे आश्रममें ऐसे प्रचारक तैयार करनेका तालीमी-मरकज़ (केन्द्र) मैं शुरू कर सकता हूँ।"

इस सुझावको अमली शकल देनेमें गांधीजीको बड़ा शक था। असलमें कई साल पहले श्री घनश्यामदास बिड़लाने यह सवाल उठाया था और पूरी-पूरी बहसके बाद उसे जहाँ-का-तहाँ छोड़ दिया गया था। अगर कम-से-कम संघके मेम्बर भी पूरी तरह इस ध्येय या मक़सद तक पहुँच सकें, तो गांधीजीको काफ़ी तसल्ली होगी।

पश्चात्ताप करनेवालोंका संघ

इसके बाद गांधीजीसे पूछा गया: "क्या हमें संघमें हरिजन नुमाइन्दोंको लेनेकी या संघकी कार्यकारिणी समिति (कारोबारी)में कम-से-कम एक हरिजन मेम्बरको लेनेकी मिसाल नहीं क़ायम करनी चाहिये?" इसके जवाबमें गांधीजीने पूना-पैक्टके बाद अस्तित्व (वजूद)में आनेवाले हरिजन-सेवक-संघकी तवारीखका ज़िक्र किया। अल्पमतोंकी नुमाइन्दगी (प्रतिनिधित्व)के सवाल पर मैकडॉनल्डकी सरकारके निर्णयमें जो फेरफार किया गया था, उसीका नतीजा पूना-करार था। उस वक़्त यह महसूस किया गया कि अगर समाजको बरबादीसे बचाना हो, तो हिन्दूधर्मको छुआछूतके शाप या कलंकसे पूरी तरह छुड़ाना चाहिये। इसके लिए हिन्दू-समाजको सच्चे हृदय-परिवर्तन (दिल बदलने)की और अपने पुराने पापोंका प्रायश्चित्त करनेकी ज़रूरत थी। इसी मक़सदसे हरिजन-सेवक-संघ क़ायम किया गया था।

आगे चलकर गांधीजीने कहा: "इसीलिए मैं इन दोनों सुझावोंके खिलाफ़ हूँ। मैं जानता हूँ कि मौजूदा इन्तज़ामके मुताबिक़ संघके बोर्डमें कुछ हरिजन भी शामिल किये गये हैं। लेकिन यह छूट ठक्कर बापाकी कमज़ोरीके कारण देनी पड़ी। मैंने हरिजन-सेवक-संघको 'पश्चात्ताप करनेवाले पापियोंका संघ' कहा है। छुआछूतको निभानेका पाप करनेवाले तथाकथित (नामनिहाद) सवर्ण हिन्दुओंको प्रायश्चित्त करनेकी बात कहना ही इस संघका ध्येय या मक़सद है। एक हरिजनको संघमें शामिल करना तो सिर्फ़ मन समझानेकी बात होगी, क्योंकि संघमें उसकी आवाज़ नक्कारेमें तूतीके समान ही रह जायगी। थोड़े ही वक़्तमें वह संघसे निकल जाना पसन्द करेगा। यह मैं कमेटियोंमें काम करनेके अपने ज़ाती तजरबेसे ही कहता हूँ। संघ हमेशा अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मक़सद तक नहीं पहुँच सकता, यह मैं जानता हूँ। संघ चाहे तो अपने कामका दायरा बदल सकता है और अपनी कारोबारीमें हरिजनोंको बड़ी तादादमें शामिल कर सकता है। वह चाहे तो चुने हुए हरिजनोंकी ऐसी कार्यदक्ष (होशियार) कमेटी भी क़ायम कर सकता है, जो उस पर देख-रेख रक्खे, उसे वाजिब सलाह दे और उसे उन्हें रास्ते पर चलते रहनेकी प्रेरणा दे।"

इसके बाद हरिजन-उद्धारके लिए साधुओंका सहयोग लेनेका जो नया प्रयोग ग्वालियर रियासतमें शुरू किया गया है, उसके बारेमें गांधीजीकी राय पूछी गई। गांधीजीने जवाबमें कहा: "ग्वालियर रियासतके इस प्रयोगके सही और वाजिब होनेमें मुझे बड़ा शक है। इसमें मुझे राजनीति या सियासतकी बू मालूम होती है। इस काममें सच्चे साधुओंकी मदद मिल सके, तो मैं उसका स्वागत करूँगा। लेकिन मैं क़बूल करता हूँ कि मेरी कल्पनाके साधु मुझे इस मुल्कमें खोजने पर भी नहीं मिले। जो साधु मुझे देखनेको मिले, उनसे मुझे निराशा ही हुई। कहीं-कहीं सच्चे साधु भी मिल सकते हैं और उनकी मददका मैं स्वागत करूँगा। मगर इस काममें साधुओंकी जमातकी मदद लेनेमें मुझे डर मालूम होता है। अगर ऐसा प्रयोग किया भी गया, तो मुझे डर है कि थोडे वक़्तमें ही यह रास्ता छोड़ना पड़ेगा।

एक दूसरे दोस्तने पूछा: "क्या कस्तूरबा स्मारक-फण्डकी अमुक रक़म हरिजन बहनोंके लिए मुक़र्रर कर देना ठीक होगा?" गांधीजीने कहा कि अगर उनमें उसे काममें लेनेकी क़ाबिलीयत हो, तो सारा-का-सारा फण्ड वे ले सकती हैं। इसलिए उसका अमुक हिस्सा ख़ास तौरसे उनके लिए मुक़र्रर करनेकी ज़रूरत नहीं।

आख़िरी निदान और इलाज

सवाल-जवाब खतम हो जानेके बाद गांधीजीने संघकी बैठकमें शामिल हुए लोगोंसे संघके काममें पहलेके मुक़ाबले पैदा हुई शिथिलता या ढिलाईका अपना निदान और उसके इलाजके बारेमें कुछ मामूली बातें कहीं। "सवर्ण हिन्दुओंके ज़रिये हरिजनोंके उद्धारका काम करानेकी नीति या पॉलिसीके लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ। उन्हें प्रायश्चित्त करना है। ज़रूरी क़ाबिलीयतके न होनेसे सब हिन्दू हरिजनोंकी सीधी सेवा चाहे न कर सकें, मगर पैसे देकर तो वे इस काममें मदद कर ही सकते हैं। मिसालके तौर पर वे .ख़ुद बच्चे पढ़ानेका काम न कर सकें, लेकिन हरिजन-बच्चोंको पढ़ानेके लिए क़ाबिल शिक्षक तो ज़रूर रख सकते हैं। प्रायश्चित्त करनेका यह एक तरीक़ा है। हरिजन समाजमें घुल-मिलकर उसकी तरक़्क़ीमें वे मदद कर सकते हैं। क्या इस तरहके कामसे कभी छुआछूत जड़से मिट सकती है? ऐसी शंका करनेवाले टीकाकार भी हमारे यहाँ मौजूद हैं। किसी वक़्त मुझे भी यह शक था। लेकिन बादमें मैं अपनी ग़लती समझ गया। इसके लिए मैं स्वर्गीय श्री देवधरका एहसानमन्द हूँ, जिनके कामको एक वक़्त मैं शककी नज़रसे देखता था, और जिनकी मैंने टीका भी की थी। लेकिन सालभरके तजरबेने मेरा सारा घमण्ड मिटा दिया और मुझे नम्रता सिखाई। मैंने यह महसूस किया कि अगर मैं सवर्ण हिन्दुओंका मन पलटनेके लिए सिर्फ़ उनमें प्रचारकार्य या प्रोपेगैण्डा ही करता रहता, तो उसमें मैं क़यामत तक भी कामयाब न होता, और उस दरमियान हरिजन-उद्धारका असल काम जैसा-का-तैसा ही पड़ा रहता। अपने बादके तजरबेसे मुझे यह विश्वास हो गया है कि अगर हरिजनोंमें काम करनेके लिए ज़रूरी चरित्रबल, श्रद्धा (एतक़ाद) और त्यागकी भावनावाले कार्यकर्त्ता काफ़ी तादादमें मिल जायँ, तो सवर्ण हिन्दुओंको बिलकुल अकेले छोड़कर भी छुआछूतको जड़मूलसे मिटाया जा सकता है। लेकिन इसका मतलब यह होगा कि हम पहले दिलसे हरिजन बन जायँ और हरिजनोंके साथ रहकर हरिजनों-जैसा ही काम करें। लेकिन क्या हरिजन-सेवक-संघके मेम्बर ईमानदारीसे यह दावा कर सकते हैं कि उन्होंने अपने दिलोंसे छुआछूतका नाम-निशान मिटा दिया है? क्या उनकी कथनी और करनीमें पूरा-पूरा मेल पाया जाता है?"

एक मेम्बरने पूछा: "इस बारेमें आपकी कसौटी क्या है?" गांधीजीने जवाबमें पूछा: "क्या आपकी शादी हो चुकी है?" "जी हाँ।" घबराकर सवाल पूछनेवाले भाईने जवाब दिया। तब गांधीजीने उनसे पूछा: "क्या आपकी कोई कुँआरी लड़की है? अगर हो, तो उसकी वासना (नफ़्ज़)को तृप्त करनेके लिए नहीं, बल्कि शुद्ध धर्मकी भावनासे ही किसी हरिजन लड़केसे उसकी शादी तय कीजिये। मैं अपने ख़र्चसे आपको बधाईका तार भेजूँगा।"

आगे चलकर गांधीजीने कहा: "अब आप समझेंगे कि हरिजन-सेवक सवर्ण हिन्दुओंके दिलोंको क्यों नहीं हिला पाते। इसकी वजह यह है कि कार्यकर्त्ताओंके दिलोंमें न तो श्रद्धाकी वह आग है, और न सेवाकी कभी न मिटनेवाली वह भूख है, जो लोगों पर असर डालनेवाली अपीलकी पहली शर्त है। मुट्ठीभर सवर्ण हिन्दू भी सच्ची मिशनरी स्पिरिटसे इस क्षेत्रमें कूद पड़ें, तो वे सारे हिन्दूसमाजको बदल सकते हैं। लेकिन नामधारी सेवकोंकी पूरी फ़ौज भी उन पर कोई असर नहीं डाल सकती। इस तरहकी सेवाके लिए मालवीयजी-जैसे आदमी चाहिये। मैं तो अपनी बहनका भी मन पलट न सका। जब मैं .ख़ुद इस काममें सफल न हो सका, तो दूसरोंको क्या दोष दूँ? यह इस बातका सबूत है कि यह रास्ता कितना मुश्किल और कँटीला है। फिर भी अगर आप यह मानते हैं कि आपमें ज़रूरी क़ाबिलीयत है, तो आप अपनी-अपनी जगहोंमें यह प्रयोग कर सकते हैं।"

गांधीजीने आगे समझाया कि किसी हद तक इस नाकामयाबीकी यह वजह है कि हरिजन-सेवक-संघके ज़्यादातर मेम्बरोंकी सेवा या मिशनमें राजनीतिक ध्येय (सियासी मक़सद) भी मिला रहता है। अगर सचमुच ही उन्हें सवर्ण हिन्दुओंके दिलमें जगह करनी हो, तो उन्हें शुद्ध धार्मिक भावनासे ओतप्रोत (सराबोर) होना चाहिये। इस तरहके कामके लिए कोरी बहससे कुछ हासिल नहीं होगा। आज तो हममें काहिली, लापरवाही और मानसिक कठोरता बुरी तरह पैठ गई है।

बातको जारी रखते हुए गांधीजीने कहा: "दूसरा तरीक़ा ज़्यादा डरावना और जोखिमसे भर हुआ है। वह उपवास (फ़ाक़े)का तरीक़ा है। जब कभी वह मुझे ग़लत और नैतिक दृष्टिसे ग़ैरवाजिब मालूम हुआ, मैंने .ख़ुद उपवासकी निन्दा की है। लेकिन जब उपवासके लिए नैतिकताका तक़ाज़ा हो, उस वक़्त उससे पीछे हटना अपने कर्तव्य या फ़र्ज़से मुँह मोड़ना है। ऐसा उपवास ख़ालिस सचाई और अहिंसाके आधार पर किया जाना चाहिये।

चलते-चलते गांधीजीने अपने जीवनके एक और उपवासकी ओर इशारा किया। लेकिन उन्होंने उन लोगोंको चेतावनी देते हुए कहा कि अभी तो ऐसे किसी उपवासका विचार उनके मनमें नहीं है। आज तो वह एक धुँधली आशंका मात्र है।

पंचगनी, २०–७–'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

नई किताबें	मूल्य	डाकख़र्च
ईशु ख्रिस्त — (किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०–१–०
रचनात्मक कार्यक्रम — उसका रहस्य और स्थान (नई और सुधरी हुई आवृत्ति) (गांधीजी)	०–६–०	०–१–०
गो-सेवा — (गांधीजी)	१–८–०	०–५–०
एक धर्मयुद्ध — (महादेवभाई हरिभाई देसाई)	०–८–०	०–२–०
हिन्दुस्तानी बालपाठावली—	०–५–०	०–१–०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१–४–०	०–५–०
हमारी बा — उनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२–०–०	०–६–०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

४ अगस्त १९४६

९ अगस्त

६ अप्रैल, १३ अप्रैल और २६ जनवरीकी तरह ९ अगस्तका दिन भी हिन्दुस्तानकी आज़ादीकी लड़ाईमें खास महत्त्व (अहमियत) रखता है। सत्याग्रहकी भाषामें यानी सचाई और अहिंसाकी ज़बानमें ये दिन मुकम्मल हड़तालके होने चाहिये। मगर आज सत्याग्रहकी निगाहसे हड़तालोंकी कोई जगह नहीं है। खासकरके अगली ९ अगस्तके दिन। अलबत्ता, अगर हड़तालोंका मतलब हिंसा हो, तो ९ अगस्तको हड़ताल करना ठीक होगा।

दो बड़े लीडरोंने इस बारेमें अपनी राय ज़ाहिर की है। कांग्रेसके प्रेसिडेण्ट पंडित जवाहरलाल नेहरू और सोशलिस्ट पार्टीके प्रेसिडेण्ट श्री जयप्रकाश नारायणने एक-दूसरेसे उलटी सलाह दी है। ऐसी हालतमें मुझे अपना मत बतानेमें हिचकिचाहट होती है। बात नाज़ुक है, मगर एक सत्याग्रहीकी हैसियतसे मुझे बोलना ही होगा।

श्री जयप्रकाश नारायण कांग्रेसमें हैं। सब जानते हैं कि पंडितजी उन्हें वर्किंग कमेटीमें लेनेको तैयार थे, क्योंकि वे मानते थे कि श्री जयप्रकाश नारायणके विचार चाहे कुछ भी हों, वे इतने सच्चे हैं कि कांग्रेसके साथ कभी बेवफ़ाई नहीं करेंगे। अगर अब, यह जाननेके बाद भी कि कांग्रेस प्रेसिडेण्टने ९ अगस्तके बारेमें उनसे उलटी राय ज़ाहिर की है, श्री जयप्रकाश अपनी राय पर अड़े रहेंगे, तो कांग्रेससे बेवफ़ाई करनेवाले साबित होंगे। इसलिए अगर उन्होंने अपनी सलाह अभी तक वापिस नहीं ली, तो मैं उम्मीद रखता हूँ कि, मेरी राय सही है, यह समझकर वे अपने क़दम वापस ले लेंगे।

ठीक हो या ग़लत, वर्किंग कमेटीने एक क़दम उठाया है, और ए० आई० सी० सी० ने उसकी ताईद (समर्थन) की है। हरएक कांग्रेसीका धर्म है कि विधान-सभाके काममें मदद देनेवाली हवा पैदा करके कांग्रेसकी मदद करे। जो लोग हरएक बातमें अंग्रेज़ोंकी ईमानदारी पर शक करते हैं, उनसे भी मुझे यही कहना है। अगर वे खतरा देखते हैं, तो कांग्रेसको उससे आगाह भले ही करें। कांग्रेस प्रेसिडेण्टने उन्हें ऐसा करनेका पूरा मौक़ा ए० आई० सी० सी० में दिया था। वहाँ पर सोशलिस्टोंने जो विरोध किया उससे ज़्यादा कुछ करनेसे मुल्कका नुक़सान ही होगा। ९ अगस्तकी हड़तालको मैं इसी नज़रसे देखता हूँ।

कांग्रेस एक साथ दो घोड़ों पर सवार नहीं हो सकती। उसे यह छूट होनी चाहिए कि वह विधान-परिषद्की मारफ़त मुल्ककी आज़ादीके लिए काम करे। इसमें सबको कांग्रेसकी मदद करनी चाहिये। इस कामके लिए विधान-सभामें जाकर ईमानदारीसे काम करना मेहनतको ज़ाया करना नहीं होगा। मुर्गीके अण्डा देनेसे पहले ही हम उसे मार न डालें।

मुल्ककी फ़िज़ा (वातावरण) को जरा देखिये। अहमदाबादमें और दूसरी जगहों पर नादानीसे भरी अन्धाधुन्धी मची हुई है। डॉक्टर अम्बेडकरने तो सत्याग्रहको एक तमाशा-सा बना दिया है। वह सत्याग्रह नहीं, सत्याग्रहकी बेहूदी नक़ल है। सत्याग्रहका क़ानून है कि न सिर्फ़ जिस चीज़के लिए सत्याग्रह किया जाय वह, बल्कि उसके हासिल करनेका तरीक़ा भी उतना ही साफ़ और पुरइन्साफ़ (न्याययुक्त) हो। इन लोगोंका तरीक़ा भले ही अहिंसक हो, मगर वे किस लिए सत्याग्रह कर रहे हैं, यह साफ़ नहीं है। अगर यह मान भी लिया जाय कि डाकवालोंकी हड़ताल सही है, तो भी उनके साथ हमदर्दी ज़ाहिर करनेके लिए बम्बई वग़ैरामें सब कामधन्धा बन्द कर देना मेरे खयालमें अक़्लमन्दी नहीं। ऐसा लगता है कि बहुतसे लोगोंने सोच-विचार करना ही छोड़ दिया है। वे किसी भी बातको पकड़कर बैठ जाते हैं, उसके गुण-दोषका पहलेसे विचार ही नहीं करते। इस फ़िज़ामें हड़ताल कराना, गोया अन्धाधुन्धीको मोल लेना होगा। और अन्धाधुन्धीमेंसे सच्ची आज़ादी नहीं निकल सकती। मैं उम्मीद रखता हूँ कि ९ अगस्तको हिन्दुस्तानमें हड़ताल नहीं होगी और लोग शान्ति और संजीदगीसे कांग्रेस प्रेसिडेण्टके कहनेके मुताबिक़ ९ अगस्तका दिन ख़ूब शान्ति और अमनसे मनायेंगे।

पंचगनी, २७-७-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी
('हरिजन' से)

[**फिरसे :** यह मज़मून तैयार हुआ उसके बाद मैंने भाई जयप्रकाशका बयान देखा। मुझे बड़ी ख़ुशी हुई कि उन्होंने कांग्रेसके सिपाहीकी हैसियतसे हड़तालकी बात वापस ले ली है। फिर भी क्योंकि मेरे लेखमें दूसरी बातें लिखी हैं, इसलिए मैं उसे छपवाता हूँ।

मो० क० गांधी]

सवाल-जवाब

स०—जब ख़ूराक-विभाग गवर्नरोंके सलाहकारोंके हाथमें था, तब उन पर क़ाबू रखनेका कोई पुरअसर ज़रिया नहीं था। मगर अब तो सूबोंमें लोगोंकी हुकूमतें क़ायम हो गई हैं। इसलिए हालत बदल गई है। कांग्रेसी वज़ीरोंका यह फ़र्ज़ है कि वे अपने हिस्सेकी ख़ूराक वहींसे खरीदें, जहाँसे आम लोग खरीदते हैं। एक दाना भी वे किसी और जगहसे न लें। इसका असर फ़ौरन होगा और वह दूर तक पहुँचेगा। आज कपड़े और अनाजकी सरकारी दुकानें खुल्लम-खुल्ला चोरी और बेईमानीका अड्डा बन गई हैं। अगर कांग्रेसी वज़ीर इन्हीं दुकानोंसे अपने हिस्सेका कपड़ा और ख़ूराक खरीदें, तो उनका नैतिक बल (इख़लाक़ी ताक़त) इतना बढ़ जायगा कि वे इन बुराइयोंका कामयाबीके साथ सामना कर सकेंगे।

ज०—यह सवाल इस तरहके कई खतोंका निचोड़ है। मुझे सवालमें दी गई सलाह जँचती है। मैं मानता हूँ कि वज़ीर और दूसरे सरकारी नौकर ऐसा ही करते होंगे। सरकारी दुकानोंके सिवा तो ख़ूराक खरीदनेका रास्ता कालाबाज़ार ही है। हाकिम कितना ही क्यों न कहें कि कालेबाज़ारमें मत जाओ, मगर उसका उतना असर नहीं होगा जितना उनके कर दिखानेका हो सकता है। अगर वे आम लोगोंके साथ ख़ूराक खरीदें, तो दुकानदार समझ जायँगे कि सड़ा हुआ अनाज नहीं बेचा जा सकता। सुनता हूँ कि इंग्लैण्डमें तो यह आम रिवाज है कि वज़ीर और बड़े-बड़े ओहदेदार लोग वहींसे सामान खरीदते हैं, जहाँसे आम लोग। होना भी ऐसा ही चाहिये।

पंचगनी, २८-७-'४६
('हरिजन' से)

स०—आपके सुझावके मुताबिक़ रामनामका — सच्चिदानंदके नामका — मेरा जप चालू है। और उससे मेरी क्षयकी बीमारीमें सुधार भी होने लगा है। यह सही है कि साथमें डॉक्टरी इलाज भी चल रहा है। लेकिन आप कहते हैं कि युक्ताहार और मिताहारसे इनसान बीमारियोंसे दूर रहकर अपनी उमर बढ़ा सकता है। मैं तो पिछले २५ बरससे मिताहारी रहता आया हूँ, फिर भी आज ऐसी बीमारीका भोग बना हुआ हूँ। इसे क्या पहले जनम (पूर्वजन्म) या इस जनमकी कमनसीबी कहा जाय? आप यह भी कहते हैं कि इनसान १२५ बरस जी सकता है। स्वर्गीय महादेवभाईकी आपको बड़ी ज़रूरत थी, यह जानते हुए भी भगवान्ने उन्हें उठा लिया। युक्ताहारी और मिताहारी महादेवभाई आपको ईश्वर स्वरूप मानकर जीते थे, फिर भी वे ख़ूनके दबावकी बीमारी (ब्लड प्रेशर)के शिकार बनकर सदाके लिए चल बसे। भगवान्का अवतार माने जानेवाले रामकृष्ण परमहंस क्षय-जैसी कैन्सरकी ख़तरनाक बीमारीके शिकार होकर कैसे मर गये! वे भी कैन्सरका सामना क्यों न कर सके?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज०—मैं तो स्वास्थ्य या सेहतकी हिफ़ाज़तके जो नियम या क़ानून .खुद जानता हूँ, वही बताता हूँ। लेकिन मिताहार या युक्ताहार किसे माना जाय, यह हरएक आदमीको जानना चाहिये। इस बारेमें जिसने बहुत-सा साहित्य या अदब पढ़ा हो और बहुत विचार किया हो, वह .खुद भी इसे जान सकता है। लेकिन इसके यह मानी नहीं कि ऐसा ज्ञान या जानकारी शुद्ध और पूरी है। इसीलिए कुछ लोग ज़िन्दगीको प्रयोगशाला कहते हैं। कई लोगोंके तजरबोंको इकट्ठा करना चाहिये और उनमेंसे जानने लायक़ बातको लेकर आगे बढ़ना चाहिये। लेकिन ऐसा करते हुए अगर कामयाबी न मिले, तो भी किसीको दोष नहीं दिया जा सकता। कुदरतको भी दोषी नहीं कहा जा सकता। नियम या क़ानून ग़लत है, यह कहनेकी भी एकदम हिम्मत न करनी चाहिये। लेकिन अगर किसीकी बुद्धिको कोई क़ानून ग़लत मालूम हो, तो सही क़ानून कौनसा है, यह बतानेकी ताक़त अपनेमें पैदा करके उसका प्रचार करना चाहिये। आपकी क्षयकी बीमारीके कई कारण हो सकते हैं। यह भी कोई कह सकता है कि पंचमहाभूतोंका आपने ज़रूरतके मुताबिक़ उपयोग किया या नहीं? इसलिए जहाँ तक मैं .कुदरतके नियमोंको जानता हूँ और उन्हें सही मानता हूँ, वहाँ तक मैं तो आपसे यही कहूँगा कि कहीं-न-कहीं पंचमहाभूतोंका उपयोग करनेमें आपने भूल की है। महादेव और रामकृष्ण परमहंसके बारेमें आपने जो शंका उठाई, उसका जवाब भी मेरी ऊपरकी बातमें आ जाता है। .कुदरतके क़ानूनको ग़लत कहनेके बजाय यह कहना ज़्यादा युक्तिसंगत (मौज़ूँ) मालूम होता है कि इन्होंने भी कहीं-न-कहीं भूल की होगी। नियम कोई मेरा बनाया हुआ नहीं है, वह तो .कुदरतका नियम है; कई अनुभवी लोगोंने उसे कहा है। और, इसी बातको मानकर मैं चलनेकी कोशिश करता हूँ। असल बात यही है कि और कोई, इसे अपूर्ण (अधूरा) मनुष्य कैसे जान सकता है? डॉक्टर इसे नहीं मानते। मानते भी हैं, तो उसका दूसरा अर्थ करते हैं। इसका मुझ पर कोई असर नहीं होता। नियमकी ऐसी तारीफ़ करने पर भी मेरे कहनेका यह मतलब नहीं होता, न निकाला जाना चाहिये, कि इससे ऊपरके किसी व्यक्तिका महत्त्व (अहमियत) कम होता है।

स०—१४-४-'४६के 'हरिजनबन्धु'में आपने लिखा है: 'ईश्वर .खुद नीति या क़ानून और नीतिकार (क़ानून बनानेवाला) है।' यह ठीक-ठीक समझमें नहीं आता। क़ानून तो इनसानका बनाया हुआ है। बल्कि इनसानके क़ानूनमें वक़्तन-फ-वक़्तन फेरफार होते रहे हैं। एक मिसाल यहाँ देता हूँ—द्रौपदीने पाँच पति (खाविन्द) पसन्द किये, फिर भी वह अपने वक़्तमें सती मानी गई। आज कोई औरत ऐसा करे, तो हम उसे व्यभिचारिणी या बदचलन कहेंगे।

ज०—नीतिका मतलब यहाँ क़ायदा किया जाना चाहिये। यह क़ायदा इनसानका बनाया हुआ नहीं। उसने तो ईश्वरके क़ायदेके बारेमें सिर्फ़ कल्पना की है। जैसे-जैसे इनसानकी जानकारी बढ़ती गई, उसका पिछला अन्दाज़ ग़लत साबित हुआ। पृथ्वी (धरती) घूमती है, यह कुदरतका क़ायदा है, उसकी नीति है, उसका नियम है—ऐसा हम आज छाती ठोककर कहते हैं। लेकिन गैलीलियोके पहले जो खगोलवेत्ता हो चुके थे, उन्होंने इससे जुदी कल्पना (अन्दाज़) की थी। द्रौपदीकी जो मिसाल आपने दी है, वैसी मैं न दूँगा। महाभारतको मैं एक बड़ा रूपक मानता हूँ। द्रौपदी यानी आत्मा और पाँच इन्द्रियाँ उसके पाँच पति।

स०—ईश्वरका अस्तित्व (वजूद) बुद्धिसे परे है। श्रद्धा (एतक़ाद)से ही वह समझा जा सकता है। लेकिन क्या पुनर्जन्मकी घटना (वाक़या) सच है? पाप और पुण्यका फ़र्क़ समझकर इनसान अपना काम करते हुए सान्त्वना पाता रहे, इसके लिए अकेले हिन्दू धर्मने ही तो यह खोज नहीं की है न?

ज०—ईश्वरका अस्तित्व बुद्धिसे नहीं समझा जा सकता, इसके मानी यह हुए कि बुद्धि अमुक हद तक ही समझ सकती है, उससे आगे नहीं। यह श्रद्धाकी और उससे पैदा होनेवाले तजरबेकी ही बात है। या तो आप पुराने लोगोंका तजरबा मानिये या फिर .खुद तजरबा करके तसल्ली कीजिये। लेकिन जो श्रद्धा (एतक़ाद) अनुभव या तजरबेकी भी ग़रज़ नहीं रखती, वही सच्ची श्रद्धा है। पाप और पुण्यका फ़र्क़ इनसानकी तसल्लीके लिए नहीं है, ऐसा मैं नहीं कहता। मगर सच्ची तसल्ली तो ईश्वर पर श्रद्धा रखनेसे ही मिलती है। यह है, पुनर्जन्म भी है, ऐसा बहुतसे ज्ञानियोंने कहा है। और मैं मानता हूँ कि ये सारी बातें अमुक हद तक बुद्धिकी समझमें आ सकती हैं।

स०—कांग्रेस स्वराज हासिल करनेके लिए ब्रिटिश हुकूमतके खिलाफ़ अहिंसासे लड़े और हुकूमत पाये हुए कांग्रेसी मंत्रि-मण्डल (वज़ारतें) ग़लत रास्ते चलकर तूफ़ान मचानेवाले अपने भाइयोंको गोलियोंसे भूनकर शान्ति (अमन) क़ायम करनेकी कोशिश करें, क्या ये दोनों बातें मेल खाती हैं? धारासभाके वज़ीर और मेम्बर अपने भाइयोंके साथ .कुरबान होनेके लिए अहिंसासे काम लेना न चाहते हों, तो आप, रविशंकर महाराज और साने गुरुजी-जैसे इने-गिने लोगोंको छोड़कर दूसरे लोगों और हुकूमत पाये हुए सारे कांग्रेसियोंकी ब्रिटिश सल्तनतके खिलाफ़ बरती जानेवाली अहिंसा कायरों या डरपोकोंकी अहिंसा नहीं कही जायगी?

ज०—आपका उठाया हुआ हिंसा और अहिंसाका सवाल तो बहुत पुराना हो गया है। इस बारेमें बहुत कुछ कहा जा चुका है। अगर दूसरोंकी तरह आपके दिलमें भी अहिंसा अभी तक न पैठी हो, तो आप उसे फेंक दीजिये। इसमें मैं किसी तरहका दोष नहीं देखता। और दूसरे इसमें दोष देखते हैं, इसी लिए आप भी देखें, ऐसा कोई क़ायदा नहीं। इसके बरखिलाफ़ क़ायदा तो यह है कि ऋषियोंने जिस बातको माना हो, सन्तोंने जिसे बरता हो, उसे हमारा दिल क़बूल करे, तो ही हम उस बातको मानें और वैसा बरताव करें। यहाँ सवाल यह खड़ा होता है कि अगर ऋषियोंने ग़लत क़ायदा माना हो, और सन्तोंने उसे बरता हो, लेकिन हमारा दिल किसी और बातको ही मानता हो, तो हम उसके मुताबिक़ बरताव करें या नहीं? इसका जवाब इतना ही हो सकता है कि हरएक इनसान .खुद जोखिम उठाकर उसे बरत सकता है। सुधार या नई खोज इसी तरह होती है। हम यह जानते हैं कि हमारे शंकराचार्य छुआछूतका समर्थन (ताईद) करते हैं। फिर भी हम तो इसे दिल और दिमाग़से कलंक रूप (कालिख)ही मानते हैं। भले ही दूसरे इसमें — हमारी इस धारणा और बरतावमें — नुक़्स देखते हों।

स०—हिन्दुस्तानकी ब्रिटिश हुकूमतको आप सन् १९२०से रावणी या शैतानी हुकूमत कहते आये हैं। इसी हुकूमतका क़ानून कहता है कि शकमंद या सच्चे गुनहगारको पकड़नेके बाद उससे सच्ची बात क़बूल कराने या उस पर धाक जमानेके लिए उसे मारना-पीटना गुनाह है। ऐसा करनेवाले पुलिस अफ़सर सज़ाके लायक़ हैं। लेकिन १९४२की क्रान्तिके वक़्त सारे मुल्कमें धर-पकड़ करनेके बाद मेरे-जैसे बहुतसे लोगोंको पुलिसने पीटा है। क्या उसकी बाक़ायदा जाँच नहीं होनी चाहिये?

ज०—मैंने ब्रिटिश सल्तनतकी कड़े शब्दोंमें निन्दा की है और आज भी करता हूँ। पर इससे यह साबित नहीं होता कि उसके तैयार किये हुए पुलिस अफ़सर वग़ैरा सब शैतान ही हैं। इनमेंसे जिन्होंने सन् १९४२में, उससे पहले या पीछे, मार-पीट की हो, उनकी जाँच करनेका हक़ कांग्रेसी हुकूमतको नहीं, ऐसा किसीने नहीं कहा। मैं तो नहीं ही कहता। लेकिन ऐसे हक़ हमेशा आज़माये नहीं जाते। कितने ही हक़ों पर हम अमल न करें, इसीमें अक़्लमन्दी है। यह हम सब जानते हैं। आपके-जैसे मामलोंमें जाँच न करनेकी नीति ही कांग्रेसने मामूली तौर पर अख्तियार की है। इसलिए यह जानना ज़रूरी है कि कई वक़्त वैसे गुनाह साबित नहीं किये जा सकते। लेकिन जहाँ गुनाह साबित होने जैसा लगा, वहाँ इस हक़का अमल भी किया गया है, ऐसा मैं मानता हूँ। लेकिन मेरी राय यह है कि हमें कांग्रेसी मंत्रि-मण्डलोंके क़ाज़ी (न्यायाधीश) न बन जाना चाहिये। कांग्रेसने हुकूमत हाथमें लेकर अक़्लमन्दीकी है, इतना मानना ही हमारे लिए काफ़ी होगा।

पंचगनी, २५-७-'४६
('हरिजनबन्धु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार सालके बाद

खानाबदोश यहूदी

इस हफ्ते लुई फ़िशर — उपेक्षित पक्षोंकी तलाशने जिन्हें सच्चे मानोंमें एक खानाबदोश यहूदी बना डाला है — पंचगनीमें गांधीजीसे मिले । लायक़ और वाजिब हितोंके साथ हमदर्दी दिखाये बिना वे रह नहीं सकते — यह हमदर्दी उनकी ज़िन्दगीका एक हिस्सा बन गई है । हिन्दुस्तानके सवालको वे दुनियाकी शांति या अमनका मध्यबिन्दु (मरकज़) मानते हैं । सन् १९४२में अपनी एक मशहूर मुलाक़ातके दरमियान उन्होंने 'हिन्दुस्तान छोड़ो' प्रस्तावमें रह गई एक बुनियादी खामीको ढूँढ़ निकालनेमें और उसे दुरुस्त करनेमें गांधीजीकी मदद की थी । आज हिन्दुस्तान एक बार फिर ना.जुक स्थितिसे गुज़र रहा है, इसलिए उन्हें अपनी पसन्दका काम यहाँ मिल गया है ।

ए० आई० सी० सी० की बैठकके पहले वे पूनामें गांधीजीसे मिले थे । लेकिन उससे उन्हें तसल्ली नहीं हुई । मुलाक़ातके बाद उन्होंने कहा था : "सन् १९४२के जैसा इस वक़्त मैं हिन्दुस्तानकी ख़ास समस्याको पकड़ नहीं पाया ।" इस बार लगातार दो दिनों तक गांधीजीसे हुई अपनी तीन मुलाक़ातोंमें उन्होंने सारी कसर पूरी कर ली । मुलाक़ातोंमें तजवीज़शुदा आईन बनानेवाली सभा (विधान-सभा), हिन्दू-मुस्लिम सवाल और छूतछातके मसलेसे लेकर समाजवाद, अहिंसा, दक्षिण अफ्रीकाके खिलाफ़ उठाये गये क़दमोंके औचित्य (वाजबीपन) वग़ैरा कई विषयों पर बातचीत हुई । बीच-बीचमें होता रहनेवाला विनोद या हँसी-मज़ाक बातचीतकी गंभीरताको दूर करनेमें मदद करता था ।

सर्वोपरि सत्तावाली सभा ?

पहलेपहल लुई फ़िशरने विधान-सभा पर बातचीत शुरू की । "मैं विधान-सभा (आईन बनानेवाली सभा) में जाकर एक अलग ही मतलब हल करूँगा — उसे लड़ाईका मैदान बना दूँगा — और उसे सर्वोपरिसत्ता (इक़्तदार-ए-आला) वाली सभा ज़ाहिर कर दूँगा । इस बारेमें आपकी क्या राय है ?"

गांधीजीने कहा : "दूसरेकी खड़ी की हुई चीज़को सर्वोपरि सत्ता-वाली ज़ाहिर कर देनेसे कोई फ़ायदा नहीं होगा । आख़िर तो वह अंग्रेज़ोंकी ही बनाई हुई है । सिर्फ़ हक़ जता देने भरसे कोई सभा सर्वोपरि सत्तावाली नहीं बन जाती । सर्वसत्ताधारी बननेके लिए आपको वैसा बरताव भी करना होगा । जोहानिसबर्गकी ट्रूले स्ट्रीटके तीन दर्ज़ियोंने मिलकर ऐलान किया था कि वे सर्वसत्ताधारी हैं । लेकिन उससे कोई नतीजा नहीं निकला । वह कोरा मज़ाक ही साबित हुआ ।

"फिर भी मैं तजवीज़शुदा विधान-सभाको क्रान्तिकारी ही मानता हूँ । मैंने यह कहा है और मैं सोलहों आने इस बातको मानता हूँ कि प्रस्तावित विधान-सभा तामीरी ढंगके सविनय आज्ञाभंगका एक पुरअसर एवज़ है । हालाँकि मैं हमारे समाजवादी दोस्तोंकी .कुरबानी और आत्म-संयमकी स्पिरिटकी बड़ी-से-बड़ी क़दर करता हूँ, फिर भी उनके और मेरे तरीक़ेमें जो स्पष्ट फ़र्क़ है, उसे मैंने कभी छिपाया नहीं । वे ज़ाहिरा तौर पर हिंसा और उससे निस्बत रखनेवाली बातोंमें विश्वास रखते हैं, जब कि मेरे लिए अहिंसा ही सब कुछ है ।"

दूसरे ढंगका समाजवादी

इससे बातचीतका विषय समाजवादकी ओर मुड़ा । श्री फ़िशरने बीच ही में कहा : "जैसे आप समाजवादी हैं, वैसे वे भी हैं ।"

गांधीजीने कहा : "सच्चा समाजवादी तो मैं हूँ, वे नहीं । उनमेंसे कइयोंके पैदा होनेके पहले भी मैं समाजवादी था । जोहानिसबर्गके एक उग्र समाजवादीको मैंने अपने समाजवादी होनेका यक़ीन करा दिया था । लेकिन इस बातके कहनेसे यहाँ कोई मतलब हासिल नहीं होता । मेरा यह दावा तो तब भी क़ायम रहेगा, जब उनका समाजवाद मिट जायगा ।"

"आपके समाजवादसे आपका क्या मतलब है ?"

"मेरे समाजवादका अर्थ है 'सर्वोदय' । मैं गूँगे, बहरे और अन्धोंको मिटाकर उठना नहीं चाहता । उनके समाजवादमें शायद इनके लिए कोई जगह नहीं है । भौतिक उन्नति (दुनयवी तरक़्क़ी) ही उनका एकमात्र मक़सद है । मसलन्, अमेरिकाका मक़सद है कि उसके हर शहरीके पास एक मोटर हो । मेरा यह मक़सद नहीं । मैं अपने व्यक्तित्वके पूर्ण विकासके लिए आज़ादी चाहता हूँ । अगर मैं चाहूँ, तो आसमानमें टिमटिमाते तारों तक पहुँचने की निसैनी बनानेकी आज़ादी मुझे मिलनी चाहिये । इसका मतलब यह नहीं कि मैं ऐसी कोई बात करूँगा ही । दूसरी क़िस्मके समाजवादमें व्यक्तिगत आज़ादी नहीं है । वहाँ आपका कुछ नहीं, आपका अपना शरीर भी आपका नहीं ।"

"हाँ, लेकिन समाजवादकी भी कई क़िस्में हैं । सुधरी हुई शकलमें मेरे समाजवादका मतलब यह है कि हर चीज़ पर स्टेटका कोई हक़ नहीं । पर रूसमें ऐसा ही है । वहाँ सचमुच आपके जिस्म पर भी आपका हक़ नहीं । बिना किसी गुनाहके आप किसी भी वक़्त गिरफ़्तार किये जा सकते हैं । वे आपको जहाँ चाहें, भेज सकते हैं।"

"क्या आपके समाजवादमें स्टेटका आपके बच्चों पर अधिकार नहीं ? और क्या वह उन्हें मन चाहे तरीक़ेसे तालीम नहीं देती ?"

"सभी राज्य ऐसा करते हैं । अमेरिका भी ऐसा करता है।"

"तब तो रूस और अमेरिकामें कोई बड़ा फ़र्क़ नहीं ।"

"आप असलमें तानाशाहीका विरोध करते हैं ।"

"लेकिन अगर समाजवाद तानाशाही नहीं, तो निकम्मे लोगोंका शास्त्रभर है । मैं अपने-आपको कम्युनिस्ट (साम्यवादी) भी कहता हूँ।"

"अरे, ऐसा न कहिये । अपने-आपको कम्युनिस्ट कहना आपके लिए बड़ी खतरनाक बात है । मैं वही चाहता हूँ, जो आप चाहते हैं, जो जयप्रकाश और दूसरे समाजवादी चाहते हैं — एक आज़ाद दुनिया । लेकिन कम्युनिस्ट ऐसा नहीं चाहते । वे ऐसा क़ायदा चाहते हैं, जो शरीर और मन दोनोंको .गुलाम बना दे ।"

"क्या मार्क्सके बारेमें भी आपके यही ख़याल हैं ?"

"कम्युनिस्टोंने अपने मतलबके माफ़िक़ मार्क्सवादको तोड़-मरोड़ लिया है ।"

"लेनिनके बारेमें आपकी क्या राय है ?"

"लेनिनने इसकी शुरुआतकी थी । स्टालिनने उसे पूरा कर दिया। जब कम्युनिस्ट आपके पास आते हैं, तो वे कांग्रेसमें शामिल होना चाहते हैं और उस पर कब्ज़ा करके उसे अपनी स्वार्थ-सिद्धिका साधन बनाना चाहते हैं ।"

"समाजवादी भी ऐसा ही कहते हैं । मेरा साम्यवाद समाजवादसे ज़्यादा भिन्न नहीं है । वह दोनोंका मीठा मेल (एकीकरण) है । साम्यवाद — जैसा कि मैं उसे समझता हूँ, समाजवादका .कुदरती परिणाम (नतीजा) है ।"

"हाँ, आप ठीक कहते हैं । एक समय था, जब दोनोंमें फ़र्क़ करना कठिन था । लेकिन आज कम्युनिस्टों और समाजवादियोंमें बड़ा फ़र्क़ है।"

"तो क्या आपका मतलब यह है कि आप स्टालिन-मार्का साम्यवाद नहीं चाहते ?"

"लेकिन हिन्दुस्तानी कम्युनिस्ट हिन्दुस्तानमें स्टालिन-मार्का साम्यवाद ही क़ायम करना चाहते हैं । और उसके लिए आपके नामका नाजायज़ फ़ायदा उठाना चाहते हैं ।"

"लेकिन वे इसमें कामयाब नहीं होंगे ।"

नेकनीयती

श्री फ़िशर फिर विधान-परिषद्की बात पर लौट आये : "तो आप .खुद विधान-सभामें नहीं जायँगे, मगर उसकी ताईद करेंगे ।"

"हाँ, लेकिन यह कहना ग़लत है कि हम विधान-सभामें सत्ता हथियानेके लिए जा रहे हैं । अगरचे वह सर्वोपरिसत्ता (इक़्तदार-ए-आला) वाली सभा नहीं है, फिर भी वह उसके उतनी ही नज़दीक है, जितनी कि हो सकती है ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कहा कि अगर १६ मईके स्टेट-पेपरको लेकर अंग्रेज़ोंने हम पर कोई सुलह (संधि) थोपनी चाही, तो मैं उसे फाड़ डालूँगा।"

"हाँ, बाहरसे थोपी हुई सुलहको।"

"और, उन्होंने कहा कि कांग्रेस ग्रूपबन्दीको मंज़ूर न करेगी।"

"हाँ, मैंने भी यही बात कही है, बशर्ते कि फेडरल कोर्ट या दूसरी कोई अदालत दूसरा फ़ैसला न दे। मैं मानता हूँ कि अगर अंग्रेज़ोंने नेकनीयतीसे काम लिया, तो विधान-सभासे बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है।"

सविनय आज्ञा-भंग

श्री फिशरने कहा: "आप कहते हैं और मैं मानता हूँ कि अंग्रेज़ नेकनीयतीसे काम करेंगे। लेकिन फ़र्ज़ कीजिये कि वे न करें, तो क्या आप अपने ढंगका विरोध ज़ाहिर नहीं करेंगे?"

"जब तक परिस्थितियाँ मुआफ़िक़ न हों, तब तक मैं ऐसा नहीं करूँगा। लेकिन भविष्यके बारेमें अटकलें लगाना ग़लत है। पहलेसे ही नाफ़रमानीकी कल्पना करना और भी ग़लत है। अगर हम वर्तमानकी फ़िक्र करें, तो भविष्य .खुद अपनी फ़िक्र कर लेगा।"

छुआछूत और क़ौमी सवाल

इसके बाद वे हिन्दू-मुस्लिम सवाल पर बातचीत करने लगे। गांधीजीने अपनी ओरसे यह बात कहकर मुलाक़ातीको चौंका दिया कि हिन्दू-मुस्लिम समस्या आखिर तो छुआछूतके सवालका ही एक अंग है। "जब हिन्दूधर्म पूरी तरह सुधर जायगा और छुआछूतकी आखिरी निशानी भी मिटा देगा, तब कोई क़ौमी सवाल नहीं रह जायगा।"

श्री फिशरने कहा: "मैंने सुना है कि अगरचे चुनावमें कांग्रेसी हरिजनोंकी ग़ैरकांग्रेसी हरिजनोंके खिलाफ़ जीत हुई है, मगर वह हिन्दू-वोटोंकी मददसे ही हो सका है।"

गांधीजीने जवाब दिया: "सवर्ण हिन्दुओंको प्राथमिक चुनावमें चुने हुए हरिजन-उम्मीदवारोंमेंसे कुछको चुननेका हक़ देनेके सिवा मुश्तरका चुनावका और क्या मक़सद हो सकता था? पहले चुनावोंमें हारा हुआ कोई भी उम्मीदवार मुश्तरका चुनावके लिए खड़ा नहीं हो सकता। इसके अलावा, यह कहना सही नहीं है, जैसा कि दावा किया गया है, कि अधिकांश कांग्रेसी हरिजन ग़ैरकांग्रेसी हरिजन-उम्मीदवारोंके खिलाफ़ सवर्ण हिन्दुओंके वोटके बल पर ही जीत सके। मद्रासमें प्रायः सब-के-सब ग़ैरकांग्रेसी हरिजनोंको — जहाँ-जहाँ भी वे पहले चुनावोंके लिए खड़े हुए — मुँहकी खानी पड़ी। ज़्यादातर कांग्रेसी हरिजन बिना विरोधके चुन लिए गये।"

श्री फिशरने कहा: "उनमेंसे कुछ जुदागाना चुनाव (पृथक् निर्वाचन) चाहते हैं।"

"हाँ, लेकिन हमने इसका विरोध किया है। जुदागाना चुनावके ज़रिये वे अपने-आपको हिन्दू धर्मके दायरेसे बाहर रखते हैं, और अमंगलकारी (बदशगुनवाले) वर्ण-भेदको जारी रखते हैं।"

"यह सच है। मगर वे कह सकते हैं कि हिन्दुओंने उन्हें किसी तरह अपने दायरेसे पहले ही बाहर कर रक्खा है।"

"लेकिन आज तो हिन्दू अपने इस पापका प्रायश्चित्त कर रहे हैं।"

"क्या उनका यह प्रायश्चित्त (पछतावा) काफ़ी है?"

"मुझे यह कहते हुए दुःख है कि उनका प्रायश्चित्त अभी काफ़ी नहीं हुआ है। अगर उन्होंने उचित प्रायश्चित्त किया होता, तो, जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हूँ, आज छुआछूत और क़ौमी सवालका नाम-निशान मिट गया होता।"

श्री फिशरने आगे पूछा: "क्या हिन्दुओं और मुसलमानोंका समाजी सम्बन्ध इनसे कम है?"

"नहीं, बल्कि बात इससे बिलकुल उलटी है। मगर सियासी लिहाज़से हिन्दू-मुसलमानोंके बीच एक दीवार खड़ी हो गई है, जिसका श्रेय लॉर्ड मिण्टोको है।"

आपसी बरताव का नीतिशास्त्र

चन्द सवाल-जवाबके बाद श्री फिशरने बातचीत का विषय बदलकर कहा: "आपके नौजवानोंकी निगाह हिन्दुस्तान तक ही महदूद है।"

गांधीजीने जवाब दिया: "यह कुछ हद तक ही सही है। मैं यह नहीं कहूँगा कि हम अन्तरराष्ट्रीय बन गये हैं। लेकिन हमने उपेक्षित हितोंकी रक्षाका काम हाथमें लिया है। मसलन्, लुटे-खसोटे गये राष्ट्रोंके हित; क्योंकि हिंदुस्तान .खुद एक खास लुटा-खसोटा गया राष्ट्र है।"

आगे चलकर श्री फिशरने कहा: "हिन्दुस्तानमें गोरोंके खिलाफ़ बढ़ती हुई यह दुर्भावना खतरनाक है। ताज़महल होटलवालोंने एक नोटिस लगा दिया है — 'दक्षिण अफ्रीकावालोंके लिए इजाज़त नहीं।' मुझे यह पसन्द नहीं। आपकी अहिंसा आपसे अधिक उदारताकी उम्मीद रखती है।"

"वह अहिंसा नहीं होगी। आज गोरे लोग हिन्दुस्तानमें राज करते हैं। अगर ताज़महल होटल ऐसा नोटिस लगानेकी हिम्मत करता है, तो यह उसके लिए फ़ख्रकी बात है।"

श्री फिशरके उदार दिलको इससे चोट पहुँची। उन्होंने कहा: "हरएक राष्ट्रवादी यही कहेगा। आपको तो इससे कुछ ज़्यादा उदारता दिखानी चाहिये।"

गांधीजीने दृढ़तासे जवाब दिया: "तो मैं राष्ट्रवादी कहलानेके लिए भी तैयार हूँ। अगर द० अफ्रीका के गोरे हिन्दुस्तानियोंके साथ बराबरीका बरताव नहीं करते, तो उन्हें यहाँ रहनेका कोई हक़ नहीं है।"

फिशरने जवाब दिया: "हाँ, कोई हक़ नहीं। मगर आपको उन्हें उनके हक़से भी ज़्यादा देना चाहिये। आपको उन्हें न्योतना चाहिये।"

"हाँ, जब मैं वाइसराय बनूँगा।"

"क्या आपका मतलब हिन्दुस्तानी प्रजातंत्र के प्रेसिडेण्टसे है?"

"नहीं। थोड़े वक़्तके लिए वाइसराय बनना ही मेरे लिए बस होगा — एक वैधानिक वाइसराय। वाइसराय होने पर पहला काम जो मैं करूँगा, वह होगा वाइसराय-भवनको खाली करके हरिजनोंको दे देना। तब मैं दक्षिण अफ्रीकाके गोरे मुसाफ़िरोंको अपनी कुटिया पर बुलाऊँगा और उनसे कहूँगा: 'आपने मेरे देशभाइयोंको पीस डाला है। मगर हम आपकी नक़ल नहीं करेंगे। हम आपको आपकी लियाक़तसे ज़्यादा देंगे। हम आपके साथ जंगली बरताव नहीं करेंगे, जैसा कि आप दक्षिण अफ्रीकामें करते हैं।' और इस तरह शरमिन्दा बनाकर हम उन्हें सही रास्ते पर लायेंगे।"

श्री फिशरने कुछ दुःखी होकर कहा: "आज गोरोंके प्रति कितना वैरभाव फैल रहा है!"

"बेशक, मैं इसके खिलाफ़ हूँ। यह वैरभाव किसीके लिए भी फ़ायदेमन्द नहीं है।"

"दुनिया आज इसी तरह बँट गई है। मुमकिन है, एक और लड़ाई हो, और वह लड़ाई रंगीन और गोरी जातियोंके बीच हो।"

"युरोप फिर लड़ाईके लिए तैयार हो रहा है। वह पूरी तरह थका नहीं है।"

"युरोप बुरी तरह थक चुका है। लेकिन अणुबमके आ जानेसे इनसानका अब उतना महत्त्व (अहमियत) नहीं। थोड़े सायन्सदाँ ही क़ाफ़ी होंगे। अगली लड़ाई कुछ बटन दबानेसे ही लड़ी जा सकेगी। इसीलिए रंगभेदकी लड़ाई इतनी खतरनाक है।"

"कायरता सबसे बुरी चीज़ है। वह तो दोहरी हिंसा है।" और अपनी बात को समझानेके लिए गांधीजीने दक्षिण अफ्रीकाके एक भीमकाय (हट्टेकट्टे) नीग्रो पादरीका किस्सा सुनाया। जब एक गोरेने उस पादरीका अपमान किया, तो वह यह कहकर कि 'मुझे माफ़ करना, भाई,' रंगीन लोगोंके डिब्बेमें चुपकेसे खिसक गया। "यह अहिंसा नहीं है। यह तो ईसाकी सीखका मज़ाक है। इससे तो बदला लेना अधिक बहादुरीका काम होता।"

गांधीजीकी दी हुई मिसालकी छानबीन करते हुए श्री फिशरने जवाब दिया: "आपको इस बातकी फ़िक्र नहीं है कि आपका क्या होगा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु दूसरोंका तो डर रहता है न? आपकी बयान की हुई हालतमें अपने अन्दरूनी भावोंको ज़ाहिर करने और गोरेको चपत लगानेके लिए बड़ी लापरवाहीकी ज़रूरत थी। किन्तु हिन्दुस्तानकी स्थिति इससे जुदा है। यहाँ गोरे इतने अधिक नहीं हैं।"

गांधीजीने जवाब दिया: "आप ग़लती पर हैं। यहाँ अगर एक अंग्रेज़ मारा जाता है, तो सारा गाँवका गाँव ज़मींदोज़ कर दिया जाता है। यह कैसा कठोर बदला है!"

पहेली सुलझी

यहाँ आकर पहले दिनकी चर्चा खतम हुई। लेकिन विधान-सभाके बारेमें गांधीजीके रुखको जानकर श्री फ़िशरके मनमें जो उलझनें पैदा हो गई थीं, वे उन्हें अभी तक सता रही थीं। अपने दूसरे दिनकी मुलाक़ातमें श्री फ़िशरने उन्हींकी चर्चा शुरू की।

"अगर दीर्घकालीन प्रस्तावोंके बारेमें आपके मनमें जो अँधेरा छा गया था, या जिसे आप अन्तःप्रेरणा कहते हैं, उस परसे वर्किंग कमेटीने अपनी राय बदली होती, तो क्या वह उन प्रस्तावोंको नामंज़ूर कर देती?"

गांधीजीने जवाब दिया: "हाँ, लेकिन मैंने उन्हें ऐसा करनेसे रोका।"

"आप यह कहना चाहते हैं कि ऐसा करनेके लिए आपने ज़ोर नहीं दिया?"

"बल्कि इससे भी कुछ ज़्यादा। मैंने उनसे कहा कि जब तक आप .खुद मेरे जैसा महसूस न करें, आपको मेरी प्रेरणाके मुताबिक़ कोई क़दम नहीं उठाना चाहिये। क्या हुआ होता, इसके बारेमें अटकलें लगानेसे कोई फ़ायदा न होगा। लेकिन फिर भी यह बात तो सही है कि डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादने मुझसे पूछा था: 'क्या आपकी अन्तःप्रेरणा इतनी मज़बूत है कि आपकी बातको न समझने पर भी आप हमें विधान-सभामें जानेसे रोकेंगे?' मैंने कहा: 'नहीं। आपकी बुद्धि जैसा कहे, वैसा करिये। क्योंकि मेरी बुद्धि भी मेरी प्रेरणाकी ताईद नहीं करती। मेरी प्रेरणा मेरी बुद्धिके खिलाफ़ बगावत करती है। अपना डर मैंने आपके सामने इसलिए रख दिया कि मैं आपके प्रति वफ़ादार रहना चाहता हूँ। मैंने .खुद भी अपनी प्रेरणाके अनुसार तब तक कोई काम नहीं किया जब तक उसे बुद्धिका सहारा न मिल गया।'"

"लेकिन आपने कहा है कि कुछ खास मौक़ों पर आप अपनी प्रेरणाके अनुसार काम करते हैं, जैसा कि आपने अपने कुछ उपवासके मौक़ों पर किया था।"

"हाँ, लेकिन इन मौक़ों पर मैंने तब तक उपवास शुरू नहीं किया, जब तक बुद्धिने मेरी प्रेरणाको स्वीकार नहीं कर लिया। दीर्घकालीन प्रस्तावोंके बारेमें बुद्धिने मेरी प्रेरणाका साथ नहीं दिया।"

"तो फिर आपने अपनी 'प्रेरणा'को सियासी दुनियामें लाकर क्यों खड़ा कर दिया?"

"क्योंकि मैं अपने दोस्तोंके प्रति वफ़ादार था। मैं कैबिनेट मिशनकी नेकनीयती पर विश्वास बनाये रखना चाहता था। इसलिए मैंने मिशनवालोंको भी अपना अँदेशा ज़ाहिर कर दिया था। मैंने अपनेसे कहा: "मान लो कि उनकी नीयत बदल गई, तो वे .खुद शर्मिन्दा होंगे।"

"अब तो आप विधान-व्यवस्थाके पक्के हिमायती बन गये हैं। क्या इसकी वजह यह है कि आप दूसरे मार्गको अपनाने पर होनेवाली हिंसासे डरते हैं?" श्री फ़िशरने आखीरमें पूछा।

"नहीं। अगर हिन्दुस्तानको .खूनखच्चरसे गुज़रना ही है, तो वह ऐसा करेगा। मुझे सिर्फ़ अपनी कायरता या बेईमानीका डर रहता है। मगर ये दोनों बुराइयाँ मुझमें नहीं हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि हमें विधान-सभामें जाकर विधान (आईन) बनाना चाहिये। अगर अंग्रेज़ बेईमान होंगे, तो उनकी कलई खुल जायगी। नुक़सान हमारा नहीं, बल्कि उन्हींका होगा।"

"मेरा ख़याल है कि आप हिंसाकी स्पिरिटसे डरते हैं। लेकिन वह तो चारों तरफ़ फैल गई है। मुझे डर है कि हिंसाकी स्पिरिटने मुल्कके नौजवानों पर जादू डाल दिया है। आप इसे जानते हैं और इससे डरते हैं।"

"हिंसाकी स्पिरिटने सारे मुल्क पर अपना अधिकार नहीं जमा लिया है। मैं क़बूल करता हूँ कि उसने कुछ नौजवानोंको अपना शिकार बना लिया है।"

"यह एक ऐसी वृत्ति है, जिसका मुक़ाबला करनेकी ज़रूरत है।"

"हाँ, मैं अपने ढंगसे इसे कर रहा हूँ। मेरा यह पक्का विश्वास है कि यह उस बची हुई हिंसाकी निशानी है, जो वक़्त आने पर .खुद अपनी मौत मर जायगी। वह ज़्यादा दिन तक जी नहीं सकती। यह हिन्दुस्तानके स्पिरिटके बहुत खिलाफ़ है। लेकिन किसी वक़्तासे क्या होना है? मैं एक ऐसी हस्तीमें विश्वास करता हूँ, जो जानी नहीं जा सकती और जो हमारी तक़दीरको बनाती या बिगाड़ती है — आप चाहे उसे ईश्वर कहिये या और किसी नामसे पुकारिये। मेरी दलील तो सिर्फ़ यही है कि मैं हिंसाके डरसे मुल्कको विधान-सभामें जानेकी सलाह नहीं देता। अहिंसक बग़ावतकी जगह किसी बा-इज़्ज़त (सम्माननीय) एवज़को, उसके मिलने पर, नामंज़ूर करना अहिंसाकी भावनाके खिलाफ़ है, वह उसे शोभा नहीं देता।"

पंचगनी, २७-७-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

खादी-कार्यकर्त्ता

खादीका काम करनेवालोंके बारेमें दो सवाल मुझसे पूछे गये हैं। एक उनके गाँवोंमें काम करनेके बारेमें है। उनका यह खास फ़र्ज़ (स्पष्ट धर्म) है कि सूत कातने और कतवानेमें ही वे अपना खास वक़्त दें। आजकी कल्पनामें तो कपास पैदा करनेसे लेकर खादी बुनने तककी क्रियाका समावेश हो जाता है। खादी-कार्यकर्त्ता अगर इन कामोंको अक़्लमन्दीसे कर सकें और साथही चरखे, तकुए वग़ैरा भी दुरुस्त कर सकें, तो इससे उनकी कमाई या उनके सिखानेके काममें किसी तरहकी अड़चन नहीं हो सकती। इसीके साथ और इसे नुक़सान पहुँचाये बिना वे स्वास्थ्य और सफ़ाईका काम भी करें। शिक्षण (तालीम) तो उद्योग-धन्धेकी मारफ़त ही दिया जा सकता है, इसलिए मैं उसे खादीके कामसे अलग नहीं मानता। जो तालीम लेंगे, वे खादी ही पहनेंगे और खादी-कामकी मारफ़त ही तालीम लेंगे।

दूसरा सवाल है कि खादी-कार्यकर्त्ता तनखाह लेकर कबतक काम कर सकते हैं? मेरी निगाहसे तो उन्हें शुरूसे ही स्वावलम्बी बनना चाहिये। लेकिन ऐसा न हो सके, तो उन्हें इसके लिए कोई मुद्दत क़ायम कर लेनी चाहिये। मैं इसके लिए पाँच सालकी मुद्दत मान लेता हूँ, और उसमें भी अगर खादी-सेवकको पाँच सालके आखीरमें स्वावलम्बी बनना हो, तो उसे अपनी तनखाहमें हर साल कमी करते ही जाना चाहिये। कोई एकदम पाँच सालके आखिरमें स्वावलम्बी नहीं बन सकता। यह भी एक कला है। उसमें विचार और योजनाकी ज़रूरत है। जो दूसरेको ईमानदारीसे स्वावलम्बनका पाठ पढ़ायेगा, वह .खुद तो स्वावलम्बी बनना सीखेगा ही।

पंचगनी, २८-७-'४६

('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

			पृष्ठ
पहले .खुद कूदो	...	गांधीजी	२४५
हरिजन-सेवक-संघकी कसौटी	...	प्यारेलाल	२४६
९ अगस्त	...	गांधीजी	२४८
सवाल-जवाब	...	गांधीजी	२४८
चार सालके बाद	...	प्यारेलाल	२५०
खादी-कार्यकर्त्ता	...	गांधीजी	२५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हड़तालें

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

८ पृष्ठ
दो आना

सम्पादक : प्यारेलाल

भाग १० | अंक २७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ११ अगस्त, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

डॉक्टरोंकी टीका

(१) क्या यह एक आम तजरबा नहीं कि डॉक्टरोंकी तशख़ीस या निदान कोई पक्की चीज नहीं होती? कई दफ़ा एक ही मरीज़के बारेमें उनकी राय अलग-अलग होती है, और बहुतोंके लिए तो कोई तशख़ीस उस वक़्त तक क़ायम ही नहीं होती, जब तक कि वे अच्छे न हो जायँ या मर न जायँ?

(२) मान लीजिये कि तशख़ीस या निदान सही हो, तो भी उससे फ़ायदा क्या, अगर बादमें बीमारीका इलाज ऐसा न हो, जिससे बीमार तन्दुरुस्त हो जाय? इस बारेमें इन लोगोंकी डॉक्टरी किताबोंमें भी कोई एक तयशुदा राय नहीं मिलती। अगर हमें सिर्फ़ .कुदरती इलाज पर चलना है, तो तशख़ीसकी ज़रूरत ही क्या? क्योंकि .कुदरती इलाजमें यह माना गया है कि तमाम बीमारियोंकी जड़ एक है, जब कि डॉक्टर तो बीमारियोंके सैकड़ों नाम गिनाते हैं और उनमें यक़ीन रखते हैं।

(३) एक ऑपरेशन या चीरफाड़की बातको छोड़कर अपनी दवाओंका इलाज तजवीज़ करनेमें डॉक्टर लोग अपने शरीर-सम्बन्धी ज्ञानका क्या उपयोग करते हैं? अगर नहीं करते, तो उन्हें इस बातका श्रेय क्यों मिलना चाहिये कि किसी वक़्त उन्होंने फ़ीज़ियोलॉजी और एनॉटमीका यानी शरीर-शास्त्र और शरीररचना-विज्ञानका इल्म हासिल किया था? क्योंकि रोज़मर्राके अमलमें न आनेसे वे इन विषयोंकी सब बातोंको जल्दी ही भूल जाते हैं। ऐसी हालतमें वैद्योंको ही महज़ इस लिए क्यों बुरा-भला कहा जाय कि वे त्रिदोषके बारेकी अपनी जानकारीका इस्तेमाल असलमें बहुत कम — नहीं के बराबर — करते हैं?

(४) वैद्योंमें जो ख़ामियाँ या कमियाँ बताई जाती हैं, क्या असलमें उनकी वजह सरकारका अपना रुख और रवैया नहीं? सरकारने वैद्योंकी तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, और न उनके लिए संशोधन या खोजके ज़रिये ही मुहैया किये। ऐसी हालतमें आयुर्वेदको ही क्यों बुरा कहा जाय, जब कि क़सूर सरकारका या व्यक्तिका है? जो डॉक्टर निजी धन्धा यानी प्राइवेट प्रैक्टिस करते हैं, उन्हें भी खोज या रिसर्चके मौक़े कहाँ मिलते हैं? और उनमेंसे बहुत कम ऐसे हैं, जो दूसरे मुल्कोंमें होनेवाली खोजोंके बारेमें पढ़ते हों।

(५) आप अपने शरीरका मुआयना यानी डॉक्टरी परीक्षा बार-बार डॉक्टरोंसे ही करवाते हैं। क्या इसकी वजहसे डॉक्टरोंको लोगोंकी निगाहमें एक ऐसी शोहरत और बड़प्पन नहीं मिलता, जो बेजा है और जिसके वे हक़दार नहीं? इससे इलाजकी दूसरी पद्धतियों या तरीक़ोंको गौण जगह दी जाने लगती है, जब कि ख़ासकर इन दूसरे तरीक़ोंका आप पर ज़्यादा नहीं तो बराबरीका हक़ होना चाहिये।

श्री ब्रजलाल नेहरूने ये सवाल पूछे हैं। मेरे जवाब यों हैं:

(१) इस सवालमें जो बात कही गई है, वह बिलकुल सही है। लेकिन फिर भी डॉक्टर तो फूलते-फलते ही नज़र आते हैं। यह एक अजीब बात है, जिस पर हम सबको ग़ौर करना चाहिये।

(२) मेरा तजरबा तो यह है कि जहाँ तशख़ीस या निदान ठीक होता है, वहाँ इलाज भी उसीके मुताबिक़ किया जाता है। महज़ इस बिना पर डॉक्टरी किताबोंकी नुक्ताचीनी करना कि उनमें एक ही बीमारीके लिए अलग-अलग इलाज दिये गये हैं, बिलकुल ग़लत है। इनसानके जिस्मकी बनावट इतनी पेचीदा है कि उसके लिए कोई एक ही इलाज चल नहीं सकता। और यह कहना भी ग़लत होगा कि .कुदरती इलाजमें तशख़ीसकी ज़रूरत ही नहीं। दोनोंमें फ़र्क़ यह है कि चूँकि .कुदरती इलाजमें एक ही चीज़को सब बीमारियोंकी जड़ माना गया है, और इलाज भी पाँच महाभूतोंकी मददसे ही किया जाता है, इसलिए उसमें तशख़ीस या निदान आसान होता है। लेकिन ऐसा तो आम उसूलके तौर पर ही कहा जा सकता है। असलमें .कुदरती इलाज करनेवाला कोई आदमी बिना सोचे-समझे हरएक बीमारीके लिए मिट्टीके पुल्टिसकी तजवीज़ नहीं करेगा।

(३) यह कहना कि डॉक्टर लोग शरीरके गुण-धर्म बतानेवाले शास्त्रकी और शरीरकी बनावटके शास्त्रकी जानकारीका कोई उपयोग नहीं करते, उनके साथ घोर अन्याय करना है। निदानके मामलेमें वैद्यों और डॉक्टरोंके तरीक़े एक-दूसरेसे बिलकुल जुदा होते हैं, इसलिए उनकी कोई तुलना करनी ही न चाहिये। त्रिदोष-पद्धतिके महत्त्वके बारेमें मैं कुछ भी नहीं जानता।

(४) मैं नहीं मानता कि आयुर्वेदमें रिसर्च या संशोधनकी संस्थायें खड़ी न करनेमें सरकार ही क़सूरवार है। असली संशोधन या खोजके मामलेमें हमारे वैद्य बहुत लापरवाह रहे हैं, और इसके लिए मैंने बार-बार उन पर इलज़ाम लगाया है। उनमेंसे जो ऊँची लियाक़तवाले हैं, वे सब रुपया कमानेमें लगे हुए हैं। बाक़ीके इतने अज्ञान हैं कि वे इस मामलेमें कुछ कर ही नहीं सकते, या फिर ऐसे हैं कि आयुर्वेदकी पुरानी किताबोंमें जो कुछ मिल जाता है, उसीसे संतोष कर लेते हैं। मुझे यह कहते हुए दुःख होता है, लेकिन बावजूद इसके कि मेरे दिलमें आयुर्वेद और यूनानी हिकमतके लिए बहुत इज़्ज़त है, मैं इस राय पर पहुँचा हूँ। ये दोनों हिकमतें हमारे देशकी हैं और चुनाँचे दोनों हमारे लिए मुफ़ीद भी हैं।

(५) मैं नहीं मानता कि जो डॉक्टर बार-बार मुझे देखते हैं, उसकी वजहसे उन्हें कोई ख़ास या बेजा शोहरत मिलती है। उन्हें इस चीज़की ज़रूरत ही क्या? मेरी शारीरिक परीक्षा करनेसे बहुत पहले वे अपनी दुनियामें ख़ासा नाम कमा चुके थे। और, न ही इसकी वजहसे दूसरे किन्हीं तरीक़ोंको धक्का पहुँचता है। बहुतसे वैद्य और हकीम मेरे दोस्त हैं। लेकिन उनको लम्बी-चौड़ी या बार-बारकी तशख़ीस ज़रूरी नहीं मालूम होती। हाँ, मैं डॉक्टरोंसे अपनी जाँच करवा लेता हूँ, और अफ़सोस है कि यह ख़बर अख़बारोंमें छप जाती है, लेकिन मैं उनकी दवा नहीं लेता। मेरा इलाज तो ख़ासकर पाँच महाभूतोंकी और मालिश व .ख़ूराककी तब्दीलीके ज़रियोंसे ही होता है।

मेरे दिलमें .कुदरती इलाजके लिए और देसी हिकमतोंके लिए जो प्रेम या मुहब्बत है, उसका यह मतलब नहीं कि पच्छिमके मुल्कोंने डॉक्टरीके हुनरमें जो तरक़्क़ी की है, उसे मैं देख नहीं सकता, गोकि मैंने सख़्त लफ़्ज़ोंमें उसकी टीका की है और उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिकमतको 'जादू-टोने' का नाम दिया है और अब भी देता हूँ। वजह इसकी यह है कि उन्होंने अपने इलाजमें ज़िन्दा चीरफाड़को और उसके साथकी तमाम बेरहमीको जगह दी है। दूसरे, वे इनसानकी ज़िन्दगीको बढ़ानेके लिए सब तरहके काम, फिर वे कितने ही बुरे क्यों न हों, करनेके लिए तैयार रहते हैं और शरीरके अन्दर रहनेवाली आत्माको बिलकुल भूल गये हैं। मैं नैसर्गिक उपचारको कभी छोड़ नहीं सकता, फिर वह कितना ही मर्यादित क्यों न हो, और उसके डॉक्टर उसके बारेमें कितने ही झूठे और निकम्मे दावे क्यों न करते हों। सबसे बड़ी बात यह है कि क़ुदरती इलाजमें आदमी ख़ुद अपना डॉक्टर बन सकता है, दूसरी हिकमतोंमें यह नामुमकिन है।

उरुळी कांचन, ४-८-'४६

('हरिजन' से) मोहनदास करमचंद गांधी

गन्दगीकी हद

पंचगनी एक अच्छा पहाड़ी मुक़ाम है। वहाँकी हवा ही दवा समझिये। जिस तरह गर्मीके मौसिममें राजा-महाराजा मौज उड़ाने मसूरी जाते हैं, उस तरह पंचगनीमें नहीं आते। फिर भी वह ग़रीबोंकी जगह नहीं। अब अगर वहाँ एक मकान उनके लिए मिल गया है, तो उससे किसीको ताज्जुब नहीं होना चाहिये। मगर जिस तरीक़ेसे आज वहाँ मैला फैलाया जाता है, वह तरीक़ा क़ायम रहा, तो पंचगनी ज़्यादा दिन तक आरोग्यप्रद स्थान नहीं रह सकेगा। सुना है कि महाबलेश्वरकी भी ऐसी ही हालत है। मैं समझता हूँ कि इसमें क़सूर हमारा अपना है, सरकारका नहीं। कुछ डॉक्टरोंने मुझसे कहा है कि हम लोग किसी हद तक अपनी सफ़ाई रखना तो जानते हैं, लेकिन समाजमें सफ़ाई रखनेके नियमोंका हमें ज़रा भी इल्म नहीं। हमें अफ़सोसके साथ क़बूल करना पड़ेगा कि यह टीका सच है। इसकी मिसालके तौर पर मैं नीचे डॉ० दिनशा मेहताका बयान देता हूँ, जो उन्होंने पंचगनीमें मैलेके इन्तज़ामकी ख़राबीके बारेमें दिया है। यह बयान मैं इस उम्मीदसे दे रहा हूँ कि थोड़े वक़्तमें हमारी शरमका यह कारण दूर हो जायगा।

"बापू,

"आज सुबह मैं वह जगह देख आया, जहाँ पंचगनीका मैला डाला जाता है। डॉ० सावन्त मुझे ले गये थे। यह जगह 'सिडनी पॉइण्ट' के पीछे, सदर रास्तेसे आधमील और पंचगनीके बाज़ारसे क़रीब एक और डेढ़ मीलके बीचमें होगी। पारसी लड़कोंके स्कूलके सामनेसे यह रास्ता जाता है और आज तो पाख़ानेकी बदबू क़रीब-क़रीब इस स्कूल तक आ रही थी, क्योंकि हवा उसी तरफ़से आ रही थी और ज़ोरकी थी। 'सिडनी पॉइण्ट' से वहाँका दृश्य या नज़ारा बहुत अच्छा नज़र आता है और अगर पाख़ानेकी बदबू न आये, तो हवा बहुत अच्छी है। लेकिन मालूम होता है कि आजकल वहाँ कोई जाता नहीं। वहाँ तक जानेके लिए छोटी मोटरके लायक़ रास्ता बनाया गया है, लेकिन फ़िलहाल उस रास्ते पर घास उगी हुई है। पॉइण्टके नीचे दो बँगले हैं। मगर मुझसे कहा गया कि वहाँ कोई रहना नहीं चाहता, क्योंकि वहाँ बदबू, मक्खी और मच्छर बहुत हैं।

"कूड़ा-करकट तो वहाँके रास्तेकी एक बाज़ूमें ही डाल दिया जाता है। वहाँ कूड़े-करकटके काफ़ी बड़े ढेर लगे हुए हैं। ऐसी जगहमें मक्खियाँ और दूसरे जन्तु पैदा न हों, तो वह सचमुच ही एक अचम्भेकी बात होगी।

"कूड़े-करकटवाली जगहसे कुछ ही दूर पर गड्ढोंमें पाख़ाना पड़ा देखा। ऐसे कोई चार गड्ढे क़रीब १०×५×३के मैलेसे भरे दिखाई पड़े। दूसरे कुछ ख़ाली पड़े थे। मुझसे कहा गया कि अक्सर मेहतर लोग मेहनत बचानेके लिए मैलेको गड्ढोंके बाहर ही उँड़ेल देते हैं और जब इस बारेमें या दूसरे किसी मामलेमें उनसे कुछ भी कहा जाता है, तो वे सब मिलकर हड़ताल कर देते हैं। इससे म्युनिसिपैलिटीको और पंचगनीके शहरियोंको उनके सामने झुकना पड़ता है। वे बाहरके मेहतरोंको आने नहीं देते।

"इन घूरोंका और वहाँकी उस गन्दगीका वह दृश्य अभी तक मेरी आँख और नाकसे दूर नहीं हुआ है। वहाँ जानेवालेको अपनी आँख और नाककी ख़ास तैयारी करके ही जाना चाहिये। और वहाँसे आनेके बाद नहाकर मन और पेटको शान्त करनेके लिए सो जाना चाहिये, वरना डॉक्टरकी ज़रूरत पड़ेगी।

"इस हालतको सुधारनेके लिए मुझे नीचे लिखी बातें सूझती हैं —

"(१) कूड़ा-करकट और मैला गड्ढोंमें ही डाला जाय और जब डाला जाय, तभी उस पर उससे दूनी मिट्टी डाली जाय। इतना तो कम-से-कम करना ही चाहिये।

"(२) या सबको 'इन्सिनरेटर' में यानी भट्टीमें जला डाला जाय।

"(३) वहाँ 'सेप्टिक टैन्क' बनायें जायँ और उनकी खाद व पानीका इस्तेमाल करनेके लिए वहीं आम रिआयाके कामकी साग-सब्ज़ी उगाई जाय और दूसरे पेड़-पौधोंका बग़ीचा लगवाया जाय।

"(४) हरएक बंगलेके मालिकके लिए 'सेप्टिक टैन्क' बनाना लाज़िमी कर दिया जाय और मैलेको नीचे बहानेके लिए नहानेके पानीका इस्तेमाल किया जाय। इस तरहके टैन्कोंके नमूनेके नक़्शे फ़ौजी ठेकेदारोंसे मिल सकते हैं। इस तरह फ़्लशके लिए दूसरा पानी न मिले, तो भी काम चल सकता है। मेरे ख़यालमें इसके लिए नहानेका पानी काफ़ी हो सकता है और काम दे सकता है।

"(५) पक्की गन्दी नालियोंकी और पम्पिंग स्टेशनकी तजवीज़ भी करनी होगी। मगर उसके लिए काफ़ी पानीका मिलना ज़रूरी है। इसके लिए पंचगनीमें पानीकी जो स्कीम बनी है, उस पर पहले अमल किया जाना चाहिये। यह स्कीम पंचगनीकी म्युनिसिपैलिटीसे मिल सकती है। इसकी तफ़सील बादमें मालूम करके लिखूँगा।

"यह पाँचवीं सूचना सबसे अच्छी है, लेकिन ख़र्चीली है और इसमें वक़्त भी लगेगा। इसीलिए मेरी राय है कि शुरूमें पहले या दूसरे सुझाव पर फ़ौरन अमल किया जाय।"

पूना, १-८-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

कपड़ेकी तंगी

श्री मनु सूबेदार खादीमें और दूसरे ग्रामउद्योगोंमें रस लेते हैं। उन्होंने मुझे नीचे लिखा नोट कुछ दिन पहले भेजा था। मैंने उसे छापनेमें देर की, क्योंकि मैं चाहता था कि हो सके तो 'हरिजन' में छापनेके बनिस्बत उसका कोई ज़्यादा असरकारी इस्तेमाल करूँ। मगर मुझे वह सूझा नहीं। सो इसे छापता हूँ, ताकि सूबोंकी सरकारें, इस बारेके जानकार शख़्स और संस्थायें (जमायतें) इस पर अमल कर सकें, भले ही उनका क्षेत्र कितना ही छोटा क्यों न हो।

श्री मनु सूबेदारकी तजवीज़ यह है:

"हरएक देहातको एक बेल या गाँठ रूईकी दी जाय। देहातके लोग उसे कातकर सूत तैयार करें। सूतको तानेके लिए दुबटा किया जाय या बानेके लिए ऐसे ही इस्तेमाल किया जाय।

"एक गाँठ रूईमेंसे २४०० या १८०० गज कपड़ा (सूतके नम्बरके मुताबिक़) तैयार होगा।

"जहाँ तकलियों या चरखोंकी ज़रूरत हो, सरकार उसे पूरा करे (चरखे और तकलियाँ बनानेका इन्तज़ाम जेलोंमें किया जाय)।

"कपड़ा तैयार होने पर हरएक देहातीको उसका हिस्सा मापकर दिया जाय।

"इन देहातोंमें जहाँ कहीं किसानोंके पास फ़ालतू अनाज हो, और अनाज इकट्ठा करनेकी ज़रूरत समझी जाय, वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनाजके बदलेमें कपड़ा दिया जाय। दूसरी जगहों पर रूईकी क़ीमत चुकानेके लिए देहाती पैसे इकट्ठे करें। इसका मतलब यह होगा कि लोगोंको रूईके दाम कपड़ा मिल जायगा। (शुरूमें रूईकी क़ीमत सरकार चुकायेगी)।

"इस तरहसे कपड़ेकी तंगी कम हो जायगी और फ़ालतू रूई भी काममें आ जायगी। कपास बोनेवालोंको इससे मदद मिलेगी।

"गाँवके पंचको रूईका क़ब्ज़ा लेना होगा और उसे बाँटने, कतवाने, बुनवाने वग़ैराका सारा इन्तज़ाम करना होगा। इस तरहसे हरएक गाँवमें—

(१) ग्रामउद्योगोंका काम शुरू होगा,
(२) लोग मिल-जुलकर काम करना सीखेंगे,
(३) बड़े-छोटे सब मेहनत करनेमें हिस्सा लेंगे,
(४) दलालको कोई स्थान नहीं रहेगा।

"अगर शुरूमें बम्बई इलाक़ेके ही २० हज़ार या सिर्फ़ २ हज़ार गाँवोंमें ही यह प्रयोग (तजरबा) किया जाय, तो ६ हफ़्तोंमें नतीजा देखा जा सकेगा।

"सरकारको एक बेल पर २२५ रुपयेके हिसाबसे खर्च करना होगा। इसमेंसे बहुतसा रुपया तो अनाज या रुपयेके रूपमें वापिस आ जायगा और इस तरह देहाती अपनी मदद .खुद करना सीखेंगे।

"जहाँ पर करघे न हों या जहाँ कता हुआ सूत ताने और बाने दोनोंके लिए इस्तेमाल न हो सके, वहाँ मददकी ज़रूरत पड़ सकती है। मगर यह तो कामको संगठित करनेकी तफ़सीलकी बात हुई। ऐसी चीज़ोंके बारेमें तो हरएक ज़िलेमें, जिस आदमीके हाथोंमें यह काम सौंपा होगा, वह सोच लेगा।

"जब किसी देहातसे रूईकी बेलकी क़ीमत वसूल हो जाय, तो सरकार वहाँ एक दूसरी बेल भेज दे।"

इतना यहाँ और कह दूँ कि मैंने जो योजना सुझाई है, उसमें और इसमें थोड़ा फ़र्क़ है। मेरे ख़यालमें पहली शायद ज़्यादा अच्छी है, मगर मेरे पास श्री मनु सूबेदारके नोटकी क़ीमत ज़्यादा है। उन्होंने सब आँकड़े दिये हैं, एक बेलसे काम करनेका तरीक़ा सुझाया है, और इससे भी बढ़कर एक अर्थशास्त्री होनेके नाते उन्होंने अपनी योजना मुझसे स्वतंत्र बनाई है। इनसानकी बनाई हुई हरएक योजनामें नुक़्स निकालना तो आसान काम है। हमारा काम तो यह है कि अगर हो सके तो नुक़्स दूर करें और अगर कुछ ऐसे नुक़्स रह जाते हैं जो दूर नहीं हो सकते, तो उनके बावजूद काम शुरू कर दें। अगर हम संपूर्णताकी राह देखते रहे, तो कोई सुधार हो ही नहीं सकता।

पंचगनी, २५–७–'४६
('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

नैसर्गिक उपचारका अर्थ

(.क़ुदरती इलाजके मानी)

काफ़ी लोग नैसर्गिक उपचार सीखनेके लिए उरुळी कांचन आना चाहते हैं। मैं उन्हें रोक देता हूँ। उरुळी कांचनमें ट्रस्टकी तरफ़से जो संस्था काम कर रही है, वह ग्रामवासियोंके लिए है। उसके तीन ट्रस्टियोंमें डॉ॰ दिनशा महेता, जहाँगीरजी पटेल और मैं हूँ। डॉ॰ दिनशाको नैसर्गिक उपचारका अनुभव तो काफ़ी है, मगर वह सब शहरमें मिला है। जब वे अपनी ही तरफ़से पूनामें नैसर्गिक उपचार-गृह चलाते थे, तो उसमें ग़रीबोंको भी लेते तो थे, मगर उनका इलाज भी धनिकों जैसा ही होता था। देहातियोंके लिए मेरी कल्पनाके नैसर्गिक उपचारका मतलब यह है कि वह देहातमें जितने देहाती साधन मिल सकें, उनसे, बिजली और बरफ़की मददके बिना, जितना किया जा सके उतना ही किया जाय। यह उपचार यहीं तक महदूद यानी मर्यादित है।

यह काम तो मेरे-जैसेका ही हो सकता है, जो देहाती बन गया है और जिसकी देह शहरोंमें रहते हुए भी जी देहातमें रहता है। इसलिए ट्रस्टियोंने यह काम मेरे सिपुर्द किया है। मैंने काम शुरू तो किया है, लेकिन मेरे पास तैयार आदमी तो हैं नहीं। यह दूसरी बात है कि जब ज़रूरत होती है, तब डॉ॰ दिनशाजीकी मदद ले लेता हूँ। एक डॉ॰ भागवत मिल गये हैं, जिनका मन बिलकुल देहातमें रहता है और जो .खुद बड़ी सादगीसे रहते हैं। डॉक्टर होते हुए भी वे नैसर्गिक उपचारको ही मानते है, किसी क़िस्मकी मज़दूरीसे नफ़रत नहीं करते, न कभी कामसे थकते हैं। दूसरे, जो यहाँ है, वे सब इस कामके लिए नये हैं, लेकिन उनमें काफ़ी सेवाभाव है। मेरे लिए भी काम नया है। श्री दातारने अपना मकान यों ही बरतनेको दे दिया है। वे उसका किराया नहीं लेते, इसलिए काम निभता है, चल रहा है। लेकिन उसमें इतनी गुंजाइश नहीं कि दूसरे नये विद्यार्थियोंको रक्खा जा सके। मैं .खुद उरुळी कांचनमें हमेशा रह नहीं सकता। ईश्वरकी कृपा होगी, तो सालमें छह महीने पूनाकी तरफ़ और छह महीने सेवाग्राममें रहूँगा। इसलिए जो नैसर्गिक उपचार सीखना चाहते हैं, वे जान लें कि आजकी हालतमें किसीके लिए भी उरुळी कांचनमें सीखनेके लिए रहना नामुमकिन है।

अब अपनी कल्पनाके नैसर्गिक उपचारके बारेमें थोड़ा-सा कह दूँ। पिछले अंकोंमें इस पर थोड़ा-थोड़ा लिख चुका हूँ। मगर चूँकि इस विचारका विकास हो रहा है, इसलिए यहाँ यह बता दूँ कि उरुळी कांचनमें उपचारकी मर्यादा क्या है। देहातकी या कहिये कि शहरकी भी व्याधि यानी बीमारी तीन क़िस्मकी होती है—शरीरकी, मनकी और आत्माकी। और, जैसा एकका, वैसा ही अनेकका यानी समाजका। उरुळी कांचनमें ज़्यादातर व्यापारी लोग रहते हैं। एक तरफ़ माँग रहते हैं, दूसरी तरफ़ महार और तीसरी तरफ़ कांचन जातके लोग। कांचन जातके लोगोंके कारण ही इस गाँवका नाम उरुळी कांचन पड़ा है। यहाँ गारुड़ी (मदारी) क़ौमके लोग भी रहते हैं, जिन्हें क़ानूनन् जरायमपेशा माना जाता है। माँग लोग रस्सी वग़ैरा बनानेका धन्धा करते हैं। लड़ाईके दरमियान इनका धन्धा अच्छा चलता था। अब इनका धन्धा गिर गया है, इसलिए ये बहुत तंगीमें रहते हैं। नैसर्गिक उपचारवालोंके सामने सवाल यह पेश है कि माँग लोगोंकी इस बीमारीका, जो छोटी बीमारी नहीं है, क्या करें? समाजके व्यापारी लोगोंको उनका यह रोग मिटाना चाहिये। इसमें दवाख़ानेकी कोई दवा या इलाज काम नहीं दे सकता। फिर भी यह बीमारी कॉलरे या हैजेकी बीमारीसे कम नहीं। उनके चन्द मकान ऐसे हैं जिन्हें जलाना ही चाहिये, लेकिन जलानेसे उनके लिए नये मकान तो नहीं बन जाते। वे बारिशसे कैसे बचें? ठण्डसे कैसे बचें? अपना सामान कहाँ रक्खें? ये सब सवाल पैदा होते हैं। नैसर्गिक उपचारक अपनी आँखें बन्द नहीं कर सकता। गारुड़ी लोगोंका क्या किया जाय? वे जान-बूझकर शौक़की खातिर तो गुनाह नहीं करते। ज़मानोंकी पुरानी उनकी यह आदत हो गई है। इसलिए उनको उर्दूमें जरायमपेशा कहते हैं। इस आदतको छुड़वानेका काम उरुळी कांचनवालोंका है। नैसर्गिक उपचारक इस कामको छोड़ नहीं सकता। नैसर्गिक उपचारकके सामने ऐसी-ऐसी कई समस्यायें (सवाल) पैदा हो जाती हैं। इस तरह विचार करने पर हम देख सकते हैं कि नैसर्गिक उपचारकका काम शुद्ध स्वराज्यका काम बन जाता है, और उसका क्षेत्र भी बहुत विशाल हो जाता है। ईश्वरकी दयासे इसमें सफलता मिल सकती है, बशर्ते कि उरुळी कांचनमें रहनेवाले और काम करनेवाले हम सब सच्चे और आग्रही (मुसिर) रहें।

उरुळी कांचन, ३–८–'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

११ अगस्त १९४६

हड़तालें

अखबारोंमें खबर छपी थी कि डाकवालोंकी मौजूदा हड़तालको मैंने आशीर्वाद दिये हैं, मगर यह सच नहीं है। असल बात यह है कि एक रोज़ कनू गांधी एक डाकियेको मेरे पास नमस्कार करनेके लिए ले आये। उन दिनों हड़ताल शुरू ही हुई थी। डाकियेने मेरे आशीर्वाद माँगे। मैंने उससे कहा कि अगर उनकी हड़ताल वाजिब है और वे सब बिलकुल अहिंसक रहे, तो उन्हें ज़रूर ही कामयाबी मिलेगी। इसका यह मतलब नहीं कि मैंने उनकी इस हड़तालको आशीर्वाद दिया था। मगर मैंने क्या कहा था और डाकवालोंकी हड़ताल जायज़ थी या नाजायज़, इस बहसको अभी छोड़ दें। चूँकि मैं अपने आपको अहिंसक हड़ताल चलानेमें माहिर समझता हूँ, इसलिए मेरा धर्म है कि मैं इस हड़तालके और दूसरी सब हड़तालोंके चलानेवालोंको और आम जनताको भी अहिंसक हड़तालोंकी शर्तें समझा दूँ।

ज़ाहिर है कि बिना वज़नदार वजूहातके हड़ताल होनी ही न चाहिये। नाजायज़ हड़तालको न तो कामयाबी हासिल होनी चाहिये और न ही किसी हालतमें उसे आम रिआयाकी हमदर्दी मिलनी चाहिये।

आम तौर पर लोगोंको यह मालूम ही नहीं हो सकता कि हड़ताल जायज़ है या नाजायज़, सिवा इसके कि हड़तालकी ताईद कोई ऐसे लोग करें, जो ग़ैर-जानिबदार यानी निष्पक्ष हों और जिन पर आम लोगोंका पूरा विश्वास हो। हड़ताली ख़ुद अपने मामलेमें राय देनेके हक़दार नहीं। इसलिए या तो मामला ऐसे पंचके सिपुर्द करना चाहिये, जो दोनों तरफ़के लोगोंको मंज़ूर हो, या उसे अदालती फ़ैसले पर छोड़ना चाहिये। जब इस तरीक़ेसे काम किया जाता है, तो आम तौर पर पब्लिकके सामने हड़तालका मामला पेश करनेकी नौबत ही नहीं आती। अलबत्ता, कभी-कभी यह ज़रूर होता है कि मग़रूर मालिक पंचके या अदालतके फ़ैसलेको ठुकरा देते हैं, या गुमराह मज़दूर अपनी ताक़तके बल मालिकसे ज़बरदस्ती और भी रियायतें पानेके लिए फ़ैसलेको मंज़ूर करनेसे इनकार कर देते हैं। ऐसी हालतमें मामला आम रिआयाके सामने आता है।

जो हड़ताल माली हालतकी बेहतरीके लिए की जाती है, उसमें सियासी या राजनीतिक मक़सदकी मिलावट नहीं होनी चाहिये। ऐसा करनेसे सियासी तरक़्क़ी कभी नहीं हो सकती। बल्कि होता यह है कि अक्सर हड़तालियोंको ही इसका नतीजा भुगतना पड़ता है, चाहे उनकी हड़तालका असर आम लोगोंकी ज़िन्दगी पर पड़े या न पड़े। सरकारके सामने कुछ दिक़्क़तें ज़रूर खड़ी हो सकती हैं, लेकिन उनकी वजहसे हुकूमतका काम रुक नहीं सकता। अमीर लोग रुपया खर्च करके अपनी डाकका बन्दोबस्त ख़ुद कर लेंगे, लेकिन असल मुसीबत तो ग़रीबोंको झेलनी पड़ती है, जिनकी पीढ़ियोंसे चली आई एक अहम सहूलियत बन्द हो जाती है। ऐसी हड़तालें तो तभी करनी चाहिये, जब इन्साफ़ करानेके दूसरे सब ज़रिये नाकाम साबित हो चुके हों। आज तो सब सूबोंमें लोगोंकी अपनी सरकारें काम कर रही हैं। हड़ताल करनेसे पहले डाकवालोंका धर्म था कि वे उनके साथ मशविरा करते। जहाँ तक मैं जानता हूँ, सरदार वल्लभभाई पटेल, श्री बालासाहब खेर और श्री मंगलदास पकवासा इस मामलेके बीचमें पड़े हैं। अगर डाकवालोंने उनकी सलाहको ठुकरा दिया है, तो कहना होगा कि उन्होंने यह खतरनाक क़दम उठाया है। अगर ये सब ताक़तवर यूनियनें अपनी निजकी हुकूमतका और कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीके मेम्बरोंका कहना न सुनेंगी, तो इसके मानी ये होंगे कि वे कांग्रेसको भी नहीं मानतीं। उन्हें ऐसा करनेका हक़ तभी हो सकता है, जब कांग्रेस उनके स्वार्थको बेचने लगे।

हमदर्दी दिखानेके लिए भी दूसरों को उस वक़्त तक हड़ताल नहीं करनी चाहिये, जब तक यह साबित न हो जाय कि हड़तालियोंने सभी क़ानूनी और जायज़ ज़रियोंको आज़मा लिया है और उसमें वे नाकाम रहे हैं, या यह साबित न हो जाय कि कांग्रेसने उन्हें धोखा दिया है, या उनके हितकी खबरदारी नहीं रक्खी है, या ख़ुद कांग्रेसने संगदिल और ज़िद्दी मालिकोंसे इन्साफ़ पानेके लिए हमदर्दीमें हड़ताल करनेकी आवाज़ न उठाई हो।

आज तो हुकूमतको बेकार बनानेके लिए सारे मुल्कमें हड़तालें करानेकी बात सुनी जाती है। हड़तालके ज़रिये हुकूमतको बेकार बनानेका यह क़दम एक आख़िरी सियासी क़दम है और यह क़दम उठानेका हक़ सिर्फ़ कांग्रेसका ही होना चाहिये, दूसरी किन्हीं यूनियनोंका नहीं, फिर वे कितनी ही ताक़तवर क्यों न हों। अगर आज़ादी हासिल करनेके लिए कांग्रेस ही आम लोगोंकी सबसे बड़ी और अहम संस्था है, तो हुकूमतको बेकार बनानेका काम भी उसीके हाथमें रहना चाहिये। फ़िलहाल कांग्रेस तजवीज़शुदा विधान-सभाको कामयाब बनानेकी कोशिशमें लगी हुई है। उसे इस काममें बेहद मुश्किलें पेश आनेवाली हैं। ऐसी हड़तालोंसे उसके रास्तेमें बहुत ज्यादा रुकावटें पैदा हो सकती हैं।

ऊपरकी इन बातोंसे यह ज़ाहिर है कि सियासी हड़तालोंकी अपनी अलग जगह है और उनको माली हड़तालोंके साथ न तो मिलाना चाहिये और न उनका आपसमें वैसा कोई रिश्ता रक्खा जाना चाहिये। अहिंसक लड़ाईमें सियासी हड़तालकी अपनी एक खास जगह होती है। ऐसी हड़ताल गहरे सोच-विचारके बाद ही की जाती है — जब-तब और ज्यों-त्यों नहीं। ऐसी हड़तालें बिलकुल खुली होनी चाहिये और उनमें गुण्डाशाहीकी कोई गुंजाइश न रहनी चाहिये। उनकी वजहसे कहीं किसी तरहकी हिंसा नहीं होनी चाहिये। इसलिए सब तरहके हड़तालियोंको मैं नरमीके साथ यह सुझाना चाहता हूँ कि वे पंचके या अदालतके फ़ैसलेको मंज़ूर करनेका साफ़-साफ़ ऐलान करें और कांग्रेसकी रहनुमाई हासिल करके उसकी सलाह पर चलें। और, जो लोग हमदर्दी दिखानेके लिए हड़ताल करते हैं, उनसे मैं कहूँगा कि वे तब तक अपनी हड़तालें बन्द रक्खें, जब तक कांग्रेस तजवीज़शुदा विधान-सभाके कामको सफल बनानेकी कोशिशमें लगी है, और सूबोंकी सरकारें आम लोगोंके नुमाइन्दोंके हाथमें हैं।

उरुळी कांचन, ३-८-'४६

('हरिजनसे')

मोहनदास करमचंद गांधी

शराबके बारेमें कहावतें

श्री जे० गिलख्रिस्ट लॉसनने दुनियाकी बढ़िया-से बढ़िया कहावतों और वचनोंका संग्रह किया है। उनमेंसे कुछ नीचे दिये जाते हैं:

'समन्दरके मुक़ाबले शराबने ज्यादा लोगोंको डुबाया है।'

'शराबख़ोरीका बढ़िया-से-बढ़िया इलाज यह है कि बिना नशा किये इनसान नशेबाज़की हालतको देखे।' (चीनी)

'जब शराब शरीरमें जाती है, तो बुद्धि उससे बाहर निकल आती है।' (इटालियन)

'लड़ाईका शैतान जितनोंको मारता है, शराबका शैतान उनसे ज्यादा लोगोंको मारता है।' (जर्मन)

'अगर इनसान सिर्फ़ पानी पीये, तो वह न तो बीमार पड़े, न क़र्ज़दार बने और न उसकी औरत बेवा बने।' (नीग्रो)

'शराबख़ोरी एक अण्डा है, जिसे सेने पर उसमेंसे सब तरहकी बुराइयाँ पैदा होती हैं।'

'शराब पीनेका एक ही मतलब है — अपनी मरज़ीसे पागल बनना, और कुछ नहीं।' (सेनेका)

'शराब पीकर कुछ लोग बेवक़ूफ़, कुछ पशु और कुछ पिशाच या शैतान बनते हैं।'

'शराबख़ोरी डॉक्टरकी धाय है।'

वा० गो० देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्तूरबा गांधी-राष्ट्रीय-स्मारक-ट्रस्ट

इस ट्रस्टके कामकाजकी मुख्तसर जानकारी नीचे दी जाती है :

(१) इस वक़्त ट्रस्ट के २६ ट्रस्टी हैं। गांधीजी उसके सभापति और श्री ए० वी० ठक्कर उसके सेक्रेटरी हैं।

(२) ट्रस्टकी १२ मेम्बरोंकी एक कारोबारी कमेटी है।

(३) होल्डिंग (भंडारी) ट्रस्टियोंके नाम नीचे दिये गये हैं :

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास
श्री जे० आर० डी० टाटा,
श्री घनश्यामदास बिड़ला,
श्री अम्बालाल साराभाई,
श्री कस्तूरभाई लालभाई,
श्री शान्तिकुमार एन० मोरारजी

(४) श्रीमती सुचेतादेवी कृपालानी ट्रस्टकी ऑर्गेनाईज़िंग सेक्रेटरी (संयोजक-मंत्री) हैं।

ट्रस्टका एक परामर्शदाता (सलाहकार) मेडिकल बोर्ड और एक ...ला-समिति भी है।

सूबोंमें सारा काम सूबोंके महिला एजण्टों द्वारा ही किया जाता है।

अब तककी ट्रस्टकी कुल आय है — रु० १,२८,१७,३९२-१०-०
और अब तकका कुल खर्च है — रु० २,०१,८६६-२-१०

गाँवोंकी औरतों और बच्चों को शिक्षा या तालीम देना और उनके हितके काम करना ही इस ट्रस्टका मक़सद है। इस ट्रस्टकी ... पॉलिसी रही है कि जहाँ तक हो सके सूबों और तालीमी ...में काम करनेके लिए स्त्रियाँ ही चुनी जायँ। लेकिन तालीम ...हुई और गाँवोंमें बसनेकी तैयारीवाली बहनोंकी कमीको पूरी ... महसूस करके ट्रस्टने हालमें नीचे लिखी लाइनों पर स्त्री-कार्य-कर्त्ताओंको तालीम देनेका काम खास तौरसे अपने हाथमें लिया है :

नयी तालीम, आरोग्य शास्त्र, ग्रामोद्योग, ग्रामसेवा वग़ैरा।

ऊपरके विषयोंकी तालीम देनेके लिए अलग-अलग सूबोंमें ६ ... और सालाना ग्रामसेविका-तालीमी-केन्द्र (मरकज़) खोले ... हैं। सूबोंके कार्यकर्त्ताओंको तालीम देनेके लिए सबसे ... कुल-हिन्द-छावनी बम्बईके उपनगर बोरिवलीमें एक माह (... अप्रैलसे ५ मई, १९४५) तक चलाई गई थी। इस छावनीमें ... मुल्कसे ९० बहनें ट्रेनिंग लेने आई थीं।

बिहार, कर्नाटक-मैसूर (संयुक्त), गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, ... पी०, आसाम, पंजाब, राजपूताना, महाकोशल, केरल और तामिलनाड़ प्रान्तोंमें भी तालीमी केन्द्र शुरू किये गये हैं। उनमेंसे ...में १५से ३० तक बहनें गृहविज्ञान, बाग़बानी, डेरी, आरोग्य-...त्र, खेलकूद, हिन्दुस्तानी व्यायाम, वस्त्रविज्ञान (चरखा-शास्त्र), ...शास्त्र वग़ैराकी तालीम पा रही हैं।

इसके अलावा, ९ बहनोंने बालवाड़ी शिक्षण (मॉण्टेसोरी कोर्स) की ... महीनेकी ट्रेनिंग पूरी करली है। और ३८ बहनें बेसिक एज्युकेशन टीचर्स ...का अभ्यास कर रही हैं — यह तीन माहका कोर्स है। ३५ ...ने १५ माहके कोर्सकी मेडिकल ट्रेनिंग ले चुकी हैं।

जो बहनें ग्राम-सेवाका कोर्स पूरा कर चुकी हैं, वे अपने-अपने ... या तालुकामें ग्राम-सेवाके केन्द्र खोलेंगी। ऐसे ८ ग्रामसेवा-केन्द्र महाराष्ट्रमें, ८ कर्नाटक-मैसूरमें और २६ बिहारमें खुल चुके हैं।

दिल्ली, मध्यप्रान्त, तामिलनाड़ और यू० पी०के गाँवोंमें औरतों और बच्चोंके इलाजके लिए दवाखाने खुल गये हैं, किसी-किसी ... प्रसूति-गृह भी चालू हो गये हैं। इसी तरह पंजाब, आन्ध्र, ...सा, तामिलनाड़ वग़ैराके गाँवोंमें बेसिक स्कूल भी शुरू हो ... हैं।

हफ़्तेवार ख़त

(१)

फ़िरसे आज़ाद हिन्द फ़ौजके साथ

पिछले हफ़्ते पंचगनीमें आज़ाद हिन्द फ़ौजके एक कप्तान (ऊँचे दरजेके फ़ौजी अफ़सर) गांधीजीसे मिलने आये थे। उन्होंने कहा : "हमें एक मौक़ा दीजिये। अब हम क्या करें? आप हमसे क्या उम्मीद रखते हैं?"

उन्हें जवाब देते हुए गांधीजीने कहा : "आप लोगोंने लड़ाईके मैदानमें जो हिम्मत और बहादुरी दिखाई, वही अब यहाँ दिखाइये। आज़ाद हिन्द फ़ौजके लोगोंमें पूरा-पूरा इत्तहाद या एका था। हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी, सभी क़ौमके लोग सगे भाईकी तरह रहते थे। आपमें न कोई ऊँचा था और न कोई नीचा। कोई अछूत भी न था। एकताकी इस भावनाको आप यहाँ भी बरतकर दिखाइये, गोकि मुझे डर है कि यहाँ आप इसमें कामयाब नहीं होंगे।"

आज़ाद हिन्द फ़ौजवाले दोस्तने बातको मानते हुए कहा : "जी हाँ। आप सच कहते हैं। जब तक यहाँ ब्रिटिशोंकी हुकूमत मौजूद है, तब तक हम लोग एक नहीं हो सकते।"

"सो सच है, लेकिन ब्रिटिश हुकूमतके मौजूद होते हुए भी यहाँ उसे छोड़कर बहुतसे ऐसे काम हैं जो करने लायक़ हैं। मैं अपनी राज़ी-ख़ुशीसे भंगी बना हूँ। इससे मुझे कौन रोक सकता है? शाहनवाज़ पहले हिन्दुस्तानी हैं और आख़िरमें भी हिन्दुस्तानी हैं। उनके दिलमें यह ख़याल ही नहीं है कि वे किसी ख़ास क़ौमके हैं। इस तरह अपने हिन्दुस्तानी होनेका ख़याल रखनेसे उन्हें कौन रोक सकता है? हक़ीक़त यह है कि वे जहाँ-जहाँ जाते हैं, वहाँ अपने हिन्दू दोस्तोंके घर ही ठहरते हैं। फिर भी वे इस बातको समझ गये हैं कि हिन्दुस्तानके बाहर उन्होंने जो कामयाबी हासिल की थी, वह यहाँ आसानीसे नहीं मिल सकेगी। आज़ाद हिन्द फ़ौजके लोग वापस अपने घर पहुँचनेके बाद अपने आसपासकी हवासे प्रभावित हो जाते हैं और बाहर जो कुछ सीखे थे, उसे भूल जाते हैं। ऐसी हालतमें उनके विचारों और भावनाओं यानी ख़यालों और जज़्बोंको पुराने ढर्रे पर चढ़नेसे रोकनेका काम मुश्किल है।

"इसके साथ ही आपका यह उम्मीद रखना भी मुनासिब न होगा कि हिन्दुस्तान आप पर लाखों रुपया ख़र्च करे। आपको इटलीके सरदार गैरीबाल्डीके सिपाहियोंकी तरह बनना होगा। गैरीबाल्डीने उनसे कहा था, 'मेरे पास आपको देनेके लिए और कुछ नहीं, सिर्फ़ 'ख़ून, आँसू और मज़दूरी' है। जब लड़ाईके मैदानमें लड़नेका काम न होता, तब वे सिपाही अपनी खेती-बारी करके अपना गुज़ारा किया करते थे। उन्हें कोई तनख़ाह नहीं देता था। उड़ाऊ बनकर पानीकी तरह पैसा बहानेवाले ब्रिटिश लोगोंने आपको तालीम दी है। अगर आपने यह उम्मीद रक्खी होगी कि आपको ब्रिटिश हुकूमतकी तरह हिन्दुस्तानवाले भी विक्टोरिया क्रास (एक तरहका बिल्ला जो फ़ौजी-लोगोंको बहादुरीके ख़ास काम करने पर दिया जाता है और जिसके साथ बिल्ला पानेवालेको ज़िन्दगीभरके लिए सालभरका ख़र्च हरसाल दिया जाता है) या ऐसे ही दूसरे इनाम देंगे, तो वह बेकार होगी। हिन्दुस्तानके करोड़ों भूखों मरनेवाले लोगोंके बसकी यह बात नहीं। आपको उनके साथ एक होकर उनकी सेवा करनी होगी। आज एक मामूली हिन्दुस्तानी फ़ौजी आदमीको देखकर काँप उठता है। फ़ौजी आदमी गुण्डोंका-सा बरताव करता है और उसकी मनमानीके ख़िलाफ़ कहीं कोई इन्साफ़ नहीं मिलता। आपको अपने बरतावसे यह साबित कर देना है कि आप उनके दोस्त हैं और उनकी सेवा करनेवाले हैं, जिससे वे आपका डर न रक्खें।"

आज़ाद हिन्द फ़ौजके कप्तानने बीच ही में कहा : "जिस तरह हम हिन्दुस्तानके बाहर आम लोगोंके साथ दोस्ती रखते थे और उनकी मदद करते थे, उसी तरह यहाँ भी करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीने कहा: "यह अच्छी बात है। लेकिन मुझे आपसे यह कहना चाहिये कि आज़ाद हिन्द फ़ौजके लोगोंको क़ाबूमें रखनेका काम आपके बड़े अफ़सरोंको मुश्किल मालूम होने लगा है। आपके लोगोंमें आपस-आपसकी निकम्मी होड़ाहोड़ी और हलकी ईर्ष्या या जलन पैदा होने लगी है। यह ख़याल ज़ोर पकड़ने लगा है कि 'उसे फलाँ चीज़ मिली और मुझे क्यों नहीं?' जब आप परदेसमें थे, तब हालत कुछ और थी। वहाँ आपके समर्थ नेताजी बोस आपकी पीठ पर थे। हम दोनोंमें गहरी नाइत्तफ़ाकी थी, फिर भी उनकी जलती हुई देशभक्ति, उनकी हिम्मत और सूझ और नये-नये साधन खड़े कर लेनेकी उनकी ताक़त पर मैं आशिक़ था।"

कप्तानने बीच ही में कहा: "आपके लिए उनके दिलमें जो गहरी मुहब्बत और इज़्ज़त थी, उसका ख़याल आपको नहीं आ सकता।" फिर उन्होंने पूछा: "आज़ादीके लिए आगे जो लड़ाई छिड़ेगी, उसमें हम लोग किस तरह अपना हिस्सा अदा करें?"

गांधीजीने उन्हें जवाब देते हुए कहा: "आज़ादीकी लड़ाई आज भी चल रही है। वह कभी रुकी नहीं। लेकिन जब तक मेरी चलेगी, तब तक वह अहिंसक रहेगी। पिछले २५ बरसोंमें आम लोगोंने अहिंसाकी तालीमको ठीक-ठीक हज़म किया है। लोग अब यह समझ चुके हैं कि अहिंसाके हथियारसे बच्चे, औरतें और अपाहिज बूढ़े भी बड़ी-से-बड़ी ताक़तवाली सरकारका सामना कामयाबीके साथ कर सकते हैं। अगर आपकी आत्मा या आपकी भावना मज़बूत है, तो अकेले शरीरकी ताक़तकी कमीसे कोई मुश्किल पेश नहीं होती। इसके ख़िलाफ़ मैंने देखा है कि दक्षिण अफ्रीकामें भीम-जैसे डीलडौलवाले ज़ूलू लोग एक गोरे बच्चेसे डरकर थरथर काँप उठते थे। गोरे सिपाही ज़ूलू लोगोंकी झोंपड़ियोंवाली बस्तियोंमें घुस जाते थे और औरतों, मर्दों और बच्चोंको बिछौनोंमें सोई हुई हालतमें ही मार डालते थे। ज़बरदस्त डीलडौलवाले ज़ूलूमें भी ऐसे मौक़े पर सामना करनेकी ताक़त नहीं रहती थी। और उसके शरीरकी ताक़तसे उसकी आत्माकी या बदला लेनेकी भावनाकी दृढ़ताकी ख़ामी पूरी नहीं होती थी।"

धर्मशालाका दान

२१ जुलाईके दिन अहमदाबादके सेठ शान्तिलालने 'शान्ति कुंज' नामकी अपनी मिल्कियत ग़रीबोंके इस्तेमालके लिए बाक़ायदा दे डाली। उस दिन गांधीजीको अपनी एक मनपसन्द योजनाकी सफलताका साक्षी बननेका सन्तोष मिला। बम्बई इलाक़ेके प्रधान-मंत्री श्री बालासाहब खेर और दूसरे दो मंत्री श्री पाटिल और श्री तपासे भी इस मौक़े पर ख़ास तौर पर पूनासे पंचगनी आये थे। शामकी प्रार्थना ख़तम होनेके बाद इसका ज़िक्र करते हुए गांधीजीने कहा: "अपनी नज़रबन्दीसे रिहा होनेके बाद डॉक्टरोंकी सलाहसे सन् १९४४में मैं पंचगनी आया था। उन दिनों यहाँकी उम्दा आबहवासे फ़ायदा उठानेके लिए यहाँ आकर रहनेकी कोई जगह ग़रीबों और बेआसरा लोगोंके लिए नहीं थी, फिर हरिजनोंके लिए तो ऐसी जगह होती ही कहाँसे? एक हरिजन भाईने अपनी राम-कहानीका दर्दभरा लम्बा ख़त मुझे भेजा है। वह लिखते हैं: 'जब तक मालूम नहीं होता कि आदमी हरिजन है, तब तक तो ठीक चलता है। लेकिन ज्यों ही उसके हरिजन होनेका पता चला, त्यों ही लोग उसे अछूत समझकर उससे दूर रहने लगते हैं। कोई उसे अपने साथ रखने या टिकानेको तैयार नहीं होता। उसके लिए सब घरोंके दरवाज़े बन्द हो जाते हैं। दुकानदार लोग हरिजनका पैसा तो ले लेते हैं, लेकिन उससे पूरे दाम लेकर भी उसको ख़राब-से-ख़राब सड़ा-गला माल देते हैं। यही नहीं, बल्कि पूरे मापसे कम माल देकर वे उसे ठगते भी हैं। अगर वह बेचारा इसके ख़िलाफ़ कुछ कहने जाता है, तो उसका अपमान करके उसे दुकानसे बाहर निकाल दिया जाता है। जब मकान-मालिकको मालूम होता है कि किरायेदार हरिजन है, तो वह उससे अपना घर ख़ाली करा लेता है और उसे आसरा नहीं देता। ऐसी हालतमें वह बेचारा कहाँ जाय?' यह सारा अन्याय देखकर दिल फटने लगता है। हरिजन यह सोचता है कि जब तक दूसरोंकी तरह उसे भी इज़्ज़तके साथ ज[...] मिलनेकी कोई सहूलियत न हो, तब तक वह ख़ुद पंचगनी जा[...] वहाँ किस तरह रहे? इसलिए जब पंचगनीमें हरिजनोंको ख़ु[...] ख़ुशी आसरा देनेवाली यह एक जगह मिली, तो उससे मु[...] बहुत ख़ुशी हुई। अहमदाबादके श्री शान्तिलाल सेठने ४५,००० [...] देकर सतीश कुंजवाली मिल्कियत ख़रीद ली और उसकी मरम्म[त] कराने और १० साल तक इस संस्थाका चालू ख़र्च देनेकी बात क[...] की है। इस ज़मीन पर जो धर्मशाला बनेगी, उसमें हरिजनोंके [...] सभी क़ौमोंके ग़रीब लोग जाँत-पाँत या धर्मके किसी भेदभावके बि[ना] आकर रह सकेंगे। उनके लिए यहाँ रहनेका इन्तज़ाम मुफ़्त कि[या] जायगा, मगर अपने खाने-पीनेका इन्तज़ाम उन्हें ख़ुद कर लेना होगा। धर्मशालाकी सार-सँभाल और देख-रेखके लिए ५ ट्रस्टियोंकी एक कमे[टी] बनाई गई है, जिनमें मेरे साथ अहमदाबादके श्री शान्तिलाल सेठ, [...] मोहनलाल सेठ, श्री बच्छराज और डॉ॰ दिनशा महेता हैं। मुझे [...] ज़्यादा अच्छा मालूम होता, अगर पंचगनीके बाशिन्दे ख़ुद चन्दा क[रके] यह धर्मशाला बनवाते। लेकिन इस तरहकी संस्था चलानेमें अ[...] पैसेसे ही काम नहीं होता। पंचगनीवालोंने पैसे न दिये तो [...] न दिये; मगर अब उन्हें चाहिये कि वे इस संस्थाको अपने आशीर्वाद [दें] और इसके चलानेमें हाथ बँटायें। अगर पंचगनीवाले इस संस्था[के] चलानेमें सच्ची और अमली दिलचस्पी नहीं लेंगे, तो यह ठीकसे [नहीं] चलेगी। पंचगनीकी अच्छे घरवाली बहनोंसे मैं यह सिफ़ारिश कर[ता हूँ] कि वे इस धर्मशालामें बार-बार आयें और यहाँ बीमारीसे चंगे होने[के] लिए या चंगे होनेके बाद आराम लेनेकी ग़रज़से आये हुए लोगों[से] मिलें, उन्हें अच्छे-से-अच्छे भजन गाकर सुनायें, उनके दिलको तसल्ली दिलायें और उन्हें जिसकी ज़रूरत हो और आपसे जो की जा सके, वैसी सेवा आप उनकी करें।"

म्युनिसिपैलिटियाँ समाजकी जैसी सेवा करती हैं, वैसी से[वा] करनेका गांधीजीको बहुत शौक़ है। इसलिए उन्होंने सभामें आ[ये] हुए लोगोंके सामने अपने दिलका दर्द उँड़ेलते हुए कहा: "आ[...] पंचगनीमें सफ़ाईके कामकी जो हालत है, वह बहुत ही ख़तरनाक है। पंचगनीकी आबहवामें बीमारी और महामारी कैसी? लेकिन यहाँ [...] अभी तीसरे साल ही प्लेग फैला था। और उसकी वजहसे आप[को] अपने बाज़ार बन्द करके जाना पड़ा था। और आपका यह बाज़ार कितना गन्दा है? यहाँ इतनी बारिश होती है, फिर भी लोगोंको अपने कामके लिए पानीकी तंगी उठानी पड़ती है। बारिशके पानीको जमा करके घरेलू कामोंके लिए उसका इस्तेमाल क्यों नहीं कि[या] जाता? दक्षिण अफ्रीकामें बारिश ज्यादा नहीं होती और ज़मीनके अन्दर भी पानी कम है, इसलिए वहाँवाले बरसादके पानीको इकट्ठा करनेके लिए हरएक घरमें पानीकी टंकियाँ रखते हैं। आप स[ब] और ख़ासकर म्युनिसिपैलिटी और पब्लिक हेल्थ महकमेका यह फ़र्ज़ है कि वह इन ख़ामियोंको दूर करे। आपके सूबेके प्रधान[मंत्री] श्री बालासाहब खेर आज यहाँ तशरीफ़ लाये हैं और उन्होंने इस क[ाममें] आपकी ज़रूरी मदद करनेकी अपनी तैयारी दिखाई है। अग[र मैं] आपके पब्लिक हेल्थ महकमेका या आपकी म्युनिसिपैलिटीका प्रेसि[डेंट] होऊँ, तो आपकी पंचगनीको इतना साफ़ और सुथरा रक्खूँ कि [को]ई भी आदमी बिना किसी झिझकके खुलेमें आपके पहाड़के अग[ल-बगल] बख़ुशी सो सके। लेकिन यहाँ म्युनिसिपैलिटीका काम इतना [...] और ख़राब है कि आज तो इसका कोई ख़याल भी नहीं कर [...] लोग थोड़ी भी तमीज़से काम नहीं लेते और जब-तब, जहाँ[-तहाँ] थूकते चलते हैं। ये सब बातें मैं आपको पूरा पता लगानेके [बाद] सोच-समझकर कहता हूँ। जब महात्मापनकी यह बला मुझ[पर] नहीं थी, तब धर्मशालाओं और आम लोगोंके इस्तेमालकी दूसरी [जगहोंमें] लोगोंका ध्यान अपनी ओर खींचे बिना मैं आज़ादीसे घूम-फिर [सकता] था और ऐसे मौक़ों पर उन जगहोंकी हालतकी बारीक़ीसे [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

... करता था। रेलवे स्टेशनों पर और धर्मशालाओंमें आम ... के इस्तेमालके लिए बने हुए पाखानों और पेशाबघरोंकी तन्दुरुस्तीको नुकसान पहुँचानेवाली जो गन्दगी मैंने देखी और बदबू सही, वह ... ही डरावनी थी। अगर आप अपना फ़र्ज़ ठीकसे अदा करें, तो इसमें शक नहीं कि आप पंचगनीको हवाखोरीके पहाड़ी मुक़ामोंमें ... बढ़िया रतन-जैसा मुक़ाम बना सकते हैं।"

भंगी-कामकी कला

इसके बाद उन्होंने कुछ अमली सुझाव पेश किये। इनमें सबसे ... और सबसे ज़्यादा कामका सुझाव सहज ही पाखानेको ठिकाने ... और सण्डासोंकी सफ़ाईसे ताल्लुक़ रखनेवाला था। उन्होंने ... "मैं .खुद भंगी बना हूँ, इसलिए मुझे पहला ख़याल इसीका ... है। मैं ठेठ दक्षिण अफ्रीकासे भंगीका काम करता आया हूँ। ... इस कलामें इतनी महारत हासिल की है कि मैं .खुद गन्दगीसे पूरी ... बचकर इसे कर सकता हूँ। जब मैं किसी भंगीको सिर पर ... मैलेकी टोकनी लिए जाते देखता हूँ, तो मेरा मन बेचैन हो ... है। भंगीका काम एक बढ़िया हुनर है — ललित कला है। ... के लिए पूरी-पूरी सफ़ाई ही काफ़ी नहीं, बल्कि ज़रूरी .यह है कि ... करनेका तरीक़ा और सफ़ाईके लिए बरते जानेवाले साधन ... साफ़ हों और सो भी इस हद तक साफ़ हों कि इनसानकी ... पसन्द तबियतको वे ज़रा भी न खटकें। मैं जिस पाखानेका ... करता हूँ, उसे आप लोग देख जाइये। वह आइनेकी तरह ... है और बदबूका तो वहाँ नामनिशान नहीं। लेकिन क्या आप जानते ... मेरा पाख़ाना साफ़ क्यों रहता है? इसलिए कि मैं .खुद ... करता हूँ। यहाँकी म्युनिसिपैलिटीका भंगी मैलेकी गाड़ियोंको ... के किनारे पर उँड़ेल देता है, जिसकी वजहसे एक ... जगह बदसूरत और बीमारियोंका घर-सी बन गई है। ... .खुद अपने भंगी बन जायँ, यानी अपने लिए भंगीका ... .खुद कर लिया करें, तो उससे न सिर्फ़ आपकी अपनी ... सफ़ाई रहेगी, बल्कि आपके आसपासकी जगह भी साफ़ रहे ... भंगियोंको आज जिस .ज़ुल्मके नीचे दबना और कराहना पड़ता ... उससे उन्हें छुटकारा मिल जाय। आप यह न समझें कि आपके ... करनेसे उनकी रोज़ी छिन जायगी। आज हमने उनको ... -सा बना रक्खा है। सच है कि रोज़ीके तौर पर उन्हें ... पैसे मिल जाते हैं, लेकिन उसमें उनकी इनसानियत या ... उनकी प्रतिष्ठा नहीं रहती। एक ही भंगी म्युनिसिपैलिटीका काम ... है और आपके बँगलोंकी सफ़ाई भी करता है। नतीजा इसका ... होता है कि वह दोनोंमेंसे एक भी काम पूरी तरह नहीं कर ... । क्या कभी आपने किसी भंगीको मैलेके बीच बैठकर पाखानेकी ... आड़में छिपे-छिपे ज्यों-त्यों खाते हुए देखा है? यह दृश्य किसी ... आदमीके दिलको चूर-चूर करनेके लिए काफ़ी है। इस भंगीके लिए ... साफ़ और इनसानियतसे भरा धन्धा या पेशा मुहैया कर देनेका ... आपको क्यों मुश्किल मालूम होना चाहिये?"

पैसेकी तंगी — एक मुश्किल

... उसी दिन कुछ वक़्त पहले वाईके नवाब गांधीजीसे मिल चुके थे और ... गांधीजीसे कहा था कि हमें क्या करना चाहिये, सो तो हम ... हैं; लेकिन हमारी म्युनिसिपैलिटी इतनी ग़रीब है कि कामके ... ज़रूरी पैसे कहाँसे लाये जायँ, सो हमें सूझता नहीं। इसके ... में गांधीजीने कहा: "मैंने नवाब साहबसे प्रार्थना की है कि ... म्युनिसिपैलिटीको परेशान करनेवाली मुश्किलोंका एक मुख्तसर बयान ... करके मेरे पास भेजवायें। मुझे उम्मीद है कि मैं उन्हें यह दिखा ... कि म्युनिसिपैलिटीको जो कुछ करना है और जो जो भी कुछ ... ज़रूरत है, उसे पैसेकी कमीकी वजहसे रोक रखनेकी ज़रूरत ... अगर सब मिलाकर देखा जाय, तो मैंने जो अलग-अलग सुधार ... हैं, उनके लिए १० लाखसे ज़्यादा रुपयोंकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी। जो अमीर या पैसेवाले लोग हरसाल पंचगनीकी हवा खानेके लिए आते हैं, उनसे मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस रक़मका इन्तज़ाम करना उनका फ़र्ज़ है। आज़ादी और तरक़्क़ी-पसन्द मुल्कोंमें म्युनिसिपैलिटीसे ताल्लुक़ रखनेवाली सहूलियतोंका इन्तज़ाम करने और उनमें सुधार करनेके लिए ज़रूरी पैसे जुटानेका काम वहाँके खानदानी अमीर लोग अपना एक ख़ास फ़र्ज़ और हक़ समझते हैं। हिन्दुस्तान ही एक ऐसा मुल्क है, जहाँ हरएक छोटी-छोटी चीज़के लिए लोगोंको सरकारका मुंह तकनेकी बुरी आदत पड़ गई है। अगर आप स्वतंत्र और स्वाभिमानी प्रजा बननेकी ख़्वाहिश रखते हैं, तो आपको इस तरहका भिखारीपन छोड़ देना चाहिये।

"इसके अलावा, यहाँकी गटरोंके इन्तज़ामको सुधारनेके लिए भी आपको कुछ करना होगा। इसके लिए इंजीनियरोंसे एक मुनासिब स्कीम या योजना तैयार करानी होगी। मैं उम्मीद रखता हूं कि आप इस कामको फ़ौरन ही अपने हाथमें लेंगे।

"आख़िरमें मैं यह भी उम्मीद रखता हूँ कि पेशाब-पाखानेकी निकासीके लिए भी फ़ौरन ही कुछ-न-कुछ किया जायगा। आज जिस तरीक़ेसे काम चल रहा है, उसमें हम न सिर्फ़ इनसानका बल्कि ईश्वरका भी गुनाह करते हैं। इसलिए उस तरीक़ेको एक दिनके लिए चलानेमें भी आप सबको शरम मालूम होनी चाहिये। मुझे यह कहते हुए अफ़सोस होता है कि हमें यहाँ पंचगनीमें आये आज पूरा एक पखवारा हो रहा है, फिर भी डॉ० दिनशा मुझसे कहते हैं कि पंचगनीमें हमारे आनेके पहले दिन जो हालत मौजूद थी, वही आज भी बनी हुई है।

"मुझे आशा है कि अगर अगले साल ईश्वरकी दयासे मैं पंचगनी आ सका, तो मुझे यहाँकी हालतमें काफ़ी फ़र्क़ नज़र आयेगा। आज अमीर और ग़रीबके बीच जो फ़र्क़ है, वह सचमुच भयानक है। इस फ़र्क़को मिटाये बिना छुटकारा नहीं। मालदार लोग .ख़ुद जिन सहूलियतोंसे फ़ायदा उठाते हैं, उनमें उन्हें ग़रीबोंको बराबरीसे अपने साथ लेना चाहिये। आप सब यहाँ इस प्रार्थना-सभामें मेरे साथ ईश्वरका नाम लेनेके लिए आते हैं, फिर भी अगर आपने अपने फ़र्ज़को समझने और उसे अदा करनेमें ग़लती की, तो समझिये कि आपका यहाँ आना बेकार हुआ है। इस तरहकी प्रार्थना तो तोतेकी तरह भगवान्का नाम रटनेकी चीज़ होगी, जिसमें न आपका भला है, न मेरा और न किसी औरका।"

पूना, ३०-७-'४६

(२)

इस साल गांधीजी १५ दिनसे ज़्यादा पंचगनी न रह सके। लेकिन इतने ही दिनोंमें उनके काफ़ी थके हुए शरीरको अच्छा आराम मिला। २८ जुलाईको वे पूना आये। ३ दिन वहाँ रहे। इन तीन दिनोंमें पूनामें ३ परिषदें हुईं। एक दक्षिणके राजाओंकी, दूसरी अलग-अलग सूबोंके उद्योग-विभागके मंत्रियों या वज़ीरोंकी और तीसरी शिक्षा-विभाग या महकमे तालीमके वज़ीरोंकी। महकमे तालीमके वज़ीरोंकी परिषद् की रिपोर्ट 'हरिजनसेवक' के किसी अगले अंकमें छपेगी। इसकी वजहसे गांधीजीको उरुळीके लिए सिर्फ़ चार दिन मिले।

लोकमान्यकी बरसी

जिस दिन गांधीजी उरुळी पहुँचे, उसी दिन लोकमान्य तिलककी २५वीं बरसी थी। इस बरसीने पुरानी यादोंको बहुत ज़ोरसे जगा दिया। शामकी प्रार्थनाके बाद इसका ज़िक्र करते हुए गांधीजीने बताया कि किस तरह टेलीफ़ोनसे इस दुःखद ख़बरको सुनकर वे लोकमान्यकी श्मशान-यात्रामें हाज़िर रहनेके लिए पहुँचे थे। श्मशान-यात्राके ज़बरदस्त जुलूसमें जितने हिन्दू थे, उतने ही मुसलमान, और पारसी भी थे। उस ज़बरदस्त भीड़की धक्कामुक्कीमें गांधीजी .ख़ुद भी फँस गये थे और बड़ी मुश्किलसे उसमेंसे निकल पाये थे। उन दिनों हमारे देशका वातावरण क़ौमी कड़वाहटके ख़यालोंसे ज़हरीला नहीं बना था। उसके बाद तो बहुत-सी घटनायें घट गईं, लेकिन लोकमान्यकी याद और लोगोंके दिलमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी मुहब्बत आज भी ज्यों-की-त्यों ताज़ा है। जैसे-जैसे वक़्त बीतता जाता है, उनकी लोकप्रियता उलटी बढ़ती जाती है। लोकमान्यकी देह नष्ट हो चुकी है, मगर वे तो आज भी हमारे साथ ही हैं। 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध हक़ है' यह मंत्र उन्होंने ही हमको दिया है। वह सबका समान रूपसे जन्मसिद्ध हक़ है। जिस तरह पूरेमेंसे पूरा ले लेनेसे पूरा ही बाक़ी रहता है, उसी तरह वह अखूट है। उसे बाँटनेसे भी वह कम नहीं होता।

"सच है कि आज लोकमान्यके नामसे मनमाने काम किये जाते हैं। यह दुनियाका रिवाज है। दैवी वस्तुका भी दुरुपयोग कहाँ नहीं होता? मगर बुराई तो बुरा करनेवालेके पास ही रहती है। उससे दैवी वस्तुका ओजस या तेज कम नहीं होता।"

आगे चलकर गांधीजीने बताया कि हिन्दुस्तान अपने इस जन्मसिद्ध हक़को अनक़रीब ही हासिल करनेवाला है। उन्होंने कहा: "मेरी रायमें मेरी कल्पनाका स्वराज क़ायम करनेके लिए .कुदरती इलाज एक महत्त्वकी चीज़ है। स्वराज हासिल करनेसे पहले हमें अपनी तीन तरहकी यानी शरीरकी, मनकी और आत्माकी शुद्धि कर लेनी चाहिये।"

चोरोंके लिए .कुदरती इलाज

ऊपरकी बात कहते वक़्त गांधीजीने शायद ही यह सोचा होगा कि २४ घण्टेके अन्दर ही उन्हें इस उसूल पर अमल करनेका मौक़ा मिल जायगा। दूसरे ही दिन एक देहाती भाई गांधीजीके सामने लाये गये। उनके घरमें चोरी हो गई थी और चोर ज़ेवर वग़ैरा चुराकर ले गये थे। चोरोंने इन भाईको कुछ चोट भी पहुँचाई थी। गांधीजीने उरुळीवालोंसे कहा था कि इसके तीन रास्ते या इलाज हो सकते हैं। पहला इलाज यह है कि पीढ़ियों पुराने रिवाजके मुताबिक़ पुलिसको इसकी खबर दी जाय। अक्सर होता यह है कि इसकी वजहसे पुलिसको रिश्वत लेनेका एक और मौक़ा मिल जाता है, लेकिन जिसके घर चोरी हुई होती है, उसे तो इससे कोई राहत नहीं मिलती। दूसरा रास्ता हाथ-पर-हाथ धरकर बैठने और जो हुआ है, उसे सह लेनेका है। आम तौर पर गाँववाले इसीका इस्तेमाल करते हैं। यह चीज़ निन्दनीय है, क्योंकि इसकी जड़में डरपोकपन रहा है। जब तक कायरता रहेगी, तब तक .जुर्म फूलते-फलते ही रहेंगे। इससे भी बुरी बात तो यह है कि इस तरह हाथ-पर-हाथ धर कर बैठे रहनेसे हम .खुद भी इस .जुर्मके तरफ़दार बनते हैं। तीसरा इलाज या रास्ता शुद्ध सत्याग्रहका है, और मैं आपसे इसकी सिफ़ारिश करता हूँ। इसमें यह समझ लेना ज़रूरी है कि हम चोरों और गुनहगारोंको भी अपने भाई-बहनकी तरह मानें और समझें कि गुनाह भी उनको लगा हुआ एक मर्ज़ या रोग ही है और हमें उनका यह मर्ज़ मिटाना है। चोरों या गुनहगारों पर नाराज़ होने और उन्हें सज़ा दिलानेकी कोशिश करनेके बदले आपको यह समझनेकी कोशिश करनी चाहिये कि किन कारणोंसे वे गुनाह या .जुर्म करनेके लिए आमादा हुए? मतलब, आपको चाहिये कि आप उन्हें कोई रोज़गार-धन्धा सिखा दें और उनके लिए ईमानदारीके साथ अपनी रोज़ी कमानेके ज़रिये मुहैया कर दें। और, इस तरह उनके जीवनको बदलनेकी कोशिश करें। आपको समझना चाहिये कि चोर या गुनहगार आपसे अलग किसी और क़िस्मका प्राणी नहीं होता। असलियत यह है कि अगर आप अपने दिलको अन्दरसे टटोलें और अपनी आत्माकी बारीकीके साथ जाँच करें, तो आपको मालूम होगा कि आपके और उनके बीच फ़र्क़ सिर्फ़ कम या ज़्यादा मिक़दारका ही है। दूसरोंका .खून चूसकर या इसी तरहके दूसरे ज़रियोंसे अमीर बने हुए मालदार लोग गिरहकटों या सेंध लगाकर चोरी करनेवाले चोरोंके मुक़ाबले लूट-खसोटके मामलेमें कुछ कम गुनहगार नहीं होते। फ़र्क़ यही है कि अमीर या मालदार लोग अपनी इज़्ज़तकी आड़में रहकर क़ानूनी सज़ाओंसे बच निकलते हैं। गांधीजीने कहा: "सच तो यह है कि अपनी ज़रूरतसे ज़्यादा धन या दौलत इकट्ठा करना चोरी ही है। अगर दौलतका समझदारी भरा इन्तज़ाम किया जाय और पूरी तरह न्याय या इन्साफ़की नींव पर समाजकी इमा[रत] खड़ी की जाय, तो चोरीका कोई मौक़ा ही पेश न आये और समाज[में] कोई चोर पैदा ही न हों। मेरी कल्पनाके स्वराजमें चोर या गुनहगा[र] न होंगे। अगर हुए, तो वह स्वराज नामका ही स्वराज होगा। गुनहगा[री] एक समाजी बीमारीकी निशानी है। मेरी कल्पनाके .कुदरती इलाजमें शरीर, मन और आत्माके तिहेरे रोगोंको मिटानेके इलाज शामिल हैं। इसलिए आप लोगोंको उरुळीसे सिर्फ़ शरीरकी बीमारियाँ दूर करके संतोष नहीं मानना चाहिये। आपके काममें मन और आत्माकी बीमारियोंके मिटानेका काम भी शामिल होना चाहिये, जिससे आपके अन्दर पूरी-पूरी सामाजिक शान्ति क़ायम हो सके।

सत्याग्रहका रास्ता

"गुनहगारोंके साथ पेश आनेके लिए .कुदरती इलाजका [य]ह सत्याग्रहका जो तरीक़ा मैंने सुझाया है, उसे आप अपनायें, तो [आप] किसी .जुर्म या गुनाहके खिलाफ़ हाथ-पैर जोड़कर चुपचाप बैठ ही [न] सकें। अकेला एक पूर्ण पुरुष ही अपने-आपमें डूबकर जी सकता है और दुनियाकी तमाम फ़िकरों और ज़िम्मेदारियोंसे पूरी तरह दूर [रह] सकता है। लेकिन इस तरहकी पूर्णताका दावा कौन कर सकता है? तजरबेकार खेवनहार और मल्लाह बीच समन्दरमें एकाएक [छा] पड़नेवाली शान्तिको फ़िकरकी नज़रसे देखते हैं; क्योंकि पूरी [..] शान्ति या खामोशी समन्दरकी अपनी असली तासीर नहीं। जी[वन]-समन्दरका भी यही हाल है। अक्सर उसमें आनेवाले तूफ़ान[की] आगाही रहती है। इसलिए सत्याग्रही न तो किसी तरहका [डर] भँजायेगा और न गुनहगारके ताबे होगा। बल्कि वह तो अपने[को] सुधारकर गुनहगार को भी सुधारेगा। वह एक ही वक़्तमें दो घोड़ों पर सवार नहीं होगा, यानी एक तरफ़ सत्याग्रहके क़ानून पर अमल करनेका ढोंग और साथ ही पुलिसकी मदद लेनेका काम वह [न]हीं करेगा। पहली चीज़ पर अमल करनेके लिए उसको दूसरी चीज़[का] त्याग करना होगा। यह दूसरी बात है कि गुनहगार .खुद [ही] अपनेको पुलिसके हवाले करना पसन्द करे। अगर उसी वक़्त [आप] भी पुलिसके पास जाने और उसके खिलाफ़ रिपोर्ट करनेको तैयार हो जायँ, तो आपको उसके दिल को छूनेकी और उसका विश्[वास] पानेकी उम्मीद न रखनी चाहिये। यह तो बड़ी-से-बड़ी दग़ा[बाज़ी] हुई। सुधारक कभी रिपोर्टर या खुफ़िया बनकर अपना काम न[हीं] कर सकता।" और इस सिलसिलेमें गांधीजीने कई ऐसी मिसालें [दीं] जिनमें हिंसाका .जुर्म करके उनके पास आनेवाले और .जुर्मको क़बूल करनेवाले लोगोंकी खबर पुलिसको देनेसे उन्होंने क़तई इनकार कर दिया था। "अपने सामने गुनाह क़बूल करनेवाले आदमीके खिलाफ़ गवाही देनेके लिए कोई भी पुलिस अफ़सर सत्याग्रहीको मजबूर नहीं कर सकता। सत्याग्रही किसी भी हालतमें विश्वासघात या दग़ाबाज़ीका .जुर्म नहीं करता। मैं चाहता हूँ कि उरुळीवाले गुनाहों और गुनहगारोंके साथ पेश आनेके लिए सत्याग्रहके तरीक़ेको अपनायें। आप गुनहगारोंके घर जाइये, उनसे अपना हेलमेल बढ़ाइये, मुहब्बतके साथ, बेग़रज़ बनकर, उनकी सेवा कीजिये, उनका विश्वास हासिल कीजिये और उनकी गन्दी बुरी आदतें छुड़ाकर उन्हें ईमानदारीका जीवन बितानेके रास्ते पर लाने में उनकी मदद कीजिये।

बादलपुर, ५-८-'४..

प्यारेलाल

('हरिजन'से)

विषय-सूची

डॉक्टरोंकी टीका ... गांधीजी
गन्दगीकी हद ... गांधीजी
कपड़ेकी तंगी ... गांधीजी
नैसर्गिक उपचारका अर्थ ... गांधीजी
हड़तालें ... गांधीजी
कस्तूरबा गांधी-राष्ट्रीय-स्मारक-ट्रस्ट ...
हफ़्तेवार ख़त ... प्यारेलाल
टिप्पणी :
शराबके बारेमें कहावतें ... वा० गो० देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महादेव देसाई

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

१२ पृष्ठ
दो आना

भाग १०　　　　सम्पादक : प्यारेलाल　　　　अंक २८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १८ अगस्त, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

महादेवकी सबसे बड़ी .खूबी

मेरे विचारसे महादेवके चरित्रकी सबसे बड़ी .खूबी थी, मौक़ा पड़ने पर अपने को भूलकर शून्यवत् बनजानेकी उनकी शक्ति (ताक़त)।

सेवाग्राम, १२-८-'४६　　　　मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन 'से)

वे ज़िन्दा हैं

महादेव देसाईकी चौथी पुण्यतिथिके मौके पर मेरा दिल और दिमाग उस प्रतिभाशाली और प्रिय आदमीकी .खुश करनेवाली और रंज़ीदा बनानेवाली दोनों तरहकी यादोंसे घिर जाता है, जिसकी दोस्तीका मेरे लिए खास महत्त्व (अहमियत) था और जिसके साथ रहनेमें मुझे .खुशी होती थी ।

सारी दुनियाके लालचोंके सामने होते हुए भी जब महादेवने महात्माकी जादूभरी बुलाहटको महसूस किया, उस वक़्त उनकी उमर सिर्फ़ २५ बरसकी थी । उस वक़्त मैंने उन्हें देखा था, जब वे पहले पहल अपनी चमकती जवानी और ज़िन्दगीके आदर्शोंकी सारी दौलत और धूप-दीप लेकर, अनोखी साहित्यिक (अदबी) प्रतिभा, विद्वत्ता, और उग्र (जोशभरी) देशभक्तिका अर्घ्य लेकर अपने महान् गुरुके क़दमों पर चढ़ानेके लिए आये थे — वह गुरु जिनकी उन्होंने लगातार २५ बरस तक सच्ची भक्ति और वफ़ादारीसे सेवा की थी।

महात्माकी प्रेमभरी सेवा करते हुए महादेवने कितने अलग-अलग ढंगके काम किये, कितने जुदा-जुदा फ़र्ज़ अदा किये थे !

मेरी आँखोंके सामने महादेवकी दर्दभरी यादोंकी अनगिनत तसवीरें तेज़ीके साथ घूमने लगती हैं : गांधीजीके साबरमती, वर्धा और सेवाग्रामके आश्रमोंमें अगुआ बनकर रहनेवाले महादेव; हँसते-खिलखिलाते, तारीफ़ करनेवालों (प्रशंसकों)के .खुशनुमा केन्द्र (मरक़ज़), और ताज़े विचारों और तीखे विनोदमें मस्त रहनेवाले महादेव; झुकी पलकोंसे साहित्य-साधनामें (अदबी खिदमतमें) लगे रहनेवाले और अपने या अपने गुरुके विचारोंका सुन्दर और सजीव भाषामें उलथा (तर्जुमा) करनेवाले महादेव; ना.ज़ुक सियासी (राजनीतिक) कामके साथ भूरा दुशाला ओढ़कर दिल्लीके वाइसराय-भवनकी सीढ़ियाँ चढ़ते हुए महादेव; दूध-सी सफ़ेद खद्दरमें महात्माके साथ बादशाहकी मेहमानदारी (आतिथ्य) पानेके लिए लन्दनके बकिंघाम पैलेसमें जाते हुए महादेव; यूरोप, अमेरिका व दूर और नज़दीकके पूरबी देसोंसे आनेवाले विदेसी मुसाफ़िरोंको प्यार और अखूट शान्तिके साथ अपने गुरुके अहिंसा और सत्यके सन्देशको समझाते हुए महादेव; स्फटिक मणिके समान अपने गुरुकी अन्दरूनी-से-अन्दरूनी भावनाओंका साफ़ प्रतिबिम्ब (अक्स) दिखानेवाले महादेव ।

लेकिन जिस तरह वे अकस्मात् मरे और उसके बादके घण्टोंमें जो कुछ गुज़रा, उसकी याद सबसे ज़्यादा दिलको दहलानेवाली (हृदयद्रावी) और ताज़ा बनी रहनेवाली है । ऐतिहासिक ९ अगस्तके दिन जब हम लोगोंको गिरफ़्तार किया गया और पूनाके आगाखान महलमें भेज दिया गया, तभीसे महादेव एक भावी भय (आनेवाले डर)की फ़िक्रसे दबे और घिरे रहने लगे थे । उन्हें यही डर लगा रहता था कि जिस आमरण (मरने तकके) उपवास (फ़ाक़े)का गांधीजी बार बार इरादा ज़ाहिर किया करते थे, वह कहीं नज़रबन्दीमें अमली रूप न ले ले ? १४ अगस्त, १९४२की रातको, जब सारे महलमें खामोशी छाई हुई थी, महादेव बड़ी रात तक मेरे कमरेमें बैठकर ज़रूरी विषयों पर बातचीत करते रहे — मानो उन्हें यह भान हो गया था कि इन बातोंके लिए फिर कभी वक़्त नहीं मिलेगा । अपनी बातचीतके दौरानमें उन्होंने अपनी .खुदकी ज़िन्दगीकी आलोचना की, प्यारी पत्नी और लड़केके साथके तजरबे कह सुनाये । लेकिन उनकी बातचीतका मुख्य विषय था — महात्मा गांधी, जिन्हें वे ईश्वरके जीते-जागते प्रतीक (निशानी) मानते थे । फिर भी उस रात उनके आसपास मौतका साया मँडराता-सा दिखाई देता था । लेकिन दूसरे दिन सुबह वे अनोखी .खुशी और उम्मीदसे भरे दिखाई देने लगे । सुबह वे गांधीजीके साथ बग़ीचेमें घूमे । घर लौटने पर उन्होंने मुझसे कहा : "पता नहीं, आज मैं इतना .खुश क्यों हूँ ?" कुछ ही देर बाद वे विनोद (मजाक़) करते हुए डॉक्टरके बुलाने पर उनसे मिलने आये । और कुछ मिनटोंके बाद हँसते-ही-हँसते उन्होंने कहा : "मेरा सिर घूम रहा है ।" और हमारे जान सकने पहले ही वे इस दुनियासे कूच कर गये । हम कितने ही उन्हें उठने और बोलनेके लिए पुकारते रहे, लेकिन उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया ।

इस वज्रपात को सहकर भी गुरु ने अपने प्रियतम (अज़ीज़ तरीन) शिष्यका जिस ढंगसे अन्तिम संस्कार किया, उसका बयान करनेके लिए ज़रूरी कोमल और सुन्दर शब्द मेरी क़लम कहाँसे पावे ? काँपते हाथों गांधीजीने अकेले ही बरफ़-से ठण्डे शव (लाश)को नहलाया, उसे तिलक किया और धीमी आवाज़से यह कहते हुए उसे फूलोंसे सजाया : "महादेव, मैंने सोचा था कि यह संस्कार तुम मेरे लिए करोगे । लेकिन आज मुझे यह सब तुम्हारे लिए करना पड़ रहा है !" १५ अगस्तकी चमकती दुपहरीमें ग़मगीन लोगोंका एक छोटा-सा जुलूस महलके एक कोनेमें बना लिये गये कामचलाऊ श्मशान (मरघट) तक महादेवभाईकी अर्थीके पीछे-पीछे गया । . . . सुबह-सुबह जो जीती-जागती ज्वालाका पुंज था, वही शामको नज़दीककी पवित्र (पाक) नदीकी गोदमें बिखेर दिये जानेके लिए सफ़ेद राखका ढेर बन गया था ।

महादेव हमारी आँखोंसे ओझल हो गये हैं, लेकिन क्या वे सचमुच मर गये हैं ? क्या वे आज भी अपने गुरुके प्रेम और मुल्क के दिलमें ज़िन्दा नहीं हैं, जिनकी सेवा उन्होंने इतनी कामयाबी और .कुरबानीके साथ की ?

१२-८-'४६
('हरिजन 'से)　　　　सरोजिनी नायडू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुर्तगाली हिन्दके गवर्नर जनरलको गांधीजीका ख़त

पुर्तगाली हिन्दके गवर्नर जनरल, हिज़ एक्सिलेन्सी जोस बोसाने १८ जुलाई, १९४६को जो खत लिखा था, उसके जवाबमें २ अगस्त, १९४६को लिखा हुआ गांधीजीका खत नीचे दिया जाता है :

"प्यारे दोस्त,

"गोआके राजकाजके बारेमें 'हरिजन'में मैंने जो लिखा था, उसका जवाब देकर आपने मुझ पर बड़ी मेहरबानी की। मेरा खयाल है कि मोज़ाम्बिक, डेलागोआ और इन्हाम्बानेकी मेरी मुलाक़ातोंके बारेमें आप जानते होंगे। वहाँ मानव-सेवाके खातिर राजकाज चलानेवाली सरकार मैंने नहीं देखी। इसके खिलाफ़ वहाँकी सरकारने हिन्दुस्तानियों और पुर्तगालियोंके बीच और अफ्रीकनों और पुर्तगालियोंके बीच भेदभावकी जो दीवार खड़ी कर रक्खी थी, उसे देखकर मुझे ताज्जुब हुआ था। हिन्दुस्तानमें पुर्तगाली हुकूमतकी तवारीख भी आपके दावेको साबित नहीं करती। गोआकी जो हालत मैं देखता और सुनता हूँ, उससे किसी पर पुर्तगाली सरकारकी नेक-नीयती और नैतिकताकी छाप तो सचमुच नहीं पड़ती। गोआके हिन्दुस्तानी कुछ बोलते नहीं, यह पुर्तगाली सरकारकी निर्दोषता या उसकी मानव-सेवा (इनसानकी खिदमत)की भावनाका सबूत नहीं, बल्कि उसके ज़ुल्म ढानेवाले राजका सबूत है। आप कहते हैं कि गोआमें पूरी आज़ादी है और वहाँका यह आन्दोलन (तहरीक़) कुछ असंतुष्ट लोगोंकी धाँधली है, लेकिन मैं इस बातको नहीं मानता। इसके लिए आप मुझे माफ़ करेंगे।

"मुझे .खुद जो समाचार मिले हैं और हिन्दुस्तानके इस हिस्सेके अखबारोंमें जो खबरें छपती हैं, उनसे आपके दृष्टिकोण (नुक्त-ए-निगाह)का मेल नहीं बैठता। दोनोंमें भारी फ़र्क़ है। आपकी फ़ौजी अदालतने डॉ० ब्रेगान्ज़ाको आठ सालकी सज़ा देकर उन्हें किसी बड़ी दूरकी पुर्तगाली बस्तीमें देशनिकाला देनेका इरादा किया है। मेरे खयालसे यह रिपोर्ट .खुद इस बातका पक्का सबूत है कि गोआमें शहरी आज़ादी नामको भी नहीं है। मेरी समझमें नहीं आता कि डॉ० ब्रेगान्ज़ा-जैसे क़ानून-क़ायदेको माननेवाले आदमीको ही इतना खतरनाक क़रार देकर देशनिकालेकी सज़ाके लिए क्यों चुना गया?

"मेरी राजनीति (सियासत)से डॉ० लोहियाकी राजनीति शायद जुदा है, फिर भी मैंने उनके गोआ जानेकी और वहाँकी पुर्तगाली हुकूमतके काले कारनामोंकी ओर इशारा करनेकी तारीफ़ की है। जब तक हिन्दुस्तान फिरसे अपनी आज़ादी नहीं ले लेता, तब तक गोआके बाशिन्दे भी अपनी आज़ादीके लिए ठहर सकते हैं। लेकिन इस तरह कोई आदमी या समाज अपनी इज्ज़तको खोये बिना नागरिक स्वतंत्रता या शहरी आज़ादीके लिए नहीं रुक सकता। डॉ० लोहियाने गोआके बाशिन्दोंमें आज़ादीकी वह ज्योत जगाई है, जिसे अगर उन्होंने बुझ जाने दिया, तो उनकी बरबादी ही होगी। डॉ० लोहियाने आज़ादीकी जो जोत जगाई है, उसके लिए आपको और गोआके बाशिन्दोंको — दोनोंको — उनका अहसान मानना चाहिये। इसलिए आपका उन्हें 'अजनबी' कहना अगर इतना दर्दनाक न होता, तो हँसी पैदा करनेवाला ही होता। यक़ीनन्, सच बात तो यह है कि पुर्तगालसे आनेवाले पुर्तगाली लोग ही गोआमें पराये या अजनबी हैं, फिर भले ही वे इनसानकी खिदमतका मक़सद लेकर आयें या दुनियाकी तथाकथित (नामनिहाद) कमज़ोर जातियोंको चूसनेवाले गवर्नर बनकर आयें।

"आपने जातियोंके भेदभावको मिटानेकी बात कही है। लेकिन मैं जो कुछ देखता हूँ, उससे तो यह साबित होता है कि जाति-भेदको मिटानेकी बात तो दूर रही, पुर्तगाली हाकिमोंने गोआमें कम-से-कम एक ऐसी नई जात खड़ी कर दी है, जो सदियोंसे चली आ रही जात-पाँतसे भी ज्यादा डरावनी और खतरनाक है।

"इसलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि आप मानव-सेवा (इनसानोंकी खिदमत), शहरी आज़ादी और जात-पाँतसे ताल्लुक़ रखनेवाले अपने खयाल बदलेंगे, अफ्रीकासे बुलाकर तैनात की गई पुलिस हटा लेंगे और यह ज़ाहिर करेंगे कि शहरी आज़ादीकी आप तहेदिलसे ताईद करते हैं। और, अगर मुमकिन हो तो आप गोआके बाशिन्दोंको अपनी सरकार .खुद क़ायम करने देंगे, उनकी मददके लिए बृहत्तर (ज़्यादा बड़े) हिन्दुस्तानके ज़्यादा तजरबेकार लोगोंको बुलाने देंगे और उनके बुलाने पर आप .खुद भी ऐसी सरकार बनानेमें गोआवालोंके साथ शरीक होंगे।

आपका वफ़ादार,

मो० क० गांधी"

[**फिरसे :** आपका खत अखबारोंमें छपनेके लिए भेजा गया है, इसलिए मैं भी अपना खत 'हरिजन'में छाप रहा हूँ।]

फिर राम-नाम

कुछ दिन हुए, एक दोस्तको एक खत मिला। उन्होंने वह मेरे पास भेजा है और जवाब माँगा है। खत लम्बा है, इसलिए यहाँ सिर्फ़ मतलबकी बातें नक़ल करता हूँ।

"वह (गांधीजी) हिन्दुस्तान-प्रेमी हैं। पर यह बात समझमें नहीं आती कि हररोज खुलेमें प्रार्थना करके और 'राम-नाम' (रामसे मतलब हिन्दू देवता)की धुन लगाकर अपने मुल्कके दूसरे मज़हबवालोंका दिल वे क्यों दुखाते हैं? उन्हें यह समझना चाहिये कि हिन्दुस्तानमें बहुतसे मज़हब हैं और, अगर वह जनता (अवाम)में हिन्दू देवताओंका हवाला देकर बोलेंगे, तो पुराने खयालके लोगोंको ग़लतफ़हमी होगी। और मुस्लिम लीगकी यह भी शिकायत है – रामराज (रामका राज) क़ायम करना उनका एक प्रिय जुमला है। एक सच्चे मुसलमानको यह कैसा लगेगा?"

हज़ारवीं दफ़ा फिर दुहराना पड़ता है कि राम-नाम परमात्माके कई नामोंमेंसे एक है। उसी प्रार्थनामें .कुरानशरीफ़की आयतें और ज़िन्द अवस्ताके श्लोक भी गाये जाते हैं। सच्चे मुसलमानोंने तो, क्योंकि वे सच्चे हैं, राम-नाम लेनेको कभी बुरा नहीं माना। राम-नाम कोई फ़ज़ूल रट नहीं है। मेरे और लाखों हिन्दुओंके नज़दीक तो यह सर्वव्यापी (हर जगह मौजूद) परमात्माको पुकारनेका एक ढंग बनाया गया है। रामके पीछे जो 'नाम' है, वह सबसे ज़्यादा महत्त्व (अहमियत)का हिस्सा है। उसका मतलब है ऐतिहासिक रामके बिना नाम। कुछ भी हो, मेरे इस खुल्लमखुल्ला कहनेसे कि मैं इस धरमका हूँ, किसीको दुःख क्यों हो? खासकर मुस्लिम लीगको? इन सभाओंमें आनेके लिए किसीको मजबूर नहीं किया जाता और, अगर कोई आ भी गया तो लाज़िमी (अनिवार्य) नहीं कि वह रामधुनमें शामिल हो। आनेवालोंसे तो सिर्फ़ यही आशा की जाती है कि वे प्रार्थनाकी शान्ति भंग न करें और अगर उसके किसी हिस्सेमें वे नहीं भी मानते, तो भी उसे बरदास्त करें।

'रामराज'के जुमलेके बारेमें — मैं इसका मतलब कई दफ़ा बता चुका हूँ। उसके बाद किसीको इसके इस्तेमालसे दुःख नहीं होना चाहिये। यह एक आसान और मतलबसे भरा जुमला है और इसका मतलब दूसरा कोई भी जुमला करोड़ोंको नहीं समझा सकता। जब मैं सरहद्दी सूबा (सीमा-प्रान्त)में जाता हूँ और मेरे सुननेवाले ज़्यादा मुसलमान होते हैं, तो मैं इसे .खुदाई राज कहता हूँ। ईसाई सुननेवाले हों तो मैं उसे दुनियामें गादकी हुकूमत कहूँगा। अगर मैं कोई और तरीक़ा अख्तियार करूँ, तो वह अपने-आपको दबाना होगा और धोखेबाज़ी होगी।

सेवाग्राम, ८-८-'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्षिण अफ्रीका

दक्षिण अफ्रीकाकी नीचे दी गई खबरें पाठकोंको दिलचस्प मालूम होंगी।

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी लड़ाईमें शरीक होनेवाले रेवरेण्ड माइकेल स्कॉटने 'ताक़तसे नहीं' नामका एक नोट लिखा है। रोज़ाना अखबारोंमें वह छप भी चुका है। वह समूचे युरोपियनोंको शरीक करनेवाला होना चाहिये। अपने एक नोटमें उन्होंने लिखा है :

"आपमें और आपकी लड़ाईमें मूर्तिमन्त (जीती-जागती) दिखाई देनेवाली भावना या स्पिरिट उसके खिलाफ़ खड़ी हुई ज़बरदस्त और धोखेबाज़ ताक़तोंके सामने कभी मिट नहीं सकती।"

डरबनसे एक अंग्रेज़ बहन लिखती हैं :

"सत्याग्रहियोंको प्रोत्साहन या बढ़ावेके दो शब्द कहनेके लिए मैं पहले ही दिन उनकी छावनीमें गई थी। उनकी प्रसन्नता और उनके मामूली बरताव और रुखकी मुझ पर गहरी छाप पड़ी। हिन्दुस्तानियोंके कुछ आन्दोलन (तहरीक) मैंने देखे हैं। यह भी उसी तरहकी एक 'असल चीज़' है। उसके बाद मैं एक दिन कोर्टमें भी गई। मुझे लगा कि वहाँ ज़ाहिरा तौर पर जिन पर मुक़दमा चलाया जाता था, वे तो सचमुच न्यायाधीश या जजके समान मालूम होते थे और उन पर मुक़दमा चलानेवाले जज, अफ़सर और सरकार कठघरेमें खड़े रहनेवाले गुनहगारों-जैसे दिखाई देते थे। अगर आपने यहाँके कुछ नेताओंके बयान पढ़े होंगे, तो आपने जाना होगा कि उनसे भी यही छाप पड़ती है।

"रेवरेण्ड माइकेल स्कॉट बड़े भले आदमी हैं। वे सिर्फ़ ४० बरसके हैं और ऊँचे दरजेके एंग्लीकन पादरियोंके जैसे 'शर्ट्स' पहनते हैं। लोग उन्हें फादर स्कॉटके नामसे पुकारते हैं। वे मुझे कुछ हद तक स्व० सी० एफ० एण्ड्रूज़-जैसे लगते हैं।

"मणिलाल यहाँ वापस आ रहे हैं, यह जानकर मुझे ख़ुशी हुई है। उनके आ जानेसे यहाँके नेताओंको बड़ी मदद मिलेगी, अगरचे हक़ीक़तमें हिन्दुस्तानियोंकी आज तककी लड़ाई बड़े ऊँचे स्तर या लेवल पर चलती रही है। यही वजह है कि कुछ युरोपियन इस लड़ाईका समर्थन (ताईद) करने लगे हैं। फिर भी ऐसे लोगोंकी तादाद ज़्यादा नहीं है।"

जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, अगर हमारे देशभाई सच्चे अहिंसक बने रहे, तो आखिर जीत उनकी ही होगी। अहिंसा हारना तो जानती ही नहीं।

एक दूसरे दोस्त लिखते हैं :

"आपने श्रीमती नायडूकी मौतका हाल सुना होगा। मौतसे ३ महीने पहले वे एक दुर्घटनाकी शिकार हुई थीं। नम्बर जुड़ानेके इन्तज़ाममें कुछ गड़बड़ी हो जानेकी वजहसे इस दरमियान उनके कुनबेवालोंको मेरा फोन नम्बर नहीं मिल सका। मेरा उन पर स्नेह था। वे बड़ी ख़ुशमिजाज़ थीं, सच्ची दोस्त थीं और होशियार गृहिणी थीं। नायडुओंके घरका वातावरण हमेशा ख़ुशनुमा रहता था। वहाँ कोई किसी वक़्त भी जा सकता था। श्रीमती नायडू अपने काममें कितनी ही मशगुल क्यों न हों, आये हुए मेहमानकी आवभगत किये बिना न रहतीं। वे कितनी बहादुर थीं! खयाल कीजिये कि, जितने अरसे तक उनके बच्चे हिन्दुस्तानमें रहे, उन्हें कितनी फ़िक्र बनी रही होगी। उनका और थम्बेका एक संयुक्त स्मारक (मिली हुई यादगार) क़ायम किया जाय, ऐसी मेरी बड़ी इच्छा है।"

साथ-ही-साथ मुझे यह भी बता देना चाहिये कि श्रीमती नायडूके पति मेरे वक़्तकी दक्षिण अफ्रीकाकी लड़ाईमें पहले पहले शरीक होनेवाले सत्याग्रहियोंमेंसे एक थे। पूना, ३१-७-'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

टिप्पणियाँ

गोआ

गोआके पुर्तगाली हाकिम गोआके लोगोंका मुँह बन्द करके बड़े आनन्दसे उन्हें 'इनसान बनाने'के कामोंमें लगे हुए हैं! वह 'कोर्ट मार्शल' (फ़ौजी मुक़दमा) इसकी आखिरी मिसाल है, जिसमें श्री ब्रेगान्ज़ा कुनहाको शहरी आज़ादीके प्राथमिक अधिकारों (पहले हक़ों)को हिम्मतके साथ जतानेके लिए आठ सालकी सज़ा दी गई और अफ्रीकाकी एक बड़ी दूरकी पुर्तगाली नौआबादी (उपनिवेश)में देशनिकाला दे दिया गया है। कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीने गोआके हाकिमोंकी पॉलिसीकी निन्दाका ठहराव पास करके ठीक ही किया है। इनकी पॉलिसीमें और फ्रांसीसी गवर्नरकी पॉलिसीमें ज़मीन-आसमानका फ़र्क़ है, जिसने फ्रांसीसी बस्तीके लोगोंको ब्रिटिश हिन्दुस्तानके लोगोंके साथ अपनी क़िस्मतको मिला देनेके लिए बढ़ावा दिया है।

सेवाग्राम, १२-८-'४६

दक्षिण अफ्रीका

दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी बहादुराना लड़ाई उसी तेज़ी और जोशके साथ चल रही है। उसके ज़्यादा दिन तक चलनेके निश्चित आसार दिखाई दे रहे हैं। सत्याग्रही जितने ज़्यादा वक़्त तक तकलीफ़ सहेंगे, उनका नाम और पुरस्कार (इनाम) भी उतना ही बड़ा होगा। लम्बे अरसे तक की जानेवाली हरएक क़ुरबानी पर यह बात लागू होती है। दक्षिण अफ्रीकाकी यूनियन सरकारने इरादतन् जो काम किया है — क़ानून बना दिया है —, वह बहादुर मर्द और औरतोंकी क़ुरबानीके बावजूद एकदम बदलनेवाला नहीं है। यह बात मैंने सत्याग्रहियोंके जोशको कम करनेके लिए नहीं, बल्कि ज़्यादा बड़ी और ज़्यादा लम्बी क़ुरबानीके लिए उनके दिलको फ़ौलाद-सा मज़बूत बनानेके लिए कही है। उनके नेताओंको, जब वे हिन्दुस्तानमें थे, साफ़ लफ़्ज़ोंमें यह कह दिया गया था कि उन्हें यह उम्मीद नहीं रखनी चाहिये कि उनकी लड़ाई जल्द खत्म हो जायगी। वक़्त हमेशा ज़ुल्म सहनेवालेका ही साथ देता है। इसकी वजह सिर्फ़ यही है कि जितना ज़्यादा अन्याय और ज़ुल्म जारी रक्खा जाता है, उतना ही ज़्यादा उसका भण्डाफोड़ भी होता है। सच पूछा जाय तो ज़ुल्म ज़्यादा वक़्त तक कभी टिक नहीं सकता। सहन करनेवालों या ज़ुल्मके शिकार बने हुए लोगोंको कभी निराश नहीं होना चाहिये, फिर भले ही उनकी लड़ाई ज़्यादा अरसे तक चलनेवाली जान पड़े या कम अरसे तक, क्योंकि उसका नतीजा तो यक़ीनी तौर पर अच्छा ही होता है।

सेवाग्राम, १२-८-'४६

ईश्वरका ध्यान कैसे किया जाय?

एक भाई लिखते हैं :

"आप कहते हैं कि नियम (क़ानून) यह होना चाहिये कि प्रार्थनाके वक़्त हरएक आदमी आँखें बन्द करके बैठे और ईश्वरके सिवा दूसरी किसी चीज़का खयाल न करे। लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि हम किस तरह और किस शकलमें ईश्वरका ध्यान करें?"

ध्यान करनेका सच्चा रास्ता यह है कि हम अपनी भक्तिके विषयको छोड़कर बाकी सब ओरसे मनकी आँखों और कानोंको खींच लें। इसलिए प्रार्थनाके दरमियान आँखे बन्द करलेनेसे हमें इस तरहके ध्यानमें मदद मिलेगी। क़ुदरती तौरसे ईश्वरके बारेके इनसानके खयालकी कोई हद होती है। इसलिए हरएक आदमीको ईश्वरका उसी शकलमें ध्यान करना चाहिए, जो उसे सबसे ज़्यादा रुचे, बशर्ते कि वह खयाल पाक (पवित्र) और ऊँचा उठानेवाला हो।

सेवाग्राम, १०-८-'४६

('हरिजन'से) **मो० क० गांधी**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

१८ अगस्त १९४६

महादेव देसाई

उनके बारेमें कुछ लिखना मुश्किल है, जो मेरे प्यारे दोस्त और साथी थे और जिनके साथ मेरी ज़िन्दगीकी कई नज़दीकी यादें जुड़ी हुई हैं। ज्यों ही मैं उनके बारेमें सोचता हूँ, वे यादें ताज़ी हो जाती हैं और गुज़रा हुआ ज़माना उनके साथ बीते हुए दिनोंकी कई तसवीरें लेकर सामने आ खड़ा होता है।

दुनियामें हम कई चीज़ोंको सच मान लेते हैं, यहाँ तक कि दोस्तोंको भी। हममेंसे बहुतोंकी निगाहमें महादेवने एक तरहकी संस्था (इदारे)की शकल अख्तियार कर ली थी। ख़ामोश, क़ाबिल, कार्यकुशल, मेहनती, ख़ुदको भूल जानेवाले और सच्चे सेवक महादेवका परिचय जितना बढ़ता जाता, उतने ही ज़्यादा हम उनकी इज़्ज़त करते और उन्हें चाहते थे। लगभग २५ सालसे हम एक-दूसरेको जानते थे और अक्सर हम एक ही ध्येयके लिए साथ मिलकर काम करते थे। जो भी काम वे करते, अच्छी तरह और पूरी तरह करते। उनका दृष्टिकोण शास्त्रीय था, लेकिन साथ ही वे रहमदिल और हमदर्द भी थे, जिसने उन्हें सबका लाड़ला बना दिया था। इसलिए हम उन्हें प्यार करने लगे और उनकी प्रशंसा करने लगे। और, जब वे एकाएक चल बसे, तो हमारी ज़िन्दगीमें एक खाई और खोखलापन पैदा हो गया और सूनेपनने हमें जकड़ लिया। क्योंकि हमारी ज़िन्दगी और कामका एक बड़ा अंग बन जानेवाला शख्स अब नहीं रहा था, एक प्यारा साथी हमारे बीचसे उठ गया था और उसकी जगह लेनेवाला कोई नहीं था

फिर भी उनकी याद आज भी ताज़ी बनी हुई है — वह हमारे मनको प्रसन्न करती है और हमें हिम्मत और ताक़त देती है, क्योंकि अभी हमारी कसौटीके दिन पूरे नहीं हुए हैं और भविष्य कठिनाइयोंसे भरा दिखाई देता है। काश आज अक़्लमन्दीसे भरी और दोस्ताना सलाह देनेवाले महादेव हमारे साथ होते!

वर्धा, १०-८-'४६
('हरिजन'से)

जवाहरलाल नेहरू

यादमें

प्यारे महादेव देसाईको मरनेको चार साल हो गये। फिर भी न तो हम उनके दुःखको भुला सके, और न उनकी कमीको मिटा सके। आज गांधीजी हमारी ज़िन्दगीके सबसे ज़रूरी व्यक्ति हैं और हम महसूस करते हैं कि उनके जिसमका एक अहम अंग ही कट गया है। हमारा कोई दिन ऐसा नहीं बीतता, जब यह बात हमारा दिल नहीं दुखाती कि महादेव हमारे बीच नहीं हैं। वे उन आदमियोंमेंसे थे, जिनकी जगह लेनेकी कोई उम्मीद नहीं कर सकता। कई दफ़ा दूसरोंके कामोंमें अपने-आपको खोकर हम मरे हुओंको भूल जाते हैं। लेकिन महादेवने गांधीजीकी सच्ची सेवाके ज़रिये हिन्दुस्तानकी जनताकी सेवा करके वह महत्त्व पा लिया था कि आज उनकी जगह कोई नहीं ले सकता।

१२-८-'४६
('हरिजन'से)

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

उनका आख़िरी लेख

[यह लेख महादेवभाईका आखिरी लेख है, जो उन्होंने आगाखान महलमें लिखा था — प्या०]

सचाईसे भरी तालीमका घर

मुझे डर है कि क्या यह उस संस्थाका सही नाम हो सकता है, जिसे गांधीजीने बम्बईके लिए रवाना होनेसे पहले नई तालीमके शिक्षकोंकी ट्रेनिंगके लिए खोला था। शब्दशः अनुवाद किया जाय तो यह नाम होगा 'नई तालीमका घर'। लेकिन जिस भावना (स्पिरिट)से इस संस्थाकी कल्पना की गई है, उसे ध्यानमें रखते हुए मैं इसे ऊपरका ही नाम देना पसन्द करूँगा। क्योंकि, गांधीजीसे इस संस्थाको खुली ऐलान करनेकी बिनती करते हुए श्रीमती आशादेवीने सिर्फ़ सत्यकी महिमाका बयान करनेवाले श्लोकही उपनिषदोंसे नहीं पढ़े, बल्कि उन्होंने यह भी कहा कि इस संस्थाकी नींव भी वह सत्य (ब्रह्म)ही है। जिस श्लोकमें यह प्रतिज्ञा दी गई है, उसका भावार्थ यह है: "मैं उचित (वाजबी) बोलूँगा (करूँगा ?), मैं सच बोलूँगा। वह मेरी रक्षा (हिफ़ाज़त) करे!"

यह गांधीजीको उनके उस दिनके भाषणके लिए, जिसने शुद्ध धार्मिक रूप ले लिया था, विषय सुझानेके लिए काफ़ी था। इसने मुझे गांधीजीकी दिसम्बर, १९३१ की स्विट्ज़रलैण्ड वाली तक़रीर (भाषण)की याद दिला दी, जो उन्होंने शान्तिमें सच्ची श्रद्धा (एतक़ाद) रखनेवाले लोगोंके सामने की थी। वह इस सवालके जवाबमें थी: 'आप ईश्वरको सत्य क्यों मानते हैं?' उन्होंने कहा था:

"बचपनमें मुझे हिन्दू शास्त्रोंमें दिये गये ईश्वरके एक हज़ार नामोंको गिनानेवाले विष्णुसहस्रनामका पाठ करना सिखाया गया था। लेकिन भगवान्‌के सारे नामोंकी तादाद इन एक हज़ार नामोंमें ही पूरी नहीं हो जाती। उसके अनगिनत नाम हैं। हमारा विश्वास है — मेरे खयालसे यह सच है — कि दुनियामें जितने प्राणी हैं, उतने ही ईश्वरके नाम हैं। इसलिए हम यह भी कहते हैं कि ईश्वर नामरहित (बेनाम) है। और चूँकि ईश्वरके अनेक रूप हैं, इसलिए हम उसे निराकार भी मानते हैं। और, चूँकि वह कई जबानोंसे बोलता है, इसलिए हम उसे न बोलनेवाला मानते हैं। इसी तरहकी और-और बातें भी हम ईश्वरके बारेमें कहते हैं। जब मैंने इस्लाम धर्मका अध्ययन किया, तो मुझे पता चला कि इस्लाम धर्ममें भी ईश्वरके कई नाम हैं।

"जो लोग यह कहते हैं कि 'ईश्वर प्रेमरूप है,' उनके साथ मैं भी यही कहता हूँ। लेकिन मेरे दिलकी गहराईमें मैं यह मानता कि हालाँकि भगवान् प्रेमस्वरूप है, फिर भी खास करके तो वह सत्यस्वरूप ही है। अगर इनसान अपनी जबानसे ईश्वका पूरा-पूरा और सच्चा वर्णन (बखान) कर सकता हो, तो मैं अपने तईं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि ईश्वर सत्यस्वरूप है — ईश्वरही सत्य है। लेकिन आजसे दो साल पहले मैं एक क़दम और आगे बढ़ा और कहने लगा कि सत्य ही ईश्वर है। 'ईश्वर सत्य है' और 'सत्य ईश्वर है,' इन दोनोंके बारीक भेद (फ़र्क़)को आप समझ सकेंगे। आजसे ५० साल पहले शुरू की गई सत्यकी खोजको लगातार अखण्ड रूपसे जारी रखनेकी वजहसे ही मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि सत्य ही ईश्वर है। तब मैंने यह पता लगाया कि प्रेमके ज़रिये ही हम सत्यके नज़दीक-से-नज़दीक पहुँच सकते हैं। लेकिन मैंने यह भी देखा कि (कम-से-कम) अंग्रेजीमें प्रेम शब्दके कई अर्थ होते हैं और जब एक इनसानके दूसरे इनसानके साथके प्रेमको वासनाके अर्थमें लिया जाता है, तो वह उसे भ्रष्ट भी कर देता है। मैंने यह भी देखा कि प्रेमका अर्थ अहिंसा मानकर उसे भजनेवाले दुनियामें बहुत कम हैं। लेकिन सत्यके दो मानी करते मैंने कभी किसीको देखा नहीं। ईश्वरको न माननेवाले नास्तिकोंने भी कभी सत्यकी ज़रूरत या ताक़तसे इनकार नहीं किया। लेकिन सत्यकी खोज करनेकी धुनमें नास्तिकोंने ईश्वरके अस्तित्वको भी न माननेमें किसी तरहकी हिचकिचाहट महसूस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं की — उनके दृष्टिकोण (नुक्त-ए-निगाह) से वे सही भी हैं। इसी दलीलकी वजहसे मुझे लगा कि 'ईश्वर सत्य है' कहनेके बजाय यह कहना ज़्यादा सही होगा कि 'सत्य ईश्वर है'। लाखों-करोड़ों लोगोंने किसी अनजान ईश्वरके नाम पर अपने भाइयों पर जो बयानसे बाहरके अनगिनत ज़ुल्म ढाये हैं, उनसे पैदा होनेवाली बड़ी मुश्किलको इसके साथ और जोड़ दीजिये। इसका मतलब यह नहीं कि ईश्वरको न माननेवाले वैज्ञानिक (सायन्सदान) सत्यके नाम पर कोई ज़ुल्म नहीं करते। ....इसके अलावा, हिन्दू दर्शनशास्त्र (फ़िलॉसफी)में एक बात यह कही गई है कि एक ईश्वरका ही अस्तित्व (वजूद) है, दूसरे किसीका नहीं। इसी सत्य पर इस्लामके कलमामें भी जोर दिया गया है। इस्लाममें यह साफ़ कहा गया है कि अकेले ईश्वरकी ही हस्ती है, दूसरे किसीकी नहीं। असलमें सत्यके लिए जो संस्कृत शब्द -सत्- है, उसके लफ़्ज़ी माने होते हैं: जो है, जिसका अस्तित्व है। इन्हीं और दूसरी कई वजहोंसे, जो मैं आपको बता सकता हूँ, मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि 'सत्य ईश्वर है'। इस परिभाषासे मुझे सबसे ज़्यादा तसल्ली होती है। और, अगर आप सत्यका ईश्वरकी शकलमें तजरबा (अनुभव) करना चाहते हों, तो सिर्फ़ प्रेम यानी अहिंसा उसका एक ज़रिया है। और चूँकि मेरा यह विश्वास है कि साधन (ज़रिया) और साध्य (मक़सद) असलमें एक ही हैं, इसलिए मुझे यह कहनेमें कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिये कि 'ईश्वर प्रेम है'।

"आपके भीतरकी आवाज़ आपको जो कहे, वही सत्य है। जो लोग व्यक्तिगत रूपसे सत्यको ईश्वररूप मानकर उसकी खोजमें लगते हैं, उन्हें कई व्रत पालने होते हैं। . . . . अगर आप सत्यके महासागरमें तैरना चाहते हैं, तो आपको उसकी बूँद बनकर उसमें मिल जाना होगा — सारा अहम् (घमण्ड) छोड़ कर शून्यवत् बन जाना होगा।

('हरिजन'से)

महादेव देसाई

गुरु और शिष्य

अनूठा शिष्य

नज़रबन्दीकी हालतमें महादेवभाईकी कठोर और असामयिक (ग़ैर वक़्तकी) मौत हो जाने पर मुल्कके कोने-कोनेसे गांधीजीके पास भेजे गये आश्वासनके सैकड़ों सन्देसोंमेंसे सिर्फ़ दो ही उन तक पहुँचने दिये गये। उनमेंसे एक सन्देसा गांधीजीके भतीजे और बम्बईके भूतपूर्व मेयर श्री मथुरादास त्रिकमजीका था। उनके ख़तमें एक वाक्य था, जिसमें बापू और महादेवभाईके सम्बन्ध पर संक्षेपमें बड़े सुन्दर ढंगसे प्रकाश डाला गया था। उन्होंने लिखा था: "भगवान् बुद्धका सिर्फ़ एक ही शिष्य था — आनन्द। उसी तरह आपका शिष्य महादेव है।" भगवान् बुद्धके हज़ारों शिष्य थे। लेकिन आनन्दसे बढ़कर कोई नहीं था। इसी तरह जितने भी लोगोंने बापूके पास रहकर उनकी सेवा करनेकी कोशिश की, उन सबमें महादेवभाईका अपने अनूठे गुणोंके कारण अनूठा स्थान था। यह कोई मामूली बात नहीं थी। महादेवभाई अक्सर मुझे कहा करते थे: "बापूके साथ रहना मानो ज्वालामुखीके मुँह पर रहना है। पता नहीं वह कब फूट पड़े और हमें उड़ा दे।" इसकी वजह यह है कि बापू दूसरे सब लोगोंसे इतने ऊँचे उठ गये हैं कि उनके आस-पास रहनेवाले लोग महान् गुरुके योग्य शिष्य बननेकी भरसक कोशिश करने पर भी उनकी (बापूकी) आशाओं तक नहीं पहुँच पाते। इसके अलावा, आध्यात्मिक दृष्टिसे इतने ऊँचे उठ जाने पर भी बापू बड़े दयालु (रहमदिल) हैं। वे अपने पास आनेवाले लोगोंसे पूर्णताकी आशा नहीं रखते। लेकिन यह आशा वे ज़रूर रखते हैं कि पूर्णताको हासिल करनेकी ज़ोरदार ख़ाहिश उनमें हो। अपने साथियोंमेंसे हरएकसे एक-सी रफ़्तारसे तरक़्क़ी करनेकी आशा भी वे नहीं रखते। कभी-कभी तो वे लोगोंके पहाड़-जैसे गुनाहोंकी उपेक्षा करके उन्हें माफ़ कर देते हैं। लेकिन कभी ऐसे मौक़े भी आ जाते हैं, जब मामूली ग़लतियाँ भी उनकी निगाहमें पहाड़की शकल अख्तियार कर लेती हैं — ख़ासकर उन लोगोंकी ग़लतियाँ, जो उनके नज़दीक-से-नज़दीक पहुँच जाते हैं।

उनकी ज़िन्दगीभरकी प्रार्थना

महादेवभाईने एक बार मुझसे कहा था: "ज़िन्दगीमें मैं एक यही प्रार्थना करता रहा हूँ कि बापूकी सेवामें मर मिटूँ। लेकिन इस सचाईको मैं जानता हूँ कि किसी भी वक़्त मैं बापूकी सेवाके लिए नालायक़ साबित हो सकता हूँ और पलभरमें मुझे यहाँसे बोरिया-बधना समेटकर भाग जाना पड़े।" मुझे उनकी इस बात पर यक़ीन नहीं होता था। उनसे अलग बापूकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। फिर भी महादेवभाई और बापूके साथके अपने कुछ बरसोंमें मैंने ऐसे मौक़े भी देखे, जब महादेवभाई ख़ुद बापूका साथ छोड़नेके लिए तैयार हो गये थे। मिसालके तौर पर डेलाँगकी घटना (वाक़या)को ही लीजिये।

डेलाँगसे दुर्गाबहन (महादेवभाईकी पत्नी) और श्रीमती कस्तूरबा जगन्नाथपुरीको गईं। वहाँ अपने कट्टर सनातनी संस्कारोंके कारण उनके मनमें मन्दिरोंमें जानेकी बात उठी। सो वे भगवान्के दर्शनोंके लिए मन्दिरमें गईं — जाते वक़्त वे बापूकी इस सीखको भूल गईं कि जिन मन्दिरोंके दरवाज़े हरिजनोंके लिए बन्द हों, वहाँ सवर्ण हिन्दुओंको नहीं जाना चाहिये। महादेवभाईके लगभग १२ सालके लड़केने मन्दिरमें जानेसे इनकार कर दिया। वह बाहर ही खड़ा रहा और पुजारियोंको हरिजनोंको मन्दिरोंमें न जाने देनेकी ग़लती समझाता रहा। पुरीसे जब वे लोग लौट आये, तो किसीने यह किस्सा गांधीजीसे कह सुनाया। छोटी-सी उमरमें इतनी हिम्मत दिखानेके लिए बालक नारायणकी (महादेवभाईके लड़केकी) पीठ ठोकनेके सिवा, इस घटना पर हमने ज़्यादा विचार ही नहीं किया। लेकिन बापू इस सारी चीज़को आसानीसे नहीं उड़ा सके। वे इसकी गहराई तक पहुँचे। उन्होंने बासे इस बारेमें बात की। बाने बड़ी नरमीसे अपनी ग़लती क़बूल करके माफ़ी माँग ली। बापूने उनको दोष नहीं दिया। "मैंने बाकी शिक्षाकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया। इसलिए उनकी ग़लतीके लिए मैं ख़ुद ज़िम्मेदार हूँ, न कि वे।" इसके बाद उन्होंने दुर्गाबहनकी शिक्षाकी उपेक्षा करनेके लिए महादेवभाईको आड़े हाथों लिया। "तुमने नारायणकी शिक्षा-दीक्षामें इतनी दिलचस्पी ली कि वह अपनी उमरके औसत लड़केसे ज़्यादा बातें जानता है। क्या यही दिलचस्पी तुम्हें दुर्गाकी शिक्षामें नहीं लेनी चाहिये थी? 'हरिजन'में अस्पृश्यता (छुआछूत) और हरिजनोंके लिए मन्दिर खोलनेके बारेमें लिखनेसे क्या फ़ायदा, अगर यह सन्देश तुम अपने घर तक भी नहीं पहुँचा सकते? बा इतनी बूढ़ी हो गई हैं कि वे नया कुछ सीख नहीं सकतीं, लेकिन दुर्गा तो ऐसी नहीं है।" महादेवभाईने किसी तरह अपना बचाव किया। इससे बात और बिगड़ गई। जो बात हम सबको मामूली जान पड़ती थी, वह इतनी बढ़ गई कि महादेवभाई सचमुच अपना बोरिया-बिस्तर बाँधकर बापूके पाससे चले जानेके लिए तैयार हो गये। लेकिन वे बापूके अभिन्न अंग बन चुके थे। उनकी उपयोगिता इतनी बड़ी थी, उनकी भक्ति और श्रद्धा इतनी पूर्ण थी कि यह महान् संकट (जीते-जी या मौतके बाद महादेवभाईका बापूसे बिछोह महान् संकट ही कहा जा सकता था) टल गया। भगवान्ने उनकी प्रार्थना मंज़ूर की और महादेवभाई मरने तक बापूकी सेवा करते रहे। अपने गुरुकी और मुल्ककी आख़िरी साँस तक सेवा करते-करते वे १५ अगस्त, १९४२के दिन सदाके लिए चल बसे।

महादेवभाईके मरनेके कुछ ही दिन बाद मैंने बापूसे एक रोज़ पूछा: "आज तक आपने जितनी मौतें देखीं, उन सबमें महादेवभाईकी मौतसे क्या आपको सबसे ज़्यादा सदमा नहीं पहुँचा?" उन्होंने जवाब दिया: "जमनालाल, मगनलाल और महादेव — इनमेंसे हरएक अपने-अपने क्षेत्रमें अनूठे थे। मेरा ख़याल है कि उनकी जगह दूसरे नहीं ले सकते। मगर मैं यह कहूँगा कि इन तीनोंमेंसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महादेव मुझमें पूरी तरह खो गया था। मैं यह कह सकता हूँ कि मुझसे अलग उसकी कोई हस्ती ही नहीं रह गई थी।"

लुभावना व्यक्तित्व

हालाँकि महादेवभाई उमरके लिहाज़से मेरे पिताके समान थे, लेकिन उनका मन इतना जवान और ताज़ा था कि अपने दोस्त या भाईके सिवा कोई उन्हें कुछ और समझ ही नहीं सकता था। पहले पहल सन् १९१९में मैंने उन्हें देखा था, जब मैं नन्हीं बच्ची थी। उससे कुछ ही पहले मेरे भाई प्यारेलाल गांधीजीके साथ जुड़े थे। महादेवभाईसे मेरी उस मुलाक़ातकी बात आज भी मुझे अच्छी तरह याद है। उस वक़्त मुझे वे गांधीजीके साथियोंमें सबसे ज़्यादा ममताळु और स्नेहभरे मालूम हुए। महादेवभाईके इसी गुणने — बूढ़ों या जवानोंके सम्पर्कमें आते ही उन्हें जीत लेने या अपने वशमें कर लेनेकी उनकी शक्तिने — उन्हें बापूकी छावनीमें इतना महत्त्वपूर्ण बना दिया था। इसी गुणकी वजहसे महादेवभाई बापूके आसपासकी घरेलु समस्याओं (मसलों)को हल करके बापूका बहुत-सा बोझ हलका कर देते थे। अपनी इस .खूबीके ज़रिये वे कई अच्छे अच्छे कार्यकर्त्ताओं और दोस्तोंसे बापूकी पहचान करा सके थे। मुझे याद है, बापूने एक बार मुझको कहा था कि महादेवभाई ही राजाजीको उनके पास लाये थे।

शुरूकी यादें

महादेवभाईके दोस्तोंमेंसे लगभग हरएक भाई-बहन यह मानते थे कि वे उन्हींका सबसे ज़्यादा ध्यान रखते हैं। मेरी माँको वे अपने लड़केसे भी ज़्यादा प्यारे थे। मैं जब सन् १९३८में गांधीजीके साथ रहनेके लिए आई, उसके कुछ ही दिनों बाद महादेवभाई मुझे और मेरे भाईको साथ लेकर सुबह घूमने जाने लगे। बादमें मेरे भाईने तो बन्द कर दिया। लेकिन मैंने उनके साथ घूमना जारी रक्खा। हवाखोरीके दरमियान महादेवभाईने अपनी ज़िन्दगीकी कई पुरानी बातें मुझे बताईं। उस वक़्त मुझे यह कल्पना भी नहीं थी कि वे इतनी जल्दी और अचानक चल बसेंगे। मैंने उस बातचीतका कोई रेकार्ड नहीं रक्खा। आज मैं अपनी इस ग़लती पर पछता रही हूँ। उन्होंने मुझे अपने बचपनकी कई बातें बताईं और कहा कि बहुत छोटी उमरमें ही उनकी माँ मर गई थीं। उन्होंने कैसी ग़रीबीमें पढ़ा, कैसे वे वकील बने और बादमें कैसे को-ऑपरेटिव बैंकिंगके क्षेत्र (मैदान)में आये — यह सब भी उन्होंने मुझसे कहा। अब उनके सुख-चैनके दिन आये और उनके पिता यह उम्मीद करने लगे कि जल्दी ही मेरा बेटा पैसेवाला और प्रभावशाली आदमी बन जायगा। इसी वक़्त महादेवभाई गांधीजीके सम्पर्क (रब्त)में आये। उन्होंने मुझसे कहा था: "बापू उस वक़्त आश्रमवासियोंके लिए चाल-चलनके नियम (क़ायदे) बना रहे थे। मुझे इस काममें बड़ी दिलचस्पी मालूम हुई। मैं और नरहरि रोज शामको आश्रम जाते। इस बारेमें मेरी गांधीजीसे कई बार बड़ी दिलचस्प बहस हुई। मैं उनकी तरफ़ और उनकी ज़िन्दगीके तौर-तरीक़ोंकी ओर ज़्यादा-ज़्यादा खिंचता गया। लेकिन कुछ वक़्त तक बापूने मेरे पिता और मेरी पत्नीका खयाल करके मुझे अपनेसे दूर रक्खा। फिर भी मैंने अपना आग्रह (इसरार) जारी रक्खा और आखिरमें बापू मान गये। मुझे उनका एक पोस्टकार्ड मिला। उसमें एक वाक्य (फ़िक़रा) था, जिसे पढ़कर मैं .खुशीसे उछल पड़ा था। उन्होंने लिखा था: "तुम्हें अपने पास रखकर मुझे बड़ी .खुशी होगी।" तुरत उन्होंने अपनी नौकरीसे इस्तीफ़ा दे दिया, अहमदाबादकी जमी-जमाई गृहस्थी तोड़ दी और साबरमतीके सत्याग्रह आश्रममें आकर रहने लगे। जो कुछ पैसा उन्होंने बचाया था, सब आश्रमके फण्डमें दे दिया और ग़रीबीकी ज़िन्दगी बितानेकी प्रतिज्ञा (अहद)की। इससे उनके पिताको बड़ा दुःख हुआ।

पच्चीस बरसकी बेग़रज़ सेवा

महादेवभाई जबसे गांधीजीके पास आये, तबसे लेकर मरने तक लगातार वे बापूकी सेवा करते रहे। उनके आनेसे पहले सफ़रमें अक्सर बापूका कोई साथी नहीं रहता था। अपना सारा काम वे .खुद करते थे और, जैसा कि वे कहा करते थे, उन्हें किसीकी 'सार-सँभाल'की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। "लेकिन महादेवने आते ही मेरी सारी बातोंका चार्ज ले लिया। वे मेरे सामानका ध्यान रखते, मेरे खानेका इन्तज़ाम करते, मेरे कपड़े धोते और मेरे सेक्रेटरीका काम करते।"

आगाखान महलमें महादेवभाईकी मौत हो जानेके बाद लगभग एक महीने तक मुझे कसकर काम करना पड़ा। जब सरकारने मेरे भाई प्यारेलालको आर्थर रोड जेलसे हमारे साथ रहनेके लिए भेजा, मेरे कामका बोझ कम हुआ। उनके आनेसे पहले मैं बापू और बाकी मालिश वग़ैरा करती, उनका खाना पकाती, कपड़े धोती, कैम्पके मेडिकल अफ़सरके नाते अपना फ़र्ज़ अदा करती और बापूके सेक्रेटरीका काम भी देखती। किसीने बापूसे कह दिया कि मुझे ताक़तसे ज़्यादा काम करना पड़ता है। मैंने बापूको फिर यह यक़ीन दिलानेकी कोशिश की: "बापू, आप मेरी फ़िक्र न करें। काममें लगे रहनेसे मुझे फ़ायदा होगा।" बापूने कहा: "मुझे सचमुच तुम्हारी कोई चिन्ता नहीं। अगर तुम्हें विश्वास है कि तुम यह सारा काम कर सकती हो, तो मैं इस बारेमें ज़्यादा नहीं सोचूँगा। आखिर महादेवने अपने वक़्तमें तुमसे ज़्यादा काम किया था। हालाँकि वे मालिश वग़ैरा और दवादारूका काम नहीं देखते थे, लेकिन वे मेरे सारे कपड़े धोते थे, जब मैं खादीकी एक भारी भरकम पगड़ी, खादीकी मोटी धोती, पेरन और अँगरखा पहना करता था। महादेवको जो काम करना पड़ता था, उसके मुक़ाबलेमें तुम्हारा कपड़े धोनेका काम तो बच्चोंका खेल-सा लगता है। इसके अलावा, वे मेरा खाना पकाते थे, मेरी तरफ़से लोगोंसे मिलते थे, पत्रव्यवहार (खतकिताबत) करते थे और 'यंग इण्डिया'के लिए लेख भी लिखते थे।"

एक दूसरे मौक़े पर बापूने मुझसे कहा था: "महादेवकी एक बड़ी .खूबी यह थी कि जो काम उन्हें सौंपा जाता था, उसे करनेके लिए वे सदा तैयार रहते और बड़े उत्साह (मुस्तैदी)से करते थे। इसी तरह वे एक अच्छे लेखक, अच्छे रसोइया और अच्छे कुली बन सके थे। अक्सर जो लोग मेरे साथ काम करनेके लिए आते हैं, वे ऐसे ही बन जाते हैं"

१५ अगस्त, १९४२की आखिरी सुबह रोज़के बनिस्बत वे जल्दी उठे। उन्होंने बापूके नाश्तेके लिए मोसम्बीका रस निकाला और हमारे तैयार होनेके पहले ही सारे कुनबेके लिए चाय और टोस्ट तैयार किया। टोस्ट इतना अच्छा बना था कि सबने महादेवभाईकी तारीफ़ की। अपने विनोदी स्वभावके अनुसार उन्होंने मज़ाकमें कहा: "तब तो कहीं भी मुझे खानसामाकी जगह मिल जायगी।" श्रीमती नायडूने जवाब दिया: "बापूकी गृहस्थीमें तुम क्या नहीं हो! खानसामा, चपरासी, सेक्रेटरी, सब कुछ।"

एक दूसरे मौक़े पर बापू मुझसे कहने लगे: "मैं एक अच्छा शिक्षक (उस्ताद) हूँ। इसका सबूत यह है कि अपने शिष्योंको जो चीज़ मैंने .खुद सिखाई, उसमें वे मुझसे भी आगे बढ़ गये हैं।" (बापू वे संस्कृतके अध्ययनमें मेरी दिलचस्पी बढ़ानेके लिए कह रहे थे, जिसे मैंने जेलमें उनसे सीखना शुरू किया था।) मैं उनकी इस बातको माननेके लिए तैयार नहीं थी। इसलिए बापूने मिसालें देना शुरू किया। "दक्षिण अफ्रीकामें पहले मैंने जूते बनाना सीखा और दूसरोंको सिखाया, लेकिन बादमें केलेनबेक और मगनलाल मुझसे ज़्यादा अच्छे जूते बनाने लगे। इसी तरह कताईकी क्रिया पहले मैंने सीखी और बादमें आश्रममें दूसरोंको सिखाई। लेकिन आज वे लोग मुझसे ज़्यादा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छा कात लेते हैं। महादेवने मुझसे कातना सीखा, और वे मुझसे .खूब बढ़िया कात लेते थे।"

मैंने कहा: "लेकिन बापू, ये तो आपके गौण काम हैं। आपका .खास काम तो 'यंग इण्डिया' और 'हरिजन' के लिए लेख लिखनेका और दुनियाको मौलिक विचार देनेका ही रहा है।" बापूने जवाब दिया: "जहाँ तक विचारोंका ताल्लुक़ है, मुझमें थोड़ी मौलिकता ज़रूर है। लेकिन लेखनकला तो इससे पैदा होनेवाली एक चीज़ है। मैं लिखता हूँ सिर्फ़ अपने विचारोंका प्रचार करनेके लिए। अखबारनवीसी मेरा धन्धा नहीं है। और इस क्षेत्रमें भी, हालाँकि महादेवने अखबारनवीसी मुझसे सीखी थी, लेकिन उनकी क़लम मुझसे ज़्यादा आकर्षक (दिलकश) और मँजी हुई थी।"

शिष्य या लड़का ?

पुराने ज़मानेके ऋषि-महर्षियोंमें और बापूमें यह फ़र्क़ है कि बापू दुनियाको त्याग कर भी दुनियाके बने हुए हैं। वे जैसे अपने बच्चोंको प्यार करते हैं, वैसे ही अपने सम्पर्कमें आनेवाले दूसरोंको भी करते हैं। सबके बापू (पिता) बन जाने पर भी उन्होंने अपने बच्चोंको प्यार करना नहीं छोड़ा है। लेकिन उनके अपने बच्चे भी बापूसे उतने ही प्यार और वात्सल्यकी आशा रख सकते और रखते हैं, जितना कि वे अपने साथियोंको देते हैं। वे सबको एक-सा प्यार करते हैं। इस तरह बापू महादेवभाईके भी पूरे-पूरे अर्थमें पिता थे। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था कि सन् १९१६में बापूके पास आनेके थोड़े दिन बाद ही वे दोनों एक बड़ी गरम रातमें सफ़र कर रहे थे। बापू सोनेके लिए लेट गये और महादेवभाई पंखा करने लगे। पर थके होनेकी वजहसे वे .खुद ही गहरी नींदमें सो गये। और जब सोकर उठे, तब बापू उन पर पंखा कर रहे थे। मौसिम इतना गरम था कि जब महादेवभाई सो गये और पंखा बन्द हो गया, तो बापू जग पड़े। उठते ही वे पंखा लेकर माँकी ममताके साथ महादेवभाई पर हवा करने लगे।

श्रीमती नायडूने एक बार मुझसे कहा था कि महादेवभाई जब शुरू-शुरूमें बापूके पास आए, उस वक़्त वे इतने सुंदर और खिले हुए थे कि बापू कहा करते थे "महादेव गुलाबका फूल है।" उस वक़्त श्रीमती नायडूने उनका नाम गुल-ए-गुजरात (गुजरातका फूल) रख दिया था।

बापूके बॉसवेल (जीवनी-लेखक)

अपने गहरे अध्ययन (मुताला)के बावजूद महादेवभाई बच्चों जैसे सरल और भोले थे। वे कई विषयोंके जानकार थे और मौलिक (नये) विचारोंवाले थे। उनकी ज़िन्दगीकी एक लगन यही थी कि जहाँ तक हो सके मैं बापूके बोझको हलका करूँ और उनके विचार लोगोंको समझाऊँ। अगर बापूने कताईका काम हाथमें लिया, तो महादेवभाईने कताईसे ताल्लुक़ रखनेवाला सारा साहित्य (अदब) पढ़ा और उसे 'यंग इण्डिया' और 'हरिजन' के लेखोंके रूपमें संक्षेपमें बापूके सामने रक्खा। अगर बापूने देहाती दस्तकारी या नई तालीम या और कोई विषय हाथमें लिया, तो महादेवभाई उसके अध्ययन (मुताला)में लग गये और उसमें गहराई तक पैठ गये। यह सिर्फ़ इसीलिए कि बापूके विचारोंको .भाष्यरूपमें (तशरीहक़ेसा) जनताके सामने पेश करें ताकि वह बापूको सही-सही समझ सके। वे बापूके प्रवचनों (.खुतबों) और भाषणों (तक़रीरों)का रेकार्ड रखते और उसे बापूकी जीवनीके तौर पर 'यंग इण्डिया' और 'हरिजन' में हफ़्तेवार खतोंके रूपमें छापते।

नज़रबन्दीकी हालतमें महादेवभाईके मर जानेके थोड़े दिन बाद ही उनकी जुदाईसे होनेवाले दर्दको ज़ाहिर करते हुए बापू बोले: "वे मेरे बॉसवेल (जीवनी लिखनेवाले) बनना चाहते थे, फिर भी मुझसे पहले मरना चाहते थे। इससे बेहतर वे क्या कर सकते थे? पर वे तो चले गये और बदलेमें मुझे उनकी जीवनी लिखनेके लिए छोड़ गये।" यह .कुदरतका कैसा खेल है! एक दूसरे मौक़े पर उन्होंने कहा था: "बच्चे अपने माँ-बापके पहले मरना चाहें, इससे बढ़कर बेरहमी और क्या हो सकती है? यह उनका निरा स्वार्थ है।" लेकिन उनके दर्शन (फ़िलॉसफ़ी) ने उनकी मदद की। "भले ही मैं दूसरोंको इस बातका यक़ीन न दिला सकूँ, लेकिन मैं यह ज़रूर महसूस करता हूँ कि मौत कभी वक़्तसे पहले नहीं आती।" उन्होंने कहा था: "दुनियामें अपना काम खत्म करनेसे पहले कोई मर्द या औरत कभी नहीं मरता। महादेवने पचास सालमें सौ बरसका काम पूरा कर डाला था। सो वह आराम करने चले गये, जिस पर उनका पूरा हक़ था।"

उपवासकी परछाई

आगाखान महलमें नज़रबन्द रहते हुए बापूने जो उपवास किया था, उसकी छाया तो अगस्तकी गिरफ़्तारियोंके पहले ही गहरी होने लगी थी। सत्याग्रहमें उपवास करना मुनासिब है या नहीं, इस पर कई बार बहस हो चुकी थी। उससे महादेवभाईको बड़ा रंज होता था। उनका कहना था कि किसी भी हालतमें बापू उपवास न करें। लेकिन जब बापूने उनसे कह दिया कि अगर वे उपवास करेंगे तो अन्तस (अन्दरूनी)की पुकार सुनकर ही करेंगे, तो महादेवभाई चुप हो गये। लेकिन यह विचार उन्हें तकलीफ़ पहुँचाता रहा। आगाखान महलमें मैं सिर्फ़ चार दिन उनके साथ रही। वे अक्सर इसी बात पर दुःख ज़ाहिर किया करते कि बापूने अगर उपवास किया तो क्या होगा। वे इसकी कल्पनाको भी बरदाश्त नहीं कर सकते थे। पता नहीं, १५ अगस्त, १९४२की सुबह उनकी जीवनकी जोतको बुझानेवाला यह मन्थन था या उससे पैदा हुई मानसिक (ज़ेहनी) खराबी?

आखिरी काम

जब कभी महादेवभाई बीमार पड़ते, वे मुझे बुला भेजते। कभी-कभी मैं मज़ाकमें कहती: "आप बड़े आदमी हैं, आपके डॉक्टर भी बड़े ही होने चाहिये। मैं आपका इलाज करनेमें घबरा जाती हूँ।" एक दिन वे बहुत नाराज़ हो गये: "सुशीला, तुम मेरी बहन हो। मेरा तुम पर विश्वास है। दूसरोंके हाथों मरनेके बजाय मैं तुम्हारे हाथ मरना ज़्यादा पसन्द करूँगा।" कैसी अजीब भविष्यवाणी (पेशीनगोई) थी! हम दोनोंमेंसे उस वक़्त शायद ही किसीने सोचा हो कि ऐसा दिन जल्दी ही आनेवाला है।

यह एक अजीब संजोग था कि मैं श्रीमती कस्तूरबाके साथ ९ अगस्त, १९४२को गिरफ़्तार होनेके लिए ऐन वक़्त पर बम्बई पहुँच गई। बापूने उसे परमात्माकी कृपा या चमत्कार भी कह डाला था। हमें दो दिन तक बम्बईके आर्थर रोड जेलमें रक्खा गया और बादमें ११ अगस्तको आगाखान महलमें ले जाया गया। बापू वाइसरायको लिखे जानेवाले खतका मज़मून तैयार कर रहे थे। उसकी कई दफ़ा बदला गया। महादेवभाईको हर दफ़ा उसकी नक़ल करनी पड़ती थी। मुझे देखकर वे बोले: "तुम मुझे नकल करनेमें मदद दोगी न?" सो मैंने एक नक़ल की। कुछ और बदला-बदलीके बाद अन्तिम नक़ल महादेवभाईने अपने .खूबसूरत अक्षरोंमें तैयार की। बापूने उस पर अपने दस्तखत किये और १४ अगस्तके दिन वाइसरायके पास डाकसे भेजनेके लिए वह छावनीके सुपरिण्टेण्डेण्टको सौंप दी गई। उस रात महादेवभाईने बापूके सिरकी मालिश की थी। मुझे ज़ुकाम होनेसे मैं जल्दी सो गई थी।

१५ अगस्त, १९४२—तैयारी

जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूँ, महादेवभाई रोज़के बनिस्बत ज़्यादा सवेरे उठ गये। उस दिन उनका विचार सुबहकी प्रार्थनामें शामिल होनेका था, लेकिन उसके लिए तो काफ़ी देर हो चुकी थी। इसलिए उन्होंने शेविंग की, मूँछें सवारीं और नाखून काटे। वे एक पूरी साइज़के शीशेके सामने बैठे यह सब कर रहे थे (ऐसे शीशे आगाखान महलमें कई थे)। उसी समय श्रीमती नायडू उधरसे गुज़रीं। उन्होंने मज़ाक किया: "महादेवको आज क्या हो गया है? वह आज एकाएक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने रूपको सवाँरनेमें लग गये हैं।" किसीने उस वक़्त यह सोचा भी नहीं था कि यह वे आखिरी बार कर रहे हैं।

गांधीजी रोज़ सुबह क़रीब साढ़ेसात बजे बग़ीचेमें टहलने निकल पड़ते थे। उस रोज़ महादेवभाई भी हमारे साथ शामिल हो लिये। उन्होंने कहा: "यहाँ आनेके बाद गई रात पहली बार मैं गहरी नींद सोया। आज मुझमें गजबकी .फुर्ती आ गई है।" उन्होंने साहित्य (अदब)मेंसे अहिंसाकी मिसालें इकट्ठा करके उनका एक संग्रह (मजमुआ) छपानेकी बात कही। फिर वे एकाएक मर जानेवाले लोगोंकी बात करने लगे। बरसों पहले उन्होंने मुझसे कहा था कि उनके पिता (वालिद) अचानक कैसे चल बसे थे। दुनियादारीको छोड़ देनेवाले लड़केसे अभी-अभी वे समझौता कर पाये थे और उसके साथ आश्रममें आकर कुछ दिन रहनेकी बात सोच रहे थे। महादेवभाईने अपनी लिखी किताबकी एक नक़ल उनके पास भेजी थी। वे आरामकुर्सीमें बैठे अपने बेटेकी किताबको पढ़कर .खुश हो रहे थे। एकाएक उन्होंने अपना सिर पीछेकी ओर (तरफ़) टिकाया और हमेशाके लिए सो गये। उस क़िस्सेको सुनकर मैं काँप उठी थी। मैंने अपने तईं कहा था: "भगवान्, महादेवभाईको ऐसी दुर्घटनासे बचाना!" मैं इस क़िस्सेको बिलकुल भूल गई थी, पर महादेवभाईकी बातोंने उस सुबह मुझे उसकी याद दिला दी।

नाटकका अन्त (खात्मा)

टहलकर लौट आनेके बाद मैंने बापूकी मालिश शुरू की। आई० जी० पी० (जेलके बड़े अफ़सर) आये थे, सो महादेवभाई, बा और मीराबहन उनसे मिलने श्रीमती नायडूके कमरे पर गये। दूरसे हमें उनकी हँसी सुनाई देती थी। एकाएक ख़ामोशी छा गई और किसीने मुझे पुकारा। मैंने सोचा, वे मुझे आई० जी० पी०से मिलनेके लिए बुलाते हैं। मैं जानेकी तैयारीमें ही थी कि बा घबराई हुई आईं: "सुशीला, जल्दी चलो। महादेवको गश आ गया है।" मैं दौड़ी। वे एक बिस्तर पर पड़े हुए थे। संगमरमरकी तरह सफ़ेद पड़ गये थे। सारे अंग अकड़ गये थे। मुझे कहा गया कि जब वे खड़े-खड़े बातें कर रहे थे, तभी उन्होंने जी घबराने और चक्करोंकी शिकायत की थी। उन्हें लिटा दिया गया और मुझे बुलाया गया। एक मिनटमें मैं उनके पास जा पहुँची थी। मैंने जाँच की, उनकी नाड़ी गायब थी। दिलकी धड़कन सुननेकी कोशिश की, वह भी बन्द थी। 'बापूको बुलाओ' मैंने कहा और दिलको ताक़त पहुँचानेवाली दवा माँगी। आई० जी० पी०ने जो कुछ ला सके मुझे लाकर दिया। मैंने दो इंजेक्शन दिये, पर कोई नतीजा न निकला। इसी बीच बापू आ गये। वे बिस्तरेके पास खड़े होकर 'महादेव, महादेव!' पुकारने लगे। लेकिन पहली बार महादेवने कोई जवाब नहीं दिया। बापूने दुःखी होकर कहा: "एक बार भी वह आँख खोलकर मेरी ओर (तरफ़) देख ले, तो वह नहीं जायगा।" लेकिन उन्होंने तो जानेका तय कर लिया था। उन्होंने आँखें नहीं खोलीं। मेडिकल इल्मके बावजूद भी मैं यह उम्मीद करने लगी कि शायद बापूकी मौजूदगी वह कर गुज़रे, जो दवा भी नहीं कर सकी। लेकिन करामातका ज़माना, अगर वह कभी रहा होगा, ख़त्म हो चुका है। उनकी सिकुड़न और कराहना बन्द हो गया। सारा खेल ख़त्म हो गया! सिविल सर्जन आया और सिर हिलाकर लौट गया। बा मेरे चेहरेकी तरफ़ देखने लगीं। उन्होंने रुँधे कण्ठ (गले)से पूछा: "महादेव कैसा है, सुशीला?" मैं क्या जवाब देती? "चल बसा?" उन्होंने पूछा और ज़ोरसे रो पड़ीं। बापू आये और उन्हें धीरज बँधाया। उनको भी भारी सदमा पहुँचा था, लेकिन उन्हें हिम्मत रखनी पड़ी। "हम प्रार्थना करें और शवको नहला दें," उन्होंने कहा। सो हम बैठे और गीताके १८वें अध्यायका पाठ किया, 'वैष्णव जन तो' वाला भजन गाया और राम-धुन लगाई। जिस कमरेमें सुबह महादेवभाईने शेविंग की थी, वहाँसे फरनीचर हटा दिया गया। शव (लाश)को बापूके बाथ-रूममें ले जाया गया और उन्होंने मेरी मददसे उसे नहलाया। बापूको यह सब काँपते हाथों करते देख बड़ा दुःख होता था। तब उन्होंने एक पलके लिए चारों तरफ देखा और कहा: "महादेव क़ैदीकी हालतमें मरे, इसलिए उनका दाह-संस्कार भी क़ैदी-जैसा ही होना चाहिये।" सो हमने लाशको जेलके कपड़ोंमें लपेटा और उसे बाहर लाये। सुपरिण्टेण्डेण्टने बहुत-से फूल मँगा लिये थे। मीराबहनने बड़े सुन्दर ढंगसे उनको लाशके चारों तरफ सजाया। उन्होंने थोड़ा चन्दन घिस लिया था। बापूने महादेवभाईके माथे पर उसका तिलक किया और लाशके पास बैठ गये। जब तक दाह-संस्कारकी तैयारियाँ होती रहीं, बापू और मैं बारी-बारीसे गीताका पाठ करते रहे। मैंने देखा कि बापू जिस तरफ़ बैठे हुए थे, उस तरफ़की महादेवभाईकी आँख आधी खुली हुई थी। यह उनकी बापूके प्रतिकी भक्ति और दिली मोहब्बतकी निशानी थी। मर जाने पर भी जैसे वे अपने गुरुकी ओर एक टक देख रहे थे।

अंतिम संस्कार

अधिकारी (अफ़सर) लोग पुलिस और ब्राह्मणोंके साथ एक लॉरी लेकर आये। वे शव (लाश)को बाहर ले जाकर .खुद अग्नि-संस्कार कराना चाहते थे। लेकिन बापू ऐसा नहीं चाहते थे। बापूने उन लोगोंसे कहा: "कौन पिता अपने लड़केके शवको अनजान लोगोंको सौंप देगा? महादेव मुझे अपने लड़केसे भी ज्यादा प्यारा था। मैं .खुद उसका अग्नि-संस्कार करना चाहता हूँ। लेकिन अगर सरकार मुझे बाहर नहीं ले जा सकती, तो मैं शवको दोस्तोंको सौंप देनेके लिए तैयार हूँ। लेकिन जेलके हाकिमोंको तो हरगिज़ नहीं दूँगा।" हालाँकि सरकार हत्यारोंको फाँसी पर लटका देनेके बाद उनके शवको रिश्तेदारों या दोस्तोंको सौंपकर खुले आम उनका दाह-संस्कार करने देती है, लेकिन महादेवभाई जैसे अहिंसक विद्रोहीके शवके लिए वह ऐसा करनेको तैयार नहीं थी। वह नहीं चाहती थी कि उनका शव दोस्तों या रिश्तेदारोंको सौंपा जाय। सारा माहौल (वातावरण) बड़ा गमगीन बन गया। हम सब घबरा गये। बापू क्या जवाब देंगे? कुछ देर बापू सोचते रहे। फिर वे बोले: "मैं अपने लड़केकी मौतको सियासी (राजनीतिक) मसला नहीं बनाना चाहता। अगर सरकार मुझे बाहर जाकर शवका दाह-संस्कार करनेसे मना करेगी और उसे दोस्तोंको सौंप देनेसे भी रोकेगी, तो मैं यह काम यहीं करूँगा।" यह एक बिलकुल नई सूझ थी। आज तक किसीने घरके भीतर शवका दाह-संस्कार करनेकी बात नहीं सुनी थी। आई० जी० पी०ने ऊपर जाकर इस बारेमें बम्बई सरकारको फोन किया। बम्बई सरकारको इस बारेमें भारत सरकारकी राय लेनी पड़ी। आखिर वे नीचे आये। सरकारने यह बात मान ली थी कि दाह-संस्कार कम्पाउण्डके अन्दर किया जाय। हम सबको इससे राहत मिली। श्रीमती नायडू जगह तय करनेके लिए नीचे गईं।

आई० जी० पी०ने पूछा: "बापू, क्या आप महादेवभाईके घरवालोंको इसकी खबर देना चाहते हैं?" उन्होंने जवाब दिया: "अगर बिना काट-छाँटके जाने दिया जाय, तो मैं एक तार करना चाहूँगा।" और उन्होंने मुझे तारका मज़मून लिखाया। उन्होंने शुरू किया: "मुझे दुःख है"। फिर वे रुक गये। ऐसी अच्छी मौतकी खबर देनेके लिए मुझे रंज क्यों करना चाहिये? नहीं, 'दुःख है' काटदो और लिखो, "महादेव एकाएक चल बसे . . .।" यह खबर आई० जी० पी०को दी गई और कहा गया कि मेहरबानीसे वे एक्सप्रेस तारसे उसे भिजवा दें। लेकिन जैसा कि बाद में हमें पता चला, वह खबर महादेवभाईके घरवालोंको हफ़्तों बाद डाकसे भेजी गई थी।

आखिर अग्नि-संस्कारकी सारी तैयारियाँ पूरी हो गईं। एक हाथमें लाठी और दूसरे हाथमें आगका बरतन लेकर बापू लाशके पीछे पीछे चले। ब्राह्मणने कुछ मंत्र बोले और आम रिवाज पूरा किया। लाशको चिता पर रक्खा गया और बापूने उसे आग दी। जल्द ही चिताकी लपटें ऊँची उठने लगीं। बा सब कुछ भूलकर थोड़ी दूर पर बैठी हुई चिताको एक टक देखती रहीं। दोनों हाथ जोड़कर वे बार-बार कहती जाती थीं:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महादेव, मेरे बच्चे! जहाँ कहीं भी तुम रहो, सुखी रहो। आह, महादेव क्यों चला गया, मैं क्यों नहीं गई?" छावनीका सुपरिण्टेण्डेण्ट, यरवडा जेलका सुपरिण्टेण्डेण्ट और आई० जी० पी० भी वहाँ बैठ कर सबके प्यारे महादेवभाईकी लाशको खाक होती हुई देखते रहे।

आखिरमें हम सब घरको लौटे। शामके पाँच बज चुके थे। सुबह ८ और ९ के बीचमें मौत हुई थी। बापूने कहा: "महादेवने 'करेंगे या मरेंगे' के मंत्रको पूरी तरह निबाहा। इस .कुरबानीसे हिन्दुस्तान जल्दी ही आज़ाद होगा।"

श्रीमती नायडूको इस बातका यक़ीन हो गया था कि बापूके उपवासकी फ़िकरमें ही महादेवभाईने जान दे दी। उन्होंने कहा: "अगर कभी किसी आदमीने दूसरेके लिए अपनी जान दी है, तो वह महादेवही हो सकते हैं। ईशु मसीहके समान वे बापूको ज़िन्दा रखनेके लिए ही मरे। अब बापूको किसी वक़्त भी उपवास करनेका विचार छोड़ देना चाहिये।" उस वक़्त तो उपवासकी कोई चर्चा नहीं थी। लेकिन बादमें कुछ ऐसी घटनायें घटीं कि उपवास करना अनिवार्य (लाज़िमी) हो गया। फिर भी जब वह आया, तो सुधरी हुई शकलमें आया, जिससे कि बापू मौतके मुँहसे भी निकल आये।

तीसरे दिन हड्डियाँ और राख इकट्ठा की गई। दाह-संस्कारकी जगह ४ फुट लम्बा, ३॥ फुट चौड़ा और क़रीब ३ फुट ऊँचा एक चबूतरा (समाधि) बनाया गया। पत्थरोंका एक छोटा-सा बाड़ा भी समाधिके आसपास बना दिया गया। बापू सुबह-शाम समाधि तक जाते थे। उस समाधि पर ताज़े फूल चढ़ाये जाते थे और सुबह गीताके १२वें अध्यायका पाठ किया जाता था। बापू कहते थे: "महादेवकी सारी ज़िन्दगी भक्तिका एक अखण्ड मंत्र थी। इसलिए उनकी समाधि पर भक्तियोगका पाठ करना ही सबसे उपयुक्त होगा। शिष्य होकर भी महादेव मेरे गुरु बन गये हैं। मैं रोज़ उनकी समाधिके दर्शन इसलिए करता हूँ कि सेवाके खातिर सारी ज़िन्दगीको भेंट कर देनेकी उनकी मिसाल हमेशा मेरे सामने ताज़ा बनी रहे। हम सब ईश्वरसे प्रार्थना करें कि वह हमें महादेवके अनुगामी (पैरों पर चलनेवाले) बननेकी ताक़त दे।"

सुशीला नय्यर

सवाल—जवाब

असल बात चूक गये

नीचे लिखे हुए सवाल एक अंग्रेज़ मिलिटरी अफसरने भेजे हैं। उन्होंने २८ जुलाई, १९४६के 'हरिजन'में आज़ादी पर मेरा लेख बड़ी दिलचस्पीसे पढ़ा है। यह अफ़सर एक फ़ौजी इंजीनियर हैं। अमेरिका और यूरोपमें .खूब घूमे हैं और अपनी आँखोंसे जर्मनीमें लड़ाईकी तबाही और बरबादी देख चुके हैं।

स० — उस आदर्श हुकूमतमें (और बेशक यह हुकूमत आदर्श होगी) आदमी बाहरके हमलोंसे किस तरह बच सकता है? आजकल, जब कि मशीनका दौर-दौरा है, अगर हुकूमतके पास नये-से-नये हथियारोंसे लैस फ़ौज न होगी, तो ऐसे हथियारोंवाली एक फ़ौज हमला करके मुल्कको जीत सकती है और वहाँके रहनेवालोंको ग़ुलाम बना सकती है।

ज० — सवाल पूछनेवाले भाई कहते हैं कि उन्होंने मेरे लेखको बड़े ध्यानसे बार-बार पढ़ा है और फ़ौजी आदमी होनेके बावजूद उसे पसन्द भी किया है। मगर साफ़ पता चलता है कि मेरे लेखमें जो असल बात है, उसे वे चूक गये हैं। वह यह है कि एक व्यक्ति (फ़र्द)की तरह एक क़ौम, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, और क़ौम तो क्या एक जमात भी हथियारोंसे लैस सारी दुनियाके ख़िलाफ़ अपनी इज़्ज़तकी हिफ़ाज़त कर सकती है। लेकिन शर्त यह है कि उसमें सब एक मतके हों और उनमें इस हिफ़ाज़तके लिए पक्का इरादा हो। यही निहत्ये लोगोंकी शक्ति और बहादुरी है जिसकी मिसाल नहीं मिल सकती। यही अहिंसक बचाव है, जो किसी मंज़िल पर भी न हार जानता है, न हार मानता है। इसलिए जिस क़ौम या गिरोहने हमेशाके लिए अहिंसाका रास्ता अपना लिया हो, वह अणु-गोलेसे भी .ग़ुलाम नहीं रक्खा जा सकता।

.ख़ूराककी कमी क्यों?

स० — आजकल हिन्दुस्तान अपनी आबादीके लिए काफ़ी .ख़ूराक पैदा नहीं कर सकता। बाहरसे .ख़ूराक ख़रीदनेके लिए हिन्दुस्तानको दूसरा माल बेचना होगा, ताकि उसकी क़ीमत चुका सके। इसलिए हिन्दुस्तानको यह माल ऐसी क़ीमत पर तैयार करना होगा, जो दूसरे मुल्कोंकी क़ीमतोंके मुक़ाबलेमें ठहर सके। मेरी रायमें आजकलकी मशीनोंके बग़ैर यह नहीं हो सकता। और यह तभी हो सकता है, जबकि जिस्मानी मेहनतकी जगह मशीन ले ले।

ज० — पहले फ़िक़रे (वाक्य)में जो बात कही गई है, वह बिलकुल ग़लत है। बहुतसे लोगोंने इससे उलटा कहा है, फिर भी मैं तो मानता हूँ कि हिन्दुस्तान इस वक़्त काफ़ी अनाज पैदा कर सकता है। मैं यह बता चुका हूँ कि कौनसी शर्त पर यह हो सकता है: गवर्नमेण्ट, जिसके हाथमें सारी बागडोर हो, अपनी हो, अपना कारोबार वह अच्छी तरह जानती हो और उसमें इतनी क़ाबलीयत हो कि तमाम नफ़ाखोरी, कालाबाज़ार, और सबसे ख़राब मन और शरीर (जिस्म)की सुस्तीकी सख्तीसे रोकथाम कर सके।

अगर सवालके पहले हिस्सेका मेरा जवाब ठीक है, तो उसका दूसरा हिस्सा अपने-आप खतम हो जाता है। लेकिन इनसानकी मेहनत, जिसकी हिन्दुस्तानमें कमी नहीं, के बरख़िलाफ़ आजकलकी मशीनोंकी सिफ़ारिशको हमेशाके वास्ते रद्द कर देनेके लिए मैं यह कहूँगा कि अगर करोड़ों लोग, जो मेहनत कर सकते हैं, एक होकर हिम्मतसे काम करें, तो वे किसी भी क़ौमके साथ, चाहे उसके पास आजकलकी कितनी ही मशीनें हों, अपनी दृष्टिसे अच्छी तरह मुक़ाबला कर सकते हैं। सवाल करनेवालेको यह नहीं भूलना चाहिये कि आज तक मशीनोंके साथ-साथ ऐसी क़ौमोंकी लूट-मार भी जारी रही है, जिनके पास मशीनें नहीं हैं और जिनका नाम कमज़ोर क़ौम रख दिया गया है।

मैंने 'नाम रख दिया गया है' इसलिए इस्तेमाल किया है कि ज्यों ही इन क़ौमोंने यह पहचान लिया कि इस वक़्त भी वे उन क़ौमोंसे ज़्यादा ताक़तवर हैं, जिनके पास नये-से-नये हथियार और मशीनें हैं, त्यों ही वे इस बातसे इनकार कर देंगी कि वे कमज़ोर हैं। और किसीको हिम्मत (साहस) भी नहीं होगी कि उन्हें कमज़ोर कह सके।

कातनेसे स्वराज

एक कांग्रेसी लिखते हैं:

"शायद आप इस बातको क़बूल करेंगे कि काफ़ी प्रचारके बावजूद जनताने कताई और धुनाईको उतना नहीं अपनाया जितना कि अपनाना चाहिये था। मेरे खयालमें अगर हर कांग्रेस कमेटी, कम-से-कम बड़े शहरोंकी, जनताको सिखानेके लिए एक जमात-सी खोल ले तो उसका बहुत फ़ायदा हो सकता है। बहुत-से लोग, खासकर ग़रीब, इसलिए कताई नहीं करते कि उन्हें कताई और बुनाई आती नहीं। वे यह नहीं जानते कि कौनसे चरखे ज़्यादा आसानीसे चलाये जा सकते हैं और ज़्यादा उत्पत्ति (पैदावार) कर सकते हैं; उनको किस तरह ठीकसे चलाना, सूतको किस तरह बेचना या इस्तेमाल करना वग़ैरा। अगर ठीक तरहसे लोगोंको आगाह करनेके बाद इस क़िस्मके वर्ग (क्लास) हफ़्तेमें एक दो दफ़ा लिए जायँ और इस अमली कामको दिखाकर लोगोंको कातने वग़ैराकी कला सिखाई जाय, तो हालत काफ़ी सुधर सकती है। कम-से-कम कांग्रेसको इसका प्रयोग (तजरबा) करना चाहिये। अगर बाक़ायदा वर्ग (क्लास) न भी लिये जायँ और इस कलाके जाननेवालोंका एक या एकसे ज़्यादा गिरोह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दौरा करें और हर शहरमें जनताको कुछ दिन अमली कामके नमूने भी दें और सिखायें भी, तो काफ़ी हद तक हमारा काम पूरा हो जायगा।"

इस क़िस्मके सवाल मुझे कांग्रेसियोंकी तरफ़से अक्सर पूछे जाते हैं। क्योंकि इस प्रश्नमें सब कुछ आ जाता है, इसलिए मैंने इसे सारे-का-सारा लिख दिया है। लेखकके दस्तखत पढ़े नहीं जाते। इसलिए मैं नहीं कह सकता कि यह प्रश्न करनेवाले किस प्रान्त (सूबे)के हैं। यक़ीनी तौर पर ठीक तो यही था कि लेखक अपना पता हिन्दुस्तानीमें लिखनेकी मेहरबानी करते। ज्यादातर कांग्रेसी जो कांग्रेसके रजिस्टर पर नहीं हैं लेकिन जो रजिस्टर पर होनेवालोंसे ज्यादा सच्चे कांग्रेसी हैं, अंग्रेज़ी नहीं जानते। और जो अंग्रेज़ी जानते हैं, उन्हें कताईके बनिस्बत कांग्रेस रजिस्टरमें नाम दर्ज़ करानेका ज्यादा शौक़ है। क्यों? यह वे .खुद जानते हैं। इसमें मुझे पड़नेकी ज़रूरत नहीं। फिर भी जो कुछ लेखक कहते हैं, उसमें बहुत कुछ है। अगर तमाम कांग्रेसी दफ़्तर इस क़िस्मकी संस्थायें (इदारे), जो लोगोंको शुरूसे लेकर खादी तककी सारी क्रियाएँ (अमल) सिखा दें, तो मुझे यक़ीन है कि गाँवोंका हुलिया वदल जायगा और स्वराज जनताकी कोशिशोंसे आ पहुँचेगा। मैं इन कालमोंमें बता चुका हूँ कि वह किस तरह आ पहुँचेगा। ये सतरें इसलिए लिखी गई हैं कि जो बात लेखकने कही है, उस पर पूरा ज़ोर दिया जाय।

सेवाग्राम, ८–८–'४६

('हरिजन'से)

.कुदरती इलाज और आजकलका इलाज

स०—क्या आपके .कुदरती इलाजमें बीमारोंके रोगोंका निदान करनेके लिए आजके नये-से-नये साधनोंका इन्तज़ाम रहेगा?

१. नये-से-नये साधन यानी .खुर्दबीन, एक्स रे वग़ैरा तशखीसके साधन;

२. जो दवायें बाज़ बीमारियोंको दूर करनेमें ७५ फ़ी सदी कामयाब रही हैं, जैसे मौसमी बुखारके लिए कुनैन, पेचिशके लिए एमिटिन, निमोनियाके लिए पेनिसिलिन;

३. क्या लोगोंको निजी सफ़ाई, गाँवकी सफ़ाई और सेहतकी हिफ़ाज़त (आरोग्य-रक्षा)के नियम सिखानेका और बीमारियों व इन्द्रियों (अङ्गों)की जानकारी देनेका इन्तज़ाम होगा?

ज०—मेरा .कुदरती इलाज तो सिर्फ़ गाँववालोंके और गाँवोंके लिए ही है। इसलिए उसमें .खुर्दबीन, एक्स रे वग़ैराकी कोई जगह नहीं। और न ही .कुदरती इलाजमें कुनैन, एमिटिन, पेनिसिलिन-जैसी दवाओंकी गुंजाइश है। उसमें अपनी सफ़ाई, घरकी सफ़ाई, गाँवकी सफ़ाई और तन्दुरुस्तीकी हिफ़ाज़तका पहला स्थान है, और पूरा-पूरा है। इसकी तहमें खयाल यह है कि अगर इतना किया जा सके, हो सके, तो कोई बीमारी ही न हो। और. बीमारी आ जाय, तो उसे मिटानेके लिए .कुदरतके सभी क़ानूनों पर अमल करनेके साथ-साथ राम-नाम ही असल इलाज है। यह इलाज सार्वजनिक या आम नहीं हो सकता। जब तक .खुद इलाज करनेवालेमें राम-नामकी सिद्धि न आ जाय, तब तक रामनाम रूपी इलाजको एकदम आम नहीं बनाया जा सकता। लेकिन पंचमहाभूतोंमेंसे यानी पृथ्वी, पानी, आकाश, तेज और हवामेंसे जितनी शक्ति ली जा सके, उतनी लेकर रोग मिटानेकी यह एक कोशिश है, और मेरे खयालमें .कुदरती इलाज यहीं खत्म हो जाता है। इसलिए आज कल उरुळी कांचनमें जो प्रयोग चल रहा है, वह गाँववालोंको तन्दुरुस्तीकी हिफ़ाज़त करनेकी कला सिखाने और बीमारोंकी बीमारीको पंचमहाभूतोंकी मददसे मिटानेका प्रयोग है। ज़रूरत मालूम होने पर उरुळीमें मिलनेवाली जड़ी-बूटियोंका इस्तेमाल किया जा सकता है, और पथ्य-परहेज़ तो .कुदरती इलाजका ज़रूरी हिस्सा है ही।

उरुळी कांचन, २–८–'४६

('हरिजनबन्धु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

दक्खिनकी रियासतोंको गांधीजीकी सलाह

इधर कुछ अरसेसे दक्खिनी रियासतोंके राजाओंका ध्यान अपनी रियासतोंका एक संघ (यूनियन) बनानेकी योजना तैयार करनेमें लगा है। हाल ही जब गांधीजी पंचगनीमें थे, तब इस सिलसिलेमें औंधके राजा साहब और उनके प्रधान मंत्री श्री अप्पा पन्त, श्री शंकरराव देव और दूसरे कुछ लोग उनसे मिल गये। बादमें उन लोगोंने गांधीजीको दक्खिनी रियासतोंके राजाओंकी एक अनियमित परिषद्में उनसे मिलनेके लिए न्योता था। गांधीजीने उनके न्योतेको माना और परिषद्में जाना क़बूल किया। ता० २८ जुलाईको यह जलसा 'सर्वेण्ट्स ऑव् इण्डिया सोसायटी'की लायब्रेरीवाले हॉलमें हुआ। इस जलसेमें औंध, फल्टन, भोर, मीरज (सीनियर), जमखिण्डी, और उरुन्दवाड़ (सीनियर) रियासतोंके राजा, औंधके अप्पा साहब पन्त और श्री सातवलेकर, सांगलीके श्री कोरे, श्री साठे और श्री ठोमरे, भोरके दीवान और रामदुर्ग व बुधगाँवके प्रतिनिधि यानी नुमाइन्दा हाज़िर थे। श्री तात्यासाहब न० चिं० केलकर और श्री शंकरराव देव भी खास न्योतेसे जलसेमें हाज़िर रहे थे।

सच्चा रुख़

गांधीजीसे प्रार्थना की गई कि वे वहाँ इकट्ठा हुए मशहूर लोगोंसे दो शब्द कहें। इस पर उन्होंने कहा कि आज दक्खिनके राजाओंसे मिलनेका यह मौक़ा पाकर मुझे बहुत .खुशी हो रही है। फल्टनके राजा साहबने आप लोगोंकी योजना या स्कीमको समझ लेनेके लिए मेरे पास जो काग़ज़ात और विवरण (नोट) भेजे थे, उन्हें मैं पढ़ गया हूँ। काग़ज़ातके बारेमें मुझे कुछ कहना नहीं है। आज तक देशी रियासतोंके राजा सिर्फ़ अपने बारेमें और सर्व सत्ताधारी ब्रिटिश हुकूमतकी वजहसे ही अब तक मिलती रही मान ली गई हिफ़ाज़तके बारेमें सोचा करते थे। लेकिन अब वे इस तंगखयालीको छोड़कर समूचे हिन्दुस्तानकी दृष्टिसे गहराईसे सोचने लगे हैं, यह बड़ी अच्छी बात है। कुछ ही बरस पहले तक राजा लोग ऐसा मानते थे कि सर्वसत्ताधारी (कुल हुकूमतवाली) ब्रिटिश सल्तनतकी वजहसे ही वे सहीसलामत हैं। लेकिन उनमेंसे ज़्यादातर लोग अब यह महसूस करने लगे हैं कि उनका यह रुख ग़लत था। उनका यह महसूस करना स्वाभाविक ही है। आखिर वे सब हिन्दुस्तानकी ही सन्तान हैं न? मैंने तो एक मौक़े पर खुले आम यह बात कही था कि रियासती प्रजा .गुलामोंकी भी .गुलाम है, क्योंकि देशी रियासतोंके राजा .खुद ब्रिटिश हुकूमतके .गुलाम हैं। जब तक उन पर ब्रिटिश सरकारकी कृपा बनी रहती है, तभी तक अपने-अपने राज्योंमें उनकी हुकूमत चलती है। उनका बनना या बिगड़ना ब्रिटिश ताजकी मरज़ी पर मुनहसिर है। जो जो राजा-महाराजा ब्रिटिश हुकूमतके इस अन्दरूनी राज़को समझ चुके हैं, वे हिन्दुस्तानी प्रजाके माफ़िक ही हिन्दुस्तानकी आज़ादी चाहने लगे हैं। इसलिए अगर राजाओंको अपनी हिफ़ाज़तका कोई साधन या ज़रिया खड़ा करनेकी ज़रूरत महसूस होती है, तो रियासतोंका संघ क़ायम करनेके बजाय पहले वे अपने-अपने राजकी प्रजाके साथ मिलकर एक हो जायँ। अपने दरजेको सहीसलामत रखनेके लिए उन्हें अपनी प्रजाका आसरा लेना होगा न कि ब्रिटिश सरकारका, क्योंकि प्रजाकी सत्ता ही सच्ची सत्ता है। अगर वे अपनी रिआयाके सेवक बन जाते हैं, तो वे उसके ट्रस्टी बनकर रह सकते हैं। अगर राजा लोग यह रुख अख्तियार कर लें, तो कांग्रेस या दूसरी किसी संस्थासे समझौता करनेकी ज़रूरत ही न रह जाय। इसलिए सबसे पहले ज़रूरी यह है कि वे अपनी रिआयासे जल्दी-से-जल्दी समझौता करें।

"मुमकिन है कि आपके सवालके बारेमें मैं अकेला ही इस रायका रह जाऊँ, फिर भी मैं आपको यह सलाह देनेकी हिम्मत करता हूँ। मेरे कहनेका मतलब यह है कि अगर राजालोग अपनी-अपनी प्रजाके सेवक और ट्रस्टी बन जायँ, तो ही वे अपने वेतन या मिहनतानेके हक़दार हो सकते हैं। इतना हो जाय, इसके बाद ही यह विष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया जा सकता है कि आया आप और आपकी प्रजा मिलकर संघ क़ायम करना चाहते हैं या नहीं। आप लोग मिलकर जो संघ बनाना चाहते हैं, उससे यह संघ निराले ढंगका होगा।

ब्रिटिश शासकोंकी सलाह

"मुझे भारी शक है कि रियासतोंका संघ क़ायम करनेकी यह मौजूदा तजवीज़ ब्रिटिश शासकों यानी पोलिटिकल एजण्टोंकी सूझ है। रजवाड़ोंको यह सलाह उन्होंने दी हो, तो इसमें उनका कोई दोष नहीं। वे इसी परम्पराकी तालीम देकर तैयार किये गये हैं। उन्होंने यह सोचा होगा कि हिन्दुस्तानसे ब्रिटिश हुकूमतके हटते ही ये रियासतें आपसमें लड़ मरेंगी। लेकिन उनका यह डर बिलकुल निराधार या बेबुनियाद है। वे ईमानदारीसे इस बातको मानने लगे हैं कि परिस्थितियोंके दबावसे शायद कुछ ही महीनोंमें उन्हें हिन्दुस्तान छोड़कर चले जाना होगा। इसलिए वे चाहते हैं कि जानेके पहले राजाओंका ऐसा एक संघ क़ायम करके हिन्दुस्तानमें उनकी सत्ताको मज़बूत बनाते जायँ। मैं मानता हूँ कि अगर हिन्दुस्तानको सिर्फ़ ब्रिटिश हुकूमतके पंजेसे मुक्त ही नहीं होना है, बल्कि अपनी पुरानी संस्कृति और परम्पराकी शानको बढ़ानेवाली सच्ची आज़ादीका उपभोग भी करना है, तो उसे ऊपरसे लादी गई किसी तजवीज़को मान लेनेके बजाय ठेठ नीचेसे ऊपरकी ओर बढ़ना होगा। अगर दूसरे किसी तरीक़ेसे स्वराज क़ायम हुआ, तो वह सिर्फ़ मालिकोंको बदलनेका सवाल ही बन जायगा। अंग्रेज़ोंके बदले दूसरे मित्रराष्ट्र या जो कोई भी हिन्दुस्तानकी छाती पर चढ़ बैठनेकी ताक़त रखता है, वही उसका मालिक बन बैठेगा। मैं हिन्दुस्तानकी यह दुर्दशा नहीं देखना चाहता। मैं तो उस दिनकी राह देख रहा हूँ, जब हिन्दुस्तान अपने स्वाभाविक गुणोंके बलपर सच्ची आज़ादीका उपभोग करेगा। ऐसी स्थिति पैदा करनेमें देशी रियासतोंके राजा बड़े सुन्दर ढंगसे अपना फ़र्ज़ अदा कर सकते हैं।

"अगर दक्खिनके राजाओंने इस काममें सहयोग दिया और एक अच्छी मिसाल पेश की, तो हिंदुस्तानके दूसरे राजा भी उनका अनुसरण करेंगे। इसके लिए आपको तजवीज़शुदा संघ क़ायम करनेकी ज़रूरत नहीं। इसके बरखिलाफ़, अगर आपके दिलकी तहमें यह विचार काम कर रहा हो कि लफ़्ज़ोंमें तो रिआयाको उत्तरदायी शासन या ज़िम्मेदाराना हुकूमत सौंप दी जाय, लेकिन उसे अमली शकल न दी जाय, तो आपका तजवीज़शुदा संघ युरोपियन राष्ट्रोंके फ़ौजी संघ जैसा ही साबित होगा। रिआया भले ही ऐसे संघके खिलाफ़ आवाज़ उठाती रहे, फिर भी संघकी ताक़तका इस्तेमाल उसे दबाने, चूसने और कुचलनेमें ही किया जायगा। लेकिन एक पहले दरजेकी फ़ौजी ताक़तके सामने आपके इस संघकी ताक़त बेकार साबित होगी। हिन्दुस्तान पर हमला करनेवाले किसी भी हिम्मतवर दुश्मनके सामने सबसे पहले ऐसे संघ हथियार डालनेवाले होंगे। अंग्रेज़ोंने हमेशा इस बातका ध्यान रखा है कि आप लोगोंको ऐसी कोई तालीम या ट्रेनिंग न दी जाय जिससे आप उनके-जैसी हुकूमतका हथियारबन्द सामना करनेके लिए तैयार हो सकें।

"जो बात रजवाड़ोंके बारेमें लागू होती है, वही सारे हिन्दुस्तानके बारेमें भी। हिन्दुस्तान अपनेको एक पहले दरजेकी फ़ौजी ताक़त बना ले, इसके पहले उसे लम्बे अरसे तक पच्छिमी मुल्कोंसे फ़ौजी मदद लेनी होगी। अगर ऐसी कोई बात हुई, तो कांग्रेसने लगातार पचीस बरस तक हिन्दुस्तानको जो अहिंसाकी तालीम देनेकी कोशिश की है, वह सब बेकार जायगी। उसे मैं चुपचाप कैसे देख सकता हूँ?

"मैंने औंधके राजा साहबको यह सुझाया था कि अगर राजा लोग आज़ाद हिन्दुस्तानकी स्थापनामें पूरा हाथ बँटाना चाहते हैं, तो उन्हें अपनी-अपनी रियासतोंमें ज़रूरी फेरकार करके औंधका विधान अमल करना होगा। औंधका विधान या आईन रिआयाके फ़ायदेके लिए बनाया गया है। मैं तो इस विधानसे भी एक कदम आगे बढ़कर यह कहना चाहता हूँ कि राजाओंके निजी खर्चके लिए दी जानेवाली रक़म पर भी रिआयाका नियंत्रण या क़ाबू रहे। लेकिन यह सब क़ुदरती ढंगसे ही होगा। ऐसी बातें बाहरसे लादी नहीं जा सकती। औंधके विधान पर अमल करनेसे पूरी-पूरी तरक़्क़ी — जैसा कि औंधके राजा साहब, उनके प्रधानमंत्री या मैं चाहता था — तो नहीं हो पाई, फिर भी उससे राजकी काफ़ी तरक़्क़ी हुई ऐसा कहा जा सकता है।"

गांधीजी जब अपनी बात कह चुके तो, अलग-अलग मुद्दों पर बहस चली और लोगोंने उनसे सवाल किये। "अगर हम संघ बनाकर एक न हो जायँ, तो अलग-अलग रियासतोंका कोई अस्तित्व (वजूद) न रह जाय।" उनमेंसे एकने कहा और इस पर गांधीजीकी राय जाननी चाही।

गांधीजीने जवाब दिया: "इस मुद्दे पर मेरी अपनी रायको दूसरा शायद कोई न माने, फिर भी मैं दलील करनेके लिए तैयार हूँ। बड़ी-बड़ी रियासतें तो क्या, हिन्दुस्तानका छोटे-से-छोटा गाँव भी टिके रहनेकी क़ीमत रखता है। तब फिर आपके गाँव और आप लोग — अगर आप अपनी रिआयाके अंग बन जायँ — क्यों नहीं टिक सकते? छोटी-से-छोटी रियासतोंमेंसे एक होने पर भी औंधको कई रियासतोंके बनिस्बत टिकनेका ज़्यादा हक़ है। सच पूछा जाय तो भविष्यके हिन्दुस्तानमें टिकना या न टिकना आप पर निर्भर करता है। आप लोगोंकी रिआया तो कभीकी बाक़ीके हिन्दुस्तानके साथ मिलकर एक हो चुकी है!

"'हरिजन' में लिखे मेरे एक मज़मूनसे आप लोग पूर्ण स्वराजकी मेरी तसवीरको देख सकेंगे। उसमें राजव्यवस्थाका युनिट या घटक गाँवका समाज है। पूर्ण स्वराजकी ऊँची इमारत गाँवके युनिटकी नींव पर इस तरह खड़ी की जानी चाहिये कि समूची इमारतके नींव रूप चालीस करोड़ लोग ऊपरके बोझसे दबकर चूर न हो जायँ।"

दूसरेने बातको समझाते हुए कहा: "लेकिन हमारे राज्योंका विधान बनानेकी ज़िम्मेदारी हम अपनी रिआयाको ही देंगे। हमारे संघकी जो योजना या स्कीम हमने तैयार की है, वह तो सिर्फ़ रिआयाके विचार करनेके लिए ही है।"

इसके जवाबमें गांधीजीने कहा: "आपका इरादा कितना ही सच्चा क्यों न हो, फिर भी आप जैसा कहते हैं, वैसा कर न सकेंगे। आप दूसरी ही परम्परामें पल-पुसकर तैयार हुए हैं। अगर आप सचमुच आपकी इस स्कीमकी अच्छाई-बुराई पर लोगोंकी राय चाहते हैं, तो आप पंडित जवाहरलाल नेहरूसे मिलें। देशी राज्य-प्रजा-परिषद् (स्टेट्स पिपुल्स कान्फरेन्स)के प्रेसिडेण्टकी हैसियतसे वे ही इस सवाल पर विचार कर सकते हैं। अपने सुझावोंके साथ देशी राज्य-प्रजा-परिषद्के पास जानेमें आपको डरनेकी ज़रूरत नहीं। आख़िरी निर्णय आप परिषद् (कान्फरेन्स)के ऊपर छोड़ दीजिये। उसकी मौजूदा नीति या पॉलिसीमें किसी तरहकी ख़ामी नहीं है — वह हर तरहसे सोच विचार कर तैयार की गई है। अगर आप अपनेको रिआयाके सेवक और ट्रस्टी समझें, तो वह आपके खिलाफ़ नहीं है।"

स० — "हम अपनी मातृभूमि (मादरेवतन)की सेवा करनेके लिए छटपटा रहे हैं। लेकिन हमारी हस्ती इतनी तुच्छ है कि संघमें शरीक होकर एक हो जानेके बिना हम उसकी सेवा नहीं कर सकते।"

गांधीजीने जवाब दिया: "आज़ाद हिन्दुस्तानकी मेरी तसवीरमें ऐसा नहीं है। मेरी कल्पनाके गाँवका एक घटक (युनिट) मुल्कके ताक़तवर-से-ताक़तवर हिस्सेके बराबर होगा। मेरी कल्पनाके गाँवकी आबादी मैंने एक हज़ार मानी है। अपनी सारी ज़रूरतोंको ख़ुद पूरी कर लेनेके उसूल पर अगर ऐसे गाँवका संघठन हो, तो वह बहुत कुछ कर सकता है। इसलिए आपको यह न मान लेना चाहिये कि अगर आपका बड़ा संघ क़ायम न हो, तो आप मुल्ककी सेवा कर ही नहीं सकते। अगर आप सबकी एक राय हो जाय, और आपकी निगाहमें प्रजाका हित सबसे पहली और निजका हित सबसे आख़िरी जगह ले ले, तो आपका संघ आजके तजवीज़शुदा संघसे कई गुना ज़्यादा ताक़तवर साबित होगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँवोंकी लोकशाही

स० — "अगर रियासतें पहले गाँवोंमें प्रजासत्ताक राज (लोगोंकी हुकूमतें) क़ायम करें और उनके आधार पर अपना संगठन करके अपना संघ बनावें, तो इस बारेमें आपका क्या कहना है?"

ज० — "इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है? लेकिन तब न तो आप आजकी भाषामें बात करेंगे और न आजके ढंगसे काम करेंगे।"

स० — "लेकिन ऐसा करनेमें ज़्यादा वक़्त लग सकता है। और, जब तक रियासतोंके बाहरके लोग यह काम शुरू नहीं करते, तब तक हमारी रिआया इसमें दिलचस्पी नहीं लेगी।"

ज० — "मैं पहले ही कह चुका हूँ कि अगर राजा लोग अपनी-अपनी रियासतोंमें सही मिसाल पेश करें, तो वे हिन्दुस्तानकी भावी आज़ादीको लानेमें अच्छे-से-अच्छा सहयोग दे सकेंगे। एक ही तरहके लोगोंसे बसे हुए सुगठित घटकों (युनिटों) वाले अलग-अलग रजवाड़े व्यक्तिगत रूपसे अपने यहाँ राजकाजके अलग-अलग प्रयोग कर सकते हैं। लेकिन आज तो राजा लोग ब्रिटिश शासन-प्रणालीकी बुराइयोंकी नक़ल करनेमें ही आगे बढ़े हुए हैं। आपलोग अपने प्रधानमंत्रियों (वज़ीरों) के इशारों पर ही नाचते रहते हैं — वे वज़ीर, जिनकी राज चलानेकी सारी लियाक़त गूँगी और लाचार रिआयासे ज़बरन् पैसा वसूल करनेमें समाई होती है। आपके ये दीवान जिस परम्परामें तालीम लेकर तैयार हुए हैं, उसने इन्हें इस लायक़ नहीं बनाया है कि वे आपके सौंपे कामको सही तरीक़ेसे निभा सकें। इसलिए मैं आपको यह सलाह दूँगा: 'अगर आप सचमुच ही कुछ करना चाहते हैं, तो आप पं. जवाहरलाल नेहरूको अपना प्रधानमंत्री बनाइये। वही आपको आपके करने लायक़ कामोंकी रूपरेखा बतायेंगे। और वे .क़ुदरती तौर पर रिआयाकी सलाह लिए बिना नहीं रहेंगे'।"

स० — "हम अपना संघ क़ायम करना चाहते हैं, उसकी एक वजह यह भी है कि इससे हमारी रिआयाको पहले आज़ादी मिल जाय और उसे विधान-सभाका काम, जिसमें काफ़ी वक़्त लग सकता है, पूरा होने तक आज़ादीका इन्तज़ार न करना पड़े।"

ज० — "इस कामको करनेका आपने यह उलटा रास्ता पकड़ा है। अगर आप दिलसे अपनी रिआयाका भला चाहते हैं और उसके जन्मसिद्ध अधिकार उसे सौंप देना चाहते हैं, तो सीधे ही उसे पूरी-पूरी आज़ादी दे दीजिये। जिस वक़्त तक आप ऐसा कर चुके होंगे, उस वक़्त तक विधान-सभाका काम भी खतम हो जायगा। वह जो विधान या आईन तैयार करेगी, वह सिर्फ़ ब्रिटिश हिन्दके लिए ही नहीं होगा — बल्कि सारे हिन्दुस्तानके लिए होगा। अगर रियासतोंका एक या एकसे ज़्यादा संघ बनाना ठीक समझा जायगा, तो विधानमें लाज़िमी तौरसे ऐसी गुंजाइश रक्खी जायगी। आप लोग (दक्खिनकी रियासतें) पहलेसे ही अपना अलग संघ क़ायम करके विधान-सभाका काम अपने ऊपर ले लें, इसके बजाय यह ज़्यादा अच्छा होगा कि आप विधान बनानेके काममें उसकी मदद करें। अपने-अपने राजमें व्यक्तिगत रूपसे काम शुरू कीजिये, तो आप ग़लती नहीं करेंगे।"

तात्यासाहब न० चिं० केळकरने पूछा: "आपको इस संघके बारेमें शक है, इसीलिए तो आप इसका विरोध नहीं करते?"

गांधीजीने कहा: "मैंने इसी मुद्देको ले कर अपनी बात शुरू की थी। लेकिन मैं अपने शककी वजहसे ही संघकी मुख़ालिफ़त नहीं करता। आपमेंसे किसी एक—अ, ब, या स—पर मुझे शक नहीं है। आजके बनावों और परिस्थितियों पर मुझे शक होता है। आप जिस ख़तरे और नुक़सानकी ओर बढ़ रहे हैं, उसका आपको ध्यान नहीं है। इसलिए मेरी तो आपको यही सलाह है कि इस ओर धीरे-धीरे क़दम बढ़ाइये।"

स० — "अगर आप अपनी दलीलको और आगे बढ़ावें, तो क्या वह ब्रिटिश हिन्दुस्तानके सूबोंके ज़िलों और ताल्लुक़ों पर लागू नहीं होगी? उनकी रचना या बनावटको तोड़नेके लिए आप क्यों नहीं कहते?"

गांधीजी: "जो कुछ पहलेसे मौजूद है, उसे तोड़नेके लिए [...] आपको नहीं कहता। न ही ब्रिटिश हिन्दुस्तानमें जिस तरह शासन चल[...] जाता है, उसीसे मुझे कोई ख़ास प्रेम है। तवारीख़ यह बताती है [...] ब्रिटिश हिन्दुस्तानकी सारी रचना ख़ास कर महसूल इकट्ठा करनेमें सहूलि[यत] हो, इसीलिए खड़ी की गई थी। आप भी अगर इस जालमें फँसे, [तो] आपको भारी नुक़सान उठाना पड़ेगा। मैं तो इस वक़्त सिर्फ़ [...] कहना चाहता हूँ: रियासतोंका संघ क़ायम करने जैसा कोई काम [...] मत कीजिये। यह काम विधान-सभा पर छोड़ दीजिये। एक संस्कृत कविने कहा है — 'अनारम्भो हि कार्याणां प्रथमं बुद्धिलक्षणम्' — (नये [...] काम जल्दबाज़ीमें शुरू न करनेमें ही अक़्लमन्दी है)।

पूना, ३०–७–'४६ ('हरिजन'से) प्यारेलाल

ख़ूनका बदला

मुझसे पूछा गया है, क्या मरहूम भाई रज्जबअलीका भाई या दू[सरे] नज़दीकके रिश्तेदार उनके .ख़ूनके लिए सरकारसे पैसोंके रूपमें हरजा[ना] माँग सकते हैं? मरनेवाला .ख़ुद इस तरहकी मौतको नुकसान नहीं मानता। सच पूछा जाय तो इसी तरहकी हत्यायें, अगर उन्हें बदलेकी भावना[से] पूरी तरह अछूता रक्खा जाय, अखीरमें हत्याको मिटा देंगी। ज्यों [ही] हरजाना वसूल करने या बदला लेनेकी बात उठी कि .ख़ुद राज़ी होकर की गई .क़ुरबानीकी अच्छाई ख़त्म हुई। और, तब मरे हुए की आत्मा[को] शान्ति कैसे मिल सकती है?

.ख़ूनका बदला .ख़ूनसे या हरजानेसे कभी नहीं लिया जा सकता। ख़ूनका बदला लेनेका सिर्फ़ एक ही रास्ता है और वह यह कि [...] बदलेकी इच्छा (ख़्वाहिश) न रखते हुए अपने-आपको .क़ुरबान कर दे। जो इस उसूलको मानते हैं, वे सपनेमें भी अपने प्यारे रिश्तेदारोंकी हत्याका हरजाना माँगनेकी बात नहीं सोचेंगे। इसके बरख़िलाफ़, जानके बदले जान लेनेका उसूल सिर्फ़ हत्याओंकी तादादको ही बढ़ायेगा। आज सब इस बातको जानते हैं। बदले या हरजानेसे किसी ए[क] आदमीको भले ही तसल्ली हो जाय, लेकिन मेरा यह विश्वास है कि इससे न तो समाज तरक़्क़ी कर सकता है और न समाजमें शान्ति क़ायम हो सकती है।

सवाल यह खड़ा होता है कि बदला ही जिस समाजका क़ानून [है] उसमें एक आदमी क्या करे? इसका जवाब कहनेमें नहीं बल्कि करके दि[खा] देनेमें है। और, मिसाल वे ही पेश कर सकते हैं जिनके साथ अन्[याय] हुआ है। इसलिए इसका आख़िरी निर्णय भाई रज्जबअलीके रिश्ते[दारों] पर ही छोड़ देना ठीक होगा। मेरा फ़र्ज़ सिर्फ़ इतना ही है [कि] म उन्हें अहिंसाका रास्ता, जैसा कि म उसे जानता हूँ, दिखा दूँ।

सेवाग्राम, ९–८–'४६
('हरिजनबन्धु'से) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

महादेवकी सबसे बड़ी .ख़ूबी	...	गांधीजी
वे ज़िन्दा हैं	...	सरोजिनी नायडू
पुर्तगाली हिन्दके गवर्नर जनरलको गांधीजीका ख़त	...	
फिर राम–नाम	...	गांधीजी
दक्षिण अफ़्रीका	...	गांधीजी
महादेव देसाई	...	जवाहरलाल नेहरू
यादमें	...	च० राजगोपालाचार्य
उनका आख़िरी लेख	...	महादेव देसाई
गुरु और शिष्य	...	सुशीला नय्यर
सवाल–जवाब	...	गांधीजी
दक्खिनकी रियासतोंको गांधीजीकी सलाह	...	प्यारेलाल
.ख़ूनका बदला	...	गांधीजी
टिप्पणियाँ:		
गोआ	...	गांधीजी
दक्षिण अफ़्रीका	...	गांधीजी
ईश्वरका ध्यान कैसे किया जाय?	...	गांधीजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०

सम्पादक — प्यारेलाल

अंक ३१

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ८ सितम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डालर ३

गोआकी गुहार

श्री पुरुषोत्तम काकोड़करने गोआके पणजी जेलसे ता० १२-८-'४६को ...के नाम हिन्दीमें अेक ख़त भेजा है । अुसमें वह लिखते हैं ...१ अगस्तकी रातको नौ बजे वह अपने एक दोस्तके साथ सदर ...पर खड़े बात कर रहे थे । अुसी वक़्त मि० फिगार्डो नामके ...के अेक पुर्तगाली पुलिस अफ़सर वहाँ पहुँचे और अुन्होंने अुनको ...तार किया । १० अगस्तको क़रीब १० बजे अुन्हें हथियारबन्द ...की निगरानीमें मामलतदारकी कचहरीमें ले जाया गया । वहाँ ...तदारने अुनसे कुछ सवाल पूछे । अिस पूछताछके सिलसिलेमें ...तदार अपना मिजाज़ खो बैठे, गालियाँ बकने लगे और ...र डालने'की धमकी देने लगे । अुसी दिन शामको वह पणजी ...ले जाये गये । वह लिखते हैं कि जेलमें दो बार खाना दिया ...है — दुपहरको और रातको । हर बारके खानेमें थोड़े — महज़ ...र — चावल होते हैं, अुन पर थोड़ी दाल डाल दी जाती है, ...एक या दो पापड़के साथ दो-एक चम्मच तरकारी दी जाती ...यह 'आधा खाना' कहलाता है । जब पुलिस अफ़सरका ...अिस ओर दिलाया गया, तो जवाब मिला कि जो कुछ दिया ...है, क़ायदेकी रूसे दिया जाता है, और ज़्यादा देनेका अुन्हें ...हक़ नहीं है । यह अिन्तज़ाम भी 'भिखमंगों'के लिअे है, ...पीते लोगोंके लिअे नहीं ।

श्री काकोड़कर लिखते हैं — "आज दुपहरमें मैंने यह खाना ..., गो वह बहुत ही ना-काफ़ी था । मैंने समाजका कोअी क़सूर ...किया है, फिर भी मुझे ज़बरदस्ती सरकारी मेहमान बना दिया ...है । मैं किससे कहूँ कि वह मेरे लिअे बाहरसे खाना भेजे? ...अहदीकी तरह निकम्मा बैठकर दूसरोंकी मेहनतका खाना खाना ...मुनासिब नहीं मालूम होता । मैं यहाँके अफ़सरोंसे कहनेवाला हूँ कि ...श्रम करनेको तैयार हूँ, और अुन्हें चाहिये कि वे मुझे ...खाना दें ।"

जेलके अिन्तज़ामका ज़िक्र करते हुअे वह लिखते हैं कि कभी-...घण्टों तक कोअी पहरेदार आसपास दिखाअी नहीं पड़ता । ...में क़सूर पहरेदारका नहीं, जेलके मुन्तज़िमोंका है । नतीजा ...होता है कि तनहाअीमें और तहख़ानोंमें बन्द किये गये क़ैदी ...भी वक़्तसे अपनी .क़ुदरती हाजतोंको रफ़ा नहीं कर पाते । ...न्, वह लिखते हैं कि जब सुबह ४॥ बजे वह सोकर अुठते ..., तो कहीं कोअी पहरेदार दिखाअी नहीं पड़ता, चुनाँचे अुनको ...६ या ७। तक रुकना पड़ता है, और अुसके बाद ही वे अपनी ...रफ़ा कर पाते हैं । श्री काकोड़कर लिखते हैं कि अुन्हें बवासीरकी ...शिकायत है, जो गिरफ़्तारीके बाद कम खाना मिलनेसे, नींद न ...आने और खानेमें बहुत ज़्यादा मिर्च होनेसे अिधर और ...बढ़ गअी है ।

नअी दिल्ली, १-९-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

खादीका अर्थशास्त्र

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डॉक्टर पी० अेस० लोकनाथन्‌की अेडीटरीमें निकलनेवाले 'अीस्टर्न अिकॉनॉमिस्ट'के २८ जून, १९४६के अंकमें खादीके अर्थशास्त्र पर अेक लेख छपा है । कअी तरहके आँकड़े देकर अुसमें यह दिखानेकी कोशिश की गअी है कि खादीके ज़रिये हिन्दुस्तानकी कपड़ेकी ज़रूरत पूरी करनेके लिअे अितनी ज़्यादा तादादमें काम करनेवालोंकी ज़रूरत होगी कि अुतने लोगोंको अेक खादीके काममें लगा देने पर पुलिस, फ़ौज, रेल, शिक्षा या तालीम और आरोग्य या सेहत वग़ैरा राष्ट्रके लिअे उपयोगी कामोंके वास्ते हमारे पास आदमी ही नहीं बच सकेंगे, और अिसलिअे किसी भी हालतमें खादी पूरी तरह अपनाअी नहीं जा सकेगी । देहाती ज़िन्दगीमें सिर्फ़ अेक सहायक अुद्योगकी तरह खादीकी अपनी थोड़ी जगह हो सकती है ।

खादीके बारेमें अुस लेखकी दलीलें थोड़ेमें यों हैं :

"१. हिन्दुस्तानको फ़ी आदमी २० चौरस गजके हिसाबसे कपड़ा चाहिये	चौरस गज़	८०० करोड़
२. कताअीमें लगनेवाले लोगोंकी तादाद		३.३० "
३. ओटाअी और धुनाअीमें लगनेवालोंकी तादाद		०.५८ "
४. बुनाअीमें लगनेवालोंकी तादाद		१.०६ "
	कुल	४.९४ करोड़

"यानी इस हिसाबसे खादी तैयार करनेके लिअे क़रीब पाँच करोड़ लोग लगेंगे ।

"अिसके अलावा कातनेके लिअे ३ करोड़ ३० लाख चरखे लगेंगे, हर साल १ करोड़ चरखे नये बनवाने होंगे, और बुनाअीके लिअे ५ लाख करघे लगेंगे । अिस सब सरंजामको बनाने और अिसकी मरम्मत करनेके लिअे ४० लाख लोगोंकी ज़रूरत होगी ।

"८०० करोड़ चौरस गज़ खादीके लिअे ५५ लाख गाँठें रूअीकी लगेंगी । अितनी बड़ी तादादमें कपास पैदा करना, अुसकी ढुलाअी करना, अुसे कोठोंमें भरकर रखना, वग़ैरा कामोंके लिअे क़रीब दो करोड़ लोग लगेंगे । अिस तरह कताअी, बुनाअी, सरंजाम, कपासकी खेती वग़ैरा तमाम कामोंमें लगनेवाले लोगोंकी तादाद कोअी सात करोड़ होती है । हिन्दुस्तानमें काम करने लायक़ लोगोंकी तादाद फ़ी सदी ४०के हिसाबसे १६ करोड़ होती है । अिसमेंसे अूपरके हिसाबके मुताबिक़ ७ करोड़ लोग सिर्फ़ खादी-कामके लिअे ज़रूरी होंगे । बाक़ी ९ करोड़ लोग बचते हैं । लेकिन खेतीके लिअे भी तो हमें ११ करोड़ लोग चाहियें । मतलब यह कि अिस तरह .ख़ुद खेतीके लिअे ही लोगोंकी कमी पड़ जायगी, फिर दूसरे कामोंकी तो बात ही क्या?"

अब हम अिन दलीलों पर अेक-अेक करके विचार करेंगे । पहले बुनाअीकी बात लीजिये । कहा गया है कि फ़ी आदमी फ़ी दिन २॥ चौरस गज़के हिसाबसे ८०० करोड़ चौरस गज़ खादी बुननेके लिअे १ करोड़ ६ लाख बुनकर या जुलाहे लगेंगे । यहाँ जुलाहेसे मतलब .ख़ुद जुलाहा और अुसकी मदद करनेवाले सब लोग हों, तब तो बात ठीक है । लड़ाअीसे पहले भी हिन्दुस्तानमें बुनाअीका काम करनेवालोंकी तादाद १ करोड़ थी । अिसलिअे अगर आज भी हिन्दुस्तानमें बुनाअीके लिअे १ करोड़ ६ लाख लोग लगते हैं, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुससे कोअी खास फ़र्क़ नहीं पड़ता । जो लोग आज बुनाअीके काममें लगे हैं, अुन्हें बुननेके लिअे काफ़ी. सूत नहीं मिल रहा । अिसलिअे पहले अुन्हींको पूरा काम देनेकी बात पेश है । खादीको अपनाकर हम अुन्हें पूरा काम दे सकेंगे ।

चरखे, करघे वग़ैरा खादीका सरंजाम बनानेके लिअे लगनेवाले ४० लाख कारीगरोंका सवाल भी अिसी क़िस्मका है । हिन्दुस्तानमें आज भी जरूरतसे ज़्यादा तादादमें करघे मौज़ूद हैं । अिसलिअे नये करघे नहीं बनाने होंगे । चरखोंकी संख्या भी कुछ कम नहीं है । फिर, अेक बारका बनाया चरखा सारी ज़िन्दगी काम देता है । शुरूमें कुछ नये चरखे बनाने भी पड़े, तो भी आगे चलकर हर साल १ करोड़ नये चरखे तो किसी हालतमें नहीं बनवाने होंगे । हाँ, थोड़ी मरम्मतका काम जरूर रहेगा ।

लेकिन हम तो यह दिखाना चाहते हैं कि चरखे-करघे वग़ैराकी शकलमें खादीका सरंजाम बनाने और अुसकी मरम्मत करनेके लिअे ज़्यादा कारीगरोंकी जरूरत ही न होगी । आज जहाँ-जहाँ खादीकी पैदावारका काम चल और बढ़ रहा है, वहाँका अनुभव है कि गाँवोंमें जो कारीगर खेती वग़ैराके औज़ार बनाने और अुनकी मरम्मत वग़ैरा करनेका काम करते हैं, अुन्हींसे चरखे-करघे वग़ैरा बनवानेका काम भी लिया जाता है । असलियत यह है कि अिन देहाती कारीगरोंको भी सालमें पूरे वक़्तका काम नहीं मिलता । जब गाँव-गाँवमें चरखे और करघे चलने लगेंगे, तब अिन देहाती कारीगरोंको भी पूरा काम मिल जायगा । अिस तरह जो कारीगर आज देहातमें मौजूद हैं, अुन्हींसे सरंजाम बनाने और अुनकी मरम्मत वग़ैरा करानेका काम हो जायगा । अिस कामके लिअे नये कारीगर लगानेका सवाल ही नहीं अुठता ।

८०० करोड़ चौरस गज़ खादीके लिअे रूअीकी ५५ लाख गाँठें लगेंगी, मगर अुसे पैदा करने, यहाँसे वहाँ पहुँचाने, या अेक जगह जमा रखनेका काम नये सिरेसे तो हमें करना ही नहीं है । फिर अुसमें ज़्यादा लोगोंके लगनेकी बात अुठ ही कैसे सकती है ? आज भी हिन्दुस्तानमें ६० लाख गाँठसे ज़्यादा कपास पैदा होती है । अुसकी खेतीका, ढुलाअीका और अुसे कोठोंमें भरकर रखनेका काम आज होता ही है । अुलटे, हम तो यह कहते हैं कि खादीके लिअे हरअेक गाँव अपनी जरूरतकी कपास खुद पैदा करेगा और अुसे गाँवमें ही हिफ़ाज़तके साथ रक्खेगा । अुस हालतमें कपासकी ढुलाअीमें, अुसकी तिजारतमें, दलालीमें, और जिनिंग व प्रेसिंग फ़ैक्टरियोंमें लगे हुअे लोगोंकी और बम्बअीके बड़े-बड़े बेपारियों वग़ैरा अूँचे तबक़ेके लोगोंकी कोअी जरूरत ही न रह जायगी, और अिस तरह आज जो पाँच लाखसे ज़्यादा लोग अिन कामोंमें लगे हुअे हैं, वे खाली हो जायँगे, और अुन्हें राष्ट्रके दूसरे अुपयोगी कामोंमें लगाया जा सकेगा ।

अब सवाल कताअी, धुनाअी, और ओटाअीमें लगनेवाले चार करोड़ लोगोंका रह जाता है । खादीके अर्थशास्त्रमें मज़दूरोंसे रोज़ आठ घण्टे कतवा - धुनवाकर सूत तैयार करनेकी बात है ही नहीं । यह सारा काम तो वस्त्र-स्वालम्बनके, यानी अपनी ज़रूरतका कुल कपड़ा खुद बना लेनेके, ख़यालसे या अेक मददगार पेशेके तौर पर ही होगा । चुनाँचे यह कहनेके बजाय कि अिसमें ४ करोड़ लोग लगेंगे, हमें यह कहना चाहिये कि कताअी, धुनाअी और ओटाअीके लिअे हमको रोज़ ३२ करोड़ घण्टोंकी ज़रूरत होगी । हम चाहते हैं कि हरअेक तन्दुरुस्त और भला-चंगा आदमी अपनी फ़ुरसतके वक़्तमें रोज़ कम-से-कम आध घण्टा वस्त्र-स्वालम्बनके लिअे काते । हमारे पास कुल १६ करोड़ लोग काम करने लायक़ हैं । यानी हमें अिनसे रोज़के ८ करोड़ घण्टे मिल सकेंगे । बाक़ी २४ करोड़ अैसे लोग रह जाते हैं, जो बाहरका काम नहीं कर सकते । अिनमें बच्चे, बूढ़े और औरतें शामिल हैं । अिन २४ करोड़मेंसे सात सालसे कम अुम्रके बच्चों और बहुत बूढ़े व बीमार लोगोंकी संख्या घटा देने पर भी २४के आधे यानी करोड़ १२ करोड़ लोग अैसे बच जाते हैं, जो कताअी, धुनाअीके लिअे रोज़ कम-से-कम अेक घण्टेका वक़्त तो ज़रूर दे सकते हैं । अिसके अलावा, अूपरके १६ करोड़में खेतीका काम करनेवाले ११ करोड़ लोग हैं जो सालमें तीन महीने या रोज़ाना औसतन् दो घण्टे बेकार रहते हैं, ये लोग सहायक अुद्योगके तौर पर कताअी और धुनाअीका काम कर सकेंगे । अिस तरह हमको २२ करोड़ घण्टे अिन लोगोंके, ८ करोड़ घण्टे १६ करोड़के और १२ करोड़ घरमें रहनेवालोंके, यों कुल ४२ करोड़ घण्टे कताअी-धुनाअीके लिअे आसानीसे मिल सकते हैं । मगर हमें अिस कामके लिअे कुल ३२ करोड़ घण्टोंकी ही ज़रूरत है, यानी अपनी ज़रूरतसे ज़्यादा घण्टे आज ही हमारे पास हैं । अिसी तरह अूपरके १२ करोड़ लोग ज़रूरत पड़ने पर अपनी फ़ुरसतके वक़्तमें और भी ज़्यादा वक़्त दे सकते हैं । अिसलिअे फ़ी आदमी २० चौरस गज़ ही नहीं, बल्कि अुससे ज़्यादा कपड़ा भी हम देना चाहें, तो दे सकते हैं । अिसके लिअे हमें लोगोंकी फ़ुरसतके वक़्तमेंसे ही काफ़ी सूत मिल सकेगा, और दूसरे कामोंमें लगे हुअे लोगोंको अिस काममें खींचनेकी ज़रूरत ही न होगी ।

अिस तरह हमें पता चलेगा कि खादीको सारे देशमें फैलानेसे — अुसे सर्वव्यापी बनानेसे — दूसरे ज़रूरी और अुपयोगी कामोंमें लोगोंकी तंगी या कमी होनेका जो अँदेशा किया जाता है, वह ठीक नहीं है । बुनाअीके, सरंजाम बनानेके और कपास वग़ैरा पैदा करनेके काममें जो लोग आज लगे हैं, वे ही खादीके लिअे भी काफ़ी हैं । दूसरे, चूँकि कताअी, धुनाअी व ओटाअीका काम फ़ौसकी फ़ुरसतके वक़्तमें ही हो जाता है, अिसलिअे खादीको सर्वव्यापी बनानेके लिअे दूसरे धन्धोंसे लोगोंको खींचनेकी बात ही नहीं अुठती । अुलटे, खादीको अपनानेसे जिनिंग, प्रेसिंग वग़ैरा कपासकी फैक्टरियोंमें लगे ५ लाख लोग और कपड़ेकी मिलोंमें काम करनेवाले ५ लाख मज़दूर व कारीगर, यों कुल १० लाख लोग बच जायँगे, जिनको हम दूसरे राष्ट्रोपयोगी कामोंमें लगा सकते हैं ।

आख़िरमें कहना यह है कि हिन्दुस्तानका आर्थिक नियोजन अुसका अिक़्तसादी प्लैनिंग, सिर्फ़ खादीके अर्थशास्त्रकी बुनियाद पर ही किया जा सकता है । अेक जगह खड़े किये गये बड़े-बड़े कारख़ानोंसे हिन्दुस्तानका आर्थिक जीवन कभी शान्त, स्वास्थ्यप्रद (सेहत बख़्शनेवाला), और समृद्ध (.ख़ुशहाल) नहीं बन सकेगा ।

खादी दीखनेमें .ख़ूबसूरत नहीं होती, वह कम टिकाअू होती है और महँगी भी है, वग़ैरा खादीकी जो कमज़ोरियाँ गिनाअी जाती हैं, अुनके जवाबमें काफ़ी कहा जा चुका है, अिसलिअे यहाँ अुस पर और कुछ लिखनेकी ज़रूरत नहीं ।

कृष्णदास गांधी

पढ़नेवालोंसे

'हरिजनसेवक'में 'सवाल-जवाब' अक्सर ही छपते रहते हैं । अुनके ज़रिये जहाँ तक हो सकता है, सवाल पूछनेवालोंकी शंकाओंका तसल्लीबख़्श जवाब देनेकी कोशिश की जाती है । लेकिन फिर भी रोज़ाना डाकसे मेरे पास अैसे सवाल आते रहते हैं, जिनका जवाब किसी-न-किसी शकलमें अेकसे ज़्यादा दफ़ा दिया जा चुका है । अुन्हें पढ़नेवालोंको चाहिये कि वे 'हरिजनसेवक'में छपे 'सवाल-जवाबों' को ग़ौरके साथ पढ़ा करें ।

अिनके सिवा, अक्सर अैसे ख़त आते हैं, जिनमें बीमारोंके अिलाजके बारेमें सलाह पूछी जाती है । अैसे सवालोंका जवाब देनेकी अिच्छा तो रहती है, लेकिन अभी अुसका वक़्त नहीं आया । फिर, डाकके ज़रिये पूछे गये अधूरे सवालोंका जवाब देना भी मुश्किल है । अिसलिअे भाअी-बहनोंको चाहिये कि वे ज़रा दम धरें ।

नअी दिल्ली, २-९-'४६

('हरिजन'से)

मो॰ क॰ गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानी बनाम हिन्दी और अुर्दू

बम्बअी सरकारकी ता० १६–८–'३९की गश्ती चिट्ठीमें यह लिखा गया है —

"पता चला है कि लोग 'हिन्दुस्तानी' लफ़्ज़का अिस्तेमाल बिना सोचे-समझे हिन्दी या हिन्दुस्तानी ज़बानके लिअे करते हैं। मेहरबानी करके अिस बातका खयाल रखिये कि हिन्दुस्तानी हिन्दी या अुर्दूसे अलग और निराली ज़बान है; चुनाँचे जब भी आपको अिस ज़बानका ज़िक्र करना पड़ जाय, आप अिसे 'हिन्दुस्तानी' लिखिये।"

९ अक्तूबर, १९४०को अेक सरकारी बयान जारी किया गया था। अुसमें लिखा गया है —

"सन १९३८के सितम्बर महीनेमें बम्बअी सरकारने प्रान्तकी पाठशालाओंमें हिन्दुस्तानीकी पढ़ाअी शुरू करनेका अपना फ़ैसला ज़ाहिर किया था। चुनाँचे अुस फ़ैसले पर अमल करनेके लिअे ज़रूरी कार्रवाअी की गयी थी और तबसे प्राअिमरी स्कूलों, मिडिल स्कूलों और ट्रेनिंग स्कूलों या कॉलेजोंमें हिन्दुस्तानी सिखानेका अिन्तज़ाम किया गया है। अुसे सिखानेके सिलसिलेमें कुछ अमली दिक़्क़तें पेश आअी हैं। अिन दिक़्क़तों पर गौर करना ज़रूरी है। हिन्दुस्तानीका विकास अभी होना बाक़ी है, चुनाँचे अुसमें लिखा साहित्य कम मिलता है, और स्कूलोंमें पढ़ाने लायक़ किताबें भी अुसमें नहीं मिलतीं। ये अुसकी कुछ खास दिक़्क़तें हैं। फ़िलहाल हिन्दुस्तानीकी जो किताबें पढ़ाअी जाती हैं, अुनमें बरती गअी ज़बान और दिये गये सबक़ पाठ्यवस्तुकी दृष्टिसे खामीवाले मालूम हुअे हैं। कहा जाता है कि अिन किताबोंकी ज़बानमें ठेठ हिन्दीके लफ़्ज़ ज़्यादा तादादमें हैं, और अिनके कुछ सबक़ोंका मज़मून विद्यार्थियोंके लिअे ठीक नहीं है। दूसरे, अुर्दू और हिन्दुस्तानी ज़बानोंके शब्द-भण्डारमें दोनों ज़बानोंमें अेक-से पाये जानेवाले शब्द अितने ज़्यादा हैं कि अुर्दू मदरसोंमें हिन्दुस्तानी सिखानेका आग्रह (अिसरार) रखना गैरज़रूरी है। अिस सारे मसले पर अच्छी तरह गौर करनेके बाद सरकार अब यह सुझाती है कि अगरचे दूसरे मदरसोंमें हिन्दुस्तानी सिखानेके खिलाफ़ कोअी खास अेतराज़ नहीं है, तो भी जितनी अुर्दू पढ़ानेवाली जो संस्थायें (अिदारे) हैं, यानी जिनमें अुर्दूके ज़रिये तालीम दी जाती है, अुन प्राअिमरी स्कूलों, मिडिल स्कूलों और ट्रेनिंग स्कूलों या कॉलेजोंको अुनकी पढ़ाअीमें हिन्दुस्तानीकी तालीम दाखिल करनेसे बरी किया जाय।"

सन १९४१में जारी किये गये अेक दूसरे गश्ती खतके ज़रिये अिसी तरह हिन्दी पढ़ानेवाली पाठशालाओंको हिन्दुस्तानी पढ़ानेसे छुट्टी दी गअी है। अिस तरह जहाँ पढ़ाअीका ज़रिया हिन्दी या अुर्दू न हो, वहाँ, अुन मदरसोंमें, हिन्दुस्तानी सिखानेकी बात तय हुअी। सवाल यह है कि अैसी हालतमें आम लोगोंकी रायसे बनी हुअी सूबेकी मौजूदा सरकारको क्या करना चाहिये?

अगर यह माना जा सके कि सूबेकी मौजूदा सरकार आम लोगोंकी रायसे बनी है, तो अुससे हमें अिस सवालका जवाब मिल जाता है। अगर हिन्दी पाठशालायें प्राअिमरी और मिडिल स्कूलोंमें राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी सिखाना चाहें, तो वह सिखाअी जानी चाहिये। सहज ही अिस बातका फ़ैसला अिन स्कूलोंमें पढ़नेवाले लड़कों और लड़कियोंके माँ-बापोंको करना होगा। अगर अुन्हें अिसकी ज़रूरत न मालूम होती हो और यह चीज़ अुन पर ज़बरदस्ती लादनेकी कोशिश की जाय, तो लोगोंकी सरकार होनेका अुसका दावा टिक न सके। मैं माँ-बापोंको यह सलाह दूँगा कि वे अपने बच्चोंको हिन्दुस्तानी सिखानेकी माँग करें। असलमें हिन्दुस्तानी हिन्दी और अुर्दूका मिलाजुला रूप है, और वह नागरी व फ़ारसी दोनों लिखावटोंमें लिखी जाती है। यह हक़ीक़त कभी भूलनी न चाहिये। अगर माँ-बाप सिर्फ़ हिन्दी या सिर्फ़ अुर्दू और कोअी अेक ही लिपि चाहते हों, तो वे अपनी यह माँग अुस सरकार पर लाद नहीं सकते, जो अुनकी अिस बातको माननेको राज़ी न हो और वैसा करनेके लिअे नाखुश हो। दोनों दल अपनी-अपनी मरज़ीके मुताबिक़ बरतनेको आज़ाद हैं।

यहाँ यह सवाल मौज़ूँ नहीं कि आया हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा है, या कि वह राष्ट्रभाषा यानी क़ौमी ज़बान हो सकती है या नहीं। 'हरिजनसेवक'के पिछले अंकोंमें अिस मसले पर कअी दफ़ा लिखा जा चुका है।

('हरिजन'से)

सेवाग्राम, २५–८–'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

अंग्रेज़ीके हिन्दुस्तानी मानी

अंग्रेज़ी — हिन्दुस्तानी

Abominable *adj.* मकरूह, नफ़रत (घृणा)के क़ाबिल। مکروہ، نفرت (گھرنا) کے قابل

Abound *v.* भरपूर होना, मालामाल होना। بھرپور ہونا، مالامال ہونا

Abridge *v.* खुलासा करना, घटाना, संक्षेप करना। خلاصہ کرنا گھٹانا، سنکشیپ کرنا

Abrupt *adj.* अचानक, यकायक। اچانک، یکایک

Abscess *n.* फोड़ा। پھوڑا

Absence *n.* गैरहाज़िरी, अभाव (श्री० का०)। غیرحاضری، ابھاو (شری۔کا)

Absolute *adj.* पूरा-पूरा, पूरन (श्री०)। پوراپورا، پورن (شری)

Absolve *v.* माफ़ी देना, बरी करना। معافی دینا، بری کرنا

Absorb *v.* चूसना, घुल-मिल जाना, सोख लेना, घुलमिलाना, (का०)। چوسنا، گھل مل جانا، سوکھ لینا، گھل ملانا (کا)

Abstain *v.* दूर रहना, बचना। دور رہنا بچنا

Abstract *v.* निकालना। نکالنا

Abstract *n.* खुलासा। خلاصہ

Abstract *adj.* खयाली। خیالی

Absurd *adj.* बेतुका, लचर, फ़ज़ूल,। بےتکا لچر، فضول

Abundance *n.* रेलपेल, बहुतात, बहुतायत (का०)। ریل پیل بہتات، بہتایت (کا)

Abuse *v.* बुराभला कहना, गाली देना, दुरुपयोग करना। برابھلا کہنا، گالی دینا، درپیوگ کرنا

Abuse *n.* बुरी रीत, गाली। بری ریت، گالی

Abyss *n.* खड्ड, गड्हा, रसातल। کھڈ، گڑھا، رساتل

Accent *n.* लहजा, ज़ोर, भार। لہجہ، زور، بھار

Accept *v.* मानना, क़बूल करना। ماننا، قبول کرنا

Access *n.* पहुँच, रास्ता। پہنچ، راستہ

Accident *n.* वारदात, अकस्मात, घटना (श्री०)। واردات، اکسمات، گھٹنا (شری)

Accidentally *adv.* अचानक। اچانک

Accommdation *n.* जगह, गुंजाअिश। جگہ، گنجائش

Accompany *v.* संग होना या जाना, साथ हो लेना (का०)। سنگ ہونا یا جانا، ساتھ ہو لینا (کا)

Accomplice *n.* साथी (गुनाहमें)। ساتھی، (گناہمیں)

Accomplish *v.* पूरा करना। پورا کرنا

Accomplished *adj.* निपुण, कमाल, खूबीवाला। نپن، کمال، خوبی والا

According to *prep.* मुताबिक़, अनुसार (श्री०)। مطابق، انوسار (شری)

According as *prep.* जैसे। جیسے

Account *n.* हिसाब, बयान। حساب، بیان

On account of कारण, वजहसे। کارن، وجہ سے

Account for *v.* हिसाब देना, जवाब देना, ठिकाने लगाना। حساب دینا، جواب دینا، ٹھکانے لگانا

Accumulate *v.* अिकट्ठा करना या होना। اکٹھا کرنا، یا ہونا

Accuse *v.* माथे थोपना, अिलज़ाम लगाना (किसीके)। ماتھے تھوپنا، الزام لگانا، (کسی کے)

Accustom *v.* आदत डालना। عادت ڈالنا

Achieve *v.* पा लेना, हासिल करना (का०)। پا لینا، حاصل کرنا، (کا)

Acid *adj.* *n.* खट्टा, तेज़ाब। کھٹا، تیزاب

Acknowledge *v.* रसीद देना, पहुँच लिखना, मानना। رسید دینا، پہنچ لکھنا، ماننا

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

८ सितम्बर १९४६

ज़हरका अुतार

कलकत्तेमें हाल ही जो शर्मनाक और अफ़सोसनाक वारदातें हो गअीं, अुनका हूबहू बयान देनेके बाद अेक भाअी पूछते हैं — "अैसे मौक़ों पर हमारा फ़र्ज़ क्या होना चाहिये? अैसे वक़्त कांग्रेस तो आम जनताको कोअी साफ़ हिदायतें नहीं देती। दूर बैठकर अहिंसाकी नसीहत देनेसे कोअी फ़ायदा नहीं होता। अगर अिस बार कलकत्तेमें अहिंसात्मक विरोध किया जाता, तो अुसका नतीजा यह होता कि अेक-अेक हिन्दू मारा जाता और हिन्दुओंकी तमाम जायदाद बरबाद हो जाती।"

कलकत्तेकी वारदातों पर कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीका जो ठहराव अख़बारोंमें छप चुका है, अुसके आख़िरी हिस्सेमें कमेटीने साफ़ लफ़्ज़ोंमें राह दिखाअी है। कमेटीने कहा है कि "आपसकी मार-काट धमकी और हिंसासे बन्द नहीं हो सकती। अुसका अिलाज तो बाहमी समझौता, दोस्ताना बातचीत और अगर ज़रूरत हो तो सालिसी (पंच) फ़ैसलेसे ही हो सकता है।" अिस साफ़, सीधी और क़ाबिल अमल बातको माननेके लिअे अहिंसामें विश्वास (अेतक़ाद) की ज़रूरत नहीं। बात यह है कि अगर कलकत्तेके तमाम हिन्दू जान-बूझकर, हिम्मतके साथ, बिना बदला लिये मर जाते, तो वे न सिर्फ़ हिन्दू धर्मको, बल्कि समूचे हिन्दुस्तानको बचा लेते, और अुससे हिन्दुस्तानमें अिस्लाम भी शुद्ध या पाक बन जाता।

लेकिन असलमें हुआ क्या? हमारी आपसकी जंगली मार-काटको बन्द करनेके लिअे अंग्रेज़ी फ़ौजको बीचमें पड़ना पड़ा। अुसकी अिस दस्तन्दाज़ीसे न हिन्दुओंको कोअी फ़ायदा पहुँचा, न मुसलमानोंको। फ़र्ज़ कीजिये कि कलकत्तेका यह ज़हर सारे देशमें फैल जाय, और ब्रिटिश संगीनें और बन्दूकें लोगोंको अेक-दूसरे पर छुरेबाज़ी करनेसे रोकें, तो अिसका मतलब क्या होगा? यही कि अभी काफ़ी अरसे तक हिन्दुस्तानको ब्रिटेनकी या अुसके जैसी सल्तनतकी .गुलामी करनी होगी। और, यह .गुलामी अुस वक़्त तक बनी रहेगी, जब तक हिन्दू-मुसलमान दोनोंके होश ठिकाने न आ जायँ। अैसा तभी होगा, जब या तो तीसरी किसी ताक़तकी मददके बिना वे आपसमें लड़-भिड़-कर लस्तपस्त हो जायँगे, और बाहमी समझौता कर लेंगे, या जब दोमेंसे कोअी अेक दल बड़ी-से-बड़ी जोखिम अुठाकर भी हिंसा छोड़ अहिंसाको अपना लेगा। आज हालत यह है कि आम रिआयाको आजकलकी लड़ाअीके नये-से-नये हथियार चलानेकी न तो कोअी तालीम मिली है, और न अैसे कोअी हथियार ही अुसके पास हैं। चुनाँचे आपसकी मार-काटमें किसीको कोअी कामयाबी तो मिल ही नहीं सकती। अहिंसाके लिअे किसी तरहकी बाहरी तालीम ज़रूरी नहीं होती। अुसके लिअे अेक ही चीज़की ज़रूरत है — हमें अपने दिलमें यह तय कर लेना चाहिये कि हम बदला लेनेकी ग़रज़से भी किसीको नहीं मारेंगे, और बिना बदला लिये, हिम्मतके साथ मौतका सामना करेंगे। अहिंसा पर मेरा यह कोअी 'सरमन', प्रवचन या अुपदेश नहीं, बल्कि अेक सीधी-सादी समझकी बात है। यही .क़ुदरती ज़िन्दगीका अेक आम क़ानून है। अगर हमें अिस क़ानूनमें अटूट श्रद्धा हो, बेअिन्तहा अेतक़ाद हो, तो बुरी-से-बुरी खिझलाहटकी हालतमें भी हम सब्रसे काम लेंगे, चुपचाप सब सहेंगे, मगर बदला लेनेका ख़याल तक मनमें न लावेंगे। अिसे मैंने बहादुरोंकी अहिंसा कहा है।

अफ़सोस अिस बातका है कि आज किसी बड़े पैमाने पर अिस तरहकी बहादुराना अहिंसा हममें पाअी नहीं जाती। बाज़ लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि अैसी अहिंसाका पालन तो अेक छोटा गिरोह भी नहीं कर सकता, फिर करोड़ोंकी तो बात ही क्या? वे कहते हैं कि अिस तरहकी अहिंसा तो बिरले लोग ही दिखा सकते हैं। अगर अहिंसा अैसे कुछ ही लोगोंके लिअे हमेशा महफ़ूज़ रहे, तो कहना होगा कि वह मानवजातिके, अिनसानी दुनियाके, किसी कामकी नहीं।

सो कुछ भी क्यों न हो, अितनी बात साफ़ है कि अगर आम तौर पर लोग बहादुरोंकी अहिंसा दिखानेके लिअे तैयार नहीं हैं, तो अुन्हें अपने बचावके लिअे हिंसाके अिस्तेमालकी तैयारी रखनी होगी। अिस हिंसामें किसी तरहकी जालसाज़ी या धोखेबाज़ी न बरती जानी चाहिये। अिसमें सिर्फ़ अपने बचावकी बात ही सामने रहनी चाहिये। अिसमें किसी तरहकी नामर्दगी या जंगलीपन नहीं होना चाहिये। अिसलिअे अिसमें कोअी पोशीदगी या लुकाछिपी न होगी। पीछेसे आकर पीठमें छुरा भोंकने या गिरफ़्तारीसे बचनेके लिअे छिपते फिरनेकी अिसमें कोअी गुंजाअिश न रहेगी। मैं जानता हूँ कि हम लोग निहत्थे हैं और हथियार चलाना नहीं जानते। यह अच्छी बात है या नहीं, अिस पर मुख़्तलिफ़ रायें हो सकती हैं। लेकिन अिससे तो कोअी अिनकार नहीं कर सकता कि अपने बचावके लिअे अिनसानको हथियार चलानेकी तालीम लेना ज़रूरी नहीं। अिसके लिअे तो मज़बूत हाथों और मज़बूत दिलकी ही ज़रूरत होती है।

ज़ाहिर है कि दूसरेको चोट पहुँचानेमें हिंसा है, लेकिन दिलमें दूसरेको चोट पहुँचानेका ख़याल रखते हुअे भी डरपोकपनकी वजहसे अपनी या अपने पड़ोसीकी हिफ़ाज़तके लिअे तैयार तक न होना तो शायद और भी बुरी हिंसा है।

अैसी हालतमें नेता लोग क्या करें? नये मंत्री या वज़ीर क्या करें? अुन्हें हमेशा क़ौमी एकता पैदा करनेकी कोशिश करनी चाहिये — किसीसे डरकर नहीं, बल्कि अिस ख़यालसे कि वह ज़रूरी है, बुनियादी चीज़ है। मैं मुसलमानोंको या ग़ैरहिन्दुओंको अपना सगा भाअी समझता हूँ। यह मैं किसीको ख़ुश करनेके लिअे नहीं समझता, बल्कि अिसलिअे समझता हूँ कि वे भी मेरी भारतमाताके — मादरे हिन्दके — बच्चे हैं, जिसका अेक बच्चा मैं हूँ। चूँकि वे मुझसे नफ़रत करते हैं या मुझे अपना भाअी नहीं समझते, अिसलिअे यह नहीं कहा जा सकता कि वे मेरा भाअी नहीं हैं। बावजूद अुनकी नाराज़गीके मुझे अुन्हें अपनी मुहब्बतसे जीतना ही है। नये मंत्रियों या वज़ीरोंको यह फैसला कर लेना चाहिये कि वे काली या गोरी किसी भी ब्रिटिश फ़ौजकी मदद नहीं लेंगे और न ब्रिटिशोंकी तैयार की हुअी पुलिसका ही अिस्तेमाल करेंगे। न फ़ौज, न पुलिस, कोअी भी हमारा दुश्मन नहीं। लेकिन अब तक फ़ौज और पुलिसका अिस्तेमाल लोगों पर गुलामीका जुआ लादनेमें हुआ है, अुनकी मदद करनेके लिअे नहीं। अिसलिअे अब तो फ़ौज और पुलिसका अिस्तेमाल तामीरी कामोंके लिअे किया जाना चाहिये, क्योंकि यह काम अुनके बूतेका है। फ़ौजको तो ख़ास तौर पर अिसकी तालीम मिली होती है। फ़ौजवाले बात-की-बातमें तम्बुओंका शहर खड़ा कर सकते हैं। वे जानते हैं कि पानी किस तरह मुहैया किया जा सकता है, कैसे अुसे साफ़ रक्खा जा सकता है, और किस तरह सफ़ाअीका पूरा पक्का अिन्तज़ाम किया जा सकता है। अिसमें शक नहीं कि वे मारना और मारते-मारते मरना भी जानते हैं। अुनके कामके अिस पहलूसे आम जनता अच्छी तरह वाक़िफ़ है। लेकिन किसी भी हालतमें वह अुनका सबसे बड़ा और संगीन काम नहीं। हमें तो अुनके रचनात्मक या तामीरी कामकी ही क़दर, तारीफ़ और नक़ल करनी चाहिये। मार-काटका हैवानियत भरा जो काम वे करते हैं, वह अिनसानियतके ख़िलाफ़ है, मगर दूसरा यानी तामीरी काम सही तौर पर अिनसानियतका काम है और वह साफ़ व पाक काम है। हमें चाहिये कि हम अपनी कोशिश भर फ़ौजको अिनसान बनायें और उसके अच्छे कामोंकी नक़ल करें। यह कोशिश करने लायक़ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अैसी कोशिश वे लोग ही कर सकते हैं, जो फ़ौजियोंके आसपासकी शान-शौकत और तड़क-भड़कसे चौंधिया नहीं जाते, और अुसके दबदबेमें नहीं आते। यह तभी हो सकेगा जब हम तन और मनसे बदलेका ख़याल छोड़कर मौतका सामना करनेको तैयार हो जायँगे।

नअी दिल्ली, २–९–'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन'से)

दक्खिन अफ्रीका

सर शफ़ात अहमद खाँ पर हाल ही जो क़ातिल हमला हुआ, वह न होता, तो कल वे बीचके वक़्तकी — मध्यकालीन — सरकारमें शामिल हुअे होते। पिछली ६ अगस्तको अुन्होंने मुझे अेक दिलचस्प ख़त लिखा था, अुसीका कुछ हिस्सा मैं नीचे देता हूँ—

"दक्खिन अफ्रीकामें रहते हुअे मैंने वहाँके हिन्दुस्तानियोंकी हालतका जो अभ्यास किया है, अुससे मुझे यक़ीन हो गया है कि आपने अुस यूनियनमें रहकर वहाँ जो बहादुराना काम किया था, वह न किया होता, तो अुस मुल्कमें हिन्दुस्तानवाले आज अिज़्ज़तके साथ रह ही न पाते। आपने हौले-हौले वहाँके हिन्दुस्तानियोंमें, जो अेक अूँचे दरजेकी खासियत रखनेवाले लोग हैं, बुराअीका मुक़ाबला करनेकी ताक़त पैदा की। आज भी दक्खिन अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको आपका वह काम बराबर प्रेरणा पहुँचाता रहता है।

"दक्खिन अफ्रीकामें रहते हुअे मैंने बराबर अिस बातकी कोशिश की कि मैं नातालके हिन्दुस्तानियोंमें अेकता पैदा करूँ। मैं नहीं मानता कि मुझे अपने अिस काममें पूरी कामयाबी मिली, लेकिन मेरा खयाल है कि हमारे हिन्दुस्तानी भाअी आज वहाँ जो बहादुराना लड़ाअी लड़ रहे हैं, वह न लड़ी जाती, अगर नातालके अिण्डियन अेसोसिअेशनको और श्री अे० आअी० क़ाज़ीकी नाताल अिण्डियन कांग्रेसको बरखास्त करके अुस नाताल अिण्डियन कांग्रेसको फिरसे जिलाया न जाता, जिसे सन् १८९४में आपने क़ायम किया था। २९ अगस्त, १९४३को वहाँ यह चीज़ हो चुकी थी, और तबसे नातालमें हिन्दुस्तानियोंकी अपनी अेक ही राजनीतिक या सियासी संस्था काम करती रही है।

"दक्खिन अफ्रीकाकी हालत बहुत अुलझी हुअी है और राजकाजी कारणोंसे मेरे मुँह पर ताला पड़ा हुआ है। दक्खिन अफ्रीकासे मैंने हिन्दुस्तान सरकारके नाम जो ख़त भेजे थे, अुनमें वहाँके अुन तीन सालोंकी सियासी हालतकी अेक मुकम्मल तसवीर दी गअी है, और वे काफ़ी तफ़सीलके साथ लिखे गये हैं। लेकिन राष्ट्र-राष्ट्रके बीचके बाहमी क़रारोंकी वजहसे वे छापे नहीं जा सकते।

"मैं अिस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि जब तक हम अपने देसमें अपने मालिक नहीं बनते और हिन्दुस्तान आज़ाद नहीं होता, तब तक दक्खिन अफ्रीकाकी हमारी तकलीफ़ें और शिकायतें मिट नहीं सकतीं।"

अिस ख़तकी पहुँचमें लिखे मेरे ख़तका जवाब देते हुअे सर शफ़ात अहमद खाँ फिर लिखते हैं—

"आपको यह जानकर ख़ुशी होगी कि दक्खिन अफ्रीकासे लौटनेके बाद ही से मैं वहाँ दी हुअी अपनी तक़रीरों (भाषणों)को तैयार करनेमें लगा हूँ। यह किताब जल्द ही निकलनेवाली है, और अिसमें मैंने दक्खिन अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंकी तवारीख़का भी अेक हिस्सा जोड़ दिया है। अुसमें मैंने वहाँके आपके कामका मुख़्तसर बयान देनेकी हिम्मत की है, और बड़ी दिलचस्पीके साथ आपकी वॉलक्रस्ट वग़ैराकी कूचोंका ज़िक्र किया है। . . .

"सन् १९४२से १९४५ तकके तीन सालसे कुछ ज़्यादाके अरसेमें मैंने हिन्दुस्तानकी सरकारके नाम दक्खिनी अफ्रीकाके मसले पर लम्बे-लम्बे ख़रीते भेजे थे, और १९४३के अप्रैलमें मैंने अुन्हें जनरल स्मट्सकी पॉलिसीके ख़िलाफ़ आगाह किया था, और अुनसे कहा था कि वे 'पेगिंग अेक्ट'के सिलसिलेमें यूनियन सरकारके ख़िलाफ़ कड़ी-से-कड़ी कार्रवाअी करें। . . . अब कुछ कड़ी कार्रवाअी हुअी है, लेकिन मुझे डर है कि वह बहुत देर बाद हुअी। अगर कांग्रेस जल्दी ही अपनी राष्ट्रीय सरकार बनाये और अिस महकमेके नये मेम्बर मेरे अुन ख़तोंको छपानेका फ़ैसला करें, खासकर अप्रैल १९४३के बाद लिखे गये ख़तोंको, तो मुझे अुम्मीद है कि यू० अेन्० ओ०की, यानी संयुक्त राष्ट्रोंकी सभाकी अगली बैठकके लिअे अुनसे कअी बातें बहुत साफ़ हो जायँगी। मुझे कहना चाहिये कि अिस मामलेमें रिवाज यह है कि जब तक दो मुल्कोंके बीचके आपसी ताल्लुक़ात ख़राब नहीं हो जाते, अिस तरहके ख़त छापे नहीं जाते। वे छपाये भी जायँ या नहीं, अिस पर मैं अपनी कोअी राय नहीं देता। अिसका फ़ैसला तो नअी सरकारको ही करना चाहिये।"

नअी दिल्ली, ३–९–'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजन'से)

बिक्री-कर या टैक्स

बम्बअीमें बिक्री पर कर या टैक्स लगानेका जो क़ानून बननेवाला है, अुसके बारेमें मेरे पास काफ़ी ख़त आये हैं। मेरे ख़यालमें अिन ख़तोंमें बहुत-सी बातें बेमानी हैं, और बिना सोचे-समझे लिखी गअी हैं। अिसके बावजूद भी मैंने अिन शिकायतोंको सीधे फाअिनन्स मिनिस्टर श्री वैकुण्ठभाअी मेहताके पास भेजा था। वे अेक सच्चे और बाहोश मंत्री हैं। अुन्होंने मेरे पास पूरा जवाब भेजा है।

अुनके जवाबसे पता चलता है कि अिस क़ानूनकी पैदाअिश लोगोंकी अपनी सरकारके बननेसे पहले ही हो चुकी थी। मंत्रि-मण्डलने तो अुसमें ज़रूरी फेरफार करनेका काम ही अपने ज़िम्मे लिया है। मेरे नाम आये हुअे ख़त नुक़्ताचीनीसे भरे हुअे हैं। अुन्हें पढ़कर मेरे दिल पर यह असर हुआ है कि नअी सरकार मनमाना बरताव करती है, और यह कि करकी वसूली शुरू हो चुकी है। मगर हक़ीक़त यह है कि न सिर्फ़ अुसकी वसूली अभी शुरू नहीं हुअी, बल्कि वसूली शुरू करनेका काम १ अक्तूबर तक मुल्तवी किया गया है, और ज़रूरत मालूम होने पर यह मुद्दत आगे भी बढ़ाअी जा सकती है। दूसरे, अिस टैक्ससे रोज़मर्राके कामकी कुछ चीज़ोंको छोड़ा गया है। मतलब यह है कि जिन चीज़ोंके बारेमें अेतराज़ किया जा सकता था, अुनकी सुनवाअी की गअी है। मैं जानता हूँ कि अैसे भी लोग हैं, जो कहते हैं कि बिक्री पर कोअी कर बैठाना ही न चाहिये। अिसकी ताअीदमें बहुत कुछ कहा गया है। लेकिन अिस तरहकी नुक़्ताचीनीसे भी किसी राजतंत्रको यानी हुकूमतको बाँधा नहीं जा सकता। अिसलिअे अैसे मौक़ों पर अिस तरहकी बुनियादी चीज़ोंको छोड़ देनेमें ही अक़्लमन्दी है।

मुल्कके कअी सूबोंमें बिक्री पर टैक्स वसूल किया जाता है। अगर कर या टैक्स देनेके रिवाजकी हिमायत की जा सकती है, तो अिस सिलसिलेमें अेक ही चीज़का विचार करना मौज़ूँ होगा। और, वह यह है कि अैसे करका बोझ ग़रीबों पर न पड़े और अिस बातका ख़याल रक्खा जाय कि अुसका अिस्तेमाल समाजके फ़ायदेके लिअे ही किया जाता है या नहीं।

मंत्रि-मण्डल धारासभाके सदस्यों यानी मेम्बरोंके मातहत रहकर काम करता है। अुनकी अिजाज़तके बिना वह कुछ कर नहीं सकता। और हरअेक मेम्बर अपने वोटरोंके यानी लोकमतके अधीन है। चुनाँचे अुसके हरअेक काम पर गहराअीके साथ सोचनेके बाद ही अुसकी मुख़ालिफ़त करना मुनासिब होगा। आम लोगोंकी अेक ख़राब आदत पर भी अिस सिलसिलेमें ग़ौर किया जाना चाहिये। टैक्स चुकानेवालेको टैक्सके नामसे नफ़रत होती है। फिर भी जहाँ अच्छा अिन्तज़ाम है, वहाँ अक्सर यह दिखाया जा सकता है कि टैक्स देनेवाला ख़ुद बतौर टैक्स या करके जो कुछ देता है, अुसका पूरा-पूरा मुआवज़ा अुसे मिल जाता है। शहरोंमें पानी पर वसूल किया जानेवाला टैक्स अिसी ढंगका है। शहरमें जिस दरसे मुझे पानी मिलता है, अुस दरमें मैं अपनी ज़रूरतका पानी ख़ुद पैदा नहीं कर सकता। मतलब यह कि पानी मुझे सस्ता पड़ता है। अुसकी यह दर मुझे अपनी यानी वोटरोंकी ख़्वाहिशके मुताबिक़ तय करनी पड़ती है। तिस पर भी जब पानीका टैक्स जमा करनेकी नौबत आती है, तब आम शहरियोंमें अुसके ख़िलाफ़ अेक नफ़रत-सी पैदा हो जाती है। यही हाल दूसरे टैक्सोंका भी है। सच है कि सभी तरहके टैक्सोंका अैसा सीधा हिसाब नहीं किया जा सकता। जैसे-जैसे समाजका और अुसकी सेवा यानी ख़िदमतका दायरा बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे यह बताना मुश्किल हो जाता है कि टैक्स चुकानेवालेको अुसका सीधा मुआवज़ा किस तरह मिलता है। लेकिन अितना ज़रूर कहा जा सकता है कि समाज पर जो अेक ख़ास कर या टैक्स बैठाया जाता है, समाजको अुसका पूरा-पूरा मुआवज़ा मिलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीं है। अगर अैसा न होता हो, तो ज़रूर ही यह कहा जा सकता है कि वह समाज लोकमतकी बुनियाद पर नहीं चल रहा है। जिस हद तक देसमें परदेसी हुकूमत काम करती है, कहा जा सकता है कि अुस हद तक समाजकी रचना लोगोंकी आम रायसे नहीं होती। आजकल सूबोंमें अेक हद तक हुकूमतका काम लोकमतके अधीन है। अिस बिक्री-कर पर मैंने जिस हद तक ग़ौर किया है, अुसकी बिना पर मैं यह कह सकता हूँ कि यह अिसी क़िस्मका कर है, यानी आम लोगोंकी रायको ख़यालमें रखकर ही यह लागू किया जानेवाला है।

नअी दिल्ली, २९-८-'४६

('हरिजनबन्धु'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

हफ़्तेवार ख़त

महादेवभाअीको जेलमें गुज़रे चार साल पूरे हुए। १५ अगस्तके दिन सेवाग्रामकी अलग-अलग संस्थाओंने मिलकर महादेवभाअीकी चौथी बरसी मनाअी। सबेरे वैतालिकसे यह प्रोग्राम शुरू हुआ। विद्यार्थी और कार्यकर्त्ता स्व० गुरुदेवके रचे और महादेवभाअीके प्यारे गीतोंको गाते हुए आश्रमके चारों ओर घूमे और आख़िर उनकी कुटियाके सामने अेक साथ गीत गाकर बिदा हुअे। सुन्दर दस्तख़तों (हस्ताक्षरों) की नुमाअिश और मिलकर की गअी कताअी (सामूहिक कताअी) अुस दिनके प्रोग्रामके ख़ास अंग थे। महादेवभाअीके एक सरीखे छापे-जैसे सुन्दर अक्षरोंमें लिखी हुअी उनकी डायरियों, पाण्डुलिपियों (हाथसे लिखी किताबों) और ख़तोंको देखकर आँखें अघाती नहीं थीं। अुन्होंने अंग्रेज़ी, गुजराती, संस्कृत या फ़ारसी किसी भी लिपिमें क्यों न लिखा हो — सबमें एक तरहका अनोखापन और ख़ूबसूरती झलकती थी। कांग्रेसके दूसरे बड़े कार्यकर्त्ताओंकी, महादेवभाअीकी लिखावटको कम-ज़्यादा कामयाबीके साथ अपनालेनेवाले आश्रमवासियोंकी, और नअी तालीमके विद्यार्थियोंकी लिखावटोंके नमूनोंसे यह तसवीर पूरी हुअी थी।

गांधीजी छोटी-छोटी चीज़ोंकी भी बहुत क़ीमत करते हैं। जैसा कि वे बार-बार कहा करते हैं, अिन्हीं छोटी-छोटी बातोंसे अुनकी ज़िन्दगी बनी है। १५ अगस्तकी शामकी प्रार्थनामें महादेवभाअीकी ज़िन्दगीके तीन पहलुओं पर लोगोंका ध्यान खींचते हुए अुन्होंने कहा— "महादेव देसाअीके दोस्त और तारीफ़ करनेवाले लोग अुनके प्रिय काम करके ही अुनकी बरसी मनाते हैं। वे बड़े शक्तिशाली पुरुष थे। वे सुन्दर और सुडौल अक्षर लिखते थे। वे कअी चीज़ोंसे प्यार करते थे। लेकिन अुन सबमें चरखेकी जगह पहली थी। एक कलाकार होनेके नाते वे नियमसे बहुत बढ़िया कताअी करते थे। कामकाजके भारी बोझसे थककर चूर हो जाने पर भी वे हमेशा कातनेका वक़्त निकाल ही लेते थे। चरखा अुन्हें फिर तरोताज़ा बना देता था।

"अुनकी कअी ख़ूबियोंमें अुनके बेजोड़ अक्षर भी कोअी कम महत्त्व (अहमियत) नहीं रखते थे। अुसमें कोअी अुनका सानी न था। रामदास स्वामीने अपने अेक दोहेमें ख़ूबसूरत अक्षरोंकी चमकीले मोतियोंसे तुलना की है। महादेवकी क़लमसे निकले हुअे हरूफ़ खरे मोती-जैसे होते थे।

"अुनकी तीसरी ख़ूबी थी, हिन्दुस्तानकी भाषाओंसे अुनकी मुहब्बत। आप सबको भी यह गुण अपनेमें पैदा करनेकी कोशिश करनी चाहिये। वे भाषाशास्त्री (अह्ले-ज़बान) थे। बंगाली, मराठी और हिन्दी पर अुनका पूरा क़ाबू था, और वे अुर्दू भी सीख चुके थे। जेलमें अुन्होंने ख़्वाजा साहब अेम० अे० मजीदसे, जो अुनके साथ क़ैद थे, फ़ारसी और अरबी सीखनेकी भी कोशिश की थी।"

प्रार्थनामें गाये गये गुरुदेवके गीतके बारेमें गांधीजीने कहा— "अभी-अभी आप लोगोंने जो गाना सुना, वह महादेवके प्यारे गानोंमेंसे अेक है। अुन्होंने गुजरातीमें अुसका अुल्था भी कर लिया था—

करुणा बरसाते आओ!

जीवन जब नीरस बन जाय
तुम करुणा बरसाते आओ!
माधुरी मात्र लुप्त हो जाय
गीत सुधा सरसाते आओ!
करमके काले बादल जब
गरज गूँज ढँकें सब थल
हृदय-आँगने नीरवनाथ
चुपके-चुपके आओ, आओ!
दरियाव दिल जब तंग बने
दुबके कोने ताला डाल
ताला तोड़ अुदार भावसे
गाते धूम मचाते आओ!
काम-क्रोधकी कठिन लाट
अन्धा करै भुलावै बाट
हे सदा जागरुक, पापहारि!
तुम बिजली चमकाते आओ! (गीतांजलि)

"अिस गीतमें महादेवके अन्तरतमकी कामनाका सार समाया हुआ है। आप सबकी भी यही कामना और तमन्ना हो! महादेवकी ज़िन्दगी गुणोंका अखूट भण्डार थी। उसमें आप भी हिस्सा बँटा सकते हैं। आपके हिस्सा बँटानेसे अुस भण्डारमें किसी तरहकी कमी नहीं होगी। आध्यात्मिक (रूहानी) ख़ज़ानेकी यही ख़ूबी है—

"पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते॥"

(वह (अीश्वर) पूर्ण है। यह (सृष्टि) भी पूर्ण है। पूर्णसे पूर्ण पैदा होता है। पूर्णमेंसे पूर्ण ले लेने पर भी पूर्ण ही बचता है।)

सेवाग्राममें पण्डित नेहरू

वर्किंग कमेटीकी बैठकके सिलसिलेमें पंडित जवाहरलालजी नेहरू वर्धा आये थे। अिस मौक़ेसे फ़ायदा अुठानेके लिअे खादी-विद्यालय, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, गो-सेवा-संघ वग़ैरा सेवाग्रामकी संस्थाओं और कस्तूरबा गांधी-राष्ट्रीय-स्मारक ट्रस्टके मातहत तालीम लेनेवाली बहनोंने पंडितजीको सेवाग्रामकी मुलाक़ातका न्योता दिया। तालीमी संघके हॉलमें अिस मुलाक़ातका अिन्तज़ाम किया गया था। अिस हॉलको लोग 'रविभवन'के नामसे भी पुकारते हैं। पंडितजीने अपने छोटेसे प्रेरणा देनेवाले भाषणमें अिस बात पर बहुत सन्तोष ज़ाहिर किया। अुन्होंने कहा— "पिछली बार जब मैं सेवाग्राम आया था, तबके और आजके सेवाग्राममें ज़मीन-आसमानका फ़रक़ दिखाअी देता है। कितनी रफ़्तारसे यह आश्रम बढ़ा है! पहले जहाँ अिने-गिने झोंपड़े खड़े थे, वहीं आज रचनात्मक काममें दिन-रात जुटी रहनेवाली संस्थाओंकी भरमार दिखाअी देती है। तालीम लेनेके लिअे आअी हुअी बहनें जब तालीम पूरी करके अपनी-अपनी जगह लौटेंगी, तो वहाँ अुन्हें भारी ज़िम्मेदारी अुठानी पड़ेगी। ४० करोड़ मर्दों, औरतों और बच्चोंकी ज़िन्दगीके दरजेको अूँचा अुठानेका काम कोअी छोटा-मोटा काम नहीं है। आजकलके अख़बार सियासी बातोंसे भरे रहते हैं। अेक तरहसे यह क़ुदरती बात है। लेकिन आप लोगोंको यह बात याद रखनी चाहिये कि सियासी आज़ादी सिर्फ़ तामीरी (रचनात्मक) कामका रास्ता ही साफ़ करती है। वह तामीरी कामकी जगह नहीं ले सकती। अगर हम अंग्रेज़ोंको हिन्दुस्तानसे निकालनेमें कामयाब हो जायँ, और मुल्ककी हालत जैसी-की-तैसी बनी रहे, तो हमारी हालत आजसे भी बदतर हो जायगी। सियासी आज़ादी तो राष्ट्र-निर्माणके काममें रोड़े अटकानेवाली बातोंको ही दूर करेगी। सच्चा काम तो अुसके बाद शुरू होगा। हमें आम रिआयाकी कंगाली और बेकारी मिटानी चाहिये और अुसकी मामूली हालतको भी सुधारना चाहिये।

"दौलत आख़िर क्या चीज़ है?" पंडितजीने पूछा और ख़ुद ही अिसका जवाब देते हुअे कहा— "सोना और चाँदी सच्ची दौलत नहीं हैं। रेगिस्तानमें रास्ता भूल जानेवाला मुसाफ़िर सोने-चाँदीको खा-पीकर अपनी भूख और प्यास नहीं मिटा सकता। अपनी ज़िन्दगीको बनाये रखनेके लिअे वह रोटीके अेक टुकड़े और गिलास भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानीके बदले सारी दुनियाका सोना और चाँदी देनेके लिअे खुशी-खुशी तैयार हो जायगा। सोना और चाँदी तो कामकी चीज़ोंकी अदला-बदलीका अेक सुभीतेका ज़रिया भर है। किसी राष्ट्रकी दौलत अुसके खज़ानेमें पड़ी हुअी बेशक़ीमती धातुओंसे नहीं, बल्कि अुसके पासकी कामकी चीज़ों और अुन्हें पैदा करनेकी अुसकी ताक़तसे कूती जाती है। जिस राष्ट्रमें कामकी चीज़ें पैदा करनेकी क़ाबलीयत और होशियारीवाले तन्दुरुस्त और मेहनती मर्द और औरतें हैं, वही राष्ट्र सही मानोंमें दौलतमन्द है — फिर भले अुसके पास अेक तोला भी सोना या चाँदी न हो। अिसके बरख़िलाफ़, जिस राष्ट्रमें अैसे मर्द-औरतोंकी कमी है, वह अपने समूचे सोने-चाँदीके बावजूद भी ग़रीब ही कहा जायगा। जो शख़्स ख़ुद कुछ पैदा नहीं करता, और दूसरोंकी मेहनतसे पैदा हुअी चीज़ोंके सहारे जीता है, वह समाजका बोझ है।

"आज समाजमें अेक तरफ़ हाथ-पर-हाथ धरे निठल्ले बैठे रहनेवाले दौलतमन्द दिखाई देते हैं, और दूसरी तरफ़ काम न मिलनेसे भूखों मरनेवाले ग़रीब मज़दूर दिखाई देते हैं। जब हिन्दुस्तान आज़ाद था, तब लोगोंमें कअी तरहके हुनर और दस्तकारियाँ फूलती-फलती थीं। आज वे सब बरबाद कर दिये गये हैं, और बार-बार पड़नेवाले अकालोंने मुल्कको तबाह कर डाला है। अिसीसे आज मुल्क थक गया है, कमज़ोर हो गया है। हमारी मौजूदा हालत यही है। लेकिन हमें अिसे सुधारना है। समाजकी रचनाको हमें अिस तरह बदल देना है कि अेक भी शख़्स बेकार न रहे, किसीको जीनेके साधनोंकी कमी न रहे। हरअेकको अपनी तरक़्क़ी और विकासका अेक-सा मौक़ा मिलना चाहिये। अेक तरहसे देखा जाय तो सब आदमी अेक-से नहीं होते — कोअी अक़्लमन्द होते हैं, तो कोअी बेवकूफ़; कोअी ताक़तवर होते हैं, तो कोअी कमज़ोर। जब तक हम किसी शख़्सको तरक़्क़ी और विकासका पूरा-पूरा मौक़ा नहीं देते, तब तक अुसकी नाक़ाबलीयतके लिअे हम अुसे हिकारतकी नज़रसे हरगिज़ नहीं देख सकते। अेक ग़रीब, अनपढ़ और आधापेट खाकर ज़िन्दगी बसर करनेवाले देहातीसे हम अुसी क़ाबलीयतकी अुम्मीद कैसे कर सकते हैं, जिसकी अुम्मीद हम अुस भरपेट खानेवाले शख़्ससे करते हैं, जिसे पढ़ने और तरक़्क़ी करनेके पूरे मौक़े हासिल हुअे हैं? यह ज़रूरी नहीं कि सब लोग हर बातमें अेक-से हों, लेकिन सबको ज़िन्दगीमें तरक़्क़ीके अेक-से मौक़े तो मिलने ही चाहियें। तभी हम अिनसानकी ताक़तकी ठीक-ठीक क़ीमत आँक सकते हैं।"

पंडित नेहरूने आगे चलकर कहा — "पैसे कमानेकी क़ाबलीयतसे भी किसी शख़्सकी क़ूवत नापी नहीं जा सकती। दूसरोंको लूट-खसोटकर या चूसकर अिकट्ठा किया हुआ पैसा मुल्कको कोअी फ़ायदा नहीं पहुँचा सकता। लेकिन वह आदमी, जो टेबल, कुरसी-जैसी कामकी मामूली चीज़ें भी तैयार करता है, मुल्ककी दौलतको बढ़ाता है, और अिसलिए वह मुल्कका सहारा बन जाता है। आज विद्यापीठोंकी तालीमी डिग्रियोंको ज़्यादा महत्त्व (अहमियत) देनेकी एक फ़ैशन-सी बन गअी है। यह भी सही है कि हमारे मुल्कके कअी मरहूम, मौजूदा और मशहूर प्रजा-सेवक (रिआयाकी ख़िदमत करनेवाले लोग) वकीलोंमेंसे ही निकले हैं। लेकिन यह सोचना बड़ी भारी ग़लती होगी कि सिर्फ़ अूँची डिग्रियाँ पाये हुए लोग ही स्वराज चला सकते हैं। अगर सभी वकील बन जायँ, तो देसकी दुर्दशा हो जाय। मुल्कमें एक भी वकील न हो, तो भी अुसका काम अच्छी तरह चल सकता है। लेकिन अगर मुल्कके सभी भंगी एक दिनके लिए भी अपना काम बन्द कर दें, तो अुसको भारी आफ़तका सामना करना पड़ जाय। तिस पर भी समाजके अिस सबसे अुपयोगी सेवकको हम गन्दा कहते हैं और अुससे नफ़रत करते हैं। यह कैसी अुलटी बात है? गाँववालोंकी ख़िदमतके लिअे हिन्दुस्तानको तालीमयाफ़्ता प्रजा-सेवकों, कारीगरों, अिंजीनियरों, डॉक्टरों और शिक्षकोंकी अेक बड़ी फ़ौजकी ज़रूरत होगी। हमें अुन्हें तालीम देकर तैयार करना होगा। यही बात यहाँ की जा रही है। मैं अिस कामको सबसे ज़्यादा महत्त्व देता हूँ। कुछ अिने-गिने मशहूर और चोटीके लोगोंसे कोअी राष्ट्र बड़ा नहीं बनता। अुसके लिअे मुल्कके सभी लोगोंका दरजा अूँचा उठानेकी ज़रूरत है। अगर किसी मुल्ककी नींव मज़बूत और पक्की हो, तो अुसमें मशहूर लोगोंके न होनेसे भी अुसका कुछ बिगड़ता नहीं। अिसलिअे मुल्ककी नींवको मज़बूत बनाना सबसे महत्त्वका काम है। गांधीजीने आम जनताके दरजेको अूँचा अुठानेकी सबसे ज़्यादा कोशिश की है। लेकिन अिस ओर अभी बहुत कुछ करना बाक़ी है। आजके विद्यार्थी (तालिब-अिल्म) कलके शिक्षक यानी अुस्ताद बनेंगे। अगर अुनकी तालीमकी ओर पूरा ध्यान नहीं दिया गया या अुनकी तालीममें किसी तरहकी ख़ामी रह गअी, तो स्वराजकी नींव कमज़ोर पड़ जायगी। अिसलिअे आज जो काम यहाँ किया जा रहा है, वह अूपरसे भले ही चकाचौंध या जोश पैदा करनेवाला न दीखे, लेकिन वह मुल्कमें जान फूँकनेवाला है। अिसलिअे आज मुझे यह देखकर ख़ुशी होती है कि आप लोग यहाँ अितनी बड़ी तादादमें, आनेवाले स्वराजकी नींव डालनेमें लगे हुअे हैं।"

राजा महेन्द्रप्रतापकी वापसी

जब कोअी आदमी अपनी मातृभूमि (मादरे वतन)को चाहनेके अपराधमें ३० बरससे भी ज़्यादा वक़्तके देशनिकालेकी सज़ा भुगतकर अपने मुल्कको लौटता है, तो वह क़ुदरती तौर पर अेक पौराणिक व्यक्ति बन जाता है। राजा महेन्द्रप्रतापकी यह ख़ूबी अुनके अजीब दिखावे और मौजी व्यक्तित्वकी वजहसे और भी बढ़ जाती है। वे अफ़ग़ानिस्तानके शहरी बन गये थे, और फिर जर्मनी, रूस और चीनमें कअी बहादुराना काम करनेके बाद जापानमें रहने लगे थे। जब अमेरिकन फ़ौजोंने जापान पर कब्ज़ा कर लिया, अुस वक़्त जनरल मैकऑर्थरने अुन्हें क़ैद करके लड़ाअीके मुजरिमोंकी छावनीमें रख दिया। पिछले अक्तूबरमें, जब अुनकी तक़दीर ज़िन्दगी और मौतके बीच झूल रही थी, वे सारी दुनियाको अेक करनेकी योजनाका मसविदा तैयार करनेमें मशग़ूल थे। वह योजना अुन्होंने गांधीजीके पास छपानेके लिअे भेजी थी। अुन्होंने लिखा था — "अगर दुनियामें होनेवाले नये फेरफारोंको हम अुनके सच्चे मानोंमें समझ सकें, तो हमारे मुसलमान भाअी, लड़ाअीमें लड़नेवाले हिन्दुस्तानी, राजे-महाराजे और हिन्दुस्तानके अंग्रेज़ सब मिलकर हमारी कांग्रेसमें काम कर सकते हैं।" अिस घोषणा-पत्र या अैलानके नीचे अुन्होंने अिस ढंगसे अपने दस्तख़त किये थे — अेम० पीटर प्रताप, मनुष्य-जातिका सेवक, दुनियाको मिलानेवाले संघको क़ायम करनेवाला। अुन्होंने दूसरे महायुद्धमें हिस्सा लेनेसे अिनकार कर दिया था। नेताजी बोस या स्व० रासबिहारी बोसका भी अुन्होंने साथ नहीं दिया। जापानमें वे अपने आपको 'बिना राजकी प्रजा' कहा करते थे। अिससे अुन लोगोंकी मुश्किल और बढ़ गअी, जो अुनको वापस हिन्दुस्तानमें बुलानेकी कोशिश कर रहे थे। कअी हिन्दुस्तानी भाषाओंके अलावा वे अंग्रेज़ी, जर्मन, रूसी, फ्रेन्च और फ़ारसी ज़बान भी बोलते हैं। वे सभी धर्मोंकी अेकतामें और सारी दुनियाके प्रेम-धर्ममें निजी ढंगसे विश्वास करते हैं। अुस दिन जब वे सेवाग्राम आश्रममें गांधीजीसे मिलने आये, तो गांधीजीके कहने पर अुन्होंने शामकी प्रार्थनामें अपनी सब धर्मोंकी वह प्रार्थना गाकर सुनाअी, जिसमें हिन्दू शास्त्रों, बाअिबिल, क़ुरान और बौद्ध धर्मकी प्रार्थनाके हिस्से शामिल थे। वर्धाकी बजाजवाड़ीमें वे सरदारके साथ वहाँके मेहमान थे। वहाँ दूसरे लोग तो खानेमें लगे थे, मगर राजासाहब अपनी प्रार्थना सुनानेकी धुनमें ब्यालू करना भी भूल गये। मनमौजी होने पर भी वे लोगोंको अपनी ओर खींचे बिना नहीं रहते। बरसों पहले अुन्होंने अपनी सारी जायदाद वृन्दावनके प्रेम महाविद्यालयका ख़र्च चलानेके लिअे दे डाली थी: महाविद्यालय अुन्हींका क़ायम किया हुआ है। अितनी लम्बी ग़ैर-हाज़िरीके बाद लौटने पर अुनके दोस्त और विद्यालयके कार्यकर्त्ता ख़ुशी-ख़ुशी अुनका स्वागत ही करेंगे।

सेवाग्राम, १९-८-'४६

('हरिजन'से)

प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोआ

" मि० गांधीने १८ अगस्तके 'हरिजन'में गोआ पर अेक छोटी टिप्पणी लिखी है। अपनी अिस टिप्पणीमें अुन्होंने फरासीसी और पुर्तगाली हुकूमतोंके बीच माने गये फ़र्कका ज़िक्र किया है। अिस सिलसिलेमें हम नीचे लिखी बातें आपकी जानकारीके लिअे अिस गरज़से देते हैं कि आप अुन्हें अपने पत्रमें छापें —

" फरासीसी हिन्दुस्तानकी पुर्तगाली हिन्दुस्तानसे तुलना करना अेक बिलकुल बे-मेल और ग़ैर-मौज़ूँ चीज़ है। असलमें दोनोंके मक़सद, राज-काजके तरीक़े और लक्ष्य या मंज़िल बिलकुल ही अलग हैं। सन् १८१६में फरासीसियोंके औपनिवेशिक साम्राज्यमें हिन्दुस्तानकी फरासीसी बस्तियोंको जिस तरह शामिल किया गया और फिर अुसमें जो अुलटा-पुलटी हुअी, अुसका पुर्तगाली हिन्दुस्तानके साथ कोअी मेल नहीं बैठता। क्योंकि पुर्तगाली हिन्दुस्तान पिछले ४००से भी ज़्यादा बरसोंसे फिरंगी सरकारकी हुकूमतसे बेहद फ़ायदा अुठा रहा है, और अुसने अपनी तक़दीरको पूरी तरह अपने मादरेवतन–पुर्तगाल–की तक़दीरके साथ मिला दिया है।

" अगर फरासीसी हिन्दुस्तानके बाशिन्दे आज़ाद हिन्दुस्तानके साथ अपनी तक़दीर मिलाना चाहते हैं, (अगरचे अिस बारेमें अभी कोअी फ़ैसला हुआ नहीं है) तो भले मिलायें। मगर पुर्तगाली हिन्दुस्तानमें यह चीज़ कभी हो नहीं सकती, क्योंकि वहाँके सभी बाशिन्दे अुस फिरंगी सरकारकी हितकारी छत्रछायामें रहना चाहते हैं, जिसकी बदौलत अुन्होंने अपनी अितनी भौतिक और नैतिक, माद्दी और अिखलाक़ी, तरक़्क़ी की है कि आज गोआकी बस्ती फिरंगी सल्तनतके लिअे अेक फ़ख़ या गर्वकी चीज़ बन गअी है, और गोआ अपनी मातृभूमि पुर्तगालका अेक अखण्ड हिस्सा बन गया है।

" ये सब तवारीख़ी या अैतिहासिक हक़ीक़तें हैं; चुनाँचे हमें यक़ीन है कि आप अपने अख़बारमें ज़रूरी दुरुस्ती छापेंगे।"

नोवागोआके सरकारी 'अिन्फर्मेशन ब्यूरो' यानी प्रकाशन-विभागके आला अफ़सरने यह ख़त अेडीटर 'हरिजन' के नाम भेजा है। अिसे पढ़कर अफ़सोस होता है। अंग्रेज़ीमें अेक कहावत है कि 'तुलना किसीको नहीं सुहाती।' यह ख़त अिस कहावतको सही साबित करता है। सचमुच ही फरासीसी और फिरंगी सल्तनतमें अैसा कोअी ख़ास फ़र्क़ नहीं है, जिसकी वजहसे अेकको ठुकराया और दूसरीको अपनाया जाय। सल्तनतोंके हाथ हमेशा ख़ूनसे तर रहे हैं। सारी दुनिया आज अिन सल्तनतोंके बोझसे दबी कराह रही है। अच्छा हो कि ये जल्दी ही अशोक महान्की तरह अपनी शाहन्शाहतें छोड़ दें। अगर फ्रान्सवालोंने कोअी क़ाबिल तारीफ़ काम किया है, जैसा कि फरासीसी हिन्दुस्तानमें किया कहा जाता है, तो अुसकी तारीफ़ करना कोअी गुनाह नहीं। अलबत्ता, शर्त अिसमें यही है कि अख़बारोंमें फरासीसी हिन्दुस्तानके गवर्नरके बयानका जो हाल छपा है, वह सही हो। अलावा अिसके, पुर्तगाली सरकारके अिन्फर्मेशन ब्यूरोके आला अफ़सरका यह लिखना कि पुर्तगाल गोआके हिन्दुस्तानियोंकी मातृभूमि है, अेक हँसी लानेवाली चीज़ है। जिस हद तक हिन्दुस्तान मेरी मातृभूमि है, अुसी हद तक वह गोआवालोंकी भी मातृभूमि है। आज गोआ ब्रिटिश हिन्दुस्तानकी हदमें नहीं है, मगर समूचे भौगोलिक हिन्दुस्तानके अन्दर तो वह है ही। फिर, गोआके हिन्दुस्तानियों और पुर्तगालियोंके बीच बहुत थोड़ी समानता है — अगर कुछ हो।

श्री पुरुषोत्तम काकोड़करके बारेमें दिये अपने बयान पर अुनका जवाब भी मैंने पढ़ा है। जो भी गोआकी फिरंगी हकूमतने अुसका खण्डन किया है, तो भी मैं अपने अुस बयान पर क़ायम हूँ। २४ अगस्त '४६के अपने अेक ख़तमें श्री काकोड़करकी पत्नी यों लिखती हैं —

" गोआकी राष्ट्रीय कांग्रेसके सेक्रेटरी श्री पुरुषोत्तम काकोड़करको पुर्तगाली हाकिमोंने ९ अगस्तके दिन गिरफ़्तार किया था। गिरफ़्तारीके वक़्त वे अपने अेक दोस्तसे बात कर रहे थे। १० अगस्तको अुन्हें पणजी (नोवागोआ) भेजा गया। ११ और १२ अगस्तको अुन्हें आधा खाना दिया गया। जब अुन्हें पता चला कि सरकारी हाकिम अुनको जान-बूझकर कम खाना दे रहे हैं, तो १३ अगस्तसे अुन्होंने खाना लेना छोड़ दिया। तबसे २० अगस्त तक अुनका अुपवास जारी था।

" फिरंगी सरकार अपनी अिस नीति पर क़ायम है, और आज तक (२४ अगस्त '४६) श्री काकोड़करकी अुस तहरीरी दरख़्वास्त पर अुसने कोअी तवज्जह नहीं दी है, जिसमें अुन्होंने अपने लिअे और दूसरे क़ैदियोंके लिअे पूरी ख़ूराक माँगी है।"

मैं पुर्तगाली हाकिमोंसे पूछता हूँ कि क्या वे 'हरिजन'के किसी प्रतिनिधि या नुमाअिन्दाको क़ैदी काकोड़करसे मिलनेकी और ख़ुद हक़ीक़तका पता लगानेकी अिजाज़त देंगे? नअी दिल्ली, २९-८-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

अेक रुपहली किरन

कोअी मनहूस अन्धड़ या बवण्डर ही अैसा होता है, जो किसीको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचता। पिछले दिनों पड़ोसी धरमका पालन करते हुअे कलकत्तेमें लोगोंने दयाके और रहमदिलीके जो बहुत-से काम किये, अुन सबका ब्योरा अिकट्ठा किया जाय, तो बहुत मुमकिन है कि वह मार-काट और लूट-पाटकी अुन काली करतूतोंसे कम न अुतरे, जो अिनसानने कुछ देरके लिअे हैवान बनकर हाल ही वहाँ बरपा की थीं। अगर अिनसानमें दैवी तत्त्व या ख़ुदाअी नूर मौजूद है, तो अुसे स्वभावसे भला होना चाहिये। अेक मुसलमान भाअीका नीचे लिखा ख़त हमारी ख़ुशीको बढ़ानेवाला और हमें तसल्ली देनेवाला है।

" मैं यहाँ बालीगंजवाली बस्तीमें रहता हूँ। १८ अगस्तको मेरे मकान पर दंगाअियोंने हमला करना चाहा था, मगर मेरे हिन्दू दोस्तोंने अुन्हें रोका। लेकिन शाम पड़ते-पड़ते मेरे मुहल्लेके पढ़े-लिखे हिन्दू दंगाअियों पर अपना क़ाबू खोने लगे। मेरे कुनबेमें कुल ३५ लोग हैं, जिनमें ज़्यादा तादाद औरतों और बच्चोंकी है। जिस वक़्त आसपास, चारों ओर, दंगाअी आपा खोकर भाग-दौड़ मचाये हुअे थे, अिन सबको कहीं हटाना मुमकिन न था। अिसलिअे मेरे घरके लोगोंने अेक हिन्दू पड़ोसीके घरमें आसरा लिया और अेक दूसरे हिन्दू पड़ोसीने मेरे घरके असबाबकी ज़िम्मेदारी सँभाली।

" दंगाअियोंको अिसका पता चल गया और वे मेरे दोस्तको धमकाने लगे। अुन्होंने कहा — 'अुन लोगोंको बाहर निकाल दो। तुम अुन्हें बचा नहीं सकते।' अिसके जवाबमें मेरे दोस्तने दृढ़ताके साथ कहा — 'मैं जानता हूँ कि मैं अुन्हें बचा नहीं सकता, लेकिन अिससे पहले कि आप अुन्हें हाथ लगायें, मैं मर तो सकता हूँ।' अुनका यह जवाब काम कर गया। मेरे कुछ लीगी दोस्तोंने मुझे और मेरे घरवालोंको अिस बस्तीसे हटानेकी कोशिश की, लेकिन मैंने अपने आसरेकी अुस जगहको छोड़नेसे अिनकार कर दिया, जिसके पीछे बालीगंजके तमाम भले हिन्दुओंकी ताक़त थी।

" अिस बस्तीमें मेरे भाअीकी दो दुकानें हैं। हिन्दुओंने अिन दोनों दुकानोंको बचाया और मेरे भाअी व भतीजोंने यहाँके स्वयंसेवक-दलमें काम करके हिन्दू-मुसलमान सब तरहके दंगाअियोंका सामना किया।

" मुझे यक़ीन हो चुका है कि अगर जान-बूझकर झगड़ा पैदा न किया जाय, तो हिन्दू और मुसलमान दोनों अमन-अमानके साथ अेक जगह रह सकते हैं।"

अिसी तरह अैसी मिसालें भी मौजूद हैं, जिनमें मुसलमानोंने हिन्दुओंको अपने यहाँ आसरा दिया है। अगर सब कोअी यह महसूस करने लगें और समझें कि अिनसानियतका नाता जात, पाँत, मज़हब और क़ौमकी तमाम दीवारोंसे अूपरका नाता है, तो हम ज़िन्दगीको जीने लायक़ बनायेंगे और डरके उस भूतको अपने बीचसे भगा देंगे, जो आपसी नफ़रतकी जड़ है, और जो न सिर्फ़ व्यक्तियों और जातियोंको, बल्कि दुनियाके तमाम छोटे-बड़े मुल्कोंको परेशान किये हुअे है।

नअी दिल्ली, ३०-८-'४६

('हरिजन'से) अमृतकुँवर

विषय-सूची

		पृष्ठ
गोआकी गुहार	... प्यारेलाल	२९७
खादीका अर्थशास्त्र	... कृष्णदास गांधी	२९८
हिन्दुस्तानी बनाम हिन्दी और अुर्दू	... गांधीजी	२९९
अंग्रेज़ीके हिन्दुस्तानी मानी	...	२९९
ज़हरका अुतार	... गांधीजी	३००
दक्खिन अफ्रीका	... गांधीजी	३०१
बिक्री-कर	... गांधीजी	३०१
हफ़्तेवार ख़त	... प्यारेलाल	३०२
गोआ	... गांधीजी	३०३
अेक रुपहली किरन	... अमृतकुँवर	३०४
टिप्पणी		
पढ़नेवालोंसे	... मो० क० गांधी	२९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या करें ?

रजि० नं० बी, ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक – प्यारेलाल

भाग १० | अंक ३२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १५ सितम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हिन्दुस्तानीके बारेमें

बिहारके अेक सज्जन लिखते हैं —

"आपके नेतृत्वमें हिन्दुस्तानी-प्रचारका जो बड़ा और सराहनीय काम चल रहा है, अुसके ज़रिये देशकी तरक़्क़ी और आज़ादी हासिल करनेमें बड़ी मदद मिल रही है। जिस देशकी अपनी भाषा नहीं, अुसे जीनेका अधिकार ही क्या हो सकता है? अिस मुल्ककी भी यही बदक़िस्मती है। सब-कुछ जानते हुअे भी हमारे नेताओंका ध्यान अिस ओर पूरी तरहसे नहीं गया है। आपके अितनी कोशिश करने पर भी कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओंने पूरा-पूरा अमल नहीं किया है। यह बात भी आपसे कुछ छिपी नहीं कि अंग्रेज़ीकी बू गअी नहीं है, और आज भी अखिल भारत-कांग्रेस-कमेटीके अिजलासमें और अेसेम्बिलयोंमें अक्सर वे लोग भी, जिनकी मातृभाषा हिन्दुस्तानी (हिन्दी या अुर्दू) है, अंग्रेज़ीमें बोलना ज़्यादा पसन्द करते हैं। क्या यह मुमकिन नहीं कि जिस तरह कांग्रेसी मेम्बरके लिअे खादी पहनना अनिवार्य (लाज़िमी) है, अुसी तरह कांग्रेस यह भी नियम बना दे कि कांग्रेसी सदस्योंको (फिर वे किसी भी अेसेम्ब्ली या संस्थामें हों) हिन्दुस्तानीमें ही अपने ख़यालातका अिज़हार करना होगा? हाँ, अुन लोगोंके लिअे, जो हिन्दुस्तानी बिलकुल नहीं जानते, कुछ रिआयत की जा सकती है, मगर अुन्हें भी निश्चित समयके भीतर ही हिन्दुस्तानी सीख लेनी होगी। मुझे यह अनुभव हुआ है कि अुस अेसेम्बलीमें भी, जहाँ सभी लोग अच्छी तरह हिन्दुस्तानी जानते हैं, चाहे अुनमें अंग्रेज़ भी क्यों न हों, हमारे ज़िम्मेदार कांग्रेसी सदस्य अंग्रेज़ीमें ही बोलना पसन्द करते हैं। अिसको तो बन्द ही करना होगा। बग़ैर अैसा किये देशकी कायापलट नहीं हो सकती, अैसा हमारा ख़याल है। कांग्रेस आज बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी ले रही है। कांग्रेसी सदस्योंको वहाँ भी हिन्दुस्तानीमें ही काम शुरू करना चाहिये।"

अिस ख़तके लेखकने ठीक ही लिखा है। अंग्रेज़ी भाषाका मोह अभी तक हमारे दिलसे दूर नहीं हुआ है। जब तक वह न छूटेगा, हमारी भाषायें कंगाल रहेंगी। काश, हमारी बड़ी सरकार, जो लोगोंके प्रति ज़िम्मेदार है, अपना कारबार हिन्दुस्तानीमें या प्रान्तोंकी भाषाओंमें करे! अिस कामके लिअे अुसके अमला-फेलामें, कर्मचारियोंमें, सब सूबोंकी भाषाके जानकार होने चाहियें। साथ ही, लोगोंको अपने सूबेकी भाषामें या राष्ट्रीय भाषामें लिखनेका बढ़ावा देना ज़रूरी है। अैसा होनेसे हम बहुत-से ख़र्चसे बच जायँगे, और अिसमें शक नहीं कि अिससे लोगोंको भी सुभीता होगा।

नअी दिल्ली, ७-९-'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

हफ़्तेवार ख़त

आदर्श राज या समाजकी व्यवस्थाओंकी अपनी अेक बुराअी होती है — वे लौटकर अपने बनानेवालोंके ही सिरसे टकराती हैं। जोनाथन स्विट् नामके एक अंग्रेज़ लेखकने अपने ख़यालोंके मुताबिक़ अेक आदर्श राजकी तसवीर खींची है। अुस आदर्श राजमें रहनेवाले फ़िलॉसफ़रों, सायन्सदाँओं और गणितके विद्वानोंने मिलकर सब तरहकी गड़बड़ी पैदा कर रक्खी थी। सायन्सदाँ या वैज्ञानिक अेक ही काम लेकर बैठ गये। अुन्होंने अपना सारा वक़्त 'ककड़ियोंसे सूरजकी किरनें खींचने में' ख़र्च करना शुरू किया। कुछ दूसरे अैसे थे, जिन्हें 'चोकर या भूसीमेंसे अनाज पैदा' करनेकी खटपटसे फ़ुरसत नहीं मिलती थी। फ़िलॉसफ़र लोग दिन-रात अेक करके शब्दों या लफ़्ज़ोंकी तरह-तरहकी मिलावटवाली अैसी कलें बनानेमें जुट गये, जो अपने आप काम कर सकें। अिसके पीछे ख़याल अुनका यह था कि अिन कलोंकी चाबी घुमाते ही मनचाही फ़िलॉसफ़ीकी सारी पद्धति तैयार मिल जाय! गणितके पंडित ग्रह अपने घेरेमें कितने फेरे लगाते हैं, अिसकी गूढ़ अटकलें लगाकर दिमाग़को अैसी अुधेड़-बुनमें अुलझाये रहते, और अिस बातका हिसाब लगानेमें डूबे रहते कि आख़िर किस दिन अिस दुनियाका अन्त या ख़ातमा होगा, और फिर अपनी अिस दिमाग़ी घुड़दौड़से अुनकी अपनी आँखें 'भयसे चकित होकर ठिठक जातीं'! और, अिन सब कामोंका कुल नतीजा क्या निकला? लापुटाकी (आदर्श राजका नाम) अुस समूची बस्तीमें अेक भी घर अैसा न था, जिसकी दीवार समकोणमें खड़ी हो, और घरका अेक कोना अैसा न था, जो ठीकसे बना हो! लेकिन गांधीजी अिस तरहके शेख़चिल्ली नहीं। अुन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया है कि वे अपने आश्रमको लापुटाकी तरह अजीबोग़रीब चीज़ोंका अजायबघर न बनने देंगे। लेकिन अिस तरह जिस कामकी ज़िम्मेदारी अुन्होंने अपने सिर ली है, वह ज़रा भी आसान नहीं। अेक बार अुन्होंने कहा था — "राजनीतिका काम तो मैं आसानीसे, खेल-खेलमें, पूरा कर लेता हूँ। मुझे अुसका कोअी बोझ नहीं मालूम होता। क्योंकि मैं अुसकी गलियोंमेंसे अपना रास्ता 'अनासक्तिके (बेलाग रहकर काम करनेके) दृढ़ शस्त्र' की मददसे निकाल लेता हूँ।" लेकिन आश्रमसे ताल्लुक़ रखनेवाले काम अुन्हें बुरी तरह पीस डालते हैं। तिस पर अैसे अजीब-अजीब सवाल पैदा होते हैं, जिन्हें हल करनेकी कोशिशमें किसीके भी बाल सफ़ेद हो सकते हैं। और, आश्रमके कामोंके लिअे उन्हें कुछ अजीब-सा, जानका गाहक बन बैठनेवाला, खिंचाव रहता है। अेक दूसरे मौक़े पर अुन्होंने कहा था — "न जाने क्यों, जिस किसी संस्थाको मैं हाथ लगाता हूँ, अुसे आख़िर आश्रमकी शकल दिये बिना मैं रह नहीं पाता — मानो और कुछ मैं कर ही न सकता होअूँ!" अिसका ख़ुलासा पानेके लिअे गहरे विचारकी ज़रूरत नहीं। गांधीजीके लिअे सत्य और अहिंसा साधुओंके मठोंकी तरह अकेलेमें सोचने और ख़ाली हवामें बरतनेके गुण नहीं, बल्कि अुनके ख़यालमें ये दोनों वे अुसूल हैं, जिन पर दुनियाके हर आदमीको अपनी रोज़मर्राकी ज़िन्दगीमें अमल करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी कवि या शायरने अपना अफ़सोस ज़ाहिर करते हुअे लिखा है — 'प्रकाश-पुंज-से तारोंमें' और 'फूलोंसे हँसनेवाले खेतोंमें' मुझे अीश्वरके दर्शन होते हैं, लेकिन 'मनुष्यमें और दुनियाके साथके अुसके बरतावमें' वह मुझे कहीं दिखाअी नहीं पड़ता। साधकके नाते सत्य और अहिंसाके अमलको जिन्होंने अपने जीवनका ध्येय बनाया है, अुन गांधीजीका अपना यह खयाल है कि सत्य और अहिंसाकी शकलमें अपने अीश्वरके दर्शन मुझे सेवाग्राम आश्रमकी अपनी छोटी-सी दुनियामें ही करने चाहियें, और अगर यह मुमकिन न हो, तो अुसका खयाल छोड़ना चाहिये। आत्माका पता लगानेके लिअे आश्रम अुनकी आध्यात्मिक या रूहानी प्रयोगशाला (लेबोरेटरी)का काम देता है। यही नहीं, बल्कि गांधीजी तो अिस बातका भी आग्रह रखते हैं कि लोग अुन्हें अुनके आस-पासके वातावरण और स्थितिसे ही पहचानें और अुतनी ही अुनकी क़ीमत करें। अुन्होंने खुद कहा है — "जिस हद तक मेरे आस-पासके लोगोंमें मेरी सचाअी और अहिंसाकी छाप पड़ेगी, समझिये कि अुनमें अुतना ही सार रहा है।" कुदरती तौर पर अिस सबका नतीजा यह होता है कि अुन्हें अैसे सवालोंका सामना करना पड़ता है, और अुनका हल ढूँढ़नेमें सिर खपाना पड़ता है, जो आश्रमवासियोंको और खुद गांधीजीके आस-पास रहनेवालोंको कसौटी पर चढ़ा जाते हैं।

बेचैन बना देनेवाली बात

जब कुछ महीनोंकी ग़ैरहाज़िरीके बाद हम सेवाग्राम-आश्रममें लौटे, तो देखा कि आश्रमके अेक सेवककी दिमाग़ी हालत खराब हो गअी है। जब वे पहली बार आश्रममें आये थे, तब भी अुनकी हालत अैसी ही थी। पागलपनका यह दूसरा हमला था। अुनकी हालत अितनी खराब हो गअी कि अुन्हें सँभालना मुश्किल हो गया, अिसलिअे अुनके बारेमें फ़ौरन ही कुछ फ़ैसला कर लेनेकी ज़रूरत पैदा हो गअी। चुनाँचे वर्धाके सरकारी अस्पतालके बड़े डॉक्टरकी यानी सिविल सर्जनकी सलाह पूछी गअी। अुन्होंने कहा कि वे वर्धाके सरकारी सिविल अस्पतालमें तो बीमारको रख नहीं सकेंगे, लेकिन अगर अुन्हें जेलके अस्पतालमें रक्खा जाय, तो वे अुनकी सार-सँभाल कर सकेंगे और थोड़ा-बहुत अिलाज भी करेंगे। अिसलिअे बीमारकी और आश्रमकी भलाअीके खयालसे अुनको जेल भेजना पड़ा। गांधीजीके लिअे यह चीज़ बहुत ही दुखदायी हो गअी। अिसने अुन्हें बेचैन बना दिया। लेकिन दूसरा कोअी रास्ता भी न था। अुन्होंने आश्रमवालोंके सामने अपनी परेशानीका ज़िक्र किया। बोले — "ये भाअी अेक अच्छे सेवक हैं। पिछले साल तन्दुरुस्त होनेके बाद वे आश्रमके बग़ीचेका काम देखते थे और दवाखानेका हिसाब रखते थे। वे लगनके साथ अपना काम करते और अुसीमें मगन रहते थे। फिर अुन्हें मलेरिया हो गया और अुसके लिअे अुनको कुनैनका अिंजेक्शन दिया गया; क्योंकि खाने या पीनेके बजाय सूअीके ज़रिये कुनैन लेनेसे वह सीधी खूनमें मिल जाती है और जल्दी असर करती है। अिन भाअीका यह खयाल हो गया है कि अिंजेक्शन अुनके दिमाग़में चढ़ गया है, और अुसीका दिमाग़ पर अितना बुरा असर हुआ है। आज सुबह जब मैं अपने कमरेमें बैठा काम कर रहा था, तो मैंने देखा कि वे बाहर खड़े चिल्ला रहे हैं, और हवामें अिधर-अुधर हाथ अुछालते हुअे घूम रहे हैं। मैं बाहर निकलकर अुनके साथ घूमने लगा। अिससे वे शान्त हुअे। लेकिन जैसे ही मैं अुनसे अलग होकर अपनी जगह पर लौटा, वे फिर अपने दिमाग़का तौल खो बैठे, और किसीके बसके न रहे। जब वे बिखरते हैं, तो किसीकी बात नहीं सुनते। अिसीलिअे अुनको जेल भेज देना पड़ा।

"कुदरती तौर पर मुझे अिस खयालसे तकलीफ़ होती है कि हमें अपने ही अेक सेवक को जेल में भेजना पड़ा है। अिस पर कोअी मुझसे पूछ सकता है — 'आप दावा करते हैं कि रामनाम सब रोगोंका रामबाण अिलाज है। तो फिर आपका वह रामनाम कहाँ गया?' सच है कि अिस मामलेमें मैं नाकाम रहा हूँ, फिर भी मैं कहता हूँ कि रामनाम में मेरी श्रद्धा ज्यों की त्यों बनी है। रामनाम कभी नाकाम नहीं हो सकता। नाकामीका मतलब तो यही है कि हममें कहीं कोअी खामी है। अिस नाकामी या विफलताकी वजहको हमें अपने अन्दर ही ढूँढ़ना चाहिये।"

अहिंसा और सफ़ाअी

साफ़-सुथरापन संस्कारी जीवनकी बुनियादी शर्त है, अिसलिअे आश्रममें अिसका बहुत खयाल रक्खा जाता है। लेकिन आश्रममें कअी तरहके लोग आते हैं। शायद किसी नासमझ, नये आश्रमवासीने अनजाने या लापरवाहीसे आश्रमके पाखानेका ग़लत अिस्तेमाल किया। यह बात गांधीजी तक पहुँचाअी गअी। अुन्होंने कहा — "यह सुनकर मुझे बहुत अफ़सोस हुआ है। समाजका अेक आदमी ग़लती करता है, मगर बाक़ीके दूसरे लोगोंको तकलीफ़ अुठानी पड़ती है। अिसलिअे हममेंसे हरअेकका फ़र्ज़ है कि पाखानेका अिस्तेमाल करनेके बाद हम अुसे हमेशा साफ़ और सुथरा रखना न भूलें। अगर ठीक-ठीक खयाल रक्खा जाय, तो अुसमें न बदबूका नाम रहे, न मक्खियाँ भिनभिनायें। गड्ढोंवाले पाखानोंके खिलाफ़ यह कहा जाता है कि अुनकी वजहसे मक्खियाँ होती हैं। मैं अिसे नहीं मानता। माक़ूल और मुनासिब खयाल रक्खा जाय, तो गड्ढोंवाले पाखानोंका तरीक़ा बिलकुल सलामत तरीक़ा है।

बंगलोरके अेक होटलमें, जहाँ अक्सर मुसाफ़िर ठहरा करते है, डॉक्टर फाअुलरने अेक मज़ेदार तरीक़ा आज़माया था। अुन्होंने अेक बड़े बरतनमें मैला अिकट्ठा करवाना शुरू किया। वे मैलेके पानीवाले और गाढ़े हिस्सोंको अच्छी तरह मिलानेके बाद अुस घोलको मिट्टीके अेक ढेर पर अुँड़ेल देते थे, और अुस पर हर रोज़ सूखी मिट्टी ढँक दिया करते थे। किसीको पता तक न चलता था कि वह सूखी मिट्टीका ढेर है या अुसमें और कुछ है। पाखाना-पेशाब दोनों मिट्टीके नीचे सूखकर अुसीमें मिल जाते थे, और मिट्टी बन जाते थे। अिस तरह तैयार की गअी सारी मिट्टी खादकी तरह बेच डाली गअी। यह मिट्टी सूखी मिट्टीकी तरह ही साफ़ दीखती थी। अगर पाखानोंमें और दूसरी जगहोंमें मक्खियोंको पैदा होनेसे रोका न जाय, तो अुससे महामारी और बीमारीके फैलनेका पूरा अँदेशा रहता है। फिर भी हम हैं कि अिन बातोंका ज़रा भी खयाल नहीं करते; अिनसे तनिक भी बेचैन नहीं होते; हम तो अिस तरह बरतते हैं, मानो कहीं कुछ होता ही न हो! यह अेक अजीब बात है। खानेकी जिन चीज़ोंपर मक्खी बैठ जाती है, वे अिनसानके खाने लायक़ नहीं रहतीं, चुनाँचे अुन्हें तो फेंक ही देना चाहिये। लेकिन हमारा मुल्क अितना ग़रीब है कि हमारे ज़्यादातर लोग अिस तरह अपने खाने-पीनेकी चीज़ोंको फेंक ही नहीं सकते। अिसलिअे अहिंसाकी दृष्टिसे सोचें, तो हममेंसे हरअेकका यह फ़र्ज़ हो जाता है कि हम किसी हालतमें मक्खियाँ पैदा न होने दें।

बाहरकी सफ़ाअी अन्दरकी सफ़ाअी की तरफ़ बढ़ाया गया पहला क़दम है। बाहरकी गन्दगीके मुक़ाबले अन्दरकी गन्दगी कहीं ज़्यादा खतरनाक होती है। "हम अपने विचारों और कामोंमें सौ फ़ीसदी साफ़ रहें। अगर अैसा न हुआ, तो अिनसान हैवानसे भी गया-बीता बन जाता है। पशु या ढोर तो कामके जानवर हैं, और अपनी जगह पर वे हमारी मुहब्बत और ममताके हक़दार हैं। पर भले लोगोंके समाजमें गन्दे आदमीको कोअी नहीं चाहता।"

देहातकी सफ़ाअीका सवाल

सेहतके लिहाज़से सेवाग्राम अच्छी जगह नहीं है, अिसका खयाल गांधीजीको हमेशा परेशान किये रहता है। सेवाग्राम नीची जगहमें बसा हुआ है। बारिशके दिनोंमें ज़मीनकी तहोंमें भिदा हुआ पानी लगभग ज़मीनकी सतह पर आ जाता है, जिसकी वजहसे पाखानेको ठिकाने लगानेके, पीनेके पानीका अिन्तज़ाम करनेके और मलेरियाको मिटानेके सवाल पेश होते रहते हैं। अिधर-अिधर मलेरियासे बचने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...लोंकी तादाद कुछ कम हुअी है, और सब मिलाकर सारी बस्तीकी हालत सेहतके खयालसे कुछ सुधरी है। फिर भी तन्दुरुस्तीके लिहाजसे सेवाग्राम आदर्श गाँव नहीं कहा जा सकता। डॉ० सुशीला नय्यर श्री कस्तूरबा गांधी-राष्ट्रीय-स्मारक-ट्रस्टकी योजनाके मुताबिक़ बने 'मेडिकल अेडवाअिसरी बोर्ड' की मंत्री हैं, और मुक़ामी डॉक्टरके नाते सेवाग्राम-आश्रमकी और गाँवकी तन्दुरुस्तीका बन्दोबस्त अुनके ज़िम्मे है। अुनके डॉक्टर दोस्त बीच-बीचमें अपने सुझाव देकर और मुश्किल मसलों पर अुनकी रहनुमाअी करके बड़ी ममताके साथ अुनके कामें मदद पहुँचाते रहते हैं। १८ अगस्तके दिन अुन्होंने अपने अिन डॉक्टर मित्रोंकी अेक सभा बुलवाअी थी। अिस सभामें हाज़िर होनेवालोंमें डॉक्टर जीवराज मेहता ख़ास थे। कअी तरहके कामोंमें लगे रहने पर भी सेवाग्रामके लिअे वे हमेशा थोड़ा वक़्त निकाल ही लेते हैं। अिस बार वे अिस कामके लिअे अपने साथ बम्बअीके हेल्थ अफ़सर डॉ० बी० सी० दासगुप्त, और बम्बअी अिलाक़ेके मलेरियाके माहिर डॉ० विश्वनाथन्‌को भी लेते आये थे। मध्यप्रान्तकी सरकारके हेल्थ डिपार्टमेण्टके नये वज़ीर डॉ० हसन भी अपने महकमेके कुछ अफ़सरोंके साथ आ पहुँचे थे। अिन सबने सब तरफ़से सेवाग्रामकी बस्तीका मुआअिना किया और आस-पासकी तमाम जगहें देखीं।

हमारी प्रान्तीय सरकारोंके अिन्तज़ामकी अेक ख़ूबी यह है कि अुनके तामीरात और सेहतके महकमोंका काम हेलमेलके साथ नहीं होता। सरकारी अिन्तज़ामकी अिस ख़ामीकी वजहसे ही यहाँके लोकल बोर्डने वर्धा और सेवाग्रामके बीच जो पक्की सड़क बनाअी है, अुसके दोनों ओर थोड़ी-थोड़ी दूर पर गहरे खाअी-जैसे खड्डोंकी अेक लम्बी क़तार रहने दी गअी है। अगर अिस पर पहलेसे थोड़ा ग़ौर कर लिया जाता, तो खड्डोंकी अिस क़तारके पानीकी निकासीके लिअे दोनों तरफ़ नालियाँ बना देना कुछ मुश्किल न होता। अिससे दोहरा काम हो जाता। आज अिन खड्डोंमें तरह-तरहके जीव-जन्तु पैदा होते हैं। अिनमें भरा हुआ पानी बन्द रहता है, अिसलिअे अुसमें मच्छर पैदा होते हैं। अिनके अलावा, आसपास कअी नाले हैं। अुनमें भी जहाँ-तहाँ पानीसे भरे पोखरे पाये जाते हैं। यहाँकी ज़मीन कपासकी खेतीके लायक़ सूखी काली क़िस्मकी है। अिस ज़मीनमें बारिशके बाद सूरजकी गर्मीसे बड़ी-बड़ी दरारें पड़ जाती हैं। अिन दरारोंमें पानी भरा रहनेसे अुनमें भी मच्छर पैदा होते रहते हैं।

डॉक्टरोंने सिफ़ारिश की कि मलेरियाकी रोकके लिअे गाँवके घरोंमें डी० डी० टी० नामकी दवा छिड़की जाय, और नालोंसे कीचड़ निकालनेका और गड्ढोंको भरकर समतल बनानेका काम, ज़मीन-सुधारकी अेक स्कीमके साथ, अिस कामसे ताल्लुक़ रखनेवाले महकमेके ज़िम्मे कर दिया जाय।

मैलेको ठिकाने लगानेके बारेमें अुन्होंने यह राय दी कि अगर समूची बस्तीको अिस कामसे बचा लेना हो, तो सेप्टिक टैंकवाले पाख़ाने बनानेके सिवा और कोअी चारा नहीं। त्योहारके दिनोंमें, मेले-ठेलेके या अैसे ही दूसरे मौक़ों पर काम चलानेके लिअे गड़होंवाली टट्टियाँ भले बरती जायँ, मगर हमेशाके अिस्तेमालके लिअे तो अुन्होंने अुनकी सख़्त मुख़ालिफ़त ही की। वैसे, अुसूलन् गड़हेवाले पाख़ाने कितने ही कामके क्यों न हों, मगर रोज़मर्राके अिस्तेमालमें तो अुनसे मक्खियाँ पैदा हुअे बिना रह ही नहीं सकतीं। तिस पर सेवाग्राममें ज़मीनके अन्दर पानी बहुत ही नज़दीक मिलता है, अिसलिअे अिस मैलेकी वजहसे पीनेका पानी बिगड़े बिना न रहेगा। ढोरोंके गोबर और कूड़े-करकटको ठिकाने लगानेके लिअे अुन्होंने सुझाया कि दोनोंको मिलाकर अुनकी खाद बना ली जाया करे। साफ़ पानी मुहैया करनेके लिअे अुन्होंने यह सुझाव रक्खा कि अैसे नये कुअें बनाये जायँ, जिनका पानी हमेशा अच्छी हालतमें रहे, और जिन कुओंका पानी तन्दुरुस्तीके लिअे अच्छा न हो, वे बन्द कर दिये जायँ।

डॉ० जीवराज मेहताने ये सारी बातें गांधीजीके सामने पेश कीं। डॉक्टरोंने और दूसरे भाअी-बहनोंने अिस कामके लिअे जो तकलीफ़ अुठाअी थी, अुसके लिअे अुनका अेहसान मानते हुअे गांधीजीने कहा — "मुझे डर है कि जिन स्कीमों पर बड़ी-बड़ी रक़में ख़र्च करनी पड़ें, अैसी बड़े पैमानेवाली स्कीमें यहाँ काम न देंगी। मैं तो सेवाग्रामको अेक अैसा नमूनेका गाँव बनाना चाहता हूँ, जिससे दूसरे गाँव कुछ सीख सकें। चुनाँचे जो काम देशके ७ लाख गाँवोंमें नहीं किया जा सकता, वह यहाँ मेरे कामका न होगा। अगर अैसा कोअी काम आप मुझे अिस अेक गाँवमें करके दिखा दें, तो अुससे हिन्दुस्तानके बाक़ी तमाम गाँवोंका सवाल हल हो सकेगा। वरना अिस मामलेमें सुधारकी चाल चींटीकी चालकी तरह बहुत धीमी होगी, और कुछ ही गाँवोंके लिअे बनाअी जानेवाली बड़ी-बड़ी योजनायें बड़ी फ़ज़ूल ख़र्चीके नमूनोंकी तरह सबकी आँखोंमें खटकेंगी।

"अिसलिअे अभी ज़मीन सुधारनेकी स्कीमको छोड़िये। डी० डी० टी० नामकी दवा तो सब जगह छिड़की जाती है। अब अगर ज़रूरत हो, तो अुसे पहलेसे ज़्यादा चौकसाअीके साथ जल्दी-जल्दी छिड़कनेका अिन्तज़ाम कीजिये। अिसके अलावा, अगर सरकार चाहे, तो वह अिस गाँवको मलेरिया पर क़ाबू पानेके लिअे किये जानेवाले प्रयोगोंके और जाँच-पड़ताल व छान-बीनके कामोंके लिअे अपना अेक केन्द्र या मरकज़ बना सकती है। वैसे, तजरबेके लिअे यहाँ सेप्टिक टैंकवाले थोड़े पाख़ाने आप चाहे बना लें, लेकिन मेरा ख़याल है कि ज़्यादातर तो अिस सवालके हलका रास्ता यही है कि गड़होंवाले पाख़ानोंको साफ़ रखनेका ठीक अिन्तज़ाम किया जाय। तालीमी संघके श्री आर्यनायकम्‌ने अिस बातका ज़िम्मा लिया है कि वे प्रयोग करके गड़होंवाले अैसे पाख़ाने बनानेकी कोशिश करेंगे, जहाँ मक्खियाँ पैदा ही न हों।"

सर्वोदय

गांधीजीके अिस रुख़से डॉक्टर लोग थोड़े परेशान हुअे, और शामको अपनी-अपनी जगह चले गये। यूजेन डेबने कहा है — "जब तक जुर्म करनेकी आदतसे न छूटा हुआ अेक भी मुजरिम या गुनहगार ज़िन्दा रहेगा, तब तक मेरा काम होगा कि मैं अुसके सुख-दुःखमें शरीक रहूँ"। २५ अगस्तके दिन, जब गांधीजी सेवाग्रामसे दिल्लीके लिअे रवाना होनेवाले थे, सवेरे ही अेक अैसी छोटी-सी घटना हो गअी, जिससे हमें पता चलता है कि गांधीजीका दिमाग़ किस तरह काम करता है। आश्रमके अेक भाअी गांधीजीको विदाअीका नमस्कार करने आये थे। वे गांधीजीके पैर छूना चाहते थे। गांधीजीने अुनसे कहा — "तुम्हें मेरे पैर क्यों छूने चाहियें? करोड़ों लोग अैसा नहीं कर सकते, और जो करोड़ोंको नहीं मिलता, सो तो हमें अपनी राज़ी-ख़ुशीसे छोड़ देना चाहिये। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि अगर हमारे करोड़ों भाअी-बहन अहिंसाका अमल नहीं कर सकते, तो मेरे अपने लिअे भी अुसका कोअी अुपयोग नहीं हो सकता। लेकिन अहिंसाका अमल करनेकी ताक़त रखते हुअे भी अगर लोग अुस पर अमल करनेको नाख़ुश हों, तो मैं अकेला ही अुस पर डटा रहूँगा। लोग कहते हैं कि अहिंसा सिर्फ़ सन्तों और ऋषि-मुनियोंके लिअे है। मेरा ख़याल कुछ और है। अगर लोगोंकी बात सच हो, तो मेरे नज़दीक अहिंसाकी कोअी क़ीमत नहीं रह जाती। अिसी तरह अगर अकेले मुझीको १२५ साल तक जीनेकी अिच्छा रखने और अुसके लिअे कोशिश करनेकी आज़ादी हो, तो मैं अुसकी चाह ही न रक्खूँगा। लेकिन अीश्वरकी और अुसकी बनाअी दुनियाकी सेवा करनेके लिअे हरअेक आदमी १२५ बरस तक जी सकता है, और हरअेकका फ़र्ज़ है कि वह अैसी ख़ाहिश अपने लिअे करे। यही क्यों, सिर्फ़ अपने मतलब या स्वार्थकी बात सोचूँ, तो भी यह ज़रूरी है। क्योंकि जिन-जिनके साथ मैंने काम किया है, और जिन्हें मैंने जाना-पहचाना है, अपने अुन सब साथियोंके यहाँसे चल देनेके बाद अिस दुनियामें अकेले-अकेले जीनेमें लुत्फ़ क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस हफ़्ते गांधीजी दो छोटी-छोटी सभाओंमें हाज़िर रहे थे। अेकमें हिन्दुस्तानी-प्रचार-मदरसेके विद्यार्थी अुनसे मिलने आये थे; दूसरीमें तालीमी संघके विद्यार्थी अिकट्ठा हुअे थे। लेकिन अिनकी चर्चा अगले ख़तमें देखिये।

दिल्ली जाते हुअे रेलमें, २५-८-'४६
('हरिजन'से)

प्यारेलाल

हरिजनसेवक

१५ सितम्बर १९४६

क्या करें ?

अेक दोस्तने नीचे लिखे सवाल पूछे हैं—

स० १.—शुरूसे आप यह मानते और कहते आये हैं कि गुण्डोंके या दूसरोंके हमला करने पर भी लोगोंको पूरी तरह अहिंसक रहना चाहिये। जब माँ-बहनों पर हमले हों या अुनकी लाज लूटी जाय, क्या तब भी अहिंसक रहना ठीक होगा? अगर लोग आपकी अहिंसाके रास्ते पर न चल सकें, तो क्या आप अुनको नामर्दोंकी तरह मरनेकी सलाह देंगे या हिंसाका मुक़ाबला हिंसासे करनेको कहेंगे?

स० २.—आज मुस्लिम लीग जो दोरुख़ा खेल खेल रही है, क्या आपका यह फ़र्ज़ नहीं है कि आप साफ़ लफ़्ज़ोंमें अुसे बुरा कहें? अेक तरफ़ तो मुस्लिम लीगके नेता हिन्दुओंके खिलाफ़ खुल्लमखुल्ला हिंसाका और जिहादका प्रचार करते हैं, और दूसरी तरफ़ वही लोग वज़ीरका ओहदा सँभालकर हुकूमतकी तमाम बागडोर अपने हाथमें रक्खे हुअे हैं, यहाँ तक कि पुलिस और अिन्साफ़के महकमे भी अुन्हींके ज़िम्मे हैं।

स० ३.—क्या हिन्दुस्तानमें अैसी कोअी वैध या क़ानूनी हुकूमत नहीं, जो अिस ख़तरनाक बेक़ायदगीको रोक सके? जो कुछ आज यहाँ हो रहा है, अुसकी मिसाल तो कहीं किसी तवारीख़में नहीं मिलेगी।

स० ४.—क्या आप यह महसूस नहीं करते कि अगर अैसी बातें बराबर होने दी गअीं, तो हिन्दुस्तानमें खानाजंगी या घरेलू लड़ाअी छिड़े बिना न रहेगी? अगर अैसा हुआ, तो आप आम लोगोंको अुस आफ़तका सामना करनेके लिअे क्या सलाह देंगे?

ज० १.—अिन दोस्तने जिन ज़्यादतियों या अत्याचारोंका ज़िक्र किया है, वे मेरी कल्पनाके समाजमें हो ही नहीं सकते। लेकिन जिस समाजमें आज हम रह रहे हैं, अुसमें अैसे अत्याचार ज़रूर होते हैं। अिस पर मेरा जवाब तो बिलकुल साफ़ है। अहिंसक आदमी या औरतका तो यह फ़र्ज़ है कि वह अपनी हिफ़ाज़त करते हुअे या अपनी माँ-बहनोंकी अिज़्ज़तको बचानेकी कोशिशमें मर मिटे; वह अैसा किये बिना रह ही न सकेगा; और अिस तरह मरनेकी तैयारी रखते हुअे भी वह मारनेवालोंसे बदला लेनेकी, अुन पर गुस्सा होनेकी या अुनके लिअे मनमें कीना रखनेकी बात क़तअी न सोचेगा। यह सबसे ऊँचे दरजेकी बहादुरी है।

अगर कोअी शख़्स या लोगोंका कोअी गिरोह कुदरतके अिस महान क़ानून पर, जिसे ख़ामख़ाह मेरा रास्ता कहा जाता है, चलना नहीं चाहता या चलनेकी ताक़त नहीं रखता, तो अुसे मरते दम तक सामना करनेकी या बदला लेनेकी तैयारी रखनी चाहिये। यह दूसरे दरजेकी बहादुरी होगी, अगरचे पहलीसे बहुत दूरकी यानी घटिया चीज़ होगी। कायरता या बुज़दिली नामर्दीका दूसरा नाम है और वह तो हिंसासे भी बुरी है। बुज़दिल आदमी बदला तो लेना चाहता है, लेकिन चूँकि वह मरनेसे डरता है, अिसलिअे वह चाहता है कि अुसकी हिफ़ाज़तका काम दूसरे कर दें, फिर भले अुस वक़्तकी सरकार ही अुसका यह काम क्यों न कर दे। बुज़दिल आदमी आदमी नहीं होता—अुसकी गिनती अिनसानमें नहीं होनी चाहिये। औरतों और मर्दोंके समाजमें अुसको कोअी जगह न मिलनी चाहिये। आख़िरमें मैं यह ज़रूर कहूँगा कि अगर बहनोंने मेरी सलाह पर अमल किया होता, या अब भी वे अुस पर अमल करने लगें, तो हरअेक बहन ख़ुद अपना बचाव कर सकेगी और अुसे अपने भाअियों पर या बहनोंकी मददके लिअे रुकने या अुसकी राह देखनेकी ज़रूरत न रह जायगी।

ज० २.—जिस दोरुख़े कामका ज़िक्र किया गया है, वह बेशक बहुत बुरी चीज़ है। हमारे क़ौमी अितिहासका यह अेक अफ़सोसनाक हिस्सा है। मेरी यह निन्दा सबके लिअे है—किसी ख़ास तबक़ेके लिअे ही नहीं। मगर ख़ैर यह है कि यह चीज़ अितनी ज़्यादा बुरी है कि देर तक टिक नहीं सकती।

ज० ३.—आज मुल्कमें वैध या क़ानूनी हुकूमत तो अंग्रेज़ोंकी ही है। हम सब अुनके हाथकी कठपुतलियाँ हैं। लेकिन अिसके लिअे हुकूमतको दोष देना ग़लत होगा और बेवकूफ़ी होगी। हुकूमत तो अपने स्वभावके अनुसार ही काम करती है। वह हमें मजबूर नहीं करती कि हम अुसके हाथकी कठपुतली बनें। हम ख़ुद ही दौड़कर अुसकी शरणमें जाते हैं। अिसलिअे अंग्रेज़ी हुकूमतके हथकण्डोंका शिकार बननेसे अिनकार करना तो हममेंसे हरअेकके हाथकी बात है।

यहाँ हमें साफ़ ही यह क़बूल करना चाहिये कि आज ब्रिटिश हुकूमत हिन्दुस्तान छोड़कर जानेकी कोशिशमें लगी है। लेकिन वह नहीं जानती कि किस तरह जाय। अिसमें शक नहीं कि वह अीमानदारीके साथ हिन्दुस्तानसे बिदा होना चाहती है, लेकिन जानेसे पहले वह अुन बुराअियोंको मिटा डालना चाहती है, जो अेक अरसेसे वह यहाँ करती रही है। जिसके सिर पड़ती है, वही अुसके दरदको जान सकता है। चुनाँचे मैं बराबर अुससे यह कहता रहा हूँ कि अगर वह अपनी ग़लतीको जल्दी ही सुधारना चाहती है, तो अुसे चाहिये कि वह हिन्दुस्तानको अुसकी क़िस्मतके भरोसे छोड़ जाय। लेकिन अंग्रेज़ नौकरशाह अिस साफ़ बातको भी समझ नहीं पाते। वे लोग अपने मनमें यह समझते हैं कि हिंदुस्तानको वे हमसे भी ज़्यादा अच्छी तरह जानते हैं। चूँकि अुन्होंने बड़ी कामयाबीके साथ हमको सौ सालसे भी ज़्यादा .ग़ुलाम रक्खा है, अिसलिअे वे .ख़ुद ही हमारी क़िस्मतका फ़ैसला करनेका भी दावा करते हैं। अगर हम अमन या शान्तिके रास्तेसे स्वराज हासिल करना चाहते हैं, तो हमें अिसकी कोअी शिकायत न होनी चाहिये। सत्याग्रहमें बदला लेनेकी कोअी गुंजाअिश नहीं। सत्याग्रह किसीको मिटाना नहीं चाहता, वह तो चाहता है कि सामनेवालेका दिल बदल जाय। अगर अिसमें कामयाबी नहीं मिलती, तो अिसका कारण सत्याग्रहीकी अपनी कमज़ोरियाँ हैं, .ख़ुद सत्याग्रहके क़ानूनका कोअी दोष नहीं। किसी भी वजहसे क्यों न हो, अब चूँकि अंग्रेज़ी हुकूमतने हिन्दुस्तानसे हटनेका फ़ैसला कर लिया है, अुसकी ख़ामियाँ और कमज़ोरियाँ ज़्यादा ही सामने आयेंगी। अुससे मददकी अुम्मीद रखनेवाले लोग देखेंगे कि अब अुसमें कोअी दम नहीं रहा—अैसे कामोंके लिअे अब वह बरबस बेकार बनती जा रही है। और जब हिन्दुओं और मुसलमानोंकी तरह दो दल आपसमें झगड़ते हैं, तो अुनमेंसे किसी-न-किसीको या दोनोंको यह समझ लेना होगा कि अगर हिन्दुस्तानको आज़ाद होना है, तो अुनमेंसे किसी अेकको या दोनोंको समझ-बूझकर अपनी हिफ़ाज़तके लिअे ब्रिटिश हुकूमतका मुँह तकनेसे रुकना पड़ेगा।

ज० ४.—अब रहा आख़िरी सवाल। अभी मुल्कमें आपसकी लड़ाअी, ख़ानाजंगी या यादवी शुरू नहीं हुअी है। लेकिन हम अुसकी तरफ़ बढ़ ज़रूर रहे हैं। फ़िलहाल तो मानो हम अुस आगके साथ खेल रहे हैं। आख़िर युद्ध या लड़ाअी है क्या चीज़? जब सारे देशमें बड़े पैमाने पर गुण्डाशाही शुरू की जाती है, तो अुसे लड़ाअी या जंगका बाअिज़्ज़त नाम दे दिया जाता है। अगर अंग्रेज़ लोग दाना हैं, तो वे अिस चीज़से बिलकुल दूर रहेंगे। लेकिन लक्षण अैसे नज़र नहीं आते। सूबोंकी धारासभाओंके अंग्रेज़ मेम्बरोंके गले यह बात नहीं अुतरती कि सन् १९३५के अेक्टके मुताबिक अुन्हें अेसेम्ब्लियोंमें जो जगह दी गअी थी, वह अिसलिअे नहीं दी गअी थी कि वैसा करना मुनासिब था, बल्कि अिस ख़यालसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] थी कि वहाँ जाकर वे ब्रिटिश हितोंकी हिफ़ाज़त करें और हिन्दुओं और मुसलमानोंको आपसमें मिलने न दें । लेकिन वे अिसे माननेको तैयार नहीं । बात छोटी-सी है । फिर भी अुससे पता चलता है कि हवाका रुख़ किस तरफ़ है । आज़ादी चाहनेवालों और अुसके लिअे ज़द्दो-जहद करनेवालोंको अिन असगुनोंसे डरना न चाहिये । अिस पर मेरी सलाह तो यही है कि हम हर हालतमें, अुसे अखीर तक, सत्याग्रहके ज़रिये ही अिसका मुक़ाबला करें । आज़ादीका अिससे बढ़कर या दूसरा कोअी रास्ता नहीं । जो स्वतंत्रताका अमृत पीना चाहते हैं, अुन्हें अपनेको फ़ौज या पुलिसकी मददसे दूर रखना चाहिये । अैसे लोग अकेले हों या हज़ारों-लाखों हों, अुन्हें चाहिये कि वे अपने बाहुबल पर खड़े रहें, अुसीका भरोसा करें; या अिससे भी कहीं अच्छा तो यह होगा कि वे अपने मज़बूत दिल और दिमाग़की ताक़तका भरोसा रक्खें, क्योंकि अुसके लिअे न अपने हथियारोंकी ज़रूरत रहती है, न दूसरोंके ।

नअी दिल्ली, ९-९-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

शराब-बन्दी

अेक भले अंग्रेज़ पादरीके ख़तसे नीचेका कुछ हिस्सा लिया गया है, जिस पर ग़ौर किया जाना चाहिये —

"अकालका सामना करनेके लिअे आज मुल्कमें जो भी कुछ किया जा रहा है, अुसके बारेमें तो दो राय हो ही नहीं सकती । फिर भी सवाल यह है कि आज शराब बनानेमें जितनी शकर और जौ वग़ैरा नाज ख़र्च होता है, क्या अुसकी रोक नहीं होनी चाहिये ? लोगोंको तरह-तरहकी मिठाअियाँ और बिस्कुट वग़ैरा बनाने और खानेसे रोका जाता है, लेकिन अिन चीज़ों में कुछ-न-कुछ जीवनतत्त्व (विटामिन) तो होता ही है । मगर शराब आदमीको तबाह करनेके सिवा और क्या करती है ? अिनसानको खाँड या शकरकी ज़रूरत तो रहती ही है, और जौका अिस्तेमाल तो रोटीके लिअे ब.ख़ूबी हो सकता है । अिसलिअे हमें अिस बातकी .ख़ुशी होनी चाहिये कि मद्रास सरकारने जल्दी-से-जल्दी शराब-बन्दीके क़ानून पर अमल करनेकी मं.ज़ूरी दे दी है । हम मानते हैं कि जब हिन्दुस्तानसे शराबख़ोरी अुठ जायगी, तो वह बहुत जल्द तरक़्क़ी करेगा और दुनियाको दिखा सकेगा कि किस तरह शराब आदमीको नीचे गिराती है ।"

पादरी साहब सच कहते हैं । दुनियाको सही रास्ता दिखानेके लिअे आज हिन्दुस्तानको अेक क़ीमती मौक़ा मिला है । अगर अुसे ज़िन्दा रहना है, तो शराबकी आमदनीका ख़याल छोड़ना ही होगा । दक्खिन अफ्रीकाके जनाब काछलिया साहबने मुझे वहाँकी अेक अफ़सोसनाक कहानी सुनाअी है । वे कहते हैं कि जबसे वहाँके हिन्दुस्तानियोंमें शराबका प्रचार हुआ है, तबसे अुनकी हालत दिन-दिन गिरती ही गअी है । शराब-ख़ोरीको ख़त्म करनेके बारेमें तो सबकी राय अेक है, सिवा अुन लोगोंके, जिन्हें अुससे माली फ़ायदा पहुँचता है ।

मुझे ज़रा भी शक नहीं कि जो आमदनी अिनसानके नैतिक बलको कम करती है और ग़रीबोंके पैसेको बरबाद करती है, अुसे छोड़ देनेसे आख़िर हमारे लोगोंको माली और अिख़लाक़ी यानी आर्थिक और नैतिक फ़ायदा ही होगा, और वह रुपयोंकी आमदनीसे कहीं क़ीमती होगा । फिर, अब तो शराब-बन्दीके हक़में अेक दूसरी दलील भी दी जा सकती है । अब तक हमेशा यह कहा जाता था कि अगर यह आमदनी न रही, तो फ़ौजका ख़र्च कैसे चलेगा ? अिस ख़र्चका बोझ तो अब हमारे कन्धोंसे अुतरनेवाला है । अिसलिअे अब तो बिना झिझके और बिना देर किये शराबकी मनाही होनी ही चाहिये । कांग्रेस और लीगके बीच समझौता हो या न हो, सूबोंकी कांग्रेसी सरकारोंको तो सही काम करना ही है ।

अिस सिलसिलेमें अेक बात यह याद रखनी होगी कि जहाँ-जहाँ शराब-बन्दी की जाय, वहाँ-वहाँ पीनेवालोंके लिअे अुनके 'मनोरंजन या दिलबहलावका दूसरा बन्दोबस्त ज़रूर किया जाना चाहिये ।

नअी दिल्ली, ७-९-'४६

('हरिजन'से मुख़्तसर) मोहनदास करमचंद गांधी

कांग्रेसी मंत्री और अहिंसा

श्री शंकरराव देव लिखते हैं —

"लोगोंकी समझमें यह बात नहीं आ रही कि जो लोग अपनेको सत्याग्रही कहते थे वे वज़ीर बनते ही फ़ौज और पुलिसका अिस्तेमाल क्यों करते हैं ? लोग मानते हैं कि धर्म या व्यवहारके रूपमें मानी हुअी अहिंसाका यह भंग है, और अूपरी ख़यालसे यह सच भी मालूम होता है । कांग्रेसी मंत्रियोंके विचारोंमें और बरतावमें यह जो विरोध दिखाअी देता है, अुसका समर्थन करना आसान न होनेके कारण हमारे कार्यकर्त्ता अुलझनमें पड़ जाते हैं, और अिस विसंगतिसे — बेमेल चीज़से — लाभ अुठानेवाले कांग्रेसी या ग़ैरकांग्रेसी प्रचारकोंका मुक़ाबला करना अुनके लिअे मुश्किल हो जाता है ।

"आम तौर पर कांग्रेसियोंकी अहिंसा कमज़ोरोंकी अहिंसा ही रही है । हिन्दुस्तानकी मौजूदा हालतमें यही हो सकता था, अिसे तो आप भी जानते हैं । आप कहते हैं कि ताक़तवरकी अहिंसामें तेज होता है; फिर भी कमज़ोरको तगड़ा बनानेके लिअे आपने अहिंसाका अिस्तेमाल करना मंज़ूर किया । यही नहीं, बल्कि आप अुसके नेता भी बने । अिस तरह दुर्बल या कमज़ोर होते हुअे भी आज अुसके हाथमें सत्ता या हुकूमत आअी है । यह असम्भव है कि जो लोग अंग्रेज़ी हुकूमतके ख़िलाफ़ अहिंसासे लड़े, वे ही अब अपने हाथमें ताक़त लेकर मुल्कमें दंगा-फ़सादके वक़्त भी अहिंसाका अिस्तेमाल करके अुसे मिटानेको तैयार हों । अगर वे अैसी कोशिश करें भी, तो न वे अुसमें कामयाब होंगे और न अिस काममें अुन्हें आमलोगोंकी हमदर्दी ही मिलेगी ।

"मैंने आपसे पूछा था कि क्या सत्याग्रही अपने हाथमें ताक़त या हुकूमतकी बागडोर ले सकता है ? अगर ले सकता है, तो अुस ताक़त या हुकूमतके ज़रिये वह अहिंसाको कैसे आगे बढ़ा सकता है ? मेहरबानी करके आप अिस पर थोड़ी रोशनी डालिये । जिसने अहिंसाको धर्म माना है, वह कभी हुकूमतमें शामिल होना पसन्द न करेगा । और, मेरी राय है कि अुसे अैसा करना भी न चाहिये । लेकिन मैं मानता हूँ कि जिन्होंने अहिंसाको सिर्फ़ नीति या व्यवहारकी दृष्टिसे अपनाया है, अुनके लिअे पद या ओहदा लेनेमें कोअी दिक़्क़त न होनी चाहिये । बहुतेरे कांग्रेसियोंने ओहदे सँभाले हैं, और अिसके लिअे आपने अुन्हें अिजाज़त दी है । अैसी हालतमें सवाल यह अुठता है कि अुन मंत्रियों या वज़ीरोंसे जो अहिंसामें मानते हैं, आपका यह अुम्मीद रखना कि कम-से-कम वे .ख़ुद तो दंगा-फ़सादके मौक़ों पर अहिंसाका अिस्तेमाल करें, कहाँ तक मुनासिब है ? अहिंसाके ज़रिये ताक़त या हुकूमत हासिल करनेके बाद अुसका अिस्तेमाल किस तरह किया जाय, जिससे हुकूमत ही ग़ैरज़रूरी हो जाय ? अगर अैसा कोअी रास्ता आप न सुझायेंगे, तो हमारे अपने मक़सद तक पहुँचनेके लिअे सत्याग्रह अेक अधूरा साधन माना जायगा ।"

मेरे ख़यालमें अिसका जवाब आसान है । कुछ अरसेसे मैंने यह कहना शुरू कर दिया है कि कांग्रेसके विधान या क़ानूनसे 'सत्य और अहिंसा'को हटा देना चाहिये । अगर हम यह मानकर चलें कि कांग्रेसके विधानसे ये दोनों हटें या न हटें, फिर भी हम तो अिनसे हट ही गये हैं, तो स्वतंत्र रूपसे हम यह समझ सकेंगे कि कोअी काम सही है या नहीं ।

मैं मानता हूँ कि जब तक लौकिक राज-कारबारमें फ़ौज या पुलिसका अिस्तेमाल होगा, तब तक हम अंग्रेज़ी सल्तनतके या दूसरी किसी परदेसी सल्तनतके मातहत ही रहेंगे — फिर चाहे देसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारबार कांग्रेसवालोंके हाथमें हो या दूसरोंके। फ़र्ज़ कीजिये कि कांग्रेसी वज़ारतों या मंत्रि-मण्डलोंको अहिंसामें विश्वास नहीं है। यह भी मान लीजिये कि लोग यानी हिन्दू, मुसलमान और दूसरे हिन्दुस्तानी फ़ौज और पुलिसका सहारा चाहते हैं। अगर अैसा है, तो वह अुन्हें मिलता रहेगा। जो कांग्रेसी प्रधान अहिंसामें पूरा विश्वास रखते हैं, अुन्हें फ़ौज या पुलिसकी मदद लेना अच्छा न लगेगा। अिसलिअे वे अिस्तीफ़ा दे सकते हैं। अिसके मानी यह हुअे कि जब तक लोगोंमें आपसमें फ़ैसला कर लेनेकी ताक़त नहीं आती, तब तक हुल्लड़बाज़ी होती रहेगी और हममें अहिंसाका सच्चा बल पैदा ही न होगा।

अब सवाल यह रहा कि अैसा अहिंसक बल किस तरह पैदा हो सकता है? अिस सवालका जवाब अहमदाबादसे आये हुअे अेक ख़तके जवाबमें ता० ४ अगस्तको मैं दे चुका हूँ। जब तक हममें बहादुरी और मुहब्बतके साथ मरनेकी ताक़त पैदा नहीं होती, तब तक हममें वीरोंकी अहिंसाका बल नहीं आ सकता।

अब सवाल यह है कि आदर्श समाजमें कोअी राजसत्ता रहेगी या वह अेक बिलकुल अराजक समाज बनेगा? मेरे ख़यालमें अैसा सवाल पूछनेसे कुछ भी फ़ायदा नहीं हो सकता। अगर हम अैसे समाजके लिअे मेहनत करते रहें, तो वह किसी हद तक बनता रहेगा, और अुस हद तक लोगोंको अुससे फ़ायदा पहुँचेगा। युक्लिडने कहा है कि लाअिन वही हो सकती है, जिसमें चौड़ाअी न हो, लेकिन अैसी लाअिन या लक़ीर न तो आज तक कोअी बना पाया, न बना पायेगा। फिर भी अैसी लाअिनको ख़यालमें रखनेसे ही प्रगति या तरक़्क़ी हो सकती है। और, हरएक आदर्शके बारेमें यही सच है।

हाँ, अितना याद रखना चाहिये कि आज दुनियामें कहीं भी अराजक समाज मौजूद नहीं है। अगर कभी कहीं बन सकता है, तो अुसका आरम्भ हिन्दुस्तानमें ही हो सकता है। क्योंकि हिन्दुस्तानमें अैसा समाज बनानेकी कोशिश की गअी है। आज तक हम आख़िरी दरजेकी बहादुरी नहीं दिखा सके; मगर अुसे दिखानेका अेक ही रास्ता है, और वह यह है कि जो लोग अुसमें मानते हैं, वे अुसे दिखायें।

नअी दिल्ली, ६-९-'४६ **मोहनदास करमचंद गांधी**

आज़ादीका दिन

मिस्रसे अेक भाअी लिखते हैं—

"रेडियोसे और अख़बारके ज़रिये मालूम हुआ है कि हिन्दुस्तानको आज़ादी मिलनेवाली है, और सारे देशमें अुसका दिन मनानेकी तैयारी हो रही है। यहाँ मिस्रमें रहनेवाले हिन्दुस्तानी भी आज़ादीका दिन मनाना चाहते हैं। अिसलिअे अिस बारेमें आपकी तरफ़से पूरी सूचना मिलने पर हम वैसा अिन्तज़ाम करेंगे। जब तक आपको सन्तोष दिलानेवाली आज़ादी हमारे देशको नहीं मिलती, तब तक हम कुछ भी करना नहीं चाहते।"

अिसके जवाबमें गांधीजीने यों लिखा है—

"आपका पत्र मिला। आपके विचार मुझे ठीक लगते हैं। जब तक मुकम्मल आज़ादी न मिले, तब तक ख़ुशी किस चीज़की मनाअी जाय? आज तो ज़्यादा-से-ज़्यादा यही कहा जा सकता है कि हमें आज़ादीकी झलक दिखाअी पड़ने लगी है। लेकिन अिससे सन्तोष मानकर बैठ जाना तो बेवक़ूफ़ीकी निशानी मानी जायगी। फ़िलहाल तो यहाँ शहरोंमें हिन्दू और मुसलमान आपसमें लड़ रहे हैं। अैसी हालतमें बाहर रहनेवाले हिन्दुस्तानी अपने अन्दर जिस हद तक सच्ची अेकता पैदा कर सकेंगे, अुस हद तक वे स्वतंत्रता या आज़ादीको नज़दीक लानेमें हाथ बँटायेंगे। चूँकि आप मिस्रमें रहते हैं, अिसलिअे हिन्दू-मुस्लिम अित्तहादके बारेमें आप बहुत-कुछ कर सकते हैं।"

नअी दिल्ली, ७-९-'४६

('हरिजनबन्धु'से)

टिप्पणियाँ

परदेस क्यों जायँ?

अेक हिन्दुस्तानी डॉक्टर 'न्यूरो सर्जरी' सीखनेके लिअे अमेरिका गये हैं। ख़याल यह था कि वहाँसे सीखकर लौटने पर वे अपने लोगोंकी ज़्यादा ख़िदमत कर सकेंगे। बड़ी मुश्किलसे अुन्हें कोलम्बिया युनिवर्सिटीमें अेक जगह मिल पाअी है, और वे वहाँ हाअुस सर्जनका काम कर रहे हैं।

अुन्होंने मुझे अेक ख़त लिखा है। वे चाहते हैं कि मैं हिन्दुस्तानी विद्यार्थियोंको परदेस न जानेके लिअे समझाअूँ। अिसके लिअे अुन्होंने नीचे लिखी वजहें दी हैं—

"(क) दस विद्यार्थियोंको परदेस भेजने और वहाँकी तालीम दिलानेके लिअे जितना रुपया हमारे ग़रीब मुल्कको ख़र्च करना पड़ता है, अुतने रुपयेमें हम परदेससे अेक अव्वल दरजेके प्रोफ़ेसरको बुला सकते हैं, जो हमारे ४० विद्यार्थियोंको तालीम देनेके साथ-साथ देसमें अेक अुम्दा लेबोरेटरी भी खड़ी कर सकता है।

(ख) यहाँ आनेवाले विद्यार्थियोंको रिसर्च या खोजके कामकी बुनियादी जानकारी तो हो जाती है, लेकिन वे देसमें लौटकर अपनी लेबोरेटरी यानी प्रयोगशाला खड़ी नहीं कर सकते।

(ग) अुन्हें लगातार काम करनेका कोअी मौक़ा नहीं मिलता।

(घ) अगर हम बाहरके विशेषज्ञों या माहिरोंको अपने यहाँ बुलायें, तो हमारी लेबोरेटरियाँ भी पूर्ण बन जायँ।"

मैंने अपने देसके तालिब-अिल्मों या छात्रोंके परदेस जानेकी कभी हिमायत नहीं की। तजरबेसे मैं यह जान गया हूँ कि परदेस जाकर लौटे हुअे विद्यार्थी देसमें कहीं अपनेको फिट नहीं कर पाते। जो तजरबा या अनुभव अपने देसमें मिलता है, वही बेश क़ीमती होता है, और अुसीकी मददसे ज़्यादा-से-ज़्यादा तरक़्क़ी की जा सकती है। लेकिन आज तो विद्यार्थियों पर परदेस जानेकी धुन बुरी तरह सवार है। काश, अूपरका ख़त अुन्हें ख़बरदार कर सके!

नअी दिल्ली, २-९-'४६

('हरिजन'से)

देवदासीका रिवाज

अेक भाअी लिखते हैं—

"यह तो अेक जानी हुअी बात है कि आप हरिजनोंको अूपर अुठानेके लिअे पूरी-पूरी कोशिश कर रहे हैं, और अपना बहुत-सा बेश-क़ीमती वक़्त हरिजनोंकी बस्तीमें ही बिताते हैं। लेकिन मैं आपसे यक़ीनन् यह कहा चाहता हूँ कि बम्बअी और पूनामें हरिजन क़ौमकी हज़ारों बहनें देवदासीके नाते रण्डीकी ज़िन्दगी बिताती हैं। अैसा क्यों होना चाहिये? क्या अिसलिअे कि ये बहनें अेक हलकी क़ौमकी हैं, और अिन्हें अपना सत बेचनेके लिअे फुसलाया जाता है? क्या अिसी वजहसे लोगोंका ध्यान अिनकी ओर नहीं जाता, और अिन्हें रण्डीकी शर्मनाक ज़िन्दगी बितानेके लिअे मजबूर होना पड़ता है?

"मैं कहूँगा कि यह अेक बहुत ही अहम और ज़रूरी मसला है। क्या मदुरा और मद्रासकी तरह बम्बअी अिलाक़ेमें भी अिस ग़ैरक़ानूनी रिवाजको रोका नहीं जा सकता? मदुरा और मद्रासमें वहाँकी अदालतके फ़ैसले पर अिण्डियन पिनल कोडकी दफ़ा ३६६ अे, ३६६ बी और ३७२ व ३७३की रूसे अिसपर रोक लगा दी गअी है। (देखिये सफ़ा नं० ५७४)।"

देवदासी प्रथाके साथ हमारी जो शर्म जुड़ी हुअी है, अुसके बारेमें मैं अेक नहीं, अनेक बार लिख चुका हूँ। मन्दिरोंमें या दूसरी जगहोंमें, जहाँ कहीं भी यह रिवाज मौजूद है, शर्मनाक ही है। आम तौर पर बदचलन औरतोंको ही रण्डी कहा जाता है, लेकिन जो मर्द अिस बुराअीमें फँसते हैं, वे भी अगर ज़्यादा नहीं, तो अुतने ही बदचलन हैं, जितनी वे बहनें, जिन्हें अक्सर अपना पेट पालनेके लिअे तन बेचना पड़ता है। बेशक, यह बुराअी ग़ैरक़ानूनी क़रार दी जानी चाहिअे। लेकिन अैसे मामलोंमें क़ानून अेक हद तक ही मदद कर सकता है। क़ानूनके रहते हुअे भी यह बुराअी हरअेक मुल्कमें सदियोंसे चली आ रही है। ज़ोरदार लोकमत क़ानूनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदद भी कर सकता है, और अुसके काममें रुकावट भी डाल सकता है।

नअी दिल्ली, २-९-'४६

('हरिजन'से)

छुआछूत और 'फ्लश'का तरीक़ा

सं० — क्या आप समझते हैं कि 'फ्लश'के तरीक़ेको अपनाना छुआछूतको मिटानेका अेक ज़रिया है? अगर अैसा है, तो क्या यह माना जाय कि मशीनोंकी अपनी ना-पसन्दगीकी बिना पर आप पाखानोंके लिअे 'फ्लश सिस्टिम'को दाख़िल करनेका विरोध न करेंगे?

ज० — जहाँ पानीकी अिफ़रात है और जहाँ ग़रीबोंको मुसीबतमें डाले बिना सफ़ाअीके नये तरीक़े दाख़िल किये जा सकते हैं, वहाँ अिस बारेमें मुझे कोअी अेतराज़ नहीं हो सकता। सच तो यह है कि अुस हालतमें शहरकी तन्दुरुस्तीको सुधारनेके अेक ज़रियेकी तरह अुसका स्वागत ही किया जाना चाहिये। फ़िलहाल तो पानीकी मददसे मैला बहानेका यह तरीक़ा शहरों और कस्बोंमें ही शुरू किया जा सकता है। मशीनोंकी मेरी मुख़ालिफ़तके बारेमें आम तौर पर बहुत ग़लतफ़हमी फैली हुअी है। मैं मशीन नामका विरोधी नहीं हूँ, बल्कि मैं अुन मशीनोंका विरोध करता हूँ, जो मज़दूरोंकी मज़दूरी छीनकर अुन्हें बेकार बना देती हैं। 'फ्लश'के तरीक़ेको अपनानेसे छुआछूतका पाप धुलेगा या नहीं, अिसमें मुझे बहुत शक है। यह पाप तो हमारे दिलोंके अन्दरसे निकलना चाहिये। मैलेको पानीसे बहानेके तरीक़ेसे या अैसे दूसरे तरीक़े अपनानेसे ही छुआछूत नहीं मिटेगी। जब तक हम ख़ुद भंगी नहीं बन जाते और झाड़ू लगाने व पाख़ाना साफ़ करनेमें जो अेक शान है, अुसे महसूस नहीं करते, तब तक छुआछूत सचमुच मिटेगी नहीं।

नअी दिल्ली, २-९-'४६

('हरिजन'से)

[खुलासा — 'फ्लश'के तरीक़ेमें पानीकी मारसे पाख़ाने साफ़ किये जाते हैं, और बड़े-बड़े शहरोंमें यह तरीक़ा चल रहा है। पाख़ानेके अूपरी हिस्सेमें अपने आप पानीसे भर जानेवाली एक टंकी रखी जाती है। जंजीरके झटकेसे टंकीके पानीको खोलनेसे पानी तेज़ीसे धँस आता है, और अुसकी मारसे मैला धुलकर व बहकर गटरकी राह दूर चला जाता है। चूँकि पानीकी मारसे मैला धोने व बहानेका यह एक तरीक़ा है, अिसलिअे अंग्रेज़ीमें अिसे 'फ्लश सिस्टिम' कहा जाता है।]

हरिजन और कुअें

श्री हरदेव सहाय लिखते हैं —

"कल शामके अपने प्रवचनमें हरिजनोंकी तकलीफ़ोंकी ओर ध्यान दिलाते हुअे आपने यह कहा था कि अुनको कुओंसे पानी नहीं भरने दिया जाता। पिछले २५ बरसोंकी लगातार कोशिशोंके बावजूद हरिजनोंका यह कष्ट अभी तक दूर नहीं हो सका है। हरिजनोंके कष्टोंको आपसे अधिक जाननेवाला दूसरा कोअी नहीं।

"सेवककी नाक़िस रायमें अब कांग्रेसी सरकारोंको हरिजनोंके सम्बन्धमें अपनी नीति शीघ्र ही घोषित करके अिस तरहके कष्टोंको क़ानूनन् दूर करना चाहिये। सेवक आपका ध्यान अिस सम्बन्धमें पंजाबके हरिजनोंकी ओर दिलाना चाहता है। वहाँ कुओंसे पानी भरना तो दूर रहा, कुअें बनानेके लिअे ज़मीन भी नहीं मिलती। अिसलिअे आपसे निवेदन है कि पंजाब सरकार द्वारा हरिजनोंको यह अधिकार मिलना चाहिये कि जहाँ अुनको सार्वजनिक कुओंसे पानी भरनेकी मुमानियत हो, जैसी कि है, वहाँ सरकार अपने ख़र्चेसे हरिजनोंकी आबादीके लिहाज़से कुअें बनवा दे, या कम-से-कम हरिजनोंको अपने कुअें बनानेके लिअे ज़मीन दिलाने या देनेका नियम बनावे। बहुतेरे गाँव अैसे हैं जहाँ चाहते हुअे भी हरिजन अपने ही ख़र्चेसे कुअें नहीं बना सकते।

"कहीं-कहीं सरकारने हरिजनोंके लिअे कुअें बनाने शुरू भी किये हैं, पर वे बहुत नाकाफ़ी हैं। हरअेक प्रान्तीय सरकारका यह फ़र्ज़ होना चाहिये कि वह पीनेके पानीका अिन्तज़ाम ज़रूर करे।"

अिन भाअीने जो लिखा है, वह ठीक ही है। हरिजनोंके लिअे पानीका अिन्तज़ाम सरकारकी तरफ़से होना ही चाहिये। अिसके लिअे सिर्फ़ कुअें खोदनेकी जगह देना काफ़ी नहीं, अुसमें कुअें खुदवा देना भी ज़रूरी है।

नअी दिल्ली, ६-९-'४६

हरिजनोंकी तकलीफ़

हरिजनोंके सेवक प्रोफ़ेसर रामचन्द्ररावने अंग्रेज़ीमें अेक बयान भेजा है, जिससे पता चलता है कि दक्खिनी हिन्दुस्तानके जिस कृष्णा ज़िलेमें वे हरिजनोंकी सेवाका काम करते हैं, वहाँ हरिजनोंको पानीकी तकलीफ़ रहती है। अगरचे क़ानून अुनके हक़में है, तो भी सवर्ण यानी अूँची जातके हिन्दू हरिजनोंको आम कुओंसे पानी नहीं भरने देते। प्रोफ़ेसर रामचन्द्ररावने लोगोंसे मिन्नत की, मगर वे न माने। बादमें अुन्होंने क़ानूनकी मदद ली। तब सवर्ण लोग कुछ ठण्डे पड़े। यह सब तो वे कृष्णा ज़िलेके कुछ गाँवोंमें ही करवा सके हैं। शरमकी बात तो यह है कि अितने बरसोंके बाद भी हरिजनोंकी ये मुसीबतें दूर नहीं हुअीं। अिसीलिअे क़ानूनकी मदद लेनी पड़ती है। अब तो कअी सूबोंमें कांग्रेसी वज़ीरोंके हाथमें हुकूमतकी बागडोर है, अिसलिअे अुम्मीद की जाती है कि हरिजनोंकी तकलीफ़ें जल्दी ही दूर हो जायँगी।

नअी दिल्ली, १०-९-'४६

('हरिजन'से मुख़्तसर)

ग़रीब गाय

अेक विदुषी बहन पूछती हैं —

"जो गायें या भैंसें गाभिन होती हैं, अुन्हें छोड़कर बाक़ी दूध देनेवाली या दूध न देनेवाली गायों और भैंसोंको हलमें जोता जाय, तो अुससे किसानको आर्थिक लाभ हो सकता है; लेकिन आज समाज अिस चीज़को सहन नहीं करता। अिसके बारेमें आपका क्या मत है?

"हिन्दुस्तानमें चरागाहोंकी बहुत कमी है। आजके किसानके लिअे अुपयोगी पशुओंके चारे-दानेका अिन्तज़ाम करना भी मुश्किल हो गया है, अैसी हालतमें बेकार और कमज़ोर गाय वग़ैरा पशुओंके क़त्लको क़ानूनन् बन्द करवाना आपके ख़यालसे ठीक होगा क्या?"

पहला सवाल सन् १९१५में मेरे सामने आया था। अुस वक़्त भी मुझे लगा था कि अगर हम अैसी गायोंको हलमें जोतें, तो अुससे अुन्हें कोअी नुक़सान न पहुँचेगा, बल्कि वे हट्टी-कट्टी और मज़बूत बनेंगी और ज़्यादा दूध देंगी। लेकिन अिसमें अेक शर्त यह है कि गायसे बेरहमीके साथ नहीं, बल्कि अुसे अपना मित्र समझकर काम लिया जाय। और अेक गाय ही नहीं, बल्कि सभी पशुओंसे रहमदिलीके साथ काम लिया जाना चाहिये। अपनी-अपनी मर्यादा या हदमें रहकर सभी जानदारोंको मेहनत तो करनी ही है। मेहनत करनेसे वे अूपर ही अुठते हैं, कभी नीचे नहीं गिरते।

दूसरे सवालका जवाब भी मैं तो बहुत पहले दे चुका हूँ। गोवध क़ानूनकी मददसे बन्द नहीं हो सकता। वह तो ज्ञानसे, तालीमसे और मित्रभावसे ही बन्द हो सकता है। जो पशु धरतीके लिअे भाररूप हैं, वे बच ही नहीं सकते।

जो मनुष्य भाररूप है, वह भी नहीं बच सकता।

नअी दिल्ली, ६-९-'४६ — मो० क० गांधी

हमारा मवेशी धन

जमीनों और गाँवोंकी तरक़्क़ीकी कोअी स्कीम हिन्दुस्तानमें अुस वक़्त तक कामयाब नहीं हो सकती, जब तक मवेशीका सवाल पूरे जोरके साथ हल नहीं किया जाता। लड़ाअीके ज़मानेमें गायों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैलोंकी तादादमें बहुत कमी हो गअी है, क्योंकि परदेसी फ़ौजों और लड़ाअीके क़ैदियोंको खिलानेके लिअे वे बेरहमीके साथ क़त्ल किये गये हैं। मुल्कके मवेशियोंकी हालत पहले ही दर्दनाक थी, मगर अब तो वह बहुत ही नाज़ुक बन गअी है।

मवेशी अेक दिनमें पैदा नहीं किये जा सकते। बग़ैर चार-पाँच साल राह देखे, अुनसे कोअी काम नहीं लिया जा सकता। अिसलिअे हमारा फ़र्ज़ हो जाता है कि हम फ़ौरन अिस मसलेको अपने हाथमें लें। लेकिन बदक़िस्मतीसे देर या ढिलाअी तो आज हमारे मुल्ककी अेक ख़ासियत बन गअी है।

चुनाँचे सरकारी हाकिमोंका फ़र्ज़ है कि वे अेक नअी स्पिरिटके साथ मवेशियोंको बढ़ानेका काम अपने हाथमें लें। तभी वे कामयाब हो सकेंगे। अगर अिसमें कामयाबी न मिली, तो गाँवोंको सुधारने या अुनकी तरक़्क़ी करनेका दूसरा सब काम नाकाम हो जायगा।

केन्द्र और प्रान्तोंकी यानी मरकज़ी और सूबोंकी सरकारोंने अेक स्कीम मंज़ूर की है, जिसके ख़र्चका बोझ दोनों आधा-आधा अुठायेंगी। अिस स्कीमके मुताबिक़ अच्छी नस्लके मवेशी पैदा करनेके लिअे सूबोंमें जगह-जगह गोशालायें क़ायम की जायँगी। अगर यह योजना या स्कीम ठीक तरह चलाअी गअी, तो सही दिशामें अच्छी तरक़्क़ी की जा सकेगी।

('हरिजन'से) मीराबहन

खद्दर

'हरिजनसेवक'के पाठक कह सकते हैं कि 'जब मुल्कमें अन्धाधुन्धी चल रही है, तब खद्दरकी बात भद्दी-सी लगती है', क्योंकि अुनमें बहुतेरे तो शहरोंमें रहनेवाले हैं। और, अब तक तो अीश्वरकी कृपासे दंगा-फ़साद शहरों तक ही महदूद है। बात यह है कि शहरोंमें भी सब लोग थोड़े ही दंगा-फ़सादमें शामिल होते हैं? और, खादीके खयालके साथ तो शान्ति या अमनका खयाल आता ही है। आख़िर, या तो करोड़ोंको खादी अपनानी है या फिर अहिंसक स्वराज्यको भूल जाना है। अिसलिअे लोग कितने ही तूफ़ानमें क्यों न फँसे रहें, फिर भी जिनको शान्तिमें विश्वास है, वे न चरखेको भूलेंगे, न खादीको। अगर हम खाना भूलें या छोड़ें, तो शायद चरखेको भी भूल सकें। अिस दृष्टिसे चरखा-संघकी तरफ़से और दूसरे खादी-प्रेमियोंकी तरफ़से चरखा-जयन्तीके बारेमें कुछ निवेदन या बयान निकले हैं। जो लोग अुसे अिस निगाहसे देखनेवाले हैं, वे तो चरखा-जयन्तीके लिअे सूत कातते ही रहेंगे और चरखा-संघके नीचे लिखे प्रस्ताव पर अमल करते रहेंगे।

"चरखा-संघके ट्रस्टी-मण्डलकी यह सभा संघकी शाखाओं और खादी-प्रेमियोंसे निवेदन करती है कि वे भरसक कोशिश करके आगामी ७८वीं चरखा-जयन्ती तक कम-से-कम ७८,००० साधारण सहयोगी बनावें, जिनमें कम-से-कम आधे वस्त्र-स्वावलम्बी हों।

"साधारण सहयोगीसे मतलब वह व्यक्ति है, जो संपूर्ण आदतन् खादी-धारी होते हुअे चरखा-संघको अपने ख़ुदका काता हुआ कम-से-कम ६ गुण्डी सूत सालाना दे।

"वस्त्र-स्वावलम्बीसे मतलब अुस व्यक्तिसे है, जो सम्पूर्ण आदतन् खादी-धारी रहते हुअे, अस्वास्थ्यके या अैसे कुछ कारणोंके, जिन पर अुसका क़ाबू न हो, समयको छोड़कर बाक़ी समयमें, अपने या अपने परिवारके अिस्तेमालके या दानके हेतुसे हर महीने नियमपूर्वक कम-से-कम केवल कताअीकी साढ़े सात गुण्डी या संयुक्त कताअी (कपासकी ओटाअीसे सूतकी कताअी तक)की पाँच गुण्डी सूत कातता हो।"

"चरखा-संघने यह भी अेक प्रस्ताव पास किया है कि जितने क्षेत्रमें खादी पैदा करनेके लिअे चरखा चलता है, अुतने क्षेत्रकी आबादीके हिसाबसे कम-से-कम फ़ी आदमी अेक वर्गगज़ खादीकी स्थानिक या मुक़ामी खपत जल्दी ही होने लग जानी चाहिये।"

नअी दिल्ली, ४-९-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

सवाल–जवाब

क़ुदरती अिलाज

स०—कहा गया है कि क़ुदरती अिलाजका अिस्तेमाल हरअेक बीमारीके लिअे हो सकता है। अगर यह सच है, तो क्या अुससे मोतियाबिन्द, दूर या पासकी चीज़का साफ़ दिखाअी न देना, और आँखकी दूसरी बीमारियाँ भी मिट सकती हैं? क्या अुससे चश्मा छूट सकता है? क्या क़ुदरती अिलाजसे हर्निया और टॉन्सिल जैसे रोग, जिनमें चीरफाड़की ज़रूरत रहती है, मिट सकते हैं?

ज०—मैं जानता हूँ कि क़ुदरती अिलाजके डॉक्टर यह सब करनेका दावा करते हैं। लेकिन मैं अुन डॉक्टरोंके साथ नहीं हूँ। फिर भी क़ुदरती अिलाजके लिअे अेक बात तो ज़रूर कही जा सकती है। जाने-अनजाने क़ुदरतके क़ानूनोंको तोड़नेसे ही बीमारी पैदा होती है। अिसलिअे अुसका अिलाज भी यही हो सकता है कि बीमार फिर क़ुदरतके क़ानूनों पर अमल करना शुरू कर दे। जिस आदमीने क़ुदरतके क़ानूनको हदसे ज़्यादा तोड़ा है, अुसे तो क़ुदरतकी सज़ा भोगनी ही पड़ेगी, या फिर अुससे बचनेके लिअे अपनी ज़रूरतके मुताबिक़ डॉक्टरों या सर्जनोंकी मदद लेनी होगी। वाजिब सज़ाको सोच-समझकर चुपचाप सह लेनेसे मनकी ताक़त बढ़ती है, मगर अुसे टालनेकी कोशिश करनेसे मन कमज़ोर बनता है।

ज़बरदस्तीकी शादी

अेक बहन लिखती हैं—

"जिस लड़कीके माँ-बाप अुसे अुसकी मरज़ीके ख़िलाफ़ शादी करनेको मजबूर करते हैं, और अुसके राज़ी न होने पर अुसे अपने घरसे निकल जानेको कहते हैं, वह क्या करे? और, अगर अुसे अितना लिखाया-पढ़ाया नहीं गया है कि वह अपनी रोटी ख़ुद कमा सके, तो कहाँ जाय! किसका आसरा ढूँढे?"

यह सवाल पढ़कर दुःख होता है। लड़कियोंको ज़बरदस्ती शादी करनेके लिअे मजबूर करके माँ-बाप बहुत ग़लती करते हैं। अगर वे अपनी लड़कियोंको अिस लायक़ नहीं बनाते कि वे अपना गुज़ारा ख़ुद कर सकें, तो यह भी अुनकी ग़लती है। माँ-बापको कोअी हक़ नहीं कि वे शादीसे अिनकार करनेके लिअे अपनी लड़कीको घरसे निकाल दें। आशा करनी चाहिये कि अैसे निर्दय माँ-बाप कम ही होंगे। पत्र लिखनेवाली बहनको मैं यह सलाह दूँगा कि वह अपने हाथकी मेहनत-मज़दूरीके किसी कामको, फिर वह मेहतर या भंगीका काम ही क्यों न हो, अपनी शानके ख़िलाफ़ न समझें। औरतोंको मर्दोंके आसरेकी अुम्मीद नहीं रखनी चाहिये। अुन्हें तो द्रौपदीकी तरह अपने सदाचारका, अपनी शक्तिका और भगवान्‌का भरोसा रखना चाहिये।

नअी दिल्ली, ६-९-'४६

('हरिजन'से) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

हिन्दुस्तानीके बारेमें ... गांधीजी
हफ़्तेवार ख़त ... प्यारेलाल
क्या करें? ... गांधीजी
शराब-बन्दी ... गांधीजी
कांग्रेसी मंत्री और अहिंसा ... गांधीजी
खद्दर ... गांधीजी
सवाल-जवाब ... गांधीजी
टिप्पणियाँ
आज़ादीका दिन
परदेस क्यों जायँ? ... मो० क० गांधी
देवदासीका रिवाज ... मो० क० गांधी
छुआछूत और 'फळश'का तरीक़ा ... मो० क० गांधी
हरिजन और कुअें ... मो० क० गांधी
हरिजनोंकी तकलीफ़ ... मो० क० गांधी
ग़रीब गाय ... मो० क० गांधी
हमारा मवेशी धन ... मीराबहन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरखा-जयन्ती

रजि॰ नं॰ बी, ४४४८

हरिजन सेवक

दो आना

सम्पादक — प्यारेलाल

वर्ष १०　　　　अंक ३३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता॰ २२ सितम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु॰ ६,
विदेशमें रु॰ ८; शि॰ १४; डॉलर ३

बन्द करो

अेक हिन्दी अखबारनवीस लिखते हैं कि जैसा हिन्दुस्तानी-कोश ... में हर हफ़्ते निकल रहा है, वैसा तो पहलेसे ही मौजूद है, ... अिसकी क्या जरूरत है ? अगर यह सच हो, तो मैं मान लूँगा कि ... मेहनत बेमानी है; लेकिन मेरे किसी साथीने मुझे अबतक यह ... बताया। और अगर अुन्हें भी मेरी ही तरह अिसका पता न था, ... तो अिस पर जरूर आश्चर्य और दुःख होगा। जिस शब्दकोशका नाम ... गया है, अुसे मैंने मँगवाया है। अगर मुझे अपनी भूल मालूम ..., तो मैं अुसे सुधार लूँगा, और अिस पर होनेवाली मेहनत बचा लूँगा। अेक दूसरे भाअीने यही बात अपने अंग्रेज़ी ख़तमें लिखी है। ...ही, अुन्होंने अिस बात पर ज़्यादा जोर दिया है कि मेरी हिन्दुस्तानी तो ... है, और अुसकी वजहसे मैं हिन्दीवालोंमें अप्रिय हो रहा हूँ। अिसी ... लेकिन अिससे अुलटा ख़याल अुर्दूवालोंका है। अुनका अिलज़ाम ... मैं हिन्दुस्तानीके बहाने हिन्दी यानी संस्कृत शब्द अुर्दूमें घुसेड़ ... हूँ। मैं अिन दोनों अिलज़ामोंका स्वागत करता हूँ। मेरी हिन्दुस्तानी ... है, न अुर्दू; वह तो अिन दोनोंका मेल या संगम है। अिस ... निकली हुअी सरस्वतीरूपी भाषा आज तो सरस्वती नदीकी ... नज़र नहीं आती। भाषाशास्त्री (अह्लेज़बान) मुझसे कहते हैं कि ... वक़्त था, जब हिन्दुस्तानी ज़बानकी सरस्वती बहती थी, लेकिन ... वह गुम हो गअी है। अैसा हुआ हो या न हुआ हो, हिन्दुस्तानी-... तो मक़सद ही यह है कि जिन ज़बानोंका व्याकरण (ग्रामर) ... ही है, लेकिन शब्द-भण्डार अलग-अलग जगहसे आया है, ... अलग-अलग रखनेके बजाय, मिलाकर अेक बड़े दरियाकी शकलमें ... जायं। यह कोशिश कामयाब होगी या नहीं, यह हिन्दुस्तानीके ...ओंकी मेहनत पर मुनहसर है। अगर अिस मेहनतमें कुछ दम ..., तो यह ज़रूर कामयाब होगी। मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। ... कामयाब बनाना अीश्वरके ही हाथमें है। और जब वही कर्त्ता ... हर्त्ता है, तो फिर अफ़सोस क्यों ? और दुःख किस बातका ? दूसरे, यह कोशिश कोअी लोकप्रिय या हरदिल अजीज़ बननेके ... थोड़े ही है। लोक-सेवक न तो तारीफ़की परवाह करता ... न निन्दासे डरता है। जो तारीफ़से फूल अुठता है, और ... निन्दासे मुरझा जाता है, अुससे सच्ची सेवा नहीं बन सकती। सेवककी ... तारीफ़ अुसकी अपनी सेवा ही है। अिसलिअे अपने टीकाकारोंसे ... दरख़्वास्त है कि वे नुक़्ताचीनीके बजाय अिस शुभ काममें मेरा ... बँटावें, और हिन्दुस्तान-जैसे बड़े मुल्कके ज़्यादातर लोगों द्वारा ... और लिखी जानेवाली ज़बानको तरक़्क़ी दें और अुसकी शान ... बढ़ावें। अैसा करनेसे हिन्दी और अुर्दू दोनों बहनें चमक अुठेंगी, और हिन्दुस्तानकी तरक़्क़ी होगी। मैं अीश्वरको चाहे जिस नामसे ... — अीश्वर, ख़ुदा या अल्लाह — वह मुझसे नाराज़ नहीं होगा, ... अुसकी ताक़तके बारेमें मेरी जानकारी बढ़ जायेगी। जो दोनोंका ... करता है, अुनका दरजा बढ़ाने और अुन्हें मिलानेकी कोशिश ... है, अुसके साथ झगड़ा कैसा ?

नअी दिल्ली, १३-९-'४६

मोहनदास करमचंद गांधी

('हरिजनबन्धु'से)

सम्मिलित प्रार्थना

स॰ — क्या आप सम्मिलित प्रार्थनामें मानते हैं ? आजकल जैसी सम्मिलित प्रार्थना की जाती है, क्या वह सच्ची प्रार्थना है ? मैं समझता हूँ कि वह नीचे गिरानेवाली चीज़ है, और अिसलिअे ख़तरनाक है। हज़रत मसीहने कहा है — 'जब तुम प्रार्थना करो, तो पाखण्डियोंकी तरह न करो, बल्कि अपने कमरेमें किंवाड़ बन्द करके और छिपकर अपने पिताके आगे प्रार्थना करो'। सीढ़में लोग ज़्यादातर बेध्यान रहते हैं और मनको स्थिर नहीं कर पाते। अुस हालतमें प्रार्थना पाखण्ड बन जाती है। योगी अिसे ख़ूब जानता है। तो क्या जनताको अन्तर्मुख होने यानी अपने अन्दर नज़र डालनेकी तालीम नहीं दी जानी चाहिये ? सच्ची प्रार्थना तो वही है।

ज॰ — मेरा मत है कि मैं जो सामूहिक या मजमूअी प्रार्थना कराता हूँ, वह जन-समूहके लिअे सच्ची प्रार्थना है। अुसका संचालक आस्तिक है, पाखण्डी नहीं। अगर वह पाखण्डी होता, तो प्रार्थना शुरूसे ही अपवित्र हो जाती। जो स्त्री-पुरुष अुसमें शामिल होते हैं, वे किसी पुरानी रीतके प्रार्थना-मन्दिरमें नहीं जाते, जहाँ अुन्हें कोअी सांसारिक लाभ हो। अुनमें ज़्यादातर अैसे होते हैं, जिनका प्रार्थनाके संचालकके साथ कोअी जाती या निजी सम्बन्ध नहीं। अिससे यह अनुमान किया जा सकता है कि वे दिखावेके लिअे नहीं आते। चूँकि वे मानते हैं कि सामूहिक प्रार्थनासे अुन्हें किसी-न-किसी तरहका पुण्य मिलता है, अिसीलिअे वे अुसमें आते हैं। यह बिलकुल सच है कि कुछ लोग, शायद ज़्यादातर लोग, प्रार्थनामें ध्यान नहीं देते, या मनको स्थिर नहीं कर पाते। अिसका मतलब यही है कि वे अनाड़ी हैं। मनको स्थिर या अेकाग्र न कर सकना, या ध्यान न लगा सकना, असत्य या पाखण्ड नहीं। अगर वे ध्यान न धरते हुअे भी यह दिखानेकी कोशिश करें कि वे ध्यान धर रहे हैं, तो अुन पर पाखण्डका अिलज़ाम लग सकता है। लेकिन अिसके ख़िलाफ़ बहुतोंने मुझसे पूछा है कि जब वे अपना चित्त स्थिर न कर सकें, तो क्या करें ?

अूपरके सवालमें हज़रत मसीहका जो फ़िक़रा दिया है, वह यहाँ लागू नहीं होता। हज़रत मसीह अुन लोगोंका ज़िक्र कर रहे थे, जो दिखावेके लिअे प्रार्थना करनेका ढोंग रचते थे। अुनके अुस वचनमें सामूहिक प्रार्थनाके विरुद्ध कुछ भी नहीं कहा गया है। मैं कअी दफ़ा कह चुका हूँ कि जाती प्रार्थनाके बिना आम प्रार्थनाका लाभ बरायनाम ही होता है। मेरा विश्वास है कि व्यक्तिगत या जाती प्रार्थना सामूहिक यानी आम प्रार्थनाकी तैयारी है। अिसलिअे सामूहिक प्रार्थना तभी सफल मानी जानी चाहिये, जब वह हरअेकको अपने तौर पर प्रार्थना करना सिखाये। दूसरे शब्दोंमें, जब अिनसान दिलसे प्रार्थना करना सीख जाता है, तो फिर वह अकेलेमें प्रार्थना करे या दूसरोंके साथ मिलकर करे, हमेशा सच्चे दिलसे प्रार्थना करता है।

मैं नहीं जानता कि अिन भाअीने जिस योगीका ज़िक्र किया है, वह क्या करता है, और क्या नहीं करता। लेकिन अितना मैं जानता हूँ कि जब जनता परमात्माके साथ अेकतार हो जाती है, तो वह ख़ुद-ब-ख़ुद अपने भीतर नज़र डालने लगती है। यही सब प्रार्थनाओंका नतीजा होना चाहिअे। नअी दिल्ली, १४-९-'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल-बहलावका अेक मौक़ा

गांधीजीको अपने रोज-रोज़के काममें दिल बहलानेवाले मौक़ोंके लिअे कोअी वक़्त ही नहीं मिलता। अेक लम्बे अरसेकी ग़ैरहाज़िरीके बाद अबकी जबसे वे वापस सेवाग्राम आये हैं, तबसे अुनका कार्यक्रम और भी भरा-भरा रहने लगा है। लेकिन जब कल श्री आर्यनायकम् सातवें दरजेके ९ लड़कोंको गांधीजीके पास लाये, तो सहज ही दिल-बहलावका अेक मौक़ा अुन्हें मिल गया। अिन सब लड़कोंने सेवाग्रामके बुनियादी मदरसेकी पढ़ाअी क़रीब-क़रीब पूरी कर ली है। ये सब सेवाग्रामके और आस-पासके गाँवोंके रहनेवाले हैं। अुन लड़कोंके मुक़ाबले, जिन्होंने कभी मदरसेका मुँह नहीं देखा, और जो खेतोंमें काम करते पाये जाते हैं, ये लड़के अिन पर की गअी पहली मेहनतका अच्छा नतीजा ज़ाहिर करते थे। वे सभी साफ़-सुथरे, बातमीज और बाअदब दिखाअी देते थे। गांधीजीने अुनके साथ थोड़ा मज़ाक किया और वे भी खिला-खिलाकर हँसते हुअे उनकी अुस हँसीमें शामिल हो गये। अुनमेंसे अेक लड़केने तो गांधीजीसे यह पूछनेकी हिम्मत भी दिखाअी कि सात साल तक बुनियादी तालीमके मदरसोंमें पढ़नेके बाद चौदह बरसकी अुम्रवाले जो लड़के अुनमेंसे निकलेंगे, वे आपके ख़यालमें किस तरहके होने चाहियें? अिस मौक़ेका लाभ अुठाकर गांधीजीने कहा कि अगर मदरसेने लड़कोंकी तरफ़ अपना फ़र्ज़ अच्छी तरह अदा किया होगा, तो ये चौदह सालके लड़के सच्चे, साफ़दिल और तन्दुरुस्त होंगे। अुनका रुझान देहातकी तरफ़ होगा। अुनके दिमाग़का और हाथका अेक-सा विकास हुआ होगा। अुनमें छल-कपट या धोखा और फ़रेब न होंगे। अुनकी बुद्धि तेज़ होगी, पर वे पैसा कमानेकी खटपटमें न पड़ेंगे। जो भी नेक और अीमानदारीसे भरा काम अुन्हें मिलेगा, उसे वे अच्छी तरह कर सकेंगे। वे शहरोंमें जाना और रहना पसन्द न करेंगे। चूँकि वे अपने मदरसेमें सेवा और सहयोगके सबक़ सीखे होंगे, अिसलिअे अपने आस-पासके लोगोंमें वे अिन्हीं गुणोंका प्रचार और विकास करेंगे। वे न तो भिखमंगे बनेंगे और न दूसरोंके भरोसे जीना पसन्द करेंगे।

सेवाग्राम, २१-८-'४६

('हरिजन'से) अमृतकुँवर

खद्दरकी माँ

यू॰ पी॰ सरकारके अेक पुराने वनस्पतिविशारद — पेड़पौधोंके माहिर — लिखते हैं कि खद्दरकी माँ देसी रूअी ही हो सकती है, विदेसी रूअी हरगिज़ नहीं। विदेसी रूअीकी ज़रूरत मिलोंके लिअे ही रहती है। अगर यह माना जाय कि देसी रूअीसे बहुत बारीक सूत नहीं निकलता, तो भी अिसमें शक नहीं कि अुसका सूत मज़बूत होता है, और देसी कपासका पौधा — अुसके डण्ठल वग़ैरा — छप्पर बनानेके काम आता है। अिसलिअे लेखकका कहना है कि देसी कपासको बेहतर बनानेकी जितनी भी मेहनत की जाय, वह करने लायक़ है। अपने प्रयोगों द्वारा वे ६ या ८ नम्बरसे २२ नम्बर तक तो पहुँच भी गये हैं। दूसरे, वे यह भी कहते हैं कि ओटनेमें मोटे मगर छोटे रेशेवाली रूअीके मुक़ाबलेमें बहुत महीन और लम्बे रेशेवाली रूअी कम निकलती है। नतीजा अिसका यह होता है कि शहरोंमें जो चीज़ें मशीनोंके ज़रिये बनती हैं, अुनका मुक़ाबला गाँवोंमें बननेवाली हाथकी चीज़ोंके साथ रहता है। यही नहीं, बल्कि दोनोंमें अेक दूसरे क़िस्मका मुक़ाबला भी होता है। यह अेक-दूसरेके विरोधी अर्थशास्त्रका मुक़ाबला है। विदेसी कपास पैदा करनेमें देसी कपाससे कहीं ज़्यादा ख़र्च होता है। दोनोंमें बहुत फ़र्क़ रहता है। यों हमारे लाखों रुपये बरबाद होते हैं। नअी दिल्ही, ७-९-'४६

('हरिजन'से मुख़्तसर) प्यारेलाल

टिप्पणियाँ

कारखाओके कोरे पोथे

अेक विद्यार्थी लिखते हैं —

"आजकल यह अेक रिवाज बन गया है कि हरकोअी अपनेको सियासी या राजनीतिक कार्यकर्त्ता समझता है। और, सियासी काम मतलब सिर्फ़ तक़रीरबाज़ीमें और चुनावोंकी कशमकशमें हिस्सा लेना रह गया है। अगर आप कांग्रेस-कमिटियोंकी कारखाअीके पोथोंको देखें तो आप दुःखी हों। अुनमें सालाना अिजलासकी कारखाअीके सिवा और कुछ होता ही नहीं। ताक़त हासिल करना ही सबका मक़सद बन गया है। विद्यार्थी भी अिसी चक्करमें फँस जाते हैं। कृपाकर बताअिये आप आदर्श सियासी कार्यकर्त्ता किसे कहेंगे?"

मैं तो शुरूसे कहता आया हूँ कि रचनात्मक यानी तामीरी काम पर ही ज़ोर देना चाहिये। अिसके लिअे मैंने अपनी अेक किताब — 'रचनात्मक कार्यक्रम' — में कुछ बातें सिलसिलेसे सुझाअी भी हैं। मुझे यक़ीन है कि अगर वह कार्यक्रम सूझ-बूझसे और सरगरमीसे पूरा किया जाय, तो अुसका परिणाम सियासी स्वराज्यसे कहीं बढ़कर होगा। अगर कांग्रेसके कार्यकर्त्ताओंने अपनी सेवाके ज़रिये कांग्रेसको लोगोंके हृदयरूपी सिंहासन पर बैठा दिया होता, तो तक़रीबन् न तो तक़रीरोंकी ज़रूरत रहती, और न चुनावोंके लिअे जद्दोजहद या दौड़-धूप ही ज़रूरी होती। अुस हालतमें सेवाको ताक़तसे पहले जगह मिलती, और कांग्रेस-कमिटियोंकी कारखाअीकी किताबोंके पन्ने भी तरह-तरहकी रचनात्मक सेवाके ब्योरोंसे भरे रहते।

नअी दिल्ली, १४-९-'४६

('हरिजन'से)

पत्र-लेखकोंसे दरख़्वास्त

कुछ सज्जन नाहक रुपया बरबाद करके मुझे तार भेजते हैं कि मैं अुनको नये मंत्रि-मण्डलमें जगह दिलवाअूँ, या हड़तालोंमें दख़ल दूँ, या भूख-हड़तालियोंको रोकूँ। मैं अिन सबसे कहना चाहता हूँ कि वे न सिर्फ़ फ़ज़ूलकी तकलीफ़ अुठाते और रुपया बरबाद करते हैं, बल्कि कामसे लदे हुअे मेरे साथियों पर और भी बोझ डालते हैं। और, जिस मददकी आशा वे मुझसे करते हैं, वह अुन्हें मिल नहीं पाती। मैं नये मंत्रि-मण्डल पर बाक़ी मंत्रियोंके चुनावके बारेमें हरगिज़ असर डालना नहीं चाहता। मेरी रायमें मेरे लिअे या किसीके भी लिअे अेसा करना ग़लत है। अगर हम चाहते हैं कि नया मंत्रि-मण्डल दयानतदारी और क़ाबलियतके साथ सेवा करे, तो हमें अुसके अिस काममें दख़ल नहीं देना चाहिये। हड़ताल और अुपवासके बारेमें लोग मेरे विचारोंको अच्छी तरह जानते हैं। मेरे अुन विचारोंसे अुन्हें काफ़ी रहनुमाअी मिल सकती है। नाकाफ़ी और अेकतरफ़ा जानकारी पर अपनी राय देना मेरे लिअे नामुनासिब और अनुचित है। फिर, मेरे पास अितना वक़्त भी नहीं कि मैं ज़ाती मामलेकी छानबीन कर सकूँ। मुझमें अब मर्यादित शक्ति रह गअी है। अपने पत्र-लेखकोंको मैं यह यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं अपनी शक्तिभर काम कर रहा हूँ, और अुससे ज़्यादा बोझ अुठाना मेरे लिअे मुमकिन नहीं।

नअी दिल्ली, १५-९-'४६

('हरिजन'से)

कराची खादी-भण्डार

ता॰ २५-८-'४६के 'हरिजन'में छपी 'खादीके साथ बेवफ़ाअी' नामकी मेरी टिप्पणीका हवाला देते हुअे मेरे पास बहुत-से ख़त आये हैं। मैं पूछताछ कर रहा हूँ, और अुम्मीद करता हूँ कि जैसे ही जाँच ख़त्म होगी, नतीजेका अैलान कर दिया जावेगा।

('हरिजन'से) मो॰ क॰ गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बक्त लगाया गया है। आम तौर पर मदद करनेवालोंका वक्त अिसमें जोड़ा नहीं जाता।

२. मजदूरी अिस तरह लगाअी गअी है कि मुनाफ़ा कुछ भी न लिया जाय, और कपड़ेकी क़ीमतमेंसे कपासकी क़ीमत घटाने पर जितनी रक़म बचे, वह सब मजदूरी समझी जाय।

अिन आँकड़ों यानी अेदाद शुमारके बारेमें कुछ कहनेकी ज़रूरत नहीं। जिस मुल्कमें फ़ी आदमी रोज़ाना आमदनी कुछ ही आनोंकी हो; वहाँ अगर चौदह सालका लड़का फ़ी घण्टा अेक आना या क़रीब-क़रीब अेक आना कमा ले, तो ज़रूर ही यह अेक अिन्क़लाबी बात समझी जायगी। जिन दिनों हमारे यहाँ किसानोंको मजबूरन बेकार रहना पड़ता है, अुन दिनों कताअी अुनकी अुस बेकारीको बख़ूबी दूर कर सकती है।

यह तो अिसके आर्थिक पहलूकी बात हुअी। लेकिन अिस तजरबेके जो तालीमी नतीजे निकले, अुन्होंने तो हमें अचम्भेमें डाल दिया। हम लड़कोंसे हर रोज़ पाँच-छह घण्टे काम करवाते थे। अिस बीच अुन्हें किसी तरहकी किताबी जानकारी नहीं देते थे। हमें डर था कि कहीं अैसा न हो कि हम अुनसे सिर्फ़ ग़ुलामोंका-सा काम ले रहे हों! पर अिस क़िस्मका कोअी डर रखनेकी ज़रूरत न थी। हमारे अिस तजरबेसे यह अच्छी तरह साबित हो गया कि कपासकी सफ़ाअी, ओटाअी, धुनाअी और कताअीकी मामूली क्रियाओंमें तालीम देनेकी शक्ति भरी पड़ी है।

सबसे पहले दो चीज़ों पर ज़ोर दिया गया — अेक, ठीक वक़्त पर आना; दूसरे, हर काममें वक़्तका पूरा ध्यान रखना। अिन पर बड़ी सख़्तीसे अमल करवाया गया। घड़ी हमेशा लड़कोंके सामने रहती थी, और अुन्हें सिखाया जाता था कि वे तेज़ीसे बीतते हुअे वक़्तका बराबर ख़याल रक्खें। काम कब शुरू हुआ, कब बन्द किया गया, कब थोड़ी देरके लिअे रोका गया, कामकी रफ़्तारके साथ वक़्तका क्या ताल्लुक़ रहा, वग़ैरा तमाम बातोंका सही-सही हिसाब रक्खा जाता था। हमने महसूस किया कि अगर हम घड़ीका ध्यान नहीं रखते, और गाँवोंमें तो अक्सर हम अुसे भूले ही रहते हैं, तो हम कितने सुस्त बन जाते हैं। लड़कोंने ख़ुद हिसाब लगाकर देखा कि घड़ीको हमेशा अपने सामने रखनेके कितने फ़ायदे हैं। अेक दिन अेक लड़का अपने आपमें मगन होकर बड़ी फुरतीसे चरखा चला रहा था। चरखा चलाते-चलाते वह बोला — "यह पहला मौक़ा है कि हमने जिन्दगीमें अपने वक़्तकी क़द्र करना सीखा है।" जो लोग हमारे गाँवोंकी ज़िन्दगीको और वक़्तके बारेमें हमारी क़ौमी कमज़ोरीको जानते हैं, अुनको अुसकी अिस बातसे कोअी अचम्भा न होगा।

यह भी देखा गया कि अगर आदमी चौकन्ना न रहे, और पूरे ध्यानसे काम न करे, तो काम बहुत कम होने लगता है। ज्यों ही काम करते वक़्त बातचीत बन्द की गअी, अुत्पत्तिका ग्राफ फ़ौरन अूँचा चढ़ने लगा। लेकिन सिर्फ़ ध्यान काफ़ी नहीं। आदमीको हमेशा होशियार रहना पड़ता है, ताकि कहीं भी साधन या औज़ारमें कोअी नुक़्स हो, या काम करनेका तरीक़ा ग़लत हो, तो वह अुसे फ़ौरन ताड़ जाय और तुरन्त दुरुस्त कर ले। अगर तेल न देनेसे या बिनौलोंके मशीनके अन्दर घुस जानेसे चरखी या ओटनी चीख रही हो, और आदमी अुसे ठीक करनेके लिअे हाथ-पैर न हिलाये, तो हो सकता है कि काम अेक दम आधा हो जाय! साथ ही, अिस बातका भी बराबर ख़याल रखना पड़ता है कि कोअी चीज़ यों ही ज़ाया न हो, काम साफ़-सुथरे ढंगसे हो, और अुसकी रफ़्तार बढ़े। मसलन्, सबसे आसान काम यानी कपासकी सफ़ाअीको ही लीजिये। पहले दिन वर्ग या जमातकी औसत रफ़्तार सिर्फ़ छह तोला फ़ी घण्टा थी। वजह अिसकी यह थी कि लड़के कामके वक़्त बड़े आराम और मज़ेसे बातचीत भी करते रहते थे। अिस चीज़ने हमें सोचमें डाल दिया। सवाल यह था कि किस तरह कामकी रफ़्तार बढ़ाअी जाय। हमने कामका तरीक़ा बदला, और दस ही दिनमें कामकी औसत रफ़्तार फ़ी घण्टा ६ तोलासे बढ़कर ६९ तोला हो गअी! लेकिन अिस तक पहुँचनेसे पहले हमें कअी सवाल हल करने पड़े। कौन-सा कचरा शुरू ही में निकाल लेना चाहिये? कौन अपने-आप धुनाअीमें निकल जायगा? कपासकी ढेरीको किस तरह पकड़ा जाय, जिससे रेशे अेक-दूसरेमें जुड़ न जायँ? क्योंकि अैसा होनेसे बादमें ओटाअी और धुनाअीमें काफ़ी दिक़्क़त आती है। कचरा और गन्दे रेशे किस तरह खींचे जायँ जिससे अेक ही बारमें ज़्यादा-से-ज़्यादा कचरा या रेशे निकल आयें? गन्दी कपास, साफ़ की हुअी कपास, और कचरा, तीनों, किस सिलसिलेसे रक्खे जायँ कि गन्दी कपास अुठाने और साफ़ कपास अपनी जगह पर रखनेमें कम-से-कम वक़्त लगे? और यह सारा काम किस तरह किया जाय, जिससे सारी जगह साफ़-सुथरी रहे? अिस तरह कपास-सफ़ाअीके निकम्मे-से कामने, जिसे हम आम तौर पर मज़दूर औरतोंको थोड़े पैसे देकर करवा लिया करते हैं, लड़कोंके दिमाग़को काफ़ी कसरत दी। अिसकी वजहसे अुन्होंने वक़्तका ध्यान रखना सीखा, अुसकी क़ीमत समझी, सूझ-बूझसे काम करनेकी अुनकी ताक़त बढ़ी, अुन्होंने सफ़ाअी सीखी, बचतसे काम करना सीखा, अपनी चीज़ोंको तरतीबसे रखना सीखा, और हरअेक कामको बारीक नज़रसे करनेका माद्दा अुनमें पैदा हुआ। यह सब अपनी कोशिशसे अुन्होंने किया। गांधीजीने अेक दफ़ा कहा था — "कहनेको ये छोटी-छोटी चीज़ें हैं, लेकिन छोटी चीज़ोंसे ही बड़ी चीज़ें पैदा होती हैं। हर कामको बारीक निगाहसे करनेकी बड़ी ज़रूरत है। अुस्तादके नाते हमारा फ़र्ज़ है कि हम अपने लड़कोंमें यह चीज़ पैदा करें।"

दूसरी क्रियाओंने भी बच्चोंमें अूपर लिखी ख़ूबियाँ पैदा करनेके अुतने ही मौक़े दिये। लड़कोंने अुनसे कुछ ख़ास बातें भी सीखीं। ख़ासकर धुनाअी जब हमारे अपने तरीक़ेसे की जाती है, तो वह तालके साथ काम करनेका और बदनके अलग-अलग रग-पट्ठोंको मिलाकर चलानेका अेक अच्छा सबक़ सिखाती है। और, जिन लोगोंको धुनाअीका तजरबा है, वे जानते हैं कि जब कोअी लड़का पींजनकी खोलीसे भेड़-सा बनकर निकलता है, तब अगर अुसे यह कहा जाय कि वह अच्छी तरह साफ़-सुथरा बनकर ही दूसरे कमरेमें काम करने जाय, तो यह अुसके लिअे ज़ब्तका कितना बड़ा सबक़ हो जाता है? कताअी अँगुलियोंमें नज़ाकत पैदा करती है, और हाथों व आँखोंको मिलकर काम करना सिखाती है। बुनाअीमें चौकन्ना रहना पड़ता है, और तेज़ीके साथ ही अक्सर हदसे ज़्यादा सब्रकी ज़रूरत पड़ती है।

अिन दिनों जो दूसरे काम होते थे, अुनसे भी तालीमका काम पूरी तरह लिया गया। मसलन्, सफ़ाअीको ही लीजिये। जिस लड़केको वर्ग या क्लासकी सफ़ाअी करनेका काम सौंपा गया था, अुसे अिस कामके लिअे रोजका आध घण्टा दिया जाता था। वह अपनी जमातके कमरेकी दीवारें, कोने, छत वग़ैरा सब कुछ तो साफ़ करता ही था; साथ ही, अुसे यह भी समझाया गया कि क्लासका कमरा अपने अिर्दगिर्दकी चीज़ोंका अेक हिस्सा है, चुनाँचे ये चीज़ें भी साफ़ की जानी चाहियें। अुसका यह काम अेक साअिण्टिफ़िक या वैज्ञानिक तजरबेकी-सी बारीकीके साथ देखा जाता था। हमारी आदत है कि हम अपने घरसे कूड़ा-करकट निकालकर पड़ोसीके घरके आगे डाल देते हैं। अिस आदतको अूपर लिखे तरीक़ेसे दुरुस्त करनेकी कोशिश की गअी। साथ ही, अिस बातका जतन भी किया गया कि देहाती हिन्दुस्तानके अिन भावी नागरिकोंमें पड़ोसीपनकी भावना (जज़्बा) पैदा हो। फिर, जिस रोज जो काम करना होता था, अुसके मुताबिक़ लड़कोंको अपने आसन नये ढंगसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजाने पड़ते थे। लड़कोंके लिअे अपनी चीजोंको ढंगसे रखनेका यह अेक अच्छा सबक़ हो जाता था।

लेकिन शायद सबसे जरूरी सबक़ जो सिखाया गया, वह सहयोग या बाहमी मददका सबक़ था। देहातके सुधारमें अिसकी बहुत ज़्यादा जरूरत पड़ती है। और यह अेक अैसा सबक़ है, जो कामके जरिये ही सिखाया जा सकता है। सारी जमात या क्लासका काम अिस तरह चलाया जाता था, जिससे बच्चे यह सीखें कि अुन्हें अेक साथ ही जीना या मरना है। और, हैरानीकी बात यह है कि क्लास या जमातकी अिस छोटी-सी दुनियामें सहयोग सिखानेके कितने ही मौक़े निकल आते हैं।

दो महीनोंके अन्दर ही लड़कोंके अुठने-बैठनेके ढंगमें अितना फ़र्क़ आ गया कि तालीमी संघके सब लोगोंने, जो अिस वर्गके बारेमें शिकायत किया करते थे, अिस फ़र्क़को महसूस किया और माना भी। लड़कोंमें ज़्यादा ज़ब्त आ गया — नियम पालनेकी अुनकी ताक़त बढ़ गअी। वे अपना काम ज़्यादा जोश और खुशीसे करने लगे। अुनसे काम ही काम लेते रहनेके बारेमें अुनकी जो शिकायत रहा करती थी, वह कम हो गअी और आखिर वह दिन आया, जब वे अपने-अपने थान बड़े फ़ख़ और खुशीके साथ हमारे पास लाये! हमने देखा कि आर्थिक और तालीमी पहलुओंमें कोअी झगड़ा नहीं। बहुतसे ग्राफ बड़े ध्यानसे बनाये गये — हरअेक विद्यार्थीका अपना अलग भी और सबके मिलाकर भी। जिनसे काम और चरित्रका घना सम्बन्ध पूरी तरह साबित हो गया। ग्राफ दिन-दिन अूपर ही चढ़ते गये। काममें जो तरक़्क़ी हुअी, सो नीचेके आँकड़ोंसे जाहिर है —

कपासकी सफ़ाअी		ओटाअी		कताअी	
तारीख	औसत गति फ़ी घण्टा	तारीख	औसत गति फ़ी घण्टा	तारीख	औसत गति फ़ी घण्टा
९-१-'४६	६ तोला	९-१-'४६	४० तोला	१८-२-'४६	२६२ तार
१२-१-'४६	१४ "	११-१-'४६	४४ "	२१-२-'४६	३०६ "
१३-१-'४६	२१ "	१२-१-'४६	६३ "	२२-२-'४६	३१६ "
१७-१-'४६	४२ "	१६-१-'४६	७२ "	२५-२-'४६	३२८ "
१८-१-'४६	६९ "	२१-१-'४६	१०४ "	२८-२-'४६	३४० "
				४-३-'४६	३४५ "
				२२-३-'४६	३६५ "

तार=४ फुट

सिर्फ़ अुपजका बढ़ना कामके जरिये तालीमकी सफलताको सिद्ध नहीं करता। कामयाबीका सबूत तो था विद्यार्थियोंकी दिमागी ताक़तका बढ़ना। अिसका ज़िक्र अूपर किया जा चुका है। कारखानेमें और कामके जरिये तालीम देनेवाले स्कूलमें फ़र्क़ यह है कि कारखानेमें काम सीखनेवाला कोल्हूके बैलकी तरह काम करता है, और कामके अेक ही हिस्सेको दुहराता जाता है। अिसमें अुसकी दिमागी तरक़्क़ीका कोअी खयाल नहीं रक्खा जाता। स्कूलमें बच्चा सब काम जिन्दा तरीक़ेसे करना सीखता है, मेकानिकी ढंगसे नहीं। अिसलिअे अिस अुम्रमें वह जिस हद तक बढ़ सकता है, बढ़ जाता है। अगर हम अिस नजरसे देखें, तो हर शागिर्द या छात्रके कामकी तरक़्क़ी, तालीममें अुसकी तरक़्क़ीका माप है।

पहले हम डरते थे कि कोअी हमारे स्कूलोंको कारखाने न कहे। अब हम अिस नामसे नहीं डरते। अिस बारेमें हमें यही कहना है कि हमारे स्कूल आर्थिक दृष्टिसे ज़्यादा अुपजाअू हैं, और तालीमकी नजरसे फ़ायदेमन्द। हमारे लिअे सचमुच वह अेक शुभ दिन होगा, जब हम हिन्दुस्तानके हर देहातमें अैसा अेक-अेक कारखाना क़ायम कर सकेंगे।

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ, सेवाग्राम, ३०-६-'४६
('हरिजन'से)

देवप्रकाश

धर्मकथा

१

लॉर्ड क्रेवन लन्दनमें रहता था। अेक बार वहाँ महामारी फैली। अपनी जान बचानेके लिअे अुसने वहाँसे भागनेकी तैयारी की, और छह घोड़ोंकी अेक बग्घी दरवाजे पर आकर खड़ी हो गअी। जब लॉर्ड गाड़ीमें सवार होने लगा, तो अुसके अेक हब्शी कोतवालने दूसरे नौकरसे कहा — "जब मैंने सुना कि महामारीसे बचनेके लिअे मालिक लन्दन छोड़कर जा रहे हैं, तो सोचा, शायद अुनके भगवान् या खुदा गाँव ही में रहते होंगे, शहरमें नहीं।" लॉर्ड क्रेवनने यह बात सुन ली। अुसके दिल पर अिसका बहुत असर हुआ। अुसने सोचा — "मेरा मालिक तो सब कहीं मौजूद है; जिस तरह वह मुझे गाँवमें बचायेगा, अुसी तरह शहरमें भी वह मेरी हिफ़ाजत कर सकता है। अिसलिअे मैं तो यहीं रहूँगा। अिस हब्शीने मुझे अच्छा सबक़ सिखाया। अे मालिक, मैंने तुझ पर श्रद्धा न रक्खी, अिसके लिअे तू मुझे माफ़ करना। मैं अपनी श्रद्धा गँवा कर तेरे हाथमेंसे बच निकलना चाहता था।" यों कहकर अुसने बग्घी वापस बग्घीखानेमें भेजवा दी। वह लन्दनमें रहने लगा। अुसने अपने बीमार पड़ोसियोंकी सेवा की, मगर अुसे बीमारीकी छूत न लगी।

२

अेक खानमें अेक दिन जोरका धड़ाका हुआ। अुस वक़्त टॉमस और बेनेट धड़ाकेवाली जगहसे थोड़ी दूरके अेक हिस्सेमें थे, फिर भी वे समझ गये कि अुन्हें झटपट बाहर निकल जाना चाहिये। रास्ता दम घोटनेवाले धुअेंसे भर गया था। दोनों अुसी रास्ते आगे बढ़े। टॉमस अपने दोस्तके आगे-आगे चल रहा था। कुछ दूर जाने पर अुसने देखा कि वह अकेला पड़ गया है और दोस्त अुसके पीछे नहीं आ रहा है। टॉमस वहीं ठिठक गया। वह लौट पड़ा। अुसने देखा कि बेनेट जहरीली हवासे बेहोश-सा होकर पड़ा है। टॉमसने अुसे झकझोरा, खड़ा किया और आगे बढ़ाते हुअे कहा — 'भागो, भाअी भागो! बचना चाहते हो, तो भाग चलो!' अिस बार अुसने बेनेटको अपने आगे किया था। बेनेट बड़ी मुश्किलसे लिफ्ट तक पहुँचा और वह अूपर खींच लिया गया। लेकिन जो लौट पड़ा था, वह फिर अूपर नहीं आ सका। जहरीली हवाने अुसे वहीं पछाड़ दिया। अिस तरह बेनेटको बचानेके लिअे टॉमसने अपनी जान दे डाली।

३

अेक बूढ़ा और लालची यहूदी साहूकारीका धन्धा करता था। अेक बार वह अपने धर्मगुरुके पास गया। धर्मगुरुने अुसका हाथ पकड़ा और अुसे खिड़कीके पास ले जाकर कहा — "बाहर देखो, और कहो, क्या-क्या दीखता है।"

"रब्बी, मुझे कुछ मर्द, औरतें और छोटे-छोटे बच्चे दिखाअी पड़ते हैं।"

फिर धर्मगुरु अुसे अेक आअीनेके पास ले गये और पूछा — "अब तुम्हें क्या दीखता है?"

"अब तो मैं सिर्फ़ अपनेको ही देखता हूँ।"

अिस पर धर्मगुरुने कहा — "देखो, खिड़कीमें भी काँच लगा है, और अिस आअीनेमें भी काँच है। लेकिन आअीने पर थोड़ी चाँदी लगाअी गअी है; ज्योंही आअीनेके साथ चाँदी मिली कि तुम दूसरोंको देख नहीं पाते, और सिर्फ़ अपनेको ही देखते हो।"*

* जी० अेफ़० वाल्लान्सकी किताबसे।

('हरिजन'से)

वालजी गोविन्दजी देसाअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दशरथ-नन्दन राम

अेक आर्यसमाजी भाअी लिखते हैं —

"जिन अविनाशी रामको आप ओश्वर स्वरूप मानते हैं, वे दशरथ-नन्दन सीता-पति राम कैसे हो सकते हैं? अिस दुविधाका मारा मैं आपकी प्रार्थनामें बैठता तो हूँ, लेकिन रामधुनमें हिस्सा नहीं लेता। यह मुझे चुभता है। क्योंकि आपका कहना तो यह है कि सब हिस्सा लें, और यह ठीक भी है। तो क्या आप अैसा कुछ नहीं कर सकते, जिससे सब हिस्सा ले सकें?"

सबके मानी मैं बता चुका हूँ। जो लोग दिलसे हिस्सा ले सकें, जो अेक सुरमें गा सकें, वे ही हिस्सा लें, बाक़ी शान्त रहें। लेकिन यह तो छोटी बात हुअी। बड़ी बात तो यह है कि दशरथ-नन्दन अविनाशी कैसे हो सकते हैं? यह सवाल खुद तुलसीदासजीने अुठाया था और अुन्होंने अिसका जवाब भी दिया था। अैसे सवालोंका जवाब बुद्धिसे नहीं दिया जा सकता — बुद्धिको भी नहीं। यह दिलकी बात है। दिलकी बात दिल ही जाने। शुरूमें मैंने रामको सीता-पतिके रूपमें पाया। लेकिन जैसे-जैसे मेरा ज्ञान और अनुभव बढ़ता गया, वैसे-वैसे मेरा राम अविनाशी और सर्वव्यापी बना है, और है। अिसका मतलब यह कि वह सीता-पति बना रहा, और साथ ही सीता-पतिके माने भी बढ़ गये। संसार अैसे ही चलता है। जिसका राम दशरथ राजाका कुमार ही रहा, अुसका राम सर्वव्यापी नहीं हो सकता; लेकिन सर्वव्यापी रामका बाप दशरथ भी सर्वव्यापी बन जाता है। कहा जा सकता है कि यह सब मनमानी है — 'जैसी जिसकी भावना, वैसा अुसको होय'। दूसरा कोअी चारा मुझे नज़र नहीं आता। अगर आख़िरकार सब धर्म अेक हैं, तो हमें सबका अेकीकरण करना है। अलग तो पड़े ही हैं, और अलग मानकर हम अेक-दूसरेसे लड़ते हैं। और, जब थक जाते हैं, तो नास्तिक बन जाते हैं, और फिर सिवा 'हम'के न ओश्वर रहता है, न कुछ और! लेकिन जब समझ जाते हैं, तो हम कुछ नहीं रह जाते, ओश्वर ही सब कुछ बन जाता है — वह दशरथ-नन्दन, सीता-पति, भरत व लक्ष्मणका भाअी है भी और नहीं भी। जो दशरथ-नन्दन रामको न मानते हुअे भी सबके साथ प्रार्थनामें बैठते हैं, अुनकी बलिहारी है! यह बुद्धिवाद नहीं। यहाँ मैं यह बता रहा हूँ कि मैं क्या करता हूँ, और क्या मानता हूँ।

नअी दिल्ली, १६-९-'४६ **मोहनदास करमचंद गांधी**

पण्डित नेहरूका बयान

पण्डित जवाहरलाल नेहरूने नीचे लिखा बयान दिया है —

"डरबनके अेक दोस्त मुझे ख़बर देते हैं कि वहाँके कुछ लोग चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी अपनी लड़ाअी अहिंसा छोड़कर हिंसाके ज़रिये चलायें। अिसमें हब्शियोंकी मदद लेनेकी कोशिश भी की जा रही है, और कहा जाता है कि मैं भी अिस रायसे अित्तफ़ाक़ करता हूँ। मुझे यह ख़बर सुनकर बहुत ताज्जुब हुआ है, क्योंकि मैं यह साफ़ तौर पर मानता हूँ कि अैसा करना दक्खिनी अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके लिअे ख़ुदकुशीके बराबर होगा। अगर अहिंसात्मक लड़ाअी यहाँ हिन्दुस्तानमें हमारे लिअे अच्छी मानी गअी है, तो अफ्रीकाके हालात देखते हुअे वहाँ वह और भी ज़्यादा मुफ़ीद है। मैं हिन्दुस्तानियोंको बार-बार यह सलाह दे चुका हूँ कि अुन्हें हब्शियोंके साथ सहयोग तो करना ही चाहिये, और मैं अुम्मीद रखता हूँ कि वे अैसा करेंगे। दक्खिन अफ्रीकामें जो सवाल अुठाया गया है, वह अकेले हिन्दुस्तानका सवाल नहीं। वह तो तमाम अेशियावालों और हब्शियोंका सवाल है। अिसलिअे अिन सबके बीच सहयोग ज़रूरी है। लेकिन सहयोगका असर और अुसमें कामयाबी तो अहिंसाके ज़रिये ही हो सकती है। हिंसासे काम लेना सख़्त बेवक़ूफ़ी होगी।"

('हरिजन'से)

क्या दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रहसे थक जायगा?

डरबनसे ख़बर आअी है कि दक्षिण अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंका अेक अैसा दल पैदा हो गया है, जिसे अब सत्याग्रहमें यक़ीन नहीं रहा। यह दल वहाँके हब्शियोंकी, रंगीन लोगोंकी, दूसरे अेशियाअी लोगोंकी, और जिनकी भी मिल जाय, अुन सबकी मदद लेकर हिंसाके ज़रिये वहाँकी सरकारको हरानेके सपने देखता है। मुझे कहना चाहिये कि अगर यह बात सच हो, तो ख़तरनाक है, और वहाँके जमे हुअे रंगमें भंग डालनेवाली है। जिन हिन्दुस्तानियोंको और दूसरे लोगोंको अहिंसामें श्रद्धा न हो, अुन्हें जानना चाहिये कि दक्षिण अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंने सारी दुनियामें आज जो शोहरत पाअी है, वह अिसलिअे पाअी है कि अगरचे वहाँ अुनकी तादाद कम है, तो भी अुनमें मुसीबतें सहनेकी ताक़त है, और वे बेसब्र बनकर न तो तोड़फोड़ पर आमादा होते हैं, न मार-पीट पर। अुन्होंने यह बात अच्छी तरह सीख ली है कि दुःख सहनेमें ही सुख है, और अेकतामें ही जीत छिपी हुअी है। मैं अपने तजरबेकी बिना पर यह सलाह देता हूँ कि दक्खिनी अफ्रीकामें रहनेवाले हिन्दुस्तानी सत्याग्रहके आज़माये हुअे सुनहले हथियारको छोड़कर दूसरे किसी हथियारके भुलावेमें न आयें।

अिसका यह मतलब नहीं कि वे हब्शियोंकी, रंगीन जातियोंकी, या दूसरोंकी मदद न लें, या अुनके दुःखमें शरीक न हों। शर्त यही है कि सत्याग्रह सबके लिअे आम और अेक ही हथियार होना चाहिये। अुसका पालन करते हुअे अुनको या दूसरोंको कभी पछताना न पड़ेगा। अगर वे दूसरे किसी जालमें फँसे, तो वही मसल होगी कि 'लेने गअी पूत और खो आअी ख़सम।'

नअी दिल्ली, ११-९-'४६

('हरिजनबन्धु'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

गुजरात पगली या गर्वीली?

गुजरातको गर्वीली कहना किसे अच्छा न लगेगा? मीठी बोलीमें अुसे पगली भी कहा जा सकता है। यह लिखते समय गुजरात गर्वीली नहीं लगती, बल्कि असल मानोंमें पगली मालूम होती है। भाअी परीक्षितलाल हरिजनसेवक हैं, लेकिन वे अकेले पगली गुजरातको कैसे सँभाल सकते हैं? जीते जी भी अछूत, और मरकर भी अछूत? मरघटमें तो सब अेक होने चाहियें! फिर, मृतदेहको — लाशको — तो ख़ाक बनना है, अिसलिअे अुसमें रहा मैल भी ख़ाक या राख बन जाता है। अिसे जानते हुअे भी हरिजनकी लाशको मरघटमें जलानेका अधिकार नहीं? बड़ी मुश्किलसे नवसारीमें वहाँके पंचोंने अेक बूढ़े हरिजनके मुरदेको अपने मसानमें जलाने देनेकी मेहरबानी की! लेकिन अिसमें मेहरबानी क्या? ख़ुश होनेकी बात क्या? पर 'जहाँ पेड़ नहीं, वहाँ अेरंड या रेंडी भी पेड़ माना जाता है,' अिस न्यायसे हरिजनके मुरदेको मसानमें जलानेकी अिजाज़त दी गअी, और अुसकी जो तारीफ़ हुअी, अुसका ज़िक्र करना ज़रूरी है। यह ठीक ही है। नतीजा तो अच्छा निकला!

लेकिन दूसरा अुदाहरण पूरी तरह दुःखद है। भाअी परीक्षितलालने गाँवका नाम और पता दिया है। मैं अुसे देना नहीं चाहता। अिसमें निन्दा करने जैसी बात यह है कि अगर ढोर किसी बीमारीसे मरते हैं, तो भी अुसके लिअे हरिजन क़सूरवार माने जाते हैं! 'सवर्ण' कहलानेवाले हिन्दू यह देखनेकी भी तकलीफ़ नहीं अुठाते कि ढोरोंके मरनेकी वजह बिलकुल साफ़ है। पानी बरसता है, घास अुगती है और अुसमें कीड़े भी रहते हैं। भूखे ढोर हरी घास देखकर पागल हो जाते हैं, और अुसे झट-झट खाकर जुगाली करने बैठ जाते हैं। फिर भले अुसमें कितने ही कीड़े क्यों न हों! अिसकी वजहसे ढोर बीमार पड़ते हैं और मर जाते हैं। अिस तरह ढोरोंके मरनेकी वजह साफ़ होती है, हरिजनोंके ढोर भी मरते हैं, फिर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़सूर सारा हरिजनका! गाँवके पंचोंकी गालियाँ और मार खानेका काम हरिजनोंका!!! मेरे सामने पड़े हुओ पत्रमें यही करुण कहानी लिखी है। मैं चाहता हूँ कि यह लेख अुस गाँवके लोगों तक पहुँचाया जाय। अब तो हुकूमतकी बागडोर भी सुधारकोंके हाथमें है। सरकारी अफ़सर और नौकर सीधे-सच्चे बन जायँ, तो बहुत-सा अज्ञान दूर किया जा सके। गाँवके पंच अपना अन्धा विश्वास और वहम मिटायें, हरिजन होशियार और निपुण बनें, सरकार अपने धर्मका पालन करे, और हरिजन-सेवक कोशिश करें, तो मुमकिन है कि गुजरातको लगी हुअी यह बड़ी बीमारी मिट जाय। नअी दिल्ली, १३-९-'४६

('हरिजनबन्धु'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

कोढ़ और छूतका भूत

डॉक्टर काक्रेन वेल्लोरमें औरतोंके मेडिकल कॉलेजके आचार्य हैं। अुन्होंने मुझे अेक खत भेजा है, जिसका सार नीचे दिया जाता है—

> "मद्रासके 'हिन्दू' अखबारमें यह खबर छपी है कि बिहार सरकारने कोढ़ियोंको अेक अलग जेलमें रखनेकी तजवीज़ की है। मुझे यह सुनकर बहुत दुःख हुआ। आपकी हमदर्दी तो दुखियोंके साथ है ही। अिसी लिअे मैं आपको यह खत लिख रहा हूँ। मैं अपने तजरबेसे यह कह सकता हूँ कि जिसे हम कोढ़ या 'महारोग' मानते हैं, वह रोग तो है, लेकिन 'महारोग' नहीं। लोगोंने अपनी घिनकी वजहसे छूतका भूत पैदा कर लिया है। हक़ीक़त यह है कि अिस रोगसे भी ज़्यादा छुतहे रोग मौजूद हैं, जिनको हम खतरनाक नहीं समझते। भाअी जगदीशन्की मेहनतसे हमने यहाँ मद्रासमें कोढ़ या महारोगको छूतवाला रोग मानना छोड़ दिया है। अैसा सब जगह होना चाहिये।"

डॉ० काक्रेनकी अिस बातको मैं मानता हूँ, और अुम्मीद रखता हूँ कि अगर यह खबर सच है, तो बिहारकी सरकारने जो क़दम अुठाना चाहा है, अुसे वह छोड़ देगी। अंग्रेज़ीमें अेक कहावत है कि जब आदमीको कोअी भूत पकड़ लेता है, तो अुससे छुटकारा पाना मुश्किल हो जाता है। हमारे मुल्कमें अेक तरफ़ श्रद्धाका ज़ोर पाया जाता है, और दूसरी तरफ़ भूत-प्रेतका ज़ोर है। और, जब ये दो मिल जाते हैं, तो अिनमें श्रद्धा कौनसी है, और भूत कौनसा है, सो समझना मुश्किल हो जाता है। लेकिन अिनसानका फ़र्ज़ है कि वह भूतोंसे लड़े और अपना अीमान क़ायम रक्खे। कोढ़में अैसी कोअी खराबी नहीं, जिसकी वजहसे हम अुससे डरकर ही मर जायँ। अिसका यह भी मतलब नहीं कि कोढ़में छूत है ही नहीं। हमारे लिअे यह समझ लेना काफ़ी होगा कि कोढ़की छूतसे कहीं ज़्यादा छूत फैलानेवाले दूसरे रोग हैं, जिनकी हम परवाह नहीं करते। हम कोढ़ियोंकी सेवा करें, और अुनका जो अिलाज किया जाना चाहिये, सो करें। यह न मानें कि अिलाजसे कोढ़ीका कोढ़ दूर हो ही नहीं सकता। दूसरोंकी तरह कोढ़ी भी हमारे भाअी हैं। अुन्हें हम कभी तकलीफ़ न दें। यह मानना ही पाप है कि कोढ़ी बड़े पापी हैं, और हम पुण्यवान हैं। छुतहे रोगोंसे बचनेके जो नियम या क़ानून हैं, अुनका पालन करनेसे हम बहुतेरी मुसीबतसे बच जायँगे। नअी दिल्ली, ११-९-'४६

('हरिजन'से मुख़्तसर) **मोहनदास करमचंद गांधी**

अेजण्टोंसे

मेहरबानी करके नीचे लिखी बातों पर ध्यान दें—

१. याद रखिये कि आपको हमारे यहाँ अपनी माँगके मुताबिक़ **दो महीनोंके** दाम पेशगी जमा कराने हैं। अिनमेंसे अेक महीनेकी रक़म यहाँ क़ायमी तौर पर जमा रहेगी, और बाक़ी चालू खातेमें जमा होगी। हर हफ़्ते भेजी जानेवाली कॉपियोंके दाम चालू खातेसे अुठाये जायँगे।

२. अेजण्ट आम तौर पर अमानतके पैसे चेकसे भेजते हैं। मेहरबानी करके खयाल रखिये कि हम चेक नहीं लेते। चुनाँचे आप अपनी रक़म मनीऑर्डर, पोस्टल ऑर्डर या बैंक ड्राफ्टके ज़रिये ही भेजिये।

व्यवस्थापक

हफ़्तेवार ख़त

भयानक दावानल

"जब कोचरबमें पहलेपहल आश्रम क़ायम किया गया, तो अुस वक़्त हमने अपने सामने कुछ आदर्श रक्खे थे। आज भी हमारे सामने वही आदर्श हैं। आज देशमें जो दावानल सुलग रहा है, अुसमें अुन आदर्शोंकी दृष्टिसे हमारा फ़र्ज़ क्या है? हम नम्र बनकर यह क़बूल कर लें कि आम जनता हमसे जो अुम्मीद रखती है, अुसे पूरा करनेकी ताक़त हममें नहीं है। लेकिन हम अुसके लिअे सच्चे दिलसे कोशिश कर रहे हैं। जिन अुसूलोंको हम मानते हैं, अुनको हमने अपने जीवनमें अुतारा होता, तो हम अिस दावानलकी लपटोंमें कूद पड़े होते, और हमने पवित्र-से-पवित्र क़ुरबानी या बलि दी होती। और, शायद अुस क़ुरबानीसे आगकी ये लपटें बुझ गअी होतीं।" २४ अगस्तकी शामको प्रार्थनाके बाद अपने आश्रमवासियोंसे ये शब्द कहकर गांधीजीने अुनसे बिदा ली थी। कलकत्तेमें और दूसरी जगहोंमें जो ख़ौफ़नाक वारदातें हुअी थीं, गांधीजीने अुनका अिस तरह ज़िक्र किया था। अिसके बाद अुन्होंने 'पवित्र बलिदान'की अपनी व्याख्या देते हुअे कहा था कि पतिंगा जिस तरह आगकी लपटोंमें जल मरता है, अुस तरह बिना सोचे-समझे ख़ुदकुशी करना क़ुरबानी नहीं। क़ुरबानी वही पुरअसर होती है, जो बाहर और भीतरसे साफ़ और पाक हो। दुनियामें अैसी कोअी चीज़ नहीं, जो अिस तरहकी क़ुरबानीसे हासिल न हो सके। जिस बलिदानमें ज़रूरी शुद्धता नहीं, वह जान पर खेलकर की गअी ख़ुदकुशी ही है। अुसमें बलिदानका गुण नहीं होता। अिसके सिवा, क़ुरबानी अपनी अिच्छासे की जानी चाहिये, और करनेवालेके दिलमें थोड़ा भी ग़ुस्सा, कीना या दुश्मनीका ख़याल न रहना चाहिये — वह श्रद्धाके साथ की जानी चाहिये।

आगे चलकर गांधीजीने कहा — "सच है कि हम अपने आदर्शका अमल करनेमें कमज़ोर साबित हुअे हैं। लेकिन अीमानदारीके साथ कोशिश करनेमें हमने कभी कोअी कसर नहीं रक्खी। सबके साथ हम भी जेल जानेकी कला सीखे हैं। लेकिन जेल जाना तो सत्याग्रहकी शुरुआत है, अुसकी आख़िरी हद नहीं। जब हिन्दुस्तानके न्यायपूर्ण ध्येय या मक़सदको पानेके लिअे हम अपनी जान क़ुरबान करेंगे, तो वही हमारे लिअे सत्याग्रहकी आख़िरी हद होगी। हम भगवान्से प्रार्थना करें कि वह हमें सच्चे मानोंमें ज़रूरी शुद्धता और निडरता दे, जिससे हमारा बलिदान अुस पवित्र वेदीके लायक़ बने, और हम सच्चे आश्रमवासी बन सकें।"

आनेवाले ज़मानेके शिक्षक

सन् १९४२के अगस्तमें बम्बअीमें होनेवाली कांग्रेस-महासमितिकी बैठकमें शामिल होनेके लिअे रवाना होनेसे अेक दिन पहले गांधीजीने सेवाग्राममें बुनियादी तालीमके शिक्षक विद्यार्थियोंके सामने अेक भाषण किया था। स्व० महादेवभाअीने अुस भाषणका सार तैयार किया था और वह 'हरिजन'में छपा थी। अिस बार दिल्लीके लिअे रवाना होनेके अेक दिन पहले श्री आर्यनायकम्‌के कहनेसे गांधीजीने अुन्हें फिर आध घण्टा दिया था। अलग-अलग सूबोंकी कांग्रेसी सरकारोंने कुल ७६ शिक्षक तालीमके लिअे भेजे हैं। कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्टकी तरफ़से ३० बहनें तालीम लेने आअी हैं। पहलेकी तरह अिस बारकी सभा भी संघके सभा-भवनमें ही रक्खी गअी थी। श्री आर्यनायकम्‌जीकी पत्नी श्रीमती आशादेवी बंगाली हैं। अपने पतिकी तरह वे भी सेवाग्रामके नये तालीमी संघकी प्राण हैं। वे शान्तिनिकेतनमें भी रह चुकी हैं। वे स्वभावसे कलाप्रिय हैं। संस्कृतकी पण्डिता हैं। अुन्होंने सेवाग्रामकी अपनी संस्थामें शान्ति-निकेतनका वातावरण खड़ा कर लिया है। लेकिन अुनका सबसे बड़ा गुण तो यह है कि अुन्होंने अपनी समूची संस्थाको एक माँकी मुहब्बतसे भर दिया है। वे अपने स्कूलके क़रीब २५० विद्यार्थियोंको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेल वग़ैरा क्या करें?

जेलों या पागलख़ानों वग़ैरामें ख़ुराक और कपड़ा कैसे पैदा किया जा सकता है, अिस पर रोशनी डालते हुअे अेक सज्जन, जो जेलोंके अफ़सर रह चुके हैं, यों लिखते हैं:

१. अैसी जगहोंमें जितनी ख़ाली ज़मीन हो, अुसमें आलू, गाजर, वग़ैरा काफ़ी सत्त्ववाली चीज़ें बोनी चाहियें। अैसी चीज़ें गेहूँ, वग़ैराके बदलेमें दिनमें अेक बार आरामसे खाअी जा सकती हैं।

२. जेलोंमें बहुत-सी चीज़ें यों ही बरबाद होती रहती हैं। यह बरबादी रोकी जानी चाहिये।

३. ताक़तवर क़ैदियोंको जेलके अमलदारोंकी नौकरीसे अलग करके साग-भाजी, तरकारी अुगानेका काम लेना चाहिये।

४. जेलोंमें कपास पैदा करनी चाहिये, और अुससे जो रूअी निकले, अुसका सूत कातना और खद्दर बनाना चाहिये।

५. जेलोंमें गोशाला रखनी चाहिये, और जेलके अमलदारोंको कहा जाय कि वे गोशालासे ही दूध ख़रीदें, अपने घरमें पशु-पालन न करें।

६. गोबरकी खादका अिस्तेमाल करना चाहिये।

७. जेलोंके साथ अितनी ज़मीन रखी जाय, जिसमें जानवरोंके लिअे काफ़ी घास पैदा हो सके।

मतलब यह कि सब महकमोंका अेक-दूसरेसे सहकार हो, ताकि अिससे मुल्कको बहुत फ़ायदा हो सके।

नअी दिल्ली, १६-९-'४६

('हरिजन'से मुख़्तसर) मो॰ क॰ गांधी

चरख़ेमें शान्ति

श्री विचित्रनारायण शर्माने गांधीजीके पास अपने अेक डॉक्टर दोस्तका पत्र भेजा है। अब तो डॉक्टर साहब काम नहीं कर सकते, क्योंकि अुनकी आँखें बहुत कमज़ोर हो गअी हैं, लेकिन अुन्होंने लोगोंकी बहुत सेवा की है, और अपने कामका अेक ख़ास दिलचस्प अनुभव भेजा है।

अुनका कहना है कि ज्ञानतन्तुकी बीमारियोंमें अुन्होंने चरख़ेसे बहुत फ़ायदा अुठाया है। अैसे रोगोंमें अक्सर दिमाग़ कमज़ोर हो जाता है, और मरीज़का मन परेशान रहता है — कुछ करने-धरनेकी अिच्छा ही नहीं होती। अैसी हालतमें डॉक्टर भूपालसिंहने अिन रोगियोंसे चरखा कातनेको कहा। तजरबेसे कह सकते हैं कि वह बहुत ज़्यादा फ़ायदेमन्द साबित हुआ। चरख़ेकी गूँज बीमारोंके कानोंमें मीठी लगी। कातनेमें जो पूरा ध्यान लगाना पड़ता है, अुससे भी अुन्हें फ़ायदा पहुँचा, क्योंकि अुन्हें अपने बारेमें यह विश्वास हो गया कि वे काम करनेके लायक़ हैं। धीरे-धीरे मनकी ताक़त बढ़नेसे शरीर पर भी असर पड़ा। डॉक्टर साहबका यह भी कहना है कि कुछ बीमारियाँ, जैसे, हिस्टीरिया, न्यूरेस्थीनिया, अक्सर शहरके लोगोंमें पाअी जाती हैं। गाँवके लोगोंको, जो आज भी चरखा वग़ैरा चलाते हैं, ये रोग कम होते हैं। डॉ॰ भूपालसिंह कअी बार अपने बीमारोंसे फ़ीसकी जगह सूत लिया करते थे। चरख़ेमें अुनकी अितनी श्रद्धा है।

नअी दिल्ली, १६-९-'४६ अमृतकुँवर

अेक ऑस्ट्रेलियन प्रयोग

कुछ दिन हुअे अेक ख़बर पढ़नेको मिली थी कि काग़ज़की मिलका गन्दा पानी अुड़ीसाकी अेक नदीके पानीको ख़राब करता है, और अुससे नदीके किनारे बसे हुअे और अुसीका पानी पीनेवाले गाँवोंको नुक़सान पहुँचता है। अिस सवालको हल करना काग़ज़की मिलवालोंके लिअे मुश्किल था। 'ऑस्ट्रेलियन अेग्रीकल्चरल न्यूज़ लेटर' यानी ऑस्ट्रेलियाकी खेती-बारीकी जानकारी देनेवाले अेक परचेके ताज़ा अंकमें मिलोंके अैसे गन्दे पानीका अिस्तेमाल खादकी तरह करनेके अेक प्रयोग या तजरबेका बयान दिया गया है। अुसमें लिखा है —

"ऑस्ट्रेलियाके टासमानिया सूबेकी २८० अेकड़ घेरेवाली गौशालामें, मिलके गन्दे पानीको नालियोंकी राह वहाँकी ज़मीन पर फैला देनेसे, जहाँ पहले ४५ गायें पलती थीं, वहीं २०० पलने लगीं। पहले यह गन्दा पानी नदीकी निचाअीमें बसनेवाले ज़मींदारोंके पीनेके पानीको बिगाड़ता था।

"आठ घण्टों तक घासको पानीमें अुबालनेके बाद अेक तरहका काला और गन्दा पानी नीचे जम जाया करता है। आठ मील लम्बी और टेढ़ी-तिरछी नालियोंके ज़रिये यह सारा पानी ज़मीनको अुपजाअू बनानेके लिअे अुस पर फैला दिया जाता है। सन् १९३७में यह गन्दा पानी अेक अैसी पथरीली ज़मीनमें सींचा गया, जहाँ कुछ भी पैदा न होता था। आज वही ज़मीन घनी घाससे ढँकी हुअी है।"

अुस परचेमें यह भी कहा गया है कि "अुस ज़मीनसे सिर्फ़ 'आर्टिचॉक थीसल' नामका निराअीके लायक़ अेक बेकार पौधा निर्मूल नहीं किया जा सका है। और, १३ सालोंमें सिर्फ़ चार जानवरोंके बीमार होनेकी बात नोट की गअी है।" नअी दिल्ली, ७-९-'४६

('हरिजन'से) प्यारेलाल

बढ़ती हुअी आबादीकी ख़राबी?

आजकल यह रिवाज-सा पड़ गया है कि अगर लोग भूखों मरते हैं, तो कहा जाता है कि आबादीका बढ़ना ही अिस भुखमरीका कारण है। असलमें यह बात ग़लत है। अिसे साबित करते हुअे अेक लेखक अपने ख़तमें लिखते हैं —

"१. अगर अच्छे बीज बोये जायँ, तो २९ फ़ी सदी ज़्यादा अनाज पैदा होगा।

"२. तेलहन, खली, हड्डी वग़ैरा जो चीज़ें परदेस भेजी जाती हैं, अुनकी निकासी बन्द की जाय। जो सूखा गोबर जलानेके काम आता है, अुसकी जगह अींधनका अिन्तज़ाम किया जाय और गोबरकी खाद बनाअी जाय। अगर यह सब किया जाय, तो आज जितना अनाज पैदा होता है, अुससे दुगुना पैदा हो सकता है।

"३. नहरके पानीका अिन्तज़ाम करनेसे या नये कुअें और तालाब बनानेसे जहाँ पहले सालमें एक ही फ़सल ली जाती थी, वहाँ दो फ़सलें ली जा सकेंगी। आज कुल २४५ करोड़ अेकड़ ज़मीनमेंसे सिर्फ़ ३२ करोड़ ज़मीनमें दो फ़सलें पकती हैं। मसलन्, अिटलीमें फ़ी अेकड़ ४,८१० रतल (पौण्ड) चावल पैदा होते हैं, जब कि हिन्दुस्तानमें फ़ी अेकड़ सिर्फ़ ९३९ रतल होते हैं। अिसी तरह जहाँ अिंग्लैण्डमें फ़ी अेकड़ २,०४५ रतल गेहूँ होते हैं, वहाँ हिन्दुस्तानमें सिर्फ़ ७७४ रतल होते हैं।

"४. अनाजके गोदामोंका ठीक बन्दोबस्त न होनेके कारण हर साल १० लाख टन अनाज चूहे वग़ैरा खा जाते हैं।

"५. हिन्दुस्तानमें काश्तके क़ाबिल ९ करोड़ अेकड़ ज़मीन यों ही पड़ी रहती है, और अुसमें कोअी भी फ़सल पैदा नहीं की जाती।

"६. सन् १९०० में तिजारती फ़सलकी काश्त १६५ लाख एकड़ ज़मीनमें होती थी; सन् १९३० में वही २४० लाख अेकड़ तक पहुँच गअी।"

अगर अिन सब ख़ामियोंको दुरुस्त कर लिया जाय, तो ज़ाहिर है कि बढ़ती हुअी आबादीके बावजूद किसीको भूखों मरनेकी ज़रूरत नहीं रहेगी। यही नहीं, बल्कि मुल्कसे भुखमरी जाती रहेगी, लोगोंका ज्ञान बढ़ेगा, और हमारा अर्थशास्त्र भी दुरुस्त रहेगा।

नअी दिल्ली, ७-९-'४६

('हरिजन'से मुख़्तसर) प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२२ सितम्बर १९४६

चरखा-जयन्ती

चरखा-जयन्तीका मतलब गांधी-जयन्ती है ही नहीं। यह सच है कि चरखा-जयन्तीको मेरी सालगिरहके साथ जोड़ दिया गया है। अिसका सबब दीयेकी तरह साफ़ है। पिछले ज़मानेमें आज़ादीके साथ चरखेका कोअी ताल्लुक़ न था। जो ताल्लुक़ था, वह अुसके साथ लगी हुअी ग़ुलामीका था। रोटीके सूखे टुकड़ोंके लिअे औरतोंको कातनेकी मेहनत अुठानी पड़ती थी। अगर तुम कातो, तो हुकूमत अपनी मर्ज़ीके मुताबिक़ कौड़ी या पाअी तुम्हारे सामने फेंक देती थी। बचपनमें सीतला-सातमके दिन मैंने राजकोटके ठाकुर साहबको ग़रीबोंके सामने पैसे फेंकते देखा था। पैसा फेंकनेकी अिस कलाको मैं खेल समझता था, और अुसमें मुझे मज़ा आता था। मेरा ख़याल है कि पहले अिसी तरह कत्तिनोंके सामने सूतके बदलेमें पैसे फेंके जाते होंगे, और वे ख़ुशीसे अुन्हें अुठा लेती होंगी।

सन् १९०८में जब मैं दक्खिन अफ़्रीकामें था, मुझे ख़याल आया कि अगर हिन्दुस्तानकी कंगाल रिआयाको आज़ाद होना है, तो चरखेको कत्तिनोंकी ग़ुलामीकी निशानी समझनेके बजाय अुसे आज़ादी और अन्नपूर्णाकी निशानीकी शक्लमें देखना सीखना पड़ेगा। अिस बातको पूरी तरह और अिशारेमें समझनेवाले अेक नारणदास गांधी मुझे मिले। अिसीलिअे वे चरखा-जयन्तीका रहस्य समझ गये। चरखेको क्वार बदी १२ (गुजरातमें भादों बदी बारस)के साथ जोड़नेसे पहिले मेरी जानमें अुन्होंने या दूसरे किसीने मेरी बरसगाँठ मनाअी नहीं थी। मैं दक्खिन अफ़्रीकाके लोगोंमें काफ़ी मशहूर हो चुका था, तो भी मुझे याद नहीं कि वहाँ मेरी बरसगाँठ किसीने मनाअी हो। हिन्दुस्तानमें ही अिस दिनके साथ चरखा जोड़ा गया, और तबसे चरखा-जयन्ती मनानेका रिवाज चल पड़ा। अंग्रेज़ी तारीख भी अुसीके साथ होनी चाहिये, अिसीलिये क्वार बदी १२ और २ अक्तूबर, ये दो दिन चरखा-जयन्तीके दिन माने गये। अिसमें नारणदास गांधीका ख़ास हाथ रहा है। आज यह लिखते समय मुझे राजकोटमें मनाये जानेवाले क्वार बदी बारससे दो अक्तूबर तकके दिन याद आते हैं। सच्चा अुत्सव तो तभी मनाया जायगा, जब अहिंसा और आज़ादीके प्रतीकके रूपमें यह चरखा घर-घर गूँजेगा। अगर कुछ ग़रीब बहनें, चाहे वे अेक करोड़ ही क्यों न हों, दो पैसे कमानेके लिअे कातती हैं, तो अुसका अुत्सव क्या मनाया जाय? अुसमें अैसा बड़ा भारी — भगीरथ — काम भी क्या हुआ? अैसा तो ज़ालिम हुकूमतमें भी हो सकता है। पूँजीवादमें तो अैसा दिखावा नज़र आता ही है। करोड़पतिको अपना बड़प्पन बनाये रखनेके लिअे ग़रीबोंको थोड़ा दान देना ही पड़ता है, फिर वह दान किसी मज़दूरीके रूपमें ही क्यों न हो? अुत्सव तभी शोभा देगा, जब ग़रीब और अमीर सब समझेंगे कि अीश्वरने सबको बराबरीका समझा जानेके लिअे पैदा किया है। अूँची जगह पानेके लिअे सबको मज़दूरी करनी है। और, सबकी आज़ादीकी हिफ़ाज़त बारूद-गोला नहीं, बल्कि सूतका गोला करेगा; हिंसा नहीं, अहिंसा करेगी। अपने आस-पासकी मौजूदा हवाको देखें, तो यह बात हँसी लानेवाली मालूम होगी। लेकिन गहराअीसे सोचने पर जान पड़ेगा कि यही बात खरी है, यही बात अमर है। आज तो अिसे साबित करनेवाली श्रद्धा नारणदास-जैसे चरखा-भक्त दिखा रहे हैं। हम सब भी चरखा-द्वादशी और २ अक्तूबरको अिसी रूपमें समझें और मनावें!

नअी दिल्ली, १४-९-'४६

('हरिजनबन्धु'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

अप्रमाणित खादी बनाम मिलका कपड़ा

अेक गुजराती भाअी लिखते हैं:—

"कअी क़ौमी संस्थायें अपने नौकरोंकी वर्दियोंके लिअे ... किताबोंकी जिल्द बाँधनेके लिअे खादीका ही अिस्तेमाल करने पर ... देती हैं। आजकल खादी-भण्डारोंमें सूत दिये बिना शुद्ध खादी ... भी नहीं। अिसलिअे ये संस्थायें अप्रमाणित खादी खरीदती हैं। ... यह वाजिब है? अप्रमाणित खादीको बढ़ावा देनेकी बनिस्बत ... कपड़ेका अिस्तेमाल करनेमें क्या हर्ज है?"

जब दूसरी बहुत-सी चीज़ोंकी तरह आज खादीकी भी तंगी ... तब जिल्द वग़ैराके लिअे खादी माँगना बिलकुल ग़ैरवाजिब है। ... जिन दिनों जितनी चाहो अुतनी खादी मिल सकती थी, अुन ... मैंने ही यह सुझाया था कि जिल्द वग़ैराके लिअे भी खादीका ... अिस्तेमाल किया जाय। सन् १९२१में अहमदाबादकी कांग्रेसके लिअे ... खादी-नगर बनाया गया था। अगर आज कोअी वैसी कोशिश ... तो वह पागल माना जायगा। ज़मानेका ख़याल रखकर ही सब ... किया जाना चाहिये।

लेकिन यह बात मेरी समझमें नहीं आती कि अप्रमाणित खादीके ... मुक़ाबले मिलका कपड़ा बेहतर कैसे हो सकता है? हम अप्रमाणित ... खादीका मतलब समझ लें। अप्रमाणित होते हुअे भी आख़िर ... है तो खादी ही न? यह अलग बात है कि अुसमें धोखा ... है। चरखा-संघने कभी अिस बातका यक़ीन नहीं दिलाया ... प्रमाणित खादीमें धोखा होता ही नहीं, न अैसा यक़ीन वह ... दिला ही सकता है। 'दग़ा किसीका सगा नहीं', अिस कहावतमें ... अेक क़ायमी सचाअी मौजूद है। अप्रमाणित खादीके दोष ... हैं। अैसी खादी बनवानेमें मज़दूरीके दाम चुकानेका कोअी नियम ... ज़ाब्ता नहीं होता। मनमाना मुनाफ़ा लिया जाता है, और ... दफ़ा अैसी खादीका व्यापार चरखा-संघको नुक़सान पहुँचानेके ... अिरादेसे ही किया जाता है। तिस पर भी जिसमें धोखा नहीं, ... हाथसे कता और बुना कपड़ा है, वह खादी ही कहलायेगा। ... ख़ुद कातकर और बुनकर जो खादी पहनूँगा, वह अप्रमाणित ... ही कहलायेगी; लेकिन वह प्रमाणित खादीसे किसी क़दर कम नहीं ... अगर अुसके बदलेमें मैं मिलका कपड़ा पहनूँ, तो वह निहायत ... काम होगा।

अिसका मतलब यह हुआ कि मिलके कपड़ेकी बन्दी ठीक ... है। जहाँ तक हो सके, हम अप्रमाणित खादीका अिस्तेमाल न करें। ... लेकिन जब शुद्ध खादी न मिले, और हमें मिलके कपड़े और ... अप्रमाणित खादीके बीच पसन्दगी करनी हो, तो अुस हालतमें ... अप्रमाणित खादीमें कोअी धोखा न होने पर हमें अुसीसे अपना काम ... चलाना चाहिये।

अपने हाथों काती हुअी और बुनी हुअी खादीको हम अप्रमाणित ... कहकर बदनाम भले करें, मगर दरअसल तो वह प्रमाणित खादीसे ... भी बढ़कर है। जब सभी लोग हाथसे कातने, बुनने या अुसमें ... लग जायँगे, तो चरखा-संघका काम सफलतासे ख़त्म हो जायगा, और ... अुसके जयनादसे आसमान और ज़मीन दोनों गूँज अुठेंगे।

नअी दिल्ली, १२-९-'४६

('हरिजन'से)

मोहनदास करमचंद गांधी

पहुँच

अखिल भारत-कांग्रेस-कमिटीके ख़ज़ानची मुझे यह अित्तला ... देनेको लिखते हैं कि फिलिपाअिन द्वीपके मनीला शहरके हिन्दुस्तानियोंकी ... तरफ़से अकाल-पीड़ितोंकी मददके लिअे अुन्हें कांग्रेसके प्रेसिडेन्टके ... रु० २,४००) मिल गये हैं।

('हरिजन'से)

मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल-कारख़ानोंके अेवज़में क्या ?

अेक भाओी पूछते हैं —

"क्या आप यह मानते हैं कि हमारे देसमें कल-कारख़ाने अिस हद तक बढ़ने चाहियें कि जिससे हिन्दुस्तान अपनी ज़रूरतके जहाज़, रेलगाड़ी, मोटर, हवाओी जहाज़ वग़ैरा ख़ुद बना सके ? अगर आप अिसे न मानते हों, तो क्या मेहरबानी करके आप यह बताअियेगा कि आमद-रफ़्तके अिन ज़रियोंके अेवज़में दूसरे कौनसे ज़रिये होंगे, जिनकी मददसे अेक आज़ाद मुल्कके नाते हिन्दुस्तान अपनी ज़िम्मेदारियाँ अदा कर सके ?

"अगर आप यह क़बूल करते हों कि अिस तरहके कल-कारख़ाने क़ायम किये जाने चाहियें, तो आपकी रायमें अिनके अिन्तज़ाम पर और अिनसे होनेवाले मुनाफ़े पर किसका अधिकार रहना चाहिये ?"

मैं नहीं मानता कि किसी मुल्कको किसी भी हालतमें बड़े-बड़े कल-कारख़ानोंका विकास करनेकी ज़रूरत होनी चाहिये। दरअसल, मैं तो यह मानता हूँ कि घरेलू रोज़गार-धन्धोंके ज़रिये अपने लाखों लोगोंकी हालत सुधारकर, सादा मगर अुम्दा ज़िन्दगी अपनाकर, और दुनियाके साथ हेलमेल और अमनसे रहकर ही आज़ाद हिन्दुस्तान 'त्राहि-त्राहि'—'बचाओ, बचाओ'की पुकार मचानेवाली दुनियाके प्रति अपना फ़र्ज़ अदा कर सकेगा। धन और दौलतकी पूजाने जिस पर बहुत ही तेज़ रफ़्तारसे काम करनेवाली जो मशीनी ताक़त खड़ी कर दी है, अुसकी नींव पर खड़े किये गये अुलझन-भरे भौतिक या दुनयवी जीवनके साथ अूँचे विचारोंका कोओी मेल नहीं बैठता। बढ़िया जीवन जीनेकी कला सीखकर ही ज़िन्दगीकी सारी ख़ूबियोंको प्रकट कर सकेंगे।

ख़तरों या जोखिमोंसे भरा जीवन बितानेमें अेक तरहका नशा होता है, मगर हमें ख़तरोंका सामना करते हुअे जीनेमें और ख़तरोंसे भरी ज़िन्दगी बितानेमें जो फ़र्क़ है, वह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। जो आदमी ख़ूँख़्वार जानवरोंसे भरे और अुनसे भी ज़्यादा ख़ूँख़्वार आदमियोंसे बसे जंगलोंमें बिना बन्दूकके अेक भगवान्का भरोसा रखकर तनहा रहनेकी हिम्मत दिखाता है, वह ख़तरोंका सामना करके जीनेवालोंमें है। दूसरा हमेशा हवामें अूपर-अूपर रहता है और कभी-कभी औंधे सिर ज़मीन पर अुतर आता है। अुसकी कसरत देखकर जो लोग दंग रह जाते हैं, वे अुसकी तारीफ़ करने लगते हैं। अिस तरहका आदमी ख़तरोंसे भरी ज़िन्दगी बिताता है। अेक अपने सामने कोओी मक़सद रखकर जीता है, दूसरेके सामने ज़िन्दगीका कोओी मक़सद होता ही नहीं।

जिस दुनियाने अपनेको सिरसे पैर तक हथियारोंसे लाद रक्खा है और जिसके ठाठ-बाट और दिखावेकी कोओी हद नहीं है, अुसके मुक़ाबलेमें लम्बाओी-चौड़ाओी और आबादीमें काफ़ी बड़ा, मगर अिक्का-दुक्का कोओी देस अिस तरहकी सादी ज़िन्दगी बिता सकता है या नहीं, यह अेक सवाल है, जो बेअेतक़ाद यानी अश्रद्धालु लोगोंके मनमें शक पैदा कर सकता है। मगर अिसका जवाब सीधा और साफ़ है। अगर सादी ज़िन्दगी जीने लायक़ है, तो अुसके लिअे कोशिश की जानी चाहिये; फिर भले वैसी कोशिश करनेवाला कोओी अकेला ही आदमी हो या कुछ अिने-गिने लोगोंका अपना अेक दल हो।

अिसके साथ ही मैं यह भी मानता हूँ कि कुछ ख़ास अुद्योग, जो मानिन्द चाबीके हैं, ज़रूरी होंगे। मैं अुस समाजवादको नहीं मानता, अिसमें लोग या तो घरमें बैठकर बातें करते हैं या हथियारोंकी मददसे मरने-मारनेमें यक़ीन रखते हैं। मैं अपनी श्रद्धाके अनुसार, अेतक़ादके मुताबिक़, अमली काम करनेमें मानता हूँ। मैं अुस दिनकी राह देखता बैठना नहीं चाहता, जब सबके दिल बदल जायँगे और सब अेक-से हो जायँगे। अिसलिअे मैं 'की अिण्डस्ट्रीज़' यानी ख़ास-ख़ास अुद्योगोंकी फ़ेहरिस्त तैयार करनेके झमेलेमें न पड़कर यह चाहूँगा कि जिन अुद्योगों या कल-कारख़ानोंमें बहुत-से लोगोंको अेक साथ काम करनेकी ज़रूरत पड़े, अुनकी मालिक सरकार हो। सरकारके ज़रिये मज़दूर अपनी कमालवाली या अनगढ़ मज़दूरीका फल बहैसियत मालिकके पाते रहेंगे। लेकिन मेरे ख़यालमें अैसी सरकार तो सिर्फ़ अहिंसाकी बुनियाद पर ही खड़ी हो सकती है। अिसलिअे मैं दौलतवालोंकी दौलत अुनसे ज़बरदस्ती छीनूँगा नहीं, बल्कि मैं अुनसे दरख़्वास्त करूँगा कि वे अेक आदमीकी मिल्कियतको सरकारकी मिल्कियतमें बदलनेके काममें मेरी मदद करें। क्या करोड़पति और क्या भिखारी, समाजकी निगाहमें कोओी अछूत नहीं। दोनों अेक ही बीमारीके दो अलग-अलग पहलू हैं। क्या अमीर और क्या ग़रीब, सब अिनसान ही हैं।

हिन्दुस्तानमें और दूसरे मुल्कोंमें हमने हैवानियतके जो नज़ारे देखे हैं, और जो शायद आगे भी देखने पड़ जायँगे, अुनके रहते भी मैं अपनी यह श्रद्धा, यह अेतक़ाद, ज़ाहिर करता हूँ। हम ख़तरोंका सामना करते हुअे जीना सीखें।

दिल्ली जाते हुअे रेलमें, २५-८-'४६

('हरिजन'से) **मोहनदास करमचंद गांधी**

शराब-बन्दीकी साखियाँ

[नीचे अंग्रेज़ीसे लेकर जो साखियाँ दी जाती हैं, अुनके लिअे मैं 'क्लासिक पब्लिशिंग कम्पनी'की तरफ़से छपी ट्रिऑन अेडवर्ड्सकी 'न्यू डिक्शनरी ऑव् थॉट्स' (विचारोंका नया कोश)का ऋणी या क़र्ज़दार हूँ। **वा० गो० देसाओी**]

१

सर्वं मद्यमपेयम् ।

आपस्तम्ब धर्मसूत्र १-५-१७-२१

"किसीको कोओी नशा न करना चाहिये।"

२

"मेरी निगाहमें शायद ही कोओी अैसा गुनाह हो, जो सीधे या आड़े तरीक़ेसे तेज़ शराबकी बदौलत न किया गया हो।"

जज कॉलेरिज

३

"जो शराबी है, वह सब तरहकी बुराअियाँ कर सकता है।"

क्वार्ल्स

४

"शराबख़ोरी अुनको जुअेकी लत लगा देती है।"

कॉटन

५

"जमराज अपना वज़ीरे आज़म चुनना चाहते थे। अिस ओहदेके लिअे कओी दरबारियोंने अपने दावे पेश किये। अुनमें तरह-तरहकी बीमारियाँ और लड़ाअियाँ भी थीं। लेकिन शराबख़ोरीने कहा — "अे ढोंगियो, तुम दूर हटो! क्या मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ?" और, जमराजने फ़ौरन ही अुसे अपनी दाहिनी तरफ़ जगह दी।

डॉडस्ले

६

"फाँसी लगाकर या जहर खाकर मरनेवाले जितना अपनेको मारते हैं, शराबी भी अुतने ही अपने हत्यारे होते हैं।" शेरलॉक

७

"शराब-बन्दीके कामको मैं सभी तरहके समाजी और सियासी सुधारोंकी जड़ समझता हूँ।" कॉब्डन

८

अेकतः सर्वपापानि मद्यपानं तथैकतः ।

चाणक्य (फ्रेंच) ३२

"तराज़ूके अेक पलड़ेमें सब पाप हों और दूसरेमें अकेली शराबख़ोरी हो, तो भी दोनों पलड़े बराबर होंगे।"

९

मद्यपानात्परं पापं न भूतं न भविष्यति ।

चाणक्य (फ्रेंच) ११२

"शराबख़ोरीसे बढ़कर ज़ालिमाना पाप न कोओी था, न कोओी होगा।"

('हरिजन'से)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोया स्वर्ग

वाल्मीकि-मन्दिरमें मेरे कमरेके पिछले हिस्सेमें अेक छोटी-सी खिड़की थी, जो मैदानमें खुलती थी। वहाँ लाल चट्टान और रूखी घास, दोनों, अेक टीला-सा बनाये हुअे थे, जिसके अुस पार दूर तक फैले हुअे आसमानके अलावा और कुछ नजर नहीं आता था। अिससे और बापूकी बकरियोंकी खामोशीभरी सोहबतसे मुझे बराबर आराम मिला करता। अुन बकरियोंको मेरी खिड़कीके नीचे आकर खड़े होनेकी आदत-सी पड़ गअी थी।

जब मैं छोटी बच्ची थी, तो अपने बाबाके देहातवाले मकानमें रहती थी। अुन दिनों मेरी आया मुझे तीन अलग-अलग रास्तों पर घुमाने ले जाती थी। अेक रास्ता शहरको जाता था, दूसरा गाँवको, और तीसरा, खेत और देहातकी पगडण्डीसे होता हुआ पहाड़ियोंको जाता था। वहाँ चिड़ियाँ गाती थीं और जंगली फूल खिले रहते थे। जब कभी मेरी आया मुझसे पूछती कि मैं किस ओर जाना पसन्द करूँगी, तो मैं हर बार अेक ही जवाब देती – 'पगडण्डी परसे पहाड़ी पर।' मेरे लिअे वह खुशी और खूबसूरतीकी दुनिया थी। अिसके पचास साल बाद यहाँ दिल्लीकी भंगीबस्तीमें वह पगडण्डी और पहाड़ी तो नहीं थी, लेकिन अुसकी शकल अुस देहातसे मिलती-जुलती जरूर थी। यही वजह थी कि मेरा दिल अुस बड़े शहरके गर्दोगुबारसे दूर अुस छोटी खिड़कीकी राह बाहर झाँका करता था।

मेरे वहाँ ठहरनेके आखिरी दिन मुझे कुछ जरूरी सामान खरीदनेके लिअे चाँदनी चौक जाना पड़ा। वहाँ मुझे लगा, जैसे चारों ओरसे मेरी तमाम अिन्द्रियों पर चोटें पड़ रही हों। सवारियोंका शोर-गुल और तीखी आवाजें कानोंके पर्दे फाड़े डालती थीं, गन्दगी और बदसूरती आँखोंको चोट पहुँचाती थीं, और बदबूसे दम घुटा जाता था। सबसे बुरी चीज़, लोगोंके वे चेहरे थे, जिन पर अुनके दिल और दिमागका बोथरापन और कठोरता अुभर आये थे।

अिसे तहज़ीब कहते हैं! अिसपर अँगुली अुठाना जमानेको पीछे ले जाना कहा जाता है। चाँदनी चौक कोअी गन्दी गली नहीं है। वह अेक बड़ा बाजार है, और खरीद-फ़रोख्तकी खास जगह है।

अुस दिन शामको मैंने देहरादूनकी गाड़ी पकड़ी। सबेरे जब मैंने डिब्बेकी खिड़कीसे बाहर झाँका, तो मुझे लगा जैसे बहिश्त या स्वर्ग मेरे सामने फैला पड़ा हो। ताज़ा और साफ़ हवा, शरद ऋतुकी खूबसूरती, और तिसपर अेक झरना, जो अपने साफ़ पानीको लिये नाचता और चमकता हुआ चट्टानों परसे दौड़ा जा रहा था। झरनेके दोनों किनारे फूलोंसे लदी झाड़ियों और अूँची परदार घाससे रोशन थे। जंगल अेक चौड़ी घाटीमें खत्म होता था। पूरबके पहाड़ों पर सूरज निकल आया था और सुनहरी रोशनीकी चमचमाहटमें गंगाजी दिखाअी पड़ती थीं, जो हरद्वारकी ओर अपना पाक रास्ता तय कर रही थीं। मेरा दिल पखेरुओंके साथ ही खुदाका शुक्रगुज़ार होकर अेक बारगी गा अुठा।

फिर मैंने शहरोंमें रहनेवाले अुन शहरियोंके बारेमें सोचा, जो अपने डरावने खयालोंसे घिरे रहते हैं। क्या वे अैसी मंज़िल पर पहुँच गये हैं, जहाँ अुन्हें अिन खूबसूरत नज़ारोंके बजाय शहरी गन्दगी ही ज़्यादा पसन्द आती है? क्या अुनकी आँखोंमें वह ताक़त नहीं रही, जिससे वे क़ुदरतमें खुदाका नूर देख सकें? क्या अुनके कान अितने खराब हो गये हैं कि खामोशीकी आवाज़ सुनना तो दूर रहा, वे चिड़ियोंके गाने तक नहीं सुन पाते? और अुनकी नाक? क्या वह पहाड़ोंकी ताज़ा हवा लेनेके बजाय शहरी बदबूमें ही मशगूल रहती है? मैंने अपने साथ सफ़र करनेवाले मुसाफ़िरों पर नज़र डाली। वे दो पढ़े-लिखे नौजवान थे। अेक किताबमें डूबा हुआ था, और दूसरा अेक कोनेमें सटा हुआ सिगार पी रहा था। मैंने सोचा, जब ये लोग मसूरी पहुँचेंगे, तो सिनेमाकी तलाशमें निकलेंगे और वहाँ पर्दे पर चमकते हुअे परदेसी दृश्य देखेंगे, और गन्दे गाने सुनेंगे। अुनकी नज़र केदारनाथकी शानदार बर्फ़ीली चोटियोंकी तरफ़ अदबसे कभी नहीं झुकेगी, और न वे चीड़के खुशबूदार जंगलोंमें भटकनेवाली हवाकी आवाज़ ही सुन सकेंगे।

नये ज़मानेके आदमीकी अिस हालत पर मुझे अफ़सोस होता है। वह अेक भयानक बीमारीका शिकार है, लेकिन अुस बीमारीमें वह खुशियाँ मनाता है, और अुसे अुन्नति, तहज़ीब और अिल्मका नाम देता है!

९-९-'४६

('हरिजन'से)

मीराबहन

काम और तालीम

"काम तालीमका अेक बड़ा ज़बरदस्त ज़रिया है या बन सकता है।"
—'दि क्रिश्चियन न्यूज़ लेटर,' ८ अगस्त, १९४६
'लड़ाअी और स्कूल'की सुर्खीके नीचे।

यही बात गांधीजी भी हमेशासे कहते चले आये हैं। जिन लोगोंने तालीमके मसले पर ग़ौर करनेकी कोशिश की है, वे अबतक अिस बातको पूरी तरह मान चुके हैं कि कामके ज़रिये तालीम देना, यानी कामके साथ पढ़ाअी जोड़ना, पढ़ानेका सबसे अच्छा तरीक़ा है। लेकिन शायद बहुत कम लोग अैसे होंगे, जो अिस बातको समझनेके लिअे तैयार हों कि किताबी पढ़ाअीका अेक लफ़्ज़ जोड़े बग़ैर भी खुद काम ही अेक तालीम है, और वह भी अूँचे-से-अूँचे दरजेकी तालीम! सेवाग्रामके बुनियादी स्कूलमें सातवें दरजेके लड़कोंको लेकर हमें यह साबित करनेका मौक़ा मिला। कअी कारणोंसे अिन लड़कोंकी हालत बहुत-कुछ जङ्गली लड़कोंकी-सी थी। अिनमें अेक कारण तो था, वह आँधी और तूफ़ान, जो ९ अगस्त, १९४२के बाद हमारे मुल्कमें अुठा था; दूसरे, लड़कोंकी यह टुकड़ी पहली टुकड़ी थी, जो बुनियादी तालीमके मुताबिक़ सीख रही थी; और तीसरे, अिनके अुस्ताद भी बार-बार बदलते रहे थे। चूँकि लड़के कोरी स्लेटकी तरह थे, अिसलिअे ध्यानसे और साअिण्टिफिक नज़रिये (वैज्ञानिक दृष्टि)से किये गये तजरबेका असर ज़्यादा अच्छी तरहसे नज़र आना लाज़िमी था। खुशक़िस्मतीसे हम यह भी जानना चाहते थे कि अिन लड़कोंने कपासकी सफ़ाअीसे लेकर कपड़ा बनाने तककी क्रियाओंमें कहाँ तक तरक़्क़ी की है, ताकि बुनियादीके बादकी तालीमके बारेमें स्कीम बनाअी जा सके। अिसलिअे तक़रीबन सारा वक़्त, यानी हर रोज़ क़रीब पाँच घण्टे तक, लड़के सिर्फ़ दस्तकारीका ही काम करते थे, और सो भी बिलकुल कारखानेकी-सी हालत में—यानी अिस बातकी पूरी कोशिश की जाती थी कि वे ज़्यादा-से-ज़्यादा माल पैदा करें। यहाँ 'कारखाने'के लफ़्ज़से किसीको डरनेकी जरूरत नहीं। क्योंकि क्या तालीम और क्या आमदनी, दोनों दृष्टियोंसे यह तजरबा पूरी तरहसे कामयाब रहा।

अिस तजरबेके आर्थिक पहलूका निचोड़ नीचे दिया जाता है—

तालिब-अिल्म (विद्यार्थी)	पुंजम्	बुने कपड़ेकी माप	कपासकी साफ़ाअीसे लेकर कपड़ा बुनने तकमें लगा वक़्त-घण्टोंमें	अेक घण्टेकी मजदूरी रु०-आ०-पा०
१. माधव	१३	८ गज़×३२"	१३८	०-०-११
२. गणपत	१३	८ गज़×३२"	१२३	०-१-१
३. बकाराम	१३	८॥गज़×३६"	११७	०-१-२
४. गोपाल	९	८॥गज़×२७"	१२७	०-०-१
५. हरि	१३	८ गज़×३२"	१३५	०-१-१
६. आत्माराम	१०॥	८ गज़×३२"	११५	०-०-११
७. बामन	९	८॥गज़×२७"	१०२	०-०-११

नोट—१. यहाँ वक़्तका हिसाब आम रिवाजके मुताबिक़ नहीं किया गया। फ़र्ज़ कीजिये कि तीन लड़के 'पींजन' करते हैं, तो वहाँ तिगुना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बच्चोंकी तरह ही पालती और पढ़ाती हैं। अुन्होंने तालीमी संघके सभा-भवनको भी सादे मगर कलापूर्ण ढंगसे सजाया था। फ़र्श पर सफ़ेद रंगके .खूबसूरत चित्र बनाये गये थे। अुजेलेके लिअे जलते हुअे मिट्टीके दीये क़तारबन्द रक्खे गये थे। अुनकी धीमी रोशनी आँखोंको बहुत मीठी लगती थी। प्रार्थनाके मंत्रसे सभाका काम शुरू हुआ। अुसमें हमेशा सच बोलने और सचाअीके रास्ते चलनेकी बात कही गअी थी। शिक्षकोंकी पहचान करानेके बाद गांधीजीसे प्रार्थना की गअी कि वे अुन्हें दो शब्द कहें। गांधीजीने अुनसे कहा–"आपमेंसे अेक भाअीने मुझे अेक ख़त लिखा था। अुसमें यह शिकायत की गअी थी कि यहाँ हाथ-पैरकी मेहनत पर बहुत ही ज़ोर दिया जाता है। मैं मानता हूँ कि अैसी मेहनत बुद्धिके विकासका अच्छे-से-अच्छा ज़रिया है। हमारे मौजूदा स्कूल और कॉलेज ब्रिटिश सल्तनतकी ताक़तको मज़बूत बनानेके लिअे हैं। आपमेंसे जिन्होंने अुनमें तालीम पाअी है, अुन्हें वे ज़रूर अच्छे लगेंगे। अुनमें पढ़नेवाले विद्यार्थियोंको कोअी यह थोड़े ही पूछता है कि वे रास्तों और पाख़ानोंकी सफ़ाअी करना जानते हैं या नहीं? लेकिन यहाँ तो सफ़ाअी और स्वच्छता आपको अेक बुनियादी चीज़की तरह सिखाअी जाती है। भंगीके काममें भी कला तो है ही। '**तद् विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया**', यानी बार-बार पूछकर और विनय या अदबके साथ आपको यह कला सीख लेनी चाहिये। बार-बार पूछनेमें अुजड्डता भी हो सकती है। अिसी-लिअे ज्ञान या अिल्म हासिल करनेकी चाहके साथ अदब यानी नम्रताकी भी ज़रूरत रहती है। तभी बुद्धिके दरवाज़े खुलते हैं।

"अुपयोगी शरीर-श्रमके ज़रिये हमारी बुद्धिका विकास होता है। बुद्धि तो अिसके बिना भी बढ़ सकती है, लेकिन वह बुद्धिका विकास नहीं, बिगाड़ होगा। अुससे हम गुण्डे भी बन सकते हैं। बुद्धिके साथ-साथ आत्मा और शरीरका भी विकास होना चाहिये। अिसीलिअे यहाँकी तालीममें हाथ-पैरकी मेहनतको ख़ास जगह दी गअी है। बुद्धिके साथ आत्माका विकास होने पर ही बुद्धिका सदुपयोग होता है। वरना बुद्धि हमको बुरे रास्ते ले जाती है। और वह अीश्वरी देनके बदले शाप बन जाती है। अगर आप अिस चीज़को समझ लेंगे, तो आपको भेजनेवाली संस्थायें आप पर जो ख़र्च कर रही हैं, वह बेकार न जायगा और आप अपने ग्रामकी शान बढ़ा सकेंगे।"

वह शुभ दिन

२ सितम्बरके दिन पण्डित जवाहरलाल नेहरूने और अुनके साथियोंने अपना सच्चा फ़र्ज़ समझकर काँटोंका ताज पहना। गांधीजीके लिअे वह आत्मनिरीक्षणका दिन बन गया। अुस दिन बड़े सबेरे, जब कि बहुतसे लोग सोये हुअे थे, वे पंडित जवाहरलालके लिअे अेक ख़त लिखने बैठ गये। ख़तमें अुन्होंने लिखा कि अिस शुभ या मुबारक मौक़े पर नअी सरकारके मेम्बरोंका क्या फ़र्ज़ होना चाहिये। शामको अुन्होंने तफ़सीलके साथ लोगोंको अुसका सार कह सुनाया।

शामकी प्रार्थनामें बोलते हुअे गांधीजीने कहा—"बरसोंसे बेसब्र होकर जिस दिनकी राह हम देख रहे थे, वह दिन आज अुगा है। यह तो नहीं कहा जा सकता कि आज हमें पूरा-पूरा स्वराज मिल गया है, लेकिन यह सच है कि आजके दिन हमने स्वराजके दरवाज़ेमें क़दम रखनेकी कोशिश की है। चूँकि यह काम आपसी समझौतेके ज़रिये हुआ है, अिसलिअे आज हमें वाअिसरायको और ब्रिटिश मंत्रि-मण्डलको धन्यवाद देना चाहिये। अबतक अुनके साथ हमारी दुश्मनी थी; आज दुश्मनी नहीं रही, दोस्ती हो गअी है। नतीजा यह है कि हिन्दुस्तानकी बागडोर हमारे हाथमें आ गअी है। कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि वाअिसरायका महल ग़रीबोंका अस्पताल कब बनेगा? गोलमेज कॉन्फ्रेन्सके मौक़े पर कही अपनी बात मुझे याद है। अुस वक़्त वहाँके सभी मिनिस्टरों और मेम्बरोंके सामने मैंने कहा था कि वाअिसराय अेक बड़ा-सा महल लेकर बैठे हैं। वहाँ तो ग़रीबोंके लिअे अस्पताल बनना चाहिये। यह कहकर अुस वक़्त मैंने कोअी अतिशयोक्ति नहीं की थी। आज भी मेरा वही ख़याल है। फिर भी, आज हम वाअिसरायको अपना महल खाली कर देनेके लिअे कैसे कह सकते हैं? आज यह बात हमारे बस की नहीं, और यह शिष्टाचार या अदब के भी ख़िलाफ़ है। अभी हमने सच्ची आज़ादी हासिल नहीं की है। जब हिन्दुस्तानके बेताज बादशाह जवाहरलाल और अुनके साथी पूरी तरह अपने फ़र्ज़ अदा करेंगे, तभी वाअिसराय यहाँसे अपने आप चले जायँगे। वे यहाँ रहना नहीं चाहते। अुन्हें मजबूरन् रहना पड़ता है। यह अुनकी अपनी दृष्टि है। अगर हम काम करके दिखायेंगे, तो अुन्हें जाना ही होगा। और, तभी वाअिसरायका महल अस्पताल बनेगा।

जश्न या अुत्सवका मौक़ा नहीं

"आज जश्न मनानेका दिन नहीं। अभी वह मौक़ा नहीं आया। क्योंकि आजके मंत्रि-मण्डलमें मुस्लीम लीग शरीक नहीं है। हमें यह क़बूल करना होगा कि वह मुसलमानोंकी अेक ज़बरदस्त संस्था है। मुसलमान हमारे सगे भाअी हैं। वे हिन्दुस्तानमें पैदा हुअे हैं। हम दोनोंकी माँ अेक ही है। हमारी भारतमाता अमर है। लेकिन अुसे पहचानता कौन है? हम अपनी अिस माँको पहचानें, अिसके पैर धोयें, अिसका चरणोदक पवित्र समझ कर पियें, और पुण्य कमायें! जब मेरे माता-पिता ज़िन्दा थे, तो मैंने अिसी भावसे अुनकी सेवा की थी। लेकिन वे तो चले गये। फिर भी हमारी भारतमाता तो है ही। हमें अुसकी सेवा करनी है। हम सब अुसकी गोदमें पले हैं। अिसीलिअे हम सब सगे भाअी हैं। हो सकता है कि कभी हमारे भाअी हम पर ग़ुस्सा हों, हमें गालियाँ दें, और शायद मारें भी। लेकिन मारका जवाब हम मारसे दें, तो फिर हम भाअी कैसे हुअे? अेक ज़माना था, जब अली भाअी ज़िन्दा थे, और हिन्दू व मुसलमान भाअी-भाअीकी तरह रहते थे। आज हालत बदल गअी है। अिसलिअे हमें चाहिये कि हम आजके दिन न तो मिठाअियाँ खायें, और न रोशनी करें। अीसाअी धर्ममें अुपवासको बहुत महत्त्व दिया गया है। अिस्लाममें भी रोज़ेका वही महत्त्व है। हम जब जन्माष्टमी मनाते हैं, तो रबड़ी-मलाअी और दूसरी मिठाअियाँ खाते हैं। अष्टमी मनानेका यह तरीक़ा नहीं। अिसी तरह आज भी हम अुत्सव मनानेके बदले अन्तर्मुख बनें—अपने भीतर झाँकें, सोचें, और प्रार्थना करें! मेरे मनमें यह ख़याल अुठता है कि आख़िर हिन्दुओंने अैसा क्या अपराध किया है, जिससे हमारे मुसलमान भाअी हम पर ग़ुस्सा हुअे हैं, और हमें अपना दोस्त नहीं, बल्कि दुश्मन मानने लगे हैं? वे कहते हैं—'अंग्रेज़ और हिन्दू दोनों हमारे दुश्मन हैं। हिंसा-अहिंसाके अुसूलोंसे हमें कोअी निस्बत नहीं। हम अुन्हें नहीं मानते। अिसलिअे कभी-कभी हम मार-काटसे भी काम ले सकते हैं।' जवाबमें मैं अुनसे कहूँगा—'आप दो घोड़ों पर सवार नहीं हो सकते। या तो आप अंग्रेज़ोंको अपना दुश्मन मानिये, या हिन्दुओंको। अिस्लाम यह नहीं सिखाता कि हम अपने हमवतनोंको दुश्मन समझें। मैंने अिस्लामका थोड़ा-बहुत अभ्यास किया है। दक्खिन अफ्रीकामें मैं २० बरस तक मुसलमानोंके साथ अुनका दोस्त बनकर रहा हूँ। अिसलिअे मैं अिस चीज़को समझ नहीं पाता। अगर आप हिन्दुओंसे दुश्मनी रखते हैं, तो अंग्रेज़ोंसे आपकी दोस्ती हो ही जाती है। और, अगर अंग्रेज़ोंसे लड़ना है, तो हिन्दुओंके साथ मेल रखना चाहिये'। हमारे जो साथी वज़ीर बने हैं, वे वहाँ अंग्रेज़ोंकी ख़ुशामद करने नहीं गये। वे तो सेवा करनेके अिरादेसे गये हैं। हिन्दुस्तानको आज़ाद बनाने गये हैं। अगर मुसलमान भी अैसा ही करें, तो सबका भला हो। अिसीमें अिनसानियत है। यही सच्चा अिस्लाम धर्म है। मुसलमान झगड़ें, लड़ें, मार-पीट करें, तो भी हमारे मंत्रियों या वज़ीरोंको सबके साथ दोस्ताना बरताव करना है। अुन्हें यह साबित कर दिखाना है कि दूसरोंकी तरह वे मुसलमानोंके भी सेवक हैं। अगर **अुन्होंने अैसा न किया, तो अुन्हें अपनी जगह छोड़नी पड़ेगी।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरानी प्रतिज्ञा का पालन करो

“ नमक का क़ानून आज भी मौजूद है । अुसकी बदौलत हम बरबाद हुअे । हमने दाँडी-कूचका प्रोग्राम बनाया । सारा देश जाग अुठा। हमारी बहनें भी जागीं । अुन्होंने वह बहादुरी दिखाअी कि सारी दुनिया देखकर दंग रह गअी ! मैंने देखा है कि अेक चुटकी नमक लेने की कोशिश में अुनके हाथ टूटे हैं । रोंगटे खड़े करनेवाली अिन तमाम बातोंका मैं .खुद गवाह हूँ । अैसा यह नमक-क़ानून अब अेक दिनको भी न रहना चाहिये । अेक अर्ज़ीदारके नाते देशके सभी लोगोंकी तरफ़से मैं मंत्रि-मण्डलसे यह कहा चाहता हूँ कि वह अिस क़ानूनको रद कर दे । तभी गाँवोंमें रहनेवाले हमारे करोड़ों भाअी-बहन जान सकेंगे कि पानीकी तरह नमक भी अुन्हें मुफ़्त मिल सकता है । अगर नमक पर अेक पाअीका भी कर बैठाया जाता है, तो अुस हालतमें देश आज़ाद न कहा जायगा । गाँवोंमें पानीकी तरह नमक भी मुफ़्त मिलना चाहिये ।

आगे चलकर गांधीजी ने कहा — “ क़ौमी अित्तहाद या अेका अख़बारोंमें बयान छपानेसे क़ायम नहीं किया जा सकता । अिसका दार-मदार तो मंत्रियोंकी कार-गुज़ारी पर है । किसीको दबानेके लिअे मिलिटरीकी मदद न ली जानी चाहिये । मैं तो कहूँगा कि पुलिसकी मदद भी न ली जाय । अगर हमें आपसमें लड़ना है, तो लड़ लेंगे; बहादुरीसे लड़ेंगे, और फिर ख़ामोश हो जायँगे । मतलब यह कि क़ौमी अित्तहादके लिअे मंत्रियोंको जितना कुछ वे कर सकते हैं, सो सब करना चाहिये ।

“ अितना सब करने पर भी छुआछूतका सवाल रही जाता है । अुसका क्या हो ? सन् १९२० की कलकत्ता कांग्रेसने और १९२१की नागपुर कांग्रेस ने छुआछूतके ख़िलाफ़ जो ठहराव मंज़ूर किये थे, अुनमें साफ़ तौर पर लिखा है कि छुआछूत हिन्दूधर्मके लिअे कलंक है । वह मिटनी चाहिये । अेक भंगीके नाते मैं आपसे कहता हूँ कि भंगियोंको जितनी राहत पहुँचाअी जा सके, अुनकी हालत जिस हद तक सुधारी जा सके, आपको पहुँचाना और सुधारना है । दूसरा कोअी चारा नहीं । बात आपके हाथकी है । आज वाअिसराय हमारी शर्तें मानकर अपनी गादी पर बैठे हैं । हमें यह चीज़ समझ लेनी चाहिअे । पंडित जवाहरलालके साथ वाअिसरायकी बात-चीत अिसी ढंग पर हुअी है । दोनों तरफ़के लोगोंको यह जान लेना चाहिये ।

“ आख़िरमें अपने सात लाख गाँवोंको हम कैसे भूल सकते हैं ? सन् १९२०के प्रस्तावमें हमने खादीकी प्रतिज्ञा ली है, और कहा है कि जबतक गाँवोंके लोग कातेंगे नहीं, वे स्वावलम्बी नहीं बन सकेंगे। वे जो कपड़ा पहनें, सो मिलका नहीं, बल्कि हाथ-कते सूतका होना चाहिये । लोग पूछते हैं — ‘ हम सूत कहाँसे दें ’ ? यह सुनकर मुझे हँसी भी आती है और रुलाअी भी । जवाब अिसका यह है कि .खुद कातो और पहनो । मंत्रि-मण्डलको अिस प्रतिज्ञाका पालन करना है । अुनके घरोंमें और दफ़्तरोंमें खादीके सिवा दूसरा कपड़ा न होना चाहिये । मैंने कहा है कि खादीके लिअे सूत मैं दूँगा । महीन खादी न मिले, तो परवाह नहीं; जो मिलेगी अुसीसे काम चलाना होगा । जब हिन्दुस्तान आज़ाद हो जायगा, और हमारे गाँवोंमें तेज आ जायगा, तब महीन खादी भी मिलने लगेगी । चुनाँचे खादीको आगे बढ़ानेके लिअे अुन्हें जो भी कारवाअी करनी पड़े, वे करें । अैसा होने पर ही हिन्दुस्तानकी स्वतंत्रता और पवित्रताकी रक्षा होगी ।

“ मुझे अुम्मीद है कि यह आरज़ी सरकार सच्ची रहनुमाअी करेगी, और हिन्दुस्तानको सचाअी, पाकीज़गी और सच्ची आज़ादीके रास्ते पर ले जायगी । मैं यह भी अुम्मीद करता हूँ कि अुसकी अिस कोशिशमें सभी हिन्दुस्तानी नेकदिलीके साथ, निष्ठापूर्वक, अुसकी मदद करेंगे । ” नअी दिल्ली, ३–९–’४६

(‘ हरिजन ’से) प्यारेलाल

क्या यह बुज़दिली नहीं ?

स० — आपकी रायमें कायरता या बुज़दिली अहिंसा नहीं, बल्कि अन्यायका विरोध (मुख़ालिफ़त) करना अहिंसा है । आप मान चुके हैं कि बेगुनाह आदमियोंको — जैसे कि सविनय आज्ञा-भंग करनेवाले होते हैं — गिरफ़्तार करना और जेल भेजना अन्याय है । लेकिन आपने ख़ुशीसे गिरफ़्तार होना और जेल जाना मंज़ूर किया है । क्या यह बेमेल और कायरतापूर्ण नहीं है ?

ज० — आपके सवालसे साफ़ मालूम होता है कि आप नहीं जानते कि अहिंसा किस तरह काम करती है । अन्यायी क़ानून ख़ुद अेक क़िस्मकी हिंसा है । अुसे तोड़नेवालेको गिरफ़्तार करना अुससे भी बड़ी हिंसा है । अहिंसाका क़ानून कहता है कि हिंसाका मुक़ाबला हिंसासे नहीं, बल्कि अहिंसासे करना चाहिये । हरअेक क़ानूनको तोड़नेकी सज़ा मुक़र्रर है । मेरे किसी क़ानूनको अन्यायपूर्ण कहनेसे ही तो वह वैसा नहीं बन जाता । फिर भी मेरी रायमें वह अन्याय तो है। सरकारको हक़ है कि जबतक वह क़ानून अुसकी किताबमें मौजूद है, तबतक वह अुसकी तामील करावे । और मेरा धर्म यह है कि मैं अुसका मुक़ाबला अहिंसाके ज़रिये करूँ । अैसा करनेके लिअे मैं अुस क़ानूनको तोड़ूँगा और शान्तिसे गिरफ़्तार होकर जेल जाअूँगा । अिसे मैं अुस हद तक बहादुरीका काम समझता हूँ, जिस हद तक कि बहादुरी अिसके लिअे ज़रूरी है । अगर यह भी मान लिया जाय कि अेक मामूली क़ैदीका-सा सलूक मेरी दिमाग़ी हालतमें कोअी फ़र्क़ पैदा नहीं कर सकता, तो भी यहाँ यह सवाल बेमौज़ूँ है कि आज मेरे जैसे आदमीके लिअे जेल जाना तकलीफ़देह नहीं रहा है । अिस तरह गिरफ़्तारीकी मुख़ालिफ़त न करना अहिंसाकी अेक लाज़िमी शर्त हो जाती है, कायरताकी निशानी हरगिज़ नहीं । अिसके बरख़िलाफ़ मुख़ालिफ़त करना, यानी गिरफ़्तार वग़ैरा होनेसे अिनकार करना, सचमुचकी शेख़ीबाज़ी और बेसमझ हिंसा कही जायगी । अिसे बुज़दिलका डींग मारना तक कहा जा सकता है । नअी दिल्ली, १८–९–’४६

(‘हरिजन’से) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय–सूची

		पृष्ठ
बन्द करो	... गांधीजी	३१३
सम्मिलित प्रार्थना	... गांधीजी	३१३
दिल-बहलावका अेक मौक़ा	... अमृतकुँवर	३१४
खद्दरकी माँ	... प्यारेलाल	३१४
बढ़ती हुअी आबादीकी ख़राबी ?	... प्यारेलाल	३१५
चरखा-जयन्ती	... गांधीजी	३१६
अप्रमाणित खादी बनाम मिलका कपड़ा	... गांधीजी	३१६
कल-कारख़ानोंके अेवज़में	... गांधीजी	३१७
शराब-बन्दीकी साखियाँ	... गांधीजी	३१७
खोया स्वर्ग	... मीराबहन	३१८
काम और तालीम	... देवप्रकाश	३१८
धर्मकथा	वालजी गोविन्दजी देसाअी	३२०
दशरथ-नन्दन राम	... गांधीजी	३२१
पंडित नेहरूका बयान	...	३२१
क्या दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रहसे थक जायगा ?	... गांधीजी	३२१
गुजरात पगली या गर्वीली ?	... गांधीजी	३२१
कोढ़ और छूतका भूत	... गांधीजी	३२२
हफ़्तेवार ख़त	... प्यारेलाल	३२२
क्या यह बुज़दिली नहीं ?	... गांधीजी	३२४
टिप्पणियाँ		
कारवाअीके कोरे पोथे	... मो० क० गांधी	३१४
पत्र-लेखकोंसे दरख़्वास्त	... मो० क० गांधी	३१५
कराची खादी-भण्डार	... मो० क० गांधी	३१५
जेल वग़ैरा क्या करें ?	... मो० क० गांधी	३१५
चरखेमें शान्ति	... अमृतकुँवर	३१५
अेक ऑस्ट्रेलियन प्रयोग	... प्यारेलाल	३१५
पहुँच	... मो० क० गांधी	३१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजि० नं० बी, ४४४८

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक – प्यारेलाल

भाग १० | अंक ३४

मुद्रक और प्रकाशक जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २९ सितम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६, विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

ग्यारह दिनका कताअी-क्लास

यह क्लास भंगी-बस्तीमें हुआ था। अुसका बयान करते हुअे इन्दु गांधीने अेक चिट्ठी लिखी है। अुसमेंसे जानने लायक़ बातें नीचे दे रहा हूँ —

"यह क्लास ता० ११-९-'४६ से शुरू हुआ, और २१-९-'४६को पूरा हुआ। कुल १५९ भाअी-बहन शामिल हुअे। अुनमें आठ बरसके तीन बच्चोंसे लेकर ७५ बरसके दो बूढ़े तक थे। छुट्टियोंके बाद स्कूल खुल जाने और कुछके बीमार पड़ जानेके सबब, तादाद घटकर १२६ रह गअी थी। ग्यारहवें दिन पूरे सवा घण्टेका अिम्तहान लिया गया, जिसमें ५१ बहनों और ५९ भाअियोंने यानी कुल ११० लोगोंने हिस्सा लिया। दिनमें दो क्लास अलग-अलग चलते थे। सबेरे ७से ११ तक और दोपहरको २से ५॥ तक। सबेरेके वक़्त ज़्यादातर दफ़्तर जानेवाले लोग आये, अिसलिये वे दो-अढ़ाअी घण्टेके लिअे ही आ सकते थे। दोपहरके वक़्त ज़्यादातर बहनें ही आअीं।

"अिस क्लासमें फ़ी आदमी कम-से-कम १६ घण्टे और ज़्यादा-से-ज़्यादा ४० घण्टेका अभ्यास हुआ। बीस भाअी-बहनोंको पहलेसे कातना आता था। तुनाअी तो सबके लिअे नअी थी। शुरूमें हमारे पास पूरा सरंजाम नहीं था, अिसलिअे घर ले जानेके लिअे चरखे वग़ैरा नहीं दिये जा सके। जब सरंजाम मिल गया, तो वे घर ले जाकर अभ्यास करने लगे। सवा घण्टेके अिम्तहानमें कपास ओटकर पूनी बनाने और सूत अुतारनेका वक़्त मिलाकर कातनेकी जो गति (रफ़्तार) रही, वह नीचे लिखे मुताबिक़ थी —

२३ लोगोंकी	६० तारके अूपर
२२ ,,	७५ ,, ,,
१० ,,	९० ,, ,,
१७ ,,	१०० ,, ,,
८ ,,	१२५ ,, ,,
५ ,,	१५० ,, ,,
१ भाअीकी	२३९ तार
८६	

सूतका ज़्यादातर नम्बर १९से २५ तक था। बहुत थोड़े लोगोंका सूत खराब निकला, और वह भी अुन्हींका, जिन्होंने बहुत कम काता था।"

"लोगोंका दिल बढ़ानेके लिअे सूत कातनेके सब तरीक़ोंकी अेक छोटी-सी नुमाअिश भी ता० २२-९-'४६को की गअी। अेक आनेका टिकट भी रखा। अुसमें पुराने बड़े चक्करवाले चरखेसे लेकर आजका किसान-चरखा, मगन-चरखा (जिस पर दोनों हाथों से सूत कात सकते हैं), बाँसका तिकोना चरखा (छोटा किसान चरखा, जो अूपरको अुठा रहता है), पिंजाअी, धनुष-तुनाअी, बाँसकी छुरीसे तुनाअी वग़ैराके साधन रखे गये थे। अून कातनेका चरखा भी रखा गया था। अेक बड़ी मज़ेदार बात यह थी कि अेक, अेक हाथवाले भाअी यरवड़ा चरखेसे, टेबल पर बैठकर और पाँवसे चरखा चलाकर बायें हाथसे सूत कात रहे थे। अेक अन्धी बहन भी कातती थीं। अुनकी रफ़्तार २४० तारकी थी। नुमाअिशके दूसरे हिस्सेमें ७८ लाख गज सूतके ढेरके आस-पास कपासके और बारीक सूतके तरह तरहके नमूने, देवकपासका अेक बड़ा पौधा, तरह-तरहके चरखों, तकलियों और पींजनोंकी तसवीरें, वग़ैरा चीज़ें सजाअी गअी थीं। अिस नुमाअिशमें कस्तूरबा-बालिकाश्रमकी हरिजन-लड़कियों, हरिजन-अुद्योगशालाके लड़कों और गांधी–आश्रम, चाँदनी चौक, दिल्लीवालोंकी मदद रही। लोगोंने भी अुम्मीदसे ज़्यादा दिलचस्पी दिखाअी। नुमाअिश अेक बजेसे पाँच बजे तक खुली रही, पर लोगोंकी अितनी भीड़ हुअी कि सवा दो बजे, सवा घण्टेके लिअे, टिकट देना ही बन्द करना पड़ा। अिन तरीक़ोंकी नुमाअिश कमरेमें रखी गअी थी, अुसे भी वहाँसे बाहर लाना पड़ा। कमरेमें रखनेसे तो लोगोंको बड़ी तकलीफ़ थी। नुमाअिश श्री जयप्रकाश नारायणके हाथों खुलवाअी गअी थी।

"२॥ बजेसे ५ बजे तक, गांधी–आश्रम चाँदनी चौक, दिल्लीकी ओरसे अेक घंटे और आधे घंटेकी पाँच तरहकी कातनेकी होड़ रखी गअी। पूरी कताअी (कपास हाथसे ओटकर और पूनी बनाकर कातना), सादी कताअी, बारह बरसके बच्चोंकी होड़, आँख बन्द करके (आँखों पर पट्टी बाँधकर) कातना, और बिना तार टूटने दिये कातना। अिसमें बहुत-से लोगोंने हिस्सा लिया और होड़ करनेवालोंने बहुत दिलचस्पी दिखाअी।

"पहले अिरादा था कि नुमाअिशकी जगह पर ही शामकी प्रार्थना और सामूहिक (मजमूअी) कताअी भी हो। सामूहिक कताअीमें गांधीजी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, बादशाह ख़ान, राजेन्द्रबाबू, श्री शंकरराव देव, फ़ख़रुद्दीन साहब, श्री जगजीवनराम वग़ैरा भी आकर हिस्सा लेनेवाले थे; पर भीड़ बहुत हो जानेसे बद-अिन्तज़ामी हुअी और यह अिरादा बदलना पड़ा। देशके नेताओंने कातना तय कर लिया था। वे वहाँ नहीं आ सके, फिर भी अुन्होंने कातना छोड़ा नहीं। अिन नेताओंने वाल्मीकि मंदिरमें ही कताअी की।

"संजोगसे चरखा-क्लास, चरखा-बारसके दिन ख़तम हुआ। सबेरे डॉ० राजेन्द्रप्रसादके हाथों झंडा-वंदन (झंडेकी सलामी) हुआ। श्री ब्रजकृष्ण चाँदीवाले, श्री कृष्णन् नय्यर, गांधी-आश्रम चाँदनी चौकवाले श्री कालिका प्रसाद, और आदमपुर खादी-भंडारकी ओरसे क्लास चलानेमें बड़ी मदद मिली।

"नुमाअिश और स्पर्धाके लिअे म्युनिसिपल-कमेटी और बंगाली-स्कूलके हेडमास्टर साहबने जगह दी, अिसलिअे हम अुनका आभार मानते हैं।"

मेरे ख़यालसे अिस क्लासकी बड़ी अहमियत है। जिस तादादमें सीखनेवाले आये, वे जिन तबक़ों (वर्गों)से आये, और जिस जोशसे अुन्होंने काम किया, अुस सबसे हमें अेक सबक़ मिलता है। छोटी-सी नुमाअिश हुअी, अुसमें भी हज़ारों देखनेके लिअे आये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेतागण कातनेके लिअे आये। यह सब बहुत अच्छी निशानी है। जोश क्या कर सकता है, यह भी समझने लायक़ है।

नअी दिल्ली, २४-९-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

(गुजरातीसे)

नाजायज़ बरबादी

अेक सज्जनने गेहूँ वग़ैराकी बरबादीके बारेमें अेक लम्बा ख़त लिखा है, जिसका सार नीचे दिया जाता है:—

"अिस बदअिन्तज़ामीसे जो बरबादी होती है, अुसके पाँच ख़ास कारण हैं—

१. गेहूँ वग़ैरा हिफ़ाज़तसे रखनेके लिअे कोअी ख़ास गोदाम नहीं हैं। अिस कारण चूहे, कीड़े वग़ैरा अुन्हें काफ़ी नुक़सान पहुँचाते हैं।

२. मण्डियोंमें, रेलके प्लैटफ़ार्म पर, और फुटकर बिक्रीकी दुकानोंके सामने बरसते पानीमें भी गेहूँ खुला पड़ा रहता है।

३. यों भी मण्डियों और दुकानोंमें गेहूँके ढेर-के-ढेर खुले पड़े रहते हैं, और हज़ारों चिड़ियाँ, गिलहरियाँ वग़ैरा अुन्हें खाती रहती हैं।

४. गेहूँ टाटके पुराने थैलोंमें अिधर-अुधर भेजा जाता है, जिसके कारण मनों गेहूँ गिर जाता है, और रेलोंमें उसकी चोरी भी आसानीसे होती है।

५. गेहूँ गाँवसे साफ़ होकर नहीं आता। अिससे किसानों और ख़रीदारोंका नुक़सान होता है, और ज़्यादा वज़न होनेसे रेल वग़ैराका किराया भी फ़ज़ूल देना पड़ता है।"

लेखक कहते हैं कि अकेले अच्छे गोदाम न होनेकी वजहसे सालमें ३५ लाख टन गेहूँ बरबाद होते हैं, और बाक़ी चार कारणोंसे १५ लाख टन। अिस तरह कुल सालाना नुक़सान ५० लाख टनका होता है। जो गेहूँ गोदाममें हिफ़ाज़तके साथ नहीं रक्खा जाता, अुसे चूहे वग़ैरासे नुक़सान पहुँचनेके अलावा, खुला पड़ा रहनेसे अुसके गुणमें भी फ़र्क़ आ जाता है। गेहूँके व्यापारी लापरवाह हैं, और अिसमें सरकारकी लापरवाही न भी हो, तो भी अुसकी नालायक़ी और ढिलाअी तो है ही।

लेखककी राय है कि व्यापारियोंके लिअे क़ानूनन् यह लाज़िमी कर देना चाहिये कि वे अच्छे गोदाम बनायें। अुनके पास अैसा बन्दोबस्त न हो, तो अुन्हें लाअिसेन्स देना बंद किया जाय।

५०की सदी अनाजकी बरबादी तो फ़ौरन बंद हो सकती है, अगर मौजूदा मण्डियोंमें या जहाँ-जहाँ भी निकम्मे गोदाम हैं, अुनकी माक़ूल मरम्मत हो जाय, ताकि वहाँ पानी और चूहे वग़ैरासे गेहूँ बचा रहे। नये गोदाम बनानेमें सरकारको, बतौर नमूना, पहला क़दम अुठाना चाहिये, ताकि लोग अुनके फ़ायदोंको देखकर अुनकी ज़रूरत समझ लें।

लाहौर और लायलपुरके दरमियान हालमें गेहूँके हज़ारहा थैले लेखकने अपनी आँखोंसे पानीमें भीगते देखे। जिन अफ़सरोंके ज़िम्मे अुनकी देखभाल का काम था, अुनमेंसे अेक भी वहाँ नहीं आये, और गेहूँको बचानेकी ज़रा भी कोशिश न की। अिस कारण अेक ही दिनमें ४०,००० मन गेहूँ ख़राब हो गया। और शायद अैसा ही हरअेक जगह कुल हिन्दुस्तानमें होता होगा।

पुराने थैलोंके बजाय नये दोहरे थैलोंका अिस्तेमाल लाज़िमी किया जाना चाहिये।

जहाँ गेहूँ पैदा होता है, वहीं वह साफ़ भी किया जाय, तो अुसमेंसे जो छोटे दाने और छिलके निकलते हैं, वे पशुओं और मुर्ग़ियोंके लिअे अिस्तेमाल किये जा सकते हैं। अिस तरह बोझा कम होनेसे रेलका किराया भी कम हो जायगा। किसानसे जो खोटके पैसे ले लिये जाते हैं, वे भी बच जायँगे।

सरकार आज जितना अनाज बाहरसे मँगाती है या जितने अनाजके आनेकी अुम्मीद रखती है, अुतना ही यहाँ बरबाद होता है।

अिसके अलावा, लेखक कुछ और भी सूचनायें देते हैं, जो पहले भी 'हरिजन'में दी गअी हैं। जैसे, धनिक घरोंमें ख़ूराकका फ़ज़ूल नुक़सान रोकना; भाजी वग़ैरा ज़्यादा अुगाना; जहाँ भी अूसर ज़मीन हो, वहाँ कुअें वग़ैरा बनाकर फ़ौरन काश्त करना; खाद बनानेकी जो चीज़ें बरबाद होती हैं, अुन्हें खादके लिअे अिस्तेमाल करना; शहरोंमें गोबरको जलानेके काममें न लेना वग़ैरा।

नअी दिल्ली, १९-९-'४६ अमृतकुँवर

[जो सूचनायें अिस लेखमें दी गअी हैं, वे अैसी हैं कि अुन पर फ़ौरन ही अमल करना चाहिये। जो अनाज बचा, सो मिलनेके बराबर है। मो० क० गांधी]

(अंग्रेज़ीसे)

सभ्यताका नाश

बीस सालसे ज़्यादा अरसा हो गया, मुझे हिन्दुस्तानके फ़ैशनेबुल समाजमें या सरकारी दायरेमें जानेका बहुत कम मौक़ा आया है। हिन्दुस्तानमें मेरी सारी ज़िन्दगी सच्चे हिन्दुस्तानियोंमें गुज़री है। मगर पिछले साल मैंने किसानोंको कुछ फ़ायदा पहुँचा सकनेकी अुम्मीदसे, यू० पी० सरकारकी 'ज़्यादा ख़ूराक पैदा करने'की तहरीकके सिलसलेमें अुनके ख़ास सलाहकारका ऑनरेरी ओहदा मंज़ूर किया था। अुसकी वजहसे मैं अेक नये दायरेमें पहुँच गअी। वहाँ चारों तरफ़ अजीब अिनसान थे। हरअेक दूसरेसे बढ़कर अंग्रेज़ दिखनेकी कोशिश कर रहा था। मैंने निराश नज़रसे अपने दफ़्तरमें काम करनेवालोंकी तरफ़ देखा। हर तरफ़ मिलका कपड़ा था। बुरी तरहसे कटी विलायती पतलूनके भीतर कमीज़ घुसाअी हुअी, सख़्त गर्मीके बावजूद भी विलायती ढंगके कोट, और पैरोंमें बाटाके चुस्त जूते! मगर यह बस न था। जब मैं उनके नाम पूछने लगी, तो सब 'मिस्टर' थे। मि० वर्मा, मि० शर्मा, मि० गुप्ता वग़ैरा वग़ैरा! और जब वे किसी और का ज़िकर करते थे, तब भी मि० फलाँकी ही बात करते थे। अिसके बाद 'हुज़ूर' 'हुज़ूर' करते हुअे चापलूस चपरासी और प्यादे आये, और मेरी परेशानीकी हद हो गअी!

परेशानी दोनों तरफ़ थी। जब मैंने 'मिस' या 'मैडम' कहलानेसे अिनकार किया, तो वे विदेशियोंकी तरह हिन्दुस्तानी संबोधन (मुख़ातिब करनेका तरीक़ा) ढूँढ़ने लगे, और जब मैं ख़त लिखवाने लगी, और मिस्टर काटकर श्री या साहब लिखवाना शुरू किया, तो कअी पन्ने फिरसे टाअिप करनेकी ज़रूरत पैदा हुअी। विदेशी आदतें अितनी गहरी जम चुकी थी कि अेकदम निकल नहीं सकती थी।

कुछ दिनों बाद मैं पश्चिमी यू० पी० के लम्बे दौरे पर निकली। अब नअी मुसीबतें सामने आअीं। सब जगह अिन्सपेक्टरोंके बंगले और सर्किट हाअुस, हिन्दुस्तानमें बने होने पर भी, अंग्रेज़ी ढंगसे सजे थे। पुराने बदबूदार सोफ़े और कुर्सियाँ, ढेर-की-ढेर मेज़ें, बड़े-बड़े फ़ैशनदार पलंग, जिनके अूपरकी तरफ़ सीखोंवाला या दूसरे ढंगका किनारा था, ताकि रातकी गर्मीमें बाँहें सिरकी तरफ़ लम्बाअी में भी नहीं जा सकती थीं, और मअी और जूनकी रातें ख़ासी गर्म थीं। फ़र्श पर बदबूदार दरियाँ बिछी थीं, जिनमें बरसोंकी धूल और गन्दगी भरी पड़ी थी। खिड़कियोंमें तारकी जाली, खुली हवाके आनेसे रोकती थी, और सबसे बुरी चीज़ तो वे लड़खड़ाते कमोड थे, (जो लोग विलायती ढंगसे बैठना पसन्द नहीं करते, वे समझ सकेंगे कि अैसे कमोडोंकी यादसे ही रातकी नींद बिगड़ जाती है) जो हरएक गुसलख़ानेमें रखे थे। यह गुसलख़ाना रहनेके कमरेके पास ही होता है। और रसोअीघरके बारेमें तो जितना कम कहा जाय, अुतना ही अच्छा है।

क्या अब वह वक़्त नहीं आ गया है, जब बोलचालमें, पहननेके कपड़ों और रहनेके ढंगमें घुसे हुअे ये नामुनासिब रिवाज अंग्रेज़ी सरकारके साथ ही ख़त्म कर दिये जायँ? आख़िर तो यह सब अंग्रेज़ी सरकारकी ही विरासत है न?

मीराबहन

(अंग्रेज़ीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणियाँ

कांग्रेसी मंत्री, साहब लोग नहीं

अेक कांग्रेस-सेवक पूछते हैं —

"क्या कांग्रेसी प्रधान अुस साहबी ठाठसे रह सकते हैं, जिस ठाठसे अंग्रेज़ रहते थे? क्या वे अपने घरेलू कामोंके लिअे भी सरकारी मोटरों वग़ैराका अिस्तेमाल कर सकते हैं?"

मेरी दृष्टिसे तो दोनों सवालोंका अेक ही अुत्तर हो सकता है। अगर कांग्रेसको लोक-सेवाकी ही संस्था रहना है, तो प्रधान वर्ग अब लोगोंकी तरह नहीं रह सकता, और न सरकारी साधनोंका अुपयोग घरेलू कामोंके लिअे कर सकता है।

नअी दिल्ली, २०-९-'४६

खादी-भंडारोंके बारेमें

जबसे मैंने कराची खादी-भंडारके बारेमें लिखा है, तबसे मेरे पास दूसरे भंडारोंके बारेमें भी काफ़ी ख़त आ रहे हैं। अुनका सार नीचे दिया जाता है —

१. भंडारोंमें जो खादी होती है, वह सिर्फ़ भंडारवालोंके दोस्तोंको या जिनका रसूख़ हो, अुन्हींको मिलती है।

२. खादी कितनी भी पड़ी हो, आम ख़रीदारको अक्सर यही जवाब मिलता है कि भंडारमें खादी नहीं है।

३. कअी भंडार अैसे हैं, जहाँ कपड़ा बुनवानेका कोअी अिन्तज़ाम नहीं। वहाँ न चरखे मिलते हैं, न चरखोंका सामान मिलता है।

४. अिस कारण भंडारोंके सेवक खाली बैठे रहते और मुफ़्तकी तनख़्वाह पाते हैं। कअी बार ग्राहकोंको यह कहकर भी कपड़ा नहीं दिया जाता कि 'तुम्हारा सूत बहुत मोटा है'।

ये सब शिकायतें बिलकुल झूठी हैं, अैसा मानकर अपने आपको तसल्ली देना हमारे लिअे ठीक न होगा। लेखकने जैसा बरताव बयान किया है, अुसमें अविवेक, लापरवाही और बेवफ़ाअी भरी पड़ी है। किसी भी भंडारमें ये दोष नहीं होने चाहियें, और खादी-भंडारोंमें तो ये असह्य हैं। लोगोंके दिलोंमें खादी के लिअे प्रेम या अिज़्ज़त किस तरह हो सकती है? अुम्मीद रखी जाती है कि सभी खादी-भंडार अेक अुम्दा नमूना बनेंगे और अिस तरह न केवल अपनी, बल्कि खादीकी अिज़्ज़त व क़दर बढ़ायेंगे। नअी दिल्ली, २२-९-'४६

(गुजरातीसे)

मशीनके हल बनाम बैल

अिस नामसे मीराबहनने 'हरिजन'के लिअे अंग्रेज़ीमें अेक लेख लिखा है। विचारणीय होनेसे अुसका मतलब यहाँ दिया जाता है।

कुछ लोग कहते हैं कि मशीनका हल यानी ट्रैक्टर बिलकुल नहीं चाहिये। अुसके लिअे बहुत-सी ज़मीन ज़रूरी होती है। अुससे आख़िर ज़मीन बिगड़ती है, ज़मीनको ढोरोंकी खाद नहीं मिलती, और ढोर बेकार बन जाते हैं। मीराबहन क़बूल करती हैं कि अिस दलीलमें काफ़ी वज़ूद है।

लेकिन अिसके जवाबमें वे यह कहती हैं कि अकेले यू० पी०में ४० लाख बीघा अूसर ज़मीन है। अैसी ज़मीन क़रीब-क़रीब सभी सूबोंमें है। अिस ज़मीनकी जुताअी बैलोंसे होना मुश्किल है। हुअी भी, तो वह बरसोंकी बात होगी। अिसलिअे वे कहती हैं कि अभी तुरत तो अैसी ज़मीनोंको ट्रैक्टरोंसे खुदवाना चाहिये। यह काम फ़ौरन हो सकता है। बाक़ीका काम बैलोंसे लिया जाना चाहिये। अैसा करनेसे ट्रैक्टरोंका सही और मर्यादित अुपयोग हो जायगा, और नुक़सान नहीं होगा। वे मानती हैं कि खेतीके लिअे ट्रैक्टरसे काम लेना नुक़सानदेह ही होगा। साथ ही, वे यह भी कहती हैं कि ट्रैक्टर बाहरसे आते हैं, और अुन्हें चलानेके लिअे अिंजन चलानेवाले ख़ास अुस्तादोंकी ज़रूरत रहती है। ट्रैक्टरके लिअे दूसरे सामानकी भी ज़रूरत होती है। आज हमारा मुल्क अिस सबके लिअे तैयार नहीं, न अुसे तैयार होना चाहिये।

नअी दिल्ली, १६-९-४६

(अंग्रेज़ीसे) मो० क० गांधी

ज़रूरतसे ज़्यादा

दिल्लीकी अेक जान-पहचानवाली बहन मुझसे कहती हैं कि वे और अुनके पति दोनों क़रीब रु० ५००) माहवार कमाते हैं। अुनके कोअी औलाद नहीं। अनाजका जितना राशन अुन्हें मिलता है, अुससे वे हर हफ़्ते काफ़ी मेहमानदारी भी बिला तंगीके कर सकती हैं। अुनकी सूचना है कि सरकारको दिल्लीमें, और हक़ीक़तमें तो सब शहरोंमें, अुन लोगोंकी फ़ेहरिस्त बनानी चाहिये, जो आसानीसे अपने अनाजका राशन कम कर सकते हों, और अैसे लोगोंको जितना भी वे छोड़ सकें, छोड़ना ही चाहिये। खाते-पीते लोग अगर चाहें, तो ख़ूराक बचानेके मामलेमें काफ़ी मदद कर सकते हैं। अिस नाज़ुक वक़्तमें हर क़िस्मकी मेहमानदारी तो बन्द की ही जानी चाहिये, और हर हालतमें अनाजकी ख़ूराक तो किसी मेहमानको नहीं देनी चाहिये। नअी दिल्ली, २२-९-४६

(अंग्रेज़ीसे) अमृतकुँवर

अेक अहवाल

समग्र ग्राम-सेवा-मण्डल-

(दीव, तालुक़ा पेण, जि० कोलाबा)

दीव गाँवमें अिस मण्डलकी तरफ़से जो काम हो रहा है, अुसका छमाही अहवाल श्री कुशाभाअू ओकने भेजा है। नीचे अुसका सार दिया जाता है—

अिस मण्डलकी स्थापनाका ख़याल असलमें समग्र ग्राम-सेवाकी अुस छावनीसे पैदा हुआ, जो सन् १९४५ के जनवरी महीने में सेवाग्राममें खुली थी। अुसके मुताबिक़ जून, १९४५ में दीवमें काम शुरू किया गया। दीव गाँवकी आबादी क़रीब १,१०० की है। शुरूमें बुनियादी तालीमके प्रचारके अिरादेसे गाँवकी अेक कन्याशालाका काम हाथमें लिया गया। अेक बहन और दो भाअी, जिन्होंने नअी तालीमकी ट्रेनिंग हासिल की है, लड़कियोंके अिस मदरसेमें काम करते हैं। लड़कियोंकी तादाद धीमे-धीमे ५ से बढ़कर १७ तक पहुँची है। लड़कियोंको कातना सिखाया जाता है, और अुसके ज़रिये भाषा और गणित, ये दो विषय सिखाये जाते हैं। मदरसेकी सफ़ाअीका, झाड़ने-बुहारने और पोंछनेका सारा काम लड़कियाँ ही करती हैं। लड़कियाँ रोज़ नहा-धोकर प्रार्थनामें शामिल होती हैं, खेल खेलती हैं, पेड़-पौधोंके नामों और रंगोंकी जानकारी हासिल करती हैं, अुनकी तसवीरें बनाती हैं, और देखने लायक़ जगहोंकी सैर करने जाती हैं। मदरसेकी पढ़ाअीमें अिन चीज़ों पर ख़ास ध्यान दिया जाता है।

तीन शिक्षक विद्यार्थी हिन्दी क्लासमें दाख़िल हुअे हैं, और तीनोंने प्रारम्भिक परीक्षा अव्वल दरजेमें पास की है।

विद्यार्थियोंके संगठनके लिअे श्री परांजपेने आनन्दाश्रम नामकी अेक संस्था क़ायम की है। अुसमें हाअीस्कूलमें पढ़नेवाले विद्यार्थी आने लगे हैं। अुनके लिअे जब-तब अलग-अलग विषयों पर व्याख्यानों या भाषणोंका अिन्तज़ाम किया जाता है। अुम्मीद की जाती है कि अिन लोगोंको कताअी, पिंजाअी वग़ैरा सिखाकर अपनी ज़रूरतका कपड़ा ख़ुद तैयार कर लेनेके रास्ते पर लगाया जा सकेगा। गांधी-जयन्तीके मौक़े पर सामूहिक कताअीका प्रोग्राम रक्खा गया था। अक्तूबरसे सेवादलकी तालीम देनेका काम शुरू किया है। सबके अुपयोगके लिअे अेक पब्लिक वाचनालय भी खोला गया है।

किसानोंका संगठन करनेके लिअे अेक क़र्ज़-समझौता-बोर्ड बनाया गया है। गाँवमें अनाजकी अेक दुकान भी खाली गअी है। किसान-संघके ज़रिये किसानोंकी तकलीफ़ें दूर करानेका काम हो रहा है।

(अंग्रेज़ीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२९ सितम्बर १९४६

.खूराककी तंगी

हवामें डर फैल जाय, अिससे बढ़कर मायूस करनेवाली और कोअी चीज़ नहीं। मुझे याद है कि अेकबार साबरमती नदीमें पूर आ रहा था। आधी रातके बाद सरदार पटेलका भेजा हुआ एक आदमी सँदेशा लाया कि अेक घण्टेके अन्दर पानी आश्रममें फैल जायगा, और अगर हम लोग अितनेमें आश्रम खाली नहीं करेंगे, तो हमें डूबकर मरना होगा। मर्द, औरतें, बच्चे सबके लिअे वह परेशानीकी घड़ी थी। जब पानी मकानों वग़ैराको कुछ नुक़सान पहुँचाकर अुतरने लगा और जानका ख़तरा नहीं रहा, तब सबकी जानमें जान आअी।

अिसी तरह अमलदारोंकी तरफ़से दी जानेवाली खूराककी तंगीकी खबरें लोगोंको घबराहटमें डालनेवाली हैं। अिस घबराहट और डरका नतीजा सचमुचके अकालसे ज़्यादा भयानक होता है। जब मुझे अख़बारसे त्रावणकोरमें खूराककी तंगीके बारेमें अेक पैरा पढ़कर सुनाया गया, तो मेरी अैसी ही हालत हुअी। अख़बारमें लिखा था कि त्रावणकोरके निडर दीवान कहते हैं कि त्रावणकोरमें सिर्फ़ १५ दिनके लिअे खूराक बाक़ी है। मैं त्रावणकोरको अितनी अच्छी तरहसे जानता हूँ कि अिस ख़बरसे मैंने त्रावणकोरके लिअे ही नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तानके लिअे तरह-तरहकी मुसीबतोंकी तसवीरें अपने सामने खड़ी कर लीं। त्रावणकोरकी ज़मीन खूब अुपजाअू है। वहाँ खाने लायक़ कन्द-मूल पैदा होते हैं, नारियल होते हैं, मछलियाँ होती हैं। वहाँ तो बाहरसे कुछ भी न जाय, तो भी लोगोंको अेक दिनके लिअे भी भूखों रहनेकी जरूरत नहीं। त्रावणकोरमें मेरे विश्वासने मुझे टिकाये रखा, और मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हुअी कि त्रावणकोरमें तंगी खूराककी नहीं थी, गेहूँ और चावलकी ही थी। त्रावणकोरमें गेहूँ पैदा नहीं होता, चावल ही अुगता है। जहाँ तक अनाजका ताल्लुक़ है, त्रावणकोरी भाअी चावल ही खाते हैं। बहुत तंगीमें आने पर ही मुश्किलसे गेहूँ खानेको तैयार होते हैं। कितना अच्छा हो, अगर अिस मुसीबतके परिणामस्वरूप हम अपनी प्रान्तीयता (सूबोंकी अलहदगी) छोड़ सकें, और अैसी आदतें बना लें कि जिस किसी सूबेमें जायँ, वहीं हमें घर-सा लगे। लेकिन अिस वक़्त तो हिन्दुस्तानके सब ज़िम्मेदार आदमी अगर अपने-अपने सूबोंको, ज़िलोंको और रियासतोंको साफ़-साफ़ कह दें कि खूराकके लिअे वे दूसरे मुल्कोंकी तरफ़ न देखें, जितना हो सके, ख़ुद अुगावें, और अपनी ही अुपज पर गुज़ारा करना सीखें, तो मेरा काम हो जाय। मेरे पास बहुतसे भरोसे लायक़ लोगोंके ख़त आ रहे हैं। अगर वे असली हालतके सूचक (बतानेवाले) हों, जैसा कि अुन्हें होना चाहिये, तो हमें भूखों मरनेकी कोअी ज़रूरत नहीं। शाकाहारियोंके लिअे जीवन देनेवाली सब्ज़ियाँ और थोड़ासा दूध, और मांसाहारियोंके लिअे मछली, गोश्त वग़ैरा बस होंगे।

हिन्दुस्तानियोंको समझना चाहिये कि अभी तक बाहरसे तो नामकी ही खूराक हिन्दुस्तानमें आअी है। कअी दूसरे मुल्क मदद करना चाहते हैं, पर बहुत करके वे ख़ुद मुसीबतमें हैं, या अुनके पास अितनी माँगें हैं कि वे अुन्हें पूरा नहीं कर सकते। अुन सबके लिअे जहाज़ोंकी दिक़्क़त तो है ही। और जब अनाज हिन्दुस्तानमें पहुँचेगा, तब अुसे देशमें अेक जगहसे दूसरी जगह ले जानेकी दिक़्क़त खड़ी होगी। जगह-जगह खूराक पहुँचाना और बाँटना, बड़े मुश्किल सवाल हैं। अिसलिअे व्यवहार-बुद्धि (सच्ची अक़्लमन्दी) यही है कि हम कमर कस लें और अेक आवाज़से अपना इरादा ज़ाहिर कर दें कि हम अपनी खूराक ख़ुद पैदा करेंगे, और ज़रूरत पड़ी, तो अुस कोशिशमें बहादुरीसे मर मिटेंगे। यही अेक रास्ता है, दूसरा नहीं। नअीदिल्ली, २१-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

सवाल-जवाब

स० — दुनियामें जिधर देखो अुधर मारामारी, दूसरोंके हक़ छीनना, और जिसकी लाठी अुसकी भैंसवाली मसल सिद्ध करनेकी बात चल रही है। और यह भी अिंग्लैण्ड और अमेरिका-जैसे मुल्कोंमें हो रहा है, जहाँ लोकमतको ही सबसे अूँची जगह दी गअी है। अैसी हालतमें आपकी अहिंसा क्या कर सकती है? अिस बारेमें आपने विचार किया है?

ज० — जिसकी लाठी अुसकी भैंसवाली बात चल रही है, यह सच है। मगर अिंग्लैंड और अमेरिकामें लोकमतको सबसे अूँची जगह दी गअी है, यह मानना मेरी समझमें भूल है। लोगोंकी आवाज़ यानी परमेश्वरकी आवाज़। अिसीलिअे हम लोगोंमें कहते हैं कि पंच यानी परमेश्वर। मगर जहाँ पंच ही दूसरोंको खा जायँ, वहाँ यह कैसे कहा जा सकता है कि पंचोंकी आवाज़ परमेश्वरकी आवाज़ है? अमेरिका और अिंग्लैण्ड रंगदार (काले) लोगोंकी मेहनत पर निर्भर हैं। वे लोगोंको चूसते हैं, यह तो हम देखते ही हैं। अिसकी मिसाल देनेकी ज़रूरत नहीं। दूसरों पर जीनेवालोंमें भी सहयोग हो सकता है। अिसलिअे अुनकी आवाज़ पंचकी आवाज़ नहीं कही जा सकती। जहाँ पंचकी आवाज़ परमेश्वरकी आवाज़के सामान हो, वहाँ पंच दूसरोंका ख़ून चूसकर जीनेसे अिनकार करेगा। अुसकी तराज़ूके अेक पल्लेमें सत्य और दूसरेमें अहिंसा होगी। अिसलिअे वह तराज़ू हमेशा पूरा तौलेगी। अिसमें मेरा जवाब आ जाता है। मेरी अहिंसा लूली नहीं। दुर्बल भी नहीं। वह सबसे बढ़ी-चढ़ी चीज़ है। क्योंकि जहाँ अहिंसा है, वहाँ सच है। और सच तो परमेश्वर है। परमेश्वर कैसे काम करता है, सो मैं नहीं जानता। अितना जानता हूँ कि वह सब जगह है। और जहाँ वह है, वहाँ ख़ैर ही है। यानी वहाँ सबके लिअे अेकसा न्याय है ही। दुनियाके जिस हिस्सेमें सच और अहिंसाका सिक्का चलेगा, वहीं परम शान्ति और परम सुख होगा। अगर शान्ति और सुख कहीं नहीं हैं, तो हमें समझना चाहिये कि सत्य और अहिंसा भी आज लुप्त (ग़ायब) हैं। मगर वे बिलकुल ग़ायब तो हो नहीं सकते। अिसलिअे जिसे विश्वास है, वह विश्वासरूपी नावमें बैठकर तरेगा और आख़िर सबको तारेगा।

स० — आप कहते हैं कि स्वतन्त्र हिन्दुस्तानमें परदेशी अगर स्वदेशी होकर रहेंगे, तो अुनसे डरनेकी ज़रूरत नहीं है। लेकिन यह तो आप स्वीकार करेंगे न, कि अैसा दूसरे देशोंमें नहीं होता? जहाँ स्व (अपने) के अूपर वज़न दिया जाता है, वहाँ पर (पराये) की तरफ़ नफ़रत चाहे न रहे, वहम तो रहता ही है। क्या आज़ाद हिन्दुस्तान अिससे अूपर अुठ सकेगा?

ज० — मेरा अचल विश्वास है कि हिन्दुस्तान अिससे बच जायगा। अिस बारेमें मैं काफ़ी सचोट सुबूत दे सकता हूँ। मगर आज अिसकी ज़रूरत नहीं। मैंने जो कहा है, अुसे याद रखिये। परदेशियोंको स्वदेशी बनकर यहाँ रहना होगा। अगर परदेशी, परदेशीके तौर पर अपना हक़ जमाना चाहेंगे, तो वह बरदाश्त नहीं हो सकेगा। अिसका यह भी अर्थ है कि अगर वे स्वतन्त्र हिन्दुस्तानमें सबसे अूँचे होकर रहना चाहेंगे, तो संघर्ष पैदा होगा ही। अंग्रेज़ी हुकूमत और हिन्दुस्तानके बीच जो झगड़ा है, वह आज़ादी आनेके बाद भी किसी-न-किसी रूपमें क़ायम रहे, यह समझमें आनेवाली चीज़ नहीं। अगर वह झगड़ा वैसा ही बना रहा, तो वह हिन्दुस्तानकी आज़ादी न होगी। नअी दिल्ली, १९-९-'४६

(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच और अहिंसाको न छोड़ें

अेक सेवाभावी भाअी अपना नाम देकर लिखते हैं —

"आपका हफ़्तेवार अख़बार 'हरिजनबन्धु' मैं नियमित मँगाता हूँ और पढ़ता हूँ। १५ सितम्बरके 'हरिजनबन्धु'के ३१७वें पन्ने पर श्री शंकरराव देवको दिये गये जवाबमें आपने लिखा है – 'मैंने कुछ समयसे कहना शुरू किया है कि कांग्रेसके निज़ाम (विधान)मेंसे सच और अहिंसाको निकाल देना चाहिअे'।

"आजके हालातमें अैसा होगा, तो कांग्रेस परसे लोगोंका विश्वास (अक़ीदा) अुठ जायगा। लोग अैसा समझेंगे कि जब तक कांग्रेसके हाथमें ताक़त नहीं थी, वह लोगोंको सच और अहिंसा पर चलनेको समझाती थी। आज ताक़त हाथमें आते ही सच और अहिंसाको अपने विधान (निज़ाम)मेंसे निकालनेका सोच रही है।

"शायद लोग यह भी समझें कि मुस्लिम लीगने 'सीधे सामने'का जो ठहराव पास किया है, अुसका सामना करनेके लिअे आप अिन दो लफ़्ज़ों (शब्दों)को निकाल देनेकी बात कहते हैं।

"अगर कांग्रेसके विधानसे, ये दो शब्द, जिनके ज़रिये कांग्रेस अितनी आगे बढ़ी है, और आज अूँची चोटी पर बैठी है, निकल जायँगे, तो कांग्रेस फ़ौरन नीचे गिर जायगी। अुसकी आबरू हलकी पड़ जायगी। आप ही कहते थे कि सच और अहिंसाके बिना आप अेक क़दम भी आगे नहीं चल सकते।

"किस कारण लोग कांग्रेसवालोंको विश्वासके लायक़, दयालु (रहमदिल), सेवाभावी, हिम्मतवाले, वग़ैरा वग़ैरा मानते आये हैं? सच और अहिंसाके ही कारण। सच और अहिंसा अुसकी जड़ है। जड़के नाश होनेसे साराका सारा दरख़्त अपने आप सूख जायगा। आपको तो यह कोशिश करनी चाहियें कि वह जड़ ज़्यादा-से-ज़्यादा गहरी जाय।"

अहिंसाका दावा करनेवाला मैं, अच्छा काम करनेके लिअे भी किसीको मजबूर कैसे कर सकता हूँ? अेक महान् अंग्रेज़ने कहा है कि आज़ाद रहकर भूल करनी भली, मगर मजबूर होकर अच्छा करना बुरा है। मैं अिस बातको मानता हूँ। कारण साफ़ है। जो दूसरोंके दबावसे अच्छा रहता है, अुसका दिल अच्छा नहीं होता, अुलटा ज़्यादा बिगड़ता है, और जब दबाव हट जाता है, तो अन्दर रहा बिगाड़ अूपर आ जाता है।

और, किसी अेक व्यक्ति (शख़्स)के पास तो किसी पर दबाव डालनेकी ताक़त होनी ही न चाहिये। कांग्रेस भी ज़बरदस्ती किसीसे सच या अहिंसा पर अमल नहीं करवा सकती। अैसी चीज़ें दिलका सौदा ही होनी चाहियें।

सच और अहिंसाको कांग्रेसके विधानमेंसे निकालनेकी बात पेश किये मुझे अेक सालसे ज़्यादा अरसा हो गया है। लीगकी तरफ़से सच-अहिंसाका ख़याल किये बिना सीधा सामना करनेकी बात आअी, अुससे पहले ही मेरी यह सूचना निकल चुकी थी। मेरी सलाहका लीगके ठहरावके साथ कोअी ताल्लुक़ नहीं। तो भी जिन्हें मेरी सलाहमें दाँव-पेंचकी बदबू आया ही करे, अुनके लिअे मेरे पास कोअी अिलाज नहीं है।

मेरी सलाहके पीछे ज़ोरदार कारण है। सच और अहिंसाका पालन करके कांग्रेसका झूठ और हिंसासे बचना, कोअी मामूली बात नहीं। अगर कांग्रेसी दिखावा न करें, और सचमुच सच और अहिंसाके अिन दो खंभोंको पकड़े रहें, तो अिससे अच्छा और क्या हो सकता है?

मैं तो कभी यह अिच्छा या ख़्वाहिश कर ही नहीं सकता कि ताक़त हाथमें आने पर कांग्रेसी सच और अहिंसाकी अुस सीढ़ीको छोड़ दें, जिसके सहारे वे अितने आगे बढ़े हैं। मैं मानता हूँ कि अगर कांग्रेस ताक़त पाकर अिस सीढ़ीको छोड़ेगी, तो अुसका तेज (नूर) बिलकुल मन्द पड़ जायगा।

अेक और भूलसे सबको बचना चाहिये। जो विधान (निज़ाम)में नहीं लिखा, अुस पर किसीको अमल नहीं करना चाहिये, अैसी बात तो है ही नहीं। मैंने तो आशा रखी ही है कि सच और अहिंसाके विधानमेंसे निकल जाने पर भी सब या ज़्यादातर कांग्रेसी अपनी अिच्छासे अुन पर अमल करेंगे और करते-करते मरेंगे भी।

अेक भूल, जिसका ज़िक्र अिन सेवाभावी भाअीने नहीं किया, सुधार दूँ। कांग्रेसके विधान (निज़ाम)में पुरअमन (पीसफ़ुल) और योग्य (लेजिटिमेट) लफ़्ज़ हैं। अुन्हें अहिंसक (नॉनवायोलण्ट) और सच्चा (ट्रूथफ़ुल) माननेका मुझे हक़ नहीं। कांग्रेसके पास धर्म नहीं, कर्म ही है। अंग्रेज़ीमें अुसे पॉलिसी कहेंगे। मेरे हक़का तो सवाल ही नहीं। मगर जबतक कर्म चलता है, तबतक वह धर्म हो जाता है, यानी अुस पर अमल करनेका बन्धन होता है। अगर शान्ति या अमनका मतलब अशान्ति या बेअमनी भी हो सकता हो, और योग्यका मतलब झूठ भी हो सकता हो, तो मेरी सलाहको कोअी जगह नहीं रह जाती।

नअी दिल्ली, २१-९-'४६

(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

भावना कैसे?

प्रोफेसर ब्रजनारायणने नमक-टैक्सके बने रहनेके हक़में लाहौरके 'ट्रिब्यून' अख़बारमें दो कॉलम लिख दिये हैं। भला, मैं अुनकी दलीलोंको क्या काट सकता हूँ? पर मेरे मामूली दिमाग़में वे दलीलें अुतरी नहीं। वे अिस नतीजे पर पहुँचे हैं कि मैं जो नमक-टैक्स रद कराना चाहता हूँ, अुसकी जड़में बजाय विवेकके मेरी भावनायें हैं। अुन्होंने मेरा ध्यान आरामतलब राजनीति और फ़िलसफ़ेकी तरफ़ भी खींचा है। नमक पर जो टैक्स लगा है, अुससे सिर्फ़ मर्दों, औरतों और बच्चोंके हितोंको ही नहीं, बल्कि मछलियों और जानवरोंको भी नुक़सान पहुँचता है। सवाल यह नहीं है कि अुस पर कितना रुपया बतौर टैक्सके लिया जाता है; अुस पर जो अिजारा है, और अुस अिजारेसे पैदा होनेवाली जो सूरतें हैं, असलमें अुनसे ग़रीबों और जानवरोंको चोट पहुँचती है। ज़रा यही सोचो कि अगर ग़रीब लोगोंको बिना सरकारकी अिजाज़तके हवा खाने और पानी पीनेकी भी मनाही कर दी जाय, तो क्या हालत होगी? नमक-टैक्ससे पैदा हुअी हालत भी अुस हालतसे जुदा नहीं है। कोअी अपने निजी अिस्तेमालके लिअे भी नमक नहीं बना सकता। अिस मुमानियतसे हिन्दुस्तानको कितना नुक़सान हुआ है, अिसे ठीक तरह समझनेकी कोअी कोशिश विशेषज्ञ प्रोफेसरने नहीं की। प्रोफेसर ब्रजनारायण तो यह भी नहीं चाहते कि कांग्रेस अेक राष्ट्रीय संस्था होनेके नाते, अेक अैसे अिजारेको ख़त्म कर दे, जो सभी ग़रीबोंको, चाहे वे किसी मज़हबके हों, तकलीफ़ पहुँचाता है। प्रोफेसर अैसा ख़याल तो कैसे कर सकते हैं कि मुसलमानोंमें कोअी ग़रीब है ही नहीं, जिनकी फ़िक्रकी ज़रूरत हो?

नअी दिल्ली, २२-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हफ़्तेवार ख़त

दुःख और शोकसे खाली देश

हाल ही अेक दिन प्रार्थनाके बाद अपने भाषणमें जब गांधीजीने कहा कि ‘**हम अैसे देशके वासी**’ भजनमें जिस हालतका बयान किया गया है, वह हालत अब देशमें जल्दी ही पैदा होनेवाली है, तो अुन्होंने सारे देशके दिलकी बात कही थी। गांधीजीने कहा था कि अगर अिस भजनमें दी गअी सब शर्तोंका पालन किया जाय, तो जैसा कि अिसमें कहा गया है, हमारे देशमें दुःख और शोकका, रंज और ग़मका, नाम न रहे। आज दुनियामें कहीं अैसा देश नहीं है, वह सिर्फ़ हमारे दिलोंमें है। अब जो हुकूमत काम करेगी, वह चालीस करोड़के नाम पर, अुनकी भलाअीका ही काम करेगी। फिर अुस राजमें दुःख और शोक क्योंकर होंगे? लेकिन आज लोगोंके दिलोंमें डर और ग़ुस्सेने घर कर लिया है। भाअी भाअीके साथ लड़ता है। अेक छुरी चलाता है, तो दूसरा भी छुरी चलाता है। अैसी हालतमें हमारे मंत्री या वज़ीर क्या करें? यह कैसे हो सकता है कि हमें लड़नेसे रोकनेके लिअे वे पुलिस और मिलिटरीको बुलायें, अुनकी मदद लें? मैंने आज ही कहीं पढ़ा है कि जहाँ पहले ३०० अफ़सर काम करते थे, वहाँ आज ३,५०० भरती हो चुके हैं। अितना ख़र्च हमें कैसे पुसा सकता है? और फिर अिससे फैलनेवाली सड़ाँध कैसे रोकी जा सकती है? आज अितनी ज़्यादा गन्दगी और सड़ाँध फैल गअी है कि अुसे मिटाये बिना चारा नहीं। अगर अैसा न हुआ, तो आज हमारे नेताओंने काँटोंका जो ताज पहना है, वह अुनके सिरसे अुतार लिया जायगा।

दूसरे, जबतक हम अपने भंगी भाअियोंको दबाते रहेंगे, तबतक हमारा देश दुःख और शोकसे खाली कैसे बन सकेगा? मुझे यह जानकर बहुत दुःख होता है कि गाँवोंमें हरिजनोंको मारा-पीटा जाता है। गाँवमें कोअी बीमारी फैलती है, तो लोग अुन्हें मारते हैं। यह हम कैसे बरदाश्त करें? वे हमारे कुओंसे पानी नहीं भर सकते। अुन्हें गन्दी बस्तियोंमें और कबूतरख़ानों जैसे झोंपड़ोंमें रहना पड़ता है। हमारी कल्पनाके देशमें अैसा नहीं हो सकता। अीश्वर या ख़ुदाकी निगाहमें सभी अिनसान सरीखे हैं। अिस बड़े अिनसानी कुनबेके, मानव-कुलके, हम सब मेम्बर हैं। हरिजन भी हमारी ही तरह अुसके मेम्बर माने जाने चाहियें।

मुझे यह जानकर दुःख होता है कि भंगियोंमें भी सड़ाँध और रिश्वतख़ोरीकी बुराअी मौजूद है। बिगड़ैल अफ़सरों या अपनी ही बिरादरीके मुकद्दमों और जमादारोंको रिश्वत देकर वे अपने-आपको नीचे न गिरायें। कोअी भी भंगी अपनेको ग़रीब और दबा हुआ न माने। अुन्हें चाहिये कि वे बिना रिश्वत दिये अिन्साफ़ हासिल करें। हमें अिस बातका यक़ीन होना चाहिये कि जहाँ हमारे सिर पर सरदार और पंडित जवाहरलाल बैठे हैं, वहाँ हमारा नुक़सान या अकल्याण कैसा हो सकता है? अछूतोंके नुमाअिन्दा श्री जगजीवनराम भी वहाँ हैं। हम अपने मनमें यह श्रद्धा रक्खें और निडर बनें कि वे भी अछूतोंकी मुसीबतोंको दूर करेंगे।

सबकी निगाहें वज़ीरोंकी तरफ़

ज्योंही नये वज़ीरोंने अपने ओहदे सँभाले, त्योंही कुछ अंग्रेज़ दोस्तोंकी तरफ़से गांधीजीको अिस मतलबके ख़त मिले कि पहले जिन घरोंमें वाअिसरायकी कार-बारी कमिटीके मेम्बर रहते थे, अुन घरोंके ख़ूबसूरत बग़ीचोंकी अब अुतनी फ़िकर नहीं ली जायगी। अुनमें फूल नहीं खिलेंगे, और जहाँ मखमल-सी मुलायम हरियाली फैली हुअी है, वहाँ अब ज्यों-त्यों घास अुगने और बढ़ने दी जायगी, और सारा अहाता गन्दा बन जायगा। दरियाँ, कुर्सियाँ, और दूसरा फ़र्नीचर तेलके और दूसरी चिकनाअीके दाग़ोंसे गन्दा हो जायगा, और हाथ-मुँह वग़ैरा धोनेकी जगह भी गन्दी रहने लगेगी। अिस पर गांधीजीने कहा — “मैं अिंग्लैण्ड और अफ्रीकामें रहा हूँ और अंग्रेज़ोंको अच्छी तरह पहचानता हूँ। अिसलिअे मैं अपने जाती तजरबेसे कह सकता हूँ कि तहज़ीब-याफ़्ता या संस्कारी अंग्रेज़ सफ़ाअी और तन्दुरुस्ती के क़ानूनोंको जानते हैं और अुनका अमल करते हैं। अंग्रेज़ अफ़सर तो महलों-जैसे मकानोंमें बादशाहकी तरह रहते थे। वे अपने घरों और आस-पासकी जगहको साफ़ रखनेके लिअे नौकरोंका अेक बड़ा-सा दल रखते थे। लोगोंके लीडर बीचकी या आरज़ी सरकारमें अुनके सेवककी हैसियतसे गये हैं। अुन्हें अपने यहाँ बेशुमार नौकर रखनेकी ज़रूरत नहीं। अगर अुन्होंने अैसा किया, तो वे अपने ध्येय या मक़सदके ताअिं बेवफ़ा साबित होंगे। चुनाँचे अुन्हें अपने घर और घरोंके अिर्द-गिर्दकी जगह अपनी ही मेहनतसे साफ़-सुथरी रखनी होगी। अुनके घरकी बहनें भी अिस काममें अुनका साथ देंगी और अिसका ख़याल रक्खेंगी। मैं जानता हूँ कि अिन लीडरोंमें कोअी अैसे नहीं हैं, जो अपने नहाने-धोनेकी जगहको ख़ुद साफ़ करनेसे हिचकिचायें। कअी साल पहले अेक डॉक्टर बहनने मुझसे कहा था कि वाअिसरायका मकान अेक महल है, और वह बिलकुल साफ़-सुथरा रहता है; मगर अुनके हरिजन नौकरोंके घर अिससे बिलकुल अुलटी तसवीर पेश करते हैं। जनताके नेता अैसा कोअी भेद न रक्खेंगे। पंडित जवाहरलालके घरका अेक हरिजन नौकर सूबेकी अेसेम्बलीका मेम्बर बना है। वे अपने नौकरोंको अपने घरके आदमीकी तरह ही रखते हैं। मुझे ख़ुशी होगी अगर हमारे क़ौमी लीडर वज़ीर बननेके बाद भी जीवनके हर क्षेत्र या दायरेमें ज़िन्दगीका अूँचे-से-अूँचा पैमाना बनाये रक्खेंगे। मुझे यक़ीन है कि वे राष्ट्रको नाअुम्मीद न करेंगे।”

पैसेकी बरबादी

हाल ही अेक दिन अेक प्रधानने गांधीजीसे कहा कि पंडित जवाहरलालको हर रोज़ ५००से ८०० तारोंका ढेर अुलटना पड़ता है। अुन्होंने यह भी बताया कि शायद अितने ही तार हर रोज़ वाअिसरायके पास भी पहुँचते हैं। प्रार्थनाके बादकी अपनी अेक तक़रीरमें अिसका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने कहा — “हमें अैसा न करना चाहिये। अब हम वाअिसराय महोदयको तकलीफ़ न दें। यों तो हमें बादशाहके नाम भी तार भेजनेका हक़ है, और लोग भेजते भी थे। लेकिन न तब अुसकी कोअी क़ीमत थी, न आज है। शायद आप नहीं जानते कि विधान या आअीनके मुताबिक़ अिंग्लैण्डके राजाको अपने वज़ीरोंकी सलाहसे चलना पड़ता है।

“अेक वक़्त था, जब वाअिसरायके हाथमें पूरी हुकूमत थी, और वे जो चाहते, सो कर सकते थे। लेकिन अब अुन्होंने ख़ुद होकर अपनी हुकूमत मंत्रि-मण्डलको सौंप दी है, और अिंग्लैण्डके राजाकी तरह वे राज्यके वैधानिक अधिकारी बन गये हैं। अिंग्लैण्डका राजा अपने मंत्रियोंकी सलाहके बिना कुछ भी नहीं कर सकता। अेक दफ़ा अिंग्लैण्डकी रिआयाने अुसकी मरज़ीके ख़िलाफ़ चलनेवाले अेक राजाका सिर तक अुड़ा दिया था। हमारे ये मंत्री यहाँ कभी अैसा कोअी काम न करेंगे। क्योंकि अैसा मौक़ा आने पर अुसका मुक़ाबला करनेके लिअे हमारे पास सत्याग्रहका बेजोड़ हथियार जो है।

“यह सब होते हुअे भी हमारे लोग बिना समझे-बूझे तार भेजकर नाहक पैसा बरबाद करते हैं, और सो भी अैसे वक़्त, जब हमारे मुल्कमें अकाल पड़ा है और लोग भूखों मर रहे हैं। पैसे चन्द धनवानोंके पास हैं। लेकिन अुनके पास यह पैसा आया कहाँसे? जो पैसा ग़रीबोंका ख़ून चूसकर अिकट्ठा किया गया है, अुसे हम अिस तरह अुड़ाते हैं। चुनाँचे आज तो मैं यही कहूँगा कि अिस तरह तारों पर पैसा बरबाद करना मेरी निगाहमें गुनाह है। हमें याद रखना चाहिये कि पहले वाअिसराय अैसे मामलों पर तवज्जुह दिया करते थे। अब अुन्होंने यह काम प्रधानमंत्रीको और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...को सौंप दिया है। अिसलिअे अुन्हें भेजे गये तार भी वे ... मंत्रियोंके पास भेजेंगे। फिर, अगर लोग समझ जायँ कि ... काम दो पैसेके कार्डसे भी हो सकता है, तो तार-घरका ... भी कम हो जाय।

बम्बअीकी शरम

"हम सुनते हैं कि आजकल बम्बअीमें हुल्लड़ मचा हुआ है। ... यह कैसे कह सकते हैं कि हमें अुससे वास्ता क्या? आज कहीं ... बात होती है, तो अुसका असर सारे हिन्दुस्तान पर ... है। अब यह भी नहीं कहा जा सकता कि अकेले मुसलमान मारते हैं, और हिन्दू मरते हैं। हाँ, प्रेमसे, बहादुरीसे, समझ-... सब हिन्दू कट जायँ, तो मुझे .खुशी हो; क्योंकि अुससे ... द्वेषकी यह आग बुझ जायगी। लेकिन आज तो दोनों अेक-... गला काट रहे हैं। फ़र्ज़ कीजिये कि अिस आगको बुझानेकी ... में मारा जाअूँ, तो भी अुसका नतीजा क्या? समन्दरकी ... बूँद कम हो भी गअी, तो अुससे वह सूख तो न जायगा? ... न अुदारता है, और न बहादुरी या मुहब्बत। चारों ... अेक ही पुकार सुनाअी पड़ती है कि और पुलिस चाहिये! ... मिलिटरी चाहिये! असलमें यह चीज़ हमें खटकनी चाहिये। ... तरह आपसमें लड़ते रहना बुरा तो है ही, मगर जिन लोगोंको ... तालीम दी है, और जो अंग्रेज़ सरकारके वफ़ादार नौकर हैं, ... फ़ौजियोंकी मदद लेना तो और भी बुरा है। सचमुच यह ... शर्मनाक चीज़ है। हमें यह समझ लेना चाहिये कि जबतक ... हालत बनी रहेगी, तबतक हमारी गुलामी नहीं मिटेगी। मर्द ... औरत, हरअेकको अपनी हिफ़ाज़त खुद करनी चाहिये।

दिल्लीकी म्युनिसिपैलिटी

"दिल्लीकी म्युनिसिपैलिटीके कुछ मेम्बर और दिल्लीके कुछ बेपारी ... पास आये थे और शिकायत करते थे कि यहाँ तो चीफ़ कमिश्नर ... डिप्टी कमिश्नरका राज है। मैंने कहा, अिसका अिलाज आपके ... है। आपको सिर्फ़ सेवाके खयालसे म्युनिसिपैलिटीमें जाना ..., अपना कोअी मतलब गाँठनेके खयालसे नहीं। मैं नहीं ... कि अिस कसौटी पर आप लोग खरे अुतर सकेंगे। ... पैलिटीमें लोगोंके नुमाअिन्दोंके रहते हुअे शहरमें अैसी गन्दगी ... रह सकती है? भंगीबस्तीकी हालत कोढ़से भी खराब क्यों है? ... दारा कमिश्नरके माथे नहीं है। यह तो दिल्ली म्युनिसिपैलिटीके ..., ठेकेदारों और दिल्लीके बाशिन्दोंके सिर है। आज ज़मीनके ... ठेकेदार लोग हैं। वे गालियाँ देकर किराया वसूल करते हैं। ... कहाँ जायँ? म्युनिसिपैलिटी अिस हालतको क्यों बरदाश्त करती ... आप यह नहीं कह सकते कि अिसके लिअे कमिश्नर ज़िम्मेदार ...। आपका फ़र्ज़ है कि आप अपने नुमाअिन्दोंके काम पर निगाह ...। अगर दिल्लीमें क़ौमी दंगा हो, तो अुसकी ज़िम्मेदारी ...वालोंपर होगी। अब वे दिन नहीं रहे, जब कमिश्नरका राज ... था। अब तो प्रजाका राज होना चाहिये। लेकिन वैसा ... लिअे लोगोंको अपनी ज़िम्मेदारी समझनी चाहिये।

"जनाब जिन्ना साहब आज जो कुछ कहते हैं, सो सुननेके ... नहीं। अपनी अुन बातोंको वे साबित भी नहीं कर सकते। ... लीग-जैसी संस्था अुनके हाथमें है। सच है कि वे जो ... कर सकते हैं। वे मेरे दोस्त हैं, लेकिन जो कुछ बोलते हैं, ... तौलकर नहीं बोलते। अगर वे अपनी बात तौलकर कहें, तो ... अिस्लामका और सबका भला हो। अैसा दिन तो जब भगवान् ..., तब सही। तबतक अगर मंत्रि-मण्डल मेरे सुझाये रास्ते पर चला, ... मुझे कोअी शक नहीं कि जिन्ना साहब भी सीधी बात करने लगेंगे।"

क़ौमी झगड़ा

... देशमें क़ौम-क़ौमके बीच दुश्मनीका और हिंसाका ज़ोर बढ़ रहा ..., और अिस सिलसिलेमें जो झूठा प्रचार किया जाता है, अुसका ज़िक्र करते हुअे दूसरे दिनकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने सुननेवालोंके सामने अपना दिल खोलकर रख दिया। अुन्होंने कहा — "हिन्दू-मुस्लिम सवाल पर मैं अेक अरसेसे चुप रहा हूँ। आज, जब आम लोगोंकी सेवाके अिरादेसे हुकूमतकी बागडोर हमने अपने हाथमें ली है, मेरा चुप रहना ठीक न होगा। आजकल जनाब जिन्ना साहब और अुनके साथी बहुत-कुछ कह रहे हैं। वे ज़बरदस्तीकी बातें करते हैं। मैं सोचने लगता हूँ कि आखिर हमारा यह जहाज़ कहाँ जाकर रुकेगा? हमारी ज़िम्मेदारी बढ़ गअी है। हम अुसे किस तरह अदा करें? जब हमें बनवास मिला था, हम जंगलोंमें भटकते थे, सरकारकी लाठियाँ और गोलियाँ खाते थे, तब हमारा काम आजके मुक़ाबले आसान था। सरकारकी सख़्तीसे हम गिरे नहीं, दबे नहीं; क्योंकि शान्तिकी अपनी प्रतिज्ञा पर हम अटल बने रहे। करोड़ों लोगोंके दिलोंमें शान्ति या अमनको छोड़ और क्या हो सकता है? गाँवोंके ग़रीब देहाती तो बेचारे पहले ही से गालियाँ सुनने और गुलामीमें रहनेके आदी हैं। अैसे मौक़े पर कांग्रेसने हुकूमतकी बागडोर अपने हाथमें ली है।

"मैं जबसे हिन्दुस्तान आया हूँ, तभीसे कांग्रेसकी सेवा करता रहा हूँ। लेकिन हिन्दू-मुस्लिम अेकता या अित्तहादका सबक़ मैंने कांग्रेससे नहीं सीखा। जब मैं छोटा था, मदरसेमें पढ़ता था, और कांग्रेसका नाम ही नाम सुना था, तबसे मैं अिस सबक़को घोटता-रटता आया हूँ। अुन दिनों भी मेरे बहुत-से मुस्लिम दोस्त थे। दक्खिनी अफ़्रीकामें मैं २० बरस रहा, हिन्दुओं और मुसलमानोंकी सेवा की, लेकिन हिन्दुओंकी वह सेवा भी मुसलमानोंकी वजहसे हुअी। मैं तो वहाँ अपना पेट पालने गया था। लेकिन वहाँ जाने पर दोनों क़ौमोंकी सेवा करनेमें जुट गया। वहाँ मैं अेक मुसलमान सेठका वकील नहीं, बल्कि गुमाश्ता बनकर गया था। लेकिन जब वहाँ पहुँचा, तो देखा कि वहाँ न कोअी हिन्दू है, न मुसलमान, बल्कि सभी कुली हैं। अिसलिअे मैं भी कुली बैरिस्टर बना। अिन सब बातोंकी याद आज भी मीठी मालूम होती है। अिस तरह मेरी सारी ज़िन्दगी अिस सवालका हल ढूँढ़नेमें ही खर्च हुअी है। आज भी वहाँ कअी दल हैं, मगर जो लड़ाअी आज वहाँ चल रही है, अुसमें सभी क़ौमें शामिल हैं। जब मैं वहाँ था, तो काछलिया सेठ, जिनके लड़के आज हिन्दुस्तान आये हुअे हैं, मेरे साथ थे। वे कहा करते थे — 'चाहे मेरी गरदन कट जाय, मगर मैं अिस सरकारका गुलाम न रहूँगा'।

"जनाब जिन्ना साहब कहते हैं कि सब हिन्दू अुनके दुश्मन हैं। यह सुनकर मुझे रंज होता है। अिस्लाम नहीं सिखाता कि किसीको पैदाअिशी कारणोंसे अपना दुश्मन समझा जाय — और सो भी अेक समूची क़ौमको। मैं मुसलमान चाहे न होअूँ, लेकिन मैंने अिस्लाम-धर्मका अभ्यास किया है। मैं .खुद सच्चा हिन्दू हूँ, और अिसी-लिअे सच्चा मुसलमान, सच्चा अीसाअी और सच्चा सिक्ख हूँ। सिन्ध, पंजाब और बंगालके लीगी नेता कहते हैं कि वे हिन्दुओंको मार डालेंगे, और अुनका साथ देनेवाले मुसलमानोंकी भी जान लेंगे। लेकिन अैसा तो कोअी धर्म या मज़हब नहीं सिखाता। दूसरोंको मारनेसे पहले हम अपने ही दुश्मन बनते हैं।

"अेक सुभाषितमें कहा गया है — 'न तू हिन्दू है, न दूसरा कोअी मुसलमान है। सब .खुदाके बन्दे हैं, और .खुदा सबके दिलमें मौजूद है'। अगर हम अिसकी गाँठ बाँध लें, और वैसा अमल करें, तो हम सब अमनके साथ हिल-मिलकर रह सकते हैं। गुण्डेबाज़ी करनेवालोंसे मैं क्या कहूँ? वे चाहे मुझे गालियाँ दें, चाहे मारें, मुझपर अुसका कोअी असर न होगा। जब भगवान् चाहेगा, वह मुझे अपने पास बुला लेगा। अुससे पहले मैं मरूँगा नहीं। मेरे लिअे तो यह ब्रह्मवाक्य साबित हुआ है। तो क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान यह मानते हैं कि वे हिन्दुओंके साथ जबरदस्ती करके अुनसे कुछ ले सकेंगे ? नहीं, अिस तरह वे कुछ भी न ले सकेंगे। अगर समझौतेसे काम लेना हो, तो अुन्हें दूसरा रास्ता अख़्तियार करना चाहिये ।

"अेकबार अली भाअियोंके साथ मैंने अैसा ही बरताव किया था । कालीकटकी अेक सभामें, जहाँ अली भाअी हाजिर न थे, मैंने कहा था कि अगर आप गायको बचाना चाहते हैं, तो आपको चाहिये कि आप खिलाफ़तको बचायें । अिससे गाय अपने आप बच जायगी । जब अली भाअियोंने यह बात सुनी, तो वे रो पड़े । दोनों भाअी शेरकी तरह दिलेर थे, लेकिन अपनी दुबली-पतली माँ के सामने बकरी बनकर रहते थे, और अुनके हुक्म पर अमल करते थे । अुन्होंने कहा था—'हम हिन्दुओंके साथ जियेंगे, काम करेंगे और मरेंगे' । हम तीनों सारे हिन्दुस्तानमें घूमे थे । अुन दिनों लोगोंमें अितनी जाग्रति पैदा हो गअी थी, जितनी पहले कभी न हुअी थी । वह भी अेक जमाना था । आज यह दूसरा ज़माना आया है, जब यह माना जाता है कि हिन्दू अिस क़ाबिल भी नहीं रहे कि अुनसे बात तक की जाय । आज मैं तमाम हिन्दुओं, मुसलमानों और अंग्रेज़ोंसे भी कहा चाहता हूँ कि हम अेक साथ पैदा हुअे हैं, और अेक साथ रहते हैं । चुनाँचे हम अेक-दूसरेके दुश्मन नहीं बनेंगे । अगर कुछ अंग्रेज़ यह मानते हैं कि वे हमें लड़ाकर और हममें फूट डालकर यहाँ अपनी हुकूमत क़ायम रख सकेंगे, तो वे धोखेमें हैं । अगर कोअी अंग्रेज़ यह मानता है, तो वह अपनी क़ौमके साथ बेवफ़ाअी करता है । कोअी हिन्दू या मुसलमान अिस तरह सोचता हो, तो वह भी बेवफ़ा है, और बेवकूफ़ भी है । जनाब जिन्ना साहब कहते हैं कि पाकिस्तान दे दो; फिर हिन्दुओंको कोअी हाथ भी न लगायेगा, और सबको अिन्साफ़ मिलेगा । लेकिन आज जिन सूबोंमें लीगकी हुकूमत है, वहाँ तो वह ज़हरीली हुकूमत-सी लग रही है । सच्चा पाकिस्तान क्या है, सो कोअी जानता नहीं । लेकिन सबको यह याद रखना चाहिये कि ज़ोर-ज़बरदस्तीसे अिस्लामकी सेवा नहीं होती। किसी सच्चे मुसलमान ने मुझे आज तक यह नहीं कहा कि अिस्लाम तलवारके बलसे टिका है । अिस्लामका मतलब है, शांति—अमन । शान्तिसे ही अिस्लाम, ख्रिस्ती और हिन्दू धर्म टिक सकते हैं ।

वज़ीरोंको वक़्त दो

"मुझसे पूछा जाता है कि नमक-कर कब अुठेगा ? अबतक वह रद क्यों नहीं किया गया ? अिन सवालोंसे बेसब्री ज़ाहिर होती है । मंत्रि-मण्डलको हुकूमत सँभाले आज आठ ही दिन हुअे हैं। फाअिनेन्स मिनिस्टरने तो अभी अपना काम सँभाला भी नहीं है । अुनकी राह देखनी चाहिये । मंत्रि-मण्डलको सारे काम सोच-विचार-कर करने हैं। सबसे पहले तो मुझे बेसब्री होनी चाहिये । क्योंकि नमक-कर अुठानेके लिअे लड़नेका ख़याल मेरा था । मैं जानता हूँ कि महसूली आमदनीको कम-से-कम नुक़सान पहुँचाकर यह काम किस तरह किया जा सकता है। फिर भी मेरा ख़याल है कि हमें अधीर नहीं होना चाहिये । मंत्रि-मण्डलको परेशान करके हम अुससे कोअी काम अुतावलीमें न करा लें। सभी मंत्री आम रिआया के नुमाअिन्दा हैं और वे रिआयाकी अिच्छाके अनुसार काम करते हैं। हममें यह श्रद्धा होनी चाहिये कि नमक-कर तो जाने ही वाला है। जिसमें श्रद्धा या अेतक़ाद है, वह सबसे काम ले सकता है। यों तो मंत्रि-मण्डलको दूसरे भी कअी काम जल्दी ही करने हैं। अगर हम अपने मंत्रि-मण्डलकी मदद करते रहेंगे, तो करोड़ोंके फ़ायदे के लिअे जो कुछ किया जाना चाहिये, सो सब होगा ।"

नअी दिल्ली, १०-२-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

ख़ूराककी माप-बन्दी

हिन्दुस्तानमें .ख़ूराककी माप-बन्दीके बारेमें भूल की जा रही है। .ख़ूराक अिकट्ठी करने, ले जाने, रखने और बाँटनेका ख़र्च .ख़ूराककी क़ीमतमें डाला जाता है । अिससे .ख़ूराक पैदा करनेवालेको जो दाम मिलता है, और खानेवालेको जो देना पड़ता है, अुसमें ३० से ५० फ़ीसदी तकका फ़र्क़ रहता है । अिसका नतीजा यह होता है कि—

१. अनाज अुगानेवाला अनाज देना नहीं चाहता; क्योंकि अुसे डर रहता है कि अगर बादमें ख़रीदना पड़ा, तो अुसे ज़्यादा दाम देने पड़ेंगे।

२. .ख़ूराक अुगानेवालों पर बुरा असर होता है । सरकारी ज़ाब्ते और दख़लगीरीके डरसे वे अपनी फ़सल बढ़ानेमें हिचकिचाते हैं।

३. नफ़ेकी अितनी गुंजाअिश होनेके कारण, काले बाज़ारको प्रोत्साहन मिलता है ।

अिसलिअे सूचना यह है कि .ख़ूराक अिकट्ठा करने वग़ैराका ख़र्च सरकारी ख़ज़ानेसे दिया जाय, और ख़रीदनेवालोंको .ख़ूराक अुसी भाव बेची जाय, जिससे अुगानेवालोंके पाससे ख़रीदी गअी थी।

अिसके अलावा अेकसे तीन सालतकके लिअे .ख़ूराकका भाव क़ानूनन निश्चित कर दिया जाय, ताकि अुगानेवाले और ख़रीदनेवाले दोनोंको पता रहे कि अुन्हें क्या मिलेगा और क्या देना होगा ।

अिस छोटेसे फेरफारका यानी .ख़ूराककी माप-बन्दीका अूपरी ख़र्च सरकारी ख़ज़ानेसे देनेका असर यह होगा कि—

१. काला बाज़ार अपने आप बन्द हो जायगा ।

२. ज़्यादा .ख़ूराक अुगानेकी वृत्तिको प्रोत्साहन मिलेगा ।

३. अुगानेवाले अपना माल देनेको तैयार होंगे, क्योंकि अुन्हें पता रहेगा कि जब कभी अुन्हें ज़रूरत पड़ेगी, अुन्हीं दामों अुनको .ख़ूराक मिल सकेगी ।

४. ख़रीदनेवालेको भविष्यमें अपने रहन-सहनका दाम मालूम रहेगा, अिससे अुसको अितमीनान (संतोष) रहेगा ।

५. ज़िन्दगीके लिअे ज़रूरी चीज़ोंकी अेकसी और कम क़ीमत रखनेका रिवाज पैदा होगा ।

अिस तरह .ख़ूराककी माप-बन्दी पर जो ख़र्च होगा, अुसके लिअे अुन चीज़ों पर, जिनकी माप-बन्दी नहीं, ख़ास करके अैश-व-अिशरतकी चीज़ों पर, बढ़ते पैमानेका सेल्स टैक्स लगाकर पैसा पैदा किया जा सकता है । अिस तरह .ख़ूराक-जैसी ज़रूरी चीज़ोंकी क़ीमत अदा करनेमें ग़ैरज़रूरी और अैश-व-अिशरतकी चीज़ें ख़रीदनेवाले मदद करेंगे।

थोड़ेमें, अिस सूचनाको यों रखा जाय कि ज़िन्दगी और सेहतके लिअे ग़ैरज़रूरी चीज़ें ख़रीदनेवालोंको ज़रूरी चीज़ोंके लेजाने, रखने, और बोनेका ख़र्च अुठानेमें मदद देनी होगी, ताकि ज़रूरी चीज़ें अिस्तेमाल करनेवालों तक कम-से-कम क़ीमतमें पहुँच सकें।

(अंग्रेज़ीसे)

मॉरिस फ्रीडमैन

विषय-सूची

ग्यारह दिनका कताओ-क्लास ... गांधीजी
नाजायज़ बरबादी ... अमृतकुँवर
सभ्यताका नाश ... मीराबहन
अेक अहवाल ...
.ख़ूराककी तंगी ... गांधीजी
सवाल-जवाब ... गांधीजी
सच और अहिंसा न छोड़ें ... गांधीजी
भावना कैसे ? ... गांधीजी
हफ़्तेवार ख़त ... प्यारेलाल
.ख़ूराककी माप-बन्दी ... मॉरिस फ्रीडमैन
टिप्पणियाँ
कांग्रेसी मंत्री, साहब लोग नहीं ... मो० क० गांधी
खादी-भण्डारोंके बारेमें ... मो० क० गांधी
मशीनके हल बनाम बैल ... मो० क० गांधी
ज़रूरतसे ज़्यादा ... अमृतकुँवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ-कताओ बनाम मिल-कताओ

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

१२ पृष्ठ
दो आना

सम्पादक – प्यारेलाल

वर्ष १०   अंक ३५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ६ अक्तूबर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

बिहार, ख़बरदार !

यह बड़ी ही बदक़िस्मतीकी बात है कि जिस बिहारने सत्याग्रहके दिनोंमें अितनी करामात दिखाओ, वही अब अेक मनमानी धांधली और अराजकतासे अपने नामको बदनाम करने जा रहा है। अगर अखबारोंमें छपी ख़बरें सच हैं, तो कहना होगा कि बिना किसी मतलबके जंज़ीर खींचकर रेलगाड़ी खड़ी करवा देना बिहारमें अेक मामूली बात बन गओ है। नतीजा यह हुआ है कि आज शायद ही कोओ गाड़ी वक़्तसे चलती हो। मुसाफ़िर भी टिकट लेना ज़रूरी नहीं समझते। अिसके लिअे वे दलील यह देते हैं कि क़ौमी सरकारके राजमें किसी चीज़के लिअे पैसा देना ज़रूरी नहीं। 'जय हिन्द' लूट-पाट और मार-काटका अेक नारा बन गया है।

मैं नहीं जानता कि अूपर जिन अिलज़ामोंका ज़िक्र किया गया है, अनमें कितनी सचाओ है। मगर अिसमें शक नहीं कि ये अिलज़ाम बड़े भयानक हैं। मैं बिहारके अैसे कुछ हिस्सोंसे वाक़िफ़ हूँ, जहाँ लोग आम तौर पर क़ानूनी और ग़ैर-क़ानूनी बातोंमें फ़र्क़ नहीं करते। मैंने लोगोंको यह भी कहते सुना है कि अेक बिहारमें ही नहीं, बल्कि सारे मुल्कमें यह जो ग़ैरक़ानूनीपन फैल रहा है, अुसके लिअे आख़िर मैं ही ज़िम्मेदार हूँ। यहाँ यह कहना ज़रूरी नहीं कि अिस तरह मुझ पर अिसका दोष मढ़ना नासमझी है। मैंने जो ग़ैर-क़ानूनी कारवाओ सिखाओ है, अुसे ग़ैर-क़ानूनी कहा भी जाय, तो भी वह अेक अैसा ग़ैर-क़ानूनीपन है, जो अिनसानको अपनी सेहतके लिअे अच्छी और ज़रूरी ख़ूराक खानेकी ही सलाह देता है। अिस ग़ैर-क़ानूनीपनके पीछे डिसिप्लिन या शिस्त है, और अुसमें समाजकी भलाओका, और अुसे फिरसे अच्छी तरह संगठित करनेकी बातका ख़याल रहा है। वह अन्यायी और नुक़सान पहुँचानेवाले क़ानूनों या सरकारी कामोंके ख़िलाफ़ अुठाओ गओ अेक ज़बरदस्त आवाज़ है। वह कभी अैसी शकल अख़्तियार नहीं कर सकता, जिसमें अपने किसी मतलबके लिअे लोग चाहे जिस फ़र्ज़को टाल दिया करें। हर आदमीका यह फ़र्ज़ है कि जिन ख़ास मौक़ों पर जंज़ीर खींचना ज़रूरी माना गया है, अुन्हें छोड़कर और कभी जंज़ीर न खींचे, और न बग़ैर किराया दिये रेलके किसी दरजेमें सफ़र ही करे। जिसे मेरी अराजकता कहा जाता है, अुसमें लूट-पाट, तोड़-फोड़ और मार-काट वग़ैराकी कभी कोओ गुंजाअिश नहीं रही। अक्सर यह दलील दी जाती है कि मेरा प्रोग्राम आम रिआयाके लीअे ठीक नहीं है, सिर्फ़ चुने हुअे लोग ही अुस पर अमल कर सकते हैं। अिसके जवाबमें मैं यह सवाल पूछना चाहता हूँ कि क्या मुझसे यह अुम्मीद की जाती है कि चूँकि लोग आज़ादी पाकर ख़राब या ज़हरीला खाना खाने लगेंगे, अिसलिअे मैं अुन्हें अच्छा खाना भी न खाने दूँ और भूखों मरने दूँ?

यह सारी चर्चा व्यक्तिगत-सी लगती है, फिर भी मैंने जान-बूझकर अिसे छेड़ा है। अैसा करके मैं यहाँ अपनी कोओ सफ़ाओ नहीं दे रहा। बल्कि मैं यह बताना चाहता हूँ कि बिहारमें जो कुछ हो रहा है, वह निहायत ज़हरीली अराजकता है। अिस तरीक़ेसे स्वराज या आज़ादी नहीं मिलेगी, बल्कि अराजकता ही फैलेगी। अिस तरह लोग आज़ाद नहीं बनेंगे, बल्कि आख़िरकार बुरी तरह ग़ुलामीके शिकार बन जायँगे। अिसमें ज़िन्दगी नहीं, मौत छिपी है। जिस बिहारको मैंने बाबू ब्रजकिशोरप्रसाद और श्री राजेन्द्रप्रसादके बिहारकी तरह जाना है, और जहाँ मैं रहा भी हूँ, क्या वही अब अुस हालतको पहुँच गया है, जिसका ज़िक्र अूपर हो चुका है? बिहारके जन-सेवकोंको चाहिये कि वे बरसोंकी मेहनतसे बनाये गये सुन्दर कामको अिस भद्दे तरीक़ेसे बिगड़ने न दें। बिहार, ख़बरदार!

नओ दिल्ली, २९-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

हरिजनोंके हक़

मेरे पास कुछ ख़त आकर पड़े हैं। कुछ हरिजनभाओ भी मुझसे मिलने आये थे। वे कहते हैं कि अब तो सारे हिन्दुस्तानकी हुकूमत लोगोंके हाथमें, यानी अुनके नुमाअिन्दोंके हाथमें, आ गओ है। अिसलिअे हरिजनोंकी आबादीके हिसाबसे अुनके अेकसे ज़्यादा मंत्री लिये जाने चाहियें। आबादीके ख़यालसे केन्द्र या मरकज़में अुनके कम-से-कम तीन मंत्री तो होने ही चाहियें। दूसरे महकमोंमें भी अिसी हिसाबसे कामका बँटवारा होना चाहिये। यह कहना ग़लत है कि हरिजनोंमें काफ़ी लायक़ आदमी नहीं हैं। फिर, यह भी नहीं कि सब सूबोंमें लायक़ आदमी ही चुने जाते हों। सिफ़ारिशसे चुने गये लोगोंकी कओ मिसालें दी जा सकती हैं।

मैं यह कहनेको तैयार नहीं कि अूपर जो कुछ कहा गया है, सो सब सच ही है। अैसे मामलोंमें मेरा मन दूसरे ही ढंगसे काम करता है। आदमी अपने फ़र्ज़ या धर्मका मालिक है। फ़र्ज़ अदा करनेसे जो हक़ पैदा होता है, वही सच्चा हक़ है; वही शोभा देता है, और वही टिकता है। हरिजनोंके अलावा भी बहुत-से लायक़ आदमी हैं। अगर अुन सबके दिलमें अपना हक़ भोगनेकी अिच्छा पैदा हो जाय, तो समाजमें खलबली मच जाय। अपने धर्मका पालन करनेकी सहूलियत सब किसीको है। सेवाका दायरा बहुत बड़ा है। मालिक तो कुछ ही लोग बन सकते हैं, और जो मालिक या सरदार बनते हैं, वे पिछड़ जाते हैं। मैं जानता हूँ कि आम तौर पर लोग अिस तरह नहीं चलते। हक़ोंके लिअे हाथापाओ होती है, और बहुतोंको नाअुम्मीद होना पड़ता है।

मेरे अपने विचार बन चुके हैं। पचास सालसे मैं अुन पर अमल करता-करवाता रहा हूँ। अिसलिअे मुझे अपने निजके हक़ोंके लिअे लड़नेमें कोओ दिलचस्पी नहीं रही। चुनाँचे, हरिजनोंको मेरी यह सलाह है कि वे अपने धर्मका ही विचार करें। मैं जानता हूँ कि जो अपने धर्मका पालन करता है, हक़ अुसके पीछे दौड़े चले आते हैं।

नओ दिल्ली, २७-९-'४६

(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो अहवाल

१

कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी तरफ़से चलाअी गअी महाराष्ट्र प्रान्तकी छावनी

अिस छावनीकी संचालिका श्री प्रेमाबहन कण्टककी ओरसे मिले अहवालका सार नीचे दिया जाता है —

१५ दिसम्बर, १९४५के दिन पूनासे २२ मील दूर पिंपळे नामके गाँवमें यह छावनी खोली गअी थी। १५ मअी तक छावनी वहीं रही; बादमें तीन हफ़्तोंके लिअे पूना लाअी गअी। २७ मअीके दिन छावनी बरखास्त की गअी।

अिन पौने छह महीनोंमें कुल २० बहनोंने तालीम ली। तालीमके विषय नीचे लिखे थे — (१) सफ़ाअी (२) बैदगीरी (३) चरखेका शास्त्र (४) खेती (५) गोपालन, मुर्गी पालना वग़ैरा (६) देहाती दस्तकारियाँ (७) बुनियादी तालीम (८) आम जानकारी, वग़ैरा। अिसके लिअे छावनीमें तीन शिक्षक क़ायमी तौर पर रहते थे। बाक़ीके बाहरसे आते थे। कुछ दूसरे मशहूर कार्यकर्ताओंके भाषण भी हुअे थे।

अपना निजी काम, छावनीकी सफ़ाअी, कभी-कभी गाँवकी सफ़ाअी, गाय-बछड़ोंकी सेवा वग़ैरा सभी काम बहनें खुद ही करती थीं। अिसके अलावा, अुन्हें क़वायद, हिसाब-किताब, गाँवकी पंचायत वग़ैराकी जानकारी भी कराअी जाती थी। छावनीकी ओरसे अेक दवाख़ाना भी चलता था।

किसानोंके बच्चोंके लिअे रातका अेक मदरसा चलाया गया था। अिस सिलसिलेमें बहनें गाँववालोंकी भी थोड़ी सेवा कर सकी थीं। बहनें गाँवके अुत्सवोंमें शामिल होती थीं और लोगोंमें हिलती-मिलती थीं, जिससे दोनोंके बीच प्यार और विश्वास पैदा हो गया था। बहनोंने गाँवकी हालतका भी थोड़ा मुआयना किया था।

गाँवके मन्दिरमें हर साल बकरोंकी क़ुरबानी की जाती थी। छावनीकी वजहसे यह क़ुरबानी बन्द हुअी, और गाँववालोंने फ़ैसला किया कि वे हरिजनोंको भी नदीके घाटका अिस्तेमाल करने देंगे। अुन्होंने अपनी मेहनतसे अेक अच्छा रास्ता बनानेका भी फ़ैसला किया है।

जब छावनी पूना लाअी गअी, तो बहनोंने वहाँकी बहुत-सी पब्लिक संस्थायें देखीं — जैसे, खेतीका कॉलेज, फलोंके बग़ीचे, गोशाला, गोवर्द्धनवाड़ी, आयुर्वेद-रसशाला, वग़ैरा।

छावनीका काम ख़तम होने पर २० बहनोंमेंसे ६ बहनें 'नर्स'के कोर्समें दाख़िल हुअीं। १२ बहनें ८ देहाती केन्द्रोंमें काम करेंगी; कहीं-कहीं दो बहनोंको — अेक बड़ी अुमरकी और अेक छोटी अुमरकी — अेक साथ काम दिया जायगा।

२

समग्र ग्राम-सेवा समिति (हुदली — कर्नाटक)

भाअी पुण्डलिक कातगड़े अिस समितिके सभापति हैं। अुन्होंने जो अहवाल भेजा है, अुसका सार नीचे दिया जाता है —

चरखा-संघके कामको अलग-अलग मरकज़ोंमें बाँटने और नये ढंग पर चलानेके ख़यालमेंसे हुदलीकी अिस समग्र ग्राम-सेवा-समितिका जन्म हुआ है। सन् १९४५के अप्रैल महीनेमें अिस समितिने अपना काम शुरू किया।

अिस समितिका अुद्देश्य या मक़सद अैसे ग्रामसेवक तैयार करना है, जो गांधीजीके विचारोंमें श्रद्धा या अेतक़ाद रखते हों, गाँवोंमें रहकर गाँववालोंकी ज़िन्दगीको आबाद बनाना चाहते हों, और सेवाके ज़रिये ही अपनी गुज़र-बसर करनेको तैयार हों। अब तक ग्यारह सेवक जुदा-जुदा गाँवोंमें मुख़्तलिफ़ काम लेकर बैठ गये हैं। लेकिन जब तक सबको गाँवसे ही अुनकी गुज़र-बसरके लायक़ रक़म न मिले, तब तक समिति अुनको गुज़ारेके लायक़ ज़रूरी तनख़्वाह देनेके लिअे बँधी है। समितिने कार्यकर्त्ता तैयार करनेके लिअे अेक खादी-विद्यालय खोला था, जिसमें बारह भाअी दाख़िल हुअे थे। अुनमेंसे चार भाअियोंने गाँवमें जाकर काम शुरू किया है। अिन बारहों भाअियोंको सेवादलकी तालीम भी दी गअी थी, अिसलिअे अिनमेंसे दूसरे चारने सेवादलके संगठनका काम अपने माथे लिया है।

खादी-कामके सिलसिलेमें समितिकी तरफ़से दस महीनोंमें ४२६ थान बुने गये, और रु० ४,७५८)की खादी बेची गअी। स्वावलम्बी खादी पहननेवालोंकी तादाद १०० है। कत्तिनें भी अेक गज़ पीछे थोड़ा सूत अपने पास रखती हैं, ताकि आगे चलकर वे अुसमेंसे अपनी ज़रूरतकी खादी बुनवा सकें। जुलाहोंका सवाल मुश्किल बनता जा रहा है। मिलके सूतकी बुनाअीमें ज़्यादा मज़दूरी मिलनेकी वजहसे वे हाथका सूत बुननेको राज़ी नहीं होते। नतीजा यह हुआ है कि जहाँ पहले समितिके पास दस जुलाहे थे, तहाँ अब दो ही रह गये हैं। अिस सवालको हमेशाके लिअे हल करनेके अिरादेसे समितिने अपने कार्यकर्त्ताओंको बुनाअीका काम सीख लेनेकी प्रेरणा की है, और अिस दिशामें काम शुरू हो चुका है।

(गुजरातीसे)

अेक अच्छा तरीक़ा

अेक सज्जनके डलहौज़ीसे आये ख़तका सार नीचे दिया जाता है —

"मैं आपको अेक ख़ास घटनाके बारेमें लिखना चाहता हूँ; क्योंकि मेरी रायमें शायद ही कभी किसी मजिस्ट्रेटने अैसा तरीक़ा अख़्तियार किया हो। चम्बा रियासतके अेक गाँवमें अेक दिन कुछ गुण्डोंने शराब पीकर बहुत अूधम मचाया। अुन्होंने अेक सिपाहीको ख़ूब पीटा, चन्द दुकानें लूटीं, और दुकानदारोंको धमकी दी कि वे अुनकी दुकानें भी जला डालेंगे। दुकानदारोंने तारके ज़रिये रियासतसे रक्षाकी दरख़ास्तकी, और दुकानें बन्द करके हड़ताल कर दी। हड़तालसे गाँववालोंको और आस-पासकी जनताको तकलीफ़ हुअी। मगर दुकानदार डर गये थे। रियासतकी ओरसे ख़ास अिस कामके लिअे भेजे गये मजिस्ट्रेट साहबने पुलिसको हुक्म दिया कि वह अपराधियोंकी खोज और घटनाकी जाँच अिस तरह करे कि गुनहगारोंके साथ बेगुनाह न पकड़े जायँ; और दुकानदारोंसे कहा कि वे ख़ुद अुनके मालकी रक्षाकी ज़िम्मेदारी लेनेको तैयार हैं, चुनाँचे अुन्हें अपनी दुकानें खोलनी चाहियें, जिससे आम लोगोंको तकलीफ़ न हो। दुकानदारोंने कहा कि जब तक वे गुण्डोंको गिरफ़्तार होते न देखेंगे, तब तक दुकानें नहीं खोली जायँगी। अिस पर मजिस्ट्रेट साहबने फ़रमाया कि अुनसे रैयतका दुःख देखा नहीं जाता। अगरचे वे क़ानूनके ज़रिये ज़बरदस्ती दुकानें खुलवानेका हक़ रखते थे, तो भी अुन्होंने ख़ुद अुपवास करना पसन्द किया। लोगोंके दिलों पर अिसका काफ़ी असर हुआ। दूसरे ही दिन लोग समझ गये कि अब हड़ताल जारी रखना ठीक न होगा। चुनाँचे दुकानें खुल गअीं, गुण्डे भी पकड़े गये और गाँवमें पूरी शान्ति क़ायम हुअी।"

अगर यह कहानी सच हो, तो अिससे अमलदार वर्गको अुपवासकी शकलमें अेक बड़ा और बुलन्द हथियार मिलता है।

नअी दिल्ली, २७-९-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणियाँ

केरलमें सहकारी समितियाँ

दो दिन पहले श्री केलप्पन मुझसे मिलने आये थे। अुन्होंने कहा कि केरलमें सहकारी आन्दोलन खूब फैल रहा है, और मज़बूत हो रहा है। अगर ये सोसाइटियाँ पुख़्ता बुनियाद पर काम कर रही हैं, तो सचमुच यह अेक खुशख़बरी है। फिर भी मैंने अिस बारेमें अपना शक ज़ाहिर किया है। सहकारी तहरीककी कामयाबीके लिअे यह ज़रूरी है कि अुसके मेम्बर बहुत अीमानदार हों, वे सहकारी कामके फ़ायदोंको समझते हों, और अुनके सामने अेक निश्चित ध्येय यानी तयशुदा मक़सद हो। अिसलिअे सिर्फ़ सहकारी ढंगसे पर थोड़ा रुपया अिकट्ठा करके और हिस्सों या शेयरों पर ज्यादा ब्याज या सूद लेकर रुपया कमानेकी ग़रज़से काम करना कोअी बात नहीं; लेकिन सहकारी तरीक़े पर खेती करना या 'डेरी' चलाना सचमुच अेक अच्छी चीज़ है, जिससे मुल्ककी तरक़्क़ी होगी। अिसी तरहकी कअी चीज़ें की जा सकती हैं। मैं नहीं जानता कि केरलकी ये सब सोसाइटियाँ किस क़िस्मकी हैं। क्या अुनके पास अीमानदार अिन्स्पेक्टर हैं, जो अपना काम ठीक तरह समझते हों? जहाँ अिन्तज़ाम करनेवाले अीमानदार नहीं थे, और ध्येय या मक़सद भी साफ़ नहीं था, वहाँ अिस तरहकी तहरीकसे अक्सर नुक़सान ही हुआ है।

नअी दिल्ली, २९-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

बहादिली

अेक पठानभाअीने, जो पहले आज़ाद हिन्द फ़ौजमें थे, और अभी फ़र्ममें काम कर रहे हैं, दस सालके अेक लड़केको बचानेकी कोशिश की। हमला करनेवालोंने अुनकी प्रार्थना न सुनी, और लड़केके साथ पठानभाअी पर भी छुरीका वार किया। लड़का मर गया। पठान ज़िन्दा हैं। लड़केके बापने पठानको अुनकी बहादुरीके लिअे चार हज़ार रुपयेका अिनाम देना चाहा, मगर अुन्होंने वह लेनेसे अिनकार किया। कहने लगे—"मैंने अपना फ़र्ज़ अदा किया है। अुसका कोअी अिनाम मैं नहीं ले सकता।" काश, अैसी मिसालें ज़्यादा तादादमें सामने आयें!

नअी दिल्ली, २८-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मो॰ क॰ गांधी

नक़ल करने जैसी मिसाल

श्री परीक्षितलाल मजमूदार हरिजन-सेवक-संघकी गुजरात शाखाके मंत्री हैं। अुन्होंने पिछले जून महीनेसे गुजरात विद्यापीठके मकानमें कॉलेजके लड़कोंके लिअे अेक बोर्डिंग हाअुस या छात्रावास खोला है। अिन १६मेंसे १२ बुनकर, चमार, गरोड़ा, और नाड़िया जातिके हरिजन हैं, और ४ पाटीदार, पाटणवाड़िया व बनिया क़ौमके सवर्ण हिन्दू हैं। बोर्डिंगमें सवर्णों और अछूतोंके बीच किसी-तरहका कोअी भेद नहीं रक्खा जाता। वे अहमदाबादके मुख़्तलिफ़ कॉलेजोंमें पढ़ते हैं; जैसे, आर्ट्स कॉलेज, साअिन्स कॉलेज, और लॉ कॉलेज। हरिजन लड़कोंको सरकार हर महीने रु॰ २५) बतौर वज़ीफ़ेके देती है। गुजरातके हरिजन-सेवक-संघको मकान-किराया, सफ़ाअी वग़ैराका और शुरूकी तैयारीका ख़र्च बरदाश्त करना होगा। अिस खर्चके लिअे सालाना अेक हज़ार रुपयेकी मंज़ूरी दी गअी है। अिकट्ठा रहकर और अेक साथ खाना खाकर छुआछूत मिटानेकी यह अेक अच्छी मिसाल है। अुम्मीद है कि दूसरे सूबोंमें भी अैसा ही किया जायगा, और वहाँ अिस क़िस्मके कअी होस्टल या छात्रावास खोले जायँगे।

(अंग्रेज़ीसे)

अ॰ वि॰ ठक्कर

भंगियोंकी हालत

स॰—यों तो अिस मज़मून पर आप पहले भी कअी बार लिख चुके हैं, फिर भी मैं चाहूँगा कि आप अेक दफ़ा और म्युनिसिपल कमिटियों और दूसरे हाकिमोंके और निजी तौर पर भंगियोंसे काम लेनेवाले लोगोंके फ़र्ज़ पर कुछ लिखें, और अुनका ध्यान अिस तरफ़ दिलावें कि वे सफ़ाअीके कामके लिअे भंगियोंको मुनासिब सामान मुहैया कर दें। मसलन, पाख़ाने कमानेके लिअे भंगियोंके पास लोहेके बन्द मुँहवाले डोल नहीं होते, चुनाँचे बारिशके दिनोंमें जिन टोकनियों और थैलोंमें वे पाख़ाना कमाते हैं, अुनसे गन्दा पानी टपकता है, और वह बेचारे मेहतरोंके सर पर गिरता है। पाख़ाना-सफ़ाअीका सारा काम अितने साफ़ तरीक़ेसे होना चाहिये कि हाथ या बदनका कोअी हिस्सा गन्दा न होने पाये। अगर अैसा हो सके, तो समाजमें अिस कामकी अपनी अिज़्ज़त बढ़ जाय, जो आज अिसे नसीब नहीं। पाख़ाना-सफ़ाअी और लड़कों वग़ैराकी सफ़ाअीके लिअे ज़रूरी सामान मुहैया करनेके अलावा भंगियोंको सफ़ाअीके कामकी ज़रूरी तालीम भी दी जानी चाहिये। सफ़ाअीके हक़में यह ज़रूरी है कि मुक़ामी और सूबोंके हाकिम अिस कामको अपने हाथमें लें।

ज॰—अिस मामलेमें मैं अिस बात पर ज़ोर दूँगा कि पाख़ाना कमानेके बरतनों और झाड़ू वग़ैरा चीज़ोंके लिअे ज़रूरी क़ानून ही बन जाने चाहियें, ताकि मैले और कूड़े-करकटको हाथ लगानेकी ज़रूरत न रह जाय। साथ ही, मेहतरों और भंगियोंके लिअे कामके वक़्त पहननेकी पोशाकका भी अेक अैसा सादा नमूना तय कर दिया जाय, जिससे अुन्हें काम करनेमें आसानी हो। अिन्स्पेक्टरों और मुक़द्दमोंको भी सफ़ाअीके अिस अुपयोगी कामकी तालीम दी जाय, बजाय अिसके कि वे अपने मातहतोंसे ज्यों-त्यों और ज़बरदस्ती काम लेते रहें। आज जिस तरीक़ेसे काम लिया जाता है, अुसमें काम कम-से-कम और गन्दगी ज़्यादा-से-ज़्यादा होती है, और रिश्वतख़ोरी, बदमाशी और बदचलनीका ज़ोर रहता है।

नअी दिल्ली, ३०-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मो॰ क॰ गांधी

अेजण्टोंसे

मेहरबानी करके नीचे लिखी बातों पर ध्यान दें—

१. याद रखिये, कि आपको हमारे यहाँ अपनी माँगके मुताबिक़ **दो महीनोंके** दाम पेशगी जमा कराने हैं। अिनमेंसे अेक महीनेकी रक़म यहाँ क़ायमी तौर पर जमा रहेगी, और बाक़ी चालू खातेमें जमा होगी। हर हफ़्ते भेजी जानेवाली कॉपियोंके दाम चालू खातेसे अुठाये जायँगे।

२. अेजण्ट आम तौर पर अमानतके पैसे चेकसे भेजते हैं। मेहरबानी करके ख़याल रखिये कि हम चेक नहीं लेते। चुनाँचे आप अपनी रक़म मनीऑर्डर, पोस्टल ऑर्डर या बैंक ड्राफ़्टके ज़रिये ही भेजिये।

व्यवस्थापक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

६ अक्तूबर १९४६

हाथ-कताओी बनाम मिल कताओी

सूबोंमें सब जगह वज़ारतें क़ायम होनेसे कुछ पहले मैंने सुना था कि अिन सूबोंको नओी मिलें खोलनेका कोटा, मिलके तकुओंके हिसाबसे दिया गया है। अुसमें शर्त यह थी कि अगर कोओी सूबा ये तकुओे न लेगा, तो अुसका कोटा दूसरे सूबोंमें बाँट दिया जायगा। अब, जब कि सूबोंकी सरकारें पूरे ज़ोरके साथ काम कर रही हैं, सवाल यह पैदा हुआ है कि क्या ये सरकारें अपने सूबोंमें नओी मिलें बनने दें, और साथ-ही-साथ चरखेकी कताओीको भी बड़े पैमाने पर जारी करें? मेरा जवाब साफ़ है—अगर हम हाथ-कताओीके फैलावमें दिलसे यक़ीन करते हैं, तो यह हरगिज़ न होना चाहिये। अिस तरह जो कोटा सारे हिन्दुस्तानको दिया गया है, अुसकी जड़में ख़याल यह रहा है कि हिन्दुस्तान कपड़ेकी अपनी ज़रूरतको मिलोंके ज़रिये ही पूरा कर सकता है, चुनाँचे सारा कपड़ा मिलों ही में तैयार होना चाहिये। साथ ही, कुछ थोड़े नाज़ुक-मिज़ाज लोगोंके लिओे खादी या हाथ-कता, हाथ-बुना कपड़ा भी बनने दिया जाय। कांग्रेसने अपने ठहरावोंमें हाथ-कताओीको कभी अिस शकलमें पेश नहीं किया, और न कुल हिन्द चरखा-संघका काम ही अिस तरीक़े पर बढ़ा है। अगर क़ौमी सरकारें अिस नतीजे पर पहुँच गओी हैं कि हाथ-कताओीका न कोओी भविष्य है, न होना चाहिये, तो अुन्हें चरखा-संघके तरीक़े पर चलनेवाले कामके लिओे अेक पाओी भी ख़र्च नहीं करनी चाहिये। लेकिन अगर अुनको चरखा-संघकी नीतिमें विश्वास हो, अुसका तरीक़ा पसन्द हो, तो अुन्हें अपना कोटा छोड़ देना चाहिये, फिर भले अुसकी वजहसे शुरूमें अुनका थोड़ा नुक़सान ही क्यों न हो। यह नुक़सान आगे चलकर आम रिआयाके फ़ायदेकी ही चीज़ साबित होगा।

अेक दूसरा सवाल यह पैदा हुआ है कि क्यों न कांग्रेसकी वर्किंग कमिटी ही तमाम कांग्रेसी सूबोंके अमलके लिओे अपनी अेक-सी नीतिका अैलान कर दे? अगर वर्किंग कमिटी अैसा करना चाहे, तो अुसे कोओी रोक नहीं सकता। लेकिन साथ ही कमिटी यह कह सकती है कि अिस मामलेमें कांग्रेसकी नीति या पॉलिसीका अिज़हार हज़ारहा बार किया जा चुका है। अब हर सूबेका अपना यह फ़र्ज़ है कि वह कांग्रेसकी अिस तराज़ू पर अपने विश्वासको तौल ले। वर्किंग कमिटी अिसकी तफ़सीलमें जाना पसन्द न भी करे!

तो फिर केन्द्रीय या मरकज़ी सरकार ही क्यों न अपनी कोओी नीति बना दे? अिसका जवाब भी साफ़ ही है। मरकज़ी सरकार सारे हिन्दुस्तानकी और सभी दलोंकी नुमाअिन्दा है। अिसलिओे वह कांग्रेसकी ही किसी पॉलिसी पर ज़ोर नहीं दे सकती, अुन मामलोंमें तो और भी नहीं, जो पूरी तरह सूबोंके अपने दायरेमें पड़ते हैं। अैसा करना सूबोंके हक़ोंमें ज़बरन् दख़ल देना होगा।

सब पहलुओंसे सोचनेके बाद नतीजा यही निकलता है कि सूबोंको अुनके ज़िम्मे दिये गये शराब-बन्दीके और दूसरे मामलोंकी तरह खादीके मामलेमें भी अपने ढंग पर आगे बढ़ना होगा—तरक़्क़ी करनी होगी। अगर अिसके लिओे वे वर्किंग कमिटीसे रहनुमाओीकी अुम्मीद रक्खेंगे, तो बुरी तरह नाकाम होंगे। मरकज़ी सरकारको तो अुसके चाहने पर भी अिसमें दख़ल देनेका कोओी हक़ नहीं।

नओी दिल्ली, ३०-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

'गांधी-विचार-दोहन'

रचनात्मक-कार्यक्रमकी बहुत-सी संस्थाओंमें और गांधी-विचारोंको समझनेकी अिच्छा रखनेवाले दूसरे लोगोंमें भी यह किताब एक पाठ्य-पुस्तक-सी बन गओी है। गुजरातीमें वह तीन-चार बार छप चुकी है, और हिन्दी, कानड़ी आदि भाषाओंमें भी अुसके तरजुमे २-२ बार छप चुके हैं। अेक प्रकाशक-कम्पनी अुसका अंग्रेज़ी तरजुमा छापनेके लिओे मेरी अिजाज़त माँग रही है।

अिस बारेमें दो-तीन बातें ज़ाहिर कर देना ज़रूरी है। मैं १९३९-४० के बाद में अिस पुस्तकको फिरसे देखकर सुधार नहीं सका हूँ। गांधीजीके विचारोंमें अिन ६-७ सालोंमें काफ़ी बढ़ाव हुआ है। अुस बढ़ावेका मिलान करनेके लिओे अिस किताबकी भाषामें बहुत-कुछ फ़र्क़ करना होगा। कुछ नये प्रकरण लिखना भी ज़रूरी हो सकता है। मेरी समझ है कि गांधी-विचार-दोहन जैसा आज है, अुसे वैसा ही छापनेसे गांधीजीके विचारोंके बारेमें कहीं ग़लत ख़याल पैदा होना संभव है। अिसलिओे यही ठीक होगा कि आअिन्दा इस पुस्तकके नये संस्करण या तरजुमे न छापे जायँ।

अिसके अंग्रेज़ी अनुवादके बारेमें अेक ख़ास बात कहना ज़रूरी है। मेरी बिनती पर श्रीमती राजकुमारी अमृतकुँवरने अिसे सारा-का-सारा अंग्रेज़ीमें बनाकर तैयार किया था। गांधीजीने अुसे देखना भी शुरू किया था। अंग्रेज़ीमें लिखनेकी राजकुमारीजीकी क़ाबलीयत मशहूर है। फिर भी गांधीजीकी यह राय हुआी कि गांधी-विचार-दोहनका बोल-दर-बोल तरजुमा अंग्रेज़ीमें शोभा नहीं देता, और अुन्होंने यह सलाह दी कि अिस पुस्तकका अंग्रेज़ी भाषांतर करनेके बदले, अुन विचारोंको अपने ही ढंगसे अंग्रेज़ीमें लिखा जाय। यह काम तो श्रीमती राजकुमारी-जैसी अंग्रेज़ी मुहावरोंकी अच्छी जानकार और लेखिका ही कर सकती हैं। अिसलिओे अंग्रेज़ीमें अिसका भाषांतर करनेकी अिच्छा रखनेवाले लेखक समझ लें कि पुस्तकका सही-सही अंग्रेज़ी तरजुमा ही गांधीजीको पसन्द न आवेगा।

अब सवाल यह है कि पुस्तकको फिरसे सुधार देनेका काम कौन करे? मुझे अुम्मीद नहीं कि मैं यह मेहनत अुठा सकूँगा। मैंने साथी श्री० नरहरिभाओी परीखसे मैंने बिनती की है, और अुन्होंने अुसे मान भी लिया है। लेकिन अुन पर भी कामोंका बोझ कम नहीं और तन्दुरुस्तीकी मेहरबानी भी नहीं। अगर गांधीजीके कोओी दूसरे अभ्यासी अुन्हें मदद दें, तो यह काम जल्दी पूरा हो सकता है। याद रहे कि यह पुस्तक आज तक गांधीजीको दिखाकर छापी गओी है। हो सके, तो आगे भी वैसा ही करना चाहिये। मतलब यह है कि अभी यह कहा नहीं जा सकता कि गांधीजीके विचारोंका नया दोहन कब तक तैयार हो सकेगा। अिसलिओे फ़िलहाल तो यही समझ लेना चाहिये कि चालू पुस्तकको सुधारे बिना अुसके नये संस्करण निकालना या तरजुमे करना असंभव है।

अेक बात और। अिस पुस्तकको किसी भी बोलीमें छापनेसे पहले नवजीवन-कार्यालयकी अिजाज़त लेना ज़रूरी है।

सेवाग्राम, २८-९-'४६ किशोरलाल घनश्यामलाल मशरूवाला

नओी किताबें

	मूल्य	डाकख़र्च
अीशु ख्रिस्त—(किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०-१-०
रचनात्मक कार्यक्रम—अुसका रहस्य और स्थान (नओी और सुधरी हुओी आवृत्ति (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
अेक धर्मयुद्ध—(महादेवभाओी हरिभाओी देसाओी)	०-८-०	०-२-०
हिन्दुस्तानी बाल-पाठावली	०-५-०	०-१-०
मरुकुंज—क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-४-०
हमारी बा—अुनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीख और सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हफ़्तेवार ख़त

१

अगर मैं डिक्टेटर होअूँ तो

कुछ दिनों पहले अेक मिशनरी मित्रके यह पूछने पर कि आज़ाद हिन्दुस्तानमें अुसके हरअेक बाशिन्देको अपना मन-पसन्द मज़हब या धर्म पालनेकी पूरी आज़ादी रहेगी या नहीं, और मज़हबको राजसे अलग रखा जायगा या नहीं, गांधीजीने नीचे लिखा जवाब दिया था — "अगर मैं डिक्टेटर होअूँ तो, मज़हब और राज दोनोंको अेक-दूसरेसे अलग रखूँ। मुझे अपने धर्म पर पूरी श्रद्धा है। अुसके लिअे अपनी जान दे देनेमें भी मैं आगा-पीछा नहीं करूँगा। लेकिन मेरा धर्म मेरी ज़ाती या निजी चीज़ है। राजसे अुसका कोअी वास्ता नहीं। राज आपके अमन-चैन, तन्दुरुस्ती, आमद-रफ़्तके ज़रिये, दूसरे मुल्कोंसे आपके ताल्लुक़ात, सिक्कोंके चलन वग़ैराकी देख-भाल करेगा; आपके या मेरे मज़हबकी नहीं। वह तो हरअेकका ज़ाती मामला है।" अिसके बाद गांधीजीने धर्मके बारेमें अपने ख़यालात अिस तरह ज़ाहिर किये — "आप मेरी सारी ज़िन्दगीको ग़ौरसे देखिये; मैं कैसे रहता हूँ, कैसे खाता हूँ, कैसे बैठता हूँ, कैसे बातचीत करता हूँ, और आम तौर पर मेरा बरताव कैसा रहता है, सो सब आप पूरी तरह देखिये। अिन सबको मिलाकर जो छाप आप पर पड़े, वही मेरा धर्म है।"

गांधीजीसे दूसरा सवाल यह पूछा गया कि औरतोंके अुद्धारसे सम्बन्ध रखनेवाली, सियासी या राजनीतिक, सायन्सकी तरक्क़ीसे ताल्लुक़ रखनेवाली, मज़हबी या अिसी तरहकी दूसरी तहरीकोंमेंसे किसका आनेवाली दुनिया पर बहुत ज़्यादा असर रहेगा, और आजसे सौ साल बाद सारी दुनियाके राज-काज पर व अैसे ही दूसरे मामलों पर मनुष्यजातिके बड़े-से-बड़े फ़ायदेकी नज़रसे अिनमेंसे किस आन्दोलनका ज़्यादा-से-ज़्यादा असर पड़ा समझा जायगा? अिसके जवाबमें गांधीजीने कहा कि मज़हबको बाक़ीके दूसरे आन्दोलनोंके साथ रखना ग़लत है। और फिर अुन्होंने कहा — "आनेवाले ज़माने पर सबसे ज़्यादा असर मज़हबका रहेगा। आज भी अुसका अैसा ही असर पड़ सकता है, और पड़ना चाहिये, लेकिन पड़ता नहीं। क्योंकि मज़हब शनीचर और अितवारकी छुट्टीके दिनोंमें फ़ुरसतसे याद करनेकी चीज़ बना दिया गया है। सच पूछा जाय तो मज़हब ज़िन्दगीकी हरअेक साँसके साथ अमलमें लानेकी चीज़ है। जब अैसा धर्म प्रकट होगा, तब सारी दुनियामें अुसका बोलबाला हो जायगा।"

अिसके बाद गांधीजीसे दूसरा सवाल यह पूछा गया — "आजकल दुनियामें जहाँ-तहाँ, और ख़ासकर हिन्दुस्तानमें, जो मज़दूर-हड़तालें अितनी ज़्यादा तादादमें और अितने बड़े पैमाने पर हो रही हैं, क्या अुनमें आपको कोअी राज़ मालूम होता है? आज हिन्दुस्तानमें मिल-मालिकों और मज़दूरोंका यह जो झगड़ा चल रहा है, आपके ख़यालमें अुसका नतीजा क्या होगा?"

गांधीजीने जवाब दिया — "आजकल हड़तालें सारी दुनियामें छूतकी बीमारीकी तरह फैल गअी हैं। ये हड़तालें सभी मुल्कोंमें होने लगी हैं। अिंग्लैंड और अमेरिका भी अिनकी हवासे बचे नहीं हैं। लेकिन हिन्दुस्तानमें अभी-अभी होनेवाली हड़तालोंमें ख़ास बात यह है। आज हम अेक बनावटी वातावरणमें जी रहे हैं। लोगोंका दम घोंटनेवाली ग़ुलामीका बोझीला पाट जब थोड़ा हटेगा, और आज़ादीकी ताज़ा हवाके लिअे थोड़ी जगह खुलेगी, तो अुसके साथ ही हड़तालें और भी ज़्यादा तादादमें होने लगेंगी। हड़तालकी अिस हवाके फैलनेकी ख़ास वजह यह है कि यहाँ हिन्दुस्तानमें और दूसरे मुल्कोंमें भी ज़िन्दगीकी असल बुनियाद, जो धार्मिक बन्धनों या मज़हबी पाबन्दियोंकी बुनियाद थी, वह जड़से अुखड़ गअी है, और अुसकी जगह, जैसा कि अेक अंग्रेज़ लेखकने कहा है, 'नक़द सिक्कों'ने ले ली है। अेक आदमीको दूसरेसे बाँधे रखनेके लिअे यह बुनियाद बहुत कमज़ोर है। लेकिन जब ज़िन्दगी धर्मकी बुनियाद पर टिकी रहेगी, तब भी हड़तालें तो होंगी ही। क्योंकि आज यह सोचा नहीं जा सकता कि कभी धर्म या मज़हब सभीके जीवनकी असल बुनियाद बन जायगा। अिसलिअे अेक ओर तो समाजका अेक तबक़ा दूसरे तबक़ेकी मज़दूरी पर जीने और अुसे चूसनेकी कोशिश करेगा, और दूसरी ओरसे चूसा जानेवाला तबक़ा हड़तालका सहारा लेगा। लेकिन अुस वक़्त ये हड़तालें बिलकुल अहिंसक होंगी। अैसी अहिंसक हड़तालोंसे किसीको कभी नुक़सान नहीं होता। शायद अैसी अेक हड़तालके प्रतापसे ही जनरल स्मट्सको झुकना पड़ा था। जनरल स्मट्सने मुझसे कहा था — 'अगर आपने अेक भी अंग्रेज़को चोट पहुँचाअी होती, तो मैं आपको गोलियोंसे अुड़ा देता, और आपके अेक-अेक आदमीको देशनिकाला दे देता। लेकिन लड़ाअीकी आजकी हालतमें मैंने सिर्फ़ आपको जेलमें डाल दिया, और आपको और आपके आदमियोंको हर तरहसे दबाकर क़ाबूमें लानेकी कोशिश की। लेकिन जब आप किसी तरहका सामना ही नहीं करते, बदला नहीं लेते, हिंसा नहीं करते, तो अिस तरह मैं कब तक आपको दबा सकता हूँ'? और यही वजह है कि अफ़्रीकामें जिन लोगोंको अुन दिनों वे कुली या मजदूर कहकर पुकारते थे, अुन्हींके अेक नुमाअिन्देके नाते अुन्हें मेरे-जैसे अेक कुलीके साथ बातचीत करके समझौता करना पड़ा था।"

अेक वाक़या और अुसका सबक़

गांधीजीने अपने जीवनके हरअेक क्षण पर कड़ी पहरेदारी करनेकी आदत डाल ली है। वे हर रोज़ अपने दिलमें अपने ही क़ाज़ी बनकर बैठते हैं, और अुसके सामने अपने छोटे-से-छोटे कामका रत्ती-रत्ती हिसाब सख़्तीके साथ तलब करते हैं। अुनकी अिस निजी जाँचमें कोअी बात छूटने नहीं पाती, और जहाँ ग़लती नज़र आती है, वहाँ वे अपने अूपर ज़रा भी रहम नहीं करते। असलमें अपने राअी बराबर दोषको पहाड़-जैसा गिनने और दूसरेकी पहाड़ बराबर ग़लतियोंको राअी बराबर माननेमें अुनका विश्वास है। वे मानते हैं कि सिर्फ़ अैसे मामलोंमें अिस तरहकी ज़्यादती करना धर्म है। अुनकी अिस श्रद्धाका अेक नमूना अुस दिन शामकी प्रार्थनाके वक़्त देखनेको मिला। शामकी आम-सभामें प्रार्थनाके बाद, हरिजन-कामके लिअे भेंटमें मिले हुअे गहनोंको नीलाम करना, अुनका अेक पुराना रिवाज रहा है। वक़्त बचानेके लिअे अुन्होंने पिछले कुछ दिनोंसे यह रिवाज बन्द कर रक्खा था। लेकिन जिन हरिजनोंको वे अपनी ख़ास सार-सँभालका हक़दार मानते हैं, अुन हरिजनोंको नुक़सान पहुँचाकर वे वक़्तकी बचत कर रहे हैं, अिसका दुःख अुन्हें बराबर बना रहता था। अिसलिअे पिछले चौदह दिनोंसे अुन्होंने अेक गहना रोज़ नीलाम करनेका सिलसिला फिर शुरू कर दिया था। अिसकी वजहसे हरिजनोंके लिअे रोज पहलेसे दुगुना चन्दा मिलने लगा था। अिस तरह कुल रु० ३,०७१)के गहने अेक-अेक करके १००)से ४००)की क़ीमत पर नीलाम किये गये।

लेकिन पिछले शनीचरको बरसातकी वजहसे प्रार्थनासभामें बहुत कम लोग हाज़िर रह सके थे। प्रार्थनाके वक़्त सिर पर ताने गये चँदोवेमेंसे पानी चू रहा था, अिसलिअे रोजकी तरह अुस दिन नीलाम करनेका ख़याल छोड़ दिया गया। लेकिन बादमें गांधीजीने अिसके लिअे अपने-आपको बहुत बुरा-भला कहा। दूसरे दिन प्रार्थनाके बाद अुन्होंने ख़ुद ही सवाल किया — "क्या यह मेरी श्रद्धाकी कमी न मानी जायगी? मुझे डर लगा कि आज हाज़िरी थोड़ी है, अिसलिअे नीलाममें ज़्यादा बोली नहीं लगेगी। लेकिन मैंने श्रद्धा क्यों नहीं रखी? क्या मेरे अेक दोस्त श्री डाअुन्सने डरबनमें शामको सात बजे गिरजाघरके मंचसे धर्मोपदेश करनेका फ़ैसला करनेके बाद ठीक सात बजे सिर्फ़ अेक श्रोताके सामने अपना भाषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुरू नहीं किया था? अिसका नाम श्रद्धा है।" आखिरमें गांधीजीने कहा —"चाहे सारी दुनिया गले-गले तक झुठाअीमें फँसी क्यों न नज़र आये, जो श्रद्धावान है, वह तो मज़बूतीके साथ सचाअी पर डटा रहेगा। भगवानसे मेरी हमेशा यही प्रार्थना रहती है कि वह आप लोगोंको अैसी श्रद्धा दे। आप लोग भी मेरे लिअे यह दुआ करें कि अिस बार मेरे श्रद्धासे डिग जानेके बावजूद मुझे वह श्रद्धा वापस मिल जाय।"

ज़मानेकी अेक निशानी

कताअी-क्लास खोलनेका जो ख़याल श्री कनु गांधीके दिमाग़में अेक लहरकी तरह अुठा था, अुसमें आशासे कहीं ज़्यादा कामयाबी हासिल हुअी। ग्यारह दिनके लिअे कताअी सिखानेका क्लास खोलनेके अुनके अैलानके जवाबमें फ़ौरन ही काफ़ी अर्ज़ियाँ आने लगीं। अैलानके मुताबिक़ अिस क्लासमें दाखिल होनेके लिअे अर्ज़ी देनेकी आख़िरी तारीख़ ग्यारह सितम्बर थी। लेकिन अुस तारीख तक १५९ अर्ज़ियाँ आ गअीं। चुनाँचे अुसके बाद आनेवाली अर्ज़ियाँ नामंजूर कर दी गअीं। अिससे बहुत-से लोगोंको नाअुम्मीद होकर वापस जाना पड़ा। अिसके बाद जो लोग दिनमें नहीं आ सकते थे, अुन्होंने रातका क्लास खोलनेके लिअे अर्ज़ियाँ भेजी हैं। चुनाँचे अुनके लिअे मुनासिब अिन्तज़ाम करनेकी बात सोची जा रही है। फ़िलहाल लोगोंको शुरूमें हाथसे बिनौले अलग करना और तुनाअीसे लेकर कताअी तककी दूसरी सब क्रियायें सिखाअी जाती हैं। सीखनेवाले दो दलोंमें आते हैं। अेक दल सबेरे ७ बजेसे ११ बजे तक और दूसरा शामको २से ५ तक काम सीखता है। पहले दलमें मर्द और दूसरेमें औरतें ज़्यादा आती हैं। सबेरे आनेवालोंमें साठ फ़ीसदी सरकारी नौकर हैं। सीखनेके लिअे आनेवाले लोगोंमेंसे ज़्यादातर लोग ख़ुशहाल हैं, और ज़ाहिर है कि वे सब सेवाके ख़यालसे ही आते हैं। सिर पर तने चँदोवेके महीन कपड़ेसे छनकर आनेवाली कड़ी धूपमें अेकध्यानसे अपने काममें लगे हुअे अिन लोगोंको देखकर सचमुच ही ख़ुशी होती है। कताअी-क्लासके अैलानके जवाबमें अितने ज़्यादा लोगोंने अुसमें दाखिल होनेकी अपनी तैयारी दिखाअी कि शुरू-शुरूमें क्लासके मुन्तज़िमोंके लिअे ज़रूरी साधनों और औज़ारोंका अिन्तज़ाम करना मुश्किल हो गया। लेकिन अब यह मुश्किल आसान हो गअी है। गांधीजी हर रोज़ सुबह-शाम सीखनेवालोंके कामकी जाँच करते हैं, और शामको प्रार्थना-सभाकी अपनी तक़रीरमें अुन सब बातोंका थोड़ेमें ज़िक्र कर जाते हैं, जो अिस मुआयनेके सिलसिलेमें अुनके ध्यानमें आती हैं। कलकी अपनी तक़रीरमें अुन्होंने कहा —"अिन १४१ भाअी-बहनोंको पूरी श्रद्धाके साथ कताअी-क्लासमें आते देखकर मुझे यह यक़ीन हो चुका है कि अेक दिन समूचा हिन्दुस्तान सिरसे पैर तक खादी पहनने लगेगा। जब सन् १९१८में मैंने कताअीको फिरसे जिलानेका काम शुरू किया, तब हिन्दुस्तानमें साठ करोड़ रुपयोंका परदेशी कपड़ा आता था, और अुसमें हिन्दुस्तानकी मिलोंमें बननेवाला कपड़ा शामिल न था। बाहरसे आनेवाले मालमें यही अेक अैसी चीज़ थी, जिसके कारण देशका सबसे ज़्यादा धन परदेश जाता था। अिसके बाद दूसरा नम्बर शकरका और तीसरा लोहेकी चीज़ोंका था, जिनकी वजहसे हर साल १८ करोड़ और ७ करोड़ रुपया बाहर जाता था। आज सिक्कोंकी अिफ़रातकी वजहसे चीज़ोंकी जो क़ीमतें बढ़ गअी हैं, अुसके हिसाबसे देशी और परदेशी दोनों क़िस्मके मिलके कपड़ेकी क़ीमत क़रीब ३०० करोड़ रुपये होती है। अगर ३०० करोड़का यह कपड़ा हम यहाँ हिन्दुस्तानके गाँवोंमें अपने हाथों पैदा कर लें, तो आप सब सोचिये और समझिये कि हिन्दुस्तानका कितना धन मिल जायगा! हमारे लिअे तो यह सोनेके सिक्कोंकी अेक टकसाल ही है। अगर सब लोग खादी बरतने लग जायँ, तो हमारे गाँवोंकी वह तरक़्क़ी हो, जो आज तक कभी हुअी न थी। आज हमारी आम जनता बेहद ग़रीबीमें फँसी है, और अुसकी आँखोंमें बुद्धि या आशाकी कोअी चमक नज़र नहीं आती। कातनेवालोंके शुद्ध या पाक हाथोंसे अुनके लिअे यह चमत्कार पैदा किया जा सकता है, और अुसमें सब कोअी मदद कर सकते हैं। मोटी और खुरदरी होने पर भी खादीके लिअे आपको अपने अन्दर अितनी सहृदयता और समझदारी पैदा करनी होगी कि आप अपने दिलसे और अपनी आँखोंसे अुसकी ख़ूबसूरतीको महसूस कर सकें और सराह सकें। अगर अैसा हुआ, तो आप मिलोंके अुस महीन और मुलायम कपड़ेके मोहमें हरगिज़ न फँसेंगे, जो कभी सच्चे मानोंमें आपकी लाज ढँक नहीं पाता। अपनी लाज ढँकने और अपने मुल्कसे भुखमरी और फ़ाक़ाकशीको देशनिकाला देनेका अेक ही अिलाज है, और वह यह है कि आप अपनी ज़रूरतका अनाज ख़ुद पैदा कर लें, और अपना कपड़ा अपने हाथों बना लें। अगर हम यह निहायत अुम्दा कामयाबी हासिल कर लें, तो सारी दुनियाकी आँखें हिन्दुस्तानकी तरफ़ मुड़ जायँ। मगर आज तो अिस देशमें सब-कुछ अुलटा ही होता दीख रहा है। आपने अख़बारोंमें पढ़ा होगा कि बम्बअीमें कुछ बन्दूकधारी लोगोंने पागल बनकर कअी बेगुनाह राहगीरोंको घायल किया और मारा। रेडियोके ज़रिये यह शर्मनाक ख़बर सारी दुनियाको सुनाअी गअी होगी। अिसकी वजहसे हमें अफ़सोसके साथ नीचा देखना पड़ा है। लेकिन अगर आप सब मेरी बात पर ध्यान देंगे, तो अब भी हिन्दुस्तानमें सब-कुछ ठीक ही होगा। अगर हम सब अपने दिलका मैल साफ़ करके अुसे साफ़-पाक बना लें, और यह मानने लगें कि हम सब भारतमाताकी सन्तान या औलाद हैं, तो कहा जायगा कि हमने चरखेसे सच्चा सबक़ सीखा है।"

जोश और अुमंगसे भरे और हिन्दुस्तानीमें लिखे अपने अेक सन्देशमें, जो सोमवारकी शामको प्रार्थना-सभामें पढ़ा गया था, गांधीजीने लिखा था —"यहाँ जो चरखा-क्लास ज़ोर-शोरसे चल रहा है, अुसके सामने मुझे और सब बातें बेजान और फीकी मालूम होती हैं। क्योंकि अुसमें चरखे पर कतनेवाले अेक-अेक तार पर मुझे मेरा राम नाचता दिखाअी पड़ता है। अुसमें मुझे स्वराजके दर्शन होते हैं। जब मैं चालीस करोड़ हाथोंसे काते गये सूतके तारकी ताक़त और अुसके असरका ख़याल करता हूँ, तो मेरा दिल आनन्दसे अुछलने लगता है। लेकिन आप हँसेंगे और कहेंगे कि जाने भी दीजिये अिस बातको! यह कभी हो ही नहीं सकता कि बीस करोड़ हिन्दुस्तानी कातने लगें! लेकिन क्या अिस चीज़को माननेसे अिनकार करके हम अपनी नासमझी ज़ाहिर नहीं करते? क्या अिससे हमारी श्रद्धाकी कमी साबित नहीं होती? क्या यह अुम्मीद नहीं रक्खी जा सकती कि हमारी समूची बस्तीका आधा हिस्सा रोज़ अेक घण्टा कातेगा? अगर अपनी मातृभूमिके लिअे अितनी क़ुरबानी करनेकी भी हमारी तैयारी या ताक़त न हो, तो हम अुसके प्रेमकी जो डींगें हाँकते हैं, अुनका मतलब क्या?"

नअी दिल्ली, १६–९–'४६

२

अेक अंग्रेज़ पत्रकारके साथ

"हिन्दुस्तान आज़ादीकी सीढ़ी पर है। आज़ादी तो आ रही है, चाहे मुस्लिम लीग और कांग्रेसमें समझौता हो या न हो। अुसे कोअी रोक नहीं सकता। वह तो हिन्दुस्तानकी तक़दीरमें लिखी है; क्योंकि अुसने आज़ादीके लिअे अपना ख़ून बहाया है।" सबेरेके वक़्त नअी दिल्लीकी भंगी-बस्तीके चौगानमें घूमते हुअे गांधीजीने अेक परदेशी अख़बारनवीसके सामने अिन शब्दोंमें हिन्दुस्तानकी आज़ादीके बारेमें अपना विश्वास ज़ाहिर किया। आजकल गांधीजी अख़बारनवीसोंको मुलाक़ात देना अक्सर पसन्द नहीं करते, लेकिन ख़ुशक़िस्मतीसे ये परदेशी पत्रकार घूमते वक़्त अुनसे बात कर सके और गांधीजीको अपने पर लगाअी हुअी अिस पाबन्दीको तोड़ सके। अिन पत्रकारका सवाल था कि "अगर कांग्रेस और लीग मिलकर काम करें, तो क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानको आज़ादी हासिल करनेमें आसानी नहीं होगी? और क्या अिसके लिअे अैसा सहयोग ज़रूरी नहीं है?" गांधीजीने जवाब दिया — "आप सच कहते हैं। दोनोंमें दिली सहयोग हो जाय, तो आज़ादी हासिल करनेका काम आसानीसे और जल्दीसे आगे बढ़ सके। लेकिन यह सहयोग सच्चे दिलसे होना चाहिये, मन समझानेके लिअे दिखलाअू सहयोगसे पूरा नहीं पड़ेगा।"

पत्रकारोंसे गांधीजी अपना बहुत नज़दीकका रिश्ता मानते हैं, अिसलिअे अिन पत्रकारके साथ अपनी दोस्तीकी शुरूआत अुन्होंने पत्रकारके कर्तव्य (फ़र्ज़)का ज़िक्र करते हुअे की। अुन्होंने कहा — "कभी-कभी अैसा होता है कि पत्रकार अपने फ़र्ज़को चुप रहकर अच्छी तरह पूरा कर सकता है।"

पत्रकार दोस्तने दलील की — "पत्रकारका तो काम है कि वाक़यात (घटनाओं)का ठीकसे बयान कर दे और लोगोंको अपनी राय अपने-आप क़ायम करने दे। क्या आप नहीं मानते कि आम लोगोंमें अपनी राय क़ायम करनेका माद्दा है, बशर्ते कि अुन्हें वाक़यातकी ठीक-ठीक जानकारी हो?" गांधीजीने जवाब दिया — "सिर्फ़ वाक़यातकी जानकारी कोअी चीज़ नहीं। आज वाक़यातके नाम पर जो कुछ बताया जाता है, वह तो सिर्फ़ किसी आदमीके मन पर पड़नेवाले असर हैं, या चीज़ोंका अपने-अपने हिसाबसे अंदाज़ लगाना है, और अिस अंदाज़में फ़र्क़ हो सकता है। अिसीलिअे हमें अेक ही घटनाके कअी अलग-अलग बयान देखनेको मिलते हैं।" मिसालके तौर पर गांधीजीने सात अन्धोंका वह मशहूर क़िस्सा सुनाया, जिसमें अेक ही हाथीके बारेमें अुनके जुदा-जुदा ख़याल थे, लेकिन अुनमेंसे हरअेक यही समझता था कि वही सही है। अिसलिअे प्रजातंत्रके ठीक तौरसे चलनेके लिअे जो ज़रूरी चीज़ है, वह वाक़यातकी जानकारी नहीं, पर ठीक तरहकी शिक्षा है, और पत्रकारका असल काम यही है कि वह आम लोगोंको सही शिक्षा दे; न कि अुनके दिमाग़ोंमें ज़रूरी-ग़ैरज़रूरी असर भरता रहे। अिसलिअे पत्रकारको हमेशा अिस बातका ख़याल रखना चाहिये कि किस घटनाकी क्या रिपोर्ट दे और कब दे। आज जैसी हालत है, अुसमें पत्रकारको सिर्फ़ अिससे तसल्ली नहीं होती कि वह घटनाओंकी रिपोर्ट कर दे। अख़बारनवीसी तो अुन घटनाओंका पहलेसे अंदाज़ लगानेकी अेक कला बन गअी है।"

गांधीजी आगे कहते रहे — "अेक समाज-सुधारक और जनताके सेवकके नाते मेरा फ़र्ज़ है कि मैं ही अिस बातको तय करूँ कि कब कोअी बात कही जाय, और कब चुप रहा जाय।" अपने बारेमें बोलते हुअे गांधीजीने कहा — "दुनियामें अमन और शान्ति क़ायम करनेके लिअे जो सबसे अच्छी सेवा मैं कर सकता हूँ, वह यही है कि मैं भुला दिया जाअूँ। आज दुनियाको शब्दोंकी ज़रूरत नहीं है, अुसे ज़रूरत है कामकी। काम और मिसालोंका असर शब्दोंसे कहीं ज़्यादा होता है। और यह बात छोटे-बड़े सबके लिअे लागू है।"

पत्रकार दोस्तने बीच ही में अेक बड़ा सवाल पूछ लिया — "आप रूसके बारेमें क्या सोचते हैं?" गांधीजीने कहा — "रूस मेरे लिअे अेक पहेली है। अगर यह रिपोर्ट सही है कि जो मुल्क अब तक आम लोगोंके हक़में काम करनेका दावा करता रहा, वह अब अेक सरमायादार ताक़त या साम्राज्यशाही सत्ता बन गया है, तो अिसका ख़याल मुझे दुःखी बना देता है। लेकिन मुझे अेक मुल्क और स्टालिन-जैसे बड़े आदमीके बारेमें फ़ैसला देनेका हक़ नहीं, क्योंकि मेरे पास सही-सही ख़बरें भी नहीं हैं।"

अगला सवाल किया गया — "क्या दुनिया तरक़्क़ी कर रही है? मशीनोंने, और ज़िन्दा रहनेके लिअे हमें जो कशमकश करनी पड़ती है, अुसको दिन-पर-दिन आसान करते चले जानेसे क्या लोगोंकी प्रवृत्तियाँ, हिम्मत और विचार करनेकी ताक़त कमज़ोर नहीं पड़ रही?"

गांधीजीने कहा — "अगर मौजूदा दुनियाके बारेमें आपकी यही टीका है, तो मैं अिससे सहमत हूँ।"

"और अणु बमके बारेमें आपका क्या ख़याल है?"

"ओह! अिस मामलेमें तो आप सारी दुनियाके सामने डंकेकी चोट यह अैलान कर सकते हैं कि मेरे ख़यालोंमें फ़र्क़ होना नामुमकिन है। आदमियों, औरतों और बच्चोंका आम ख़ून करनेके लिअे अॅटम बमके अिस्तेमालको मैं साअिन्स (विज्ञान)का बहुत बड़ा राक्षसी अिस्तेमाल समझता हूँ।"

"तो फिर अिसका अिलाज क्या है? क्या अिसने अहिंसाको ख़त्म नहीं कर दिया है?"

"नहीं", गांधीजीने जवाब दिया — "अब तो अुलटे हुआ यह है कि मैदानमें अकेली अहिंसा ही रह गअी है। यही अेक अैसी चीज़ है, जिसे अॅटम बम ख़त्म नहीं कर सकता। जब हिरोशिमा पर अॅटम बम गिरने और अुसके बरबाद होनेकी ख़बर मुझे मिली, तो मैं ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। अुलटे, मैंने अपने मनमें यही कहा कि अगर अब भी दुनिया अहिंसाको नहीं अपनाती, तो मानवजाति आत्महत्या या ख़ुद-कुशीसे बचेगी नहीं!"

अिसके बाद मुलाक़ात लेनेवाले सज्जनने पूछा — "अेक पिताके नाते आप अेक अैसे नौजवानको, जो ज़िन्दगीके दरियामें पहली बार अपनी नाव छोड़नेवाला हो, क्या सलाह देंगे?"

"यही कि वह अपनी ज़बान बन्द रखे।" गांधीजीने जवाब दिया। "क्या शेक्सपियरने कहा नहीं है कि दूसरोंके लिअे अपने कान हमेशा खुले रखो, और ज़बान बन्द?"

"आपने अपने मामले में तो अिस नीतिको ख़ूब बरता है।" पत्रकार दोस्तने कहा।

"ज़रूर! अपने शुरूके दिनोंमें मैं सोचा करता था कि मैं गधा और बेवक़ूफ़ हूँ, और शायद मैं कभी बोल नहीं सकूँगा। लेकिन अपनी अुन दिनोंकी अुस नालायक़ीके लिअे आज मैं अीश्वरका अेहसानमंद हूँ।"

"आप तो हमेशासे अेक लड़ाकू रहे हैं। लड़ाअियोंसे आपको क्या फ़ायदा हुआ?"

"अुन्होंने मुझे आगे आनेवाली दूसरी लड़ाअीके लिअे और ताक़त दी। लड़ाअीसे मुझे तो फ़ायदा ही हुआ। औरोंको अुससे क्या मिला, मैं नहीं जानता।"

पत्रकार भाअीने फिर वही पहली बात छेड़ दी — "यह देखकर कि कांग्रेस और लीगके बीचका जो फ़र्क़ है, वह अेक या दो बुनियादी बातों पर आकर रुक गया है, क्या यह ठीक न होगा कि समझौता करनेके ख़यालसे थोड़ा-बहुत त्याग किया जाय?"

गांधीजीने जवाब दिया — "अेक अैसी चीज़ के लिअे जिससे फ़ायदा होने, न होनेके बारेमें शक है, किसी अुसूलकी कुरबानी नहीं की जा सकती।"

पत्रकार दोस्तने कहा — "अिस मामलेमें दोनों बाज़ुओंकी दलीलें सुननेके बाद अेक बाहरी आदमीको बड़ी अुलझन होती है; अिसलिअे अैसा लगता है कि अुसे अैसे मामलेमें अपना फ़ैसला मुल्तवी रखना चाहिअे।"

गांधीजी बोले — "जब दो पार्टियाँ अेक राय नहीं होतीं, और दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़ी हुअी हैं, तो अुनमेंसे अेक-न-अेक तो ग़लत होगी ही। दोनों तो सही नहीं हो सकतीं। अैसे मामलेमें दुनिया को ही फ़ैसला करना चाहिये। अुसे अपना फ़ैसला रोकना नहीं चाहिये। यह तो अहिंसाके रास्तेमें भी देखा गया है कि कअी लोग जो पूरा-पूरा अिन्साफ़ करना चाहते हैं, वे भी ग़लत फ़ैसला कर बैठते हैं।"

अपने बिदा होनेसे पहले पत्रकार दोस्तने गांधीजीको अुनके अगले जन्मदिनके लिअे बधाअी दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीने कहा — “ मेरे नज़दीक अपनी सालगिरहकी कोअी अहमियत नहीं । अिनसान हर दिन नया जन्म लेता है । कम-से-कम मेरा तो यही हाल है ।”

अठहत्तरवीं सालगिरह

पत्रकार मित्रको बिदा करते समय गांधीजीने अुनसे जो बात कही थी, अुसमें आनेवाली किसी घटनाका अिशारा था, अिसका कोअी ख़याल गांधीजीको भी न रहा होगा । २२ सितम्बरके दिन अुनकी सालगिरह मनानेके सिलसिलेमें जो अेक छोटी-सी बात हो गअी, अुसकी वजहसे गांधीजीका यह कथन कि आदमी हर रोज़ नया जन्म लेता है, मंच पर खेले जानेवाले नाटकके दृश्यकी तरह सबके लिअे अेक आँखों देखी चीज़ बन गया । गांधीजीके और स्व० कस्तूरबाके दिलमें चरखा बराबर बसा रहा है, चुनाँचे क़ुदरती तौर पर सालगिरह मनानेके लिअे किसी-न-किसी शकलमें कताअीका ही प्रोग्राम रक्खा गया था, क्योंकि अुस दिन संजोगसे हिन्दू पंचांगके मुताबिक़ गांधीजीकी जन्मतिथिके साथ तारीख़के मुताबिक़ स्व० कस्तूरबाके गुज़रनेका दिन भी पड़ता था ।

अुस दिनका काम झण्डा-वन्दनसे शुरू होनेवाला था । श्री राजेन्द्रबाबू झण्डा फहरानेवाले थे । दिल्लीके जिन भाअियोंके ज़िम्मे अिसके अिन्तज़ामका काम था, अुन्होंने झण्डा-वन्दनके बाद हरिजन बच्चों और स्वयंसेवकोंको नाश्ता करानेका प्रोग्राम रक्खा था । अुस दिन बड़े सबेरे ही गांधीजीको अचानक अिसका पता चल गया । अिससे अुनके दिलको बहुत सदमा पहुँचा । यह सब क्यों हुआ, अुन भाअीको यह ख़याल क्यों सूझा, अिसकी वजह जाननेके लिअे गांधीजीने अपना दिल टटोला । अुन्हें लगा कि अुनके साथी चरखेके रहस्य या राज़को भूल गये हैं । शामकी प्रार्थनाके बाद अपने प्रवचनमें अिसकी चर्चा करते हुअे अुन्होंने कहा —“ आख़िर चरखेका रहस्य या राज़ क्या है ? चरखेका और कताअीके अिन कामोंका राज़ यह है कि हम सब बराबर हैं । हम सबोंकी हालत अेक-सी है । अिस पर यह पूछा जा सकता है कि अगर बात अैसी ही है, तो फिर यह नीलाम क्यों ? और, जिस चूड़ीके दाम सौ रुपये हैं, अुसीके पाँचसौ कैसे मिलते हैं ? सवाल बिलकुल ठीक है । लेकिन चरखेसे हमें यही सीखना है कि हिन्दुस्तानके चालीस करोड़में अेक हम भी हैं, और हमें अुन्हींकी तरह रहना है । अुस हालतमें कोअी ग़ुलाम न रह जायगा । कोअी सेठ या मालिक कैसे रहेगा ? आज हममें अमीर और ग़रीब, ऊँच और नीचके बहुत-से भेदभाव मौजूद हैं । लेकिन चरखेकी गूँज कहती है — ‘ ख़बरदार ! तुम सब बराबर हो । तुममेंसे हरअेकको मरना है, और हरअेकको अिस धरतीकी मिट्टीमें मिल जाना है । फिर अितना घमण्ड और ग़रूर किस बातका ? अगर तुम्हें अपनी रोज़ी कमानी है, तो तुम सब मेहनत करो, बराबरीसे मेहनत करो ’ । रूसमें अेक बड़े फ़िलॉसफ़र हो गये हैं । अुन्होंने सबकी अिस मेहनतको ‘ ब्रेड लेबर ’ यानी रोटीके लिअे मजदूरी कहा है । अगर जीना चाहते हो, तो मेहनत करो । लेकिन यहाँ ब्रेड या रोटीसे मतलब है, सिर्फ़ ज़रूरतकी चीज़ें, चटपटी या मौज-शौक़की चीज़ें नहीं ।

“ कहा जाता है कि हिन्दुस्तानमें काल पड़ा है । हमारे नये मंत्री भी यही बात कहते हैं । लेकिन हममेंसे बहुतेरे अैसे हैं, जो भूख लगने पर वक़्तसे खानेके बजाय भरे पेट भी खाते हैं । अगर हम यह बुरी आदत छोड़ दें, तो किसीको भूखों न मरना पड़े । साथ ही, अगर अनाजके लिअे हम दूसरे देशोंका मुँह देखा करें, और ख़ुद कोअी मेहनत न करें, तो हम भूखों मरनेसे बच नहीं सकते ।

“ कल अेक छोटी-सी घटना (वाक़या) होने जा रही थी । वैसे, वह छोटी चीज़ थी, लेकिन मेरे ख़यालसे बहुत बड़ी थी । अगर वह चीज़ हो जाती, तो मैं रोता, और आपको भी रुलाता । सबेरे ही मैंने अपने साथियोंसे पूछा कि आजका प्रोग्राम क्या है ? मुझसे कहा गया कि सुबह झण्डा-वन्दनके बाद श्री राजेन्द्रबाबूके हाथों हरिजन बच्चों और स्वयंसेवकोंको मिठाअी दी जायगी । यह सुनकर मैं चौंका और काँप अुठा । ग्यारह दिन तक यहाँ चरखा-क्लास चला और मैंने रोज़ चरखेकी ही बातें कीं । मुझे लगा कि चरखेका सन्देश, अुसका पैग़ाम, बिलकुल भुला दिया गया है । वरना अैसा होता क्यों ? यह कैसे हो सकता था ? और नाश्तेकी मिठाअी भी किसके हाथों बाँटी जानेको थी ? राजेन्द्रबाबूके हाथों, जो महकमे ख़ूराक और खेतीके वज़ीर हैं ! आज वे ख़ुद दिन-रात अिस फ़िक्रमें रहते हैं कि लोगोंको भूख और कालके पंजेसे किस तरह बचाया जाय । वे अिस कामके लिअे राज़ी कैसे हो सकते हैं ? जिन हरिजनों और स्वयंसेवकोंको आप खिलाने जा रहे थे, क्या भूखों मर रहे हैं ? यहाँके भंगी भूखों तो मर नहीं रहे । अुनकी भूख तो कुछ और ही क़िस्मकी है । वह न पैसेकी भूख है, न मिठाअीकी ! वे तो अिज्ज़तके साथ अिनसानकी तरह जीना चाहते हैं । यही अुनकी भूख है । हम अुन्हें सफ़ाअीसे रहना सिखायें, अुनकी गन्दी आदतें छुड़ायें, अुनमें जो डर जड़ जमाकर बैठा है, अुसे मिटायें । यह अुनकी भूख है । हरिजनोंके लिअे जो पैसा मैं माँग-माँगकर अिकट्ठा करता हूँ, सो अुन्हें घर बैठे रोटी खिलानेके लिअे नहीं करता, बल्कि अिस ख़यालसे करता हूँ कि अुनकी सच्ची सेवा हो, और अुनकी सच्ची भूख बुझे । यहाँसे कुछ ही दूर पर भंगी-बस्ती बसी है, और बालिका-आश्रम भी है । हरिजनोंकी सच्ची भूख बुझानेका काम बालिका-आश्रम जैसी संस्थायें कर रही हैं । बालिका-आश्रमकी लड़कियोंने कलकी नुमाअिशमें अच्छा काम किया । आज सबेरे वे सब प्रार्थनामें भी आअी थीं । क्या मैंने अुन्हें कुछ खानेको दिया था ? पूछा भी था कि तुम कुछ खाओगी ? नहीं । लेकिन अुन्हें जिस चीज़की ज़रूरत है, जो चीज़ अुन्हें मिलनी चाहिये, अुसके लिअे मेहनतकी, त्याग या क़ुरबानीकी और सेवाकी ज़रूरत है । लेकिन हमें तो सेवाका मुश्किल रास्ता छोड़कर खाना बाँटनेका आसान रास्ता अपनाना है ।

“ आज सुबह जो बात बनी, क्या अुसकी वजह यह है कि मैं ख़ुद अैश-आराममें डूबा हूँ ? चरखा हमें सिखाता है कि अगर दो मोसम्बीसे तेरा काम चल सकता है, तो तुझे तीन खानेका हक़ नहीं । अगर बकरीके दूधसे तेरा काम चल सकता है, तो तुझे गेहूँ या चावलको हाथ लगानेका क्या हक़ है ? लेकिन यहाँ तो दौड़धूप करके भी सब ज़रूरी चीज़ें मँगाअी जाती हैं । अैसी हालतमें मैं किस बिरते अपने साथियोंसे ज़्यादा अुम्मीद रक्खूँ ? अपनी गूँजके ज़रिये चरखा हमें यही सिखाता है कि जिन चीज़ोंकी हमें ज़रूरत नहीं, अुन्हें हम खाना छोड़ दें । और जिन्हें जिसकी ज़रूरत नहीं, अुन्हें प्यारकी वजहसे भी हम वह चीज़ न दें । अगर हम अितना भी न सीख सकें, तो फिर चरखा चलानेमें कोअी सार नहीं ।”

गांधीजीकी आदत है कि वे हर बार अुनके लिअे कौनसी चीज़ कितनी बनाअी जाय, अिसकी अलग-अलग सूचना सुबह-शाम दे दिया करते हैं । किस दिन या किस वक़्त क्या खाना ठीक होगा, अिसका फ़ैसला करते समय वे अुस दिनकी अपने शरीरकी हालत, आराम और कामकी हालत, और दिनमें कितनी मेहनत करनी पड़ जायगी वग़ैरा बातों पर ग़ौर कर लेते हैं । अुस दिन शामको अुन्होंने अेक परचे पर लिखकर यह जताया कि — ‘ मेरे दूधके साथ रोज़की तरह मोसम्बीके रसके बदले खट्टे नीबूका रस रक्खा जाय । जब खट्टे नीबू और गुड़से काम चल सकता है, ता मुझे मोसम्बी खानेका क्या हक़ है ’ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुस रातको अपनी डायरीमें अुन्होंने नीचेकी रहस्यपूर्ण टिप्पणी लिखी थी— "आजके प्रोग्रामके बारेमें पूछने पर मालूम हुआ कि करीब २,००० लोगोंको फल वग़ैरा बाँटे जानेवाले थे। मुझे बहुत दुःख हुआ . . . मैं बहुत चिढ़ा . . . मैंने कहा कि कताअीका मतलब ही भुला दिया गया है . . . अब मुझे अपना रास्ता सोच लेना होगा। घरके अिस दावानलमें अनासक्त या बेलाग रहना बहुत मुश्किल मालूम होता है . . . हृदय-मंथन जारी है।"

अेक बातचीतके सिलसिलेमें अुन्होंने अपने अेक नज़दीकी साथीसे कहा— "मेरा मन बेचैन हो रहा है। मैं अिस सारी तकलीफ़को पूरी-पूरी शान्तिके साथ क्यों नहीं बरदाश्त कर सका? मैं महसूस करता हूँ कि १२५ साल तक जीनेके लिअे जितनी अनासक्ति होनी चाहिये, अुतनी मुझमें नहीं है। चरखे और खादीका काम अितनी धीमी चालसे क्यों चल रहा है, अिसका जवाब भी अिसमेंसे मिल जाता है। खादीकी कामयाबीके लिअे अनन्त धैर्यकी, बेअिन्तिहा श्रद्धाकी ज़रूरत है। हर तरहकी कामयाबीकी चाबी अिस बातमें है कि अपने अपनाये हुअे कामके लिअे हमारे दिलमें ज़ोरकी लगन हो, और साथ ही पूरी-पूरी अनासक्ति भी।"

नअी दिल्ली, २४-९-'४६

३

अेक अमेरीकन अख़बारनवीसके साथ

पिछले हफ़्ते मैंने गांधीजीके साथ अेक अंग्रेज़ अख़बारनवीसकी मुलाक़ातका बयान किया था। अुन्हीं दिनों अेक अमरीकन अख़बार-नवीस भी गांधीजीसे मिले थे। अुन्होंने जो सवाल पूछे थे, वे गांधीजीकी शख़्सियतसे गहरा ताल्लुक़ रखनेवाले और अुस पर ख़ूब रोशनी डालनेवाले थे। बातचीत कअी मसलों पर हुअी, जिनमें गांधीजीकी निजी ज़िन्दगीके फ़िलसफ़े और भाग्यवादसे लेकर आरज़ी हुकूमतके मंत्रियोंके भविष्य, और तीसरे जंगको रोकनेके सवाल-जैसी बड़ी बातें शामिल थीं।

अिन दोस्तका पहला सवाल यह था— "क्या आपको ज़िन्दगी सुख और आनन्दसे भरी लगती है? क्या वजह है कि आप १२५ बरस तक ज़िन्दा रहना चाहते हैं?" जब गांधीजी ने जवाब दिया कि वे ज़िन्दगीके मज़े लेनेके लिअे नहीं, वरन् सेवा करनेके लिअे १२५ बरस जीना चाहते हैं, तो अुन्हें यह सुनकर ताज्जुब हुआ। अिस जवाबसे भौंचक-से बने अपने मुलाक़ाती भाअीको समझाते हुअे गांधीजीने अुनसे कहा कि अिन दोनोंमें बड़ा फ़र्क़ है। अिसके बाद वे 'अीशोपनिषद्' में बताये गये त्यागके ज़रिये सुख भोगनेके तरीक़े पर रोशनी डालते रहे।

"आपको ज़िन्दगीका सच्चा आनन्द कबसे मिलना शुरू हुआ?" अख़बार मित्रने फिर पूछा।

"जबसे मैं पैदा हुआ।"

"नहीं। मेरा मतलब यह है कि वह कौनसा वक़्त था, जब आपको सेवामें आनन्द आने लगा?"

"जब मैंने ज़िन्दगीके असल मानी समझ लिये।"

"क्या यह हिन्दुस्तानकी अपनी ख़ासियत है?"

"हिन्दुस्तानकी ख़ासियत तो सिर्फ़ अुसकी ग़रीबी है; जैसे अमेरिकाकी ख़ासियत है, अुसकी दौलतकी चमक-दमक।"

"क्या कभी अैसे मौक़े नहीं आते, जब अिनसानको अपने आदर्श और वक़्तकी ज़रूरतके बीच समझौता करना पड़ता हो?"

"नहीं, कभी नहीं। मैं यह नहीं मानता कि अगर मक़सद अच्छा है, तो अुसे पूरा करनेका कोअी भी तरीक़ा जायज़ है।"

"क्या यह मुमकिन है कि आप किसी दिन सियासी कामसे अलग होकर समाज-सुधारमें ही लग जायँ?"

गांधीजी ने कहा— "शायद आप नहीं जानते कि राजनीतिक या सियासी क्षेत्रमें तो मुझे मजबूरन् आना पड़ा है। क्योंकि मैंने महसूस किया कि बिना राजनीतिमें अुतरे हम कोअी सामाजिक काम भी नहीं कर सकते। मैं मानता हूँ कि राजनीतिक कामको सामाजिक और नैतिक तरक़्क़ीकी कसौटी पर ही कसना चाहिये। प्रजातन्त्र या जमहूरियतमें तो ज़िन्दगीका कोअी भी पहलू राजनीतिके बाहर नहीं रहता। अिसी तरह अंग्रेज़ी राजमें भी राजनीतिसे कोअी बच नहीं सकता। अुसने हमारी सारी ज़िन्दगीको घेर लिया है। अुसके राजमें साँस लेनेवालेको भी टैक्स चुकाना पड़ता है। हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी राजके यही मानी हैं। नमक-टैक्स को ही लीजिये। अुसका यहाँके हर आदमीसे ताल्लुक़ है। महसूल वसूल करनेवाला कलेक्टर और पुलिस, ये दो ही यहाँ अंग्रेज़ी राजकी निशानियाँ हैं, जिनके ज़रिये गाँवोंमें रहनेवाले करोड़ों लोग अंग्रेज़ी राजकी हस्तीको महसूस करते हैं। जहाँ जनता लूटी-खसोटी जा रही हो, वहाँ कोअी कैसे चुप बैठ सकता है?"

"तब तो आपका काम कभी ख़तम ही न होगा?" अुन दोस्तने पूछा।

"ठीक है। वह मेरे मरने पर ही ख़तम होगा। अगर मैं सही मानों में समाज-सुधारक हूँ, तो मुझे हमेशा चौकन्ना रहना चाहिये; फिर चाहे यहाँ परदेशी सरकार हुकूमत करे या देशी। यह बात सब पर लागू होती है।"

"जब लोगोंके हाथमें ताक़त आ जाती है, तो वे आम जनतासे अलग पड़ जाते हैं। क्या यहाँ भी अैसा ही होनेवाला है?"

"हमें अुम्मीद करनी चाहिये, और अीश्वरसे दुआ माँगनी चाहिये कि यहाँ कभी अैसा न हो! मैंने तो अपने लोगोंके सरकारी ओहदों पर बैठनेको काँटोंका ताज़ पहनना कहा है, और वह ताज़ भी अैसा है, जिसके काँटे बहुत नुकीले हैं।"

तरह-तरहकी चर्चा

अिसके बाद वे दोस्त दूसरी कअी तरहकी चर्चा करते रहे।

अुन्होंने गांधीजीसे पूछा— "आप विद्यार्थियोंकी हड़तालोंके बारेमें क्या सोचते हैं?"

गांधीजीने कहा— "वे तो छूतकी बीमारीकी तरह अेक आम बीमारी बन गअी हैं।"

"क्या आप कभी मायूसी महसूस करते हैं?" अुन भाअीने पूछा।

"यह लफ़्ज़ तो मेरे लुग़त या शब्दकोशमें ही नहीं है। मैं अेक अैसी ताक़तमें यक़ीन रखता हूँ, जो सब पर राज करती है। मेरा अुस पर अुतना ही भरोसा है, जितना अिस वक़्त आपसे बातचीत करनेमें। यह 'बातचीत करना' ग़लत या झूठ हो सकता है, लेकिन अुस ताक़तका होना तो सच ही है। वही मुझ पर हुक्म चलाती है, और मुझे तूफ़ानके बीच भी शान्त या ख़ामोश रहनेकी ताक़त देती है।"

फिर सवाल पूछनेवाले दोस्तने 'भाग्यवाद' यानी क़िस्मत पर भरोसा रखनेके बारेमें गांधीजीकी राय जाननी चाही।

गांधीजी बोले— "अिस लफ़्ज़का बहुत ग़लत अिस्तेमाल हुआ है। यह सच है कि हम अुतने आज़ाद नहीं, जितना हम सोचते हैं। हमारे पिछले संस्कार हमें जकड़े रहते हैं। लेकिन दूसरे सब सिद्धान्तवादोंकी तरह अिस पर भी हदसे ज़्यादा ज़ोर देना घातक साबित हो सकता है।"

अिस पर सवाल यह अुठा कि जब तक़दीर या क़िस्मत ही असल चीज़ है, तब अुसके बुरे-भले असरसे कोअी कैसे छूट सकता है? गांधीजीने जवाब दिया— "जिस तरह लोग काँटेदार थूहरका संकर करके अुसके काँटे मिटा देते हैं, और अुसे घासकी तरह ढोरोंके खानेकी चीज़ बना देते हैं, अुसी तरह जो लोग पूरे अनासक्त या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेलाग रहकर सुख और दुःख दोनोंको समान समझकर सहते हैं, वे दुःखके डंकको बेकार बना देते हैं, और क़िस्मतके असरसे बच जाते हैं।"

अुन दोस्तका आख़िरी सवाल यह था — "आनेवाले जंगको कैसे रोका जाय?"

गांधीजीने जवाब दिया — "दुनिया जो चाहे, करती रहे, लेकिन अगर हम सही रास्ते पर चलें, तो जंग रोका जा सकता है। अगर कोअी शख़्स दुनियाको हिलाना चाहता है, तो अुसे दूसरोंकी राह देखे बिना फ़ौरन अपनी ताक़तभर अपना काम शुरू कर देना चाहिये। अिस तरह करनेसे अेक वक़्त अैसा आयगा, जब कोअी अुसे रोक न सकेगा, और वह जो कुछ करेगा, अुसका असर सारी दुनिया पर होगा। लेकिन यह तभी होता है, जब आदमी अपनी ख़ुदीको मिटा देता है।"

आगे चलकर गांधीजीने कहा — "अगर तीसरा जंग हुआ, तो सारी दुनियाका ख़ात्मा हो जायगा। अब तीसरी लड़ाअीको सहनेकी ताक़त दुनियामें रही नहीं है। मेरे ख़यालमें तो दूसरा जंग ही ख़त्म नहीं हुआ; वह अभी चल रहा है।"

काली घटा

अेक दिन प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा — "अिस हफ़्ते भर जगह-जगहसे मार-काट और हमलोंकी ख़बरें आती रहीं, और वातावरणको अँधेरेसे छाती रहीं। आज हम अेक बहुत ही नाज़ुक वक़्तमेंसे गुज़र रहे हैं। कलकत्ता, ढाका, अिलाहाबाद, बम्बअी, वग़ैराकी ख़बर है कि वहाँ छुरे चल रहे हैं। तमाशा यह है कि यह सब मज़हबके नाम पर हो रहा है। मेरी समझमें नहीं आता कि बेगुनाह लोगोंको घायल करने और मारनेसे, फिर चाहे यह हमला करनेके ख़यालसे या बदला लेनेकी ग़रज़से ही क्यों न किया जाय, मज़हबकी तरक़्क़ी कैसे हो सकती है? मज़हबका तो तक़ाज़ा है कि हम अपने छोटे-से-छोटे काममें भी अीश्वरको अपना गवाह बनायें। अभी मीराबाअीका जो भजन गाया गया, अुसमें भक्तने भगवान्‌से प्रार्थनाकी है कि वह संकटमें अुसकी मदद करे, और अुसका दुःख-दर्द मिटाये। अगर हमारी प्रार्थना सच्चे दिलकी हो, तो हम अीश्वर पर पूरा-पूरा भरोसा रक्खेंगे, और तलवार फेंक देंगे। अगर अेक पार्टी भी अैसा करे, तो यह मार-काट बन्द हो जाय।"

अेक आदरणीय बंगाली दोस्तने गांधीजीसे पूछा था — "कलकत्तेमें हाल ही जैसी लूट-पाट और मार-काट हुअी, अुसमें हमें क्या करना चाहिये?" गांधीजीने जवाब दिया — "हिन्दू और मुसलमान दोनोंको अपनी हिफ़ाज़तके लिअे छुरे और लाठीका सहारा नहीं लेना चाहिये, बल्कि अपने अन्दर बिना बदला लिये, मर जानेकी ताक़त पैदा करनी चाहिये। अिसीमें अुनकी रक्षा या हिफ़ाज़त है।" आगे चलकर गांधीजीने बतलाया कि अुनके पास रोज़ाना अैसे ख़त आते हैं, जिनमें ख़त भेजनेवालोंके किसी दोस्त या रिश्तेदारके मरनेकी ख़बर होती है। लेकिन वे सबको यही जवाब देते हैं कि न वे ख़ुद अिसका रंज मनायें, और न गांधीजीसे अुम्मीद करें कि वे अुनके शोकमें शामिल हों। "अगर अीश्वर पर हमारा पूरा-पूरा भरोसा है, तो हम मानेंगे कि मौत तो नश्वर या फ़ानी शरीरकी ही होती है। अुसके भीतर रहनेवाली रूह या आत्मा तो अमर है। अिनसान मरनेके लिअे ही पैदा हुआ है। मौत पैदाअिशका क़ुदरती नतीजा है।" अिसलिअे भगवान् चाहे हमें क़ुदरती मौत दे, चाहे किसीके छुरेसे हमारी मौत हो, हमें हर हालतमें यहाँसे हँसते-हँसते जाना चाहिये। अगर हम अैसा कर सकें, तो ये लाठियाँ और छुरियाँ, जो आज हर जगह नज़र आती हैं, फिर कहीं दिखाअी न पड़ें। चुनाँचे सबको चाहिये कि वे अीश्वरसे प्रार्थना करें कि वह हमें अैसी श्रद्धा दे, जिससे हम अपनी हिफ़ाज़तके लिअे बाहरी साधनोंका आसरा न लें, और अपनेको अुसीके भरोसे छोड़ सकें। याद रहे कि अीश्वर कभी अपने भक्तोंको अुबारनेमें नहीं चूकता।

हिन्दुस्तान स्काअुट असोसिअेशन

२९ सितम्बरकी शामको प्रार्थनाके बाद हिन्दुस्तान स्काअुट अेसोसिअेशनके कुछ मेम्बर अपने नैशनल कमिश्नर श्री हृदयनाथ कुँजरू और नैशनल ऑर्गेनाअिज़िंग कमिश्नर पं० श्रीराम बाजपेयीके साथ चन्द मिनटोंके लिअे गांधीजीसे मिले। अुनके सामने भी गांधीजीने अपनी वही श्रद्धा प्रकट की। पिछली दफ़ा सन् १९४०में ये सब गांधीजीसे सेवाग्राममें मिले थे। अिन सज्जनोंने गांधीजीसे कहा कि अब अुनके स्काअुटोंकी तादाद क़रीब तीन लाख तक पहुँच गअी है। अिस पर मीठी चुटकी लेते हुअे गांधीजीने अुनसे पूछा — "तो फिर आज मुल्कमें ये हुल्लड़ क्यों होते हैं, और छुरियाँ क्यों चलती हैं? आपका धर्म है कि आप ग़ुस्सेसे अन्धे बने हुल्लड़बाज़ोंके बीच जाकर खड़े हो जायँ, और ज़रूरत पड़ने पर अपना ख़ून बहाकर भी दंगाअियोंको अेक-दूसरेका ख़ून बहानेसे रोकें।"

क्या वे करेंगे?

खादी, शराब-बन्दी और छुआछूत मिटानेका प्रोग्राम बरसोंसे कांग्रेसका अपना प्रोग्राम रहा है। अिस प्रोग्राम पर अमल करनेके लिअे बुद्धिकी अुतनी ज़रूरत नहीं, जितनी श्रद्धा या अेतक़ादकी, पक्के अिरादेकी और पाक नीयतकी ज़रूरत है। अेक दिन शामकी प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अिस बात पर अपनी ख़ुशी ज़ाहिर की कि मद्रासके प्रधानमंत्री – वज़ीरे-आज़म – श्री टी० प्रकाशम्‌जीने अिन तीनों कामोंके लिअे अपने सूबेमें बड़ी-बड़ी स्कीमें तैयार की हैं। खादीके लिअे तैयार की गअी अुनकी स्कीमको पसन्द करनेसे पहले गांधीजीने अुनसे यह वादा करवाना चाहा कि वे अपने सूबेमें नअी मिलें खड़ी नहीं होने देंगे। मालूम होता है कि मुल्कमें क़ौमी सरकारके बननेसे पहले ही वाअिसरायकी कार-कारी कौन्सिलने हर सूबेके लिअे मिलकी मशीनरीका कोटा या हिस्सा तय कर दिया था। गांधीजीसे कहा गया कि अगर कोअी सूबा अिसके मुताबिक़ अपने हिस्सेकी मशीनरी न ले, तो वह दूसरे किसी सूबेको दे दी जायगी। गांधीजीने अुनसे कहा कि अगर अेक तरफ़ मिलकी मशीनरीके परवानोंके लिअे पड़ापड़ी होती रहे, और नअी मिलें बनती रहें, तो खादीकी आपकी योजना निकम्मी साबित होगी। अगर आप करोड़ों रुपया अिन मिलों पर ख़र्च करेंगे, तो देहातवाले भी समझ जायँगे कि असल चीज़ तो मिल ही है।

कांग्रेसके लीडरोंको अपने वादों पर क़ायम रहना है, और अपने दिल साफ़ रखने हैं। कोअी कुबेरका ख़ज़ाना भी अुनके सामने रख दे, तो अुन्हें अुसके लालचमें फँसना नहीं है। अपने अुसूलोंकी ख़ातिर हँसते-हँसते सूली पर चढ़नेकी अुनकी तैयारी होनी चाहिये। पिछली लड़ाअीसे पहले सब जगह कपड़ेकी नअी मिलें खड़ी की गअी थीं। अब फिर सूबोंसे कहा जा रहा है कि वे नअी मिलें खड़ी करें। अगर अैसा हुआ, तो अिसकी वजहसे करोड़ों रुपया परदेश चला जायगा। मगर कारख़ानोंसे होनेवाली आमदनीका लालच सूबोंकी सरकारोंको ललचा रहा है। गांधीजीने कहा – "मेरी रायमें कपड़ेकी मिलें हमारे देहातके लिअे ज़हर हैं। अिस पर लोग पूछ सकते हैं कि अगर अैसा है, तो आप मिल-मालिकोंके मेहमान क्यों बनते हैं! अिसका जवाब यह है कि मेरे स्वतंत्र विचारोंको जानते हुअे भी मिल-मालिकोंने मुझे अपनाया है। और, अहिंसाका धर्म है कि वह मतभेदोंको भी मुहब्बतके साथ बरदाश्त करे। श्री प्रकाशम्‌ने मुझसे कहा है कि वे मद्रासमें नअी मिलें बनाना नहीं चाहते। और खादीके हक़में अनुकूल हवाके तैयार होते ही वे पुरानी मिलोंको भी ख़त्म कर डालना चाहते हैं।

अुसी दिन प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा कि बाहरसे जितना अनाज आनेवाला था, वह सब आ नहीं सका है। और अिस पर टीका करते हुअे वे बोले — "डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद तो बादशाह आदमी हैं! वे अपने पासकी आधी रोटी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…लोगोंके साथ बाँटकर खानेवालोंमें हैं। दक्षिणवालोंकी पुकार सुनकर …हुन्होंने अुनसे वादा किया है कि वे हिन्दुस्तानमें जहाँ कहीं भी …गा, वहाँसे चावल अिकट्ठा करके अुन्हें देंगे। मैं मदरासियोंको …अच्छी तरह जानता हूँ। मेरे साथ अुनकी पहली पहचान दक्षिण …अफ्रीकामें श्री बालासुन्दरम् नामके अेक ग़रीब मदरासीकी मारफ़त हुअी …। मैंने श्री बालासुन्दरम्का अेक मुक़दमा लड़ा था। ट्रान्सवालकी …जेलके दिनोंमें अुन्हें अेक पौण्ड डबल रोटी और अेक औंस शकर ही …खानेको मिलती थी। पहले दिन शामको मैंने देखा कि कुछ मदरासी भाअी …की छावनीमें बैठे गा रहे थे, और पास ही अुगी हुअी घास …मेंसे खाने लायक़ सब्ज़ी चुनकर अुसे पकानेमें लगे थे। मदरासी …बड़े होशियार होते हैं। अुनकी आँख फ़ौरन पहचान लेती है …कौन चीज़ खाने लायक़ है, और कौन नहीं। दक्खिनी …हिन्दुस्तानमें केला बहुतायतसे होता है। वहाँ नारियल भी ख़ूब …हो जाता है। अिसके अलावा, दूसरे कन्द-मूल, अिमली और मिर्च …की चीज़ें भी वहाँ होती हैं। तो फिर और क्या चाहिये? …मदरासी बहुत अक़्लमन्द और जुगत लड़ानेवाले होते हैं। अगर …अुनसे कहा जाय, तो बहुत आसानीके साथ बिना चावलके भी वे अपना …काम चलाना सीख सकते हैं। मैंने श्री प्रकाशम्‌जीसे कहा है कि वे …श्री राजेन्द्रबाबूको तकलीफ़ न दें। जो कुछ हमारे पास है, अुसीसे …हम अपना काम चला लें। अुन्होंने मेरी बात मान ली है। हममेंसे …हरेकका धर्म है कि हम अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें, और …बुद्धिके साथ, पक्के अिरादेसे और अक़्लमन्दीसे अनाजकी मौजूदा …तंगी और अुससे पैदा होनेवाली मुश्किलोंका सामना करें। अगर …कोअी अैसा करेंगे, तो अुससे हिन्दुस्तानका भला ही होगा।"

श्रद्धाकी कसौटी

गांधीजी जहाँ कहीं भी जाते हैं, वहीं अपने अिर्द-गिर्द कताअी …खादीकी हवा पैदा कर लेते हैं। दिल्लीवालोंका आग्रह देखकर …बापू गांधीने ३० सितम्बरसे अेक हफ़्तेके लिअे अेक और कताअी-…वर्ग शुरू किया है। पिछले क्लासके तजरबेकी बदौलत अिस बार …सिखानेवाले ज़्यादा अच्छी तरह सिखा सकते हैं, और कताअी वग़ैराका …साज़-सरंजाम भी जुटा लिया गया है। अिस क्लासमें दाख़िल …होनेकी फ़ीस पहलेकी तरह अेक रुपया ही है। मगर सीखनेवाले लोग …रोज़ आते रहें, और अच्छी तरह लगकर सीखते रहें, अिसके …लिअे अुन्हें अेक रुपया और जमा कराना होगा।

अिरादा यह था कि अेक बारमें ३०से ज़्यादा सीखनेवाले …न लिये जायँ। मगर पहले दिन ही सुबह ३८ जने आ गये, और …दूसरे ३४ आये। सुबह आनेवालोंमें २१ भाअी और १७ …बहनें थीं। शामको १४ भाअी और २० बहनें आअीं। सोमवारके …शामको प्रार्थना-सभाके लिअे गांधीजीने नीचेका सँदेशा दिया — …"अिससे पता चलता है कि जनताके अेक हिस्सेमें तो काफ़ी अुत्साह …और श्रद्धा है। तो क्या दोष सिखानेवालोंका है, जिससे कताअी …सब जगह फैल नहीं पाअी? ज़मानेको दोष देना हारकी निशानी है। …अपनी श्रद्धा और मेहनतके बलसे हमें अपने हालात पर फ़तह …पानी चाहिये। अगर सब काम अिसी पाये पर और अिसी वृत्तिसे …किये जायँ, तो अीश्वर ज़रूर हमारी मेहनतको सफल बनाये।"

चन्द मार्केकी बातें

अिस हफ़्ते हमें शान्तिनिकेतनके श्री नन्दलाल बोस और श्री …दयाल मल्लिकको अपने बीच पानेका फ़ख़्र हासिल हुआ। श्री …दयाल मल्लिकने प्रार्थनाके समय, आत्माको हिला देनेवाले सुरमें, अेक …बढ़िया सिन्धी भजन गाया। नीचे अुसका तरजुमा दिया जाता है —

…तेरा मकान आला (बहुत सुन्दर) है।
…तू सब जगह हाज़िर है।
…आसमानकी तरफ़ देखता हूँ, तो वहाँ
…तारोंसे भरा और तारोंमें तू विराजमान है।
आसमानमें चाँद तू है।
बाज़ारमें लोगोंकी भीड़ तू है।
और अिनसानोंमें अुनकी जान तू है।
मन्दिरमें जाता हूँ, तो वहाँ मूर्तियाँ हैं,
मगर मूर्तिके अन्दर भी तू मौजूद है।
समन्दरकी लहरोंमें भी तू है।
तू नाख़ुदाओंका भी नाख़ुदा है।
तुझे हर जगह देखकर लोग तेरी पूजा करते हैं
और अुससे अुनकी तमाम ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं।

अिस हफ़्ते कांग्रेसकी सूबा कमिटियोंके प्रेसिडेण्ट और सेक्रेटरी भी गांधीजीसे मिले थे। अपनी अिस मुलाक़ातमें अुन्होंने गांधीजीसे कुछ ज़रूरी और अटपटे सवाल पूछे थे, और गांधीजीने अुनके जवाब दिये थे। अुनमेंसे कामके सवाल-जवाब अगले अंकमें दिये जायँगे।

यहाँ यह ज़िक्र करना ज़रूरी है कि आजकल बहुतसे लोग दूसरे मुल्कोंमें होनेवाली कान्फ्रेन्सों वग़ैरामें जानेके लिअे बड़ी सरगर्मी दिखा रहे हैं। अुनमेंसे कअियोंने गांधीजीसे अुनके आशीर्वाद चाहे हैं। गांधीजीने अुनमेंसे अेकको जो जवाब भेजा है, वह यहाँ देने लायक़ है—

"मैं पश्चिमके पीछे पागल होना पसन्द नहीं करता। मैं देखूँगा कि मर्दों और औरतोंकी यह पल्टन वहाँसे क्या लेकर आती है। मगर जो चीज़ मुझे पसन्द नहीं, अुसके लिअे कोअी मेरे आशीर्वाद न माँगे। मेरी राय तो आप जानते ही हैं।"

नअी दिल्ली, १-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

और ताड़ अुगाओ

१५ साल पहले कांग्रेसकी शराब-बन्दीकी लड़ाअीमें, ताड़के जिन दरख़्तोंसे नशीली ताड़ी निकलती है, अुन्हें नाश करनेका कार्यक्रम भी था। अुस वक़्त लोग यह समझ नहीं पाये थे कि ताड़के दरख़्तोंका कोअी क़सूर न था। अुनमेंसे तो मीठा, बग़ैर नशेका, सेहत देनेवाला नीरा निकलता है। क़सूर तो मालिकका था, जो अुस मीठे नीरेसे नशीली ताड़ी बनाता था। अिसलिअे अक़्लमन्दीका रास्ता यह होगा कि मालिकोंको सुधारा जाय, न कि ताड़के दरख़्तोंको काट डाला जाय। सब दरख़्तोंसे कुछ-न-कुछ फ़ायदा तो होता ही है। ताड़के दरख़्त दो काम करते हैं – अेक तो अुनसे ताड़का गुड़ और शकर मिलती है, और दूसरे हर रोजके अिस्तेमालकी चीज़ें, जैसे टोकरियाँ, झाड़ू, ब्रश, पंखे, केनका सामान, वग़ैरा ताड़के दरख़्तके अलग-अलग हिस्सोंसे बनते हैं। खजूर और ताड़से तो खाने लायक़ फल भी मिलता है। अेक पालमायरा ताड़से सालभरमें अेक मन गुड़ मिलता है, और अेक खजूर ताड़से हर तीसरे साल ½ मन गुड़ निकलता है। गन्नेकी तरह अिन दरख़्तोंको पानी नहीं देना पड़ता। जंगली जानवरोंसे बचाना भी नहीं पड़ता। अेक दफ़ा बोनेके बाद ये दरख़्त ५० सालसे ज़्यादा अरसे तक ज़िन्दा रहते हैं, और गुड़ देते रहते हैं। ये झाड़ बंजर ज़मीनमें अुगाये जा सकते हैं। गन्नेकी तरह अिन्हें अुपजाअू खेतोंकी ज़रूरत नहीं होती। बोनेके बाद मीठा नीरा देनेके लिअे खजूरको क़रीब दस साल लगते हैं, और पालमायराको १५ साल।

कोशिश यह होनी चाहिये कि गुड़ बनानेके लिअे ज़्यादा-से-ज़्यादा ताड़के दरख़्त बोये जायँ। दो दरख़्तोंके बीच दस फुटका फ़ासला रखना चाहिये। अगर ताड़के दरख़्त जंगलकी तरह अुगाये जायँ, तो नीरा कम निकलेगा। दरख़्तके बीचकी ज़मीनमें अनाज भी बोया जा सकता है। अुससे न दरख़्तोंका नुक़सान होगा, न अनाजका।

मगनवाड़ी, वर्धा
(अंग्रेज़ीसे)

गजानन नायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो घोड़ोंकी सवारी

अुत्कल या अुड़ीसामें ताँती लोग काफ़ी तादादमें रहते हैं। वे क़ानूनन् हरिजन माने जाते हैं, और पान-ताँतीके नामसे मशहूर हैं। अुनमेंसे कअी अपने पेटके लिअे सिंहभूम ज़िलेके कोल्हन ताल्लुक़ेमें रहते हैं। वे अपनेको पान-ताँती नहीं कहते। सिर्फ़ ताँतीके नामसे अपनी पहचान देते हैं। नतीजा अिसका यह हुआ है कि बिहारमें अुनकी गिनती हरिजनोंमें नहीं होती। अुनके अगुआ भी अपनेको हरिजन कहकर दफ़्तरोंमें दाखिल नहीं होते। मेरे ख़यालमें अुनका यह तरीक़ा ठीक ही है। अपनेको हरिजन या अछूत कहलानेका मोह क्यों रक्खा जाय? अुससे फ़ायदा क्या? यही न कि अुसकी वजहसे वोट मिलेंगे, सरकारी मदद मिलेगी, और हरिजन-सेवक-संघसे तालीमके लिअे वज़ीफ़ा वग़ैरा मिलेगा? क्या अिस तरहकी मदद पानेके लिअे हम घृणित बनें? यह विचार ही हमें गिरानेवाला है। क्या रोटीके लिअे हम अपनेको पतित बनायें?

ताँतियोंको पान-ताँती बननेकी ज़रूरत नहीं। अब तो लोगोंकी सरकार काम कर रही है। सरकारका धर्म है कि वह पिछड़ी हुअी जातियोंके साथ भी वैसा ही बरताव करे, जैसा हरिजनोंके साथ करती है — यानी अुनके लिअे तालीम वग़ैराका अिन्तज़ाम करे।

अछूतोंका अेक अलग विभाग या महकमा क़ायम करनेका तरीक़ा अंग्रेज़ सरकारका अपना तरीक़ा था। लोगोंकी सरकारके नज़दीक तो क्या ग़रीब, और क्या अनपढ़, सब अेक ही हैं — होने चाहियें। अुसके नज़दीक न कोअी अूँच है, न नीच, और न किसी तरहका कोअी धार्मिक या मज़हबी भेद है। अुसके लिअे तो सभी हिन्दुस्तानी हैं।

ताँतियोंको चाहिये कि वे हरिजन बननेकी कोशिश हरगिज़ न करें। अुन्हें सरकारी नौकरीका लालच भी न होना चाहिये। जो हाल करोड़ोंका होगा, वही ताँतियोंका और दूसरे पेशेदारोंका भी होगा। चुनाँचे ताँतियोंको मैं यह सलाह दूँगा कि वे अपनी हालत सुधारनेके लिअे सीधी कोशिश करें, और दूसरे अुन्हें मदद दें।

नअी दिल्ली, २८-९-'४६ मो० क० गांधी

गुरुवयूर

गुरुवयूरकी अैतिहासिक या तवारीख़ी लड़ाअीका हाल कौन नहीं जानता? अिस मन्दिरको हरिजनोंके लिअे खुलवानेकी ग़रज़से श्री केलप्पनने अुपवास या फ़ाक़ा करनेका फ़ैसला किया था। मेरे बहुत समझाने और यह अितमीनान दिलाने पर कि मैं अिसके लिअे लड़ूँगा, वे अुपवास करनेसे रुके थे। अुसके बाद ही मन्दिरमें जानेवाले सवर्ण हिन्दुओंकी राय ली गअी, और अेक बहुत बड़ी तादादमें लोगोंने हरिजनोंके लिअे मन्दिर खोल देनेके हक़में अपनी राय दी। लेकिन मन्दिरके ज़ामोरिनने अपनी बेबसी ज़ाहिर की। बादमें मैं गुरुवयूर गया। वहाँ अेक बड़ी आम सभा हुअी। अिस सभामें भी लोगोंने मन्दिर खोल देनेके हक़में अपनी राय दी। मुझे ज़ामोरिनसे भेंट करनेका मौक़ा भी मिला। ज़ामोरिनने फिर बहुत अदबके साथ अपनी वही बेबसी ज़ाहिर की। केरलके दूसरे मन्दिर खोले जा चुके हैं। त्रावणकोरने भी अपना अेक सरकारी फ़रमान जारी करके अेक बढ़िया मिसाल पेश की है। मीनाक्षी और पालनीके मन्दिर भी खुल चुके हैं। फिर गुरुवयूर ही क्यों बन्द रहे? अब तो अिसके लिअे सत्याग्रहकी भी ज़रूरत न रहनी चाहिये। सूबेकी सरकारका काम है कि वह देखे कि मन्दिरमें जानेवाले ज़्यादातर लोगोंकी जो राय है, वह सिर्फ़ क़ानूनी दिक़्क़तोंकी वजहसे बेकार न बन जाय। सचमुच यह बहुत ही अफ़सोसकी बात है कि आज भी हिन्दुस्तानमें अैसे मन्दिर मौजूद हैं, जो ख़ामख़ा अछूत माने जानेवाले हिन्दुओंके लिअे बन्द हैं।

नअी दिल्ली, २९-९-'४६
(अंग्रेज़ीसे) मो० क० गांधी

कैसे ?

अेक भाअी लिखते हैं —

"आप जानते हैं कि शिमलाकी पहाड़ी रियासतें कितनी पिछड़ी हुअी हैं। रामपुर बुशाहरके राजासाहब दक़ियानूसी ख़यालोंके आदमी हैं। हाल ही अेक अूँची जातवाले हिन्दू परिवारके अेक नौजवानने अेक कोली लड़कीसे शादी की है। मण्ढोल गाँवके लम्बरदारने अिसकी ख़बर राजासाहब तक पहुँचाअी। राजासाहबने पती-पत्नी दोनोंको ६-६ महीनोंकी क़ैद और रु० १००) १००)के जुरमानेकी सज़ा सुना दी। राजासाहबका यह काम बरदाश्त नहीं किया जा सकता। अिससे तो रिआयाकी तरक़्क़ीका रास्ता रुकता है। कुछ दूसरे लोग, जो अिस तरहके अन्तर्जातीय ब्याहकी बात सोच रहे थे, वे अिस घटनाकी वजहसे रुक गये हैं।

"क्या हमें अिस निरंकुशताके मिटने तक रुकना पड़ेगा?"

यह तो बरदाश्त नहीं किया जा सकता कि अेक आदमी दूसरे बहुत-से आदमियों पर अिस तरह हुकूमत करे। अिसका ख़ात्मा होना ही चाहिये। सवाल है कि यह 'कैसे' हो? अिसका अिलाज यही है कि बहुतसे लोग अिस तरह जीना सीखें। ऐसे किसी अेक राजाका सिर अुड़ा देना आसान है। रावणकी ही मिसाल लीजिये। अुसके दस सिर थे। जैसे ही अेक सिर काट दिया जाता था, दूसरा अुसकी जगह निकल आता था। सार अिसका यह है कि जहाँ जनताकी अपनी ज़बरदस्त राय बन जाती है, वहाँ किसीका सिर काटने की ज़रूरत नहीं रहती। जो राजा है, वह रैयतकी बात सुनेगा और अुसे अुसके सामने झुकना पड़ेगा। अिस मामलेमें पति-पत्नी दोनोंको ख़ुशी-ख़ुशी सज़ा भुगत लेनी चाहिये। अगर ब्याहका बन्धन भोग-विलासका बन्धन न हो, बल्कि सुधारकी लगनसे पैदा हुआ प्रेमका बन्धन हो, तो बहुत-से नौजवान भाअी-बहनोंको अिस रास्ते आगे बढ़ना चाहिये। अगर सुधारक क़ैदकी सज़ा भुगतना नहीं चाहते, तो अुन्हें चाहिये कि वे किसी अैसी आज़ाद जगहमें रहने चले जायँ, जहाँ वे बिना किसी झंझट और रुकावटके रह सकें।

नअी दिल्ली, ३०-९-'४६
(अंग्रेज़ीसे) मो० क० गांधी

विषय-सूची

		पृष्ठ
बिहार, ख़बरदार! ...	गांधीजी	[illegible]
हरिजनोंके हक़ ...	गांधीजी	[illegible]
दो अहवाल ...		[illegible]
अेक अच्छा तरीक़ा ...	गांधीजी	[illegible]
भंगियोंकी हालत ...	गांधीजी	[illegible]
हाथ-कताअी बनाम मिल-कताअी ...	गांधीजी	[illegible]
'गांधी-विचार-दोहन' ...	किशोरलाल मशरूवाला	[illegible]
हफ़्तेवार ख़त ...	प्यारेलाल	[illegible]
और ताड़ अुगाओ ...	गजानन नायक	[illegible]
दो घोड़ोंकी सवारी ...	गांधीजी	[illegible]
गुरुवयूर ...	गांधीजी	[illegible]
कैसे? ...	गांधीजी	[illegible]
टिप्पणियाँ		[illegible]
केरलमें सहकारी समितियाँ ...	मो० क० गांधी	[illegible]
रहमदिली ...	मो० क० गांधी	[illegible]
नक़ल करने जैसी मिसाल ...	अ० वि० ठक्कर	[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वनस्पति 'का ख़तरा

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

१२ पृष्ठ
दो आना

सम्पादक – प्यारेलाल

अंक ३६

भाग १०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १३ अक्तूबर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

अप्रमाणित मगर प्रामाणिक

१

"पिछले मअी महीनेमें जब मैं बम्बअीमें दक्षिण अफ्रीका जानेकी तैयारी कर रही थी, तो अेक दिन मनमें सहज ही यह ख़याल अुठा कि जब प्रमाणित खादी नहीं मिल रही है, तो विलायती या मिलके कपड़ेसे तो अप्रमाणित खादी ही भली। फिर, मैं तो दक्षिण अफ्रीकामें रहती हूँ, बच्चोंके लिअे या घरके लिअे अप्रमाणित खादी ख़रीदनेमें क्या बुराअी है? और, मैं वैसी खादी ख़रीदनेके ख़यालसे अेक दुकानमें गअी भी। मगर मनमें अुधेड़-बुन तो चल ही रही थी। कुछ अैसा महसूस हो रहा था, मानो मैं कोअी ग़लत काम करने जा रही हूँ। मेरे सामने ख़ास ख़याल यही था कि खादी पहनना देश-प्रेमकी निशानी है। आज तक खादी पहनी। अब जब कातनेकी बात अुठी, तो खादी मिलनेमें कठिनाअी पैदा हुअी। फिर भी खादी पहननी है, मगर कातना नहीं है। बहुतेरे लोग लोक-लाजके ख़यालसे अैसा करते हैं, बहुत-से अिज़्ज़त या प्रतिष्ठाके लिअे। चुनाँचे अगर खादी पहननी ही है, तो बिना काते अप्रमाणित खादी पहनकर अपनी प्रतिष्ठा और देश-भक्तिका दिखावा अच्छी तरह किया जा सकता है। जो खादी अिस तरहके दम्भ या ढोंगका पोषण करती है, और प्रमाणित खादीके साथ होड़में अुतरती है, वह खादी पहनकर या पहनाकर खादीधारी कहलानेकी बनिस्बत क्या यह अच्छा नहीं कि हम ज़ाहिरा तौर पर मिलके कपड़े पहनकर या पहनाकर कातनेके बारेमें अपनी लाचारी या कमज़ोरी ज़ाहिर कर दें? बस, अिस ख़यालसे मैंने अप्रमाणित खादी नहीं ख़रीदी। कल 'हरिजनबन्धु'में प्रमाणित और अप्रमाणित खादीके बारेमें आपका लेख पढ़ा और हम सब चक्करमें पड़ गये। हमने अिस पर आपसमें बहस भी की। हमें तो यही लगता है कि आप दम्भ या दिखावेको बढ़ावा दे रहे हैं। हमारा ख़याल है कि जो शुद्ध खादी नहीं पहन सकते, वे भले मिलका कपड़ा पहनें। सत्य-प्रेमियोंके लिअे यही मुनासिब भी है। आज हमारे बीच कुछ अैसे अिज़्ज़तदार खादीधारी और लीडर वग़ैरा लोग हैं, जो खादी छोड़ नहीं सकते। चुनाँचे वे अप्रमाणित खादी पहनते हैं। क्या यह ढोंग नहीं? और, क्या आप जानते हैं कि प्रमाणित खादीके मुक़ाबले अप्रमाणित खादीका भाव दुगुना या ढाअी गुना है? क्या आप अिसका खुलासा कीजियेगा? मुझे अफ़सोस है कि मैं आपका काम बढ़ा रही हूँ।"

२

"अप्रमाणित खादीके बारेमें बहनने जो कुछ लिखा है, अुसी तरहकी शंका मेरे मनमें और दूसरे कअी भाअी-बहनोंके मनमें है। मेरे ख़यालमें अिससे दम्भ बढ़ेगा, और खादीका काम भी ठीक तरह नहीं चलेगा; क्योंकि अिससे अप्रमाणित खादी पैदा करनेवालोंको बढ़ावा मिलेगा।

"बापूजी, अेक दूसरा सवाल भी मुझे हमेशा परेशान करता रहता है। बहुत दिनोंसे सोचती थी कि आपसे पूछूँ। आख़िर आज लिख रही हूँ। कांग्रेसमें बहुत गन्दगी घुस गअी है। कांग्रेसके ओहदेदार अुसे बदनाम कर रहे हैं। दूसरे सूबोंमें क्या होता है, सो मैं नहीं जानती। मगर मेरे अपने सूबेकी राजनीतिको तो मैं बहुत-कुछ जानती हूँ। हो सकता है कि मैं अपनी हरअेक बातका सबूत न दे सकूँ। फिर भी आपसे तो कह ही दूँ।

"मुझे याद है कि आपने लोक-शिक्षण (आम लोगोंकी तालीम) और लोक-जाग्रति (आम लोगोंको जगाने)का अेक तरीक़ा 'हरिजन'में सुझाया था। मैं भी मानती हूँ कि जब वोटरों या मतदाताओंको सही तालीम मिलेगी, और वे समझदार बनेंगे, तभी सच्चे चुनाव हो सकेंगे। मगर अिसमें भी दो अड़चनें आती हैं। लोगोंको सच्ची बात बताने और स्वतंत्र रीतिसे काम करने पर भी कांग्रेसवालोंके साथ थोड़ी मुठभेड़ तो होगी ही।"

अूपरके दो ख़त दो सगी बहनोंके हैं। दोनों शुद्ध भावनावाली हैं। अुनके ख़तोंसे यह बात साफ़ ज़ाहिर है। पढ़नेवालोंमेंसे कुछने तो अुन्हें पहचान भी लिया होगा। अिस ख़यालसे कि कोअी अुन्हें पहचान न सके, जहाँ तक बन पड़ा है, पहचानके निशान मिटानेकी कोशिश की है।

अिसी तरहके दूसरे ख़त भी मेरे नाम आये हैं। हिन्दुस्तानी और अंग्रेज़ीमें भी मुझे अैसे ख़त मिले हैं। मैं लिखनेवालोंके दर्दको समझ सकता हूँ। फिर भी मैं अपने धर्मको जिस रूपमें समझता हूँ, अुसी रूपमें मुझे अुसका पालन भी करना चाहिये। अिसलिअे मैं अपने लिखेपर क़ायम रहना चाहता हूँ। हो सकता है कि अुस लेखमें मैं अपने विचार साफ़-साफ़ ज़ाहिर न कर सका होअूँ। कोअी भी लेख पूर्ण नहीं होता; क्योंकि लिखना या बोलना लिखनेवाले या बोलनेवालेके विचारोंको संकुचित कर देता है। लिखकर या बोलकर अपने विचारोंको पूरी तरह प्रकट करना नामुमकिन है।

खादी प्रमाणित हो या न हो, जब तक हमारे ख़यालमें खादी मिलके कपड़ेसे अच्छी है, तब तक मिलका कपड़ा सस्ता, मुलायम और महीन होने पर भी खादीके मुक़ाबले छोड़ने लायक़ हैं।

यह जानते हुअे भी कि जो खादी ख़रीदी जा रही है, वह दरअसल खादी ही नहीं है, जो लोग वैसी 'खादी' ख़रीदते हैं, वे धूर्त्त हैं। यह लेख अैसे लोगोंके लिअे नहीं। मतलब यह कि प्रामाणिक खादी अप्रमाणित होने पर भी मिलके कपड़ेके मुक़ाबले ज़्यादा पसन्द करने लायक़ है।

जो बहन शुद्ध विचार करती हुअी अप्रमाणित भण्डारसे बिना कुछ ख़रीदे लौट आअीं, वह नमस्कार करने लायक़ हैं।

अंग्रेज़ीमें अेक कहावत है—"ख़रीदारो, होशियार!" अगर ख़रीदार होशियार होंगे, तो वे धोखा न खायेंगे। सौ बार छानकर पानी पीनेवाला मेरे लेखको भी बार-बार पढ़ेगा, और जब तक बात अुसके गले न अुतरेगी, वह अुस पर अमल न करेगा। अेक वक़्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अैसा भी आ सकता है, जब चरखा-संघ प्रमाण-पत्र देना बन्द कर दे। अुस हालतमें खादीका क्या होगा? तब तो सभी खादी अप्रमाणित होगी न? अैसे अप्रमाणित खादी-भण्डारोंमें कुछ अच्छे होंगे, और कुछ बुरे भी। ख़रीदारका मन अुसे जहाँ ले जायगा, वहाँसे वह खादी ख़रीदेगा।

सच तो यह है कि व्यापारियोंको सच्चा बनना चाहिये, और अप्रमाणित खादी बेचनी ही न चाहिये।

दूसरा खत कांग्रेसके ओहदेदारोंके बारेमें है। वह अेक दुःख देनेवाली चीज़ है। खादीमें जो सड़ाँध दाखिल हो गअी है, अुसकी जड़में भी हमारी अपनी गन्दगी ही काम कर रही है। अिस गन्दगीके बीच रहकर भी जो अच्छे रहे हैं, अुन्हें तो अच्छा ही रहना है। अिस कलाकी सिद्धिके लिअे दृढ़ता और अुदारताकी, मज़बूती और फ़राख़दिलीकी, ज़रूरत है। हम अपने तअिं सख़्त रहें, दूसरोंके साथ सब्रसे काम लें। गन्दगी मिटानेकी भी अपनी अेक विद्या (अिल्म) होती है न?

नअी दिल्ली, ७-१०-'४६

(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

पशु-सुधार

सरदार दातारसिंहने अंग्रेज़ीमें 'पशु-सुधार' पर अेक लम्बा लेख लिखा है, जिसका सार नीचे दिया जाता है —

वे कहते हैं कि चूँकि हिन्दुस्तान अेक खेती-प्रधान देश है, अिसलिअे यहाँके पशुओंको सुधारना, खेती सुधारनेके बराबर है। सारी दुनियाके ढोरोंमेंसे २९% ढोर हिन्दुस्तानमें हैं; फिर भी यहाँ फ़ी आदमी दूध बहुत कम पैदा होता है। न्यूज़ीलैण्ड और आस्ट्रेलियामें हर रोज़ हर आदमी पीछे दूधकी पैदावार क्रमसे ५६ और ४५ औंस होती है, जब कि हिन्दुस्तानमें वह सिर्फ़ ७ औंस ही है। अच्छी ख़ूराकके लिहाज़से हरअेक अिनसानको रोज़ाना कम-से-कम २० औंससे ३० औंस दूध मिलना चाहिये। अिसका मतलब यह हुआ कि हमें अपने यहाँ दूधकी पैदावार तिगुनीसे भी ज़्यादा बढ़ानी होगी। हमारी अेक गाय सालभरमें औसतन् ७५० पौंड दूध देती है। यह भी बहुत कम है। अितना कम दूध निकलनेका कारण यह है कि गायका पेट नहीं भरता। हमारे देशमें ढोरोंको खिलानेके लिअे जहाँ २,७०० लाख टन चारा और ५०० लाख टन दानेकी ज़रूरत है, वहाँ हमें सिर्फ़ १,७५० लाख टन चारा और ३७.५ लाख टन दाना मिलता है। अिसके अलावा अिकट्ठा करने, सुखाने, काटने और ढोरोंके लिअे दाना-चारा वग़ैरा तैयार करनेमें बहुत-कुछ नुक़सान भी होता है।

१. ढोरोंके लिअे अच्छी ख़ूराकका अिन्तज़ाम करनेके लिअे सरदारजी नीचे लिखे सुझाव पेश करते हैं —

(क) चारेकी पैदावार बढ़ाअी जाय। काश्तकारोंको चारा अुगानेके लिअे ज़्यादा ज़मीन छोड़नेकी सलाह दी जाय। ज़्यादा-से-ज़्यादा ताक़त देनेवाले और ज़्यादा-से-ज़्यादा मिक़दारमें पैदा होनेवाले चारे अुगाये जायँ। कुछ क़िस्मकी घास, जैसे अेलिफण्ट, गिनी, रोहडस वग़ैरा बारहों मास पैदा होती हैं। अिनके साथ-साथ थोड़ी फलियाँ भी अुगाअी जायँ।

(ख) चारा सँभालकर रखा जाय। अुसे सीलसे बिगड़ने न दिया जाय, और चारा सुखानेके तरीक़े सुधारे जायँ।

(ग) अच्छी और खुली चरागाहें हों। चरागाहोंकी ज़मीन बहुत कम हो गअी है, अिसलिअे जितनी ज़मीन अभी मौजूद है, अुस पर किसी-न-किसी तरहकी माप-बन्दी होनी चाहिये। नहरोंके किनारेकी हरियालीवाली ज़मीन भी अिस कामके लिअे अिस्तेमाल की जा सकती है।

अिस सिलसिलेमें सरदारजी जंगलकी ज़मीनोंके अिस्तेमाल पर ज़ोर देते हैं। हिसाब लगाया गया है कि देशकी १,०७० लाख अेकड़ ज़मीन महकमे जंगलके हाथमें है, और ३६२० लाख अेकड़ ज़मीन में खेती होती है। जंगल के अिस बड़े धन से आज तक बहुत कम फ़ायदा अुठाया गया है। मिसालके तौर पर, यू० पी०के ३३० लाख ढोरोंमेंसे क़रीब दस लाख ही अिन चरागाहोंका थोड़ा-बहुत अिस्तेमाल करते हैं। हिन्दुस्तान-भरमें ढोरोंकी तादाद ९७० लाख है। अुनमेंसे सिर्फ़ ८० लाख ५० हज़ार ढोरोंके बारेमें कहा जा सकता है कि वे जंगली चरागाहोंका अुपयोग करते हैं। ब्रिटिश हिन्दुस्तानमें आज जंगलोंकी जितनी ज़मीन है, अुसे दुगुनी करनेकी योजना चल रही है। यह कहना ग़लत है कि जंगल बढ़ानेसे पैदावारको नुक़सान होगा। तजरबा करके देखा गया है कि अगर ढोरोंको ठीक तरहसे चरने दिया जाय, तो अुससे नुक़सान नहीं होता, बल्कि ज़्यादा अच्छे पौधे अुगने लगते हैं। अिसलिअे सस्ते और वैज्ञानिक तरीक़ेसे (साअिन्सदानीसे) जंगलोंकी ज़मीनको चरागाहके तौर पर अिस्तेमाल करनेकी बहुत सख़्त ज़रूरत है।

२. ढोरोंकी नस्ल सुधारनेका सवाल भी अेक बहुत अहम सवाल है। अिसके बारेमें सरदारजीके ये सुझाव हैं —

(क) हरअेक अिलाक़ेको अुसकी ज़रूरतके मुताबिक़ अैसे साँड़ दिये जायँ, जो अुस जगहके क़ाबिल हों। अुनकी हिफ़ाज़तके लिअे कुछ आदमी रखे जायँ, जो शामके वक़्त साँड़ोंको अेक अहातेमें बन्द कर दें, और अुन्हें चारा-दाना वग़ैरा खिलानेके लिअे ज़िम्मेदार हों। ये हिफ़ाज़त करनेवाले तालीमयाफ़्ता हों, ताकि वे साँड़ोंका प्राथमिक अुपचार कर सकें, और ढोरोंमें छूत वग़ैराकी बीमारियोंके फैलने पर अुनका अिलाज कर सकें।

(ख) जो साँड़ अच्छे नहीं हैं, अुन्हें ख़स्सी कर दिया जाय।

(ग) तबेलेके साँड़ोंकी संख्या बढ़ाअी जाय। आज तो ज़रूरतके हिसाबसे वे बहुत ही कम हैं। कम-से-कम दस लाख साँड़ोंकी ज़रूरत है; और अगर अुन्हें हर चौथे साल बदला जाय, जैसा कि होना चाहिये, तो अुसका मतलब यह होगा कि हर साल अढ़ाअी लाख साँड़ोंकी ज़रूरत पड़ेगी। यानी ६ लाख गाय और १० हज़ार साँड़ अिसी कामके लिअे रखने होंगे। मगर यह आसान काम नहीं है, और अिस पर ख़र्च भी बहुत होगा। अिसलिअे सरदारजीकी सलाह है कि जो गोशालाअें और पिंजरापोल आज हैं, अुन्हींका अिस्तेमाल अिस कामके लिअे किया जाय। अगर अुनका अिन्तज़ाम वग़ैरा सुधारा जाय, तो वे असानीसे सालभरमें २५ हज़ार साँड़, अुतने ही बैल, और साथ ही सुधरी हुअी नस्लकी ५० हज़ार बछियायें पैदा कर सकेंगे।

३. छूतकी बीमारियोंको क़ाबूमें लानेकी बड़ी ज़रूरत है। रिंडरपेस्ट, हैमोरेजिक, सेप्टीसोमिया, ब्लैक क्वार्टर और अेन्थ्रेक्स जैसी बीमारियोंसे हर साल ३०० लाखसे ज़्यादा ढोर मरते हैं। बीमारियोंको रोकने और अुन्हें मिटानेके अिलाजों पर पूरा ध्यान दिया जाना चाहिये। देहातियोंको सिर्फ़ ढोरोंकी सँभालके तरीक़े सिखानेसे काम नहीं चलेगा, वरन् ज़रूरतके वक़्त अुन्हें डॉक्टरी मदद पहुँचानेका भी बन्दोबस्त करना पड़ेगा।

नअी दिल्ली, २७-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे) अमृतकुँवर

नअी किताबें

	मूल्य	डाकखर्च
अीशु ख्रिस्त — (किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०-१-०
रचनात्मक कार्यक्रम — अुसका रहस्य और स्थान (नअी और सुधरी हुअी आवृत्ति (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
अेक धर्मयुद्ध — (महादेवभाअी हरिभाअी देसाअी)	०-८-०	०-२-०
हिन्दुस्तानी बाल-पाठावली	०-५-०	०-१-०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिट्टीकी झोंपड़ियाँ

आम तौर पर हिन्दुस्तानके लोग मिट्टीकी दीवारोंके बीच ही रहते हैं, और अक्सर यहाँ मिट्टीके ही मकान बनाये जाते हैं। सैकड़ों बरसों यही सिलसिला चलेगा, हमेशाके लिअे चाहे न भी चले। लोग ख़ूराक और कपड़ेके सवालोंको हल करनेमें जुट गये हैं, मगर मकानोंके सवालकी तरफ़ कोअी ध्यान नहीं दे रहा। क्योंकि अुसकी अितनी ज़रूरत महसूस नहीं होती। अिसके सिवा, यह सवाल थोड़ा टेढ़ा भी है।

फिर भी लोगोंकी तन्दुरुस्तीके ख़यालसे मकानोंके सवालको भी हल करना ज़रूरी है। सात लाख गाँवोंको फिरसे बनानेका काम हाथमें लेना होगा। मुल्कमें अितनी दौलत नहीं कि अींट, सीमेण्ट, लकड़ी, अेस्बेस्टस या लोहेकी बात सोची जाय। अक़्लसे यही सोचा जा सकता है कि आम तौर पर मिट्टीसे काम चलाना पड़ेगा। हिन्दुस्तानियोंके रहनेके लिअे हम जिस मिट्टीके मकान चाहते हैं, वे आजके मकानों-जैसे नहीं होंगे। वे अूँचे, हवादार, बड़े, रोशनीदार, अेक-से और सेहत बढ़ानेवाले होने चाहियें। क्या मिट्टीसे अैसे मकान बन सकते हैं?

ख़ुशक़िस्मतीसे हमें अिसका जवाब 'हाँ'में मिलता है। आज हमारे पास अैसे तरीक़े मौजूद हैं, जिनसे मिट्टीके अच्छे मकान बनाये जा सकते हैं। मिट्टीकी दीवारें बनानेका अेक बहुत पुराना तरीक़ा है, जिसे सारी दुनियाके लोग जानते हैं। स्पेनके किसान हैनीबॉलके ज़मानेमें अिसी तरीक़ेसे अपने मकान बनाते थे, और कुछ हिस्सोंमें आज भी अिसी तरह मकान बनाये जाते हैं। फ्रांसमें सदियों पहलेके बने अैसे कअी मकान आज भी अच्छी हालतमें मौजूद हैं। चीन और हिन्दुस्तानमें भी पुराने राजाओंने अपने क़िले अिसी अुसूल पर बनवाये थे, लेकिन अुनका तरीक़ा कुछ दूसरा था।

अूपर जिस तरीक़ेका ज़िक्र किया गया है, अुसके फ़ायदोंको समझनेके लिअे, पहले हम मिट्टीकी दीवार बनानेके मामूली तरीक़ेको समझ लें।

शुरूमें मिट्टी खोदकर और अुसके ढेले तोड़कर वह पानीसे ख़ूब गीली की जाती है। कभी-कभी अुसमें घास भी मिला देते हैं। अिस तरह सानी हुअी मिट्टी रातभर रहने दी जाती है। फिर गीली मिट्टीकी तह पर तह चढ़ाकर दीवार चुनी जाती है। दीवारें अूपरकी तरफ़ कम चौड़ी होती जाती हैं। चूँकि अिस मिट्टीमें पानी काफ़ी रहता है, अिसलिअे अुसके सूखने पर दीवार में सब तरफ़ बेशुमार दरारें पड़ जाती हैं। अिससे दीवारकी मज़बूती बहुत कम हो जाती है, और अुसमें दीमक वग़ैरा कीड़े आसानीसे घुस सकते हैं।

अिसमें थोड़ा सुधार करके दीवार बनानेका अेक तरीक़ा यह है कि पहले मिट्टीकी कच्ची अींटें बनाकर अुन्हें धूपमें सुखा लिया जाय, और फिर अुन अींटोंकी दीवार चुनी जाय।

अिन दोनों तरीक़ोंमें दीवार कमज़ोर और छेदों व दरारोंवाली होती है। यह दीवार अक्सर यों ही रहने दी जाती है।

अूपर जिस नये तरीक़ेका ज़िक्र किया गया है, वह बिलकुल निराला तरीक़ा है। फ़र्क़ यह है कि अुसमें मिट्टीमें अुतना ही पानी मिलाया जाता है, जितना मिलानेसे मिट्टीके कड़े गोले बनाये जा सकें। अिसके लिअे बेहतर यह है कि मिट्टीमें कम-से-कम पानी डाला जाय, और अिस बातका पूरा ख़याल रखा जाय कि ज़रूरतसे ज़्यादा पानी बिलकुल न गिरे।

धरतीकी मिट्टीमें आम तौर पर मिट्टी, रेत और कंकड़ मिले रहते हैं। रेत और घास मिली हुअी खेतकी अुपजाअू लाल मिट्टी काफ़ी अच्छी रहती है। अगर मिट्टी रेतीली है, तो अुसमें थोड़ी साफ़ मिट्टी और मिलाअी जा सकती है, और अगर मिट्टी निखालिस है, तो अुसमें रेत और कंकड़ मिलाये जा सकते हैं। मकानके लायक़ मिट्टी पहाड़की तराअियोंमें मिलती है, जिसमें मिट्टी, रेत और कंकड़ तीनों शामिल रहते हैं। यह तरीक़ा सैकड़ों तरहकी मिट्टियों पर लागू होता है। मिट्टी सानते वक़्त अिस बातका ख़याल रक्खा जाना चाहिये कि अुसमें किसी क़िस्मका घास-पात, जड़ें और कचरा वग़ैरा न रहे।

अिस तरीक़ेका अुसूल यह है कि मिट्टीको ख़ास तौरसे बने औज़ारोंसे ख़ूब कूटा और दबाया जाता है। मिट्टी दो तख़्तोंके बीच डाली जाती है। पानीका अिस्तेमाल सिर्फ़ चिकनाअी देनेके लिअे होता है, ताकि मिट्टी आपसमें जुड़ी रह सके। अंग्रेज़ी वी—V—की शकलके अेक तिकोने हथौड़ेसे बार-बार पीटते रहने पर मिट्टी अेक ख़ास तरहके मसाले-सी बन जाती है, जो कुछ नरम और कुछ सख़्त भी होता है। यह मसाला धीरे-धीरे पक्का हो जाता है, और अगर अुसे बारिशकी सीधी चोटसे व बहते पानीकी धारसे बचाया जाय, तो वह सदियों टिकता है।

अिसमें औज़ार बहुत सादे और थोड़े लगते हैं। गाँवके बढ़अी भी अुन्हें बना सकते हैं। औज़ारोंमें अेक चौकौन, अेक शाकूर (Plumb-rule), कअी तरहके लकड़ीके हथौड़े, कुछ कोनोंकी शकलके, पटियोंके बने, और लोहे या लकड़ीकी पट्टियोंसे जुड़े साँचे रहते हैं।

नींव पत्थर या अींटकी बनाअी जाती है, ताकि बहते पानीसे दीवारका बचाव हो जाय। अुस पर १० फुट लम्बे और ३ फुट चौड़े तख़्ते दोनों तरफ़ अूपरको अितनी दूरी पर लगाये जाते हैं, जितनी दीवारकी चौड़ाअी रखनी हो। अिन तख़्तोंके बीच दो अिंच मोटी तहमें मिट्टी भर दी जाती है, और अुसे अितना पीटा जाता है कि मुटाअी आधी रह जाय। तब अुस पर नअी तहें चढ़ाअी जाती हैं और अुन्हें पीटा जाता है। अिस तरह दीवारका कुछ हिस्सा बनता है। जब तख़्तोंके बीचकी जगह पूरी भर जाती है, तो तख़्ते अूपरको सरका दिये जाते हैं, और दीवारका दूसरा हिस्सा फिर अुसी तरह बनाया जाता है। कोने और जोड़ दूसरी क़िस्मके साँचे लगाकर बनाये जाते हैं।

बुझे हुअे चूनेमें रेत मिलाकर अुसे दीवार पर छिड़क देनेसे बारिशके दिनोंमें दीवारको कोअी नुक़सान नहीं पहुँचता। जब बारिश बहुत ज़ोरोंकी हो, तो दीवारोंको बाहरसे कोलतार या आस्फाल्टसे पोत दिया जाय। साथ ही, अूपरसे सफ़ेदी भी पोती जा सकती है।

अिन औज़ारोंकी मददसे अेक ही तरहके कअी मकान बनाये जा सकते हैं। गाँवकी पंचायतें अिन्हें अपने यहाँ बसा सकती हैं, और गाँवमें जिन लोगोंको मकान बनाने हों, अुन्हें किराये पर दे सकती हैं। मकान बनानेका काम अेक ही परिवार या कुनबेके लोग ख़ुद कर सकते हैं, या वे अुसमें अपने पड़ोसियोंकी मदद ले सकते हैं, और बादमें ख़ुद अैसे पड़ोसियोंकी मदद कर सकते हैं। मकानका यह ढाँचा बहुत सस्ता, मज़बूत और टिकाअू रहता है, और अूँचा, सीधा और चौकोन बनाया जा सकता है। अुपरसे चूने और रेतका पलस्तर-सा कर देनेके बाद तो यह कहना मुश्किल हो जाता है कि दीवार सिर्फ़ मिट्टीकी बनी है।

अिन दीवारों पर मिट्टीकी छतके साथ किसी भी क़िस्मकी छत रक्खी जा सकती है। मिट्टीकी छत ख़ुद अेक दिलचस्प चीज़ है, जिस पर अलगसे लिखा जा सकता है।

अिस नये तरीक़ेकी अेक ख़ामी यह है कि अिसमें मज़दूरीके सिवा और कोअी चीज़ नहीं लगती। हिन्दुस्तानके लिअे तो यह अेक छिपी देन है। जहाँ तक दीवार बनानेकी बात है, अिसमें कुछ ख़रीदना ही नहीं पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगर गाँवकी पंचायतके पास साँचोंका अेक सेट् और मिट्टी पीटनेके दूसरे औज़ार हों, और वे बारी-बारीसे गाँववालोंको दिये जायँ, तो थोड़े ही वक़्तमें, बहुत थोड़ी मेहनत और तकलीफ़से, गाँवके सब मकान नये बनाये जा सकते हैं। सूबोंकी सरकारें हरअेक गाँवके लिअे क़रीब ३००) की क़ीमतके ज़रूरी औज़ार व साँचे वग़ैरा मुहैया कर दें, और यह शर्त रख दें कि गाँवकी सामाजिक, आर्थिक और सफ़ाअी व आरोग्य-सम्बन्धी ज़रूरतोंको मद्देनज़र रखकर अेक आम स्कीमके मुताबिक़ सब मकान बनाये जायँ।

अिस नये तरीक़ेसे कअी नमूनोंके मकान बनाये जा सकते हैं। क्योंकि औज़ारोंके अिसी सेट् और अिन्हीं साँचोंसे किसी भी साअिज़ और शकलका मकान बन सकता है।

अगर मिट्टीमें पानीके साथ कुछ और चीज़ें मिला दी जायँ, तो मसाला बनानेकी अिस तरकीबसे ज़्यादा पक्का काम हो सकता है। औज़ारोंमें भी और सुधार किया जा सकता है। अिसके प्रयोग या तजरबे किये जा रहे हैं। अुनके नतीजे थोड़े ही वक़्तमें मालूम हो जायँगे।

(अंग्रेज़ीसे) मॉरिस फ्रीडमैन

हरिजनसेवक

१३ अक्तूबर १९४६

'वनस्पति'का ख़तरा

"ता० १४-४-'४६ के 'हरिजन'में आपने वनस्पतिके बारेमें सरदार दातारसिंहजीके लेखका समर्थन किया था। अुस लेखमें कअी अुपाय भी बताये गये थे, जिन पर अमल करनेसे यह बुराअी दूर हो सकती है। लेकिन बुराअी बढ़ ही रही है। पंजाब, अकोला, शेगाँव, और कर्नूलमें वनस्पतिके नये कारख़ाने खोलनेकी अिजाज़त भी दी जा रही है। कम-से-कम यह तो बन्द होना चाहिये। पंजाब-जैसे सूबेमें वनस्पतिको रँगकर बेचनेका नियम भी नहीं बनाया गया।"

यह अेक ख़तका निचोड़ है। 'वनस्पति' शब्द मैंने अवतरणमें रखा है। अुसका पूरा नाम 'वनस्पति घी' है। वनस्पति तो हमेशा अच्छी होती है। वनस्पति यानी फल, फूल, भाजीकी पत्तियाँ वग़ैरा। लेकिन जब वह दूसरी वस्तुकी जगह लेती है, तब ज़हर बन जाती है। वह घी नहीं है, न हो सकती है। जब होगी, तब मैं ही ज़ोरोंसे कहूँगा कि घीकी कोअी ज़रूरत नहीं। किसी प्राणी या जानवरके दूधमेंसे जो चिकना पदार्थ पैदा होता है, वह घी या मक्खन है। अुस घीके नामसे जो वनस्पति तेल, घी या मक्खनकी शकलमें, या अुसके नामसे, बेचा जाता है, वह हिन्दुस्तानके साथ किया जानेवाला अेक बड़ा धोखा है, दग़ा है। हिन्दुस्तानके बेपारियोंका धर्म है कि वे किसी भी शकलमें घीके नामसे अैसा दिखावा करके कोअी तेल या पदार्थ न बेचें। किसी सरकारको तो अैसा हरगिज़ न करना चाहिये। हिन्दुस्तानके करोड़ों लोगोंको न दूध मिलता है, न छाछ, न घी या मक्खन। नतीजा यह होता है कि लोग मरते जाते हैं, निस्तेज बनते हैं। अैसा लगता है कि मनुष्यके शरीरको मांस या दूध और दूधसे बनी हुअी चीज़ें जैसे दही, छाछ, घी, मक्खन वग़ैराकी ज़रूरत है। अिस बारेमें जो धोखा देता है, या जो अिसे दरगुज़र करता है, वह हिन्दुस्तानका दुश्मन बनता है।

नअी दिल्ली, ६-१०-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

हुड़दंगशाहीकी हद

जबलपुरसे अेक भाअी लिखते हैं कि वहाँ लड़कियोंके अेक कन्वेण्ट स्कूलकी मददके लिअे किये गये खेलमें कुछ हिन्दुओंने बहुत तूफ़ान मचाया। खेलका अिन्तज़ाम अेक हिन्दू दोस्तने ही किया था। खेलमें पार्ट लेनेवाली सब लड़कियाँ कन्वेण्ट स्कूलकी ही थीं। खेलके अख़ीरमें अेक अैसा सीन दिखाया गया था, जिसमें अेक अनाथ या यतीम लड़की दुनियासे तंग आकर परमात्मासे प्रार्थना करती है। देवदूत या फ़रिश्ता आता है, और वह अुस लड़कीको अीशुख़िस्तमें विश्वास रखनेकी सलाह देता है। अीशुख़िस्तकी तारीफ़में गाये गये अेक गानेके साथ खेल ख़तम होता है। बस, अिसी पर वहाँ बड़ा शोर-गुल शुरू हो गया। जिन हिन्दुओंने शोर किया, वे अीसाअी धर्मके ख़िलाफ़ बहुत चिल्लाने लगे। खेलका अिन्तज़ाम करनेवालोंने कुछ कहना चाहा, पर वहाँ सुनता कौन? शोर मचानेवाले टिकटके दाम वापस माँगने लगे। ख़त लिखनेवाले भाअी पूछते हैं कि अगर अीशुख़िस्तकी जगह श्रीकृष्णकी तारीफ़में गीत गाया जाता, तो क्या अैसा हुड़दंग मचता?

अगर अिन भाअीकी बात सच है, तो कहना होगा कि अिस तरहका सलूक निरी बदतमीज़ी है। अिससे तो यही ज़ाहिर होता है कि हम दूसरोंको ज़रा भी बरदाश्त नहीं कर सकते। जिनको अपने दिल और अुसूलके ख़िलाफ़ कोअी चीज़ ज़रा भी पसन्द न हो, वे अुसके रास्ते जायँ ही क्यों? जब कोअी चीज़ हमारे मनके मुताबिक़ न होती हो, तो वहाँ अिस तरहका अिनसानियतसे गिरा हुआ बरताव करना किसी भले आदमीका काम नहीं।

नअी दिल्ली, ५-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

ग्राम-विद्यापीठ

डॉक्टर किनी मैसूरमें महकमे तालीमके मंत्री थे। अुन्होंने 'हरिजन'के लिअे अेक लम्बा लेख लिखा है। अुनका मतलब यह है कि हिन्दुस्तान अिसलिअे ग़रीब रहा है कि राजसत्ताने ग़रीब देहातको सही तालीमसे दूर रक्खा है। वे मानते हैं कि हमारे शहरोंमें जो विद्यापीठ या युनिवर्सिटियाँ हैं, अुनसे देहातकी सेवा नहीं हो सकेगी, क्योंकि अिन विद्यापीठोंमें अंग्रेज़ी सल्तनतने पढ़ाअीका जो अिन्तज़ाम किया है, वह सब पश्चिमको बढ़ानेके लिअे है, और अिन विद्यापीठोंमें देहातके लायक़ तालीम दाख़िल करना मुश्किल है।

डॉ० किनी कहते हैं कि देहातके लिअे देहाती विद्यापीठ होने चाहियें, जिनमें बड़ी अुमरके लोग भी सीख सकें।

किनी महाशय लिखते हैं कि ग्रामीण विद्यापीठोंमें खेतीविद्या, फलविद्या, रेशमविद्या, गौविद्या, मुर्ग़ीविद्या, मधुविद्या, मछलीविद्या, खद्दरविद्या, ग्रामीण स्वच्छता, ग्रामीण विद्युत्‌विद्या, ग्रामीण रास्ते, ग्रामीण गृहविद्या, ग्रामीण कुम्हारविद्या, ग्रामीण अर्थशास्त्र, ग्रामीण समाजशास्त्र, ग्राम-रचना, ग्रामीण व्यापार, और ग्रामीण सराफ़ी व साहूकारी विद्या वग़ैरा सिखानेका अिन्तज़ाम होना चाहिये। अगर हिन्दुस्तानके देहातमें ये सब चीज़ें शास्त्रके रूपमें सिखाअी जायँ, तो लेखक कहते हैं कि देहातका चेहरा बदल जायगा, और देहातको शहरोंकी ओर नहीं देखना पड़ेगा, बल्कि अुलटे शहरियोंको देहातकी ओर देखना पड़ेगा।

डॉ० किनीके लेखका मैंने तो सार ही दिया है। अगर केन्द्रीय कैबिनेट और सूबोंकी कैबिनेटें अिसे अपना लें, तो बड़ा काम हो सकता है। अुसको रूप देनेके लिअे किनी महोदयको डॉ० ज़ाकिर हुसेन और आर्यनायकम् दम्पतीसे मशविरा करना चाहिये। मैं तो मानता हूँ कि शहरके विद्यापीठ भी बदल सकते हैं।

नअी दिल्ली, १५-९-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अटपटे सवाल

राष्ट्रीय कांग्रेसके मंत्रियोंने दिल्लीकी अ० भा० कांग्रेस कमिटी की बैठकके वक़्त अुस मौक़ेसे फ़ायदा अुठाकर अेक बैठक सब सूबोंकी कांग्रेसके प्रेसिडेण्टों और सेक्रेटरियोंकी बुलाअी, जिससे वे लोग गांधीजीसे बातचीत कर सकें। गांधीजीने हिन्दुस्तानीमें बातचीत की। बजाय भाषण देनेके अुन्होंने सवाल माँगे और अुनका जवाब दिया। नीचे कुछ ख़ास सवाल और अुनके जवाब दिये गये हैं —

१. स०— आजकल कांग्रेसके चुनावोंमें जगह-जगह झगड़े और बेक़ायदगी हो रही है। चुनावके मौक़ों पर कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओंका क्या रवैया होना चाहिये, अुसके बारेमें आपकी क्या तजवीज़ है?

ज०— अिसका मतलब यह है कि हम सचमुच कांग्रेसके ख़िदमतगार नहीं, बल्कि अुसके सरदार बनना चाहते हैं। अैसे लोगोंको मैं जानता हूँ। अगर अैसा न हो, तो बेक़ायदगी क्यों हो? जहाँ सेवाका ख़याल हो, वहाँ झगड़ोंकी क्या जरूरत? झगड़े कौन करते हैं? वे ही, जिनमें आपसकी दुश्मनी होती है; जो सरदार बनना चाहते हैं। वरना वे आपसमें झगड़ें क्यों? सब तो सरदार बन नहीं सकते। सीमाप्रांतमें बादशाह ख़ानको देखिये — अगर वहाँके ख़ुदाअी ख़िदमतगार कहें कि हम बादशाह ख़ान बनेंगे, तो वे बादशाह ख़ानको मार ही न डालेंगे?

आपने रवैया अख़्तियार करनेके बारेमें पूछा है। रवैया तो अेक ही है, जो कांग्रेस के विधान (निज़ाम)में लिखा है — हमें शांतिपूर्ण (बाअमन) और अुचित तरीक़ोंसे स्वराज्य लेना चाहिये। अगर वही रवैया अख़्तियार किया जाय, तो अच्छा हो। अगर आप यह कहें कि शांति और अहिंसासे बेक़ायदगी बढ़ गअी है, तो अुन्हें छोड़ दें। अगर अुन पर अमल नहीं करना है, तो भी छोड़ दें। मैं यह कहूँगा कि आपको जो नअी कांग्रेस-योजना बनानी है, वह आपके बसकी है। जब तक नअी योजना नहीं बनती, तब तक बेक़ायदगीको रोकनेके लिअे अितना करें कि कोअी चुनाव न होने दें। जिनको चुन लिया गया है, वे रहें, और बाक़ी सब कांग्रेसी ख़िदमतगार बन जायँ। अगर आप अैसा करेंगे, तो सब झगड़े बन्द हो जायँगे।

२. स०— कांग्रेसके चुनावोंमें अल्पमत (अक़लियत)के लोग कम आये हैं। अिसका क्या हल है?

ज०— अगर कांग्रेसमें अल्पमतवाले कम हैं, तो अुसकी वजह अुनकी अपनी कम तादाद है। फिर भी अगर आप ख़ुश नहीं हैं, तो आप वैसा करें, जैसा मैंने किया है। मेरी तरह आप भी कांग्रेससे हट जायँ। मैं कांग्रेससे हटकर अुसके साथ ज़्यादा घुल-मिल गया हूँ। जब मैं कांग्रेसमें था, तो छोटी-छोटी बातोंमें दख़ल देना पड़ता था, और लोग मुझको दिक़ कर सकते थे। मगर अब अैसा नहीं होता। अब मैं जितना दिक़ करने दूँ, अुतना ही वे कर सकते हैं। अगर आज मैं मृदुला बहनसे कह देता कि छोड़ो, मैं नहीं आअूँगा, तो मैं नहीं भी आ सकता था। जब मैं कांग्रेससे निकला, तो मेरी हालत बहुत बुरी थी। मेरे कैसे बुरे हाल होते थे, सो मैं जानता हूँ। यह दूसरी बात है कि आज मैं वैसा नहीं होने देता।

आप कहते हैं, यहाँ झगड़ा है, वहाँ झगड़ा है। मैं तो कहूँगा कि अगर कांग्रेसमें अल्पमतवाले नहीं हैं या कम हैं, तो मेरी तरह आप अुसमेंसे निकल जाअिअे। मेरे दिलमें कोअी तमन्ना नहीं। मुझे याद है कि जब फ़ैज़पुर कांग्रेस हुअी थी, तब मैं कांग्रेससे निकल चुका था। वहाँ मुझे बुलाया गया था। वहीं श्रीमती अनसूयाबाअी काळेने मुझसे कहा था — "आप कांग्रेससे निकल गये हैं। आप बड़े या हम बड़े?" अिस पर मैंने कहा — "मैं बड़ा हूँ।" अुन्होंने कहा — "कैसे?" मैंने कहा — "यहाँ अितने लोग जमा हैं, अिनमेंसे सब तो कांग्रेसके मेम्बर नहीं होंगे।" अुस वक़्त जब मैंने लोगोंसे पूछा कि आपमेंसे कांग्रेसको चवन्नी देनेवाले कितने हैं, तो बहुत थोड़े लोगोंने हाथ अुठाये। और, जब मैंने पूछा कि आपमेंसे चवन्नी मेम्बर कितने नहीं हैं, तो अेक हुजूमने हाथ अुठाये। ये ही सच्चे कांग्रेसमैन थे, जो अुसकी सेवा करना चाहते हैं, पर कोअी अिनाम नहीं चाहते। अिनके बिना कांग्रेसके कोअी मानी भी नहीं रह जायँगे। कांग्रेसमैनका फ़र्ज़ यह है कि वह कांग्रेस पर क़ब्ज़ा करनेके बजाय कांग्रेसका होकर रहे। अगर यही तरीक़ा रहे, तो कांग्रेसमें अल्पसंख्या (अक़लियत) और बहुसंख्या (अक्सरियत)का सवाल न अुठे। अुस पर क़ब्ज़ा करनेका ख़याल अुसे ख़त्म कर डालनेका ख़याल है। जो सच्चा कांग्रेसमैन है, वह हत्यारा बननेके बजाय ख़ुद मर जायगा।

३. स०— आरज़ी हुकूमतकी नीति गल्लेकी क़ीमत कम करनेकी है। क्या गल्लेकी पैदावार पर अिसका बुरा असर नहीं पड़ेगा?

ज०— मैं तो गल्लेकी क़ीमत और भी कम कर देना चाहता हूँ। मैं ख़ुद किसान हूँ। शायद आप नहीं जानते, मगर मैं जानता हूँ कि किसानोंको जितनी क़ीमत दी जाती है, वह अुनके घर नहीं पहुँचती। किसानोंको जो धक्का पहुँचा है, और गल्लेकी क़ीमत बढ़नेसे जो सवाल पैदा हो गया है, अगर आरज़ी हुकूमत अुसको हल नहीं कर सकती, तो अुसे ख़त्म हो जाना चाहिये। आरज़ी हुकूमत किसानोंका गला घोंटकर आम लोगोंको सस्ता गल्ला कभी नहीं दे सकती। माना कि गल्लेकी क़ीमत ज़्यादा है, मगर बीचके खानेवालों यानी व्यापारियों और दलालों वग़ैराकी वजह से पूरी क़ीमत किसान तक नहीं पहुँचती। अगर अैसा न हो, तो अनाज पैदा करनेवालेका पेट भर जाय। मैंने तो खादी में भी कताअी की दर आठ आने तक ले जानेकी सूचना की थी, और चार आने तक कताअी का दाम पहुँचा भी। कअी लोगोंने अुज्र किया था कि कताअीका दाम बढ़नेसे खादी महँगी हो जायगी, और अुसके गाहक नहीं मिलेंगे। पर मैंने अुसकी कोअी परवाह नहीं की। जिससे गल्ला पैदा करनेवालोंको मेरे रुख़का पता चल सकता है। मैं तो बीचके अिस व्यापारी और दलाल वर्गको बिलकुल निकाल दूँ। यही वर्ग है, जो किसान को चूसता है। वरना कोअी वजह नहीं कि किसान भूखों मरे। साथ ही, बात यह भी है कि जो किसान नफ़ाख़ोरी या कालाबाज़ार करता है, वह किसान नहीं रहता। जमींदार-जैसा बन जाता है।

४. स०— कांग्रेसके अन्दर जो मुख़्तलिफ़ पार्टियाँ बन रही हैं, कांग्रेसके संगठन पर अुनका बुरा असर पड़ता है। अिस पर आपकी क्या राय है?

ज०— मेरी रायमें कांग्रेसमें अेक ही पार्टी हो सकती है — कांग्रेसियोंकी; दूसरोंकी गुंजाअिश नहीं। अिसका मतलब यह नहीं कि कांग्रेसमें अलग-अलग रायें या राय रखनेवाले न हों। समता (बराबरी) के सिद्धांतके यह जो मानी निकाले जाते हैं कि सब लोग बराबरी और आजादीमें जन्म लेते हैं, सो भी किसी तरह ठीक नहीं। मिसालके तौरपर, सबकी बुद्धि अेकसी तेजस्वी नहीं होती, और न शरीरकी ताक़त ही बराबर होती है। बराबरीके यह मानी नहीं कि बुद्धिमें सभी अेकसे या कम-अक़्ल बन जायँ। अिसका मतलब सिर्फ़ यह है कि जिसकी बुद्धि तेजस्वी है, वह अुसे दूसरोंको गिराने और अपना स्वार्थ सिद्ध करनेके लिअे ख़र्च न करे, बल्कि औरोंकी सेवाके लिअे ख़र्च करे। आज कांग्रेसमें हर तरहके लोग हैं। मैंने जो कहा है कि कांग्रेसके ध्येय (मक़सद)मेंसे शांतिमय और अुचित (बा-अमन और जायज) लफ़्ज़ निकाल दिये जायँ, अुसका यह मतलब नहीं कि कांग्रेसी सत्य और अहिंसा छोड़ दें। अुसका मतलब सिर्फ़ पाखंडको निकालना है। वह मुझे चुभता है। अगर हम तलवारबाज हैं, तो खुल्लमखुल्ला तलवार निकालें। मगर दिलमें तलवार हो, मुँहसे गाली-गलौज निकले, और नाम अहिंसाका लें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अुससे हम न सिर्फ़ दगाबाज, बल्कि बुज़दिल भी बनते हैं। अिसका तो यही मतलब हुआ कि अंग्रेजोंके सामने बंदूक नहीं चला सकते थे, अिसलिअे अहिंसाकी आड़ ली। वरना आपसमें अितने झगड़े क्यों होते? आज हमारे बीच अंधाधुंधी और गोलमाल चल रहा है, और हम अिसका बचाव अिंग्लैण्ड में (Squatters) धरना देनेवालोंकी मिसाल देकर करते हैं। हम यह नहीं समझते कि यूरोपकी नक़ल करनेसे हमारा भला नहीं हो सकता; हाँ, अुससे बदतर हालत हमारी हो सकती है। क्योंकि हम तो असमर्थ हैं, और साधु बनना चाहते हैं। अिससे हम साधु बनकर और माला हाथमें लेकर ठग ही बनते हैं। अगर हममें सच्ची अहिंसा होती, तो हम अेक दूसरेको बरदाश्त करते। तब जितनी रायें, अुतनी पार्टियाँ हममें रह सकती थीं। मगर पार्टीबाज़ीके लिअे हमारे बीच कोअी गुंजाअिश नहीं। जो अैसा करते हैं, वे सच्चे सेवक नहीं हैं। जब तक यह चीज़ हट नहीं जायगी, सच्ची आज़ादी हासिल नहीं हो सकती।

५. स० — मौजूदा हिन्दू-मुस्लिम सवाल कैसे हल किया जाय?

ज० — मुझे क़बूल करना पड़ेगा कि क़ौमी झगड़ेके अिस सवालसे मैं हैरान हो गया हूँ। अगर किसीके पास अिस सवालका हल है, तो मेरे पास है। मगर मेरी राय तो आज अरण्यरोदन-सी (जंगलमें रोना) बन गअी है। किसी अेक क़ौमके लोगोंने कितनी ही गुंडाबाजी क्यों न की हो, मैं यह कभी न कहूँगा कि वह सारी-की-सारी क़ौम बदमाश है। मुस्लिम लीग आज भले कहे कि हिन्दू बुतपरस्त हैं, हिन्दुस्तान दारुलहर्ब (वह जगह जहाँ जिहादका क़ानून लागू हो) है, और जो मुसलमान कांग्रेसमें शामिल हैं, वे काफ़िर हैं और क़त्लके लायक़ हैं। लेकिन यह सुनकर भी मैं सब मुसलमानोंको अपना दोस्त बनाने और अपनी मुहब्बतका क़ैदी बनानेकी कोशिश न छोड़ूँगा। मुहब्बतके क़ैदी वे तभी बनेंगे, जब लाखों हिन्दू दिलमें ग़ुस्सा लाये बग़ैर या बदलेमें अँगुली तक अुठाये बग़ैर अेक बड़ी तादादमें कट जानेको तैयार हो जायँगे। आप कहेंगे कि यह बात अुसलन् ठीक है, पर यह चलनेवाली नहीं। मगर अिसका मेरे पास यही जवाब है कि अगर हिन्दुओंको ज़िंदा रहना है, मुसलमानोंके साथ मिलकर रहना है, और हिन्दुस्तानके दो टुकड़े नहीं होने देना है, तो अिसके सिवा दूसरा रास्ता नहीं। कांग्रेसकी अहिंसक लड़ाअीके पिछले पच्चीस सालके अितिहाससे अगर हम अितना भी न सीखे, तो क्या सीखे?

६. स० — कम्युनिस्ट आज कांग्रेसका खुला विरोधकर रहे हैं, अुनका मुक़ाबला कैसे करें?

ज० — कम्युनिस्टोंका मुक़ाबला भी अिसी तरह किया जा सकता है। जब मैं मुसलमानका ज़िक्र करता हूँ, तो अुसका मतलब सब मुसलमान नहीं, सिर्फ़ लीगी मुसलमानोंसे है। आज लीगी मुसलमान कहते हैं कि वे हिन्दुस्तानसे अलग हुअे बग़ैर अिस्लामको ज़िन्दा नहीं रख सकते। मेरे ख़यालसे यह बात फ़िज़ूल है। अपनी अेक चौथाअी आबादीको भला कौनसा मुल्क कुचल सकता है? मेरी निगाहमें कोअी अकेला मुसलमान हो, तो अुसे भी अलग होनेकी ज़रूरत नहीं होनी चाहिये। अगर मुझे यह लगे कि पाकिस्तानकी बात सही है, और अुससे अिस्लामका भला है, तो मैं अुसे क़बूल कर लूँगा। मगर मुझे पूरा यक़ीन है कि जिस शकलमें मुस्लिम-लीगवाले पाकिस्तान चाहते हैं, वह अिस्लामके ख़यालसे भी गुनाह है। अिस्लाम यह नहीं सिखाता कि भाअी-भाअी अलग रहें। जो अैसा सिखाते हैं, वे अिस्लामके दुश्मन हैं, हिन्दुस्तानके दुश्मन हैं — हिन्दुओंकी तो बात ही जाने दो। अिसलिअे मैं यह कहूँगा कि चाहे कोअी मेरे टुकड़े-टुकड़े कर डाले, लेकिन जिस चीज़को मैं सही नहीं मानता, अुसपर मेरे दस्तख़त नहीं मिल सकेंगे।

कम्युनिस्टोंका मामला कुछ जुदा है। अुन्होंने तो लड़ाअी-झगड़ा पैदा करना अेक पेशा-सा बना लिया है। अुनमें मेरे कअी दोस्त हैं। कअी तो मेरे लड़के-जैसे हैं। मगर अैसा मालूम पड़ता है कि वे सच और झूठका भेद नहीं मानते, और कोअी भी साधन अुनके हिसाबसे नाजायज़ नहीं। वे अिससे अिनकार करते हैं, मगर अुनके बरतावकी जो ख़बरें आती हैं, अुनसे मालूम होता है कि वे जो कहते हैं, सो करते नहीं। अेक बात और है — वह यह कि वे रूसको ही अपना मक्का-मदीना समझते हैं। और, वहींसे हुक्म लेते हैं। यहाँसे नहीं। अिस तरह दूसरे मुल्कका मुँह ताकना मुझे पसन्द नहीं। मैंने तो यहाँ तक कहा था कि रूससे गेहूँ मँगाकर मैं हिन्दुस्तानको ज़िंदा नहीं रखना चाहता। हम अपनी मेहनतसे हिन्दुस्तानमें जो कुछ पैदा कर सकेंगे, अुसी पर जियेंगे। मरना होगा, तो मर जायँगे। रूससे गेहूँ मँगाकर हम अेक आज़ाद मुल्ककी हैसियतसे ज़िंदा नहीं रह सकते। यही चीज़ ध्येयवाद (नज़रिया) जैसी दूसरी बातों को भी लागू होती है। मैं नये विचारोंको रोकना नहीं चाहता, मगर मैं अुनका ग़ुलाम भी नहीं बनना चाहता। जिस हद तक अुनको पचा सकूँगा, और जिस हद तक वे हमारे देशके नक़्शेमें जम सकेंगे, अुसी हद तक अुन्हें अपनाअूँगा। अिसलिअे कम्युनिस्टोंके बारेमें मेरा नुस्ख़ा यह है कि मैं अुनके हाथों कट जाअूँगा, मगर न अुनपर हाथ अुठाअूँगा, और न अुनके आगे अुनका कलमा पढ़ूँगा।

नअी दिल्ली, ३०-९-'४६

प्यारेलाल

पंजाबसे —

पंजाबके अेक जानकार भाअी लिखते हैं कि सन् १९४३में सरकारने पंजाबसे बाहर मवेशी भेजने पर जो कण्ट्रोल लगाया था, वह ३० सितम्बर, '४६को ख़त्म हो रहा है, और सरकारका कोअी अिरादा अुसको फिरसे लगानेका नहीं है। शुद्ध दूध, मक्खन, घी वग़ैरा बाज़ारमें मुश्किलसे मिलते हैं, और मवेशियोंकी तादाद और नस्ल बड़ी तेज़ीसे गिरती जा रही है। सन् १९४०की मर्दुमशुमारीके हिसाबसे मवेशियोंकी संख्या १०० आदमियों पर ५५ मवेशियोंके अनुपातसे थी। वही सन् १९४५में घटकर ५१ रह गअी है। अिसलिअे सूबेके बाहर मवेशी भेजनेका सवाल बहुत अहम हो गया है।

यहाँसे ज़्यादातर मवेशी कलकत्ता और बम्बअीको भेजे जाते हैं। व्यापारी लोग बहुत मुनाफ़ा लेकर दूधवालोंको मवेशी बेचते हैं। ये दूधवाले अिन मवेशियोंको, अुनका दूध सूखते ही, कसाअीख़ानोंके लिअे बेच देते हैं। डॉक्टर स्मिथ और डॉक्टर राअिट, जो अिन मामलेके विशेषज्ञ हैं, दोनोंने अिसके ख़िलाफ़ बड़े ज़ोरोंसे आवाज़ अुठाअी है। डॉ० पेपरालने, जो हिन्दुस्तान-सरकारको दूधके मामलेमें सलाह देने आये थे, लिखा है —

"पंजाबके लिअे तो यही अच्छा होगा कि वह अपने मवेशियोंको पंजाबमें ही रख ले और मवेशी बाहर भेजनेके बजाय दूधका पाअुडर बम्बअी या कलकत्ते भेजे। ये मवेशी वहाँ पहुँचनेके कुछ ही महीनों बाद कसाअीख़ानोंमें मार डाले जाते हैं, और फिर अुनकी जगह दूसरे मवेशी लाना बहुत मुश्किल हो जाता है। दूधका पाअुडर बनाकर भेजनेसे मुल्कको बहुत आर्थिक फ़ायदा होगा। मवेशी अुन्हीं जगहोंमें रख लिये जायँगे, जहाँ अुनकी खिलाअी और देखभाल अच्छी हो सकती है। अिनके दूधका पाअुडर भी शहरोंमें पैदा किये जानेवाले दूधसे सस्ता पड़ेगा, और तन्दुरुस्तीके ख़यालसे भी अच्छा होगा। अिसलिअे हमारी सिफ़ारिश यही है कि अिस तरहका सुधार बहुत लगन और जोशके साथ किया जाय। क्योंकि शहरोंमें दूधकी ज़रूरत पूरी करनेके लिअे, मवेशियोंकी जल्दी क़त्ल होनेसे बचानेके लिअे, दूधकी क़ीमत कम करनेके लिअे, दूधमें दूसरी चीज़ोंकी मिलावट रोकनेके लिअे, और शहरी तबेलोंमें मवेशी रखनेकी ज़िल्लत ख़त्म कर देनेके लिअे यही अेक अमली तरीक़ा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिन भाअीको अुम्मीद है कि सूबेकी सरकार, अेसेम्ब्लीके मेम्बर, और आम जनता, सबकी भलाअीके अिस कामको अपने हाथमें लेगी। …ी नहीं कि सिर्फ़ मवेशियोंके बाहर भेजने पर रोक लगाअी जाय, …कि पंजाबका रेलवे बोर्ड मवेशी वापस लानेके लिअे जो सहूलियतें देनेको तैयार है, अुनसे भी पूरा-पूरा फ़ायदा अुठाया जाय। पंजाबके …री हिस्सोंमें हिन्दुस्तान-भरमें सबसे अच्छे मवेशी हैं, पर जब तक अेक सही नीति अख़्तियार नहीं की जाती, पंजाबके पशु-धनके गिरते …नेका ख़तरा है। तन्दुरुस्ती और खेती दोनों पर अिसका कितना …राब असर होगा, सो बतानेकी ज़रूरत नहीं।

नअी दिल्ली, ३०-९-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

अमृतकुँवर

अिंग्लैण्डमें नअी तालीम

हाल ही अिंग्लैण्डकी तालीमके मसले पर ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटीके डिरेक्टर मि॰ अेस॰ अेल॰ जैक्सकी लिखी हुअी, 'टोटल अेज्युकेशन' (के॰ जॉन पॉल) नामकी अेक किताब छपी है। अुसके पन्ने अुलटते हुअे मैंने महसूस किया कि अिंग्लैण्डमें तालीमके माहिरोंके सामने भी वे ही सवाल हैं, जो हमारे सामने हैं। और अुन्होंने अुन सवालोंका जो हल बताया है, वह हम हिन्दुस्तानियोंके लिअे भी कामका हो सकता है।

हिन्दुस्तानमें यह आम शिकायत है कि हमारी तालीम सिर्फ़ …बी है। अुसमें जिस्म (शरीर)की तरफ़ और चाल-चलनकी तरफ़ कोअी ध्यान ही नहीं दिया जाता। अिसी तरह मि॰ जैक्स कहते हैं—"अेक तरफ़ मन है, अुसे तो तालीम देनी ही है। दूसरी तरफ़ शरीर है, अुसे तालीम देना हमने मुनासिब नहीं समझा। मगर स्कूलमें तो हमारा मक़सद यह होना चाहिये कि बच्चेकी शारीरिक (जिस्मानी), मानसिक (दिमाग़ी), नैतिक (अख़लाक़ी) और रूहानी (आध्यात्मिक), सब तरहकी ताक़तोंको अेक साथ बढ़ावें।" मि॰ अेफ़॰ सी॰ हेपोल्ड नामके लेखकने अपनी 'सिटीज़न्स अिन मेकिंग' (बनते हुअे नागरिक) नामकी किताबमें यही बात कही है। वे कहते हैं कि "हमारे ज़मानेकी …की दुनियाकी बड़ी-से-बड़ी खोज यह है कि अगर बच्चों या …को सोचना सिखाना है, तो अुसका सबसे अच्छा रास्ता यह है कि अुन्हें अपने समूचे जिस्म (शरीर)के ज़रिये सोचना सिखाया जाय, सिर्फ़ दिमाग़के ज़रिये नहीं। मगर यह खोज बहुत थोड़े लोगोंने …है। जिस्मानी तालीमकी तरफ़ ध्यान देनेवाले अुस्तादोंने पाया है कि शरीरके चौकन्नेपनके साथ हमेशा मनका चौकन्नापन भी बढ़ता है। और कसरत-क़वायद वग़ैरा तो अिस तालीमका अेक हिस्सा-भर है। अक़्लमन्दीके साथ जिस्मानी तालीम पानेसे अिनसान अपने शरीर पर क़ाबू रखना सीखता है। यही आगे चलकर अुसे अपने भावों (जज़्बात) और अुद्वेगों पर और दिल व दिमाग़ पर क़ाबू पानेमें मदद देता है। डिसिप्लिन या शिस्तके मसले कम होते जाते हैं, और अपने आप हल होने लगते हैं। पुरानी दिमाग़ी दिलचस्पियाँ बढ़ती जाती हैं, अुनमें नअी चमक आ जाती है, और नअी दिलचस्पियाँ पैदा होती हैं। अिनसान अपने आपको अेक पूरी अिकाअी समझने लगता है, और अिसके साथ ही अुसमें स्वाभिमानका माद्दा पैदा होता है।"

यह तजरबा सिर्फ़ अिंग्लैण्डका नहीं है, दूसरे मुल्कोंका भी यही तजरबा है। मिसालके तौर पर, ज़ेकोस्लोवाकियामें सोकोल लोगोंने जिमनास्टिक (अखाड़ेकी कसरत, जैसे कुश्ती वग़ैरा)को, और बदनकी ख़ूबसूरती बढ़ानेवाली कअी तरहकी दूसरी कसरतोंको अख़लाक़ी (नैतिक) और दिमाग़ी ताज़गी लानेका ज़रिया बनाया। बादमें अिस चीज़ने सारे मुल्कको नअी ज़िन्दगी दी और यह अुसके जज़्बात (भावनाओं)को ज़ाहिर करनेका अेक ख़ास ज़रिया बनी। …में, तन, मन और आत्माको अेक साथ तालीम देनेकी मिसालें हैं। अिससे अिनसानकी सारी ताक़तें अेक साथ काम करती हैं, और वह अपने भलेके लिअे ज़ाब्तेमें चलता है। अेक पूरे बच्चेकी तालीमकी सचोट मिसाल देते हुअे मि॰ जैक्स अेक अैसे लड़केके बारेमें लिखते हैं, जिसका दिल बढ़अीके काममें लग गया था। फ़र्ज़ कीजिये कि अिस बच्चेको अेक ख़ूबसूरत और अुपयोगी चीज़ बनानी है। अिसके लिअे पहले वह अुस चीज़की अेक ख़याली तसवीर खींचेगा; फिर अुसे बनानेके लिअे ज़रूरी औज़ारोंकी बात सोचेगा; अुसका ठीक-ठीक माप निकालेगा; फिर वह अपने हाथकी सफ़ाअीका, देखने और छूनेकी ताक़तका, और शरीरके बलका बड़े ज़ाब्तेसे, सँभलकर, अुपयोग करेगा, और अपने ख़यालोंको अिधर-अुधर न जाने देकर वह अुस चीज़के बनानेमें तन-मनसे पूरी तरह भिड़ जायगा। अिसमें अुसकी दिमाग़ी, अिख़लाक़ी और जिस्मानी तीनों तरहकी ताक़तें अेक साथ काम करती हैं, और यों समूचे अिनसानकी अिस मेहनत और ज़ब्तकी बदौलत अेक ख़ासी अच्छी चीज़ तैयार हो जाती है।

अपने बच्चोंकी शारीरिक अुन्नति या तरक़्क़ीकी तरफ़ ध्यान न देनेसे काम नहीं चल सकता। अिसी चीज़को मि॰ जैक्स अिन ज़ोरदार लफ़्ज़ोंमें कहते हैं — "स्कूलको सबसे पहले वह सेहतख़ाना बनना है, जहाँ शरीर, मन और आत्माका अेक साथ ध्यान रखा जाता है। जैसे-तैसे खेलनेसे काम नहीं चल सकता। हरअेक स्कूलमें शारीरिक या जिस्मानी तालीमका महकमा खुलना चाहिये, और थोड़े ही वक़्तमें हमें सोलह सालके लड़केके लिअे स्कूली तालीम पूरी करनेकी दिमाग़ी परीक्षासे मिलती-जुलती शारीरिक परीक्षा ढूँढ़ निकालनी चाहिये। अिन दोनोंके मिलापसे अेक अैसी चीज़ बन जायगी, जो समूचे बालककी परीक्षाका काम देगी।"

जब हमारे स्कूल बच्चोंके दिमाग़की तरह अुनके जिस्मकी तरफ़ भी ध्यान देने लगेंगे, तब शरीर या जिस्मका अनगढ़पन अेक गुज़री हुअी बात हो जायगा।

भाषाके और स्कूलोंमें सिखाये जानेवाले दूसरे विषयोंके साथ, मि॰ जैक्स कला और अुद्योगको भी लेते हैं, और कहते हैं कि लड़कियोंके लिअे पहननेके कपड़े बनाना, कसीदा काढ़ना, बेलबूटे भरना, मकान बनाना, और लड़कोंके लिअे जिल्दसाज़ी, लीनोकट, लकड़ीका काम, धातका काम, मॉडल बनाना, स्केलड्रॉअिंग और सादा ड्रॉअिंग वग़ैरा पढ़ाअीके अच्छे मज़मून हैं। अिंग्लैण्डके लिअे यह भले ही ठीक हो, मगर हिन्दुस्तानमें तो हमारा मक़सद अपने लिअे सब कुछ पैदा करनेवाले व अपने पैरों पर खड़े रहनेवाले आज़ाद देहातको और देहाती पंचायतोंको फिरसे ज़िन्दा करना है। सो हमें तो ख़ूराक और कपड़ों पर ही ज़्यादा ज़ोर देना होगा। सारी दुनियामें ये दो चीज़ें ज़िन्दगीकी पहली ज़रूरतें हैं। स्कूलके हरअेक बच्चेके ज़िम्मे ज़मीनका अेक छोटा-सा टुकड़ा रहना चाहिअे, जहाँ वह फल-फूल, सब्ज़ी वग़ैरा अुगा सके। मगर यह हरअेक जगह नहीं हो सकता। कअी जगह तो अिस कामके लिअे ज़मीन ही नहीं मिलेगी। मगर कातनेमें तो अैसी कोअी दिक़्क़त नहीं आती। अिसलिअे बाग़वानीके साथ या अुसके बग़ैर भी कताअी तो हरअेक स्कूलमें दाख़िल की ही जानी चाहिये।

स्कूलके मास्टरों और विद्यार्थियोंको दस्तकारीकी और कसरत-क़वायदकी तालीम मिलनी चाहिये। अिंग्लैण्डकी हालतके बारेमें मि॰ जैक्स कहते हैं — "अिनसान दस्तकारीका भूखा जानवर है। मगर यह भूख बहुत ही कम मिटाअी जाती है। अिसका कारण यह है कि स्कूलोंमें अुद्योग-धन्धोंकी तालीमकी तरफ़ आम तौर पर कोअी ध्यान ही नहीं दिया जाता। स्कूलमें पढ़ाये जानेवाले दूसरे विषयोंके मुक़ाबले अिनके साथ अनाथों-जैसा बरताव किया जाता है। यह हालत तभी सुधर सकती है, जब हम अपने शिक्षकोंको अैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालीम दें, जिससे वे ये सब काम अपने-आप कर सकें और अिनका प्रचार भी कर सकें। शिक्षककी अपनी लियाक़तमें अुसकी यह क़ाबलीयत ज़्यादा-से-ज़्यादा अहमियत रखेगी।"

अिंग्लैंडकी लिअे यह क़ाबलीयत अहम हो सकती है, मगर हिन्दुस्तानके लिअे तो यह बिलकुल जरूरी है।

(अंग्रेज़ीसे) वालजी गोविन्दजी देसाअी

ग़रीब या छोटे मुल्क

श्री चन्द्रशंकरने अपने अेक लेखमें बहुत खूबीके साथ यह बतलाया है कि अंग्रेज़ीके नामी लेखक ग़रीब या छोटे मुल्कों पर होनेवाले लड़ाअीके असरके बारेमें क्या ख़याल रखते हैं। अुस लेखका सार यहाँ दिया जाता है। तरजुमा देनेसे हिन्दुस्तानी पाठकोंको फ़ायदा नहीं पहुँचेगा। अंग्रेज़ लेखकोंके नाम जाननेसे भी अुनको फ़ायदा क्या? हम तो सिर्फ़ अितना जान लें कि यूरोपके बड़े-बड़े लेखक आजकल लड़ाअीके बारेमें क्या सोचते हैं।

अुनका कहना है कि अब ज़माना आ गया है, जब बड़े और धनवान मुल्क ही लड़ाअी लड़ सकेंगे। अुनके पास दौलत भी है और लश्कर भी। छोटे मुल्कोंको बड़े मुल्क या तो खा जाते हैं या दबा देते हैं।

अिसके सिवा, छोटे मुल्क अपने लिअे ख़ुद तो हथियार बना नहीं सकते, बड़ोंसे ही लेते हैं, और जब अुनका कोअी हिस्सा टूटता या बिगड़ता है, तो अुसे भी अुन्हींसे ख़रीदना पड़ता है। नतीजा यह होता है कि वे हमेशा बड़े मुल्कोंके मुहताज बने रहते हैं।

कभी बार अैसा होता है कि छोटे मुल्क चाहें या न चाहें, अुन्हें मजबूरन् बड़े मुल्कोंसे हथियार ही लेने पड़ते हैं। मसलन्, अेक छोटे मुल्कको थोड़े क़र्ज़की जरूरत है। बड़ा मुल्क अुसे पैसे क्यों दे? छोटा मुल्क जो माल माँगे, सो माल भी अुसे क्यों दे? अिनके बजाय वह अुसे हथियार देता है, और हथियार देनेके मानी यह हुअे कि छोटा मुल्क बड़ेका ग़ुलाम बन गया!

आख़िर अुन लेखकोंने नतीजा यह निकाला है कि छोटे मुल्क कभी आज़ाद नहीं रह सकते। सबको कभी-न-कभी हथियारोंके नीचे दब जाना पड़ता है, और सत्यकी जय होनेके बजाय हथियारबन्दोंकी, धनवानोंकी, और बमगोलोंकी ही जय होती है!!!

कोअी भले ही अैसा माने, लेकिन अगर हममें श्रद्धा है, तो हम कहेंगे कि अनुभव तो हमें यही सिखाता है कि आख़िर जीत सत्यकी ही होती है, असत्यकी नहीं।

नअी दिल्ली, १६-९-'४६

('हरिजन'से मुख़्तसर) मोहनदास करमचन्द गांधी

डोला-पालकी

गढ़वाल जिलेमें हिन्दू लोग अितने अनजान हैं कि वे हरिजन वर-राजा (दूल्हा)को डोला-पालकीमें या दूसरी किसी सवारी पर बैठकर मंदिरों, चौराहों या अपनेको अूँचा माननेवाले हिन्दुओंके मोहल्लोंसे नहीं जाने देते। अब तो अैसा बुरा रिवाज बरदाश्त नहीं किया जाना चाहिये। अेक भाअीने मुझे क़ानूनका मसविदा भी भेजा है, जिसे पास करने पर शायद वे अनजान लोग समझ जायँ। और अैसा करना ही चाहिये। हर हालतमें, जब कभी अैसा 'वरघोड़ा' यानी बरातका जुलूस निकाला जाय, तो अुसके साथ, अिन ग़रीब लोगोंकी हिफ़ाज़तके लिअे, अेक पुलिस-पार्टी रहनी चाहिये। सरकारकी तरफ़से अिश्तहार भी बाँटे जाने चाहियें कि डोला-पालकी या दूसरी किसी सवारी पर बैठनेसे किसीको रोका न जाय — रुकावट डालने-डलवानेवालोंको सज़ा दी जायगी।

नअी दिल्ली, ६-१०-'४६ मो० क० गांधी

सवाल-जवाब

कर्म पूजा नहीं?

स०— मनुष्य अीश्वर-भजनमें जितना समय लगाता है, अगर अपना अुतना ही समय वह किसी ग़रीबकी सेवामें लगावे, तो क्या यह भजनसे अच्छा न होगा?

जो मनुष्य अैसा करता है, क्या अुसके लिअे अीश्वर-भक्ति जरूरी है?

ज०— अैसे सवालमें मुझे आलस्यकी बू आती है। नास्तिकताकी भी। बड़े कर्मयोगी कभी भजन या भक्ति नहीं छोड़ते। हाँ, सिद्धान्तरूपसे यह कहा जा सकता है कि पारमार्थिक कर्म (बेग़रज़ ख़िदमत) ही भक्ति है, और अैसे लोगोंको भजनकी जरूरत नहीं। मगर हक़ीक़तमें भजन वग़ैरा अैसे कर्मके सहायक या मददगार बनते हैं, और अीश्वरकी याद ताज़ा रखते हैं।

अछूतपनका नाश कैसे हो?

मद्रासके अेक हरिजनभाअी लिखते हैं—

स०— "हरिजनोंको तालीम देना, अुन्हें आम कुओंसे पानी भरने देना, मन्दिरोंमें जाने देना वग़ैरा अच्छा तो है, लेकिन सच्ची बात यह है कि हरिजनोंके लिअे बस्ती या चेरी जैसी अलग जगहें नहीं होनी चाहियें। तभी अस्पृश्यताका नाम-निशान मिट सकेगा।"

ज०— यह कहना अच्छा लगता है कि हरिजनोंके लिअे अलग बस्तियोंका न रहना अछूतपनके नाशकी निशानी होगी। आज भी, जहाँ तक मुझे अिल्म है, अैसा कोअी आम क़ानून नहीं, जिससे हरिजनोंको अपने लिअे बनी बस्तियोंमें ही रहना पड़ता हो। दुष्ट रिवाजने अैसी हालत पैदा कर रक्खी है। यह रिवाज नाबूद हो रहा है, लेकिन बहुत धीरे-धीरे। सबका धर्म है कि वे अिस रिवाजको तोड़ें। यह लोगोंके दिलोंको हिलानेकी बात है। अैसा काम बड़ी तपश्चर्यासे ही हो सकता है। तुलसीदासजी कहते हैं—

"तपबल रचअि प्रपंच बिधाता।
तपबल बिष्णु सकल-जग-त्राता॥
तप-अधार सब सृष्टि भवानी।
करहि जाअि तप अस जिय जानी॥"

जब कोअी अैसी ताक़त रखनेवाला पैदा होगा, तब काम आसान हो जायगा। धर्म बच जायगा।

क्या रामनाम और जंतर-मंतर अेक हैं?

स०— मेरा भतीजा बीमार था। अुसके लिअे रिश्तेदारोंने दवा-दारू नहीं की। ओझों और पण्डोंको बुलाया और जंतर-मंतर करवाये। यह नहीं कहा जा सकता कि अुससे कुछ फ़ायदा हुआ। शायद आपकी माताने भी आपके लिअे अैसा ही किया होगा। अब आप रामनामकी बात करते हैं। जंतर-मंतर और रामनाम अेक तो नहीं हैं न?

ज०— अिस शंकाका जवाब किसी-न-किसी शकलमें मैंने दिया तो है, फिर भी कुछ और कहना अच्छा होगा। मुझे ख़याल है कि मेरी माँने दवाअी तो कराअी थी। वह जंतर-मंतरमें अवश्य मानती थीं। मैं नहीं मान सकता। मेरे कुछ ज्ञानी मित्र हैं, जो मानते हैं। मगर मेरी आस्था नहीं जमती। अिसलिअे मैं निडर होकर कह सकता हूँ कि मेरे रामनामका जंतर-मंतरसे कोअी वास्ता नहीं। मैंने कहा है कि रामनाम अथवा किसी भी रूपमें हृदयसे अीश्वरका नाम लेना अेक महान् शक्तिका सहारा लेना है। वह शक्ति जो कर सकती है, सो दूसरी कोअी शक्ति नहीं कर पाती। अुसके मुक़ाबले अणुबम कोअी चीज़ नहीं। अुससे सब दर्द दूर होते हैं। हाँ, यह सही है कि हृदयसे नाम लेनेकी बात कहना आसान है, करना कठिन है। सो वह कितना भी कठिन क्यों न हो, वही सर्वोपरि वस्तु है।

नअी दिल्ली, ५-१०-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौल और मापकी दशांश पद्धति

अिसके बारेमें मेरी राय यह है —

१. मैं मानता हूँ कि सारे देशमें तौल और मापका अेक ही तरीक़ा होना चाहिये ।

२. साथ ही, मैं यह भी मानता हूँ कि जिस तरह आजकल मन और सेर दोनों बरते जाते हैं, अुस तरह दो क़िस्मके माप और तौल अेक साथ न चलाये जाने चाहियें । अिसमें ठगी और चोरीकी काफ़ी गुंजाअिश रहती है ।

३. बड़े-बड़े हिसाब लगानेमें दशांश पद्धति आसान होती है, क्योंकि अुसमें गिनतीके तैयार कोठोंकी मदद ली जा सकती है । दुनियामें वक़्त और कोनोंका माप निकालनेके सिवा बाक़ी सब तरहके माप-तौलमें यही तरीक़ा बरता जाता है । यह मेट्रिक सिस्टिम यानी दशांश पद्धति आन्तरराष्ट्रीय पद्धति मानी गअी है, और यूरोपके कुछ देशोंमें वह रोजमर्राके कामोंमें बरती भी जाती है । अगर हिन्दुस्तानमें भी यह तरीक़ा चलाना हो, तो हमें मेट्रिक सिस्टिमको पूरी तरह अपनाना होगा । अिसके लिअे अलगसे हिन्दुस्तानी दशांश पद्धति चलानेकी ज़रूरत नहीं ।

४. लेकिन मेरी अपनी यह मज़बूत राय है कि दशांश पद्धतिके लिअे आम लोगोंको काफ़ी तालीम देनी होगी, और अुसके लिअे काग़ज़-क़लमका अिस्तेमाल भी बढ़ाना होगा । अनपढ़ आदमीके लिअे चौथाअी हिस्सोंका तरीक़ा आसान होता है । मेरे ख़यालमें अेक अिकाअीके तमाम छोटे-छोटे हिस्सोंको चौथाअीके ढंगसे बाँटना चाहिये । १/२, १/४, और १/८ पूरे दशांश भी हैं, अिसलिअे अिनके साथ दसवें हिस्सेवाले तरीक़ेका मेल बैठ सकेगा । अिस तरह करके कुछ सालके बाद सम्पूर्ण दशांश पद्धति तक पहुँचना भी आसान होगा ।

५. लेकिन आज तो किसी भी तौल या मापमें चौथाअीकी पद्धतिका ठीक-ठीक अिस्तेमाल नहीं होता । पाअियोंकी बात छोड़ दें, रुपयेके ६४ हिस्से किये गये हैं । सेरके ८० और तोलेके ३२ या ९६ हिस्से हैं । यह जो हिन्दुस्तानी तरीक़ा था, अुसे बदलकर अुसकी जगह अंग्रेज़ी हिसाबका बेढंगा तरीक़ा दाख़िल कर दिया गया है । अिसलिअे सभी तौलों और मापोंमें चौथाअीकी व्यवस्थित पद्धति शुरू की जानी चाहिये ।

६. चुनाँचे मेरे सुझाव ये हैं —

(१) चौथाअीके हिसाबसे हिन्दुस्तानके माप-तौलकी अेक व्यवस्थित पद्धति सारे हिन्दुस्तानमें अेक-से ढंग पर चलानी चाहिये, और अिसे सिर्फ़ छोटे हिस्सोंके लिअे ही रखना चाहिये ।

(२) ख़ास अिकाअी अंग्रेज़ी ढंगकी नहीं, बल्कि आन्तरराष्ट्रीय मेट्रिक सिस्टिमके ढंगकी रखनी चाहिये ।

यह कअी तरहसे किया जा सकता है । अिसमें सवाल यही पैदा होता है कि मौजूदा माप-तौल और नये ढंगके माप-तौलके बीच कितना फ़र्क़ रह सकता है । मसलन्, आजका सेर ८३३ 'ग्राम'का है, अुसके बदले हम अुसे ८००, ९६० या ५१२ 'ग्राम'का बनायें । अिसी तरह गज़में भी करें । मेट्रिक सिस्टिमकी अेक ख़ासियत यह है कि अुसमें 'ग्राम'का वज़न अेक घन सेण्टीमीटर पानीके वज़नके बराबर होता है । अगर यही चीज़ हिन्दुस्तानी हिसाबमें दाख़िल करनी हो, तो कुछ माप बिलकुल बदल जायँगे । अिस पर सवाल अुठेगा कि अिस तरहके बड़े फेरफार करनेमें सरकार किस हद तक क़दम बढ़ायेगी । अगर मौजूदा माप-तौलमें कम-से-कम रद्दो-बदल करके मेट्रिक सिस्टिमके साथ अुनका मेल बैठानेका ख़याल हो, तो अुसमेंसे अेक नअी पद्धति निकल आयेगी । और, अुसमें शायद ज़्यादा दशांश स्थानोंकी ज़रूरत होगी । अिससे तो ज़्यादा फेरफारवाले नये माप-तौल बनानेमें अधिक आसानी होगी । कअी तरहसे हिसाब लगानेके बाद मैं अिस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि अगर सरकार अूपरके दो अुसूलोंको मान ले, तो अिस तरीक़ेमें फेरफार करनेसे फ़ायदा होगा ।

सेवाग्राम, २२-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे) **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

हफ़्तेवार ख़त

कसौटीका वक़्त

अेक दोस्त, जो कअी महीनोंके बाद हाल ही विलायतसे लौटे हैं, गांधीजीसे कह रहे थे कि विलायतवाले आज किस बहादुरीसे ख़ूराककी कमीका सामना कर रहे हैं । सब लोगोंने अपने अूपर तंगी लाद ली है, और कोअी शिकायत नहीं करता । अमीर लोग गर्व (फ़ख़्र)से ग़रीबोंके साथ तंगी और कठिनाअियाँ सहन करते हैं; क्योंकि ये कठिनाअियाँ तो आख़िर वे दाम हैं, जो लड़ाअीमें मिली जीतके बदले चुकाने पड़ रहे हैं । यह सबके लिअे कसौटीका वक़्त है, और हरअेक अुस पर पूरा अुतरनेकी कोशिश कर रहा है ।

हमारे लिअे भी यह कुछ कम कसौटीका वक़्त नहीं । अपनी प्रार्थना-सभाओंमें अिस पूरे हफ़्ते गांधीजी लोगोंको अिस बातकी याद दिलाते रहे हैं । पचास सालकी लड़ाअीके बाद आख़िर हम अपने मक़सदके दरवाज़े तक आ पहुँचे हैं । जब तक लड़ाअी चलती है, आदमी अुसके जोशमें आगे बढ़ता जाता है । मगर जब लड़ाअीका शोर-गुल, धूम-धाम ख़त्म हो जाते हैं, और असल बड़े काम हमारे सामने आते हैं, तब हमारी सच्ची परीक्षाका वक़्त आता है । जिस स्वराजके लिअे हमने अितने अरसेसे मेहनत की है, अुसे हासिल करनेका कौनसा ज़रिया हमारे पास है? गांधीजी कहते हैं कि अहंभाव या ख़ुदीको छोड़ना और नम्रता धारण करना ही वह साधन है, जिसकी आज हमें ज़रूरत है ।

चरखा

अेक दिन प्रार्थनाके बाद गांधीजीने कहा — "जो भजन अभी गाया गया है, अुसमें कवि कहता है कि ख़ुदा अुसीको मिलता है, जिसने अपनी ख़ुदी मिटा दी है । अगर हम अिसका मतलब समझ जायँ, तो फिर हमारे लिअे और कुछ जाननेको न रह जाय । चरखा हमें यही सिखाता है । आप लोग शायद पूछेंगे कि चरखेसे हमें अीश्वर या ख़ुदा कैसे मिल सकता है? पर जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूँ, चरखेके ज़रिये हम करोड़ों आदमियोंके साथ अपनापन महसूस करते हैं । करोड़पति लोग समझते हैं कि अुन्हें पैसेसे हर चीज़ मिल सकती है । पर अैसा नहीं है । मौत किसी भी वक़्त आकर अुन्हें अुठा ले जा सकती है । कुछ लोग रोज़ छुरोंसे मारे जा रहे हैं । लेकिन अिस तरह जान गँवाना अपनी ख़ुदी मिटाना नहीं है । ख़ुदाको पानेके लिअे हमें अपनी ख़ुदी और ख़ुदग़रज़ीको ख़ुद ही अेक त्यागीकी तरह मिटानेकी कोशिश करनी पड़ती है । चरखेके ज़रिये दूसरोंसे हमारा अलगाव ख़त्म हो जाता है । चरखा सबके लिअे है । ग़रीबसे ग़रीबके लिअे भी । अिसलिअे चरखा हमसे अुम्मीद करता है कि हम नम्र बन जायँ और अपने ग़रूरको पूरी तरह निकाल फेंकें ।

चरखा स्वराजकी कुंजी है । लेकिन क्या यह हो सकता है कि अेक आदमी स्वराजके लिअे काते, और फिर भी मग़रूर न बना रहे? अगर किसीके दिलमें ग़रूर भरा है, तो अुसे न तो चरखेसे आत्माका स्वराज मिलेगा और न ख़ुदा या अीश्वर ही मिलेगा ।

जब हम ख़ुदीको मिटा देंगे, तो यह फ़र्क़ हमारे बरतावमें भी झलकेगा । वह हमारी छोटी-से-छोटी हरकतसे ज़ाहिर होगा । ज़िन्दगीको देखनेका हमारा सारा दृष्टिकोण या नज़रिया ही बदल जायगा । हम जो कुछ करेंगे, सो सिर्फ़ अपने लिअे नहीं, बल्कि सबका ख़याल रखकर करेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आगे चलकर अुस भजनमें यह कहा गया है कि अीश्वरको ढूँढ़नेके लिअे हमें कहीं और जानेकी ज़रूरत नहीं। वह तो हमारे दिलमें ही रहता है। लेकिन वहाँ हम अपनी ख़ुदीको बैठाकर 'बेचारे' अीश्वरको निकाल बाहर करते हैं। मैंने यहाँ अीश्वरको 'बेचारा' कहा है। क्योंकि अगरचे वह बादशाहोंका बादशाह, सबसे बड़ा और सर्वशक्तिमान् है, तो भी जो ख़ुदीको मिटाकर बड़ी नरमीसे अुसकी पूजा या अिबादत करता है, अुसकी मदद पर वह दौड़ा आता है। अिसलिअे हम नम्र बनें, और अुसे अपने भीतर ढूँढ़ें।

करुणा बरसाते आओ

"ख़ूँरेज़ीका यह पागलपन कब ख़त्म होगा? कलकत्ता, ढाका, आगरा, अहमदाबाद और बम्बअीकी मारकाट कब रुकेगी? क्या अुसमें जहर खिलानेकी तरकीब और शामिल होगी? क्या हिन्दुस्तानको अिस हददरजेकी बदनामीसे गुज़रना ही होगा? हिन्दुस्तानमें अेक पुरानी कहावत चली आअी है कि जहाँ सबसे ज़्यादा ख़राबी होती है, वहीं सबसे ज़्यादा नाअुम्मेदी और जुर्म होते हैं। क्या अिस कहावतको दुनियाके सामने सच साबित करना हिन्दुस्तानके ही भागमें बदा है? दूसरी अक्तूबरको अंग्रेज़ी तारीख़से गांधीजीका जन्मदिन था। अुस दिन अुन्होंने प्रार्थना-सभामें अिन काली करतूतोंका ज़िक्र करते हुअे अपने दिलका दर्द ज़ाहिर किया। अुस दिन गुरुदेवकी नातिन श्रीमती नन्दिता कृपलानीने अपनी सुरीली आवाज़में गुरुदेवका यह गीत गाया था—

करुणा बरसाते आओ।
जीवनका रस जब सूख जाय, करुणा बरसाते आओ।
सम्पूर्ण माधुरी रूठ जाय, संगीत-सुधा सरसाओ।
कोलाहलमय बहु कार्य घोर, घन गरज अुठे जब चारि ओर;
दिलके आँगनमें शान्तिनाथ, हौले पग धरते आओ।
जब अेक ओर यह मन मलीन, दुबका बैठा हो दीन हीन,
तब खोल द्वार, हे प्रभु अुदार, शाही सज-धजसे आओ।
अिच्छाअें भ्रमकी धूल डाल, कर रही मुझे हों जब बेहाल,
तब हे पवित्र, तब हे अनिद्र, बिजली चमकाते आओ।

अिस गीतको सुनकर गांधीजी बोले—"अैसा मालूम होता है, मानो आज अीश्वरने ही हम सबको अिस गीतकी शकलमें ख़ास पैग़ाम भेजा है। आज हिन्दुस्तानकी ज़िन्दगीका झरना बिलकुल सूख गया है। यह सोचना बेवक़ूफ़ी होगी कि चूँकि केन्द्र (मरकज़) में कांग्रेसी सरकार है, अिसलिअे सब तरफ़ अच्छा ही अच्छा है। असल बात तो यह है कि जिस वक़्त हमारी आँखें भ्रम और वासनाकी धूलसे अन्धी हो रही हैं, तब अीश्वर अपनी तेज़ रोशनी और बादलोंकी गड़गड़ाहटसे हमें जगाने आया है।"

गोआ

आपसकी अिस बुरी मार-काट पर और कुछ कहनेकी अुनकी अिच्छा नहीं हुअी। यह बतानेके लिअे कि हिन्दुस्तानकी ज़िन्दगीका झरना कैसा सूख गया है, गांधीजीने लोगोंका ध्यान गोआकी तरफ़ खींचा। गोआ भी आख़िर हिन्दुस्तानका ही अेक हिस्सा है। ख़बर आअी है कि डॉ॰ राममनोहर लोहियाको वहाँ पहुँचते ही गिरफ़्तार कर लिया गया, और अुन्हें अेक अलग कोठरीमें बन्द कर दिया गया है। कुछ ही दिन पहले नागरिक स्वतंत्रता (सिविल आज़ादी) का प्रचार करनेके कारण श्री काकोड़कर पर मुकदमा चलाकर अुन्हें ९ बरसकी सज़ा दे दी गअी है। डॉ॰ लोहिया विद्वान् हैं। मेरे और अुनके ख़यालोंमें फ़र्क़ है, लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि अुनके मामलेमें मुझे कुछ भी दिलचस्पी नहीं। अुनकी गिरफ़्तारी और गोआकी घटनाओंसे आपको भी अुतना ही बुरा लगा होगा, जितना मुझे लग रहा है। मैंने गोआकी सरकारसे कुछ चिट्ठी-पत्री भी की थी, लेकिन कोअी नतीजा नहीं निकला। हमारे वज़ीरे आज़म (प्रधानमंत्री) जवाहरलालजी अपने तरीक़ेसे कोशिश कर रहे हैं। किसी हिन्दुस्तानीसे यह कहना कि परदेसी होनेकी वजहसे वह गोआ नहीं जा सकता, अुसकी तौहीन करना है। गोआ अुसी तरह हिन्दुस्तानका अेक हिस्सा है, जिस तरह काश्मीर या दूसरी कोअी रियासत। यह सहा नहीं जा सकता कि डॉ॰ लोहिया-जैसे लोगोंके साथ गोआमें परदेसी जैसा बरताव हो, और अुन्हें वहाँ, और हिन्दुस्तानके किसी दूसरे हिस्सेमें, जहाँ अंग्रेज़ी हुकूमत नहीं है, जानेकी मुमानियत हो।

दशहरेका असल मतलब

"मेरे पास अेक चिट्ठी आअी है, जिसमें पूछा गया है कि 'हम दशहरेके दिन क्या करें? जुलूस निकालें, मिठाअियाँ खायें या खेल-कूद करें?' आज हमारा जीवन सूख गया है। प्रभुकी करुणाधारा ही अुसे हरा बना सकती है। अैसी हालत में हम जुलूस क्या निकालें? जुलूस तो हमारे अन्दर है। वह अखंड (हमेशा जागता हुआ) है, निराकार (बिना शकल का) और निरंजन है। हमें .ख़ुश करनेके लिअे वह सज-धज कर आता है, और हमारे दिल में बैठ जाता है।

"दशहरा क्या है? रामने रावणको हराया। क्या राम छुरी चलाकर जीते होंगे? रामायण में कहा गया है कि जब विभीषणने रामसे पूछा कि रावणके पास तो रथ हैं, हथियार हैं, फ़ौजें हैं, और आपके पैरों में तो जूते तक नहीं हैं, आप कैसे जीतेंगे? तो रामने जवाब दिया—'मेरी ताक़त मेरी पवित्रतामें है। मेरा संयम ही मेरी शक्ति है। रावण की फ़ौजों की अुसके सामने क्या बिसात!' राम के पास धनुष था। मैं मानता हूँ, वह धनुष भी अुनका संयम ही था। छुटपनमें राम विश्वामित्रके साथ गये। दशरथके मनमें डर था। पर जीत रामकी ही हुअी। यानी सात्विक वृत्तिने राक्षसी वृत्ति पर विजय पाअी। क्या वह जीत मनाने के लिअे हम जुलूस निकालें? अपने धर्मको समझनेवाले हिन्दू या मुसलमान तो आज अपने घरोंमें बैठेंगे। अगर अुनमें मरने की तैयारी न हो, तो वे लड़कर अपनी रक्षा या हिफ़ाज़त करें, पर किसीको अिश्तिआल न दिलावें, अुत्तेजित न करें। किसीसे यह कहना कि 'आओ, हमसे लड़ो!' हैवानियत है।

"किसी पर हाथ अुठाये बिना मर जाना ही सच्ची और आला दरजे की हिम्मत है। मुझपर गालियों की बौछार पड़ रही है—'तू सबको बिगाड़ता है। जाकर हिमालयमें बैठ। अपना महात्मापन अपने पास रख' वग़ैरा . . .। मैं तो अपनेको महात्मा नहीं मानता, और न किसीको बिगाड़ता ही हूँ। छुटपनसे मैंने सीख रखा है कि किसीको मारना नहीं चाहिये। अगर मनमें डर है, तो अुससे बचनेका साधन भी राम-नाम है।

"आज जुलूस निकालना न हिन्दुओंके हक़में अच्छा है, न मुसलमानोंके, और न स्वराज के। सरदार, जवाहर वग़ैरा हमारे हैं। हम अुनके रास्ते में रोड़े अटकानेवाले न बनें। अीश्वरका नाम लें। भूखसे ज़्यादा न खायें। सच्चे अिनसान बनें। .ख़ुदाके बन्दे बनें। तभी हिन्दुस्तान की ख़ैर है।"

हमारे पड़ोसी अफ़ग़ान

सचमुच वह अेक ऋषि ही था, जिसने लड़ाअीके बजाय सेवाके लिअे दूसरे देशोंमें सेवकोंके लश्कर भेजनेका सुझाव दुनियाके सामने रक्खा था। अुसका कहना यह था कि किसी मुल्कके लिअे दूसरे किसी मुल्कको हराना सच्चे फ़ख़्र या गर्वकी बात नहीं। सच्चे गर्वकी बात तो यह है कि वह अपने कला-कौशल और अपनी सच्ची संस्कृतिका, यानी अपने हुनर-व-फ़न, और तहज़ीब व तमद्दुनका, सन्देश या पैग़ाम पहुँचाकर दूसरे मुल्कोंका दिल जीते। कुछ दिन पहले पंडित जवाहरलालको अफ़ग़ान अेल्चीके ज़रिये यह ख़बर मिली कि अफ़ग़ानिस्तानमें कपड़ेकी सख़्त तंगी है, और अगर हिन्दुस्तानसे वहाँ कुछ कपड़ा भेजा जा सके, तो वे अुसके लिअे बहुत अेहसानमन्द होंगे। जवाहरलालजीने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीके सामने रक्खी। खुशक़िस्मतीसे कुछ ही दिन पहले अुन्हें यह अित्तिला मिली थी कि वहाँ ढाअी लाख रुपयेकी खादी पड़ी है। जब अितवार ता० ६ अक्तूबरके दिन अफ़ग़ान गांधीजीसे मिलने आये, तो अुन्होंने अुनसे अिसका ज़िक्र किया। अुन अफ़ग़ान दोस्तोंने रंगीन और छपी हुअी खादीके कुछ देखे, और कहा कि अगर अैसी खादी मिल सके, तो अुन्हें होगी। पंडित जवाहरलालने अुन्हें यह भी सुझाया कि हिन्दुस्तानसे ... जानकारोंकी अेक टुकड़ी कताअी-बुनाअी और खादीका काम सिखानेके लिअे अफ़ग़ानिस्तान क्यों न भेजी जाय? तजवीज़ अुन्हें बहुत पसन्द आअी। फिर वे लोग श्री कनु ... चरखा-क्लास देखने गये। अुन्हें यह देखकर निहायत खुशी और ताज्जुब भी हुआ कि कितनी आसानीसे छोटे-छोटे लड़कों लड़कियोंने अेक हफ़्तेके अन्दर तमाम क्रियायें सीख ली थीं। ... देस्तानमें कपड़ेकी दो मिलें हैं, जिनमें हर साल क़रीब ६० ... गज कपड़ा बनता है। अेक क़िस्मकी मोटी खादी भी वहाँ ... है। बुनाअीका धन्धा अभी ज़िन्दा है, मगर कताअी मर चुकी है। ... रेशेकी अमेरिकन कपास वहाँ काफ़ी तादादमें होती है, और ... कुछ हिस्सा हिन्दुस्तानमें भी आता है। अून तो वहाँ हर घरमें ... जाता है। जाड़ोंमें अितनी सख़्त सर्दी पड़ती है कि लोगोंको ... घरोंमें बन्द रहना पड़ता है। अगर वे अपने अिस वक़्तका अिस्तेमाल करें, तो कपड़ेकी अपनी मुहताजीको वे आसानीसे ... सकते हैं।

... प्रार्थनाके बादकी अपनी तक़रीरमें गांधीजीने कहा — "पंडितजी ... अुनके बड़े वज़ीर हैं। वे किसीकी पुकारको सुनी-अनसुनी नहीं ... करते। आज हमें शर्मके साथ यह क़बूल करना पड़ता है कि ... पागल बन गये हैं, और आपसमें लड़-झगड़ रहे हैं। अहिंसाके ... आज़ादीकी मंज़िलको अिस हद तक तय करनेके लिअे आज ... कोने-कोनेसे लोग हिन्दुस्तानके नाम मुबारकबादके तार भेज ... हैं। अैसी हालतमें हम किसीके दुश्मन कैसे हो सकते हैं? ... बादशाह खान अेक पठान हैं। सरहद पारके अुनके पठान ... भाअियोंके लिअे यहाँ आये हैं। हिन्दुस्तानका फ़र्ज़ है कि वह ... की मदद करे। मुहब्बतकी यह नदी हिन्दुस्तानसे निकलकर ... अफ़ग़ानिस्तान तक जा सकती है — जानी चाहिये। अेक ज़माना ... जब हिन्दुस्तान न सिर्फ़ अपनी ज़रूरतका सब कपड़ा खुद बना लेता ... बल्कि यहाँका मलमल अपने बढ़िया और महीन पोतके लिअे दुनियामें मशहूर था। आज हम अपने ही मुल्कमें नंगे रहने ... हैं, और सो भी हमारी अपनी काहिली और सुस्तीकी बदौलत। ... मुल्कमें लोग आसानीसे अपना पेट पाल सकते और तन ढँक ... हैं, वहाँ सिर्फ़ पैसेसे न तो अनाज ख़रीदा जा सकता है, ... कपड़ा। मैं तो कहूँगा कि अगर आप सब अिसका ज़िम्मा ले लें ... कातने लग जायँ, तो कपड़ेके मामलेमें आप अपनी ही नहीं, बल्कि ... दुनियाकी ज़रूरत पूरी कर सकते हैं।"

सालगिरहकी बधाअियाँ

सालगिरह पर भेजी जानेवाली बधाअियाँ और मुबारकबादियाँ ... अेक अहमियत रखती हैं। अुनमें बधाअी पानेवालोंके बारेमें ... कुछ कहा जाता है, वह अुतना अहम नहीं होता। मगर अुनसे ... ज़मानेके आदर्शों, अुम्मीदों और हौसलोंका ठीक पता चल ... है। 'क्या ज़मानेकी पहचान वीर-पूजाके अुसके तरीक़ोंसे नहीं ...?' गांधीजीकी अिस सालगिरह पर आअी हुअी बधाअियोंके कुछ ... नीचे दिये जाते हैं। अुनसे पता चलेगा कि दुनिया आज ... चीज़के लिअे बेचैन है —

"आपने अपनी ज़िन्दगीके बहुत-से साल हिन्दुस्तानके लिअे आज़ादी हासिल करनेमें लगा दिये हैं। मैं मनाता हूँ कि आप अभी और बहुत सालों तक (कम-से-कम १२५ सालकी अुमर तक) ज़िन्दा रहें, और जो मेहनत आपने अुठाअी है, अुसके अंजामके तौर पर अपने लोगोंको पूरी तरह सुखी होते देखें!

"वक़्त बहुत नाज़ुक आ गया है, फिर भी सन्तोष अिस बातका है कि हम सही दिशामें आगे बढ़ रहे हैं।

"हमें कुछ ही क़दम और बढ़ना है कि आख़िरी मंज़िल आ पहुँचेगी, और फिर हम सब मिलकर हिन्दुस्तानकी मुकम्मल आज़ादी पर खुशियाँ मना सकेंगे।"

अेक दूसरी बधाअी यों है —

"गांधीजी! अक्तूबरका महीना झगड़ोंसे — भली और बुरी ताक़तोंके बीच होनेवाले झगड़ोंसे — भरी अिस दुनियामें आपकी सालगिरहका दिन लेकर आता है। आजके दिन मैं आपको अपने प्रणाम और अपनी हार्दिक शुभ कामनायें भेजता हूँ। भगवान् करे, अगले साल आप अपने भावी सपनोंको और ज़्यादा पूरा होता देखें! आपका प्यारा देश अगले साल आज़ादी और अमनकी तरफ़ और बढ़े। हमारे भक्त कवि विलियम ब्लेकने लिखा है —

"मैं अेक सुनहले धागेका छोर तुम्हें सौंपता हूँ,
तुम अुसका गेंदभर बना लेना
वह तुम्हें स्वर्गके अुस दरवाज़े तक ले जायगा,
जो जेरूसलेमकी दीवारोंके अन्दर बना है।"

"ब्लेक जो सपना देखते थे, अुसके मुताबिक़ जेरूसलेम स्वर्ग या आत्माके अुस राजकी निशानी-सा था, जो आख़िर अेक दिन दुनियामें क़ायम होगा। अुनका यह विश्वास था। और सुनहले धागेसे अुनका मतलब यह था कि लोग क्षमाका आचरण करें — अुसे अमली रूप दें।

"यह श्रद्धा आपमें और हमारे कवि ब्लेकमें समान रूपसे पाअी जाती है। आपने भी सुनहले धागोंका अेक गेंद हमारे हाथमें दिया है। हमारा फ़र्ज़ है कि अपनी रोज़मर्राकी ज़िन्दगीमें हम अुसे खोलते चलें — अिस धागेके सहारे हम अपनी दुनयवी परिस्थितियोंकी भूलभुलैयामेंसे सही-सलामत बाहर आ सकेंगे, और स्वर्गके यानी आत्माके राजमें पहुँच सकेंगे।

"आपकी ज़िन्दगी और हस्तीने मानवजातिको सम्पन्न बनाया है। वह दुनियाके लिअे हमेशा घने अँधेरेमें चमकनेवाली तेज़ रोशनीका काम देती रहेगी। अीश्वर करे, अपनी सालगिरहके अिस मौके पर आप श्रद्धा और आनन्दसे परिपूर्ण रहें!"

लेकिन ठेठ अमेरिकासे आअी हुअी यह बधाअी दिलको बरबस छू लेती है।

"आज दो पहरका खाना खाते वक़्त मेरे दिलमें यह ख़याल अुठा कि मैं आपको ख़त लिखूँ और कहूँ कि अपने फ़ॉर्टी फ़ोर्ट जैसे अिस छोटे क़स्बेकी तरह सारी दुनियाके छोटे-छोटे क़स्बे आपकी ज़िन्दगीकी बदौलत पहलेसे अच्छे बन गये हैं।

"शायद यह कोअी अनोखी बात नहीं कि आपके जैसा हिंदुस्तानकी जनताका अेक नेता दुनियाको और फ़िलस्तीनको याद दिला रहा है कि वह हमारे प्रभु अीशु ख़िस्तके तरीक़ोंको अपनाये! शायद प्रभु अीशु आज आपकी शकलमें जी रहे हैं, और आपके ज़रिये दुनियाको अपना पैग़ाम सुना रहे हैं।

"मैं अिसे अपनी अेक बहुत बड़ी ख़ुशक़िस्मती समझता हूँ कि मैं आपके साथ आपके ज़मानेमें जी रहा हूँ।

"मुझे यक़ीन है कि आप यह महसूस करते और जानते हैं कि दुनिया दिन-दिन अच्छी बनती जा रही है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और हम हिन्दुस्तान व चीनके लोगोंके ज़्यादा नजदीक आ रहे हैं।''

आख़िर आ पहुँचे?

पौ फटनेसे पहले घना अँधेरा होता है। बननेसे पहले चीज़ें बुरी तरह बिगड़ती नज़र आती हैं। अैसा मालूम पड़ता है, मानो दुःख और दर्दसे कराहती हुअी दुनियाकी प्रार्थनाओं और शुभ-कामनाओंके जवाबमें वे काले बादल आख़िर बिखरनेवाले हैं, जो अब तक हिन्दुस्तानके आसमानको घेरे हुअे थे। यह लिखते वक़्त मुझे अैसे आसार नज़र आ रहे हैं कि दिल्लीमें हमारी जो आरज़ी क़ौमी सरकार क़ायम हुअी है, मुस्लिम लीग अुसमें शामिल होने जा रही है। अिस तरह लीगके कैबिनेटमें शामिल होनेसे क़ौमी सरकारकी रही-सही ख़ामी भी दूर हो जायगी। आज शामकी प्रार्थनाके वक़्त हिन्दुस्तानीमें लिखे अपने मौन दिनके सन्देशमें गांधीजीने कहा — "भाअियो और बहनो, आज मैं आपसे अेक ही चीज़ माँगता हूँ। आजकल जो बातचीत चल रही है, अुसके परिणामस्वरूप लीगके मुस्लिम भाअी भी हमारी कैबिनेटमें आ जायँगे। हम सब प्रार्थना करें कि जैसा सन् १९१६में और ख़िलाफ़तके दिनोंमें हुआ था, अुससे भी ज़्यादा पक्की बुनियाद पर कांग्रेस और लीगके बीच समझौता हो जाय, और भाअी-भाअी अेक-दूसरेको गाली देने और खंजर भोंकनेसे बचें!''

नअी दिल्ली, ७-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

कुअें खुल गये

श्री कल्याणजी महेता लिखते हैं —

"१७ तारीख़के दिन जलालपुर ताल्लुकेके सातेम गाँवने (जो ताल्लुकेके तेजस्वी गाँवोंमेंसे अेक है) मीठे पानीका अपना अेकमात्र कुआँ हरिजनोंके लिअे खोल दिया। गाँववालोंको मैंने यह सलाह दी थी कि वे अिस सवाल पर ख़ामोशीके साथ सोचें, और क्वार बदी १२ से, यानी चरखा-जयन्तीके दिनसे, यह काम शुरू करें। मगर जबसे आपने हरिजन-बस्तीमें रहना पसन्द किया है, तबसे अिधर बहुत-से लोगोंके दिल हिल अुठे हैं। चुनाँचे गाँववालोंने अुसी दिन मेरी हाज़िरीमें यह काम कर लेनेका फ़ैसला किया। लोग हरिजन-बस्तीमें गये, और हरिजनोंसे कहने लगे कि वे अुनके कुओं पर चलकर पानी भरें। फिर, सब लोग शंख और घड़ियाल बजाते हुअे जुलूसकी शकलमें निकले और हरिजन भाअी-बहनोंको लेकर कुअें पर आये। पहले अेक भंगी भाअीसे और अुनकी पत्नीसे पानी भरनेको कहा गया। बादमें पाँच हरिजन बहनोंने पानी भरा। गाँवके अेक बूढ़े किसान श्री दुर्लभभाअीने अपना घरू कुआँ हरिजन बहनोंसे खुलवाया। अिसके बाद तो सारे ज़िलेमें यह हवा चल पड़ी। मेरी जानकारीके मुताबिक़ आज तक नीचे लिखे गाँवोंमें कुअें खुल चुके हैं। अिनके अलावा भी कअी अैसे गाँव हैं, जहाँ कुअें खुले हैं, पर अभी वहाँकी रिपोर्ट नहीं आअी है। मरोलीमें आज तक 'कस्तूरबा-सेवा-आश्रम'के दो कुअें ही हरिजनोंके लिअे खुले थे। २२ सितम्बरको और कल कुल मिलाकर ६ कुअें और खोले गये हैं। गाँवके ८० फ़ीसदी लोग अिन कुओंसे पानी भरते हैं। तीन सज्जनोंने हरिजनोंको अपने घर न्योता, और अुनके साथ भोजन और फलाहार किया। अिस कार्यक्रममें ऊँची जातवाले भाअी-बहन काफ़ी तादादमें शामिल हुअे थे। दूसरे कअी गाँवोंमें भी यह कार्यक्रम रक्खा गया है।

खोले गये कुओंका ब्योरा

गाँवका नाम	तालुक़ा		कुअेंकी क़िस्म
१. सातेम	जलालपुर	२—१	गाँवका आम कुआँ
		१	निजी कुआँ
२. वाजीपुरा	बारडोली	१	गाँवका आम कुआँ
३. शिकेर	बारडोली	३—१	गाँवका आम कुआँ
		२	निजी कुअें - अिन कुओंके मालिकोंने हरिजनोंको दो-दो आने दक्षिणाके दिये।
४. पीपलोद	चोर्यासी	१	गाँवका आम कुआँ
५. मरोली	नवसारी	६—१	गाँवका आम कुआँ
		१	आम कुआँ-अिमारती कामके लिअे।
		४	निजी कुअें
६. माँगरोली (यहाँ मरोली-आश्रमका कताअी-केन्द्र है)	नवसारी	१	गाँवका आम कुआँ (गाँवका मन्दिर भी खोला गया)।
७. रायम	बारडोली	१	गाँवका आम कुआँ
८. सायण	ओलपाड़	(क़रीब) ३	गाँवके सब कुअें (ठीक तादादका पता नहीं चला)।
		कुल १८	

मेरे ख़यालसे २ अक्तूबर तक क़रीब सौ कुअें खुल जायँगे।"

ख़ुशीकी बात है कि ये कुअें खुले। मगर अुससे ज़्यादा शर्मकी बात यह है कि अभी बेशुमार कुअें अैसे मौजूद हैं, जिन पर हरिजन पानी नहीं भर सकते। अिसलिअे अगर अूपरके अिस बयानको पढ़कर दूसरोंने भी कुअें खोलनेका अुत्साह दिखाया, तो शर्मका बोझ कुछ हलका होगा।

कुछ लोगोंने हरिजनोंके साथ बैठकर खाना भी खाया। अुन्हें मुबारकबाद देते हुअे भी यह पूछनेको जी चाहता है कि कब तक अितने ही?

नअी दिल्ली, ६-१०-'४६
(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

अप्रमाणित मगर प्रामाणिक	...	गांधीजी
पशु-सुधार	...	अमृतकुँवर
मिट्टीकी झोंपड़ियाँ	...	मॉरिस फ्रीडमैन
'वनस्पति'का ख़तरा	...	गांधीजी
हुड़दंगशाहीकी हद	...	गांधीजी
ग्राम-विद्यापीठ	...	गांधीजी
अटपटे सवाल	...	प्यारेलाल
पंजाबसे	...	अमृतकुँवर
अिंग्लैण्डमें नअी तालीम	...	वालजी गोविन्दजी देसाअी
ग़रीब या छोटे मुल्क	...	गांधीजी
सवाल-जवाब	...	गांधीजी
तौल और मापकी दशांश पद्धति	...	किशोरलाल घ० मशरूवाला
हफ़्तेवार ख़त	...	प्यारेलाल
कुअें खुल गये	...	गांधीजी
टिप्पणी		
डोला-पालकी	...	मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० बी ४४४८

सारा हिन्दुस्तान

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक – प्यारेलाल

अंक ३७

वर्ष १०

मुद्रक और प्रकाशक जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २० अक्तूबर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६, विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

चरखा कैसे चले ?

जिस तरह लोगोंके दिलोंमें कओी चीज़ोंकी लहरें अुठती हैं, अुसी तरह चरखे, तकली और गांधी-टोपीकी लहर भी अक्सर अुठा करती है। तब हज़ारोंकी तादादमें लोग ये चीज़ें खरीदने लगते हैं। वैसे देखा जाय, तो आज तक लाखों चरखे और तकलियाँ बनकर बिक गओीं, लेकिन आज अुनमेंसे कितनी चलती हैं? अगर सब नहीं चलतीं, तो हमें सोचना चाहिये कि अिसका कारण क्या है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि कातनेवालोंमें दिलचस्पी या रस कैसे पैदा किया जाय? कातनेमें दिलचस्पी न होनेके कारण तो कओी होंगे, लेकिन आज हम कुछ बड़े कारणोंको देखें, और अुनका अिलाज ढूँढ़ें।

कुछ खास कारण ये हैं—

१. चरखेका ठीक तरहसे न बनना, और अुसमें कोओी-न-कोओी खराबी रह जाना।

२. चरखेके बिगड़ने पर अुसे दुरुस्त करनेकी जानकारी न होना।

३. बिकनेके बाद, बेचनेवालेका चरखेसे और अुसके खरीदारसे कोओी ताल्लुक़ न रहना।

४. अच्छी पूनियोंका न मिलना।

५. सूत बुनवानेका अिन्तज़ाम न होना।

अिन कारणोंसे कातनेवालोंका रस सूख जाता है। अुनकी दिलचस्पी मारी जाती है। अब हम देखें कि यह दिलचस्पी कायम कैसे रह सकती है?

हरअेक बिक्री-भण्डारमें अिस बातका अिन्तज़ाम किया जाय कि बिगड़ा हुआ चरखा वहाँ दुरुस्त हो सके, या अुसके बदलेमें नया चरखा दिया जा सके, और दाम कम-से-कम लिये जायँ।

हरअेक कातनेवाला चरखा दुरुस्त करनेका अिल्म भी हासिल कर ले।

भण्डारके रजिस्टरमें चरखेके खरीदारका नाम व पता लिखा जाय।

नया चरखा बेचते वक़्त अुसके साथ अेक परचा खरीदारको दिया जाय, जिसमें चरखा दुरुस्त करनेकी तरकीब लिखी हो। अगर कोओी खरीदार टूटा या बिगड़ा हुआ चरखा भण्डारवालोंके पास लावे, तो वे वाजिब क़ीमत लेकर या मुफ़्तमें अुसे सुधार दिया करें। भण्डारसे बेचे गये सामानमें कोओी ग़लती रह गओी हो, तो शिकायत आने पर वह बदल दिया जाय।

पूनी बेचना बन्द किया जाय। कपास बेचा जाय, और धुनाओी सबको सिखाओी जाय।

जब तक बुनाओीके लिअे घर-घर करघा चलने न लगे, तब तक हमें बुनाओीका अिन्तज़ाम करना ही होगा।

मतलब यह है कि खादी-भण्डारोंको व्यापारीपन छोड़कर सच्चे सेवक और कारीगर बननेकी ज़रूरत है।

नओी दिल्ली, ९-१०-'४६

कनु गांधी

[श्री कनु गांधीका लेख सोचने लायक़ है। याद रहे कि चरखा पश्चिमकी छोटी या बड़ी चीज़ों जैसा नहीं है, और न वह वैसा हो सकता है। करोड़ों घड़ियाँ अेक जगह बनाओी जाती हैं। दुनियामें बिजली है। सीनेकी मशीनोंका भी यही अितिहास (तवारीख़) है। ये चीज़ें अेक सभ्यता (तहज़ीब)की निशानी हैं। चरखा अिससे अुलटी सभ्यताका प्रतीक (निशानी) है। हम अेक जगह सब चरखे बनाकर अुन्हें सारे हिन्दुस्तानमें फैलाना नहीं चाहते। हमारा आदर्श यह है कि देहातमें या शहरमें जहाँ कहीं कत्तिनें रहें, वहीं चरखा और वैसा दूसरा सामान बने। अिसीमें चरखेकी क़ीमत है। चरखेमें कुछ टूट-फूट हो जाय, तो अुसे दुरुस्त करना भी कत्तिनोंको सीख लेना चाहिये। ये सारे काम चरखा-संघके करनेके हैं। जब तक यह न होगा, खादी मिलके कपड़ेकी जगह न ले सकेगी।

मो० क० गांधी]

नओी दिल्ली, १२-१०-'४६

विकेन्द्रीकरण

ता० ८, ९ और १० अक्तूबरके दिन दिल्लीमें चरखा-संघकी सभामें महत्त्वकी चर्चायें (बहस) हुओीं। चर्चाका अेक विषय (मज़मून) विकेन्द्रीकरण था। विकेन्द्रीकरण खादीकी आत्मा है। चरखा-संघ यह चाहता है कि हिन्दुस्तानके सात लाख गाँवोंमें चरखे और करघे चलें, हिन्दुस्तानके करोड़ों लोग खादी ही पहनें, और मिलोंका नाम-निशान न रहे।

अब वक़्त आ गया है, जब सूबे अिसके लिअे बिलकुल स्वतंत्र या आज़ाद होना चाहें, तो स्वतंत्र हो जायँ; सूबे न हों, या न हो सकें, तो ज़िले; ज़िले न हो सकें, तो ताल्लुक़े, और ताल्लुक़े न हो सकें, तो गाँवोंके छोटे-छोटे गिरोह; और वे भी न हो सकें, तो गाँव स्वतंत्र हो जायँ। हरअेक व्यक्ति तो अिसके लिअे स्वतंत्र है ही।

यहाँ यह सवाल न अुठना चाहिये कि यह कैसे हो? जो चरखा-संघके मातहत हैं, वे संघके मंत्रीको ब्योरेवार लिखें, ताकि अुसका फ़ैसला किया जा सके। जिनके पास संघकी मिल्कियत हो, अुन्हें पैसे लौटानेका कोओी अिन्तज़ाम करना पड़ेगा। जो संघकी नीतिको अपनायेंगे, अुनके लिअे नीतिका बन्धन रहेगा। अिस बन्धनको मंज़ूर करना किसीके लिअे लाज़िमी नहीं। धर्म अुसीका, जो अुसका पालन करे। धर्म अेक ही नहीं होता। मूल या जड़ अेक होती है, पर शाखायें या डालें अनेक हैं। अनेक डालों पर अनेक पत्ते होते हैं। अेकतामें विविधता संसारका सुन्दर नियम या क़ानून है। अिसलिअे चरखा-संघकी नीति यह है कि विकेन्द्रीकरणको जितना बढ़ावा दिया जा सके, दिया जाय। शाखाओंके कामका तरीक़ा अैसा होना चाहिये, जिससे वे जितनी जल्दी स्वाधीनता या आज़ादी हासिल कर सकें, अुतनी जल्दी हासिल कर लें।

नओी दिल्ली, १६-१०-'४६

(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानमें डेरीका धन्धा

डॉ० पेपरालने पिछले साल 'हिन्दुस्तानमें डेरीका धन्धा' नामकी अेक रिपोर्ट लिखी थी। गहराअीके साथ ग़ौर करने लायक़ अुसकी कुछ बातें नीचे दी जाती हैं। अिनमेंसे ज़्यादातर अैसी हैं, जो पहले 'हरिजनसेवक' में छपी नहीं हैं।

यह सवाल कितना बड़ा है, सो नीचे दिये गये आँकड़ोंसे साफ़ मालूम हो जायगा —

दूध पैदा करनेवालोंकी तादाद गाँवोंमें २ करोड़ १० लाख और शहरोंमें १ लाख ८० हज़ार है।

हिन्दुस्तानमें दूध देनेवाले मवेशी दुनियाकी कुल तादादके अेक तिहाअी यानी २१ करोड़ ९० लाख हैं।

अिसी तरह दूधके गाहकोंकी तादाद ४० करोड़ है।

डॉ० पेपराल शुरूमें ही यह मान लेते हैं कि हिन्दुस्तानमें गायके सवाल पर ग़ौर करते वक़्त गाँवोंको ध्यानमें रखना चाहिये। हिन्दुस्तानकी जरूरतें यूरोपसे जुदा हैं; मसलन, यहाँ गायको हमेशा दोहरी जरूरतें पूरी करनी होंगी।

१. दूध पैदा करनेके बारेमें वे अिन नतीजों पर पहुँचे हैं—

(अ) गायको खेतीके लिअे बैल पैदा करने और दूध देनेका दोहरा फ़र्ज़ अदा करना पड़ता है। अिसलिअे भैंस गायकी जगह नहीं ले सकती। वह गायके काममें मदद ही पहुँचा सकती है।

(आ) दूध बढ़ानेका काम, बाहरसे साँड मँगानेके बजाय यहाँ के साँड़ोंकी नस्ल सुधारकर ही, पूरा करना होगा। तजरबेसे यह मालूम हुआ है कि परदेसी साँड़का संकर अच्छा नहीं होता। सेवाग्राममें गोलाअू साँड़से नस्ल सुधारनेका जो काम हो रहा है, अुसे डॉ० पेपरालने पसन्द किया है। अुनकी अेक सिफ़ारिश यह भी है कि सरकारी फ़ार्मोंमें पले-पुसे साँड चुनी हुअी नस्लोंके होने चाहियें। और, जहाँ तक अुनकी सार-सँभाल और अुनके अिस्तेमालका सवाल है, अुन्हें काफ़ी जानकार लोगोंकी देख-रेखमें रखना चाहिये।

(अि) अगर यह मान लिया जाय कि हिन्दुस्तानके गाँवोंकी हालत कम-से-कम अगले दस साल तक थोड़े फेर-फारके साथ आज-जैसी ही बनी रहेगी, और सिंचाअी व खेतीके लिअे, और अेक जगहसे दूसरी जगह सामान लाने-ले जाने, और सवारी वग़ैराके लिअे बैलोंकी जरूरत होगी, तो गायको अपना दोहरा काम करते ही रहना होगा।

२. रिपोर्टमें मवेशीको ठीकसे खिलाने पर काफ़ी ज़ोर दिया गया है। डॉ० पेपराल कहते हैं—"अगर मवेशीको वैज्ञानिक (सायन्सदानी) तरीक़ेसे खिलानेके माप पर ग़ौर किया जाय, तो यही कहा जायगा कि हिन्दुस्तानके ज़्यादातर मवेशी भूखों मर रहे हैं।"

(अ) मवेशीको ठीक ढंगसे खिलाने-पिलानेके बारेमें गाँववालोंको तालीम दी जानी चाहिये। यह भी अेक शास्त्र (सायन्स) है।

(आ) लूसर्न घाससे बरसीम घास मवेशीको ज़्यादा फ़ायदा करती है, मगर अुसकी ख़ूबियों पर काफ़ी तवज्जह नहीं दी गअी है।

(अि) छोटेसे मैदानमें बहुतसे मवेशियोंको चरनेके लिअे छोड़ देनेके बजाय चरागाहों पर अुगी हुअी घासको काट लेना ज़्यादा अच्छा है। जब हरा चारा मिलता हो, तो खली, बिनौलों और दूसरी अैसी चीज़ोंका कम अिस्तेमाल किया जाना चाहिये।

३. मवेशियोंके अिन्तज़ाम पर ठीकसे ध्यान नहीं दिया जाता।

(अ) "दूध देनेवाले मवेशियोंकी हालत काफ़ी बुरी है, मगर दूध न देनेवाले मवेशियों पर तो बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाता।" अिसका अिलाज यही है कि ढोरोंके चरनेकी जगह बढ़ा दी जाय, और अुनके खानेकी चीज़ोंकी निकासी पर रोक लगा दी जाय। मवेशीके मालिकोंको ज़्यादा चारा-दाना ख़रीदने लायक़ बनानेके लिअे माली ज़रिये खोज निकालने होंगे। दूधका बहुत-सा नुक़सान अिसलिअे होता है कि यहाँ मवेशियोंको लम्बे अरसे तक बच्चे नहीं करने दिये जाते।

(आ) दूसरे मुल्कोंके तजरबेके बाद डॉ० पेपराल हिन्दुस्तानमें अिस दावेको नहीं मानते कि पैदा होनेके अेक या दो दिन बाद बछड़ोंका दूध नहीं छुड़ाया जा सकता। चूँकि बछड़ोंकी परवरिशके लिअे और चीज़ें मिल सकती हैं, अिसलिअे अुनका दूध जल्दी छुड़ा देनेके रिवाजको बढ़ावा दिया जाना चाहिये।

(अि) दूध पैदा करनेवालोंको दूधका काफ़ी दाम मिलना चाहिये। आज तो दूधके भावमें फ़ी मन रु० १०)से लेकर ३०) तक घट-बढ़ होती रहती है। अिसका कोअी अैसा अिलाज करना चाहिये, जिससे आम लोगोंमें दूधके भावके बारेमें अितमीनान पैदा हो।

४. दूध पैदा करनेके साधनोंमें काफ़ी साफ़, हवादार और पक्की फ़र्शवाली परछियाँ जरूरी हैं। दूध निकालने, अुसे ठंडा करने, और बरतनेमें सफ़ाअीका ख़ूब ध्यान रखा जाना चाहिये। डॉ० पेपरालको यह देखकर बड़ा सदमा पहुँचा था कि "दूधके मामलेमें लोगोंकी नासमझी और लापरवाहीकी वजहसे कअी जगह बे-हिसाब कचरा और गन्दगी पाअी गअी थी। लोगोंकी आदतें बहुत गन्दी और घिनौनी थीं। सरकारी अफ़सर भी अिस मामलेमें दिलचस्पी नहीं लेते थे।" हिन्दुस्तानमें न तो मवेशियोंके रहनेके लिअे अच्छे मकान हैं, और न अुन्हें पीनेके लिअे साफ़ पानी मिलता है। मवेशियोंके आस-पासकी गन्दगीकी कोअी हद नहीं। बाज़ारोंमें दूध खुले बरतनोंमें लाया जाता है। दूधका बाज़ार अैसे लोगोंसे घिरा रहता है, जो बड़े गन्दे तरीक़ेसे पान चबाते, तम्बाकू पीते और जगह-जगह थूकते रहते हैं। दूध ख़रीदनेवाले मटकेमें अुँगली डालकर अुसके गाढ़ेपनकी या अुसमें मिलाये गये पानीकी जाँच करते हैं। डॉ० पेपरालने जिन-जिन शहरों और गाँवोंका दौरा किया, अुनमेंसे ज़्यादातर पर यह बात लागू होती है। अिस तरह किसीको ख़याल ही नहीं होता कि दूध अेक अैसा क़ीमती खाना है, जो जल्दी ही बीमारीके कीड़े पकड़ लेता है। दूधको लोग ख़रीदनेकी दूसरी चीज़ों-जैसा ही समझ बैठे हैं। तो फिर अिसमें ताज्जुबकी कोअी बात नहीं कि बम्बअीके दूधकी जाँच करनेवाली वहाँकी सरकारी रिपोर्टमें अेक सेण्टीमीटर दूधमें बीमारीके क़रीब करोड़ ६० लाख कीड़े बताये गये! अिस रिपोर्टको पढ़कर बहुत अफ़सोस होता है।

५. दूधमें मिलावटकी तो बात ही न पूछिये। यह अेक बीमारी है, जिस पर सख़्त रोक लगनी चाहिये। दूसरी बुराअीके साथ यह भी जुड़ी हुअी है। मिलावटसे 'पास्चराअिज़ेशन' (दूधको गरम करके अेकदम ठण्डा करनेका तरीक़ा, जिससे कीड़े मर जाते हैं और दूध ज़्यादा देर तक टिका रहता है) बेकार हो जाता है। चूँकि दूध कच्ची हालतमें ५ या ६ घण्टेसे ज़्यादा नहीं टिक सकता, अिसलिअे अुसे जल्दी-से-जल्दी बेच देना चाहिये। चुनाँचे शहरोंके नजदीक़की जगहोंमें ही दूध ज़्यादा मिक़दारमें पैदा करनेकी कोशिश करनी चाहिये, और वहाँ स्पेशल रेलगाड़ियोंका अिन्तज़ाम होना चाहिये।

६. मिलिटरी डेरी फार्म, और दयालबाग-जैसी कुछ संस्थाओं और शायद कुछ ख़ानगी डेरी फ़ार्मोंको छोड़कर हिन्दुस्तानमें डेरियाँ हैं ही नहीं। नअी डेरियाँ बननी चाहियें। अुनके लिअे जिन मामूली चीज़ोंकी जरूरत होती है, वे सब आसानीसे यहाँ बनाअी जा सकती हैं। डॉ० पेपरालका कहना है कि आम लोगोंकी माँगका ख़याल न रखकर सिर्फ़ मिलिटरी डेरी फ़ार्मोंको बढ़ावा देना ग़लत है। सारे मुल्कके लिअे ख़ूराककी जो नीति या योजना बने, अुससे अिनका मेल बैठना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…अुनका खयाल है कि शहरोंसे दूरके देहातमें दूधका पाअुडर …चीजें तैयार की जानी चाहियें। "पंजाब और सिन्धमें, …वनस्पती बहुत होती है, वहाँ खेती भी खूब होगी और अिस …दूध भी खूब होगा। अिन जगहोंमें अूपर कही गअी चीज़ें पैदा …सकती हैं।" वे पंजाबसे बाहर मवेशी भेजनेकी नीतिको …पसन्द नहीं करते। डॉ॰ पेपराल ग्राम-अुद्योगके तौर पर …ही घी बनानेकी तहरीकको बढ़ावा देना चाहते हैं। अुनके …घी बनानेके लिअे दूध दूर-दूरके केन्द्रोंमें न भेजा जाय, …अिस तरह गाँववालोंको दूधकी छाछ वग़ैरा चीज़ोंसे …न रक्खा जाय। अैसा करनेसे अुनकी खूराकमेंसे अेक अच्छी …निकल जाती है। डॉ॰ पेपराल हिन्दुस्तानमें मक्खन बनानेकी …देते, क्योंकि अैसा करनेसे पीनेका दूध ख़र्च हो जाता है। …और पनीर हमें आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्डसे मँगाना चाहिये। …डॉ॰ पेपराल दूधका अेक स्टैण्डर्ड या पैमाना क़ायम कर …हकमें हैं। पर यह काम किसी ज़िम्मेदार संस्थाके ज़रिये …चाहिये।

…अुनका कहना है कि हिन्दुस्तानमें सस्ता दूध बेचनेकी …(स्कीमें) बनाअी जायँ। जब मुल्ककी सेहत और भलाअीका …हो, तो दूधकी क़ीमतकी बात गौण मानी जानी … "आज हिन्दुस्तानमें जितने मवेशी हैं, अुन्हींको ठीकसे …खिलाया जाय, तो अुनसे अितना दूध मिल सकता है कि …बच्चेवाली हरअेक माँको और छोटे बच्चेको आधा सेर …पाव भर दूध रोज़ाना दिया जा सके।"

…आज दूधके भावमें जगह-जगह बड़ा फ़र्क़ दिखाअी देता …बात ग़ौर करने लायक़ है कि बम्बअी और कलकत्तेमें …अिंग्लैण्डसे दुगना है। अुनकी सिफ़ारिश है कि दूध …वालोंके लिअे दूधकी दर मुक़र्रर कर दी जानी चाहिये। …यह भरोसा करा दिया जाय कि तयशुदा दाम अुन्हें …मिलते रहेंगे, तो दूधका भाव लाज़िमी तौर पर अूँचा रखना …रहे। दूधके ख़रीदारोंके लिअे भी दूधकी कम-से-कम दर …जा सकती है।

…सरकारी मददके बारेमें डॉ॰ पेपरालकी राय है कि यह …पर दी जाय, लेकिन क़र्ज़की शकलमें।

…अख़ीरमें अुन्होंने रिसर्च या अनुसन्धान पर ज़ोर दिया है। …तरफ़ हिन्दुस्तानमें अभी तक बिलकुल ध्यान नहीं दिया गया है। …मामलेमें सबसे पहले हमें "जल्दी-से-जल्दी अिस बातकी जाँच …चाहिये कि काफ़ी चारेवाली जगहोंमें भी मवेशी दूध कम …देते हैं? अुनका दूध बढ़ता क्यों नहीं? अिसका अिलाज …चाहिये।" अिस बातका भी वैज्ञानिक अध्ययन किया जाना …कि "विदेशोंसे दूधकी बोतलें मँगानेके बजाय मुल्कमें ही …चीज़से दूध रखनेके अच्छे और सस्ते बरतन कैसे तैयार किये …सकते हैं?"

डॉ॰ पेपरालकी जाँचसे नीचेकी बातें ज़ाहिर होती हैं —

(अ) मवेशी आधे भूखे रहते हैं।

(आ) मवेशियोंके रहने वग़ैराका अिन्तज़ाम अच्छा नहीं है।

(अि) दूधकी पैदाअिश दिन-दिन कम होती जाती है।

(अी) दूध पैदा करनेवाले ज़्यादातर अपढ़, क़र्ज़से लदे, और ग़रीब हैं।

(अु) दूधका भाव दुनियामें सबसे अूँचा है।

(अू) दूधकी आमदनीका औसत दुनियामें सबसे कम है।

(अे) दूधमें आमतौर पर सब जगह मिलावट की जाती है।

(अै) न तो सफ़ाअीके अुसूलोंकी जानकारी है, और न अुनकी तरफ़ ध्यान दिया जाता है।

(ओ) आमतौर पर बेअीमानी और बुराअियाँ फैली हुअी हैं।

(औ) आम जनता लापरवाह है।

(अं) अिस बारेमें पब्लिक संस्थायें गहरी लापरवाही दिखाती हैं।

(अः) डेरियोंकी और अुनके सामानकी कमी है।

अिस रिपोर्टसे यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि हिन्दुस्तानमें जल्दी ही दूधके बारेमें कोअी तयशुदा नीति बना लेना कितना ज़रूरी है। अगर अेक खेती-प्रधान मुल्कके लोगोंकी तन्दुरुस्तीको और अुसके मवेशी-धनको और ज़्यादा गिरने व बरबाद होनेसे बचाना है, तो केन्द्रीय (मरकज़ी) और सूबोंकी सरकारोंको जल्दी-से-जल्दी अिस मामलेको अपने हाथमें लेना चाहिये।

नअी दिल्ली, ४-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) अमृतकुँवर

डॉ॰ लोहिया

डॉ॰ लोहियाने गोआ हाअीकोर्टके चीफ़ जजको जो ख़त लिखा था, वह काफ़ी ग़ौर करने लायक़ है। रोज़ाना अख़बारसे मैं अुसकी नक़ल यहाँ देता हूँ–

"जहाँ तक मैं जानता हूँ, अपनी गिरफ़्तारीके वक़्त तक मैंने गोआका कोअी क़ानून नहीं तोड़ा था। चाहे मेरा वैसा अिरादा रहा हो, लेकिन यहाँ अुसकी चर्चा ग़ैरमौज़ूँ है। कौलममें वहाँके पुलिस अफ़सर सीधे मेरे डब्बेमें घुस आये, और बग़ैर कुछ कहे-सुने मुझे अेकदम गिरफ़्तार कर लिया। अपनी मौजूदा शकलमें अन्तर्राष्ट्रीय (मुल्कोंका) क़ानून शायद पुर्तगाल सरकारको यह अख़्तियार देता है कि वह जिसे परदेसी समझे और जिसको अपने यहाँ रहने देना पसन्द न करे, अुसे गिरफ़्तार करके देशनिकाला दे दे। लेकिन किसीको जेलमें रखनेका अुसे तब तक कोअी हक़ नहीं, जब तक वह अुसका कोअी क़ानून न तोड़े। अेक बार पहले भी पुर्तगाल सरकार मुझे परदेसी मान चुकी है, और मेरी तरफ़के अपने अिस रुखको वह अन्तर्राष्ट्रीय क़ानूनकी अेक दफ़ाकी बुनियाद पर सही मानती है। मुझे ग़ैरक़ानूनी तौर पर जेलमें रखनेके लिअे या तो वह मुझसे माफ़ी माँगे और मुझे हरजाना दे, या फिर गोआ और बाक़ी हिन्दुस्तानके बीच अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून ज़ारी करनेकी अपनी ज़िद छोड़ दे। यही नहीं, बल्कि अुसने २९ सितम्बरसे २ अक्तूबर तक मुझे अेक अैसी कोठरीमें बन्द रक्खा, जिसमें सिर्फ़ अितनी हवा आती थी कि अिनसान साँस लेकर ज़िन्दा रह सके। अपने अिस बरतावके लिअे भी अुसे मुझसे माफ़ी माँगनी चाहिये और मुझे हरजाना देना चाहिये।

"मुझे अभी तक तनहाअीमें रखा गया है, हालाँ कि कुछ सहूलियतें बढ़ा दी गअी हैं। सिर्फ़ नहानेके वक़्त ही मुझको कोठरीसे बाहर निकाला जाता है। कोअी मुझसे मिलजुल नहीं सकता। अिन वजहोंसे मुझे क़ैदमें रखनेका जुर्म और बढ़ जाता है।"

डॉ॰ लोहियाने हरजानेकी जो माँग की है, अुसे कोअी हँसकर टाल न दे। अगर डॉ॰ लोहियाके पीछे अुनके मुल्ककी ताक़त होती, तो गोआकी सरकारको अुनसे माफ़ी माँगनी पड़ती, और वह हरजाना देनेके लिअे भी तैयार हो जाती। बड़ी-बड़ी ताक़तोंके लिअे यह कोअी ग़ैरमामूली बात नहीं है कि वे अपने छोटे-से-छोटे नागरिकोंको पहुँचाये गये नुक़सान या अुनकी बेअिज़्ज़तीके लिअे हरजाना माँगें और वसूल करें। डॉ॰ लोहिया कोअी मामूली आदमी नहीं। आज हिन्दुस्तानमें क़ौमी सरकार राज कर रही है। मुझे यक़ीन है कि दूसरी किसी सरकारकी तरह अुसे भी अैसी बातें अखरती होंगी। मुझे कोअी ताज्जुब न होगा, अगर अुसने अिस बारेमें अपनी शिकायत गोआ सरकारके सामने रक्खी हो, और अुसे अपना तरीक़ा सुधारनेकी ताक़ीद की हो। सो जो भी हो, गोआ सरकारकी ज़्यादतियोंके शिकार डॉ॰ राममनोहर लोहियाके और क़ौमी सरकारके पीछे लोकमत (अवामकी राय) की ताक़त होनी चाहिये। डॉ॰ लोहियाके साथ जो ज़्यादती की गअी है, वह गोआमें रहनेवाले तमाम हिन्दुस्तानियोंके साथ और अुनके ज़रिये समूचे हिन्दुस्तानके साथ की गअी है।

नअी दिल्ली, १३-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२० अक्तूबर १९४६

सच्चा हिन्दुस्तान

मैं सारे हिन्दुस्तानके गाँवोंमें घूमा हूँ। अगर अुनके बारेमें जानकारी हासिल करनेमें मुझे धोखा नहीं हुआ है, तो मैं अितमीनानसे कह सकता हूँ कि सात लाख गाँवोंको न तो पुलिसके जरिये बचाव मिलता है, और न अुन्हें अुसकी जरूरत ही है। अकेला पटेल ही, जो माँ-बाप सरकारका लगान वसूल करनेमें 'कलेक्टर' की मदद करता है, अुन पर हुकूमत करनेवाला जालिम हाकिम है। मैं नहीं जानता कि गाँवमें डाका पड़ने पर कभी पुलिसने गाँववालोंके माल-असबाबकी और जानवरोंकी हिफ़ाजत करनेमें अुनकी मदद की हो, या जंगली जानवरोंसे अुन्हें बचाया हो। पटेलकी अिस हालतके लिअे आज अुसे दोष नहीं दिया जा सकता। जिस कामके लिअे अुसे रखा गया है, अुसे वह बख़ूबी करता है। अुसे यह सिखाया ही कहाँ गया है कि वह अपनेको लोगोंका ख़िदमतगार समझे? वह तो अपने मालिक वाअिसरायका नुमाअिन्दा है। अूपर केन्द्रमें जो रद्दोबदल हो गया है, वह अभी नीचे गाँवों तक नहीं पहुँचा। और पहुँचे भी कैसे? वह फ़र्क़ नीचेसे थोड़े ही किया गया है? वाअिसरायके पास आज भी वह क़ानूनी और फ़ौजी ताक़त है, जिसके जरिये वे चाहें तो अपने वज़ीरोंको हटा सकते हैं और गिरफ़्तार भी करवा सकते हैं। वाअिसरायको गिरफ़्तार करनेके लिअे वज़ीरोंके पास कोअी क़ानूनी या दूसरी ताक़त नहीं। अभी तो सिविल सर्विस भी वाअिसरायके ही मातहत है। मैं यह नहीं कह रहा कि वाअिसराय अपने अधिकारोंको छोड़ना नहीं चाहते, या हिन्दुस्तानके दूर-से-दूरके देहातियोंको यह महसूस नहीं करने देना चाहते कि अुन्हें (वाअिसरायको) अिंग्लैण्डके सरकारी दफ़्तरसे यह हिदायत मिली है कि वे जल्दी-से-जल्दी हिन्दुस्तानसे अंग्रेज़ी हुकूमतका पूरी तरह अुठा लें।

यह सब लिखनेका मतलब यह है कि हम अभी तक अपने देहातसे, जहाँ असल हिन्दुस्तान रहता है, यह सबक़ नहीं सीखते कि हरअेक हिन्दुस्तानी, चाहे वह मर्द हो या औरत, ख़ुद अपना पुलिसमैन है। यह काम वह तभी कर सकता है, जब वह अपने पड़ोसीको, चाहे वह किसी धरमको मानता हो, नुक़सान पहुँचानेका ख़याल छोड़ दे। अगर बदक़िस्मतीसे कोअी सियासी दिमाग़का आदमी यह न कर सके, तो अुसे अितना तो करना ही चाहिये कि वह अपने दिलसे सारा ख़ौफ़ निकाल दे, और अपनी हिफ़ाज़तके लिअे पुलिस या फ़ौजकी मदद लेनेसे साफ़ अिनकार कर दे। मेरा यह पक्का ख़याल है कि जब तक हमारा हरअेक घर अपने आपमें अेक क़िला नहीं बन जाता, तब तक हिन्दुस्तान अपने पैरों खड़ा न हो सकेगा — पूरी तरह आज़ाद न बन सकेगा। यह क़िला तवारीख़के काले ज़मानेका क़िला न होगा, वरन् अुस बहुत पुराने ज़मानेका क़िला होगा, जब हर अिनसान दूसरेके ख़िलाफ़ बुरे ख़याल रखे बिना मर जाना जानता था, यानी मरते वक़्त वह अपने दिलमें यह ख़याल भी न रखता था कि चूँकि वह ख़ुद अपने हत्यारेको नहीं मार सकेगा, अिसलिअे दूसरा कोअी अुसे ज़रूर मार डालेगा। काश, यह सबक़ हम सबके दिलोंमें अच्छी तरह अंकित हो जाय! अिस सबक़के पीछे काफ़ी सुबूत हैं। कोअी अुसकी जाँच करनेकी तकलीफ़भर अुठानेवाला हो!

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

सवाल-जवाब

पोशाक अेक-सी कर दी जाय

"अिन पिछले चार हफ़्तोंमें मैंने अितनी ख़ूरेज़ी और ... देखा है कि मेरे दिलपर अुसका बुरा असर रह गया है। जबसे दंगा ... हुआ है, मैंने मजिस्ट्रेटके नाते रोज़ शान्ति क़ायम करनेकी कोशिश ... है। अब मैं पहलेसे ज़्यादा अिस बातका क़ायल हो गया ... हरअेक हिन्दुस्तानी अेक ही तरहकी राष्ट्रीय या क़ौमी ... पहने। आपको याद होगा कि मैंने पहले भी यह बात ... थी, पर अुस वक़्त आपने अिसे पसन्द नहीं किया था। क्या ... है कि शर्ट और पैण्ट पहननेवाला अेक भी आदमी छुरेबाज़ीका ... नहीं हुआ? अिससे यह साफ़ तौरसे साबित होता है कि ... मज़हबके भेदको और बढ़ा देती है। अगर आप 'हरिजन' में ... जवाब देंगे, तो मेरे-जैसे कअी लोगोंको, जो सोचते हैं कि ... पोशाक पहननेसे क़ौमी दंगे कुछ ही दिनोंमें बिलकुल बन्द हो जायेंगे, ... ख़ुशी होगी।"

अेक बहुत विद्वान् और नेकदिल दोस्तका यह ख़त ... छाप रहा हूँ। जिसमें ये तीनों गुण हों, यह ज़रूरी नहीं कि अुसके ... विचार भी सुलझे हुअे हों। आज हमें अेक-सी पोशाककी ज़रूरत ... नहीं; ज़रूरत है, अेक-से दिलोंकी। पोशाककी अेकता आजके ... झमेलेसे निकलनेमें हमारी मदद करेगी, अिस दलीलके खोखलेपन ... समझनेके लिअे आजके यूरोपकी हालत पर निगाह डालना ... होगा। दिलोंका दुराव अेक ज़हरी हवा है। यह दुराव मिटना ... चाहिये, और अुसकी जगह सद्भावकी साफ़ और ताज़ी हवा ... चाहिये।

तम्बाकूकी बुराअी

स० — शराबबन्दीके हक़में तो आप अक्सर बहुत ज़ोर देकर लिखते ... रहे हैं, लेकिन बीड़ी या तम्बाकू पीनेके बारेमें आपने अुतना ही या ... तरहके ज़ोरदार शब्दोंमें कभी नहीं लिखा। यह बुराअी बहुत चौंकानेवाली ... तेज़ोसे फैल रही है, और बच्चे भी बढ़ती तादादमें अिसके आदी बनते ... रहे हैं। आज तम्बाकू पीनेमें जो करोड़ों रुपये सचमुच फूँक दिये ... हैं, वे हमारे अिस ग़रीब मुल्कमें अच्छे कामोंके लिअे बहुत अच्छी ... ख़र्च किये जा सकते हैं।

ज० — यह अुलाहना सही है, पर नया नहीं। मैंने अिस पर ... देकर ज़्यादा नहीं लिखा, अुसका सबब यही समझा जाय कि तम्बाकू ... पीनेकी आदत अेक चौंकानेवाले रूपमें बड़प्पनकी निशानी बन गअी है। ... जब कोअी व्यसन या बुराअी अिस हद तक पहुँच जाती है, तो ... अुखाड़ फेंकना मुश्किल हो जाता है। अिसका यह मतलब ... नहीं कि हम अिस बुराअीके ख़िलाफ़ आवाज़ ही न अुठायें। सवाल ... यही है कि यह सब कब और कैसे किया जाय? मैं अफ़सोसके ... साथ क़बूल करता हूँ कि अिसका जवाब मुझे सूझ नहीं रहा।

दहेजका शाप

स० — ब्याह-शादीमें दहेजकी माँग दिन-दिन बढ़ती जा रही है। ... अन्यायसे कोअी बचा नहीं। लड़केके पिता जितने धनी होते हैं, दहेजकी ... भी अुतनी ही बढ़ जाती है। यह सवाल आज अितना टेढ़ा बन गया है ... शादीके लायक़ लड़कियोंकी शादी नहीं हो पाती। अिन लड़कियोंके ... माँ-बापकी हालतका बयान करनेके बजाय अुसका अन्दाज़ा लगाना ... ज़्यादा आसान है। सूबोंकी लोकप्रिय सरकारोंको चाहिये कि वे क़ानून ... बनाकर अिस बुराअीको रोकें।

ज० — अिन भाअीने अेक अजीब चीज़की तरफ़ अिशारा किया है ... शिक्षा या तालीम समाजकी अिस हालतको न सिर्फ़ सुधारती नहीं ... बल्कि ज़्यादा बिगाड़ती है। जिन लोगोंमें यह बुरा रिवाज मौजूद है ... अुन्हें वक़्त रहते चेत जाना चाहिये, वरना यह अुन लोगोंको ... ख़त्म कर देगा, जो अपनी भयंकर कमज़ोरीकी वजहसे बेशरम बनकर ... अिससे चिपके हुअे हैं। अुन्हें लगातार बिना चैन लिअे अिसके ... ख़िलाफ़ आन्दोलन करते रहना चाहिये। दूसरा कोअी तरीक़ा ... नहीं जानता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह गुप्तता क्यों ?

स० — क्या आप बता सकते हैं कि जब मुल्कमें भाअी भाअीका ख़ून कर रहा है, तब अख़बारोंमें, मारे गये लोगोंकी जात क्यों छिपाअी जाती है ?

ज० — मैं क़बूल करता हूँ कि मेरे मनमें भी यह सवाल कअी बार सूझा है। अिस तरह सचाअीको छिपानेकी कोअी वजह मुझे नहीं मालूम होती, सिवा अिसके कि यह अुस नौकरशाहीकी अेक देन है, जिसकी जगह हमारी राष्ट्रीय सरकारोंने ली है। जिन्हें मालूम नहीं होना चाहिये, वे तो यह जान लेते हैं कि किसने किसे छुरा भोंका है, और जिन्हें जानना चाहिये, वे अँधेरेमें रक्खे जाते हैं। मुझे यक़ीन है कि हिन्दुस्तानमें कअी अैसे हिन्दू, मुसलमान या दूसरी जातियोंके लोग हैं, जो हमेशा अपनेको हिन्दुस्तानी कहनेमें फ़ख्र या गौरव महसूस करते हैं। यह कहना ग़लत होगा कि अैसा कहनेवाले अपने धर्मके सच्चे पाबन्द नहीं होते। वे लोग हमेशा अिस कोशिशमें रहते हैं कि मज़हबके जोशमें अन्धे बन जानेवाले लोगोंको शरारत करनेसे रोकें। मैं अैसे कअी लोगोंको जानता हूँ। अुनके पास अख़बारोंके सिवा सही बातें जाननेका दूसरा कोअी ज़रिया नहीं रहता। अिस अँधेरे पर रोशनी डाली जानी चाहिये, तभी यह जल्दी मिटेगा।

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

हिन्दू पानी और मुसलमान पानी

जब कोअी परदेसी आदमी हिन्दुस्तानकी रेलगाड़ियोंमें सफ़र करते वक़्त अपनी ज़िन्दगीमें पहली बार पानी, चाय और अैसी ही दूसरी चीज़ोंके साथ हिन्दू या मुसलमानकी हँसी लानेवाली पुकारें सुनता होगा, तो अुसे सहज ही अेक दर्दभरा धक्का-सा लगता होगा। चूँकि अब केन्द्रमें पूरी-पूरी क़ौमी-सरकार बन गअी है, और आसफ़अली साहब-जैसे मशहूर हिन्दुस्तानी, रेलवे और यातायात विभागके वज़ीर हैं, अिस चीज़का बना रहना बहुत भद्दा मालूम होगा। हमें अुम्मीद करनी चाहिये कि यह शर्मनाक चीज़, जो सिर्फ़ हिन्दुस्तानकी अपनी ख़ासियत है, बहुत जल्द ख़त्म कर दी जायगी। कोअी यह न सोचें कि चूँकि रेलें अेक मुसलमानके मातहत हैं, अिसलिअे हिन्दुओंके साथ अिन्साफ़ न होगा। केन्द्रीय (मरकज़ी) या सूबोंकी सरकारोंमें हिन्दू-मुसलमानका या दूसरा कोअी क़ौमी भेदभाव न होना चाहिये। सभी हिन्दुस्तानी हैं। मज़हब तो अेक निजी मामला है। अिसके सिवा, हमारी कैबिनेटके मेम्बरोंने अेक बहुत अच्छा सिलसिला चला दिया है। अपने दिन भरके कामके बाद वे सब राज़ शामको मिलते हैं, और किसने क्या किया है, अिस पर ग़ौर करते हैं। यह अेक मिलाजुला काम है, जिसमें सब मेम्बर अेक साथ और अलग-अलग अेक दूसरेके कामके लिअे ज़िम्मेदार हैं। कोअी मेम्बर यह नहीं कह सकता कि चूँकि कोअी ख़ास चीज़ अुसके महक़मेसे ताल्लुक़ नहीं रखती, अिसलिअे वह अुसके लिअे ज़िम्मेवार नहीं। चुनाँचे हमें यह मानकर चलनेका हक़ है कि रेलवे स्टेशनों पर हर क़ौमके लिअे हर चीज़ अलगसे बेचनेका यह नापाक तरीक़ा बन्द कर दिया जायगा। सफ़ाअीका पूरा-पूरा ख़याल रखनेका अुसूल तो सबके लिअे ज़रूरी है। अगर सब तरहकी पनीली या तरल चीज़ोंके लिअे टोंटियोंवाले बरतनोंका अिंतज़ाम रहे, तो अुनसे अपनी ज़रूरतकी चीज़ें ख़ुद ले लेनेमें किसी पुराने ख़यालके आदमीको भी कोअी परहेज़ न होना चाहिये। जो बहुत परहेज़ी हैं, वे अपना प्याला या लोटा अपने साथ रखें, और अुसीमें दूध, चाय, कॉफ़ी या पानी टोंटीसे ले लिया करें। अिसमें तो किसीका मज़हब नहीं बिगड़ता। फिर, रेलवे-स्टेशनों पर चीज़ें ख़रीदना किसीके लिअे लाज़िमी नहीं। असलमें बहुतसे पुराने ख़यालके लोग तो सफ़रमें न पानी पीते हैं, न खाना खाते हैं। वे अुपासे रह लेते हैं। ग़नीमत है कि हम अभी अेक ही हवा खाते हैं, और अेक ही धरतीमाता पर चलते-फिरते हैं।

कम-से-कम रेलवे-स्टेशनों पर तो ये सब क़ौमी पुकारें ग़ैरकानूनी कर दी जानी चाहियें।

जैसा कि मैंने अिन पन्नोंमें कअी दफ़ा कहा है, रेलगाड़ियों और जहाज़ोंके ज़रिये अमली तौर पर लाखों-करोड़ों मुसाफ़िरोंको हद दरजेकी सफ़ाअी, सेहत और तन्दुरुस्तीके नियम सिखाये जा सकते हैं, और हिन्दुस्तानकी अलग-अलग जातियोंमें भाअीचारा भी पैदा किया जा सकता है। हम अुम्मीद करें कि अिस बहुत ज़रूरी सुधारको सफल बनानेमें कैबिनेट या मंत्रि-मण्डल अपने अक़ीदे (विश्वास)के मुताबिक़ काम करनेकी हिम्मत दिखायेगा, और अुसे रेलवेके कारकुनों और आम जनताकी भी पूरी-पूरी और दिली मदद मिलेगी।

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

गले लगकर मरे

हालकी अेक ख़बर है कि बम्बअीमें अेक हिन्दूने अपने अेक मुसलमान दोस्तको आसरा दिया। अिससे हिन्दुओंका अेक दल भड़क अुठा और अुसने कहा—"अपने मुस्लिम दोस्तको हमें सौंप दो!" हिन्दूने अपने दोस्तको सौंपनेसे अिनकार किया। अिसपर दोनों दोस्त मौतके घाट अुतार दिये गये। मरते वक़्त दोनों अेक-दूसरेको गले लगाये हुअे थे। अेक जानकारने मुझे बिलकुल अिसी तरह यह ख़बर सुनाअी थी। अिस ख़ूँख़्वारीके बीच अिस तरहकी यह पहली ही मिसाल नहीं है। पिछले दिनों कलकत्तेमें ख़ूनकी जो नदियाँ बहीं, अुनमें भी कअी जगह हिन्दुओंने मुसलमान दोस्तोंको और मुसलमानोंने हिन्दू दोस्तोंको अपनी जान पर खेलकर आसरा दिया था। अिनसानमें देव या फ़रिश्तेका जो अंश है, अगर अुसकी झलक किसी भी वक़्त और कहीं भी न दिखाअी दे, तो अिनसानियत (मानवता) मर जाय।

बम्बअीके वज़ीरे-आज़म श्री बाला साहब खेरने बहुत ज़ोरदार शब्दोंमें दो अैसे नौजवानोंकी मिसालका बयान किया है, जो यह जानते हुअे भी कि वे ज़रूर मार डाले जायँगे, अेक मुस्लिम-भीड़का ग़ुस्सा ठण्डा करनेके लिअे दौड़ पड़े थे। मौतको अुन्होंने सच्चे दोस्तकी तरह अपनाया। अैसी पाक क़ुरबानीकी क़ीमत बेअन्दाज़ है। कोअी हलके तरीक़ेसे अुसका मज़ाक़ न अुड़ाये। अगर अैसी हरअेक क़ुरबानीका नतीजा कामयाबी (सफलता) हो, तो जान पर खेल जाना हँसी-खेल बन जाय। ये घटनाअें हमको यही सबक़ देती हैं कि अगर अैसे क़िस्से काफ़ी तादादमें हमारे सामने आयें, तो मज़हबके नाम पर होनेवाली यह बेवक़ूफ़ीभरी मार-काट बन्द हो जाय। सबसे ज़रूरी शर्त यह है कि अिसमें कहीं दिखावा या नक़ली बहादुरी न हो। हम जैसे हैं, वैसे ही दिखनेकी कोशिश करें।

नअी दिल्ली, १५-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

नअी किताबें	मूल्य	डाकख़र्च
अीशु ख्रिस्त — (किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०-१-०
रचनात्मक कार्यक्रम — अुसका रहस्य और स्थान (नअी और सुधरी हुअी आवृत्ति (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
अेक धर्मयुद्ध -- (महादेवभाअी हरिभाअी देसाअी)	०-८-०	०-२-०
हिन्दुस्तानी बाल-पाठावली	०-५-०	०-१-०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हफ़्तेवार ख़त

सरकारी मालिकी बनाम सरकारी कण्ट्रोल

ता० ८, ९ और १० अक्तूबरको हरिजन कॉलनी, किंग्सवे, नअी दिल्लीमें अखिल भारत-चरखा-संघकी सालाना बैठक हुअी। क़रीब ८० मेम्बर हाजिर थे। बहसोंकी अेक ख़ासियत यह थी कि कअी चीज़ें जो आज तक सिर्फ़ हवाअी समझी जाती थीं, अपनी सरकारोंके आनेसे वही अब असली शकल ले रही हैं। चर्चाका अेक विषय यह था कि मिलका कपड़ा खादीके साथ मुक़ाबला न करे। अिसलिअे कुछ चुनी हुअी जगहोंमें मिलका कपड़ा जाने न दिया जाय, और वहाँ कपड़ेकी नअी मिलें खड़ी न की जायँ; क्योंकि मिलके मुक़ाबलेमें खादी जिन्दा नहीं रह सकती। गांधीजीने सुझाया कि जहाँ लोग वस्त्र-स्वावलम्बनका प्रयोग करनेको तैयार हों, वहाँ सरकार मिलका कपड़ा न जाने दे। अिसी तरह अगर सरकारें नअी मिलें खड़ी करनेमें करोड़ों रुपये ख़र्च करेंगी, तो देहातवाले खादीके बारेमें अुनकी बात नहीं सुनेंगे। वे समझ जायँगे कि असल चीज़ तो मिल ही है। चुनाँचे अगर सरकारें सचमुच ही खादीको बढ़ाना चाहती हों, तो अुन्हें अपने यहाँ नअी मिलें न बनानेका फ़ैसला करना ही होगा।

अेक मेम्बरने प्रस्ताव पेश किया कि कपड़ेकी नअी मिलों पर सरकारका क़ब्ज़ा हो, और जितनी जल्दी हो सके, सरकार पुरानी मिलों पर भी क़ब्ज़ा कर ले, ताकि अुनका मुनाफ़ा पूँजीपतियोंके बदले मुल्कके जेबमें पहुँचे, और मिलोंकी नीति पर भी जनताका क़ाबू हो। अिस पर गांधीजीने समझाया कि जब वे सरकारसे अेक तरफ़ यह कहते हैं कि खादीका प्रचार करना हो, तो कपड़ेकी नअी मिलें खड़ी ही न करनी चाहियें, तब दूसरी तरफ़ अुससे नअी और पुरानी मिलोंका राष्ट्रीयकरण करनेकी बात कहना ठीक नहीं। मद्रासके प्रधान-मंत्री श्री टी० प्रकाशम्‌ने तो अैलान भी कर दिया है कि उनके सूबेमें कपड़ेकी नई मिलें खड़ी नहीं की जायँगी। रही पुरानी मिलों पर सरकारी क़ब्ज़ेकी बात, सो मुझे तो क़ब्ज़ा लेनेके बजाय सरकारकी कड़ी देख-रेखमें उनका चलना ही ज़्यादा अच्छा लगेगा। आज क़ब्ज़ा लेनेके लिए सरकारके पास सामान नहीं है। हम तो सब काम शान्तिसे करना चाहते हैं। अगर हम मिल-मालिकोंको अपना ट्रस्टी बना लें, तो वे और उनके कारकुन अपने-आप हमारे ताबेमें आ जाते हैं। मिल-मालिक मिल चलावेंगे, मगर मुनाफ़ेका उतना ही हिस्सा उनके जेबमें जायगा, जो उनकी मेहनतके बदले, लोग उन्हें देना ठीक समझेंगे। सच्चे मालिक मज़दूर होंगे। मैंने सुना है कि श्री टाटाकी अेक मिल में मज़दूरों को मुनाफ़ेमें साझा मिला है। श्री जे० आर० डी० टाटाने मुनाफ़ा बाँटने के मौक़े पर जो भाषण किया था, वह पढ़ने लायक़ है। अिससे बढ़कर क़ब्ज़ा और क्या लिया जा सकता है? अिससे आगे जाने की बात मेरे दिमाग़ में नहीं आती। कअी मिल-मालिकोंने मुझसे कहा है कि अगर हम अैसी कोअी योजना बनावें, तो वे हमारे साथ रहेंगे। मिलों पर सरकार, चरखा-संघ और मिल-मालिकों का क़ाबू होने की बात मेरे गले नहीं अुतरती। हमारा काम मिल चलाना नहीं, चरखा चलाना है। जो चीज़ हमारे दायरे की नहीं, अुसकी चर्चा में अितना वक़्त क्यों दें? अगर सब-की-सब मिलें आज जलकर खाक हो जायँ, तो मुझे ज़रा भी रंज न होगा। अिसके बाद खादी को बढ़ना ही है। लेकिन अगर मिलें बढ़ेंगी, तो खादी को मरना होगा। ग़रीबोंकी अन्नपूर्णा (रोटी देनेवाली) के नाते थोड़ी-बहुत खादी तब भी चल सकती है। पर अुसके लिअे चरखा-संघ-जैसी बड़ी संस्था की ज़रूरत न रहेगी। मेरे लिअे तो अितना ही काफ़ी है कि सूबों की सरकारें मिलों के बारे में अपनी नीति ठहराते वक़्त हमारी सलाह ले लिया करें।

पैसेकी मददका सवाल

खादीको पैसेकी मदद देनेके सवाल पर भी चर्चा हुअी। हाथ-कते सूतकी बुनाअीका सवाल बहुत मुश्किल बन रहा है। हाथ-करघा चलानेवाले जुलाहे मिलका सूत बुनना पसन्द करते हैं। बुनाईके दाम अितने बढ़ गये हैं कि वस्त्र-स्वावलम्बन बहुत महँगा पड़ता है। श्री जाजूजीने सवाल अुठाया कि अगर सरकार अपने लिअे कातनेवालोंको सस्ते दामों कपड़ा बुनवा दे, तो क्या वस्त्र-स्वावलम्बनके लिअे अितनी मदद लेना ठीक न होगा? गांधीजीने जवाब दिया कि वे सरकारसे रुई माँग सकते हैं, ज़रूरी सामान माँग सकते हैं, जो अपने लिअे कातना चाहें, अुनको कताईकी मुफ़्त तालीम देनेका अिन्तज़ाम भी सरकारसे करवा सकते हैं; मगर मैं यह नहीं कहलाना चाहता कि चूँकि चरखा-संघ अेक बड़ी संस्था है, अिसलिअे अुसने सरकारी रुपया अुड़ाया। मैं तो यह कहलाना चाहता हूँ कि चरखा-संघको सरकारने कुछ दिया ही नहीं, और जो कुछ दिया उसका दस गुना वापस पाया।

मजबूरी नहीं

अेक दूसरे मेम्बरने सुझाया कि बुनकरोंसे कहा जाय कि जब तक वे थोड़ा हाथ-कता सूत नहीं बुनेंगे, अुन्हें मिलके सूतका कोटा नहीं दिया जायगा। अिस पर गांधीजीने कहा—"अगर खादीके मामलेमें आप किसी तरहकी मजबूरी दाखिल करेंगे, तो अुससे खादीके लिअे लोगोंमें नफ़रत ही पैदा होगी। तब खादी आज़ादीकी वर्दी नहीं रहेगी। आज आज़ादीकी हवा बह रही है। बुनकर ज़बरदस्ती कुछ करनेसे अिनकार कर सकते हैं।"

जाजूजीने दलील की—"आज तो कपड़ा और ख़ूराक वग़ैरा हर चीज़ पर कण्ट्रोल है। बुनकरों पर भी किसी क़िस्मका कण्ट्रोल क्यों न रखा जाय?"

गांधीजीने जवाब दिया—"मुझे यह अच्छा नहीं लगता। हमने कत्तिनोंको किसी तरह मजबूर नहीं किया। बुनकरोंको भी क्यों करें? हमें अिस कठिनाअीकी जड़ ढूँढ़नी चाहिये। पहली ग़लती तो हमारी यह थी कि हमने कताअी पर तो ज़ोर दिया, मगर बुनाअी पर नहीं दिया। अगर हमने बुनाअीको भी कताअीकी तरह अपनाया होता, तो ये कठिनाअियाँ खड़ी ही न होतीं। अब अिलाज यह है कि हम अच्छा सूत कातें, ताकि बुनकरोंको हाथ-कता सूत बुननेमें कम-से-कम तकलीफ़ हो। हम बुनकरोंको समझावें कि मिलका सूत बुनकर वे अपने बच्चोंका गला काट रहे हैं। मिल-मालिक, दूसरोंको फ़ायदा पहुँचानेके अिरादेसे, परोपकार वृत्तिसे, काम नहीं करते। अगर मिलें बढ़ीं, तो आख़िर बुनकरोंका धन्धा बैठ जायगा। अगर चरखेमें हमारी श्रद्धा (अेतक़ाद) क़ायम है, तो हमें अिन दिक़्क़तोंसे घबराना न चाहिये। धीरे-धीरे हाथका कता सूत बुननेवाले करघे बढ़ेंगे। हमारे पास अितने कारीगर हैं, और अितनी कला है कि हम अपनी ज़रूरतका सब कपड़ा अपने हाथों तैयार कर सकते हैं।"

चींटीकी चाल

जाजूजी—अिसका मतलब यह हुआ कि हमारा काम पहलेकी तरह चींटीकी चालसे आगे बढ़ेगा। थोड़े समयमें चार लाख लोगोंके लिअे वस्त्र-स्वावलम्बनकी हमारी योजना (स्कीम) अिस तरह सफल नहीं हो सकती।

गांधीजी—अगर हमारी स्कीम क़ामयाब नहीं होती, तो अिसमें दोष हमारा ही होगा।

जाजूजी—यह ठीक है। मगर बाहरी हालात या परिस्थितिका भी असर तो होता ही है। हम जिस दुनियामें रहते हैं, अुसका असर हम पर पड़े बिना नहीं रहता।

गांधीजी—बाहरी हालात पर क़ाबू पाना अिनसानका काम है। आजका ज़माना ही परिस्थिति पर क़ाबू पानेका है। अगर परिस्थितिको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़ाबूमें न लाया जाता, तो जर्मनी और जापान ज़रूर जीत जाते। अिसके बारेमें हम अंग्रेज़ोंसे सबक़ लें। वे कभी हार नहीं मानते। हमें अपने जीवनको यज्ञमय बनाना होगा। अैसी कोअी चीज़ नहीं, जिसे तपस्याके ज़रिये अिनसान पा न सके।

अप्रमाणित खादी और मिलका कपड़ा

सवाल — आपनेही हमें सिखाया है कि जहाँ धोखा हो, वहाँ न जाओ। खादी पहननेकी शर्तोंका पालन किये बिना, अप्रमाणित खादी पहनकर खादीधारी कहलाना क्या धोखेबाज़ी नहीं? क्या अीमानदारीके साथ मिलका कपड़ा पहनना बेहतर नहीं?

गांधीजी ने जवाब दिया —- यह न सोचिये कि मुझे अप्रमाणित खादी अच्छी लगती है। मगर अप्रमाणित होने पर भी जब तक वह असल खादी है, तब तक मिल के कपड़े से अच्छी ही है। यह कहना कि अप्रमाणित खादी हर हालत में त्याज्य ही है, ठीक नहीं। मसलन्, जो लोग खुद सूत कातकर अुसका कपड़ा बुनवाते हैं, अुनके पास प्रमाण-पत्र नहीं रहता, मगर अुनकी खादी शुद्ध खादी होती है। प्रमाणित खादी का मतलब यह है कि अुसमें कत्तिनों को चरखा-संघ की तय की हुअी कताअी मिलती है, और संघ के दूसरे नियमों का पालन होता है। मगर चरखा-संघ के नियम के मुताबिक़ कताअी न देने पर भी मिल के कपड़े से तो वह खादी अच्छी ही होगी। देखने में भले यह जान पड़े कि मिल के मज़दूरों को ज़्यादा मज़दूरी मिलती है, मगर दर असल मिल के मज़दूर खादी के मज़दूरों की बनिस्बत नुक़सान में रहते हैं। आज मिल का कपड़ा खादी से २½ गुना सस्ता है। मगर जानकार लोगों ने मुझे बताया है कि मिलों को जो तरह तरह की रिआयतें आज मिली हुअी हैं, वे बन्द कर दी जायँ, तो मिल का कपड़ा खादी से सस्ता नहीं पड़ेगा। मसलन्, मिलों को सस्ते दामों में कच्चा और पक्का माल लाने और भेजने के लिअे कम रेट में रेलों की सहूलियतें दी गअी हैं। अुनके लिअे पक्के रास्ते बनाये जाते हैं, और लम्बे रेशेवाली कपास अुगाने, टेकनिकल अिन्स्टिट्यूट खोलने, और रिसर्च वग़ैरा करने में करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं। सात लाख गाँवों में से किसी के लिअे भी अिनमें की कोअी बात कभी की गअी है? मिलों को तो किसी-न-किसी रूप में आज सरकारी मदद मिल ही रही है। वह सब बन्द कर दीजिये और फिर देखिये कि मिल का कपड़ा खादी से सस्ता है या महँगा।

मैं अप्रमाणित खादीको बढ़ाना नहीं चाहता, मगर मिलके कपड़ेको तो बरदाश्त ही नहीं कर सकता। अेक दिन अैसा भी आ सकता है, जब चरखा-संघ प्रमाण-पत्र देना बन्द कर दे। अुस समय संघ खादीकी नीति या पॉलिसीकी रखवाली करेगा, और खादीका व्यापार करना बन्द कर देगा। लोगोंको अीमानदार और होशियार बनना पड़ेगा, ताकि खादीके नामसे दूसरा कपड़ा ख़रीदा और बेचा न जा सके। मैंने चरखे और खादीको अहिंसाकी निशानी कहा है, मगर मैं सुनता हूँ कि प्रमाणित खादी-भण्डारोंमें भी बेअीमानी चलती है। मेरी दिली ख़ाहिश है कि खादी काले-बाज़ारसे और दूसरी सब तरहकी बेअीमानीसे अूपर रहे। मगर कहीं-कहीं तो यह चलता ही है। खादीको अहिंसाकी निशानी बनाना हमारा काम है।

मैंने अिस बात पर ज़ोर दिया है कि वेजीटेबल घीको घी न कहा जाय। वह घी नहीं, तेल है। अिसी तरह जो कपड़ा हाथ-कता और हाथ-बुना नहीं है, अुसका खादीके नामसे चलना बरदाश्त नहीं किया जा सकता। आख़िरी अिलाज तो ख़रीदारोंके हाथमें है। अुन्हें अंग्रेज़ीकी यह कहावत हमेशा याद रखनी चाहिये — 'ख़रीदार, ख़बरदार!'

अेक कड़ी कसौटी

अेक दिन आम सभामें की गअी अपनी अेक तक़रीरमें गांधीजीने कहा था कि मेरी कल्पनाका सार्वजनिक जीवन अेक तरहकी कसौटी है, और अुसमें आदमी अपने भीतरकी अूँची-से-अूँची आध्यात्मिक (रूहानी) ख़ूबियोंका विकास कर सकता है। यह कसौटी कितनी कड़ी हो सकती है, अिसका सबूत अुन्हें और हम सबको भी अुस दिन मिला, जब अिस हफ़्ते अुनके ज़िम्मेदारी भरे काममें अेक नाज़ुक मौक़ा आ गया। अुन्होंने अेक मज़मूनका कुछ हिस्सा पढ़कर अुसे ज़रूरतसे ज़्यादा जल्दीमें पास कर दिया, जब कि जल्दबाज़ीका कोअी मौक़ा नहीं था। अुन्हें लगा, सब ठीक है, हालाँकि बात ठीक नहीं थी। भाग्यसे ग़लती वक़्त रहते पकड़ ली गअी और अुससे काअी नुक़सान न हुआ। लेकिन अिस बातने गांधीजीको बुरी तरह झकझोर दिया। अुन्होंने कहा —"अपनी अितनी लम्बी ज़िन्दगीमें मेरे लिअे अिस तरहका यह पहला तजरबा है। क्या यह अिस बातकी निशानी है कि ७८ सालकी अिस अुमरमें मेरा दिमाग़ कमज़ोर हो गया है?" अुन्होंने अपनी अन्तरात्माकी अदालतमें अपना मामला पेश किया और अपने-आप पर सख़्त लापरवाहीका अिलज़ाम लगाया, जो सार्वजनिक काम करनेवालेके लिअे बड़ा जुर्म है। लेकिन जब अिससे भी अुन्हें तसल्ली न हुअी, तो अुन्होंने शामकी प्रार्थना-सभामें सबके सामने अपनी ग़लती क़बूल करते हुअे बहुत बारीकीसे अुसकी छानबीन की।

ग़लती क़बूल करनेका महत्त्व

अुन्होंने कहा—"मैं हमेशा अिस कहावतके मुताबिक़ चला हूँ कि अिनसानको चाहिये कि शाम होनेसे पहले ही वह अपनी ग़लती क़बूल कर ले। ग़लती हर अिनसानसे होती है। लेकिन जब अिनसान अपनी ग़लतीको छिपाता है या अुस पर मुलम्मा चढ़ानेके लिअे और झूठ बोलता है, तो वह ख़तरनाक बन जाती है। जब किसी फोड़ेमें पीव पड़ जाता है, तो हम अुसे दबाकर ज़हरीले पीवको बाहर निकाल देते हैं और फोड़ा बैठ जाता है। लेकिन अगर वही ज़हर बदनके अन्दर फैल जाय, तो मौत होकर ही रहे। बरसों पहले साबरमती आश्रममें कअियोंको चेचककी बीमारी हुअी थी। जितने लोगोंको चेचक अुभर आअी थी, वे तो मौतसे बच गये। लेकिन अुनमेंसे अेकको चेचक अुठी ही नहीं; अुसका सारा जिस्म सूजकर लाल हो गया और वह बेचारा मर गया। यही हाल ग़लती और पापका होता है। पता चलते ही किसी ग़लती या पापको क़बूल कर लेनेके मानी हैं, अुसे बाहर निकाल फेंकना।"

गांधीजीने आगे कहा- "अपनी सारी ज़िन्दगी में मैंने अैसा ही किया है। अिसलिअे जब अिस बार भी मुझे अपनी ग़लती मालूम हुअी, तो मैंने फ़ौरन अपने साथियोंसे कह दिया। तिस पर भी मुझे तब तक चैन नहीं, जब तक आपके ज़रिये मैं सारी दुनिया के सामने अपनी ग़लती क़बूल न कर लूँ। अिस पर कुछ मित्र कह सकते हैं कि यह कोअी पाप नहीं, बल्कि अेक छोटी-सी ग़लती थी। लेकिन मैं ग़लती और पाप में कोअी फ़र्क़ नहीं मानता। अगर अिनसान सच्चे भावसे कोअी ग़लती कर जाता है, और पश्चात्तापपूर्वक अपने अीश्वर के सामने अुसे क़बूल कर लेता है, तो दयालु परमात्मा अुसकी ग़लती से किसीका नुक़सान नहीं होने देता। अपनी सारी ज़िन्दगी में मुझे अेक भी अैसी मिसाल याद नहीं पड़ती, जब मेरी सद्भावसे की गअी ग़लतियोंसे कभी किसीको नुक़सान पहुँचा हो।"

गांधीजीने अपने-आपसे पूछा- "अिस ग़लतीके लिअे मैं क्या प्रायश्चित्त करूँ?" और ख़ुद जवाब देते हुअे कहा- "मुझे यह पक्का निश्चय कर लेना चाहिये कि फिर अैसी ग़लती कभी न होने दूँगा। ग़लती के लिअे प्रायश्चित्त करनेका यही सच्चा तरीक़ा है।"

मरते वक़्तका प्रायश्चित्त

"अंग्रेज़ोंमें अेक कहावत है कि दुनियामें कोअी अिनसान अितना बुरा नहीं होता कि कभी सुधर ही न सके—सिर्फ़ अुसके मनमें सुधरनेकी ख़ाहिश होनी चाहिये। अगर मरते-मरते भी कोअी बड़े-से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ा पापी अपना पाप क़बूल करके अुसके लिअे पछताता है, तो भगवान् अुसे ज़रूर माफ़ कर देता है। भगवान्‌की यह प्रतिज्ञा है। पुनर्जन्ममें और जन्मजन्मान्तर तक कर्मका फल भोगनेमें मेरा विश्वास है। अिस जन्ममें हम जैसा करेंगे, वैसा ही अगले जन्ममें भरेंगे— अुससे हम बच नहीं सकते। लेकिन अगर कोअी अिनसान मरते वक़्त भी अपने पापके लिअे पछताता है, तो वह पाप धुल जाता है, और अुसका कोअी बुरा नतीजा नहीं निकलता। आप सब अीश्वरसे मेरे लिअे प्रार्थना कीजिये कि अपनी ज़िन्दगीमें फिर कभी में अैसी ग़लती न करूँ।"

आख़िरमें गांधीजीने कहा—"मुझे अुम्मीद है कि आप सब मेरी अिस मिसालसे सबक़ लेंगे और अपने काममें कभी जल्दबाज़ी या लापरवाही नहीं करेंगे। आपके सामने अपनी ग़लती क़बूल कर लेनेसे मेरे मनका बोझ तो अुतर गया, लेकिन अिसने मेरे १२५ बरस तक जीनेके विश्वासको बुरी तरह हिला दिया है। मेरे अिस आत्म-विश्वासको लौटनेमें शायद काफ़ी वक़्त लग जायगा।" अपने आत्म-निरीक्षणकी मददके लिअे और अपनी ताक़त बनाये रखनेके ख़यालसे गांधीजीने रोज़मर्राके कामोंके लिअे अनिश्चित काल तक न बोलनेका फ़ैसला किया है। आजकल शामकी प्रार्थना सभाओंमें तक़रीर करनेके लिअे या दिल्लीके अपने कामके सिलसिलेमें कोअी ज़रूरत पड़ने पर ही वे अपना मौन तोड़ते हैं।

अुनकी मौन प्रार्थना

अपने मौनमें वे क्या सोचा करते हैं? अिसकी अेक अुड़ती झलक तब दिखाअी दी, जब अुन्होंने सोमवारकी प्रार्थना-सभामें पढ़नेके लिअे अेक छोटा-सा सन्देश लिखकर दिया—"अिनसानका यह फ़र्ज़ है कि वह अीश्वरकी सृष्टिके सभी प्राणियोंका भला चाहे, और प्रार्थना करे कि भगवान् अुसे अैसा करनेकी ताक़त दे। सब प्राणियोंका भला चाहनेमें ही अिनसानका अपना भला है। जो अपना या अपनी क़ौमका ही भला चाहता है, वह ख़ुदग़रज़ है। अुसका कभी भला नहीं होता।" गांधीजीने कहा कि अिनसानके लिअे यह ज़रूरी है कि जिस बातको वह ख़ुद अच्छी समझता है, और जो दर असल अुसके लिअे अच्छी है, अुसके फ़र्क़को वह समझ ले।

अच्छी फ़सल

अगर श्री कनु गांधीके तीसरे कताअी-क्लासको, जो ६ दिन चलकर पिछले शनीचरके दिन ख़त्म हुआ, अेक निशानी माना जाय, तो कहना होगा कि नतीजा बहुत अच्छा आ रहा है। अगर कोअी कमी है, तो काम करनेवालोंकी है।

क्लासमें २२ बहनें और २८ भाअी दाख़िल हुअे, क्योंकि अिससे ज़्यादा लोगोंको वे लेना नहीं चाहते थे। अिस बारके अिम्तहानकी अेक ख़ूबी यह थी कि परीक्षार्थी दूसरी जगह चलनेवाले दो क्लासोंसे भी आये थे। अुनमेंसे अेक क्लास हरिजन बहनोंके लिअे खोला गया था। २० बहनें वहाँ सीखती थीं। अुनमेंसे ७ अिम्तहानमें बैठीं। १२ बहनोंको दूसरे केन्द्रमें तालीम दी गअी थी। अुनमेंसे ३ परीक्षामें शामिल हुअीं। यह परीक्षा १$\frac{३}{४}$ घण्टे तक चली, जिसमें कताअी तककी सारी क्रियायें शामिल थीं। नतीज़ा यह रहा—

२२ भाअी-बहनोंने सब क्रियाओंके साथ ५० तार काते। ९ने ८०से अूपर तार निकाले और ८ने १००से अूपर तार काते। सूतका नम्बर १२से ३० तक था।

पूरा कोर्स लेनेवालोंमें 'न्यूज़ क्रॉनिकल' लन्दनके पत्रकार मि० नॉर्मन क्लिफ और 'न्यूयार्क पोस्ट'के पत्रकार मि० अेण्ड्रयू फ्रीमैन भी थे। दोनों बड़े धीरजके साथ ज़मीन पर बैठते और अपनी बनाअी हुअी पूनियोंसे अेक-सा सूत कातते थे। दोनोंने चरखे ख़रीद लिये हैं, और दोनों हमेशा कातनेकी अुम्मीद रखते हैं।

भंगी-बस्तीमें अब और कताअी क्लास नहीं चलेगा। लेकिन जिन्होंने यह कला सीख ली है, अुनमेंसे कुछ अपनी-अपनी जगहोंमें क्लास खोल रहे हैं। वार्ड नं० ९की ज़िला कमेटी अेक चरखा-क्लब और अेक कताअीका क्लास १६ अक्तूबरसे खोल रही है।

नअी दिल्ली, १५-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

टिप्पणियाँ

अंग्रेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दकोश

अेक भाअीने दिल्लीकी भंगी-बस्तीमें मुझसे पूछा—"अब 'हरिजनसेवक'में यह शब्दकोश (लुग़त) क्यों नहीं निकलता?" मैंने अुनसे कहा कि वह सिर्फ़ 'हरिजन'में छपता है। बेचारे बहुत मायूस हुअे। मैंने कहा—"वह अंग्रेज़ी जाननेवालोंके लिअे है। अिसलिअे 'हरिजनबन्धु' और 'हरिजनसेवक'में नहीं छपता। शुरूमें ग़लतीसे छपा था। ठीक होता, अगर अिसका ज़िक्र 'हरिजनबन्धु' और 'हरिजनसेवक'में कर दिया जाता। जो लोग चाहें वे डाकख़र्चके साथ डेढ़ आनेके डाक-टिकट भेजकर 'हरिजन'के शब्दकोशवाले पन्ने मँगवा सकते हैं। पिछले अंक भी मिल सकेंगे।"

नअी दिल्ली, १२-१०-'४६ मो० क० गांधी

अनुचित

मद्रास प्रान्तसे अेक भाअी लिखते हैं कि कांग्रेसवालोंने कअी जगह गांधी-जयन्तीके लिअे रुपया अिकट्ठा किया। लोगोंने काफ़ी दिया भी। लेकिन अिस रुपयेके हिसाबकी जाँच नहीं हुअी। वह किस तरह ख़र्च किया गया, सो लोग नहीं जानते।

अगर यह सही है, तो बहुत ही बुरा है। ख़ैरात या दानमें मिला रुपया जनताका रुपया है। गांधीजी बार-बार कह चुके हैं कि अुसे अमानत समझकर बड़ी सावधानीसे जनताके लिअे ही ख़र्च करना चाहिये। अुसकी कौड़ी-कौड़ीका हिसाब तो देना ही है।

नअी दिल्ली, ११-१०-'४६ अमृतकुँवर

अेजण्टोंसे

मेहरबानी करके नीचे लिखी बातों पर ध्यान दें—

१. याद रखें कि आपको हमारे यहाँ अपनी माँगके मुताबिक़ **दो महीनोंके** दाम पेशगी जमा कराने हैं। अिनमेंसे अेक महीनेकी रक़म यहाँ क़ायमी तौर पर जमा रहेगी, और बाक़ी चालू खातेमें जमा होगी। हर हफ़्ते भेजी जानेवाली कॉपियोंके दाम चालू खातेसे अुठाये जायँगे।

२. अेजण्ट आम तौर पर अमानतके पैसे चेकसे भेजते हैं। मेहरबानी करके ख़याल रखिये कि हम चेक नहीं लेते। चुनाँचे आप अपनी रक़म मनीऑर्डर, पोस्टल ऑर्डर या बैंक ड्राफ्टके ज़रिये ही भेजिये।

व्यवस्थापक

विषय-सूची

		पृष्ठ
चरखा कैसे चले?	... कनु गांधी	३५७
विकेन्द्रीकरण	... गांधीजी	३५७
हिन्दुस्तानमें डेरीका धन्धा	... अमृतकुँवर	३५८
डॉ० लोहिया	... गांधीजी	३५९
सच्चा हिन्दुस्तान	... गांधीजी	३६०
सवाल-जवाब	... गांधीजी	३६०
हिन्दू पानी और मुसलमान पानी	... गांधीजी	३६१
गले लगकर मरे	... गांधीजी	३६१
हफ़्तेवार ख़त	... प्यारेलाल	३६२
टिप्पणियाँ		
अंग्रेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दकोश	... मो० क० गांधी	३६४
अनुचित	... अमृतकुँवर	३६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूत्र-कता बनाम मिलका कपड़ा

रजि० नं० बी ४४४८

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक — प्यारेलाल

वर्ष १० — अंक ३८

मुद्रक और प्रकाशक जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २७ अक्तूबर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६, विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हफ़्तेवार ख़त

घोर पागलपन

पिछले हफ़्ते मैंने गांधीजीके मन पर छाये जिस अँधेरेका ज़िक्र किया था, वह अिस हफ़्तेकी घटनाओंसे दूर नहीं हो सका। अेक प्रार्थनाके दौरानमें अपनी हालतका ज़िक्र करते हुअे अुस दिन अुन्होंने कहा था — "मैं अपनेको बहुत टटोल कर देख रहा हूँ कि मैं कहाँ हूँ।" अुस दिनसे वे शामकी प्रार्थना-सभाकी अपनी तक़रीरोंमें बराबर अपने दिलके दर्दको अुँड़ेलते रहे हैं। पहले आसाममें बाढ़की तबाही आअी और हज़ारों लोग बेघर हो गये। लाखोंकी जायदाद बरबाद हो गअी और कअी लोग मर गये। वह अीश्वरकी करनी थी। लेकिन आसामसे भी ज़्यादा बुरी ख़बरें बंगालसे आअीं, जहाँ कुछ लोगों पर पागलपनका नशा छा गया है। वहाँ अिनसान जानवरोंसे भी नीचे गिर गया है। अख़बारोंमें अैसी रिपोर्टें छपी हैं कि वहाँ मुसलमान हिन्दुओं पर, जो बहुत कम तादादमें हैं, ज़ुल्म कर रहे हैं। जबसे अुन्होंने नोआखालीकी बातें सुनी हैं, वे बहुत ज़ोरोंसे अिसी सोचमें पड़े हैं कि आख़िर अिस बारेमें अुनका क्या फ़र्ज़ है? भगवान् अुन्हें रास्ता दिखायेगा। वे जानते हैं कि जहाँ तक अहिंसाके अुपदेशका सवाल है, लोगोंके दिलों पर अुसका कोअी असर नहीं रह गया है। फिर भी लोग अुन्हें दिलसे चाहते हैं। अिस प्यार और मुहब्बतके लिअे वे लोगोंके अेहसानमन्द हैं, और अुन्हें धन्यवाद देते हैं। लेकिन अपनी तारीफ़ और धन्यवादको वे अिसी तरह ज़ाहिर कर सकते हैं कि अुन लोगोंके सामने और अुनके ज़रिये सारी दुनियाके सामने वे अुस सचाअीको रख दें, जिसके लिअे अुन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी है और जो अीश्वरसे अुन्हें मिली है। अैसा करने में अगर अुन्हें लोगोंके प्यार और अुनकी दी हुअी अिज़्ज़तसे हाथ धोना पड़े, तो अुन्हें कोअी परवाह नहीं। आज तो वे लोगोंसे यही कहना चाहते हैं कि पूरबी बंगालमें नोआखाली और दूसरी जगहोंमें जो हुआ, अुसका बदला लेनेकी बात सोचना हिन्दुओंके लिअे गलत होगा। अहिंसा कांग्रेसका धर्म है। अुसीने आज अुन्हें यह ताक़त दी है। अब अगर हम शक्तिशाली ब्रिटिश हुकूमतके ख़िलाफ़ ही अुसका अिस्तेमाल करें, और अपने भाअियोंके साथ खुलकर हिंसाका बरताव करें, तो हमारी अहिंसा कायरोंकी अहिंसा मानी जायगी। गांधीजी यह नहीं मानते कि हिन्दुस्तानी कभी हिंसाको अपना धर्म बना सकते हैं। हालाँ कि कांग्रेसमें हिन्दू मेम्बरोंकी तादाद ज़्यादा है, फिर भी कांग्रेस हिन्दुओंकी संस्था नहीं है। गांधीजीने पं० जवाहरलाल नेहरूके बाद कांग्रेसकी बागडोरको सँभालनेवाले नये राष्ट्रपति आचार्य कृपालानीसे कहा था — "कांग्रेसकी गद्दी आपके लिअे आरामकी गादी साबित नहीं होगी। अगर केन्द्रके प्रधान-मंत्रीको काँटोंका ताज पहनना पड़ा है, तो कांग्रेसके प्रमुखको भी काँटोंके बिछौने पर ही लेटना होगा। मरहूम सर सैयद अहमदने हिन्दुओं और मुसलमानोंको हिन्दुस्तानकी दो आँखें कहा था। कांग्रेसका प्रेसिडेण्ट भी अिन दोनोंमें कैसे कोअी फ़र्क़ कर सकता है? अुसने दोनोंकी अेक-सी ख़िदमत करनेका व्रत लिया है। अिसलिअे आपको शान्ति या अमनका सन्देश लेकर पूरबी बंगाल जाना चाहिये और वहाँके लोगोंको बिना मारे मरनेकी कला सिखानी चाहिये। लोगोंके सामने अपनी निजकी मिसाल पेश करके ही आप लोगोंको यह सिखा सकते हैं।" अपनी पत्नीके साथ आचार्य कृपालानी वहाँ किसी अेक पार्टीको बचानेके लिअे नहीं, बल्कि भाअी-भाअीके बीचकी अुस ख़ूँरेज़ीको बन्द करनेके लिअे जा रहे हैं, जिसके सारे हिन्दुस्तानमें फैल जानेका अँदेशा बढ़ रहा है। आचार्य कृपालानी और अुनकी पत्नीके लिअे यह अच्छी शुरुआत है। स्वर्गीय सुभाषबाबूके भाअी शरद्‌बाबू अुन लोगोंके साथ जा रहे हैं। वे जात-पाँत या मज़हबके बन्धनोंसे परे हैं। कुछ साल पहले गांधीजी शरद्‌बाबूके घर ठहरे थे। तब अुन्हें पता चला था कि सुभाषबाबू शरद्‌बाबूकी कितनी अिज़्ज़त करते थे।

गांधीजीने कहा — "आज बंगालके अुजले नाम पर कालिख पोती जा रही है — वह बंगाल, जिसने हिन्दुस्तानको अितना दिया है, वह बंगाल, जो गुरुदेवका घर है! गुरुदेवका अेक भजन अभी आपने सुना ही है। अुस भजनमें अीश्वरसे माँगा गया है कि वह अपने भक्तोंके दिलको अुदार बनाये और अुन्हें हिम्मत दे। अिसीको गुनगुनाते हुअे वे लोग बंगालको जा रहे हैं। आप लोगोंका यह फ़र्ज़ है कि आप अुन लोगोंकी सफलताकी कामना करें।"

मुस्लिम लीगसे दो शब्द

आगे चलकर गांधीजीने कहा — "मुस्लिम लीगसे मेरी प्रार्थना है कि वह अपने दिलको टटोले। अुसने आरज़ी सरकारमें शामिल होनेका फ़ैसला किया है। मुझे अुम्मीद थी कि वह सरकारमें भाअी-भाअी जैसे मिलकर काम करनेके लिअे आ रही है। अगर अैसा ही होता, तो सबका भला होता। मगर लीगवाले कांग्रेससे समझौता करके तो कैबिनेटमें नहीं आये। तब क्या वे दुश्मनी करनेके लिअे आ रहे हैं? मैं लीगसे और अुसकी वर्किंग कमेटीसे पूछता हूँ कि क्या अिस्लाम यही सिखाता है? आज पूरबी बंगालमें जो कुछ हो रहा है, वह हिन्दुस्तानके दूसरे सूबोंमें भी फैल जाय, तो क्या हाल होगा? क्या पाकिस्तानका यह मतलब है कि जहाँ हिन्दू कम हों, वहाँ मुसलमान अुन्हें ख़तम कर डालें, और जहाँ मुसलमान कम हों, वहाँ हिन्दू अुनका ख़ातमा कर दें? अगर अैसा हुआ, तो हिन्दुस्तान, हिन्दू धर्म और अिस्लामकी क़ब्र बन कर रहेगा। हिन्दुस्तानके टुकड़े करना हो, तो समझा-बुझा कर करें। पाकिस्तानके लिअे लड़ना ही है, तो शराफ़तसे लड़ें। जिन्ना साहबने कहा है कि जब पाकिस्तान बनेगा, तो हम यह दिखा देंगे कि अल्पमतवालों (माअिनॉरिटीज़)के साथ कैसा अिन्साफ़ किया जाता है। क्या पूरबी बंगालमें जो हो रहा है, वही अुसका नमूना है? पूरबी बंगालमें तो पाकिस्तान है ही। वहाँ मुसलमान ७५ फ़ी सदी और हिन्दू २५ फ़ी सदी या अुससे भी कम हैं। वहाँ मुसलमान जो चाहें, कर सकते हैं। मगर पूरबी बंगालमें वे जो कर रहे हैं, वह पाकिस्तानके लिअे बुरा शगुन है। तो क्या हिन्दू अिसका बदला लें? बदला लेना हैवानियत है। मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो यह कहना है कि हिन्दू और मुसलमान खुदाको हाजिर-नाजिर समझकर कसम खायें कि वे अेक-दूसरेका बाल भी बाँका न होने देंगे। अैसा न हो तो कैबिनेटमें कांग्रेस और लीग क्या दुश्मन बन कर ही रहेंगे? हिन्दुस्तानका राज चलाने लायक़ हम तभी बन सकेंगे, जब हम हैवानियतको भूल जायँ और अिनसानियत सीखें।"

टेढ़ा तरीक़ा

गांधीजीको अुम्मीद थी कि लीग कैबिनेटमें आयेगी तो अुसका नतीजा मुल्कके लिअे अच्छा होगा। मगर जब लीगके नामोंकी फ़ेहरिस्त सामने आअी, तो अुसमें अेक हरिजनका नाम देखकर अुन्हें सदमा पहुँचा। पिछले बुधवारको शामकी प्रार्थना-सभामें अुन्होंने कहा — "मेरे-जैसे आदमीको तो अिस बातसे खुश होना चाहिये कि कैबिनेटमें हरिजनोंको अेक और सीट मिली। मगर मैं अैसा कहकर अपने-आपको और जिन्ना साहबको धोखा नहीं देना चाहता। जिन्ना साहब कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग राष्ट्र (नेशन) हैं। लीग सिर्फ़ मुसलमानोंकी संस्था है। तब अुनका नुमाअिन्दा हरिजन कैसे हो सकता है? लीग सीधे रास्तेसे कैबिनेटमें नहीं आअी है। मैं नहीं मानता कि अपने ५ अुम्मीदवारोंके कोटेमें अेक हरिजनको शामिल करके लीगने सच्ची अुदारतासे काम लिया है। पूरबी बंगालकी खबरें पढ़कर तो अैसा बिलकुल नहीं लगता। मुझे शक होता है कि क्या लीग कैबिनेटमें भी लड़नेके लिअे ही आ रही है? हिन्दुस्तानका जो थोड़ा-सा राज-काज हमारे हाथमें आया है, क्या अुसे भी वह बिगाड़ेगी? भगवान् करे, मेरा डर झूठा साबित हो! लीगवाले भाअीकी तरह मिलकर काम करें, और किसीको अुनके खिलाफ़ शिकायतका मौक़ा न मिले। मुझे अुम्मीद है कि जो हरिजनभाअी कैबिनेटमें आ रहे हैं, वे हिन्दुस्तानके सच्चे सपूत और सेवक साबित होंगे।"

औरतोंकी कसौटी

अेक दूसरे मौक़े पर गांधीजीने कहा — "पूरबी बंगालमें जो कुछ हो रहा है, वह कलकत्तेसे भी बदतर है। वहाँ कुछ लोगोंको मार डाला गया, जिसकी मुझे परवाह नहीं। महत्त्वकी बात यह है कि वे कैसे मरे — लाचारीसे या बहादुरीसे? अपने भाअीके हाथ मरनेसे बढ़कर चीज़ और क्या हो सकती है, बशर्ते कि हम बहादुरीसे मरें। २५ मुसलमान ५ हिन्दुओंको मार डालें, या बहुतसे हिन्दू मिलकर चन्द मुसलमानोंको क़त्ल कर डालें, यह तो निरी डरपोकपनकी बात है। मगर मरनेवाले बहादुर बनकर अपना सिर अूँचा रक्खें, सामनेवालेको मारनेकी खाहिश भी न करें और मर जायँ, तो अिससे बड़ी कोअी बहादुरी नहीं। लेकिन अुन औरतोंका क्या, जिन्हें भगाकर जबरन् मुसलमान बनाया जा रहा है? किसीके बनानेसे न कोअी मुसलमान बनता है, न हिन्दू, न अीसाअी। लेकिन हिन्दुस्तानी औरतें अपने-आपको अितनी बेबस क्यों समझें? क्या बहादुरी मर्दोंका ही अिजारा है? औरतोंके हाथमें आम तौर पर तलवार नहीं रहती। झाँसीकी रानीके हाथमें तलवार थी, और तलवारके जौहरमें वह अपने जमानेके सब लोगोंसे आगे बढ़ गअी थी। लेकिन सभी औरतें झाँसीकी रानी नहीं बन सकतीं। फिर भी अुन्हें भगाकर ले जानेवालोंको वे यह जरूर कह सकती हैं कि न तुम हमें मुसलमान बना सकते हो, न अपने घरोंमें डाल सकते हो। मरनेका अिल्म तो सब जानते हैं। सीता अेक दुबली-पतली और निरपराध स्त्री थी, लेकिन महाबली रावण भी अुसका कुछ नहीं बिगाड़ सका।"

गांधीजीने आगे चलकर कहा — "सीताकी मिसालको हम क़िस्से-कहानीकी बात कहकर अुड़ा न दें। मैंने मिस ओलिव डोकको देखा है। वह अकेली जंगली हब्शियोंके बीच रहती थीं। किसीने अुनकी तरफ़ आँख तक अुठानेकी हिम्मत नहीं की। मैं हिन्दुस्तानकी औरतोंमें अैसी ही सात्विक हिम्मत देखना चाहता हूँ। आज ... बंगालमें फ़ौज औरतोंको बचानेकी कोशिश कर रही है। लेकिन ... भगा लिया गया है, या जो फ़ौज या पुलिसकी हिफ़ाज़तके बाद ... भी भगाअी जा सकती हैं, अुनका क्या? अुन्हें अपनी हिफ़ाज़त ... खुद करनी होगी। अुसका अेक ही अचूक रास्ता है — मरनेकी ... सीखना। जिसे मरना ही है, वह अपनी जीभ काटकर या साँस ... कर भी मर सकता है।"

बेअिज्ज़तीसे मौत भली

गांधीजीकी अिस बातको सुन कर डॉ० सुशीला नय्यरने ... कहा कि जीभ काटकर या साँस रोककर मरना मुमकिन नहीं ... दूसरे दिन सुबह गांधीजीसे मिलते वक़्त डॉ० विधानचन्द्र रायने ... सुशीला नय्यरकी बातकी ताअीद की। डॉक्टरी मतसे तत्काल ... त्यागके लिअे तेज़ ज़हर ही अेक अिलाज हो सकता है। दूसरे ... शामकी प्रार्थना-सभामें अिसका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने कहा ... "अगर मरनेका सीधा रास्ता ज़हर ही हो, तो मैं कहूँगा कि बेअि... करानेकी बनिस्बत ज़हर खाकर मर जाना बेहतर है। मगर मैं ... जाननेवालोंसे अिस बारेमें दरयाफ़्त करूँगा। मेरा ख़याल है ... ज़हरके सिवा भी मरनेका रास्ता होना चाहिये। हमने ... लड़कियोंको बेबसीकी तालीम दी है। हमने अुन्हें सिखाया ... कि अुनकी हिफ़ाज़त अपने पतिके साथ या चिता पर ही हो ... है। अगर अिस तरह हिन्दुस्तानके ४० करोड़ लोगोंमेंसे आधे बेबस ... जायँ, तो सच्ची आज़ादी आ नहीं सकती। औरतोंके दिल में यह ... होना चाहिये कि अपनी अिज़्ज़त बचानेवाली वे खुद हैं। जिसने मौ... डरको जीत लिया है, अुसकी बेअिज़्ज़ती कौन कर सकता है? जि... खंजर रखना हो, वे भले खंजर रक्खें। लेकिन खंजरसे अेक-दोका साम... किया जा सकता है, सैकड़ोंका नहीं। खंजर तो कमज़ोरीकी निशानी है। ... आख़िरकार जान पर खेल जानेकी तैयारी ही हर हालत में औरतों... अिज़्ज़त बचा सकती है। और कुछ न कर सकें तो वे अपने ... में ज़हर ही रक्खें। ज़हर खाकर मरना नैतिक पतन से ... अच्छा है।

"अेक मुसलमान भाअी लिखते हैं कि जब मुसलमान ज़्या... करते हैं, तो मैं अुनकी निन्दा करता हूँ। लेकिन जब हिन्दू ज़्या... करते हैं, तो मैं चुप रहना ही अच्छा समझता हूँ। यह स... ग़लत है। मेरे लिअे तो हिन्दू-मुसलमान सभी सगे भाअी-जैसे हैं।"

खादीका विकेन्द्रीकरण

चरखा-संघकी पिछली बैठकमें कअी मसलों पर जो बहस हु... अुसके बारेमें पिछले हफ़्ते मैंने काफ़ी लिखा है। अुस बैठकमें अि... सवाल पर भी बहस हुअी कि संघकी सत्ता मुक़ामी खादी संस्थाओं... दे दी जाय। यह सुझाव पेश किया गया कि हर जगह मुक़ा... समितियाँ ही खादीकी नीति तय करें, और ये समितियाँ केन्द्री... (मरकज़ी) संघसे पूरी तरह आज़ाद हों। गांधीजी खादीके काम... और ज़िम्मेदारीका विकेन्द्रीकरण तो चाहते हैं, मगर हर जगह ... कार्यकर्त्ताओंके बदले आम लोगोंकी समितियाँ बनाना अुन्हें पसन्द नहीं ... "खादीके कामको बढ़ानेके लिअे होशियार कारीगरों, विशेषज्ञों ... व्यापार-बुद्धिवाले सेवाभावी लोगोंकी ज़रूरत है। अुसमें ... महत्त्वाकांक्षाओंको या सत्ता पानेकी खाहिशको कोअी जगह नहीं ... कांग्रेसमें सत्ता पानेकी खाहिश घुस आअी है। मेरी निगाहमें कांग्रे... अिस गन्दगीको निकालनेका अेक ही रास्ता है। वह यह कि कां... काम करनेवाले लोगोंकी संस्था बने। खादीके काममें लोकसत्ता ... जमहूरियतके अुसूलको दाखिल करनेसे खादी खतम हो जायगी। कांग्रे... तरह चरखा-संघ लोकसत्ताक (डेमॉक्रेटिक) संस्था नहीं है। चर... संघ कांग्रेसकी बनाअी हुअी संस्था है, और जमहूरियत या लोकस... निर्माण करनेके लिअे बनाअी गअी है। बैंक ऑव् अिंग्लै...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...रेटर या प्रबन्धक मंडलकी तरह संघ हर तरहसे अेक व्यापारी ... है। फ़र्क़ सिर्फ़ अितना है कि अिसका मक़सद मुनाफ़ा कमाना ... लोगोंकी सेवा करना है। किसी लोकसत्ताक संस्थाकी व्यापारी शाखाका ... आम लोगोंके वोटसे नहीं चल सकता।

... हमें देहातमें फैल कर लोगोंकी खिदमत करनी है। खादी-... अिसके अलावा कोअी दूसरी सत्ता जमा कर काम करना ... तो खादीको मार डालेगा।"

... दोस्तने पूछा — "खादीको आम अिस्तेमालकी चीज़ बनानेके ... हमें सबका सहयोग तो चाहिये न?"

... गांधीजीने जवाब दिया — "खादीका काम करनेवालोंको लोगोंका ... बनना है। अगर अुनमें थोड़ी भी क़ाबलीयत होगी, ... आप लोगों पर अुनका असर पड़ेगा और लोग अुन्हें ... होंगे। लोगोंकी समितियाँ कामको आगे बढ़ानेके बजाय ... रुकावट डालनेवाली साबित हो सकती हैं। लेकिन सेवाके ... खादीके जो हिमायती पैदा होंगे, वे बहुत मददगार होंगे।"

... सवाल यह पूछा गया — "विकेन्द्रीकरणके बाद चरखा-संघकी ... होगी?"

... गांधीजीने फ़ौरन जवाब दिया — "अुस हालतमें संघकी सत्ता सिर्फ़ ... अिख़लाक़ी होगी। वह सत्ता आजसे ज़्यादा पुरअसर ... चरखा-संघ रुपया नहीं देगा, व्यापार नहीं करेगा, लेकिन ... अुसको नैतिक बल देकर अुसका रास्ता आसान करेगा। वह ... काम करनेवालोंको अपने नामका अिस्तेमाल करने देगा, ... पर अपनी हुकूमत नहीं लादेगा। जो अुसकी नीति मान ... संघका नैतिक बल मिलेगा। चरखा-संघके पास आज जो ... अुसकी जो शाखा आज़ाद होना चाहे, या आज़ाद ... समझी जाय, अुसे मिल सकती है। शर्त यही है कि वह ... ठीक ढंगसे अिस्तेमाल करनेकी गारण्टी दे और अेक ... अरसेके बाद अुसे लौटा दे। चरखा-संघको हक़ होगा कि वह ... पर अुसके कामको देखे, मगर यह भी अुस आज़ाद ... शाखाकी राज़ी-रज़ामन्दीसे ही किया जायगा।"

... दिल्ली, १८-१०-'४६

(...)

प्यारेलाल

... बायकाट का सामना कैसे करें?

... (कुर्ग)से अेक भाअीने पूछा है कि कअी नौजवान ... गाँवके देवोंके नाम पर की जानेवाली जानवरोंकी क़ुरबानियों ... नहीं करते, अिसलिअे गाँववालोंने अुनका बायकाट करनेकी ... है। अैसी हालतमें अुन सुधारकोंको क्या करना चाहिये?

... में कहीं भी सुधारकोंका काम आसान नहीं होता। अुन्हें ... धमकीसे डरना नहीं चाहिये। बायकाटकी वजहसे होनेवाली ... के लिअे अुन्हें तैयार रहना चाहिये, और अुन्हें ख़ुशी-ख़ुशी ... चाहिये। किसी हालतमें अुन्हें अुन गाँववालों पर नाराज़ नहीं ... होना चाहिये, जो अन्धी श्रद्धावाले रिवाजोंको सचाअीके साथ मानते हैं। ... यह लोगोंकी सच्ची तालीमका सवाल है। गाँवके अिन ... की हस्ती गाँववालोंके दिमाग़के सिवा और कहीं नहीं ... अिसलिअे, सुधारकोंको चाहिये कि वे बायकाटकी परवाह किये ... गाँववालोंको समझानेकी कोशिशमें लगे रहें, और साथ ही ... अुनकी खिदमत भी करते रहें। अपने सामने पड़नेवाली ... और मुसीबतोंके पहाड़ोंको सुधारक सब्र और लगन से ... कर सकते हैं। वे गाँववालोंके खिलाफ़ पुलिसकी मदद ... न लें।

... दिल्ली, १८-१०-'४६

(...)

मो० क० गांधी

अखिल भारत-चरखा-संघके प्रस्ताव

१. अखिल भारत-चरखा-संघको अपने अनुभवसे विश्वास है कि हिन्दुस्तानमें और दुनियाके मलाया आदि जैसे दूसरे मुल्कोंमें कपड़ेकी कमीके कारण जो स्थिति अुत्पन्न हो गअी है, वैसी स्थिति कहीं भी न होने देनेका साधन चरखा और हाथ-करघा है। अकेला हिन्दुस्तान ही अैसा देश है, जहाँ पुराने ज़मानेसे हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीसे खादी बनती आअी है, और कपड़ेकी मिलोंकी बहुतायत होने पर भी अखिल भारत-चरखा-संघ द्वारा शुद्ध खादी तैयार हो रही है। चरखा-संघके क़रीब २५ सालके कार्यकालमें लगभग ७ करोड़ रुपया देशकी ग़रीब कत्तिनों और बुनकरोंमें बाँटा गया है।

२. जो सरकारें ग्रामोद्योगकी आर्थिक योजनाको महत्त्व देकर खादीका काम करना चाहती हैं, अुनके लिअे नीचे लिखी बातोंकी व्यवस्था करना निहायत ज़रूरी है—

(क) अेक पंचवर्षीय योजना बनाकर अपने-अपने प्रान्तकी सब प्राथमिक तथा मिडिल पाठशालाओं और नॉर्मल स्कूलोंमें विद्यार्थियोंको कताअी सिखानी चाहिये, और हरअेक पाठशालामें हाथ-सूत बुननेका कम-से-कम अेक करघा ज़रूर चलना चाहिये। शालाओंमें बुनियादी तालीम जल्दी-से-जल्दी और बड़े-से-बड़े पैमाने पर शुरू होनी चाहिये।

(ख) बहुधन्धी सहकारिता समितियाँ स्थापित करके अुनके द्वारा ग्राम-सुधारके अंगभूत खादीका काम करना चाहिये।

(ग) जहाँ कहीं कपासकी खेती नहीं होती, वहाँ कपास पैदा करनेकी व्यवस्था करनी चाहिये, और अैसा प्रबन्ध होना चाहिये कि कातनेवालोंको रूअी, कपास और दूसरा सामान सुविधासे मिल सके।

(घ) खादी-विशारद तैयार करने चाहियें। खादीके काममें सुधार करना चाहिये।

(च) ग्रामोत्थानके काममें कताअीका किसी-न-किसी प्रकार सम्बन्ध आयेगा ही, अिसलिअे सरकारके सहकारिता, शिक्षा और कृषि-विभागों, डिस्ट्रिक्ट और म्युनिसिपल बोर्डों और ग्राम-पंचायत आदिके सब कर्मचारियोंको खादी-प्रवेश-परीक्षा पास कर लेनी चाहिये, और अिस परीक्षाको नये सिरेसे पास किये बिना किसीको अिन विभागोंकी नौकरीमें नहीं लेना चाहिये।

(छ) हाथ-करघे पर मिलके सूतसे बने हुअे कपड़ेके मूल्य पर नियंत्रण होना चाहिये।

(ज) अप्रमाणित खादीका व्यापार खादीके नाम पर नहीं करने देना चाहिये।

(झ) सरकारी टेक्सटाअिल विभाग और बुनाअीशालाओंमें केवल हाथ-कते सूतको स्थान मिलना चाहिये। जेलोंमें कताअी-बुनाअी चलनी चाहिये।

३. प्रान्तीय सरकारों और देशी रियासतोंसे अपील की जाती है कि वे दूसरी बातोंके साथ-साथ अूपर लिखी बातें करके खादीको व्यापक बनानेकी कोशिश करें। अिस कामको अंजाम देनेमें चरखा-संघ और अुसकी शाखायें भरसक मदद देनेको तैयार हैं।

४. मिल-मालिकोंसे प्रार्थना की जाती है कि वे अिस ज़रूरी काममें मदद दें। चरखा-संघकी सलाहसे सरकारों और मिलों द्वारा अैसी व्यवस्था होनी चाहिये कि जिस प्रदेशमें कताअी-बुनाअीका काम हो सके, वहाँ मिलका कपड़ा न भेजा जाय। अिसके अलावा, नअी मिलें न बनाअी जायँ, और पुरानी मिलोंमें कताअी और बुनाअीके नये साँचे न लाये जायँ। मिलोंका कार-बार चरखा-संघ और सरकारकी सलाहके मुताबिक़ चलाया जाय। अिस कामके लिअे सरकार ज़रूरी क़ानून पास करे, और उस पर अमल करे। देशमें किसी क़िस्मका परदेशी सूत और कपड़ा क़तअी न आने पाये। मिल-मालिकोंसे यह भी अनुरोध किया जाता है कि वे करोड़ोंके अिस काममें मदद करें और प्रजाका साथ दें।

नअी दिल्ली, १०-१०-'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२७ अक्तूबर १९४६

हाथ-कता बनाम मिलका कपड़ा

मद्रासकी चेम्बर ऑव् कॉमर्स (व्यापारी-मंडल) जैसी पूँजीपतियोंको फ़ायदा पहुँचानेवाली बड़ी जमातें और वहाँके कुछ कांग्रेसी भी, सूबेके वज़ीरे आज़मके खिलाफ़ हो गये हैं। मद्रासके अखबारोंकी कअी कतरनें मेरे पास भेजी गअी हैं। कहते हुअे अफ़सोस होता है कि यह नुकताचीनी मुझे स्वार्थ और नासमझीसे भरी हुअी मालूम होती है।

अिस झगड़ेमें मेरा नाम भी घसीटा गया है। चूँकि मैं प्रकाशम्‌जीकी स्कीम (योजना)का समर्थक हूँ, अिसलिअे अिस सीधे-सादे सवालकी निष्पक्ष बहस पर कोअी असर नहीं पड़ना चाहिये।

सवाल सिर्फ़ यह है — अगर मद्रास सरकार नअी मिलोंके खुलनेमें बढ़ावा दे, या पुरानी मिलोंको अपनी मशीनें बढ़ाकर दुगना माल पैदा करनेमें मदद दे, तो क्या खादी आम जनतामें फैल सकेगी? क्या गाँववालोंको अितना भोला समझ लिया गया है कि अेक खास लम्बाअीका कपड़ा बुननेके लिअे जितनी क़ीमतके कपासकी ज़रूरत होती है, अुससे भी कम क़ीमत पर अुन्हें मिलका कपड़ा बेचा जाय, तो वे अितनी सी बात भी नहीं समझेंगे कि यह खादीके साथ महज़ खिलवाड़ किया जा रहा है? जब जापानने अपना कपड़ा हिन्दुस्तान भेजा था, तब अैसा ही हुआ था।

अिसमें कोअी शक नहीं कि मद्रासवाली योजना अिसी ग़रज़से बनाअी गअी है कि किसान अपने खाली वक़्तमें कताअी करके अपने पहनने लायक़ कपड़ा खुद तैयार कर लिया करें। लोग अपने खाली वक़्तको अुपयोगी, राष्ट्रीय और प्रामाणिक मेहनतमें खर्च करें, अिस बातके लिअे अुन्हें समझाना क्या निरा शेखचिल्लीपन है?

जब बेकारोंके लिअे अेक अुपयोगी और ज़्यादा फ़ायदेमन्द कामकी कोअी अमली योजना सामने आयेगी, अुस वक़्त मद्रास सरकारके खिलाफ़ आवाज़ अुठाना मुनासिब होगा। जो लोग सचाअीके साथ मुल्ककी सेवा कर रहे हैं, अुन्हें आदर्शवादी, पागल या धुनी कहकर अुनकी बात पर ग़ौर करनेसे अिनकार करना दिलबहलावका कोअी अच्छा ज़रिया नहीं।

पूँजीपतियों और समाजमें अपनी जगह बनाकर बैठे हुअे लोगोंको चाहिये कि वे ग़रीब देहातियोंके खिलाफ़ न खड़े हों और अुन्हें बाअिज़्ज़त मेहनत करके अपनी बेहालीको सुधारनेसे न रोकें।

मद्रासवाली योजनामें नअी मिलोंके बारेमें जो अेक भारी भूल रही थी, अुसे मैंने पकड़ लिया था। जब टेक्सटाअिल-कमिश्नरको दोनों चीज़ें (चरखा और मिल) अेक साथ चलानेकी ग़लती जँच गअी और चरखा-संघकी तैयार की हुअी योजनाका असलीपन अुनकी समझमें आ गया, तो अुन्होंने मद्रास-सरकारसे अुसकी सिफ़ारिश की। अगर यह योजना अमली या कारआमद साबित न हुअी, तो अुससे टेक्सटाअिल कमिश्नरकी ही नेकनामीको धक्का लगेगा, नुकताचीनी करनेवालोंको नहीं।

यह अेक प्रजातंत्री (जमहूरी) सरकारका आम जनताकी भलाअीके लिअे अुठाया गया क़दम है।

अिसलिये जहाँ यह योजना अमलमें लाअी जाय, कम-से-... वहाँके लोगोंको तो अिसे ज़रूर अपनाना चाहिये।

वह अेक आदमीकी स्कीम न होकर पूरी सरकारकी स्कीम ...

अुसके पीछे धारासभा या अेसेम्ब्लीका पूरा ज़ोर हो।

अुसमें ज़बरदस्तीकी बू भी न आनी चाहिये।

वह दरअसल अमलमें आने लायक़ और आम जनताके ... फ़ायदेमंद होनी चाहिये।

योजनाकी कामयाबीकी ये सब शर्तें लिख ली गअी हैं। मैं ... हूँ कि विशेषज्ञोंसे और आपसमें पूरी बहस करनेके बाद ही ... सरकारने अिन्हें ज्यों-का-त्यों मान लिया है।

याद रहे कि मद्रासकी मौजूदा मिलोंको अभी नहीं ... जायगा। अगर किसी दिन यह योजना जंगलकी आगकी तरह ... और मुझे अुम्मीद है कि अैसी चीज़ किसी दिन ज़रूर सब ... फैल जायगी, तब अिसमें कोअी शक नहीं कि समूचे मिल-... पर अुसका असर पड़ेगा। अगर अैसा दिन कभी आये, तो ... बड़े सरमायादारको भी अुसके न आनेकी ख़्वाहिश नहीं करना चा...

तब ग़ौर करने लायक़ सवाल सिर्फ़ यह रह जाता है कि ... सरकार अीमानदार और लायक़ है या नहीं। अगर वह नहीं ... तो हर चीज़ गड़बड़ होगी। और अगर वह अीमानदार और ला... है, तो यह योजना ज़रूर क़ामयाब होगी और अिसे सबकी ... मिलेंगी।

नअी दिल्ली १७-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

हिंसा के तरीक़े

सीधी लकीर अेक ही होती है। अहिंसा अेक सीधी ... है। जो लकीरें सीधी नहीं, वे कअी तरह की होती हैं। ... बच्चे ने क़लम पकड़ना सीख लिया है, वह और कितनी ही तरह ... लकीरें चाहे खींच ले, मगर अेक सीधी लकीर नहीं खींच सक... धोखे से अेक आध बार सीधी बन जाय तो बात दूसरी है। ... लोग पूछते हैं कि मैंने जिस हिंसा की अिजाज़त दी है, ... अुसमें वे सब बातें आ सकती हैं, जिनका वे अपने ख़त में ... करते हैं। यह अजीब बात है कि सभी ख़त अंग्रेजी में लिखे ... हैं। अिन लिखनेवालों को मेरा लेख दुबारा पढ़ जाना चाहिये। ... अुन्हें मालूम हो जायगा कि क्यों मैं अिन सवालों का जवाब ... दे सकता। शायद मैं अिसलिअे भी जवाब देने लायक़ नहीं ... कि मैंने कभी हिंसा की ही नहीं। असल में तो मैंने कभी हिं... अिजाज़त भी नहीं दी। मैंने बहादुरी और डरपोकपन के दो दर... ही बयान किया है। क़ानूनी चीज़ तो अहिंसा ही है। यहाँ ... गये अर्थ में हिंसा कभी जायज़ नहीं हो सकती — यानी अिन्सा... बनाये क़ानून की रूसे नहीं, बल्कि अिनसान के लिअे अुदार... बनाये क़ानून की रू से हिंसा कभी क़ानूनी नहीं हो सकती। ... या किसी निराधार के बचाव के लिअे जो हिंसा की जाती है ... भी वैध या क़ानूनी तो नहीं होती, फिर भी वह अेक बहादु... काम ज़रूर है, जो डर कर शरण जाने से कहीं अच्छा ... डरपोकपन किसीको शोभा नहीं देता — न आदमी को, न ... को। हिंसा में भी बहादुरी की कअी क़िस्में और कअी दर्जे ... हैं। हरअेक आदमी को अिसका फ़ैसला खुद करना चाहिअे। ... कोअी न तो कर सकता है, न अुसे करने का हक़ है।

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रजकिशोर बाबू

अेक लम्बी बीमारीके बाद ब्रजकिशोर बाबू की मृत्युसे गांधीजीके पुराने सत्याग्रही साथियोंमेंसे अेक कसा हुआ और मँजा हुआ साथी चला गया। अुनका नाम हिन्दुस्तानमें सत्याग्रहकी तवारीख़ के अेक शानदार अध्याय (बाब) की याद दिलाता है। चम्पारनके जन-सत्याग्रहमें गांधीजीसे अुनका पहले-पहल परिचय हुआ था। अुस वक़्त तक हिन्दुस्तानकी राजनीतिमें गांधीजीका अुतना नाम नहीं था और वे अपने ही जैसे अेक अप्रसिद्ध व्यक्ति — राजकुमार शुक्ल — के आग्रहसे चम्पारन गये थे। ज़बरदस्ती नीलकी खेती करानेके अत्याचारी और बदनाम रिवाजके ख़िलाफ़ सब ओरसे आवाज़ अुठ रही थी, क्योंकि अुसने किसानों को नीलकी खेती करनेवाले यूरोपियनोंका अेक तरह से गुलाम ही बना दिया था। यह बुराअी सदियों से चली आ रही थी और अिसके पीछे पूँजीपतियों (सरमायादारों) की ताक़त और गोरोंकी शानका झूठा ख़याल था। मैदानमें उतरने के पहले गांधीजीने वहाँके आन्दोलनसे सम्बन्ध रखनेवाले मुक़ामी नेताओंसे मशविरा किया। अुनमें स्वर्गीय ब्रजकिशोर बाबूके अलावा श्री राजेन्द्र बाबू भी थे। अुन दिनों वे अपनी वकालत में बहुत नाम कमा चुके थे और हाअीकोर्टकी जजीके लिअे अुनका नाम लिया जाने लगा था। क़रीब आधे दर्जन दूसरे वकील भी थे। ये सब ब्रजकिशोर बाबूको अपना मुखिया मानते थे।

सारी रात की बहसके बाद ब्रजकिशोर बाबूने और अुनके साथियोंने अपने-आपको गांधीजीकी मर्ज़ी पर छोड़ दिया।

गांधीजीने अुनसे कहा–"लेकिन तुम्हें अपनेको वकील या नेता समझना छोड़ना पड़ेगा। तुम्हें नक़लनवीस और दुभाषिया बनना होगा। तुम्हारा ख़ास काम व्याख्या करना और तरजुमा करना होगा।"

अुनकी तरफ़ से ब्रजकिशोर बाबूने कहा–"अिस पर ग़ौर करने के लिअे हमें थोड़ा वक्त दीजिये।"

दूसरे दिन अुन्होंने गांधीजी को अपना फ़ैसला बता दिया। और वे अुस फ़ैसले से कभी नहीं डिगे। प्रार्थनाके बाद की अपनी तक़रीरमें स्व० ब्रजकिशोर बाबूके बारेमें अपने अूँचे ख़याल ज़ाहिर करते हुअे गांधीजीने कहा–"मैंने अुनके रिश्तेदारों को हमदर्दीका संदेश भेजनेके बजाय अुन्हें भेजे तार में यह लिखा है कि चूँकि दयालु मौतने ब्रजकिशोर बाबूको तकलीफ़ों से छुड़ा दिया है, अिसलिअे आप लोगोंको ख़ुशी मनानी चाहिअे।" गांधीजीने ब्रजकिशोर बाबूकी कभी न डिगनेवाली श्रद्धाका और दृढ़ संकल्पका ज़िक्र किया। "जब अेक बार वे कोअी बात तय कर लेते थे, तो अुसे कभी बदलते न थे, और न कभी पीछे मुड़कर देखते थे।" वे बहुत अूँचे दरजेके व्यवहारकुशल आदमी थे। वे बड़े चतुर राजनीतिज्ञ थे। शायद बिहारभरमें अुनसे ज़्यादा चतुर राजनीतिज्ञ कोअी नहीं था। गांधीजी से मिलनेके पहले ही बड़ी चतुराअी से अेक पार्टीको चलाने में अुन्हें शोहरत हासिल हो चुकी थी। गांधीजीके लिअे अुनमें अपार भक्ति थी। अपनी लड़की प्रभावतीको अुन्होंने श्री जयप्रकाश नारायणके साथ शादी होनेसे पहले ही साबरमती-आश्रम में भेज दिया था। वह तो जैसे गांधीजीकी लड़की ही बन गअी थी। ब्रजकिशोर बाबू बिहारके आसमान में अेक तेज़ चमकते हुअे सितारे थे। अुनकी याद हमेशा बनी रहेगी।

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६
(अंग्रेज़ी से)

प्यारेलाल

दर्द

हाल ही अेक दिन अेक दोस्त गांधीजीके साथ कलकत्तेकी पिछली दिल कँपानेवाली वारदातोंके बारेमें बातचीत कर रहे थे। अुनका भावुक और संस्कारी हृदय तंग क़ौमी ख़यालोंको सोच भी नहीं सकता था। कलकत्तेमें लोगोंकी जो प्राणहानि हुअी, अुसके लिअे अुन्हें अफ़सोस हो रहा था, मगर वहाँकी वारदातोंकी वजहसे लोगोंकी अिनसानियत जिस हद तक गिर गअी थी, अुससे तो अुन्हें बेहद रंज हो रहा था। "जो लोग पहले कभी क़ौमी ख़यालसे सोचते न थे, वे अब क़ौमी ज़हनियत रखने लग गये हैं। लेकिन बात यहीं ख़त्म नहीं हो जाती। यह पागलपन तो दिन-दिन फैलता ही जा रहा है।" अुन्होंने कहा।

जब गांधीजी बैठे बंगालकी दर्दभरी कहानियाँ सुन रहे थे, तभी अुन्होंने अपने मनके साथ अेक फ़ैसला कर लिया। अुन्होंने कहा — "अबकी अगर मैं दिल्लीसे जाअूँगा, तो सेवाग्रामके लिअे नहीं, सीधे बंगाल पहुँचनेके लिअे ही जाअूँगा; वरना यहीं रहूँगा और अुरा करूँगा।"

शामको गांधीजीने अिस मामलेमें बंगालके दो मित्रोंकी सलाह ली। मित्रोंने कहा — "पहले हमें वहाँ जाने दीजिये। हम बंगाल जाकर वहाँकी हालतका बयान भेजेंगे। हमें मौक़ा दीजिये कि हम वहाँ अपने भरसक कुछ करें। बादमें ज़रूरत समझें, तो आप जायँ।" गांधीजी राज़ी हो गये।

अिस बातचीतके दरमियान अेक दोस्तने गांधीजीसे पूछा कि बंगालमें क़ौमी पागलपनकी जो आग धधक अुठी है, क्या अुसे बुझानेके लिअे आप अुपवास करनेकी सलाह देंगे? गांधीजीने कहा — "नहीं"। और बोले — "अहमदाबादके अेक कार्यकर्त्ताने मुझे लिखा था कि अिस मौक़े पर मैं अपनी क़ुरबानी कर दूँ। अुन्होंने मुझे लिखा था कि वे अहिंसक तरीक़ेमें मानते हैं, मगर अुस पर अमल करनेकी ताक़त अुनमें नहीं। 'आपकी मिसाल हमारी डगमगाती श्रद्धाको मज़बूत बनायेगी और हमें बल पहुँचायेगी'। अुनकी बात बिलकुल सही थी और वैसा करनेका लालच भी ज़बरदस्त था। लेकिन मैंने अुसे अपने अूपर हावी न होने दिया और अिनकार किया। अिसके लिअे मुझे अन्दरसे अभी कोअी हुक्म नहीं मिला। जब मिल जायगा, तो कोअी चीज़ मुझे रोक न सकेगी। अिसके बारेमें मैंने अपने मनके साथ दलीलें की हैं। लेकिन यहाँ अुन सब दलीलोंका ज़िक्र करनेकी ज़रूरत नहीं। लोग चाहे मुझे डरपोक कह लें। मुझे विश्वास है कि जब मौक़ा आयेगा, तो भगवान् अुसका सामना करनेकी ताक़त भी मुझे देगा। अुस वक़्त मैं सुस्त नहीं रहूँगा।"

क़ुरबानीका रास्ता

आगे चल कर गांधीजीने कहा — "अुपवास, यंत्र या मशीनकी तरह नहीं किया जा सकता। वह अेक शक्तिशाली चीज़ है। अगर अुसका अिस्तेमाल बिना सोचे-समझे किया जाय, तो वह ख़तरनाक होगा। अुसके लिअे पूरी-पूरी आत्मशुद्धिकी ज़रूरत है। मनमें भी दुश्मनीका ख़याल तक न रख कर मौतका सामना करनेके लिअे जितनी आत्मशुद्धि ज़रूरी है, अुससे कहीं ज़्यादा अिसके लिअे ज़रूरी है। पूर्ण बलिदानकी अेक ही मिसाल सारी दुनियाके लिअे काफ़ी हो सकती है। अीशुकी मिसाल अैसी ही मानी जाती है।"

अिसी सिलसिलेमें गांधीजीने आगे कहा — "अिसकी तहमें ख़याल यह है कि अीशुने आख़िरी भोजनकी रोटी और शराबके प्रतीक द्वारा क़ुरबानीका जो अुसूल सुझाया है, अुसे हम समझें और अपनायें। अेक बिलकुल निर्दोष आदमीने अपने दुश्मनों समेत सबकी भलाअीके लिअे अपनी पूरी क़ुरबानीकी और वह सारी दुनियाका तारनहार बन गया। वह अेक पूरा-पूरा नेक काम था। अीशुके आख़िरी बोल ये थे — 'यह पूरा हुआ है।' और अिसकी सचाअीके लिअे अुसके चार शिष्यों या शागिर्दोंकी गवाही हमारे पास है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" लेकिन अीसाकी यह पुरानी परम्परा तवारीखी खयालसे सच है या नहीं, अिसकी मुझे परवाह नहीं। मेरे लिअे तो वह तवारीखसे भी ज़्यादा सच है। क्योंकि मैं मानता हूँ कि अैसा हो सकता है, और अिसमें वह सनातन नियम या क़ानून समाया हुआ है, जिसके मुताबिक़ आदमी ख़ुद निर्दोष या बेगुनाह होते हुअे भी दूसरोंके लिअे तकलीफ़ अुठाना पसन्द करता है।"

अिसके बाद गांधीजीने बताया कि आजकी हालतमें अीशुकी मिसालपर किस तरह अमल किया जा सकता है। अुन्होंने कहा— "बम्बअीमें अेक हिन्दू और अेक मुसलमानने पागल बने लोगोंकी भीड़के रोषका सामना किया। वे अेक-दूसरेको गले लगाकर मर मिटे, मगर अुन्होंने अेक-दूसरेको छोड़नेसे क़तअी अिनकार किया। अिसी तरह रजबअली और वसन्तराव हेगिष्टे भी भीड़के अुन्मादको शान्त करनेके लिअे गये और काम आये। शायद लोग पूछेंगे कि 'अिसका नतीजा क्या निकला? आग तो आज भी धधक ही रही है।' मैं नहीं समझता कि ये कुरबानियाँ बेकार हुअी हैं। हाँ, यह हो सकता है कि आज हमें अिनका असर न दिखाअी पड़े। हमारी अहिंसा अभी खालिस अहिंसा नहीं बनी है। वह लँगड़ी चालसे चल रही है। फिर भी वह चुपचाप और अदृश्य रीतिसे हिंसाके अुतारका काम कर रही है। ज़्यादातर लोग अिस बातको बहुत कम जानते हैं। लेकिन यही अेक रास्ता है।" अपनी बातको और मज़बूत बनानेके लिअे गांधीजीने चम्पारनके सत्याग्रहके अितिहासकी याद दिलाअी। ज़बरदस्ती नीलकी खेती करानेके बदनाम तरीक़ेके खिलाफ़ पचास बरसोंमें कअी बार ख़ूँख़ार बलवे हुअे थे। लेकिन अैसी हरअेक कोशिशके बाद किसानोंके बन्धन और भी मज़बूत बनते गये थे। बादमें हिंसक कार्रवाअियोंसे बिलकुल अलग रहकर किया गया चम्पारनका सामूहिक सत्याग्रह शुरू हुआ, और छह महीनोंके अन्दर ही सौ साल पुरानी बुराअी मिटा दी गअी।

आखिर में गांधीजीने अुन मित्रोंकी तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा— "मैं अपनी बात कह चुका। अब आप अपना काम करनेके लिअे रवाना हो जाअिये। मैं आपको अेक दिन भी ज़्यादा नहीं रोकूँगा। मेरे आशीर्वाद आपके साथ हैं। और मैं कहे देता हूँ कि अगर कल ही मुझे खबर मिली कि आप तीनों मारे गये हैं, तो अुससे मेरी आँखोंमें आँसू नहीं आयेंगे, बल्कि मैं ख़ुश होअूँगा।"

तीनों जने अेक साथ कह अुठे— "अिस तरह मौतसे मिलना हमारे लिअे भी सच्चे आनन्दकी बात होगी।"

गांधीजीने फिर कहा— "लेकिन मेरी अेक बात याद रखिये। अगर आप जाते हैं तो अिस ख़यालसे जाअिये कि आप अपना वहाँ जाना ज़रूरी समझते हैं। मेरे कहनेसे न जाअिये। अिस मामलेमें कोअी बेवक़ूफ़ी या हठधर्मी न होनी चाहिये।"

आगकी अुन लपटोंका सामना करनेके लिअे जाते वक़्त बिदा लेते हुअे तीनोंने अेक साथ जवाब दिया— "सो तो है ही।"

अीश्वरके हाथमें

अुस दिन शामकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने कहा— "मेरे पास बंगालसे बहुत सारे सँदेशे आये हैं, जिनमें मुझसे कहा गया है कि मैं बंगाल पहुँचूँ और वहाँ जो आग धधक रही है, अुसे बुझाअूँ। मैं नहीं मानता कि मुझमें अैसी कोअी ताक़त है। फिर भी मैं बंगाल जाना तो चाहता ही हूँ। लेकिन मेरा फ़र्ज़ है कि मैं पण्डित नेहरूके वापस दिल्ली आने तक यहाँ ठहरूँ। फिर भी मैं तो अीश्वरके हाथमें हूँ। अगर मैं यह महसूस करूँ कि मुझे किसीके लिअे ठहरनेकी ज़रूरत नहीं, तो मैं अुससे पहले जानेमें भी नहीं हिचकिचाअूँगा। मेरा दिल तो बंगालमें ही है।"

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

मैं हारा

अप्रमाणित खादी के बारेमें मुझ पर ख़तोंकी बौछार-सी हो रही है। ख़त भी जाने-पहचाने और अनुभवी लोगोंके हैं। मुझे अपनी दलीलमें कोअी दोष नज़र नहीं आता। मेरी हार अिस बातमें है कि अप्रमाणित खादी बहुत ज़्यादा है। लेकिन सच्ची या प्रामाणिक खादी कहीं ढूँढे नहीं मिलती। अगर यह सच है, तो मुझे अपनी बात वापस ले लेनी चाहिये, और मैं लिये लेता हूँ।

यहाँ यह समझ लेना ज़रूरी है कि हार किस बात में है। मुझे अिसमें शक नहीं कि प्रामाणिक खादी अप्रमाणित होने पर भी मिलके कपड़े से बढ़कर है। किसीको अिसमें कोअी शक नहीं। लेकिन मित्र मेरी बातका मज़ाक अुड़ाते हैं, क्योंकि प्रमाणित खादी सब अंकित है। जो बाज़ारमें मिलती है, वह नक़ली खादी है। अुसमें मिलावट है, दग़ा है, और निरी लूट मचाने की नीयत है। अैसी खादी तो मिलके कपड़े के बराबर ही मानी जा सकती है। मुझे यह मंज़ूर कर लेना चाहिये। मुझे विश्वास करने लायक़ ज़रियोंसे ख़बर मिली है कि कुछ लुटेरे व्यापारी मेरे लेखे के सहारे अपनी लूट बढ़ा सके हैं। अिसलिअे मैं अुम्मीद करता हूँ कि अब खादी ख़रीदनेवाले तो प्रमाणित खादी-भण्डार में ही जायँगे, और वहींसे खादी ख़रीदेंगे। भूले-चूके भी कोअी अप्रमाणित खादी-भण्डारमें न जायगा।

जो यह साबित कर सकेंगे कि वे कात नहीं सकते, अुन्हें मित्र समझकर मैं अुनसे सूत मिलनेका प्रमाण-पत्र देनेको तैयार हूँ, क्योंकि मेरे पास सूतका ढेर लगता ही रहता है।

नअी दिल्ली, १५-१०-'४६
(गुजरातीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

कांग्रेसका अगला जलसा

कुछ ही दिन बाद मेरठमें होनेवाले कांग्रेसके सालाना जलसेके बारेमें मेरे पास बेशुमार ख़त आये हैं। ख़त लिखनेवालोंने जलसेके सिलसिलेमें होनेवाली अुस फ़ज़ूल ख़र्चीकी शिकायत की है, जिसकी ख़बरें अख़बारोंमें छपी हैं। स्वागत-समितिके कामके बारेमें मुझे अपनी ओरसे कोअी फ़ैसला नहीं देना चाहिये। अिस बारेमें हक़ीक़तोंका अभ्यास करनेकी न तो मेरी ख़्वाहिश है, और न मेरे पास अुतना वक़्त ही है। लेकिन हक़ीक़तों और आँकड़ोंको बिना जाने भी मैं नीचे लिखी बात कह सकता हूँ। मुमकिन है, अुससे कमेटीको कुछ मदद मिले।

जलसेमें किसी क़िस्मके तमाशे नहीं होने चाहियें। कांग्रेसका जलसा हमेशा अेक संजीदा चीज़ समझी जानी चाहिये, और अुसका काम-काज भी वैसी ही संजीदगीके साथ किया जाना चाहिये। वहाँ अलगसे कोअी तमाशा या दिखावा नहीं किया जा सकता। जलसेके लिअे लोगोंको आकर्षित करनेकी कोअी कोशिश नहीं की जानी चाहिये। कांग्रेसके जलसेका होना ही अपने-आपमें अेक ख़ासा आकर्षण या खिंचाव होना चाहिये।

जलसेमें किसी तरहकी रोशनी न की जाय। लोगोंको सादे-से-सादा खाना दिया जाय, और अुसके बनानेमें तेल, घी या शक्करका कम-से-कम या बिलकुल अिस्तेमाल न किया जाय। बिना न्योते मेहमान अपना सीधा-सामान अपने साथ ले जायँ, या जलसेमें जानेका ख़याल छोड़ दें।

सफ़ाअीका अिन्तज़ाम अितना अच्छा और माक़ूल होना चाहिये कि जिससे जलसेमें आनेवाले सब लोग कुछ सीख कर जायँ। तमाशबीनोंको जलसेमें न जानेकी ही सलाह दी जाय।

नअी दिल्ली, १९-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप्पणियाँ

आँख क्यों ?

किसी मौक़ेसे लिखे अपने अेक ख़तमें प्रिन्सिपल सतीश कालेलकरने अेक दिलचस्प और पुरराज़, यानी सरस और रहस्यमय, बात लिखी है। अिस ख़यालसे कि शायद वह 'हरिजनसेवक' पढ़नेवालोंके काम आयेगी, अुसे नीचे देता हूँ —

"अेक बार डॉक्टर वेलिंग्टन कूने लन्दनमें अेक चीनी परिवारकी बहुत मीठी कहानी सुनाअी थी। चीनी घरोंमें घरका सबसे बड़ा आदमी घरका मुखिया भी होता है। अुसे घरमें सज़ा देनेके लिअे ख़ास तौर पर रक्खी गअी पीढ़ियों पुरानी अेक छड़ीका अिस्तेमाल करनेका हक़ होता है। अेक दफ़ा सौ सालके अेक बुज़ुर्ग मुखिया पचहत्तर सालके अपने बेटेकी पीठ पर, कुल-देवताके सामने, बतौर सज़ाके, छड़ी मारने लगे। बेटेकी आँखसे आँसू बह चले। मुखियाने पूछा — 'किसी दिन नहीं, और आज ही तुम्हारी आँखमें आँसू क्यों आये?' अिस पर ७५ सालके बेटेने कहा — 'पिताजी, आपकी छड़ी अब पहलेकी तरह लगती नहीं। आप बूढ़े और कमज़ोर हो गये हैं। अिस ख़यालने मुझे बेचैन बना दिया और मेरी आँखें बरस पड़ीं'।"

जिन दिनों यह ख़त मिला, काका साहब कालेलकर दिल्लीमें ही थे। मैंने अुन्हें यह ख़त पढ़नेको दिया। अुन्होंने कहा — "हमारे देशमें भी अैसे क़िस्से हुअे हैं, और आज भी होते होंगे।" जो क़िस्सा अुन्होंने सुनाया, वह यों था —

"मद्रास हाअीकोर्टके अेक जज अेक दिन अपना काम पूरा करके सीधे घर जानेके बदले अेक दोस्तके साथ कहीं चले गये और देरसे घर पहुँचे। दरवाज़ेमें अुनकी माँ खड़ी थीं। माँने पूछा — 'देरसे क्यों आया?' और बेटेको अेक तमाचा जड़ दिया। बेटेकी आँखसे चौधार आँसू बरसने लगे।

"दोस्तने कहा — 'अिस अुमरमें और अितनी अिज़्ज़त हासिल करनेके बावजूद माँका आपको अिस तरह तमाचा मारना अेक अजीब बात है। स्वाभाविक है कि आपको यह अपमान-सा मालूम हो!'

"जजने कहा — 'अिसमें अपमानकी कोअी बात नहीं। अैसी चपतें मुझे बीच-बीचमें मिला करती हैं। मैं अिसे अपना सौभाग्य समझता हूँ। आज आँखोंमें आँसू आनेकी वजह तो यह है कि माँके तमाचे अब पहलेकी तरह लगते नहीं। मुझे दुःख है कि मेरी माँ कमज़ोर हो गअी हैं'।"

नअी दिल्ली, १८–१०–'४६
(गुजरातीसे)

दीवाली और पटाख़े

मेरे पास कुछ ख़त आये हैं, जिनमें दीवाली पर पटाख़े छोड़नेके रिवाजकी शिकायत की गअी है। शिकायत सच्ची है। मैं तो अिसके बारेमें 'नवजीवन' में भी लिख चुका हूँ। मैं नहीं जानता कि किसी पर अुसका असर भी हुआ है या नहीं। अिस वक़्त जब चारों तरफ़ होली जल रही है, तब दीवाली पर पटाख़े छोड़ना, या घी और तेलके या बिजलीके दीये जलाना या मिठाअी वग़ैरा खाना हराम समझा जाना चाहिये।

डाकोरका क्या ?

खेड़ा ज़िलेके अेक भाअी, जो बिना किसी झिझकके भंगी स्त्री-पुरुषोंको अपने घरमें सगे भाअी-बहनोंकी तरह रखते हैं, पूछते हैं — "मद्रासमें बड़े-बड़े मन्दिर हरिजनोंके लिअे खुल गये हैं, मगर पागल गुजरात अेक डाकोरजीका मन्दिर भी नहीं खोलता, यह कैसी बात है?"

अगर पागल गुजरातके भाअी-बहन समझदार बन जायँ, तो आज ही वह मन्दिर खुल सकता है। लेकिन गुजरातको शरमकी टोकरी ही अुठानी हो, तो अुसे कौन रोक सकता है?

अिस मन्दिरके ट्रस्टियोंके सिर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है।

(गुजरातीसे)

मो॰ क॰ गांधी

चरखा-मण्डल

१. अिस चरखा-मण्डल के सदस्यों को सालमें ६ गुण्डी सूत यानी हर महीने ३२० तार सूत देना होगा। शर्त यह रहेगी कि यह सूत चरखा-मण्डल द्वारा जो दिन मुक़र्रर किया जाय, अुस दिन सामूहिक और सम्पूर्ण यानी मजमूअी और मुकम्मल कताअी (तुनाअी से पूनी बनाकर) की शक्ल में काता जाय, और मण्डल को दिया जाय। अैसे सदस्य या मेम्बर मण्डल के सहयोगी सदस्य कहलायेंगे।

२. चरखा-मण्डल के सहयोगी सदस्य बनते समय दाख़िल होने की फ़ीसका अेक रुपया और हर महीने ३२० तार सूत देना होगा। जब तक सदस्य अिस तरह कता सूत हर महीने देते रहेंगे, वे मण्डल के सहयोगी सदस्य बने रहेंगे।

३. महीने में कब और कितने दिन सामूहिक कताअी हो, अिसके लिअे ज़रूरी नियम और क़ानून मुक़ामी मण्डल ख़ुद बना लेंगे। लगातार दो महीनों तक ३२० तार न दे सकनेवाले सदस्य का नाम मण्डल की सदस्य-सूची से निकाल दिया जायगा। अगर अैसे सज्जन फिर सहयोगी बनना चाहेंगे, तो अुन्हें दाख़िल होने की फ़ीस दुबारा देनी होगी। अिस तरह किसी को अेक साल में तीन बार सदस्य न बनाया जायगा।

४. अिस बात की कोशिश की जायगी कि शहरों के मुहल्लों में, गाँवोंमें और क़स्बोंमें अैसे मण्डल खुलें। अिन मण्डलों का ज़िलेवार या सूबेवार अेक-अेक केन्द्रीय दफ़्तर क़ायम किया जा सकेगा।

५. अिरादा यह है कि हम सारे मुल्क के लिअे साल में बारह अैसे राष्ट्रीय दिन तय करें, जब अिन मण्डलों में महीने में अेक दिन अेक ही वक़्त सब जगह सामूहिक और सम्पूर्ण कताअी की जाय।

६. कोशिश यह रहेगी कि चरखा-मण्डल के साथ जगह-जगह अेक-अेक चरखा-क्लास भी खोला जाय। अुसमें कपास की तुनाअी से कताअी तक की सब क्रियायें सिखाअी जायँगी। अिसकी फ़ीस अेक रुपया रखी जायगी। जो लोग अिस क्लास में कताअी सीखकर अेक महीने के अन्दर चरखा-मण्डल में अपना नाम लिखवा लेंगे, अुन्हें मण्डल के लिअे अलग से प्रवेश फ़ीस नहीं देनी होगी। वे हर महीने ३२० तार सूत देकर मण्डल के सहयोगी सदस्य बन सकेंगे।

७. अगरचे चन्दे का यह सूत चरखा-मण्डल का रहेगा, तो भी अिस सूत पर सदस्यों को सूत के हिसाब से खादी मिल सकेगी। सहयोगी सदस्य को खादी ख़रीदने का पहला हक़ होगा।

कनु गांधी

[भंगी-बस्ती में तुनाअी और कताअी का जो क्लास तीन बार चला, यह मण्डल उसीका नतीजा है। काश, अैसे मण्डल हरअेक हलक़े में बनें! अिससे पहले वे दिल्ली में जगह-जगह बनने चाहियें, और बराबर चलने चाहियें। खेल-कूद के बहुत-से क्लब बनते हैं। काम के मण्डल यानी अंजुमन क्यों न बनें? मो॰ क॰ गांधी]

नअी दिल्ली, १८–१०–'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलनेवाले आँकड़े

जब मद्रासके प्रॉविन्शियल टेक्सटाअिल कमिश्नर श्री अेस० वेंकटेश्वरन् मद्रासकी खादी-योजना (स्कीम) के बारेमें बातचीत करनेके लिअे दिल्ली आये थे, तब मैंने अुनसे कहा था कि आप यह मानकर अपने आँकड़े बताअिये कि मद्रासमें कोअी मिलें नहीं हैं, और सारे सूबेको खादी पहनानी है।

नीचे वे आँकड़े दिये जाते हैं, जो अपनी कहानी खुद कहते हैं—

"मद्रास सूबेकी आबादी	५ करोड़ ३० लाख
सूबेके कुनबोंकी तादाद $\frac{५३,०००,०००}{४}$	१ करोड़ ३० लाख २५ हज़ार
रोज़ अेक घण्टा कात कर अेक कातनेवाला जितना सूत कात सकता है	$\frac{३}{८}$ गुण्डी
अेक कुनबेमें अेक महीने (३० दिन) में कुल सूत कतेगा (यह मानकर कि घरमें अेक ही आदमी कातनेवाला है) $\frac{३}{८}\times\frac{३०}{१}=\frac{९०}{८}$	११$\frac{२}{८}$ गुण्डी
१२ महीनोंमें अेक कुनबेमें कुल सूत कतेगा=१२×११$\frac{२}{८}$	१३५ गुण्डी=९$\frac{९}{१४}$=९·६४ पौंड या क़रीब १० पौंड जिससे ४५" अर्ज़का क़रीब ३० गज़ कपड़ा बनेगा।
पूरे सूबेमें कुल खादी पैदा होगी	३०×१३·२५ लाख=३९७·५ लाख गज़
२० गज़ फ़ी आदमी और १० गज़ फ़ी बच्चेके हिसाबसे समूचे सूबेका पहनानेके लिअे खादीकी जरूरत	
३७० लाख×२०=७४०० लाख	
१६० लाख×१०=१६०० लाख	
९००० लाख गज़	
कपड़ेकी जरूरतके मुक़ाबले पैदावारकी औसत	४४·१%

"अिससे पता चलता है कि कपड़ेकी जरूरतको पूरा करनेके लिअे हमें तब तक काफ़ी हाथ-कता सूत नहीं मिल सकता, जब तक हर परिवारका औसतन् अेक आदमी क़रीब २$\frac{१}{२}$ घण्टे न काते या हर दो परिवार पीछे ५ आदमी कातनेवाले न मिलें।

"करघोंकी जरूरी तादाद—यह मानकर कि अेक औसत जुलाहा जरूरी ट्रेनिंगके बाद भी रोज़ ५ गज़ या महीनेमें १२५ गज़से ज़्यादा नहीं बुन सकता, (महीनेमें ५ दिन त्योहार या आराम वग़ैराके निकालकर), ९,००० लाख गज़ कपड़ा बुननेके लिअे ६,००,००० करघोंकी जरूरत होगी। अभी सूती कपड़ा बुननेके लिअे सूबेमें ५ लाखसे कुछ अूपर करघे चल रहे हैं। अिसलिअे खादीके मामलेमें सूबेको स्वावलम्बी बनानेके लिअे कम-से-कम ७५,००० करघोंकी और जरूरत होगी।"

तो क्या हर आठ आदमी पीछे ५ आदमी और किसी ग़रज़से नहीं तो सिर्फ़ अपनी मातृभूमिके प्रेमकी ख़ातिर ही १ घण्टा रोज़ाना कातें, अैसी अुम्मीद करना बहुत ज़्यादा होगा?

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

हरिजनोंके लिअे क्या कीजियेगा?

अेक भाअीने नीचे लिखा करुणाजनक (रहम पैदा करनेवाला) ख़त भेजा है—

"छुआछूत दूर करनेके बारेमें लोगोंने हमारी बात जितनी अपनानी चाहिये, नहीं अपनायी। अुसकी वजह या तो यह है कि यह काम सबसे ज़्यादा मुश्किल है, या फिर हमारे काम करनेके तरीक़ेमें कुछ फेरफार करनेकी जरूरत है।

"हरिजन — भंगी — अितने गिरे हुअे और अितने दबे हुअे हैं कि अुन्हें अुठानेके लिअे सवर्णोंको और हुकूमतको बहुत-कुछ करनेकी जरूरत है।

"काठियावाड़के कअी गाँवों और शहरोंमें अुनकी हालत कंगाल और करुणाजनक है। अक्सर अुनकी तनख़्वाह अितनी कम होती है कि पकाया हुआ, बचा हुआ, अच्छा या जूठा खाना अुन्हें न मिले, तो वे जरूर भूखों मर जायँ।

"अुनके बदन पर कपड़ोंकी जगह चिथड़े होते हैं। अुनके रहनेके घर भी रोग और गंदगीसे भरे रहते हैं। कोअी सहायक धन्धा या रोज़गार अुन्हें मुश्किलसे ही मिलता है। अूँची जातवाले अुनके साथ कोअी ब्यौहार रखना ही नहीं चाहते। हरिजन—भंगी—खुद भी आलसी, अहदी, व्यसनी और पामर बन गये हैं। अिन सब बुराअियोंको मिटानेके लिअे जबरदस्त कोशिश की जानी चाहिये।

"कार्यकर्त्ता भी अिस ख़यालसे परेशान रहते होंगे कि अिस मुश्किल कामको कैसे आगे बढ़ाया जाय? मगर अिस काममें तेज़ी लानेके लिअे हमें क्रान्तिकारी या अिन्क़िलाबी क़दम अुठानेकी सख़्त जरूरत है।

"आप 'हरिजनबंधु' में यह बतानेकी मेहरबानी करें कि हरिजनोंके लिअे पीनेके पानीका, सहायक धन्धोंका, और शिक्षा व संस्कार वग़ैराका अिन्तज़ाम करनेके लिअे हमें अपनी नीति और काम करनेके तरीक़ोंमें क्या फेरफार करनेकी जरूरत है।"

बात सच है। ख़त लिखनेवाले खुद अेक हरिजन-सेवक हैं। जब धर्मके नाम पर पाखंड चलता है, तब सुधार करना बहुत मुश्किल हो जाता है। यह हम क़दम-क़दम पर देख रहे हैं। तिसपर हम भीरु या डरपोक ठहरे। मुझे तो अेक ही सीधा रास्ता नज़र आता है। जिसने सचको देख लिया है, वह खुद अपने आचरण या अमलसे अुसे बराबर प्रगट करता रहे, और साथ ही विरोधीकी तरफ़ अुदारता रखे। धीरज न छोड़े और अपना काम करता हुआ आनंदमें मगन रहे।

(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

		पृष्ठ
हफ़्तेवार ख़त	... प्यारेलाल	३६५
अ० भा० चरखा-संघके प्रस्ताव	...	३६७
हाथ-कता बनाम मिलका कपड़ा	... गांधीजी	३६८
हिंसाके तरीक़े	... गांधीजी	३६८
ब्रजकिशोर बाबू	... प्यारेलाल	३६९
दर्द	... प्यारेलाल	३६९
मैं हारा	... गांधीजी	३७०
कांग्रेसका अगला जलसा	... गांधीजी	३७०
चरखा-मण्डल	... कनु गांधी	३७१
बोलनेवाले आँकड़े	... गांधीजी	३७२
हरिजनोंके लिअे क्या कीजियेगा?	... गांधीजी	३७२
टिप्पणियाँ		
ग़लत बायकाटका सामना कैसे करें?	... मो० क० गांधी	३६९
आँसू क्यों?	... मो० क० गांधी	३७१
दीवाली और पटाख़े	... मो० क० गांधी	३७१
डाकोरका क्या?	... मो० क० गांधी	३७१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अेक अक़लमन्दीका काम

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक – प्यारेलाल

भाग १० अंक ३९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ३ नवम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

यह अिस्लामके ख़िलाफ़ है

कुल हिन्द मजलिस-अे-अहरारके माज़ी सदर शेख़ हिसामुद्दीनने अख़बारोंको नीचे लिखा बयान दिया है :—

"पूरबी बंगालसे जो दहशतभरी और वहशियाना वारदातोंकी ख़बरें आ रही हैं, अुनको सुनकर कोअी सच्चा मुसलमान ख़ुश न होगा, और न ये कारनामे क़ाबिलेतारीफ़ या अिस्लामसे कोअी ताल्लुक़ रखनेवाले कहे जा सकते हैं। अिस अिलाक़ेके ज़्यादातर मुसलमानोंके कामोंका, पहले ख़लीफ़ाकी अुन हिदायतोंसे मिलान कीजिये जो अुन्होंने मदीना छोड़ते वक़्त अपने सिपहसालारको दी थीं। अुनमें बताया गया है कि आम रिआयाकी हिफ़ाज़त की जाय, ग़ैरमुसलमान औरतोंकी आबरूका ख़याल रखा जाय और अिबादतकी जगहोंकी क़द्र की जाय। फिर अिस तरहकी मार-काट, लूट-पाट, तोड़-फोड़, आग लगाना, जवान औरतोंको ज़बरदस्ती मुसलमान बनाना, और अुन्हें ज़नानख़ानोंमें बन्द करके रखना तो अैसे शर्मनाक काम हैं, जिन्हें कोअी भी सुधरा हुआ मुल्क बरदाश्त नहीं कर सकता। सचमुच मुझे अिस बातका दिली अफ़सोस है कि यह हालत अुस सियासी बेअीमानी और गड़बड़ीसे पैदा हुअी है, जिसने अेक ख़ास मक़सद पूरा करनेके लिअे लोगोंके जज़्बातको भड़का दिया, और अिस ज़िम्मेवारीसे आँखें मूँद लीं कि आख़िर अिसकी नतीजा क्या होगी। वाक़अी कोअी भी सरकार अिस तरहकी हालतको ज़्यादा दिनों तक बरदाश्त नहीं कर सकती।

"सवाल यह अुठता है कि क्या अिसे फ़ौज या पुलिसकी ताक़तसे रोका जा सकता है, या अेक मुल्कके रहनेवालोंमें आपसी अदब, अेक-दूसरे पर भरोसा और आपसी सहयोगका होना अिसका अिलाज है? मेरा ख़याल है कि बंगालमें अमन और शांति क़ायम करनेके लिअे आम तौर पर हिन्दुस्तानके मुसलमानोंको और ख़ासकर बंगालके मुसलमानोंको आगे आना चाहिये, क्योंकि वहाँ वे ज़्यादा तादादमें हैं। सूबेके ज़्यादा तादादवाले मुसलमानोंका पहला फ़र्ज़ यह है कि वे वहाँ बसनेवाली अल्पसंख्यक जातियोंको सन्तुष्ट रक्खें, और अुन्हें अैसी ज़िन्दगीके लिअे तैयार करें, जिसमें कोअी परेशानी और हैरानी न हो।

"बदक़िस्मतीसे बंगालके मुसलमानोंकी रहनुमाअी अेक अैसे गिरोहके हाथमें पड़ गअी है, जो शराफ़त और अिख़लाक़से क़तअी परे है। दूसरे मुसलमानोंको चाहिये कि वे दीन-अे-अिस्लामके ताकीद किये हुअे सुनहरे अुसूलोंके मुताबिक़ आगे आवें और तमाम ख़तरोंका सामना करते हुअे अिस हलक़ेके अपने गुमराह और भड़के हुअे भाअियोंको रोकें, ताकि वे भले व हमदर्द पड़ोसी बन सकें। अिस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि यह काम बन्दूकों और मशीनगनोंके खुले अिस्तेमालसे नहीं किया जा सकता, और न अपने बचावके लिअे ग़ैर-मुस्लिम मकानोंकी क़िलेबन्दी करनेसे। आम लोगोंको गुण्डोंके असरसे छुड़ाना चाहिये, और लोगोंके दिलोंको समझाअिशसे शान्त करके अुन्हें पुरअमन और भली ज़िन्दगी बसर करने देनी चाहिये। मुसलमान ही अिसे ज़्यादा अच्छी तरह कर सकते हैं।

"अिस कामको अंजाम देनेके लिअे कुल हिन्द मजलिस-अे-अहरार-अे-अिस्लाम, अपने तालीम पाये हुअे स्वयंसेवकोंकी टुकड़ियाँ दंगोंवाली जगहोंमें फ़ौरन ही भेजनेके लिअे तैयार है, ताकि गुमराह भाअी जल्द-से-जल्द सही रास्ते पर लाये जायँ, और सूबेमें मुस्तक़िल अमनकी नींव रखी जा सके।

"मैं जानता हूँ कि अिस रास्तेमें तरह-तरहकी मुश्किलोंका सामना करना पड़ेगा। लेकिन सच्चे मुसलमानोंने अपना फ़र्ज़ अदा करनेमें मुश्किलों और मुसीबतोंकी कभी परवाह नहीं की, न अब वे किन्हीं रुकावटोंकी परवाह करेंगे। ज़रूरी अिन्तज़ामोंको अंजाम देनेके लिअे मैंने कुल हिन्द मजलिस-अे-अहरारके सदर मौलाना अताअुल्लाशाह बुख़ारी, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद व जमीयत-अुल-अुलमाअे हिन्दके सदर मौलाना हुसेन अहमद मदनीसे बातचीत शुरू कर दी है। अल्लाहके करमसे पहला दस्ता जल्द ही दिल्लीसे रवाना होगा।"

ख़ुद मौलाना साहबने चार दिन पहले यह बयान दिया था—

"पूरबी बंगालमें अिस वक़्त जो हैबत-नाक वाक़यात गुज़र रहे हैं, अुनसे अिस अुम्मीद पर पानी फिर गया कि बंगाल जल्द ही कलकत्तेकी भयंकर मारकाटसे फिर पनप जायगा। ज़ुल्म, लूटमार, क़त्ल और आग लगानेकी ग़ैर-सरकारी ख़बरोंके पढ़नेसे दिल दहल अुठता है। सरकारी बयानमें कहा गया है कि कुछ वारदातें ज़रूर हुअी हैं, मगर ग़ैर-सरकारी रिपोर्टकी सब बातें मानने लायक नहीं हैं।

"सरकारी बयानमें भी काफ़ी ख़राब बातें हैं। लेकिन अगर ये सारी बातें साबित हो गअीं, तो जो लोग अिस ज़ुल्म और ज़्यादतीके लिअे ज़िम्मेवार हैं, अुन पर भयानक अभियोग लगते हैं। सारा सभ्य समाज अपने मेम्बरोंकी ज़िन्दगी, जायदाद और अीमानकी हिफ़ाज़त पर टिका हुआ है। यह बात औरतोंकी अिज़्ज़तकी हिफ़ाज़त पर और भी ज़्यादा लागू होती है। जो औरतोंकी अिज़्ज़तका ख़याल नहीं करता, वह अपने माथे पशुताका कलंक लगा लेता है। अक़लियत (अल्पसंख्यकों)को तो अिन तमाम मामलोंमें अेक ख़ास हक़ हासिल है, और अकसरियत (बहुसंख्यकों)का फ़र्ज़ है कि वह अपने कामोंसे अक़लियतके सारे ख़ौफ़ दूर कर दे। अगर ज़्यादा तादादवाले, कम तादादवालों पर ज़ुल्म करते हैं, तो अुसमें न अुनकी कोअी बहादुरी है, और न कोअी तारीफ़।

"सबसे ज़्यादा अफ़सोस तो अिस बातका है कि अिन ज़ालिमाना कामोंके लिअे मज़हबका नाम घसीटा गया है। लोगोंको ज़बरन् मुसलमान बनाने और औरतोंसे ज़बरन् शादियाँ करनेकी ख़बरें आअी हैं। कोअी भी मज़हब, अीमानके मामलेमें ज़ोरो-ज़ुल्म और हिंसाकी अिजाज़त कभी नहीं देता — अिस्लाम तो हरगिज़ नहीं। पुराने ख़लीफ़ा अिस्लामकी असली पवित्रताके नुमाअिन्दा थे। अुनके ज़मानेमें यहूदियों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अीसाअियों-जैसे अल्पमतवालोंके साथ जो सहिष्णुता बरती जाती थी, और अुनके जान-मालकी हिफ़ाज़तकी जैसी गारण्टी दी जाती थी, वह अेक ग़ौर करने लायक़ चीज़ थी। दर असल मध्ययुगमें जब यूरोपके सारे अीसाअी मुल्कोंमें यहूदियोंके साथ बहुत ज़्यादती की जाती थी, तब स्पेनमें और आगे चलकर तुर्कीकी मुस्लिम सल्तनतोंमें अुनके साथ अच्छा सलूक किया गया था और वे वहाँ आराम और हिफ़ाज़तसे रह सके थे।

"अिस्लामकी बुराअी करनेवालोंने कभी-कभी यह साबित करनेकी कोशिश की है कि अिस्लामका अितना ज़्यादा फैलाव ज़बरदस्तीसे और तलवारके ज़ोरसे हुआ है, मगर क़ुरानकी अिस साफ़ हिदायतसे कि मज़हबके मामलेमें ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिये, अुनकी अिन बातोंका खंडन हो जाता है। जो अिस हिदायतके ख़िलाफ़ काम करते हैं, वे अिस्लाम और मुसलमानोंके हितको सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुँचानेके गुनहगार हैं।

"मैं अुन सब हिन्दुओं और मुसलमानोंसे, जिन्हें अपने मुल्क और क़ौमसे मुहब्बत है, अिस हालत पर ठंडे और निर्विकार मनसे ग़ौर करनेका अिसरार करता हूँ। अुन्हें अिसी मुल्कमें अेक साथ रहना है, और कोअी सरकार किसी तरहकी गड़बड़ और अन्धाधुन्धीको ज़्यादा दिनोंतक बरदाश्त नहीं कर सकती। अगर क़ौमी दंगे होते रहे, तो सरकारको पुलिसकी, या ज़रूरत पड़ने पर फ़ौजकी मददसे भी अुन्हें आगे पीछे दबाना ही पड़ेगा। मगर अिससे तो मर्ज़ सिर्फ़ दब जायगा, अच्छा नहीं होगा।

"अिस बुराअीको जड़से मिटानेका अेकमात्र तरीक़ा यह है कि किसी हिस्सेमें ज़्यादा तादादमें रहनेवाली क़ौमके लोग, वहाँकी कम तादादवाली क़ौमको अुसकी हिफ़ाज़तका भरोसा दिलायें। बजाय अिसके कि पुलिस और फ़ौजका रास्ता देखा जाय कि वह आये और दंगेको ज़बरदस्ती दबा दे, अगर अकसरियतके कुछ ज़िम्मेदार आदमी आगे बढ़कर गुंडोंको रोकें, और अपने हलक़ेकी अक़लियतकी जान-माल और अुनकी अिज़्ज़तकी हिफ़ाज़त करें तो मुल्ककी सारी फ़िज़ा ही बदल जाय।

"पूरबी बंगालके अपने मुस्लिम भाअियोंसे मैं अेक ख़ास अपील करता हूँ। अिस्लामकी हिदायत है कि पड़ोसीकी हिफ़ाज़त करना हमारा मज़हबी फ़र्ज़ है। पूरबी बंगालके नोआखाली और दूसरे ज़िलोंमें मुसलमानोंकी बहुत बड़ी अकसरियत है। अिन ज़िलोंके सब नेकदिल लोगोंको अिकट्ठा होकर यह अैलान कर देना चाहिये कि वे अपनी जान देकर भी अपने पड़ोसीकी हिफ़ाज़त करेंगे, और कोअी किसी हिन्दूको तब तक नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा, जब तक वह अुनकी लाश न गिरा दे।"

अिन बयानोंकी क़ीमत अिसमें नहीं है कि कितने मुसलमान अिसकी ताअीद करते हैं, पर अिसमें है कि बयान देनेवाले दोनों मुस्लिम नेता अिस्लामी दुनियामें बहुत मशहूर हैं, और वे बिना किसी झिझकके पूरबी बंगालके मुसलमानोंकी अत्यन्त क्रूर करतूतोंकी निंदा करते हैं। अिन दंगाअियों पर गुण्डेपनका कलंक लगाना ठीक नहीं। अुन्हें तो कुछ अैसे लोग गुमराह करते हैं, जिन्हें ज़्यादा समझदारीसे काम लेना चाहिये। सीधे सादे मुसलमान भाअियोंके दिमाग़में जो ज़हर भर दिया गया है, अुसको ध्यानमें रखनेके बाद, अैसी ज़ालिमाना हरकतोंका होना कोअी ताज्जुबकी बात नहीं मालूम होती।

अिस बुराअीको दूर करनेके लिअे समझदार मुसलमानोंको सिर्फ़ अिसके ख़िलाफ़ बोलकर ही नहीं रह जाना चाहिये, बल्कि अुन्हें फ़ौरन वैसा कुछ करना भी चाहिये। हम यह जानना चाहेंगे कि कुल हिन्द मजलिस-अे-अहरारके भूतपूर्व प्रेसिडेण्ट अिस बुराअीको मिटानेके लिअे स्वयंसेवकोंका जो जत्था भेजना चाहते थे, वह भेजा जा सका है या नहीं। नअी दिल्ली, २३-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

हिन्दुस्तानी

स्वराजका सवाल जितना पेचीदा है, अुतना ही पेचीदा हमारी क़ौमी ज़बानका सवाल भी है। अिसकी वजह यह है कि राष्ट्र-निर्माणके लिअे जो बातें हमें पहलेसे सोचकर रखनी चाहिये थीं, वे हमने सोचीं नहीं। अब सब-की-सब बातें भूतकी तरह अेकसाथ खड़ी हो गअी हैं।

क़ौमी ज़बानके नाते कुछ अरसे तक हमने हिन्दीका प्रचार किया, और यह कहकर कि अुर्दू भी हिन्दीके अन्दर ही आ जाती है, अरबी-फ़ारसीके जो भी लफ़्ज़ हिन्दीमें अिस्तेमाल होते हैं, अुन्हें क़ायम रखनेकी कोशिश की।

अेक ज़माना था, जब अुर्दूने देशी शब्द हटा-हटा-कर अुनकी जगह अरबी-फ़ारसीके बढ़िया शब्द लानेकी कोशिश की थी, और कुछ ऐसे क़ानून बनाये थे कि फलाँ-फलाँ देशी शब्द तो अुर्दूमें आ ही नहीं सकते। अिस तरह मामूली अुर्दू अुर्दू-अे-मुअल्ला बन गअी और आमलोगोंके लिअे अुसे समझना दुश्वार हो गया।

अिधर हिन्दीने भी कहीं-कहीं अरबी-फ़ारसीके आमफ़हम लफ़्ज़ हटा-हटाकर अुनकी जगह संस्कृतके शब्द बरतने शुरू किये।

अिन दोनों प्रकारोंको टालकर हम लोगोंने भाषाको मुलायम बनानेकी कोशिश की, लेकिन हमने देखा कि अुससे काम नहीं चलेगा। असलमें हिन्दी और अुर्दू दोनों अेक होते हुअे भी आज अुनकी दो अलग-अलग भाषायें बन गअी हैं। दोनों अितनी अलग हो गअी हैं कि अुन्हें यकायक अेक करना मुश्किल काम है।

हम कहते हैं कि हमारी क़ौमी ज़बान वह भाषा है, जिसे अुत्तरी हिन्दुस्तानके शहरों और गाँवोंमें हिन्दू और मुसलमान आपसी व्यवहारमें बोलते और लिखते हैं; और जो नागरी और फ़ारसी दो लिपियोंमें लिखी जाती है।

यह व्याख्या तो ठीक हुअी, लेकिन जब पूछते हैं कि अुत्तरी हिन्दुस्तानका वह कौनसा प्रदेश है, जहाँ यह हिन्दुस्तानी चलती है, तो आसाम, बंगाल, अुड़ीसा, काश्मीर और सिन्ध तो छोड़ ही देने पड़ते हैं। लेकिन बाक़ीके पंजाब, राजस्थान, युक्तप्रान्त, बिहार, महाकोशल और मध्यभारतमें भी गाँवोंमें न आजकी हिन्दी चलती है, न अुर्दू। जगह-जगह मुक़ामी बोलियाँ ही बोली जाती हैं।

महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, बिहार, कर्नाटक, तामिलनाड आदि प्रान्तोंमें लोग घरमें जो भाषा बोलते हैं, वही बाज़ारमें और सभामें बोलते हैं। लिखनेके साहित्यमें कुछ थोड़ा फ़र्क़ होता है, लेकिन सब कोअी यह अनुभव करते हैं कि वह सब अेक ही भाषा है। हिन्दी-अुर्दूके बारेमें स्थिति कुछ अलग है। श्री अमरनाथजी झा, टण्डनजी, वियोगी हरिजी, राजेन्द्रबाबू, बिड़लाजी, सरदार तारासिंह, ये सब सभामें बैठकर जो हिन्दी बोलते हैं, वही घरमें नहीं बोलते। अिन लोगोंकी घरकी भाषा अितनी अलग होती है कि अेककी बात दूसरा शायद ही समझ सके। पंजाबके मुसलमान सभामें अुर्दू बोलेंगे, लेकिन घरमें देरेवाली या पंजाबी भाषा बोलेंगे। ख़ान अब्दुल गफ़्फ़ार ख़ाँ पुश्तो बोलेंगे, शेख़ अब्दुल्ला काश्मीरीमें, और डॉक्टर सैयद महमूद बिहारीमें। घरमें बोलनेकी भाषा अलग और बाहर बोलनेकी अलग। बाक़ी हिन्दुस्तानमें, दक्कनमें या पूरबमें, कहीं अैसी हालत नहीं है।

यह भी पाया जाता है कि युक्तप्रान्तमें जब चार हिन्दू आपसमें बातें करते हैं, तो हिन्दीमें करते हैं। लेकिन जब अुनके बीच कोअी मुसलमान आ जाता है, तो वे सब हिन्दुस्तानीमें बातें करने लगते हैं। अिस तरह यू० पी०के हिन्दू हिन्दीमें भी बोल सकते हैं, और अुस आसान अुर्दूमें भी बोल सकते हैं, जिसे वे हिन्दुस्तानी कहते हैं। नतीजा यह होता है कि पंजाब, युक्तप्रान्त और बिहारके मुसलमानोंको वे जहाँ भी जाते हैं, हिन्दुस्तानीमें ही बातें करनेकी सहूलियत रहती है। अिसलिअे वे कह सकते हैं कि "पंजाबसे ले कर बिहार तक हर जगह हिन्दुस्तानी ही बोली जाती है। हिन्दी तो अेक कृत्रिम बोली है, जो हिन्दुओंने मुसलमानोंको अलग रखनेके लिअे बनाअी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह असल बात यह है कि अिन तीनों प्रान्तोंके हिन्दू अपनी भलमनसाहतकी वजहसे और सहूलियतके खयालसे मुसलमानोंके साथ जान-बूझकर आसान अुर्दू यानी हिन्दुस्तानीमें बोलते हैं।

जिस हिन्दीको मुसलमान बनावटी भाषा कहते हैं, अुसकी शक्ल बंगला, मराठी और गुजरातीकी शक्लसे भिन्न नहीं है। कोअी यह नहीं कह सकता कि बंगला, मराठी और गुजराती कृत्रिम भाषायें हैं, और वे खासकर मुसलमानोंको अलग रखनेकी नीयतसे बनाअी गअी हैं। फिर हिन्दीको ही क्यों बनावटी क़रार दिया जाय? अितिहास-क्रमसे दूसरी प्रान्तीय भाषायें जैसी बन सकती थीं, बनी हैं। अुनमेंसे हिन्दीको ही अलग करके अुसे बनावटी कहना अिन्साफ़की बात नहीं।

अगर कोअी भूल हुअी है, तो हिन्दीवालोंकी यही भूल हुअी कि सब जगह—घरमें और बाहर—हिन्दी ही बोलनेके बजाय वे अपनी प्रादेशिक बोलियाँ बोलते हैं। राजस्थानीके कअी भेद हैं। बिहारीके भी दो-तीन प्रकार हैं। छत्तीसगढ़ी अलग है, बुन्देलखण्डी अलग। अिनमें कहीं कोअी मेल नहीं। हिन्दीको अपनी जन्मभाषा कहते हुअे भी घरमें अुसका व्यवहार न करनेकी यह ग़फ़लत कब तक चलती रहेगी? और अगर प्रादेशिक बोलियाँ चलानी ही हैं, तो जन-युगके अिन दिनोंमें प्रादेशिक बोलियोंमें जन-सुलभ साहित्य भी तैयार किया जाना चाहिये।

राष्ट्रभाषा या क़ौमी ज़बानकी अैतिहासिक व्याख्या करते समय ये सब झंझटें पैदा होती हैं। लोग पूछते हैं कि आपकी हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तानके किस हिस्सेमें आम लोगोंकी ज़बान है, सो बताअिये। हिन्दुस्तानीका साहित्य कहाँ है? कितना है? जो हिन्दुस्तानी हिन्दुस्तानकी क़ौमी ज़बान बनने जा रही है, अुसमें छपनेवाला अेक भी दैनिक, साप्ताहिक या मासिक पत्र दिखाअिये। गांधीजीके 'हरिजनसेवक' और सुन्दरलालजीके 'नया हिन्द' की बात छोड़िये। ये तो कलकी चीज़ें हैं। अभी हिन्दुस्तान अिन्हें कहाँ तक अपनाता है, सो देखनेकी बात है।

अब हमें अिस सारे झंझटसे बचना होगा। हमें कहना होगा कि ..., राजस्थान, महाकोशल, मध्यभारत, यू॰ पी॰ और बिहारमें हिन्दीके नामसे अेक भाषा चलती है, जिसमें बहुतसे अखबार और मासिक निकलते हैं, जिसका अपना साहित्य भी बहुत विशाल है, और दिन-दिन बढ़नेवाला है।

अिन्हीं प्रान्तोंमें अुर्दू नामकी ज़बान भी चलती है — कहीं कम, कहीं ज़्यादा। चन्द हिन्दू और बहुत-से मुसलमान अिस अुर्दूमें भी अखबार निकालते हैं, साहित्य रचते हैं, और प्रेमसे अुसकी सेवा करते हैं। हिन्दी और अुर्दू दोनोंका असल ढाँचा अेक ही है। लेकिन हिन्दी अपना पोषण संस्कृतसे लेती है, और अुर्दू अरबी-फ़ारसीसे। अिस तरह शुमाली हिन्दमें जो दो ज़बानें चलती हैं, अुन दोनोंको मिलाकर अुन्हें राष्ट्रभाषाके तौर पर चलाना चाहिये।

यह काम तभी होगा, जब हम शुरू में हिन्दी और अुर्दू दोनोंको अलग-अलग रखकर अुन्हें बिलकुल आसान बना देंगे। ये दोनों भाषायें अितनी आसान बन सकती हैं कि दोनों में लिपिके भेदको छोड़कर और कोअी बड़ा भेद न रह जाय। जिस क्रम से हिन्दी और अुर्दू दो अलग-अलग ज़बानें बन गअीं, अुसी क्रम से अिन दोनोंको आहिस्ता-आहिस्ता अेक करना पड़ेगा। दस लफ़्ज़ोंवाले अेक जुमले में पाँच लफ़्ज़ोंके लिअे कमान में दूसरे लफ़्ज़ रखने पड़ें, तो अैसी ज़बान आसानी से नहीं पढ़ी जा सकेगी। बेहतर तो यह होगा कि जो चीज़ें फ़ारसी लिपि में छपती हैं, वे बिलकुल आसान अुर्दू में लिखी जायँ, और अुनमें धीरे-धीरे हिन्दीके आम-फ़हम शब्द भी दाखिल किये जायँ। अिधर नागरी में जो कुछ भी ... वह आसान-से-आसान हिन्दीमें लिखा जाय, और अुसमें आहिस्ता-आहिस्ता अरबी-फ़ारसीके शब्द बढ़ाये जायँ।

हिन्दी और अुर्दू दोनोंको ज़बरदस्ती खींचकर अेक बनाने से मिली-जुली हिन्दुस्तानी तो तैयार हो जायगी, लेकिन अुसे आराम से पढ़नेवाले पाठक बहुत कम मिलेंगे। हम कितनी ही जल्दबाज़ी क्यों न करें, लोग तो आहिस्ता-आहिस्ता ही सीखेंगे। ज़बरदस्ती छोड़कर अहिंसा का तरीक़ा अख़्तियार करने से ही दोनों तरफ़के भले लोगोंको हम पास-पास ला सकेंगे। हमें दोनों लिपियाँ सीखनी हैं। हिन्दी और अुर्दू दोनों से वाक़िफ़ होना है, और आहिस्ता-आहिस्ता दोनोंको पास लाकर अुन्हें अेक बना देना है। अगर देश अिस चीज़को क़बूल कर ले, तो अेक ही दिन में दोनोंको ज़बरदस्ती अेक बनानेकी कोशिश छोड़कर दोनोंको आहिस्ता-आहिस्ता, लेकिन कम-से-कम समयमें, परस्पर नज़दीक लानेकी कोशिश की जानी चाहिये।

बंगाल, बम्बअी और दक्षिणके लोगोंको, जिनकी जन्मभाषा न हिन्दी है, न अुर्दू, दो लिपियोंके साथ ये दो शैलियाँ भी सीखनी पड़ेंगी। अुनके लिअे हिन्दी शैली आसान और नज़दीक की है। लेकिन अुर्दू सीखना भी ज़रूरी है। वे दोनों सीखेंगे, और दोनोंका मिलाप करानेके राष्ट्रीय प्रयत्न में अपना हिस्सा भी अदा करेंगे।

काका कालेलकर

ट्रस्टी कौन बन सकता है?

अखिल भारत-चरखा-संघ जिस कामके लिअे पैदा हुआ है, वह अितना व्यापक और बड़ा है कि अुस दृष्टिसे कौन अुसका ट्रस्टी बन सकता है, यह सवाल बहुत सोचने लायक़ बन जाता है। अिस बारेमें मुझे जो सूझता है, सो यों है—

१. कोअी भी व्यक्ति नामका या नामके लिअे ट्रस्टी नहीं बन सकता।

हरअेक ट्रस्टीको अिस बातका पूरा विश्वास होना चाहिये कि हिन्दुस्तान-जैसे मुल्कमें, जहाँ करोड़ोंकी बस्ती है, और जहाँ सालमें चार-छह महीने करोड़ों लोगोंको बेकार रहना पड़ता है, वहाँ काम करनेकी ताक़त रखनेवाले छोटे-बड़े, मर्द और औरत, सभी हर रोज़ थोड़ा वक़्त कातनेमें खर्च करें, तो हिन्दुस्तानके करोड़ों लोग खुशीसे हाथका कता-बुना कपड़ा पहन सकेंगे, और वे दूसरे कपड़ेको हाथ भी न लगायेंगे।

२. अपने अिस अटल विश्वासके कारण, दूसरोंके सामने अच्छी मिसाल पेश करनेकी ग़रज़से, और देशके फ़ायदेके लिअे अपनी ताक़तभर मेहनत करनेका सन्तोष पानेके लिअे हरअेक ट्रस्टी रोज़ नियमपूर्वक काते।

३. अपने जीवनको देहाती जीवनके नज़दीक लानेकी भरसक कोशिश करे।

४. हिन्दुस्तान देहातमें बसा है, और देहातके बारेमें पढ़े-लिखोंने लापरवाही दिखाअी है। अिसलिअे ट्रस्टीको चाहिये कि वह देहाती-जीवनकी कमियोंको दूर करनेकी पूरी-पूरी कोशिश करे। अैसा करते समय अुसे अिस बातका ख़याल रखना होगा कि देहाती जीवनको शहरी नहीं बनना है। असलमें शहरोंको देहातके पीछे चलना है, और देहातके लिअे जीना है।

५. अगर किसी ट्रस्टीके पतिका किसी मिलके साथ सम्बन्ध हो, और ट्रस्टीके पास धन हो, तो अुसे चाहिये कि वह अपने यहाँ किसी जुलाहेको बसाये और अपने हाथ-कते या अपने रिश्तेदारोंके काते सूतकी खादी बुनवाकर अुसीका अिस्तेमाल करे।

६. वह हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीके बारेमें लिखा गया साहित्य पढ़े, और अिन अुद्योगोंकी आर्थिक और नैतिक अहमियत समझे। ट्रस्टी खुद अिस बातको समझ ले और दूसरोंको भी समझाये कि अिन अुद्योगोंको किस तरह सारे देशमें फैलाया जा सकता है।

७. वह शुरूसे लेकर आज तकके चरखा-संघके अितिहासको समझे, और संघकी मारफ़त कपड़ा बनानेकी क्रियाओंमें जो अिन्क़िलाब हो गया है, अुसे भी समझ ले।

ये विचार मैंने सुझावके तौर पर रक्खे हैं। यह ज़रूरी नहीं कि अिन्हें माना ही जाय। अगर कोअी दूसरे सुझाव मेरे पास आयेंगे, तो मैं अुनका स्वागत करूँगा, और अुन्हें अिन नियमोंमें शामिल कर लूँगा या बतौर तरमीमके अपना लूँगा। २७-१०-'४६

(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

३ नवम्बर १९४६

अेक अक़्लमन्दीका काम

पिछड़ी हुअी जातियोंके मिनिस्टर (बम्बअी) श्री जी० डी० तपासेने बम्बअीकी धारासभा द्वारा हालही पास किये गये बम्बअी हरिजन (सामाजिक विषमताओंको दूर करनेवाले) अेक्टकी अेक नक़ल मेरे पास भेजी है। अुसमेंसे कामके कुछ खास हिस्से नीचे देता हूँ :

"३. अिसके खिलाफ़ किसी पुराने क़ायदे-क़ानून, रीति-रिवाज या परम्पराके होते हुअे भी किसी हरिजनको सिर्फ़ हरिजन होनेकी बिना पर —

(अ) क़ानूनके मातहत किसी सरकारी मुलाजमतमें जगह पानेसे महरूम नहीं रक्खा जायेगा; या

(आ) (१) अैसे किसी नदी-नाले, झरने, कुअें, तालाब, हौज, नल या पानी लेने या नहानेकी दूसरी जगह, मरघट या क़ब्रस्तान, पाख़ानों-जैसे आम अिस्तेमालके साधन, सड़क या पगडंडी तक जाने या अुसका अिस्तेमाल करनेसे रोका नहीं जायगा, जिनपर पहुँचने या जिनका अिस्तेमाल करनेका हक़ दूसरी हिन्दू जातियों और वर्गोंको हासिल है।

(२) प्रान्तीय सरकार या किसी मुक़ामी हुकूमतसे लाअिसेन्स पाकर किराये पर चलनेवाली आम सवारी तक पहुँचने या अुस पर चढ़नेसे रोका न जायगा;

(३) सूबेकी आमदनीमेंसे या मुक़ामी हुकूमतके फण्डमेंसे पूरी या कुछ मदद देकर बनाये गये मकान, कुआँ, हौज, या आम लोगोंके अिस्तेमालकी पार्क वग़ैरा जगहों तक पहुँचने या अुनका अिस्तेमाल करनेसे रोका न जायगा;

(४) आम लोगोंके दिल-बहलाव या खेल-कूद वग़ैराके लिअे बनाअी गअी जगहों पर जानेसे रोका न जायगा;

(५) अैसी किसी दुकान पर जानेसे रोका न जायगा, जहाँ दूसरी हिन्दू जातियोंको जानेका हक़ है;

(६) अैसी किसी जगह पर जाने या अुसके अिस्तेमालसे रोका न जायगा, जो हिन्दुओंके किसी खास वर्ग या फ़िरक़ेके लिअे नहीं, बल्कि सारे हिन्दुओंके लिअे अलग कर दी गअी या रक्खी गअी है;

(७) किसी खास वर्ग या फ़िरक़ेके लिअे नहीं, बल्कि आम हिन्दू जनताके भलेके लिअे क़ायम किये गये ख़ैराती ट्रस्टसे फ़ायदा अुठानेसे रोका न जायगा।

"३ अ. तीसरे सेक्शनकी १ली, ३री, ४थी, ५वीं और ६ठी अुपधाराओं में बताअी गअी जगहोंमें काम करनेवाला कोअी शख़्स, या २री अुपधारामें बताअी गअी कोअी सवारी रखनेवाला कोअी शख़्स किसी हरिजन पर कोअी पाबन्दी नहीं लगा सकता या अैसा कोअी काम नहीं कर सकता, जिससे यह मालूम हो कि हरिजन के खिलाफ़ कोअी फ़र्क़ किया जा रहा है।

"४. किसी बात पर फ़ैसला देने या किसी हुक्मकी पाबन्दी करनेमें कोअी अदालत किसी हरिजन के खिलाफ़, सिर्फ़ अुसके हरिजन होनेकी बिना पर, अैसे किसी रिवाज या चलनको नहीं मान सकती, जो अुस पर किसी तरहकी सामाजिक अयोग्यता लादता हो।

"५. किसी क़ानूनके मातहत अपना कामकाज या फ़र्ज़ अदा करनेवाली कोअी मुक़ामी हुकूमत चौथी धारा में कहे गये किसी रीति-रिवाज को नहीं मानेगी।

"६. जो कोअी —

(क) हरिजन होनेके नाते किसी आदमीको तीसरे सेक्शनकी (आ) धाराकी दूसरी अुपधारामें बताअी गअी सवारी या १ली, ३री, ४थी, ५वीं और ६ठी अुपधाराओंमें बताअी गअी किसी जगह पर जानेसे या अुसका अिस्तेमाल करनेसे रोकता है, या अुसी सेक्शनकी (आ) धाराकी ७वीं अुपधारामें बताये गये किसी ख़ैराती ट्रस्टसे फ़ायदा अुठानेसे रोकता है, या रोकनेके लिअे किसीको अुकसाता है; या

(ख) किसी हरिजन पर किसी तरहकी कोअी रोक लगाता है, या अुसके खिलाफ़ फ़र्क़ ज़ाहिर करनेका कोअी काम करता है, या किसी शख़्सको अैसा प्रतिबन्ध लगानेके लिअे अुकसाता है या अिसी तरहका और कोअी काम करता है, अुसे गुनाह साबित हो जाने पर तीन माहकी क़ैदकी सजा दी जायगी या अुस पर रु० २००) जुर्माना किया जायगा, या अुसे दोनों सज़ायें दी जायँगी।

"७. अगर अैसा कोअी आदमी, जिसे अिस अेक्टके मातहत अेक बार गुनाह करने पर सज़ा मिल चुकी है, फिर वही गुनाह करेगा, तो साबित होने पर अुसे ६ महीनेकी क़ैदकी सज़ा या रु० ५००) जुर्मानेकी सज़ा या दोनों सज़ायें दी जायँगी। और अगर वही आदमी तीसरी बार या अिससे ज़्यादा गुनहगार साबित होगा, तो अुसे १ सालकी क़ैदकी सज़ा दी जायगी या रु० १,०००) जुर्मानेके वसूल किये जायँगे।

अिस बिलके बनानेवालेने मेहरबानी करके अपनी अुस तक़रीरकी नक़ल भी मेरे पास भेजी है, जो अुन्होंने बिल पेश करते वक़्त की थी। अुसके कुछ बहुत दर्दभरे जुमले मैं नीचे देता हूँ—

"यह छुआछूत अेक तरहकी घोर नासमझी है। जैसे ही अेक हरिजन पैदा होता है, वह अछूत मान लिया जाता है। . . . .वह अछूत ही पैदा होता है, ज़िन्दगी भर अछूत बना रहता है और अछूत ही मर जाता है। . . . चाहे वह कितना ही साफ़-सुथरा हो, कितना ही होशियार हो, दूसरोंसे कितना ही अच्छा हो, लेकिन नामधारी कट्टर हिन्दुओंके लिअे वह कभी अच्छा नहीं होता। सबसे बुरी बात यह है कि मर जाने पर भी हरिजनकी मिट्टी और राख दूसरोंकी मिट्टी और राखसे मिलने नहीं दी जाती। अछूतोंकी तकलीफ़ें अिस बातसे और ज़्यादा बढ़ गअी हैं कि सिर्फ़ सवर्ण हिन्दू ही नहीं, अीसाअी, मुसलमान और दूसरे लोग भी अुनसे अछूतों-जैसा ही बरताव करते हैं। . . . मेरे ख़यालसे यह बिल हरिजनोंको कुछ बुनियादी सामाजिक और नागरिक हक़ोंके अिस्तेमालके लिअे अेक सनद देता है।"

यह ध्यान देनेकी बात है कि यह बिल हिन्दुओंकी तरफ़से बिना किसी विरोधके पास हो गया। क़ानूनको कामयाबीसे अमलमें लानेके लिअे यह अेक अच्छी शुरुआत है। फिर भी अुसके बारेमें बहुत बड़ी आशा बना लेना भी ठीक नहीं होगा। हमारी बदक़िस्मती यह है कि हम ज़ोरसे ताली बजाकर प्रस्ताव पास कर देते हैं, और फिर अुन्हें रद्दीकी टोकनीमें फेंक देते हैं। अिस क़ानूनको पूरी तरह अमलमें लानेके लिअे सरकार और सुधारकोंको ज़्यादा-से-ज़्यादा सावधानी रखनी पड़ेगी।

अिस सचाअीकी ओरसे आँख मूँद लेनेमें कोअी फ़ायदा नहीं कि जिस घोर नासमझीकी ओर बिल बनानेवालेने अिशारा किया है, अभी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तानमें अुसका राज है। सिर्फ़ अछूतपनके मामलेमें ही नहीं, दूसरी बातोंमें भी यही हाल है। सुधारकोंको चाहिये कि वे अिस पर नजर रखें, और जिन पर वह सवार है, अुनसे सावधानी, सज्जनता और होशियारीसे पेश आवें।

नअी दिल्ली, २५-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

हिम्मतभरा जवाब

नेटालसे जो काग़ज़ात आये हैं, अुनमें और चीज़ोंके अलावा डरबनके मेयरके सेक्रेटरी और नेटाल अिण्डियन कांग्रेसके सेक्रेटरीके बीच हुआ ख़तो-किताबत भी है, जो ग़ौर करने लायक़ है। अगले साल मार्चमें अिंग्लैंडका राजपरिवार डरबन जानेवाला है। अुसकी अिस मुलाक़ातके अिन्तज़ामके लिअे वहाँ अेक कमेटी बनाअी गअी है। अिस कमेटीने अपनी अेक सब-कमेटी बनाअी है, जो नेटालके ग़ैर-यूरोपियनों और काले लोगोंको अिन्तज़ाममें शामिल करनेके सवाल पर ग़ौर करेगी। अिस ग़रज़से कमेटीने नेटाल अिण्डियन कांग्रेसको लिखा कि वह सब-कमेटीमें अपने दो नुमाअिन्दे भेजे, जो वहाँके हिन्दुस्तानियोंके राजा-रानी और राजकुमारियोंसे मिलनेके मामलेमें कमेटीको सलाह दें और अुसकी मदद करें।

नेटाल अिण्डियन कांग्रेसके जॉअिण्ट-ऑनररी-सेक्रेटरी (मीर साहब)ने सितम्बर, '४६को अिस बुलावेका नीचे लिखा हिम्मतभरा जवाब दिया है —

"मेरी कार-बारी कमेटीने मुझे यह लिखनेकी हिदायत दी है कि यद्यपि हिन्दुस्तानी क़ौमके दिलमें बादशाह, बेगम और शाहज़ादियोंके लिअे बहुत ज़्यादा अिज़्ज़त है, फिर भी यह ख़याल रखना चाहिये कि दक्खिन अफ्रीकाके हिन्दुस्तानी अपनी तवारीख़के अेक बहुत ही नाज़ुक दौरसे गुज़र रहे हैं। पिछले पचास बरसोंमें काले-गोरेकी बिना पर भेद करनेवाले कअी तरहके अैसे क़ानून पास किये गये हैं, जिनसे मामूली अिनसानी हक़ूक़ भी छीने गये हैं। और, अिन सबका ताज सन् १९४६का यह 'अेशियाटिक लैण्ड टेन्योर अेण्ड अिंडियन रिप्रेज़ेन्टेशन अेक्ट' है, जो हमारी ज़बरदस्त मुख़ालिफ़तके बाद भी पास कर दिया गया है। यूनियनकी सरकारने अपनी आबादीके अेक हिस्सेको, जिसे वोट देनेका भी हक़ नहीं है, अिस तरह दबानेकी कोशिश की है, अुसने सारी हिन्दुस्तानी क़ौमको बहुत ही बेचैन कर दिया है। रंग-भेदकी बिना पर क़ानून बनानेके अुसके अिस रवैयेके बाद अिसमें कोअी शक नहीं रह जाता कि अिस मुल्कके रंगीन लोगोंकी क़िस्मतमें आगे क्या बदा है। अिनसानकी चमड़ीका रंग ही अुसकी अिनसानी ख़ूबियोंकी जाँचकी अेकमात्र कसौटी बन गया है।

"अिन सब बातोंको देखते हुअे दक्खिन-अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंने १३ जून, १९४६को यह तय किया कि वे मुल्कके क़ानूनोंमें काले-गोरेका भेद करनेके ख़िलाफ़ सत्याग्रह शुरू करेंगे। यह शान्त सत्याग्रह अभी तक चल रहा है, और हमारे ६२७ आदमी, जिनमें डॉ० यूसुफ दादू व डा० जी० अेस० नायकर-जैसे नेता भी हैं, जेल भेज दिये गये हैं, जहाँ अुनके साथ चोरों और डाकुओं-जैसा सलूक किया जाता है। अुनमेंसे कुछ, जिनके साथ जेलमें बड़ी बेरहमीका बरताव किया गया था, सज़ा पूरी होने पर छोड़ दिये गये हैं। मगर अभी कअियों जेलके सीख़चोंके अन्दर बन्द हैं, और अुनसे कहीं ज़्यादा लोग जेल भेजे जा रहे हैं।

"जब बादशाहकी सल्तनतके ही अेक हिस्सेमें हिन्दुस्तानी क़ौम अैसी बुरी हालतमें फँसी हो, तब अुससे यह अुम्मीद करना कि वह शाही परिवारके सम्मानमें किये जानेवाले जलसों और मनाअी जानेवाली ख़ुशियोंमें कोअी हिस्सा ले, बहुत ही ग़ैरवाजिब है। अैसी हालतमें हम आपको यह सुझाये बिना नहीं रह सकते कि आप शाही परिवारको यह सलाह दें कि वह अपना यहाँ आना तब तकके लिअे मुल्तवी कर दे, जब तक दक्खिन अफ्रीकामें शासकों और शासितों, गोरों और ग़ैरगोरों, नुमाअिन्दगीके हक़वालों और ग़ैरहक़वालों, हक़याफ़्ता लोगों और महरूमोंके बीच शान्ति और सद्भाव क़ायम न हो जाय, ताकि दक्खिन अफ्रीकाके सभी बाशिन्दोंको सिर्फ़ अुसका बोझ अुठानेमें ही नहीं, बल्कि अुससे मिलनेवाले फ़ायदोंमें भी बराबरीका हिस्सा मिले।"

नेटाल अिण्डियन कांग्रेसको अिस जवाबके लिअे बधाअी दी जानी चाहिये। शाही परिवारकी मुलाक़ातसे अुन लोगोंके दिलमें क्या ख़ुशी हो सकती है, जो अुसी दक्खिन अफ्रीकामें अपनी अिज़्ज़तके लिअे लड़ रहे हैं, जिसको बनानेमें अुनका कोअी कम हाथ नहीं रहा। हम अुम्मीद करें कि शाही परिवारकी मुलाक़ात अुस अधिक अनुकूल समय तक मुल्तवी रहेगी, जब काले-गोरेका भेद बीते ज़मानेकी चीज़ बन चुका होगा। अगर राजा-रानी ख़ुद ही फ़िलहाल अपना नेटाल जाना रोक दें, तो समझा जायगा कि हाल ही अपने अेक फ़रमानसे अिंग्लैंडके क़ौमी गीतमें अुन्होंने नीचे लिखा जो फ़र्क़ कराया था, वह अुनकी दिली ख़्वाहिशके मुताबिक़ ही था —

> "अिस देश पर ही नहीं, बल्कि दुनियाके अेक किनारेसे दूसरे किनारे तक सब जगह अीश्वरकी दया बरसे! हे अीश्वर, तू दुनियाके मुल्कोंको राह दिखा कि वे आपसमें भाअी-भाअीकी तरह रहें, और सारी दुनियाको अेक कुटुम्ब बनायें।"

पुरानी और निकाली हुअी सतरें ये थीं —

> "हे मालिक, हमारे प्रभु, जागो; दुश्मनोंको तितर-बितर कर दो और अुन्हें गिरा दो। अुनकी राजनीतिको चक्करमें डाल दो, और अुनकी शैतानी चालोंको नाकाम कर दो। हमें तुम्हारा ही आधार है, हे भगवान्, हम सबको बचाओ!"

नअी दिल्ली, २५-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

भगाअी हुअी लड़कियाँ

स० — आपने अिस बातकी तरफ़ ध्यान दिलाया है कि जो लड़कियाँ ज़बरन् भगाअी जाती हैं, अुनकी कोअी ग़लती नहीं होती और अगर समाज अुनको क़सूरवार ठहराकर सज़ा देता है, तो वह बेजा करता है। क्या अपनी बातको ज़रा और साफ़ करके आप हमें यह बतलायेंगे कि ज़्यादतीकी शिकार बनी हुअी जिन लड़कियों पर शादीके नामसे कोअी रस्म ज़बरदस्ती लाद दी जाती है, क्या वे अपनी मर्ज़ीके ख़िलाफ़ किसी तरह अुस रस्मसे बँधी हुअी मानी जायँगी? क्या यह ठीक न होगा कि अुनके कुटुम्ब और समाजवाले बड़ा दिल करके अुन्हें वापस ले लें? जिन कुआँरी लड़कियोंको भगाया गया है, या जिनके साथ अिस तरहकी नक़ली शादियाँ कर ली गअी हैं, अुनके बारेमें क्या यह ठीक नहीं होगा कि समाज अुन्हें वापस लेनेकी ख़ास कोशिश करके ही न रह जाय, बल्कि आम तौर पर अुनकी शादियाँ करानेमें मदद दे, और अिस तरह समाजका पूरा समर्थन पाकर वे अुसमें फिर शामिल कर ली जायँ?

ज० — आप ठीक कहते हैं। जो कुछ आप लिख रहे हैं, वह सब मेरी अुस बातमेंसे निकलता है, जिसका आपने ज़िक्र किया है। मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि ज़बरदस्ती भगाअी गअी लड़कियाँ बेगुनाह हैं। किसीको अुनसे नफ़रत नहीं करनी चाहिये। हर सही विचारवाले आदमीको अुन पर तरस आना चाहिये और अुसे अुनकी पूरी मदद करनी चाहिये। अैसी लड़कियोंको अपने घरोंमें ख़ुशी-ख़ुशी और प्यारसे लौटा लाना चाहिये, और अुनके लायक़ लड़कोंसे अुनकी शादी होनेमें कोअी दिक़्क़त नहीं आनी चाहिये।

नअी दिल्ली, २४-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे) मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धमें सत्यार्थप्रकाश पर रोक

खयाल यह था कि सिन्धमें 'सत्यार्थप्रकाश' पर लगाअी गअी रोककी मियाद खतम हो चुकी है; अब फिर कभी अुस पर नअी रोक नहीं लगाअी जायगी। लेकिन यह अुम्मीद धोखा साबित हुअी। अुस पर फिर यह नअी रोक लगा दी गअी है:

"सिन्धकी सरकारको अैसा लगता है कि सिन्धी ज़बानमें छपी 'सत्यार्थप्रकाश' नामकी किताबके १४वें अध्यायमें अैसी बातें हैं, जो सम्राट्के प्रजाजनोंके अलग-अलग फ़िरक़ों और वर्गोंमें बैर और नफ़रत पैदा करनेवाली हैं।

"अिसलिअे अब सन्, १८९८के क्रिमिनल प्रोसिज़र कोडकी दफ़ा ९९ अ से हासिल किये गये अधिकारके मुताबिक़ सिन्ध सरकार यह अैलान करती है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखी हुअी और प्रतिनिधि सभा, सिन्ध, कराचीकी तरफ़से प्रोफ़ेसर ताराचन्द डी० गजरा, अेम० अे० द्वारा छापी गअी सिन्धी 'सत्यार्थप्रकाश'की हर कॉपी, जहाँ कहीं भी वह मिले, और अुसकी नक़लोंवाले दूसरे तमाम दस्तावेज़, नये संस्करण या तरजुमे, या अुस किताबके १४वें अध्यायके अुद्धरणोंको सम्राट्के लिअे अिस बिना पर ज़ब्त कर लिया जाय कि अूपरके अध्यायमें लेखक

(अ) मुसलमानोंके कुछ धार्मिक विश्वासोंका मज़ाक अुड़ाता है;

(आ) क़ुरानके अुपदेशको ग़लत तरीक़ेसे लोगोंके सामने रखकर अुसकी बुराअी करता है;

(अि) पैग़म्बर महम्मदकी सत्ता पर हमला करके अुसकी बुराअी करता है; और

(अी) आम तौर पर अुस अध्यायमें अैसी बातें पाअी जाती हैं जो मुसलमानोंकी धार्मिक भावनाओंको चोट पहुँचानेके लिअे लिखी गअी हैं और चोट पहुँचाती हैं।"

नअी रोकका दायरा पुरानी भी बड़ा है। पहली रोकने तो १४वें अध्यायवाली किताबको छापना या प्रकाशित करना ही गुनाह माना था। लेकिन नअी रोक तो अुस किताबको रखना भी गुनाह मानती है। मैं मानता हूँ कि यह रोक लगाना निरी नासमझी है, और अिससे सारी दुनियाके आर्यसमाजियोंकी धार्मिक भावनाओंको चोट पहुँचेगी। चालीस लाख आर्यसमाजियोंकी निगाहमें 'सत्यार्थप्रकाश'की वही अिज़्ज़त है, जो मुसलमानोंकी निगाहमें क़ुरानकी या अीसाअियोंकी निगाहमें बाअिबिलकी है। मौजूदा ज़मानेके किसी बहसतलब साहित्य या अदबपर लगाअी गअी रोकको समझा जा सकता है, हालाँकि आजके ज़मानेमें लोक-प्रिय सरकारें अैसा होने पर भी अपनी हुकूमतका अिस्तेमाल नहीं करना चाहतीं। लेकिन मज़हबी किताब पर रोक लगाना तो दुष्टतापूर्ण मालूम होता है। अिसलिअे मैं सिन्ध सरकारसे ज़ोर देकर कहूँगा कि वह अिस रोकको हटा ले। 'सत्यार्थप्रकाश'का सिन्धी तरजुमा नया प्रकाशन नहीं है। जिस किताबके अितने संस्करण निकल चुके हों, और दुनियाकी बहुतसी ज़बानों में जिसका तरजुमा हो चुका हो, क्या अुस किताबके बारेमें यह कहना ठीक होगा कि अुसमें अैसी बातें लिखी हैं, "जो सम्राट्के प्रजाजनोंके अलग-अलग फ़िरक़ोंमें बैर या नफ़रतकी भावना पैदा करेंगी?" सहिष्णुताके गुणकी अति कभी नहीं होती, खासकर मज़हबी बातोंमें। मज़हबी खयालोंके फ़र्क़ तो क़यामत तक चलते ही रहेंगे। अिसलिअे सहिष्णुताके ज़रियेही अलग-अलग मज़हबोंको माननेवाले लोग भले पड़ोसी और दोस्त बन कर रह सकते हैं। टीका करनेवालोंकी अच्छी या बुरी टीकासे मज़हबका कुछ नहीं बिगड़ता; अुसमें विगाड़ पैदा होता है, अुसके माननेवालोंकी ढिलाअी और लापरवाहीसे। नअी दिल्ली, २६-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

हफ़्तेवार ख़त

ज़बरदस्तीकी शादियाँ और धर्म-परिवर्तन

गांधीजीसे बार-बार यह सवाल पूछा जा रहा है कि पूरबी बंगालमें जिन लड़कियोंको जबरदस्ती अुठा ले गये हैं, या जिनका धर्म-परिवर्तन कर दिया गया है, अुनका क्या? गांधीजीके मनमें भी यह सवाल अुठ ही रहा था। अिसके जवाबमें पिछले अितवारको शामकी प्रार्थना-सभामें अुन्होंने कहा — "ज़बरदस्ती किसीका दीन या धरम बदला नहीं जा सकता। मैं तो बरसोंसे मुसलमानोंके साथ बैठनेवाला ठहरा। मुसलमानोंने मुझे मुसलमान बननेको कहा, खिस्ती लोगोंने खिस्ती बननेको कहा। मगर अेक बात सबने कही — 'धर्म तो दिलकी बात है। अुसमें जबरदस्ती नहीं हो सकती'। किसीने ज़बरदस्ती कलमा पढ़ा दिया, तो क्या हम मुसलमान बन गये? और कलमेमें है क्या? — '.खुदा अेक है। अुसके सिवा किसीकी हस्ती नहीं'। मैं तो सब जगह घूमा हूँ। सब धर्म यही कहते हैं कि .खुदा अेक है। वह निरंजन और निराकार है। अुसे छोड़कर हम जायँगे कहाँ? आगे चलकर अुसी कलमेमें कहा गया है — 'मुहम्मद हमारा रसूल है'। .खुदाके कअी पैगम्बर हुअे हैं। अुनमें मुहम्मद साहब भी अेक थे। मुझे यह माननेमें कोअी अुज्र नहीं। तो मैं कह सकता हूँ कि मैं मुसलमान हूँ; हम सब मुसलमान हैं। मगर ज़बरदस्ती कोअी मुझसे कहलाना चाहे — 'बोलो, .खुदा अेक है। मुहम्मद अुसका रसूल है'। तो मैं खामोश रहूँगा। भले मुझे कोअी मार भी डाले, मगर मैं कलमा नहीं पढ़ूँगा। अगर ग़रीब और अनपढ़ लोग मारे डरके कलमा पढ़ लें, तो क्या वे मुसलमान बन गये? मुसलमान वह है, जो खुदाकी खिल्क़त (सृष्टि)की खिदमत करता है। अिस तरह बकनेसे धर्म नहीं बदलता। जिनका अिस तरह ज़बरदस्ती धर्म बदला गया है, अुन्हें किसी तरहकी शुद्धिकी ज़रूरत नहीं; किसी तरहके प्रायश्चित्तकी ज़रूरत नहीं। अुन्होंने खुद कोअी पाप नहीं किया। अिसी तरह जिन लड़कियोंको ज़बरदस्ती अुठा ले गये हैं, अुन्हें वापस लेना चाहिये। ज़बरदस्ती किसीकी शादी नहीं की जा सकती। मुझे अुम्मीद है कि सब सच्चे मुसलमान पूरबी बंगालकी वारदातोंके खिलाफ़ अपनी आवाज़ अुठावेंगे।"

पागलपन

.गुस्सेमें आदमी पागल बन जाता है। वह अक़्ल खोकर अपनी ही बात काटनेवाले काम करने लगता है। पिछले गुरुवारको प्रार्थनासे पहले कुछ नौजवान .गुस्सेसे पागल बनकर, झण्डे अुठाये, नारे लगाते हुअे, प्रार्थनाकी जगह आ पहुँचे। अुनकी माँग थी — "बंगालके लिअे आप क्या कर रहे हैं? सरकार क्या कर रही है?" गांधीजीने अुन्हें शान्त किया और कहा — "आप अपनी आवाज़ नअी सरकार तक पहुँचाना चाहते हैं? वह पहले ही पहुँच चुकी है। मैं जानता हूँ कि आज मेरी जगह बंगालमें है। .खुदाको माननेवाले हरअेक मर्द और औरतका दिल आज बंगालके लिअे .खूनके आँसू बहा रहा है। अिस तरह प्रार्थनामें हल्ला करनेसे कोअी फ़ायदा नहीं होगा। आप शान्त होकर प्रार्थनामें शरीक हों।"

किसीने चिल्लाकर कहा — "जब हमारा घर जल रहा हो, तब हम प्रार्थनामें कैसे बैठें?"

गांधीजीने प्रार्थनाके बाद अिसीका हवाला देकर कहा — "आज पूरी प्रार्थना नहीं की गअी। सिर्फ़ राम-धुन ही गाअी गअी है, क्योंकि आप लोगोंका दिल प्रार्थना सुननेके लिअे शान्त नहीं है। जब घरमें आग लगती है, तब घरका मालिक या नौकर घबराकर पागल नहीं बनता; आग बुझानेकी कोशिश करता है। कहा जाता है कि अेक बार राजा जनककी राजधानीमें आग लग गअी। अिसकी खबर पाकर भी राजा ज्यों-के-त्यों अपना काम करते रहे। किसीने अुनसे पूछा — 'आप अैसे बेफ़िकर क्यों हैं'? अुन्होंने कहा — 'मुझे जो करना था, सब कर चुका। अब मैं अिधर-अुधर भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहें, तो सिवा अिसके कि आग बुझानेवाले घबराहटमें पड़ें, और कोअी फ़ायदा नहीं होगा। अिसलिअे में भगवान्के भरोसे बैठा हूँ'।

"आपको पूरबी बंगालकी बहनोंके दुःखकी बात सुनकर रंज होता है। पर आप .खुद बहनोंका अपमान कर रहे हैं। जिस जगह वे रोज़ प्रार्थनाके लिअे बैठती हैं, वह जगह आपने घेर ली है। आपका हल्ला सुनकर वे चली गअी हैं। पूरबी बंगालकी बहनोंके साथ हमदर्दी दिखानेका आपका यह कैसा तरीक़ा है?

"हमारी औरतें हुल्लड़से बहुत जल्द डर जाती हैं। क़रीब-क़रीब सारी दुनियामें औरतोंका यही हाल है। मैं चाहता हूँ कि सारी औरतें बहादुर बनें। मैंने बहनोंसे कहा है कि वे चाहें तो अपनी रक्षा कर सकती हैं। अगर अुससे भी वे अपनी अिज़्ज़त न बचा सकें, तो ज़हर खाकर मर जायँ। कोअी कैसा ही मर्द या औरत क्यों न हो, १०० या ५० जनोंका सामना अेक खंजरसे नहीं कर सकता। मगर जब हमारी बहनें अितनी बहादुर बन जायँगी कि जान तक देनेको तैयार हो जायँ, तब वे किसीसे नहीं डरेंगी। अुनकी अिज़्ज़त या हिफ़ाज़त भगवान् करेगा। अपनी रक्षाके दो रास्ते हैं — मारना और मरना, या बिना मारे मर जाना। मैं आपको दूसरा रास्ता बता सकता हूँ, पहला नहीं। आप जो चाहें, करें; लेकिन डरपोक न बनें। डरपोकपनसे बड़ा कोअी पाप नहीं।

"मगर हिंसाकी भी कोअी मर्यादा होती है। मैं नहीं चाहता कि आज पूरबी बंगालमें जो कुछ हो रहा है, आप अुसकी नक़ल करें। आपने मौलाना आज़ाद साहब और मजलिस-अे-अहरारके नाज़िम प्रेसीडेण्ट साहबके बयान पढ़े होंगे। वे साफ़ कहते हैं कि 'अिस्लाम ज़बरदस्ती धर्म-परिवर्तन करने या औरतों पर ज़बरदस्ती करने की अिजाज़त नहीं देता'।

'मन लागो मेरो यार फ़क़ीरीमें'

श्री ठक्कर बापा और बम्बअीके प्रधान-मंत्री श्री बालासाहब खेरकी बहुत-सी बातें अेक-सी हैं। दोनों दिलके फ़क़ीर हैं, और दोनोंने आदिवासियों और हरिजनोंकी सेवाको अपनाया है। बहुत कम लोग जानते हैं कि जब श्री खेर सॉलिसिटर थे, तब भी वे बम्बअीके झोंपड़ोंमें बसे हुअे चमारों और मोचियोंकी बहुत सेवा करते थे। बम्बअीके आदिवासी-सेवा-मण्डलसे भी अुनका ताल्लुक़ रहा है। पिछले हफ़्ते गांधीजीके कहने पर अेक दिन श्री बापाने और दूसरे दिन श्री खेरने प्रार्थनामें भजन गाये।

श्री ठक्कर बापाने हमेशा सरसब्ज़ रहनेका गुर सीख लिया है। अुम्रका अुनके दिलकी अुमंग पर कोअी असर नहीं पड़ता। अुन्होंने गाया — 'मन लागो मेरो यार फ़क़ीरीमें।' प्रार्थनाके बाद अिसी भजनको लेकर गांधीजीने कहा — "मैं पिछले दो रोज़से आपको यह कह रहा हूँ कि बेअिज़्ज़तीसे मौत भली। मगर अिस मंत्रको अमलमें लानेके लिअे दिलकी फ़क़ीरी निहायत ज़रूरी है। अुसके लिअे सोटेकी और भिक्षापात्रकी ज़रूरत नहीं। अेक ज़माना था, जब अैसे फ़क़ीरोंके लिअे भी जगह थी — आज नहीं है। आज समाजके ख़याल आगे बढ़ गये हैं, अगरचे अुसके बरतावमें आज भी दक़ियानूसीपन मौजूद है। आअिन्दा समाजकी बनावट अैसी होनी चाहिये, जिसमें ग़रीब और अमीर, काले और गोरे या मुल्क और मुल्कके बीच कोअी भेद न रहे। अुस समाजमें मनकी शुद्धि और दिलकी फ़क़ीरीकी ज़रूरत होगी। श्री ठक्कर बापा अैसे ही अेक फ़क़ीर हैं, जिन्होंने दलित जातियों, हरिजनों और भीलों, संथालों, खासियों वग़ैराकी ख़िदमतमें अपनी ज़िन्दगी लगा दी है। अगर आप अपनेमें यह भावना पैदा कर सकें, तो आपकी कभी बेअिज़्ज़ती न हो। आज मेरे मनमें हमारी बहनोंकी बेअिज़्ज़तीका सवाल नहीं अुठ रहा है। मैं चाहता हूँ कि आप काला-बाज़ारको और ग़रीबोंको ठगनेकी बातको भी अेक तरहकी बेअिज़्ज़ती समझें। अिस तरहकी बेअिज़्ज़ती सहनेके बजाय ख़ुदकुशी कर लेना ज़्यादा अच्छा होगा। मैं जानता हूँ कि आपमेंसे कुछ लोग मेरे अिन ख़यालोंसे डर जायँगे। लेकिन जिस बातको मैं तहेदिलसे मानता हूँ, अुसे छिपाअूँ, तो मैं पापका भागी बनूँ। श्री ठक्कर बापाने अपने भजनमें जिस पवित्रता और फ़क़ीरीकी बात कही, और वे ख़ुद जिसके अवतार हैं, वही फ़क़ीरी और पवित्रता जब तक आपमें नहीं आती, तब तक आप अपनी अिज़्ज़तकी रक्षा नहीं कर सकते।"

दूसरे दिन शामकी प्रार्थनामें श्री बालासाहब खेरने तुकारामका जो भजन गाया, वह भी अुनकी ख़ासियत ज़ाहिर करता था। अुसमें भक्त कहता है — "हे देव, मुझे अिन आँखों पापकी वासना न दिखा। अुससे तो मैं अन्धा ही अच्छा। मुझे अिन कानों किसीकी निन्दा न सुनने दे। अुससे बेहतर तो यह है कि तू मुझे बहरा बना दे। मेरे मुँहसे अपवित्र वाणी न निकलने दे। अुससे तो मैं गूँगा ही भला। मुझे कभी पराअी औरतकी सोहबतमें न पड़ने दे। अुससे तो मेरा मर जाना भला। हे देव, मैं सब चीज़ोंसे अूब गया हूँ। हे गोपाल, अेक तू ही मुझे अच्छा लगता है।"

काली दीवाली

पिछले सोमवार की प्रार्थना-सभा में पढ़नेके लिअे गांधीजीने जो सन्देश लिखा था, अुसमें अुन्होंने दुःखके साथ कहा था अिस बार दीवालीका त्योहार अैसे मौक़े पर आया है, जब सारा मुल्क रंज में डूबा हुआ है। बंगाल में हज़ारों घर लूटे और जलाकर बरबाद कर दिये गये हैं। लोगोंके प्यारे भाअी-बेटे मौतके घाट अुतार दिये गये हैं। अिससे भी ज़्यादा ख़ौफ़नाक बातें हुअी हैं। भाअी-भाअीके बीचकी लड़ाअी हैवानियतके दरजे तक पहुँच गअी है। धर्मके नाम पर अैसे-अैसे काम किये गये हैं, जिनसे अिनसानका सिर शर्मके मारे झुक जाता है, और वह अिनसानियतमें अपना भरोसा खो बैठता है। जब लोग रोते-बिलखते हों, रंजोगम में डूबे हों, बेबसीके शिकार बने हों, और जब बेगुनाहोंको मौतके घाट अुतारा जाता हो, तब दावतें अुड़ाना या रोशनी करना हराम है। आज सारा मुल्क भूखा, नंगा और बेहाल है। सबसे बुरी बात यह है कि हम आपसमें ही लड़ रहे हैं। अिस बारे में मैंने काफ़ी लिखा और कहा है। फिर भी मैं अिस बातको दोहराना चाहता हूँ कि जो पवित्र हैं, वे ज़्यादा पवित्र बनें; जो पापी हैं, वे अपने पाप धो डालें। सब अपने भरसक अनाज बचावें और ज़्यादा-से-ज़्यादा कातें, ताकि मुल्क में ज़्यादा कपड़ा बने। आज खाना बचाना खाना पैदा करने-जैसा ही फ़ायदेमन्द है। कातना हिन्दुस्तानके नंगेपनको कम करना है। जो सच्चा है, वह दुनिया को अेक क़दम आगे ले जाता है। आज हमारी सारी कोशिशें अिसी तरफ़ लग जानी चाहियें। हमें यह साफ़-साफ़ समझ लेना चाहिये कि आज दावतें अुड़ानेका या मौज-मज़ा करनेका वक़्त नहीं है।"

नये सालका सन्देश

पिछले शुक्रवारको नये सालके सन्देशमें यही बात गांधीजीने फिर कही — "आज हिन्दुस्तान अेक बड़ी मुसीबतमें से गुज़र रहा है। सच पूछा जाय, तो सारी दुनिया मुसीबतमेंसे गुज़र रही है; हिन्दुस्तान अुससे बच नहीं सकता। अिस मुसीबतका सामना करनेके लिअे हमें किस मददकी ज़रूरत है? गीताजीके सन्देशके अनुसार अपनी आध्यात्मिक या रूहानी ताक़त बढ़ानेकी पहली शर्त है, निर्भयता। नये सालके दिन लोग कोअी अच्छा संकल्प करते हैं। आप लोग आज डरका त्याग करनेकी प्रतिज्ञा कीजिये। निडरपनके बिना दूसरी सब अच्छाअियाँ धूल हो जाती हैं। सत्य या अहिंसाकी सिद्धि निर्भयताके बिना संभव नहीं।

"लेकिन निडरपनका मतलब यह नहीं कि आप घमण्डी बन जायँ या लोगों पर हमला करें। यह तो अपने-आपमें डरकी अेक निशानी है। निडरपनके लिअे मनकी शान्ति और धीरज बहुत ज़रूरी है। अिसके लिअे अीश्वरमें हमारी जीती-जागती श्रद्धा होनी चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिरमें गांधीजीने कहा — "अभी आपको जो भजन सुनाया गया, अुसमें भक्त कहता है — 'अिश्वरसे बिछुड़कर मैं बिलकुल निकम्मा बन जाअूँगा। मैं जीते जी अीश्वरकी ही शरणमें रहना चाहता हूँ। जो अीश्वरकी शरण लेता है, अुसे कोअी डर नहीं'।"

'अेकला चलो'

अुस दिन जब श्रीमती नन्दिता कृपालानीने अपनी मीठी आवाज़में गुरुदेवका मशहूर गीत 'अेकला चलो रे' गाया, तो गांधीजीको प्रार्थना-सभाकी अपनी तक़रीरका मज़मून मिल गया, और अुन्होंने पिछले दिनकी सीख पर फिर ज़ोर देते हुअे कहा — "अिस भजनमें यह बताया गया है कि भक्तको अकेले ही बड़ी-से-बड़ी मुसीबतका सामना करना चाहिये। अगर वह यह महसूस कर ले कि अीश्वर हमेशा अुसके साथ रहता है, तो अुसे अपना अकेलापन कभी न अखरेगा। यह भजन पापियोंके लिअे नहीं है। वे अकेले मुसीबतका सामना नहीं कर सकते।"

आगे चलकर गांधीजीने कहा — "लीगी मेम्बर कैबिनेटमें शामिल हुअे हैं। मैं अुम्मीद करता हूँ कि वे अपनी जिम्मेदारीको पूरी तरह निबाहनेका पक्का अिरादा करके ही आये हैं। आज मुल्कका राज-काज अिन १४ मेम्बरोंके हाथमें है। अुन्हें करोड़ोंको खाना-कपड़ा और तालीम देनी है। अुनके लिअे आमद-रफ़्तके अच्छे ज़रिये मुहैया करने हैं, और मुल्ककी शान्ति और व्यवस्थाकी जिम्मेदारी लेनी है। हम प्रार्थना करें कि वे सब मिलकर काम करें, अपने काम-काजमें बेलाग रहें, और रिश्वतख़ोरी व तरफ़दारी वग़ैरा बीते ज़मानेकी चीज़ें बन जायँ!" नअी दिल्ली, २७-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

अेक नया सुझाव

श्री रामनरेश त्रिपाठी लिखते हैं —

"कपड़े और ग़ल्लेके कण्ट्रोलसे तकलीफ़ें घटनेके बदले बहु- बढ़ गअी हैं। कपड़ेका तो यह हाल है कि बहुत-से गाँववालोंको सालमें अेक बार भी कपड़ा नहीं मिला। और, ग़ल्लेका यह हाल है कि सरकारने जो दर क़ायम कर दी, किसान अुससे कहीं ज़्यादा महँगा बेचने लगे। मुझे शहरमें कण्ट्रोलवाली दुकानसे अेक रुपयेका तेरह पाव गेहूँ मिलता है। मगर गाँवमें आठ-नौ पाव बिक रहा है। अिससे वे लोग जो सरकारी दुकानोंसे ग़ल्ला नहीं पाते, अपनी कमाअीकी सारी ताक़त लगाकर बड़ी मुश्किलसे जी रहे हैं। शुरूमें पुरानी सरकारने कहा था कि खाने-पहननेकी चीज़ें सबको बराबर मिलती रहें, अिसके लिअे वह कण्ट्रोलका तरीक़ा जारी कर रही है। पर यह अेक ढोंग था। असलमें सरकारने अपने फ़ायदेके लिअे अिसे जारी किया था। लड़ाअीके ज़मानेमें महँगाअीके कारण बहुत-से लोग घर छोड़-छोड़ कर फ़ौजमें भरती हो गये थे, और सरकार यही चाहती भी थी। अगर कण्ट्रोलका तरीक़ा न चलाया गया होता, तो कम-से-कम अिस सूबेमें तो खाने-पहननेकी चीज़ोंकी अुतनी कमी कभी न होती, जितनी आज है।

"लेकिन अब अिससे छुटकारा कैसे मिले? अगर कण्ट्रोल अुठा लिया जाता है, तो सरकारके बनाये हुअे नये-नये सेठ तमाम ग़ल्ला और कपड़ा ख़रीद लेंगे और महँगेसे भी महँगा करके बेचेंगे। अुस हालतमें सरकारके पास अिसके सिवा और कोअी चारा न रह जायगा कि वह खुद अुन पर डाका डाले, अुनका माल जब्त कर ले, और सस्ता करके बेचे, जो वह करेगी नहीं। पुरानी सरकारने नअी सरकारके लिअे जो नागफाँस तैयार कर दिया था, नअी सरकार अुसमें अच्छी तरह फँस गअी है, यह अुसे महसूस हो रहा है या नहीं, मालूम नहीं। किसान अपनी ख़ुशीसे ग़ल्ला सस्ता करेंगे नहीं; अुन्हें चस्का लग गया है; सरकार कपड़ा सस्ता होने देगी नहीं, क्योंकि मिलोंसे ही मुनाफ़ेकी अेक अच्छी रक़म हथिया लेनेका चस्का अुसको भी लग गया है, तब फिर अिस बलासे आम जनताका पिण्ड कैसे छूटे? पढ़े-लिखे लोगोंको तो यह कहकर बहका लिया गया था कि ग़ल्ला महँगा करके किसानोंकी ख़रीदनेकी ताक़त बढ़ाअी जा रही है। मगर वे ख़रीदते क्या हैं? विदेशी चीज़ें। वे ग़ल्लेको महँगा बेचकर भी मालदार नहीं बन पाये। क़रीब-क़रीब वे जहाँ के तहाँ ही हैं।

"कण्ट्रोलसे छुटकारा पानेका अेक नया सुझाव मैं सामने रखना चाहता हूँ। वह सुझाव यह है कि सरकार किसानोंसे मालगुज़ारी रुपयेके बदले ग़ल्लेकी सूरतमें ले। अैसा क़ायदा हिन्दुस्तानमें बहुत पुराने ज़मानेसे अकबरके ज़माने तक जारी था। शास्त्रोंके ज़मानेमें कभी अुपजका छठा हिस्सा और कभी दसवाँ हिस्सा लिया जाता रहा है। अकबरके ज़मानेमें शायद सोलहवाँ हिस्सा लिया जाने लगा था। अितिहासवाले ठीक-ठीक बता सकेंगे। गाँवोंमें अब भी मज़दूरोंको ग़ल्लेकी अुपजका सोलहवाँ भाग मज़दूरीमें दिया जाता है। कहा जाता है कि टोडरमल ने मालगुज़ारी ग़ल्लेमें न लेकर सिक्केमें लेनेका चलन निकाला था। अिन्साफ़की बात तो यह है कि मालगुज़ारी ग़ल्ले ही में लेनी चाहिये; क्योंकि किसान ज़मीनसे ग़ल्ला ही निकालता है, सिक्का नहीं। सरकारको देनेके लिअे अुसे ग़ल्लेका सिक्का बनाना पड़ता है। अिसका अेक बुरा नतीजा यह भी होता है कि किसान और सरकारके बीचमें अेक बनिया पलता है, जो किसानको क़र्ज़दार भी बनाये रखता है।

"अब अिसे फैलाकर देखना चाहिये। फ़र्ज़ कीजिये, सरकार अेक बीघेकी मालगुज़ारी दो रुपये लेती है, और अेक बीघेमें कम-से-कम दस मन पैदावार होती है, तो सरकारको दो रुपयेके बदलेमें पैदावारका सोलहवाँ हिस्सा यानी पचीस सेर ग़ल्ला मिलेगा, जो अेक रुपयेका साढ़े बारह सेर पड़ेगा। अब सरकार रुपयेका कम-से-कम दस सेर तो बेच ही सकती है। ढाअी सेर वह ख़र्चेके मदमें डाल सकती है। बेचनेके लिअे अुसे दूर भी नहीं जाना पड़ेगा। ज़िलेमें जहाँ-जहाँ ग़ल्ला जमा हो, वह वहीं बेचा भी जा सकता है। अिससे ख़रीदकर खानेवालोंकी तकलीफ़ भी कम हो जायगी, और फ़ज़ूल चीज़ें ख़रीदनेकी किसानकी आदत भी सुधर जायगी।

"सरकार फ़ौजके लिअे लाखों मन ग़ल्ला ख़रीदती है। वह भी अिसी ग़ल्लेमेंसे अपनी ज़रूरतभरका ले सकती है, जो अुसे सस्ता भी पड़ेगा।"

जैसा कि त्रिपाठीजीने लिखा है, अिसमें कोअी शक नहीं कि पैसेके बदले ग़ल्ला लिया जाय, तो किसानोंको फ़ायदा होगा। शर्त यह है कि अमला लोग लुटेरे न हों, और वे हर हालतमें किसानोंका ही फ़ायदा देखें। मगर अैसा होता नहीं है। यह अेक वजह है, जिससे ख़ुद किसानोंने ग़ल्लेके बदले पैसा देना पसन्द किया।

नअी दिल्ली, १८-१०-'४६ मोहनदास करमचंद गांधी

विषय-सूची

यह अिस्लामके खिलाफ़ है	...	गांधीजी
हिन्दुस्तानी	...	काका कालेलकर
ट्रस्टी कौन बन सकता है?	...	गांधीजी
अेक अक़्लमन्दीका काम	...	गांधीजी
हिम्मतभरा जवाब	...	गांधीजी
सिंधमें सत्यार्थप्रकाश पर रोक	...	गांधीजी
हफ़्तेवार खत	...	प्यारेलाल
अेक नया सुझाव	...	गांधीजी
टिप्पणी		
भगाअी हुअी लड़कियाँ	...	मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

१२ पृष्ठ
दो आना

सम्पादक - प्यारेलाल

अंक ४०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १० नवम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

हफ़्तेवार ख़त

पुकार

बेहद मानसिक व्यथा, गहरे सोच-विचार और लम्बी बहसके बाद गांधीजीने २८ अक्तूबरके दिन बंगालके लिअे रवाना होनेका फ़ैसला किया। अपने अेक बहुत अज़ीज़ दोस्तके साथकी बहसके सिलसिलेमें अुन्होंने कहा था — "मैं नहीं जानता कि मैं वहाँ जाकर क्या कर सकूँगा।" अिन दोस्तने बिलकुल अख़ीर-अख़ीरमें गांधीजीको यह समझानेकी कोशिश की थी कि वे अभी अितने लम्बे सफ़रके लिअे रवाना न हों। "मैं तो सिर्फ़ यह जानता हूँ कि अगर मैं वहाँ नहीं जाता, मुझे चैन न पड़ेगा।" और फिर विचारकी शक्ति का बयान करने लगे। अुन्होंने कहा — "विचार दो तरहके होते हैं — निकम्मे और सक्रिय या अमली। आदमीके दिमाग़में सैकड़ों निकम्मे विचार घूमते रह सकते हैं। मगर अुनकी कोअी क़ीमत नहीं। वे अण्डेके कभी न फलनेवाले बीजकी तरह हैं। लेकिन अेक शुद्ध, सक्रिय विचार, जो दिलकी गहराओसे और अिनसानकी अपनी समूची ताक़तके साथ बाहर आता है, बहुत पुरअसर बन जाता है और अेक फलनेवाले बीजकी तरह काम करता है।" नोआखालीवालोंके पास पहुँचनेकी जो ज़बरदस्त ख़ाहिश अुनके मनमें अपने-आप पैदा हुअी थी, अुसे वे दबाना नहीं चाहते थे। पिछले अितवारको नअी दिल्लीमें शामकी प्रार्थना-सभाके वक़्त भाषण करते हुअे गांधीजीने कहा — "मैं कल सुबह कलकत्ता जा रहा हूँ। मैं नहीं जानता कि भगवान् मुझे कब वापस दिल्ली लायेगा। मैं कलकत्तेसे नोआखाली जाना चाहता हूँ। अपनी गिरी हुअी तन्दुरुस्तीको देखते हुअे मेरे लिअे यह अेक मुश्किलका सफ़र होगा। लेकिन अिनसानको अपना फ़र्ज़ तो अदा करना ही पड़ता है। अुसे यक़ीन रखना चाहिये कि अीश्वर अुसके रास्तेको आसान बना देगा। यह ज़रूरी नहीं कि अीश्वर हमारे रास्तेकी मुश्किलों और मुसीबतोंको हमेशा दूर कर दिया करे, लेकिन वह हमें अितनी ताक़त ज़रूर देता है कि हम अुन्हें बरदाश्त कर लें।"

आगे चलकर अुन्होंने कहा — "मैं नहीं चाहता कि आपमेंसे कोअी मुझे बिदा करनेके लिअे स्टेशन आयें। हिन्दुस्तानने मुझे अपनी मुहब्बतसे ढँक दिया है। अब अुसके ज़्यादा दिखावेकी ज़रूरत नहीं।

"मैं किसीका अिन्साफ़ करने या किसीके ख़िलाफ़ या हक़में फ़ैसला देनेके लिअे बंगाल नहीं जा रहा हूँ। मैं तो वहाँ लोगोंके अेक सेवककी हैसियतसे जा रहा हूँ। मैं वहाँके हिन्दू-मुसलमान दोनोंसे मिलूँगा। आज कुछ मुसलमान मुझे अपना दुश्मन समझते हैं। लेकिन वे हमेशा ही मुझे अपना दुश्मन नहीं मानते थे। मगर मैं अुनके अिस गुस्सेकी परवाह नहीं करता। क्या ख़ुद हिन्दू ही मुझ पर कभी-कभी गुस्सा नहीं होते? अपनी सत्रह सालकी अुमरसे ही मैंने यह सबक़ सीखा है कि सभी अिनसान, फिर वे किसी भी क़ौम, रंग या मुल्कके क्यों न हों, मेरे अपने सगे हैं, रिश्तेदार हैं। अगर हम भगवान्के सेवक हैं, तो हमें अुसकी सारी सृष्टि या ख़िलक़तके भी सेवक बनना चाहिये।

"अपनी अिसी हैसियतसे मैं बंगाल जा रहा हूँ। मैं वहाँ जाकर बंगालियोंसे कहूँगा कि हिन्दू और मुसलमान कभी अेक-दूसरेके दुश्मन नहीं हो सकते। वे सब हिन्दुस्तानमें ही पैदा हुअे हैं, यहीं पले-पुसे हैं, और अुन्हें यहीं जीना और मरना है। धर्म या मज़हबके बदलनेसे यह बुनियादी बात नहीं बदल सकती। अगर कुछ लोग यह मानना चाहते हों कि धर्मके बदल जानेसे क़ौम भी बदल जाती है, तो भी अुनके लिअे अेक-दूसरेके दुश्मन बनना ज़रूरी नहीं।

"बहनोंकी मुसीबतोंने मेरे दिलको बेचैन बना दिया है। मैं बंगाल जाकर अुनके आँसू पोंछना, और अगर हो सके तो अुनमें हिम्मत पैदा करना चाहता हूँ। कलकत्तेमें मैं बंगालके गवर्नरसे और वहाँके वज़ीरे आज़म मि० सुहरावर्दीसे मिलनेकी कोशिश करूँगा और फिर नोआखाली जाअूँगा।

"मैं यहाँसे किसी अच्छी हालतमें नहीं जा रहा हूँ। कल वाअिसरायके महलके सामने अेक भद्दा दिखावा किया गया। लोगोंने पण्डित जवाहरलालको और आरज़ी सरकारके अुनके कुछ साथियोंको गालियाँ दीं, और अुनकी तौहीन की। यह बुरी चीज़ थी। जब मुस्लिम लीग और कांग्रेस दोनोंने केन्द्रमें अपनी अेक मिली-जुली सरकार बना ली है, तब अैसी बातें क्यों होनी चाहियें? आपके जो नेता अपनी पूरी ताक़तसे आपकी सेवा करना चाहते हैं, अुनकी निगाहमें तो आपकी स्तुति या निन्दासे कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ता।

"अिस सबके बावजूद, आअिये हम सब मिलकर यह दुआ करें और चाहें कि कैबिनेटके सभी वज़ीर साथियोंकी तरह मिलकर काम करेंगे। अगर हिन्दुस्तान अेक आवाज़से बोल सके, तो वह दुनियाका सबसे बड़ा मुल्क बन जाय। अिसलिअे हरअेक सच्चे हिन्दुस्तानीका फ़र्ज़ है कि वह मनाये कि अुसका मुल्क अिस दरजे तक पहुँचे।"

सफ़र

हममेंसे कुछको यह डर था कि अिस बारका सफ़र बहुत ही मुश्किल और परेशान करनेवाला होगा। अबकी अिस रास्तेसे गांधीजी १२ बरस बाद सफ़र कर रहे थे। अिसलिअे सहज ही रास्ते के सभी बड़े-बड़े स्टेशनों पर लोगोंकी बेहद भीड़ जमा हुअी थी। अलीगढ़, टूँडला, कानपुर, आसनसोल, सभी जगह यही हाल था। प्लेटफ़ॉर्मों पर चींटियोंके दलकी तरह लोगोंके दल अुमड़े पड़ते थे। लोग छतों पर चढ़ गये, अुन्होंने खिड़कियाँ रोक लीं, काँच तोड़े, लकड़ीके शटर या पर्दे चूर-चूर किये, और अिस बुरी तरह शोर मचाने लगे कि सुनकर कानके पर्दे फट जायँ। गांधीजीके दर्शनोंके लिअे वे बार-बार ख़तरेकी जंज़ीर खींचने लगे। अिसलिअे आख़िर ब्रेकसे जंज़ीरका सम्बन्ध काट देना पड़ा। स्टेशनके हाकिमोंने डब्बोंके अूपरसे पानीके नल की मार चलाकर लोगोंको भगानेकी कोशिश की, लेकिन कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ा; अुलटे हमारा डब्बा अन्दरसे गीला हो गया। अलीगढ़में ब्रेककी ग्रीज़ या चर्बीवाली पेटीके अन्दर रखे हुअे चिथड़े धुँधवाने लगे, और अितने ज़ोरका तेज़ धूआँ अुगलने लगे कि हमारा सारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डब्बा अुससे भर गया। बड़ी मुश्किलसे लोगोंकी भीड़को चीरते हुअे हममेंसे अेक भाअी बाहर गये और अुन्होंने रेलवेके हाकिमोंको अिसकी अित्तिला दी। अगर आग भड़क जाती, तो पता नहीं हम लोग अपने अितने सारे सामानके साथ डब्बेसे बाहर भी निकल पाते या नहीं।

बादमें शामको जब शोर-ग़ुल अितना बढ़ गया कि सहा न जा सका, तो गांधीजी अुससे बचनेके लिअे अपने कानोंमें अँगुली डालकर बैठ गये। अितना होने पर भी जब अुन्हें यह सुझाया गया कि वे डब्बेकी बत्ती बुझा देनेकी अिजाज़त दे दें, ताकि अँधेरा देखकर दर्शन चाहनेवाले लौट जायँ, तो अुन्होंने अुसे मंज़ूर न किया। अुन्होंने कहा कि आम लोगोंकी भोली श्रद्धाको तृप्त करनेका अेकमात्र तरीक़ा यह है कि वे अपनी आख़िरी साँस तक अुनकी सेवा करते रहें, और अुनकी तरफ़के अपने फ़र्ज़के बदले अपने आरामको कभी तरजीह न दें।

सोदपुरमें

गांधीजीकी गाड़ी अुस दिन लिलुआ स्टेशन पर पाँच घण्टे देरसे पहुँची। स्टेशनसे वे सीधे श्री सतीशचन्द्र दासगुप्तके सोदपुरवाले खादी-प्रतिष्ठान-आश्रमको ले जाये गये। वहाँ वे शामको साढ़े पाँच बजे पहुँचे। सोदपुरके आस-पासके कअी सौ लोग वहाँ शामकी प्रार्थनाके लिअे अिकट्ठा हो चुके थे। लोगोंको प्रार्थनाका समय साढ़े पाँचका ही बताया गया था। लेकिन गांधीजी ७ बजेके बाद ही प्रार्थनामें शामिल हो सके। प्रार्थनाके बादकी अपनी तक़रीरमें अुन्होंने कहा — "मैंने सपनेमें भी यह नहीं सोचा था कि मैं अितनी जल्दी वापस सोदपुर आअूँगा। लेकिन भगवान्‌ने मुझे फिर आप लोगोंके बीच भेज दिया है। गाड़ी आज पाँच घण्टे देरसे आअी। मैं तो अिसे भी अीश्वरकी ही मरज़ी मानता हूँ। अिसमें शक नहीं कि अलीगढ़, खुर्जारोड, कानपुर और दूसरे बड़े स्टेशनों पर लोगोंकी बहुत भीड़ अिकट्ठा हो गअी थी, जिससे गाड़ीको जगह-जगह रुकना पड़ गया था। लेकिन मैं तो अिस पुरानी कहावतमें पूरी तरह मानता हूँ कि अीश्वरकी अिच्छाके बिना अेक तिनका भी नहीं हिलता। आपमेंसे कुछ लोग यह कह सकते हैं कि अिस तरह मेरा बार-बार अीश्वरका नाम लेना अेक बहाना है, जिसकी आड़में मैं अपने ढोंग या पाखण्डको छिपाये रहता हूँ। मेरा जवाब यही है कि मैं तो अपनेमें कोअी पाखण्ड नहीं पाता। जिसे मैं शुद्ध सत्य मानता हूँ, अुसीकी बात सबसे करता हूँ।" अपने अगले प्रोग्रामके बारेमें गांधीजीने कहा — "भगवान्‌की मरज़ीके मुताबिक़ चलनेके लिअे मैं बिलकुल कोरा दिमाग़ लेकर ही कलकत्ते आया हूँ। मैं नहीं जानता कि मुझे यहाँ क्या करना होगा और कब तक बंगालमें रहना होगा। नोआखाली पहुँचने पर अीश्वर मुझे आगेका काम सुझा देगा।"

दूसरे दिन कलकत्तेमें गवर्नर और प्रधानमंत्रीके साथकी अपनी मुलाक़ातोंकी वजहसे गांधीजी प्रार्थना-सभामें फिर देरसे पहुँचे, और अुन्हें लोगोंसे माफ़ी माँगनी पड़ी। अुन्होंने कहा — "जो आदमी अपना सारा वक़्त लोगोंकी सेवामें दे देता है, अुसकी सारी ज़िन्दगी अखण्ड रूपसे प्रार्थनामय बन जाती है। फिर भी यह कहकर मैं प्रार्थनाके तयशुदा वक़्तकी क़ीमत कम नहीं करना चाहता। सबके साथ मिलकर प्रार्थना करनेमें और अकेले प्रार्थना करनेमें फ़र्क़ है। मुझे अफ़सोस है कि मैं अिस मजमूअी प्रार्थनाके साथ अिन्साफ़ नहीं कर पाया हूँ। यह आप लोगोंकी अुदारता है कि आप अितनी अनुकरणीय धीरजके साथ मेरा रास्ता देखते रहे। आपके अिस बरतावसे मुझे बहुत ख़ुशी हुअी है, और जिस कामके लिअे मैं यहाँ आया हूँ, अुसमें मेरी श्रद्धा और विश्वास बढ़ गया है। लेकिन आपको दिये हुअे वक़्त पर प्रार्थनामें हाज़िर न होकर मैंने जो क़सूर किया है, अुसके लिअे मैं अपने-आपको अितनी आसानीसे माफ़ नहीं कर सकता।"

अपनी पूरी कैबिनेटके नाम पर वाअिसरायने मुल्कसे जो अपील की थी, अुसकी ओर लोगोंका ध्यान खींचते हुअे गांधीजीने अुनसे कहा — "वाअिसराय कैबिनेटके प्रेसिडेण्ट हैं, पं० जवाहरलाल वाअिसप्रेसिडेण्ट हैं, और वह कांग्रेस और मुस्लिम लीगके नुमाअिन्दोंसे बनी हुअी है। अिस अपीलमें वाअिसरायने अपनी तरफ़से और अपने साथियोंकी तरफ़से यह कहा है कि हिन्दुस्तानकी बड़ी जातियोंको अपने पुराने झगड़े बन्द कर देने चाहियें, और अेक दिल हो जाना चाहिये। लेकिन यह अेकता सच्ची होनी चाहिये, फ़ौज या पुलिसकी लादी हुअी नहीं। मैं अैसी अेकता क़ायम करनेके लिअे ही बंगाल आया हूँ। मैं किसीकी तरफ़दारी नहीं करता। मैं तो सचाअी और अिन्साफ़की ही तरफ़दारी कर सकता हूँ। मेरे साथ आप सब भी भगवान्‌से प्रार्थना कीजिये कि वह हिन्दुओं और मुसलमानोंमें दिली अेकता क़ायम करे। अगर जंगली जानवरोंकी तरह आपसमें लड़कर हमने अपने-आपको गिराया, तो दुनियामें हमारा नाम बुरी तरह बदनाम हो जायगा।

आशाकी अेक धुँधली झलक

कलकत्ता पहुँचनेके तीसरे दिन शामकी प्रार्थना-सभाके बाद गांधीजी लोगोंसे यह कह सके — "मुझे आशाकी एक धुँधली किरण दिखाअी दे रही है कि दोनों क़ौमोंके बीच आपसी सुलह क़ायम की जा सकेगी। मैं आपके गवर्नर और प्रधानमंत्रीसे दो बार मिला हूँ। गवर्नरसे तो मैं बतौर शिष्टाचार के ही मिलने गया था। ख़ास काम तो मुझे प्रधानमंत्रीसे था। रास्तेमें मैंने सुनसान सड़कों पर कूड़ा-करकट के ढेर लगे देखे, जो कहीं-कहीं फ़ुटपाथ पर क़रीब दो-दो फ़ुट अूँचे दिखाअी पड़ते थे। जहाँ तक दिखाअी देता था, चारों तरफ़ छोटी सड़कों और गलियोंमें बरबाद की हुअी दुकानोंकी क़तारें और जलाये हुअे घर ही नज़र आते थे। जानवरोंसे भी बदतर हालतको पहुँच जानेवाले इनसानोंके अिस सामूहिक पागलपनको देखकर दिल बैठा जाता था। क़ुदरती तौर पर यह चीज़ ज़्यादा दिनों तक टिक नहीं सकती। मनुष्यका स्वभाव अिसे सह नहीं सकता। जैसा कि अब्राहम लिंकनने कहा था — 'आप सब लोगों को हमेशाके लिअे बेवकूफ़ नहीं बना सकते।' अैसे आसार नज़र आने लगे हैं कि लोग अब अिस ख़ूँरेज़ी और हैवानियतसे अूब अुठे हैं। वे आपसमें जंगली जानवरों की तरह लड़ रहे थे। लेकिन अिस लड़ाअीसे कलकत्ता, बंगाल, हिन्दुस्तान या दुनियाको कोअी फ़ायदा नहीं।"

गांधीजीने आगे कहा — "लड़नेवाली पार्टियोंमें मेल कराना बहुत जवान अुमरसे मेरा धन्धा रहा है। जब मैं वकालत करता था, तब भी लड़नेवाली दो पार्टियोंको मिलानेकी ही कोशिश करता था। तो फिर दो क़ौमोंमें आपसी मेल क्यों नहीं पैदा किया जा सकता? मैं तो अिस बारेमें पक्का आशावादी हूँ।

"आपसे मैं सिर्फ़ अितनी मदद चाहता हूँ कि आप मेरे साथ प्रार्थना करें कि यह ख़ूँरेज़ी बन्द हो जाय, और दोनों जातियाँ सचमुच दिलसे अेक हो जायँ। हिन्दुस्तानके टुकड़े होंगे या वह अखण्ड रहेगा, अिसका फ़ैसला ताक़तसे यानी ज़ोर-ज़बरदस्तीसे नहीं हो सकता। यह तो आपसके समझौतेसे ही हो सकता है। आप अलग होनेका फ़ैसला करें या साथमें रहनेका फ़ैसला करें, आपको यह सब सद्‌भावसे और समझौतेसे करना चाहिये।

"मैं अैसी किसी बातकी तरफ़दारी नहीं करूँगा, जिससे किसीकी अिज़्ज़त या स्वाभिमान पर आँच आये। अिसलिअे कोअी भी सच्चा समझौता अिज़्ज़तका समझौता होना चाहिये, अिज़्ज़तको बेच कर कभी नहीं।"

अिन लफ़्ज़ोंमें गांधीजीने अुनसे मिलकर गये अेक मशहूर मुसलमान भाअीके अुन ख़यालोंका ही अिज़हार किया था, जो वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह गये थे। अुन्होंने कहा था — "हमें अपना मक़सद — वह पाकिस्तान हो या अखण्ड हिन्दुस्तान — बग़ैर लड़ाअीके या ... हासिल करना चाहिये। अगर हम .खूँरेज़ी या लड़ाअीके अुसे हासिल ही नहीं कर सकते, तो मैं यहाँ तक कहनेको ... हूँ कि वह हासिल करने लायक़ ही नहीं।"

भयानक संकल्प

अुस दिन अेक मुसलमान दोस्तने गांधीजीसे पूछा — "आप ...खाली क्यों जाना चाहते हैं? आप बम्बअी, अहमदाबाद या छपरा ...नहीं गये, जहाँ नोआखालीसे भी बदतर वारदातें हुअी हैं? क्या ... वहाँ जानेसे मौजूदा तंगदिली और बढ़ेगी नहीं? क्या बम्बअी, ...बाद वग़ैरा शहरोंमें आपके न जानेकी वजह यह है कि वहाँ ...नोंको मुसीबतोंका सामना करना पड़ा था, और क्या नोआखाली अिसलिअे जाना चाहते हैं कि वहाँ हिन्दुओंको मुसीबतें ... पड़ी हैं?" गांधीजीने जवाब दिया — "मैं हिन्दुओं और ...नोंमें अिस तरहका कोअी फ़र्क़ नहीं करता। अगर आपकी ... हुअी जगहोंमें कहीं नोआखाली जैसी वारदातें हुअी होतीं, ...अगर मुझे लगता कि बग़ैर वहाँ पहुँचे मैं कुछ नहीं कर सकूँगा, ... सीधा वहीं जाता। .ज़ुल्मोंकी शिकार बनी बहनोंकी पुकारने ...नोआखाली आनेके लिअे मजबूर कर दिया। मैंने सोचा कि ...गाँवोंमें अपनी आँखों सब कुछ देखनेके बाद ही मुझे पता चल ... कि मैं कहाँ खड़ा हूँ। मेरी अहिंसा आज कसौटी पर चढ़ी ...है। देखना यह है कि मौजूदा संकटमें वह खरी अुतरती है ...। अगर अुसमें कोअी सार नहीं है, तो बेहतर होगा कि ... ही अपना दिवालियापन ज़ाहिर कर दूँ। जब तक आपसी ... आग पूरी तरह बुझा नहीं दी जाती, तब तक मैं बंगाल ...छोड़ूँगा। मुमकिन है, मैं यहाँ अेक साल या अुससे भी ...रहूँ। अगर ज़रूरत हुअी, तो मैं यहीं मरूँगा। लेकिन ...हार मानूँगा। अगर .खुद मेरे यहाँ मौजूद रहनेका असर ...अितना ही पड़े कि वे मुझसे अुन चीज़ोंकी अुम्मीद रखने ...लगें मैं सच साबित न कर सकूँ, तो मेरा हमेशाके लिअे ...मिट जाना ही बेहतर होगा।" अुन्होंने आगे कहा — "अगर ...हुअी, तो मैं कांग्रेसके जलसेमें भी न जाअूँगा। अिसके ...मैंने अपने मनको तैयार कर लिया है। अिसी तरह मैंने ...और .कुदरती अिलाजके अपने नये कामके केन्द्र अुरुळीकी ज़िम्मेदारियोंसे भी अपने मनको हटा लिया है।"

...नोआखाली जानेकी अपनी अीतनी बेक़रारीके बावजूद भी चौथे ...की प्रार्थना-सभामें गांधीजीने बताया कि अपने अिरादेके ...वे अगले दिन नोआखालीके लिअे रवाना नहीं हो सकेंगे। ...ने कहला भेजा है कि अुनके लिअे ट्रेनका अिन्तज़ाम अितनी ...नहीं हो सकेगा। वे शनीचर या अितवारको रवाना होनेकी ...रखते हैं। अिस बीच वे कलकत्तेकी ही जितनी ख़िदमत कर ...सकते रहेंगे। सोदपुर, १-११-'४६

(...)

प्यारेलाल

अेजण्टोंसे

...मेहरबानी करके नीचे लिखी बातों पर ध्यान दें —

... याद रखिये कि आपको हमारे यहाँ अपनी माँगके मुताबिक़ ...कॉपियोंके दाम पेशगी जमा कराने हैं। अिनमेंसे अेक महीनेकी ...रक़म क़ायमी तौर पर जमा रहेगी, और बाक़ी चालू खातेमें ...। हर हफ़्ते भेजी जानेवाली कॉपियोंके दाम चालू खातेसे ...जायँगे।

... अेजण्ट आम तौर पर अमानतके पैसे चेकसे भेजते हैं। ...मेहरबानी करके ख़याल रखिये कि हम चेक नहीं लेते। चुनाँचे ...अपनी रक़म मनीऑर्डर, पोस्टल ऑर्डर या बैंक ड्राफ्टके ज़रिये ...भेजें।

व्यवस्थापक

बेज़बान जानवरोंके साथ बेरहमी

मैसूरके अेक भाअी "अेक छोटी-सी बातकी तरफ़" मेरा ध्यान खींचते हैं, "लेकिन यह छोटी-सी बात बंगलोर शहरके बाड़ोंमें बन्द किये जानेवाले बदक़िस्मत मवेशियों और कुत्तोंके लिअे सचमुच ज़िन्दगी और मौतका सवाल है। अुन बाड़ोंकी हालत बहुत बुरी है, और वहाँ जो जानवर बिना किसी क़सूरके बन्द किये जाते हैं, अुन्हें न अच्छी तरह खाना दिया जाता है, न पानी। कुत्तोंको मारनेकी मशीन भी कुछ दिनोंसे बिगड़ी पड़ी है, और अैसा मालूम होता है कि अुसे दुरुस्त करनेकी कोअी कोशिश नहीं की गअी। जानवरोंको ज़हर देकर मारनेका जंगली और बेरहम तरीक़ा काममें लाया जाता है।"

बदक़िस्मतीसे मुझे पहले भी आवारा कुत्तोंको मार डालनेकी सलाह देनी पड़ी थी। अगर लोग अितने बेरहम बन जाते हैं कि झूठी दया दिखाकर आवारा कुत्तोंको खाना खिलाते हैं, और पड़ोसियोंके लिअे मुसीबत खड़ी कर देते हैं, तो अैसा करना ही पड़ेगा। लेकिन ख़त लिखनेवाले भाअीने जिन कुत्तोंका ज़िक्र किया है, अुनकी तरह कुत्तोंको बाड़ोंमें बन्द करने और सतानेकी सलाह मैं नहीं दे सकता। दयाका यह तक़ाज़ा है कि अिन जानवरोंको किसी अैसे तरीक़ेसे मारा जाय, जिसमें वे बग़ैर तकलीफ़ पाये जल्दी-से-जल्दी मर सकें। मैं अुम्मीद करूँगा कि ख़त लिखनेवाले भाअीने अपनी बातको बढ़ा-चढ़ाकर लिखा है। सो जो भी हो, बंगलोरकी म्युनिसिपैलिटीको और दूसरी अैसी संस्थाओंको चाहिये कि वे जानवरोंके साथ बरताव करनेके अपने तरीक़ोंको सुधारें, अगर वे अिनसानियतकी कसौटी पर खरे न अुतरते हों।

कलकत्ता जाते हुअे रेलमें, १९-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

धर्मकथा

४

वसन्त ऋतुके अेक सुहावने प्रभातमें गडरियेका अेक लड़का पहाड़की तलहटीमें भेड़ें चराता हुआ ख़ुशीसे गा और नाच रहा था। अुसी तरफ़ राजा भी शिकारको आया था। अुसने लड़केको देखा और पूछा — "लड़के, तू अितना ख़ुश क्यों है?" लड़केने राजाको पहचाना नहीं और जवाब दिया — "मैं भी राजाकी तरह अमीर हूँ; तो फिर मैं ख़ुश क्यों न होअूँ?"

"क्या सच? तो यह तो बता कि तेरे पास क्या-क्या है?"

"सुनिये। अिस सूरज को देखिये। जो रोशनी और अुजेला यह राजाको देता है, वही मुझे भी देता है। ये पहाड़ और पेड़ देखिये। अिनकी हरीभरी .ख़ूबसूरतीका मज़ा जितना राजा लूटता है, अुतना ही मैं भी लूट सकता हूँ। और ये सुन्दर ख़ुशबूदार फूल जितने राजाके लिअे खिलते हैं, अुतने ही मेरे लिअे भी खिलते हैं। मुझे अपनी ज़रूरतका खाना रोज़ मिल जाता है। अपना तन ढँकनेके लिअे ज़रूरी कपड़े भी मेरे पास हैं। और, मैं अपनी ज़रूरतके मुताबिक़ कमा लेता हूँ। कहिये, राजाके पास अिससे ज़्यादा और क्या है?"

जवाब सुनकर राजा ख़ुश हुआ और बोला — "बेटा, तुम जो कहते हो, सच है। जाओ, और लोगोंसे कहना कि ख़ुद राजाने तुमसे यह कहा है।"

५

अेक बार अेक अुजड्ड आदमीने सुकरातको अुसके दोस्तोंके देखते लात मारी। सुकरातको चुपचाप यह अपमान सहते देख अुसके दोस्तोंको बहुत ताज्जुब हुआ। अुन्होंने सुकरातसे पूछा। जवाब मिला — "क्या आप यह कहना चाहते हैं कि कोअी गदहा मुझे लात मारे, तो भी मैं अिन्साफ़के लिअे अदालतमें जाअूँ?"

(गुजरातीसे)

वालजी गोविन्दजी देसाअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

१० नवम्बर १९४६

बिहारसे

बिहारसे,

बिहारने अपने बारेमें मेरे सपनोंको झुठला दिया है। अेकतरफ़ा या बढ़ा-चढ़ा कर भेजी गअी खबरोंको सुन-पढ़ कर या अुन पर भरोसा करके में यह नहीं कर रहा हूँ। हिन्दुस्तानके वज़ीरे आजमका और अुनके साथियोंका लगातार वहाँ रहना अिस बातका बड़ा सबूत है कि वहाँ कैसी दर्दनाक वारदातें हो रही हैं। अिसके जवाबमें बहुत आसानीसे यह कहा जा सकता है कि मुस्लिम लीगी सरकारकी देख-रेखमें बंगालकी हालत अिससे बदतर नहीं, तो बेहतर भी न थी। और, यह कि बिहारमें जो कुछ हो रहा है, वह तो बंगालका ही नतीजा है। अगर कोअी दल बुरा काम करे, तो अुसके मुखालिफ़ दलको वैसा ही बुरा काम करनेका कोअी हक़ नहीं मिलता, खासकर जब अुसे अपने लम्बे-से-लम्बे और बड़े-से-बड़े राजनीतिक या सियासी कामका गर्व हो, और वह ठीक ही हो। साथ ही, मुझे यह क़बूल करना चाहिये कि अगरचे मुझे कलकत्ते आये क़रीब अेक हफ़्ता गुज़र चुका है, तो भी बंगालमें कहाँ कितनी बरबादी हुअी है, और लोगोंको क्या-क्या मुसीबतें अुठानी पड़ी हैं, सो मैं अभी जान नहीं सका हूँ। अगरचे बिहार मुझे बुला रहा है, तो भी नोआखालीके अपने प्रोग्राममें मुझे कोअी गड़बड़ न करनी चाहिये। फिर यह भी तो अेक सवाल है कि जिस साम्प्रदायिकताका अिलज़ाम कांग्रेसी लोग मुस्लिम लीग पर लगाते आये हैं, अुसका जवाब साम्प्रदायिकतासे देना भी कोअी जवाब देना कहलायेगा? क्या बिहारके चौदह फ़ीसदी मुसलमानोंको वहशियाना ढंगसे कुचलनेकी कोशिश करना भी कोअी राष्ट्रीयता है?

कोअी मुझसे यह न कहे कि कुछ हज़ार बिहारियोंके पापके लिअे मुझे सारे बिहारको दोषी या क़सूरवार न ठहराना चाहिये। क्या बिहार अेक ब्रजकिशोरप्रसाद या अेक राजेन्द्रप्रसाद पर फ़ख़ नहीं करता? क्या अुसे अिन पर नाज़ नहीं? मुझे डर है कि अगर बिहारमें यह दुर्व्यवहार होता रहा, तो दुनिया हिन्दुस्तानके सभी हिन्दुओंको अिसके लिअे दोषी ठहरायेगी। दुनियाका यही तरीक़ा रहा है, और वह कोअी बुरा तरीक़ा भी नहीं। बिहारी हिन्दुओंकी ये काली करतूतें क़ायदे आज़म जिन्नाके अिस अुलाहनेको सही साबित कर सकती हैं कि कांग्रेस हिन्दुओंकी संस्था है, बावजूद अिसके कि कांग्रेसको अिस बातका घमण्ड है कि अुसमें थोड़े सिक्ख, मुसलमान, अीसाअी और पारसी वग़ैरा भी शामिल हैं। बिहारके बहुसंख्यक हिन्दुओंका यह फ़र्ज़ है कि वे अपने यहाँ रहनेवाले थोड़े मुसलमानोंको अपना भाअी मानें, और अुनकी अुतनी ही हिफ़ाज़त करें, जितनी वे अपनी करते हैं। जिस बिहारने कांग्रेसकी अिज़्ज़तको बढ़ानेमें अितना काम किया है, वही अुसकी क़ब्र खोदनेमें सबसे आगे न हो!

मुझे अपनी अहिंसाकी कोअी शर्म नहीं। मैं यह देखनेके लिअे ही बंगाल आया हूँ कि अैन आन-बानके मौक़े पर मेरी अहिंसा मुझमें किस तरह प्रकट हो सकती है। लेकिन अिस खतमें मैं आपसे अहिंसाकी चर्चा नहीं करना चाहता। फिर भी मैं आपसे यह तो कहा ही चाहता हूँ कि आपके कामोंकी जैसी रिपोर्टें आअी हैं, अुनसे वे काम बहादुरीके काम तो हरगिज़ नहीं माने जायँगे। अिसमें कोअी बहादुरी नहीं कि हज़ारों लोग मिलकर कुछ सौ लोगोंको मार डालें, यह तो बुज़दिलीसे भी बुरी चीज़ है। यह न हमारे धर्मको शोभा देती है, न हमारी राष्ट्रीयताको। अ... आपने घूँसेके बदले घूँसा मारा होता, तो किसीको आपके ख़िला... अँगुली अुठानेकी हिम्मत न पड़ती। अभी तो आपने अपनेको गि... है, और हिन्दुस्तानको अुसकी अूँची जगहसे नीचे घसीटा है।

आप पण्डित जवाहरलालजीसे, निश्तर साहबसे और डॉ... राजेन्द्रप्रसादसे कह दीजिये कि वे अपनी फ़ौजें वापस ले जायँ, ... हिन्दुस्तानका कार-बार चलानेके लिअे ख़ुद दिल्ली लौट जायँ। अैसा तभी कर सकते हैं, जब आप अपनी हैवानियतके लिअे प... और अुन्हें यक़ीन दिलायें कि मुसलमान भी आपकी सार-सँ... अुतने ही हक़दार हैं, जितने आपके सगे भाअी-बहन हैं।

जब तक हरअेक हिजरती मुसलमान वापस अपने घर ... आये, तब तक आपको चैन न लेना चाहिये। साथ ही ... चाहिये कि आप अुनके अुजड़े और बरबाद घरोंको फिरसे ... देनेका ज़िम्मा लें, और अपने मंत्रियोंसे कहें कि वे अिसमें ... मदद करें। टीकाकारों या नुक्ताचीनोंने आपके मंत्रियोंके बारेमें ... जो कहा है, सो आप नहीं जानते।

मैं अपनेको आपका ही अेक अंग या जुज़ समझता ... आपकी मुहब्बतने मुझमें यह वफ़ादारी पैदा की है। ... चूँकि बिहारी हिन्दुओंके फ़र्ज़के बारेमें आप जितना जानते ... अुससे ज़्यादा मैं अुसे समझनेका दावा करता हूँ, अि... जब तक मैं अिसका कुछ प्रायश्चित्त न कर लूँ, मुझे चैन ... पड़ सकता। खास तौर पर अपनी तन्दुरुस्तीके ख़यालसे ... कलकत्ते आनेके तुरत बाद मैंने कम-से-कम खाना शुरू कर दिया ... और अब जबसे बिहारकी दर्दनाक कहानी सुनी है, तबसे ... प्रायश्चित्तके वह ख़ूराक जारी है। अगर गुमराह बिहारियोंने ... रास्ता अख़्तियार न किया, अपना रवैया न बदला, तो यह अल... आमरण अुपवास बन जायगा।

मैं नहीं मानता कि बिहार मेरे अिस कामको किसी ग़लत... समझेगा, सिवा अिसके कि अपने अेक पवित्र कर्त्तव्यके नाते ... भावसे यह प्रायश्चित्त कर रहा हूँ।

मित्रोंको मेरी मददके लिअे या हमदर्दी दिखानेके लिअे ... पास न आना चाहिये। मैं यहाँ अपने कअी अज़ीज़ दोस्तोंके ... रहता हूँ। किसीके लिअे मेरी नक़ल करना बिलकुल ग़लत और ... मौज़ूँ होगा। मेरे साथ हमदर्दी दिखानेके लिअे किसीको आ... पूरा फ़ाक़ा करनेकी कोअी ज़रूरत नहीं। अिससे तो नुक़सान ... होगा। मेरी अिस तपस्यासे अुन लोगोंकी आत्मिक चेतना ... चाहिये, जो मुझे जानते हैं और मेरी प्रामाणिकतामें यक़ीन ... कोअी मेरे लिअे फ़िकर न करें। सबकी तरह मैं भी ... हाथमें सलामत हूँ।

जब तक वह मेरे अिस शरीरके ज़रिये मुझसे सेवा लेना ... तब तक मुझे कुछ न होगा।

सोदपुर, ६–११–'४६ आपका सेवक,

(अंग्रेज़ीसे) मोहनदास करमचंद ...

डोला-पालकी

कहा जाता है कि यू०पी० सरकारने हुक्म जारी किया ... जो लोग हरिजन दूल्हों को घोड़ों पर या दूसरी किसी सवारी पर ... रोकें, अुनके ख़िलाफ़ फ़ौरन कार्रवाअी की जाय, और रिवाज ... पेश करके अिसका विरोध करनेवालोंकी न सुनी जाय। अि... देखते हुअे अब गढ़वालमें डोला-पालकीका झगड़ा ख़त्म हो जाना ...

कलकत्ता जाते हुअे रेलमें, २९–१०–'४६ मो० क०

(अंग्रेज़ीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँववाले अपना कपड़ा कैसे तैयार कर सकते हैं ?

४ अगस्त, १९४६के 'हरिजन'में मैंने श्री मनु सुबेदारकी जिस ... या स्कीमकी नक़ल दी थी, अुसको दोहराते हुअे अुन्होंने ... रहबर'की स्कीमके समर्थनमें अपनी दलील पेश की है। अुस ... मज़मूनमेंसे मैं कामके दो पैरे नीचे देता हूँ —

"हाथ-कताअीके भावनात्मक या आध्यात्मिक मूल्यको सामने रखकर मैं अिस योजनाकी हिमायत नहीं करता। अगरचे सदियों पुराने चरखेको पहलेकी तरह फिर घर-घरमें दाखिल करनेमें कुछ आकर्षण तो है ही, फिर भी आज मैं अुसकी जो हिमायत कर रहा हूँ, सो अिसलिअे कि गाँववालोंको कपड़ा पहनानेके मामलेमें यह स्कीम आर्थिक दृष्टिसे बहुत ही ज़रूरी बन गअी है। अगर अिसे अमलमें न लाया गया, तो गाँवके लोग जिन्दगीकी अेक बुनियादी ज़रूरतसे महरूम रह जायँगे। अगर रूअी अुनके दरवाज़े तक पहुँचा दी जाय, तो वे भगवान्‌के दिये हुअे हाथोंसे अेक हफ़्तेके भीतर अैसा हुनर हासिल कर सकते हैं, जिससे वे अपनी मदद खुद कर सकें और अपनी औरतोंको मुसीबतभरी हालतसे बचा सकें। अूपरकी स्कीमके मुताबिक़ तैयार किया हुआ कपड़ा न सिर्फ़ काला-बाज़ारके कपड़ेसे सस्ता पड़ेगा, बल्कि मिलके कपड़ेसे भी सस्ता मिलेगा। क्योंकि मिलका कपड़ा ख़रीदनेवालोंको कपड़ेकी क़ीमतके साथ जो कअी तरहके 'कर' चुकाने पड़ते हैं, अुनसे यह कपड़ा बरी रहेगा। अिन चीज़ोंमें मिलोंका मुनाफ़ा, दलालोंका मुनाफ़ा, कपड़ेको ख़रीदीकी जगह तक पहुँचाने और रूअीको लाने-लेजानेका ख़र्च, हमाल और अिन्तज़ामका ख़र्च, ब्याजकी दर और मशीनोंकी टूट-फूटका ख़र्च शामिल है। चूँकि सूत तैयार करने तककी मेहनत ... ही में हो जायगी, और बुनाअीकी मज़दूरी गल्ले वग़ैराकी शक्लमें चुकाअी जायगी, अिसलिअे मामूली शान्तिके वक़्तमें भी अिस तरह तैयार किया हुआ कपड़ा मिलके कपड़ेसे सस्ता होगा। हिन्दुस्तान-जैसे ग़रीब मुल्कमें मेहनत बचानेवाले ज़रियोंकी नहीं, बल्कि कम-से-कम पूँजी और मुनाफ़ेमें माल तैयार करनेवाले ज़रियोंकी ज़रूरत है। यही अिस स्कीममें बताया गया है।

"मैं नेताओंसे अिस पर ग़ौर करनेके लिअे कहूँगा कि अूपरकी स्कीममें देहाती पंचोंकी रहनुमाअीमें चलनेवाली सहकारिताके और सब तरहकी बाहरी दस्तन्दाज़ीसे दूर रहनेवाली पूरी स्वराजी हुकूमतके ही तत्त्व मौजूद नहीं हैं, बल्कि अुसमें अुस आर्थिक क्रान्ति या अिक़्तसादी अिन्क़िलाबके बीज भी मौजूद हैं, जिसे हम अिस मुल्कमें पैदा करना चाहते हैं। आपके-मेरे जैसे लाखों-करोड़ों काम करने लायक़ मर्दों और औरतोंको सालभर पूरा काम नहीं मिलता। अुनकी रहन-सहनका दरजा दिन-दिन अैसी वजहोंसे गिरता जाता है, जिन्हें वे नहीं समझते। ख़ैरात या दान अुनकी हालतको थोड़ा सुधार सकता है, लेकिन अिससे वे लाज़िमी तौर पर और ज़्यादा कंगाल बनेंगे और अपनी अिज़्ज़त भी खो बैठेंगे। यहाँ पेश की गअी स्कीमकी ख़ूबी यह है कि अिससे लोग यह महसूस करने लगेंगे कि जो कुछ वे पा रहे हैं, अपनी मेहनतसे पा रहे हैं। अिससे अुनके आत्म-सम्मानको चोट नहीं पहुँचेगी। फ़ी आदमी सरकारी मददकी रक़म भी अिसमें बहुत कम होगी। सचमुच यह रक़म अुस रक़मसे भी कम होगी, जो सरकार हिन्दुस्तानकी बस्तीके दूसरे वर्गों और दरजोंके लोगोंके फ़ायदेके लिअे कअी तरहसे ख़र्च करती है। अिस स्कीमका दूसरा फ़ायदा यह है कि थोड़े वक़्तमें यह अपने-आप चल निकलेगी, क्योंकि कुछ गाँवोंमें यह जल्दी जड़ पकड़ लेगी, और वहाँके लोग अेक महीनेके भीतर ही दूसरी गाँठकी माँग करेंगे। दूसरे गाँवोंमें अिसके लिअे तीन या चार महीने भी लग सकते हैं। कुछ गाँव शायद अगले कुछ महीनोंमें ही कपड़ेकी अपनी ज़रूरत पूरी कर लें, और मुमकिन है कि थोड़ा कपड़ा अुनके पास बच रहे। और, अगर कोअी गाँव अिस स्कीमके मुताबिक़ अपनी ज़रूरतसे ज़्यादा कपड़ा तैयार कर लेता है, तो बचे हुअे कपड़ेको बड़े शहरोंमें आम लोगोंके अिस्तेमालके लिअे भेजना ग़लत न होगा। यहाँ मैं अेक बातसे ख़बरदार कर देना चाहूँगा। अगर अिसमें हरअेक आदमीको मुनाफ़ा कमानेकी छूट दी गअी, तो यह स्कीम ख़तम हो जायगी। बचतका कपड़ा गाँववाले मिलकर ही बेचें, और शहरोंमें वह अुस सरकारी अेजन्सीके ज़रिये ही पहुँचे, जो गाँवमें रूअीकी गाँठ पहुँचायेगी। शहरोंमें भी यह कपड़ा सिर्फ़ सरकारकी ओरसे खोली गअी फुटकर दुकानों पर ही बेचा जाय। दूसरे लफ़्ज़ोंमें, दलालको अिस सौदेमें ज़रा भी हाथ डालनेका मौक़ा न दिया जाय। गाँववालोंकी शक्ति और सहयोगसे पैदा की गअी चीज़को दलाल बरबाद कर देगा। अुसीने हिन्दुस्तानके कअी पुराने अुद्योग-धन्धों और कला-कौशलको बरबाद किया है।

श्री सूबेदार अपने अेक गुजराती ख़तमें लिखते हैं —

"अगर मेरी स्कीमको अमलमें न लाया गया, तो शायद हमें वह दर्दनाक दिन देखनेको मिले, जब औरतोंके पास तन ढँकनेको कपड़ा न रहेगा, और अुन्हें मजबूरन् अपने घरोंमें बन्द रहना पड़ेगा।

"मिल-मालिकों और दलालोंने जो बेरहमी दिखाअी है, वह मेरे सुझावों-जैसे ही किन्हीं अुपायोंसे मिटाअी जा सकती है।

"आपका यह कहना ठीक है कि नमक-करके हटा देनेसे लाखों-करोड़ों गाँववाले अिस सचाअीको समझने लगेंगे कि अब हमारी सरकारने मुल्की हुकूमतकी बागडोर अपने हाथमें ले ली है। अगर बहुत ही आसान शर्तों पर गाँववालोंके घरों तक रूअी पहुँचाअी जाय, जिससे वे थोड़ी मिली-जुली मेहनत करके आसानीसे अपने कपड़ेका सवाल हल कर सकें, तो क्या अुससे भी वे मुल्कमें अपनी सरकार क़ायम होनेकी बातका महसूस नहीं करेंगे?"

नअी दिल्ली, २३-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी शब्दकोश

हर पखवारेकी यह मेहनत कामकी साबित हो रही है। अिसकी ख़ामियोंसे मैं अनजान नहीं हूँ। राजकुमारी बड़े प्रेमसे यह मेहनत कर रही हैं। अिसके लिअे आग्रह तो मेरा ही था। मैं चाहता था कि मिली-जुली हिन्दी-अुर्दूके चाहनेवालोंको कोअी तैयार चीज़ दूँ। अुस वक़्त अुम्मीद यह थी कि क़रीब आधे दर्जन साथी मिलकर अिस कोशका काम करेंगे। लेकिन वैसा हो न सका। जहाँ मैं रहूँ, वहीं यह काम करना था। और, मेरे नसीबमें दिल्ली बदी थी। अिस कामको बीचमें रोकने या बन्द करनेका अिरादा न था। राजकुमारीने अेक अनोखी लगनके साथ अिसे अपना लिया। लेकिन वह हिन्दुस्तानीकी जानकार नहीं। प्यारभरी मेहनतसे जो काम हो सकता है, सो वह हर पखवारे करती रहती हैं। जब कभी यह काम ख़तम हो जायगा, और अिस शब्दकोशको किताबकी शकलमें छापनेका वक़्त आयेगा, तब सारा कोश दोहराया जायगा, और ग़लतियाँ व ख़ामियाँ दुरुस्त कर ली जायँगी। अिसलिअे दोस्तोंसे प्रार्थना है कि वे अपने सुझाव और सुधार भेजते रहें। अुनमें जो अपनाने लायक़ होंगे, वे कोशको दोहराते वक़्त अपना लिये जायँगे। अिस सिलसिलेमें ख़ास ध्यान देने लायक़ बात यह है कि अिस तरह अेक अैसा कोश तैयार हो जाय, जो विद्वत्तापूर्ण न होते हुअे भी, हिन्दुस्तानी सीखनेवालोंको ज़रूरतके वक़्त तुरत काम दे सके।

नअी दिल्ली, २५-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यप्रान्त में शराबबन्दी

अपने सूबे के आबकारी कमिश्नर की रिपोर्ट के मुताबिक़ मध्यप्रान्त की कांग्रेस-सरकारने सन् १९३७ के आख़िरी छह महीनों में पूरी शराबबन्दीकी नीति अख़्तियार करनेका फ़ैसला किया था। अिस शराबबन्दी में ताड़ी भी शामिल थी। अिस नीति को अमल में लाने के लिअे 'मध्यप्रान्त व बरार शराबबन्दी क़ानून' पास किया गया, जो अप्रैल, १९३८ से लागू हुआ। सन् १९४० में सूबे के जितने हिस्से में शराबबन्दी थी, अुसका रक़बा २२,२८५ वर्गमील था, जो पूरे सूबे के क़रीब ¼ हिस्से के बराबर है। जनवरी, १९४५ में कटनी मुरवाड़ासे शराबबन्दी हटा ली गअी थी, मगर मौजूदा सरकारने १ अक्तूबर, १९४६ से वहाँ फिर शराबबन्दी लागू करनेका फ़ैसला किया है। वहाँ शराबबन्दी का १७,३६० वर्गमील रक़बा और बढ़ाया जायगा।

अिस तरह शराबबन्दी का पूरा रक़बा ३९,६४३ वर्गमील है, जो सूबे के कुल रक़बे के आधे से कुछ कम है। पूरे सूबेका रक़बा ९८,३६९ वर्गमील है।

शराबबन्दी का रक़बा बढ़ा देनेकी वजह से चालू साल के बजटमें क़रीब ४५ लाख ५० हज़ार रुपयों का घाटा रहेगा। सरकार का अिरादा है कि बहुत थोड़े अरसे में सारे सूबे में शराबबन्दी लागू कर दी जाय। अिस तरह शराब और ताड़ी से होनेवाली क़रीब डेढ़ करोड़ रुपयों की आमदनी मारी जायगी।

आबकारी महकमे के अफ़सरों और नौकरों को हिदायत दी गअी है कि वे जरूरत पड़ने पर अपने हलक़ोंके अेसेम्ब्ली-मेम्बरों और कांग्रेस-कमेटियोंसे शराबबन्दी-क़ानूनके खिलाफ़ होनेवाले जुर्मोंको रोकने और पकड़नेमें मदद लें। ग़ैरक़ानूनी शराब बनाना रोकनेके लिअे क़ायदा बनाया गया है कि कोअी ५ सेरसे ज़्यादा महुआ, जो शराब बनानेका अेक ख़ास ज़रिया है, न रख सकेगा, और अिससे ज़्यादा महुआ रखने और बेचनेके लिअे लाअिसेंस लेना ज़रूरी होगा। वर्धा और अकोला जिलेमें ता० १५-८-'४६से यह क़ायदा जारी कर दिया गया है। अिन दो ज़िलोंमें अिनका तजरबा हासिल करनेके बाद, शराबबन्दीके दूसरे हलक़ोंमें भी अिन्हें जारी किया जायगा।

अिनके अलावा, शराबबन्दीको कारगर बनानेके लिअे जो दूसरे तरीक़े सोचे गये हैं, वे ये हैं—

१. जहाँ शराबबन्दी लागू है, वहाँ नअी शराबविरोधी कमेटियाँ बनाअी जायँ, और पुरानी कमेटियोंमें फिरसे जान पैदा की जाय। जहाँ यह क़ानून लागू नहीं है, वहाँ शराबबन्दीकी फ़िज़ा (वातावरण) पैदा करनेके लिअे टेम्परेन्स या परहेज़-कमेटियाँ बनाअी जायँ। क़ौमी पंचायतें और दिलबहलावके सेण्टर (केन्द्र) क़ायम करनेके सुझाव भी पेश किये गये हैं।

२. जादूकी लालटेन, सिनेमा-स्लाअिड, अिश्तहार और शराब-विरोधी साहित्यके ज़रिये शराबके ख़िलाफ़ प्रचार किया जाय। अिस कामके लिअे ५० हज़ार रुपये मंज़ूर किये गये हैं।

३. ७५,००० अैसे परचे छपाये गये हैं, जिनमें १९३८के शराबबन्दी क़ानूनकी धाराओंका खुलासा किया गया है, और १५,००० बड़ी साअिज़के अिश्तहारोंमें अुन जगहोंका ख़ास तौरसे बयान किया गया है, जहाँ शराबबन्दीका क़ानून जारी है। ये परचे और अिश्तहार कअी ज़बानोंमें छापे गये हैं, और डिप्टीकमिश्नरों और रेलवेके अफ़सरोंको प्रचारके लिअे दिये गये हैं।

४. जिन सरकारी नौकरोंको शराब पीनेकी आदत है, शराब-बन्दीको कामयाब बनानेके ख़यालसे, अुन्हें शराबबन्दीवाले हलक़ोंसे हटाकर अुन हलक़ोंमें भेज दिया गया है, जहाँ अभी शराबबन्दी लागू नहीं की गअी है।

लड़ाअीसे पहलेके ज़मानेमें शराबबन्दीका जो असर हुआ था, अुसके बारेमें अेक ताज़ा-से-ताज़ा रिपोर्टमें यह कहा गया है—

"आम तौर पर जो ख़बरें मिली हैं, अुनसे पता चलता है कि शराबबन्दीसे पुराने शराबियोंकी नैतिक (अिख़लाक़ी), शारीरिक (जिस्मानी), सामाजिक और माली हालत बहुत सुधरी है, हालाँकि शराब छोड़कर जो रुपया अुन्होंने बचाया था, वह महँगाअीकी वजहसे जमा नहीं रह सका। वे अब ज़्यादा ख़ुशहाल और तन्दुरुस्त मालूम होते हैं। अुनके बच्चोंको अब काफ़ी ख़ूराक और कपड़ा मिलता है। अुनकी औरतें शराबबन्दीको बहुत सराहती हैं, क्योंकि अुसकी वजहसे अुनके घरोंमें शान्ति और ख़ुशहाली आअी है। अब वे अपने आदमियोंको भरोसेदार और अपने काममें मुस्तैद पाती हैं, और शराब न पीनेवाले अपने आदमियोंको दूसरी बुराअियोंसे बचानेमें ज़्यादा कामयाब हो सकती हैं।"

हम अुम्मीद करें कि पिछले तजरबेसे जो फ़ायदे हुअे हैं, अुनकी वजहसे यह अुजली तसवीर और ज़्यादा अुजली बन जायगी।

नअी दिल्ली, १४-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)　　　　प्यारेलाल

अेक लुभानेवाली तसवीर

गुजरातके गंभीरा गाँवमें अेक छोटासा राष्ट्रीय ग्राम-विद्यालय है। अुसमें क़रीब ३० लड़के पढ़ते हैं। वहाँके आठ लड़कोंने, जिनकी अुमर १३ से १७ सालकी है, गांधीजीका जन्म-दिन आपसमें चरखा कातकर मनाया। १६ अगस्तसे २१ सितम्बर तक अुन्होंने कुल १,२७५ घण्टे काता। अिस दरमियान अुन्होंने ५७५ गुण्डियाँ या ३,६९,९२० तार काते। आम तौर पर वे रोज़ अेक घण्टा कातते हैं। जन्म-दिन पर, अिसके अलावा छह चरखे २४ घण्टे तक लगातार चलते रहे, जिससे ४३ गुण्डी सूत निकला और अेक चरखा ७७ घण्टे तक चलाया गया, जिससे ३० गुण्डी सूत कता। अिस तरह २० से ३२ नंबरके सूतकी कुल ६५१ गुण्डियाँ काती गअीं।

सब कातनेवालोंने गांधीजीको ख़त लिखे हैं और उनमें अपने स्कूल और आसपासके वातावरण (फ़िज़ा)का बहुत सुन्दर बयान दिया है।

ये लड़के ख़ुद ही स्कूलमें झाड़ू देते और पाख़ाना साफ़ करते हैं। कभी-कभी वे गाँवमें भी झाड़ू लगानेका काम करते हैं। अुन्हें अिसका गर्व (फ़ख़्र) भी है। अुनमेंसे अेकने लिखा है—"मुझे हमेशा लगता रहा है कि अगर हम देशकी और कोअी ख़िदमत नहीं कर सकते, तो कम-से-कम अपने स्कूलमें और अुसके आसपास सफ़ाअी तो रख ही सकते हैं। यह पवित्र आनंदकी चीज़ है।" दूसरेने अिस बात पर फ़ख़्र ज़ाहिर किया है कि यहाँ हमें संकुचित मनोवृत्ति (ज़हनियत)से अूपर अुठना सिखाया जाता है, और सब अिनसानोंको बराबर समझनेका सबक़ मिलता है। हम अपने हाथों कते सूतसे बुनी हुअी खादी पहनते हैं। हमने अपने लिअे अेक फुलवारी भी लगाअी है। अेक विद्यार्थिनीने लिखा है — "जन्म-दिन पर हमने गांधीजीकी झोंपड़ीका अेक नमूना बनाया था और अुसे अपने हाथ-कते सूतसे सजाया था। अुस दिन हमने सारे गाँवकी सफ़ाअी की थी। मगर हमें यह देखकर अफ़सोस हुआ कि जब हम झण्डेको सलामी देकर लौटे, तब तक गाँववालोंने सड़कें और पगडंडियाँ फिर गन्दी कर दी थीं।" वह दुःखके साथ लिखती है— "वे लोग अभी साफ़-सुथरेपनकी अहमियत महसूस नहीं करते।"

दूसरे ख़तोंसे पता चलता है कि ये विद्यार्थी, गाँवके कअी तरहके सवालोंमें गहरी दिलचस्पी लेते हैं—जैसे, हरिजनोंका सवाल, बाढ़का सवाल, ज़मीनके कटनेकी वजहसे गाँवकी ज़मीनोंमें पिछले पाँच-छह सालोंसे पैदा हुअी ख़राबीका सवाल, वग़ैरा।

नअी दिल्ली, १४-९-'४६

(अंग्रेज़ीसे)　　　　प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्यभारतमें हरिजन-सेवा (१९४४–४५)

जहाँ तक हरिजन-सेवाका ताल्लुक है, मध्यभारत बहुत खुश-क़िस्मत है। वहाँके कम-से-कम तीन महाराजाओंने — अिन्दौरके महाराजा यशवन्तराव होल्कर, ग्वालियरके महाराजा जीवाजीराव शिन्दे और रीवाके महाराज गुलाबसिंहने — हरिजनोंके अधिकारोंके बारेमें फ़रमान जारी किये हैं। ग्वालियरका फ़रमान पिछले साल ४ मअीको निकला था। अिन तीन रियासतोंकी आबादी ही ७० लाखके क़रीब है, और अिनका रक़बा ५० हज़ार वर्गमीलसे अूपर है। अिस तरह मध्यभारत काठियावाड़से भी आगे बढ़ा हुआ है, जहाँ सिर्फ़ लाठीकी सरकारने अैसा अैलान किया है। क्या सन् १९४६में यह अुम्मीद करना बहुत ज़्यादा होगा कि काठियावाड़की दूसरी रियासतें भी लाठी-जैसी छोटी रियासतकी नक़ल करनेमें अपनी शान समझें और फ़ख़्र महसूस करें?

संघकी अिन्दौर-शाखाने १ मार्च, १९४५को हरिजन-दिवस मनाया, और हरिजनोंको मन्दिरों और दो हिन्दू होटलोंमें जाने दिया गया। रायबहादुर सेठ हीरालालजीने मिल-मालिकोंकी तरफ़से यह अैलान किया कि वे लोग अपने मुनाफ़ेका ५ फ़ीसदी रुपया मज़दूरोंके लिअे, जिनमें हरिजन भी शामिल रहेंगे, मकान बनवानेमें ख़र्च करेंगे। हम अुम्मीद करें कि यह रक़म, जो अब ७५ हज़ारसे अूपर पहुँच गअी है, अिस रिपोर्टके छपनेसे पहले ही अिस काममें ख़र्च कर दी जायगी। हरिजनोंकी बस्तीके लिअे २५० बीघा ज़मीन भी ले ली गअी है। संघने हाथका काग़ज़ बनानेका अेक कारख़ाना भी खोल दिया है, जिसमें कअी हरिजन परिवारोंको काम दिया गया है। खुशीकी बात है कि यह रिपोर्ट अिन्दौरके हाथके बने काग़ज़ पर ही छपी है। संघने नये ढंगकी दो तेल-घानियाँ भी चलाअी हैं, जिनमें हरिजन ही काम करते हैं। जहाँ-जहाँ रद्दी आसानीसे मिल सके, वहाँ-वहाँ हाथके काग़ज़का कारख़ाना खुलना चाहिये, और ख़ालिस तेलकी घानी तो संघकी हर जगह लाज़िमी तौरसे चलनी चाहिये।

ग्वालियरकी शाखाने अुज्जैनके सिंहस्थ मेलेके वक़्त हरिजनोंके लिअे बड़े अच्छे ढंगसे प्रचार किया। अिस काममें अुसे अयोध्याकी छावनीके आचार्य जानकीदासजी और दूसरे साधुओंकी काफ़ी मदद मिली। श्री कृष्णराव दाते, जो पिछले साल सियासी काम करने लगे थे, फिर हरिजन-सेवाका अपना प्यारा काम करने लगे हैं। अुन्हें भेंट दी गअी रुपयोंकी थैली भी अुन्होंने अिस कामके लिअे दे दी है।

लाला मुल्कराजजी और श्री मुहनोतकी रहनुमाअीमें भोपालकी शाखाने सेण्ट्रल अिण्डियाके संघकी मददके बिना ही अपना सारा काम चलाया।

बड़वानी राज्यने अपने आम स्कूल और कुअें हरिजनोंके लिअे खोल दिये हैं, और अुम्मीद की जाती है कि अिस अैलानको अमली शकल देनेकी वहाँ ज़ोरदार कोशिश की जायगी। पन्ना और अजयगढ़की सरकारोंको यह देखना चाहिये कि वहाँके मेहतर और बसोड़ लोग भी अपने हक़के आम मोटर बसोंमें सफ़र कर सकें। अजयगढ़, छतरपुर और चरख़ारी रियासतोंको अपने यहाँ काम करनेवाली हरिजन औरतोंको जचकीके दिनोंकी छुट्टी देनेका अिन्तज़ाम अभी करना है। टीकमगढ़में अेक सहभोज हुआ, जिसमें अूँची जातके हिन्दू और हरिजन शरीक हुअे थे।

अेक आख़िरी बात कहकर हम अिस रिपोर्टको बन्द करेंगे। हिसाबका ब्योरा देखनेसे पता चलता है कि जहाँ क़रीब ११ हज़ार रुपये स्कूलों, बोर्डिंगों, वज़ीफ़ों और हरिजनोंमें दवाअी वग़ैरा बाँटनेमें ख़र्च किये गये, वहाँ क़रीब ६ हज़ार रुपये अिन्तज़ाम और प्रचारमें ख़र्च हो गये। हमारा मक़सद साल-दर-साल पहली मदमें ज़्यादा ख़र्च करनेका और दूसरी मदमें कम ख़र्च करनेका होना चाहिये।

(अंग्रेज़ीसे)

वालजी गोविन्दजी देसाअी

पाँचवीं आज़ादी

प्रेसिडेण्ट रूज़वेल्टने कुल दुनियाके दूसरे बड़े जंगमें चार आज़ादियोंका अैलान किया था। दक्खिन अफ़्रीकाके राअिट ऑनरेबल जे० अेच० होफमेयर साहबने विटवाटर्सरैण्ड युनिवर्सिटीमें डिग्री बाँटनेके जलसेके वक़्त अुसके चान्सलरकी हैसियतसे जो तक़रीर की, अुसमें अुन्होंने पाँचवीं आज़ादी, यानी क़ौमियत और रंगकी नफ़रतसे आज़ादी, और जोड़ दी। अुन्होंने कहा —

"जब तक हमारी सारी क़ौम रंगके मामलेमें अिस नफ़रतकी अिस हद तक ग़ुलाम बनी हुअी है, **जब तक हम अिस रंग-भेदके शिकार बनकर दक्खिन अफ़्रीकाके अपने साथियोंके साथ अिन्साफ़ नहीं करते, जब तक हम नाज़ीवादके यहूदी-विरोधी अुसूलों-जैसे अिनसा-नियतके ख़िलाफ़ अुसूलोंके शिकार बने रहते हैं,** तब तक हमारा यह दावा कोरा मज़ाक साबित होगा कि हम अेक आज़ाद क़ौम हैं, और आज़ादीकी परम्पराके हक़दार हैं। दक्खिन अफ़्रीकामें रंग या जातिभेदके क्या मानी होते हैं, अिसकी मिसाल पेश करनेके लिअे अितना ही कह देना काफ़ी होगा कि आज हम हरअेक अैसे आदमीको कम्युनिस्ट कह देते हैं, और अिसलिअे अुसे चर्चाकी निन्दाका पात्र मानते हैं, जो सब जातियोंके लिअे अेक ही बरतावकी माँग करता है, या जो यह सुझाता है कि क़ानूनके सामने ग़ैर-यूरोपियनोंके साथ यूरोपियनों जैसा ही बरताव किया जाना चाहिये।

"चाहे हम अिसे पसन्द करें या न करें, लेकिन सच बात तो यही है कि दक्खिन अफ़्रीकामें हमारी आजकी ज़हनियत (मनोवृत्ति) वही जर्मन ज़हनियत है। क़ौमियतसे ताल्लुक़ रखनेवाले हमारे सवालोंकी बुनियाद यही ज़हनियत है। अिन सवालोंको हल करनेका सीधा रास्ता अिस ज़हनियतको बदल देना है। दस बरस पहले हमने बड़ी शानसे यह अैलान किया था कि हमने रंगभेदके सवालका हल खोज निकाला है, लेकिन हमारी मनोवृत्तिमें तो कोअी फ़र्क़ नहीं हुआ था। अुन दिनों मैंने अिस युनिवर्सिटीकी अपनी अेक तक़रीरमें कहा था कि हमारा यह दावा बेकार है। आज शायद ही कुछ अैसे लोग होंगे, जो यह कहें कि अुस वक़्त जो बात मैंने कही थी, वह ग़लत थी। आज हम हिन्दुस्तानियोंके सवालको हल करनेमें लगे हैं, लेकिन आज भी हमारा यह दावा बेकार होगा कि हम अिस सवालको हल कर लेंगे। हाँ, हम अिस सवालके कुछ मसलोंका भले हल कर लें, लेकिन समूचे सवालको नहीं; क्योंकि आज भी वही जर्मन ज़हनियत हम पर बहुत हद तक हावी हो रही है।

"नफ़रतसे आज़ादी पाना कोअी छोटी चीज़ नहीं। अुससे हमें लड़ना है। अुसके ग़ुलाम बनकर हम आज बहुत बड़ी क़ीमत चुका रहे हैं। **अुस क़ीमतका कुछ हिस्सा भौतिक है—सचमुच अेक राष्ट्रकी दृष्टिसे हम आज ज़्यादा ग़रीब हैं, क्योंकि हम मुल्कके तमाम अिनसानोंकी ताक़तसे फ़ायदा नहीं अुठाना चाहते। दुनियाके मुल्कोंके सामने अपनी अिज़्ज़त और साखको गँवाकर हम अुसका दूसरा हिस्सा चुका रहे हैं। हम जातिभेद और रंगभेदकी अपनी नफ़रतोंको किसी आलमारीमें बन्द करके दूसरोंकी निगाहसे बचा नहीं सकते।** दिन-दिन दूसरे मुल्कोंकी नज़रें हम पर गड़ती जा रही हैं। दक्खिन अफ़्रीकाकी तकलीफ़ें भी रोज़-ब-रोज़ बढ़ रही हैं, क्योंकि अुसकी नीति (पॉलिसी) और ज़हनियत, दुनियाके सारे मुल्कोंमें बरती जानेवाली चीज़ों और ख़यालोंके पैमाने पर ठीक नहीं अुतरतीं। मगर हमारा ख़ास नुक़सान तो नैतिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब तक हम दक्खिन अफ्रीकाके यूरोपियनों और ग़ैर-यूरोपियनोंके साथ बरताव करनेमें दोहरी नीति बरतते रहेंगे, जब तक हम अीसाअी धर्मके सबको बराबर समझनेके अुसूलको, लोगोंके काले या गोरे होनेकी बिना पर बदलते रहेंगे, तब तक हमारा सारा मुल्क अुस ख़राबीमें फँसा रहेगा, जिसे प्लेटोने 'आत्माकी झूठ' कहा है, और जिस अीसाअी मज़हबका हम मानते हैं, अुसके अुसूलोंकी हत्या करनेका पाप तो हमें ज़रूर ही लगेगा।"

आख़िरमें अुन्होंने सबको सावधान करते हुअे कहा— "आप लोग थॉमस जैफ़रसनकी तरह यह कहनेके लिअे तैयार हो जायँ कि मैंने अीश्वरके सामने यह क़सम खाअी है कि मैं अिनसानके दिमाग़में रहनेवाली हर क़िस्मकी शैतानीके ख़िलाफ़ हमेशा लड़ता रहूँगा।"

हम सिर्फ़ यह अुम्मीद करते हैं कि जब दक्खिन अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंका मामला संयुक्त राष्ट्रोंकी सभा (यू० अेन० ओ०)के सामने आये, तब हॉफ़मेयर साहब और अुनके प्रधान जनरल स्मट्स साहब अिन भावनाओंको भूल न जायँ।

नअी दिल्ली, १३-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

खेतीमें कृत्रिम चीज़ोंका अिस्तेमाल

अब तो यह बात आम तौरसे मान ली गअी है कि तन्दुरुस्ती बनाये रखनेके लिअे सिर्फ़ अच्छी दीखनेवाली ख़ूराककी नहीं, बल्कि तन्दुरुस्तीके नियमोंका ख़याल रखकर पैदा की गअी ख़ूराककी ज़रूरत है। यह चीज़ ज़मीनकी अच्छाअी पर मुनहसिर है। जिस तरह अेक अिनसानके जिस्म पर चढ़े हुअे मांससे अुसकी तन्दुरुस्तीका अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता, अुसी तरह फ़सलकी मिक़दार या अनाजके दानोंकी मोटाअीसे अुसकी पोषण शक्ति (गिज़ा पहुँचानेकी ताक़त)का अन्दाज़ नहीं किया जा सकता। बनावटी खादोंके अिस्तेमालसे बड़े-बड़े दानोंवाली ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़सल पैदा की जा सकती है, लेकिन अिस तरह पैदा किये गये अनाजमें कुछ ख़ास पोषक तत्त्वोंकी कमी रहती है। आर जिन जानवरोंको वह ख़ूराक खिलाअी जाती है, वे बीमार और कमज़ोर हो जाते हैं। क़ुदरती और बनावटी खादके मसले पर विल्टशायरके अेक बड़े कामयाब किसान फ्रेण्ड साअिकसने 'ह्युमस अेण्ड फार्मर' (ज़मीनकी गठन और किसान) नामके अख़बारमें अेक बहुत कामका लेख लिखा है।

दो साल पहले साअिकसने गायें, सूअर और घुड़दौड़के घोड़े पालना शुरू किया। अुनके घोड़ोंने ख़ूब नाम कमाया। लेकिन लम्बे अरसेकी यह कामयाबी अख़ीरमें नुक़सानदेह साबित हुअी।

'न्यूज़ रिव्यू'में लिखा है— "जानवर पालनेवाले दूसरे लोगोंको रास्ता दिखानेके लिअे साअिकसके अच्छे-से-अच्छे काले और सफ़ेद ढोरोंकी तपेदिक़के अिलाजके नये-से-नये तरीक़ोंसे जाँच कराअी गअी। अुनमेंसे दो-तिहाअी मवेशी तपेदिक़के शिकार पाये गये, हालाँकि वे काफ़ी दूध देते थे। जब अुसे अिस बातका भरोसा हो गया कि क़ुदरती ख़ूराकके बजाय बनावटी खादसे पैदा की गअी ख़ूराक और खली वग़ैरा खिलानेसे ही अुसके मवेशियोंकी यह हालत हुअी है, तो अुसने सबको बेच डाला।

"साअिकसने सन् १९३६में सेलिस्बरीके समतल मैदानके पूरबी हिस्सेमें चेण्टरीका अूँचे-से-अूँचा खेत ख़रीदा और वहाँ नये 'क़ुदरती' ढंगसे खेती शुरू की। अेक दोस्तने अुसके छोटे, सँकरे, हलके और चूहोंसे भरे खेतको देखकर कहा— "यह भी कोअी खेत है? यह तो मकानके बाहरका अेक अूसर मैदान-भर है!" लेकिन १० सालके पहले ही अुस काली निचली ज़मीनने बढ़िया-से-बढ़िया फ़सलें और अच्छे-से-अच्छे मवेशी दिये।

"साअिकसने यह नियम बना लिया था कि न तो ढोरोंको मशीनोंसे तैयार की गअी ख़ूराक खिलाअी जाय और न खेतोंमें बनावटी खाद डाली जाय। ज़मीनकी शुरूकी ख़राबियोंको गहरी जुताअी करके दूर किया गया, और अुसमें सेहतको बढ़ानेवाली फ़सलें पैदा होने लगीं। ज़मीनको दो फुट खोदनेसे गहरी जड़ोंवाले पौधोंके साथ क़ीमती खारोंवाली मिट्टी अूपर निकल आअी। घास और फ़सल पैदा करनेके नये तरीक़ोंसे घासमें सुधार हुआ, और मवेशियों पर अुसका बहुत अच्छा असर हुआ।

"सबसे महत्त्वकी बात यह है कि फ्रेण्ड साअिकसने अपने खेतमें 'ह्युमस' (सायन्सदानी तरीक़ेसे सड़ाये गये जानवरों और तरकारियोंके सड़े गले हिस्से)की खाद दी, और रासायनिक पदार्थोंके अिस्तेमालसे ज़हरीली बननेके बजाय ज़मीन अुपजाअूपनको बढ़ानेवाले कअी तरहके कीड़ोंसे भर गअी।

"साअिकस कहता है— 'आज यह जो अेक फ़ैशन बन गअी है कि हम ज़मीनको अुपजाअू बनानेके बारेमें वनस्पति-शास्त्रके बजाय रसायन-शास्त्रके अुसूलों पर सोचते हैं, सो ग़लत है। रासायनिक कारख़ानोंके मालिकोंने अपने मालकी खपत बढ़ानेके लिअे लगातार सौ बरस तक जो प्रचार या प्रोपेगेण्डा किया, अुससे बनावटी खादोंके अिस्तेमालको बढ़ावा मिला।' अुसकी रायमें बनावटी खादसे अैसी फ़सल पैदा होती है 'जो क़ूवतको अितना घटा देती है कि खानेवालोंमें बीमारीको रोकनेकी ताक़त दिन-दिन कम होती जाती है।'

"अुसका कहना है कि 'दिन-दिन हम अेक अैसी बड़ी-से-बड़ी ख़राबीकी तरफ़ बढ़ रहे हैं, जो क़रीब-क़रीब सभी मुल्कोंमें ज़मीनके अुपजाअूपनको पुराने ज़मानेका अेक क़िस्सा बना देगी।' दूसरे बनावटी तरीक़ोंके बारेमें, जो हमें धीरे-धीरे भावी ख़तरेकी तरफ़ ले जा रहे हैं, साअिकसके विचार ये हैं—

"जिसे वैज्ञानिक या सायन्सदानी खेती कहा जाता है, अुसमें जो बनावटी तरीक़े काममें लाये जा रहे हैं, अुनमें ग़ैर-क़ुदरती तौर पर जानवर पैदा करनेका तरीक़ा शायद सबसे ज़्यादा नुक़सानदेह साबित होगा।

"मैलेको समुद्रमें बहानेका तरीक़ा बहुत ख़राब और भयंकर बरबादीका तरीक़ा है। मैलेको तो फिर ज़मीनमें ही गाड़ना चाहिये।

"ग़ैर-क़ुदरती तौर पर सुखाये गये अनाजकी रोटी अक्सर अच्छी नहीं बनती। सफ़ेद मैदेकी रोटीका रिवाज शुरू होते ही औरतोंमें बाँझपन बढ़ने लगा है। आज ज़रूरत अिस बातकी है कि हम फिर जल्दी-से-जल्दी पूरे गेहूँकी यानी चोकरवाले आटेकी रोटी खाना शुरू कर दें।

"फ़सलके खड़े ठूँठोंको हलकर फिरसे ज़मीनमें मिलानेके बजाय अुन्हें जला देना किसानके लिअे सबसे बड़ा गुनाह है।

"कअी किसान सालमें पाँच महीने गायोंका पास-पास बाँध कर घरके भीतर ही रखते हैं, और अुन्हें खली वग़ैरा अैसी बनावटी ख़ूराक खिलाते हैं, जिसे वे आसानीसे पचा नहीं सकतीं, और फिर अुम्मीद करते हैं कि वे तन्दुरुस्त बनी रहें!"

नअी दिल्ली, १४-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

नअी किताबें

	मूल्य	डाकख़र्च
अीशु ख्रिस्त—(किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०-१-०
रचनात्मक कार्यक्रम—अुसका रहस्य और स्थान (नअी और सुधरी हुअी आवृत्ति) (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
अेक धर्मयुद्ध—(महादेवभाअी हरिभाअी देसाअी)	०-८-०	०-२-०
हिन्दुस्तानी बाल-पाठावली	०-५-०	०-१-०
मरुकुंज—क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राम-अुद्योग

ग्राम-अुद्योगोंकी चर्चा करते हुअे अेक विचारशील भाअी लिखते हैं —

"आपके कअी अच्छे ख़याल अैसी शकलमें ज़ाहिर होते हैं कि अूँची ज़हनियतवाले लोग ही अुन्हें क़बूल कर सकते हैं। हक़ीक़त यह है कि मामूली आदमी अपनी किसी ज़रूरत, लालच या लाभ वग़ैरासे खिंचकर ही कोअी काम करता है। मेरा अपना यह ख़याल है। सद्भाव पर आधार रखनेवाली आर्थिक व्यवस्था देर तक नहीं टिकती। अितने सालोंकी मेहनत और कोशिशके बाद भी खादीके बारेमें कोअी ठोस नतीजा जो नहीं निकला, मेरे ख़यालमें अिसकी ख़ास वजह आपके अनुयायियों, जमे हुअे अंग्रेज़ व्यापारियों, मिल-मालिकों और कपड़ेके व्ेपारियोंकी .ख़ुदग़रज़ी ही रही है।

"आदमी-आदमीके बीचका व्यवहार साफ़ और अूँचा हो, तो वह दोनोंके लिअे अच्छा है। मैं चाहता हूँ कि समाजकी रचना अिसी नियम या क़ायदेके मुताबिक़ की जाय। साथ ही, मेरा यह भी ख़याल है कि जब तक हम बनियापन या मुनाफ़ाख़ोरीको जड़से मिटा नहीं डालते हैं, तब तक यह मुमकिन नहीं। आजकल सरकारने कअी चीज़ें अपने कण्ट्रोलमें ले रक्खी हैं — अनाज या ग़ल्लेका कण्ट्रोल अुसके हाथमें है, ट्रान्सपोर्टका यानी लोगों और चीज़ोंको लाने-लेजानेका कण्ट्रोल अुसके हाथमें है। अैसी और भी कअी चीज़ें हैं। अब वक़्त आ गया है, जब अिस तरफ़ और बढ़ा जा सकता है।

"बम्बअी-सरकारने अेक ग्राम-अुद्योग कमेटी क़ायम की है, जिसमें श्री मनु सुबेदार, श्री लक्ष्मीदास आसर, और श्री रघुनाथ श्रीधर धोत्रे हैं। अिसलिअे अब अपनी नीचे लिखी योजना सबके सामने पेश करनेकी अिच्छा होती है।

"हरअेक गाँवको या दो-तीन गाँवोंके समूहको अिकाअी मानकर अुसकी सारी बस्तीको बच्चों, औरतों, बूढ़ों और हट्टे-कट्टे नौजवानोंमें बाँटा जा सकता है। अिनके अलावा कुछ अैसे भी लोग होंगे, जो रोज़ नियमसे पूरे वक़्त या सारे साल काम नहीं कर सकते, जिनके पास कोअी फ़न, हुनर या कला नहीं, कोअी ज़रिया नहीं, जिससे वे अपना काम-धन्धा कर सकें।

"अिनमेंसे बच्चोंको हर रोज़ ३–४ घण्टोंका अैसा काम दिया जा सकता है, जिसे वे बिना थके कर सकें। बाक़ीके आधे दिनमें वे स्कूलकी पढ़ाअी कर सकते हैं।

"जिस दिनसे काम करने लगें, अुसी दिनसे बच्चोंको रोज़की अेक आना और मर्दों व औरतोंको चार आना मज़दूरी दी जा सकती है। सीखने और अच्छा काम करने पर बच्चोंको चार आने तक और बड़ोंको आठ आने तक मज़दूरी दी जा सकती है।

"अेक गाँवमें अेक ही चीज़ बनाअी जाय, जो बादमें गाँववालोंके ही काम आ सके। अिससे दो महीनोंमें सबका हाथ जम जायगा और ग़लतियाँ न होंगी। सरकारकी तरफ़से गाँवके लिअे कच्चा माल मुहैया किया जाय, और गाँवमें अुस हुनरके दो-तीन अच्छे जानकार मुक़र्रर किये जायँ। सरकारको चाहिये कि वह गाँवोंमें तैयार मालका प्रचार करे, और अिस मालकी ढुलाअीका अैसा अिन्तज़ाम करे, जिससे ग़रीबोंको यह सस्ते दामों मिल सके। माल जितना ज़्यादा तैयार हो, अुतना ही अच्छा।

"अिस तरह बननेवाली बहुत-सी चीज़ें कारख़ानोंके मुक़ाबले सस्ती पड़ेंगी। अिस सस्तेपनकी अेक वजह कम तनख़्वाह होगी। अिस बचतका फ़ायदा कारीगरोंको ही मिलना चाहिये। अगर खेतीमें, रेलवेमें और दूसरे कामोंमें हट्टे-कट्टे लोग ज़्यादा तादादमें काम करने लगें, और अिसकी वजहसे वे गाँवके अुद्योग-गृहोंमें न आ सकें, और वहाँ माल कम पैदा होने लगे, तो कोअी हर्ज नहीं।

"अिस योजनासे करोड़ोंको अिज़्ज़तके साथ रोज़ी कमानेका अेक ज़रिया मिल जायगा। किसीको दान या भीख़में कुछ देनेकी ज़रूरत न रह जायगी, और अुनकी रहन-सहनका दरजा बढ़ जायगा। पैंतीस सालके मेरे अभ्यास और अनुभवकी नींव पर रची गअी यह योजना हिन्दुस्तानकी संस्कृति या तहज़ीबके मुआफ़िक़ है, और हमारा सच्चा सामाजिक बीमा है। अिससे हरअेक अैसे मर्द या औरतको, जिसमें कोअी ख़ास लियाक़त नहीं है, न जिसे किसी तरहकी कोअी तालीम मिली है, अपने गुज़ारेके लायक़ कुछ-न-कुछ मिल ही जायगा। जो ज़्यादा कमा सकते हैं, वे भले जहाँ अुन्हें ज़्यादा मिले वहाँ जायँ। लेकिन और किसीको बेकार न रहना चाहिये।

"जैसा कि आप चाहते हैं, बच्चोंको अेक अुद्योग सिखाकर अुसके ज़रिये तालीम भी दी जा सकती है। अिसका ख़र्च अिस योजना पर डाला जा सकता है।

"अिसके बाद सिर्फ़ लूले, लँगड़े, अन्धे और बीमार बच जाते हैं। अिनको सरकारकी तरफ़से मदद दी जानी चाहिये।

"अिस योजनाके कुछ हिस्से यों हैं —

"मुल्कके ज़्यादातर अनगढ़ लोगोंको हुनरमन्द बनाया जा सकता है।

"ट्रान्सपोर्ट, गाड़ी-भाड़ा, हिसाब, स्टोर्स वग़ैराका अिन्तज़ाम सरकारकी तरफ़से होगा। अिसकी वजहसे व्यापारी तत्त्व जड़से मिट जायगा। मुनाफ़ाख़ोर व्यापारी ग़रीबोंकी रोज़मर्राकी जिन्दगीमें कहीं हाथ भी न लगा सकेंगे।

"अिस योजनाके मुताबिक़ अेक या दो करोड़ औरतें, मर्द और बच्चे रोज़ काम करेंगे, जिससे अुन्हें हर रोज़ २५से ५० लाख रुपयोंकी आमदनी होगी। अिस तरह करोड़ोंके जीवनमें रौनक़ और ताक़त आयेगी।

"हर साल दो सौ करोड़की क़ीमतका नया माल पैदा होगा, और सो भी अुस अिनसानी ताक़तके ज़रिये, जो आज बिना कुछ पैदा किये यों ही बरबाद होती रहती है।

"सरकार ख़ुद माल पैदा करनेवालोंसे ही सस्ते-से-सस्ते दामों कच्चा माल हासिल करे। और, कारख़ानोंवालोंसे जो कुछ ख़रीदे, सो सब लागत दामों ही ख़रीदे।

"किसी ख़ास जानकारकी ज़रूरत मालूम पड़ने पर अच्छे-से-अच्छे आदमीको अेकाध हफ़्ते या महीनेके लिअे रख लिया जाय, और अुतने वक़्तके लिअे अुसे तनख़्वाह देकर, जो सवाल या अुलझन पैदा हो, अुसके बारेमें अुसकी सलाह ली जाय और हल निकाला जाय।

"स्टोर्स और हिसाब वग़ैराका काम देखनेवाला आदमी ही बच्चोंको पढ़ानेका काम भी करे। दो-तीन सालके बाद तालीमका काम 'मॉनीटर'के तरीक़ेसे चलाया जाय। यानी बड़े लड़के छोटे लड़कोंको सिखायें और वे ख़ुद शिक्षक या मास्टरसे सीखें।

"शिक्षकको चाहिये कि वह सरकारकी तरफ़से बनाअी गअी कोअी ५० दवाअियाँ अुनके अिस्तेमालकी पूरी जानकारीके साथ अपने यहाँ रक्खे, और अुन्हें गाँववालोंमें तक़सीम करे। जैसे, कुनैन, आयोडीन वग़ैरा विदेशी और हर्र वग़ैरा देशी दवायें। अिनके दाम पैसे-दो पैसेसे ज़्यादा न रक्खे जायँ।

"अिस तरह जो घरेलू चीज़ें बनाअी जायँगी, अुनमेंसे कुछके नाम नीचे देता हूँ —

"कपड़ा	तारकी चीज़ें, आलपीन, सूअी वग़ैरा
काग़ज़	
पेंसिल, होल्डर, वग़ैरा	साबुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीयासलाओी
खाली डब्बे-खाली गत्तेके, टीनके
लीथो-लेबल छापनेका मसाले
पापड़, बड़ी वग़ैरा
मिट्टीकी चीज़ें-कुम्हारकाम
बटन
काँचकी चीज़ें-चूड़ियाँ
प्लास्टिक
किताबें-जिल्दसाज़ी
खेती के औज़ार
गुड़
कीले, कील
सिरमें डालनेका तेल
बूट पॉलिश
मेटल पॉलिश
फिनािअल
टोपी
चप्पल
बरतन-थाली, लोटा, पतीली
रस्सी, रस्सा, नाड़ी, निवाड़
खिलौने
लकड़ीकी छोटी चीज़ें-पटे, चौकी वग़ैरा
चारपाअी, खटिया
कंघा-कंघी
ब्रश, झाड़ू वग़ैरा
चाकू, छुरे, छोटे औज़ार, कैंची वग़ैरा
चमड़ेकी चीज़ें
स्याही
गोंद, लाख वग़ैरा
बाजे
फाअुण्टेनपेन
बाअिसिकल, घड़ी वग़ैराके कल-पुरजे
छाता, लकड़ी, छड़ी
गंजीफ़राक, मोज़े
मोमबत्ती
आअीने
खेलका सामान "

यह ख़त दिलको लुभानेवाला और ग़ौर करने लायक़ है। अिसमें अेक बात बिलकुल साफ़ है। अिन भाअीने कपड़ेको पहली जगह दी है। यही अेक व्यापक चीज़ है, और अिसकी कअी क्रियाओंमें छोटे-बड़े सभी करोड़ोंकी तादादमें काम कर सकते हैं, और अुससे वे ठीक-ठीक कमा भी सकते हैं। अिनमें जुलाहे भी शामिल हैं। आजकल जुलाहे शहरोंमें रहते हैं। व्यापारी लोग अुनका .ख़ून चूसते हैं, और अुन्हें अपनी मुट्ठीमें रखते हैं। अगर लोगोंकी सरकारें अुनके लिअे ज़रूरी सूत मुहैया कर दें, तो अुनका काम अच्छी तरह चले और जम जाय, और अुस हालतमें अुन्हें शहरोंमें रहनेकी ज़रूरत न रह जाय। लेकिन यह तो अिस मज़मूनसे बाहरकी बात हुअी, अिसलिअे अिसे छोड़े देता हूँ। खादीके बारेमें बहुत-कुछ कहा जा चुका है और कहा जायगा।

अिस ख़तके बारेमें मेरी दो मुश्किलें हैं – पहली यह कि कलोंके ज़रिये बननेवाली चीज़ें जितनी सस्ती बेची जा सकती हैं, क्या अुन्हीं दामों हाथकी बनी चीज़ें भी बिक सकती हैं? अिस योजनामें खादीको छोड़कर दूसरी जो चीज़ें गिनाअी गअी हैं, अुनमेंसे ज़्यादातर या कोअी भी व्यापक बनने लायक़ नहीं। और, जो माल तैयार होगा, अुसका अिस्तेमाल गाँव-का-गाँव ही में न हुआ, तो अुसे शहरोंमें खपाना होगा। यह होना भी चाहिये। देहातवालोंमें वह कला और कारीगरी आनी चाहिये, जिससे बाहर अुनकी पैदा की गअी चीज़ोंकी क़ीमत की जा सके। जब गाँवोंका पूरा-पूरा विकास हो जायगा, तो देहातियोंकी बुद्धि और आत्माको सन्तुष्ट करनेवाली कला-कारीगरीके धनी स्त्री और पुरुष गाँवोंमें ही मौजूद होंगे। गाँवमें कवि होंगे, चित्रकार होंगे, शिल्पी होंगे, भाषाके पण्डित और खोज करनेवाले लोग भी होंगे। थोड़ेमें, ज़िन्दगीकी अैसी कोअी चीज़ न होगी, जो गाँवमें न मिले। आज हमारे देहात अुजड़े हुअे और घूरे बने हुअे हैं। कल वहीं सुन्दर बग़ीचे होंगे, और गाँवके बाशिन्दोंको ठगना मुश्किल हो जायगा।

अिस तरहके गाँवोंकी रचनाका काम आज ही से शुरू हो जाना चाहिये। अिस ख़यालसे मुमकिन है कि अिन सुझावोंमें कुछ फेरफार करना ज़रूरी हो।

गाँवोंकी रचनाका काम कामचलाअू नहीं बल्कि टिकाअू या मुस्तक़िल होना चाहिये।

दूसरी मुश्किल यह है कि यहाँ अुद्योगकी तालीम और पढ़ाअीमें भेद पाया जाता है, अगरचे अिसमें अुद्योग, तन्दुरुस्ती और तालीम व हुनरकी मिलावट है, मुमेल है। नअी तालीमकी दृष्टिसे भी अुद्योग और पढ़ाअी, सेहत और हुनर अलग-अलग चीज़ें नहीं। अिन सबके मेलसे माँके पेटमें आनेसे लेकर बुढ़ापे तकका अेक .ख़ूबसूरत फूल तैयार होता है। यही नअी तालीम है। अिसलिअे शुरूमें मैं ग्राम-रचनाके टुकड़े न करूँगा, बल्कि यह कोशिश करूँगा कि चारोंका आपसमें मेल बैठे। अिसलिअे मैं किसी अुद्योग और तालीमको अलग नहीं मानूँगा, बल्कि अुद्योगको तालीमका ज़रिया मानूँगा और अिसीलिअे अैसी योजनामें नअी तालीमकी संस्थाको शामिल करूँगा।

कलकत्ता जाते हुअे रेलमें, २९-१०-'४६
(गुजरातीसे) मोहनदास करमचंद गांधी

अुड़ीसाके सबरोंमें

कटक ज़िलेकी अूँची ज़मीनोंमें, चण्डीमाअीकी तराअीमें चंडीखोल नामका अेक गाँव है, जहाँ जोधपुर-निवासी स्वामी भैरवानंदने सबर नामके आदिवासियोंके बीच अपना घर बना लिया है। अिस जंगली जगहमें अुन्होंने चण्डीमाअीका अेक मंदिर बनवाया है, जहाँ वे सुबह-शाम प्रार्थना करते हैं। अुनके कहनेसे अेक मारवाड़ी दोस्तने वहीं अेक धरमशाला और अेक महादेवका मंदिर भी बनवा दिया है। पासके अेक .क़ुदरती पहाड़ी झरनेसे तीन अिंची पाअिपके ज़रिये अेक पक्के हौज़में पानी लाया जाता है। गो-मुखीसे बहाये जानेवाले अिस साफ़ पानीमें नहानेसे बहुत आनन्द और ताज़गी मालूम होती है।

क़रीब तीन साल पहले ब्रह्मचारी भैरवानंदकी देख-रेखमें सबर बच्चोंके लिअे अेक छोटा प्राअिमरी स्कूल जारी किया गया था। जब तक मैंने वहाँ जाकर .ख़ुद देख नहीं लिया, तब तक यक़ीन नहीं होता था कि तीन सालके अितने थोड़े अरसेमें कोअी तरक़्क़ी हो सकती है।

जिन लोगोंने रामायण पढ़ी है, अुनको याद होगा कि सबरी भीलनी अितनी सीधी थी कि श्री रामचंद्रजीको बेर खिलानेके पहले अुसने .ख़ुद चखकर अुनके खट्टे या मीठे होनेकी जाँच कर ली थी। कटक ज़िलेके सबर भी बहुत सीधे-सादे हैं। दरअसल वे पूरे जंगली लकड़हारे ही हैं। अुनकी औरतें कुल्हाड़ी लेकर जंगलमें जाती हैं, और जलाअू लकड़ीके गट्ठे बाँधकर पड़ोसके गाँवोंमें ज़्यादा-से-ज़्यादा चार या छह आनेमें बेच देती हैं। यही अुनकी रोज़की कमाअी है। बच्चे घरका वह सारा काम करते हैं, जिसका शहरी लोग ख़याल भी नहीं कर सकते; अिसीलिअे अुनके माँ-बाप बच्चोंको स्कूल भेजना पसन्द नहीं करते। तकलीफ़के वक़्त अुनकी सेवा करके और अिन अधपेट जीनेवाले अिनसानोंको अपने धनवान दोस्तोंकी मददसे कभी-कभी अच्छा खाना देकर स्वामी भैरवानंद सबरोंमें अितने लोकप्रिय हो गये हैं कि वे अुनके बच्चोंको अपने स्कूलमें पढ़नेके लिअे खींच सके हैं। स्कूलमें आनेवाले बच्चोंको भी वे दोपहरके वक़्त भुना हुआ चावल और सालमें दो बार कपड़े देते हैं। अिन तीन सालमें स्कूलमें आनेवाले बच्चोंकी तादाद ३०से १०० हो गअी है। अेक मास्टरसे चलनेवाले स्कूलमें अब तीन मास्टर रखने पड़े हैं, और स्कूल व मास्टरोंके रहनेके लिअे पक्के मकान बन गये हैं।

सबर लड़कोंके लिअे जो मुफ़्त बोर्डिंग-हाअुस जारी किया गया था, अुसे बन्द करना पड़ा; क्योंकि बच्चोंके माँ-बाप अुन्हें २४ घंटोंके लिअे नहीं छोड़ सकते थे। "जब हम अपने दस-बारह सालके लड़कोंको किसानोंके यहाँ काम पर भेजते हैं, तो अुन्हें मुफ़्त खाना-कपड़ाके अलावा हर महीने रु० २)से रु० ५) तक अूपरसे मिल जाता है। अगर आप हमारे लड़कोंको बोर्डिंगमें रखना चाहते हैं, तो आपको अुन्हें मुफ़्त खाना देनेके सिवा अूपरसे कुछ और देना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अेक ग़रीब सबरके दृष्टिकोणसे यह बिलकुल सच्ची दलील है। अिससे मुझे दरभंगाके स्वर्गीय महाराजाकी वे दलीलें याद आती हैं, जो अुन्होंने सन् १९११में स्व० श्री गोखलेके मुफ़्त व लाज़िमी तालीमवाले बिलके ख़िलाफ़ पेश की थीं। अुन्होंने कहा था कि सिर्फ़ चार या पाँच सालमें ख़तम होनेवाली पढ़ाअीके लिअे भी किसान लोग अपने बच्चोंको नहीं छोड़ सकते। तब यह आसानीसे समझा जा सकता है कि जिन सबरोंके पास अपनी कहनेको अेक अिंच ज़मीन भी नहीं है, और जो सालभर लकड़ी और घास काटकर ही अपनी गुज़र-बसर करते हैं, अुनके लिअे अपने बच्चोंको पढ़ाअीके लिअे भेजना कितना मुश्किल होगा!

सच बात तो यह है कि हिन्दुस्तानके ढाअी करोड़ आदिवासियोंके बच्चोंको अुपयोगी नागरिक बनानेके लिअे अैसे हज़ारों कार्यकर्ताओंकी ज़रूरत है, जो अिस कामके लिअे अपनी पूरी ज़िन्दगी दे दें। सूबोंकी कांग्रेसी सरकारोंने आदिवासियोंके लिअे अेक ख़ास महकमा खोला है। यह अेक अपवाद नहीं, बल्कि नियम ही बन जाना चाहिये कि अिन पिछड़े हुअे लोगोंकी, और ख़ास तौर पर शहरोंसे दूर जंगलों और पहाड़ियोंमें रहनेवाली जातियोंकी, पढ़ाअी और हालत सुधारनेके लिअे हर साल लाखों रुपये ख़र्च किये जायँ। ढाअी करोड़ आदिवासियोंमेंसे दो करोड़ हिंदुस्तानकी अूँची जगहों या मैदानोंमें रहते हैं, और बाक़ीके पचास लाख जंगलों और पहाड़ियोंमें। अुन्हें अपना दोस्त बनानेकी ज़रूरत है।

अ० वि० ठक्कर

[अिससे हमें यह सबक़ मिलता है कि हिन्दुस्तानमें बुनियादी तालीम यानी दस्तकारीके ज़रिये तालीम देनेकी ज़रूरत है।

नअी दिल्ली, २५-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मो० क० गांधी]

चरखा और अणुबम

श्री अेण्ड्रयू फ्रीमैन 'न्यूयार्क पोस्ट' नामके अमेरिकन अख़बारके संवाददाता हैं। वे कनु गांधीके चरखा-क्लासमें कताअी सीखने शामिल हुअे थे। जब पण्डित नेहरू अुत्तर-पश्चिमके सरहदी अिलाक़ेका दौरा करने गये, तो अपने अख़बारको अुसकी ख़बरें भेजनेके लिअे वे भी पण्डितजीके साथ हो गये थे। वहाँसे लौटनेके बाद जल्दी ही अुन्होंने गांधीजीके साथकी अपनी अेक मुलाक़ातमें चरखे और कताअीकी चर्चा चलाअी। वे अिस विश्वासके साथ गांधीजीसे चर्चा करने आये थे कि तहज़ीब या तमद्दुनके ख़यालसे और बीमारीके अिलाजकी दृष्टिसे चरखेकी अपनी ख़ास क़ीमत है; तिसपर ख़ासकर पच्छिमके मुल्कों पर आज जो पागलपन और बीमारी सवार है, और जो बीमारी बढ़ते-बढ़ते अणुबम तक पहुँच गअी है, चरखा अुसका अिलाज है।

"क्या अमेरिकावालोंके लिअे चरखेका कोअी सन्देश है? क्या अणुबमके ख़िलाफ़, अुसके अिलाजके रूपमें, चरखेका हथियार काम दे सकता है?" अिस सवालके जवाबमें गांधीजीने कहा — "चरखेका सन्देश या पैग़ाम अकेले अमेरिकाके लिअे नहीं, बल्कि सारी दुनियाके लिअे है। लेकिन जब तक ख़ुद हिन्दुस्तान चरखेको पूरी तरह अपनाकर दुनियाके सामने अिसकी अेक जीती-जागती और अमली मिसाल पेश नहीं करता, तब तक यह कैसे हो सकता है? आज यह नहीं कहा जा सकता कि हिन्दुस्तानने चरखेको पूरी तरह अपना लिया है। अिसमें चरखेका कोअी क़सूर नहीं। मुझे अिसमें ज़रा भी शक नहीं कि चरखेमें हिन्दुस्तानका ही नहीं, बल्कि सारी दुनियाका अुद्धार और अुसकी सुरक्षितता समाअी हुअी है। अगर हिन्दुस्तान मशीनों या कल-कारख़ानोंका ग़ुलाम बन गया, तो फिर दुनियाके लिअे बचावका कोअी रास्ता न रह जायगा। फिर तो भगवान् ही अुसे बचावे, तो बचे!"

अिसी चीज़को ज़रा और समझाते हुअे गांधीजीने कहा — "हिन्दुस्तानका मिशन अिससे भी बढ़कर है। अुसे सारी दुनियामें भाअीचारा और अमन व शान्ति क़ायम करनी है। क्या सिर्फ़ कान्फ्रेन्सें करनेसे दुनियामें सुलह और शान्ति क़ायम हो जायगी? हम सब देख रहे हैं कि अेक तरफ़ तो हमारे सामने शान्ति और सुलहके लिअे परिषदें या कान्फ्रेन्सें होती रहती हैं, और दूसरी तरफ़ सुलह और शान्ति टूटती रहती है।"

श्री फ्रीमैनने अपनी राय ज़ाहिर करते हुअे कहा — "सचमुच यह कितनी दर्दनाक बात है? हिन्दुस्तानको सारी दुनियाका रहबर बनना है, और ख़ुद हिन्दुस्तान ही में बद-अमनी है, और हुल्लड़ होते रहते हैं। हिन्दुस्तान ही अेक अैसा मुल्क है, जो सचमुच चरखेको अपना सकता है। क्या आप मानते हैं कि हिन्दुस्तान चरखेके कामको अच्छी तरह अुठा लेगा?"

गांधीजीने कहा — "हिन्दुस्तान चरखेको अपनाता जा रहा है; लेकिन साथ ही मुझे यह क़बूल करना चाहिये कि यह काम बहुत धीमी चालसे हो रहा है। पण्डित नेहरूने खादीको 'हमारी आज़ादीकी पोशाक' कहा है। लेकिन जब तक खादीसे चन्द सनकी या ख़ब्ती लोगों और ग़रीबोंको ही सन्तोष होता है, तब तक वह 'आज़ादीकी पोशाक' नहीं बन सकती। दुनियामें अैसे कअी काम हैं, जो अिनसानके किये नहीं होते। लेकिन अीश्वर तो सब कुछ कर सकता है। अगर अीश्वरके नामसे पहचानी जानेवाली कोअी जीती-जागती ताक़त मौजूद न हो, तो चरखेकी भी अपनी कोअी हस्ती नहीं हो सकती।"

जब गांधीजीने चन्द सनकी लोगोंके सन्तोषकी बात कही, तो कुछ फ़िक्र-सी जताते हुअे श्री फ्रीमैनने पूछा — "क्या सचमुच यहाँ कातनेवालोंको सनकी माना जाता है?"

गांधीजीने जवाब दिया — "नहीं, मैंने तो यह सोचकर अिस विशेषणका प्रयोग किया है कि अमेरिकावाले क्या कहेंगे। ख़ुद अपने लिअे तो मैं अिसका अिस्तेमाल अपने बचावके लिअे करता हूँ। मेरे अेक दोस्तने मुझे 'असली आदर्शवादी' कहा है।"

अिस सिलसिलेमें श्री फ्रीमैनने कहा — "अेक बुद्धिशाली आदमीकी और अमेरिकनकी हैसियतसे मैं तो यही कह सकता हूँ कि अलबत्ता, यह सच है कि बहुतेरे अमेरिकन कातनेवालोंको सनकी कहेंगे, फिर भी अुनमें कअी अैसे हैं, जो गहराअीमें अुतरकर सोचने लगे हैं। अपनी संस्कृतिको बिलकुल बरबाद होनेसे बचानेवाली कोअी-न-कोअी चीज़ तो ढूँढ़ निकालनी ही होगी; और जीवनको सादा बनाना ही होगा।"

जवाबमें गांधीजीने कहा — "मनुष्यकी मनुष्यता और अुसकी शख़्सियत दूसरे किसी तरीक़ेसे क़ायम ही नहीं रह सकती। 'सबसे अदने आदमीको भी सबसे अच्छेके बराबर ही मिलना चाहिये,' अिस बातकी सचाअीको मैं पूरी तरह मानता हूँ, और अुसी तरह चलता हूँ। 'अण्टु धिस लास्ट' नामसे रस्किनने अंग्रेज़ीमें अिस मतलबकी जो अेक किताब लिखी है, अुसे पढ़नेके बाद यकायक मेरी ज़िन्दगीका काया-पलट हो गया। गुजरातीमें 'सर्वोदय' के नामसे मैंने अुसका तरजुमा कर डाला। दुनियासे हम अपने लिअे जिस तरहके बरतावकी अुम्मीद रखते हैं, वैसा ही बरताव हमें ख़ुद छोटे-से-छोटे और अदने-से-अदने आदमीके साथ करना चाहिये। मतलब यह कि हरअेकको अपने विकासके और अपनी ज़िन्दगीको कामयाब बनानेके अेक-से मौक़े मिलते रहने चाहियें। अगर मौक़ा दिया जाय, तो हर आदमी समान रूपसे अपना-अपना आध्यात्मिक विकास कर सकता है। चरखा अिस महान् सचाअीकी निशानी है।"

श्री फ्रीमैनने फिर पूछा — "क्या आप चाहते हैं कि अमेरिकाके लोग चरखेको, यानी हाथसे कातने और बुनने और अपनी ज़रूरतका कपड़ा ख़ुद बना लेनेकी बातको, अपना लें?"

गांधीजीने अुन्हें जवाब देते हुअे कहा — "हाँ, मैं ज़रूर चाहता हूँ। लेकिन मैं नहीं जानता कि हिन्दुस्तानमें चरखेके पूरी तरह चलने और जमनेसे पहले दूसरे कोअी अुसे अपनायेंगे या नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन अगर हिन्दुस्तान कपड़ेकी अपनी ज़रूरत पूरी करनेके लिअे चरखेको अपना ले, तो मुझे अिस बारेमें दुनियासे कुछ कहनेकी ज़रूरत ही न रह जाय। हिन्दुस्तानकी मिसाल देखकर दुनिया अपने-आप अुसे अपना लेगी। आज हिन्दुस्तान पर पच्छिमी मुल्कोंकी मशीनोंका अैसा ज़ोरदार हमला हो रहा है कि अगर हिन्दुस्तान अुसके सामने टिक सका, तो वह अेक चमत्कार ही माना जायगा। मुझे क़बूल करना चाहिये कि आज तो सब कुछ अुलटा ही होता नज़र आता है। हमारे अिन आपसी झगड़ोंको ही देखिये न!"

"लेकिन आप नाअुम्मीद तो नहीं हो गये हैं न?"

"हम अुसे जितना जानते हैं, अुससे भी ज़्यादा जो ताक़त हमारे नज़दीक रहकर हमें प्रेरणा देती रहती है, अुसमें श्रद्धा रखते हुअे मैं नाअुम्मीद कैसे हो सकता हूँ? लेकिन मैं आपसे अेक प्रति-प्रश्न पूछूँ — अमेरिकाने पैसेको ही अपना परमेश्वर बना लिया है, और वह अुसकी अितनी ज़्यादा पूजा करता है, फिर भी क्या वह अपने यहाँसे बेकारी, ग़रीबी, रिश्वतख़ोरी और राजनीतिमें 'टम्मैनी-हॉल*' के रंग-ढंगको नाबूद कर सका है?"

"आपके सवालका जवाब तो ज़ाहिर ही है — अमेरिका अिन बुराअियोंको नाबूद नहीं कर सका है।"

अिसपर गांधीजीने आगे चलकर कहा — ".ख़ुद अिंग्लैण्डमें यह सब कहाँ नाबूद हुआ है? ये सारे सवाल अुसे भी परेशान किये हुअे हैं, और अभी अुसे अिनका मुक़ाबला करना है। पच्छिमवाले अीसाअी धर्मको माननेका दावा करते हैं, फिर भी वहाँ न तो कहीं अीसाका धर्म नज़र आता है, न कहीं .ख़ुद अीसा दिखाअी पड़ता है। पच्छिमवालोंके लिअे दर असल यह अेक अजीब हक़ीक़त है। वैसे, अगर पच्छिमवाले अीसाअी धर्मको मानते होते, या अीसाका अनुसरण करते होते, तो वहाँ अैसी .ख़ूँख़्वार लड़ाअियाँ क्यों होतीं? मैंने अीशु या ख़िस्तके अुपदेशको अिसी शकलमें समझा है। यहाँ हिन्दुस्तानमें भी बहुतसी जहालत और बहुतसे वहम हैं, फिर भी हम हिन्दुस्तानियोंके दिलकी गहराअीमें अीश्वरके प्रति श्रद्धा है — धर्म पर आस्थाकी सहज वृत्ति है।"

अिस पर अपनी गवाही देते हुअे श्री फ्रीमैनने कहा — "चन्द अख़बारनवीसोंको और दूसरे कुछ लोगोंको अिसका अनुभव हुआ है। यहाँके लोगोंमें यह वृत्ति पाअी जाती है। लेकिन साथ ही मुझे क़बूल करना चाहिये कि कभी-कभी अैसे भी मौक़े आ जाते हैं, जब मुझे सब कुछ अपने हाथसे खिसकता नज़र आता है। मैं अभी वज़ीरिस्तानके तायफ़ावाले अिलाक़ेसे चला आ रहा हूँ। अुस अिलाक़ेमें पण्डित नेहरू पर जो हमले हुअे, और पूरबी बंगालमें जो हो रहा और हुआ है, अुसीको लीजिये। मैं मानता हूँ कि अिन सब चीज़ोंको देखकर आप भी यह सोचते होंगे कि बाज़ी हाथसे निकल गअी है, और अब आशा या अुम्मीदकी कोअी गुंजाअिश नहीं रही। क्या आप यह कहेंगे कि जिस तरह ख़िस्ती धर्मके पालनेवालोंने ख़िस्तको माननेसे अिनकार किया है, अुसी तरह अिस्लाम भी अपने पैग़म्बरको भुला बैठा है?"

गांधीजीने जवाब दिया — "मैंने तो पुकार-पुकार कर यह चीज़ कही है। अिन सबमें हज़रत महम्मद और सुलह व शान्तिका अुनका पैग़ाम कहाँ नज़र आता है? हाल ही अेक आम सभामें मैंने कहा था कि अगर हज़रत महम्मद आज हिन्दुस्तानमें तशरीफ़ लायें, तो वे ज़रूर यह अैलान करें कि जो लोग अपनेको अुनका अनुयायी कहते हैं, अुनमें बहुतसे अैसे हैं, जो अुनके धर्मका पालन नहीं करते, और साथ ही वे मुझको अपने सच्चे अनुयायी मुस्लिमकी तरह अपनायें। अिसी तरह अीशु भी मुझे सच्चे ख़िस्तीकी तरह अपनाये बिना न रहें।"

अिसपर श्री फ्रीमैनने पूछा — "मनुष्यको अीश्वरके रास्ते या अीशु या महम्मदके अुपदेशोंकी राह पर वापस ले जानेके लिअे क्या किया जा सकता है?"

गांधीजीने अुन्हें जवाब दिया — "अीशुने अपने अेक शिष्यसे जो बात कही थी, वही मैं आपको अिस सवालके जवाबमें कहूँगा — 'सिर्फ़ मुँहसे ख़ुदा, ख़ुदा, रटनेके बजाय, तेरे दिलमें जो पिता बिराजते हैं, तू अुनकी मरज़ीके मुताबिक़ चल'। यह चीज़ आपको, मुझे और सब किसीको समान रूपसे लागू होती है। अगर हममेंसे हरअेकको अपने दिलोंमें बिराजे हुअे जीते-जागते अीश्वरमें श्रद्धा होगी, तो आख़िर सब ठीक ही होगा, और हमारा सबका भला होगा। मुझे यक़ीन है कि मरते दम तक मेरी यह श्रद्धा कम न होगी। मुझे अपनी कमज़ोरियों और ख़ामियोंका ठीक-ठीक ख़याल है, फिर भी अीश्वरके बारेमें मेरी श्रद्धा दिन-ब-दिन ज़्यादा मज़बूत होती जाती है। अगर मेरी श्रद्धा बढ़ती न जाती, तो मैं भी वही करता, जिसकी सलाह मैंने बहनोंको दी है। मैंने अुनसे कहा है कि जब अिज़्ज़त लुटनेका मौक़ा आये और छुटकारे या मददकी कोअी अुम्मीद न रहे, तो वे .ख़ुद-कुशी कर लें। अपने लिअे भी मैं अिसी अिलाजका सहारा लेता।"

फिर अपनी असल बात पर लौटते हुअे श्री फ्रीमैनने पूछा — "क्या चरखेके बारेमें आपने कभी यह सोचा है कि वह लोगोंकी बीमारियों और रोगोंके अिलाजका भी काम दे सकता है?"

गांधीजीने कहा — "हाँ, सोचा है। ग्लासगोके अेक विद्वान प्रोफ़ेसरने अिस विषयका थोड़ा साहित्य मेरे पास भेजा था। अुसे मैं देख गया हूँ। अिसके अलावा बंगालकी जेलोंके अेक रिटायर्ड सुपरिण्टेण्डेण्टने मुझे लिखा था कि पागलोंको अच्छा करनेमें चरखेका, ख़ासकरके मनको आराम पहुँचानेवाली अुसकी ताल और लयवाली गतिका, क्या अुपयोग हो सकता है।"

सारी बातचीतके अख़ीरमें अपना फ़ैसला सुनाते हुअे श्री फ्रीमैनसे गांधीजीने कहा — "मैं अमेरिकावालोंके सामने चरखेको अेक 'विचार-प्रेरक' मशीनके रूपमें पेश करनेका अिरादा कर रहा हूँ। जब मैं चरखा-क्लासमें कताअी सीखने और कातने बैठता था, तो मैंने यह अनुभव किया कि जब मैं अपने चरखेके साथ अकेला होता हूँ, तो वह मेरे विचारोंको गति देता है। अगर अमेरिकावालोंको चरखे पर सूत कातनेकी बात जँच जाय, तो वे लोग .ख़ुद कुछ सोचने-समझने लगें, क्योंकि वैसे तो अुनको अपना दिमाग़ चलानेकी फ़ुरसत ही नहीं मिलती! अगर अैसा हो, तो मुमकिन है, चरखा अुन्हें अणु-बमकी याद सी भुला दे।"

नअी दिल्ली, २६-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

-----

* 'टम्मैनी हॉल' न्यूयार्कके अेक मकानका नाम है। अुसमें क़रीब-क़रीब गुण्डेशाहीके ढंगको राजनीति चलानेवालोंका अड्डा और दफ़्तर था, और अेक-बार अुन्होंने सारे न्यूयार्ककी म्युनिसिपैलिटी पर और राज-व्यवस्था पर क़ब्ज़ा कर लिया था।

विषय-सूची

हफ़्तेवार ख़त ... प्यारेलाल
बेज़बान जानवरोंके साथ बेरहमी ... गांधीजी
धर्मकथा ... वालजी गोविन्दजी देसाअी
बिहारसे ... गांधीजी
ग्रामोद्योग ... गांधीजी
अुड़ीसाके सबरोंमें ... अमृतलाल वि० ठक्कर
चरखा और अणुबम ... प्यारेलाल
गाँववाले अपना कपड़ा कैसे तैयार कर सकते हैं? गांधीजी
मध्यप्रान्तमें शराबबन्दी ... प्यारेलाल
अेक लुभानेवाली तसवीर ... प्यारेलाल
मध्यभारतमें हरिजन-सेवा (१९४४-४५) ... वालजी गोविन्दजी देसाअी
पाँचवीं आज़ादी ... प्यारेलाल
खेतीमें कृत्रिम चीज़ोंका अिस्तेमाल ... प्यारेलाल
टिप्पणियाँ
डोला-पालकी ... मो० क० गांधी
अंग्रेज़ी-हिन्दुस्तानी शब्दकोश ... मो० क० गांधी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि॰ नं॰ बी ४४४८

श्रद्धाकी चुनौती

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक — प्यारेलाल

अंक ४१

मुद्रक और प्रकाशक
...जी डाह्याभाभी देसाभी
...मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता॰ १७ नवम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु॰ ६,
विदेशमें रु॰ ८; शि॰ १४; डॉलर ३

हफ़्तेवार ख़त

दुविधा

...खालीके लिअे रवाना होनेके पहले गांधीजीको चार दिन ...में रुकना पड़ा। ज्यों-ज्यों नोआखालीकी वारदातोंकी दर्दनाक ...मालूम होती गअीं, त्यों-त्यों कलकत्तेकी मौजूदा तंगदिली ...गअी। बक़ अीदका त्योहार बिलकुल पास आ गया था। ...के बड़े वज़ीर और अुनके साथियोंकी यह ख़ाहिश थी कि ...अीदके त्योहारके सहीसलामतीसे मन जाने तक गांधीजी ...ही रहें। अुन्हें यह बताया गया कि अिस सारी मुसीबतकी ...कत्तेमें ही है। अगर राजधानीमें शान्ति क़ायम रक्खी जा ...तो सारे सूबे पर अुसका बहुत अच्छा असर पड़ेगा। गांधीजी ...गये। पिछले शुक्रवारको शामकी प्रार्थनाके बादकी अपनी ...में अुन्होंने कहा — "सारे हिन्दुस्तानके सामने आज भारी ...खड़ा है। बंगालके सामने अिससे भी बड़ी मुसीबतें हैं। आपने ...पूछा है कि अैसी हालतमें आपका क्या फ़र्ज़ है। हमारी मज़हबी ...में बताया गया है कि शास्त्रोंने जिस कामको करनेका आदेश ...है, ऋषि-मुनि जिसका पालन करते हैं, पण्डित लोग जिसकी ...करते या जिसे समझाते हैं, और जो दिलको अपील करता ...वही धर्म या फ़र्ज़ है। चौथी शर्तका अमल शुरू होनेके पहले पहली ...शर्तोंका पूरा होना ज़रूरी है। अिस तरह बेवक़ूफ़ या धूर्त ...के अुपदेश या सीखको हमें नहीं मानना चाहिये, फिर चाहे ...वह कितनी अच्छी लगनेवाली ही क्यों न हो। दूसरोंको कभी नुक़सान ...न पहुँचानेवाला, सबके साथ प्रेमका बरताव करनेवाला और फ़क़ीरीको ...अपनानेवाला आदमी ही लोगोंको धर्म या क़ानून बतानेका हक़ ...रखता है।

"...मैंने अपना फ़र्ज़ आपको बता दिया है। लेकिन आपका फ़र्ज़ ...है, सो आप ख़ुद तय करें। मैं आपसे अपनी बात माननेके ...लिअे नहीं कहता; लेकिन आज हम सब जिस मुसीबतमें हैं, अुसमेंसे ...का फ़र्ज़ खोज निकालनेका रास्ता मैंने आपको दिखा दिया है। ...कहती है कि अगर आप भगवान्‌की शरणमें चले जायँ, ...तो वह ज़रूर ही आपको रास्ता दिखायेंगे।"

अुचित प्रेरणा

...बंगाली सरकारके चार वज़ीर अमन क़ायम करनेकी कोशिशोंमें ...मदद पहुँचानेके लिअे कलकत्ते आये, अिससे लोगोंको ख़ुशी हुअी, और ...अुन्हें अुचित प्रेरणा मिली। अुनकी यह मुलाक़ात पुरअसर साबित हुअी, ...कम-से-कम थोड़े वक़्तके लिअे तो आनेवाला ख़तरा टल गया। ...कलकत्ता आते ही वाअिसराय भी यहाँ आ पहुँचे। अिससे ...कअी तरहकी अटकलबाज़ियाँ चलीं। क्या वे वाअिसरायको ...मामलेमें दस्तन्दाज़ी करनेके लिअे कहेंगे, या क्या वे बंगालके ...पर यह दबाव डालेंगे कि वे बंगालकी मिनिस्ट्रीको ज़्यादा ...क़दम अुठानेको कहें? प्रार्थनाके बादकी अपनी कअी ...में गांधीजीने लोगोंको समझाया — "आपने जिस आज़ादीको ...करनेकी प्रतिज्ञा की है, अुसके साथ बदलेकी ख्वाहिशका और हिफ़ाज़तके लिअे वाअिसराय या गवर्नर या फ़ौज और पुलिसके पास दौड़नेकी बातका कोअी मेल नहीं बैठता। वाअिसरायकी सारी हुकूमत कैबिनेटके पास है, और गवर्नरकी सारी हुकूमत बंगालके वज़ीरोंके हाथमें है। अगर आप हमेशाके लिअे शान्ति क़ायम करना चाहते हैं, तो अुसकी जड़ आपके दिलोंमें होनी चाहिये। मैं तो डंकेकी चोट आपसे यह कहता रहा हूँ कि आपके मज़बूत दिलोंके सिवाय आपको कोअी नहीं बचा सकता। बहादुरको कोअी बेअिज़्ज़ती नहीं कर सकता। बदला लेनेकी दलील पापोंका अेक घेरा है। अगर आप बदला लेना चाहते हैं, तो आप आज़ाद नहीं हो सकते। फ़र्ज़ कीजिये कि कोअी शख़्स मुझे मार डालता है, तो आप अुस ख़ूनीके बदले किसी दूसरेका ख़ून करके क्या हासिल कर लेंगे? और, अगर आप थोड़ा सोचें, तो आप मानेंगे कि गांधीको ख़ुद गांधीके सिवा दूसरा कौन मार सकता है? आत्माको कोअी मार नहीं सकता — वह अमर है। अिसलिअे हम अपने दिलोंसे बदलेके ख़यालोंको निकाल दें। अगर हम साफ़ तौरसे अिस बातको समझ लें, तो हम आज़ादीकी तरफ़ बहुत बड़ा क़दम अुठा चुके होंगे।"

पागलपन छोड़ो

गांधीजीकी यह चेतावनी बड़े मौक़ेकी थी। बिहारके तूफ़ानकी गड़गड़ाहट सुनाअी पड़ने लगी थी। चारों तरफ़ बदलेकी आवाज़ गूँजने लगी थी। गांधीजीने अपनी अगली तक़रीरमें बतलाया कि बदलेकी यह चिल्लाहट ग़ैरमुनासिब और मूर्खतासे भरी हुअी है।

अुन्होंने कहा — "मैंने अपने बचपनसे बुराअीसे नफ़रत करना सीखा है, बुराअी करनेवालेसे कभी नहीं। अिसलिअे बुराअी करनेके बावजूद भी मुसलमान मेरे दोस्त हैं। लेकिन मेरा यह फ़र्ज़ है कि मैं अुन्हें अुनकी ग़लती बता दूँ। अपने प्यारे-से-प्यारे भाअी-बन्दोंके साथ भी ज़िन्दगीमें मैंने यही क़ानून लागू किया है। मेरे ख़यालमें सच्ची दोस्तीकी यही कसौटी है। कल मैंने आप लोगोंसे कहा था कि बदलेकी भावनासे शान्ति क़ायम नहीं की जा सकती। यह अिनसानियत नहीं है। हिन्दू शास्त्रोंमें बताया गया है कि क्षमा सबसे बड़ा गुण है। क्षमा बहादुर आदमीकी शोभा देती है। परसों अेक विद्वान् मुसलमान दोस्त मुझसे मिलने आये थे। अुन्होंने मुझे कहा था कि क़ुरान भी यही सिखाता है। अगर कोअी आदमी बेगुनाहको मारता है, तो वह मानों सारी मनुष्य जातिको मारनेका पाप अपने सिर लेता है। अिस्लाम ख़ून, आग, लूट-पाट, ज़बरदस्ती धर्म बदलना, लड़कियोंको भगा ले जाना और अैसी तरहकी दूसरी बातोंका कभी समर्थन नहीं करता — वह अिनसे सख़्त नफ़रत करता है।"

गांधीजीने आगे कहा — "अगर आपको थप्पड़ लगानेवाले आदमीको आप माफ़ नहीं कर सकते, तो बदलेमें आप भी अुसे अेक थप्पड़ लगा दें। अिसे मैं समझ सकता हूँ। लेकिन अगर थप्पड़ मारनेवाला आदमी भाग जाता है और मार खानेवाली पार्टी अुसके रिश्तेदारों या अुसके मज़हबको माननेवाले लोगोंसे बदला चुकाती है, तो वह अिनसानियतके ख़िलाफ़ है।"

गांधीजीने अपनी तक़रीरको जारी रखते हुअे कहा — "अगर कोअी मेरी लड़कीको भगा ले जाय, तो क्या मैं भगानेवालेकी लड़कीको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या अुसके दोस्तकी लड़कीको भगा लूँ? यह तो बदनामीकी बात होगी। नोआखालीमें अैसे जो काम किये गये हैं, अुनकी मुसलमान दोस्तोंने भी बहुत निन्दा की है। लेकिन अगर जो कुछ मुझसे कहा गया है, वह सच हो, तो मैं बिहारके बारेमें क्या कहूँ? बिहारमें होनेवाली वारदातोंकी रिपोर्टें सुनकर मुझे बेहद रंज हुआ है। मैं बिहारियोंको अच्छी तरह जानता हूँ। ख़ूनके बदले ख़ूनकी पुकार जंगलीपन है। नोआखालीमें जो कुछ हुआ, अुसका बदला वे बिहारमें नहीं ले सकते। मुझसे कहा गया है कि कुछ अैसे मुसलमान, जो डरकर बिहारसे भाग रहे थे, बिहारी हिन्दुओंके ज़रिये मार डाले गये। यह सुनकर मुझे बड़ा सदमा पहुँचा है। क्या मैं अुम्मीद करूँ कि यह रिपोर्ट झूठ है? लोग कहते हैं कि महाभारतमें बदला लेनेकी बातकी हिमायत की गअी है। लेकिन मैं अुसके अिस अर्थको नहीं मानता। महाभारतकी सीख तो यह है कि तलवारकी जीत सच्ची जीत नहीं है। महाभारत यही सिखाता है कि पाण्डवोंकी जीत बेकार साबित हुअी।

"आपके बड़े वज़ीर शहीद साहबसे मेरी बातचीत हुअी है। बरसों पहले मैं अुनसे फरीदपुरमें मिला था। तब अुन्होंने अपने-आपको मेरा लड़का कहनेमें फ़ख़्र महसूस किया था। मैं जानता हूँ कि अपने बड़े वज़ीरके ख़िलाफ़ आपकी कअी शिकायतें हैं। लेकिन अुन्होंने मुझे अिस बातका यक़ीन दिलाया है कि वे शान्ति चाहते हैं। अपने हिन्दू दोस्तोंका प्यार खोकर अुन्हें बहुत अफ़सोस हुआ है। मैं अुनके दिलाये हुअे यक़ीन पर तब तक कोअी शक नहीं कर सकता, जब तक वह झूठ न साबित हो। यह यक़ीन दिलाकर आपके बड़े वज़ीरने अपनेको कसौटी पर चढ़ा दिया है। जीनेका सबसे अच्छा रास्ता यह है कि हम सारी दुनियाके साथ दोस्ताना बरताव रक्खें और समूची मनुष्य-जातिको अेक परिवारकी नाअीं समझें। जो अपने परिवारके लोगोंमें और दूसरोंमें फ़र्क़ करता है, वह अपने रिश्तेदारोंको ग़लत तालीम देता है, और बैर और अधर्मका रास्ता खोलता है।"

बिहारमें तूफ़ानकी गड़गड़ाहट

बिहारके तूफ़ानकी रिपोर्ट अख़बारोंमें पढ़ते ही गांधीजीने बंगालके बड़े वज़ीरकी मारफ़त पंडित जवाहरलाल नेहरूको अेक तार भेजा, जो अपने तीन साथियोंके साथ कलकत्तेसे पटनाके लिअे रवाना हो चुके थे। नेहरूजीने तारसे जवाब दिया कि "बिहारकी हालत बड़ी तंग और नाज़ुक है। लेकिन सरकार अुसे क़ाबूमें लानेकी भरसक कोशिश कर रही है। मैंने ख़ुद अपने साथी सरदार अब्दुर रब निश्तरके साथ बिहारमें ज़रूरतके मुताबिक़ ठहरना तय कर लिया है।" प्रार्थना-सभामें पढ़े जानेके लिअे लिखे गये अपने मौन-दिनके सन्देशमें गांधीजीने अिस पर टीका करते हुअे कहा —"कांग्रेस मुल्कके तमाम लोगोंकी संस्था है। मुस्लिम लीग हमारे मुसलमान भाअी-बहनोंकी जमात है। जिस जगह कांग्रेसकी हुकूमत है, वहाँ अगर कांग्रेसी लोग मुसलमानोंकी हिफ़ाज़त न कर सकें, तो कांग्रेसी प्रधानमंत्रीका होना न होना अेक-सा है। अिसी तरह अगर लीगी सूबेमें लीगी प्रधानमंत्री हिन्दुओंकी हिफ़ाज़त न कर सके, तो अुसके वहाँ रहनेसे फ़ायदा ही क्या है? अगर अुन दोनोंको अपने सूबोंके कम तादादवाले हिन्दुओं या मुसलमानोंको बचानेके लिअे फ़ौजकी मदद लेनी पड़े, तो अुसका मतलब यही हुआ कि संकटके वक़्त अुनमेंसे किसीका भी आम रिआयापर सच्चा क़ाबू नहीं रहता। अगर यही बात है, तो अुसका मतलब सिर्फ़ यह हुआ कि हम दोनों अंग्रेज़ोंको हिन्दुस्तानमें अपनी हुकूमत बनाये रखनेका न्योता देते हैं। यह अैसी बात है, जिसपर हम सबको गहराअीसे सोचना चाहिये।"

अुन्होंने आगे कहा —"आजकलके दंगोंका सारा क़सूर गुण्डोंके मत्थे मढ़कर हम अपने आपको साफ़-पाक मान लेते हैं। यह बुरी आदत है। हम हमेशा गुण्डोंको ही दोष देते हैं। लेकिन अुन्हें पैदा करने और बढ़ावा देनेकी सारी ज़िम्मेदारी हम पर है। अिसलिअे ... कहना ग़लत होगा कि आजके सारे दंगोंकी जड़ गुण्डे ही हैं।"

क्या आज़ादी नहीं चाहिये?

गांधीजीने अिस चेतावनीको दूसरे दिन ज़्यादा ज़ोर ... दोहराया —"हिन्दू पूछ सकते हैं कि क्या मुसलमानोंने ही पहले ... शुरू नहीं किया? लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप बदला लेनेके ... न पड़ें, बल्कि अपने ख़ुदके फ़र्ज़के बारेमें सोचें, और मज़... कहें कि चाहे जो हो, हम आपसमें कभी नहीं लड़ेंगे। मैं ... लोगोंसे कहना चाहता हूँ कि जो मुसलमान भाअी आज दिन ... मेरे साथ थे, अुन्होंने मुझे यक़ीन दिलाया है कि वे शांति ... हैं। वे सब ज़िम्मेदार आदमी हैं। अुन्होंने साफ़ कहा है ... आपसमें लड़नेसे पाकिस्तान नहीं मिल सकता। अगर आप ... आपसमें लड़ते रहे, तो आज़ादी जाने कहाँ गुम हो जायगी ... कोअी तीसरी ताक़त — चाहे वह अंग्रेज़ी हो या कोअी और ... हिन्दुस्तानमें मज़बूतीसे अपनी जड़ जमा लेगी। हिन्दुस्तान ... बहुत बड़ा देश है, और ख़निज पदार्थों, धातुओं और मसालों ... भरा-पूरा है। दुनियाकी अैसी कोअी चीज़ नहीं, जो हिन्दुस्तान... पैदा न होती हो। अगर आप लोग आपसमें लड़ते रहे, तो दुनिया... बड़ी ताक़तोंमेंसे किसीको भी हिन्दुस्तान आकर हिन्दुस्तानियों... बेवक़ूफ़ीसे अिस मुल्कको बचाने और साथ ही अिसकी बेशुमार क़ुदरती ... दौलतको अपने काममें लानेका लालच पैदा हुअे बिना न रहेगा।

"आप लोग आज़ादी चाहते हैं। आप अुस कांग्रेसके लिअे ... जिसने हिन्दुस्तानके लिअे अितना किया है, अपना सब कुछ क़ुरबान ... करनेके लिअे तैयार हैं। पिछले साठ बरसोंसे अूपरके अरसेमें कांग्रेसने ... जो कुछ किया है, क्या आप अुस सब पर पानी फेरना चाहते हैं? ... मैं आपसे कह चुका हूँ कि अगर आपमें अहिंसाके रास्ते पर चलनेकी ... बहादुरी नहीं है, तो आप घूँसेका जवाब घूँसेसे दे सकते हैं। लेकिन ... हिंसाके प्रयोगमें भी कोअी अेक नैतिक (अिख़लाक़ी) क़ायदा तो पालना ... ही होता है; नहीं तो हिंसाकी लपटें अपने जलानेवालोंको ही निगल ... जायँगी। अगर हम सबके सब बरबाद हो जायँ, तो मुझे अिसकी ... परवाह नहीं, मगर मैं हिन्दुस्तानकी आज़ादीको बरबाद होते नहीं ... देख सकता।

"अगर बिहारमें होनेवाली वारदातोंकी ख़बरें सच हैं, तो ... बहुत भयानक हैं। पंडित जवाहरलालने क़सूरवार लोगोंसे कहा है ... मरकज़ी सरकार अैसे जंगलीपनको कभी बरदाश्त नहीं करेगी, ... दबा देनेके लिअे वह हवाअी बमबारी तकका अिस्तेमाल करेगी। लेकिन ... यह तो अंग्रेज़ोंका तरीक़ा है। कांग्रेस जनताकी जमात है। जिन लोगोंकी ... वह नुमाअिन्दा है, क्या अुन्हींके ख़िलाफ़ वह परदेशी हुकूमतका ... विनाशकारी तरीक़ा अख़्तियार करेगी? फ़ौजकी मददसे दंगोंको दबाकर ... वे हिन्दुस्तानकी आज़ादीको ही दबायेंगे। लेकिन अगर कांग्रेस जनता ... अपना क़ाबू खो चुकी है, तो अुस हालतमें पंडितजी भी और क्या ... सकते हैं? सबसे अच्छा रास्ता तो यह है कि अगर जनता ... और अनुशासन या डिसिप्लिनकी परवाह नहीं करती, तो कांग्रेस... चाहिये कि वह अपने सरकारी ओहदोंसे स्तीफ़ा दे दे।

"जिस आदमीने हमको नुक़सान पहुँचाया है, अुसका म... माननेवालोंसे या अुसके रिश्तेदारोंसे बदला लेना बुज़दिली है। ... आप लोग अैसे काम करनेसे बाज़ नहीं आये, तो आपको आज़ादी... बात भूल जानी होगी।"

बिहारसे

जिस बुरी हालतमें हम आज हैं, अुसमें छोटी-छोटी सफलताओं... कामयाबियोंसे ही हमें सन्तोष करना पड़ता है। जब यह मालूम हुआ ... हिन्दुस्तानभरमें बक़्रीद शान्तिसे बीती, तो हरअेकने चैनकी ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन बिहारकी खबरने गांधीजीके दिलमें हलचल पैदा कर दी। हिन्दुस्तानमें मजमूअी सत्याग्रहका जन्म बिहारमें ही हुआ था। अिस तरह मेरा सियासी जीवन भी क़रीब-क़रीब बिहारसे ही शुरू हुआ। बिहारी जनताके लिअे मैंने जीतोड़ मेहनत की है, और जिससे मुझे अितनी मुहब्बत मिली है, व्रजकिशोर बाबू और राजेन्द्र बाबूका बिहार आज पागल हो अुठा है, और हिन्दुस्तानके पवित्र नाम पर धब्बा लगा रहा है। मैं हज़ार बार कह चुका हूँ कि हिन्दुस्तानके लोग पागल बन कर अंग्रेज़ों पर धावा बोल दें, तो मैं अुसे जीते जी नहीं देख सकता। फिर भला मैं अिस बातको अुन भोलेभाले मुसलमानोंके साथ होते हुअे कैसे देख सकता हूँ, जो आख़िरकार अिसी देशके रहनेवाले हैं, और हमारे अपने बन्द हैं।" अितवार ता० ८ नवम्बरको गांधीजीने राजकुमारी अमृतकुंवरको अेक ख़तमें लिखा था — "कलकत्ता आनेके बाद तन्दुरुस्तीके ख़यालसे मैंने खानेके साथ दूध लेना बन्द कर दिया था। बिहारमें होनेवाली वारदातोंकी वजहसे मुझे अिस चीज़को जारी रखना पड़ा, और अगर हालत अेकदम नहीं बदली, तो अब बिहार मुझे आमरण अुपवास करने पर मजबूर कर देगा। यह अुपवास कितने अरसे तक चलेगा, अिसके बारेमें मैं कुछ नहीं कह सकता। तुम घबड़ाना नहीं, बल्कि खुश होना कि मैं अिस अग्निपरीक्षामेंसे निकलने और अपने धर्म पर जमे रहनेकी ताक़त अपनेमें महसूस करता हूँ।

अुसी दिन पंडित जवाहरलालको अेक ख़तमें अुन्होंने लिखा — "बिहारकी ख़बरोंने मुझे बेचैन कर दिया है। मुझे अपना कर्त्तव्य साफ़ दिखाअी पड़ता है। अिस बातको मैं कैसे भूल सकता हूँ कि बिहारसे मेरा गहरा ताल्लुक़ है। जितना सुना जाता है, अुसका आधा भी सच हो, तो अुससे साफ़ मालूम होता है कि बिहार अिनसानियतको भूल गया है। अिस सबके लिअे गुण्डोंको बदनाम करना झूठ होगा। अगरचे अभी तक मैंने अुपवासको टालनेकी भरसक कोशिश की है, मगर अब मैं ज़्यादा दिनों तक अैसा नहीं कर सकता . . . । मेरी अंदरूनी आवाज़ (अंतरात्मा) मुझसे कहती है — 'तुम यह बेमतलबकी ख़ूनख़राबी देखनेके लिअे ज़िन्दा नहीं रह सकते। जो बात दिनकी तरह साफ़ है, जब लोग अुसे भी देखना नहीं चाहते, और तुम्हारे कहने पर कोअी ध्यान नहीं देते, तो क्या अिसका यह मतलब नहीं कि तुम्हारे दिन लद गये? यह दलील अुपवास करनेकी तरफ़ मुझे ज़बरन ढकेल रही है। अिसलिअे मैं अेक बयान (वक्तव्य) निकालना चाहता हूँ कि जब तक ये पागलों जैसे काम बन्द नहीं होंगे, तब तक मैं आमरण अुपवास करूँगा। वैसे कुछ दिनोंके लिअे बयानको शायद रोक देना पड़े। जब आपने अिसके बारेमें मुझे पहले पूछा था तो मैंने कहा था कि 'अिस वक़्त तो मेरा अैसा कोअी अिरादा नहीं है।' लेकिन अब वह बात नहीं रही। अगर आप दूसरी तरहसे सोचते हों, तो आप मुझसे दलील करके मुझे समझानेकी कोशिश कर सकते हैं। जो कुछ आप कहेंगे, मुझे वह मंज़ूर होगा। मगर आप मेरा स्वभाव जानते हैं; अिसलिअे मुझे यक़ीन है कि आप मेरा यह प्रस्ताव मान लेंगे। चाहे जो हो, मेरे मर जानेकी संभावनाका ज़रा भी ख़याल किअे बिना आप अपना काम करते रहें और मुझे अीश्वरकी दया पर छोड़ दें।" अिस ख़तकी अेक नकल सरदार वल्लभभाअी पटेलको भी भेजी गअी थी; लेकिन न तो पंडित जवाहरलालने और न सरदार पटेलने ही गांधीजीको अुपवास करनेसे रोकनेकी कोशिश की। धरम पर मर मिटनेके अिस अिरादेकी अहमियतको वे अच्छी तरह समझते थे। अिसकी क़ीमत हिन्दुस्तानकी आज़ादीसे किसी क़दर कम नहीं थी। पंडित जवाहरलालने पटनासे गांधीजीको टेलीफोन पर कहा — "फ़िलहाल आपके बिहार पहुँचनेकी ज़रूरत नहीं है। मैं खुद दिल्लीके बजाय बिहारमें रहना चाहता हूँ, और जब तक ज़रूरत होगी मैं यहीं रहूँगा।" तारीख़ छह नवम्बरको सवेरे नोआखाली रवाना होनेके थोड़ी देर पहले, गांधीजीने वह बयान प्रेसमें दे दिया, जिसका अिशारा पंडित नेहरूको लिखे ख़तमें किया गया था। वह बयान अख़बारोंमें छप चुका है।

चौमुहानी, ८-११-'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

अनाज, अींधन और तेल

अनाज, घी-तेल और जलाअू लकड़ी ये तीन चीज़ें गाँवोंकी ज़िन्दगीके लिअे आधार रूप हैं। आज तो वहाँ तीनों चीज़ोंकी कमी है। अेक दोस्तने अिस तिहरी कमीको दूर करनेके नीचे लिखे सुझाव भेजे हैं। ये सुझाव पंजाबकी-सी हालतवाले हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंको भी समानरूपसे लागू होते हैं, हालाँकि वे ख़ासकर पंजाबके लिअे ही सुझाये गये हैं।

(१) नदियों और नालोंके दोनों किनारोंकी बहुत-सी ज़मीन सेवार और सरकटकी जंगली घाससे ही ढँकी रहती है। अगर अुसे फ़ौजियोंकी मददसे साफ़ करवाया जा सके, तो अुसमें गेहूँ, बाजरा, चना और मसूर पैदा की जा सकती है। यह ज़मीन बड़ी अुपजाअू होती है। अुसमें बड़ी मिक़दारमें अनाज पैदा हो सकता है, और मवेशियोंके लिअे ख़ूब चारा भी मिल सकता है।

(२) अिसी तरह रेलवे लाअिनों और सड़कोंके दोनों तरफ़ बहुतसी बिना जोती ज़मीन पड़ी रहती है। अगर फ़ौजी विभाग अिस ज़मीनको साफ़ करके अुसे पानी देनेका काम ख़ुद हाथमें ले, या पम्प और तेलसे चलनेवाली भारी मशीनें, जिनका अिस तरहका अिस्तेमाल किया जा सकता है, आबपाशीके लिअे लोगोंको दे दे, तो वे अिस अूसर धरतीको सुधारकर अुसपर खेती करने लगें।

(३) पंजाबमें ज़मीनके अैसे कअी सूखे हिस्से हैं, जहाँ आज सिर्फ़ कँटीले झाड़-झंखाड़ खड़े हैं। थोड़ी मेहनतसे अुन्हें साफ़ किया जा सकता है, और वहाँ रेंडीके पेड़ लगाये जा सकते हैं। यह बड़ा दमदार पौधा होता है, और ज़्यादातर हवासे ही नमी लेकर टिका रह सकता है। रेंडीका तेल साबुन बनानेका सबसे अुम्दा ज़रिया है। अिससे आज साबुन बनानेमें सरसों, मूँगफली, जिंजेली और दूसरे खाने लायक़ तेलोंकी जो खपत होती है, वह भी बन्द हो सकती है।

(४) जलाअू लकड़ीकी कमीकी वजहसे, गाँवोंमें गोबर और खलिहानोंकी दूसरी खाद जलानेके काममें अिस्तेमाल की जाती है। अिस तरह खाद न मिलनेसे ज़मीनका अुपजाअूपन दिन-दिन घटता जाता है। अिसलिअे सड़कोंकी दोनों तरफ़ और नहरके किनारों पर अैसे पेड़ लगानेकी बाक़ायदा कोशिश की जानी चाहिये, जो लोगोंको जलाअू और अिमारती लकड़ी मुहैया करनेके काम आ सकें।

अुनके दूसरे सुझावोंमें नहरोंके दोनों तरफ़ अींट और सीमेन्टकी क्यारियाँ बना देनेका भी सुझाव है, जिससे अुस हज़ारों अेकड़ ज़मीनको फिरसे काममें लिया जा सके, जो लगातार पानीके भरे रहनेसे और सीलसे पैदा होनेवाले ज़रूरतसे ज़्यादा खारीपनसे अपना अुपजाअूपन खो बैठी है। अुन्होंने यह भी सुझाया है कि ज़मीनके छोटे-छोटे टुकड़े करनेकी बुराअी रोकी जाय। अिससे अनाजकी पैदावार घटती है। अुनका यह भी कहना है कि ज़मीनके जिन टुकड़ोंमें खेती करनेसे कोअी माली फ़ायदा न हो, अुन्हें मिलाकर अेक कर देना चाहिये। अख़ीरमें अुन्होंने बताया है कि खेतोंको पानी देनेके लिअे मशीनोंका अिस्तेमाल किया जाना चाहिये।

सोदपुर, ३०-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

१७ नवम्बर १९४६

श्रद्धाको चुनौती

[अमेरिकाकी 'अेसोशियेटेड प्रेस' नामकी ख़बरें भेजनेवाली संस्थाके संवाददाताने ता० ६-११-'४६के दिन जो सवाल पूछे थे, और गांधीजीने अुनके जो जवाब दिये थे, वे नीचे दिये जाते हैं। —प्यारेलाल]

स० १—सन् १९४२की अशान्ति, आज़ाद हिन्द फ़ौजकी कार्रवाअी, और अुससे ताल्लुक़ रखनेवाली अशान्ति, हिन्दुस्तानके शाही नौकादलके खलासियोंकी बग़ावत, कलकत्ता और बम्बअीके दंगे, काश्मीर-जैसी देशी रियासतोंमें होनेवाली हलचलें, और हालके क़ौमी दंगे — हिन्दुस्तानके अितिहासमें अभी-अभी ये जो घटनायें घट गअीं, अुनसे पता चलता है कि हिन्दुस्तानके समाजमें अहिंसाने अभी अपनी जड़ नहीं जमाअी है। तो क्या अिन सब बातोंको देखते हुअे यह नहीं कहा जा सकता कि आपका अहिंसा-धर्म नाकाम साबित हुआ है?

ज०—अैसे किसी आम नतीजे पर पहुँचना बहुत ख़तरनाक है। आपने जिन-जिनका ज़िक्र किया है, वे सब ज़रूर ही हिंसाके काम कहे जा सकते हैं, लेकिन अुससे यह हरगिज़ नहीं कहा जा सकता कि अहिंसा-धर्म नाकाम साबित हुआ है। ज़्यादा-सेज़्यादा आप यह कह सकते हैं कि आम लोगोंकी मजमूअी ज़हनियतको बदलनेके लिअे काम करनेके जिस तरीक़ेकी ज़रूरत है, वह तरीक़ा मुझे अभी मिला नहीं है, या अुसे मैं अभी तक खोज नहीं सका हूँ। लेकिन मेरा दावा यह है कि हिन्दुस्तानके सात लाख गाँवोंमें रहनेवाले करोड़ों लोग अुस हिंसामें शरीक नहीं हुअे हैं, जिसका ज़िक्र आपने किया है। हिन्दुस्तानी समाजके जीवनमें अहिंसाकी भावनाने जड़ जमाअी है या नहीं, यह सवाल अभी खड़ा ही है, और अिसका ठीक-ठीक जवाब तो मेरी मौतके बाद ही दिया जा सकता है।

स० २—अपनी प्रकृतिमें बहादुरोंकी अहिंसाको सिद्ध करनेके लिअे आदमी अपने रोज़-रोज़के जीवनमें क्या करे? यानी वह कम-से-कम किस तरहके कामोंको, किस कार्यक्रमको अपनाये?

ज०—अपने जीवनमें बहादुरोंकी अहिंसाका विकास करनेकी ख़ाहिश रखनेवाले आदमीको सबसे पहले अपने मनसे या विचारोंसे कम-से-कम बुज़दिलीका मैल धो डालना चाहिये, और अिस तरह साफ़ बने हुअे विचार या दिमाग़के पीछे चलकर अपना हरअेक छोटा या बड़ा काम करना चाहिये। मसलन्, अहिंसाकी साधना करनेवाला अपने बड़े अफ़सरकी धाकसे दब नहीं जायगा, और न अुस पर ग़ुस्सा ही होगा। साथ ही, वह अपनी ज़्यादा-से-ज़्यादा आमदनीवाली जगहको छोड़नेके लिअे भी तैयार रहेगा। अपना सब कुछ छोड़ देने पर भी अहिंसाके साधकके दिलमें अपने सेठ या नौकरी देनेवालेके लिअे चिढ़ या ग़ुस्सा न हो, तो कहा जायगा कि अुसमें बहादुरोंकी अहिंसा प्रकट हुअी है। दूसरी मिसाल लीजिये। फ़र्ज़ कीजिये कि हमारे साथ सफ़र करनेवाला कोअी मुसाफ़िर मेरे लड़के पर हमला करनेकी धमकी देता है, और मेरे अुसे समझानेकी कोशिश करने पर वह मुझ ही पर अुलट पड़ता है। अगर अैसे समय में अुसका तमाचा अपनी शान और भलमनसाहतके साथ बरदाश्त कर लूँ, और मनमें अुसके लिअे कोअी बुरा ख़याल न रक्खूँ, तो कहा जायगा कि मैंने बहादुरोंकी अहिंसासे काम लिया। ये बातें हर आदमीकी ज़िन्दगीमें रोज़-रोज़ होती रहती हैं, और अैसी दूसरी कअी मिसालें आसानीसे दी जा सकती हैं। अिस तरहके हर मौक़े पर मैं अपने मिज़ाज पर क़ाबू रखनेमें सफल होअूँ, और अुल… घूँसा या तमाचा मारनेकी ताक़त होने पर भी चुप रह जाअूँ, … मुझमें बहादुरोंकी अहिंसाका विकास हो, वह मुझे कभी दग़ा न … और कट्टर-से-कट्टर विरोधियोंको भी अुस अहिंसाकी दाद देनी पड़ जा…

(अंग्रेज़ीसे)

मध्यप्रान्तका आबकारी महकमा

बाहरी भट्ठियोंमें शराब तैयार करने और अुसे बाँटनेके तरीक़े… बारेमें यह कहा जा सकता है कि सरकार अुन लायसेन्सशुदा लोगों… ज़रिये शराब तैयार करवाती है, जो ख़ुद अुसके फुटकर बेचने… भी होते हैं। मामूली वक़्त और मामूली हालतमें आम … अिस्तेमालकी शराब सूबेकी मरकज़ी जगहोंमें बनी हुअी अेक, … या तीन मरकज़ी डिस्टिलरियोंमें ही तैयार की जाती है। … बाहरी भट्ठियोंमें शराब बनानेका तरीक़ा अख़्तियार किया गया … तबसे अलग-अलग ज़िलोंमें अैसी सैकड़ों छोटी-छोटी डिस्टिलरियाँ क़ा… हो गअी हैं। वहाँ पाबन्दियाँ भी कम होती हैं, और साथ … वहाँ तैयार की हुअी शराब डिस्टिलरीकी शराबसे काफ़ी सस्ती … होती है।

यहाँ यह कहनेकी ज़रूरत नहीं कि अिस 'आअुटस्टिल सिस्टम' … मातहत शराबकी पैदावार और खपत मामूली खपतसे कअी गु… ज़्यादा बढ़ गअी है। अिसके दो सबब हैं—

(१) सूबेकी दो या तीन बड़ी डिस्टिलरियोंके मुक़ाबले … १९४६में अिन छोटी-छोटी डिस्टिलरियोंकी तादाद क़रीब ५०० त… पहुँच गअी है। (२) आअुटस्टिल सिस्टमकी दुकानोंमें बिकनेवा… शराब डिस्टिलरीकी शराबसे सस्ती होती है। मैं ठीक तरहसे … नहीं बता सकता कि वह कितनी सस्ती होती है, लेकिन मामू… तौर पर यह कहा जा सकता है कि बाहरी भट्ठियोंमें तैयार की हुअी शराबकी क़ीमत डिस्टिलरीकी शराबकी क़ीमतकी अेक चौथाअी … अुसके आसपास होती है। अिस तरह यह कहनेकी ज़रूरत नहीं … जाती कि अिन दो कारणोंसे शराबकी खपत बहुत ही ज़्यादा ब… जाती है।

बदक़िस्मतीसे ये भट्ठियाँ अुन हिस्सोंमें क़ायम की गअी हैं जहाँ गोंड, कोरकू, परधान वग़ैरा आदिवासी लोग बसे हुअे हैं। दूसरे किसी ज़िलेमें वे नहीं बनाअी गअी हैं।

मैं नीचे अुन ज़िलोंकी यादी और हरअेकमें क़ायम की ग… भट्ठियोंकी तादाद (१९४६) देता हूँ। अिससे यह अच्छी त… साबित हो जाता है कि अिस कामके लिअे जो छह ज़िले चुने … हैं, अुनमें आदिवासियोंकी ही बस्ती ज़्यादा है।

ज़िले	भट्ठियाँ
चाँदा	८१
मण्डला	१७५
रायपुर	४५
बिलासपुर	८९
द्रुग	४९
बालाघाट	३९
भण्डारा	५
कुल	४८३

सन् १९३९में सूबेमें अिन भट्ठियोंकी तादाद १५९ थी। … सम्बन्धकी पॉलिसीमें हुअे किसी फेरफारकी वजहसे, शायद … फेरफार १९३७-३९की पहली कांग्रेस वज़ारतने किया हो, … १९४०में यह तादाद घटकर सिर्फ़ ६९ रह गअी थी। सन् १९४… भी यह तादाद वैसी ही बनी रही। अिसके बाद, लड़ाअीकी व…

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और शायद आबकारी महकमेकी नीतिमें फेरफार होनेसे यह हालत अेकदम बदली, जिससे ज़्यादा नुक़सान हुआ। सन् १९४१की ६९की तादाद बढ़कर १९४५में ४८६ तक पहुँच गअी, यानी सात गुनी बढ़ गअी। १९४६ में भट्ठियोंकी तादाद ४८३ है।

मैं नीचे सालवार आँकड़े देता हूँ —

१९३९	१५९
१९४०	६९
१९४१	६९
१९४२	२०७
१९४३	२४८
१९४४	४५७
१९४५	४८६
१९४६	४८३

अिसमें कोअी शक नहीं कि मुल्कमें काग़ज़ी पैसेका चलन अनाप-शनाप बढ़ जानेसे सूबेके गाँवोंमें भी .खूब पैसा आया, और अिसलिअे शराब भी ज़्यादा मिक़दारमें मुहैया की गअी। ख़ासकर आदिवासी हलक़ोंमें, जो पिछड़े हुअे हलक़ोंका दूसरा नाम है, ज़्यादा मिक़दारमें पहुँचाअी गअी शराब लोगों की माँगको और ज़्यादा बढ़ा देती है। शराबख़ोरीसे, और बढ़ी हुअी मिक़दारमें मिलनेवाली शराबसे सूबेके ३० लाख आदिवासियोंको सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुँचता है। डिस्टिलरीकी शराबको गाँवों तक पहुँचानेके ज़रियोंकी कमीका बहाना करके सरकार बतौर अपनी पॉलिसीके अिन पिछड़ी हुअी जातियोंके प्रदेशमें हज़ारों-लाखों गैलन सस्ती शराब पहुँचा रही है।

ज़िलोंकी भट्ठियोंमें तैयार की गअी शराब और ताड़ीकी बहुत बढ़ी हुअी खपतकी वजहसे आवकारी खातेकी आमदनीमें जो बढ़ती हुअी है, अुसकी तफ़सील मैंने यहाँ नहीं दी है। लेकिन मैं तीन ख़ास बरसोंकी आमदनीके आँकड़े नीचे देता हूँ।

१९३९	रु०	३३,७६,५१६
१९४५	,,	१,६४,१७,६५३
१९४६	,,	१,०८,८९,४७९

(सिर्फ़ पहले छह महीनोंमें)

अिससे यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि १९४५में सिर्फ़ देशी भट्ठियोंमें तैयार की गअी शराब और ताड़ीकी बिक्रीसे आबकारी महकमेकी आमदनी १९३९से १९४५ तकके ६ सालमें पाँच गुनी बढ़ गअी थी। १९४६के पहले छह महीनोंकी आमदनी १ करोड़ ९ लाख रुपयोंके क़रीब हुअी है। अिस तरह यह अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि १९४६के पूरे सालमें सिर्फ़ गाँवोंमें तैयार की गअी शराब और ताड़ीसे होनेवाली आमदनी २ करोड़से कम नहीं होगी, या दूसरे लफ़्ज़ोंमें १९३९की आमदनीकी छह गुनी हो जायगी। बड़े अफ़सोसकी बात यह है कि महकमे आबकारीकी यह सारी बढ़ी हुअी आमदनी प्रजाके अुस सबसे ज़्यादा ग़रीब तबक़ेसे यानी आदिवासियोंसे हुअी है, जो सूबेकी कुल आबादीके पाँचवें हिस्सेके क़रीब हैं।

अमृतलाल वि० ठक्कर

[आमदनी बढ़ानेके लिअे हुकूमतका यह अेक बदनामीभरा अिस्तेमाल है। हम अुम्मीद करें कि चूँकि दूसरे सूबोंकी तरह अब सी० पी०में भी लोगोंकी नुमाअिन्दा सरकार राज कर रही है, यह बुराअी मिटा दी जायगी।

कलकत्ता जाते हुअे रेलमें, २९-१०-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

मो० क० गांधी]

अेक दोस्ताना प्रस्ताव

अेक अच्छी हैसियत और असरवाले ब्रिटिश रोज़ाना अख़बारके डाअिरेक्टर नअी दिल्लीमें गांधीजीसे मिलने आये थे। अुन्होंने गांधीजीसे कहा — "मेरा अख़बार हिन्दुस्तानके साथ दोस्ताना रुख रखनेको अुत्सुक है।" गांधीजीने अुनसे कहा — "आज हम हक़ीक़तोंको दबाने और झूठी बातें गढ़ लेनेकी दोहरी बुराअीके शिकार बने हुअे हैं।" अख़बारके डाअिरेक्टरने कहा — "दंगोंकी ख़बरों पर ज़ोर देनेसे कोअी फ़ायदा नहीं होता। मेरा अख़बार अैसा नहीं करता।" लेकिन गांधीजीने अुनसे कहा — "मौजूदा हक़ीक़तोंको छिपानेके बजाय अुन्हें, बिना किसी पूर्वग्रहके, सचाअीके साथ छापकर ही आप अपने अख़बारके साथ हिन्दुस्तानकी भी सच्ची सेवा कर सकते हैं। न्यायपूर्ण ध्येयको सत्यसे कभी धक्का नहीं पहुँचता।"

मौजूदा अशान्ति कब ख़त्म होगी, अिस मतलबके अेक दूसरे सवालके जवाबमें गांधीजीने कहा — "यह ख़त्म होनी ही चाहिये, हालाँकि अभी अिसके कम होनेके कोअी चिन्ह मुझे दिखाअी नहीं देते। कुछ स्वार्थी लोग दंगे कराते रहते हैं।"

गांधीजीने आगे कहा — "आज अैसा कहनेवाला मैं अकेला ही क्यों न होअूँ, फिर भी मैं ज़ोर देकर यह कहता हूँ कि जब तक ब्रिटिश फ़ौजें हिन्दुस्तानमें बनी रहेंगी, तब तक हिन्दू और मुसलमान दोनों मददके लिअे अुनके पास दौड़ते रहेंगे, और मौजूदा अशान्ति जारी रहेगी। आज़ादीके लिअे लड़नेवाले मुल्कके लिअे अिससे बुरा और क्या हो सकता है?"

ब्रिटिश फ़ौजें हटा ली जायँ

गांधीजीकी अिस बातसे अुन दोस्तकी ब्रिटिश भावनाको ज़ोरका धक्का लगा। अुन्होंने पूछा — "हरकोअी अंग्रेज़ यही चाहेगा कि अंग्रेज़ी फ़ौजें जल्दी-से-जल्दी हिन्दुस्तानसे चली जायँ। अिसमें रुकावट कौन डालता है?"

गांधीजीने जवाब दिया — "ख़ुद अंग्रेज़ ही, दूसरे कौन? हाँ, अगर आप सचमुच यह साबित कर दें कि ब्रिटिश फ़ौजोंको अेकदम हिन्दुस्तानसे हटाना मुमकिन नहीं है, तो बात दूसरी है।"

अिसके जवाबमें थोड़ी दलील करनेके बाद अुन दोस्तने यह क़बूल किया कि हिन्दुस्तानमें स्थापित ब्रिटिश व्यापारी और दूसरे हितों और अुनके पीछे पलनेवालोंकी वजहसे ही ब्रिटिश फ़ौजें यहाँसे नहीं हटाअी जातीं। वे ही अिसमें रुकावट डाल रहे हैं। फिर भी अुनका यह ख़याल था कि हिन्दुस्तानमें अमन और व्यवस्था क़ायम रखनेके लिअे ब्रिटिश फ़ौजोंका होना ज़रूरी है। "आप कहते हैं कि जब तक ब्रिटिश फ़ौजें यहाँ रहेंगी, तब तक देशमें शान्ति क़ायम नहीं हो सकती। फिर भी शान्ति क़ायम करनेके लिअे अुनकी माँग रोज़-ब-रोज़ बढ़ती ही जा रही है। लोग तो अुलटे यह शिकायत करते हैं कि ब्रिटिश फ़ौजोंका पूरा-पूरा अिस्तेमाल नहीं किया जाता।"

गांधीजीने कहा — "अिसीलिअे तो वे यहाँसे हटा ली जानी चाहियें। मेरी रायमें यहाँ अुनकी मौजूदगी अशांतिको रोकनेका काम नहीं करती, बल्कि सज़ा देनेका काम करती है। अशान्ति पैदा हो जानेके बाद ही हर जगह अमन और क़ानूनकी हिफ़ाज़तके लिअे अुनका अिस्तेमाल किया जाता है। आगे आनेवाले अितिहासकार अिसे साबित करेंगे। पूरबी बंगालमें भी व्यवस्था क़ायम तो होगी, लेकिन कितनी .ख़ूँरेज़ी, और कितनी-कितनी मुसीबतोंके बाद?"

गांधीजीने आगे चलकर कहा — "हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश फ़ौजें हिन्दुस्तानकी हिफ़ाज़त करनेके लिअे नहीं, बल्कि अुस पर ज़बरदस्ती लादे गये ब्रिटिश हितोंकी हिफ़ाज़तके लिअे हैं। और अब अुन्होंने यहाँ अपनी जड़ें अितनी मज़बूत जमा ली हैं कि .ख़ुद ब्रिटिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार भी अुन्हें हिला नहीं सकती । अिसके खिलाफ़ कितना ही दावा क्यों न किया जाय, असलियत यह है कि ब्रिटिश लोग यहाँ न तो परोपकार करने आये थे, न आज परोपकारके लिअे यहाँ टिके हुअे हैं, और न अुनकी फ़ौजें ही अैसे किसी अिरादेसे यहाँ रक्खी गअी हैं ।"

जंगका ख़ात्मा कैसे हो ?

अिसके बाद जंगके सवाल पर बातचीत शुरू हुअी । अुन दोस्तने पूछा — "अभी हमारे देखते-देखते जो जंग खेला गया, वैसे बार-बार छिड़नेवाले जंग किस तरह रोके जायँ ?"

गांधीजीने कहा — "जब तक बड़े-बड़े मुल्क छोटे मुल्कोंका शोषण करनेकी ख़ाहिश नहीं छोड़ते, और हिंसाकी अुस भावनाको तर्क नहीं करते, जो कुदरती तौर पर जंगकी शकलमें जाहिर होती है, और अेटमबम जिसका लाज़िमी नतीजा है, तब तक दुनियामें शान्ति क़ायम होनेकी अुम्मीद करना फ़जूल है । मुझे अिसमें जरा भी शक नहीं । पिछली लड़ाअीके दिनोंमें मैंने दुनियाके सामने अपनी बात रखनेकी कोशिश की थी, और ब्रिटिश रिआयाके, हिटलरके और जापानियोंके नाम खत लिखे थे । लेकिन मेरी अुस मेहनतके बदलेमें मुझे पाँचवीं क़तारका आदमी कहा गया था ।"

पत्रकार दोस्तने कहा — "लेकिन अहिंसाके पुरअसर होनेमें देर लगती है । अगर पच्छिममें दूसरा मोरचा न खोला जाता, तो आज रूसका नाम-निशान भी न रहता ।"

गांधीजीने जवाब दिया — "ये सब तो दिमाग़ी दलीलें हैं । मैं अिस तरीक़ेसे नहीं सोच सकता । वरना मुझे अपनी श्रद्धासे अिनकार करना होगा । मुझे कअी कड़ुअे अनुभव हुअे हैं, और तिस पर भी मेरी यह श्रद्धा पहलेसे कहीं ज़्यादा प्रखर बनी है । अितिहासके पन्नोंमें अैसे कअी चमत्कार भरे पड़े हैं, जब आम लोगोंने अपने पुराने ख़यालोंको तर्क करके बात-की-बातमें नये ख़याल अपना लिये हैं । दक्खिन अफ्रीकाके बोअरोंकी लड़ाअीको ही लीजिये । अिस लड़ाअीने अंग्रेज़ी भाषाको 'मैफ़किंग' शब्द दिया है । 'मेफकिंग दिन' मनानेके मौक़े पर अिंग्लैण्डके लोग अफ्रीकाके बोअर लोगोंसे बदला लेनेके लिअे पागल हो अुठे थे; मगर दो सालके अन्दर ही सारी ब्रिटिश रिआयाका मन बिलकुल बदल गया । श्री हेनरी-कैम्पबेल-बैनरमैन वज़ीरे-आज़म बने, और लड़ाअीमें जीती हुअी क़रीब-क़रीब सारी चीज़ें बोअर लोगोंको वापस कर दी गअीं । हाल ही अिंग्लैण्डके चुनावमें मजदूर दलकी जीत अिसकी दूसरी मिसाल है । कल तक ब्रिटिश-लोग जिसकी अेक बात भी नहीं टालते थे, और जिसकी बातोंको बड़े अदबसे सुनते थे, वही चर्चिल अपनी अितनी लच्छेदार बातों और अितनी जोरदार ताक़तके बावजूद आज ब्रिटिश-रिआयाका पूज्य व प्यारा नहीं रह गया । मेरे लिअे यह काफ़ी बड़ा चमत्कार है । ये सारी मिसालें, मेरे जैसे श्रद्धालु आदमीकी श्रद्धाको टिकाये रखनेके लिये काफ़ी हैं । वह श्रद्धा यह है कि जब दूसरी सारी ताक़तें मिट जायँगी, तब भी अेक ताक़त क़ायम रहेगी । अुस ताक़तको चाहे अीश्वर कहिये, कुदरत कह लीजिये, या जो चाहे नाम दे दीजिये ।" गांधीजीने अपनी अिस श्रद्धाकी तुलना अीशुके अुन चेलोंकी श्रद्धासे की जिनका विश्वास था कि अीशु दूसरी बार अवतार लेंगे । अीशुका दूसरा अवतार अिन चेलोंके जीते जी ही होनेवाला था । अगरचे अिस बातको दो हज़ार बरस बीत चुके हैं, फिर भी आज वह दूरके सपने जैसी बनी हुअी है । श्रद्धा दूसरे तरीक़ेसे सोच ही नहीं सकती ।

सोदपुर, ३०-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

मौक़ेकी मुलाक़ात

२१ अक्तूबर, १९४६को गांधीजीने नअी दिल्लीकी भंगीबस्तीमें मि० प्रेस्टन ग्रोवरको अेक मुलाक़ात दी थी । अमेरिकाकी 'अेसोशियेटेड प्रेस' नामकी ख़बर भेजनेवाली संस्थाने अिस मुलाक़ातका जो बयान छपवाया है, वह नीचे दिया जाता है —

पूरबी बंगाल

आजकी मुलाक़ातमें गांधीजीने कहा कि पूरबी बंगालके जिन दंगों और अुपद्रवोंकी वजहसे हज़ारों लोगोंको अपने घर-बार छोड़कर भाग जाना पड़ा है, और बे-अंदाज़ लोगोंको या तो मार डाला गया है या भगाया गया है, अुन्हें दबा देनेकी ताक़त बंगालकी मुस्लिम लीगी वज़ारतमें होनी चाहिये ।

बंगालकी जिस वज़ारतके मुखिया जनाब सुहरावर्दी-जैसे मुस्लिम लीगी हैं, अुसका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने कहा — "अिसका दार-मदार वज़ारत पर है । अगर मुस्लिम लीग अिन अुपद्रवों या तूफ़ानोंको दबा देना चाहे, तो मेरा ख़याल है कि वह वैसा कर सकती है ।" अुन्होंने याद दिलाअी कि "बंगालके ज़्यादातर मुसलमान वोटर मुस्लिम लीगके साथ हैं ।"

अुन्होंने बंगालके अुपद्रवोंको 'हृदय-विदारक' कहा ।

भंगी-बस्तीवाले अपने छोटे-से कमरेमें बैठकर अुन्होंने बंगालमें भड़की हुअी लूट-मार और आगके तूफ़ानों पर अपनी राय जाहिर की । पिछले मार्च महीनेमें जब ब्रिटिश सरकारके तीन नुमाअिन्दोंका दल यहाँ आया था, तबसे वे ज़्यादातर अिसी जगह रहते हैं । गांधीजी चटाअी पर बैठे थे, और अुनके सामने अेक छोटा-सा डेस्क पड़ा हुआ था । मैं फ़र्श पर बैठा था । अिस तरह बैठकर अुन्होंने अमेरिका, हिन्दुस्तानकी नअी सरकार, दक्षिण अफ्रीका और अपनी तन्दुरुस्ती सहित कअी बातोंकी चर्चा की ।

अुन्होंने अेक बार फिर अपना यह अिरादा जाहिर किया कि २३ अक्तूबरके दिन पण्डित नेहरूसे मिलने और कार-बारी कमेटीकी बैठकमें हाज़िर रहनेके बाद वे पूरबी बंगालके दंगोंवाले हलक़ोंका दौरा करेंगे । हिन्दुस्तानकी आरज़ी सरकारमें मुस्लिम लीगके शामिल होनेसे जो सवाल पैदा हुअे हैं, अुनके बारेमें अुन्हें कांग्रेसकी कार-बारी कमेटीके साथ चर्चा करनी थी ।

अुन्होंने कहा — "वहाँ जानेसे मेरे दिलको तसल्ली होगी, और मुमकिन है कि वहाँ मेरी हाज़िरीकी वजहसे कुछ काम भी हो जाय ।"

"क्या मुसलमान आपकी बात सुनेंगे ?"

अुन्होंने कहा — "सो तो भगवान् जाने । मैं वहाँ कोअी अुम्मीद लेकर नहीं जाता, मगर मुझे अैसी अुम्मीद रखनेका हक़ है । जो आदमी अपना फ़र्ज़ अदा करने जाता है, वह तो यही अुम्मीद रखता है कि भगवान् अुसे अुसका फ़र्ज़ अदा करनेके लिअे ज़रूरी ताक़त दे ।"

"हिन्दुस्तानमें अिस तरहके ये दंगे कब बन्द होंगे ?" अिस सवालके जवाबमें अुन्होंने कहा —

"आप यक़ीन रखिये कि ये ज़रूर ही बन्द होंगे । अगर ब्रिटिश यहाँसे अपना असर और वसीला हटा लें, तो ये बात-की-बातमें बन्द हो जायँ । मुझे अफ़सोसके साथ यह क़बूल करना पड़ता है कि जब तक ब्रिटिश हुकूमत यहाँ है, तब तक दोनों दल मददके लिअे अुसकी तरफ़ ताकते हैं ।"

नअी आरज़ी सरकार

आरज़ी सरकारका ज़िक्र करते हुअे महात्मा गांधीने मुस्लिम-लीगकी तरफ़से मरकज़ी सरकारमें शामिल होनेवाले राजा गज़नफ़रअली-ख़ानके बयान पर अपना अफ़सोस जाहिर किया । पाकिस्तानकी लड़ाअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नेके लिअे मुस्लिम लीग मरकज़ी सरकारमें शामिल हो रही है, अिस मतलबके अुनके बयानका ज़िक्र करते हुअे गांधीजीने कहा —

"यह अेक ग़ैरमामूली और बे-मेल रुख है। आरज़ी सरकार ...बीचके वक़्तके लिअे ही है, और कुछ ही समय तक रहनेवाली है। अपनी हुकूमतके दरमियान अुसे अकाल और भुखमरी, कपड़ेकी तंगी, बीमारी और महामारी, आमद-रफ़्त व मेल-मुलाक़ातके ज़रियोंकी कमी, घूस और रिश्वतख़ोरी, जहालत वग़ैराकी शकलमें मुल्कके सामने खड़े ...अैसे सवालोंका हल ढूँढ़ निकालना है। अिनमेंसे किसी अेक सवालको हल करनेका काम अितना मुश्किल है कि वह मुल्कके आलादिमाग़ ...लोगोंको हँफा सकता है। अिन मामलोंमें हिन्दू या मुसलमानका सवाल पैदा ही नहीं होता। दोनों भूखसे परेशान हैं। कपड़ेकी तंगीकी वजहसे दोनोंको नंगा रहना पड़ता है। दोनों चाहते हैं कि मुल्कसे जहालतके शैतानको भगाया जाय और हिन्दुस्तानकी प्रकृतिके ख़िलाफ़ जो तालीम यहाँ दी जाती है, वह ख़त्म कर दी जाय।

"मौजूदा सरकार और लोगोंकी नुमाअिन्दा सभा द्वारा क़ायमकी जानेवाली सरकारके बीच ज़्यादा वक़्त नहीं बीतेगा। अगर दोनों दल लोकप्रतिनिधि-सभाका काम करनेमें जुट जायँ, तो यह बीचका वक़्त और भी कम हो जायगा।

"'स्टेटपेपर' यानी सरकारी दस्तावेज़के आधार पर लोकप्रतिनिधि सभा बननेवाली है। अुस दस्तावेज़में पाकिस्तानकी बात रद्द कर दी गअी है। अुसमें सूबोंके 'ग्रूप' या गिरोहकी स्कीम सुझाअी गअी है। 'ग्रूप'का मतलब कांग्रेस अेक तरहसे करती है और मुस्लिम लीग दूसरी तरहसे। ब्रिटिश सरकारका कैबिनेट मिशन अुसका तीसरा ही अर्थ करता है। कोअी भी क़ानून बनानेवाला अपने बनाये क़ानूनका अधिकारपूर्ण अर्थ नहीं कर सकता। जब अुसके मतलबके बारेमें मतभेद पैदा हो, तो वाजिब तरीक़ेसे क़ायम की गअी अदालतको अुसका फ़ैसला करना होगा।"

"लेकिन अगर मुस्लिम लीग अैसी अदालतके फ़ैसलेको यानी अुसके किये मतलबको न माने, तो क्या हो?"

"वे अपना मतलब दूसरों पर जबरदस्ती लाद नहीं सकते। अगर वे अैसा करेंगे, तो क़सूरवार साबित होंगे। फिर तो मार-काटका रास्ता ही रह जाता है। हम सब जंगली हालतमें रहते हैं, और जब आपसमें अेक राय नहीं होते, तो अक्सर मार-पीट भी करते हैं। बावजूद अिसके हम सब शरीफ़ और बा-तहज़ीब लोग भी हैं। यह बात क्या अमेरिका और क्या यूरोप, सभी पर लागू होती है।"

मद्रासकी खादी-योजना

जब महात्मा गांधीसे मद्रास-सरकारके अुस फ़ैसले पर अपनी राय देनेके लिअे कहा गया, जिसके मुताबिक़ हाथ-कताअी और हाथ-बुनाअीकी गांधीवादी योजनाको बढ़ावा देनेके लिअे मद्रासमें सूती कपड़ेके मिल-अुद्योग को न बढ़ानेका निश्चय किया गया है, तो अुन्होंने कहा—

"मेरे ख़यालमें यह अेक अच्छी-से-अच्छी योजना है। अगर आप अिसे ठीक तरह समझना चाहते हैं, तो आपको समूची स्कीम समझनी चाहिये।"

"तो क्या यह समझना ठीक होगा कि सूबेमें आज जो मिलें मौजूद हैं, वे बन्द करा दी जायँगी?" अिसके जवाबमें अुन्होंने कहा —"अगर अिस स्कीमके बराबर तरक़्क़ी करते जानेसे कुछ अरसेके बाद मिलोंको गाहक ही न मिले, तो वे अपना काम समेट लेंगी, सिवा अिसके कि वे अपना कपड़ा हिन्दुस्तानके बाहर बेचना पसन्द करें।"

हिन्दुस्तानियोंको गिरमिटिया मज़दूरोंकी तरह अफ्रीका ले जाने और अिस तरह अुन्हें 'सेग्रेगेशन'में यानी यूरोपियनोंसे अलग बस्तियोंमें रहनेके लिअे मजबूर करनेकी बेढंगी हालत पैदा करनेके लिअे अुन्होंने नेटालके शकरके कारख़ानों पर वार किया।

ब्रिटिश सिविलियनोंका भविष्य

"हिन्दुस्तानी सरकारकी नौकरी करनेवाले ब्रिटिशरोंकी क्या हालत होगी?" अिस सवालके जवाबमें गांधीजीने कहा —

"मेरे ख़यालमें जो ब्रिटिशर हिन्दुस्तानके और हिन्दुस्तानकी परम्परा और परिस्थितिके साथ सच्चाअीसे पेश आयेंगे, और जो हर तरहके लालचों और रिश्वतख़ोरीसे परे होंगे, अैसे हरअेक ब्रिटिशरकी हिन्दुस्तानको जरूरत रहेगी। अिसका यह मतलब नहीं कि वे अिंग्लैण्डके साथ बेवफ़ाअी करें। ये दोनों चीज़ें अेक-दूसरेकी विरोधी नहीं; लेकिन अितिहासमें अैसा हुआ जरूर है। ज़्यादातर अंग्रेज हिन्दुस्तानको चूसकर अपने मुल्ककी सेवा करनेके लिअे यहाँ आये हैं। यह पाखण्ड है, और दग़ा है। किसी भी सेवामें या अुसके बाहर दग़ेकी गुंजाअिश नहीं।"

अमेरिकाको सन्देश

"क्या अमेरिकाको आप कोअी सन्देश देना चाहते हैं?" अिस मतलबके अेक सवालके जवाबमें अुन्होंने कहा —

"वह धनको अुसके सिंहासन या तख़्तसे हटाकर ओीश्वरके लिअे थोड़ी जगह खाली करे। मेरा ख़याल है कि अमेरिकाका भविष्य अुजला है। लेकिन अगर वह धनकी ही पूजा करता रहा, तो अुसका भविष्य काला है, फिर लोग चाहे जो कहें। धन अख़ीर तक किसीका सगा नहीं रहा। वह हमेशा बेवफ़ा दोस्त साबित हुआ है।"

विश्वास डिगा

महात्मा गांधी ७७ सालके हो चुके हैं। आज अुन्होंने कहा — "मैं बार-बार कहता रहा हूँ कि मैं १२५ साल तक जिन्दा रहूँगा। लेकिन मेरा यह विश्वास अिधर 'डिग' गया है।

अुनका ख़याल था कि अुनकी सालगिरहके मौक़े पर अुनके साथियोंने फलोंका ग़ैरजरूरी अिस्तेमाल करनेका जो अिरादा रक्खा था, और जिसकी वजहसे कुछ दिन पहले वे अपना मिज़ाज खो बैठे थे, अुसने अुनके अिस विश्वासको हिला दिया है। अुन्होंने बताया कि अुनकी तन्दुरुस्ती अच्छी है, लेकिन १२५ साल तक जीनेके अपने विश्वाससे वे हिल गये हैं।

"विश्वासके यों डिग जानेका यह मतलब नहीं कि वह वाजिब न था। लेकिन अिस अिच्छाकी सिद्धिकी अपनी कुछ मर्यादायें हैं। अगर हम अुन मर्यादाओंको पूरा न करें, तो हमारी अिच्छा बर न आये। फ़िलहाल तो मुझे अैसा लगता है, मानो मैं अपनी जगहसे अुखड़ गया हूँ। अिसके लिअे जरूरी समता मुझमें नहीं — मैं अुसे प्राप्त नहीं कर सका हूँ। दवा-दारूकी मददसे मैं १२५ साल तो ठीक, अेक साल भी जीना नहीं चाहता। मैं तो आजकी तरह सेवामय जीवन बिताना चाहता हूँ।

"जब आदमी हर हालतमें अपने मनके तौलको बनाये रखता है, तभी वह लम्बी अुमर तक जी सकता है। अुसे किसी चीज़से चिढ़ न आनी चाहिये, ग़ुस्सा न होना चाहिये। आज मैं यह नहीं कह सकता कि कोअी भी चीज़ मुझे चिढ़ा नहीं सकती, या पहले मैं कभी चिढ़ा नहीं हूँ।"

अुन्होंने कहा — "अभी कुछ दिन पहले तक मैं १२५ बरस जीनेकी बात आरामसे सोचा करता था। लेकिन अिसी बीच मुझे जोरका अेक धक्का लगा। हिन्दू तिथिके मुताबिक़ पड़नेवाली अपनी सालगिरहके दिन मैंने वह धक्का महसूस किया। मंत्रि-मण्डलके ख़ूराक खातेके मंत्री बाबू राजेन्द्रप्रसाद अुस दिन झण्डा फहरानेके लिअे आये थे; अुस मौक़े पर मुझसे यह कहा गया कि हरिजन बालकोंको और स्वयंसेवकोंको मूँगफली और किशमिश वग़ैरा बाँटे जायँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीने कहा — " यह जानकर मैं गुस्से से पागल हो अुठा। मैं अपना तौल खो बैठा। अिसका बयान करनेके लिअे आप किसी भी विशेषण या क्रियाविशेषणका अिस्तेमाल कर सकते हैं।"

अुन्होंने कहा — " जिन बच्चोंको जरूरत नहीं है, अुन्हें महकमे ख़ूराकके वज़ीरकी हाजिरीमें खानेकी चीज़ें देना, मेरे ख़यालसे अुनकी तौहीन-सी करना था।

" अुस वक़्त मुझे अपनी नाकामीका पता चला। अिस तरह का.वू खोनेकी वजहसे मेरी अुमरके कुछ साल कम हो गये हैं। अगर मैं अपनी समता, अपना तौल फिर पा लूँ, या यों कहिये कि पा सकूँ — क्योंकि नम्रताके विचारसे यह कहना ज़्यादा मुनासिब है — तो खोअी हुअी अुमर फिर जरूर पाअी जा सकती है।"

अुन्होंने कहा — " मेरे .गुस्सेके भड़क अुठनेकी वजह यह थी कि आज नाजका अेक-अेक दाना बचानेकी जरूरत है। अगर अैसा किया जाय, तो नाजकी तंगी न रहे।

" अगर हमारे हाकिम अपना काम करना जानते हों, और मुल्कमें काले बाज़ार न हों, तो दुनियामें हिन्दुस्तान अेक अैसा देश है, जहाँ अनाजकी तंगी कभी हो ही नहीं सकती।"

(अंग्रेज़ीसे)

ग्रीन क्रॉस सोसायटी

रेडक्रॉस सोसायटीके बारेमें सब कोअी जानते हैं। अेक ज़माना था, जब अुसका ताल्लुक़ सिर्फ़ फ़ौजी कामोंके साथ था, और अुस पर साम्राज्यवादका असर था। आज अपने कामके दायरेको बढ़ाकर अुसने समाज-सेवाको भी अपना लिया है, और वह दुःखी-दर्दी लोगोंकी हर तरह मदद करनेकी कोशिश करती है। अितना होनेपर भी अिस सोसायटीका काम ज़्यादातर शहरोंमें ही महदूद है। हिन्दुस्तानके व्यापक सामाजिक जीवनको यह शायद ही छू पाअी है।

अिंग्लैण्ड अेक अैसा देश है, जो नाकाम साबित हुअे मक़सदों, और मानवताके व अैसे ही दूसरे विचित्र ध्येयोंकी तरफ़दारी करता रहता है। जंगलके पेड़-पौधों और जानवरोंको बनाये रखनेका अैसा ही अेक ध्येय या मक़सद ग्रीनक्रॉस सोसायटी पेश करती है। श्रीमती अेम० अेच० मॉरीसन अिस सोसायटीकी ऑनररी मंत्री हैं। (४१ अेसमन्स प्लेस, लन्दन, अेन० डबल्यू० ११)

यह सोसायटी चाहती है कि संयुक्त राष्ट्र अुसके अिस ध्येयको अपना लें। अुनकी मंज़ूरीके लिअे सोसायटी नीचे लिखा प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्रोंके संघके नाम भेजनेवाली है —

" (क) संयुक्त राष्ट्र-संघके ध्येयोंमें अेक ध्येय यह भी शामिल किया जाना चाहिये कि हरअेक देशमें वहाँकी ग़ैरमामूली और क़ीमती वनस्पतिकी और जंगली जानवरों और परिन्दोंकी हिफ़ाज़तके लिअे अेक क़ौमी बग़ीचा तैयार करनेकी ग़रज़से अुन वनस्पतियों और पशु-पक्षियोंको मुआफ़िक़ आनेवाला कुछ प्रदेश अलग करनेकी फ़ौरन कोशिश की जाय।

" (ख) अिसके सिवा, दुनियाको चाहिये कि वह दक्खिनी अमेरीका, अफ़्रीका या अेशियामें अिस तरहका अन्तर्राष्ट्रीय बग़ीचा बनानेको तैयार हो। अगर अेशियामें अैसा बग़ीचा बनानेकी बात तय पाये, तो यह सुझाया जाता है कि अुसके लिअे तिब्बतके आस-पासका लम्बा-चौड़ा पहाड़ी सिलसिलोंवाला प्रदेश रक्खा जाय। ब्रिटेन, चीन, हिन्दुस्तान, रूस और अमेरिका अुसके ट्रस्टी बनें और अुसके रखवालोंको मुक़र्रर करें।"

संयुक्त राष्ट्र-संघसे अिस तरहका प्रस्ताव पास करानेके लिअे नीचे लिखे कारण दिये गये हैं —

" १. अब वक़्त आ गया है, जब पागल बने हुअे भौतिकवादके ख़िलाफ़ मोरचा खड़ा करनेकी जरूरत है।

" संयुक्त राष्ट्र-संघके आदर्शवाद और यथार्थवादको चाहिये कि वह दुनियाके सब राष्ट्रोंसे अिस बातका आग्रह करे कि वे अपने-अपने मुल्कमें जंगली पेड़-पौधों, जानवरों, परिन्दों, और कुदरती ख़ूबसूरतीवाले हल्क़ों वग़ैराकी अपनी कुदरती विरासतकी हिफ़ाज़त करें। अुसे हरअेक देशसे आग्रहपूर्वक कहना चाहिये कि वह अूपर कहे गये राष्ट्रीय या क़ौमी बग़ीचेमें अिस तरहकी कुदरती दौलतको ख़ास तौरसे बचाये रहे।

" २. संयुक्त राष्ट्र-संघ दक्खिनी अमेरीका, अफ़्रीका या अेशियामें अपना अैसा अन्तर्राष्ट्रीय बग़ीचा तैयार करवाकर अपने सभी साथी राष्ट्रोंके लिअे मिसाल पेश करे।

" ३. अगर अैसा बग़ीचा अेशियामें बनवाया जाय, तो वह तिब्बतके आस-पासके लम्बे-चौड़े पहाड़ी सिलसिलोंवाले प्रदेशमें बने। अगर अैसा हो, तो ब्रिटेन, चीन, हिन्दुस्तान, रूस और अमेरिका अुसके ट्रस्टी बनें, और अुसके लिअे अैसे रखवाले मुक़र्रर करें, जो बग़ीचेको बरबाद होनेसे बचायें और कुदरतको बदसूरत बनानेवाले अुसके बेजा अिस्तेमालको रोकें।

" ४. फिर यह आदर्श काम अेक समूहमें अिकट्ठा हुअे दोस्तों, ख़ैरख़्वाहों और हमदर्दोंको दूर के लक्ष्यकी तरफ़ जानेकी प्रेरणा करेगा।"

अिस प्रस्ताव पर दस्तख़त करनेवाले बहुतसे लोगोंमें रॉयल अेकेडेमी ऑव् आर्ट्सके सदर सर आल्फ्रेड जे० म्यूनिंग्ज़, डेम लॉरा नाअिट और सारी दुनियामें मशहूर जॉर्ज बर्नार्ड शॉ हैं।

श्रीमती मॉरीसन अिस प्रस्ताव पर हिन्दुस्तानी नेताओं और अेशिया व अफ़्रीकाके लीडरोंके दस्तख़त हासिल करना चाहती हैं। जो अिस प्रस्तावसे सहमत हों, वे श्रीमती मॉरीसनसे लिखा-पढ़ी करें।

सोदपुर, २-११-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

नअी किताबें

	मूल्य	डाकख़र्च
अीशु ख्रिस्त — (किशोरलाल घ० मशरूवाला)	०-१४-०	०-१-०
रचनात्मक कार्यक्रम — अुसका रहस्य और स्थान (नअी और सुधरी हुअी आवृत्ति) (गांधीजी)	०-६-०	०-१-०
अेक धर्मयुद्ध — (महादेवभाअी हरिभाअी देसाअी)	०-८-०	०-२-०
हिन्दुस्तानी बाल-पाठावली	०-५-०	०-१-०
मरुकुंज — क्षयरोगका निवारण (मथुरादास त्रिकमजी)	१-४-०	०-५-०
हमारी बा — अुनकी जीवन-कस्तूरी (वनमाला परीखऔर सुशीला नय्यर)	२-०-०	०-६-०

व्यवस्थापक, नवजीवन कार्यालय
पोस्ट बॉक्स १०५

विषय-सूची

			पृष्ठ
हफ़्तेवार ख़त	...	प्यारेलाल	३९३
अनाज, अींधन और तेल	...	प्यारेलाल	३९५
श्रद्धाकी चुनौती	...		३९६
मध्यप्रान्तका आबकारी महकमा	...	अमृतलाल वि० ठक्कर	३९६
अेक दोस्ताना प्रस्ताव	...	प्यारेलाल	३९७
मौक़ेकी मुलाक़ात	...		३९८
ग्रीन क्रॉस सोसायटी	...	गांधीजी	४००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रद्धाका साहस

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

सम्पादक – प्यारेलाल

भाग १० | अंक ४२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २४ नवम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

सच्चे दिलसे क़बूल कीजिये

चाँदपुर ही में गांधीजीने पहले पहल पूरबी बंगालकी वारदातोंके बारेमें वहाँके मुसलमानोंसे सीधी बातचीत शुरू की थी । ७ नवम्बरको जब चौमुहानीके लिअे रवाना होनेसे पहले टिपरा ज़िलेके कअी ख़ास-ख़ास मुस्लिम लीगियोंका अेक डेपुटेशन चाँदपुरमें ‘ कीवी ’ नामके स्टीमर पर गांधीजीसे मिला था ।

अुनमेंसे अेकने कहा कि चाँदपुर सब-डिविज़नमें दंगे बिलकुल नहीं हुअे । अख़बारोंके झूठे प्रचार या प्रोपेगैण्डासे घबराकर ही भागकर आये हुअे ये अितने लोग चाँदपुरमें अिकट्ठा हो गये हैं । मुसलमानोंके हाथों मारे गये हिन्दुओंकी तादाद सिर्फ़ १५ थी, जब कि फ़ौजियोंके गोलीबारसे अिससे दुगुने मुसलमान मारे गये थे । अिन फ़ौजियोंमें ज़्यादातर फ़ौजी हिन्दू थे ।

डेपुटेशनके अेक दूसरे अेम० अेल० अे० मेम्बरने अिस बातकी शिकायत की कि हिन्दू लोग आज भी घर छोड़कर भाग रहे हैं । कार्यकर्त्ता अुन्हें अैसा करनेके लिअे बढ़ावा देते हैं, और वापस अुनके गाँवोंमें बसानेके काममें ‘ रुकावट ’ डालते हैं । अिस तरह वे मुस्लिम लीगी सरकारको बदनाम करना और हुकूमतको ठप बना देना चाहते हैं ।

नसरुल्ला साहब और अब्दुल रशीद साहबके साथ शमसुद्दीन साहब भी अिस मीटिंगमें हाज़िर थे । अुन्होंने बीच ही में कहा — “ बंगालमें दूसरी जगह जो कुछ हुआ अुसको छोड़कर सिर्फ़ चाँदपुरके बारेमें बहस करनेसे कोअी फ़ायदा नहीं । मौजूदा मसलेके साथ पहलेकी गोलीबारका हवाला देना भी अुतना ही ग़ैरमौज़ूँ है । ”

जब वे लोग अपनी बात कह चुके, तो गांधीजीने जवाबमें कहा — “ अगर आपकी अिन बातोंको बिलकुल सही और ठीक मान लिया जाय, तो अुसका यह मतलब होगा कि मुसलमानोंने कोअी ज़्यादतियाँ नहीं कीं । मुसलमानोंको सतानेवाली पुलिस और फ़ौजकी ज़्यादतियोंने ही अुन्हें हिन्दुओं पर जुल्म ढानेके लिअे अुकसाया । अिसलिअे लोगोंमें घबराहट फैलानेवाले हिन्दुओंके साथ पुलिस और फ़ौजवाले ही सच्चे मुजरिम हैं । लेकिन अिस वाहियात बातको मानेगा कौन ? अगर यहाँ कोअी दंगा-फ़साद हुआ ही नहीं, तो फ़ौजको बुलानेकी ज़रूरत ही क्यों पड़ी ? २०–२५ हिन्दुओंका अेक डेपुटेशन आज सुबह मुझसे मिला था । अुन्होंने टिपरा और नोआखालीमें हुअी वारदातोंकी दर्दनाक कहानियाँ मुझे सुनाअीं । जबसे मैं बंगाल आया हूँ, तभीसे मुझे अिस तरहकी बातें बराबर सुननेको मिलती रही हैं । मुस्लिम लीगियोंने भी यह तो क़बूल किया है कि पूरबी बंगालमें हिन्दुओं पर भयंकर ज़ुल्म ढाये गये हैं । आँकड़ोंके बारेमें अुनकी शिकायत थी । वे कहते थे कि अख़बारोंमें ज़ुल्मके शिकार बने लोगोंकी तादाद बहुत बढ़ा-चढ़ाकर दिखाअी गअी है । लेकिन आँकड़ोंसे मुझे कोअी मतलब नहीं । अगर भगाने, जबरन् धरम बदलने या शादी करनेका अेक भी मामला हुआ हो, तो वह अीश्वरसे डरनेवाले किसी भी मर्द या औरतका सिर शर्मसे झुका देनेके लिअे काफ़ी है । ”

गांधीजीने अुनसे कहा — “ मैं कोअी बात छिपाअूँगा नहीं । जो कुछ जानकारी मुझे मिलेगी, वह सब मैं मिनिस्टरोंके सामने रख दूँगा । मैं आपसकी सद्‌भावना और विश्वासको बढ़ानेके लिअे ही यहाँ आया हूँ । अिस काममें मैं आपकी मदद चाहता हूँ । पुलिस और फ़ौजकी मददसे मैं शान्ति क़ायम कराना नहीं चाहता । अूपरसे लादी गअी शान्ति सच्ची शान्ति नहीं होती । मैं पूरबी बंगालके लोगोंको अपने घर-बार छोड़कर भागनेके लिअे भी नहीं कहूँगा । अगर मुस्लिम लीगी वज़ारतको बदनाम करनेके लिअे ही, जान-बूझकर, लोगोंको बड़ी तादादमें अपना घर-बार छोड़कर भागनेके लिअे कहा गया है, तो जिन्होंने यह सब किया है, अुन्हें लेनेके देने पड़ जायँगे । लेकिन मैं अिस पर विश्वास नहीं कर सकता । मेरी रायमें अिसका सच्चा रास्ता यही है कि सारी बात साफ़-साफ़ क़बूल कर ली जाय । सारी दुनियाको अपनी तरफ़ अँगुली अुठानेका मौक़ा देनेकी बनिस्बत यह कहीं अच्छा है कि हम ख़ुद अपनी ग़लतीको बड़ी शक्लमें दुनियाके सामने पेश कर दें । भगवान् पापी को कभी माफ़ नहीं करता । ”

अिस पर जो साहब सबसे पहले बोले थे, अुन्होंने यह बात क़बूल की कि मैंने आग और लूट-मारकी कुछ वारदातोंके बारेमें सुना है । लेकिन लोगोंके घर छोड़कर भाग जानेके बाद ही यह लूट-मार हुअी थी । सूने घरोंको देखकर गुण्डे अुन्हें लूटनेके अपने लालचको दबा न सके ।

गांधीजीने तुरत पूछा — “ क्या वजह है कि लोग घर-बार छोड़कर भागते हैं ? मामूली हालतमें लोग अैसा नहीं करते । हर शख़्स यह जानता है कि सूने और अरक्षित घरको कोअी-न-कोअी ज़रूर लूट लेगा । महज़ मुस्लिम लीगको बदनाम करनेके लिअे कोअी अपना सब कुछ गवाँना क्यों पसन्द करेगा ? ”

अिस पर डेपुटेशनके अेक और सदस्य ने कहा कि पूरी आबादीके सिर्फ़ अेक फ़ीसदी लोगोंने ही गुण्डापन किया था । बाक़ीके ९९ फ़ीसदी लोग सचमुच भले लोग हैं, और वे किसी तरह अुन वारदातोंके लिअे ज़िम्मेदार नहीं ।

गांधीजीने कहा — “अिस चीज़को अिस तरह देखनेका यह तरीक़ा ठीक नहीं । अगर ९९ फ़ीसदी लोग भले थे, तो अुन्हें चाहिये था कि वे जो कुछ हुआ अुसकी अमली मुख़ालिफ़त करते । अुस हालतमें अेक फ़ीसदी लोग कुछ न कर पाते, और वे बड़ी आसानीसे पकड़े जा सकते थे । भले लोगोंको अमली तरीक़ेसे बुराअीकी मुख़ालिफ़त करनी चाहिये, तभी वे भले कहलानेके हक़दार हो सकते हैं । खड़े-खड़े तमाशा देखना कोअी अच्छी चीज़ नहीं । अगर वे अैसा करना नहीं चाहते, तो अुन्हें यह बात खुले आम कहनी चाहिये, और मुस्लिम बहुमतवाली जगहोंमें रहनेवाले तमाम हिन्दुओंसे कह देना चाहियें कि वे वहाँसे चले जायँ । लेकिन जहाँ तक मैं समझ पाया हूँ, आप लोगोंका यह मंशा नहीं है । क़ायदे-आज़मने कहा है कि पाकिस्तानमें अल्पसंख्यकोंके साथ पूरा-पूरा अिन्साफ़ किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायगा। कहाँ है वह अिन्साफ़? आज हिन्दू मुझसे पूछते हैं कि पाकिस्तानमें अुनके साथ जैसा सलूक होनेवाला है, क्या नोआखालीकी वारदातें अुसीका नमूना हैं? मैंने अिस्लामका अध्ययन किया है। जब मैं दक्खिनी अफ़्रीकामें था, तो मेरे मुसलमान दोस्त मुझसे कहा करते थे — 'आप क़लमा पढ़कर हिन्दूधरमको भूल क्यों नहीं जाते?' मैं अुनको जवाब दिया करता था कि मैं कलमा खुशी-खुशी पढ़ सकता हूँ, लेकिन हिन्दूधरमको कभी नहीं भूल सकता। मेरे दिलमें हज़रत मुहम्मदके लिअे किसी मुसलमानसे कम अिज़्ज़त नहीं है। लेकिन अधिकार जताने और दबाव डालनेके तरीक़े अख़्तियार करनेसे मज़हबकी तरक़्क़ी होनेके बदले अुलटे वह नापाक होता है।"

शमसुद्दीन साहबने गांधीजीसे अित्तफ़ाक़ करते हुअे क़ुरानकी अेक आयत पढ़ी, जिसका मतलब था कि मज़हबके मामलेमें कोअी ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती। अुन्होंने आगे कहा — "मैं मुसलमानोंसे कह चुका हूँ कि अगर आप पाकिस्तान चाहते हैं, तो आपको चाहिये कि आप अल्पसंख्यक जातिके साथ अिन्साफ़ करें और अुसका विश्वास हासिल करें। मगर जैसे काम आप लोगोंने किये हैं, अुनसे तो आपने पाकिस्तानकी हत्या ही की है।"

अपनी बात फिर शुरू करते हुअे गांधीजीने कहा — "नोआखाली ज़िलेके बड़े हाकिम मि० मैक् अिनरनीने अेक परचा निकालकर अैलान किया है कि पिछले क़ौमी दंगोंके शुरू होनेके बाद जो हिन्दू मुसलमान बने हैं, अुनके बारेमें जब तक यक़ीन दिलानेवाला अिससे अुलटा सबूत नहीं मिलेगा, तब तक यही समझा जायगा कि वे ज़बरदस्ती मुसलमान बनाये गये हैं, और दर असल वे हिन्दू ही हैं। अगर सारे मुसलमान अैसा ही अैलान कर दें, तो आजके सवालको हल करनेमें बड़ी मदद मिले। अगर किसीको कलमा पढ़नेकी दिली ख़ाहिश है, तो अुसका लोगोंके सामने दिखावा क्यों होना चाहिये? सच्चे दिलसे किये जानेवाले धर्म-परिवर्तनके लिअे अीश्वरके सिवा किसी दूसरे गवाहकी ज़रूरत नहीं। जो आदमी मुँहसे कलमा पढ़ता है, मगर काम अैसे करता है, जो मामूली तहज़ीबके भी ख़िलाफ़ हैं, वह अिस्लामको नहीं मानता, बल्कि अुसका मज़ाक़ अुड़ाता है।" यहाँ गांधीजीको प्लीमथ सम्प्रदायकी याद आ गअी। अिस सम्प्रदायके मित्रोंने गांधीजीसे अीसाअी बननेका आग्रह किया था और कहा था कि अगर वे अीसाअी बन गये, तो अुन्हें अपनी मरज़ीके मुताबिक़ सब कुछ करनेकी छुट्टी मिल जायगी, क्योंकि अीशु अपने माननेवालोंको सारे पापोंसे बचा देते हैं। "अिसके ख़िलाफ़ 'न्यू टेस्टामेण्ट'की यह कविता साफ़ लफ़्ज़ोंमें कहती है कि — 'सिर्फ़ मुँहसे मेरा नाम रटनेवाला हरअेक शख़्स मेरे पास नहीं पहुँचता।' अिसलिअे मुसलमान नेताओंको समझना चाहिये कि ज़बरदस्ती कलमा पढ़नेसे कोअी ग़ैर-मुसलमान, मुसलमान नहीं बन जाता। अिससे तो अुलटे अिस्लामकी ही तौहीन होती है।"

डेपुटेशनके अेक सदस्यने, जो अभी तक कुछ नहीं बोले थे, दलील की — "जो कुछ हुआ है, वह सब झूठे प्रचारका नतीजा है।" गांधीजीने जवाब दिया — "हम झूठे प्रचारको ही अिसके लिअे दोषी न ठहरायें। अगर हम सब ठीक रास्ते पर हैं, तो झूठा प्रचार अपने-आप नाकाम हो जायगा।"

अख़ीरमें डेपुटेशनके अेक सदस्यने कहा — "देहातमें फिरसे शान्ति और विश्वास क़ायम करनेके लिअे हम सब हिन्दू नेताओंके साथ वहाँ जानेके लिअे तैयार हैं, लेकिन हिन्दू नेता हम पर भरोसा नहीं करते।"

गांधीजीने जवाब दिया — "कोअी हर्ज नहीं। आपके अिस प्रस्तावको मैं ख़ुशीसे मंज़ूर करता हूँ। हम और आप ज़िलेके हर गाँव और हर घरमें जायँगे और वहाँ फिरसे अमन और विश्वास क़ायम करेंगे।" दत्तपाड़ा, १५-११-'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

नागरीके स्वर

नागरी अक्षरोंमें स्वरोंकी दो दो शकलें सीखनी पड़ती हैं। व्यंजनके साथ मिल जानेसे स्वर अलग-अलग मात्राओंके रूप लेते हैं। और जब व्यंजनके बिना अकेले आते हैं, तब स्वतंत्र अक्षरकी तरह लिखे जाते हैं। दो दो रूप सीखने पड़ें, यह नाहक़का बोझा है। किसानों, मज़दूरों और आदिवासियोंमें साक्षरताका प्रचार करनेवालोंको अिस कठिनाअीका पूरा ख़याल है।

नागरी टाअिपराअिटर बनाते समय स्वरोंके अक्षर और मात्रा अैसे दो दो रूप देनेसे टाअिपकी संख्या बढ़ती है, और टाअिपराअिटर भारी हो जाता है। छापाख़ानेमें भी यही कठिनाअी रहती है, हालाँकि वहाँ विशेष कष्ट नहीं होता।

असलमें देखा जाय तो नागरीके स्वर नीचे लिखे मुताबिक़ हैं —
ा, ाा, ाि, ाी, ाु, ाू, ाृ (ऋ), ाे, ाै, ाो, ाौ, ां, ाः
ये स्वर आधारके बिना अैसेके अैसे नहीं रहते।

जब क, ख, ग, घ, च, ज, ण, त, थ, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, आदि व्यंजनोंके साथ ये आते हैं, तब हमें ककहरा या बारहखड़ी मिलती है। जब व्यंजनका अभाव होता है, और व्यंजनके बिना स्वतंत्र रूपसे ये स्वर आते हैं, तब व्यंजनका अभाव दिखानेवाला स्वराधारका चिह्न अ हरअेक स्वरको दिया जाता है। अिस तरहसे स्वरोंके रूप ये हो जाते हैं —

अ, आ, अि, अी, अु, अू, अृ (ऋ), अे, अै, ओ, औ, अं, अः।

अिस तरह बच्चोंको और नौसिखुओंको समझाना आसान हो जाता है। और, टाअिपराअिटरमें इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ अितने अक्षर बच जाते हैं। अिन स्वरोंमें ऐ के अूपर अेक ही मात्रा होती है, और बारहखड़ीमें दो मात्रायें दी जाती हैं। बच्चोंके लिअे यह व्यवस्था अूटपटाँग-सी मालूम होती है। कभी-कभी वे ए, ऐ,को ऐ, ऐ लिख देते हैं, और अिस वैज्ञानिक वृत्तिके लिअे बेचारे डाँटे या पीटे जाते हैं।

स्वरोंके ये नये रूप वैज्ञानिक तो हैं ही। अिसके अलावा अिनके पीछे कुछ परम्परा भी है।

प्राचीन पोथियोंमें कहीं-कहीं ओका रूप ॐ पाया जाता है। (अिसी पर चन्द्रबिन्दु देकर हमारा ॐ बना है।)

अे, अैके रूप भी पुरानी पोथियोंमें पाये जाते हैं। गुजरातीमें और महाराष्ट्रकी मोड़ी लिपिमें अे, अैके रूप अिसी ढंगके हैं।

अिसलिअे अि, अी, अु, अू, और अृ ये रूप भी प्रचलित करनेसे सब स्वरोंमें वैज्ञानिकता आयेगी, और साक्षरता-प्रचारमें और मुद्रा-लेखनमें (टाअिप-राअिटिंगमें) सहूलियत होगी।

चन्द शास्त्री लोग पाणिनीय स्वर-सन्धियोंका हवाला देकर अिन नये रूपोंको अशास्त्रीय बतलाते हैं। लेकिन अुनकी अिस दृष्टिसे ओ, औ, अशास्त्रीय सिद्ध होते हैं, अिस तरफ़ अुनका ध्यान नहीं जाता।

ये नये रूप जिन लोगोंने चलाये हैं, वे संस्कृत व्याकरण जानते हैं, लिपिका अितिहास जानते हैं, परम्परासे परिचित हैं। महाराष्ट्र साहित्य-परिषद्, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, आदि संस्थाओंने लिपि-सुधार-समितियाँ नियुक्त करके अिस सुधारकी काफ़ी चर्चा की है और अपनी अनुकूलता प्रकट की है। श्री सावरकरजीने अिस सुधारका ज़ोरोंसे प्रचार किया है। महाराष्ट्रमें अिस सुधारका स्वीकार वेगसे हो रहा है। बम्बअी सरकारने अिसे मान्यता दी है। गुजरात साहित्य-परिषद्ने अपने कराचीके अधिवेशनमें अिस सुधारको स्वीकार किया है। श्री किशोरलाल मशरूवाला और श्री विनोबा भावेकी स्वीकृति मिलनेके बाद पूज्य श्री गांधीजीने अिस सुधारको स्वीकार करके अिसे 'हरिजनसेवक'में चलाया है। मैं तो २० बरससे अिस सुधारका पुरस्कार करता आया हूँ।

वर्धा, २७-१०-'४६ काका कालेलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुड़दौड़ और फुटबॉलका जुआ बन्द किया जाय

जुआ खेलनेकी वृत्ति मनुष्यके स्वभावमें हमेशा पाअी गअी है। वेदोंके ज़मानेमें भी जुआरी मौजूद थे। अुनको नज़रमें रखकर ऋषि कवश अैलूश ऋग्वेद (१०-३४-१३)में कहते हैं —

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व।

पासोंसे जुआ मत खेलो, बल्कि खेती करो।

महाभारतके ज़मानेमें क्षत्रियोंको जुआ खेलनेकी आदत थी, और अपनी बेवक़ूफ़ीकी वजहसे वे यह भी मानते थे कि द्वन्द्वयुद्धकी चुनौतीकी तरह जुअेकी चुनौतीको मंज़ूर करना भी अुनका फ़र्ज़ है।

आहूतो न निवर्तेत द्यूतादपि रणादपि।

लेकिन बादमें धीरे-धीरे यह हालत सुधरी, और जब ब्रिटिश हुकूमत यहाँ क़ायम हुअी, तब हमारे मुल्कके सामने शराबख़ोरीकी तरह जुअेका सवाल ख़ास तौरपर पेश नहीं था।

अंग्रेज़ अपने साथ घुड़दौड़का जुआ और सट्टेका बाज़ार हिन्दुस्तानमें लाये। लेकिन शर्त बदनेका बहुत ज़्यादा चलन हमारे मुल्कमें न होनेसे अुसके बुरे असरके बारेमें हम कोअी फ़ैसला नहीं कर सकते। मगर अिसकी बुराअीको समझनेवाले विश्वसनीय विचारकोंका कहना है कि बहुत ज़्यादा शराब पीनेकी आदतसे समाजको जितना नुक़सान पहुँचता है, अुससे भी ज़्यादा नुक़सान अुसे शर्त बदनेकी बुराअीसे पहुँचता है (हुग मार्टिनकी 'क्राअिस्ट ऐंड मनी'नामकी किताबसे, अेस० सी० अेम०)। अिस आदतसे पैदा होनेवाली आम बुराअियोंको, और कमज़ोर मनवाले लोगोंके सामने पैदा होनेवाले लालचके गहरे ख़तरेको ध्यानमें रखकर मि० मार्टिन कहते हैं कि बहुत ही छोटी और किसी मौक़ेसे कोअी शर्त बदना भी ठीक नहीं। अुनकी रायमें शराबख़ोरीको क़तअी छोड़ देनेके लिअे दी जानेवाली दलीलें शर्त बदनेके रिवाजको और भी मज़बूतीसे लागू होती हैं। चर्चको चाहिये कि वह भिखारियोंके लिअे खोली जानेवाली लॉटरियोंका समर्थन न करे। अस्पतालोंके लिअे लॉटरियाँ चलाना भी अिष्ट नहीं। अिससे "अच्छे कामके लिअे दान देनेकी भावनाका नाश होता है"।

शर्त बदनेकी प्रथाके ख़िलाफ़ मि० मार्टिनको जो कुछ कहना था, वह अुन्होंने अेक ही वाक्यमें कह डाला है — "किसी भी वाजिब सौदेमें दोनों पार्टियोंको फ़ायदा होता है; शर्त बदनेके सौदेमें अेक पार्टीको बदलेमें बग़ैर कुछ दिये ही फ़ायदा होता है।" शर्त बदनेमें और चोरी करनेमें अितना ही फ़र्क़ है कि शर्त बदनेवाला, अगर हारता है, तो अपनी राज़ी-ख़ुशीसे जीतनेवालेको पैसा देना क़बूल करता है। कामकी शकलमें या दूसरे किसी तरीक़ेसे अुसकी पूरी क़ीमत चुकाकर पैसा पाने या भेंटकी शकलमें पैसे लेनेका हर आदमीको हक़ है। लेकिन शर्त बदनेका मतलब यह होता है कि बिना कुछ दिये कुछ पा जाना; यह दूसरेके नुक़सानसे होनेवाला फ़ायदा है।

अिसी तरह खेलोंका और शेयरबाज़ारका जुआ भी अिष्ट नहीं। जिनमें वायदा पटाने या नफ़े-नुक़सानकी रक़मका भुगतान करनेका सवाल हो, अैसे सब सौदे निश्चय ही समाज-विरोधी हैं। अगर आदमी जुअेकी आदतमें फँसा रहे, तो वह अुसमें भले-बुरेके विवेकका नाश करनेवाली वैसी ही और अुतनी ही तीव्र वासना पैदा करती है, जैसी और जितनी कुछ दवाअियोंकी वजहसे पैदा होती है।

कॉनराडकी अेक कहानीमें अुसके नायकको लॉटरीमें भारी अिनाम मिलता है। अेक बार अिनाम मिलनेसे अुसे यक़ीन हो जाता है कि वह दुबारा भी अिसी तरह अिनाम जीत सकता है। यह ख़याल अुसे जकड़ लेता है। अुसका अेक दोस्त तानेके तौर पर कहता है कि लॉटरीका घुन अुसे कुरेदकर खा रहा है। अिसकी ताअीद करते हुअे मि० मार्टिन कहते हैं कि यह बात हज़ारों लोगों पर लागू होती है।

मि० मार्टिन अिस नतीजे पर पहुँचते हैं कि किसी भी अीसाअीको अपने लिअे या दूसरोंके लिअे होड़ या शर्त बदनेमें पैसे ख़र्च नहीं करने चाहियें।

ख़ुद अनुभव करनेके बाद अीसाअियोंने यह सीखा कि होड़ बदना अुनके लिअे बुरी चीज़ है; चुनाँचे हिन्दू और मुसलमानोंके लिअे भी वह अुतनी ही बुरी चीज़ है। हिन्दुओंका फ़र्ज़ है कि वे अिस लेखके शुरूमें दी गअी वेदकी शिक्षा पर अमल करें, और मुसलमान भी पाक क़ुरानकी हिदायतको न टालें। क़ुरानमें शराबकी तरह ही जुअेकी भी सख़्त निन्दा की गअी है।

"वे तुझसे नशीली चीज़ों और जुअेके बारेमें पूछते हैं। कह कि दोनों महापाप हैं।" (२-२१९)

"अे अीमानदारो, नशीली चीज़ें (शराब वग़ैरा) और जुआ . . . ये शैतानकी अज़हद कमीनी हरक़तें हैं।

"शराब व जुअेके ज़रिये शैतान तुममें आपसकी दुश्मनी और नफ़रत पैदा करने व अल्लाहकी याद व अुसकी अिबादतसे तुम्हारा मन फेरनेकी ताक़में रहता है।"

(५-१०) (अेम. पिकथॉलके तरजुमेसे)

जे० अेन० कीनीज़-जैसे कट्टर अर्थशास्त्रीने भी शराब वग़ैरा नशीली चीज़ोंके साथ-साथ जुआ खेलनेवालोंका भी निषेध करनेकी बात सुझाअी है।

हमारे वज़ीर मि० कीनीजके सुझावको मान लें, और अंग्रेज़ी फ़ुटबालके जुअेके हमलेका सामना करें, तो अच्छा हो। अख़बारोंमें छपनेवाले अिश्तहारोंसे पता चलता है कि अिस तरहका जुआ शुरू हो चुका है।

(अंग्रेज़ीसे) वालजी गोविन्दजी देसाअी

पतिके लिअे कातनेवाली

पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी पुराने पत्रकार हैं। वे हिन्दीमें 'मधुकर' नामका अेक बढ़िया मासिक निकालते हैं। लोक-साहित्यका संग्रह करना और रचनात्मक या तामीरी कामको बढ़ावा देना अुसका मक़सद है। अुसके तीसरे सालके चौथे अंकमें 'स्वतंत्र'से लिया गया बुन्देलखण्डका अेक पुराना लोकगीत छपा है। अुस गीतमें अेक स्त्री अपने परदेश गये हुअे पतिके बारेमें अपनी सहेलीसे कहती है—

"अेजु वे न मिले ननदीके बीरना
खोभी डारी वयस हमार।
अपने अँगनवामें रहँटा बसौती
कतती नन्हो सूत।
अपने पियाको पगरी बनौती
जैसे कमलको फूल
भरी सभामें सोहे स्वामीकी पगरो
सेजियामें बिंदिया हमार।"

"हे सखी, मेरी ननदके भाअी यहाँ नहीं हैं, अिससे मेरा जीवन यों ही बीत रहा है। अगर वे यहाँ होते, तो मैं अपने आँगनमें चरखा रखकर महीन सूत कातती, और अपने स्वामीके लिअे कमलके फूल-सी पगड़ी बुनवाती। अुस पगड़ीको पहनकर वे राज-दरबारमें सोहते और मेरे सुहागकी बिन्दिया अुजली हो अुठती।"

अभी पूरे सौ साल भी नहीं हुअे, जब हमारे घरोंमें औरतें रसोअी बनातीं और कातती भी थीं। हिसार जिलेके श्री मुरलीधर 'मधुकर'में लिखते हैं कि अपने बचपनमें अुन्होंने गाँवकी लड़कियोंको जाड़ेके मौसिममें अेक जगह अिकट्ठा होकर धूपमें बैठते और कातते देखा है। अिस तरह धूपमें बैठकर कातनेको 'धूपिया' और गरमियोंमें रातको मिलकर की जानेवाली कताअीको 'सुरतिया' कहनेका रिवाज था। लड़कियाँ अेक साथ बैठकर कातती और गाती थीं। हिसारमें आज भी लड़कीको दहेजमें चरखा और हाथ-कते, हाथ-बुने कपड़े देनेका रिवाज मौजूद है।

(गुजरातीसे) वालजी गोविन्दजी देसाअी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२४ नवम्बर १९४६

श्रद्धाका साहस

पिछले बुधवारको बड़े सबेरे गांधीजीने अपने साथियोंको अेक अहम फ़ैसलेकी खबर दी। अुन्होंने कहा — "मैंने तय किया है कि आप लोगोंके दलको बिखेर दूँ, और आपमेंसे हरअेकको अुन गाँवोंमें भेज दूँ, जिन पर दंगोंका असर पड़ा है। आपके साथकी बहनें भी अिसी तरह अेक-अेक गाँवमें जाकर रहेंगी। आप सबको अपने पसन्द किये हुअे गाँवकी कम तादादवाली हिन्दू आबादीके जान-मालकी हिफ़ाज़तके लिअे बतौर बयानेके अपने-अपने गाँवमें रहना होगा। आपको यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि ज़रूरत पड़ने पर आप अपनी जान क़ुरबान करके भी हिन्दू आबादीकी हिफ़ाजत करेंगे। मेरा यह फ़ैसला आपमेंसे किसीके लिअे बन्धनकारक नहीं। जो चाहें वे यहाँसे अलग होकर अपनेको मेरे किसी रचनात्मक काममें लगा सकते हैं। साथ ही, जिनके दिलमें मुसलमानोंके लिअे दुश्मनीका ख़याल हो, या अिस्लामके लिअे आदर न हो, या जो कुछ हो चुका है, अुसकी वजहसे जो लोग अपने ग़ुस्सेको क़ाबूमें न रख सकते हों, वे सब अिस कामसे दूर रहें। अैसे लोग मेरी अिस योजनामें शामिल होकर मेरे बारेमें फ़जूल ही ग़लतफ़हमी पैदा करेंगे।

"जहाँ तक मेरा अपना ताल्लुक़ है, मेरा यह फ़ैसला आखिरी फ़ैसला है, और अब अिसमें कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। जब तक पूरबी बंगालके हिन्दू और मुसलमान अमन-चैनके साथ हिलमिलकर रहना नहीं सीखते, तब तक मैं यहीं गड़ा रहूँगा। अपने सभी नज़दीकी साथियोंकी सेवाका त्याग करके जहाँ जैसी मुक़ामी मदद मुझे मिलेगी, अुसीसे मैं अपना काम चला लूँगा।"

अुसी दिन शामको गांधीजीने अपने साथियोंको अिस फ़ैसलेके बारेमें अपने ख़याल ज़्यादा तफ़सीलसे समझाये। बादमें बहस शुरू हुअी। श्री ठक्कर बापा और श्रीमती सुचेता कृपालानीने भी अुसमें भाग लिया। अपनी दलील पेश करते हुअे गांधीजीने समझाया — "अगर मैं यह क़दम न अुठाअूँ, तो मेरी अहिंसा अधूरी रहे। अहिंसा या तो जीवनका नियम है या नहीं है। मेरे अेक दोस्त कहा करते थे कि पतंजलिके योगदर्शनका **अहिंसा-प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः** (अहिंसाकी सिद्धि होने पर अुसके पास जानेवालेकी वैरबुद्धि शान्त हो जाती है), अहिंसाके बारेमें लिखा गया यह सूत्र अेक बड़ी ग़लती है, और अुसमें सुधार करनेकी ज़रूरत है; और, **अहिंसा परमोधर्मः**, अिस वचनको भी अिसमेंके पहले **अ** को निकालकर **हिंसा परमोधर्मः** की शकलमें पढ़ना और समझना चाहिये। अुनकी बातका मतलब यह था कि मनुष्यका सबसे श्रेष्ठ धर्म अहिंसा नहीं, बल्कि हिंसा है। चुनाँचे अगर अैन कसौटीके वक़्त अहिंसाके क़ानूनके बारेमें मेरी श्रद्धा डिग जाय, तो मुझे अपने अुन दोस्तकी सुझाअी हुअी वाहियात तरमीम मंज़ूर कर लेनी पड़े।

"शायद मैं बंगालकी बहनोंको ख़ुद बंगालियोंसे भी ज़्यादा पहचानता हूँ। बंगालका स्त्रीत्व आज दब गया है और लाचार बन गया है। मेरा और मेरे साथियोंका बलिदान अुन्हें कम-से-कम अिज़्ज़तके साथ मौतका सामना करनेकी कला तो सिखायेगा ही न? और मुमकिन है कि हमारी अिस क़ुरबानीसे ज़ुल्म ढानेवालोंकी आँखें खुल जायँ और अुनके दिल पसीजें। बेशक, अिसका यह मतलब नहीं कि अिधर मेरी आँखें मुँदेंगी और अुनकी खुल जायँगी। लेकिन मुझे अिसमें कोअी शक नहीं कि आख़िर अिसका नतीजा तो यही होनेवाला है। अगर अहिंसा मिट गअी, तो अुसके साथ हिन्दूधर्म भी मिट जायगा।"

साथियोंमेंसे अेकने दलील की—"आज अिन झगड़ोंकी जड़ धार्मिक या मज़हबी नहीं, बल्कि राजनीतिक या सियासी है। आजकलकी यह लड़ाअी हिन्दुओंके ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि कांग्रेसके ख़िलाफ़ है।"

"आप यह क्यों नहीं देखते कि वे लोग कांग्रेसको सिर्फ़ हिन्दुओंकी संस्था मानते हैं? साथ ही, आप यह क्यों भूल जाते हैं कि मेरे नज़दीक जीवन धार्मिक, राजनीतिक या अैसे दूसरे हिस्सोंमें बँटा हुआ नहीं है? हम शब्दोंकी भूलभुलैयामें न फँसें। सवाल तो अेक ही है — यह अुलझन कैसे सुलझाअी जाय? हिंसासे या अहिंसासे? अिसे दूसरी तरह कहूँ, तो मैं यों कहूँगा कि आज मेरे तरीक़े में कोअी दम है या नहीं?"

साथियोंमेंसे अेकने कहा — 'जो लोग आपका ख़ून पीनेको तैयार हैं, अुनके साथ दलील कैसे की जाय? अुन्हें किस तरह समझाया जाय? अभी अुस दिन हमारा अेक कार्यकर्त्ता मार डाला गया।"

गांधीजीने जवाब दिया — "सो मैं जानता हूँ। ग़ुस्सेकी अिस आगको बुझाना ही तो हमारा काम है।"

साथियोंमेंसे दूसरे अेक साथीने पूछा — "आज यहाँके गाँवोंमें लौटकर आने और रहनेमें भारी ख़तरा है। अैसी हालतमें क्या भागकर गये हुअे लोगोंसे यह कहना ठीक होगा कि वे सब अपने-अपने गाँवोंको लौट जायँ और वहीं रहें?" गांधीजीने जवाब दिया — "लोग जिन गाँवोंमें लौटनेवाले हों, अुन गाँवोंके मुसलमान अिकट्ठा होकर अुनकी सुरक्षाकी गारण्टी दें, और अिस तरह सब मुसलमानोंकी मिली-जुली गारण्टीकी अेक भला हिन्दू और अेक भला मुसलमान ताअीद करे, और वे दोनों अुसी गाँवमें रहें, और ज़रूरत पड़ने पर अपनी जान देकर भी लौटे हुअे लोगोंकी हिफ़ाज़त करें, तो लोगोंको अपने-अपने गाँवोंमें वापस जानेकी सलाह देनेमें कोअी ख़तरा या नुक़सान नहीं। अितनी गारण्टी मिलने पर गाँव छोड़कर भागे हुअे लोगोंको वापस अपने गाँवमें जाना ही चाहिये, और वहाँ जो ख़तरा या डर हो अुसका मुक़ाबला करना चाहिये। अिन शर्तोंके साथ गारण्टी मिलने पर भी अगर हिन्दू अपने गाँवोंमें लौटनेको तैयार न हुअे, तो याद रखिये कि पूरबी बंगालमें हिन्दू धर्मका नाम-निशान भी न रहेगा।" पूरबी बंगालका सवाल अकेले बंगाल प्रान्तका सवाल नहीं। आज पूरबी बंगालमें समूचे हिन्दुस्तानकी लड़ाअी लड़ी जा रही है; वहाँ सारे हिन्दुस्तानके भविष्यका फ़ैसला हो रहा है। आज मुसलमानोंको यह सिखाया जा रहा है कि हिन्दुओंका धर्म बहुत ही नफ़रत करने लायक़ और गन्दा धर्म है, चुनाँचे हिन्दुओंको ज़बरदस्ती भ्रष्ट करके मुसलमान बनानेमें पुण्य है, और अिससे और कुछ नहीं, तो कम-से-कम यह तो होगा ही कि ज़बरदस्ती मुसलमान बनाये गये लोगोंके बच्चोंको अिस्लामने अुबार लिया है। अब अगर मुसलमानोंकी अिन करतूतोंके ख़िलाफ़ वैसी ही काली करतूतें करके बदला लेनेका अुसूल अपनाया जाता है, तो अुन पर फ़तह पानेके लिअे हिन्दुओंको अुन सब बुरे कामोंके करनेमें कमाल हासिल करना पड़ेगा, जो मुसलमानोंने किये कहे जाते हैं। मित्र राष्ट्र हिटलरके ख़िलाफ़ अुसीके हथियारोंसे लड़ने निकले, और आख़िर सवाअी हिटलर बनकर रहे।"

गांधीजीसे पूछा गया आख़िरी सवाल यों था — "जब तक अिन गाँवोंमें दंगोंके दिनोंमें मार-पाट और लूट-पाट वग़ैरा करनेवाले लोग आज़ादीसे घूमते-फिरते हैं, तब तक लोग आश्वस्त कैसे हों? हम अुन्हें किस मुँहसे कहें कि वे भरोसा रक्खें?"

अिस सवालका जवाब देते हुअे गांधीजीने कहा — "अिसीलिअे तो मैंने अिस बातका आग्रह रक्खा है कि जो लोग लौटें, अुनके जान-मालकी हिफ़ाज़तके लिअे अेक भले हिन्दू के साथ अेक भले मुसलमानको भी ज़ामिन बनकर रहना चाहिये। बंगाल सरकारकी हुकूमतको संभालनेवाले मुस्लिम लीगियोंको चाहिये कि वे अैसे लोगोंको खड़ा करनेकी ज़िम्मेदारी अपने सिर लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दत्तपाड़ासे अेक मित्रको लिखे पत्रमें गांधीजीने लिखा था — "आज मैं यहाँ जिस काममें लगा हूँ, वह शायद मेरी ज़िन्दगीका आखिरी काम हो; अगर मैं यहाँसे बिलकुल सही-सलामत और ज़िन्दा लौटा, तो मैं अुसे अपना नया जन्म मानूँगा। यहाँ मेरी अहिंसाकी पूरी-पूरी और अैसी कसौटी हो रही है, जैसी पहले कभी नहीं हुअी थी।"

श्रीरामपुर, १६-११-'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

अकालसे लड़नेवाला अेक हिन्दुस्तानी गाँव

बेलगट्टा, दक्खिन हिन्दुस्तानकी दक्खिनी अूँची चौरस ज़मीन पर बसा हुआ अेक नमूनेका गाँव है। वह कन्याकुमारीसे ४०० मील दूर, पच्छिमी घाटसे १०० मीलसे अूपर और पूरबी घाटसे क़रीब ... मीलकी दूरी पर बसा हुआ है। वहाँ साल भरमें २० अिंचसे ज़्यादा बारिश होती है। बेलगट्टा पूरी तरह खेती पर गुज़र करनेवाला गाँव है। मामूली दिनोंमें वहाँके लोग ख़ास तौर पर ज्वार, बाजरा और दालें पैदा करके अुन पर गुज़र करते हैं। अुन्हें आम, केला व कभी-कभी ताड़ी के और बढ़ जानेसे अुनका काम अच्छी तरह चल जाता है। वहाँके किसान थोड़ी कपास, मूँगफली, रेंडी व दूसरे तेल के बीज भी अुगा लेते हैं, और अिन चीज़ोंको बेचकर वे कपड़ा, चावल व थोड़ी दूसरी चीज़ें ख़रीदते हैं। ये चीज़ें भी अुन्हें ज़्यादा तो नहीं मिलतीं, लेकिन भगवान्की दयासे अुनका काम ज्यों-त्यों चल जाता है।

यह तो मामूली दिनोंकी बात हुअी। लेकिन जब सभी कुछ बारिश पर मुनहसिर हो, तब ये मामूली दिन भी कभी-कभी ही देखनेको मिलते हैं। सन् १९४५का साल सबसे ज़्यादा ग़ैरमामूली था। अिस साल बरसात बिलकुल नहीं हुअी। खेतोंमें बोये बीज सूख गये। ढोर भूखों मरने लगे। लड़ाअीके दिनोंकी संकुचित नीतिके सबबसे पिछले सालोंमें बचाया हुआ सारा अनाज लगानमें ले लिया गया था। और अब अकालका सामना करनेके लिअे गाँववालोंके पास न बचतमें कुछ था, और न भविष्यमें जल्दी कुछ पानेकी अुम्मीद ही अुन्हें थी। क़रीब बारह महीनों तक भुखमरीका भूत गाँवके आसपास मँडराता रहा; कभी-कभी तो वह बहुत नज़दीक आया-सा लगता था। लेकिन आज वह बहुत दूर है, क़रीब-क़रीब हद छोड़कर चला गया है। न सिर्फ़ नअी फ़सल अच्छी आअी है, बल्कि वह काटने लायक़ भी हो गअी है। अिसके सिवा, स्टेट (मैसूर स्टेट, जिसमें बेलगट्टा गाँव बसा है) की सरकारने बड़ी धीमी और निराशाजनक शुरुआतके बाद ठीक आख़िरी वक़्तमें ज़रूरतमन्द लोगोंको खाना देनेका काफ़ी अिन्तज़ाम कर दिया है।

अकेली मैसूर रियासत अिस कामको कर न सकती। लोगोंको अनाज बाँटनेका अिन्तज़ाम तो बेलगट्टामें ही किया गया था, लेकिन अनाज बहुत दूर-दूरसे मँगाना पड़ा। बेलगट्टासे क़रीब ५० मील दूर पच्छिमी मैसूरमें पछाँही हवा हर साल तिगुनी या चौगुनी बारिश लाती है। सन् १९४५में वहाँ हमेशाकी ही तरह बारिश हुअी थी। अिसलिअे वहाँ थोड़ा चावल बचतमें था। मगर वह भी जल्द ही ख़त्म हो गया। दक्खिनके दूसरे सैकड़ों गाँवोंकी तरह बेलगट्टाको भी अनाजके लिअे हिन्दुस्तानके दूर-दूरके सूबों और समंदर पारके मुल्कोंकी तरफ़ देखना पड़ा। जिस गाँवके रहनेवालोंने कभी समंदर या कोअी बड़ा शहर तक नहीं देखा था, अुसकी रक्षा कअी महाद्वीपोंके सम्मिलित प्रयत्नसे हुअी। आअिये, अब हम गाँवका अनाज-गोदाम देखें। यहाँ हमें आस्ट्रेलियन गेहूँके आटेके भरे हुअे थैले, कनाडाके गेहूँ, और अमेरिकाकी मका दिखाअी देगी। हाल ही आये हुअे जिस मालको ग्रामीण अक्सर बड़ी अुत्सुकतासे देख रहे थे, वह था, 'मिलका बाजरा'। जब थैले खोले गये तो अुनमें कोअी अनजानी और बेस्वाद चीज़ नहीं निकली, बल्कि गाँववालोंकी जानी-पहचानी वह ज्वार या जोला ही निकली, जिसके अूँचे और भूरे भुट्टे अब गाँवके चारों तरफ़ खेतोंमें हिल रहे हैं, और किसानोंको आशाका संदेश दे रहे हैं। थोड़े दिन पेश्तर ही यहाँ बरमाके चावल भी आये हैं। आसाम, हैदराबाद और सिन्ध-जैसे हिंदुस्तानके सूबों और रियासतोंने, जहाँ सालभरकी खपतके बाद अनाज बच जाता है, अपने हिस्सेका ग़ल्ला बेलगट्टा भेजा है। बेलगट्टा-जैसे छोटेसे गाँवको भुखमरीसे बचानेके लिअे सारी दुनियाने हाथ बँटाया है।

पोस्ट मास्टरके घर कॉफी पीते-पीते मैं अिस पर विचार कर ही रहा था कि अचानक अुन्होंने यह कहकर कि "भगवान्ने दया करके ठीक वक़्त पर यहाँ बारिश भेजी है" मुझे सोचनेके लिअे दूसरा ही मसाला दे दिया। अब चूँकि अिन लोगोंका डर अुम्मीदमें बदल गया है, अिसलिअे ये लोग आस्ट्रेलिया, अमेरिका, अीजिप्त या बरमाका आभार नहीं मानते, बल्कि भगवान्का धन्यवाद देते हैं।

अिस गाँवकी कुछ दूसरी ख़ासियतें भी मुझे पसन्द आअीं। दो शरमीली और ख़ामोश बच्चियाँ मेरे सामने लाअी गअी थीं। अुनमेंसे अेकको खुजली वग़ैराकी और दूसरीको बदहज़मीकी बीमारी थी, और दोनोंको लगातार विटामिनकी गोलियाँ देकर अच्छा किया गया था। गाँवमें अिस तरह अच्छी हुअी दूसरी कअी लड़कियाँ थीं। बादमें मेरे अेक साथीने गाँवमें रहनेवाले अेक नौजवान डॉक्टरसे मेरी पहचान कराअी। जब कि दूसरे कअी हिन्दुस्तानी डॉक्टर धनवान और अच्छी फीस देनेवाले शहरवालों पर ही अपना पूरा ध्यान देते हैं, यह भाअी गाँवमें ही रहते हैं, और ५ गाँवोंकी सेवा करते हैं। मैंने अुनसे पूछा — "क्या अनाजकी तंगीके कारण बीमारियाँ बढ़ गअी हैं?" जवाब मिला — "हाँ, अिससे ख़ास करके चमड़ीके रोग और पेटकी बीमारियाँ ज़्यादा बढ़ी हैं"। अिसके कोअी घंटेभर बाद जब अेक अूँचे दरजेके डॉक्टरने, जो तीन साल तक यूरोपमें फ़ौजकी नौकरी कर चुके हैं, मुझे यक़ीन दिलाया कि पाँच हफ़्तोंसे वे ख़ुराककी ख़राब-से-ख़राब हालतवाले जिलोंमें दौरा कर रहे थे, लेकिन थोड़ी-बहुत खुजलीके सिवा और किसी बीमारीके बढ़नेका कोअी सबूत अुन्हें नहीं मिला, तो अुस वक़्त मुझे यह फ़ैसला करनेमें कोअी मुश्किल नहीं हुअी कि दो डॉक्टरोंकी राय अेक-दूसरेके ख़िलाफ़ होने पर किसे मानना चाहिये। लेकिन अिन फ़ौजी डॉक्टरके साथ अिन्साफ़ करनेके लिअे हमें अुनको और अुनके मातहतोंको अिसलिअे धन्यवाद देना चाहिये कि जब लोग आधे भूखे रहते थे और कअी जगहों पर पीनेके लिअे अच्छा पानी भी मुश्किलसे मिलता था, तब भी कोअी भारी रोग या महामारी नहीं फैलने पाअी।

बेलगट्टा अेक अुम्मीद दिलानेवाला गाँव है, और आज वह दूसरे अैसे गाँवोंसे घिरा हुआ है, जिन्हें देखकर अुम्मीद बढ़ती है। मगर यह जिला ही तो पूरा हिन्दुस्तान नहीं! ज्वार और बाजरा, जो दक्खिनके अिन गाँवोंका ख़ास भोजन है, क़रीब-क़रीब पक गये हैं। लेकिन यहाँसे सिर्फ़ दो सौ मीलकी दूरी पर रहनेवाले मद्रासी किसान अभी भी बहुत कम राशन पर किसी तरह जी रहे हैं। अुनके पास चावलकी कमी है। मैसूरमें भी 'और चावल भेजो' की पुकार अुठती है। दक्खिन हिन्दुस्तानका चावल १९४७के जनवरी महीनेके पेश्तर बाजारमें बेचने लायक़ नहीं हो सकेगा। अिस बीच समंदर पारके बरमा, स्याम व जावा देशोंसे कभी-कभी चावलोंसे भरे हुअे जहाज़ आते हैं, और आसाम, अुड़ीसा या अुत्तर हिन्दुस्तानके दूसरे हिस्सोंसे भी थोड़ा चावल आ जाता है। क्या अिन लाखों-करोड़ों अिनसानोंको ज़िन्दा रखनेके लिअे कभी-कभी आ जानेवाले चावलोंकी अिस धाराको जारी रखा जा सकेगा, और क्या अमेरिकासे आनेवाले गेहूँ अुनमें शामिल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किये जा सकेंगे ? भगवान् ही जाने । मगर दक्खिनी हिन्दुस्तानके और अुसे लगातार रहनेवाली अनाजकी जरूरतके पीछे समूचे बंगालको छूनेवाला अेक बड़ा सवाल मौजूद है । पूरे दक्खिनी हिन्दुस्तानमें बच्चोंको दूध और विटामिनकी गोलियाँ ज़्यादा तादादमें बाँटकर अकालके खतरेको रोका जा रहा है । पिछले हफ़्ते मैंने त्रावणकोरमें कअी अैसे बच्चोंको देखा, जो अपने पासका दूध पी चुकनेके बाद और दूध माँग रहे थे । लेकिन आज भी वहाँ चावल और गेहूँकी पुकार मची हुअी है । अभी भी हरअेक मुल्कके लोगोंको यह समझानेकी जरूरत है कि वे दूर देशोंमें रहनेवाले अपने अजनबी भाअियोंकी मदद करें । अिस कामके लिअे अुनके दिल, दिमाग़ और अिरादोंको तैयार करनेवाले अीश्वरका हमें अेहसान मानना चाहिये ।

चीतलदुर्ग, सितम्बर, १९४६ होरेस अलेक्ज़ैण्डर

[अीश्वरको धन्यवाद देकर खत्म होनेवाले अिस मज़मूनमें मैं सिर्फ़ अितना ही जोड़ना चाहता हूँ कि अीश्वर अुन्हींकी मदद करता है, जो अपनी मदद खुद करते हैं । देहातियोंको यह सिखाया जाय कि वे खुद ही ज़्यादा अनाज पैदा करें । अुस हालतमें बाहरसे भी मदद मिलेगी और वह .खुशी-खुशी लेने लायक़ होगी ।

कलकत्ता जाते हुअे रेलमें, २९-१०-'४६

(अंग्रेज़ीसे) मो० क० गांधी]

शराबबन्दीकी साखियाँ

(अंक ३३से आगे)

[नीचेकी दसवीं साखीके लिअे मैं मैकडानल और कीथकी 'वेदिक अिण्डेक्स' नामकी किताबका क़र्ज़दार हूँ । ११वींके लिअे अेस० हिक्सकी 'डिफिकल्टीज़' (डकवर्थ)का; १३वींके लिअे मॉस्लेकी 'नाअिट हॉण्ट्स ऑव् लण्डन' (अेस० पॉल)का; १४वींके लिअे हीरालाल जादवराय बूचकी 'देवी भागवत'का (जी० अेम० वैद्य); और १६वीं, १७वीं और १८वींके लिअे नार्मन अी० रिचर्डसनकी 'दि लिकर प्रॉब्लेम' नामकी किताब (मेथोडिस्ट बुक कन्सर्न, न्यूयार्क)का क़र्ज़दार हूँ — वा० गो० देसाअी]

१०

सुरां पिबन् . . . ब्रह्महा चैते पतन्ति ।

छान्दोग्य अुपनिषत् (५-१०-९)

"ब्राह्मणको मारनेवाला और शराबी . . . दोनोंकी बुरी गत होती है ।"

११

"अेक लम्बे अरसे तक जजका काम करते हुअे मेरे सामने जो जुर्म आये, अुनमेंसे ९५ फ़ीसदी नहीं, बल्कि ९९ फ़ीसदी जुर्मोंके लिअे शराबखोरी ही जिम्मेदार है ।" — लॉर्ड ब्रम्पटन

१२

"यूरोपके बालिग़ लोगोंकी आधीसे ज़्यादा बीमारियों और वक़्तसे पहले होनेवाली मौतोंके लिअे सिफलिस और शराबका नशा ये दोनों ही ज़िम्मेदार हैं ।"

— अी० रे० लैंकेस्टर ('किंगडम ऑव् मैन' में)

१३

"अिनसानको व्यभिचारकी आर ले जानेमें शराबखोरीका खास हाथ है ।"

— व्यभिचारकी वजहसे होनेवाले गरमीके रोगोंका रोकनेवाली नैशनल कौन्सिल

१४

प्रभासे यादवाः सर्वे . . . ॥ ३ ॥
ते पीत्वा मदिरां मत्ताः कृत्वा युद्धं परस्परम् ।
क्षयं प्राप्ताः महात्मानः पश्यतो रामकृष्णयोः ॥ ४ ॥

— देवी भागवत, २-८

"प्रभासमें यादवलोग शराब पीकर पागल हो गये, और आपसमें लड़कर कट मरे । यह सब बलराम और कृष्णके सामने हुआ, लेकिन वे कुछ न कर सके ।"

१५

"लड़ाअीकी बनिस्बत शराब ज़्यादा लोगोंको मारती है, और वह भी बड़ी बेअिज़्ज़तीके साथ ।

— कार्डिनल मॉ[illegible]

१६

"कअी शराबख़ाने औरतोंसे वेश्याका पेशा करवाकर अुससे होनेवाली आमदनी पर निभते हैं ।"

— नॉर्थ अमेरिकन वाअिन अेण्ड स्पिरिट जर्नल (मार्च, १९१[illegible])

१७

"ज़िन्दगी और मौतके बीच होनेवाली रस्साकशीमें शराब[illegible] क़ब्रकी तरफ़ अपनी ताक़त खर्च करती है ।"

१८

"अगर मुल्कसे शराबखोरीको जड़मूलसे मिटाया जा सके, तो [illegible] अदालतके दरवाज़े किसी क़दर लम्बे वक़्त तक बन्द ही रहें ।"

— लॉर्ड गोरेल, प्रेसिडेण्ट ऑव् अिंग्लिश डाअिवोर्स [illegible]

(अंग्रेज़ीसे)

हफ़्तेवार ख़त

गांधीजी तीसरे दरजेके मामूली डब्बेमें बैठकर नोआखाली जा[illegible] पसन्द करते, लेकिन बंगाल-सरकारने अुनके लिअे अेक ख़ास ट्रेन[illegible] अिन्तज़ाम कर दिया था । बंगाल सरकारने अपने व्योपार विभाग[illegible] वज़ीर शमसुद्दीन साहब और बंगालके वज़ीरेआज़मके पार्लमेण्ट[illegible] सेक्रेटरी नसरुल्लाखाँ साहब और अब्दुर रशीद साहबको भी गांधीजी[illegible] साथ भेजा था । गांधीजीके आराम और सुभीतेका अिन्तज़ाम क[illegible] और जरूरत पड़ने पर अुन्हें सरकारी मदद पहुँचानेके ख़यालसे मु[illegible] वज़ीरेआज़म ही गांधीजीके साथ नोआखाली जाना चाहते थे, लेकि[illegible] अुन्हें कलकत्तेमें रुक जाना पड़ा । शमसुद्दीन साहबके कुष्टिया गाँव[illegible] और हाकपुर व गोआलन्दोमें लोगोंकी ज़बरदस्त भीड़ अिकट्ठा हुअी थी । अिन सब जगहोंमें गांधीजीने अपनी अिस मुलाक़ातके मक़सद[illegible] समझाते हुअे मुख्तसर तक़रीरें कीं ।

गांधीजीने कहा — "बिलकुल बचपनसे सभी क़ौमोंके लोगोंके साथ मेरी दोस्ती रही है । मैंने हिन्दू, मुसलमान, पारसी और दूसरी क़ौमों[illegible] कभी कोअी फ़र्क़ नहीं किया । अपने बचपनमें जब मैं राजको[illegible] हाअीस्कूलमें पढ़ता था, अुस वक़्तका अैसा अेक भी मौक़ा मु[illegible] याद नहीं आता, जब स्कूलमें पढ़नेवाले पारसी या मुसलमान लड़कों[illegible] साथ मेरा झगड़ा हुआ हो ।

"ख़िलाफ़त आन्दोलनके दिनोंमें मैं हमेशा यह कहा करता [illegible] कि मौलाना शौकतअली तो मुझे अपनी जेबमें लिये घूमते हैं । [illegible] लड़ना नहीं चाहता । लेकिन साथ ही अिज़्ज़त या स्वाभिमान[illegible] क़ीमत पर मिलनेवाली शान्ति भी मुझे पसन्द नहीं । मैं वह शान्ति चाहता हूँ, जिसमें दोनों दलोंकी अिज़्ज़त बनी रहे । अगर दोनों[illegible] कोअी भी दल बुरा काम करे, तो मैं अुसके मुँह पर यह बात क[illegible] हिचकिचाअूँगा नहीं । अिसमें मित्रताका सुख और कर्त्तव्य है । [illegible] जीवनभर लड़ता रहा हूँ, और अपने आख़िरी दम तक मैं ज़ुल्म और अन्यायके ख़िलाफ़ लड़ता रहूँगा, फिर अन्याय करनेवाला कोअी [illegible] क्यों न हो ?

"आपको याद होगा कि ख़िलाफ़त आन्दोलनके दिनोंमें मैंने पूर्वी बंगालका दौरा किया था । वह हिन्दू-मुस्लिम अेकताका ज़माना था[illegible] अुस वक़्त हिन्दू-मुसलमान दोनों कांग्रेसको अपनी कहनेका दा[illegible] करते थे — दोनोंमें अिसके लिअे होड़ लगती थी । कांग्रेस तो सब[illegible] है । लेकिन अिस बार मैं एक कांग्रेसीके नाते पूरबी बंगाल नहीं [illegible] रहा । मैं तो अेक ख़ुदाअी ख़िदमतगारकी तरह ही वहाँ जा रहा हूँ[illegible] अगर मैं अत्याचारोंका शिकार बनी हुअी नोआखालीकी बहनोंके आँ[illegible] पोंछ सका, तो अुससे मुझे ज़्यादा सन्तोष होगा ।

"हम हिन्दू हों या मुसलमान, सभी हिन्दुस्तानी हैं । आ[illegible] हिन्दुस्तानमें हम अेक-दूसरेके दुश्मन बनकर नहीं रह सकते । [illegible] आपसमें दोस्त और भाअी बनकर ही रहना चाहिये । नोआख[illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...में वहाँ तब तक ठहरूँगा, जब तक वहाँके हिन्दू और मुसलमान ...की तरह फिर सगे भाओी-से बनकर रहने न लगें। अुन्हें हमेशा ...यही सम्बन्ध बनाये रखना चाहिये।

"मुझे अुम्मीद है कि मेरे अिस दौरेका अच्छा असर पड़ेगा, ...हिन्दुओं व मुसलमानोंके बीच ख़िलाफ़तके दिनोंकी अेकता फिर ...हो सकेगी। ख़िलाफ़तके दिनोंमें हिन्दुस्तानके टुकड़े करनेकी ...कोओी कहता नहीं था। लेकिन आज अैसी बातें कही जा रही ...मान लीजिये कि हिन्दुस्तानके टुकड़े करना अिष्ट हो, तो भी ...मक़सद अिस तरीक़ेसे हासिल नहीं किया जा सकता। जिनका ...मसलेसे ताल्लुक़ है, अुनमें आपसी मेल और मुहब्बत न हो, तो यह ...टिक नहीं सकती। बंगालके वज़ीरोंने मुझे यक़ीन दिलाया है ...मुसलमान ज़ोर-ज़बरदस्तीसे पाकिस्तान नहीं लेना चाहते।"

...गोआलन्दोमें गांधीजी स्टीमर पर सवार हुअे और पद्मा नदीका ...मीलका रास्ता तय करके शामको चाँदपुर पहुँचे। बुज़ुर्ग ...स्व० बाबू हरदयाल नागके जन्मस्थान चाँदपुरको देखकर ...पुरानी यादें ताज़ा हो अुठीं। यहाँ मुस्लिम लीगियों और ...के दो डेपुटेशन गांधीजीसे मिले। लेकिन अिन मुलाक़ातोंका ...बयान तो मुझे अपने अगले ख़त तक मौक़ूफ़ रखना होगा। दो ...दिनको गांधीजीकी पार्टी चौमुहानी पहुँची। गांधीजीने फ़िलहाल ...अपना सदर मुक़ाम बनाया है।

सब रोगोंका अिलाज

...नामके गाँवमें दंगेकी वजहसे बे-घर-बार हुअे लोगोंकी ...है। रेलवे प्लेटफ़ॉर्म पर जो लोग गांधीजीका दर्शन करने ...अुनकी तक़रीर सुननेके लिअे अिकट्ठा हुअे थे, अुनकी मारफ़त ...तक अपनी बात पहुँचानेके ख़यालसे गांधीजीने दो शब्द ...—"अिस बार मैं तूफ़ानी प्रचारके अिरादेसे यहाँ नहीं आया ...तो आपका ही बनकर आप लोगोंके साथ रहनेके लिअे ...आया हूँ। मुझमें संकुचित प्रान्तीयता नहीं। मैं तो हिन्दुस्तानी ...दावा करता हूँ, अिसलिअे गुजराती होते हुअे भी मैं बंगाली ...हूँ। मैंने मन-ही-मन यह अहद कर लिया है कि जब तक ...बैर और दुश्मनीको हमेशाके लिअे दफ़ना नहीं दिया जाता, ...जब तक अिक्की-दुक्की हिन्दू लड़की मुसलमानोंके बीच ...घूमने-फिरने नहीं लगती, तब तक मैं यहीं रहूँगा और ज़रूरत ...तो यहीं मरूँगा।"

गांधीजीने आगे कहा —"अगर आप अपने दिलसे डरको ...दूर कर दें, तो मैं कहूँगा कि आपने मेरी बहुत मदद की। लेकिन ...कौनसी जादूअी चीज़ है, जो आपके अिस डरको भगा सकती ...? वह है, रामनामका अमोघ मंत्र। शायद आप कहेंगे कि ...रामनाममें आपको विश्वास नहीं। आप अुसे नहीं जानते, लेकिन ...अुसके बग़ैर आप अेक साँस भी नहीं ले सकते। अुसे आप चाहे ...अीश्वर कहिये, अल्लाह कहिये, गॉड कहिये, या यहुरमज़्द कहिये। ...दुनियामें जितने अिनसान हैं, अुतने ही अुसके बेशुमार नाम हैं। ...दुनियामें अुसके जैसा दूसरा कोओी नहीं। वही अेक महान् है, विभु ...है। दुनियामें अुससे बड़ा और कोओी नहीं। वह अनादि, अनन्त, ...निरंजन और निराकार है। मेरा राम अैसा है। अेक वही मेरा ...स्वामी और मालिक है।"

गांधीजीने रुँधे हुअे कंठसे अिस बातका ज़िक्र किया कि ...बचपनमें वे बहुत डरपोक थे, और परछाँहीसे भी डरा करते थे। अुन ...को अुनकी आया रम्भाने अुन्हें डर भगानेके लिअे रामनामका ...मंत्र सिखाया था। गांधीजीने कहा — "रम्भा मुझसे कहती —'जब ...डर मालूम हो, रामका नाम लिया करो। वह तुम्हारी रक्षा करेगा'। ...अुस दिनसे रामनाम सब तरहके डरोंके लिअे मेरा अचूक सहारा ...बन गया है।

"राम पवित्र लोगोंके दिलमें हमेशा रहता है। जिस तरह बंगालमें श्री चैतन्य और श्री रामकृष्णका नाम मशहूर है, अुसी तरह काश्मीरसे कन्याकुमारी तक हरअेक हिन्दू घर जिनके नामसे वाक़िफ़ है, अुन भक्त-शिरोमणि तुलसीदासने अपने अमर महाकाव्य रामायणमें हमको रामनामका मंत्र दिया है। अगर आप रामनामसे डरकर चलें, तो दुनियामें आपको, क्या राजा क्या रंक, किसीसे डरनेकी ज़रूरत न रह जाय। 'अल्लाहो अकबर' की पुकारोंसे आपको क्यों डरना चाहिये? अिस्लामका अल्लाह तो बेगुनाहोंकी हिफ़ाज़त करनेवाला है। पूरबी बंगालमें जो वारदातें हुअी हैं, पैग़म्बर साहबका अिस्लाम अुन्हें मंज़ूर नहीं करता।

"अगर अीश्वरमें आपकी श्रद्धा है, तो किसकी ताक़त है कि आपकी औरतों और लड़कियोंकी अिज़्ज़त पर हाथ डाले? अिसलिअे मुझे अुम्मीद है कि आप लोग मुसलमानोंसे डरना छोड़ देंगे। अगर आप रामनाममें विश्वास करते हैं, तो आपको पूरबी बंगाल छोड़नेकी बात नहीं सोचनी चाहिये। जहाँ आप पैदा हुअे और पले-पुसे, वहीं आपको रहना चाहिये और ज़रूरत पड़ने पर बहादुर मर्दों और औरतोंकी तरह अपनी आबरूकी हिफ़ाज़त करते हुअे वहीं मर जाना चाहिये। ख़तरेका सामना करनेके बदले अुससे दूर भागना अुस श्रद्धासे अिनकार करना है, जो मनुष्यकी मनुष्य पर, अीश्वर पर और अपने-आप पर रहती है। अपनी श्रद्धाका अैसा दिवाला निकालनेसे बेहतर तो यह है कि अिनसान डूब कर मर जाय।

"पुलिस और फ़ौजकी हिफ़ाज़तमें ही आप अपनी ख़ैर क्यों महसूस करें? अगर आप फ़ौजियोंसे पूछें, तो वे भी आपसे यही कहेंगे कि 'अीश्वर' अुनका रक्षक है। अिसलिअे मैं चाहता हूँ कि आप शमसुद्दीन साहबसे यह कह दें कि —'पुलिस और फ़ौजकी हिफ़ाज़तकी हमें कोओी ज़रूरत नहीं। आप अुन्हें यहाँसे हटा सकते हैं। हम तो अुस अीश्वरकी हिफ़ाज़तमें रहना पसन्द करेंगे, जिसकी रक्षा या हिफ़ाज़त सब कोओी चाहते हैं'।"

चौमुहानी

मामूली तौर पर चौमुहानीकी आबादी ५,०००से ज़्यादा की नहीं। लेकिन गांधीजीके यहाँ आनेके पहले दिन हिन्दू विद्या-मन्दिरके अहातेमें शामकी जो प्रार्थना-सभा हुअी, अुसमें क़रीब १५ हज़ार लोगोंका मजमा अिकट्ठा हुआ था। चौमुहानीके आस-पासके गाँवोंसे लोग बड़ी तादादमें आये थे। अुनमें क़रीब ८०फ़ीसदी मुसलमान थे। यह क़स्बा ख़ुद तो बुरी-से-बुरी साम्प्रदायिक ज़्यादतियों और ज़ुल्मोंसे बचा रहा, लेकिन अिसके आस-पासका सारा हल्क़ा दंगोंकी आगसे सुलगता रहा। प्रार्थनाके बाद गांधीजी क़रीब २० मिनट तक बोले, और अिस दरमियान अुन्होंने अपने दिलका सारा दर्द सभामें आये हुअे लोगोंके, और ख़ासकर मुसलमानोंके, सामने अुँड़ेला। अुन्होंने कहा — "आपको याद होगा कि ख़िलाफ़त आन्दोलनके दिनोंमें अली भाअियोंके साथ मैं पूरबी बंगालमें घूमा था। अुन दिनों मुसलमान मेरी हर बातको सही मानते थे। जब अली भाओी औरतोंकी मीटिंगमें जाते, तो अपनी आँखों पर पट्टी बाँध लेते थे। लेकिन मुझे खुली आँखों जाने दिया जाता था। भला, अपनी माँ-बहनोंके पास जाते वक़्त मैं अपनी आँखों पर पट्टी क्यों बाँधूँ? मैं नहीं चाहता था कि मैं परदानशीन औरतोंके बीच जाअूँ। लेकिन अली भाअियोंकी ज़िद थी कि मुझे जाना चाहिये। बहनें मुझसे मिलनेको अुत्सुक थीं, और अुन्हें अिस बातका यक़ीन था कि मेरी सलाहसे अुनका भला होगा। दक्खिनी अफ्रीकामें मैं २० बरससे भी ज़्यादा वक़्त तक मुसलमान दोस्तोंके बीच रहा हूँ। वे मुझे अपने घरका ही आदमी समझते थे, और अपनी पत्नियों और बहनोंसे कहते थे कि वे मुझसे परदा न किया करें। मैं अिंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टरी पास कर आया था, लेकिन तोतेकी तरह क़ानूनकी जानकारी भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हासिल करनेवाले बैरिस्टरकी क़ीमत ही क्या ? दक्खिनी अफ्रीकाने और वहाँ शुरू की गअी मेरी सत्याग्रहकी लड़ाअीने मुझे बनाया है। सत्याग्रह और सविनय-भंग या सिविल नाफ़रमानीके हथियार मुझे वहीं मिले थे।

"आज मैं भारी दिल लेकर आपके पास आया हूँ। भारतमाताने अैसे कौनसे पाप किये हैं कि अुसके हिन्दू और मुसलमान बच्चे आज आपसमें लड़ रहे हैं ? मुझे पता चला है कि आज पूरबी बंगालके कुछ हिस्सोंमें अेक भी हिन्दू औरत सुरक्षित नहीं है। जबसे मैं बंगाल आया हूँ, तभीसे मुसलमानोंके .जुल्मोंकी भयंकर कहानियाँ सुन रहा हूँ। आपके बड़े वज़ीर शहीद साहबने और शमसुद्दीन साहबने क़बूल किया है कि अिन अहवालोंमें कुछ सचाअी ज़रूर है।

"मैं हिन्दुओंको मुसलमानोंसे लड़नेके लिअे अुभाड़नेको यहाँ नहीं आया। मेरा कोअी दुश्मन नहीं। मैं ज़िन्दगीभर अंग्रेज़ोंके खिलाफ़ लड़ा हूँ। फिर भी वे मेरे दोस्त हैं। मैंने कभी अुनका बुरा नहीं चाहा।

".ख़ून, आग और लूट-मारकी बात तो दूर रही; मैंने सुना है कि यहाँ जबरन् लोगोंका दीन-धरम बदला गया, अुन्हें जबरदस्ती गायका गोश्त खिलाया गया, औरतों और लड़कियोंको भगाया गया, और मुसलमानोंके साथ जबरन् अुनकी शादियाँ की गअीं। मुसलमानोंने मूर्तियाँ तोड़ी हैं। मैं जानता हूँ कि मुसलमान मूर्ति-पूजा नहीं करते। मैं भी नहीं करता। लेकिन जो मूर्ति-पूजा करना चाहें, मुसलमान अुसमें रुकावट क्यों डालें ? ये बातें अिस्लामके नामपर कालिख पोतती हैं। मैंने कुरानशरीफ़को ग़ौरसे पढ़ा है। 'अिस्लाम' लफ़्ज़के मानी ही अमन या शान्तिके हैं। मुसलमान, हिन्दू या दूसरे किसीकी भी ख़ैरियत पूछनेके लिअे मुसलमानोंका अेक ही शब्द है — 'सलाम-अलैकुम'। नोआखाली और टिपरामें जो कुछ हुआ, अुसके लिअे अिस्लाम कहीं अिजाज़त नहीं देता। शहीद साहबने, सब वज़ीरोंने, और लीगी नेताओंने — जो मुझे कलकत्तेमें मिले थे — साफ़ लफ़्ज़ोंमें अैसे कामोंकी निन्दा की है। पूरबी बंगालमें मुसलमान अितनी बड़ी तादादमें रहते हैं कि मैं तो चाहूँगा कि वे कम तादादवाले हिन्दुओंके रक्षक बन जायँ। आपको हिन्दू औरतोंसे कह देना चाहिये कि आपके रहते किसीकी ताक़त नहीं, कि अुन्हें बुरी निगाहसे देखे।"

जब गांधीजीने अपनी तक़रीर ख़त्म की, तो नमाज़का वक़्त हो चुका था। हमेशाकी तरह अुनकी यह तक़रीर भी लोगोंको बँगला ज़बानमें समझाअी जानेवाली थी। लेकिन अितनेमें सभामें आये हुअे मुसलमानोंकी तरफ़से आवाज़ आअी कि थोड़ी देर सभाका काम रोक दिया जाय, ताकि वे नमाज़ पढ़ सकें और वक़्त पर बँगला तरजुमा सुननेके लिअे हाज़िर हो सकें। अैसा ही किया गया। अहातेके अेक कोनेमें नमाज़ पढ़ी गअी। अुसके बाद सबने आकर श्री सतीशबाबूसे गांधीजीके भाषणका बंगाली तरजुमा सुना।

अेक मुसलमानकी तक़रीर

दूसरे दिन प्रार्थनाके बाद शमसुद्दीन साहबने तक़रीर की। वे अपनी ज़ोरदार बँगलामें आध घण्टेसे भी ज़्यादा बोले। अुन्होंने सभामें आये हुअे लोगोंको चेतावनी देते हुअे कहा — "अगर पाकिस्तान या हिन्दुस्तानका सवाल मुस्लिम बहुमतवाले सूबोंमें हिन्दुओंको मार-कर या हिन्दू बहुमतवाले सूबोंमें मुसलमानोंको मारकर हल किया जायगा, तो न पाकिस्तान रहेगा और न हिन्दुस्तान — सिर्फ़ गुलामी ही रह जायगी। अगर नोआखालीके ७५ फ़ीसदी मुसलमान पाकिस्तान चाहते हैं, तो अुनका यह फ़र्ज़ हो जाता है कि वे अपने बीच रहनेवाले २५ फ़ीसदी हिन्दुओंको अुनके जान-मालकी हिफ़ाज़तकी गारण्टी दें। अपने फ़र्ज़को समझनेवाली कोअी भी सरकार चुप-चाप बैठकर यह नहीं देख सकती कि ज़्यादा तादादवाले लोग कम तादादवालों पर ज़ुल्म ढायें या अुन्हें जड़से मिटा दें। बंगालकी मुस्लिम लीगी सरकार या बिहारकी काँग्रेसी सरकार, अिन दोनों सूबोंमें पिछले दिनों जो कुछ हुआ, अुसे बरदाश्त नहीं कर सकती। बंगालमें मुसलमानोंने जो कुछ किया, अुसकी वजहसे मुस्लिम लीगी सरकारको पूरबी बंगालके शहरियोंके खिलाफ़ फ़ौजका अिस्तेमाल करना पड़ा, और वे सब कार्रवाअियाँ करनी पड़ीं, जो अिस सिलसिलेमें करनी पड़ती हैं। मुस्लिम लीगने आग, लूट-मार, लड़कियोंको भगाने, ज़बरन् अुनका धरम बदलने या ज़बरन् अुनकी शादियाँ करनेकी कभी अिजाज़त नहीं दी। यह सब अिस्लामके खिलाफ़ है। .क़ुरानमें साफ़ कहा गया है कि मज़हबके मामलेमें ज़बरदस्ती नहीं की जा सकती। मैं आप लोगोंसे यह कहने आया हूँ कि न तो ज़बरदस्ती किसीका धर्म बदला जा सकता है, और न ज़बरदस्तीकी शादी सच्ची शादी मानी जा सकती है। अिस तरह की गअी शादियों और धर्म-परिवर्तनके अिस तमाशेसे ज़्यादतीके शिकार बने लोगोंकी हैसियत में कोअी फ़र्क़ नहीं पड़ता। ज़ोर-ज़बरदस्तीसे किसी बातका फ़ैसला नहीं होता। अमेरिकाने अेटम-बम तैयार किया और अुसकी मददसे अपने दुश्मनोंको कुचल दिया। लेकिन क्या अिससे दुनियामें अमन या शान्ति क़ायम हो सकी है ? नोआखालीमें मुसलमानोंने हिन्दुओं पर ज़ुल्म ढाये हैं। चुनाँचे अुन्हें चाहिये कि वे अिस्लामके अुजले नाम पर लगे अिस दाग़को धो डालें। मैं नोआखालीके मुसलमानोंसे अपील करता हूँ कि वे हिन्दुओंको बेफ़िकर कर दें, और अुनमें अैसा विश्वास पैदा करें, जिससे वे अपने घरोंमें लौटकर अपने-आपको सहीसलामत महसूस कर सकें। आप अपनी तक़दीरको अुन गुण्डोंकी तक़दीरके साथ नहीं मिला सकते, जिन्हें अपने जुर्मोंकी सज़ा भुगतनी ही होगी। यहाँके मुसलमानोंका यह फ़र्ज़ है कि वे अुन गुण्डोंका पता लगाने और अुन्हें अदालतके सामने पेश करनेमें सरकारकी मदद करें। जो हुआ सो हुआ। लेकिन मुझे अुम्मीद है कि अिस भयंकर आगकी राखमेंसे ही बंगालमें हिन्दू-मुस्लिम अेकताकी पक्की अिमारत फिर खड़ी होगी।"

अुस रात शमसुद्दीन साहब कलकत्तेसे आये हुअे अपने साथियों और कुछ मुक़ामी मुस्लिम लीडरोंके साथ गांधीजीसे मिले और अुनके साथ बेआसरा लोगोंके सवाल पर, खासकर अुनके अपने-अपने गाँवोंको लौटनेके सवाल पर, चर्चा की। अुनमेंसे अेक दोस्तने सुझाया कि निराश्रित हिन्दुओंमें फिरसे विश्वास पैदा करनेके लिअे हिन्दू नेताओंको चाहिये कि वे मुसलमानोंकी अुस अपीलकी ताअीद करें, जिसमें निराश्रितोंसे अपने-अपने गाँवोंको लौट जानेकी प्रार्थना की गअी हो। गांधीजीने जवाब दिया — "हिन्दुओंके डर और अविश्वासका दूर करनेका यह सही रास्ता नहीं है। अुनका डर और अविश्वास वाजिब है। जब तक हर गाँवमें कम-से-कम अेक भला हिन्दू और अेक भला मुसलमान अैसा नहीं मिलता, जो हिन्दुओंके जान-मालकी हिफ़ाज़तकी गारण्टी दे और अुनके बालको आँच पहुँचनेसे पहले .ख़ुद अपनी जान .क़ुरबान करनेको तैयार हो, तब तक मैं हिन्दुओंको घर लौट जानेकी सलाह नहीं दे सकता। बंगालके वे मुस्लिम लीगी नेता, जो बंगाल सरकारके मेम्बर भी हैं, यह बता सकते हैं कि यहाँ अैसे लोग आगे आयेंगे या नहीं। नोआखालीमें जो कुछ हो चुका है, अुसके बाद लोगोंमें फिरसे विश्वास पैदा करनेका अिसके सिवा दूसरा कोअी रास्ता नहीं।" अुन सबने गांधीजीके सुझावके साथ अित्तफ़ाक़ किया और कहा कि वे अुस पर अमल करनेकी भरसक कोशिश करेंगे।

चौमुहानी, १०-११-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

विषय-सूची

		पृष्ठ
सच्चे दिलसे क़बूल कीजिये	... प्यारेलाल	४०१
नागरोंके स्वर	... काका कालेलकर	४०२
घुड़दौड़ और फुटबॉलका जुआ बन्द किया जाय	... वालजी गोविन्दजी देसाअी	४०३
पतिके लिअे कातनेवाली	... वालजी गोविन्दजी देसाअी	४०३
श्रद्धाका साहस	... प्यारेलाल	४०४
अकालसे लड़नेवाला अेक हिन्दुस्तानी गाँव	... हौरेस अलेक्जैण्डर	४०५
शराबबन्दीकी साखियाँ	... वालजी गोविन्दजी देसाअी	४०६
हफ़्तेवार ख़त	... प्यारेलाल	४०६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहला सबक़
पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

रजि॰ नं॰ बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १० — सम्पादक – प्यारेलाल — अंक ४३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता॰ १ दिसम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु॰ ६,
विदेशमें रु॰ ८; शि॰ १४; डॉलर ३

गांधीजीका अख़बारी बयान

श्रीरामपुरके लिअे रवाना होनेसे पहले गांधीजीने अख़बारोंको नीचे लिखा बयान दिया था —

आज मैं अतिशयोक्ति और असत्यके बीच घिर गया हूँ। मुझे खोजने पर भी सत्य कहीं मिल नहीं रहा। आपसी अविश्वासकी भावनाका भयंकर वातावरण बहुत घना हो अुठा है। बहुत पुरानी-पुरानी दोस्तियाँ भी टूट गअी हैं। जिस सत्य और अहिंसाका मैंने व्रत लिया है, और मेरे विचारमें जिन्होंने मुझे साठ साल तक पोसा और निबाहा है, अुनकी जिन .खूबियों या गुणोंका मुझे विश्वास था, आज वे दोनों मानो अपनी वे .खूबियाँ दिखा नहीं रहे हैं।

अिसलिअे अिन दोनोंकी या सच पूछो तो अपनी निजकी कसौटी करनेके ख़यालसे मैं आज अपने अुन सब साथियोंसे, जो पिछले कअी सालोंसे मेरे साथ रहते रहे हैं, और जिन्होंने मेरी ज़िन्दगीके बोझको हलका बनाया है, अलग होकर श्रीरामपुर नामके गाँवको जा रहा हूँ। प्रोफेसर निर्मलकुमार बसु मेरे बँगला-शिक्षक और दुभाषियेकी हैसियतसे मेरे साथ जा रहे हैं, और साथ ही पूरी-पूरी भक्तिसे, बिलकुल बेग़रज़ बनकर, चुपचाप मेरे स्टेनोग्राफरका और अैसा ही दूसरा काम करनेवाले भाअी परशुरामको मैं अपने साथ ले जा रहा हूँ।

जिन दूसरे सेवकों और सेविकाओंको मैं अपने साथ लाया हूँ, अुनमेंसे हरअेक, अगर मुमकिन हुआ तो, दोनों क़ौमोंके बीच सुलह और शान्ति क़ायम करनेके लिअे नोआखाली ज़िलेके दूसरे अलग-अलग गाँवोंमें जाकर रहेंगे। बदक़िस्मतीसे अेक नन्हीं आभाको छोड़कर अुनमें और कोअी बंगाली नहीं है। अिसलिअे जिस तरह प्रोफेसर निर्मलकुमार मेरे साथ मेरे बँगला-शिक्षक और दुभाषियेकी तरह जा रहे हैं, अुसी तरह अुनमेंसे हरअेकके साथ अेक-अेक बंगाली कार्यकर्त्ता बतौर बँगला-शिक्षक और दुभाषियेके जायगा।

गाँवोंके चुनाव और बँटवारेका काम खादी-प्रतिष्ठानके श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त करेंगे। मैं चाहता तो यह हूँ कि यहाँके किसी मुस्लिम लीगी परिवारके साथ अुसके घरमें रहूँ। यह मेरा आदर्श है। लेकिन मेरे ख़यालमें अुस मुबारक दिनके अिन्तज़ारमें मैं बैठा नहीं रह सकता। चुनाँचे मेरी अुम्मीदको पूरा करनेवाली अुस मुबारक घड़ीके आने तक मैं मुसलमानोंके गाँवोंमें जाकर अुनके साथ जितने ताल्लुक़ात पैदा कर सकूँ, करना चाहता हूँ। मुस्लिम लीगी सरकारके वज़ीरोंसे मैं यह दरख़्वास्त करता हूँ कि वे मुझे दंगोंके असरवाले गाँवोंमेंसे हरअेक गाँवमें अेक बहादुर और भले हिन्दूके साथ रहनेके लिअे वैसा ही अेक बहादुर और भला मुसलमान दें। और, ये दोनों अिस बातकी गारण्टी दें कि ज़रूरत पड़ने पर ये अपनी जान पर खेलकर भी गाँवमें वापस आने और बसनेवाले हिन्दुओंकी हिफ़ाज़त करेंगे। सचमुच मुझे यह क़बूल करते हुअे अफ़सोस होता है कि जब तक अैसा कोअी अिन्तज़ाम नहीं किया जाता, तब तक निराश्रितोंको वापस अपने-अपने गाँवमें जानेके लिअे समझाना मुझे मुश्किल मालूम होता है।

मुझे मिली हुअी रिपोर्टों और ख़बरोंकी बिना पर मैं यह महसूस करता हूँ कि आज अिन गाँवोंमें कम तादादवाली क़ौमकी ज़िन्दगी आसान और सलामत नहीं है। यही वजह है कि गाँव छोड़कर गये हुअे तमाम लोग अपने-अपने घरों, फ़सलोंसे लदे खेतों, बाड़ी-बगीचों और आस-पासके वातावरणसे बिछुड़कर सरकारकी तरफ़से मिलनेवाली नाकाफ़ी और अधूरी .खूराक पर जीना और दूसरी जगहोंमें रहना बेहतर समझते हैं।

बंगालसे बाहरके बहुतसे दोस्तोंने मुझे लिखा है कि वे शान्तिका काम करनेके लिअे यहाँ आना चाहते हैं। अुन्होंने अिसके लिअे मेरी अिजाज़त माँगी है; लेकिन मैंने सबको आग्रहपूर्वक यही सलाह दी है कि अभी कोअी यहाँ न आवें। जब अिस घने अँधेरेके बीच मैं कोअी प्रकाश देख सकूँगा, तो अुस वक़्त अुनका यहाँ आना मुझे अच्छा लगेगा।

अिस बीच हम दोनोंने, यानी मैंने और प्यारेलालजीने, 'हरिजन' और अुसके साथके दूसरे साप्ताहिकोंके भारी कामके साथ ही ख़तोकिताबतका और दूसरा सब काम फ़िलहाल बन्द किया है। मैंने श्री किशोरलाल, श्री काकासाहब, श्री विनोबा और श्री नरहरि परीखसे कहा है वे अिन पत्रोंके सम्पादनका काम मिलकर या अलग-अलग करें। अगर हमें अपने कामसे फ़ुरसत मिली, तो हम दोनों, प्यारेलालजी और मैं, अपने-अपने गाँवोंसे बीच-बीचमें कुछ मज़मून भेजते रहेंगे। ख़तोंके जवाब सेवाग्रामसे दिये जायँगे।

आज मेरे लिअे यह कहना मुश्किल है कि अैसी यह दुबधा कब तक रहेगी। फिर भी अितना मैं ज़रूर कहूँगा कि जब तक मुझे अिस बातका अितमीनान नहीं हो जाता कि दोनों क़ौमोंके बीच फिर अेतबार क़ायम हो चुका है, और दोनोंने फिर अपने-अपने गाँवोंमें अपना सादा, सरल और यकसाँ जीवन बिताना शुरू कर दिया है, तब तक मैं पूरबी बंगालसे नहीं हटूँगा। अगर यह हालत पैदा न हुअी, तो न पाकिस्तान रहेगा, न हिन्दुस्तान। आपसके झगड़ोंसे फटे-फूटे, बेज़ार बने और वहशियतमें डूबे हुअे हिन्दुस्तानके लिअे सिर्फ़ .गुलामी बची रहेगी।

अिधर अपनी जो .खूराक मैंने कम कर दी थी अुसकी वजहसे किसीको घबराना न चाहिये। डॉक्टर राजेन्द्रप्रसादकी तरफ़से मुझे नीचे लिखा तार मिला है —

"ख़त मिला। शान्तिकी ख़बर तारसे भेजी है। अेक हफ़्तेसे कोअी वारदात नहीं हुअी। हालत सन्तोषजनक है। दिली ख़्वाहिश है कि मामूली .खूराक फिर शुरू करें। अुन्नीसको दिल्ली जा रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अिस तारके मिलने पर कलसे मैंने बकरीका दूध फिर शुरू किया है। और जैसे-जैसे मेरी तबीयतको ठीक मालूम होगा, वैसे-वैसे मैं मामूली .खूराक लेना शुरू कर दूँगा। भविष्य भगवान्‌के हाथमें है।

क़ाज़ीरखिल, २०-११-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

हफ़्तेवार ख़त

आजकल नोआखाली ज़िलेमें जहाँ जाअिये वहीं नीलमकी तरह चमकनेवाले हरे-भरे धानके खेत दिखाअी पड़ते हैं। अिस साल जैसी अच्छी फ़सल आअी है, वैसी पिछले बारह बरसोंमें कभी नहीं आअी। लेकिन .कुदरतकी अिस अुदारताको अिनसानकी मज़ा लेनेवाली बेरहमी ने बेकार बना दिया है। धानकी बालें निकल आअी हैं और फ़सल अनक़रीब पकनेवाली है। लेकिन अुसके बोनेवालोंमेंसे कअी लोग अुसे काटने या अिकट्ठा करनेके लिअे वहाँ मौजूद नहीं हैं। अुनमेंसे कुछ मार डाले गये हैं। दूसरे अपनी सलामतीके लिअे भागकर बेआसरा लोगोंकी मुख़्तलिफ़ छावनियोंमें रहने लगे हैं।

गाँवोंसे भागे हुअे बे-घर-बार लोगोंको वापस अपने-अपने गाँवोंमें बसानेका सवाल सरकारी हाकिमों और राहत पहुँचानेवाली कअी संस्थाओंको परेशान कर रहा है। अगर वे जल्दी ही अपने घरोंको नहीं लौटे, ता मुमकिन है कि धान और सुपारीकी फ़सल अुनके हाथ न लगे, और अुनकी ग़ैरहाज़िरीमें दूसरे लोग अुस पर अपना क़ब्ज़ा कर लें। अिस सवालको हल करनेमें कअी मुश्किलें खड़ी हो रही हैं। निराश्रित अपना सब कुछ खो चुके हैं। अुनके लिअे रहनेको मकान भी नहीं हैं। वे पूछते हैं — "आख़िर हम कहाँ जायँ? हमारे पास न रहनेको मकान हैं, और न खाने-पीनेका कोअी ज़रिया।" अितने पर भी अगर वे अपने गाँवोंको लौट जायँ, तो अिसकी गारण्टी क्या कि वे वहाँ सही-सलामत रहेंगे? आज सब सवालोंका सवाल यह है कि लोगोंका डर कैसे दूर किया जाय, और अुनमें आपसी विश्वास और सद्‌भावना कैसे क़ायम की जाय।

गोपीरबागकी दर्दनाक वारदात

८ नवंबरको गांधीजी चौमुहानीसे मोटर पर सवार होकर गोपीरबाग पहुँचे। अुनके साथ पार्लमेण्टरी सेक्रेटरी जनाब नसरुल्ला साहब और अब्दुर रशीद साहबके अलावा नोआखाली ज़िलेके मजिस्ट्रेट मि॰ मैक्‌अिनरनी और पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट भी थे। यहाँ नारियल और सुपारीके पेड़ोंके घने झुरमुटके बीच — जिसके अूँचे सिरे अूपरसे मिले हुअे दिखाअी देते हैं — छिपी हुअी झोपड़ियोंके पाँच झुण्ड बिखरे पड़े हैं। अिन झोंपड़ियोंमें हिन्दू परिवार रहते थे। और, अुनके आसपास अुनसे क़रीब ५० गुनी ज़्यादा तादादमें मुसलमान परिवार बसे हुअे थे। अिन हिन्दू घरोंमेंसे अेक घर पटवारीका है। वहाँ नीले आसमानके नीचे केलके रेशमकी तरह चिकने और मुलायम पत्ते सुन्दर मेहराबोंकी शकलमें फैले हुअे थे। चारों तरफ़ .कुदरतकी .खूबसूरती छाअी हुअी थी। दिलको .खुश करनेवाली ताज़ा और ठण्डी हवा बह रही थी। लेकिन आँखोंको वहाँ अिनसानकी करतूतोंका जो नज़ारा देखनेको मिला, अुससे .खून खुश्क हो गया। वहाँ लोग क़त्ल किये गये थे, और घर जला डाले गये थे। पूजाकी जगह नापाक बना दी गअी थी। क़त्ल किये गये लोगोंकी लाशें अहातेके अेक कोनेमें अिकट्ठा करके जला दी गअी थीं। जो लोग कल तक जीते-जागते थे, अुन्हींकी यह राख आज कह रही थी कि यहाँ कैसी दर्दनाक वारदातें हो चुकी हैं। कुछ घरोंकी ड्योढ़ियों पर .खूनके दाग़ अभी तक मौजूद थे। शायद नक़द रक़म या जवाहरातकी खोजमें कअी घरोंके कच्चे फ़र्श खोद डाले गये थे। .खूनकी बदबू अभी तक वहाँ फैली हुअी थी। सारी जगह अुजाड़ और वीरान दिखाअी दे रही थी। पटवारीके परिवारकी तीन लड़कियाँ भगा ली गअी थीं, जिनमेंसे दो अभी तक ला-पता हैं।

दत्तपाड़ा

शामको लौटते वक़्त गांधीजी दत्तपाड़ाकी दीवानबाड़ीमें ठहर गये। अपनी होशियारी, सूझ-बूझ और .खुशक़िस्मतीसे दीवानजी-परिवारके लोग गोपीरबागके पटवारी-परिवारके जैसी बरबादीसे बच गये थे। आज वही जगह क़रीब ६ हज़ार निराश्रितोंकी छावनी बन गअी है। गांधीजीने यहाँ ज़िलेके हाकिमोंके साथ निराश्रितोंको वापस अुनके घरोंमें बसानेके बारेमें बातचीत की। अिस बातचीतमें शामिल होनेके लिअे मुक़ामी मुस्लिम लीगके कुछ मेम्बरोंको भी बुलाया गया था।

शामको हिन्दुओं और मुसलमानोंकी अेक मीटिंगमें तक़रीर करते हुअे गांधीजीने कहा — "हिन्दुओं और मुसलमानोंके लिअे यह शर्म की बात है कि हिन्दुओंको अिस तरह अपना घर-बार छोड़कर भागना पड़ा। मुसलमानोंके लिअे यह शर्मकी बात अिसलिअे है कि हिन्दू अुन्हींके डरसे अपने घर-बार छोड़कर भाग गये थे। अेक अिनसान दूसरे अिनसानमें डर क्यों पैदा करे? हिन्दुओंके लिअे भी यह कम शर्मकी बात नहीं कि वे अिस बुज़दिली भरे डरके सामने हिम्मत हार बैठे। मैं हमेशा यह कहता आया हूँ कि अिनसानको भगवान्‌के सिवा और किसीसे नहीं डरना चाहिये। मेरे साथके ये सभी सरकारी हाकिम आपके लिअे बहुत परेशान हैं। वे चाहते हैं कि भागे हुअे लोग अपने-अपने घरोंको लौट जायँ। किसी अेक जगहमें हज़ारोंके लिअे खाने–कपड़ेका अिन्तज़ाम करनेमें निराश्रतोंके साथ-साथ सरकारको भी कअी दिक़्क़तोंका सामना करना पड़ता है। सरकारी अफ़सर अिस बातके लिअे शरमिन्दा हैं कि अुनके हलक़ोंमें अैसी वारदातें हुअी हैं। मैं चाहता हूँ कि नोआखाली और टिपरामें जो कुछ हुआ है, अुसे आप भूल जायँ और माफ़ कर दें। अिसका यह मतलब नहीं कि आप बुज़दिल बन जायँ। लेकिन दिलको रंज पहुँचानेवाली गअी-गुज़री बातोंको याद करते रहनेसे भी कोअी खास फ़ायदा नहीं। मैं चाहता और मनाता हूँ कि अिन हलक़ोंके हिन्दू और मुसलमान अेक बार फिर अेक-दूसरेके दोस्त बन जायँ। मैं जानता हूँ कि हिन्दुओंको बहुत सहना पड़ा है, और आज भी अुनकी मुसीबतें ख़त्म नहीं हुअी हैं। मैं अुन्हें अुस वक़्त तक अपने-अपने घरोंको लौट जानेकी सलाह नहीं दूँगा, जब तक कम-से-कम अेक भला मुसलमान और अेक भला हिन्दू अुनके साथ जानेके लिअे आगे नहीं आता, और हरअेक गाँवमें अुनकी सलामतीकी गारण्टी नहीं देता। मुझे यक़ीन है कि अिन हलक़ोंमें बहुतसे अैसे भले हिन्दू और भले मुसलमान हैं, जो अिस बातकी गारण्टी देना चाहेंगे।"

सभामें बैठे हुअे अेक मुसलमान भाअीने कहा — "हम पहले ही हिन्दुओंको अिस बातका यक़ीन दिला चुके हैं कि हम अुनकी हिफ़ाज़त करेंगे, लेकिन वे हमारी सुनते ही नहीं।" गांधीजीने जवाब दिया — "आपको हिन्दुओंके अविश्वासकी वजहको समझने और अुसकी दाद देनेकी कोशिश करनी चाहिये, और अुनका डर दूर करना चाहिये।" अेक निराश्रित हिन्दूने अुठकर पूछा — "मुसलमानोंकी अिस गारण्टी पर हमें कैसे विश्वास हो सकता है? जब मुसीबतके बादल मँडरा रहे थे, तब भी मुसलमानोंने हमारी देख-भाल करनेका वादा किया था, लेकिन बादमें वे हमारी हिफ़ाज़त नहीं कर सके। अिसके अलावा, हम कहाँ जायँ और कहाँ रहें? हम अपना सब कुछ गवाँ चुके हैं। क्या हम वापस जंगलोंमें जायँ और रहें? और, जब अिससे पहले ५० भले मुसलमान हमारी हिफ़ाज़त नहीं कर सके, तो अब सिर्फ़ अेक भला मुसलमान हमें कैसे बचा सकता है?" गांधीजीने जवाब दिया — "जब आप अपने घरोंको लौट जायँगे, तो सरकार आपके मकान फिर बनवा देगी और आपके खाने-कपड़ेका अिन्तज़ाम भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगी । पिछले दिनों जो हुआ सो हुआ, लेकिन अब अगर अेक भला मुसलमान और अेक भला हिन्दू हर गाँवमें आप लोगोंकी सलामतीकी ज़िम्मेदारी ले लेता है, तो आपको किसी चीज़से डरना नहीं चाहिये । अगर अितने पर भी आप डरते हैं, तो आप बुज़दिल हैं, और बुज़दिलोंकी तो भगवान् भी मदद नहीं कर सकता ।"

दूसरे दिन गांधीजी अपनी छावनीको दत्तपाड़ा ले गये, ताकि वे दंगोंके शिकार बने भीतरी गाँवोंका भी दौरा कर सकें । शामकी प्रार्थनाके बाद अुन्होंने अेक बड़ी भारी सभाके सामने, जिसमें क़रीब ८० फ़ीसदी मुसलमान थे, अेक पुरदर्द तक़रीर की । गांधीजीकी यह तक़रीर लोगोंके दिलोंको छूनेवाली थी । अुन्होंने कहा — "भगवान्का नाम वह कीमिया है, जो सबको पवित्र बनाता है । वह लोहेको सोना बनानेवाले पारस पत्थरसे भी ज़्यादा पुरअसर है । आप अपने दिलोंको टटोलिये और मुझे बताअिये कि क्या सचमुच ही आप यह चाहते हैं कि हिन्दू वापस लौट आवें और आपके बीच आपके दोस्त और पड़ोसी बनकर रहने लगें । अगर आप चाहते हैं कि वे वापस आयें, तो आपको अुन्हें यह गारण्टी देनी चाहिये कि वे यहाँ अिज़्ज़तके साथ सही-सलामत रह सकेंगे । साथ ही, आपको अुन्हें अिस बातका यक़ीन दिलाना चाहिये कि आप अुनकी माँ-बहनों और लड़कियोंको अपनी माँ-बहनों और लड़कियोंकी तरह मानेंगे । अगर आप अैसा नहीं चाहते, तो मुझसे साफ़-साफ़ कह दीजिये, ताकि मैं अिन अभागे हिन्दुओंको सलाह दूँ कि वे पूरबी बंगाल छोड़कर चले जायँ । लेकिन मैं खुद तो अुस वक़्त तक आप लोगोंके साथ रहूँगा, जब तक आपके दिल पूरी तरह बदल नहीं जाते । यहाँ रहते हुअे मुझे आप जो देंगे, अुसी पर मैं अपनी ज़िन्दगी बसर करूँगा, और अगर ज़रूरत हुअी तो यहीं मरूँगा ।" 'हरिजनसेवक'के अिसी अंकमें दूसरी जगह यह तक़रीर ज्यों-की-त्यों दी गअी है ।

सभा ख़त्म होनेके बाद गांधीजीके सामने कअी लिखे हुअे सवाल पेश किये गये । अुनमेंसे अेक सवाल यह था — "जिन गुण्डोंने हमें सताया था, वे अभी तक पकड़े नहीं गये हैं । अैसी हालतमें हम अपने-अपने गाँवोंको लौटनेकी हिम्मत कैसे करें ?" गांधीजीने जवाब दिया — "सरकारका फ़र्ज़ है कि वह अुन गुण्डोंको गिरफ़्तार करे । लेकिन आपको मैं यह सलाह दूँगा कि अिस चीज़को आप सरकार पर छोड़ दें । वह अपना फ़र्ज़ अदा करेगी । अगर भले मुसलमान आपको सच्चे दिलसे वापस बुला रहे हैं, तो आपको चाहिये कि आप अपने-अपने गाँवोंको लौट जायँ ।"

और भी अन्दरके गाँवोंमें

११ नवम्बरको गांधीजीका मौन-दिन था । फिर भी अुस दिन अुन्होंने लखीमपुर थानेके नोआखोला, सोनाचक, और खिलपाड़ा गाँवोंका दौरा किया । अिस दौरेमें कहीं मोटरसे और कहीं किश्तियोंसे रास्ता तय किया गया । खालोंके पानीमें अितनी घनी घास जमी हुअी थी कि किश्तियाँ खेनेमें तकलीफ़ हुअी । कहा जाता है कि नोआखोला गाँवमें ८ शख़्स क़त्ल किये गये थे, जिनमें अेक १५ बरसका विद्यार्थी भी था । वारदातवाली जगहमें चार खोपड़ियाँ और जली हुअी हड्डियोंके बचेखुचे हिस्से चारों तरफ़ बिखरे पड़े थे । बस्तीके क़रीब-क़रीब सभी घर जला डाले गये थे । जिस घरमें वह १५ सालका लड़का मारा गया था, वहाँ अुसकी पढ़ाअीकी किताबें और हालकी लिखी हुअी कापियाँ अभी तक फ़र्श पर फैली पड़ी थीं । घरोंके आसपासके सुपारी और नारियलके पेड़ भी झुलस गये थे । कहा जाता है कि बचे हुअे लोगोंको मुसलमान बना डाला गया था । अुनमें अेक बहरा और गूँगा आदमी भी था । अुसकी चोटी काट दी गअी थी । वह अभी तक अुसे कपड़ेके अेक टुकड़ेमें जतनके साथ रक्खे हुअे था, और दयाजनक अिशारोंसे अुसे दिखाता था । गाँवमें कुछ औरतें भी बच गअी थीं । अुनका रोना-बिलखना सुनकर दिल फटा जाता था । सोनाचकमें अेक मन्दिर भ्रष्ट करके जला डाला गया था । तोड़ी हुअी मूर्तियाँ पग-डण्डियों पर और बरबाद किये गये मन्दिरोंके मलबेके नीचे दबी पड़ी थीं । अिस गाँवमें भी गांधीजीको बुरी तरह रोती-बिलखती औरतें मिलीं ।

अिन दर्दनाक नज़ारोंको देखकर गांधीजीके दिलको जो चोट पहुँची, अुसे अुन्होंने शामकी प्रार्थना-सभामें पढ़े गये अपने लिखित सन्देशमें यों प्रकट किया — "जहाँ कहीं मैं गया, मैंने जले हुअे मकान देखे, और लूट-मार की व ज़बरदस्ती दीन-धरम बदलनेकी कहानियाँ सुनीं । मुझे हिन्दू औरतोंकी माँगोंमें और अुनके कपाल पर न तो सिन्दूरका सोहाग-चिह्न नज़र आया, न अुनके हाथोंमें शंखकी चूड़ियाँ नज़र आअीं । काश, हमारे तमाम मुसलमान भाअी अिन .ज़ुल्मोंकी अेक आवाज़से निन्दा करें, ताकि हिन्दू लोग अपने घरोंको लौटकर अुसी तरह रहने लगें, जिस तरह वे दंगोंके पहले रहा करते थे ! मैं यह भी चाहूँगा कि हिन्दुओंके लौटनेसे पहले ही अुनके मकान फिर बनवा दिये जायँ । मुसलमानोंको अिस काममें मदद करनी चाहिये । मैं मानता हूँ कि .क़ुरानशरीफ़का भी यही आदेश है ।"

दूसरे दिनकी प्रार्थना-सभामें निराश्रित लोग ही ज़्यादा तादादमें आये थे । गांधीजी ने अुस दिन फिर गाँवोंमें लौटनेके सवालको अुठाया । अुन्होंने कहा — "यूनियन नंबर छहके वाअिस-प्रेसिडेण्ट मौलवी साहबने, जो मुझसे पहले आपके सामने तक़रीर कर चुके हैं, मुसलमानोंके नाम पर आप लोगोंसे अपील की है कि आप अपने-अपने घरोंको लौट जायँ । लेकिन जितनी आसानीसे यह बात कही जा सकती है, अुतनी आसानीसे की नहीं जा सकती । हर कोअी यह चाहता है कि दोनों जातियाँ फिर मिल-जुल कर अमन-चैनसे रहने लगें । अिसके लिअे यह ज़रूरी नहीं कि दोनोंका मज़हब भी अेक हो । मैंने यहाँ बरबादीके दिल दहलानेवाले नज़ारे देखे हैं । मैंने ज़ुल्मोंके शिकार बने लोगोंके भयभीत चेहरे देखे हैं । अेक बार ज़बरदस्ती अुनका धर्म बदला जा चुका है, और अुन्हें डर है कि फिर यही चीज़ की जायगी । मैं चाहता हूँ कि वे अपने अिस डरको दूर कर दें । बड़े-से-बड़े संकटमें भी जो लोग भगवान्का भजन नहीं छोड़ते, वे ही अिस दुनियामें जीने लायक़ हैं । राम-नामको छोड़नेकी बनिस्बत आपको मौतका सामना करना सीखना चाहिये । मुझे फ़ौज और पुलिसका कोअी मोह नहीं । पुलिसका काम चोरों और डाकुओंको पकड़ना है, और फ़ौजका काम आप लोगोंको बाहरी हमलोंसे बचानेका है । न पुलिस और न फ़ौज ही आपको यह सिखा सकती है कि आप आपसमें लड़ना छोड़ दें और अेक-दूसरेके दोस्त बनकर रहें । निराश्रितोंको फिर अुनके अपने गाँवोंमें बसानेकी यह स्कीम तभी कारगर हो सकती है, जब मुस्लिम लीग यहाँ शान्ति क़ायम करना चाहे और अिस काममें पूरा सहयोग दे । शमसुद्दीन साहब दो या तीन दिनमें यहाँ आनेवाले हैं । वे आपको बतायेंगे कि लीगी सरकार अिस मामलेमें क्या करना चाहती है ।"

गोमाटोली और नन्दीग्रामके दौरेके बाद गांधीजीका लखीमपुर थानेका प्रोग्राम ख़त्म हुआ ।

नन्दीग्राममें भी बरबादी और तबाहीका वही नज़ारा देखनेको मिला, जो नोआखोला और खिलपाड़ामें मिला था । क़रीब ६०० घर जला डाले गये थे । राख और मलबेके ढेरोंके बीच जहाँ-तहाँ जली हुअी और अैंठी हुअी टीनकी वे चादरें बिखरी पड़ी थीं, जो कभी घरोंकी छतोंमें लगी थीं । अेक स्कूल, अेक होस्टेल और अेक अस्पताल जलाकर ख़ाक कर दिये गये थे । सुपारी और नारियलके झुलसे हुअे पेड़ अिस आगकी गवाही दे रहे थे । यहाँ भी गाँवके अेक अिज़्ज़तदार घरका मन्दिर भ्रष्ट कर दिया गया था ।

अेक बे-दर्द मज़ाक

ता० १४को तीसरे पहर गांधीजी अपनी छावनी दत्तपाड़ासे अुठाकर क़ाज़ीरखिल ले गये । रास्तेमें वे शाहपुर ठहरे । वहाँ अेक

(पृष्ठ ४१५ पर)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

१ दिसम्बर १९४६

पहला सबक़

नोआखालीके जिला मजिस्ट्रेट मि० मैक्‌अिनरनीने दीवानबाड़ी (दत्तपाडा) में गांधीजीकी शामकी प्रार्थना-सभामें तक़रीर करते हुअे अेक छोटी मगर बड़े मतलबकी बात कही। अुन्होंने कहा — "भूकंप, बाढ़ या महामारी वग़ैरा .क़ुदरती मुसीबतोंके बाद, जिनमें बड़ी तादादमें लोगोंके जान-मालको नुक़सान पहुँचता है, मुसीबतके शिकार बने लोगोंको फिरसे बसाने और अुन्हें राहत व मदद पहुँचानेके लिअे जिस तरह पहली जरूरत खाने, कपड़े, आसरे और आवश्यक दवा-दारूकी पड़ती है, अुसी तरह दंगोंके बाद भी ये चीज़ें ज़रूरी होती हैं। लेकिन अिनसे कहीं ज़्यादा जरूरी चीज़ हिम्मत है, जो तमाम .ख़ूबियोंकी जड़ है। आजकी अिस घड़ी में गांधीजीके नोआखाली आनेसे बढ़कर मौक़ेकी बात और क्या हो सकती थी? क्योंकि चावल या राहतकी दूसरी चीज़ोंकी तरह हिम्मत बाँटी नहीं जा सकती। अुसे तो दिलके अन्दरसे जगाना पड़ता है, और दूसरा अैसा कौन है, जो अिस कामको गांधीजीसे ज़्यादा अच्छी तरह कर सके?"

अेक ही रास्ता

मि० मैक्‌अिनरनीको अुस वक़्त यह ख़याल तक न आया होगा कि टिपरा जिलेमें क़दम रखनेके पहले ही गांधीजी अिस बारेमें अपना काम शुरू कर चुके थे। जब ७ नवंबरको सुबह 'कीवी' स्टीमरके भोजनालयमें स्व० बाबू हरदयाल नागके पुत्रके साथ २०-२५ कार्यकर्त्ता और राहत पहुँचानेवाली मुख़्तलिफ़ संस्थाओंके बहुतसे नुमाअिन्दे गांधीजीसे मिले, तो वहाँ अुन्होंने सबको पहला सबक़ सिखाया। गांधीजीने अुनसे कहा — "मेरी समझमें नहीं आता कि कैसे किसी अेक भी आदमीका दीन-धरम जबरन् बदला जा सकता है, या कैसे किसी अेक भी औरतको जबरदस्ती भगाया या बेअिज़्ज़त किया जा सकता है। जब तक हम यह मानते रहेंगे कि हमारी अैसी बेअिज़्ज़ती की जा सकती है, तब तक लोग अिस तरह हमारी बेअिज़्ज़ती करते ही रहेंगे। अगर हम यह कहते हैं कि पुलिस या फ़ौज की हिफ़ाज़तके बिना हमारा काम ही नहीं चल सकता, तो हम लड़ाअीके शुरू होनेसे पहले ही अपनी हार मान लेते हैं। दुनियाकी कोअी पुलिस या फ़ौज बुज़दिल लोगोंकी हिफ़ाज़त नहीं कर सकती। आज आप कहते हैं कि जब हजारों लोग मुट्ठीभर लोगोंको बुरी तरह सता रहे हों, तब ये मुट्ठीभर लोग क्या करें? अगर लाखों लोग अपनेको लाचार समझने लगें, ता अुन्हें डराने और सतानेके लिअे चन्द लोग भी काफ़ी होंगे। आज आप अपनी कम तादादकी वजहसे मुसीबत नहीं अुठा रहे हैं, आपकी सारी मुसीबतोंकी जड़ तो आपकी लाचारी और दूसरोंके भरोसे जीनेकी आपकी आदत ही है। अिसका अिलाज आपके हाथमें है। अिसीलिअे मैं आपके अिस विचारके ख़िलाफ़ हूँ कि आप सब पूरबी बंगाल खाली करके चले जायँ। नामरदी या लाचारीका यह कोअी अिलाज नहीं।"

मुलाक़ातियोंने कहा—"पूरबी बंगालके हिन्दू भी अिसके ख़िलाफ़ हैं।"

अिस पर गांधीजीने कहा — "हाँ, अुन्हें यहाँसे जाना नहीं चाहिये। अगर मैं कहूँ कि आज २० हजार हट्टे-कट्टे आदमी अहिंसक तरीक़ेसे बहादुरोंकी तरह मरनेको तैयार हो सकते हैं, तो मुमकिन है, दुनिया अिसे अेक ख़याली चीज़ समझे। लेकिन अगर २० हजारकी आबादीमेंसे हरअेक हट्टा-कट्टा आदमी बहादुर सिपाहियोंकी तरह खुली लड़ाअीमें लड़कर मर जाय, तो दुनिया अुसे ख़याली चीज़ नहीं समझेगी। थर्मापोलीका अितिहास रचनेवाले लिओनिडासके ५०० अमर लड़वैयोंकी तरह वे भी हिन्दुस्तानकी तवारीख़में अमर हो जायँगे।"

यहाँ गांधीजीने थर्मापोलीके वीरोंकी क़ब्र पर अुनकी यादमें लिखी गअीं ये शानदार सतरें सुनाअीं —

"अय मुसाफ़िर! स्पार्टासे कहना कि यहाँ अुसके सपूत दफ़नाये गये हैं; यही अुसका क़ानून था और हमने अुस क़ानून पर अमल किया था।"

झूठी पुकार

आगे चलकर गांधीजीने कहा — "मैं डंकेकी चोट आपसे कहता रहूँगा कि अिसी अेक शर्त पर आप पूरबी बंगालमें रह सकते हैं। आप चाहते हैं कि यहाँ मुस्लिमकी जगह हिन्दू अफ़सर, हिन्दू पुलिस और हिन्दू फ़ौज रक्खी जाय, लेकिन यह आपकी झूठी पुकार है। आप अिस बातको भूल जाते हैं कि पहले हिन्दू अफ़सर, हिन्दू पुलिस और हिन्दू फ़ौज भी लूटने, आग लगाने, औरतोंको भगाने और अुनको बेअिज़्ज़त करनेके काम कर चुकी है। मैं काठियावाड़में पैदा हुआ हूँ। वहाँ कअी छोटी-छोटी रियासतें हैं। मैं आपसे बयान नहीं कर सकता कि अिनसान किस हद तक नीचे गिर सकता है। वहाँ कुछ रियासतें अैसी हैं, जहाँ किसी औरतकी अिज़्ज़त सलामत नहीं, और ये राजा या नवाब कोअी गुण्डे नहीं, बल्कि बाक़ायदा राजगद्दी पर बैठाये गये लोग हैं।"

"ये व्यक्तिगत अनीतिकी बातें हुअीं। यहाँ यही चीज मजमूअी तौर पर और बहुत बड़े पैमाने पर की जा रही है।"

"लेकिन रियासतोंमें भी राजा अकेला नहीं होता। अुसके पीछे अुसकी छोटीसी रियासतके सारे तंत्रकी ताक़त होती है।"

धीरज कैसे बँधे?

"व्यभिचारी राजाकी तो अुसके दूसरे साथी भी निन्दा करते हैं। लेकिन यहाँके मुसलमान अैसे कामोंकी निन्दा नहीं करते।"

"जबसे मैं यहाँ आया हूँ, तबसे शहीद साहब और अुनके साथियोंके मुँहसे अैसे कामोंकी निन्दा-ही-निन्दा सुन रहा हूँ। मुमकिन है, निन्दाके ये शब्द सुनकर आपको संतोष हो। लेकिन अुन बदक़िस्मत बहनोंको तो अिससे कोअी तसल्ली नहीं हो सकती, जिनके घर अुजाड़े जा चुके हैं, जिन्हें भगाया गया है, जबरन् मुसलमान बनाया गया है, या मुसलमानोंसे जिनकी शादियाँ जबरदस्ती कराअी गअी हैं।"

फिर गांधीजीने जरा जोशमें आकर कहा — "हिन्दुओंके लिअे यह कितनी शर्मकी बात है! अिस्लामकी यह कितनी बड़ी तौहीन है। नहीं, मैं आपको चैनसे बैठने नहीं दूँगा। जल्दी ही आप अपने दिलमें यह कहने लगेंगे कि यह आदमी यहाँसे कब टलेगा? लेकिन मैं यों जानेवाला नहीं हूँ। मैं आपके बुलानेसे यहाँ नहीं आया। जिस तरह मैं अपनी अिच्छासे यहाँ आया हूँ, अुसी तरह जब पूरबी बंगालमें मेरा मिशन पूरा हो जायगा, तो आप सबकी दुआओंके साथ मैं खुद ही चला भी जाअूँगा।"

डेपुटेशनके अेक मेम्बरने कहा – "यह अुनकी पाकिस्तान-योजनाका अेक हिस्सा है।"

"नहीं, यह अुनका परले सिरेका पागलपन है, और अुन्होंने अिसे महसूस भी किया है। वे जल्दी ही अिस चीज़से अूब जायँगे। वे अूबने भी लगे हैं।"

"तो फिर वे यहाँ आकर बिगड़ीको बनाते क्यों नहीं?"

"वह वक़्त भी आयेगा। बीमारी तो नाज़ुक घड़ीकी निशानी है। बीमारके तन्दुरुस्त होनेसे पहले मर्ज दूर होना चाहिअे।"

आख़िरमें गांधीजीने गंभीर भावसे हँसते हुअे कहा — "आप जानते हैं न कि मैं क़ुदरती अिलाजमें विश्वास करता हूँ!" और डेपुटेशनके सब मेम्बर भी अुनके साथ हँस पड़े।

झूठी दलील

अेक दूसरे दोस्तने कहा — "लेकिन यहाँ पूरबी बंगालमें तो हम लोग समन्दरमें बूँदकी तरह हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांधीजीने जवाब दिया — "अगर पूरबी बंगालमें अेक ही हिन्दू रह जाय, तो भी मैं चाहूँगा कि वह हिम्मतके साथ मुसलमानोंके बीच जाकर रहे, और अुसे मरना ही पड़े, तो बहादुरकी तरह मरे। अुसे गुलामकी तरह रहने और जीनेसे साफ़ अिनकार कर देना चाहिये। हो सकता है कि बिना लड़े मरनेकी अहिंसक ताक़त अुसमें न हो, लेकिन अगर वह अुनके ज़ुल्मोंके सामने नहीं झुकता और मर्दकी तरह लड़ता हुआ मर जाता है, तो मुसलमान भी अुसकी तारीफ़ किये बिना नहीं रहेंगे। कोअी आदमी कितना ही बेरहम और संगदिल क्यों न हो, फिर भी बहादुर आदमीकी तो वह तारीफ़ ही करेगा। गुण्डेको हम जितना बुरा समझते हैं, दरअसल वह अुतना बुरा नहीं होता। अुसमें भी थोड़ी शराफ़त तो रहती ही है।"

जो भाअी सबके मुखिया बनकर यह बहस चला रहे थे, अुनका शक़ अभी तक दूर नहीं हुआ था। अुन्होंने कहा — "गुण्डेके सामने कोअी दलील काम नहीं करती।"

गांधीजीने जवाब दिया – "मगर वह बहादुरीकी दाद तो देता है। अगर वह आपको अपनेसे ज़्यादा बहादुर पायेगा, तो ज़रूर आपकी अिज़्ज़त करेगा।"

हथियारघरके हमलेकी परम्परा

गांधीजीने आगे कहा — "आप देखेंगे कि अपनी अिस बहसमें मैंने आपको कभी यह नहीं कहा कि आप हथियारोंका अिस्तेमाल करना छोड़ दें। मैं आपके लिअे हथियार मुहैया नहीं कर सकता।" और फिर अपने मुलाक़ातियोंको खिझाते हुअे अुन्होंने कहा — "चटगाँवके हथियारघर पर हमला करनेवाले लोगोंके लिअे हथियार मुहैया करना मेरा काम नहीं। अुनके निस्बत सबसे ज़्यादा अफ़सोसकी बात तो यह है कि वे अपनी तादाद भी नहीं बढ़ा सके। अुनकी बहादुरी लँगड़ी थी। वह अुन्हीं तक महदूद रही। दूसरोंपर अपना कोअी असर न डाल सकी।"

अिसपर चटगाँवके हथियारघर पर हमला करनेवाले लोगोंके बारेमें बहस छिड़ी।

डेपुटेशनके अेक मेम्बरने जवाब दिया — "जी हाँ, वह दूसरों पर अपना असर नहीं डाल सकी; क्योंकि अुसकी बहुत निन्दा की गअी थी।"

"निन्दा किसने की? शायद मैंने की हो — लेकिन वह अलग चीज़ है।"

"आम लोगोंने अुसकी निन्दा की। मैं ख़ुद चटगाँवके अुस हमलेमें शामिल था।"

"नहीं, आम लोगोंने अुसकी निन्दा नहीं की। शायद आप अुन लोगोंमेंसे नहीं हैं, वरना आप यहाँ आकर मुसलमानोंके ज़ुल्मों और हिन्दुओंकी लाचारी और बेबसीकी ये बातें न कहते। मेरे लिअे अिससे बढ़कर अफ़सोसकी बात और क्या हो सकती है कि अुनमेंसे अितने लोग नोआखालीकी दर्दनाक वारदातोंको जीते जी देखते हैं। चटगाँवके शस्त्रागार पर हमला करते वक़्त अुन्होंने जो निडरपन और हिम्मत दिखाअी थी, अगर वही निडरपन और हिम्मत अुन्होंने अिस संकटके मौक़े पर मौतका सामना करनेमें दिखाअी होती, तो अपनी अिस बहादुरी के लिअे तवारीख़में अुनका नाम अमर हो जाता। लेकिन आज तो अुन्होंने तवारीख़के पन्नेमें छोटेसे फ़ुटनोटकी ही जगह हासिल की है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, मैं आपसे यह नहीं कहता कि आप अभी अपने हथियारोंका अिस्तेमाल करना भूल जायँ या मेरे ढंगकी बहादुरीको अपना लें। अपने मामलेमें भी मैं अभी तक अुसका सबूत नहीं दे पाया हूँ। पूरबी बंगालमें अुसको कसौटी पर चढ़ानेके लिअे ही मैं यहाँ आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप बहादुरीको अुसके रूढ़ अर्थमें ही अपनायें। आपको अपने दूसरे भाअियों और बहनोंमें वह हिम्मत और निर्भयता पैदा करनी चाहिये, जिससे अपमान और बेअिज़्ज़तीको बरदाश्त कर लेनेके बजाय वे मौतका सामना करनेको तैयार हो सकें। पूरबी बंगालमें हिन्दू तभी रह सकते हैं, और किसी हालतमें नहीं। आख़िर मुसलमान हमारे ही भाअी-बन्द जो हैं।"

"यहाँ हर छह मुसलमानोंके पीछे अेक हिन्दू रहता है। अिस विषम हालतमें संकटोंका सामना करनेकी अुम्मीद आप हमसे कैसे रख सकते हैं?"

"जब हिन्दुस्तानमें अंग्रेज़ी हुकूमत क़ायम हुअी थी, तब ३३ करोड़ हिन्दुस्तानियोंके ख़िलाफ़ यूरोपियन सिपाहियोंकी तादाद सिर्फ़ ७० हज़ार थी।"

"हमारे पास हथियार नहीं हैं। और सरकार अपनी संगीनोंसे अुनकी मदद करती है।"

"दक्खिनी अफ्रीकामें हिन्दुस्तानियोंकी हालत अिससे कहीं ख़राब थी। वहाँ यूरोपियनों और हब्शियोंकी बहुत बड़ी आबादीके बीच सिर्फ़ मुट्ठीभर हिन्दुस्तानी रहते थे। यूरोपियनोंके पास हथियार थे। हम बिलकुल निहत्थे थे। अिसलिअे हमने सत्याग्रहका हथियार तैयार किया। आज दक्खिनी अफ्रीकाके गोरे वहाँके हिन्दुस्तानियोंकी अिज़्ज़त करते हैं। मगर हट्टे-कट्टे ज़ुलूकी आज वहाँ कोअी वक़्त नहीं।"

अिस पर अुन दोस्तने अख़ीरमें पूछा — "तो क्या हमें हथियारोंसे जैसे बन पड़े वैसे लड़ना चाहिये?"

गांधीजीने जवाब दिया — "जैसे-तैसे नहीं। हिंसाकी भी अपनी नीति होती है। जैसे, लाचार बूढ़ों, औरतों और बच्चोंको क़त्ल करना बहादुरी नहीं, बल्कि बदतर बुज़दिली है। बहादुरीका तो यह तक़ाज़ा है कि हम अपनी जान देकर भी अुनकी हिफ़ाज़त करें। अिस्लामकी पुरानी तवारीख़ बहादुरीकी अैसी मिसालोंसे भरी पड़ी है। और अुनकी बदौलत अिस्लामकी ताक़त घटनेके बजाय बढ़ी ही है।"

बहादुरी या बेरहमी?

"क्या आप हिन्दुओंको मुसलमानों पर हमला करनेकी अिजाज़त देंगे?"

"बिहारके लोगोंने हमला करके अपनेको और हिन्दुस्तानको दुनियाकी नज़रोंमें गिराया है। अुन्होंने हिन्दुस्तानकी आज़ादीको पीछे ढकेल दिया है। बिहारके बारेमें यह सब कहनेका मुझे हक़ है। अेक तरहसे मैं बंगालकी बनिस्बत बिहारको ज़्यादा अपना महसूस करता हूँ। क्योंकि ख़ुशक़िस्मतीसे चम्पारनमें मैं अहिंसक सत्याग्रहके अपने तरीक़ेको बहुत अच्छी तरहसे कामयाब करके दिखा सका था। मैंने लोगोंको यह कहते सुना है कि बिहारके अिस बदलेने मुसलमानोंका सारा जोश ठण्डा कर दिया है। अुनके कहनेका मतलब यह है कि अुसकी वजहसे मुसलमान अभी दब गये हैं। वे यह भूल जाते हैं कि ताली दो हाथसे बजती है। बिहारने ग़ुलामीकी हमारी ज़ंजीरमें अेक कड़ी और जोड़ दी है। अगर बिहारकी वारदातें दोहराअी गअीं, या बिहारकी ज़हनियत न सुधरी, तो आप मेरे अिन लफ़्ज़ोंको अपनी डायरीमें नोट कर सकते हैं कि — '**जल्दी ही हिन्दुस्तान दुनियाकी तीन बड़ी ताक़तोंके जुअेके नीचे चला जायगा, और शायद अुनमेंसे किसी अेकको यहाँका राज-काज चलानेकी सत्ता दे दी जायगी। आज बंगाल और बिहारमें हिन्दुस्तानकी आज़ादी दावँ पर लगी है।**' ब्रिटिश सरकारने हिन्दुस्तानकी हुकूमत कांग्रेसको अिसलिअे नहीं सौंपी कि अुसे कांग्रेससे कोअी मुहब्बत है; बल्कि अिस विश्वाससे सौंपी है कि कांग्रेस अुसका ठीक-ठीक और अच्छा अिस्तेमाल करेगी — अुससे कोअी नाजायज़ काम न लेगी। आज पं॰ जवाहरलाल नेहरूके पाँव तलेकी मिट्टी खिसक रही है। लेकिन वे अैसा होने न देंगे। अिसीलिअे वे आज बिहारमें हैं। अुन्होंने कहा है कि जब तक यहाँ मेरी ज़रूरत रहेगी, मैं यहीं रहूँगा।"

फिर बड़े दर्दके साथ अुन्होंने आगे कहा — "बिहारियोंने कायरोंका काम किया है। अगर आपको अपने हथियारोंका अिस्तेमाल करना ही पड़े, तो अुनका वाजिब अिस्तेमाल कीजिये। कमज़ोरों पर कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथियार न अुठाअिये । बिहारने अपने हथियारोंका सही अिस्तेमाल नहीं किया । अगर बिहारी पूरबी बंगालका बदला लेना चाहते थे, तो वे नोआखाली जाकर बहादुरोंकी तरह मर सकते थे । लेकिन अेक हज़ार हिन्दुओंका अपने बीच रहनेवाले मुट्ठीभर मुसलमान मर्दों, औरतों और बच्चों पर टूट पड़ना, कोअी बदला लेना नहीं, बल्कि निरी हैवानियत दिखाना है । बहादुरोंके हथियार कमज़ोरों और बेबसोंकी हिफ़ाज़तके लिअे होते हैं । अपने बीच रहनेवाले मुसलमानोंको अुनकी पूरी-पूरी सलामतीकी गारण्टी देकर ही बिहारके हिन्दू पूरबी बंगालके हिन्दुओंको अच्छी-से-अच्छी मदद पहुँचा सकते थे । अुनकी अिस मिसालका बंगालके मुसलमानों पर अच्छा असर पड़ता । और मुझे विश्वास है कि अिस मौजूदा पागलपनके दूर हो जाने पर बिहारके लोग अपने किये पर पछतायेंगे और अपनी जान देकर भी मुसलमानोंकी हिफ़ाज़त करेंगे । सो जो भी हो, अगर वे मुझे जिन्दा रखना चाहते हैं, तो अुन्हें मेरे प्राणोंकी यही क़ीमत चुकानी होगी ।"

अिस तरह यह पहला सबक़ ख़त्म हुआ ।

क़ाज़ीरखिल, १७–११–'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

दिलसे अपील

१० नवम्बरको दत्तपाड़ामें शामकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीने हिन्दुस्तानीमें जो तक़रीर की थी, वह नीचे दी जाती है—

"आप लोग मेरी बात मानें चाहे न मानें, मगर मैं आपको यक़ीन दिलाना चाहता हूँ कि मैं हिन्दू-मुसलमान दोनोंका सेवक हूँ । मैं पाकिस्तानकी मुख़ालिफ़त करनेके लिअे यहाँ नहीं आया । अगर टुकड़े-टुकड़े होना हिन्दुस्तानके भागमें ही बदा है, तो अुसे रोकनेकी सामर्थ्य मुझमें नहीं । लेकिन मैं आपसे अितना ज़रूर कहना चाहता हूँ कि पाकिस्तान ज़ोर-ज़बरदस्तीसे क़ायम नहीं किया जा सकता । जो भजन अभी यहाँ गाया गया था, अुसमें कविने अीश्वरको पारस पत्थरके समान बतलाया है । पारस पत्थरके बारेमें कहा जाता है कि वह लोहेको सोना बना देता है । लेकिन अैसा होना हमेशा अिष्ट नहीं । मसलन्, अगर रेलगाड़ीकी सारी पटरियाँ पारस पत्थरके छूनेसे सोना बन जायँ, तो रेलगाड़ियाँ अुनपर चल ही न सकेंगी । मगर कविका मतलब यह है कि अीश्वरका स्पर्श हमारी आत्मा या रूहको पाक करता है, अिसलिअे वह हमेशा ही अिष्ट है ।

"आत्माके मैलको जलाकर अुसे कुन्दन बनानेवाला वह पारस पत्थर हम सबके दिलमें मौजूद है । अपने मुसलमान भाअियोंसे मैं अितना ही कहना चाहता हूँ कि चाहे आप हिन्दुस्तानमें अेक प्रजा बनकर रहें, चाहे अलग होकर दो जुदी-जुदी प्रजाओंकी तरह रहें, हर हालतमें आपको चाहिअे कि आप हिन्दुओंको अपना दोस्त बनाकर रहें । अगर आप अैसा नहीं करना चाहते, तो आपको यह बात साफ़-साफ़ कह देनी चाहिये । अुस हालतमें मैं अपनी हार मंज़ूर कर लूँगा । ये निराश्रित हिन्दू हमेशा तो निराश्रित बनकर नहीं रह सकते न ? और, सरकार अुन्हें हमेशा खानेको थोड़े ही दे सकती है ? और खाना भी अुनको कैसा मिलता है ? — अेक तन्दुरुस्त आदमीको ज़िन्दा रखनेके लिअे जितनी ख़ूराककी ज़रूरत है, अुसके आधेसे भी कम राशन अुनको दिया जाता है, और अुसके साथ अुन्हें मछली, साग-सब्ज़ी वग़ैरा कुछ भी नहीं दिया जाता । अिस तरह रहकर तो वे ज़्यादा दिनों तक जी नहीं सकते । अिसलिअे अगर मुसलमानभाअी अुन्हें अपने गाँवोंमें वापस जाने देना नहीं चाहते, तो अुन्हें कहीं दूसरी जगह जाकर रहना पड़ेगा ।

"लेकिन चाहे पूरबी बंगालका अेक-अेक हिन्दू बाहर चला जाय, फिर भी मैं तो यहाँके मुसलमानोंके साथ अकेला रहूँगा, और वे मुझे जो खानेको देंगे, और जो मैं खा सकूँगा, वही खाकर मैं अपना काम चलाअूँगा । मैं अपना खाना बाहरसे थोड़े ही लानेवाला हूँ ? मुझे मांस या मछलीकी ज़रूरत नहीं । मुझे तो सिर्फ़ थोड़े फल, हरी भाजी और थोड़ा बकरीका दूध चाहिये । बकरीका दूध और अनाज तो, जब अीश्वरकी मरज़ी होगी तभी मैं फिर लेना शुरू करूँगा । हिन्दुओंने बिहारमें जो कुछ किया, अुसका अुन्हें जब तक सच्चा पछतावा नहीं होता, तब तक मैं अनाज और दूध फिरसे लेना शुरू नहीं करूँगा ।

"अेक हज़ार हिन्दुओंका सौ मुसलमानोंको घेर लेना या अेक हज़ार मुसलमानोंका सौ हिन्दुओंको घेर लेना और अुन पर ज़ुल्म करना, बहादुरी नहीं, बुज़दिली है । अिन्साफ़की लड़ाअी तो यह है कि पहलेसे अित्तला कर दी जाय, और दोनों तरफ़ लड़ने-वालोंकी तादाद बराबर रखी जाय । अिसका यह मतलब नहीं कि अुनकी अैसी आपसकी लड़ाअीकी मैं ताअीद करता हूँ । कहा गया है कि हिन्दू और मुसलमान दोस्तोंकी तरह कभी अेक साथ नहीं रह सकते, और न वे मिलकर काम ही कर सकते हैं । कोअी भी यह बात मेरे गले अुतार नहीं सकता । लेकिन अगर आप अैसा मानते हैं, तो वैसा साफ़-साफ़ कह दीजिये । अुस हालतमें मैं हिन्दुओंको वापस लौटनेके लिअे नहीं कहूँगा । वे पूरबी बंगाल छोड़कर चले जायँगे । और यह हिन्दू-मुसलमान दोनोंके लिअे शर्मकी बात होगी । अगर अिसके बर-अक्स आप लोग यह चाहते हैं कि हिन्दू आपके बीचमें रहें, तो आपको अुनसे कहना चाहिअे कि वे अपनी हिफ़ाज़तके लिअे फ़ौजका मुँह ताकनेके बजाय अपने मुसलमान भाअियों पर भरोसा करें । हिन्दुओंकी लड़कियाँ, बहनें और मातायें आपकी अपनी लड़कियाँ, बहनें और मातायें हैं, और आपको अपनी जान पर खेलकर भी अुनकी हिफ़ाज़त करनी चाहिये । कल निराश्रितोंकी छावनीमें मैं अुनसे दो बात कह आया हूँ । अुसी वक़्त आपके ज़िला हाकिम मि० मैकअिनरनीने अुनसे कहा कि सभी अिनसान आदम और हौवाकी औलाद हैं, अिसलिअे वे अेक ही ख़ानदानके यानी भाअी-भाअी हैं — फिर चाहे वे किसी भी क़ौम या मज़हबके क्यों न हों । अिसलिअे आपको भाअियोंकी तरह ही भाअीचारेसे रहना चाहिये ।

"मैंने सुना है कि कल शामको प्रार्थना-सभा ख़त्म होने पर अेक आदमी अपने गाँवको लौटा था । लेकिन वहाँ अुसने अपने घरको मुसलमानोंसे घिरा पाया, और अुन लोगोंने अुसे अपनी जायदादका क़ब्ज़ा नहीं लेने दिया । अगर यह बात सच है, तो अैसी हालतमें मैं किसीको अपने घर वापस जानेके लिअे कैसे कह सकता हूँ ? मैंने जो कुछ कहा है, अुस पर आप सब गहराअीसे सोचिये और तब मुझसे कहिये कि आपका असली मंशा क्या है । अुसके मुताबिक़ मैं हिन्दुओंको सलाह दूँगा ।

"मुझसे कहा गया है, और मैं मानता भी हूँ कि बहुतसे भले मुसलमान हिन्दुओंको अपने गाँवोंमें वापस बुलानेके लिअे अुत्सुक हैं, लेकिन गुण्डे अुन्हें अैसा करने नहीं देते । मेरा आपसे यह कहना है, कि अगर सब भले मुसलमान अेक आवाज़से अपनी बात ज़ाहिर करें, और जो कहें वही कर दिखावें, तो अिन नामधारी गुण्डोंका कुछ भी न चले, और वे अपनी आदतें भी सुधार लें । क़ाज़ीरखिल, १६–११–'४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

हमारी लाहौर ब्रान्च

'हरिजनसेवक'के पढ़नेवाले मेहरबानी करके यह नोट कर लें कि हाल ही नवजीवन कार्यालयकी अेक शाखा (ब्रान्च) ब्राअिट व्यू बिल्डिंग, रॉयल पार्क, मैक्लिऑड रोड, लाहौरमें खोली गअी है । 'हरिजन' (अंग्रेज़ी), 'हरिजनबन्धु' (गुजराती), और 'हरिजनसेवक' (हिन्दी और अुर्दू)की कॉपियाँ अब लाहौरवालोंको वहींसे मिला करेंगी । 'शिक्षण अने साहित्य' नामका हमारा गुजराती मासिक और नवजीवन कार्यालयकी तरफ़से छपी हिन्दुस्तानी, गुजराती, मराठी, अुर्दू और अंग्रेज़ी किताबें भी वहींसे मिलेंगी । चारों साप्ताहिकों और मासिकका चन्दा भी वहीं लिया जायगा । अबसे आगे लाहौरमें 'हरिजन'की और अुसके दूसरे मुख़्तलिफ़ संस्करणों (अेडीशनों)की बिक्रीका सारा काम हमारी यह ब्रान्च ही करेगी ।

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवगढ़ बारियाके हरिजन

रेवाकाँठा अेजन्सीमें देवगढ़ बारिया नामकी अेक बड़ी देशी रियासत है। अिस रियासतकी हदमें कअी जंगल पड़ते हैं, और रियासतकी आबादीका ज़्यादा हिस्सा भील वग़ैरा पिछड़ी हुअी मानी जानेवाली जातोंका है। रियासतके गाँवोंमें प्राअिमरी तालीमका फैलाव करनेकी ग़रज़से रियासत अपने ख़र्चसे अेक काश्तकार – विद्यार्थी-छात्रावास चलाती है। अिस छात्रावास या बोर्डिंगहाअुसमें चौथी गुजराती तक पढ़े हुअे किसान लड़कोंको रहने और गुजरातीके सातवें दरजे तककी पढ़ाअी पूरी करनेकी सहूलियत दी जाती है। रियासतकी राजधानी देवगढ़ बारियामें वैष्णव संप्रदायके सेठोंका ज़ोर है। अुनकी नाराज़ी और नापसन्दगीकी वजहसे वहाँके हरिजन बच्चोंको गाँवके ख़ास प्राअिमरी स्कूलमें दाखिल नहीं कराया जा सका। लेकिन अिस मुश्किलसे नाअुम्मेद न होकर अेक वैष्णव वणिक नौजवानने रियासतकी फ़ौजी बस्तीमें चलनेवाले अेक दूसरे प्राअिमरी स्कूलमें पिछले डेढ़ सालसे १२ हरिजन लड़कोंको दाखिल किया है। अिस स्कूलमें फ़ौजमें नौकरी करनेवाले गुरखों, अूँची जातके हिन्दुओं और मुसलमानोंके बच्चोंके साथ हरिजन बच्चोंको दाखिल किया गया है, और अुसमें शिक्षकका काम भी अूँची जातके अेक भाअी करते हैं। अिस स्कूलको अैसी क़ामयाबीके साथ चलते देखकर ख़ुशी हुअी, और अिस तरफ़के हरिजन बच्चोंकी तालीमके लिअे बीचका रास्ता खोज निकालनेवाले नौजवानके लिअे दिलमें अिज़्ज़त पैदा हुअी।

पिछले दिनों गांधी-जयन्तीका जो हफ़्ता यहाँ मनाया गया था, अुस मौक़ेपर गाँवके कुछ नौजवानोंने हरिजनोंकी बस्तीमें भजन और संगीतका जलसा किया था, और अुसकी वजहसे कुछ बड़े-बूढ़ोंमें बेचैनी फैली थी। लेकिन बादमें समझौता हो गया।

रातको हमने भंगियोंकी अेक सभा करके अुनकी मुश्किलें समझनेकी कोशिश की। अुनकी शिकायतोंमें अेक शिकायत बहुत ही अफ़सोसनाक थी। और, वह यह थी कि गरमियोंमें जब भंगी अपनी नौकरी पर होते हैं, तब गाँवकी प्याअूसे या गाँवके घरोंसे, पानीके नलों पर भी कोअी अुन्हें अूपरसे पानी नहीं पिलाता; यही नहीं, बल्कि सवर्ण माने जानेवाले हिन्दू व्यापारी चीज़ोंके लेन-देनके वक़्त भी अुनके साथ नफ़रतका बरताव करते हैं। अिससे अुन्हें अपमान सहने और ताने सुनने पड़ते हैं।

हिन्दूधर्मी कहलानेवाले सवर्ण लोगोंके लिअे यह बहुत ही शर्मकी बात मानी जायगी। हरिजनोंकी अिस सभामें आये हुअे दो-चार सवर्ण भाअियोंने जब ये शिकायतें सुनीं, तो अुनके दिलको चोट पहुँची।

रियासतकी आमदनीमें आबकारी महकमेका भी ख़ासा हिस्सा रहता है। गाँवके अलग-अलग हलक़ोंमें हरिजन बस्तियोंका मुआयना करते वक़्त हमें हरअेक हलक़ेमें शराबके नशेमें पागल बने हुअे कअी ग़रीब लोग आते-जाते नज़र आये। हमने तीन फ़ौजियोंको भी अिसी हालतमें देखा, और देखा कि मानसरोवरके अेक घाट पर कुछ लोग शराबके नशेमें चूर अेक आदमीको अुठानेकी बेकार कोशिश कर रहे थे। हम बारियाके दीवानसे भी मिले थे। पिछड़ी हुअी जातियोंके सवालके साथ अुन्होंने अपनी हमदर्दी दिखाअी। राजा-प्रजा दोनोंको शराबबन्दीके अिस सवाल पर भी अमली तौर पर ग़ौर करना चाहिये।

परीक्षितलाल मजमूदार

[भाअी परीक्षितलालने अिस बयानमें अेक वैष्णव नौजवानकी कोशिशका जो ज़िक्र किया है, अुससे ख़ुशी होती है; मगर अफ़सोस अिस बातका है कि सवर्ण हिन्दू समाजका अेक बड़ा हिस्सा अभी तक धर्मके नामपर छुआछूतसे चिपटा हुआ है, और अपनी मनुष्यताको भुलाकर मनुष्य जैसे मनुष्यको ज़िन्दगीके लिअे निहायत ज़रूरी पानी-जैसी चीज़से महरूम रखनेकी हद तक जाता है। आज हिन्दू समाज बहुत बड़ी कसौटीमें से गुज़र रहा है। अिस कसौटी पर खरे अुतरनेका अेक ही अिलाज है, और वह यह है कि हिन्दू समाज अपने अंदर घुसकर बैठी हुअी बुराअियोंको चुन-चुनकर दूर करे। न० प०]
(गुजरातीसे)

हफ़्तेवार ख़त

(पृष्ठ ४११ से आगे)

आम सभा बुलाअी गअी थी। गांधीजीसे कहा गया था कि शाहपुरमें लोग बड़ी तादादमें अिकट्ठा होंगे। लेकिन किसीने यह अफ़वाह फैला दी थी कि गांधीजीके साथ सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस, ज़िला-मजिस्ट्रेट और हथियारबन्द पुलिसका अेक दस्ता रहेगा। ये लोग अिस मौक़ेसे फ़ायदा अुठाकर गिरफ़्तारियाँ करेंगे। नतीजा यह हुआ कि जब गांधीजी सभामें पहुँचे, तो वहाँ बहुत थोड़े लोग नज़र आये। अिस पर गांधीजीने कहा — "यह अेक क्रूर यानी बे-दर्द मज़ाक है। क्योंकि मैंने यह कभी नहीं चाहा कि पुलिस या ज़िलेका कोअी हाकिम मेरे साथ आये। लेकिन सरकारका कहना है कि वह मुझे बग़ैर पूरे अिन्तज़ामके कहीं जाने देनेका ख़तरा नहीं अुठा सकती।"

गांधीजीके सामने यह बात रखी गअी थी कि अगरचे यहाँके मुसलमान अपनी यह दिली ख़्वाहिश ज़ाहिर करते हैं कि यहाँ फिर अमन क़ायम हो, तो भी जब तक मुस्लिम लीगके नेता अुन्हें हुक्म न दें, वे अिस बारेमें कुछ करने या किसी तरहकी गारण्टी देनेके लिअे तैयार नहीं हैं। गांधीजीने अुनके अिस सुझावको वाजिब माना और क़ायदे-आज़म जिन्नाके अुस बयानका ज़िक्र किया, जिसे अुन्होंने अुस दिन सबेरे ही पढ़ा था। हालाँकि बयानकी हरअेक बात गांधीजीको पसंद न थी, फिर भी अुसकी कुछ बातें अैसी थीं, जो सबको जँचनी चाहियें। अुस बयानमें क़ायदे-आज़म जिन्नाने कहा था —"अगर मुसलमान अपना तौल खोकर बदला लेने पर अुतारू हो जाते हैं, और नैतिकताके अूँचे-से-अूँचे क़ायदों और अपने दीन-ओ-अिस्लामकी हिदायतोंके ख़िलाफ़ बरताव करते हैं, तो वे न सिर्फ़ पाकिस्तानके अपने दावेका हक़ खोते, बल्कि ख़ूँरेज़ी और बेदर्दीका अैसा कुटिल चक्कर शुरू कर देते हैं, जो हमारी आज़ादीके दिनको फ़ौरन ही बहुत दूर ठेल देगा, और हम ख़ुद अपनी ग़ुलामी और बेबसीके दिनोंको बढ़ानेमें ही मदद करेंगे।" अुन्होंने यह भी कहा था — "सियासी तौर पर हमें यह साबित कर देना चाहिये कि हम लोग बहादुर, अुदार और क़ाबिल-अितमीमान हैं, ... और यह कि पाकिस्तानी हलक़ोंमें अल्पसंख्यक जातियोंकी जान, जायदाद और अिज़्ज़त ख़ुद मुसलमानोंकी तरह, नहीं, अुनसे भी ज़्यादा सलामत रहेगी।" गांधीजीने कहा कि अगर क़ायदे-आज़म जिन्ना साहबके बयानका यह हिस्सा जाँच-पड़तालके बाद आपको सही जान पड़े, तो मैं चाहूँगा कि आप लोग अिस पर गहराअीसे सोचें। ख़ून-ख़राबी, लूटमार, आग, औरतोंको भगाना, ज़बरदस्ती अुनकी शादियाँ करना और ज़बरदस्ती लोगोंका धरम बदलना, ये सब अैसे काम हैं जिनकी वजहसे हिन्दुस्तानकी ग़ुलामीके दिन ही बढ़ेंगे। अगर आप आपसमें लड़ते रहे और अपनी हिफ़ाज़तके लिअे पुलिस और फ़ौजका मुँह ताकते रहे, तो आप तीसरी पार्टीको अपने पर हुकूमत करनेके लिअे अुकसायेंगे।"

दिलका दर्द

क़ाज़ीरखिलमें अेक खंडहर-से बने मकानमें गांधीजीके ठहरनेका अिन्तज़ाम किया गया है। गुण्डे अिस मकानको पूरी तरह जला नहीं सके थे। सतीश बाबूके कुछ साथियोंने पहलेसे वहाँ पहुँचकर मकानकी सफ़ाअीकी थी और अुसे रहने लायक़ बना दिया था। मकानके अहातेमें कुछ लोग प्रार्थनाके लिअे अिकट्ठा हो गये थे। पहले दिन प्रार्थनाके बाद तक़रीर करते हुअे गांधीजीने अुनसे कहा — "अपने आसपासके अिस क़ुदरती नज़ारेको देखकर मैं अितनी शान्ति महसूस करता हूँ कि जिसका बयान नहीं किया जा सकता, लेकिन यहाँके मर्दों और औरतोंके चेहरों पर मुझे वह शान्ति कहीं नज़र नहीं आती। और, जिन हालतोंमेंसे अुन्हें गुज़रना पड़ा है, अुनके बाद वे यहाँ शान्तिसे रह भी कैसे सकते हैं? मैं देखता हूँ कि मेरी और मेरे साथियोंकी हिफ़ाज़त करनेके लिअे यहाँ बहुतसे पहरेदार खड़े हैं। वे मुझे किनसे बचाना चाहते हैं? मैं अिस तरह किसीके पहरेमें जाने-आनेका आदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं । अिससे पहले मैं बंगालमें खुले तौर पर घूमा हूँ। लेकिन आज सूबेकी सरकार मुझे अैसा नहीं करने देती । मेरे लिअे यह अफ़सोस और शर्मकी बात है, और पूरबी बंगालके मुसलमानोंके लिअे तो यह मुझसे भी ज़्यादा शर्मकी बात होनी चाहिये ।

आगे चलकर गांधीजीने कहा — "यहाँ मदरसे और मन्दिर तक बरबाद कर दिये गये हैं । आपके वज़ीर शमसुद्दीन साहब अिस चीज़को पसन्द नहीं करते । पूरबी बंगालकी वारदातोंने अुनके दिलको गहरी चोट पहुँचाअी है । लोगोंके दिलोंसे नफ़रतका मैल छुड़ाना ज़रूरी है । अिसके लिअे मैं मुसलमान भाअियोंकी मदद और सहयोग चाहता हूँ।"

भाअीके हाथों भाअीका ख़ून

"अब तककी अपनी जिन्दगीमें भाअी-भाअीकी अिस ख़ूँरेज़ीसे बढ़कर डरावनी कोअी चीज़ मैंने कभी देखी नहीं । बीस साल तक दक्खिनी अफ्रीकामें और तीस साल तक यहाँ हिन्दुस्तानमें मैंने गहरी लड़ाअी लड़ी है । लेकिन आपसकी अिस मार-काटने मेरी अक़ल गुम कर दी है । दोनों क़ौमोंको फिरसे हिलमिलकर शान्तिपूर्वक रहनेके लिअे मैं किस तरह समझा सकता हूँ, अिस अेक सवालका हल ढूँढ़नेके लिअे ही मैं बंगाल आया हूँ । बंगाल अेक बड़ा सूबा है । अगर क़ौमी सवाल यहाँ हल कर लिया जाता है, तो वह दूसरी जगहोंमें भी हल हो जायगा । अगर मुझे यहाँ कामयाबी मिली, तो मैं बंगालसे नअी जिन्दगी लेकर लौटूँगा । और अगर कामयाब न हुआ, तो मैं चाहूँगा कि अीश्वर मुझे अिस दुनियासे अुठा ले । मैं खाली हाथ बंगाल छोड़ना नहीं चाहता । मेरे शब्दकोशमें 'नाअुम्मेदी' शब्द कहीं न मिलेगा ।"

गांधीजीने आगे और कहा — "बंगालमें मुसलमानोंने हिन्दुओंको कसाअीकी तरह क़त्ल किया और कसाअीपनसे भी बदतर काम किये । अुधर बिहारमें हिन्दुओंने भी मुसलमानोंको अुसी तरह क़त्ल किया । जब दोनोंने ही दुष्टताके काम किये हैं, तब दोनोंकी करतूतोंका मुक़ाबला करना या यह कहना फ़जूल है कि अेक दल दूसरे दलसे कम बुरा है । अिसी तरह यह पूछनेमें भी कोअी सार नहीं कि पहले दंगा किसने शुरू किया था । अगर आप बदला लेना चाहते हैं, तो अुसकी कला मुझसे सीखिये । मैं भी बदला लेता हूँ, मगर वह दूसरे क़िस्मका होता है । अपने बचपनमें मैंने अेक गुजराती कविता पढ़ी थी, जिसमें कहा गया था कि 'जो तुम्हें अेक गिलास पानी देता है, अुसे दो गिलास पानी देनेमें कोअी बड़ाअी नहीं । सच्ची बड़ाअी तो अिसमें है कि तुम अपना बुरा करनेवालेके साथ भी भला करो' । अिसे मैं अूँचे दरजेका बदला मानता हूँ ।

"मैंने पुराने ख़लीफ़ाओंमेंसे किसी ख़लीफ़ाकी अेक कहानी पढ़ी थी । किसी आदमीने ख़लीफ़ा पर तलवारसे वार किया । ख़लीफ़ाने हमला-आवरके हाथसे तलवार छीन ली और वे अुसे मारना ही चाहते थे कि अुसने ख़लीफ़ाके चेहरे पर थूक दिया । अिसपर ख़लीफ़ाने अुसको बिना मारे जाने दिया, क्योंकि अिस बेअिज़्ज़तीने अुनके दिलमें जाती ग़ुस्सा पैदा कर दिया था । अिसका अुस घातक पर बड़ा असर पड़ा और वह मुसलमान बन गया । जो जबरदस्तीसे मुसलमान बनाया जाता है, वह आदमी नहीं रह जाता । डरके मारे कलमा पढ़नेका कोअी मतलब नहीं ।"

दिल टटोलिये

१५ नवम्बरकी प्रार्थना-सभा रामगंजमें स्कूलके सामनेवाले मैदानमें हुअी । प्रार्थनाके बादकी अपनी तक़रीरमें गांधीजीने पिछले दिनकी अपनी अपीलको ही जोरदार लफ़्ज़ोंमें दुहराया । अुन्होंने कहा — "आजकल मैं दुःख-दर्द और आफ़त-मुसीबतके सिवा और कोअी बात आपको सुना नहीं सकता । जहाँ कहीं मैं गया हूँ, वहीं मैंने बरबादीके दिल दहलानेवाले नज़ारे देखे हैं । यह सब देखकर मेरी आँखोंके आँसू सूख गये हैं । जो खुद रोता है, वह दूसरोंके आँसू नहीं पोंछ सकता । लेकिन मेरा दिल तो रो ही रहा है । मैं यहाँ मुसलमानोंसे सीधी-सच्ची बातें सुननेकी अुम्मीद लेकर आया हूँ । मुझे यह भी अुम्मीद है कि वे अपने बुरे कामोंके लिअे पछतायेंगे, और हिन्दुओंसे प्रार्थना करेंगे कि वे अपने घर-बार छोड़कर कहीं न जायँ । अगर मुसलमानोंका यह पछतावा सच्चा होगा, तो हिन्दू अुनकी सचाअीको पहचान लेंगे, और फिर अुन पर अेतबार करने लगेंगे । लेकिन मैं देखता हूँ कि पूरबी बंगालके हिन्दुओं और मुसलमानोंको अेक-दूसरेके ख़िलाफ़ बुरी तरह भड़काया गया है । यहाँ मैं अिसकी तफ़सीलमें नहीं अुतरूँगा । लेकिन मुसलमान भाअी मुझे यह कहनेकी अिजाज़त देंगे कि जहाँ तक मुझे मालूम हुआ है, पूरबी बंगालमें मुसलमानोंने ही हिन्दुओं पर हमला किया है । हिन्दू अुनसे बुरी तरह डर गये हैं । चौमुहानीकी सभाओंमें मुसलमान काफ़ी बड़ी तादादमें, हिन्दुओंसे भी ज़्यादा तादादमें, शामिल हुअे थे । लेकिन मैं नहीं जानता कि दत्तपाड़ाकी पहली मीटिंगके बादसे वे मुझसे क्यों कतराने लगे हैं । अिससे मेरे दिलको चोट पहुँची है । मैं चाहता हूँ कि जो थोड़े मुसलमान आजकी मीटिंगमें हाज़िर हैं, वे मेरे सन्देशको अपने गैरहाज़िर भाअियों तक पहुँचायें । पिछले दिनों अेक मुसलमान बहन यहाँके मुस्लिम लीडरोंसे बराबर मिलती रही हैं । अुन्होंने मुझसे कहा — 'मुसलमानोंने साफ़ लफ़्ज़ोंमें मुझे बताया है कि लीगी लीडरोंकी अिजाज़तके बिना हम न तो हिन्दुओंको अपना दोस्त बनानेका वचन दे सकते हैं, और न गांधीजीकी सभाओंमें शरीक हो सकते हैं ।' यहाँके हिन्दू अभी तक अपने घर छोड़ कर भाग रहे हैं । अगर मुसलमान हिन्दुओंको यह विश्वास दिला दें कि हिन्दू अुनके पड़ौसी, दोस्त और भाअी हैं; वे सब अेक ही माँकी औलाद हैं; सब अेक ही हवामें साँस लेते और अेक ही पानी पीते हैं; हिन्दुओंको अुनसे जरा भी डरनेकी ज़रूरत नहीं, तो अुनकी यह हिजरत बन्द हो जाय, और भागे हुअे लोग भी अपने घरोंको लौट जायँ । जानवर भी अपनी भलाअी करनेवालोंके साथ दोस्ताना बरताव करते हैं । लेकिन आदमी तो भगवान्‌का ही अेक रूप है । अपनेको अिस विरासतके लायक़ साबित करनेके लिअे अिनसानको बुराअीके बदलेमें भलाअी करनी चाहिये । क़सूर किसीका भी क्यों न रहा हो, यह बात दोनों दलों पर अेकसी लागू होती है । मुसलमान लीगका हुक्म चाहते हैं, और मैं अिसे समझ सकता हूँ । आज अिस सूबेमें लीगी सरकार राज चला रही है । लेकिन अिसका यह मतलब नहीं कि सरकार गैर-लीगियोंके साथ दुश्मनीका बरताव करे ।"

गांधीजीने क़ायदे आज़म जिन्ना साहबके सन्देशके बारेमें कल जो कुछ कहा था, अुसीको आज भी दुहराया और कहा — "मुसलमानोंको चाहिये कि वे अपने दिलोंको टटोलें और अपने-आपसे पूछें कि क्या अुन्होंने जिन्ना साहबके अिस सन्देशके अनुसार काम किया है । जहाँ तक मैं जानता हूँ, अिस्लाम जबरदस्ती किसीका धर्म बदलने और औरतों पर ज़ुल्म ढानेकी अिजाज़त नहीं देता । जिसका दिल अिस्लामको क़बूल नहीं करता, अुसके सिर्फ़ कलमा पढ़ लेनेसे क्या फ़ायदा होगा? अिसलिअे आप अपने लीडरोंसे पूछकर मुझे बताअिये कि वे आपको हिन्दुओंके दोस्त बनकर रहनेकी सलाह देते हैं या दुश्मन । अगर आप अुनके दुश्मन बनना चाहते हैं, तो अुन्हें जता देना होगा कि वे पूरबी बंगाल छोड़कर चले जायँ । मैं ख़ुद तो पूरबी बंगालमें अुस वक़्त तक रहनेके अिरादेसे आया हूँ, जब तक दोनों क़ौमोंमें फिर मेल-मिलाप और भाअीचारा पैदा नहीं हो जाता ।" क़ाज़ीरखिल, १७-११-'४६

(अंग्रेजीसे) प्यारेलाल

विषय-सूची

		पृष्ठ
गांधीजीका अखबारी बयान ...		४०९
हफ्तेवार खत ...	प्यारेलाल	४१०
पहला सबक़ ...	प्यारेलाल	४१२
दिलसे अपील ...	प्यारेलाल	४१४
देवगढ़ बारियाके हरिजन ...	परीक्षितलाल मजमुदार	४१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"करेंगे या मरेंगे" मिशन

[illegible] ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १० — सम्पादक — प्यारेलाल — अंक ४४

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० ८ दिसम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

[illegible]जी महाराज

अंग्रेज़ीमें अेक कहावत है — "राजा गया, राजा हमेशा जियो!" ठीक यही भारत-भूषण मालवीयजी महाराजके लिअे कहा जा सकता है — "मालवीयजी गये, मालवीयजी अमर हों!" मालवीयजी हिन्दुस्तानके लिअे पैदा हुअे और हिन्दुस्तानके लिअे किये गये अपने कामोंमें जीते हैं। अुनके काम बहुत हैं। बहुत बड़े हैं। अुनमें सबसे बड़ा हिन्दू-विश्व-विद्यालय है। ग़लतीसे अुसे हम बनारस हिन्दू युनिवर्सिटीके नामसे पहचानते हैं। अुस नामके लिअे दोष मालवीयजी महाराजका नहीं, अुनके पैरोकारोंका रहा है। मालवीयजी महाराज दासानुदास थे। दास लोग जैसा करते थे, वैसा वे करने देते थे। मुझे पता है कि यह अनुकूलता अुनके स्वभावमें भरी थी। यहाँ तक कि बाज़ दफ़ा यह दोषका रूप ले लेती थी। लेकिन 'समरथको नहिं दोष गुसाँअी' वाली बात मालवीयजी महाराजके बारेमें भी कही जा सकती है। अुनका प्रिय नाम तो हिन्दू-विश्व-विद्यालय ही था। और यह सुधार तो अब भी करने लायक़ है। अिस विश्व-विद्यालयका हरअेक पत्थर शुद्ध हिन्दूधर्मका [illegible] होना चाहिये। अेक भी मकान पश्चिमके जड़वादकी निशानी न हो, बल्कि अध्यात्मकी निशानी हो। और, [illegible] शिक्षक और विद्यार्थी भी हों। आज हैं? प्रत्येक विद्यार्थी शुद्ध धर्मकी जीवित प्रतिमा है? नहीं है, तो क्यों नहीं है? अिस विश्व-विद्यालयकी परीक्षा विद्यार्थियोंकी संख्यासे नहीं, बल्कि अुनके हिन्दूधर्मकी प्रतिमा होनेसे ही हो सकती है, फिर भले वे थोड़े ही क्यों न हों।

मैं जानता हूँ कि यह काम कठिन है। लेकिन यही अिस विद्यालयकी जड़ है। अगर यह अैसा नहीं है, तो कुछ नहीं है। अिसलिअे स्वर्गीय मालवीयजीके पुत्रोंका और अुनके अनुयायियोंका धर्म स्पष्ट है। जगतमें हिन्दूधर्मका क्या स्थान है? अुसमें आज क्या दोष हैं? वे कैसे दूर किये जा सकते हैं? मालवीयजी महाराजके भक्तोंका कर्त्तव्य है कि वे अिन प्रश्नोंको हल करें। मालवीयजी अपनी स्मृति छोड़ गये हैं। अुसको स्थायरूप देना और अुसका विकास करना अुनका श्रेष्ठ स्मृति-स्तम्भ होगा।

विश्व-विद्यालयके लिअे स्व० मालवीयजीने काफ़ी द्रव्य अिकट्ठा किया था, लेकिन बाक़ी भी काफ़ी रहा है। अिस काममें तो हरअेक आदमी हाथ बँटा सकता है।

यह तो हुअी अुनकी बाह्य प्रवृत्ति। अुनका अन्दरूनी जीवन विशुद्ध था। वे दयाके भण्डार थे। अुनका शास्त्रीय ज्ञान बड़ा था। भागवत अुनकी प्रिय पुस्तक थी। वे बाहोश कथाकार थे। अुनकी स्मरण-शक्ति तेजस्विनी थी। जीवन शुद्ध था, सादा था।

अुनकी राजनीतिको और दूसरी अनेक प्रवृत्तियोंको छोड़ देता हूँ। जिन्होंने अपना सारा जीवन सेवाको अर्पित किया था, और जो अनेक विभूतियाँ रखते थे, अुनकी प्रवृत्तिकी मर्यादा हो नहीं सकती। मैंने तो अुनमेंसे चिरस्थायी चीज़ें ही देनेका संकल्प किया था। जो लोग विश्व-विद्यालयको शुद्ध बनानेमें मदद देना चाहते हैं, वे मालवीयजी महाराजके अन्तर-जीवनका मनन और अनुसरण करनेकी कोशिश करें।

श्रीरामपुर, २३-११-'४६ — **मोहनदास करमचन्द गांधी**

लोक-हितको 'लाअिनक्लीयर' दीजिये

जब वाअिसरायको दिल्ली-शिमलासे या जिस किसी जगहसे तार भेजना होता है, तो पहले हुक्म छूटता है — Clear the line: रास्ता साफ़ करो। यानी जहाँ तार भेजना हो, वहाँ तकका प्रजाका और सरकारी हाकिमोंका भी तमाम तार-व्यवहार अेकदम बन्द कर दिया जाता है। वाअिसरायका हक़ पहला; अुनके काममें अेक सेकण्डकी भी देर न होनी चाहिये। तार-खातेकी सहूलियतें प्रजाको अिसी शर्त पर दी गअी हैं कि वाअिसरायका काम सबसे पहले किया जायगा। जब वाअिसराय रेलगाड़ीमें सफ़र करते थे, तब भी अुनकी स्पेशल ट्रेनके लिअे बाक़ीका सारा काम अेक तरफ़ 'शण्ट' कर दिया जाता था।

अिसी तरह लड़ाअीके दिनोंमें फ़ौजी काम सबसे पहले किया जाता है। अिसकी वजहसे जनताके दूसरे काम कितने ही क्यों न बिगड़ते हों, कोअी मुज़ायका नहीं। लेकिन लड़ाअीके दिनोंमें फ़ौजका काम पहले होना चाहिये। अैसे क़ानूनका विरोध भी कैसे किया जाय? लड़ाअीमें जीतने पर सब तरहकी समृद्धि भोगी जा सकती है। लेकिन लड़ाअीमें हारने पर तो सर्वनाश निश्चित है। फिर तो कुछ भी नहीं रहेगा।

लड़ाअीके दिन हों या न हों, जर्मनी में तो फ़ौजी-विभागको ही पहली जगह और पहला महत्त्व दिया गया था; ताकि लोगोंमें लड़ाकू वृत्तिको अिज़्ज़त मिले, और बच्चे भी समझ लें कि अगर जर्मनीको ज़िन्दा रहना है, तो दूसरे सब गुणोंसे पहले अुन्हें लड़ाअीका गुण ही सीखना चाहिये।

अुपनिषदोंमें प्राण और अिन्द्रियोंके बीच अेक बार 'अहंश्रेयसी' चलनेकी कथा कही गअी है। ('अहंश्रेयसी' यानी 'मैं सबसे बड़ा, मैं सबसे बड़ा'का झगड़ा)। सबकी जाँच अिस कसौटी पर हुअी कि सबसे बड़ा वही, जिसके बिना शरीरका काम न चले। जब आँखें अेक सालके लिअे चली गअीं, तो शरीर अंधोंके शरीरकी तरह टिका रहा। अिसी तरह कान कुछ वक़्तके लिअे जाकर वापस आ गये। अुन्होंने भी देखा कि शरीर बहरोंकी तरह काम करता रहा। जीभ, नाक वग़ैरा सभी अिन्द्रियोंने जाकर देखा। मन भी जाकर लौटा। अुस हालतमें भी शरीर तो गुमसुम रहनेवाले पागलकी तरह टिका रहा। अख़ीरमें प्राण ने शरीर छोड़नेकी थोड़ी-सी कोशिश की, अितनेमें तो शरीरके साथ सभी अिन्द्रियाँ घबराने लगीं। सबने अेक साथ पुकारकर कहा — "तू ही हममें सबसे बड़ा है — सबसे श्रेष्ठ है। हम तेरी पूजा करेंगे, तेरा कहा सुनेंगे, तेरी शर्त पर रहेंगे; पर तू शरीर छोड़कर मत जा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब प्राण रहा, तो शरीर टिका आर सब अिन्द्रियाँ अपनी-अपनी जगह सुख-चैनसे रहने लगीं ।

न जाने कितनी सदियोंसे हिन्दुस्तानकी. राज-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था और जीवन-व्यवस्था प्रजा-द्रोह यानी प्राण-द्रोह करती आ रही है । और सबोंको खाना मिलता है, किसानों, मज़दूरों और कारीगरोंको ही नहीं मिलता । घरमें और सब लोग मौज करते हैं, फ़क़त घर चलानेवाली गृहिणियोंकी यानी औरतोंकी मौत है । मुल्कमें सबकी सुरक्षा या सलामतीका थोड़ा-बहुत बन्दोबस्त है, लेकिन असलमें अिस मुल्कको बसानेवाले यहाँके आदिवासी, आबादीवाले हिस्सोंसे हटते-हटते बनों और जंगलोंमें जा पहुँचे हैं; और अुनकी कअी जातियाँ तो जंगलोंसे भी हटकर कभीकी मौत के मुँहमें पहुँच गअी हैं । शेषनागकी तरह दूसरोंके लिअे समूची धरतीका बोझ ढोनेवाला किसान क़र्ज़े के रसातलमें डूब गया है । अुसकी मेहनत पर सारी प्रजा पल रही है, और अुसे दिन-दिन घटती हुअी अपनी पूँजी पर निभना पड़ता है । राजा और अुसके हाकिम, शहरोंके रहनेवाले और लोगोंके नेता, डॉक्टर, वकील, अिन्जीनियर, साहूकार, धर्माचार्य — थोड़ेमें, देश-परदेशके सभी सफ़ेदपोश लोग बुरी-से-बुरी हालतको पहुँचे हुअे किसानों और मज़दूरोंका .खून चूसकर निभते हैं । सरकारके नये-नये टैक्स किसी भी तबक़े या वर्ग पर क्यों न पड़ें, ये चालाक लोग अुनका सारा बोझ अिन ग़रीब किसानों और मज़दूरोंके सिर डाल देते हैं । यह प्राणद्रोह अब और नहीं चल सकता । गांधीजी सरमायादारोंसे कहते हैं कि आप लोगोंको भारी-भारी मुनाफ़ा देनेवाले जो भी दूसरे धन्धे करने हों, अुन्हें आप खुशीसे कीजिये । लेकिन जिन धन्धोंके बिना मामूली जनता जी ही नहीं सकती, और जिन धन्धोंको जनता कम-से-कम पूँजी और कम-से-कम लियाक़त या योग्यतासे चला सकती है, अुन व्यापक धंधोंमें आपको हाथ नहीं डालना चाहिये । वहाँ तो आपको आम रिआयाके लिअे 'लाअिनक्लीयर' देना ही होगा । अगर आप अितनी भी धर्म-बुद्धि न रक्खेंगे और प्रजा-प्राणका द्रोह करेंगे, तो पहले प्रजाको और अुसके साथ आपको, यानी दोनोंको, मौतकी शरणमें जाना होगा । कअी अैसे धंधे है, जिन्हें आम रिआया कभी अपना ही नहीं सकती । अैसे धन्धोंको आप या आपकी सरकारें भले शुरू करें । लेकिन जिन धन्धोंको आम लोग कर सकते हैं, या जिन धन्धोंके अभावमें देहातके किसान, मज़दूर व कारीगर बेकार रहते हैं, कमज़ोर बनते हैं, निस्तेज और निर्बुद्ध यानी बेनूर और बे-अक़्ल बनते हैं, वे सब धन्धे आपको अुनके लिअे अछूते रखने चाहियें । यह ग़रीबों पर दया दिखानेकी बात नहीं । भिखारीको दान देनेकी बात नहीं । अकाल-पीड़ितोंको राहत पहुँचानेकी बात भी नहीं । बात है, अुन करोड़ों आम लोगोंके लिअे 'लाअिन-क्लीयर' देनेकी, जिनकी सत्ता सबके अूपर है, सार्वभौम है । ये लोग अपना अधिकार नहीं जानते । अपने हितकी बात नहीं समझते । अिन्हें जोंककी तरह कौन, कहाँ और किस तरह चूसता है, अिसकी अिन्हें सूझ नहीं पड़ती । अिन्हें अभी अपनी ताक़तका भान नहीं हुआ, अिसलिअे खुद सच्चे सत्ताधीश होते हुअे भी ये कंगाल बने हुअे हैं । यही वजह है कि गांधीजी अिस सत्ताधीश जनताके स्वयं-नियुक्त और मुफ़्तके सॉलीसिटर बनकर. सरमायादारोंको नोटिस देते हैं कि "जहाँ लोग अपनी ताक़त और हैसियतके मुवाफ़िक़ काम कर सकते हैं, वहाँ अुन्हें अपने खादी-प्रधान ग्रामोद्योग करने दीजिये । वहाँ अपनी मिलें ले जाकर ग़रीबोंके हाथसे अुनके धन्धे न छुड़ाअिये । जहाँ खादी तैयार हो सकती है, वहाँ अपने मिलके कपड़ोंका ढेर लगाकर लोगोंका काम और अुनका धन्धा न छीनिये । आपके लिअे चरने-खानेको बहुतसे धन्धे हैं । आप चाहे रेलकी पटरी बनाअिये, ग्रामोफोन और रेडियो बनाअिये, अेंजिन तैयार कीजिये, मोटरें और हवाअी जहाज़ बनाअिये, मगर लोगोंकी खेती, अुनका बुनाअी-काम, अुनके ग्रामोद्योग और पशुपालन, सारे देशमें फैली हुअी, गाँवों और झोंपड़ोंमें बसनेवाली, जनताके ही हाथमें रहने दीजिये । आप अपने ज्ञान, कौशल और सूझ-बूझसे अुन्हें फ़ायदा पहुँचाअिये, लेकिन आम लोगोंको अेक तरफ़ हटाकर अुनके हाथ और दिमाग़से अुनका काम न छीनिये । जनताको सच्ची तालीम अुसके अपने जीवनसे मिलती है । और अुद्योग-धन्धे ही ज़िन्दगीकी बड़ी-से-बड़ी प्रवृत्ति हैं । खेती, बुनाअीका काम, दूसरे ग्रामोद्योग, ढोरोंकी और शहदकी मक्खियोंकी परवरिश वग़ैरा जीवनके लिअे अुपयोगी धन्धोंके ज़रिये ही जनताकी जीवन-दायिनी बुद्धिका विकास होता है । आप जीवनका द्रोह करनेवाली अपनी तालीमको गाँव-गाँव पहुँचानेका अुपकार न कीजिये । नअी तालीमका मतलब है, ज़िन्दगी देनेवाली तालीम; रचनात्मक और सर्जनात्मक बुद्धिकी तालीम; दस अँगुलियोंकी मारफ़त दी जानेवाली बुद्धिकी, हृदयकी और कौशलकी तालीम । अिस तालीमको सारे देशमें फैलाअिये । अिसे प्रधानता दीजिये । अिसे 'लाअिनक्लीयर' देनेके बाद, अिसकी शर्त पर दूसरी सब तरहकी तालीम, दूसरे सब अुद्योग-धन्धे देशमें भले चलते रहें ।

गांधीजीने सरकारको, और देशके नेताओं, सरमायादारों और ब्योपारियोंको समझानेका रास्ता अख़्तियार किया है । अब वे नअी भाषामें बोलते हैं । वे कहते हैं कि अगर आप धनवान हैं, सत्ताधीश हैं, तो देहातकी जनता संख्याधीश है, परिश्रमाधीश है; और, जब समझ लेगी तब जीवनाधीश भी बन जायगी । अुसका द्रोह करना, अुसे हानि पहुँचाना, आपको पुसायगा नहीं । जनताके धैर्यकी आख़िरी हद अब आ पहुँची है । अुसके बिगड़नेसे पहले ही आप समझ जाअिये । जनताके हितको 'लाअिनक्लीयर' दीजिये ।

गांधीजी यह भी नहीं कहते कि आप अपनी कपड़ेकी मिलें आज ही तोड़ डालिये । वे अितना ही कहते हैं कि नअी मिलें न खोलिये; जो मौजूद हैं, अुनमें मशीनें वग़ैरा मत बढ़ाअिये, जहाँ खादी चल सकती हो, वहाँ अपना मिलका कपड़ा मत ले जाअिये । जितनी मिलें चलायें, अुतनी खादी-द्रोह, ग्राम-द्रोह और जनता-द्रोह किये बिना चलाअिये । अिस तरह चलनेवाली अपनी मिलोंमें काम करनेवाले मज़दूरों और कारीगरोंको सिर्फ़ अुनके गुज़ारेभरकी नहीं, बल्कि अच्छी तरह जीने लायक़ मज़दूरी दीजिये ।

गांधीजी सरकारसे और देशनेताओंसे कहते हैं कि जब तक जनताकी क़िस्मत आपके हाथमें है, तब तक अपने सारे काम आप जनताके फ़ायदेके लिअे कीजिये; नहीं तो अेक दिन अैसा आयेगा जब आपकी — हाँ, आपकी — राज करनेवालों और देशनेताओंकी — क़िस्मत जनता अपने हाथमें ले लेगी । बिगड़ी हुअी जनता .खुदकुशीके लिअे तैयार होकर ही क्रान्ति या अिन्क़िलाब करती है । अगर यह क्रान्ति अन्धी हुअी तो तक़दीर हम सबकी । बिगड़ी हुअी प्रजा अिसकी परवाह नहीं करेगी । जब सारी जनता बिगड़ खड़ी होगी, तब अुसके तांडव-नृत्यके सामने ज़मींदार और सरमायेदार, मुस्लिम लीग और हिन्दूसभा, वाअिसराय और गवर्नर सभी काँपने लगेंगे । और अगर आजके छुरीबाज़ अुस वक़्त तक बचे रहे, तो वे कहाँ जा छिपेंगे, अिसका पता भी न चलेगा ।

अिसलिअे गांधीजी कहते हैं कि वक़्त रहते चेत जाअिये । प्रजाके बरबादीका रास्ता अख़्तियार करनेसे पहले ही अुसे रचनात्मक जीवनकी, जीवनदायिनी तालीम दीजिये । लोक-सेवक और राज-सेवक सभी जनताको खादी और ग्रमोद्योगकी कला सिखानेके लिअे तैयार हो जायँ । खुद सीखें और दूसरोंको सिखावें । समूचा राजतंत्र और समाजतंत्र लोक-हितके कामोंमें लग जाय । आज जहाँ वाअिसरायको 'लाअिनक्लीयर' मिलता है, वहाँ प्रजाको 'लाअिनक्लीयर' मिले । और अिस हिसाबसे सब अपनी-अपनी जगह पर जम जायँ ।

(गुजरातीसे)

काका कालेलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नक़शा

[पूरबी बंगालका वह हिस्सा जहाँ गांधीजी और अुनके साथी अपना "करेंगे या मरेंगे" मिशन पूरा करनेके लिअे ठहरे हुअे हैं ।]

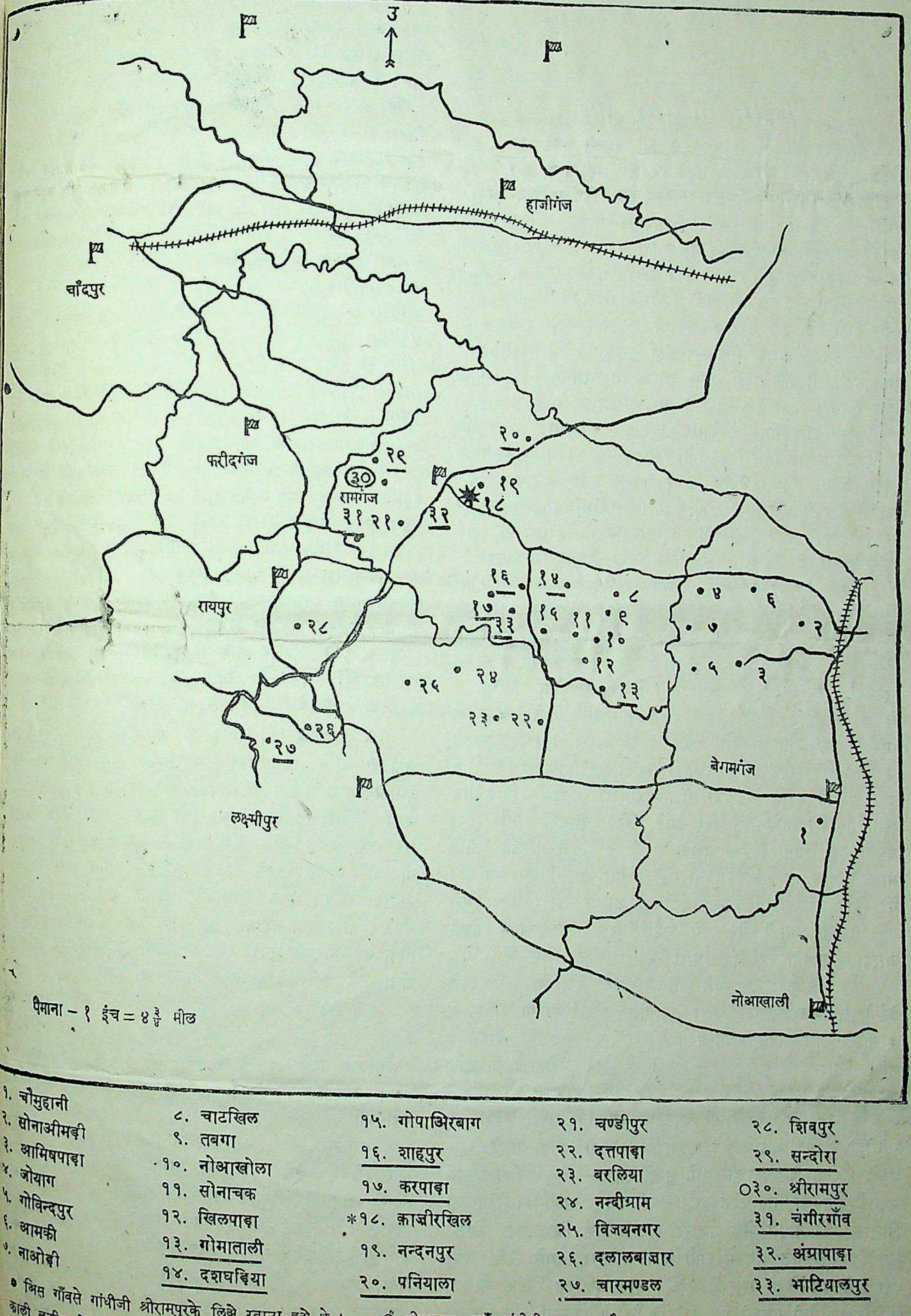

१. चौमुहानी
२. सोनाअीमड़ी
३. आमिषपाड़ा
४. जोयाग
५. गोविन्दपुर
६. आमकी
७. नाओड़ी
८. चाटखिल
९. तबगा
१०. नोआखोला
११. सोनाचक
१२. खिलपाड़ा
१३. गोमाताली
१४. दशघड़िया
१५. गोपाअिरबाग
१६. शाहपुर
१७. करपाड़ा
*१८. क़ाज़ीरखिल
१९. नन्दनपुर
२०. पनियाला
२१. चण्डीपुर
२२. दत्तपाड़ा
२३. बरलिया
२४. नन्दीग्राम
२५. विजयनगर
२६. दलालबाज़ार
२७. चारमण्डल
२८. शिवपुर
२९. सन्दोरा
○३०. श्रीरामपुर
३१. चंगीरगाँव
३२. अंम्रापाड़ा
३३. भाटियालपुर

* अिस गाँवसे गांधीजी श्रीरामपुरके लिअे रवाना हुअे थे । ○ श्रीरामपुर, जहाँ गांधीजीका मुक़ाम है ।
काली लकीरवाले गाँवोंमें गांधीजीके साथी अलग-अलग अपना डेरा डाले हुअे हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

८ दिसम्बर　　　　　　　　　१९४६

'करेंगे या मरेंगे' मिशन

सत्याग्रहके रास्तेमें रुकना मना है, आराम करना मना है। सत्याग्रहीको या तो बराबर आगे बढ़ना है या पीछे हटना है। 'हरिजनसेवक'के पिछले अंकमें गांधीजीके जिस निर्णयको मैंने 'श्रद्धाका साहस' कहा था, वह अुन्होंने दत्तपाड़ामें किया था। किसी जरूरी कामकी वजहसे मुझे दत्तपाड़ा रुक जाना पड़ा। अिस बीच गांधीजी क़ाज़ीरखिल पहुँच गये। दूसरे दिन दत्तपाड़ासे क़ाज़ीरखिल पहुँचते ही मैंने देखा कि गांधीजी अपने निर्णयके सिलसिलेमें अेक क़दम और आगे बढ़ चुके थे। अुन्होंने अपने दिलमें यह तय कर लिया था कि अगर बंगालकी मुस्लिम लीगी सरकारकी सिफ़ारिश और सलाहसे कोअी भले लीगी मेम्बर मुझे अपने घरमें घरके आदमीकी तरह रखनेको तैयार हों, तो मुझे अुन्हींके घर जाकर रहना चाहिये। १६ नवम्बरको बंगाल सरकारके 'सिविल सप्लाअिज़' महकमेके वज़ीर जनाब ग़फ़रान साहब गांधीजीसे मिलने आये थे। गांधीजीने अुनसे अपने अिस निर्णयकी चर्चा की और पूछा — "क्या आप किसीसे मेरी सिफ़ारिश कीजियेगा?" जब ग़फ़रान साहबने सुना कि गांधीजी अपने सभी साथियोंसे अलग होकर अैसे लोगोंके बीच रहना चाहते हैं, जिन्हें अुनकी सार-सँभालका कोअी अिल्म नहीं है, तो वे चौंके। गांधीजीने अुन्हें समझाना शुरू किया — "आप मेरी फ़िकर न कीजिये। मैं अपना सब काम खुद कर लूँगा। मुझे किसीकी खिदमतकी जरूरत नहीं पड़ेगी।" अिसपर ग़फ़रान साहबने हँसते-हँसते जवाब दिया — "तब तो मुझे कहना चाहिये कि कोअी भी मुसलमान परिवार आपको अपने घर टिकानेके लिअे तैयार न होगा।" लेकिन अिस तरह अपनी बातको टलते या हँसीमें अुड़ते देखकर भी गांधीजी आसानीसे माननेवाले जीव तो हैं नहीं। अुसी दिन शामकी प्रार्थना-सभामें अपने अिस फ़ैसलेको ज़्यादा तफ़सीलके साथ समझाते हुअे अुन्होंने कहा — "यहाँ नोआखालीमें मैं मुस्लिम बस्तीके बीच रहता हूँ, अिसलिअे मुझे यहाँ अपने हिन्दू दोस्तोंके साथ रहना अच्छा नहीं लगता। मुझे देखना है कि मैं किन्हीं मुस्लिम लीगी भाअीके साथ रह सकता हूँ या नहीं। मेरी जरूरतें बहुत कम हैं। मेरे लिअे किसी खास अिन्तज़ामकी भी जरूरत नहीं। अगर मुझे सफ़ाअी, साफ़ पानी, मेरे खाने लायक़ खुराक और अपने ढंगसे अीश्वरकी प्रार्थना करनेकी आज़ादी मिल जाय, तो बस है। मेरा ख़याल है कि जब हिन्दू मुझे मुस्लिम लीगी दोस्तके साथ रहते देखेंगे, तो अुनका खोया हुआ विश्वास लौट आयेगा, और वे हुत्साहके साथ वापस अपने-अपने घर जानेको तैयार हो जायँगे। मुस्लिम दोस्त भी मुझे ज़्यादा नज़दीकसे देखकर अिस बातकी जाँच कर सकेंगे कि मैं अनका दुश्मन हूँ या दोस्त।"

लेकिन अिस तरह किसी मुस्लिम परिवारके तैयार होने तक गांधीजी अपने 'श्रद्धाके नये साहस'को मुलतवी करनेके लिअे तैयार न थे। अेक दिन बात ही बातमें अुन्होंने कहा — "जब मैं आग़ाख़ान महलमें क़ैद था, तब अेक दफ़ा मैंने वहाँ 'अहिंसाका हिमायती हिन्दुस्तान'के नामसे अेक मज़मून लिखना शुरू किया था, लेकिन कुछ दिन लिखनेके बाद मैं आगे न लिख सका। मुझे रुक जाना पड़ा। हिन्दूधर्मके दो पहलू हैं — अेक तरफ़ छुआछूतको अपनानेवाला, अन्धे विश्वासोंकी वजहसे पत्थरों और पेड़ोंकी पूजा-भक्ति करनेवाला, ज़िन्दा जानवरोंकी कुरबानीके रिवाजको माननेवाला और अैसी ही दूसरी निशानियोंवाला हिन्दूधर्म है; और दूसरी तरफ़ वह हिन्दूधर्म है, जिसकी नसीहतें गीता, अुपनिषद् और पातंजल योगसूत्रमें भरी पड़ी हैं, जो अहिंसा पर और सारी दुनियाकी अेकता पर ज़ोर देता है, और जो सारे विश्वमें फैले हुअे, निराकार, अविनाशी और अेक अीश्वरकी शुद्ध भक्ति करना सिखाता है। जिस अहिंसाको मैं हिन्दूधर्मका मुख्य गौरव समझता हूँ, अुसे हमारे लोग यह कहकर टालना चाहते हैं कि वह तो सिर्फ़ संन्यासियोंके पालनेका धर्म है। मेरी यह राय नहीं। मैं ता शुरूसे यह मानता आया हूँ कि अहिंसा ही धर्म है, वही जिन्दगीका अेक रास्ता है, और सारी दुनियाको यह रास्ता दिखानेका काम हिन्दुस्तानका है। लेकिन सवाल यह है कि अिस बारेमें मैं खुद कहाँ खड़ा हूँ? क्या मुझमें यह अहिंसा है? क्या मैंने अिसे सिद्ध किया है? मैं अिसका प्रतिनिधि हूँ? अगर मैं अहिंसाका सच्चा प्रतिनिधि हूँ, तो मेरी हाज़िरीकी वजहसे दगा, फ़रेब और दुश्मनीकी यह ज़हरीली हवा साफ़ क्यों नहीं होती? चुनाँचे अपने जिन साथियोंकी मददसे अब तक मैं अपना काम करता आया हूँ, अुनसे अलग होकर अकेला, बैसाखीकी ही मददसे क्यों न हो, मगर अपने बल पर चलकर ही, मैं अिस बातका पता लगा सकूँगा कि आज मैं खुद कहाँ खड़ा हूँ; साथ ही, अिस तरह मैं अीश्वरके बारेमें अपनी श्रद्धाकी भी परीक्षा कर सकूँगा।"

सेवाग्राम आश्रमके अपने साथियोंको अुन्होंने लिखा —

"मेरा ख़याल है कि आप लोगोंको मेरे जल्दी ही वापस आश्रम पहुँचनेकी आशा छोड़नी होगी। मुमकिन है कि मैं फिर आश्रम पहुँच ही न पाअूँ। मेरे साथियोंके लिअे भी यही समझिये। यहाँ मेरे सामने भगीरथ काम पड़ा है। मेरी कसौटी हो रही है। मेरी कल्पनाका सत्याग्रह कमज़ोरोंका हथियार है या सचमुचके बहादुरोंका? मुझे या तो यह सिद्ध करना चाहिये कि अहिंसा सच्चे शूरवीरोंका हथियार है, या अिस सिद्धिकी साधना करते-करते मिट जाना चाहिये। जीवन भर मैंने अिसीकी खोज की है। अिसी खोजके सिलसिलेमें मैं आज अिस अुजड़े और वीरान बने गाँवमें गड़ जानेके लिअे आया हूँ। भगवान्की जैसी मरज़ी हो वैसा वह करे!"

२० नवम्बरके दिन गांधीजीने क़ाज़ीरखिलवाली अपनी छावनी अुठा दी, और टाअिपिस्टका काम करनेवाले श्री परशुराम व बँगला दुभाषियेका काम करनेवाले प्रोफ़ेसर निर्मलकुमार बसुको साथ लेकर, नअी दुनियाकी तलाशमें निकले हुअे कोलम्बसकी तरह, वे अँधेरेसे भरे अज्ञातके समन्दरमें कूद पड़े। अिस तरह बिछुड़नेसे पहले गांधीजीके साथके छोटेसे दलने मुख़्तसर प्रार्थना की और अुसमें गांधीजीका प्रिय भजन 'वैष्णवजन तो तेने कहीअे' गाया। गाते समय बहुतोंका गला भर आया था। और जब गांधीजीको श्रीरामपुरकी तरफ़ ले जानेवाली अुनकी छोटी-सी डोंगी पुलके अुस पार आँखोंसे ओझल हो गअी, तो बहुतोंकी आँखें भर आअीं।

गांधीजीके चले जाने पर अुनके दलके लोग अेकके बाद अेक अपने-अपने मुक़र्ररशुदा गाँवोंके लिअे रवाना हो गये। अिसी अंकमें दूसरी जगह दिये गये नक़शेसे पाठकोंको पता चलेगा कि अुनके कामका दायरा कहाँ तक फैला हुआ है और खुद गांधीजी व अुनके साथी कहाँ-कहाँ बस गये हैं।

श्रीरामपुरके जिस घरमें गांधीजी ठहरे हैं, वह सुपारी और नारियलके अूँचे-अूँचे पेड़ोंके घने झुरमुटके बीच अेक खुले और धूपवाले मैदानमें खड़ा है। अुसके आस-पास चारों तरफ़ आग वग़ैरासे हुअी बरबादी और नुक़सानीके डरानेवाले नज़ारे दिखाअी पड़ते हैं। वहाँ जाते ही गांधीजीने हमेशाकी तरह कुनकुने पानीसे नहाना बन्द कर दिया, और पहले दो दिन तो अपनी मालिश भी खुद ही कर ली। श्रीरामपुर पहुँचनेके बाद शमसुद्दीन साहब और दूसरे कअी लोग गांधीजीसे कअी बार मिले हैं। रामगंजमें वहाँके हिन्दुओं और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमानोंके क़रीब ३० नुमाअिन्दोंकी अेक कान्फ्रेन्स भी गांधीजीकी हाज़िरीमें हो चुकी है । कान्फ्रेंसकी चर्चाओंके अन्तमें सबने मिलकर शान्ति क़ायम करने और क़ौमी अित्तहाद बढ़ानेकी अेक योजना तैयार की है । बंगालके वज़ीरोंने पूरी ज़िम्मेदारीके साथ अिस योजना पर अमल करनेका वादा किया है । २३ नवम्बरके दिन चण्डीपुरगाँवकी आमसभामें यह योजना आम लोगोंके सामने पेश की गअी । सभा ख़त्म होनेसे पहले गांधीजीने अपने भाषणमें नीचे लिखी मारकेकी बातें कहीं—

“ अिस सूबेकी हुकूमत चलानेवाले लोग मुसलमानोंके चुने हुअे नुमाअिन्दा हैं । अुन्होंने आपसे वादा किया है । वे कहते हैं कि आगे कभी अैसी शर्मनाक वारदातोंको हम चुपचाप देखते नहीं रहेंगे । हिन्दुओंको मैं यह सलाह देता हूँ कि आप अिन भाअियोंकी बात पर यक़ीन रखिये और अिनके वादेकी परीक्षा कर लीजिये । अिसका यह मतलब नहीं कि आअिन्दा पूरबी बंगालमें कोअी दुष्ट या बुरा मुसलमान रहेगा ही नहीं । भले-बुरे आदमी तो सभी क़ौमोंमें होते हैं । दग़ाबाज़ीसे या बेअीमानी भरे बरतावसे तो कोअी भी सरकार या कैसी भी संस्था आख़िर टूट ही जाती है । . . . अगर आप सच्ची शान्ति चाहते हैं, तो अुसका अेक ही रास्ता है — आप आपसमें विश्वास और अेतबार रखिये । कुछ लोग कहते हैं कि बिहारमें नोआखालीका बदला लिया गया है । फ़र्ज़ कीजिये कि अिसके बाद पूरबी बंगालके मुसलमान या समूचे हिन्दुस्तानके मुसलमान बिहारका बदला लेनेका फ़ैसला करें, तो हिन्दुस्तानकी क्या हालत हो ? . . . आख़िर बुरे-से-बुरा नतीजा तो यही हो सकता है न, कि आपको अपनी जानसे हाथ धोना पड़े ? अुस हालतमें मैं कहूँगा कि आप बहादुर मर्दोंकी तरह मौतका सामना कीजिये ! . . . शमसुद्दीन साहब और अुनके साथी जो कुछ कह रहे हैं, वह अुनके दिलकी बात न हुअी, तो आख़िर आपको अुसका पता चल ही जायगा । मैं नहीं चाहता कि मुझे जीते जी वह करुण दृश्य देखना पड़े ! ”

क़ाज़ीरखिल, २४-११-’४६

(अंग्रेज़ीसे) प्यारेलाल

पढ़नेवालोंसे—

‘ हरिजनसेवक ’के पढ़नेवाले अब यह तो जान ही चुके हैं कि किन हालतोंमें गांधीजीने ‘ हरिजन ’ साप्ताहिकोंके सम्पादनका काम सँभालनेकी ज़िम्मेदारी श्री विनोबा, काकासाहब कालेलकर, किशोरलाल मशरूवाला और नरहरि परीख पर डाली है । जब तक गांधीजी, प्यारेलालजी और गांधीजीके दलके दूसरे साथी बंगालके हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच फिरसे दोस्ती क़ायम करनेके बहुत ही अहम काममें लगे हैं, तब तकके लिअे अिन चार सज्जनोंसे प्रार्थना की गअी है कि वे मिलकर और अलग-अलग अिस ज़िम्मेदारीको निबाहें । लेकिन हक़ीक़त यह है कि आज ये चारों अेक-दूसरेसे बहुत दूर हैं, और किसी अेक जगह अिकट्ठा नहीं हो सकते । अकेले श्री नरहरि परीख ही यहाँ साबरमतीमें रहते हैं, और अुनकी मदद मुझे बहुत आसानीसे मिल सकती है । अिसलिअे अिनमेंसे हरअेकके लेख सीधे मेरे पास आयेंगे और ये कोअी छपनेसे पहले दूसरे किसीके लेखों या मज़मूनोंको देख नहीं सकेंगे ।

आम तौर पर गांधीजी और प्यारेलालजी ‘ हरिजन ’में तब तक कोअी चीज़ छपने नहीं देते, जब तक वे ख़ुद अुसे देख न चुके हों। लेकिन आजकल यह मुमकिन न होगा । अिसलिअे मेहरबानी करके पाठक यह न समझें कि फ़िलहाल अिन साप्ताहिकोंमें किसी मसले पर ज़ाहिर की गअी किसी रायको अुसके छपनेसे पहले गांधीजी या प्यारेलालजी मंज़ूर कर चुके हैं ।

मैनेजिंग अेडीटर

हफ़्तेवार ख़त

फिर वही सबक़

जब चाँदपुरमें हिन्दू कार्यकर्त्ताओंका अेक डेपुटेशन गांधीजीसे मिला था, अुस वक़्त अुन्होंने निडरपनका जो सबक़ सिखाना शुरू किया था, वही चौमुहानीमें और दूसरी जगहोंमें और भी ज़ोरदार लफ़्ज़ोंमें दोहराया गया । सच पूछा जाय तो आजकल अुनकी तमाम बातचीतोंका यही अेक ख़ास विषय बन गया है । चौमुहानीमें अुनसे मिलने आये हुअे अेक दोस्तसे अुन्होंने कहा था — “ दुःखकी बात यह नहीं कि अितने सारे मुसलमान पागल बन गये, बल्कि दुःख यह है कि पूरबी बंगालके अितने हिन्दू अिन सब बातोंको देखते रहे । अगर पूरबी बंगालका अेक-अेक हिन्दू मार डाला जाता, तो भी मैंने अुसकी परवाह न की होती । क्या आप जानते हैं कि अैसे वक़्त राजपूत क्या किया करते थे ? लड़ाअीके मैदानमें अपनी क़ुरबानी करनेके लिअे रवाना होनेसे पहले वे अपनी औरतोंको मार डाला करते थे । जो बच जाती थीं, वे क़िलेके दुश्मनके हाथमें जानेसे पहले चिता पर चढ़कर अपनी बलि दे देती थीं, ताकि दुश्मन अुन्हें पकड़कर अुनकी बेअिज़्ज़ती न कर सके । हज़ारों मुसलमान मिलकर अपने बीच रहनेवाले मुट्ठीभर हिन्दुओंको क़त्ल कर डालें, तो अुसमें कोअी बहादुरी नहीं । लेकिन यह देखकर दिल फटता है कि अपनी बुज़दिलीकी वजहसे हिन्दू अितने नीचे गिर गये कि अुनके देखते अुनकी औरतें भगाअी गअीं, बेअिज़्ज़त की गअीं, ज़बरन् अुनका धर्म बदला गया और मुसलमानोंके साथ ज़बरदस्ती अुनकी शादियाँ की गअीं, और वे कुछ न कर सके ।”

अुन दोस्तने पूछा — “ हम हिन्दुओंमें सलामती और आत्म-विश्वासकी भावना कैसे पैदा कर सकते हैं ? ”

“ बहादुरीसे मरना सीख कर । हम अपना ग़ुस्सा अपने अूपर ही अुतारें । पुलिसकी जगह फ़ौजको तैनात करवाने या मुस्लिम पुलिसकी जगह हिन्दू पुलिस रखवानेमें मुझे कोअी दिलचस्पी नहीं । ये सब निकम्मी चीज़ें हैं । ”

“ हम किससे अपील करें — कांग्रेससे, लीगसे या ब्रिटिश सरकारसे ? ”

“ अिनमेंसे किसीसे नहीं । आप अपने-आपसे, भगवान्से अपील कीजिये । ”

आख़िरमें अुन दोस्तने कहा — “ हम मिट्टीके मामूली पुतले ठहरे । हमें किसी ठोस मददकी ज़रूरत है । ”

गांधीजीने जवाब दिया — “ तो अपनी मिट्टीसे ही अपील कीजिये । अुसका सारा मैल धो डालिये । ”

डरकी तशरीह

क़ाज़ीरखिलमें सोमवार ता० १८ नवम्बरको शामकी प्रार्थना-सभामें गांधीजीका जो लिखा हुआ सन्देश पढ़ा गया था, अुसमें अुन्होंने डरकी तशरीहका बहुत बारीक़ीके साथ बयान किया था । असलमें आजकल यही अुनकी तक़रीरोंका ख़ास विषय बन गया है । अुन्होंने कहा — “ जितना ही मैं अिन हलक़ोंमें घूमता हूँ, अुतना ही मैं यह महसूस करता हूँ कि डर ही आपका सबसे बुरा दुश्मन है । यह डरनेवालों और डरानेवालोंकी ज़िन्दगीको अन्दर ही अन्दर कुरेदता रहता है । डरानेवाला डरनेवालेकी किसी चीज़से डरता है । मुमकिन है कि वह डरनेवालेके जुदा मज़हबसे या अुसकी दौलतसे डरता हो । लोभ या लालच अिस डरका ही दूसरा नाम है । अगर आप गहराअीसे अिसकी छान-बीन करें, तो आपको पता चलेगा कि लालच भी अेक तरहका डर है । लेकिन जिसने अपने दिलसे डरको निकाल बाहर किया है, अुसे डरानेवाला न कभी कोअी था, न आगे कभी होगा । निडरको कोअी क्यों नहीं डरा सकता ? आप देखेंगे कि भगवान्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमेशा निडरका साथ देता है। अिसलिअे हमें सिर्फ़ भगवान्से डरना चाहिये और अुसीकी शरण लेनी चाहिये। अुस हालतमें दूसरे सारे डर अपने-आप दूर हो जायँगे। जब तक लोग निडर बनना नहीं सीखेंगे, तब तक यहाँके हिन्दू या मुसलमान कभी शान्तिसे नहीं रह सकेंगे।"

खरी बात

महकमे सिविल सप्लाअिजके वज़ीर ग़फ़रान साहब और महकमा-खेतीके वज़ीर अहमद हुसेन साहब दूसरे कअी पार्लमेण्टरी सेक्रेटरियों और मुस्लिम लीगी दोस्तोंके साथ, निराश्रितोंको फिरसे अुनके गाँवोंमें बसानेकी सरकारी तजवीज़ों पर बातचीत करनेके लिअे १६ नवम्बरकी शामको गांधीजीसे मिले थे। ग़फ़रान साहब नोआखाली ज़िलेके रहनेवाले हैं और वज़ीर बननेके पहले वहीं पब्लिक प्रॉसिक्यूटरका यानी सरकारी वकीलका काम करते थे। प्रार्थनाके बाद अुन्होंने सभामें तक़रीर करते हुअे कहा —"अिस ज़िलेमें जो कुछ हुआ, अुससे मुझे और पूरबी बंगालके मुसलमानोंको भी बहुत ही दुःख हुआ है। मैं १६ तारीखसे दंगेवाले हलक़ोंके दौरे पर हूँ, और मैं कह सकता हूँ कि सारी वारदातें १०से १६ नवम्बरके बीच हुअी हैं। अिसमें कोअी शक नहीं कि पूरबी बंगालमें ज़ुल्म और ज़्यादतियाँ की गअी थीं। मेरी यह दिली ख़्वाहिश है कि जिन्होंने यह सब किया, अुन गुण्डोंको अदालतके सामने पेश किया जाय। लेकिन मैं नहीं चाहता कि किसी बेगुनाहको कोअी तकलीफ़ हो। मैं पूरबी बंगालके हिन्दुओंको यक़ीन दिलाता हूँ कि जिस तरह कांग्रेस बिहार, यू॰ पी॰, मध्यप्रान्त, मद्रास और बम्बअीके मुसलमानोंको अपने-अपने सूबोंसे निकालकर दूसरी जगह नहीं भेजना चाहती, अुसी तरह बंगालकी लीगी सरकार और मुस्लिम लीग भी यह नहीं चाहती कि हिन्दू पूरबी बंगाल छोड़कर चले जायँ। लीग यह साबित करना चाहती है कि वह हिन्दुओं और मुसलमानोंके साथ अेकसा बरताव करके अिन्साफ़के साथ हुकूमत करना जानती है। जिस पूरबी बंगालमें वे पैदा हुअे और पले हैं, अुसे छोड़नेका विचार वे कैसे कर सकते हैं? हिन्दू और मुसलमान दोनों हमेशा दोस्तोंकी तरह रहे हैं। हिन्दू मुझे 'भैया' और 'चाचा' कहते हैं। तो फिर आज दोनोंमें दुश्मनी क्यों हो? मैं मुसलमानोंकी तरफ़से हिन्दुओंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे बिना किसी डरके अपने-अपने घरोंको लौट जायँ। जब हिन्दुओंमें फिर विश्वास पैदा हो जायगा, तो पुलिस और फ़ौज वापस भेज दी जायगी, क्योंकि न हिन्दुओंको और न मुसलमानोंको ही अुनमें कोअी विश्वास है। मैं चाहता हूँ कि मुसलमान हिन्दुओंसे वापस अपने-अपने घरोंको लौटनेकी प्रार्थना करें।"

अिसके बाद कुछ मिनटोंके लिअे तक़रीर रोक दी गअी, क्योंकि नमाज़का वक़्त हो गया था। चौमुहानीकी तरह यहाँ भी सभामें आये हुअे मुसलमानोंने प्रार्थना-सभावाले मैदानके अेक कोनेमें नमाज़ पढ़ी। नमाज़के बाद ग़फ़रान साहब फिर कुछ मिनट तक बोले। अुन्होंने सभामें आये हुअे लोगोंसे कहा कि सरकारकी तरफ़से अिस मतलबका हुक्म जारी किया जा चुका है कि गांधीजीकी सभामें आनेवाले, सभामें बैठे हुअे या सभासे जानेवाले लोगोंमेंसे किसीको गिरफ़्तार न किया जाय।

ग़फ़रान साहबके बाद गांधीजीने अपनी तक़रीर शुरू की। कुछ दिन पहले चौमुहानीमें दिये गये शमसुद्दीन साहबके भाषणका हवाला देते हुअे अुन्होंने कहा —"अबकी आपने ग़फ़रान साहबकी बात सुनी है। आपके ये वज़ीर यह चाहते हैं कि आप सब अेक साथ दोस्त बनकर रहें। पुलिस और फ़ौज आपकी हिफ़ाज़त नहीं कर सकती। अेक भगवान् ही आपको बचा सकता है। अिसलिअे आपको चाहिये कि अपनी सलामतीके लिअे आप अेक-दूसरेका सहारा लें। ग़फ़रान साहबने कहा है कि सरकार नहीं चाहती कि हिन्दू पूरबी बंगाल छोड़कर चले जायँ। अिसमें शक नहीं कि यहाँ बड़ी दर्दनाक वारदातें हुअी हैं। लेकिन जो हुआ सो हुआ। अुसे आप भूल जाअिये। अब आपको नये तौर पर ज़िन्दगी शुरू करनी चाहिये। जिसने आपकी तरह मुसीबतें अुठाअी हैं, अुसका शक्की बन जाना मामूली बात है। लेकिन आपको अपना शक दूर कर देना होगा। सभामें आये हुअे अेक भाअीने ग़फ़रान साहबकी तक़रीरका जवाब देनेके लिअे मुझसे पाँच मिनटका वक़्त चाहा था। अुन्होंने मुझे बताया कि अुस तक़रीर की कअी बातों को सुधारना ज़रूरी है। लेकिन मैंने अुन भाअीसे कह दिया कि मैं प्रार्थना-सभाको आम बहस-मुबाहिसेकी जगह नहीं बना सकता। सभामें ग़फ़रान साहबने जो कुछ कहा, वह सद्भावनासे और हमारा काम करनेकी ग़रज़से कहा था। लेकिन अगर ये भाअी अदबके साथ अपनी सब बातें अेक ख़तमें लिखकर मुझे दे देंगे, तो मैं अुसे ख़ुशी-ख़ुशी ग़फ़रान साहबके पास पहुँचा दूँगा। मुझे अिस बातका अफ़सोस है कि आप अपने मुसलमान भाअियोंकी नमाज़के वक़्त बिलकुल ख़ामोश न रह सके। हमारी तहज़ीब और ख़ानदानियतका यह तक़ाजा है कि दूसरोंकी प्रार्थनाके वक़्त हम ख़ामोश रहें। हमें अेक-दूसरेके मज़हबकी अिज़्ज़त करनी चाहिये। सभी मज़हबवाले अेक ही भगवान्की पूजा करते हैं। प्रार्थनाके मैदानमें कांग्रेस और लीगके झण्डोंको साथ-साथ अुड़ते देखकर मुझे ख़ुशी होती है। दोनों झण्डोंकी अपनी बड़ी अहमियत है। जैसा कि क़ायदे आज़म जिन्ना साहबने कहा है, आपको यह याद रखना चाहिये कि अगर हिन्दू और मुसलमान आपसमें लड़ते-झगड़ते रहेंगे, तो हिन्दुस्तान हमेशा ग़ुलाम बना रहेगा और पाकिस्तानका कहीं पता भी न चलेगा। मेरे पास धमकीके ख़त आ रहे हैं। कुछ मुसलमानोंको यह डर है कि मैं अुन्हें दबानेके लिअे यहाँ आया हूँ। मैं अुन्हें अिस बातका यक़ीन दिला सकता हूँ कि मैंने अपनी सारी ज़िन्दगीमें कभी किसीको नहीं दबाया। लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं बिहार क्यों नहीं गया? मैं अपना यह अिरादा ज़ाहिर कर चुका हूँ कि अगर बिहारने अपना पागलपन नहीं छोड़ा, तो मैं अुपवास करूँगा। बिहारकी ख़बरें मुझे बराबर मिलती रहती हैं। पंडित जवाहरलाल, डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद और दूसरोंने मुझे यक़ीन दिलाया है कि मेरा वहाँ जाना ज़रूरी नहीं। मेरा ख़याल है कि अब बिहारमें लगभग शान्ति क़ायम हो चुकी है। तंगदिली अभी मौजूद है, लेकिन वह कम हो रही है। मुसलमान अपने-अपने गाँवोंको लौट रहे हैं। जिन लोगोंके घर बरबाद हो गये थे, अुनके लिअे नये घर बनवा देनेकी ज़िम्मेदारी सरकारने अपने सिर ली है। हिन्दुओंकी तरफ़से भी मुझे ग़ुस्सेसे भरे तार मिल रहे हैं। वे मुझसे पूछते हैं कि मैंने बंगालकी वारदातोंके लिअे मुसलमानोंके ख़िलाफ़ अुपवास क्यों नहीं किया? आज मैं अैसा नहीं कर सकता। अगर मुसलमान मुझे अपना दोस्त समझने लगें, तो मैं अुनके ख़िलाफ़ भी अुपवास कर सकूँगा। अगर मुझे पूरबी बंगाल छोड़कर जाना पड़ा, तो मैं तभी जाअूँगा, जब यहाँके हिन्दुओं और मुसलमानोंके दिलोंमें पूरी-पूरी शान्ति छा जायगी। वरना मैं अेक दिन भी ज़्यादा जीना न चाहूँगा।

दसघड़िया

१७ नवम्बरको सुबह गांधीजीने क़ाज़ीरखिलसे दो मील दूर दसघड़िया गाँवका दौरा किया। वहाँ अुन्हें बहुतसी औरतें मिलने आअीं। अुन सबको ज़बरदस्ती मुसलमान बना लिया गया था, मगर अब वे फिर अपने धर्ममें लौट आअी थीं। गांधीजीने कहा — "ज़िला मजिस्ट्रेटने हुक्म जारी करके अिस बातका अैलान कर दिया है कि ज़बरदस्ती यानी डरकी वजहसे किये गये धर्म-परिवर्तनको क़ानून मंज़ूर नहीं करेगा। मैं नहीं जानता कि जिन लोगोंका धर्म ज़बरदस्ती बदल डाला गया था, अुनमेंसे हरअेक फिर हिन्दू धर्ममें ले लिया गया है या नहीं। अगर अभी तक अैसा न हुआ हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

…अब होना चाहिये, बशर्ते कि आप दोनों जातियोंके बीचकी मौजूदा …वाहट को भाअीचारेमें बदलना चाहते हों।

"कुछ भगाअी हुअी लड़कियाँ अभी तक नहीं मिली हैं। वे …जल्दी ही लौटा दी जानी चाहियें। आज दोपहरको अेक …ी अपने अेक बरसके लड़केको लेकर मेरे पास आया था। पुलिसकी …द लेकर अेक मुसलमानके घरसे वह अिस बच्चेको अेक महीने …द छुड़ा पाया था। मुसलमान भाअियोंका फ़र्ज़ है कि वे अैसी …र्रवाअियाँ न होने दें। अुन्हें अपनी पिछली ग़लतियोंको साफ़ …लसे क़बूल करना चाहिये और आअिन्दा वैसी ग़लतीसे बचनेका …न देना चाहिये। जो अपनी ग़लतियाँ छिपानेकी कोशिश करता …वह अुन्हें कभी दुरुस्त नहीं कर सकता। मैं खुद सत्यका पुजारी …। जिन दिनों मैं वकालत करता था, मैंने अपने मुवक्किलोंसे …रक्खा था कि अगर आप मुझे अपना वकील बनाना चाहते हैं, …आपको मुझसे सारी बातें सच-सच कहनी होंगी। मैं झूठे मामलेकी …ी नहीं करूँगा। नतीजा यह हुआ कि सच्चे और खरे मामले …मेरे पास लाये जाते थे। मैं अेक लम्बे अरसेसे अपनी वकालत …चुका हूँ, और राजद्रोहके जुर्ममें मेरा नाम भी बैरिस्टरोंकी फ़ेहरिस्तसे …रिज कर दिया गया है। लेकिन मैं अपने अुसी अुसूलको मानता …हूँ। हिन्दुओं और मुसलमानोंको मेरी यही सलाह है कि आप …ने दिलके सारे पाप धो डालें। अिसके बिना आप न तो शान्तिसे …सकेंगे और न अेक-दूसरेकी अिज़्ज़त कर सकेंगे।"

अेक घटना और अुसका नतीजा

…ग़फ़रान साहबने जिस प्रार्थना-सभामें तक़रीर की थी, अुसमें …गअी गांधीजीकी बातोंका कुछ अजीब-सा असर हुआ। १७ …बरको शामकी प्रार्थना-सभामें कोअी बहन शरीक न हुअी; और … भी बहुत कम तादादमें आये। अुस दिन सभामें ज़्यादा तादाद …समानोंकी ही रही। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अपने भाषणमें …— "मैंने सुना है कि चूँकि मैंने अेक भाअीको ग़फ़रान …बकी बातोंका जवाब अुसी वक़्त और वहीं देनेकी अिजाज़त नहीं … अिसलिअे हिन्दू मुझसे नाराज़ हो गये हैं और अुन्होंने प्रार्थना-…का बहिष्कार कर दिया है। मुझे अिसका कोअी दुःख …। मैं दूसरोंको ख़ुश करनेके लिअे ही कभी कोअी बात कहता …करता नहीं। मैंने हमेशा यही सिखाया है कि अिनसानको अपना …अदा करते समय अिस बातकी परवाह न करनी चाहिये कि …ों पर अुसका क्या असर होगा। जो अिनसान हमेशा अपने …दिलके मुताबिक़ काम करता है, वह दूसरोंसे कभी नहीं …।"

…बादमें मुक़ामी रिलीफ़ कमेटीके सेक्रेटरीने आकर गांधीजीसे कहा …मने प्रार्थना-सभाका बहिष्कार नहीं किया है। लेकिन चूँकि …अितवारका बाज़ार था और अुसमें बहुतसे मुसलमानोंके साथ …के आनेका अँदेशा था, अिसलिअे बहनें डरकर घरसे बाहर …कलीं।

…१९ नवम्बरको मधुपुरकी प्रार्थना-सभामें तक़रीर करते हुअे …जीने कहा — "अेक भाअीने मुझे बताया है कि यह सफ़ाअी अेक …ही थी। अगर अुन्होंने सभाका बहिष्कार भी किया हो, तो मुझे …परवाह नहीं। अिसके लिअे अुन्हें मुझसे माफ़ी माँगनेकी … नहीं। और, अगर वे डरकी वजहसे सभामें नहीं आये, तो …ही अुन्हें मुझसे कोअी माफ़ी न माँगनी चाहिये। लेकिन …रह डरना अुनके लिअे शर्मकी बात है। क्या मर्द भी अितने … थे कि वे डरकी वजहसे सभामें नहीं आये? क्या मुसलमान …जाते? अगर वे अितने कायर या बुज़दिल हैं, तो वे अिस मुल्कमें …लायक़ नहीं। मधुपुरमें बहनोंकी अेक सभा करनेका प्रस्ताव लेकर आज सुबह जो बहन मेरे पास आअी थीं, अुन्होंने मुझसे तीन सवाल पूछे थे। पहला सवाल यह था कि हमारी सारी कोशिशोंके बावजूद भी हम भगाअी हुअी औरतोंमेंसे कुछको अभी तक छुड़ा नहीं सके हैं। मैंने अुनसे कहा कि वे अपनी शिकायत मुझे लिखकर दे दें, तो मैं अुसे शहीद सुहरावर्दी साहबके पास भेज दूँगा। वैसे मैं बड़े वज़ीरको सीधे भी लिख सकता हूँ। अिस मामलेमें ज़रा भी देर न होनी चाहिये। अुनकी दूसरी बात यह थी कि गाँवोंमें कुछ औरतें अैसी हैं, जो वापस आना चाहती हैं, मगर अिसके लिअे वे फ़ौजी मददकी अुम्मीद रखती हैं। लेकिन मैं अिसमें अुनका साथ नहीं दे सकता। मैं आपके बड़े वज़ीरसे साफ़-साफ़ कह चुका हूँ कि मुझे अुनकी पुलिस और फ़ौजका कोअी मोह नहीं। वे किसी भी वक़्त अुन्हें हटा सकते हैं। अगर हिन्दू और मुसलमान अेक-दूसरेका सिर तोड़ना चाहें, तो अुन्हें अिसकी पूरी आज़ादी होनी चाहिये। मैं अिसे सह लूँगा। लेकिन अगर अपनी मददके लिअे आप पुलिस और फ़ौजका मुँह ताकते रहे, तो याद रखिये कि आप हमेशाके लिअे गुलाम बने रहेंगे। जो लोग आज़ादीके मुक़ाबले सलामतीको ज़्यादा पसन्द करते हैं, अुन्हें जीनेका कोअी हक़ नहीं। मैं चाहता हूँ कि हमारी बहनें बहादुर बनें। ज़ोरो-ज़ुल्मकी धमकियोंसे डरकर बदला गया धर्म सच्चा धर्मान्तर नहीं, बल्कि बुज़दिली है। डरपोक मर्द या औरत किसी भी मज़हबके लिअे बोझरूप है। आज मारे डरके वे मुसलमान बन जायँगे, कल अीसाअी और परसों किसी तीसरे मज़हबमें चले जायँगे। यह चीज़ अिनसानोंको शोभा नहीं देती। पुरुष कार्यकर्त्ताओंको बहनोंसे कह देना चाहिये कि हम आपके रक्षक हैं और जान देकर भी आपकी हिफ़ाज़त करेंगे। अगर अितने पर भी बहनें बाहर आनेसे डरें, तो अुनकी कोअी मदद नहीं की जा सकती। मैं पुकार-पुकारकर यह कहने आया हूँ कि बहनोंको या तो बहादुर बनना होगा या मरना होगा। आज जो मुसीबत अुन पर आ पड़ी है अुससे फ़ायदा अुठाकर अुन्हें अिस डररूपी राक्षसको अपने दिलोंसे निकाल भगाना चाहिये।" अख़ीरमें अुन बहनने पूछा कि हम निराश्रितोंको घर लौट जानेकी सलाह कैसे दें? गांधीजीने जवाब दिया — "मैं अुन्हें पुलिस या फ़ौजकी हिफ़ाज़तमें वापस जानेकी सलाह नहीं दे सकता। वे मुसलमानोंसे डरकर भाग आये थे। अिसलिअे मुसलमानोंको आगे बढ़कर अुन्हें यक़ीन दिलाना चाहिये कि हम आपको अपनी ही मातायें, लड़कियें और बहनें समझेंगे, और अपनी जान देकर भी आपकी हिफ़ाज़त करेंगे।"

गांधीजीने आगे कहा — "हरअेक मर्द या औरतको किसी बाहरी दस्तन्दाज़ीके बिना अपने धर्ममें रहनेका हक़ है, होना चाहिये। सब लोग अलग-अलग नामोंसे अेक ही भगवान्‌की पूजा करते हैं। अगर मैं अिस पेड़में अपने भगवान्‌को देखता हूँ और अिसलिअे अिस पेड़की पूजा करता हूँ, तो मुसलमानोंको अुस पर कोअी अेतराज क्यों होना चाहिये? अगर कोअी यह दावा करता है कि अुसका भगवान् दूसरोंके भगवान्‌से श्रेष्ठ है, तो वह ग़लती करता है। भगवान् तो सबका अेक ही है। अिसीलिअे मैंने यह तरीक़ा सुझाया है कि हरअेक गाँवसे अेक भले हिन्दू और अेक भले मुसलमानको आगे आकर गाँवमें अमन और शान्ति बनाये रखनेकी गारण्टी देनी चाहिये। तभी मैं निराश्रितोंको अपने-अपने घर लौटनेकी सलाह दूँगा। आपके वज़ीरोंको भी मेरा यह सुझाव पसन्द आया है।"

क़ाज़ीरखिल, २४-११-४६

(अंग्रेज़ीसे)

प्यारेलाल

भूल-सुधार

२४-११-४६ के 'हरिजनसेवक' में पृष्ठ ४०३ पर छपे 'पतिके लिअे कातनेवाली' लेखके आख़िरी पैरेमें 'सुरतिया' के बदले 'सुरातिया' पढ़िये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँकी वेदना

अेक माँ थी। धर्ममें बहुत श्रद्धा रखती थी। दिन निकलते ही वह गाँवके हरअेक मन्दिरमें जाती, और अुसके सामने सिर झुकाती। गिरजाघर और मसजिदके पाससे भी गुजरती और वहाँ भी अपना सिर झुकाती। अुसने अपने घरमें तरह-तरहके पत्थर, काँचके मणि, सिक्के, और धातुकी मूर्तियाँ वग़ैरा चीज़ें अिकट्ठा की थीं। अिन सबको अुसने अपने पूजाघरमें रख दिया था, और अिन्हें देव समझकर वह अिन सबकी पूजा करती थी। अगरचे अिस तरह वह बहुतसे देव-देवियोंकी पूजा करती थी, फिर भी अुसके दिलमें अेक धुँधला-सा मगर पक्का विश्वास यह भी था कि अिन सब देवोंके पीछे अेक ही बड़ा देव है, जो भलाअी और प्रेमसे भरा हुआ है। और अुसके दिलमें मौतके बादकी ज़िन्दगीका भी कुछ धुँधला चित्र अुठता था। अलबत्ता, अुसकी यह श्रद्धा और ये कल्पनाअें बहुत साफ़ न थीं, और अुन्हें ज़बानसे कहना अुसके लिअे और भी मुश्किल था, फिर भी वे अुसे श्रद्धा, आशा, प्रेम, मुसीबतें सहन करनेकी हिम्मत, अपना फ़र्ज़ अदा करनेकी ताक़त, और नेकचलनी व वफ़ादारीसे ज़िन्दगी बसर करनेका धैर्य देती थीं।

माँ के बहुतसे बेटे, पोते और परपोते थे। अुन सबको अुसने प्रेमसे पाला था, और वे सब माँके धर्मकी हवामें बड़े हुअे थे। अुनमेंसे कुछ तो अपनी माँकी तरह ही भोले भावसे भगवान्में श्रद्धा रखनेवाले थे, और धर्मकी लम्बी-चौड़ी बातोंमें कभी न पड़ते थे। लेकिन बहुतसे बच्चे 'पंडित' बन गये थे, और तरह-तरहके मज़हबों और फ़िलॉसफ़ियोंके गुरुओं और मन्दिरों व मठोंके आचार्यों और महन्तोंके परिचयमें आये हुअे थे। चुनाँचे, अुनमेंसे कअी अपनेको शैव, कअी वैष्णव, कअी जैन कहते थे; कअी अेक देवको मानते, कअी तीन देवोंको मानते और कअी बहुतसे देवोंको; अुनमेंसे कुछ अीसाअी और मुसलमान भी बन गये थे। माँके कुछ बेटे मूर्तिपूजामें विश्वास रखते थे, और कुछ अुससे नफ़रत करते थे। अुनमें कुछ अैसे भी थे, जो .ख़ुदाकी हस्तीसे अिनकार करते थे, और प्रकृति या .क़ुदरतको ही आख़िरी चीज़ समझते थे। लेकिन वे सब 'मज़हबी ख़याल'के थे। और अिसमें अचरजकी बात यह थी कि कअियोंकी मज़हब-ख़यालीका अेक नतीजा यह हुआ था कि जितनी अुनकी मज़हब-ख़याली बढ़ती थी, अुतने ही वे अपने रोज़-ब-रोज़के आपसी बरतावमें बुरे और अिनसानियतमें कम होते जाते थे। और, अुनमें जो लोग मज़हबी मामलोंमें बहुत चुस्त थे, वे बार-बार धर्मकी चर्चायें छेड़ते थे, और अिस बातकी बहस करते थे कि कौनसे सिद्धान्त व अुसूल, पूजाकी कौनसी विधियाँ, और जीवनका कौनसा ढंग सच्चा है। कभी-कभी अिन चर्चाओंमें अितनी गरमी पैदा हो जाती थी कि बात आपसी तू-तू, मैं-मैं और मार-पीटतक पहुँच जाती थी। बात यह थी कि अपने ख़ास मज़हबी फ़िरक़ेकी सचाअी, बे-भूली और पूर्णतामें जिसका जितना विश्वास बढ़ता जाता, अुतना ही वह दूसरे फ़िरक़ोंको माननेवाले अपने भाअी-भतीजोंको बरदाश्त करनेकी ताक़त खोता जाता था।

हरअेक बच्चा अपनी माँको अपने धर्मके सिद्धान्त समझानेकी कोशिश करता और चाहता कि माँ .ख़ुद अुसे अपना ले और दूसरे बेटोंको भी अुसमें शरीक होनेके लिअे फरमाये। लेकिन भोली माँ जवाब देती — "बेटा, मैं बूढ़ी और बेसमझ हूँ। मुझे अपने रास्ते जाने दो, और तुम सब भी अपने-अपने दिलके रास्ते पर चलो। मेरी अेक बात मानो। नेकचलन और वफ़ादार रहो, अपने भाअी-भतीजों पर मुहब्बत रखो, और अुनके ख़यालोंकी भी वैसी ही अिज़्ज़त करो, जैसी .ख़ुद अपने ख़यालोंकी करते हो। अगर अैसा करोगे, तो तुममेंसे हरअेकका भला ही होगा।"

लेकिन जैसे-जैसे वक़्त गुज़रता गया, अपने-अपने फ़िरक़ेके अभिमानमें ये भाअी अपना रिश्ता भूलने लगे और अेक-दूसरेको पराया और दुश्मन समझने लगे। चुनाँचे आपसकी तू-तू, मैं-मैं और मार-पीट भाअी-भाअीके बीचकी लड़ाअी और क़त्लमें बदल गअी, और हरअेक बेटा दूसरे धर्मको माननेवाले अपने भाअियों और भतीजोंको नाबूद करने या अुन्हें ज़बरदस्ती अपने धर्ममें लानेकी कोशिश करने लगा।

अिस तरह अपने भाअी पर .ज़ुल्म करके अेक बेटा अपनी माँके पास जाता और ग़रूरके साथ कहता — "देखो माँ, मैंने सत्य धर्मकी रक्षा और प्रचारके लिअे अपने अिस भाअीके बेटों और पोतोंका बड़ी .ख़ूबीके साथ नाश किया है; क्योंकि मैं मानता हूँ कि .ख़ूनके रिश्तेसे हक़ या सत्य कहीं बढ़कर है।" वह अुम्मीद करता कि अुसकी बात सुनकर माँ अुसे मुबारकबादी देगी, और अुसकी धार्मिकता की सराहना करेगी। लेकिन माँ अपने प्यारे बच्चोंके क़त्लकी बात सुनते ही रो पड़ती। वह अपने अिस बेटेकी हैवानियत और बेरहमी पर नफ़रत दिखाती।

तब माँका रोना-पीटना और अुसकी सख़्त-सुस्त बातें सुनकर दूसरे बेटे और अुनके बच्चे समझते कि मानो अिस तरह माँने अुन्हें अिसका बदला लेनेकी ही अिजाज़त दी है। और, वे अपने ज़ालिमके बेटों-पोतों पर वैसे ही ज़ुल्म गुज़ारते, और ख़ुशियाँ मनाते हुअे माँके सामने अपने क्रूर कामोंका बयान करते। वे मानते कि माँ अुनकी बात सुनकर अुन्हें शाबाशी देगी।

लेकिन माँ तो फिर रो पड़ती और अिन नये ज़ालिमोंको भी फटकारती। क्योंकि वह तो दोनों तरफ़के मरनेवालों और मारनेवालोंकी अेकसी माँ थी, और वह अुनमेंसे किसीको भी खोनेके लिअे राज़ी न हो सकती थी। अिन सब बातोंसे अुसे बहुत रंज होता, और अपने बेटोंके अिन बुरे कामोंकी वजहसे खोअी हुअी अपनी शान्तिको फिरसे पानेके लिअे वह रोज़ा रखती और प्रार्थनापूर्वक, करुण भावसे अपने अीश्वरकी शरण खोजती।

अगर माँकी यह भावना हो, तो अिसमें ताज्जुब क्या? केवल हिन्दू या केवल मुसलमान, या विचारमें राष्ट्रवादी लेकिन दिलकी गहराअीमें जातिवादी कांग्रेसजनकी हैसियतसे आप अेक फ़िरक़े द्वारा दूसरे पर किये गये अत्याचारोंके प्रति पारी-पारीसे अपना ग़ुस्सा या सन्तोष दिखा सकेंगे, और फ़िरक़ेवाराना संगठनका विचार कर सकेंगे। लेकिन अेक मिनटके लिअे यह ख़याल कीजिये कि हमारा यह ग़ुस्सा और सन्तोष, यह फ़िरक़ेवाराना ग़रूर देखकर और ये नारे सुनकर माँको क्या लगता होगा? आप अुसकी नज़रसे अपनी नज़र मिलाअिये, आप देखेंगे कि वह रो रही है और अेक गहरे दुःखमें डूबी हुअी है।

अगर आप अिस माँकी कल्पना नहीं कर सकते, तो आप गांधीजीकी आँखों और अुनके दिलकी तरफ़ देखिये; वहाँ आपको माँकी वेदनाके दर्शन होंगे।

वापी, २४-११-'४६ **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

विषय-सूची

मालवीयजी महाराज	...	गांधीजी
लोकहितको 'लाअिन-क्लीयर' दीजिये	...	काका कालेलकर
नक़्शा	...	
"करेंगे या मरेंगे" मिशन	...	प्यारेलाल
हफ़्तेवार ख़त	...	प्यारेलाल
माँकी वेदना	...	किशोरलाल मशरूवाला
टिप्पणी		
पढ़नेवालोंसे	...	मैनेजिंग अेडीटर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्ममें राजसत्ता

रजि० नं० बी ४४५८

हरिजन सेवक

दो आना

सम्पादक – प्यारेलाल

भाग १०

अंक ४५

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० १५ दिसम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशोंमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

तरक्क़ीकी निशानी

श्री परीक्षितलाल मजमूदारने भाओी श्यामलालजीके नाम अेक दिल छूनेवाला खत लिखा है। वैसे अिस खतकी बातोंका जिक्र अेक दूसरे जरियेसे मिली खबरके मुताबिक़ मैं पहले गुजराती 'हरिजनबन्धु'में कर चुका हूँ। फिर भी भाओी श्यामलालजीकी तरफ़से आये श्री परीक्षितलाल मजमूदारके खतका कुछ हिस्सा, पुरानी बातके दोहराये जानेका खतरा अुठाकर भी, नीचे देता हूँ।

"मुझे आपको यह लिखते हुअे ख़ुशी होती है कि आख़िर भगवान्की दयासे रास्ता खुलने लगा है। मैं यह खत बारडोलीसे लिख रहा हूँ। मैं आपको यक़ीन दिला सकता हूँ कि अिस साल गांधी-जयन्तीके हफ़्तेमें हरिजनोंके लिअे क़रीब ४० कुअें खुले दिलसे खोले जा चुके हैं। ध्यान रहे कि अिसके लिअे किसी तरहका दबाव नहीं डाला गया था। लोगोंने अपनी राज़ी-ख़ुशीसे यह काम अुठा लिया है। अैसे मौक़ों पर हमारे काम करनेवाले सभी जगह पहुँच नहीं पाये; मगर गाँववालोंने ख़ुद ही हरिजनोंको तैयार किया और वे अुन्हें आम कुओं पर पानी भरनेके लिअे ले गये। मेरे पास अब तक अिसकी खबरें बराबर आ रही हैं। मैं ख़ुद कुछ जलसोंमें शरीक हुआ हूँ, और यह चमत्कारी फेरफार मैंने अपनी आँखों देखा है। अिसके लिअे मैं भगवान्को धन्यवाद देता हूँ। अिसमें शक नहीं कि गांधीजीकी कोशिशों और हालके अुनके लेखोंकी वजहसे यह तब्दीली हुअी है। गाँवोंके नौजवानोंने आगे बढ़कर अिसमें मदद की है, बड़े-बूढ़े पीछे रहे हैं, लेकिन अुन्होंने या तो अिसके लिअे अपनी दुआयें दी हैं, या वे ख़ामोश रहे हैं। अुनमेंसे किसीने विरोध नहीं किया। मैं आपको यह भी बता दूँ कि अिधर अिस तरफ़ कअी अन्तर्जातीय दावतें भी हुअी हैं। अैसी अेक बड़ी दावत नड़ियादमें हुअी थी। नड़ियाद खेड़ा ज़िलेकी सच्ची राजधानी है। क़रीब ४५० लोग, जिनमें २५० के क़रीब अूँची जातके हिन्दू थे, अपने-अपने घरोंसे पका-पकाया खाना लाये और रामजी मन्दिरके आँगनमें बैठकर सबने भोजन किया। सन् १९२८में श्री ठक्कर बापाने यह मन्दिर भंगियोंके लिअे बनवाया था। अिस दावतमें २०० भंगी भी शरीक हुअे थे। बड़ा आनन्द रहा। चूँकि लोग अपने-अपने घरसे पका-पकाया खाना ले आये थे, अिसलिअे राशनका क़ानून नहीं टूटा। खेड़ा ज़िलेमें हरिजनों और सवर्णोंकी अितनी बड़ी दावत अिससे पहले कभी नहीं हुअी थी।

"कड़ी गाँवमें, जो कट्टरपन्थियोंका गढ़ है, अेक ख़ास कुआँ खोला गया है, और बड़ौदा रियासतके पादरा गाँवमें १५० लोगोंने हरिजनोंके साथ बैठकर खाना खाया है। यहाँ अिस तरहके काम कअी जगह हो चुके हैं, लेकिन फ़िलहाल मैं अुन सबको गिना नहीं सकता।

"अिस बारेमें मैं गुजरातीमें बापाको अेक लम्बा खत लिखना चाहता हूँ, लेकिन वे अुसे पढ़ न सकेंगे। अगर मुमकिन हो, तो यह खत आप अुन्हें सुना दीजिये।"

हम जिस जगह पहुँचना चाहते हैं, अुसके मुक़ाबलेमें यह तरक़्क़ी बहुत ही मामूली चीज़ है। लेकिन जब यह ख़याल आता है कि अब तक गुजरात छुआछूत मिटानेके काममें पिछड़ा रहा है, तो जिस थोड़ी तरक़्क़ीका जिक्र श्री परीक्षितलालने क्षम्य सन्तोषके साथ किया है, अुससे ख़ुशी होती है। शर्त यही है कि गुजरातके लिअे यह अेक स्थायी चीज़ बने, और अिससे भी अुम्दा काम वहाँ बराबर होते रहें। छुआछूतके कफ़नमें ठोकी गअी हरअेक कील हिन्दूधर्मको पवित्र बनानेके लिअे अुठाया गया सही क़दम है। श्रीरामपुर, ३०–११–'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचंद गांधी

सवाल-जवाब

सम्बोधनके प्रकारोंमें साम्प्रदायिकता

स०—कांग्रेसी सरकारोंने रेलवे स्टेशनों पर "हिन्दू पानी (या चाय)" और "अिस्लामी पानी (या चाय)"की पुकारोंका बन्द करानेकी जो कोशिशें की हैं, वे मुझे अच्छी मालूम होती हैं। लेकिन साथ ही, क्या हिन्दुओं और मुसलमानोंके लिअे सम्बोधनके अलग-अलग प्रकारोंके अिस्तेमालसे, मसलन्, हिन्दुओंके लिअे श्री, श्रीयुत या श्रीमान् और मुसलमानोंके लिअे जनाब-साहब लिखने या बोलनेसे अैसे ही फ़िरक़ेवाराना अलगावको बढ़ावा नहीं मिलता? यह ठीक है कि अिनका अिस्तेमाल सम्मान जतानेके लिअे किया जाता है। ख़ुद गांधीजीने अिसकी शुरूआत की है, और आम तौर पर कांग्रेसी अिसका अनुसरण करते हैं। मगर मेरा अपना ख़याल यह है कि असलमें हम लोग, यानी जुदा-जुदा जातों और फ़िरक़ोंके लोग, अिस बातको पूरी तरह भूल नहीं पाते कि हम फलाँ जात या फ़िरक़ेके हैं। नतीजा यह होता है कि कहीं-न-कहीं हम अपने कामोंमें अपना असली रूप दिखाये बिना रह नहीं पाते। क्या आप अिस पर अपनी राय ज़ाहिर कीजियेगा?

ज०—यह अेक अच्छा सवाल है। मैं ख़ुद तो जात-पाँत जतानेवाले सम्बोधनोंको पसन्द नहीं करता—वे मुझे जँचते ही नहीं।

लेकिन फ़िलहाल मुख़्तलिफ़ जातों और फ़िरक़ोंके बीच अविश्वासकी जो हवा फैली हुअी है, अुसका ख़याल करता हूँ, तो लगता है कि यह वक़्त किसी तरहका फेरफार सुझानेके लिअे अच्छा नहीं है। अैसा सुझाव किसी अेक जातके आदमीने किया है, यह हक़ीक़त ही, दूसरी जातवालोंके नज़दीक अुसे नामंज़ूर कर देनेके लिअे काफ़ी हो सकती है। बावजूद अिसके, अगर कोअी पाठक हिन्दुस्तानी ढंगके, सबको पसन्द आ सकनेवाले, सम्बोधनका कोअी सामान्य प्रकार सुझायेंगे, तो अुस पर ग़ौर किया जा सकेगा।

ख़ुद मुझे अिस बातसे सन्तोष होगा कि मैं सभी मर्दोंको "भाओी या भाओीजी अ, या भाओी अ जी, या भाओी अ साहब" और सभी औरतोंको "बाओी या बाओीजी अ, या बाओी अ जी, या बाओी अ साहब" कहूँ, फिर वे किसी भी जात या फ़िरक़ेके क्यों न हों। अिनमेंसे 'जी' और 'साहब'को बोलने या लिखनेवाले अपनी मरज़ीके मुताबिक़ चाहे लिखें, बोलें, चाहे न लिखें, न बोलें। लेकिन 'हरिजन' साप्ताहिकोंमें तो गांधीजीने जो तरीक़ा चलाया है, वही तब तक चलेगा, जब तक वे अुसकी जगह दूसरी कोअी बात नहीं सुझाते।

वापी, ७–१२–'४६

किशोरलाल घ० मशरूवाला

(अंग्रेज़ीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुआछूतकी जड़

सूरत जिलेमें आमतौर पर छुआछूतकी घिन कम है। फिर, आजकल तो अिस बुराअीको मिटानेके लिअे वहाँ ख़ासी हलचल शुरू हुअी है। हरिजनोंके साथ बैठकर खाना खाने, अूँची जात-वालोंके घरोंमें अुनकी आमद-रफ़्त बढ़ाने, अूँची जातवालोंके कुओंसे अुन्हें पानी भरने देने, और ख़ास मौक़ों पर मन्दिरोंमें दाख़िल होने देनेकी कार्रवाअियाँ होती रहती हैं। फिर भी जब तक मनुष्य मनुष्यके बीचका भेदभाव दिलसे दूर नहीं होता, तब तक यह नहीं कहा जा सकता कि छुआछूत मिटने लगी है।

जलालपुर तालुक़ा समितिके सदर श्री लालभाअी नायककी अेक पत्रिकासे लिये गये नीचेके दो क़िस्से ग़ौर करने लायक़ हैं—

"कुछ दिन पहले अड़दा गाँवमें अेक हरिजन भाअी गाँवके बाहर अेक आम जगह पर बैठकर दातुन छील रहा था। अितनेमें अेक पाटीदार सज्जनका लड़का अुधरसे निकला। अुसने बात-बातमें अुस हरिजन भाअीको गाली दी। हरिजनने लड़केसे कहा कि वह गाली न दे। अिसपर अुसने दूसरी गाली दी। अिससे अुस हरिजन भाअीको ग़ुस्सा आ गया और अुसने अुस लड़केको दो चपतें जमा दीं। लड़केने घर जाकर अपने बापसे शिकायत की। बाप अुस हरिजनको लेकर पटेलके घर गया। पटेलने हरिजनको लाठीसे पीटा, और अूपरसे गालियाँ देकर अुसकी तौहीन की।

"दूसरा वाक़या कछौली गाँवका है। कछौलीके अेक हरिजनके बाड़ेमें किसी अनाविल भाअीकी गाय घुसकर नुक़सान करती थी। हरिजनने गाय निकालकर भगा दी। लेकिन अुसकी घरवाली अपनी, आदतके मुताबिक़, अनाविलको गाली देने लगी। अेक अनाविल नौजवान हरिजन बस्तीके पाससे जा रहा था। अुसने गाली सुनी और अुस बहनको गाली न देनेका हुक्म देने लगा। अिस पर अेक दूसरे हरिजनने अुस बहनका बचाव किया। नौजवानने हरिजनको देख लेनेकी धमकी दी और वह चल दिया।

"दूसरे दिन, जिस हरिजनका नुक़सान हुआ था, अुसे अुस अनाविल नौजवान और अुसके कुछ दोस्तोंने मिलकर गाँवके बाहर न सिर्फ़ धमकाया, बल्कि कहा यह जाता है, कि अुस पर हाथ भी चलाया। कुछ लोगोंने बीचमें पड़कर हरिजनको अनाविल नौजवानोंके हमलेसे छुड़ाया।

"अगले दिन गाँवके कुछ हरिजनोंने मार खानेवाले हरिजनके साथ अिन्साफ़ करनेके लिअे गाँवके चन्द अनाविल अगुओंसे प्रार्थना की। लेकिन गाँवके किसी आदमीने हरिजनोंकी मदद करनेकी मुस्तैदी नहीं दिखाअी। यही नहीं, बल्कि कुछ लोग तो हरिजनों पर ग़ुस्सा होकर अुन्हें पीटनेकी तैयारी करते नज़र आये। अिस पर कुछ समझदार लोगोंने हरिजनोंको वहाँसे चले जानेकी सलाह दी, और अिस तरह झगड़ा होते-होते बचा।"

आम तौर पर यह माना जाता है कि सूरत जिलेके लोगोंमें मार-पीट करनेकी आदत कम है। लेकिन जब हरिजनोंकी बात आती है, तो अुनकी यह नरमी ग़ायब हो जाती है। जब हरिजन जैसी हलकी मानी जानेवाली जातके लोग अनाविल या पाटीदार जैसी अूँची कहलानेवाली जातके लोगोंसे कोअी दलील करनेकी हिम्मत दिखाते हैं, या अुनके अन्यायपूर्ण बरतावकी तरफ़ अुनका ध्यान दिलानेकी कोशिश करते हैं, तो यह अुनसे बिलकुल सहा नहीं जाता; और वे यह महसूस भी नहीं करते कि हरिजनोंको गाली देनेमें या धौल-धप्पोंसे अुनकी पूजा करनेमें कोअी बुराअी है। हम यह सब मानो धर्मके नाम पर करते हैं। हिन्दूधर्म तो हमें यह सिखाता है कि मनुष्य किसी भी जात या धर्मका हो, पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़ हो, कोअी भी धन्धा या पेशा करता हो—अगर वह पेशा समाजके लिअे अुपयोगी है, और अीमानदारीके साथ किया जाता है, तो—अिनसानके नाते न वह अूँचा है, न नीचा है, क्योंकि सभी अिनसानोंमें अेक ही आत्मा रहती है, और सभी अिनसान अेक ही अीश्वरके अंश हैं। लेकिन अिस शानदार धर्मको बिगाड़कर हम जात-पाँतके और अूँच-नीचके दायरे बनाकर बैठ गये हैं। अभी तक हम यह नहीं समझ पाये कि अिसकी वजहसे हमारा समाज कितना कमज़ोर और अपाहिज बन गया है, और बनता जाता है; या यों कहिये कि अब धीरे-धीरे हम अिस बारेमें कुछ समझने लगे हैं। अगर हम यह सोचकर बेफ़िक्र हो जायँगे कि अिस तरहकी समझदारी समाजमें हौले-हौले ही फैलेगी, तो हम अपनी हस्तीको ही ख़तरेमें डाल देंगे। अब हौले-हौले काम करनेकी रीत नहीं चलेगी। जितनी जल्दी हम छुआछूतकी अिस जड़को, अूँच-नीचके अपने अिन ख़यालोंको, मिटायेंगे अुतनी ही अपनी ख़ैर समझिये।

अपनी जातकी अुच्चताका ग़रूर लेकर घूमनेवाले लोग यह तो समझ ही लें कि कैसी भी हलकी या नीच मानी जानेवाली जातके किसी भी आदमीको मारने, गाली देने या अुसकी तौहीन करनेका अुन्हें कोअी हक़ नहीं। अैसे लोग हिन्दू समाजका संगठन करनेकी बात करते सुने जाते हैं। अगर हिन्दू समाजका सच्चा संगठन करना है, तो वह दूसरी किसी जातके या धर्मके लोगोंके ख़िलाफ़ नहीं, बल्कि अपने ही समाजमें घुसी हुअी बुराअियोंके ख़िलाफ़, अन्याय और अत्याचारकी वृत्तिके ख़िलाफ़, और डर व बुज़दिलीकी आदतके ख़िलाफ़ करना है। छुआछूतकी बुराअी अिन सब बुराअियोंमें सिरमौर है।

साबरमती, १०-१२-'४६ (गुजरातीसे) **नरहरि परीख**

शास्त्रके सहारे हैवानियत!

जब अिनसान अपने अन्दर पाअी जानेवाली लड़ाअी, क़त्ल, दुश्मनी, ज़िनाकारी, चोरी, झुठाअी, ज़ुल्म, शराब और गोश्तकी दावतें वग़ैरा देने और लोगोंको वैसा करनेकी प्रेरणा देनेवाली वृत्तियोंके समर्थनमें शास्त्र या शरीअतका सहारा लेता है, या अिन कामोंको धार्मिक विधियों या महान् नैतिक हेतुओंका जामा पहनाता है, तब धर्म या मज़हबके नामका अितना भद्दा अुपयोग होता है कि दमभरके लिअे दिल यह चाहने लगता है कि अिससे बेहतर तो यह था कि धर्म और नीति, मज़हब और अिख़लाक़के बारेमें कोअी किताबें ही न लिखी जातीं।

अच्छे-बुरे या मुनासिब-नामुनासिब बरतावका फ़ैसला करनेके लिअे भले-बुरेकी पहचान करनेवाली अपनी बुद्धिका अिस्तेमाल करनेके बदले जब अिनसान धर्मशास्त्र या शरीअतके पन्ने अुलटने बैठता है, तब अक्सर वह ग़लत रास्ता पकड़ लेता है, और दूसरोंको भी अुसी रास्ते ले जाता है। क्योंकि वह जानता है कि विवेक-बुद्धिकी कसौटी पर अुसका बरताव ठीक साबित नहीं किया जा सकता; मगर अुसे वैसा साबित तो करना है; चुनाँचे धार्मिक साहित्यमें अैसे कामोंके लिअे कोअी आधार मिल जाय, तो बेफ़िकरी हो।

अेक गम्भीर स्वभाववाले अभ्यासी भाअीके पूछे हुअे नीचे लिखे सवालोंने दिलमें अूपरके ख़याल पैदा किये—

१ "यह माना जाता है कि महाभारतकी लड़ाअी अेक धार्मिक लड़ाअी थी। फिर भी अिसमें कोअी शक़ नहीं कि वह रिश्तेदारोंकी आपस-आपसकी ही लड़ाअी थी। आजकल जिसे हम राष्ट्रोंका गृहयुद्ध या सिविलवॉर कहते हैं, वह अुसी ढंगकी लड़ाअी थी। क्या वैसी लड़ाअी धर्म-युद्ध मानी जा सकती है? तो फिर आजकलके हिन्दू-मुस्लिम या और दूसरे दंगे भी धर्म-युद्ध क्यों न माने जायँ? अिनमें अल्पसंख्यक लोग जो अन्यायपूर्ण माँगें पेश करते हैं, वे कैसे मंज़ूर की जायँ? अिनके ख़िलाफ़ धर्म-युद्ध ही होना चाहिये या नहीं?

२. क्या श्रीकृष्णने भी धर्मकी विजयके लिअे, आन-बानके मौक़े पर, हथियार न अुठानेकी अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर रथचक्र (सुदर्शन) नहीं सँभाला था? आज अिस आन-बानके मौक़े पर पूज्य महात्माजी रथचक्र जितनी हिंसा क्यों नहीं करने देते?"

जब तक हम अपने सामने पेश मसले पर, अपनी विवेक-बुद्धिका अिस्तेमाल करके, ग़ौर नहीं कर लेते, तब तक धर्मशास्त्र या अितिहासका सहारा खोजनेका मौक़ा ही पैदा नहीं होता। यह आदत ही बुरी है।

अखण्ड हिन्दुस्तान या पाकिस्तानके सियासी मसलेको अेक ओर रखकर सिर्फ़ मानव-हित और मानव-धर्मकी, साधारण विवेक-बुद्धिसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सात्विक दृष्टिकोणसे, छान-बीन कीजिये। कलकत्तेमें, पूरबी बंगालमें और बिहारमें जो जबरदस्त मार-काट, लूट-पाट, आग और तरह-तरहके जुल्म हुअे, और दूसरे सूबोंमें छोटे-मोटे दंगोंसे लेकर छुरी भोंकने तककी जो वारदातें हो रही हैं, क्या अुनमें अिनसानियत है? क्या अुन्हें जारी रखना या बढ़ावा देना मुनासिब है? क्या आपकी विवेक-बुद्धि शैतानियतके अिस तमाशेको वाजिब ठहराती है? क्या आपका सात्विक हृदय अुसे पसन्द करता है? आपमें यह पागलपन कैसे और कहाँसे आ गया कि अगर आप हिन्दू हैं, तो मुसलमानोंको, या मुसलमान हैं, तो हिन्दुओंको देखते ही, मच्छरों पर डी० डी० टी० के फव्वारेकी तरह, अुनपर क़त्ल, आग और दूसरे अैसे-अैसे ज़ुल्म ढानेको तैयार हो जाते हैं, जिनका बयान नहीं किया जा सकता; और अपनी अिस तैयारीको ठीक साबित करनेके लिअे पुराण और क़ुरानका सहारा खोजते हैं? नोआखालीके देहातमें रहनेवाले बेचारे अध-भूखे किसान और नामशूद्र, या बिहारके गाँवोंमें रहनेवाले मुसलमान किसान या मजदूर, या कोलाबा ज़िलेके मछुअे और अुनके बालबच्चे क्या जानें कि अखण्ड हिन्दुस्तान या पाकिस्तान क्या बला है, और अिनका अुनके अपने जीने-मरनेके साथ क्या ताल्लुक़ है? अिनके लिअे बेचारे अिन लोगोंको क्यों मारा, काटा और सताया जाय? अपने किसी कामके सिलसिलेमें सड़कसे जानेवाले हिन्दू या मुसलमानने किसीका क्या बिगाड़ा है कि लुक-छिप कर अुसे छुरी भोंक देनेकी काली करतूतके लिअे आपके दिलमें हमदर्दी पैदा हो सकती है?

सच है कि अिनसानके दिलमें लड़ाअीकी प्यास अभी तक बुझी नहीं है! यही वजह है कि कहीं-न-कहीं छोटी-बड़ी लड़ाअियाँ होती ही रहती हैं। मुट्ठीभर लोगोंकी शैतानियतभरी महत्त्वाकांक्षा अिन लड़ाअियोंको अुकसाती और लाखों बेगुनाह लोगोंको अुनमें झोंक देती है। वह अरबों रुपयोंकी दौलत बरबाद करवाती और कअी सब लोगोंको हैरान-परेशान करती है। ये लोग भोलेभाले लोगोंको अपने जालमें फँसानेके लिअे तरह-तरहकी तरकीबोंसे काम लेते हैं। धर्म या मज़हबकी हिफ़ाज़तकी पुकार अैसी ही अेक तरकीब है। अिसके नामपर वे अिनसानोंको अितने अविचारी और जुनूनी बना देते हैं कि अुनके सामने शेर, चीता, भेड़िया, और पागल हाथी कोअी चीज़ नहीं रह जाते। अगर लोगोंसे यह कहा जाय कि तुम हैवान हो, अिसलिअे हैवानियतभरे काम करो, तो बहुत थोड़े लोग अुसके लिअे तैयार होंगे। लेकिन अुन्हें तो यह समझाया जाता है कि यह हैवानियत धर्म है, भगवान्ने और शास्त्रोंने अिसे फ़रमाया है, यह महान् यज्ञ है, भगवान्की कृपा पानेका यह अेक तरीक़ा है, तुम जिन्हें मारते हो या जिनपर ज़बरदस्ती करते हो, अुनका भी अिसमें भला है, या यह कि अगर तुम अुनकी मुख़ालिफ़त न करोगे, तो तुम्हारे धर्म और तुम्हारी क़ौमका नाम-निशान न रहेगा। शराब और ताड़ीसे भी बदतर, मज़हबकी यह शराब, लोगोंको अिस तरह पिलाअी जाती है।

अिन दंगों और पाण्डव-कौरवकी लड़ाअीके बीच कोअी मुक़ाबला हो ही नहीं सकता। वह लड़ाअी दो राज-परिवारोंके बीच हक़दावेकी लड़ाअी थी। और लड़ाअीका अैलान करनेके लिअे अुस ज़मानेमें जो रिवाज रायज था, अुसके मुताबिक़ सारी कार्रवाअी करनेके बाद दोनों दलोंने अपनी-अपनी फ़ौजें खुले मैदानमें अिकट्ठा कीं, और दोनों फ़ौजें खुलकर लड़ीं। अुस ज़मानेके युद्ध-सम्बन्धी नियमोंका बहुत-कुछ पालन करके ही वह लड़ाअी लड़ी गअी थी। अुसमें सैनिकों या फ़ौजियों के सिवा और किसीको छुआ तक नहीं गया था। फ़ौजियों पर हमला करनेके नियम बने हुअे थे। जब दो दलोंमेंसे किसी अेकने भी अुन नियमोंको तोड़ा, तो अुसके अपने दलकी तरफ़से भी अुसकी बुराअी ही की गअी। अिस तरह वह लड़ाअी तो थी, मगर चूँकि अुसमें लड़ाअीके कुछ नीति-नियमोंका पालन करना ज़रूरी था, अिसलिअे अुसे धर्म-युद्ध या धर्मकी लड़ाअी कहनेका रिवाज था।

आजकलके दंगोंमें अैसी कोअी बात नहीं होती। अिनमें तो अेक जातकी बड़ीसी भीड़ दूसरी जातके कुछ लोगोंपर या अिक्के-दुक्के आदमीपर अचानक हमला करती है, और बिलकुल बेगुनाहोंको भी मौतके घाट अुतार देती है। न हमला करनेवालोंमें कोअी बहादुर लड़वैया होता है, और न हमले के शिकार लोगोंमें कोअी मुजरिम-गुनहगार ही। जो लोग परदेकी आड़में रहकर अिन दंगोंको चलाते हैं, अिनका सूत्र-संचालन करते हैं, वे कोअी सिपहसालार या सेनापति नहीं होते, बल्कि अपने-आपको बचाकर और छिपाकर पैसेके बल काम करनेवाले हृदयशून्य मानवशत्रु होते हैं। मुमकिन है, अुनमेंसे कुछ लीडर या अगुआ भी माने जाते हों; मगर असलमें वे आमलोगोंके ख़ैरख़्वाह नहीं, बल्कि कसाअी हैं, जो अपनी कोअी ख़्वाहिश पूरी करनेके लिअे लोगोंको मरवाते हैं। उन्हें धर्मसे कोअी मतलब नहीं। और जिन्हें वे अुकसाते या .ख़ून करनेको ललचाते हैं, वे तो जानते तक नहीं कि धर्म या अधर्म किस चिड़ियाका नाम है। अगर अिन दंगोंकी तुलना पुराने ज़मानेकी किसी घटनासे करनी ही हो, तो महाभारतकी लड़ाअीके खतम होनेपर अश्वत्थामा और कृपाचार्यने रात पाण्डवोंकी छावनीमें जाकर जिस तरीक़ेसे अुसमें आग लगाअी और जिस कमीने ढंगसे सैनिकोंकी हत्या की, अुसके साथ की जा सकती है। द्वारकाकी यादवीको भी अिस मौक़े पर कुछ-कुछ याद किया जा सकता है।

लेखकने दूसरी मिसाल श्रीकृष्णके प्रतिज्ञा तोड़कर सुदर्शन सँभालनेकी दी है। लेखक पूछते हैं कि जब श्रीकृष्णने अैसा किया था, तो गांधीजी भी वैसा ही क्यों नहीं करते? और चूँकि गांधीजी सुदर्शन चलाना नहीं जानते, अिसलिअे वे दूसरोंको अुसे चलानेकी अिजाज़त दें! अिसका जवाब सामनेसे दूसरा सवाल पूछकर दिया जा सकता है। गांधीजीने बचपनमें अपने पितासे छिपाकर चोरी की थी और बीड़ियाँ पी थीं। अगर आपका लड़का आपसे पूछे कि महात्मा गांधी जैसोंने भी अैसा किया था, तो मेरे वैसा करनेमें आपको क्या अेतराज हो सकता है? अुलटे, मैं कोअी महात्मा बननेवाला नहीं; चुनाँचे मेरे लिअे तो अिसमें कोअी बुराअी ही न समझी जानी चाहिये! तो क्या यह जवाब काम देगा? अगर श्रीकृष्णके प्रतिज्ञा तोड़नेकी बात सच हो, तो वह अुनकी ख़ामी ही मानी जायगी। और चूँकि बात कुछ अैसी ही हो रही थी, अिसी-लिअे भीष्मने अुन्हें शरमिन्दा किया और अर्जुनने रोका था। याद रहे कि बड़े लोगोंके अच्छे कामोंकी ही नक़ल की जा सकती है; अुनकी कमज़ोरियों या ख़ामियोंकी नहीं।

जितनी जल्दी हम अिस साम्प्रदायिक विषरूपी महामारीसे बच निकलेंगे, अुतना ही हमारे देशका भला होगा। प्लेग, टाअिफॉअिड, हैजा, चेचक वग़ैरा महामारियोंसे भी यह ज़्यादा डरावनी चीज़ है। जब कोअी बीमारी या महामारी शुरू होती है, तो हम यह नहीं सोचते कि चूँकि बंगालमें हैजा शुरू हो गया है, अिसलिअे अुसका बदला लेनेके खयालसे हम अुसे बिहारमें भी शुरू कर दें। बल्कि हम तो यही सोचते हैं कि किन तरीक़ोंसे वह दूसरी जगह फैलनेसे रुकेगा। भलेचंगे आदमीको अुसकी छूतसे बचानेके लिअे हम तरह-तरहके अिंजेक्शनोंका पता लगाते हैं, अुबाला हुआ पानी पीते हैं, जन्तुनाशक चीज़ें छिड़कते हैं, और रोगके शिकार बने आदमीको दूसरोंसे अलग रखते हैं।

क्या फ़िरक़ेवाराना दुश्मनीके जहरका कोअी अैसा अिलाज हो सकता है कि अगर वह बंगालमें फैला है, तो अुसे बिहार, यू० पी०, बम्बअी वग़ैरा सूबोंमें फैलाया जाय और माना जाय कि अिस तरह मुल्क तन्दुरुस्त हो जायगा? जब अिनसान भले-बुरेकी तमीज़का ख़याल छोड़ देता है, तभी अुसे यह अुलटी नीम हकीमी सूझती है।

वापी, ३-१२-'४६ **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

(गुजरातीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

१५ दिसम्बर १९४६

धर्ममें राजसत्ता

जब-जब किसी धर्मके अुत्साही आचार्यके दिलमें राजकाजी हुकूमत हासिल करके अुसकी मददसे अपने सम्प्रदायका प्रचार करनेका लोभ पैदा हुआ है, तब-तब अुसके पीछे खून-खराबी और अमानुषी अत्याचार भी आये हैं। पुराने ज़मानेमें जब राज्यकी सारी हुकूमत राजाके ही हाथमें रहती थी, तब आसान तरीक़ा यह था कि राजाको अपना चेला बनाकर अुसकी मारफ़त अुस धर्मको राज्यका धर्म घोषित कर दिया जाय। अिसके साथ अक्सर जो अुस धर्मको मान लेते, अुन्हें कुछ फ़ायदे मिलते, और जो अुसे माननेसे अिनकार करते, अुन्हें कुछ सज़ायें दी जातीं। सज़ाओंमें किसी ख़ास करसे लेकर, अिनकार करनेवालोंका बायकाट करना, अुन्हें क़ैद करना, अुनके हाथ-पैर वग़ैरा काटना, अुन्हें सता-सताकर मारना, अुनकी ज़मीन-जायदाद ज़ब्त करना, अुन्हें देशनिकाला देना, औरतों और कमज़ोरोंको ज़बरदस्ती अपने मज़हबमें शामिल कर लेना, और पिशाचवृत्तिके दूसरे जो तरीक़े खोजे जा सकें, अुन तरीक़ोंको आज़माना, वग़ैरा बातें शामिल थीं। आग और तलवारकी ताक़तसे दूसरे देशोंमें भी अपने पंथका प्रचार करनेकी कोशिश की जाती थी।

बुद्धचरित्रमें देवदत्तका क़िस्सा मशहूर है। असलमें वह बुद्धका चेला था। लेकिन किसी वजहसे बुद्धके साथ अुसका झगड़ा हो गया, और अुसने अपना अलग पन्थ चलाने और बुद्धके पन्थको मिटाने का फ़ैसला किया। अिसके लिअे अुसे मगधके राजपुत्र अजातशत्रुको अपने हाथमें लेनेकी बात सूझी। अुसने अजातशत्रु पर अपना असर डालकर अुससे कहा — "जीवन क्षणभंगुर है। मौत कब आ जायगी, कुछ कहा नहीं जा सकता। पहले तू मरेगा या राजा मरेगा, सो कौन जानता है? तुझे धर्मके कअी काम करने हैं। राजाके मरने तक राह देखना तेरे लिअे ठीक नहीं।" अिस तरह अुसे फुला-फुलाकर आख़िर अुसने अजातशत्रुको अिस बातके लिअे अुभाड़ा कि वह पिताको क़ैद करके .ख़ुद गादी पर बैठ जाय। जब यह काम हो गया, तो नये राजाकी मददसे अुसने बुद्धको और अुसके चेलोंको सताना शुरू किया, और .ख़ुद बुद्धकी जान लेनेके लिअे कअी साज़िशें कीं।

प्रह्लादकी कहानी भी धर्मके लिअे दी गअी अैसी तकलीफ़ोंका अेक लम्बा बयान है। पुराणोंमें कवियोंने अुसे अिस तरह पेश किया है, मानो सब .ज़ुल्म अेक ही आदमी पर किये गये हों। असलमें वह अेक सम्प्रदायके राजा द्वारा दूसरे सम्प्रदायको माननेवाले लोगों पर किये गअे .ज़ुल्मोंका बयान है। अुसमें यह दिखाया गया है कि धर्म-मतको न बदलनेके अपराधके लिअे धर्मान्ध राजा कैसे-कैसे ज़ुल्म कर सकता है।

समूची दुनियाके किसी भी ख़ास या बड़े सम्प्रदायके अितिहासको देखनेसे अुसमें अिसी तरहके ज़ुल्मोंकी कहानी मिलेगी। जिस किसी सम्प्रदायने साम्प्रदायिक जोशके साथ हुकूमत सँभाली है, अुसके हाथों अक्सर दूसरे सम्प्रदायके लोगोंने ज़ुल्म सहे हैं, और फिर अपने हाथमें हुकूमत आने पर अुलटकर वैसे ही .ज़ुल्म दूसरों पर किये हैं। अिस तरह हमारे देशमें वैदिकों, बौद्धों, जैनों, लिंगायतों, शैवों, वैष्णवों, सिक्खों और अुनके अुप-पन्थोंने अपने-अपने ज़मानेमें किसी वक़्त .ज़ुल्म सहे हैं, तो दूसरे किसी वक़्त (कभी हुकूमत अुनके हाथमें रही हो तो) दूसरों पर .ज़ुल्म ढाये भी हैं।

यूरोपमें और पच्छिमी अेशियामें भी अैसा ही हुआ है। अीसाअियोंके धर्मयुद्ध, मुसलमानोंके जिहाद, शुरूके ज़मानेमें यहूदियों और रोमनों द्वारा अीसाअियों पर किये गये .ज़ुल्म, बादमें अीसाअियोंके हाथों यहूदियों पर हुअे .ज़ुल्म, और जिस अीसाअी पन्थके हाथमें हुकूमतकी पूरी बागडोर हो, अुसके हाथों दूसरे अीसाअी पन्थों या फ़िरक़ों पर हुअे हैवानियतभरे ज़ुल्म, क़रीब-क़रीब अीसाअी धर्मके पैदा होनेके ज़मानेसे हमारे ज़माने तक होते रहे हैं। हज़ारों लोग अिन साम्प्रदायिक अत्याचारोंसे घबराकर अिंग्लैण्ड, हॉलैण्ड और अमेरिका वग़ैरा मुल्कोंमें जाकर बस गये हैं। रूसमें अीसाअी धर्मको दबा देनेके लिअे बोल्शेविक सरकारकी तरफ़से अिसी तरहके ज़ुल्म अिसी सदीमें हुअे हैं। यूरोपका सारा अितिहास अैसी बातोंसे भरा पड़ा है। धर्मके नाम पर पैदा हुअी यह पैशाचिकता अैसी है कि अिसका बयान पढ़ते-पढ़ते .ख़ून ख़ुश्क हो जाता है। चीन और जापानकी तवारीख़में भी अैसी बातें पाअी जाती हैं।

जब किसी राज्य या हुकूमत ने सभी धार्मिक मतों और पन्थोंसे परे रहकर राजकाजी मामलोंमें अिस बातका ख़याल नहीं किया है कि अुसकी रिआया किस मत, पन्थ या फ़िरकेको माननेवाली है, और जब अुसने सभी सरकारी हाकिमोंके लिअे मज़हबी मामलोंमें बिलकुल निष्पक्ष रहनेका फ़रमान जारी किया है, तभी रैयतको अपना दिल-पसन्द धर्म या मज़हब माननेकी आज़ादी मिली है, और जनता भी अलग-अलग पन्थों या फ़िरक़ोंके प्रति सहिष्णु बनना सीखी है।

तरह-तरहकी यातनायें सहकर और कठोर अनुभवोंमेंसे गुज़रकर हिन्दुस्तानके धार्मिक पन्थोंने आम तौर पर दूसरोंके मतको सह लेनेका गुण सीखा है। शैव, वैष्णव, जैन, बौद्ध, अेकेश्वर पूजा, विविध देवपूजा, भूतपूजा और निरी नास्तिकता तक अेक-दूसरेके विरोधी-से मालूम होनेवाले कअी पन्थोंके रहते भी, अगर अिन सबको हिन्दू-धर्मका नाम देना मुनासिब है, तो वह अिसी वजहसे कि अिन सबमें जो अेक सामान्य गुण पाया जाता है, वह है अिनकी धार्मिक सहिष्णुता।

अिस गुणकी तहमें रही हुअी सचाअी भारतवर्षको अीशुके भी जन्मसे पहले पहली बार सूझ चुकी थी। अलबत्ता, आम लोगोंके दिलोंमें जड़ जमानेके लिअे अुसे कुछ सदियाँ ज़्यादा लगी थीं। फिर भी अैसा मालूम होता है कि मुसलमानोंके अिस देशमें पहली बार आनेसे पहले यह गुण यहाँ ठीक-ठीक थिर हो चुका होगा। सम्राट् अशोकने अिस सचाअीको अच्छी तरह पहचाना था। वह ख़ुद बौद्ध था, बौद्धधर्ममें गहरी श्रद्धा रखता था, और बड़े अुत्साहके साथ अुसे सारी दुनियामें फैलाना चाहता था। पं० जवाहरलाल नेहरू अपनी 'डिस्कवरी ऑव् अिण्डिया' में लिखते हैं —

> "अुसके दूत और वकील सीरिया, अीजिप्ट, मैसीडोनिया, सीरीन, और अेपिरस तक पहुँचे थे, और अुन्होंने वहाँ अुसकी शुभेच्छा और बुद्धका सन्देश पहुँचाया था। वे लोग मध्य अेशिया, बरमा और स्याममें भी गये थे। लंकामें तो अुसने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्राको ही भेजा था। हर जगह बुद्धि और हृदयसे ही अपील की गअी थी; कहीं धमकी या ज़बरदस्ती न थी। .ख़ुद श्रद्धालु बौद्ध होते हुअे भी दूसरे मत, पन्थ या फ़िरक़ोंके लिअे अुसके दिलमें अिज़्ज़त और क़द्र थी। अपने अेक शिलालेखमें अुसने अैलान किया है कि 'सभी पन्थ किसी न किसी कारणसे आदरके योग्य हैं'। अिसी तरह मनुष्य अपने पन्थको अूपर अुठाता है, और साथ ही दूसरे पन्थवालोंकी भी सेवा करता है।"

हिन्दुस्तान पर हमला करनेवाले शुरूके मुसलमान, तजरबेकारके बजाय जुनूनी ज़्यादा थे, अिसलिअे वे हुकूमतकी मददसे धर्मका प्रचार करनेके तरीक़ेसे ही चिपटे रहे। लेकिन जैसे-जैसे वे थिर होते गये, वैसे-वैसे अुनकी समझ पक्की होती गअी, अुनकी दानाअी बढ़ती गअी। लेकिन राज्यको और राज्यके सेवकोंको धर्म-सम्प्रदायसे परे रखनेका सबक़ अभी अुनके दिलोंमें पक्का भी नहीं हो पाया था कि अितनेमें अुनकी हुकूमत ही ख़त्म हो गअी। अिसकी वजहसे हुकूमतके ज़रिये अपने धर्मको पोसनेके लालचका बीज अुनमें बना रहा, चुनाँचे अब हिन्दुस्तानमें मुसलमानोंकी बस्तीवाला और मुसलमानोंकी ही हुकूमतवाला अेक मुस्लिम राज्य क़ायम करनेकी महत्त्वाकांक्षाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्लिम लीगी नेताओंके दिलों पर क़ब्जा कर लिया है। और अिस तरह अेक बार फिर फ़िरक़ा-परस्त हुकूमतका जहर हिन्दुस्तानकी जनतामें फैला है। बंगालमें मुस्लिम लीगके हाथमें थोड़ी हुकूमत आअी है। वह अभी पूरी तरह मज़बूत या पक्की भी नहीं हो पाअी है, तहाँ तो हमें अिस बातका अेक पदार्थपाठ मिल गया कि साम्प्रदायिक हुकूमत अपनी रैयत पर कैसा और कितना कहर बरपा कर सकती है।

हिन्दू भी यह कहकर बच नहीं सकते कि बिहारमें या दूसरे सूबोंमें अुनकी तरफ़से जो हैवानियतभरे जुल्म हुअे, वे शुरूमें मुसलमानोंके हाथों हुअी ज़्यादतियोंका जवाबभर माने जायँ। साम्प्रदायिक हुकूमतके अनर्थोंका अुन्हें बहुत तजरबा है। जवाबमें वैसी ही दूसरी साम्प्रदायिक हुकूमत क़ायम करके हम अिन अनर्थोंको मिटा नहीं सकते। अखण्ड या खण्डित हिन्दुस्तान,— यानी हिन्दूधर्म और हिन्दू-संस्कृतिके पोषणका बीड़ा अुठानेवाली हुकूमत — पाकिस्तान — यानी मुस्लिम धर्म और संस्कृतिको अपनानेवाली हुकूमत — की महत्त्वाकांक्षाका कोअी अुचित या मुनासिब जवाब नहीं। अिन दोनों धर्मोंको, और अिसी तरह सिक्ख, ख्रिस्ती और जरथोस्ती व दूसरे सब धर्मोंको भी दूधमें शकरकी तरह अेक-दूसरेके साथ घुलमिलकर अेक सामान्य राष्ट्रीय — बल्कि मानव — संस्कृति पैदा करनी चाहिये — यही अिसका अिलाज है। अेक-दूसरेसे अलग होने या अेकके दूसरेको निकाल भगाने या मिटा डालनेका ख़याल ग़लत और दुष्टतापूर्ण है।

वापी, २७-११-'४६

(अंग्रेजीसे) किशोरलाल घ० मशरूवाला

खादीका सन्देश

यह है खादीका सन्देश।

खेती, खादी, ग्रामोद्योग और गोपालनके मामलोंमें हमारे घर और गाँव स्वावलम्बी बन जायँ, और हम अिनमें ज़रूरतसे ज़्यादा परस्परावलम्बन दाखिल न करें, और ज़रूरी परस्परावलम्बन और सहयोग न टालें, तो कुदरती तौर पर अैसा समाज स्वावलम्बी, स्वयंपूर्ण और स्वतंत्र बने बिना न रहे। चूँकि अैसे समाजमें आपसी होड़ाहोड़ी कम-से-कम होगी, अिसलिअे अुसमें आपसका समभाव ज़्यादा-से-ज़्यादा रहेगा और बढ़ेगा। अैसे समाजको ही हम अहिंसक समाज कहते हैं।

मनुष्य-जातिके ठीक बचपनके दिनोंमें शायद अैसे समाजकी स्थापना नहीं हो सकती। लेकिन अपनी तन्दुरुस्त जवानीके दिनोंमें तो मनुष्योंके समाजको कुदरती तौर पर अहिंसक बनना ही चाहिये। अगर ज्ञान, विज्ञान और कला-कौशलके विकासके साथ समाज जाग्रत और तेजस्वी बना रहे, तो अुसे सहज ही यह सूझ जाय कि अहिंसा ही मनुष्यके जीवनका धर्म है। लेकिन जब तक यह ज्ञान भोला है, तब तक यह सुरक्षित या सलामत नहीं। जीवनका कडुआ-मीठा अनुभव मिलनेके बाद ही मनुष्यको भले-बुरेका साफ़-साफ़ ख़याल होता है। और, अिस ख़यालके बाद अुसके मनमें जो अहिंसा होगी, वही लम्बे वक़्त तक क़ायम रहेगी। अगर पिछले पाँच-दस हज़ार बरसके अनुभवके बाद भी मनुष्य-जाति अहिंसाकी ओर न बढ़ी, तो अिसमें शक नहीं कि वह मिटकर ही रहेगी।

अहिंसा कोअी अैसी वृत्ति या जहनियत नहीं, जो कोरे धर्मोपदेशसे अपने-आप मनमें बस जाय। अहिंसाकी स्थापनाके लिअे तो मनुष्यको अेक ख़ास तरहका तन्दुरुस्त जीवन बितानेकी कला सीखनी चाहिये, अेक ख़ास तरहकी समाज-व्यवस्था क़ायम रखनी चाहिये, और अिसके लिअे मनुष्यको अेक ख़ास तरहकी जीवन-दृष्टि अपनानी चाहिये।

दुनियामें आज जिस तरहकी सरकारें क़ायम हैं, वे सरकारें अहिंसक समाजमें शामिल नहीं हो सकतीं। अिन सब सरकारोंका जीवन-दर्शन नास्तिकतापूर्ण होता है। अिनका आख़िरी विश्वास मनुष्यकी अूँची वृत्तियोंपर नहीं रहता, बल्कि सज़ा, जबरदस्ती, अिनाम, और अिज़्ज़तके ज़रिये प्रकट होनेवाली डर, लालच और अहंकार या .खुदीकी तीन हलकी वृत्तियों पर रहता है। अिनसानके लिअे यह अेक निहायत शर्मकी बात है कि अुसे अैसी सरकारोंको मंज़ूर करना पड़ता है। लेकिन अिनसान करे क्या? अेक बार बनावटी ज़िन्दगी, बनावटी आदर्श और बनावटी ज़हनियत पैदा करने और समाजी ज़िन्दगीको बीमार बनानेके बाद अिनसान नक़ली सरकारें क़ायम करके अुन्हें चलाये नहीं, तो और क्या करे? कहाँ जाय?

खुजलीके बीमारको अपना बदन खुजलानेमें बहुत सुख मिलता है। लेकिन अिसीलिअे कोअी यह न कहेगा कि खुजली बीमारी नहीं, बल्कि जीवनकी अेक सिद्धि है। अिसी तरह चूँकि आजकलकी संस्कृति या तहज़ीबके ज़रिये अिनसानकी कुछ हवसें पूरी होती हैं, महज़ अिसलिअे यह साबित नहीं होता कि यह संस्कृति रोगी संस्कृति नहीं।

जो आदमी वासनाओं या हवसोंसे घिरा हुआ है, वह सिर्फ़ ठोस दलीलोंसे भी कोअी चीज़ मंज़ूर नहीं करता। अेडवर्ड कारपेण्टर-जैसोंने अिस मज़मून पर अेक बढ़िया किताब लिखी कि आजकलकी संस्कृति या तहज़ीबका मर्ज़ किस तरह पैदा होता है, और अुसे मिटानेके तरीक़े या अिलाज क्या हैं। लेकिन अुसे पढ़कर समाज अपनी ज़िन्दगीका रवैया बदलनेको तैयार न हुआ। अेकके बाद अेक जो दो विश्वव्यापी लड़ाअियाँ हुअीं, अुनकी वजहसे मनुष्य-जाति अपनी बरबादीके किनारे आ पहुँची है। अैसे समय, अिस अुम्मीदसे, कि जिस हिन्दुस्तानकी नसोंमें आत्मपरायण संस्कृतिकी विरासत सोअी हुअी हालतमें मौजूद है, वह हिन्दुस्तान .खुद बरबादीसे बचकर सारी दुनियाको बरबाद होनेसे बचा सकेगा, हम अपने जीवनको स्वावलम्बी, स्वाश्रयी और स्वयंपूर्ण बनानेकी कोशिशमें लगे हैं।

जब हम अपने जीवनको बिलकुल साफ़-पाक बना लेंगे, तभी हम मनुष्यकी प्रतिष्ठाको शोभा देने-जैसी संस्कारी और सच्चे मानों में सुधरी हुअी हुकूमत क़ायम कर सकेंगे।

अगर हम अन्यायका सामना हमेशा फ़ौज, पुलिस, अदालत और आपसी मार-काटके ज़रिये ही करते रहेंगे, तो अिस तरहकी सरकार चलानेके लिअे हमें अुसकी क़ीमत भी चुकानी पड़ेगी, और वह क़ीमत तभी चुकाअी जा सकेगी, जब हम हिंसाप्रधान, भोगैश्वर्य-परायण और द्रोहमूलक समाजको यानी अैसे समाजको जगह देंगे, जो मार-काट, अैश-व-अिशरत और लूट-खसोट पर जीना चाहता हो।

आअिन्दा ज़मानेके समूचे समाज-शास्त्रका मूलमंत्र यह है — ज़िन्दगी बिताना स्वावलम्बनसे, और अुसे टिकाये रखना सत्याग्रहके बलसे।

सत्याग्रहमें सिर्फ़ अन्याय करनेवाले आदमीका और अुसके अन्यायका नहीं, बल्कि अन्यायी आदमीकी अन्यायपूर्ण वृत्तिका ही विरोध मुख्य है। अिस तरह हरअेक सत्याग्रहके साथ समाजकी हलकी या हीन वृत्तियाँ कम होती जाती हैं, और राज्य-व्यवस्थाका लोप होता जाता है। यानी राज्य-व्यवस्थामेंसे व्यवस्थावाला हिस्सा क़ायम रहता है, और राज्यवाला हिस्सा ग़ायब हो जाता है। अगर मनुष्य-समाजने अितनी तरक़्क़ी न की, तो वह टिक न सकेगा। दुनियामें विज्ञान या सायन्सका अितना फैलाव हुआ, माल लाने-ले जानेकी अितनी सहूलियतें पैदा हुअीं, सारी दुनिया पर आर्थिक व्यवस्थाका जाल फैल गया, फिर भी आज दुनियाके क़रीब-क़रीब सभी देश नाज और कपड़ेके लिअे मुहताज बने हैं। जिस तहज़ीबकी वजहसे यह अटपटी हालत पैदा हुअी है, अुसे सुधारना ही होगा। यह सुधार स्वावलम्बन, स्वयंपूर्णता और सत्याग्रहके ज़रिये ही हो है, और खादी अिन सबकी निशानी है।

जब हम अिसे समझकर खादीको अपनायेंगे, तभी हमें, यानी हममेंसे हरअेक मनुष्यको, जीवनकी शान्ति प्राप्त होगी।

(गुजरातीसे) काका कालेलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खादी-कामका विकेन्द्रीकरण

आगाखान महलसे बाहर आनेके बाद फ़ौरन ही जब गांधीजीने चरखा-संघके सामने खादी-काममें क्रान्तिकारी फेरफार करनेवाली योजना (स्कीम) पेश की — जो 'चरखा-संघके नवसंस्करण' के नामसे पहचानी जाती है — तबसे खादी-कामके विकेन्द्रीकरणकी बात भी खादी कार्यकर्त्ताओंमें चल रही है। लेकिन जुदा-जुदा कार्यकर्त्ता असका जुदा-जुदा मतलब करते पाये जाते हैं। अपने अूपर चरखा-संघका नियंत्रण न रहे, और खादी पहननेवालोंसे ही सूत कतवाया जा सके, अमुक क़ीमतकी सूतकी गुण्डी लेकर ही खादी बेची जा सके, वग़ैरा चरखा-संघके नियमोंसे छुटकारा पानेके लिअे भी कअी लोग विकेन्द्रीकरणका यानी चरखा-संघसे स्वतंत्र होनेका विचार करते हैं। लेकिन अुन्हें यह समझ लेना चाहिये कि आज जिस ढंगसे खादी-काम चल रहा है, अुससे पीछे हटनेके लिअे नहीं, वरन् अुसे आगे बढ़ानेके लिअे ही विकेन्द्रीकरणकी बात पेश की गअी है। विकेन्द्रीकरणकी योजनाका न यह हेतु है, न हो सकता है, कि जो लोग अेक अरसेसे खादी पहनते रहे हैं, मगर ख़ुद कातनेको तैयार नहीं हैं, अुनके लिअे आसानीसे खादी मुहैया करनेका तरीक़ा ढूँढ़ा जाय।

विधान या आअीन बनानेवाली सभामें स्वराजका विधान बने, और वह अमलमें लाया जाय, तो अुससे हमें राजकाजी आज़ादी मिलेगी। अंग्रेज़ी राजके जुअेसे हम छूटेंगे, लेकिन हमें तो अिस स्वराज और अिस आज़ादीसे ज़्यादा व्यापक स्वराज और ज़्यादा सच्ची आज़ादीकी रचना करनी है। विकेन्द्रीकरणकी बात खादीके ज़रिये अैसे स्वराजकी रचना करनेके लिअे की जाती है, जिसमें राजकाजी ज़ुल्म ही नहीं, बल्कि अुससे आगे बढ़कर माली या समाजी अन्याय या ज़ुल्म भी न हों, जिसमें कोअी किसीको लूट-खसोट न सके, जिसमें अूँच-नीचका भेदभाव न हो, जिसमें किसी भी शख़्सको कंगालियत, बेकारी या लाचारी महसूस न करनी पड़े, जिसमें हरअेक शख़्स अपनी हिफ़ाज़त आप करनेकी हिम्मत सीख सके, और जिसमें हरअेक शख़्स हमारे मुल्ककी तहज़ीब या संस्कृतिकी विरासतसे फ़ायदा अुठाने लायक़ ताक़त हासिल कर सके।

चूँकि हमारा देश गाँवोंमें बसा है, अिसलिअे अैसे व्यापक स्वराजकी अिमारत अुन स्वराज भोगनेवाले गाँवोंकी नींव पर ही खड़ी हो सकेगी, जो आर्थिक या माली दृष्टिसे स्वावलम्बी, अपनी प्रारम्भिक ज़रूरतोंके बारेमें स्वयंपूर्ण और देहातकी ज़िन्दगीके लिअे ज़रूरी दूसरे सभी मामलोंमें स्व-शासित होंगे। खादी अैसे ग्राम-स्वराजका प्रतीक या निशानी है, या अैसे ग्राम-स्वराजकी रचनाकी शुरुआत है।

अगर अिस तरह खादीका विचार किया जाय, तो हरअेक गाँवको कपड़ेकी अपनी ज़रूरतके बारेमें स्वावलम्बी बनाना, खादी-कामका सच्चा विकेन्द्रीकरण कहा जायगा। गाँवमें कपास अुगानेसे लेकर सूत कातने तकके सारे काम क़रीब-क़रीब हरअेक घरमें किये जायँ (हमारे मुल्कके कुछ हिस्से अैसे हैं — हालाँकि वे बहुत थोड़े और छोटे हैं — जहाँ कपास पैदा नहीं होती; अैसे हिस्सोंका सवाल निराला है), गाँवके जुलाहोंसे ही वह सूत बुनवा लिया जाय, और अगर गाँवमें जुलाहे न हों, तो गाँवके कुछ नौजवान भाअी-बहन बुनाअीका काम सीख लें, और अिस तरह पूरा गाँव वस्त्र-स्वावलम्बी बन जाय। ग्राम-सेवकों और खादीकार्यकर्त्ताओंको अिस दृष्टिसे काम करना चाहिये। अिस तरह अेक गाँव लेकर या कुछ गाँवोंके अेक समूहको अिकाअी मानकर काम शुरू किया जा सकता है। बेचनेके लिअे खादी तैयार करनेमें पूँजी लगानेकी जो ज़रूरत पड़ती है, वह अिस ढंगसे काम शुरू करनेमें नहीं पड़ेगी। फिर भी काम शुरू करनेके लिअे जो थोड़े-बहुत पैसोंकी ज़रूरत होगी, वे गाँवमेंसे ही प्राप्त कर लेने चाहियें। अिन पैसोंके अिस्तेमालके लिअे और लोगोंको खादीकी सब क्रियायें सिखानेका अिन्तज़ाम करनेके लिअे मुक़ामी कार्यकर्त्ता अपना अेक मण्डल बना लें। साथ ही गाँवके मदरसेकी मारफ़त भी खादी-कामकी शुरुआत हो सकती है। अैसे मंडलोंको अपने-अपने हलक़ोंमें रहनेवाले परिवारोंको वस्त्रस्वावलम्बी बनानेका मक़सद सामने रखकर काम करना चाहिये। जो परिवार अपनी ज़रूरतसे ज़्यादा सूत कातता हो, अुसके सूतका कपड़ा, अपनी ज़रूरतके मुताबिक़ न कात सकनेवाले परिवारको दिया जा सकता है। लेकिन जहाँ तक बने अपने तय किये हुअे हलक़ेसे बाहर खादी भेजनेका विचार नहीं रखना चाहिये। अिसी तरह बाहरसे मिलका कपड़ा हरगिज़ न लाना चाहिये, और खादी भी जहाँ तक बने बाहरसे नहीं लाअी जानी चाहिये। चरखा, करघा वग़ैरा जिन चीज़ोंकी ज़रूरत हो, वे भी गाँवकी गाँवहीमें बना ली जायँ, तो सबसे अच्छा। अेक तय किये हुअे हलक़ेमें — फिर वह गाँव हो, ताल्लुक़ा हो, ज़िला हो, या सूबा हो, अगरचे ज़िलेसे ज़्यादा बड़ा हलक़ा अैसे कामके लिअे कम अनुकूल होगा — काम करनेके लिअे बना हुआ मण्डल अूपर बताये मुताबिक़ काम करना शुरू करे, तो वही सच्चा विकेन्द्रीकरण होगा। काम करनेके लिअे ज़रूरी पैसोंके वास्ते चरखा-संघके सदर-दफ़्तरकी तरफ़ ताकनेके बजाय, अपनी ताक़त और अपने वसीलेसे ही गाँववालोंकी मददसे पैसे अिकट्ठे कर लेना, विकेन्द्रीकरणकी योजनाका अेक अहम हिस्सा है। अैसा करनेसे काम करनेवालोंका आत्मविश्वास बढ़ता है, और लोग भी समझने लगते हैं कि यह हमारा ही काम है।

अिसका यह मतलब नहीं कि चरखा-संघ किसी तरहकी मदद न करे। अब तक के खादी-कामके अपने अनुभवकी बिना पर चरखा-संघकी तरफ़से निष्णातों या माहिरोंकी सलाह तो मिलती ही रहे। अिसके सिवा शुरूमें बढ़ावा देनेके लिअे, किये हुअे काम पर, चरखा-संघकी तरफ़से कुछ-न-कुछ मदद भी दी जाय। मसलन्, आजकल जितनी स्वावलम्बी खादी तैयार होती है, अुसपर दो आना फ़ी चौरस गज़के हिसाबसे चरखा-संघ मदद देता है, और कोअी संस्था या मंडल नया बुनकर तैयार करता है, तो अिस कामके लिअे अुसे चरखा-संघकी तरफ़से सौ रुपयोंकी मदद मिलती है। जब तक चरखा-संघके पास फण्ड रहे, तब तक अैसी मदद बराबर दी जाय। साथ ही, अगर किसीको खादीकी सब क्रियाओंकी पक्की जानकारी हासिल करनी हो, तो अुसे ज़रूरी तालीम देनेका काम भी चरखा-संघ तरफ़से ही होता रहे। मगर अेक बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि चरखा-संघकी तरफ़से मिलनेवाली सारी मददों का स्वागत करते हुअे भी, अुसकी मदद पर ही सारा दारमदार रखकर कोअी काम शुरू न किया जाय। जब रचनात्मक काम करनेवाले छोटे-छोटे मण्डल अपना काम स्वावलम्बनके तरीक़े पर चलाने लगेंगे, तभी वे सच्चे स्वराजकी नींव डाल सकेंगे। रचनात्मक कामका मक़सद यह है कि अुसकी मददसे लोग आज़ादीका अुपभोग करनेकी अपनी ताक़त बढ़ायें। और, लोगोंकी ताक़त तभी बढ़ेगी, जब कामका विकेन्द्रीकरण होगा, और लोग अपने काम ख़ुद करने लगेंगे।

साबरमती, २७-११-'४६

(गुजरातीसे) **नरहरि परीख**

हिन्दुस्तानी प्रचार परीक्षाअें

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धाकी ओरसे ली जानेवाली हिन्दुस्तानी प्रचार परीक्षाअें ता० १६ फरवरी, '१९४७ रविवारको होंगी। अिन परीक्षाओंमें शामिल होनेकी अर्ज़ियाँ, केन्द्रोंके ज़रिये, वर्धाके दफ़्तरमें, ता० १५ जनवरी, १९४७ तक फ़ीसके साथ पहुँच जानी चाहियें।

केन्द्र खोलनेके नियम, परीक्षाओंके नियम, परिक्षाओंकी पुस्तकें, वग़ैराकी जानकारी वर्धाके दफ़्तरसे मिलेगी।

अमृतलाल नाणावटी
परीक्षामंत्री,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दक्खिनी अफ्रीकाके अेक जेलकी तसवीर

"२३ दिन बाद मैं जेलसे छूटा। ७ दिनकी छूट मिली। २२ दिनमें ख़ासी परीक्षा हो गअी। २० पौण्ड वज़न कम हुआ। जेलकी कोअी चीज़ माफ़िक़ आने लायक़ न थी। सफ़ाअीको तो वहाँ तिलांजलि ही देनी पड़ी। अच्छे-जूठेका भी वहाँ कोअी सवाल न था — हो ही नहीं सकता। १८ आदमियोंकी कोठरीके अेक कोनेमें खुला पाखाना था। ख़ुशक़िस्मतीसे पाख़ाना सेप्टिक टैंकका था। फिर भी अुसमें बेपरदा होकर बैठना पड़ता था। . . . . पीनेके पानीकी अेक बाल्टी थी, और साथमें अेक प्याला था। सब अुसीको डुबा-डुबाकर पानी लेते, और मुँह लगाकर अुसीसे पानी पीते! . . . शामके साढ़ेचार या पाँचसे सुबहके पाँच तक मुझे पाख़ानेकी हाजत न मालूम हो, और प्यास न लगे, अिसके लिअे मुझे अपने खाने-पीनेके वक़्तमें ज़रूरी फेरफार कर लेना पड़ा। अिसकी वजहसे, यह समझिये कि २२ दिन लगभग अुपवास-जैसे ही बीते। . . . . बरतन टीनके, जंग खाये हुअे और गन्दे। ख़ुराक भी वैसी ही। सुबह मक्कीके आटेकी बिलकुल ठण्डी काँजी। दोपहरको बारह बजे फिर वही सुबह पकाअी हुअी काँजी। शामको मक्कीके आटेमें थोड़ा पानी मिलाकर और अुसे जैसे-तैसे सेंककर बनाया हुआ बिलकुल सूखा चूरा; चूरेके साथ 'काअु-पीज़' नामके अेक क़िस्मके दाने, सो भी सूखे, और चार औंस डबल रोटी। नेटिव लोगोंको (दक्खिनी अफ्रीकाके असली बाशिन्दोंको) १२ बजे अुबाली हुअी मक्की दी जाती है। . . . . दो दिन मुझे बाहर सख़्त मज़दूरीके लिअे भेजा गया। हट्टे-कट्टे नेटिवोंसे जितना काम लिया जाता था, अुतना ही हमारे लोगोंसे भी। चीफ वार्डरसे शिकायत की। . . . . अिससे मुझे हलकी मजदूरी दी गअी। . . . . हलकी मज़दूरीमें नीचे लिखे काम लिये जाते हैं — सब कोठरियोंसे बिछौने निकालना, कोठरियाँ धोना, बाहरका बड़ा यार्ड धोना, नीचे झुककर पानी अुलीचना, और ९ से १२ तक तेज़ धूपमें बैठकर बरतन मलना। (दक्खिनी अफ्रीकामें अिन दिनों गरमी रहती है।) . . . . दोपहरको छाँह मिलती थी, अिसलिअे अुतनी तकलीफ़ नहीं होती थी। पहले दिन वॉर्डरोंका ख़ासा रोब रहा। अुन्होंने मुझे धमकाया और कहा, 'यहाँ कोअी 'रिंग लीडर' (अगुआ) नहीं बन सकता। सब अेकसे समझे जायँगे, और ज़्यादा तीन-पाँचकी, तो हड्डी-हड्डी तोड़ दी जायगी। तुझे चेताये देता हूँ, मेरा दिमाग़ न चाटना'। अुसने सिर्फ़ हाथ चलाना बाक़ी रक्खा था। अितनेमें दूसरे दिन मैंने ख़ुराककी शिकायत की और कहा कि चीफके पास ले चलो। अिसपर गालियोंकी बौछारके साथ वॉर्डर बोला — "चीफके पास जाना है? चल, चीफके पास ले जाता हूँ।" कहकर मेरी गरदन पकड़ी और धक्का मारकर चीफके पास ले गया। मैंने चीफसे पूछा — "क्या अिन वॉर्डरोंको हमपर हाथ चलानेका हक़ है?।" चीफने कहा — "अिन्हें साफ़ तौर पर यह हिदायत दे दी गअी है कि किसी पर हाथ न चलायें।" अुसके बाद हाथ चलाना बन्द हुआ। . . . . आठ दिन तक तो मुँह धोनेके लिअे कुछ भी न दिया गया। आठ दिन बाद मुझे टूथ ब्रश और टूथ पाअुडर दिया गया। मैंने कहा, जब तक सबको यह सहूलियत नहीं दी जाती, तब तक मैं अिसका अिस्तेमाल नहीं कर सकता। जवाब मिला — "सबको नमक दिया जायगा।" मैंने पूछा — "कबसे?" तो कहा — "शामसे।" अिसके बाद पाँच दिन और बीत गये। फिर अेक दिन अचानक नमकके दर्शन हुअे। . . . . अेक आनन्दकी बात यह थी कि जेलमें हम सब मिलकर सुबह-शाम प्रार्थना करते थे . . . .।"

जिन्हें हिन्दुस्तानके जेलख़ानोंका तजरबा है, अुन्हें अिस तसवीरमें कोअी नयापन नहीं मालूम होगा। लेकिन जेलके अिन्तज़ाम और अुसके पीछे काम करनेवाले दृष्टिकोणका यह चित्र अेक अैसे देशका है, जो अपने लिअे ज़्यादा अूँची सभ्यताका दावा करता है और अिस अंदेशेसे कि कहीं असभ्य हिन्दुस्तानी और अेशियाअी अुसकी सभ्यताको नीचे न गिरा दें, अुन्हें अपनेसे दूर रखनेका आग्रह रखता है।

वापी, ४-१२-'४६ (गुजरातीसे) **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

क्या आत्महत्याकी सलाह दी जा सकती है?

गांधीजीको लिखे गये अेक भाअीके ख़तसे अुनकी ख़ास-ख़ास बातोंका सार अुन्हींके शब्दोंमें नीचे दिया जाता है —

"२७ अक्तूबर, १९४६के 'हरिजनबन्धु'में आपकी यह सम्मति प्रकट हुअी है कि स्त्रियोंको अुनके शीलके भ्रष्ट होनेसे पहले आत्महत्याका मार्ग अपनाना चाहिये। लेकिन मेरी नम्र किन्तु दृढ़ रायमें आपका यह अुपदेश आध्यात्मिक हेतुके विरुद्ध है।

"हम जीवन और जीवन-कलाकी खोजमें निकले हैं। मृत्यु और मृत्यु-कलाकी खोजमें हरगिज़ नहीं। संस्कृतिहीन मनुष्य पशुसे भी भयंकर और बदतर है। जिस समय यह पाशवी बुद्धिका मनुष्य मृत्युकी और मृत्यु-कलाकी खोजमें लगा हो, अुसीका विचार करता हो, और वैसा ही बरताव कर रहा हो, अुस समय संस्कारी पुरुष सदुपाय, सत्प्रयत्न और सद्व्यवहार द्वारा अुसका प्रतीकार करनेके बदले ख़ुद ही घबरा जायँ और लाचार बनकर दूसरे ढंगसे वैसे ही अुपायों और प्रयत्नोंमें लग जायँ, तो मनुष्यताके और सारी मनुष्य-जातिके लिअे यह बहुत ही लज्जाकी बात मानी जायगी।

"अिसमें शक नहीं कि देहके साथ की जानेवाली ज़बरदस्तीके बारेमें अपनी लाचारी या फ़र्ज़के मुतअल्लिक़ स्त्री या पुरुषकी असहायता या निरुपायता दुःख देनेवाली चीज़ है, लेकिन अिसकी वजहसे अैसे स्त्री-पुरुषके साथ किये गये पाशवी, अपमानजनक, अत्याचारी और बलात्कारी बरतावके कारण, अुन्हें आत्मजीवनसे भ्रष्ट मानने या सामाजिक जीवनसे नीचे गिरानेकी कार्रवाअी ही असलमें अमानुषी है। जो मनुष्य-जाति पशुओंसे अलग, अपने ख़ास ढंगका जीवन बिताती है, अुसके लिअे अिन दोनों प्रकारोंमें मंज़ूर किया गया अपवित्रताका कलंक दुर्बल और अज्ञान मनोदशाका सूचक परिणाम है।

"धर्म-संकटके अवसरपर तुरत किसी सदुपाय या सहायताके अभावमें मनुष्यकी लाचारी या बेकारीको कायरता कहना, या विकारी मनोदशासे रहित ज़बरदस्तीके संभोगको या अनिच्छित, अपमानित और अत्याचारी प्रसंगको, असंयमी भ्रष्टता या निर्लज्ज व्यभिचारके जैसी शीलहीनता समझना, मरेको मारनेके समान दोहरी मार है।

"सत्य, अहिंसा और धर्मके मामलोंमें आत्महत्याकी गुंजाअिश ही नहीं। लेकिन अज्ञानता या बे-समझीमें आत्महत्याकी गुंजाअिश है। कष्टों, यातनाओं, वेदनाओं, और शारीरिक तकलीफ़ोंका अभाव पैदा करनेके लिअे की गअी आत्महत्याको किसी भी हालतमें बलिदान माना या मनवाया नहीं जा सकता। अैसी मौत तो कायरकी मौत ही कही जायगी। शारीरिक तकलीफ़ों, यातनाओं, वेदनाओं और कष्टोंको सहते-सहते सत्य और अहिंसाके आदर्शसे अेकरूप होकर या अुसके अनुरूप बनकर मिलनेवाली मौत ही धार्मिक बलिदान-रूप मानी या मनवाअी जा सकती है।

"राजकाजी मामलोंमें सत्य और अहिंसा आपकी आजकलकी धारणाके अनुसार अुपयुक्त साधन बन या रह नहीं सकते, लेकिन सामाजिक जीवनमें सद्गुणोंकी तरह रहनेवाले ये आदर्श मनुष्य-जातिके ध्येयरूप राजकाजमें लोकजीवनके राजनीतिक आदर्श बन सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मनुष्य-जातिके, मनुष्य-मनुष्यके आपसी व्यवहारके लिअे स्वेच्छासे स्वीकार किये और बनाये हुअे, नियमों और क़ानूनोंको मनुष्य ख़ुद ही तोड़ता नज़र आये, और अिसके बारेमें संस्कारी पुरुषोंकी अच्छी सिखावन विफल होती दिखाअी पड़े, तो स्वेच्छासे स्वीकार की हुअी और बनाअी हुअी शासन-संस्थाके ज़रिये न्याय और अनुशासन द्वारा अुसे सफल बनानेकी पूरी-पूरी कोशिश करना ही राजनीतिक संस्थाके सामाजिक जीवनका हेतु है। अगर अैसा करनेके बदले राजकाजी और संस्कारी पुरुष अिस तरहके अुपाय खोज निकालेंगे और अुन्हें अपनायेंगे, तो हम संस्कारी जीवनसे बहुत दूर जा पड़ेंगे। और फिर अपनी रची अिस ग़लत भूमिकासे वापस लौटनेका अवकाश या मौक़ा बहुत कम और बहुत दूर रह जायगा।"

गांधीजीको समझनेके लिअे हमें अेक बात ध्यानमें रखनी चाहिये। जिन विचारों पर फ़ौरन अमल करनेका तरीक़ा वे सुझा नहीं सकते, सिर्फ़ तात्त्विक चर्चाके रूपमें अुनका प्रचार करनेकी अुन्हें आदत नहीं।

यह तो वे कह ही चुके हैं कि जिस औरत पर ज़बरदस्ती की जाय, अुसे भ्रष्ट या नापाक नहीं मानना चाहिये।

अुन्होंने यह सलाह भी दी ही है कि स्त्रीको अपनी सारी ताक़त ख़र्च करके अत्याचारीका सामना करना चाहिये। अिसके लिअे अुन्होंने अहिंसाकी मर्यादा या क़ैद नहीं रक्खी। अैसी ताक़त पैदा करनेके लिअे की जानेवाली कोशिशका अुन्होंने कोअी विरोध नहीं किया है। लेकिन यह तो आगेकी बात हुअी।

जिस औरतमें अपनी हिफ़ाज़त करनेकी ताक़त और तालीम नहीं है, लेकिन जिसे अपनी पवित्रताकी बहुत ज़्यादा फ़िकर है, और जिसके दिलमें ज़ुल्मकी दहशत पैदा हो गअी है, अुस औरतको आज, अभी क्या सलाह दी जाय? क्या अुसे यह कहा जाय कि अगर तुम्हारी अिच्छाके ख़िलाफ़ तुम पर ज़बरदस्ती की जाय, तो तुम अुससे दुःखी न होना, बल्कि अुसे चुपचाप सह लेना? अिसमें शक नहीं कि सतीत्व अच्छी चीज़ है, लेकिन अुसके लिअे अपनी जान देनेकी ज़रूरत नहीं? नहीं, अुससे तो यही कहा जा सकता है कि अगर तुम मौतका डर छोड़ दोगी, तो तुम्हें अुपाय सूझेंगे। जब तक तुम्हें अपने आस-पासकी हवामें ज़ुल्मों और ज़्यादतियोंके होनेका अंदेशा मालूम हो, तब तक तुम ख़ुदकुशीका भी कोअी-न-कोअी साधन अपने पास रखकर घूमो। अपने शीलकी रक्षा और मौतका डर, ये दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। अिसलिअे जिसे अपना शील या अपनी अिज़्ज़त बचानी हो, अुसे मौतका डर पहले छोड़ना चाहिये। यह कोअी कमज़ोरीकी सीख नहीं, बल्कि कमज़ोरके लिअे भी जो अेक अिलाज मुमकिन है, वही सुझाया गया है। अिसका यह मतलब नहीं कि जो औरत अपनी अिज़्ज़तके लिअे लड़ लेती है, या लड़ते-लड़ते मर जाती है, अुसकी बनिस्बत ख़ुदकुशी करनेवाली औरत ज़्यादा अच्छी है। बल्कि अिसमें अुस औरतकी क़दर ज़रूर की गअी है, जो अपने शीलको जानसे ज़्यादा प्यारा समझती है। और यह ठीक ही है।

अिज़्ज़तके लुट जाने पर भी बहुतसी औरतें अपनी जान नहीं दे सकतीं। बड़े-बड़े सैनिक और नेता भी सत्त्वहानि या बेअिज़्ज़ती सहकर जीते हैं। बेअिज़्ज़तीके पहले या बादमें ख़ुदकुशी कर सकनेवाले स्त्री-पुरुष विरले ही होते हैं। जो लोग जान नहीं दे सकते और सत्त्वहानि हो जानेके बाद भी जी सकते हैं, अुनके साथ भी हमें अुदारताका ही बरताव करना चाहिये। जो लोग अुनसे नफ़रत करते हैं, वे अपना ओछापन दिखाते हैं। अिसलिअे ज़्यादतियोंकी शिकार बनी हुअी औरतोंको भ्रष्ट न समझनेकी सलाह दी गअी है।

वापी, २१-११-'४६

(गुजरातीसे) **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

सरकारी रुख़

अेक भाअी यों लिखते हैं —

"पिछले हफ़्ते नअी दिल्लीमें अेक अच्छे वज़नदार रोज़ाना अख़बारके जो डाअिरेक्टर आपसे मिले थे, वे हिन्दुस्तानकी मौजूदा अशान्तिके कारणोंको समझनेके लिअे नीचे लिखा मज़मून पढ़ेंगे तो ठीक होगा।

"वाअिसराय साहब सच्चे दिलसे अपने गुरु अेलनबीके क़दमों पर चल रहे हैं। पढ़नेवालोंकी सहूलियतके ख़यालसे मैं नीचे लिखा हिस्सा देता हूँ —

"मिस्रवालोंको अपने मुल्ककी हुकूमत ख़ुद करनेकी तालीम देनेका जो तरीक़ा या पॉलिसी हमने अपनाअी है, अगर वह सचाअीके साथ अपनाअी गअी है, और अुसका कोअी मतलब है, तो ज़रा-सी मुश्किल पैदा होते ही दस्तन्दाज़ी करना और हुकूमतकी बागडोर अपने हाथमें ले लेना, अेक निकम्मी चीज़ है। वज़ीरों और हाकिमोंको हुकूमत चलाना सीखना हो, अमन-व-अमान क़ायम रखनेके लिअे पुलिसको लायक़ बनाना हो, और ज़रूरतके वक़्त मिस्रकी फ़ौजको अपनी हुकूमतके लिअे मददगार साबित होना हो, तो अुन्हें अपने सामने पेश होनेवाली मुश्किलों और ख़तरोंका मुक़ाबला करना सीखना चाहिये, और बेचैन बनानेवाले या ख़तरनाक मौक़ोंपर ब्रिटिशोंके सहारेकी कोअी अुम्मीद न रखनी चाहिये।" (वेवेलके लिखे अेलनबीके जीवन-चरित्रसे, पृ० ४९-५०)

"अिस फ़िक़रेमें 'मिस्रवालों'की जगह 'हिन्दुस्तानवालों' पढ़ना चाहिये, और फिर अूपर लिखी राजनीतिके लिअे हमें अुन्हें श्रेय देना चाहिये। अिसके बावजूद, हमने देखा है कि पिछले दो हफ़्तोंमें दस्तन्दाज़ी करनेके लिअे हाकिमोंसे कैसी दयाजनक अपीलें की गअी थीं। यह चीज़ आपकी 'थ्योरी'को साबित करती है। लेकिन पूरी तसवीर पेश करनी हो, और तमाम दलीलोंको हमेशाके लिअे चुप करना हो, तो नीचेका फ़िक़रा पढ़नेसे फ़ायदा होगा।

"२० मअी, १९२१को (जब कुछ दंगे हो चुके थे) अपनी माँके नाम लिखे ख़तमें अेलनबीने लिखा था —

'मैं ठीक वक़्तकी राह देख रहा हूँ; क्योंकि मैं चाहता हूँ कि मिस्रवाले ख़ुद ही अपने सियासी सवालोंको हल कर लें। जब तक यूरापियनोंके जान-माल और अुनके हितोंको ख़तरा नहीं पहुँचता, मैं अपनी फ़ौजके साथ कोअी दख़ल देना नहीं चाहता।'

यह सीधी-सादी और यक़ीन पैदा करनेवाली बात है। मैं अुम्मीद करता हूँ कि आपसे मिलनेके लिअे आये हुअे अख़बारनवीस हिन्दुस्तानपर हुकूमत करनेवाले अपने देशभाअियोंसे कहेंगे कि वे, जैसा कि आपने अेक बार कहा था, हिन्दुस्तानको 'अीश्वरके और अराजकताके हाथमें' छोड़कर चले जायँ। अिसका यही अेक हल है, लेकिन बदक़िस्मतीसे अिस अिलाजको आज़मानेमें हमेशा देर की जाती है! ब्रिटिश फ़ौजोंने अभी तक मिस्र छोड़ा नहीं है। वर्धा, ५-१२-'४६

(अंग्रेज़ीसे) **का० का०**

विषय-सूची

		पृष्ठ
तरक़्क़ीकी निशानी	... गांधीजी	४२५
सवाल-जवाब	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४२५
छुआछूतकी जड़	... नरहरि परीख	४२६
शास्त्रके सहारे हैवानियत!	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४२६
धर्ममें राजसत्ता	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४२८
खादीका सन्देश	... काका कालेलकर	४२९
खादी-कामका विकेन्द्रीकरण	... नरहरि परीख	४३०
दक्खिनी अफ्रीकाके अेक जेलकी तसवीर	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४३१
क्या आत्महत्याकी सलाह दी जा सकती है?	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४३१
टिप्पणी		४३०
हिन्दुस्तानी प्रचार परीक्षायें	...	४३२
सरकारी रुख	... का० का०	

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाल्मीकिकी विजय

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

१६ पृष्ठ

दो आना

भाग १० | सम्पादक — प्यारेलाल | अंक ४६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाजी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २२ दिसम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८: शि० १४: डॉलर ३

हिन्दुस्तानकी जीत

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित और अुनके क़ाबिल साथियोंने संयुक्त-राष्ट्रसंघ में दक्खिनी अफ्रीकाके खिलाफ़ जो मशहूर क़ामयाबी हासिल की है, अुसपर हिन्दुस्तानका खुशियाँ मनाना और फ़ख़ महसूस करना अुचित ही है। अुनका काम किसी भी तरह आसान नहीं था। दक्खिनी अफ्रीका के तजरबेकार वज़ीरेआज़म फील्ड मार्शल स्मट्स के खिलाफ़ अुन्हें अपना केस जीतना था। स्मट्स साहब अिस ज़माने के सबसे ज़्यादा क़ाबिल और अिज़्ज़तदार राजनीतिज्ञोंमें से अेक समझे जाते हैं। अुन्होंने हिन्दुस्तानके अिन नुमाअिन्दोंके खिलाफ़ क़दम-क़दम पर गहरी लड़ाअी लड़ी। अुनकी पीठ पर खुद अंग्रेज़ सरकार और ब्रिटिश कॉमनवेल्थके दूसरे बड़े-बड़े साझीदार थे। श्रीमती पंडित द्वारा की गअी अेक सही मामलेकी जोशीली किन्तु मर्यादित वक़ालत की दुनियाभरने तारीफ़ की। अिससे राष्ट्रसंघके कअी मेम्बरोंके दिलोंमें हिन्दुस्तानके लिअे हमदर्दी पैदा हो गअी। यह गौर करने लायक़ बात है कि कअी मौक़ों पर जब चीन, रूस, फ्रांस और बहुतसे अेशियाअी मुल्कोंने हिन्दुस्तानको वोट दिये, तब अमेरिका, ग्रेटब्रिटेन, कनाडा, नीदरलैंड, बेल्जियम वग़ैरा अुसके खिलाफ़ रहे।

दक्खिनी पच्छिमी अफ्रीकाको यूनियनमें मिलानेके सवाल पर भी तजरबेकार जनरल स्मट्स को हिन्दुस्तानी प्रतिनिधि-मण्डलके अैसे ही ज़ोरदार विरोधका सामना करना पड़ा, और अिस मुद्दे पर भी दक्खिनी अफ्रीकाके बड़े वज़ीरको बुरी तरह हारना पड़ा।

यह गौर करनेकी बात है कि दक्खिनी अफ्रीकामें जबसे हिन्दुस्तानियोंकी लड़ाअी शुरू हुअी, तभीसे हमारी जीतका बहुत बड़ा श्रेय हिन्दुस्तानी महिलाओंको ही मिला है। स्व० कस्तूरबा गांधी और श्रीमती सरोजिनी नायडूके नाम हमेशा बड़ी अिज़्ज़त और फ़ख़के साथ लिये जायँगे। और अब अेक बार फिर हिन्दुस्तानकी पुत्रीने — जो शायद संयुक्त राष्ट्रसंघकी अकेली महिला नुमाअिन्दा थीं — वहाँ ख़ास पार्ट अदा किया है। अुन्होंने सचमुच दुनियाकी नज़रोंमें हिन्दुस्तानकी शोहरत व रुतबेको बढ़ाया है।

हिन्दुस्तानकी ताअीद करनेवाले वे अिकतीस राष्ट्र भी हमारे दिली शुक्रियाके हक़दार हैं। अिनसानके बुनियादी हक़ों और शर्तोंकी हिमायत करके अुन्होंने संयुक्त राष्ट्रसंघकी अिज़्ज़त और शानको बढ़ाया है और दबाये गये मुल्कोंमें आशाका संचार किया है।

वापी, १२-१२-'४६
(अंग्रेज़ीसे)

किशोरलाल घ० मशरूवाला

ज़ात और मज़हबकी छाप

अेक भाअी नीचे लिखे मतलबका ख़त लिखते हैं —

"लोग मुझे सारस्वत ब्राह्मण और शैव हिन्दू माननेकी ज़िद करते हैं। जब कभी मुझे किसी अफ़सरके सामने जाना होता है या पब्लिक दस्तावेज़ोंमें अपनी जानकारी देनी होती है, तो मुझसे कहा जाता है कि मैं अपनी जात और धर्म बताअूँ। अिधर, मैं नहीं चाहता कि कोअी मुझे ब्राह्मण भी माने, सारस्वत ब्राह्मणकी तो बात ही क्या? हालाँकि भगवान्में मेरा विश्वास है और बचपनसे मैं भगवान्को शिव, शंकर, महादेव वग़ैरा नामोंसे पुकारता रहा हूँ, फिर भी मैं अपनेको न तो शैव और न हिन्दू ही मानता हूँ। मैं तो सब धर्मोंसे दूर रहकर अीश्वरमें विश्वास रखनेवाला अेक व्यक्ति भर हूँ। समाजने मुझ पर जात और धर्मकी जो छाप लगादी है, अुसे मैं कैसे मिटाअूँ और कैसे छोड़ूँ?"

जहाँ तक सरकारी अफ़सरों या दस्तावेज़ोंका ताल्लुक़ है, ख़त लिखनेवाले भाअी कह सकते हैं कि मेरी कोअी जात नहीं और मेरा धर्म आस्तिक-धर्म है। शायद सरकार भी अैसे नियमोंके बिना अपना काम चला सकती है, जिनके ज़रिये अफ़सरोंके सामने और पब्लिक दस्तावेज़ोंमें अपनी ज़ात और धर्म बताना लोगोंके लिअे लाज़िमी हो जाता है।

लेकिन अितने ही से यह सवाल हल नहीं होगा। अगर कोअी आदमी यह ज़ाहिर करके ही रह जाता है कि अुसने ज़ात या धर्म, या दोनोंको छोड़ दिया है, और अपने कहे पर कोअी अमल नहीं करता, तो समाज अुसकी बातको नहीं मानेगा। क्या अुसने अपनी ज़ात और मज़हबके बाहरके बहुतसे लोगोंसे अपना सामाजिक और पारिवारिक सम्बन्ध क़ायम किया है? अगर व्यवहारमें अुसके सारे सम्बध अपनी नामवर जाति और धर्म या सम्प्रदाय तक ही बँधे हुअे हों, तो वह अिसके खिलाफ़ कितनी ही आवाज़ क्यों न अुठावे, तो भी न आम जनता और न अुसके परिवारके लोग ही यह भूल सकेंगे कि वह अभी भी — कट्टरपंथी भले न हो — अेक ख़ास ज़ात और धर्मका ही मेम्बर है। लेकिन अगर वह अपने अिस नेक अिरादे पर सही ढंगसे अमल भी करने लगे, तो वक़्त आने पर वह कामयाबी हासिल करेगा।

यह भी ख़याल रखना चाहिये कि अगर अलग-अलग क़ौमों पर विरासत, अुत्तराधिकार, शादी, तलाक़ वग़ैराके मामलोंमें अुनके अपने अलग-अलग क़ानून लागू न होते, और लोग मुक़दमे-मामलोंमें अपने ख़ास रीति-रिवाजोंका हवाला देकर अदालतको अुन्हें माननेके लिअे मजबूर नहीं कर सके होते, तो किसी शख़्सकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाति, मज़हब वग़ैरा सरकारी दफ़्तरों और दस्तावेज़ोंके ज़रूरी विषय नहीं बनते। नतीजा यह होता है कि कोअी शख़्स अगर ख़ुद अपने पर किसी ख़ास जाति या मज़हबकी छाप न लगवाना चाहे, तो भी अुसके रिश्तेदार और आसपासके लोग अुसके बारेमें यह सारा ब्योरा दर्ज करानेमें रुचि लेते हैं। सुधारवादी धारासभाओंको अैसा कोअी क़ानून पास करनेकी तजवीज़ करनी चाहिये, जिससे कोअी शख़्स विरासत, शादी वग़ैराके मामलेमें .ख़ुद पर और अपने रिश्तेदारों पर अपना क़ौमी क़ानून लागू होनेका विशेषाधिकार छोड़ सके और 'हिन्दी विरासत कानून' जैसे ग़ैर-क़ौमी कानून लागू करा सके।

वापी, ५-१२-'४६ किशोरलाल घ० मशरूवाला

उरुळीकांचनकी रिपोर्ट

मार्च, १९४६ के आख़िरमें गांधीजीने पूनाके नज़दीक अुरुळी-कांचन गाँवमें .क़ुदरती अिलाजका केन्द्र या मरकज़ खोला था। डॉ० भागवतकी देख-रेखमें वहाँका सारा काम चलता है। अुन्होंने अपने साथियोंके साथ वहाँ जो काम किया, अुसकी अेक छमाही (अप्रैलसे सितम्बर तककी) रिपोर्ट भेजी है। नीचे दिये गये सारसे पढ़नेवालोंको वहाँ होनेवाले कामका अन्दाज़ा हो जायगा।

"गांधीजीने २३ मार्च, १९४६ को यह केन्द्र खोला था। वे ख़ुद अेक हफ़्तेसे ज़्यादा अिसकी सीधी देख-रेख नहीं रख सके। बादमें यह काम मुझे और यहाँके दूसरे साथी कार्यकर्त्ताओंको सौंपा गया। गांधीजीकी मौ.जूदगीमें बीमारोंकी दिन-दिन बढ़नेवाली तादाद अुनके चले जाने के बाद बहुत घट गअी। बीमारोंके अिलाजका सच्चा काम अप्रैलके दूसरे हफ़्तेसे शुरू हुआ और मअी व जूनभर चलता रहा। बरसात शुरू होनेके बाद बीमारोंकी तादाद और भी कम होती गअी, क्योंकि गाँववाले अपने खेतीके काममें लग गये और आमद-रफ़्तमें भी थोड़ी मुश्किल पैदा हो गअी।

केन्द्रमें कुल ५६७ बीमारोंका अिलाज किया गया। अुनमेंसे २३ की हालत नाज़ुक होनेसे यहीं रखकर अुनका अिलाज किया गया। अेक जच्चाका भी कामयाबीके साथ अिलाज किया गया। १० छोटे-छोटे ऑपरेशन भी किये गये। दूसरे बीमारोंका अेनीमा, स्नान, कमर-स्नान वग़ैराके ज़रिये आअुट-डूअर-बीमारोंकी तरह अिलाज किया गया और अुन्हें घरपर खाने-पीनेका ख़ास परहेज रखनेकी हिदायत दी गअी। ५६७ बीमारोंमें से क़रीब ३०० पूरी तरह भले-चंगे हो गये। दूसरे हमारे दवा न देने और अुनकी .ख़ूराक पर पाबन्दी लगानेकी वजहसे बीचमें ही अिलाज छोड़कर चले गये।

अिलाजमें ख़ुराकके परहेज़ या पथ्यके साथ मामूली ठण्डे या गरम पानीका अेनीमा, कमर-स्नान, मामूली स्नान, ठण्डे या गरम पानीकी पट्टी, गीली मिट्टीकी पट्टी वग़ैरा शामिल हैं। ख़ुराकमें नींबूका रस, शहद, नारंगी, मोसम्बी वग़ैरा खट्टे फल, भिगाये और अंकुर फूटे हुअे मूँग, मूँगफलीके दाने, सलाद, मीठे फल वग़ैरा शामिल हैं। बीमारोंको भाखरी या चपाती और बिना नमक-मिर्चकी अुबाली हुअी तरकारी भी दी जाती है। कभी-कभी रोटी और खिचड़ीका भी अिस्तेमाल किया जाता है। ज़रूरत पड़ने पर अेक वक़्तके खानेमें दही और छाछका भी ख़ासा अिस्तेमाल किया जाता है।

परिस्थिति और बीमारोंकी माली हालतके मुताबिक़ अेक बीमारका रोज़ाना औसत ख़र्च कम-से-कम ८ आनेसे लेकर ज़्यादा-से-ज़्यादा २ रुपये तक जाता है।

केन्द्रमें नीचे लिखी बीमारियोंका अिलाज किया गया था —

बीमारी	बीमारोंकी तादाद	बीमारी	बीमारोंकी तादाद
खुजली	८४	मामूली बुखार	३९
मलेरियासे बढ़ी हुअी तिल्ली	५८	कानका दर्द	३४
क़ब्ज़	५६	जखम	३०
पेट-दर्द	२४	फेफड़ोंका तपेदिक	४
पलकोंका सूजन	१९	खट्टी डकार आना	४
सूजन और जलन	१७	बवासीर	४
दाँत निकालना	१७	लकवा	३
पतले दस्त	१५	मोटाअी	३
बादी	१३	प्लूरिसी (फुप्फुस)	२
बदहज़मी	१३	मोंच	२
दाँतका दर्द	१२	आधा सीसीका दर्द	२
खाँसी (ब्रॉन्कायटिज़)	११	कंठमाल	२
बहुमूत्र	१०	पथरी	१
दाद	८	जचकी	१
फोड़ा	८	गठिया	१
पेचिश	८	निमोनिया	१
रेवची	७	पित्त	१
सिर-दर्द	५	मामूली कुत्तेका काटना	१
दमा	५	नासुर	१
.ख़ूनकी कमी	५	फुटकर	३१
पेट के कीड़े	५	कुल	५६७

दवाख़ानेकी आगेकी रचनामें हमें अेक जच्चा-घर और अेक छोटेसे ऑपरेशन थियेटरका कोअी अलग अिन्तज़ाम करना पड़ेगा। अिसके अलावा, बीमारोंको शुद्ध दूध देनेके लिअे हमें **गो-सेवाका** काम भी चालू करना होगा। अिसके लिअे हमें जल्दी ही अेक गोशाला बनानी होगी, जिसमें क़रीब ५०००) का ख़र्च बैठेगा। मुझे अुम्मीद है कि सही वक़्त पर सही लोगोंका सहयोग हमें मिलेगा।

वापी, ७-१२-'४६ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेज़ीसे)

नक़ल करने लायक़

[विहार प्रान्त (सूबे) के साहबगंज शहरमें, हिन्दू और मुसलमानों के बीच दंगा मचने ही वाला था, कि वहाँ के मजिस्ट्रेट श्री विद्यानन्द जायसवालने समयसूचकता और साहस के साथ स्थिति पर क़ाबू कर लिया। यह जिस तरह हुआ, अुसका हाल जायसवाल साहबके ही शब्दोंमें नीचे दिया जाता है। — न० प०]

"ता. ५-११-'४६ यानी बक़रीदकी सन्ध्या को करफ्यू ऑर्डर के बावजूद भी साहबगंज शहरमें अेकाअेक बड़े ज़ोरों का शोर मचा और कसाअी मोहल्लेमें 'अल्लाहो अक़बर' वग़ैरा के नारे लगने लगे। दूसरी ओर हिन्दू मोहल्लोंसे भी शंखकी आवाज़ व "जय काली नोआखाली", "महावीर स्वामीकी जय" वग़ैराकी आवाज़ें आने लगीं। मैं दौड़ता हुआ जब कसाअी मोहल्ले पहुँचा, तो वहाँ सैकड़ों मुसलमानोंको हाथमें नंगी तलवारें, फरसे व भाले लेकर हिन्दू मोहल्लेकी ओर बढ़ते हुअे देखा। अुधर हिन्दू मोहल्लेसे भी हिन्दू लोग लाठी वग़ैरा लेकर बढ़नेकी तैयारी कर रहे थे। अुस व.क्त अगर दो मिनटकी भी देर की जाती तो, वहाँ सैकड़ों लाशें गिर जातीं। स्थिति को क़ाबूमें लानेका और दूसरा अुपाय न देखकर, मैं अकेला ही बिना किसी हथियारके अुस नंगी तलवार, फरसे और भालेवाली मुसलमानोंकी भीड़ में घुसा और कअी आदमियोंके हाथसे तलवार और भाले छीनकर अुन लोगोंको फटकारा और फ़ौरन ही अपने-अपने मकान के अन्दर जानेको कहा। महात्माजीकी बताअी हुअी अहिंसात्मक युक्ति, साहस और परमात्माने हमारी मदद की और सब मुसलमान अपने-अपने घरोंमें चले गये। अिसके बाद अिसी प्रकार मैंने हिन्दुओंको भी अपने-अपने घरोंमें जानेके लिअे मजबूर किया। स्थिति तब फ़ौरन ही क़ाबूमें आ गअी। अिसका नतीजा अितना अच्छा हुआ कि अुसके बाद फिर यहाँ कोअी गोलमाल नहीं हुआ।" साबरमती, १७-१२-'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तालीमका ज़रिया

[नागपुर विश्वविद्यालयके स्नातकोंके सामने सरदार वल्लभभाअी पटेल द्वारा दिये गये दीक्षान्त भाषणसे]

मैं देखता हूँ कि युनिवर्सिटीने अेक बहुत महत्त्वका निश्चय कर लिया है, और वह यह है कि अबसे अुसकी शिक्षाका माध्यम अपनी देशी भाषा होगी। यह हम पिछले पच्चीस-छब्बीस वर्षोंसे अनुभव करने लगे हैं कि विदेशी भाषाके माध्यमसे शिक्षा देनेकी रीति हमारे युवकोंके बुद्धि-विकासमें अेक भारी बाधा अुपस्थित करती है। शब्दोंको सीखनेमें ही अुनका बहुत समय लग जाता है, और साथ ही अितने पर भी यह कहना कठिन होता है कि शब्दोंके ठीक अर्थ कहाँ तक समझमें आये। शब्द किसी वस्तुका परिचायक होता है। बच्चा पहले वस्तुका ज्ञान प्राप्त करता है, अुसके बाद अुस शब्दको सीखता है, जिससे अुस वस्तुका परिचय वह दूसरोंको दे सके। यह क्रिया बहुत बचपनसे आरम्भ होती है, और मनुष्य जब तक जीता रहता है, यह क्रिया जारी रहती है। अेक शब्द सीख लेनेके बाद यदि अुसी वस्तुके परिचयके लिअे बच्चेको दूसरा शब्द भी सीखना पड़े, तो अुसपर अेक भारी बोझ पड़ता है, और विशेष करके तब जब कि यह दूसरा शब्द वह औरोंसे मामूली तौर पर खेल-कूद व बातचीतमें नहीं सुनता, और अुसे अपनी स्मरण-शक्ति पर जोर देकर याद रखना पड़ता है। यह बोझ अितना बड़ा होता है कि अक्सर केवल शब्द ही याद रह जाता है और जिस वस्तुका वह परिचायक होता है, अुससे सचमुच परिचय नहीं होता। जब विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा दी जाती है तो केवल शब्दोंको याद करनेका बोझ ही नहीं ढोना पड़ता, प्रत्युत विषयके समझनेमें भी काफ़ी दिक़्क़त आ जाती है, और जहाँ रटनेकी शक्ति बढ़ती है वहाँ समझनेकी शक्तिका ह्रास होता है। ये बातें अितनी स्पष्ट हैं कि अिन पर बहुत सोचनेकी भी ज़रूरत नहीं होनी चाहिये थी। पर हमारी शिक्षाकी पद्धति अैसी बनी और हम सब अुस रंगमें अितने रँग गये हैं कि अभी तक हममेंसे बहुतेरे लोग अिस सीधी-सादी बातको भी पूरी तरह नहीं समझ पाये हैं। आजसे प्रायः तीस वर्ष पहले सैडलर कमीशनने देशी भाषाको माध्यम बनानेकी सलाह दी थी। अुसके बाद जब महात्मा गांधीजीने भारतके क्षेत्रमें अुतरकर अपना देशव्यापी आन्दोलन चलाया, तो अुन्होंने बहुत ज़ोरोंसे कहा कि अंग्रेज़ी द्वारा शिक्षा देनेसे हमारा ह्रास होता है, वृद्धि नहीं होती। जहाँ-तहाँ विद्यापीठ स्थापित हुअे, जो सरकारसे सम्बद्ध नहीं थे, और अिसलिअे वे अपनी शिक्षा-पद्धति और शिक्षाके माध्यमके सम्बन्धमें स्वतंत्र थे। अुन्होंने देशी-भाषा द्वारा शिक्षा देनेका प्रयत्न किया और यह प्रयोग करके दिखला दिया कि अुच्च वर्गोंकी शिक्षा भी देशी भाषा द्वारा दी जा सकती है। अितना ही नहीं, यह भी साबित हो गया कि अंग्रेज़ी माध्यम द्वारा शिक्षा देनेमें जितना समय लगता है अुससे बहुत कम समयमें देशी भाषा द्वारा शिक्षा दी जा सकती है, और अिससे विद्यार्थीका विषय-ज्ञान अधिक तथा परिपक्व होता है। अितना होने पर भी आज तक ब्रिटिश भारतकी किसी युनिवर्सिटीने यह निश्चय नहीं किया है कि वह अंग्रेज़ी माध्यमको अुठाकर शुरूसे अखीर तक देशी भाषाको ही माध्यम मानेगी और देशी भाषा द्वारा ही नीचेके वर्गोंसे लेकर अुच्चतम वर्गों तकको सारी शिक्षा देगी। आपकी युनिवर्सिटीने यह निश्चय करके देशकी दूसरी युनिवर्सिटियोंके लिअे अेक अुत्तम आदर्श अुपस्थित किया है, जिसे मानकर वे सभी सच्ची शिक्षामें सहायक हो सकती हैं।

मैं जानता हूँ कि अिसमें कठिनाअियाँ हैं और अुन कठिनाअियोंके कारण ही युनिवर्सिटियोंने यह निश्चय नहीं किया है। पर कोअी भी कठिनाअी अुस समय तक दूर नहीं की जा सकती जब तक कि अुसके दूर करनेका प्रयत्न नहीं किया जाता। कठिनाअी देखकर चुप बैठे रहना और अुसे दूर करनेका कोअी प्रयत्न न करना कायरपन है। पुरुषार्थ कठिनाअियोंको लाँघनेमें हैं। पर मनुष्य बहुत करके आलसी होता है; और आलस्य केवल शारीरिक ही नहीं होता, मानसिक भी होता है। अभी तक हममेंसे अधिकांश लोग अिसी मानसिक आलस्यके शिकार बने पड़े हैं। जो पद्धति चली आ रही है, जो रूढ़ि-सी बन गअी है, मानों गाड़ीकी लीक-सी लग गअी है, अुससे बाहर निकलनेमें परिश्रम और अुद्योग अपेक्षित है। यदि गाड़ी किसी तरह लीक पर चलती जा रही है— रास्ता चाहे अधिक लम्बा भी क्यों न हो और ग़लत भी क्यों न हो — तो हम अक्सर अुस लीकसे बाहर निकलना नहीं चाहते। अिसी आलस्यके कारण हमारी युनिवर्सिटियाँ पुरानी लीक पर ही चलती जा रही हैं। नहीं तो और कोअी कारण नहीं था कि हम पिछले पच्चीस-तीस वर्षोंमें अुन सभी विषयोंके लिअे काफ़ी पाठ्य-पुस्तकें तैयार क्यों नहीं करा पाये, जिनका अभाव देशी भाषाओंकी शिक्षाका, विशेषतः अुच्च शिक्षाका, माध्यम बनानेके रास्तेमें बाधक समझा जाता है। आपकी युनिवर्सिटीने अिस अभावको बाधक न मान करके माध्यम बदल देनेका निश्चय करके बड़ी हिम्मत और दूरदर्शितासे काम लिया है। अिसने यह निश्चय करके कि कार्यारम्भके बाद जैसे-जैसे कठिनाअियाँ सामने आती जायँगी, वैसे-वैसे अुनका मुक़ाबला किया जायगा और अुनको दूर करनेका प्रयत्न किया जायगा, बड़ी बुद्धिमत्ताका परिचय दिया है। यही अेक तरीक़ा था, जिससे अिस जटिल समस्याका हल निकाला जा सकता था, और युनिवर्सिटीने अिसे अख़्तियार करके यह दिखला दिया है कि जहाँ किसी कामको करनेकी अिच्छा होती है, वहाँ अुसके लिअे कोअी-न-कोअी रास्ता या अुपाय मिल ही जाता है। मैं आशा करता हूँ कि आप अिस रास्ते पर दृढ़तापूर्वक चलते जायँगे और जब आरंभसे अन्त तककी शिक्षा देशी-भाषा द्वारा दी जाने लगेगी, तो आप देखेंगे कि अुससे हमारे युवकोंका बहुत समय बचा है — अुनकी बुद्धिका अधिक विकास हुआ है, और वे अपूर्व मानसिक शक्ति लेकर संसारमें पदार्पण करते हैं।

अंग्रेज़ीकी तालीम

देशी भाषाको माध्यम बनानेका यह अर्थ नहीं है कि हम विदेशी भाषाओंको सीखना या सिखाना नहीं चाहते हैं। आजके संसारमें कोअी देश अपनी चौहद्दीके अन्दर ही अपनी सब ज़रूरतोंको पूरा नहीं कर सकता। अुसे दूसरे देशोंके साथ सम्पर्क रखना ही होता है। अिस सम्पर्कके लिअे विदेशी भाषाओंका ज्ञान आवश्यक है। पर प्रत्येक देशवासीका विदेशोंके साथ सम्पर्क नहीं होता। थोड़े लोगोंके द्वारा ही यह सम्पर्क होता है। अैसे लोगोंको विदेशी भाषाओंका ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। अिसी तरह अुन लोगोंको, जो संसारकी अुच्च कोटिकी विचारधाराओंसे परिचय रखना चाहते हैं, विदेशी भाषाओंका जानना अनिवार्य है। जो विदेशोंमें भ्रमण करना चाहते हैं अथवा जो विदेशोंके साथ व्यापार करना चाहते हैं, अुनको भी विदेशी भाषाओंका कुछ-न-कुछ ज्ञान आवश्यक है, पर अिन सभी लोगोंकी संख्या देशकी जनसंख्याके मुक़ाबलेमें बहुत थोड़ी होगी, और अुनको भी विदेशी भाषाका ज्ञान अपने कामके लिअे जितना आवश्यक हो अुतना ही चाहिये। कुछ अैसे लोगोंका प्रत्येक देशमें होना आवश्यक है जो विदेशोंके सभी अुच्च कोटिके ग्रंथोंको देशी भाषामें अनूदित करके देशवासियोंको अुपलब्ध कर दें। अिन सब प्रकारके लोगोंके लिअे विदेशी भाषा सीखना और शायद विदेशोंमें जाना भी आवश्यक होगा। जो लोग अिस तरहके कामोंमें लगना चाहते हैं अुनको विदेशी भाषा सीखनेका पूरा मौक़ा और साधन मिलना चाहिये। पर हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि अन्ततः सौमें निन्यानवे आदमियोंको देशके अन्दर ही रहना है, और अुन्हें विदेशी भाषाकी ज़रूरत न होती है और न होगी। अिसलिअे सभी युनिवर्सिटियोंका धर्म है कि जहाँ वे १०० में १के लिए विदेशी भाषाओंमें शिक्षाका प्रबन्ध करें वहाँ १०० में ९९की शिक्षाकी अुपेक्षा न करें, अपनी पद्धतिको बदलें और अपने प्रगतिशील होनेका भी परिचय दें।

नागपुर, ३०-११-'४६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२२ दिसम्बर १९४६

वाल्मीकिकी विजय

क़रीब पचास साल पहले बंगालके महामहोपाध्याय हरिहर शास्त्रीने 'वाल्मीकिर जय' नामका अेक सुन्दर अुपन्यास प्रकाशित किया था। मराठी, गुजराती और शायद दूसरी हिन्दुस्तानी जबानोंमें भी अुसका अनुवाद या तरजुमा हो चुका है, और अुस किताबको आज भी खुशीसे पढ़ा जा सकता है। यह अुपन्यास वसिष्ठ और विश्वामित्रकी पौराणिक कथाके आधार पर लिखा गया है। ये दोनों हिन्दुस्तानकी ब्राह्मण और क्षत्रिय जातियोंके नेता थे और अेक दूसरेके दुश्मन थे। दोनों ही हिन्दुस्तानके अुस हिस्से पर अपनी सियासी और सामाजिक सत्ता क़ायम करना चाहते थे, जहाँ अुन दिनों आर्य जाति बसी हुआी थी। अुस हिस्सेको **'कामधेनु'** या **'मुराद पूरी करनेवाली गाय'**की शक्लमें पेश किया गया है। कआी पीढ़ियों तक अुनमें भयंकर लड़ाअियाँ होती रहीं, जिनमें कभी अेक फ़िरक़ा जीतता था, तो कभी दूसरा। पहले वसिष्ठकी हार हुआी। अुनके सौ लड़के मार डाले गये और विश्वामित्रने अुनकी 'गाय'को जबरदस्ती अपने ताबे कर लिया। लेकिन यह जीत ज़्यादा दिन नहीं टिकी। वसिष्ठने फिरसे फ़ौजें अिकट्ठा कीं और विश्वामित्रको अिस बुरी तरह हराया कि अुन्हें लाचार होकर कआी बरसों तक — शायद कआी पीढ़ियों तक — हिमालयमें रहना पड़ा। दूसरे क्षत्रिय जरूर किसी-न-किसी तरहकी छुपी और बेतरतीब लड़ाअी लड़ते रहे, वे अिक्की-दुक्की ब्राह्मण-बस्तियों पर हमला करके वहाँ रहनेवालोंको मार डालते और अुनके आश्रमोंको बरबाद कर देते थे। नौजवान और क्रोधी स्वभाववाले परशुरामके परिवारको भी अिन आफ़तोंसे गुजरना पड़ा। (परशुरामके लफ़्जी मानी हैं, कुल्हाड़ी चलानेवाले राम)। जब क्षत्रियोंने परशुरामके बाप और भाअियोंको क़त्ल कर डाला, तो वे अितने गुस्सा हुअे कि अुन्होंने क्षत्रियोंको पूरी तरह नाबूद कर देनेकी सौगन्ध खा ली। कहा जाता है कि अुन्होंने अिक्कीस बार क्षत्रियोंको बुरी तरह हरा कर और हर बार अन्धाधुन्धी और बेरहमीसे अुनका क़त्लेआम करके अपनी सौगन्ध पूरी की। क्षत्रिय पूरी तरह दब गये थे और अैसा लगने लगा था, मानो दुनियासे अुनका नाम-निशान मिट जायगा। मालूम होता है कि वसिष्ठ और अुनके चेलोंने भी अिस अंजामकी कल्पना नहीं की थी, लेकिन परिस्थिति अुनके क़ाबूसे बाहर हो गआी थी और परशुरामको अुनके खूँखार और वैरका बदला चुकानेवाले कामोंसे रोकनेका कोआी रास्ता नजर नहीं आता था। चारों तरफ़ अँधेरा और नाअुम्मेदी छाआी हुआी थी।

लेकिन, अैसे समयमें अचानक, अेक महान् आत्मा वाल्मीकिकी शक्लमें सामने आआी। अगर अुन्हें ब्राह्मण ही मानें, तो भी वे छोटी जातके ब्राह्मण थे, लेकिन वे बहुत बड़े कवि और गायक थे और अिससे भी बढ़कर, वे अपने अुठाये हुअे काममें पूरी श्रद्धा रखनेवाले थे। अेक-दूसरेको नाबूद करनेवाली अिस आपसकी लड़ाअीको वे सह न सके, और अुन्होंने तय कर लिया कि जब तक ब्राह्मण और क्षत्रियोंमें मेल नहीं हो जायगा, मैं चैनकी साँस नहीं लूँगा। अुनके पास तानपूरेके सिवा दूसरा कोआी हथियार नहीं था और 'हम सब अेक हैं, हम सब अेक हैं' की टेकके सिवा सावधानीसे गढ़ी हुआी कोआी दूसरी शब्द-रचना भी नहीं थी। अपने गायकोंकी टोली ले कर वे हर ब्राह्मण-बस्ती और हर क्षत्रिय-राजमें शान्ति, प्रेम और अेकताका संदेश देते हुअे घूमे। अुनकी कविता और संगीतने सुननेवालोंके दिलों पर गहरा असर किया। नतीजा यह हुआ कि अेकता और शान्ति क़ायम करनेके लिअे अेक ज़बरदस्त आन्दोलन अुठ खड़ा हुआ। वसिष्ठ और विश्वामित्रमें मेल हो गया। और अगरचे, परशुराम लम्बे अर्से तक अपनी ज़िद पर अड़े रहे, फिर भी अुन्हें बहुत जल्दी पता चल गया कि 'क्षत्रियोंका नाश हो' वाली आवाज़, लोगों पर असर डालनेकी अपनी ताक़त खो चुकी है और अब वे किसीको अिस आवाज़के बल पर अपना अनुयायी नहीं बना सकते। वसिष्ठ और विश्वामित्रमें मेल हो जाने पर परशुरामको अपनी सारी खटपट बन्द करनेके लिअे लाचार होना पड़ा। ये दोनों नेता अयोध्या और मिथिला जैसे दोस्त क्षत्रिय घरानोंके समर्थक बन गये थे। आगेकी कथा यह है कि जब वाल्मीकिका मिशन सफल हुआ तो अुनसे अर्ज़ की गआी कि वे ब्राह्मण और क्षत्रियोंकी दोस्तीको मजबूत करनेके लिअे रामायणकी कथा लिखें और अिस दोस्तीसे होनेवाली आर्योंकी तरक़्क़ीका अुसमें बयान करें।

अिसमें कोआी शक नहीं कि हिन्दुओं और मुसलमानोंके आपसी झगड़ोंमें भी **'हम सब अेक हैं, हम सब अेक हैं'** वाला वाल्मीकीका सूत्र, और अुससे होनेवाला संगठन ही वे ठोस चीज़ें हैं, जिनकी आख़िरमें विजय होगी। वापी, ७-१२-'४६

(अंग्रेज़ीसे) **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

बन्दरोंकी हिंसा

अेक संवाददाताने अख़बारकी अेक कतरन भेजी है, जिसमें नीचे लिखी बातें छपी हैं:

अेक अख़बारी बयानमें कहा गया है — "शुरू-शुरूमें लोग बन्दरोंको जानसे मारनेके कुछ ख़िलाफ़ थे, लेकिन अब अुड़ीसाकी सरकार देखती है कि बन्दरोंकी बलाको हटानेकी योजना या स्कीममें बहुत बड़ी क़ामयाबी हासिल हुआी है।"

अुस बयानमें आगे लिखा है — "अुड़ीसामें बन्दर खेतीके लिअे शायद सबसे बड़ा ख़तरा रहे हैं। अिस योजनाके मुताबिक़ अुड़ीसाकी सरकारने अेक बन्दरको मारने पर ३) रु० अिनाम रखा है।

"सरकार अब यह जरूरी समझती है कि सूबेमें बन्दरोंकी तादाद कम करनेके लिअे नर बन्दरोंको जानसे मारनेके काम पर पूरा ध्यान देना चाहिये; अिसलिअे अुसने आगेसे नर बन्दरको जानसे मारने पर ४) रु० और मादा बन्दरको मारने पर २) रु० अिनाम देना तय किया है। नर बन्दर अगर बच्चा हो, तो भी ४) रु० अिनाम दिया जायगा।"

अुड़ीसा सरकारके अिस निश्चयसे संवाददाताको बड़ा धक्का पहुँचा है और अुन्होंने गांधीजीसे अर्ज़ की है कि वे अिनसानियत या मानवताके पुजारीके नाते 'हरिजनसेवक'में यह सवाल अुठायें और 'अुड़ीसाके अिन लाचार व बेज़बान बन्दरों'के ख़िलाफ़ लड़ी जानेवाली लड़ाअीका फ़ौरन ख़ात्मा करनेके लिअे कांग्रेस-सरकार पर अपना असर डालें।"

बेज़बान जानवरोंके प्रति अपने प्यार व दया, और अेक कीड़ेको भी मारनेकी अपनी अयोग्यताके बावजूद मैं समझता हूँ, कि अुड़ीसा-सरकारको अपने कामसे हाथ खींच लेनेकी बात कहना मुमकिन नहीं। जो जानवर खेतीके लिअे ख़तरनाक हैं, अुन्हें जानसे मारनेके सिवा अैसा कोआी अमली या व्यावहारिक तरीक़ा नजर नहीं आता, जिससे खेतीकी हिफ़ाज़तकी जा सके। अकेले बन्दर ही खेतीको नुक़सान नहीं पहुँचाते; चूहे, खरगोश, हिरन और जंगली सुअर भी अिसी क़िस्मके जानवर हैं और अुनमेंसे हरअेकको बरबाद करनेके लिअे संगठित तरीक़े काममें लाना अिनसानके लिअे जरूरी हो जाता है। अिन दो रास्तोंमेंसे अिनसानको कोआी सा भी अेक अपने लिअे चुन लेना होगा: या तो वह दूसरे जानवरोंकी तरह जंगली और क़ुदरती ज़िन्दगी बसर करे, या फिर अपनेको नुक़सान पहुँचानेवाले जानवरोंको बरबाद करदे, ताकि वह 'तहज़ीबयाफ़्ता ज़िन्दगी'के अपने ख़यालके मुताबिक़ जी सके। वापी, ९-१२-'४६

(अंग्रेज़ीसे) **किशोरलाल घ० मशरूवाला**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य कृपालानीका भाषण

[पिछली २३ नवम्बरको अिण्डियन नैशनल कांग्रेसके ५४वें सालाना …के मौक़े पर राष्ट्रपतिके नाते आचार्य कृपालानीने मेरठमें जो भाषण …था, वह महत्त्वपूर्ण था; मगर वह सारा-का-सारा यहाँ नहीं दिया …सकता। फिर भी मौजूदा हालतमें अुसका जितना हिस्सा बहुत ही …का और मौज़ूँ है, अुतना नीचे दिया गया है। — सम्पादक]

रचनात्मक या तामीरी प्रोग्राम

पूर्ण स्वराज या मुकम्मल आज़ादीके अपने मक़सदको हासिल …नेके बाद भी हम अिस ग़फ़लतमें न रहें कि अब हमारा काम …म हो गया है। सच है कि सियासी आज़ादी क़ीमती चीज़ है। …नहीं, बल्कि वह राष्ट्रीय जीवनकी जान है। लेकिन सियासी …ज़ादीकी सिद्धि कितनी ही क़ीमती क्यों न हो, आखिर तो वह …क अभावसूचक सिद्धि है। अुससे हमारे बाहरी बन्धन, हमें …ड़नेवाली बेड़ियाँ टूटेंगी। हम यह कह सकते हैं कि अपने असली …धनोंसे छुटकारा पानेसे पहले अिन बेड़ियोंका टूटना ज़रूरी है। बहुत …किन है कि बन्धनोंके न रहने पर अिनसान अुसे मिली हुअी …अी आज़ादीका अिस तरह अिस्तेमाल करने लगे कि जिससे अुसे …द नुक़सान पहुँचे। अिसलिअे अक़्लमन्दीकी बात तो यह है कि …ने बाहरी बन्धनोंको काटकर ही हम सन्तुष्ट न हो जायँ, बल्कि …न अपने कार-बारका कुछ अैसा अिन्तज़ाम करें, जिससे नअी मिली …अी आज़ादीसे हमारी आम जनताकी प्रत्यक्ष भलाअी होती नज़र …ये। अिसका मतलब यह हुआ कि हम अपने अिन्क़िलाबी जोशसे …नी रचनाको मिटानेके साथ ही साथ, रचनात्मक कामोंके ज़रिये, …ी जोशके साथ नया निर्माण भी करते रहें।

पुरानेको मिटाना — नया बनाना

अिस तरहके रचनात्मक काम हमारे लिअे नअी चीज़ नहीं। …क हमारी क्रान्तिका काम अहिंसाकी बुनियाद पर हो रहा है, …लिअे अितिहासमें वह बेजोड़ है। अितिहासका मामूली तजरबा … है कि राजनीतिक क्रान्तियाँ या सियासी अिन्क़िलाब पुरानी राज-…वस्थाको मिटानेके अिरादेसे ही किये जाते हैं। सभी क्रान्तियोंका …चा सियासी हुकूमत हथियानेके लिअे तैयार किया जाता है। राष्ट्रके …नका नये सिरेसे निर्माण करनेकी सभी रचनात्मक कोशिशें पुरानी …स्थाको पूरी तरह मिटा देनेके बाद और हुकूमतकी बागडोर अपने …में सँभाल लेनेके बाद ही करनी होती है। क्रान्ति या अिन्क़िलाबके …स तरीक़ेमें समाजमें फैली हुअी खलबलीके मिटने, शान्ति क़ायम …और नअी रचनाका काम या अुसकी कोशिशोंके शुरू होनेसे …े अेकके बाद अेक कअी क्रान्तियाँ लाज़िमी हो जाती हैं। अक्सर …स क्रान्तिके सिलसिलेमें राष्ट्रके अन्दर आपस-आपसकी घरेलू लड़ाअियाँ … हो जाती हैं, और आख़िर अुनमेंसे तानाशाही पैदा होती है। …तौर पर राष्ट्रके अिन अन्दरूनी और आपसी झगड़ों व तानाशाहीका … क्रान्तिके असल मक़सदोंको ही ख़त्म कर देनेका होता है। फ्रान्स …र रूस दोनोंकी क्रान्तियोंका हमें यही अनुभव हुआ है।

गांधीजीकी रहनुमाअीमें कांग्रेसने सिर्फ़ पुरानी व्यवस्थाका नाश … या हुकूमत हथियानेकी बात पर ही ज़्यादा ज़ोर नहीं दिया, …क कांग्रेसने तामीरी कामों और तामीरी प्रोग्रामके अमल पर … ज़ोर दिया है, और पिछले २५ बरसोंमें कांग्रेस मिटाने और …नेके दोनों काम अेक साथ करती रही है; यही नहीं, बल्कि …जीके ख़यालमें तो रचनात्मक कामोंको लगातार, लगनके साथ … रहना ही सत्याग्रह या सिविल नाफ़रमानीकी लड़ाअीकी पुरअसर … है। अिसलिअे अब जब कि बहुतसे सूबोंमें हुकूमतकी …र कांग्रेसियोंके हाथमें है, और जब मरकज़ी सरकारमें भी …कुछ यही हालत है, और हमारे मुल्कमें अेक तरहकी राष्ट्रीय …र हुकूमत करने लगी है, अैसे समय हमें तामीरी कामोंको ज़्यादा लगन और ध्यानसे चलाने और गांधीजीके सुझाये और कांग्रेसके अपनाये रचनात्मक कार्यक्रमकी सभी सम्भावनाओंको सिद्ध करनेमें ज़्यादा दिक़्क़त न होनी चाहिये।

जमहूरियत और अहिंसा

हमारी राष्ट्रीय लड़ाअी ज्यों-ज्यों आगे बढ़ती गअी है, त्यों-त्यों स्वराजके बारेमें हमारा ख़याल और स्वराजका मतलब ज़्यादा-ज़्यादा साफ़ होता गया है। अेक अरसा हुआ, जब हमने सिर्फ़ पुरानेको मिटाने और हुकूमत पर क़ब्ज़ा करनेके लिअे ही लड़नेका तरीक़ा छोड़ देनेका फ़ैसला किया था। अिसी ग़रज़से हमने पिस्तौल और बमको भी छोड़ा। हमने यह तय किया कि हम खुल्लमखुल्ला क्रांति करेंगे और अुस क्रान्तिके काममें आम लोगोंको अधिकाधिक शामिल करते जायँगे। अिसका अेक लाज़िमी नतीजा यह हुआ कि हमारी क्रान्तिमें पोशीदगी या हिंसाका कोअी अंग न रह सका। आम रिआया जो क्रान्ति अहिंसक ढंगसे करती है, अुसमें अुसे प्रजातंत्री तरीक़ा ही अपनाना पड़ता है। यही वजह है कि हमारी क्रान्तिकारी संस्था कांग्रेसका विधान प्रजातंत्री ढबका है। दरअसल बात यह है कि राजकाजके प्रजातंत्री तरीक़ेको सच्चा और पुरअसर बनाना हो, और अुसे सिर्फ़ नामकी, दिखावटी या विधानके कामकी जमहूरियत न रहने देना हो, तो अुसे अहिंसाकी बुनियाद पर ही खड़ा करना चाहिये। और अगर अहिंसाको सिर्फ़ ज़बानी जमा-खर्चकी अुसूली चीज़ न रहने देना हो, तो अुसमेंसे लोकशाही या जमहूरियत ही पैदा होनी चाहिये। लोकशाही और तानाशाहीके दोनों तरीक़े न सिर्फ़ अेक-दूसरेसे बिलकुल बेमेल हैं, बल्कि वे अेक-दूसरेके विरोधी भी हैं। आज हम कांग्रेसके अिस लोकशाही रूपको बदलना भी चाहें, तो बदल नहीं सकते, और अुसे बदलना अच्छा भी नहीं। अिसलिअे हममेंसे हरअेकको यह बात साफ़ तौरसे समझ लेनी चाहिये कि हमारी प्रतिज्ञा लोकशाही हुकूमत क़ायम करनेकी है, और हमारा स्वराज भी लोकशाही ढबका होनेवाला है। हमारे स्वराजमें किसी बड़े-से-बड़े मगर अेक आदमीकी, और अधिक-से-अधिक प्रभावशाली किसी अेक खानदानकी हुकूमत क़ायम नहीं होगी। साथ ही, वह किसी खास ज़ात, धर्म या फ़िरक़ेकी हुकूमत भी न होगी। हमारा स्वराज लोगोंकी, लोगोंकी सेवाके लिअे, खुद लोगों द्वारा ही चलाअी जानेवाली हुकूमत होगी।

हमारा तजरबा यह है कि जब लोकशाही हुकूमतके तरीक़ेमें किसी तरहकी आर्थिक समानताका व्यापक आधार नहीं होता, तब वह सिर्फ़ नामकी लोकशाही रह जाती है। जिस समाजमें सम्पत्तिकी विषमता बहुत ज़्यादा रहती है, अुसमें जमहूरियतके ढबकी हुकूमतका कोअी मतलब नहीं रह जाता। हम जानते हैं कि यूरोपके बड़े-बड़े मुल्कोंके मुक़ाबले वहाँके नॉर्वे, स्वीडन, और डेनमार्क जैसे छोटे-छोटे मुल्कोंमें ज़्यादा सच्ची लोकशाही हुकूमत काम करती है, और अिसकी सीधी-सादी वजह यह है कि अिन छोटे मुल्कोंकी लोकशाही हुकूमत अधिक व्यापक आर्थिक समानताकी बुनियाद पर रची गअी है।

लेकिन याद रहे कि आर्थिक समानता दो तरहकी हो सकती है — अेक बड़े-बड़े मरकज़ी अुद्योग-धन्धोंकी बुनियाद पर रची गअी साम्यवादी व्यवस्थासे पैदा होनेवाली समानता, और दूसरी अुद्योग-धन्धोंको बड़े पैमाने पर जगह-जगह फैला देने — अुनका विकेन्द्रीकरण करने — की नींव पर रची गअी लोकशाही व्यवस्थासे पैदा होनेवाली आर्थिक समानता।

मैं मानता हूँ कि जिस समाजकी अर्थ-व्यवस्था अेक ही जगह अिकठ्ठा किये गये बड़े-बड़े अुद्योगोंकी बुनियाद पर खड़ी की जाती है, अुसकी आर्थिक समानताको बनाये रखनेके लिअे हुकूमतको लाज़िमी तौर पर बहुत थोड़े लोगोंके हाथमें अिकट्ठा करना पड़ता है। अिसकी वजहसे मुल्कमें नौकरशाही और तानाशाही ढबकी हुकूमत शुरू होती है। अैसी हालतमें हुकूमत करनेवाले मुट्ठीभर लोग जनताके राजनीतिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन पर ही नहीं, बल्कि अुसके आर्थिक जीवन पर भी असर डालते हैं। सियासी हुकूमतकी यह खासियत है कि वह जिनके हाथमें रहती है, अुन्हें बिगाड़ देती है; लेकिन जब अुन्हीं लोगोंके हाथमें राजकाजी हुकूमतके साथ आर्थिक व्यवस्थाकी बागडोर भी चली जाती है, तो अिनसानके सदाचारको बिगाड़नेका अुसका स्वभाव दुगुना ज़ोर पकड़ता है।

पूँजीवादने लोकशाहीको खत्म कर दिया, क्योंकि हुकूमत भी सीधे या आड़े तरीक़ेसे अिन पूँजीवादी लोगोंके ही हाथमें थी। साम्यवादी व्यवस्थामें राजकाजी हुकूमत सँभालनेवाले तानाशाह या सरकारी नौकरके हाथमें आर्थिक सत्ता भी पूरी तरह रहती है। अिसकी वजहसे लोकशाहीके लिअे पूँजीवादी अर्थ-व्यवस्थाके जैसा ही घातक खतरा अिसमें भी पैदा होता है।

अुद्योगोंका विकेन्द्रीकरण

अिसलिअे अगर लोकशाहीको जिन्दा रहना है, तो अुसे चाहे जिस तरीक़ेसे पसन्द किये गये या चुने गये राजाके, या राज चलानेवाले लोगोंके हाथमें अर्थ-व्यवस्थासे सम्बन्ध रखनेवाली सत्ताको अिकट्ठा होनेसे रोकनेका तरीक़ा ढूँढ़ निकालना होगा, और अुस पर अमल करना होगा। जब अिनसानको आज़ादीके साथ काम करनेके क्षेत्र खुले नहीं मिलते, तो लोकशाही हुकूमत भी तानाशाही बन जाती है। अर्थ-व्यवस्थाके क्षेत्रमें अुद्योगोंके विकेन्द्रीकरणकी हिम्मतभरी हिमायत करनेका अितिहासी काम कांग्रेसके जिम्मे आया है। बंग-भंगकी हलचलके ज़मानेसे हमारे राजनीतिक विचारक देहाती और घरेलू अुद्योग-धन्धोंको फिरसे जिलाने और खड़ा करनेकी बात पर ज़ोर देते रहे हैं। जबसे गांधीजीने हिन्दुस्तानकी राजनीतिमें हिस्सा लेना शुरू किया है, तबसे देहाती दस्तकारियोंको अूपर अुठानेकी हिमायत पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाने लगा है, और अिस आग्रहकी बदौलत ही राष्ट्रके नव-निर्माणका अेक अमली प्रोग्राम हमारे सामने आया है। अिसलिअे आजके अिस मौक़े पर अर्थ-व्यवस्थासे ताल्लुक रखनेवाले अपने स्वराजके अर्थकी हमें साफ़ व्याख्या करनी होगी, और बिलकुल साफ़ तौर पर यह समझ लेना होगा कि मौजूदा हालतोंमें अर्थ-व्यवस्था-सम्बन्धी हमारी आज़ादी अिस बातमें है कि हमारे अुद्योगोंका जितना हो सके अुतना विकेन्द्रीकरण किया जाय। साथ ही, हम यह भी न भूलें कि हमारे खेती-प्रधान देशके बहुत बड़े हिस्सेकी ग़रीबीकी जो बारहमासी बीमारी लगी है, अुसका भी अेक ही अिलाज है, और वह विकेन्द्रीकरण ही है।

राष्ट्रकी अर्थ-व्यवस्थाका प्रबन्ध

सन् १९३९में कांग्रेसने पण्डित जवाहरलाल नेहरूकी सदारतमें अेक प्लैनिंग कमेटी मुक़र्रर की थी। यह कमेटी पिछले कअी सालोंसे काम कर रही है। अिसने अर्थ-व्यवस्था सम्बन्धी आँकड़े और जानकारी अिकट्ठा की है। अब वक़्त आ गया है, जब हमें कमेटीकी मेहनतका अिस्तेमाल अपने कामके लिअे कर लेना चाहिये। लेकिन जब तक कांग्रेस अिस बातका फ़ैसला नहीं करती कि किन अुद्योगोंको अेक जगह चलाया जाय और किनको अलग-अलग जगहोंमें फैलाया जाय, तब तक प्लैनिंग कमेटीके कामका अुपयोग नहीं किया जा सकता। जब तक अिसका फ़ैसला नहीं होगा, तब तक हरअेक सूबा .खुद जैसा चाहेगा और जिसमें अपना सुभीता देखेगा, वैसा ही रास्ता अख़्तियार करेगा। मैं महसूस करता हूँ कि कांग्रेसी हुकूमतवाले सूबोंमें भी बड़े-बड़े अुद्योगोंके मामलेमें अेक तरहकी होड़ाहोड़ी शुरू हो चुकी है। हरअेक सूबा चाहता है कि अुसके यहाँ जितनी हो सके अुतनी मिलें और कारखाने खड़े हो जायँ। हमने माना था कि कपड़ेका अुद्योग विकेन्द्रीकरणके लिअे बहुत अनुकूल है, लेकिन अिस अुद्योगमें भी अपने-अपने सूबोंमें ज़्यादा-से-ज़्यादा नअी मिलें खड़ी करने और दूसरे सूबोंकी सरकारोंके साथ होड़में अुतरनेकी कोशिश सभी प्रान्तीय सरकारें बड़ी सरगरमीके साथ कर रही हैं। कुछ लोगोंका यह खयाल है कि कपड़ेकी तंगीके अिस ज़मानेमें कपड़ेकी पैदावार बढ़ानेके लिअे जो भी साधन मिल जायँ, अुन सबका अुपयोग कर लेना चाहिये। लेकिन अैसा मानने या कहनेवाले लोग यह भूल जाते हैं कि अिसमेंसे खास तौर पर पूँजीपतियोंके नये स्थापित हित पैदा होते हैं। खादीके अेक अनुभवी कार्यकर्त्ताके नाते मेरा यह पक्का विश्वास है कि नअी मिलें खोलनेकी बनिस्बत अगर चरखों और करघोंको बाक़ायदा बढ़ावा दिया जाय, तो मिलोंके मुक़ाबले थोड़े वक़्तमें, थोड़ी पूँजी और थोड़ी मेहनतसे ज़्यादा काम हो सकता है। यहाँ मैंने सिर्फ़ कपड़ेके अुद्योगकी मिसाल दी है। लेकिन अब वह वक़्त आ चुका है, जब हमें सोच-समझकर अिस बातका फ़ैसला कर लेना होगा कि कौनसे अुद्योगोंको अेककेन्द्री तरीक़ेसे और कौनसोंको विकेन्द्री तरीक़े पर चलानेसे ज़्यादा फ़ायदा होगा।

बिजलीका अिस्तेमाल

आप यह न मानिये कि जब मैं विकेन्द्रित यानी गाँव-गाँव और घर-घर चलनेवाले अुद्योग-धन्धोंकी बात करता हूँ, तो मेरी मन्शा सिर्फ़ अिनसानके हाथकी ताक़तसे चलनेवाली कलोंसे है। किसी भी धन्धे या अुद्योग में लगा हुआ आदमी अपने घरमें बैठा-बैठा या अपने गाँव ही में रहकर अपने कामको फैलाने या अुसमें अपनी कुशलता बढ़ानेके लिअे बिजलीकी ताक़तका अिस्तेमाल खुशीके साथ कर सकता है। अिस तरहके विकेन्द्रित अुद्योगोंके कारण मज़दूरों और मालिकोंके आपसी झगड़ों, कारखानोंमें होनेवाली हड़तालों और मालिकोंकी तरफ़से ज़ाहिर की जानेवाली तालाबन्दियों वग़ैराकी बदौलत बीच-बीचमें होनेवाली राष्ट्रीय सम्पत्तिकी बरबादी टाली जा सकेगी। यह बात अितनी साफ़ है कि यहाँ अिसका ज़िक्र करना भी मेरे लिअे ज़रूरी नहीं। अिस तरहके झगड़े जिस हद तक टाले जाते हैं, अुसी हद तक लोगोंमें भाअीचारेकी भावना बढ़ती और पनपती है। अिस तरहके विकेन्द्रित अुद्योगोंका प्रबन्ध कोऑपरेटिव सोसायटियोंके तरीक़े पर किया जा सकता है। चुनाँचे हमें माल पैदा करनेवाली और तैयार मालकी बिक्रीका काम करनेवाली कोऑपरेटिव सोसायटियाँ बनानी होंगी। मुमकिन है कि नया माल पैदा करनेवाली कोऑपरेटिव सोसायटियाँ आजकी आज ही खड़ी न की जा सकें, तो भी सार्वजनिक संस्थायें और सूबोंकी सरकारें तैयार मालकी बिक्रीके लिअे तो कोऑपरेटिव सोसायटियाँ ज़रूर ही क़ायम कर सकती हैं। आज देहाती कारीगरको अपना माल बनाने या पैदा करनेमें ज़्यादा दिक़्क़त नहीं होती। अुसकी सच्ची कठिनाअी तो अपने तैयार मालको बेचनेके बारेमें है; क्योंकि आजकलके तरीक़ोंसे अपना माल बेचनेमें अुसे अुतना फ़ायदा नहीं होता, जितना दर असल होना चाहिये; बीचके लोग बहुत-कुछ डकार जाते हैं।

खेती और .खुराकका सवाल

अपनी खेतीके लिअे हमें ज़्यादातर विकेन्द्रित अुद्योगके ढंगका तरीक़ा अपनाना होगा। खेतीके हमारे तरीक़ेमें खेती करनेवाला किसान ही खेतीकी ज़मीनका मालिक भी होगा। लेकिन अिसके साथ हमें यह शर्त लगानी होगी कि विरासती हक़, क़र्ज़ या अैसे ही दूसरे कारणोंसे किसी किसानके ताबेकी ज़मीनकी अिकाअी अितनी छोटी अिकाअियों या अुनके भी अितने छोटे-छोटे हिस्सोंमें नहीं बँट सकेगी कि जिससे अेक देहाती परिवारका गुज़ारा होना मुश्किल हो जाय। विकेन्द्रित अुद्योग-धन्धों और खेती, दोनोंको अेक-दूसरेका पूरक बनना होगा। जहाँ तक हो सके, खेतीकी पैदावार अिन्तज़ाम भी अिस तरह होना चाहिये, जिससे मालकी पैदावार और तैयार मालकी बिक्री कोऑपरेटिव ढंग पर की जा सके।

लड़ाअीके दिनोंमें .खुराकका सवाल बहुत ही डरावना बन गया था; अभी आज भी अुसके बारेमें हमारी फ़िकर दूर नहीं हुअी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हालत यह है कि दूसरे मुल्कवाले मेहरबानी करके जो थोड़ा-बहुत गल्ला हमारे यहाँ भेज देते हैं, अुसीसे हमें अपना काम चलाना पड़ता है। ज़िन्दगीकी अेक बुनियादी ज़रूरतके मामलेमें दूसरोंका मुँह ताकनेकी यह हालत हमें दूर करनी ही होगी। अगर खेतीके तरीक़ोंमें ज़रूरी सुधार किये जायँ, तो हिन्दुस्तानकी मौजूदा आबादीको, और कुछ समय बाद अुसमें जो भी बढ़ती होगी, अुसको भरपेट खाना देनेका काम बहुत मुश्किल न होना चाहिये। दूसरे मुल्कोंके मुक़ाबले आज हमारे यहाँ खेतीकी पैदावार बहुत कम है। अकाल और अुसके आअिन्दा खतरेको टालनेका अेक अच्छे-से-अच्छा अिलाज यह है कि मुल्कमें खेतीसे ताल्लुक़ रखनेवाले अैसे छोटे या बड़े विभाग या युनिट क़ायम किये जायँ, जो मानवी शरीरका पोषण करनेवाली ख़ुराकके लिअे ज़रूरी चीज़ोंके मामलेमें अपनी ज़रूरत ख़ुद पूरी करनेवाले हों। अिन विभागों या युनिटोंकी रचनामें अिस बातकी खबरदारी रखनी होगी कि सायन्सकी निगाहसे जिसे आहार और पोषणके लिअे ज़रूरी ख़ुराक कहा जा सकता है, अुस ख़ुराककी तमाम चीज़ें हरअेक विभागमें पैदा होनी चाहियें। जब तक हमारे किसानको आहारशास्त्र और पोषणशास्त्रकी दृष्टिसे अनुकूल और अुचित ख़ुराकवाला भोजन दोनों जून भरपेट नहीं मिलेगा, तब तक हमारे राष्ट्रको खड़ा रखनेमें रीढ़की हड्डीका काम देनेवाली किसान जनताकी तन्दुरुस्ती भी सुधर नहीं सकेगी। गाँवोंमें रहनेवालोंकी तन्दुरुस्तीके लिअे अुचित आहार ही सबसे पहली ज़रूरत है। युक्ताहार या नपी-तुली ख़ुराकके सिलसिलेमें अभी और भी खोज करनेकी ज़रूरत है। और, गांधीजीकी कोशिशोंकी वजहसे अितना काम तो हो ही चुका है, जिससे अैसी खोजके लिअे अुपयोगी साबित होनेवाली शुरूआत की जा सके।

मरकज़ी सरकारमें महकमे ख़ुराकके वज़ीरकी हैसियतसे बहुत ही फ़िकरके साथ और धर्मबुद्धिसे अपना फ़र्ज़ अदा करनेवाले हमारे आदरणीय नेता बाबू राजेन्द्रप्रसाद काम कर रहे हैं। मुझे यक़ीन है कि वे न सिर्फ़ हमें अपनी अिन मौजूदा मुश्किलोंमेंसे पूरी ख़ैरियतके साथ पार ले जायँगे, बल्कि आअिन्दाके लिअे भी अैसा अिन्तज़ाम कर देंगे, जिससे हमें ग़ल्ले वग़ैराके लिअे दूसरे मुल्कोंके सामने हाथ पसारने और भीख माँगनेकी ज़रूरत न रह जाय।

शोषणका अभाव

अख़ीरमें अिस सारी चर्चाको ख़तम करते हुअे मुझे कहना चाहिये कि हमारी आज़ादीकी लड़ाअीके अैतिहासी विकासका यह नतीजा निकलता है कि चूँकि अुसने अहिंसाका और आम लोगोंकी भलाअीका व्रत लिया है, अिसलिअे अुसके फल स्वरूप अैसी समाज-व्यवस्था पैदा होनी चाहिये, जिसमें शोषणका यानी लूट-ख़सोटका नाम न हो, जिसका सारा काम लोकशाही ढबसे चलता हो, और जो दुनियाके दूसरे मुल्कोंके सहयोग और दुनियाकी सुख-शान्तिके साथ मेल खाती हो। साथ ही, अैसी व्यवस्थावाला समाज, जिस ज़माने और जिस युगमें हम जी रहे हैं, अुसके अुम्दा-से-अुम्दा आदर्शोंके साथ मेल खानेवाला होगा। गांधीजीकी देखरेखमें कांग्रेस अपने अिन मक़सदोंको हासिल करनेका काम करती रही है। आज वह घड़ी आ चुकी है, जब अुसे अपने ध्येयोंकी ज़्यादा साफ़ व्याख्या करनी होगी, ज़्यादा सजग रहकर और ज़्यादा सूझ-बूझके साथ अिन ध्येयोंकी क़ामयाबीके लिअे काम करना होगा, और अुसे हाल ही जो नअी हुकूमत और नअी ताक़त मिली है, अुसका अिस्तेमाल अिन मक़सदों या ध्येयोंकी सिद्धिके लिअे करना होगा।

* * *

राष्ट्रकी अेकता

आज हमने केन्द्रमें अेक तरहकी राष्ट्रीय सरकार क़ायम की है, और सूबोंमें वहाँकी जनता द्वारा चुनी गअी सरकारें काम कर रही हैं। कुछ ही दिनों बाद हम हिन्दुस्तानकी सरकारका नया विधान बनानेके लिअे अिकट्ठा होंगे। अगरचे आज मुकम्मल आज़ादी या पूर्ण स्वराज हमें पूरी तरह मिल नहीं गया है, तो भी अिसमें शक नहीं कि वह हमें दिखाअी पड़ने लगा है। ब्रिटिश लोगोंका अिरादा कुछ भी क्यों न हो, अब अुनकी यह ताक़त नहीं कि वे हमारी आज़ादीसे अिनकार करें। अगर अिस वक़्त हम अपने ध्येयको सिद्ध करनेमें चूकते हैं, तो अिसमें दोष या क़सूर हमारा ही होगा। आन-बानके अिस मौक़े पर कर्म या अकर्मकी जो ग़लतियाँ हमारे हाथों होंगी, अुन्हींका वह अेक नतीजा होगा। बीमारके लिअे सबसे ज़्यादा धोखेका वक़्त वह नहीं होता, जब अुसकी बीमारी बहुत ही ज़्यादा बढ़ जाती है, बल्कि वह होता है, जब बीमारीकी तंग घाटी पार करनेके बाद वह आराम करने लगता है। अुस वक़्त अुसके डॉक्टरोंकी देख-रेख कुछ कम हो जाती है, और अपनी हिफ़ाज़त अुसे ख़ुद ही करनी पड़ती है। आजकल हम अैसी ही नाज़ुक हालतोंमेंसे गुज़र रहे हैं। और हमारे लिअे सबसे ज़्यादा याद रखनेकी बात यह है कि हमारे दुश्मन न सिर्फ़ चालाक हैं, बल्कि अितने चौकन्ने और होशियार हैं कि अैसे मौक़ोंसे फ़ायदा अुठाना वे कभी चूकते नहीं।

ख़ुद हिन्दुस्तानियोंके हाथों अपनी बुरी मुरादोंको पूरा करानेमें ब्रिटिश सल्तनत ने ख़ुद हिन्दुस्तानके ही पैसों, हिन्दुस्तानके ही साधनों, हिन्दुस्तानके ही सिपाहियों, और अक्सर हिन्दुस्तानके लोगोंकी अक़्लसे ही हिन्दुस्तान पर फ़तह हासिल की थी। हमारी सबसे ज़्यादा दर्दनाक कमज़ोरी हमारी आपसी फूट और फ़िरक़ा-परस्ती है — हम अपनी ज़ात, मज़हब या दलके संकुचित स्वार्थके सामने अपने राष्ट्रके व्यापक हित या स्वार्थको कम अहमियत देते हैं। हमारा समूचा देश हमारी जिस निष्ठाका अधिकारी है, अुस निष्ठाको हम अपने छोटे-छोटे दलों या फ़िरक़ों पर न्योछावर कर देते हैं। यह हमारी बड़ी-से-बड़ी ख़ामी और कमज़ोरी है। जो अेकता हम पर बाहरसे किसीकी लादी लदी नहीं है, बल्कि जो क़ुदरती है, और अपने-आप पैदा हुअी है, वह हमारी सियासी ख़ासियतोंमें सबसे बड़ी और सबसे अहम ख़ासियत होती है। अिस गुणमें ब्रिटिश लोग सिर्फ़ हिन्दुस्तानसे नहीं, बल्कि युरोपके दूसरे राष्ट्रोंसे भी आगे बढ़े हुअे हैं। अपने अितिहासकी हरअेक नाज़ुक घड़ीमें ब्रिटिशों ने अपने आपसके धार्मिक या मज़हबी भेदोंको, पार्टियों और फ़िरक़ोंके आपसी झगड़ोंको, हमेशा भुला दिया है। चार सौ बरस पहलेकी सोलहवीं सदीको ही लीजिये। अुन दिनों साम्प्रदायिक मतभेदोंकी वजहसे ख़ूँख़्वार धार्मिक लड़ाअियाँ होती थीं, और कैथोलिक पन्थका अीसाअी और प्रोटेस्टण्ट पन्थका अीसाअी, दोनों, किसी ग़ैर अीसाअीसे जितनी दुश्मनी रखते, अुससे कहीं गहरी दुश्मनी आपसमें अेक-दूसरेके साथ रखते थे। लेकिन जब अुसी ज़मानेमें कैथोलिक पन्थके अेक सुलतानकी नौसेनाके हमलेका ख़तरा अिंग्लैण्ड पर मँडराने लगा, तो फ़ौरन ही अिंग्लिस्तानके कैथोलिक अपने देशके प्रोटेस्टण्ट भाअियोंके साथ कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर परदेशी हुकूमतके हमलेका सामना करनेके लिअे तैयार हो गये, बावजूद अिसके कि अुन्हें अुन दिनों अिंग्लैण्डमें बहुतही सताया जाता था। हम देखते हैं कि अंग्रेज़ लोगोंका यही गुण आज दिन तक अुनमें मौजूद है। अभी कुछ दिन पहले जो बड़ी लड़ाअी ख़तम हुअी है, अुसमें जिन दिनों ब्रिटेनके सिर पर आफ़तके बादल मँडरा रहे थे, तब वहाँके समाजवादियोंने, ज़रूरी मालूम होने पर, चर्चिल जैसे तरक़्क़ीके कट्टर दुश्मन, मग़रूर और रग-रगमें अपनी ज़ातके बड़प्पनका ख़याल रखनेवाले आदमीके मातहत रहकर काम करनेमें ज़रा भी आनाकानी नहीं की। लेकिन यहाँ, हमारे हिन्दुस्तानमें, छोटे-छोटे मतभेदोंको लेकर हमारे बीच अैसी खाअियाँ पड़ जाती हैं, जिन्हें पाटना नामुमकिन हो जाता है। अिन मतभेदोंको क़ायम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखनेकी धुनमें समान हितकी वातें भुला दी जाती हैं, और मामूली-से मतभेदों पर जरूरतसे ज़्यादा जोर दिया जाता है। अगर हमें अेक राष्ट्र या क़ौमके नाते जिन्दा रह कर तरक़्क़ी करनी हो, तो हमें राष्ट्रकी अेकताको चूर-चूर करने और निष्ठाके केन्द्रसे दूर जानेवाली अपनी अिस वृत्ति पर अंकुश रखना ही होगा।

साम्प्रदायिक मतभेद

आज हमारी आज़ादीके लिअे सबसे बड़ा खतरा हमारी साम्प्रदायिक फूटका है – खासकर हमारी दो बड़ी जातोंके, हिन्दुओं और मुसलमानोंके, आपसी झगड़ेका। परदेशी हुकूमतने पहले भी हमारी अिस फूटसे पूरा-पूरा फ़ायदा अुठाया है। आज अिसी फूटमें अुसे अपनी बाज़ी जीतनेका अच्छे-से-अच्छा और आख़िरी ज़रिया नज़र आता है। आज बड़ी ही चालाकी, बारीकी और .खूबीके साथ वह अिस ज़रियेका अिस्तेमाल करने लगी है। यह मानना कि हिन्दू और मुसलमान, दोनों, दो अलग-अलग और मुख़्तलिफ़ क़ौम हैं, न सिर्फ़ अितिहास, सायन्स और मानव-वंश-शास्त्रकी दृष्टिसे ग़लत है, बल्कि .क़ुदरतके भी खिलाफ़ है। अिन दोनों जातियोंके समाजी, सियासी और आर्थिक हित अेक ही हैं। दोनों में अनगिनत समानतायें हैं। शायद अुनके आपसी भेद अँगुलीकी पोरों पर गिनने जितने भी नहीं। यही नहीं, बल्कि वे बिलकुल सतह परके, छिछले और नामके हैं। दूसरे देशोंका कोअी आदमी हिन्दुओं और मुसलमानोंको अलग-अलग तभी पहचान सकता है, जब वह हरअेक सूबेकी पोशाकके मुख़्तलिफ़ रिवाजोंको पूरी तरह जानता हो, क्योंकि वैसे पोशाकका यह भेद भी सब जगह अेकसा नहीं है। हिन्दुस्तानको, हिन्दुस्तानके बाहर, सभी कोअी अेक और अखण्ड देशके रूपमें ही पहचानते हैं। हिन्दुस्तानको जीतनेवाले किसी विजेताने तब तक अपनेको कभी सलामत नहीं समझा, जब तक अुसने सारे मुल्क पर अपनी हुकूमत क़ायम न कर ली। अिस पुराने मुल्कके चारों कोनों पर अपना अधिकार जमाये बिना यहाँके किसी राजा या बादशाहने अपने राजको अखण्ड और परिपूर्ण नहीं माना। पुराने ज़मानेके मौर्य या गुप्त खानदानोंकी हुकूमतके दिनोंमें, या अुसके बाद हालके ज़मानेमें, मुग़लोंकी सल्तनतके दिनोंमें, समूचा हिन्दुस्तान अेक ही हुकूमतके अधीन था। अिसके सिवा और किसी ज़मानेमें हिन्दुस्तानकी प्रतिभा अपनी सोलहों कलासे कभी खिली नहीं।

अगरचे हमारी मौजूदा परदेशी हुकूमतने परदेशी ढबकी तालीमके ग़ैर क़ुदरती तरीक़ेसे, और पहल करनेका अेक-अेक मौक़ा हमारे हाथसे छीनकर, हिन्दुस्तानकी प्रतिभाको कुण्ठित कर डाला है, तिस पर भी आज हिन्दुस्तान अेक अैसी अराजक हुकूमतके तले अिकट्ठा हुआ है, जो सबके लिअे सरीखी रही है। अिस अेक हक़ीक़तकी बदौलत राष्ट्रकी सृजनशील प्रतिभाने विचार और कामके अलग-अलग क्षेत्रोंमें अपने लिअे स्वतंत्र मार्ग खोज लिअे हैं। अिस अन्धेरशाहीके दिनोंमें हिन्दुस्तानमें नवजीवनकी नअी जागृतिका संचार हुआ है। अिसलिअे हिन्दुस्तानको हिन्दुओं और मुसलमानोंके दो अलग राष्ट्रोंमें बँटा हुआ समझना, न सिर्फ़ प्रगति-विरोधी है, बल्कि अवनतिकी अुलटी दिशामें क़दम बढ़ानेके समान है। असलमें, जिन्हें क़ुदरतने अेक बनाया और अेकत्र किया है, अुनको यह खयाल, अेक-दूसरेसे अलग करनेवाला है। ख़ुद मेरी ही बात लीजिये। सिन्धमें मेरे सगे भाअियोंके पोते और पोतियाँ मुसलमान हैं। हिन्दू धर्मको माननेवाले मेरे दूसरे सगे भाअियोंके पोतों और पोतियोंकी तरह वे सब भी मुझसे प्यार करते हैं। मैं यह सोच भी नहीं सकता कि हिन्दू होने की वजह से मैं अेक राष्ट्रका हूँ और मुसलमान होने के कारण वे सब किसी दूसरे राष्ट्र.की रिआया हैं। अुनमेंसे अेक छोटी सुकुमार दुलहिन ने हाल ही मुझे अपने अेक खत में लिखा था कि — "**जिस सबसे ऊँचे ओहदे को पाने की अुम्मीद हर कोअी हिन्दुस्तानी रख सकता** है, वह आपको मिला है, अिसके लिअे आप हमारी दिली मुबारकबादी क़बूल कीजिये। हम दुआ करते हैं कि आप कांग्रेसके सदरकी अिस गादीको अपने सेवाबलसे लम्बे अरसे तक शानके साथ सुशोभित करें। अलबत्ता, हम सब पक्के मुस्लिम लीगी हैं, पर हम ख़ुदासे दुआ माँगते हैं कि वह कांग्रेस और लीगके बीच मेल पैदा कर दे।" (काले टाअिप मैंने किये हैं।)

तीसरा दल

अिस सिलसिलेमें, मुझसे पहले मेरी अिस जगहको सुशोभित करनेवाले अपने साबिक़ सदर की बात मैं मुसलमानोंको फिर सुनाना चाहता हूँ। कांग्रेस के सदर के नाते की गअी अपनी तक़रीर में मौलाना साहबने कहा था – "हम हिन्दुस्तान के मुसलमान आनेवाले आज़ाद हिन्दुस्तानको शक और अविश्वास की नज़र से देखते हैं, या हिम्मत और आत्मविश्वास की नज़र से? . . . . भविष्यके बारेमें किया गया आजका कोअी अैलान, या बनाये गये किसी विधान या आअीन में दर्ज की गअी किसी तरह की गारण्टियोंवाली दफ़ायें, हमारे शक-शुबहे और डरका कोअी अिलाज नहीं। अैसी माँगें पेश करनेसे तो हमें अिस मुल्कमें तीसरे दल की हाज़िरी को लाज़िमी तौर पर क़बूल करना पड़ेगा। यह तीसरा दल यहाँ जम कर बैठा है, और वह अिस मुल्क से जाना नहीं चाहता। चुनाँचे, अगर हमने डर और शकका रास्ता अख़्तियार किया, तो हमें यह मान कर चलना होगा कि यह तीसरा दल यहाँ हमेशा बना रहेगा। लेकिन अगर हमें यह यक़ीन हो चुका हो कि हमें डरने और शक रखने की कोअी ज़रूरत नहीं है, और हमको अपने भविष्य की ओर हिम्मत और आत्मविश्वासके साथ देखना है, तो हमारे काम का रास्ता बिलकुल साफ़ हो जाता है। अुसके बाद हम अेक अैसी नअी दुनियामें दाख़िल होते हैं, जिसमें शक-शुबहे का, मनकी डाँवाडोल हालत का, मुर्दादिली और आलकसकी काली छाया का कहीं पता नहीं, और जिसमें श्रद्धाकी और पक्के निश्चय की, काम की और जोश की रोशनी हमें कभी दग़ा नहीं देती।" अितिहास के अेक विद्यार्थी के नाते मुझे अिन प्रेरक वचनों में यही जोड़ना है कि अिस्लामने जो बड़प्पन और शान हासिल की है, वह अुसे श्रद्धा और दृढ़ निश्चयके बिना नहीं मिली। आज हिन्दुस्तान में मुस्लिम लीग अपने दिल में डर और शक रखकर अपना काम कर रही है, और समूची मुस्लीम क़ौम में अिन दो भद्दी भावनाओं की छूत फैला रही है। जब पहाड़ोंके अुस पारसे मुसलमान अिस मुल्क में पहले-पहल आये थे, तब अुनकी संख्या करोड़ोंकी नहीं, बल्कि हज़ारोंकी ही थी। अुस वक़्त अुन्हें चींटियोंके दलकी तरह अुमड़ती करोड़ों हिन्दुओंकी बस्तीसे कोअी डर नहीं मालूम हुआ था। वे लोग अपनी श्रद्धा और अपने अुत्साहकी ताक़त लेकर आये थे। आज अुनकी तादाद देशकी कुल आबादीके अेक चौथाअी हिस्सेके बराबर है। यह कहना ही ठीक नहीं कि यहाँ मुसलमान अल्पसंख्यामें हैं। मौलाना साहबने सच ही कहा था — "यह कहना कि हिन्दुस्तानकी राजनीतिके पोतमें बुनी हुअी मुस्लिम जाति राजनीतिकी दृष्टिसे अल्पसंख्यक जाति है, अेक बेजोड़ झूठके सिवा और कुछ नहीं। राजनीतिकी ज़बानमें कहें, तो राष्ट्रका जो गिरोह या समूह दूसरोंके मुक़ाबले तादादमें कुछ ही कम हो, और अिस वजहसे खास हिफ़ाज़तका हक़दार हो, अुसे अक़लियत कहना सच नहीं। अक़लियत लफ़्ज़ अुस गिरोहके लिअे अिस्तेमाल किया जाना चाहिये, जिसकी तादाद अपने आसपास बसनेवाली दूसरी ज़ातकी बड़ी तादादके मुक़ाबले बहुत ही कम हो, और जो सामर्थ्यके गुणोंसे वंचित होनेके कारण, जिन लोगोंके बीच रहता हो, अुन बहुत बड़ी तादादवाले लोगोंसे अपनी हिफ़ाज़त करनेके लायक़ आत्मविश्वास न रखता हो। . . . . अिसलिअे यह सिर्फ़ तादादका सवाल नहीं; अिस सिलसिलेमें दूसरी भी कअी बातों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग़ौर करना ज़रूरी है । . . . हिन्दुस्तानके ग्यारहमेंसे चार सूबोंमें मुसल्मानोंकी अक्सरियत है । अिन चारमें ब्रिटिश बलूचिस्तानको जोड़नेसे मुस्लिम बहुमतवाले सूबोंकी तादाद पाँच हो जाती है । फ़र्ज़ कीजिये कि आज राजनीतिक सवालका मज़हबी गिरोहोंकी बिना पर प्रदेशोंको अिकट्ठा करनेकी दृष्टिसे विचार करना ज़रूरी हो जाय, तो भी मुसल्मानोंकी हालतको किसी तरह अल्पसंख्यक जातिकी-सी हालत नहीं कहा जा सकता । सात सूबोंमें अुनकी आबादी अल्पसंख्यक है, तो बाक़ीके पाँच सूबोंमें वह बहुसंख्यक भी है । अैसी हालतमें मुसल्मानोंके लिये कोअी वजह नहीं रहती कि वे अपनेको अल्पसंख्यक जाति समझकर दब जायँ या हिम्मत हार जायँ ।"

अिसलिअे, मैं मानता हूँ कि जो हिन्दू मुसल्मानोंको अिस मुल्कमें आकर बसे हुअे परदेशी समझता है, वह न सिर्फ़ अपने धर्मके साथ अन्याय या बेवफ़ाअी करता है, बल्कि हिन्दुस्तानकी आज़ादी और तरक़्क़ीका दुश्मन भी बनता है । दूसरी तरफ़ जो मुसलमान हमारे ही रक्त और मांससे बना है, वह अगर यह माने और अिस तरह बरताव करे कि मानो वह अिस मुल्कमें आकर बसा हुआ कोअी परदेशी आदमी है, तो वह अपनी ज़ातको और हिन्दुस्तानको अुस हिन्दूके बराबर ही नुक़सान पहुँचाता है । हम हिन्दुओं और मुसल्मानोंमें क़रीब-क़रीब सभी बातें अेक-सी हैं, सिर्फ़ हमारे धर्म या मज़हब अलग हैं, लेकिन धर्मकी बात तो हरअेककी अपनी श्रद्धा और मान्यताकी बात है — होनी चाहिये । धर्मके सवाल पर झगड़ने का तरीक़ा जंगलियोंका तरीक़ा है । मैं जानता हूँ कि हिन्दुओं और मुसल्मानोंके बीच होनेवाले आजके ये झगड़े मज़हबी झगड़े नहीं; बल्कि दो ज़ातोंके आपसी झगड़े हैं । दोनों ज़ातोंके आमलोगोंको जो सियासी और आर्थिक या माली सवाल हल करने हैं, अुनसे अिन झगड़ोंका कोअी ताल्लुक़ नहीं । राजनीतिका पेशा करनेवाले और अक्सर भले-बुरेका ख़याल भी न रखनेवाले लोगोंके हाथोंमें पड़कर आज हमारी आम जनता अुनके हथियार का काम दे रही है । अिन झगड़ों के कारण कुछ भी क्यों न हों, तो भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि आज देशकी हालत बहुत तंग है, और आपसी कड़वाहट और दुश्मनी अेक हक़ीक़त बन गअी है । चुनाँचे हमारा यह फ़र्ज़ हो जाता है कि हम किसी बड़े झगड़ेमें फँसनेसे बचकर अपना रास्ता ढूँढ़ निकालें ।

प्रतीकार और बदलेकी भावना

जहाँ अेक तरफ़ मुझे यह ज़रूरी मालूम होता है कि मैं सब जातियोंको अपने आपसी झगड़ोंका फ़ैसला करनेके लिअे हिंसक तरीक़ोंको अपनानेकी पहल करनेके बारेमें चेतावनी दूँ, तहाँ दूसरी तरफ़ बिहारके ढंग पर हरअेक जातिको प्रतीकार करने या बदला लेनेकी ग़रज़से हिंसाका अिस्तेमाल करनेके मामलेमें चेतावनी देनेकी ज़रूरत भी मुझे कुछ कम नहीं मालूम होती । दो बुराअियाँ अेक-दूसरीको मिटा नहीं सकतीं । फिर, प्रतीकार करने या बदला लेनेकी ये कार्रवाअियाँ, असलमें अन्याय करनेवाले और सज़ाके क़ाबिल लोगोंके ख़िलाफ़ की जानेपर भी, आख़िरकार बेगुनाहोंके क़त्लमें बदल जाती हैं । असलियत यह है कि आगे बढ़कर शुरू की गअी साम्प्रदायिक हिंसा में, या बदला लेनेकी ग़रज़से बादमें की गअी साम्प्रदायिक हिंसामें आख़िर ग़रीब और लाचार लोग ही मारे जाते हैं । जो लोग असलमें अिन झगड़ोंको अुभाड़ते हैं, वे तो पहलेसे ही अपने बिलकुल अछूते रहनेका अिन्तज़ाम कर लेते हैं। जिस तरह राष्ट्र-राष्ट्रके बीच होनेवाली लड़ाअियोंमेंसे अेटम बम जैसे भयंकर तबाही करनेवाले हथियारका जन्म हुआ, अुसी तरह लोगोंके आपसी झगड़ोंमें मनमाने ढंगसे हैवानियत और शैतानियतसे भरी हिंसाके अिस्तेमालसे अेटम बमका मुक़ाबला करनेवाली कोअी चीज़ पैदा हुअे बिना न रहेगी, और वह हिन्दुओं और मुसल्मानोंको हमेशाके लिअे मिटा देगी ।

हर हालतमें हिंसा अेक बुरी चीज़ है, और अुससे कोअी मतलब हल नहीं होता । लेकिन वातरोगकी तरह, लोगोंकी निरंकुश भीड़, बिना किसी संगठन या नियमनके, अचानक जो हिंसा कर बैठती है; अुससे न सिर्फ़ कोअी नतीजा नहीं निकलता, बल्कि दूसरा भी बहुत नुक़सान होता है । जिस कामकी सिद्धिके लिअे लोगोंकी भीड़को हिंसाके लिअे अुभाड़ा जाता है, आख़िर वह अुसीका नाश करती है । मुझे डर है कि अगर पहला वार करनेके ख़यालसे की गअी भड़कानेवाली हिंसाके, और अुसके जवाबमें बदला लेनेकी ग़रज़से की जानेवाली हिंसाके, ये काण्ड यों ही होते रहे, तो अपने अनुयायियोंको क़ाबूमें रखनेका फ़ैसला करनेके बावजूद भी मुस्लीम लीगके नेता अुन्हें क़ाबूमें रख नहीं सकेंगे। यही हाल कांग्रेसका भी होगा, हालाँकि कांग्रेसके लीडरोंने आम लोगोंको अैसी हिंसासे बचाने लिअे अपने बसभर सब कुछ किया है। लेकिन अगर दोनों दल अपने-अपने अनुयायियोंको क़ाबूमें न रख सके, तो सभी हिन्दुस्तानी साम्प्रदायिक अुन्मादसे पागल बने हुअे लोगोंके दो अलग-अलग दलों और छावनियोंमें बँट जायँगे, और अुन दोनों पर निगरानी रखनेके लिअे ब्रिटिश लोग अपनी संगीनोंके साथ हाज़िर हो जायँगे । और फिर हिन्दुस्तानकी आज़ादीके दिन कब लौटेंगे, सो भगवान् ही जाने !

आपसकी सहिष्णुता

अगर हमें आज़ादीके लायक़ बनना है, तो हमको अेक-दूसरेके जज़्बातकी क़द्र करना सीखना होगा, और अेक साथ रहने और जीनेकी कला सीखनी होगी। हिन्दुओं और मुसल्मानोंकी अक़लियत सारे देशमें फैली हुअी है । जिन बहुसंख्यक लोगोंके बीच ये अल्पसंख्यक लोग रहते हैं, अगर वे अपने अल्पसंख्यक पड़ोसियोंकी तरफ़के अपने नैतिक कर्त्तव्यको बिलकुल भूल जायँ, तो अुनके ग़ुस्सेसे अल्पसंख्यक लोगोंको हमेशाके लिअे पुरअसर तरीक़ेसे बचानेमें पुलिस या फ़ौजका बड़े-से-बड़ा दल भी काफ़ी न होगा । जहाँ मुसलमानोंकी तादाद ज़्यादा है, वहाँ किसी हिन्दूकी जान, माल और अिज़्ज़त सलामत न रहे, और जहाँ हिन्दुओंकी तादाद ज़्यादा है, वहाँ किसी मुसलमानकी जान, माल और अिज़्ज़त सलामत न रह सके, तो अिस देशमें संस्कारी और सभ्य जीवन ही असम्भव हो जाय । अगरचे श्री जिन्नाके पाकिस्तानके सपनेने अिस सवालको आजकी शकलमें खड़ा कर दिया है, तो भी अुस सपनेके सच साबित होने पर भी, अिस सवालका कोअी हल नहीं निकल सकेगा, क्योंकि पाकिस्तानी हुकूमतके क़ायम होने पर भी अल्पसंख्यक जातियाँ तो जहाँकी तहाँ ही रहेंगी — अुनकी हालतमें थोड़ा भी फ़रक़ नहीं पड़ेगा ।

फिर भी मैं अुम्मीद करता हूँ कि दोनों जातियोंके फ़िरक़ापरस्त और जुनूनी लोग मध्ययुगको शोभा देनेवाले हल्केसे हल्के अिलाजोंको आज़मानेके बदले ज़्यादा समझदारी और अिनसानियतसे काम लेंगे । अगर आज हिन्दुस्तानमें दो राष्ट्र हैं, तो अुनमेंसे अेक दोनों जातियोंके शोषक लोगोंका और दूसरा दोनों जातियोंके शोषितोंका है । अगर हम अिस स्पष्ट हक़ीक़तको मंज़ूर कर लेते हैं, तो अिस सवालका हल आसान हो जाता है । ग़रीबी, बीमारी और बेसमझी, ये हिन्दुओं और मुसल्मानोंके अेकसे दुश्मन हैं । अगर हम समझ जायँ कि दरअसल हम क्या हैं और किस हालतमें हैं, तो हममें आपसके कोअी झगड़े ही न रह जायँ ।

अिस मसलेका मैंने यहाँ ज़्यादा तफ़सीलसे ज़िक्र किया है, क्योंकि हमारी आज़ादी और तरक़्क़ीके रास्तेमें यह सबसे बड़ी रुकावट है । अब जब कि मुस्लिम लीग भी मरकज़ी सरकारमें शामिल हुअी है, और कांग्रेसके साथ देशके राजकाजकी ज़िम्मेदारी अुठाने लगी है, तो यह अुम्मीद की जाती है कि कलकत्ता, पूरबी बंगाल, बिहार और छोटे-मोटे पैमाने पर दूसरी जगहोंमें जो मार-काट हुअी है, वह बीते ज़मानेका अेक डरावना सपनाभर रह जायगी, और हम सब मिलकर भाअीचारेके साथ, सहयोगपूर्वक, अेक ही माँकी औलादकी तरह, नये सिरेसे अपना भावी अितिहास लिखनेमें जुट जायँगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान बनानेवाली सभा

आज़ाद हिन्दुस्तानकी हुकूमतका आअीन बनानेके लिअे अब हम जल्दी ही नुमाअिन्दा सभामें अिकट्ठा होंगे। अिस सिलसिलेमें हम यह कभी न भूलें कि राजकाजके और अर्थ-व्यवस्थाके क्षेत्रमें ज़रूरतसे ज़रा भी ज़्यादा अेककेन्द्री या अिकहत्थी हुकूमत आज़ादीके दुश्मनका काम करती है। अिसलिअे यह अेक अच्छी चीज़ है कि देशमें रहनेवाली जनताके जान-मालकी सलामती और बाहरी हमलोंके खतरोंसे सारे देशकी हिफ़ाज़तके साथ सुसंगत रहकर, पूर्ण स्वराजका अुपभोग करनेवाले हिन्दुस्तानमें, प्रान्तोंको अपना राजकाज चलानेकी ज़्यादा-से-ज़्यादा हुकूमत सौंपी जायगी। लेकिन हमारे कुछ सूबे लम्बाअी-चौड़ाअीमें युरोपके अेक-अेक मुल्कके बराबर हैं। अिसलिअे प्रान्तोंके राजकाजमें भी ज़रूरतसे ज़्यादा अेककेन्द्रीपन न आ जाय, अिसकी खबरदारी रखनी होगी। न जाने कितना अरसा हुआ, अितिहासमें कहीं अुसका ज़िक्र नहीं मिलता, फिर भी कहना होगा कि बहुत पहले, हिन्दुस्तानकी प्रतिभाने अमुक अेक प्रदेशके लिअे मुक़ामी पंचायत और ग्रामपंचायतकी अिमारत तैयार की थी। कअी तूफ़ानी ज़मानोंमें अिन पंचायतोंने हमें महफ़ूज़ रखनेवाले क़िलेका काम दिया है। राजा और राजपरिवार आपस-आपसमें लड़े, जीते या हार गये, सल्तनतें क़ायम हुअीं, अुन्होंने हुकूमत की, अन्धाधुन्धीसे काम चलाया, और आखिर वे सब मिट गअीं, सिर्फ़ अुनका नाम रह गया। मगर हमारे गाँवोंमें रहनेवाले आमलोगोंके जीवनका सरल प्रवाह, लड़ाअियोंके शोर-गुल और नअी बनने व मिटनेवाली सल्तनतोंकी धाँधलीसे अलग रहकर, बराबर अपने ढंगसे बहता रहा। हमारे देहातियोंके पास अुनकी अपनी देहाती हुकूमत थी, जो अुनके जान-मालकी हिफ़ाज़त करती और अुनके संस्कारी व सादे जीवनको सम्भव बनाती थी। चुनाचे हमें अपनी ग्राम-पंचायतोंको छोटे-छोटे फ़ौजदारी और दीवानी मुक़दमे चलानेकी हुकूमत दरजे-ब-दरजे सौंपनी होगी, और गाँवोंमें अमन व अमानकी निगरानी रखनेवाला पुलिसका दस्ता भी अुनके हवाले करना होगा। अगर स्थानीय स्वराजकी अिस देहाती अिकाअीकी नींव पर हम अपने राजकाजकी अिमारत खड़ी करेंगे, अुसकी बनावटमें आजकी हालतके मुताबिक़ फेरफार करके अुसे फिरसे थिर करेंगे, तो कहा जायगा कि हमने अपने राष्ट्रकी प्रतिभाके अनुकूल काम किया है। हमारे लिअे यह रास्ता स्वाभाविक और सरल होगा। पश्चिमकी नक़लभर करना हमारा मक़सद नहीं हो सकता। साथ ही, हमें यह भी न भूलना चाहिये कि पश्चिमी मुल्कोंने, और अुनमें भी खास तौरपर पश्चिमके बड़े-बड़े मुल्कोंने, लोकशाही हुकूमतके मामलोंमें लाल फ़ीतेके तरीक़ेका विकास किया है, जिससे लोकशाहीका काम बहुत भारी-भरकम और धीमी चालसे आगे बढ़नेवाला बन जाता है। हम अपनी हुकूमतके लिअे जो विधान या आअीन बनाना चाहते हैं, अुसमें लोकशाही हुकूमतकी अिन तमाम खामियोंसे हमें बचना होगा।

हमें अपनी न्याय-पद्धतिको अैसा रूप देना होगा, जिससे वह आसानीसे, झटपट और पुरअसर तरीक़ेसे काम कर सके। हमें क़ानूनको और क़ानूनी अदालतोंको ढिलाअीसे, अुनके बड़े-बड़े खर्चों और अुलझी हुअी कार्यप्रणालीकी बुराअियोंसे बचाना होगा। अिसके अलावा, हमें अपने आअीनमें नागरिक अधिकारोंके अुपभोगका भी पूरा प्रबन्ध रखना होगा। लोकशाही ढबकी और आम लोगों द्वारा चुने गये नुमाअिन्दोंकी बनी सरकारोंके निरंकुश कामोंके खिलाफ़ भी हमें अिन अधिकारोंकी सुरक्षाका बन्दोबस्त करना होगा। हमें यह याद रखना होगा कि हुकूमत अेक अैसी चीज़ है, जो देशभक्त लोकसेवकको भी गुमराह बना देती है। अिसके अलावा हमें अपने विधानमें अल्पसंख्यक जातियोंकी सलामतीका भी पूरा-पूरा प्रबन्ध करना होगा, और अैसा करते समय अिस बातका खयाल रखना होगा कि अुनकी सलामती देशके और आम जनताके व्यापक हितोंके साथ मेल खानेवाली हो। अल्पसंख्यक जातियोंकी भाषा और अुनकी संस्कृतिके विकासको पूरा-पूरा अवसर मिलना चाहिये। धर्म और धार्मिक श्रद्धाके बारेमें पूरी सहिष्णुता बरती जानी चाहिये। अमन-अमान और आम रिआयाके सदाचारका खयाल रखते हुअे हरअेक आदमी और हरअेक गिरोहको अपने-अपने विचारोंका प्रचार करनेकी आज़ादी होनी चाहिये।

अुपसंहार

हम सबका यह बहुत बड़ा सौभाग्य है कि हमें अपने ज़मानेमें अेक अुम्दा कामको अंजाम देनेमें मदद करनेका मौक़ा मिला। हमें जो आदेश मिला है, वह अपने राष्ट्रकी गरदन पर पड़े हुअे परदेशी हुकूमतके जुअेको हटानेके लिअे पुरुषार्थ करनेका ही नहीं है। हम जानते हैं कि अैसा पुरुषार्थ करनेके मौक़े तो तवारीखमें बहुतसे मुल्कोंको नसीब हुअे हैं। मगर हमें जो मौक़ा मिला है, वह अुन सबसे कहीं बढ़ाचढ़ा और अनोखा है। हमारा यह मौक़ा अिसलिअे बेज़ोड़ है कि हमें अहिंसा और सत्यके साधनोंसे अपनी आज़ादी हासिल करनी है, और अुच्च और अुदार हेतुओंके लिअे नैतिक साधनोंका अुपयोग करना है। साथ ही, हमें अलग-अलग जातियों, अलग-अलग धर्मों, मुख्तलिफ़ ज़ातोंके लोगों और मुख्तलिफ़ मज़हबोंके बीच मेल-जोल पैदा करके अेक नअी सुरीली — सुसंवादी — तहज़ीब खड़ी करनेका मौक़ा दिया गया है। अेक-दूसरेसे बिलकुल अलग मालूम होनेवाली, बल्कि आपसमें झगड़नेवाली, संस्कृतियोंका विकास करनेका सुयोग हमें मिला है। हम सबको मिलकर विविधतामेंसे अेकता पैदा करनेका काम करना है, और अपने राष्ट्रकी कअी पहलुओंवाली अेक सुन्दर मूर्ति तैयार करनी है। आज दुनियामें सुनाअी पड़नेवाले तरह-तरहके बेसुरे सुरोंको अिकट्ठा करके हमें अुनकी मददसे अेक अैसा सुरीला संगीत निर्माण करना है, जो दुनियामें पहले कभी सुना नहीं गया। हमें यह याद रखना चाहिये कि आज मनुष्य-जातिको अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और अलग-अलग जातियों और अलग-अलग संस्कृतियोंके बीच होनेवाले झगड़ोंको शान्तिके साथ मिटाना होगा, नहीं तो अुसका नाश हुअे बिना न रहेगा। ये झगड़े हिंसाके ज़रिये कभी मिट नहीं सकते। अुन्हें मिटाना हिंसाके बूतेकी बात नहीं। आज यह डर पैदा हो गया है कि कहीं हिंसा बीमारीके साथ बीमारको भी खतम न कर दे! अिसलिअे मनुष्य-जातिको अपने झगड़ोंका फ़ैसला करनेके लिअे कोअी नया तरीक़ा खोज निकालना होगा और फिर अुसीको अपनाना होगा। आज हिन्दुस्तानको अेक अैसा नेता पानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जो दुनियाको कअी सौ बरसोंमें अेकाध बार ही मिलता है। अिस नेताकी देखरेखमें हिन्दुस्तानको अेक नया तरीक़ा मिला है, और अुसका अुसने थोड़ा कारगर अिस्तेमाल भी किया है। लेकिन झगड़ोंको मिटानेका यह तरीक़ा बिलकुल नया है। अिसका अिस्तेमाल करनेमें अक्सर ग़लतियाँ भी हुअी हैं, और कभी-कभी अिस्तेमाल करनेवालोंने पुराने तरीक़ोंसे भी काम ले लिया है। लेकिन हम सब यह याद रक्खें कि अब तक दुनियामें दूसरी जितनी क्रान्तियाँ हुआ हैं, अुनमें जान-मालका जितना नुक़सान हुआ है, लोगोंकी रोज़ाना ज़िन्दगीमें जैसी गड़बड़ पैदा हुअी है, और क्रान्तिके मन्थनमेंसे जो हलाहल विष पैदा हुआ है, अुसके मुक़ाबले हिन्दुस्तानकी क्रान्तिको बहुत कम क़ीमत चुकानी पड़ी है, और अगर हम ग़ाफ़िल न रहे तो समझिये कि अब वह सफलताके दरवाज़े पर ही आकर खड़ी है। विजयकी यह सफलता हमें तुरन्त ही मिले या न मिले, अिसका खयाल छोड़कर, फ़िलहाल हम सब अितना ही याद रक्खें कि हम अेक बड़े और अुम्दा कामको पूरा करनेमें लगे हैं। आखिर अैसे कामोंमें कभी नाकामी होती ही नहीं। लेकिन अैसे महान् और अुम्दा कामको अंजाम देनेके लिअे अुसमें लगे हुअे लोगोंका भी महान् और अुत्तम होना ज़रूरी है। ग़ुलामीमें यह ताक़त नहीं कि वह बड़प्पन और अुम्दगी पैदा करे। मगर सदियोंका अँधेरा दीया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाते ही दूर हो जाता है। हिन्दुस्तानमें सदियों पुरानी गुलामीके अँधेरेको चीरनेवाली जोत जल चुकी है। हम सबका यह फ़र्ज़ है कि हम अिस जोतको हमेशा जलती रखें। अगर हम सब अिस जोतकी रोशनीसे अुजले बने रास्ते पर चलेंगे, तो आखिर हमारा सबका भला ही होगा। **वंदेमातरम्!**

(अंग्रेज़ीसे)

आजकी दुनियामें समत्व ही राजा है

स्वराज्य = सामाजिक अेकता

हिन्दुस्तानकी मौजूदा हालत बहुत मुश्किल है। अेक तरफ़ हमारे लोगोंके हाथमें थोड़ी हुकूमत आअी है। लेकिन आप जानते ही हैं कि अिस हुकूमतके हाथमें आते ही हिन्दुस्तानमें क्या-क्या बातें होने लगी हैं। आज स्वराज्य बहुत नज़दीक आया-सा लगता है। लेकिन साथ ही अब यह शक होने लगा है कि कहीं वह दूर तो नहीं चला जायगा। असलमें हिन्दुस्तान-जैसे बड़े देशके स्वराज्यकी राहमें कोअी रुकावट रहनी ही न चाहिये। चालीस करोड़ लोगोंकी ताक़त कोअी छोटी-मोटी ताक़त नहीं। लेकिन यह अितना बड़ा देश और अिसकी अितनी बड़ी आबादी ही आज हमारे स्वराज्यकी अेक बड़ी रुकावट बन बैठी है। अगर अितनी बड़ी आबादीके सब लोग आपसमें प्रेमसे रह सकें, तो हमारा राष्ट्र सारी दुनियाके सामने अिज़्ज़तके साथ खड़ा रह सकेगा। लेकिन अगर हममें प्रेम और अैक्य, मुहब्बत व अित्तहाद, न रहा, तो आपसमें फूट फैलेगी, और अुस हालतमें तीसरोंकी हुकूमत, अिसकी नहीं तो अुसकी, यहाँ क़ायम ही रहेगी। अिसीलिअे मैं कहता हूँ कि हिन्दुस्तानके स्वराज्यका सवाल हिन्दुस्तानकी सामाजिक अेकताका सवाल है। अगर हम अेक होकर रहेंगे, तो स्वराज्य हमारे हाथमें है। वह कभी हमसे दूर जा ही नहीं सकता। लेकिन अगर हममें आपसी फूट बनी रही, तो स्वराज्य मुश्किल है।

अेक शब्द

गांधीजीने अपनी ज़िन्दगीके ज़रिये पिछले पच्चीस सालोंसे हमें यही बात कही है। लेकिन अितने दिनोंके अुनके प्रचार और प्रयत्नोंके बावजूद हम देख रहे हैं कि हिन्दुस्तानके लोग अभी तक जागे नहीं हैं। गांधीजीने हमें अेक शब्द दिया है—'**अहिंसा**'। अहिंसाका मतलब निष्क्रियता या निकम्मापन हरगिज़ नहीं। अहिंसा अेक बड़ी शक्ति है। शक्तिकी अुपासना करनी पड़ती है। अहिंसाकी अुपासनाका मतलब क्या? यही कि हिन्दुस्तानमें हम जितने लोग रहते हैं, वे सब आपसमें भाअी-भाअीकी तरह रहें। अेक-दूसरेके साथ मुहब्बतका बरताव करें। किसीको हलका या नीच न समझें। किसीको अुच्च या अूँचा न मानें। किसीको दबायें नहीं। किसीसे डरें नहीं। यह है अहिंसाकी अुपासना। अिस तरीक़ेसे हम ज़रूर ही ताक़तवर बन सकते हैं। अुस हालतमें हिन्दुस्तानको किसी हथियारकी ज़रूरत नहीं रह जायगी। लेकिन अिसके बरखिलाफ़, अगर हम आपसमें मुहब्बतसे न रहे, तो हिन्दुस्तानमें जितने भी सवाल पैदा होंगे, अुन्हें हल करनेके लिअे मार-काटसे काम लेना होगा। अिसका मतलब यही होगा कि यहाँ किसी तीसरी ताक़तका राज क़ायम रहेगा।

प्रेमकी शक्ति

अिसलिअे हथियारकी ताक़त पर मुझे ज़रा भी विश्वास नहीं। हथियार ख़ुद कमज़ोर होता है। अुसके पास अपनी कोअी ताक़त नहीं। जब हम अपनी ताक़त अुसे देते हैं, तो अुसे ताक़त मिलती है। तो फिर अपनी ताक़त, अपना बल, अुस हथियारको देनेके बदले हम अपने आपको ही क्यों न दें? अिसीलिअे गांधीजीने हमारे सामने यह आत्मशक्ति यानी रूहानी ताक़त रक्खी है। और अुसे कसौटी पर चढ़ानेके लिअे वे आज नोआखाली पहुँच गये हैं।

लोग मुझसे पूछते हैं कि आजकलकी दुनियामें अहिंसा कैसे काम करेगी? आजकलके वैज्ञानिक हथियारों या शस्त्रोंके सामने अहिंसाकी ताक़त कितनी? लेकिन अहिंसा अेक निराली ही ताक़त है। अेटम बमके सामने छोटी-मोटी तोपें और बन्दूकें बेकार हो जायँगी। लेकिन अहिंसाकी — प्रेमकी — शक्ति कभी बेकार हो ही नहीं सकती। चुनाँचे सारी दुनियामें कितने ही हथियार क्यों न तैयार हो जायँ, तो भी अगर हिन्दुस्तान प्रेमकी ताक़तसे अेक बना रहेगा, तो वे सब मिलकर भी हिन्दुस्तानका कोअी नुक़सान नहीं कर सकेंगे।

थोड़ी कोशिश

लोग कहते हैं, हिन्दुस्तानमें हिन्दू और मुसलमान, हरिजन और सवर्ण वग़ैराके जो भेद हैं, अंग्रेज़ अुनसे बेजा फ़ायदा अुठाते हैं। लेकिन मैं कहता हूँ, हम अुन्हें अैसा बेजा फ़ायदा अुठाने ही क्यों दें? हम ये भेद मिटा क्यों न डालें? हरिजनों और सवर्णोंके आपसी भेदभाव मिटानेके लिअे सन् १९३२में गांधीजीने अुपवास किया था। अिस बातको आज चौदह साल हो गये। अिस दरमियान छुआछूत कुछ कम चाहे हुअी हो, मगर वह पूरी तरह मिटी नहीं है। आज भी मुझ-जैसोंको यहाँ आकर अुसके बारेमें तक़रीर करनी पड़ती है। मुझे अैसा लगता है कि अिस वक़्त लोगोंके दिल तैयार हो चुके हैं। आज हालत यह है कि थोड़ीसी कोशिश की जाय, तो छुआछूत मिट सकती है।

क्रान्तिकी घड़ी

आम लोगोंमें हमेशा ही अेक तरहकी जड़ता रहती है। शास्त्रमें अिसे 'अिनर्शिया' कहा गया है। समाजकी थिरताके लिअे 'अिनर्शिया' थोड़ा फ़ायदेमन्द भी है। अिनर्शियाका मतलब है, जैसी हालत पहले थी वैसी ही बनी रहे। मशीन अेक बार बन्द हुअी कि हुअी। चलती रही, तो चलती ही रही। अिसलिअे आमलोगोंको ख़ुद कुछ सूझता नहीं। लेकिन जब नेता या अगुआ कोअी चीज़ चला देते हैं, तो लोग भी हलचल करने लगते हैं। अेक गाँवके मन्दिर सबके लिअे खुल गये, क्योंकि अुस गाँवके बड़े-बूढ़े अिसके लिअे राज़ी थे। पासके गाँवके नहीं खुले, क्योंकि वहाँके बड़े लोग तैयार न थे। लेकिन अिससे हमारा काम नहीं हो सकता। मैंने सुना है कि मद्रास और अुड़ीसामें हरिजनोंके लिअे कुछ मन्दिर खोले जा रहे हैं। महाराष्ट्रमें भी कहीं-कहीं खुल रहे हैं। लेकिन अिस वक़्त सभी मन्दिर खुल जाने चाहियें। मैं आज हिसाबी ढंगसे काम करनेको तैयार नहीं। यह क्रान्तिकी घड़ी है। क्रान्ति धीमे-धीमे नहीं होती। हरिजनोंके लिअे सभी मन्दिर, सभी होटल और आम अिस्तेमालकी सभी जगहें खुल जानी चाहियें।

भविष्यवाणी

मैं यह भविष्यवाणी करता हूँ कि जिस दिन हिन्दुस्तानसे छुआछूत दूर होगी, अुस दिन हिन्दू-मुस्लिम झगड़े अपने-आप मिट जायँगे। अितिहासके जाननेवाले अिसे समझ सकते हैं। अभी अुस दिन कर्नाटकके अेक भाअी कहते थे कि हमारे सूबेमें लिंगायतों और ब्राह्मणोंका झगड़ा ख़ूब चलता है। महाराष्ट्रमें ब्राह्मणों और अब्राह्मणोंका झगड़ा है। लेकिन जिस दिन छुआछूत मिटेगी, अुस दिनसे सब सवाल अपने-आप हल हो जायँगे। जो लोग सबसे ज़्यादा दुःखी हैं, दबे हुअे हैं, अुन्हें अूपर अुठानेसे दूसरे सब भेद आसानीसे मिट जायँगे। अुसके लिअे अलगसे कोशिश करनेकी ज़रूरत नहीं रहेगी।

सेवकका धर्म

होटलवाले कहते हैं — "हम हरिजनोंको अन्दर कैसे आने दें?" मैं कहता हूँ — "अरे भाअी, तुम तो सेवक हो न? सेवकका धर्म क्या? क्या डॉक्टर अस्पतालमें आनेवाले आदमीसे अुसकी जात पूछते हैं? आये हुअे बीमारोंकी सेवा ही अुनका धर्म है। अिसी तरह भूखोंको खाना खिलाना होटलवालोंका धर्म है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाना खिलानेमें लोक-सेवा है । अपनी मेहनतके पैसे लेनेसे यह सेवा नष्ट नहीं होती । अिसमें जात पूछनेका सवाल ही पैदा न होना चाहिये । फिर, फ़र्ज कीजिये कि आपने किसीसे जात पूछी और अुसने महार होते हुअे भी अपनेको मराठा बतलाया, तो आप कैसे जानेंगे ? अिसलिअे मेरे ख़यालमें जात पूछना अेक वाहियात बात है । सच्चा धार्मिक मनुष्य तो भूखेको बड़ी ममतासे खाना खिलायेगा । वह अुसकी जात नहीं पूछेगा । दयालु या रहमदिल लोगोंका यह तरीक़ा है कि वे दुःखी-दर्दीका दुःख मिटानेके सिवा और कुछ नहीं देखते । हमारी यह पुरानी परम्परा है ।"

यह कैसा अिन्साफ़ ?

जो बात होटलोंके लिअे है, वही मन्दिरोंके लिअे भी । वैसे अीश्वर सभी जगह है । लेकिन मनुष्य अपनी भावनाके कारण अीश्वरके दर्शनोंके लिअे मन्दिरमें जाता है । पुजारियोंको यह महसूस करना चाहिये कि "जब अेक आदमी देवके दर्शनोंको आया है, तो देव और भक्तकी मुलाक़ात करा देना ही हमारा काम है ।" मन्दिरमें पापी भी आयें और अपने पापोंके लिअे क्षमा माँगें । भक्त आयें और भक्तिपूर्वक प्रणाम करें । मुझे क्या हक़ है कि मैं कहूँ — "फलाँ न आये ?" हरिजन पंढरपुर जाता है, मगर अुसे पाण्डुरंगके दर्शन तक नहीं हो पाते । वह मन्दिरका कलश देखकर लौट जाता है और मांस खाना छोड़ देता है । मैंने अैसे कअी हरिजन देखे हैं । लेकिन वे मन्दिरोंमें नहीं जा सकते । जिसके बरखिलाफ़ दूसरी जातवाले, जो शायद मांस भी खाते होंगे, मन्दिरोंमें जा सकते हैं । यह कैसा अिन्साफ़ है ?

अेक ही कसौटी

ये सारी बातें विवेककी कमीके कारण होती हैं । मैं तो साफ़-साफ़ कहता हूँ कि आज जितने धर्म, जितनी संस्कृतियाँ और जितने पन्थ हैं, अुन सबकी परीक्षा समत्वकी अेक ही कसौटी पर होनेवाली है । जो ख़याल समत्वकी नज़रसे नाक़ाफ़ी होगा, वह टिक नहीं पायेगा । अलग-अलग युगों या ज़मानोंमें अलग-अलग गुणोंकी हुकूमत चलती है । दुनियामें 'समत्व' ही राजा है । अिसलिअे धर्मके नाम पर भेदभाव रखनेकी बात आज दुनियाको ज़रा भी बरदाश्त न होगी । बहुतसे हिन्दू-सभाअी मुझसे मिलने आते हैं और कहते हैं कि कांग्रेस हिन्दुओंकी हिफ़ाज़त नहीं कर सकती । मैं पूछता हूँ—"तो, आप क्यों नहीं करते ? मुसलमानोंकी नफ़रत पर अपनी अिमारत खड़ी करनेके बजाय आप हिन्दू समाजको लगे भेदभावके घुनको मिटानेमें अपनी ताक़त क्यों नहीं लगाते ?" अब तो तमाम हिन्दुस्तानमें भेद नामकी कोअी चीज़ रहनी ही न चाहिये ।

हमारा वैभव

लेकिन जब मैं भेद मिटानेकी बात कहता हूँ, तब मैं यह नहीं कहता कि आप अपनी ख़ासियतें मिटा दें । जिस तरह 'सा-रे-ग-म'के अलग-अलग सुरोंसे सुन्दर संगीत निकलता है, अुसी तरह हमारे देशकी अनगिनत ख़ासियतोंसे अेक सुन्दर संगीत निकलना चाहिये । हिन्दुस्तानमें कअी धर्म, कअी जातें, कअी ज़बानें और कअी फ़िरके मौजूद हैं । लोग पूछते हैं — "यह क्या गोरख-धन्धा है ?" मैं कहता हूँ — "यह गोरख-धन्धा नहीं, यह तो बरगदका पेड़ है ।" रवीन्द्रनाथने तो अिसे 'मानव-महासागर'की अुपमा दी है । जिस तरह महासागरमें बेशुमार लहरें अुछलती रहती हैं, अुसी तरह यहाँ कअी मानव-समाजोंकी हलचल होती रहती है । यह हमारा वैभव है । अगर भगवान मुझे हाथ, पैर, कान, नाक, आँख वग़ैरा अलग-अलग अंग न देकर सिर्फ़ अेक मांसपिण्ड देता, तो मेरी क्या गत हुअी होती ? और अगर मेरे भिन्न मुख़्तलिफ़ अंगोंमें झगड़ा शुरू हो जाय, तो मेरा क्या हाल हो ?

हिन्दुस्तानमें कअी भेद हैं, क्योंकि हिन्दुस्तान बहुत पुराना मुल्क है । अुसके सामने आजके बहुतसे पच्छाँही मुल्क निरे बच्चे हैं । हिन्दुस्तानमें हूण आये, शक आये, यहूदी आये, मुसलमान, अीसाअी वग़ैरा सभी आये । अब तो चीनी भी आये हैं । यह अेक बड़ा म्यूज़ियम है । यहाँ तरह-तरहके शास्त्रों, विद्याओं, भाषाओं और कलाओंका विकास हुआ है । अिसीलिअे मैं कहता हूँ कि यह अेक बड़ा वैभवशाली देश है । लेकिन दिलमें प्रेम पैदा होना चाहिये । तभी शक्ति पैदा होगी ।

दिल अेक बनने चाहियें

यह शक्ति मुझे शक्तिदेवीकी याद दिलाती है । शक्तिदेवीके कअी भुजायें होती हैं । लेकिन दिल अेक ही होता है । विराट् पुरुषके हज़ार हाथ माने गये हैं, मगर दिल तो अेक ही माना गया है । अिसी तरह हम सबके दिल अेक बनने चाहियें । अगर अैसा हो, तो स्वराज्य हमारे हाथमें ही है । नहीं तो समझिये कि वह हाथसे गया ही ।*

वर्धा, ४-१२-'४६ विनोबा
(मराठीसे)

दीन और अीमान

नोआखालीमें अेक भाअीको यह कहते सुना कि "जहाँ दीन नहीं, वहाँ अीमान नहीं ।" अुनके कहनेका मतलब यह था कि जिस आदमीको अपने दीन यानी धर्मकी परवाह नहीं, अुस आदमीमें अीमान यानी सच्ची नीयत या भलाअी कहाँसे हो ? अिसलिअे हरअेक आदमीके धर्मकी हिफ़ाज़त की जानी चाहिये । दीन या धर्म ही सदाचार या अिख़लाक़की सच्ची पूँजी है । सदाचार धर्मकी मददसे ही टिक सकता है । जिस अिनसानने अपना दीन-धर्म छोड़ दिया है, अुस पर कोअी विश्वास नहीं रखा जा सकता ।

अुन भाअीकी बात सच थी । धर्मनिष्ठामें सभी अच्छे कामों और अच्छी श्रद्धाओंका समावेश होता है । लेकिन धर्मान्ध लोग आज धर्मका जो मतलब करते हैं, अुसको ख़यालमें रखकर यह कहना पड़ता है कि अूपरकी कहावतके सच होने पर भी आज हमें कहना चाहिये कि जहाँ "**अीमान** नहीं; वहाँ **दीन** ही नहीं ।" धर्मके अन्धे अभिमान, धर्मकी तरफ़दारी और धर्मकी हिमायतकी तहमें अक्सर सच्ची धार्मिकता नहीं होती । यही वजह है कि आज अिनसानको चाहनेवाले साधु और फ़क़ीर अब यह कहने लगे हैं कि "हे प्रभो, धर्मके अिस शिकंजेसे धार्मिकताको बचाओ !" आज-कलके अेक संन्यासीकी कही अेक बात अिस वक़्त मुझे याद आती है — 'मॉरेलिटी अिज़ दि गेट टु स्पिरिच्युअेलिटी' — सदाचारके दरवाज़ेसे ही नन्दनवनमें — बहिश्तके चमनमें घुसा जा सकता है । क्या अीसाअियोंमें और क्या हिन्दुओंमें, क्या मुसलमानोंमें और क्या यहूदियोंमें, सभी लोगोंमें धर्मके नाम पर ही अिनसानोंने अैसे-अैसे ज़ुल्म ढाये हैं, जो सोचे नहीं जा सकते । अिसलिअे किसीकी धार्मिकताका विचार करनेसे पहले यह देखना चाहिये कि अुसमें अीमानदारी कितनी है, भलाअी कितनी है, अिनसानी मुहब्बत कितनी है ? धार्मिकताकी अुम्मीद वहीं रक्खी जा सकती है, जहाँ ख़ानदानियत या कुलीनता है । नीति व सदाचारकी बुनियाद पर जो बहुत अूँची अिमारत खड़ी की जाती है, अुसीको हम धर्मके नामसे पहचान सकते हैं । जहाँ फ़रेब, बदमाशी, ज़ुल्म, लूट-पाट और अिनसे भी ज़्यादा बुरा बरताव है, यानी जहाँ बुनियाद ही सड़ी हुअी है, वहाँ अुस पर रची गअी अिमारतकी क़ीमत क्या ? धर्मका प्रचार करनेवाले भले यह कहते रहें कि जहाँ दीन नहीं वहाँ अीमान नहीं । अिसका विरोध करनेकी कोअी ज़रूरत नहीं, लेकिन हमें तो अिसी बातका प्रचार करना चाहिये कि जहाँ **अीमान** नहीं, वहाँ **दीनके** लिअे खड़े रहनेको भी जगह नहीं ।

वर्धा, ७-१२-'४६
(गुजरातीसे) का० का०

* हरिजनोंके होटलोंमें जानेके सवाल पर दिया गया भाषण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेसके ठहराव

[पिछली २३ और २४ नवम्बरको मेरठमें हुअे अपने ५४वें सालाना जलसेमें अिण्डियन नेशनल कांग्रेसने जो ठहराव पास किये थे, अुनमेंसे ४ ठहराव नीचे दिये जाते हैं — **सम्पादक**]

(१)

गुज़रे ज़मानेपर अेक नज़र

लड़ाअी, अुथल-पुथल और खौफ़से भरे हुअे अिन ६॥ बरसोंके बाद मिलनेवाली यह कांग्रेस हिन्दुस्तानकी आज़ादीके लिअे अपना जीवन अर्पण करनेवाले और हिन्दुस्तानके लाखों-करोड़ोंको ग़ुलामीकी जंजीरोंसे मुक्त करने और मुल्ककी आज़ादीकी लड़ाअीमें बड़ी-बड़ी क़ुरबानियाँ करनेवाले लोगोंको अपनी सम्मान भरी अंजलि देती है।

अिन बरसोंमें विश्व-युद्ध (दुनियाकी लड़ाअी) प्रचण्ड वेगसे चलता रहा, और हिन्दुस्तानमें साम्राज्यवादी विदेशी हुकूमतने अपनी हथियारोंकी ताक़तसे हिन्दुस्तानियोंकी आज़ादीकी स्पिरिटको और आज़ादी पानेकी अुनकी जबरदस्त खाहिशको कुचलनेकी भरसक कोशिश की। हिन्दुस्तानके लोगोंने विदेशी हुकूमतके अिस बेरहम और बर्बर आक्रमणका बहादुरीके साथ मुक़ाबला किया। भयंकर मुसीबतों और यातनाओंको सहकर भी वे आज़ादीके अपने निश्चय पर डटे रहे। पुरानी और सड़ी-भूसी सियासी और राजकाजी प्रणालीकी नालायक़ी और पूरी नाकामीकी वजहसे मुल्कको भयंकर अकालका सामना करना पड़ा, जिसमें लाखों लोग भूखसे तड़प-तड़पकर मर गये।

विश्व-युद्ध ख़त्म हो चुका, फिर भी दुनियामें शान्ति क़ायम नहीं हुअी। आज भी चारों ओर अशान्ति ही अशान्ति दिखाअी दे रही है। अपनी सारी भयंकरता और तबाही की खौफ़नाक ताक़तके साथ अेटम बम लड़ाअीके हथियारकी शकलमें हमारे सामने आया। अुसने आजकी दुनियाके सियासी, माली और आध्यात्मिक या रूहानी ढाँचेके आत्म-नाशी और अनैतिक, खुद बरबाद होनेवाले और ग़ैर-अिख़लाकी तत्त्वोंके लिअे ख़तरा पैदा कर दिया है। अगर आजकी सभ्यता या तहज़ीब अपनी साम्राज्यवादी और दुनियाबी चीज़ोंको पानेकी जहनियतोंको नहीं छोड़ेगी और आज़ाद क़ौमोंके शान्तिपूर्ण सहयोग और अिनसानकी शानको क़ायम रखनेवाली बुनियाद पर खड़ी नहीं होगी, तो मुमकिन है कि वह खुद अपनेको बरबाद कर ले।

दूसरे मुल्कोंकी तरह हिन्दुस्तानमें भी पुरानी दुनियासे नअी दुनियाकी ओर बढ़नेवाले ज़मानेने नअी दुनियाके सामने अपना दिवालियापन ज़ाहिर कर दिया है। यह नअी दुनिया, जिसकी तरफ़ लाखों-करोड़ों आदमी आशाभरी निगाहसे देखते हैं और जिसके बनानेमें वे ख़ुद हाथ बँटा रहे हैं, ख़तरोंसे भरी हुअी है। और, प्रतिगामी या तरक़्क़ीमें रुकावट डालनेवाली ताक़तें हर जगह शान्ति और आज़ादीके नये निज़ामके रास्तेमें रोड़े अटकानेकी कोशिश कर रही हैं। कांग्रेसने हमेशा आज़ाद मुल्कोंके पूरे-पूरे सहयोगकी और राष्ट्रों व ज़ातोंके बीचकी विषमताको मिटानेकी हिमायत की है। पहलेकी तरह आज भी हिन्दुस्तान ग़ुलाम मुल्कोंकी आज़ादीके सवालका केन्द्र बना हुआ है। हिन्दुस्तानकी मुकम्मिल आज़ादी पर ही अेशिया, अफ्रीका और दूसरे मुल्कोंके बेशुमार लोगोंकी आज़ादी मुनहसिर है। जब तक हिन्दुस्तानकी आज़ादीका सवाल हल नहीं होता, तब तक दुनियामें शान्ति और तरक़्क़ी नहीं हो सकती। अिसलिअे यह कांग्रेस हिन्दुस्तानकी मुकम्मिल आज़ादीकी लड़ाअीको जारी रखनेके अपने पक्के अिरादेको दुहराती है। जब तक हिन्दुस्तान आज़ाद होकर हर जगह शान्ति, आज़ादी और तरक़्क़ी क़ायम करनेकी कोशिशमें बराबरीके नाते दूसरे मुल्कोंका साथ नहीं देने लगता, तब तक कांग्रेसकी यह लड़ाअी जारी ही रहेगी। जिसका अतीत (माज़ी) अितना शानदार था और जिसकी मौजूदा हैसियत और ताक़त अितनी बढ़ी-चढ़ी है, वह हिन्दुस्तान दुनियाके मुल्कोंमें दूसरा दरजा मंज़ूर नहीं कर सकता।

६० सालसे ज़्यादा अरसा हुआ, यह नेशनल कांग्रेस हिन्दुस्तानके लोगोंको अिस मक़सदकी तरफ़ बढ़ाती रही है। अुसने लड़ाअी और तामीरी कामोंके ज़रिये हिन्दुस्तानियोंको ताक़तवर बनाया है। कांग्रेस अूँचे आदर्शोंकी बुनियाद पर खड़ी है और अुसने मुल्कके सामने व्यक्तिगत और सियासी जिन्दगीके नैतिक या अिख़लाकी दरजे रखनेकी कोशिश की है। अुसका यह पक्का विश्वास है कि अूँचे आदर्शों या मक़सदोंको अपने सामने रख कर और बड़े मुल्कको शोभा देनेवाले तरीक़ोंको अपना कर ही कोअी राष्ट्र बड़ी कामयाबियाँ हासिल कर सकता है। आज भी जब मुल्कके लोग आपस में बेरहमी और दर्दनाक ढंग से लड़ रहे हैं और लोगों पर अिन आदर्शोंका असर कम होता जा रहा है, यह कांग्रेस हिन्दुस्तानके अुजले भविष्य में और हिन्दुस्तानियोंको प्रभावित करनेवाले अिन आदर्शोंमें अपने विश्वासको दुहराती है। अिस वक़्त अगर हमने किसी तरहकी कमज़ोरी दिखाअी, अपनी मौजूदा स्थिति से सन्तोष कर लिया, या आज़ादीके सीधे रास्तेसे हम भटक गये, तो जिस आज़ादीके लिअे हिन्दुस्तानियोंने अितना संघर्ष किया और जो क़रीब-क़रीब अुनके हाथ में आ गअी है, वह आज़ादी ख़तरे में पड़ सकती है।

अिसलिअे कांग्रेस लोगोंसे यह अपील करती है कि वे आपसकी अिस बरबाद करनेवाली लड़ाअी को बन्द कर दें और आजसे पहले जिस तरह वे मिलजुलकर हिन्दुस्तानकी आज़ादीके लिअे लड़े हैं, अुसी तरह आज भी भीतरी और बाहरी ख़तरोंका सामना करनेके लिअे मिलकर अेक हो जायँ। आज़ादीकी लड़ाअी अभी ख़त्म नहीं हुअी है, और मुमकिन है कि अुसके लिअे हमें और भी बहुतसी क़ुरबानियाँ करनी पड़ें।

(२)

दक्खिनी अफ्रीका

दक्खिनी अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंको अलग बस्तियोंमें बसानेकी गोरोंकी नीतिका विरोध करनेवाले वहांके हिन्दुस्तानियोंको मुबारकबाद देनेके लिअे कांग्रेसकी महासमितिने ६ जुलाअी, १९४६ को जो ठहराव पास किया था, अुसे यह कांग्रेस मंज़ूर करती है। और संयुक्त राष्ट्रोंकी जनरल अेसेम्बलीमें दुनियाके सारे मुल्कोंके नुमाअिन्दों के सामने दक्खिनी अफ्रीकाकी सरकारके ओछे जातिवादका भण्डा फोड़नेवाले हिन्दुस्तानी नुमाअिन्दोंके अुम्दा कामपर संतोष ज़ाहिर करती है। अिस सिलसिलेमें यह कांग्रेस फील्ड मार्शल स्मट्सकी अुस रायका घोर विरोध करती है, जिसमें अुन्होंने हिन्दुस्तानियों पर अुसी जातिवादका अिलज़ाम लगाया है, जिसे अफ्रीकाकी सरकारने अितनी बेशरमीसे पकड़ रक्खा है। हिन्दुस्तानी जनता और अुसके सारे नेता बड़े अुत्साहके साथ अिस बातकी कोशिशमें लगे हैं कि अिस विशाल और नामवर मुल्कके तमाम शहरियोंको जिन्दगीके सियासी, समाजी और आर्थिक या अिक़्तिसादी क्षेत्रोंमें पूरी-पूरी समानता हासिल हो। अिस मुल्क के सारे क़ानून हर तरह के भेद-भावका विरोध करते हैं। अिसके बरखिलाफ़, दक्खिनी अफ्रीकाकी सरकार और अुस मुल्कके मुट्ठीभर गोरे आज अपने यहां अुग्र जातिवाद और भेदभावकी नीति बरत रहे हैं और दुनियाकी शांति और तहज़ीबके लिये खतरा साबित हो रहे हैं।

(३)

पूरबी अफ्रीका

पूरबी अफ्रीकाके बारेमें कांग्रेसकी वर्किंग कमेटीने ६ अगस्त, १९४६को जो ठहराव पास किया था, अुसको यह कांग्रेस मंज़ूर करती है। अुस मुल्कमें लड़ाअीके ज़मानेमें लगाअी हुअी पाबन्दियोंको क़ायमी बनाकर हमेशाके लिअे अुन्हें हिन्दी-विरोधी क़ानूनकी शकल देनेकी जो कोशिशें चल रही हैं, अुनसे कांग्रेसको बड़ी चिन्ता हुअी है। हिन्दुस्तानियोंकी तरक्क़ीके पक्के दुश्मनोंने भी जिन बातोंको मंज़ूर किया है, अुनके रेकार्डोंसे यह साबित होता है कि पूरबी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीकामें किसी युरोपियनके क़दम रखनेके पहले ही हिन्दुस्तानी वहाँ जा बसे थे। वे रेकार्ड पूरबी अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंके अिस दावेकी पूरी ताअीद करते हैं कि वहाँके अूँचे भागोंको सिर्फ़ गोरोंके लिअे बचा रखनेवाले और हिन्दुस्तानियों पर कअी तरहकी पाबन्दियाँ लगानेवाले क़ानून अिन्साफ़के बिलकुल खिलाफ़ और ग़ैर मुनासिब हैं।

(४)

फ़िरक़ेवाराना झगड़े

कलकत्ता, पूरबी बंगाल, बिहार और मेरठ जिलेके कुछ हिस्सोंमें जो दर्दनाक वारदातें हुअी हैं, अुनसे कांग्रेसको अफ़सोस, दुःख और चिन्ता हुअी है। वहाँ मर्द, औरतों और बच्चों पर जो हैवानियत भरे .ज़ुल्म ढाये गये हैं, अुनसे हर शरीफ़ आदमी शरम और बेअिज़्ज़तीसे भर जाता है। फ़िरक़ेवाराना झगड़ोंका यह नया रूप पहलेके सारे दंगोंसे बिलकुल अलग है। अिनमें बड़ी तादादमें लोगोंको बेरहमीसे क़त्ल किया गया, तलवारकी धमकीसे बहुतसे लोगोंका ज़बरन् दीन-धरम बदला गया, औरतोंको भगाया गया और अुनकी बेअिज़्ज़ती की गअी, और ज़बरदस्ती मुसलमानोंके साथ अुनकी शादियाँ की गअीं। अूपरसे चाहे ये गुनाह सियासी मक़सदको हासिल करनेके लिअे ही किये जाते हों, लेकिन दर असल वे सलामतीकी सारी भावनाको खत्म कर देते हैं और हिन्दुस्तानकी शान्ति, अमन और तरक़्क़ीके लिअे अशुभ हैं।

मुल्कमें बड़े पैमाने पर फैली हुअी अिस हैवानियतकी सारी ज़िम्मेदारी सियासी मक़सदोंके लिअे किये जानेवाले हिंसा और नफ़रतके प्रचार पर और धर्मको नीचे गिराकर सियासी मक़सदके लिअे किये जानेवाले अुसके ग़ैरवाजिब अिस्तेमाल पर है। अिस हैवानियतकी ज़िम्मेदारी अुन लोगों पर भी है जो खास ज़िम्मेदारियोंको रखनेका दावा करते हैं, और जो चेतावनी देनेपर भी अपनी ज़िम्मेदारीको निभानेमें असफल रहे। नतीजा यह हुआ कि ज़्यादतियाँ बरदाश्तके बाहर हो गअीं।

कांग्रेस मुल्कको हिंसा और नफ़रतके सारे प्रचारसे सावधान कर देना चाहती है। अिन तरीक़ोंसे हिन्दुस्तानकी मुख़्तलिफ़ जातोंके आपसी भेद कभी मिट नहीं सकते। वे सिर्फ़ शान्तिपूर्ण तरीक़ोंसे ही दूर किये जा सकते हैं। कांग्रेसने हिन्दुस्तानके फ़िरक़ेवाराना सवालको शान्ति और अिन्साफ़से हल करनेकी कअी बार कोशिशें कीं लेकिन मुस्लिम लीगने हरबार अुसकी कोशिशों पर पानी फेर दिया। हिंसाकी सिफ़ारिश और अुसके अिस्तेमालसे सारे देशके हितके साथ फ़िरक़ोंके हितोंको भी बहुत नुक़सान पहुँचेगा। काँग्रेस सारी जातोंको अिस बातकी भी चेतावनी देती है कि वे कभी हिंसाका बदला न लें। अगर हम बदले के कुचक्रमें फँसे रहे, तो हम मुल्कके बाहरी और भीतरी दुश्मनोंके हाथके खिलौने बने रहेंगे।

आजका तुरत हल करने लायक़ सवाल तो मुल्कके लोगोंमें सलामतीकी भावना पैदा करने और अुजड़े और बरबाद घरों व गाँवोंको फिरसे बसानेका ही है। जिन औरतोंको भगाया गया है और जिनके साथ ज़बरदस्ती शादियाँ की गअी हैं, अुन्हें अुनके घरोंको लौटा देना चाहिये। बड़ी तादादमें जबरन् किये गये धर्म-परिवर्तनकी न तो कोअी क़ीमत है और न क़ानूनी अहमियत। जो लोग धर्म-परिवर्तनके शिकार हुअे हैं, अुन्हें घर वापस जानेका और अपनी पसन्दकी ज़िन्दगी बितानेका हर मौक़ा दिया जाना चाहिये।

कांग्रेस अपने अिस विश्वासको फिर ज़ाहिर करती है कि मुल्कके फ़िरक़ेवाराना सवालको हल करनेका सिर्फ़ अेक ही रास्ता है, और वह है विदेशी हुकूमतसे पूरा छुटकारा पाना। वह जनतासे अपील करती है कि हमारी आज़ादीकी कूचके आखिरी मंज़िल पर कोअी फिरके-परस्तीका शिकार बनकर राष्ट्रकी लड़ाअीको ग़लत दिशामें न ले जाय।

(अंग्रेज़ीसे)

गुजरात हिन्दुस्तानी प्रचार-समितिका प्रस्ताव

राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानीकी तालीमके हक़में सरकारने सन् १९३९से जो नीति अख़्तियार की है, अुस पर अिस समितिने पूरा विचार किया है। और अिस समितिकी कुछ ज़िला समितियोंने अिसके बाबत जो ख़याल ज़ाहिर किये हैं, और अुनको सरकारके सामने भी रखा है, अुन पर भी ग़ौर किया है। सन् १९३९से आज तकके अिन ७ वर्षोंमें देशने राष्ट्रभाषा-प्रचारके अपने महान् तामीरी काममें जो प्रगति की है और अुसको स्पष्ट बनाया है, अुसका भी अिस समितिने नोट लिया है।

बंबअी-सरकारने सन् १९३९में जबसे हिन्दुस्तानीकी तालीम देना शुरू किया, तबसे अितना तो अुसने साफ़ साफ़ दिखला दिया है कि, "हिन्दुस्तानी, हिन्दी और अुर्दूसे जुदी अेक अलग ज़बान है।" और वह नागरी और अुर्दू दोनों लिपियोंमें लिखी जानेके कारण, "मदरसोंमें अुसे दोनों लिपियोंमें सिखानेका अिन्तज़ाम करना चाहिये।" यह नीति सच्ची है। राष्ट्रभाषाकी तरह देशमें अुसका प्रचार करने और अुसके बारेमें आम जनताका मत सुधारनेके लिये, देशके बड़े बड़े नेताओंने सन् १९४२के मअी महिनेमें वर्धामें अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सभा क़ायम की। अिस दिशामें किये गये कामोंमें अिसे अेक बड़ा और अहम काम कहा जा सकता है। अिस समितिके सामने यह हक़ीक़त भी मौजूद है।

अिन सारी बातोंको नज़रमें रख कर यह समिति बम्बअी सरकारसे सिफारिश करती है कि वह अपने द्वारा चलाअी हुअी हिन्दुस्तानीकी तालीमके बारेमें नीचे लिखी नीति अख़्तियार करे —

१. फिलहाल सरकारने सिर्फ़ माध्यमिक या दरम्यानी मदरसोंमें ही हिन्दुस्तानी की तालीम शुरू की है। अब वह प्राथमिक या अिब्तदाअी मदरसोंके पाँचवें, छठे और सातवें वर्षोंमें भी शुरू होनी चाहिये, और अुन वर्षोंके बाद आगे भी अुसे चालू रखना चाहिये; यानी (क) माध्यमिक मदरसोंमें मैट्रिक तक, (ख) लोकशालाओंके सभी वर्षोंमें और (ग) प्राथमिक व माध्यमिक मदरसोंके लिअे मास्टर तैयार करनेवाले ट्रेनिंग स्कूलोंमें हिन्दुस्तानीकी तालीमको जगह मिलनी चाहिये।

२. हिन्दुस्तानीकी लिपिके बारेमें आज सरकारी नीति यह है कि विद्यार्थी या अुनके माँ-बाप अपनी मरज़ीके मुताबिक़ नागरी या अुर्दूमेंसे चाहे जिस लिपिके ज़रिये तालीम हासिल करना पसन्द कर सकते हैं।

और दूसरा फेरफार यह किया गया है कि हिन्दी या अुर्दू मदरसोंको हिन्दुस्तानीकी तालीमसे छुट्टी दे दी गअी है।

यह समिति मानती है कि अिन दो बातोंसे सरकारकी हिन्दुस्तानी तालीमकी नीतिकी जड़में चोट पहुँचती है। हिन्दुस्तानी भाषा हिन्दी और अुर्दूसे अलग और स्वतंत्र है, और वह दोनों लिपियोंमें लिखी जाती है; यह मंजूर कर लेनेके बाद हिन्दी या अुर्दू जाननेवालेको अूपर लिखी हुअी छूट देनेमें नीतिदोष होता है और यही बात लिपिके बारेमें भी कही जा सकती है।

सरकारने अैसी नीति क्यों अख़्तियार की है, अिसकी गहराअीमें अुतरनेकी ज़रूरत नहीं। यह साफ़ दिखाअी पड़ता है कि आज लोगोंमें दो लिपियों व हिन्दुस्तानीकी दो साहित्यिक शैलियों या अदबी असालीबके बारेमें जो अेक क़िस्मका भेदभाव और विरोध फैला हुआ है, अुसका अिसमें असर है। जब तक दोनों लिपियोंमें लिखी और पढ़ी जानेवाली अैसी हिन्दुस्तानी ज़बानको जितना आसान होना चाहिये अुतनी आसान वह नहीं बनती, तब तक अिस पूरी राष्ट्रभाषाकी तालीमको सरकार अनिवार्य या लाज़िमी नहीं कर सकती, अिस बातको भी यह समिति समझती है। और अिस हालतमें हिन्दुस्तानी प्रचार सभा व अिस समिति जैसी लोकमतको सुधारनेवाली जनताकी जमातोंकी जवाबदारी बढ़ जाती है, अिसको भी यह समिति जानती है।

अिसलिअे अैसी हालतमें समिति दोनों लिपियोंकी जानकारीके साथ हिन्दुस्तानीकी पूरी तालीमको लाज़िमी कर देनेकी सिफारिश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारसे नहीं कर सकती; हालाँकि क़ुदरती तरीक़ेसे आख़िरमें होना अैसा ही चाहिये। सन् १९३९में बम्बअी सरकार ने भी अैसा ही अैलान किया था, यह समिति अुस पर अपनी रज़ामंदी ज़ाहिर करती हुअी, अुसका नोट लेती है।

मगर यह समिति मानती है कि सरकारको आज भी वही मक़सद नज़रमें रखकर हिन्दुस्तानीकी तालीम देनी चाहिये। और अिस ख़यालसे अुसका कहना है कि सरकार जिस तरीक़ेसे आज हिन्दुस्तानीकी तालीम देती है, अुसमें भारी नीतिदोष है, और अुसका दूर होना ज़रूरी है।

३. यह दोष दूर करनेके लिअे यह समिति सिफ़ारिश करती है कि अुर्दू या हिन्दी शैली जाननेवालेको हिन्दुस्तानी तालीमकी छूट देना अुचित नहीं। विद्यार्थियों या अुनके माँ-बापकी मरज़ी पर यह न छोड़ा जाय कि वे हिन्दी या अुर्दूमेंसे किसी भी अेक लिपिमें तालीम हासिल करें, बल्कि यह छोड़ा जाय कि या तो वे दोनों लिपियोंके ज़रिये हिन्दुस्तानी सीखें या सीखें ही नहीं।

परन्तु यह साफ़ साफ़ बतला दिया जाय कि जो कोअी हिन्दुस्तानी ज़बान सीखना चाहेगा, अुसे दोनों लिपियोंकी जानकारी हासिल करना और हिन्दी व अुर्दू दोनोंके मेलसे बनी सादी, आसान और दोनोंकी माताके समान हिन्दुस्तानी ज़बानको सीखना पड़ेगा; और यह नियम हिन्दी या अुर्दू मदरसों पर भी लागू होगा।

अिस तरह मरदसोंमें पूरी राष्ट्रभाषाकी तालीम देनेका अिन्तज़ाम करना सरकार अपना फ़र्ज़ समझेगी। अिसके लिअे ख़ास मदद वग़ैराका अिन्तज़ाम किया जाय और मदरसोंमें अिसे बढ़ावा दिया जाय। यह समिति मानती है कि अिस तरह काम करनेसे हिन्दुस्तानीके बारेमें जनताका मत सुधारनेका पूरा मौक़ा मिलेगा और शुरूमें चाहे जितनी नीति-घातक छूटछाट देनेकी ज़रूरत भी अपने-आप जाती रहेगी।

४. अिस नीतिका मतलब यह हुआ कि हिन्दुस्तानी शिक्षकमें दोनों लिपियोंके ज़रिये तालीम देनेकी क़ाबलियत होनी चाहिये। यह समिति अिस बात पर ख़ुशी ज़ाहिर करती है कि सरकारी नीति भी यही है। वह सरकारसे अर्ज़ करती है कि हिन्दुस्तानी शिक्षक और ज़्यादा तेज़ीसे तैयार किये जायँ। अिस मामलेमें अब नीचे दिये हुअे ढंग पर ज़्यादा सफ़ाअीसे काम करनेकी ज़रूरत है।

५. हिन्दुस्तानीके शिक्षक तैयार करनेके लिअे सरकार आज जो तरीक़ा काममें लाती है, अुसपर अिस समितिने विचार किया है। जो शख़्स अेक ख़ास दरजे तक हिन्दी या अुर्दू पढ़ा है, अुसे बाक़ीकी दूसरी लिपि सीखनी पड़ती है, और वह ज़बान पढ़ानेके लिअे कुछ लेसन तैयार करने पड़ते हैं। समिति मानती है कि सिर्फ़ अितना ही करना क़ाफ़ी नहीं है। अिसमें भी फेरफार होना चाहिये, और हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा व अिस समितिकी तरफ़से लिये जानेवाले अिम्तहानोंमें पास होनेवालोंको मान्यता देनी चाहिये। बीचमें हिन्दी या अुर्दूकी जानकारी या अुनके अिम्तहानोंको जो मान्यता दी गअी है, अुसकी अब ज़रूरत न रहनी चाहिये।

६. आज राष्ट्रभाषाकी जो कुछ तालीम रखी गअी है, वह लाज़िमी ढंग पर है। अिससे हटाकर अुसे वैकल्पिक (ऑप्शनल) ढंग पर चलाना ठीक है या नहीं, अैसा लगना मुमकिन है। अुसे वैकल्पिक बनानेसे यह डर पैदा हो सकता है कि आज जो थोड़ी बहुत हिन्दुस्तानीकी तालीम दी जाती है, कहीं वह भी बन्द न हो जाय! अूपर दी हुअी सिफ़ारिश करते वक़्त अिस समितिने अिस पहलू पर भी विचार किया है, और अुसे विश्वास है कि अगर सरकार अूपर कहे मुताबिक़ अपनी नीतिको स्पष्ट करके मज़बूतीसे अपना काम जारी रखेगी, तो अैसे किसी डरके लिअे कोअी जगह नहीं रह जायगी। यह समिति मानती है कि सरकार जैसी ज़बरदस्त सामाजिक जमात अगर कोअी काम मज़बूती, और स्पष्टतासे चलाती है, तो अुसकी नीतिका जनताके विचारों पर भी असर होता ही है और लोग धीरे धीरे अुसकी तरफ़ झुकते ही हैं। सरकारको अिस क़िस्मकी स्पष्टता करनेका रास्ता अख़्तियार करना चाहिये। अुसे अिस बातकी तैयारी और सावधानी रखनी चाहिये कि हिन्दुस्तानीसे ताल्लुक़ रखनेवाली अुसकी नीति पर अुसके मातहत सभी महकमोंमें पूरी तरह अमल किया जाय। अिस नीति पर चलनेके लिअे अगर ज़रूरी हो, तो अुसे अिस पद्धति पर अपने हिन्दुस्तानी तालीम बोर्डकी फिरसे स्थापना करनी चाहिये।

अिसके लिअे समिति नीचे लिखे कुछ सुझाव पेश करती है :—

(क) सरकारी नौकर अिस ज़बानको दोनों लिपियों के साथ सीख सकें अिसके लिअे अुन्हें बढ़ावा देना चाहिये; ताकि गुजरातमें चलनेवाली हिन्दुस्तानी परीक्षाअें देनेवाले नौकरोंकी क़दर हो और कोअी ख़ास अिम्तहान पास कर लेना अुनके लिअे ज़रूरी है अैसा नियम अुनके लिअे बन सके।

(ख) वर्नाक्युलर, फाअिनल, मॅट्रिक वग़ैरा जैसे अिम्तहानोंमें दोनों लिपियोंके साथ हिन्दुस्तानीका अेक वैकल्पिक या अिख़्तियारी विषय रखा जाय। जो कोअी अिसे लेकर पास हुआ हो, अुसे नौकरी वग़ैरामें तरजीह दी जाय।

(ग) लोकमत तैयार करनेवाली हिन्दुस्तानी प्रचार संस्थाओंको सरकार बढ़ावा और मदद दे, व यह तय कर ले कि अुसकी किसी भी तरहकी मान्यता अैसी संस्थाओं को ही मिलेगी, दूसरीको नहीं।

अिस समितिका ख़याल है कि अगर सरकार अिस तरह अपने अिसरार और मान्यताकी प्रतिष्ठा व पसंदगी स्पष्ट करेगी, तो अुसका लोकमत पर अच्छा ही असर पड़ेगा और अूपर जिस अिख़्तियारी या वैकल्पिक तरीक़ेकी सिफ़ारिश की गअी है वह मौज़ूँ ही ठहरेगा।

७. अिस समितिकी राय है कि अूपर लिखे मुताबिक़ काम करनेमें अंग्रेज़ी तालीमको दी गअी अहमियत, अेक बड़ी रुकावट है। हिन्दुस्तानका प्रगतिशील लोकमत आज यह मानने लगा है कि मदरसोंमें अंग्रेज़ी सीखनेकी शुरूआत बहुत जल्दी हो जाती है, जिससे सच्ची क़ौमी तालीम देनेके काममें रुकावट पैदा होती है। क़ौमी तालीममें पहले मादरी ज़बानकी और बादमें क़ौमी ज़बानकी जगह है। आज तो अंग्रेज़ी अिन दोनों को नुक़सान पहुँचाती है। अगर तालीमकी नये सिरेसे रचना करनी हो, तो अंग्रेज़ी को अुसकी हथियाअी हुअी जगह से हटाकर अुचित जगह पर रखना चाहिये। बल्कि, होना तो यह चाहिये कि, तालीम के जिन सात या आठ वर्षोंको सरकार सब जगह अनिवार्य या लाज़िमी बना देना चाहती है, अुसमें अंग्रेज़ीको जगह न दी जाय और यह नियम बना दिया जाय कि कोअी भी माध्यमिक या आगेकी तालीम अुसके बाद ही शुरू हो सकेगी। और तालीमके अिन सात बरसोंमें — पाँचवें वर्ष के बाद, अूपर बतलाअी हुअी नीतिके मुताबिक़, हिन्दुस्तानी की तालीम दाख़िल की जाय।

यह समिति जानती है कि अंग्रेज़ी तालीमका यह फेरफार अेक बड़ी क्रान्ति या अिन्क़िलाब है और अिसीलिये वह अिस काममें अिसरार और जल्दबाज़ी करना ज़रूरी समझती है।

आख़िरमें, गुजरात के बारेमें अेक ख़ास विचार करना है — वह यह है, कि अिस सूबे के मदरसोंमें नागरी या बालबोध लिपि तीसरे चौथे गुजराती दरजोंमें नियमित रूपसे सिखाअी जाती थी। जान पड़ता है कि अिसे आजकल बन्द कर दिया गया है। यह समिति अिसे सुधार नहीं, बल्कि कुधार समझती है और सरकार से सिफ़ारिश करती है कि वह पहलेकी तरह अिसे फिरसे शुरू करा दे। गुजराती और बालबोध लिपिमें बड़ी समानता है, अिस सांस्कृतिक ज़रूरतको समझकर खेल खेलमें बच्चोंको यह लिपि सिखाअी जाती थी। आज तो यह बिलकुल साफ़ नज़र आता है कि अिसे हटाना समझदारी का काम नहीं है।

अिस प्रस्तावको प्रकाशित करने और सरकार व अुसके हिन्दुस्तानी बोर्डको भेजनेके लिअे मंत्रीसे कह दिया गया है।

(गुजरातीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य कृपालानीका अुपसंहारका भाषण

अेकताकी अपील

मैंने आपसे पहले भी कहा था, और अब फिर कहता हूँ कि हम हिन्दू, मुसलमान, पारसी, अीसाअी या चाहे जिस किसी मज़हबके माननेवाले हों, लेकिन हम अिस मुल्कको छोड़ नहीं सकते। अैसा दूसरा कोअी मुल्क नहीं है, जो हमारा बन सके। हम सबको अिकट्ठे ही रहना है; अिसलिअे हमें अेकता और भाअीचारेसे रहना चाहिये। अगर हम अिस तरह नहीं रहते, तो कुदरत हमें अिसकी सज़ा देगी और कअी जबर्दस्त तक़लीफ़ें सहनेके बाद आखिरकार हमें अिस सचाअीके सामने झुकना पड़ेगा कि अीश्वरने जिनको अिकट्ठा किया है, अुन्हें अलग करनेकी ताक़त किसीमें नहीं है।

जो हिन्दू किसी मुसलमानको तक़लीफ़ देता है या अुसपर अत्याचार करता है, वह अपनी ज़ात और अपने मुल्कके साथ ग़ैर-अिन्साफ़ी करता है; और जो मुसलमान किसी हिन्दूको सताता है या अुसपर अत्याचार करता है, वह अपने मुल्ककी आज़ादीका खात्मा करनेके साथ ही अपने मज़हबको भी बरबाद करता है।

अेक ही रास्ता–अहिंसा

अपनी बात खत्म करनेसे पहले मैं अपने, नौजवान दोस्तोंसे दो शब्द कहना चाहूँगा। मैंने गांधीजीसे अहिंसाका सबक़ लिया है। आपको यह बतलाते हुअे मुझे ज़रा भी झिझक महसूस नहीं होती कि पहले मैं भी हिंसामें विश्वास करता था और सन् १९०६ और १९०७में मैं क्रान्तिकारियोंकी अेक टोलीमें शामिल था। अेक क्रान्तिकारीकी ज़िन्दगी बिताते हुअे भी, मैं मानता हूँ कि, मेरे दिलमें पूरी हिम्मत थी और मौक़ा पड़ने पर फाँसी पर चढ़नेमें मैं ज़रा भी नहीं झिझकता। लेकिन साथ ही मुझे कहना पड़ेगा कि गांधीजीसे अहिंसाकी दीक्षा लेनेके बाद मैंने जैसी निडरता, हिम्मत और ताक़त महसूस की वैसी मुझमें पहले कभी नहीं थी।

अगर अिस मुल्कको अूपर अुठना है, तो वह अहिंसासे ही अूपर अुठ सकेगा, दूसरे किसी तरीक़ेसे नहीं। हममें सियासी, माली और मज़हबी गिरोह अितने हैं कि अगर हम परदेशी दुश्मनके खिलाफ़ हिंसाका रास्ता अख़्तियार करेंगे, तो हम आपसमें भी अेक-दूसरेके खिलाफ़ अुनका अुपयोग किये बिना नहीं रहेंगे। जो लोग तलवारके ज़ोरसे जीतते हैं, अुनका नाश भी तलवारसे ही होता है।

दुनियाने अपने आपसी झगड़ोंमें आख़िर अणुबमका हथियार दाख़िल किया है। लेकिन, अगर दुनिया अभी तक किये गये अपने कामों पर ग़ौर नहीं करेगी, और अपना रास्ता नहीं बदलेगी, तो अणुबमसे भी ज़्यादा भयंकर आफ़त दुनियाके सिर पर अुतरे बिना नहीं रहेगी।

बेहतर तरीक़ा

मैं लोगोंको अिसलिये दोष नहीं देता कि वे हिंसाका रास्ता अख़्तियार करते हैं। अहिंसाका तरीक़ा नया है, लेकिन मैं अुसकी आपसे अिसलिये सिफ़ारिश करता हूँ कि मैंने दोनों तरीक़े आज़माकर देख लिये हैं, और मुझे अहिंसाका तरीक़ा बेहतर जान पड़ा है। अहिंसाकी जोत अब जल चुकी है, और आपकी अिच्छा हो या न हो, वही अब हमें रास्ता दिखलावेगी। अगर आप झूठ और सियासी दाँवपेचोंके ज़रिये अपने सवाल हल करना चाहते हैं, तो अिस तरह दुनियाका कोअी सवाल हल नहीं होगा। अेक वाक्यमें कहूँ तो समाजवाद और गांधीवादमें फ़र्क़ ही यह है कि गांधीजीके मुताबिक़ आपका मक़सद जितना अूँचा हो, अुतने ही पाक अुस तक पहुँचनेके आपके तरीक़े भी होने चाहिये। टेढ़े तरीक़ोंसे अूँचे मक़सद कभी पूरे नहीं होते।

थोड़ेमें पच्छिमके समाजवाद और अिस बूढ़े बनियेके पूरबके समाजवादमें यही फ़र्क़ है। दुनिया चाहे अिस सिद्धान्तको आज माने चाहे अेक सदी बाद, लेकिन जब तक वह अिसे स्वीकार नहीं करती, तब तक लड़ाअी, प्रजाओंके आपसी झगड़े और खून-खराबीसे वह बच नहीं सकेगी। लेकिन अितना याद रखिये, कि यह अेक सदी अिनसानके लिअे तरह-तरहकी तक़लीफ़ोंसे भरी हुअी होगी।

(अंग्रेज़ीसे)

अेक अफ़सोसनाक वाक़या

बड़ौदा रियासतमें कलोल नामका अेक क़स्बा है। वहाँके वखारिया हाअीस्कूलमें अंग्रेज़ीके छठे दरजेमें पढ़नेवाले सेजा नामके अेक हरिजन विद्यार्थीको आम पब्लिकके लिअे चलनेवाली मोटरबसके मुसाफ़िरोंके लिअे बनी अेक बेंच पर बैठनेके 'जुर्म'के लिअे पीटा गया था। अख़बारोंमें यह ख़बर पढ़नेके बाद अिसके बारेमें हाअीस्कूलकी मारफ़त पूछताछ करवाने पर हाअीस्कूलकी तरफ़से नीचे लिखा जवाब मिला है—

"... अिस स्कूलमें पूछताछ करने पर हमसे यह कहा गया कि जहाँ तक हम जानते हैं, हमारे स्कूलमें कभी किसी विद्यार्थीके साथ अैसा बरताव नहीं हुआ। आज आपका ख़त मिलनेके बाद अुस विद्यार्थीको बुलाकर पूछा तो अुसने मुझसे कहा कि यह सारी बात हुअी थी, लेकिन अब अुसमें कोअी दम नहीं, क्योंकि आपसमें समझौता हो गया है ...।"

विद्यार्थी लिखता है—

"... बात सच है। मैंने अिस मामलेको अदालतमें पेश किया था, मगर आस-पासकी हालतोंको ध्यानमें रखकर अिस मामलेमें समझौता कर लिया है।"

यह तो बेरहमीकी हद ही समझी जायगी कि मार खानेवाला विद्यार्थी "आसपासकी" हालतोंका ख़याल करके समझौता कर ले, और अिस घटनासे सम्बन्ध रखनेवालोंको अिससे सन्तोष हो जाय। अगर यह बात दूरके किसी गाँवमें हुअी होती, तो शायद ज़ाहिर भी न हो पाती। लेकिन अहमदाबाद शहरके बहुत नज़दीक और बड़ौदा रियासतके महालके ख़ास गाँवमें होने पर भी अिस पर किसीने अँगुली तक नहीं अुठाअी, यह सचमुच ही अेक अफ़सोसनाक बात है।

अिस मामलेमें क़ानूनी तौर पर समझौता चाहे हो गया हो, फिर भी अुम्मीद है कि कलोलके मुक़ामी कार्यकर्त्ता और रियासती प्रजामण्डल अिस बारेमें मुनासिब कार्रवाअी करेंगे, और देखेंगे कि हरिजनोंको फिर अैसी कोअी तकलीफ़ न हो। अफ़सोसके साथ लिखना पड़ता है कि कलोलसे आसपासकी जगहोंमें जानेवाली पब्लिक मोटर बसोंमें हरिजनोंको नहीं बैठाया जाता। यही चीज़ अिस घटनाकी जड़ है। अुम्मीद है कि बड़ौदा रियासत अिस मामलेमें मुनासिब कार्रवाअी करेगी।

साबरमती, ९-१२-'४६ — परीक्षितलाल मजमूदार

(गुजरातीसे)

विषय-सूची

		पृष्ठ
हिन्दुस्तानकी जीत	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४३३
ज़ात और मज़हबकी छाप	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४३३
अुरुळीकांचनकी रिपोर्ट	... कि० घ० मशरूवाला	४३४
तालीमका ज़रिया	...	४३५
वाल्मीकिकी विजय	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४३६
बन्दरोंकी हिंसा	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४३६
आचार्य कृपालानीका भाषण	...	४३७
आजकी दुनियामें समत्व ही राजा है	... विनोबा	४४३
कांग्रेसके ठहराव	...	४४५
गुजरात हिन्दुस्तानी-प्रचार-समितिका ठहराव	...	४४६
आचार्य कृपालानीका अुपसंहारका भाषण	...	४४८
अेक अफ़सोसनाक वाक़या	... परीक्षितलाल मजमूदार	४४८
टिप्पणियाँ—		
नक़ल करने लायक़	... न० प०	४३४
दीन और अीमान	... का० का०	४४४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दक्षिणी अफ्रीका क्या करेगा ?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग १०   सम्पादक – प्यारेलाल   अंक ४७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २९ दिसम्बर, १९४६

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६,
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

सरकारी हाकिमोंकी बेअदबी

अेक भाओी पूछते हैं—

" पुलिसके मानी क्या — सेवक या हाकिम ? प्रजाके साथ अुनका बरताव कैसा होना चाहिये ? क्या वे सादे भेसमें, बिना पट्टे या बिना बिल्लेके, शान्ति-दलके सेवकोंके काममें दस्तन्दाज़ी कर सकते हैं ? और, क्या वे लोगोंके साथ बेअदबी, डाँट-डपट और गाली-गलौज कर सकते हैं ? "

सेवक और हाकिम, ये दो शब्द कुछ हद तक भ्रम या मुग़ालता पैदा करनेवाले हैं। सवालका अेक पहलू देखा जाय तो राजा, वाअिसरॉय, गवर्नर और बड़े वज़ीरसे लेकर छोटे-से-छोटा सरकारी चौकीदार भी प्रजाका सेवक ही है। अुसके दूसरे पहलू पर विचार किया जाय, तो ये सब आम लोगों पर कम-ज़्यादा हुकूमत भी रखते हैं। हाकिमोंके हाथमें सत्ता या हुकूमत है, अिसीलिअे वे क़ानून-क़ायदे बना सकते हैं, छोटे-बड़े हुक्म जारी कर सकते हैं, जुर्माना कर सकते हैं, गिरफ़्तारी कर सकते हैं, फाँसी तककी सज़ा दे सकते हैं, और गोलियाँ भी चला सकते हैं। अिस तरह, प्रजाके सेवक होते हुअे भी वे सब सत्ताधारी या हुकूमतवाले भी हैं। अुनमेंसे कोअी अिस बातसे अिनकार नहीं करते कि वे प्रजाके सेवक हैं। अुलटे, अैसा कहनेमें वे फ़ख़्र महसूस करते हैं। अिसलिअे वे प्रजाके सेवक हैं या नहीं, यह सवाल अुठानेकी ज़रूरत ही नहीं रहती। सच्चा सवाल तो यह है कि हाकिम या सत्ताधारीके नाते अुनकी सीमा या हद कितनी है, और अगर वे अिस हदसे बाहर जायँ, तो क्या किया जाय ?

जहाँ तक मर्यादा या हदका सवाल है, नियमों या अुपनियमोंके ज़रिये हरअेक सरकारी सेवककी सत्ता या हुकूमतकी हद बाँध दी जाती है। अिस हदमें रहकर छोटे-से-छोटा सिपाही भी जो हुक्म देता है, ग़रीबसे लेकर राजा तक सब अुसे माननेके लिअे बँधे हुअे हैं। जो कोअी अुसके हुक्मको माननेसे अिनकार करता है, क़ायदेसे मिली हुअी हुकूमतका अिस्तेमाल करके, अुसे वह अपना हुक्म माननेके लिअे मजबूर कर सकता है। अगर हाकिमोंको दी गअी हुकूमत ज़रूरतसे ज़्यादा या ग़ैरवाजिब मालूम हो, तो लोगोंको अुसके ख़िलाफ़ आवाज़ अुठानी चाहिये, और प्रजाके नुमाअिन्दोंको अुसमें फेरफार करनेके लिअे सरकार पर दबाव डालना चाहिये।

अिस हक़ीक़तसे यह समझा जा सकता है कि राज-सेवकों और प्रजाके बीचका बरताव कैसा होना चाहिये, अुसके सच्चे नियम क्या होने चाहियें, और सेवक, सेवकके दरजेसे नीचे गिरकर कब और कैसे अपनी हुकूमतकी हद लाँघकर 'हाकिमी बघारने' और बेअदबीका बरताव करने लगते हैं।

अेक निगाहसे देखा जाय तो हरअेक राज-सेवकको — फिर वह वाअिसरॉयके ओहदे पर हो या चौकीदारके — प्रजाके छोटे-से-छोटे आदमीके साथ तहज़ीबसे पेश आना चाहिये। अपनी हुकूमतकी सीमा या हदमें रहकर ही अुसे लोगोंको कोअी आदेश या हुक्म देना चाहिये। अगर कोअी आदमी अुस पर अमल करनेसे अिनकार करे, तो राज-सेवकको चाहिये कि वह अैसे आदमीका अेक शहरीके नाते अुसका फ़र्ज़ और अेक राज-सेवकके नाते अपना फ़र्ज़ समझा दे। अितने पर भी अगर वह अुसका हुक्म माननेसे अिनकार करे, तो राज-सेवकको चाहिये कि वह अपनी सीमित या बँधी हुअी हुकूमतका अिस्तेमाल करे। सही तालीम पाये हुअे लोग अिस तरह सत्ताका पूरा अिस्तेमाल करते हुअे भी अपने पर क़ाबू रखते हैं। वे गाली-गलौज या तू-तुकारेसे काम नहीं लेते, और शान्ति व दृढ़तासे अपना फ़र्ज़ अदा करते हैं। गाली-गलौज वग़ैराकी वजह सिर्फ़ हमारी — हमारे सारे राष्ट्रकी — लालन-पालनकी ख़ामी और पुराने ज़मानेसे चली आ रही परम्परायें ही हैं। जिस तरह घरमें मा-बाप बच्चोंके साथ, सासुअें बहुओंके साथ, स्कूलोंमें शिक्षक विद्यार्थिओं या तालिब-अिल्मोंके साथ, कचहरियोंमें बड़े अफ़सर छोटे अफ़सरोंके साथ, समाजमें अपनेको अूँची जातके माननेवाले लोग नीची जातवालोंके साथ—ख़ासकर नौकरों, मज़दूरों, हरिजनों वग़ैराके साथ — बेअिज़्ज़ती और बेअदबीसे पेश आते हैं, हुक्म न मानने पर आगबबूला हो अुठते हैं, मार-पीट भी करते हैं, 'पहले लात, फिर बात'का क़ायदा चलाते हैं, अुसी तरह अिस हवामें पल-पुसकर बढ़नेवाले राज-सेवक भी पेश आयें, तो अिसमें ताज्जुब क्या ? जिस हद तक प्रजामें घर, स्कूल और समाजका वातावरण तहज़ीबसे भरा, गाली-गलौजसे बचा हुआ, और घमण्डसे दूर रहेगा, अुसी हद तक वह वातावरण सरकारी काम-काजमें भी आयेगा।

दूसरी तरफ़ प्रजाके लोगोंको भी समाजी अनुशासनके क़ानून-क़ायदे जानने चाहियें। आज़ हुकूमतकी बागडोर प्रजाके चुने हुअे वज़ीरोंके हाथमें है, अिसलिअे अगर लोग यह समझने लगें कि प्रजाका हरअेक आदमी छोटे-बड़े हाकिमोंका मालिक है, और अुसे हाकिमोंको हुक्म देनेका अधिकार है, तो यह ग़लत बात होगी। किसी भी हाकिमका सीधा मालिक तो अुसका अफ़सर ही है। प्रजाका कोअी आदमी अुसका मालिक नहीं हो सकता। ख़ानगी तौर पर हरअेक आदमी प्रजा है, और हाकिम राजका नुमाअिन्दा या प्रतिनिधि है। अिसलिअे प्रजा होनेके नाते अुसे भी हाकिमके साथ तहज़ीबसे पेश आना चाहिये। जब कोअी हाकिम अपना फ़र्ज़ अदा कर रहा हो, अुस वक़्त प्रजाके हर आदमीको चाहिये कि वह अुसके वाजिब और सत्ताकी मर्यादा या हदमें रहकर दिये गये आदेश पर अमल करके अुसके काममें मदद पहुँचाये। अिस तरह प्रजाके हर आदमीको यह दिखा देना चाहिये कि वह ख़ुद आमलोगोंसे ताल्लुक़ रखनेवाली ज़िम्मेदारीको समझनेवाला अेक नागरिक या शहरी है। जब कोअी हाकिम अपनी ड्यूटी पर न हो — यानी ड्यूटी पर जाते वक़्त जिसके लिअे ख़ास पोशाक, पट्टा, और बिल्ला लगाना ज़रूरी हो — तब वह भी प्रजाका अेक मामूली आदमी ही है। अुस वक़्त अुसे अपनी हाकिमी बघारनेका कोअी हक़ नहीं। अेक समझदार नागरिक या शहरी जिस हद तक, ड्यूटी पर लगे हुअे हाकिमको सहयोग दे सकता है, अुसी हद तक यह भी दे सकता है। लेकिन यह सत्ताधारी बनकर दूसरों पर किसी तरहका हुक्म नहीं चला सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही तरीक़ेसे ड्यूटी पर लगा हुआ, या न लगा हुआ, कोअी राज-सेवक (सरकारी अमलदार) जब अपनी मर्यादाको भूलकर कोअी हुक्म दे या बेअदबीसे पेश आये, तो प्रजाके लोगोंको अुसका विरोध करनेका हक़ है। मसलन्, अगर कोअी राज-सेवक मारने आये, तो प्रजाके लोगोंको अुससे अपनी हिफ़ाज़त करनेका वैसा ही हक़ है, जैसा मारनेके लिअे आनेवाले किसी मामूली आदमीसे अपना बचाव करनेका। अुन्हें नम्रताके साथ राज-सेवकके हुक्मको तोड़नेका भी अधिकार है। अुसकी बेअदबीके लिअे वे अुसके अफ़सरोंसे या कोर्टमें अुसकी शिकायत कर सकते हैं।

सरकारी हाकिमोंको बेअदबीकी यह आदत क्यों पड़ती है, सो भी हमें समझ लेना चाहिये। अिसकी पहली वजह तो प्रजाकी अपनी कमज़ोरी और स्वाभिमानकी भावनाकी कमी है। 'गरीबकी जोरू सबकी भाभी' वाली कहावत मशहूर ही है। जो प्रजा आँख दिखाते ही डरने लगती है, हाथ जोड़ने और पाँव पड़ने लगती है, अपना काम करानेके लिअे "आप तो अन्नदाता, ख़ुदावन्द, ग़रीबपरवर हैं, आप हमारे माँ-बाप हैं, बापू हैं, मैं तो अेक अदना प्राणी हूँ, आपके जूते अुठानेवाला ग़ुलाम हूँ" वग़ैरा-वग़ैरा शब्दोंसे हाकिमोंकी ख़ुशामद किया करती है, "महाराज, मेरी पीठपर पाँव रखना, मगर मेरे पेट पर पाँव न रखना" कहकर आजीजी दिखाती है, हाकिमके मारने या गाली देने पर भी हाथ जोड़ती रहती है, अुस प्रजा पर राज-सेवकोंको चढ़ बैठनेकी आदत न पड़े, तो ही ताज्जुब है। अगर प्रजा अपनी यह कमज़ोरी छोड़ दे, तो हाकिमको अपना घमण्ड छोड़ना ही पड़े।

गालीके भद्दे और गन्दे शब्द हमारी ज़बानकी अेक भयंकर ख़ामी हैं। हमारी प्रजाके अपढ़-से-अपढ़ और सबसे पिछड़े हुअे लोगोंका दूसरा शब्द-भण्डार (लफ़्ज़ोंका ख़ज़ाना) चाहे ज़ितना छोटा हो, लेकिन गालियोंका अुनका भण्डार तो हमेशा भरपूर रहता है। अेक ज़माना अैसा भी था, जब राजा, शास्त्री, वैरागी, साधु और स्कूलके मास्टर भी चलते-फिरते अिन गालियोंका अिस्तेमाल करनेमें हिचकिचाते नहीं थे। बच्चोंको छोटी अुमरसे ही अिनकी आदत पड़ जाती थी। लेकिन ख़ुशक़िस्मतीसे यह आदत धीरे-धीरे कम होती जा रही है, हालाँकि अभी पूरी-पूरी मिटी नहीं है। हमारे सूबेमें बहुत-से शरीफ़ आदमी और शरीफ़ औरतें भी बात-बात पर 'साला' शब्दका अिस्तेमाल करती हैं। कहानी-क़िस्सोंमें भी अुसका अिस्तेमाल किया जाता है। अैसी हालतमें हमारे ही बीच पले-पुसे सरकारी हाकिमोंके लिअे — खासकर पुलिस और जेल-जैसे सज़ा देनेवाले महकमोंके लोगोंके लिअे — गालियोंकी बौछार ज़बानकी कारगर चाबुकका काम दे, तो अिसमें ताज्जुब नहीं। हमें यह भी याद रखना चाहिये कि अिन हाकिमोंको ज़्यादातर चोर, डाकू वग़ैरा मुजरिमोंसे ही काम लेना पड़ता है, और अिन्हें अक्सर अुन्हींकी सोहबतमें रहना भी पड़ता है। अिसलिअे अगर अिस बुराअीको मिटाना है, तो सारी प्रजाको अपनी भाषा सुधारनी चाहिये।

अिसी तरह, प्रजाके साथ किये जानेवाले असभ्यता या बेअदबीके बरतावके लिअे भी समझना चाहिये। कितने ही अैसे राजा, राजकुमार, सेठ-साहूकार और अुनके लड़के मिलेंगे, जो अपने बाप या दादा-जैसे बूढ़े कारकुनों और नौकरोंके साथ भी तू-तुकारेसे बात करते हैं। वे अितने घमंडी होते हैं कि सिर्फ़ ऑफ़िसमें ही नहीं, बल्कि अपने घर या दूसरी किसी जगह भी बुज़ुर्ग कारकुनों या नौकरोंको कुरसी या दूसरा बराबरीका आसन नहीं देते। अुन्हें काम भी बतायेंगे, तो मानो गुस्सा होकर। जब छोटे हाकिमोंके सामने सभ्यता या तहज़ीबकी यह मिसाल हो, तो अुनकी असभ्यता या बेअदबीके लिअे प्रजाके सिवा दूसरा कौन ज़िम्मेदार हो सकता है?

यह लिखकर मैं सरकारी महकमोंका बचाव नहीं करना चाहता। जनताकी सरकारके नुमाअिन्दोंको हाकिमोंका बरताव सुधारनेकी फ़िक्र रखनी चाहिये। कांग्रेस कमेटी जैसी संस्थाओं या अिदारोंको भी अिस बातका ध्यान रखना चाहिये। अूपर मैं कह चुका हूँ कि सरकारी हाकिम जब हुकूमतकी सीमाको लाँघकर बरताव करें, बेअदबीसे पेश आयें, या मार-पीट करें, तो अुनका सामना करने या अुनकी शिकायत करनेका हक़ प्रजाको है। लेकिन आजके सरकारी तंत्र (निज़ाम) ही अैसे हैं कि अिस हक़का अिस्तेमाल करना सरल काम नहीं।

रेलवे सत्याग्रही श्री पोपटलाल शाहकी तरह जिन्हें फ़ुरसत हो, जिनके पास खरचनेके लिअे पैसा हो और हाथ-धोकर अिसके पीछे पड़ जानेका जोश हो, वे ही शिकायत करनेका काम हाथमें ले सकते हैं। अिसमें कोअी शक नहीं कि अैसा कर सकनेवाले सेवा ही करते हैं। लेकिन यह काम मामूली आदमियोंके बूतेका नहीं। अिसकी वजह यह है कि सरकारी तंत्र (निज़ाम) की लिखा-पढ़ीका चक्कर अैसा अटपटा होता है कि काम-धन्धेवाला आदमी अुसकी ढिलाअी और खर्चेका सह नहीं सकता। जब तक राजतंत्रमें अैसी शिकायतोंका तुरत फ़ैसला करने लायक़ सुधार नहीं होता, तब तक सरकारी महकमोंसे अिन्साफ़ पानेका काम वे ही कर सकते हैं, जिन्हें अिसका शौक़ है।

वापी, ९-१२-'४६

(गुजरातीसे) किशोरलाल घ० मशरूवाला

धर्म-कथा

६

[यह कथा आर० सी० ट्रेवेलियन के 'विण्ड फाल्स' (अेलन अेण्ड अनविन) से ली गअी है — वा० गो० दे०]

अेक बार बोधिसत्व हाथीकी शकलमें पैदा हुआ। जब वह पूरे क़दका और आकर्षक हो गया, और लम्बे अरसे तक हाथियोंके अेक बड़े झुण्ड पर राज कर चुका, तो अुसने अपने साथियोंको छोड़ दिया और घूमता-फिरता अेक दूरके जंगलमें जा पहुँचा। अिस जंगलके आसपास अेक अैसा रेगिस्तान था, जिसमें पानी नामको न था। वहाँ वह पेड़ोंके पत्तों और फलों, कमलकी नालों और पानी से भरे तालाबों का मज़ा लेता हुआ साधुकी तरह रहने लगा।

अेक दिन जब वह जंगलकी सीमाके नज़दीक घूम रहा था, अुसने बहुतसे लोगोंकी रोने-बिलखनेकी आवाज़ सुनी। अुस आवाज़ की तरफ़ वह तेज़ीसे दौड़ा और जंगलसे बाहर निकल कर अुसने थोड़ी दूर पर सैकड़ों आदमियोंको ज़मीन पर बैठे और लेटे हुअे देखा। वे भूख, प्यास और थकान से घबरा गये थे। वे थक कर अितने चूर हो गये थे कि अितने खौफ़नाक हाथीको देख कर भी भाग न सके। वह हाथी दोस्ताना ढंगसे अपनी सूँड़को हिलाता हुआ धीरे-धीरे अुनकी तरफ बढ़ा और अिनसानकी आवाज़में कहने लगा — "डरो मत। आप कौन लोग हैं? और आप अिस बुरी हालतमें कैसे फँसे?"

यह सुनकर अुसपर विश्वास करके सब लोग अुठे और झुक कर सबने अुसे नमस्कार किया। अुनके बुज़ुर्गोंमेंसे अेकने कहा — "अे हाथियोंके सरदार, राजाके ग़ुस्से के ज़ालिम तूफ़ानने हमें अपने देशसे निकाल कर अिस रेगिस्तानमें ला पटका है। फिर भी अब आपके शुभ दर्शनसे हम मुसीबतोंका रेगिस्तान पार कर चुके हैं।"

हाथीने पूछा — "आप सब कितने हैं?"

बुज़ुर्गने कहा — "जब हमें वतनसे निकाला गया, तब हम पाँच सौ थे। लेकिन हममें से बहुतसे भूख, प्यास और निराशाके शिकार बनकर बरबाद हो गये।"

तब दयासे पिघल कर अुस हाथीने कहा — "अफ़सोस! बेचारे राजा लोग कितने अंधे होते हैं कि अपने भलेकी बातको भी नहीं देख सकते। वे यह नहीं समझते कि प्रजा पर किये गये ज़ुल्मसे पैदा होनेवाली आग अुनकी दुष्टता और ज़ुल्मके साथ अुन्हें भी जला कर ख़ाक कर देगी। लानत है अैसी बेसमझी पर!" और जब वह चुपचाप खड़ा यह सोच रहा था कि अपने मेहमानों की आवभगत कैसे की जाय, अुन लोगोंने हाथ जोड़कर रोते हुअे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अुससे प्रार्थना की — "मेहरबानी करके हमें बताअिये कि हम अिस भयंकर रेगिस्तानसे कैसे छुटकारा पा सकते हैं, या कम-से-कम यही बता दीजिये कि हम कोअी चश्मा या हमें जीवन देनेवाले पानी का कोअी तालाब कहाँ पा सकते हैं ।"

तब अपनी सूँडको अुत्तरकी ओर अुठाते हुअे हाथीने अुनसे कहा — "अुस सामनेवाले अूँचे पहाड़के नीचे साफ़ पानीकी अेक झील है, जहाँ आप अपनी प्यास बुझाकर थोड़ी देर आराम कर सकते हैं । तब फिर थोड़ी दूर आगे जाकर आपको अेक हाथीका शरीर मिलेगा, जो आज ही पहाड़की चोटी परसे गिर कर वहाँ नीचे पड़ा है । अुसका गोश्त खाअिये और अुसकी आँतोंसे पानीकी थैलियाँ बनाकर अुनमें झीलका पानी भर लीजिये । अिस तरह खाने-पीनेका अिन्तज़ाम हो जाने पर आप बिना किसी मुसीबतके जल्दी ही अिस रेगिस्तानको पार कर लेंगे।"

अितना कहकर अुसने अुन लोगोंको छोड़ दिया, और जल्दी ही अुनकी निगाह से ओझल होकर अुस पहाड़की अूँची चोटी पर चढ़ गया, और वहाँ से नीचे की चट्टानों पर गिरकर मर गया ।

अिसी अरसेमें, वे लोग अुसके बताये हुअे रास्तेसे जल्दी ही झील पर पहुँच गये, और पानी पीकर अुन्होंने थोड़ा आराम किया । आगे बढ़ने पर अुन्हें हाथीका अेक शरीर पड़ा मिला । अुनमेंसे कुछने कहा — "यह हाथी हमारे दोस्त हाथियोंके सरदारसे कितना मिलता-जुलता है ?" दूसरोंने सोचा — "यह हमारा वही दोस्त है, जिसने हमें मुसीबतसे बचानेके लिअे पहाड़की चोटीसे गिरकर अपनी जान दे दी है ।" पूना, २-१२-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

सवर्ण हिन्दुओंका फ़र्ज़

धांगध्रामें हुअे अस्पृश्यता निवारण-सम्मेलनकी प्रेसिडेण्ट श्रीमती सरलादेवी साराभाअी के मांगलिक भाषणमें से ख़ास महत्त्वकी बातें नीचे दी गअी हैं —

"अिस बात की ओर हमारा कभी ध्यान ही नहीं जाता कि सवर्ण हिन्दुओंके ज़ुल्मों, और अुनके अिनसानियत के ख़िलाफ़ बरतावसे, और कुओं, तालाबों, स्कूलों, दवाख़ानों और आम सवारियों जैसे बिलकुल बुनियादी ज़रूरतोंको पूरा करनेवाले साधनोंका, औरोंकी तरह बराबरी के हक़से, अिस्तेमाल करने पर बेहूदी रोक लगा देनेकी वजहसे, कितने ही हरिजन हर साल अपना धर्म बदलकर अीसाअी या मुसलमान बन जाते हैं । सवर्णोंके ज़ुल्मोंसे घबराकर ही बहुतसे हरिजन मुसलमानों और कम तादादवाली जातोंकी तरह अलगसे वोट देनेका हक़ भी माँगने लगे हैं । अुनकी नसोंमें साम्प्रदायिकताका यह जो ख़ून फैल रहा है, अुसकी कोअी-न-कोअी वजह तो ज़रूर है । हर शख़्सको अपना धर्म बदलनेका समान हक़ है । अगर कोअी अपनी अिच्छासे, सोच-समझकर, अपना धर्म बदले, तो अिसमें किसीको कोअी अेतराज नहीं होना चाहिये । लेकिन अगर सवर्ण हिन्दुओं के ज़ुल्मोंकी वजहसे ही हरिजन धर्म बदलनेके लिअे ललचायें, तो अिसकी सारी ज़िम्मेदारी अुन हिन्दुओं पर ही है । अैसी घटनाओं के सियासी नतीजों पर हम चाहे विचार न करें, फिर भी सवर्ण हिन्दुओंके अैसे ज़ुल्मोंसे हिन्दूधर्मकी जो बरबादी हो रही है, वह कोअी छोटी-मोटी आफ़त नहीं ।

"हरिजन भी आख़िर अिनसान हैं । अुनके स्पर्शसे या छूनेसे ही कोअी नापाक हो जाता है, यह कल्पनाके परे है । जब वही हरिजन धर्म बदलकर आते हैं, तो अुनको छूनेसे कोअी हिन्दू अपवित्र नहीं होता ! और जब जानवरोंके स्पर्श से भी हम, हमारे घर और हमारे रसोअीघर नापाक नहीं होते, तो सिर्फ़ अेक अिनसानके छू लेनेसे ही कोअी सवर्ण हिन्दू कैसे नापाक या भ्रष्ट हो सकता है, यह समझमें नहीं आता ? अिसलिअे छूतछातकी यह गाँठ तो अेकदम कट ही जानी चाहिये । हरिजन भाअियोंके साथ सवर्णोंका बरताव अैसा क़ुदरती बन जाना चाहिये कि थोड़े ही वक़्तमें 'हरिजन' शब्द ही रोज़की बोल-चालसे गायब होकर अतीत की चीज़ बन जाय । हरअेक सवर्ण हिन्दूका यह पवित्र फ़र्ज़ है कि वह हरिजनोंके साथ समाजी ताल्लुक़ क़ायम करनेके हर मौक़ेका आदर-पूर्वक फ़ायदा अुठावे । खेल-तमाशों, समाजी अुत्सवों, भजन-कीर्तन और ख़ानगी बातचीतकी मण्डलियोंका अिन्तज़ाम अितनी आज़ादी के साथ किया जाना चाहिये कि अुनमें शरीक होनेवाले हरिजन भाअियोंके दिलोंसे यह ख़याल ही निकल जाय कि वे हरिजन हैं या थे ।

"अगर हमारा आपसका बरताव अितना पवित्र बन जाय, तो फिर यह कहनेकी ज़रूरत ही न रह जाय कि हरिजनोंके लिअे अैसा प्रबन्ध करना चाहिअे, जिससे वे समाजी अुपयोग या अिस्तेमालके तमाम साधनोंका आज़ादीके साथ लाभ अुठा सकें । हमें अपने ज़ाहिर विचारों और बरतावसे, या ज़रूरत मालूम हो तो अन्तमें क़ानूनका सहारा लेकर भी अैसा वातावरण या फ़िज़ा तैयार करनेकी कोशिश करनी चाहिये कि हरिजन भाअी हरअेक मन्दिर और आम अिस्तेमालके हर साधनका, सवर्णोंके समान, फ़ख़्रके साथ अिस्तेमाल कर सकें ।

"अिस तरह छुआछूतको मिटाकर हरिजनोंको सवर्ण हिन्दुओंके बराबर हक़ देना तो ज़रूरी है ही । लेकिन अितनेसे ही यह सवाल हल नहीं हो जायगा । अुन्हें मदद पहुँचानेवाला रचनात्मक या तामीरी काम भी हमें करना होगा । हरिजनोंके लिअे कुओं, तालाब, स्कूल, दवाख़ाने, मंदिर, यहाँ तक कि अुनके रहनेके मकान भी कभी अलग नहीं होने चाहियें । अुनकी तालीमको बढ़ाने और अुनकी माली हालतको सुधारनेवाले धन्धे खोलनेके लिअे बड़े पैमाने पर योजनायें बनानेकी ज़रूरत है । हरिजनोंमें से कितने ही लोगोंका धन्धा गन्दा माना जाता है । अिसलिअे अुनके धन्धेमें अिस्तेमाल किये जानेवाले औज़ारों और अुनके काम करनेके तरीक़ोंमें जब से अैसे फेरफार किये जाने चाहियें कि वे चाहें तो अुसी धन्धेको सफ़ाअीसे कर सकें । थोड़ेमें, हरिजनोंके लिअे अैसे तामीरी काम शुरू किये जाने चाहियें, जिनसे सवर्ण हिन्दुओंको हरिजनों पर मेहरबानी करने के ख़यालसे नहीं, बल्कि अपने पापोंके प्रायश्चित्तके रूपमें — अपना फ़र्ज़ अदा करनेके ख़यालसे — अैसी योजनायें बनानेकी प्रेरणा मिले कि हरिजन भाअी आज़ाद आदमियोंकी तरह, फ़ख़्रके साथ, अपनी ज़रूरतें ख़ुद पूरी कर सकें, और थोड़े ही समयमें अपनी तरक़्क़ी करनेवाले काम वे ख़ुद करना सीख लें ।"

ध्यान दीजिये

अगरचे हमने बार-बार अिस बातकी तरफ़ गाहकोंका ध्यान खींचा है कि वे अपना चन्दा चेकके ज़रिये न भेजा करें, फिर भी मालूम होता है कि कुछ गाहकोंको अिसमें ज़्यादा सुभीता रहता है । अिसलिअे हम गाहकोंका ध्यान दो बातोंकी तरफ़ दिलाते हैं— (१) जहाँ तक हो सके, वे चेक भेजना टालें, और (२) अगर वे चेक ही भेजना पसन्द करें, तो अुसके साथ आठ आनेकी रक़म और भेजें, ताकि अलग-अलग बैंकोंमें अलग-अलग दरसे कटनेवाले बट्टेकी रक़म पूरी की जा सके । जब यह अूपरका ख़र्च नहीं भेजा जाता, तो चन्देकी रक़मके अैसे टुकड़े हो जाते हैं, जिनका चन्देके हिसाबके साथ मेल बैठाना मुश्किल हो जाता है ।

मैनेजर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिजनसेवक

२९ दिसम्बर १९४६

दक्खिनी अफ्रीका क्या करेगा ?

आरज़ी सरकारने श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित्की अगुआओीमें जो डेपुटेशन संयुक्त राष्ट्र-संघकी कान्फरेन्समें भेजा था, अुसने बेशक बड़ी क़ाबलियत और कामयाबीके साथ बहुत पुरअसर काम किया है। श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडितने न्यूयार्कसे नीचे दिया हुआ जो केबलग्राम (तार) भेजा है, अुससे यह बात साफ़ ज़ाहिर होती है।

"आज आपकी दुआसे दक्खिनी अफ्रीकाके हिन्दुस्तानियोंका न्यायका दावा वाजिब साबित हुआ है। कमेटीके मेम्बरोंमेंसे २४ने हमारे हक़में और १९ने खिलाफ़ वोट दिये। मीटिंग खत्म होने पर (मैं) जनरल स्मट्सके पास गअी और अुनसे हाथ मिलाया। जिस ढंगसे मैंने अिस मामलेकी वकालत की थी, अुसकी अुन्होंने तारीफ़ की।"

अब यह देखना बाक़ी है कि दक्खिनी अफ्रीकाके यूनियनकी पार्लमेंट और वहाँकी यूरोपियन जनता किस तरह अिसका जवाब देती है। फील्ड-मार्शल स्मट्सने हिन्दुस्तानी डेपुटेशनको यह ताना मारा था कि दक्खिनी अफ्रीका अपने यहाँके अेशियाअियों और हब्शियोंके साथ जैसा बरताव करता है, अुससे कहीं बदतर बरताव हिन्दुस्तान अपने अुन नामधारी 'अछूतों'के साथ करता है, जिन्हें क़ानूनी ज़बानमें 'शिडयूल्ड कास्ट्स' या 'पिछड़ी हुअी जातियाँ' कहा जाता है। अगर फील्ड-मार्शलका ताना सच है, तो कहना चाहिये कि अुनकी अिस बातमें बहुत सचाअी है। मगर दक्खिनी अफ्रीकाके बारेमें तो यह सच साबित हो चुका है कि वहाँके अेशियाअियोंके साथ यूनियन सरकारका बरताव क़ानूनकी नज़रसे दिन-दिन अितना बुरा होता गया है, कि आज वह बरदाश्तके बाहर हो गया है। दक्खिनी अफ्रीकाकी यूनियन सरकारने हिन्दुस्तानकी सरकारको दिया हुआ अपना क़रीब-क़रीब हरअेक वचन तोड़ा है। दूसरी तरफ़, हिन्दुस्तानमें 'शिडयूल्ड कास्ट्स' पर किसी क़िस्मका मनहूस बन्धन लगानेवाला कोअी क़ानून कभी नहीं रहा। अिस बातको पूरी तरह साबित किया जा सकता है कि क़ानूनने 'शिडयूल्ड कास्ट्स'की हिफ़ाज़तका हमेशा ख़याल रखा है। जहाँ तक मैं जानता हूँ, हिन्दुस्तानमें अैसी कोअी क़ानूनी रुकावट नहीं है, जिसकी वजहसे किसी पिछड़ी जातिका कोअी शख़्स अेक अूँचे-से-अूँचे हिन्दुस्तानीकी बराबरी न कर सकता हो। हाँ, यह सच है, और वह कट्टर हिन्दूधर्म और सनातनी हिन्दुओंके लिअे शर्मकी बात है, कि मज़हबी रीति-रिवाज अिन अछूतोंको वे हक़ भोगने नहीं देते, जो क़ानूनने अुन्हें दे रखे हैं। और बदक़िस्मतीसे यह भी सच है कि कभी-कभी ये रीति-रिवाज क़ानून पर हावी हो जाते हैं। मगर लोक-मत दिन-दिन अिस जंगली रिवाजके खिलाफ़ होता जा रहा है, और अिसके नाबूद होनेमें अब सिर्फ़ वक़्तका ही सवाल रह गया है। अिसलिअे हम अुम्मीद करें कि हिन्दुस्तानकी अुन बातोंसे, जिनकी यहाँ कोअी पैरवी नहीं करता, और जिनके खिलाफ़ जनताकी आवाज़ दिन-दिन अूँची होती जा रही है, बेजा फ़ायदा अुठानेके बजाय दक्खिनी अफ्रीकाके यूनियनके गोरे यूरोपियन यह महसूस करेंगे कि अगर संयुक्त राष्ट्र-संघकी परिषद् दुनियाके लोक-मतकी कोअी निशानी है, तो वह यक़ीनन् यूरोपियनोंके अुस पक्षपात और तरफ़दारीके खिलाफ़ है, जो अब ज़्यादा कड़ी होकर क़ानूनकी शकलमें आ गअी है।

श्रीरामपुर, १२-१२-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

मोहनदास करमचन्द गांधी

नोआखालीमें शान्ति-योजना

अिस हफ़्ते अेसोशिअेटेड प्रेस, अमेरिकाके अेक संवाददाताने गांधीजीके श्रीरामपुरवाले सदर मुक़ामकी मुलाक़ात ली थी। वहाँ सोदपुर आश्रमके मुखिया श्री सतीशचन्द्र दासगुप्तने अुन्हें नोआखालीमें अमलमें लाअी जानेवाली गांधीजीकी शान्ति-योजना (अमन-स्कीम) विस्तारसे समझाअी थी।

श्रीरामपुरसे शुरू होनेवाले २० चौरस मीलके रक़बेमें अिस योजना पर अमल किया जा रहा है। वहाँ शान्ति-सेवक १० स्थायी शान्ति-युनिटोंमें बँट गये हैं, और वे पिछली २४ नवम्बरसे रामगंज पुलिस थानेके कअी गाँवोंमें योजनाके मुताबिक़ शान्ति क़ायम करनेका काम कर रहे हैं।

श्री दासगुप्तने कहा कि गांधीजीकी शान्ति-योजनाकी चार बुनियादी बातें ये हैं — "(अ) आध्यात्मिक या रूहानी कोशिश; (आ) मनुष्य स्वभावसे भला होता है; (अि) प्रेम, और (अी) बहादुरोंकी अहिंसा।"

अुन्होंने आगे कहा — "गांधीजीके शान्ति-मिशनकी मन्शा यह साबित कर दिखानेकी है, कि दर असल हिन्दुओं और मुसलमानोंके अेकेमें कोअी रुकावट नहीं है। कम तादादवाले हिन्दुओंके दिलोंमें बहादुरी और बदमाशों या गुण्डोंके दिलोंमें पछतावा पैदा करना अुसका मक़सद है। जब तक अेक तरफ़ डर और दूसरी तरफ़ नफ़रतके नचाये लोग नाचते रहेंगे, तब तक अेका कभी हो नहीं सकता।

"शान्तिका काम करनेवाले लोगोंको अपने आसपासकी तंग और बिगड़ी हवामें अैसा अिन्क़िलाब पैदा कर देना है, जिससे आगे कभी दंगा-फ़सादकी कोअी गुंजाअिश ही न रह जाय।"

अिस योजना या स्कीमके मुताबिक़ होनेवाले कामका ज़िक्र करते हुअे श्री दासगुप्तने कहा — "शान्ति-सेवकोंको सत्य, अहिंसा और प्रेमका व्रत लेना चाहिये। अुन्हें दंगेवाले किसी गाँवमें रहना चाहिये, और गुण्डों सहित सब लोगोंके साथ सगे भाअियोंकी तरह मिलना-जुलना चाहिये।

"अपने अूपर हमला होने पर भी शन्ति-सेवकको अपने बचावका खयाल तक नहीं करना चाहिये। अपने दुश्मनके हाथों मर जाना ही अुसका अेकमात्र बचाव होगा।

"बहादुरीका यह ख़याल ही सारे वातावरणमें अेक अिन्क़िलाब पैदा कर देता है। डरपोक लोग अपना डर और दुश्मन अपनी नफ़रत छोड़ देते हैं। फिर शान्ति क़ायम हो जाती है — यह फ़ौजियोंकी बन्दूकों और पुलिसके डण्डोंके बल, अूपरसे लादी गअी, थोड़े वक़्तकी शान्ति नहीं, बल्कि सच्ची, टिकाअू और मज़बूत शान्ति होती है।"

अब तककी कामयाबीका ज़िक्र करते हुअे श्री दासगुप्तने कहा — "अब हिन्दू निडर होकर घूमने-फिरने लगे हैं, और मुसलमान अपनी नफ़रत और गुस्सेको भूल रहे हैं।"

"क्या हिन्दुस्तानमें और जगहों पर भी कांग्रेसियोंको अिस योजना पर अमल करना चाहिये?" — अिस सवालके जवाबमें श्री दासगुप्तने कहा — "अगर वे अैसा करें, और बहादुरोंकी अहिंसाके हथियारको कसौटी पर चढ़ायें, तो दुनियाकी शकल बड़ी तेज़ीसे बदल जाय।"

कलकत्ता, २१-१२-'४६

(अंग्रेज़ीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

028025

वर्किंग कमेटीका बयान

ब्रिटिश सरकारने ६ दिसम्बर, १९४६ को जो बयान जारी किया था, और हाल ही अुसकी तरफ़से पार्लमेण्टमें जो दूसरे बयान दिये गये थे, अुन पर वर्किंग कमेटीने सावधानीसे विचार किया है। ये बयान अर्थकी सफ़ाअी और चौकसाअीके नाम पर जारी किये गये हैं। लेकिन असलमें ये कैबिनेट मिशनके १६ मअी, १९४६ वाले बयानमें — जिस पर आअीन बनानेवाली सभाकी सारी स्कीम तैयार कि गअी थी — साफ़ तौरसे कुछ बातें जोड़ते और फेरफार करते हैं।

१६ मअी, १९४६वाले बयानके १५ वें पैरेमें विधान या आअीनके बुनियादी अुसूलोंके बारेमें कहा गया है कि "ब्रिटिश हिन्दुस्तान और देशी रियासतोंको मिलानेवाला हिन्दुस्तानका अेक यूनियन बनना चाहिये," "यूनियनके सिपुर्द किये गये विषयोंको छोड़कर बाक़ी सारे विषय और बाक़ीकी सारी हुकूमतें सूबोंके हाथमें रहेंगी," और "सूबोंको ग्रूप बनानेकी आज़ादी होनी चाहिये"। अिस तरह अुस बयानमें कुछ ख़ास विषयों पर यूनियनका क़ाबू रखते हुअे, सूबोंको स्वतंत्र बनानेका अिरादा रखा गया है। साथ ही, बयानके १९ वें पैरेमें, विभागों (सेक्शनों) के अिकट्ठा होकर मिलनेके बारेमें, ग्रूप बनाने या न बनानेका फ़ैसला करनेके बारेमें, और किसी सूबेके अुस ग्रूपसे बाहर निकलनेके बारेमें, जिसमें वह शामिल किया गया हो, काम करनेका तरीक़ा सुझाया गया है।

वर्किंग कमेटीने अपने २४ मअी, १९४६के प्रस्तावमें विधानके बुनियादी अुसूलों और कामके सुझाये गये तरीक़ेमें पाये जानेवाले विरोधको दिखाते हुअे यह बताया था कि सुझाअी गअी कार्य-पद्धतिमें जो अनिवार्यता दाख़िल की गअी है, वह सूबोंकी आज़ादीके बुनियादी अुसूलोंको तोड़ती है। अिस पर कैबिनेट मिशनने २५ मअी, १९४६के अपने बयानमें बताया था कि "कांग्रेसके ठहरावमें १५वें पैरेका यह जो अर्थ किया गया है कि सूबोंको जिन विभागों या सेक्शनोंमें रखा गया है, अुनमें शामिल होने या न होनेका फ़ैसला वे पहले ही कर सकते हैं, अुसका ब्रिटिश सरकारके कैबिनेट मिशनके अिरादोंके साथ कोअी मेल नहीं बैठता। सूबोंके ग्रूप बनानेके कारण सबको मालूम हैं। यह अिस स्कीमका अेक अहम हिस्सा है, और दोनों दलोंके समझौतेसे ही अिसमें कोअी फेरफार हो सकता है।"

यहाँ सवाल सिर्फ़ कार्य-पद्धतिका नहीं था, बल्कि सूबोंकी आज़ादीके बुनियादी अुसूलका और किसी सूबे या हिस्सेको अुसकी मरज़ीके ख़िलाफ़ मजबूर करने या न करनेका था।

कांग्रेसने बादमें यह बात और साफ़ कर दी थी कि अुसका विरोध सूबोंके विभागोंमें शामिल होनेके बारेमें नहीं, बल्कि अुन्हें किसी ख़ास ग्रूपमें शामिल होनेके लिअे मजबूर करनेके बारेमें था। कांग्रेस यह भी नहीं चाहती थी कि कोअी ताक़तवर सूबा दूसरे कमज़ोर सूबेकी मरज़ीके ख़िलाफ़ अुसका विधान बनावे। अिसकी वजहसे वोट देनेके हक़, वोटरोंकी क़ाबलियत, चुनावके हलक़ों और धारासभा (असेम्ब्ली)की रचना वग़ैराके अैसे क़ायदे-क़ानून बन जानेका अँदेशा रहता है, जो किसी सूबेके आख़िर अपने ग्रूपसे निकल सकनेके प्रबन्धको बहुत नुक़सान पहुँचा सकते हैं, या अुसे बेकार बना सकते हैं। यह दरसा दिया गया था कि कैबिनेट मिशनका यह मन्शा कभी नहीं हो सकता, क्योंकि यह अुसके द्वारा पेश की गअी स्कीमकी बुनियादी नीति और अुसके बुनियादी अुसूलोंके ख़िलाफ़ होगा। आअीन बनानेके सवालको कांग्रेसने हमेशा अिस निगाहसे देखा है कि मुल्कके किसी हिस्से या दल पर किसी क़िस्मका दबाव न डाला जाय, और आज़ाद हिन्दुस्तानका विधान अुससे ताल्लुक़ रखनेवाली सभी पार्टियों और सूबोंके सहयोग और सद्भावनासे तैयार किया जाय।

लॉर्ड वेवलने कांग्रेसके प्रेसिडेण्ट मौलाना आज़ादके नाम लिखे १५ जून, १९४६ के अपने ख़तमें बताया है कि "ब्रिटिश डेलिगेशन और मैं (लॉर्ड वेवल) ग्रूप बनानेके अुसूलके ख़िलाफ़ आपके विरोधसे वाक़िफ़ हैं। लेकिन मैं आपको यह बता दूँ कि १६ मअी, १९४६का बयान ग्रूप या समूहकी रचनाको लाज़िमी नहीं ठहराता। वह अिसके फ़ैसलेको विभागों में अिकट्ठा होनेवाले अुन-अुन सूबोंके चुने हुअे नुमाअिन्दों पर ही छोड़ता है। अिसकी अेक ही ज़रूरी शर्त यह है कि किसी ग्रूपमें शरीक होने या न होनेका फ़ैसला करनेके लिअे कुछ ख़ास सूबोंके नुमाअिन्दोंका विभागोंमें मिलना लाज़िमी है।"

अिस तरह, अिस अुसूल पर फिर ज़ोर दिया गया कि सूबोंके ग्रूप बनाना लाज़िमी नहीं, और विभागोंके बारेमें कामका अेक ख़ास तरीक़ा सुझाया गया। वह तरीक़ा स्पष्ट नहीं था। अुसके अेकसे ज़्यादा अर्थ किये जा सकते थे। और किसी भी हालतमें कार्य-पद्धतिका कोअी मुद्दा बुनियादी अुसूलको बेकार नहीं बना सकता था। हमने बताया था कि अिसका सही अर्थ वही माना जाय, जो अिस अुसूलको कोअी नुक़सान न पहुँचाता हो। अिससे आगे बढ़कर, प्रस्तावित स्कीमको अमलमें लानेके लिअे मुल्कके तमाम दलोंका सहयोग पानेका रास्ता खोलनेकी ग़रज़से हमने यह भी साफ़-साफ़ कह दिया था कि हम न सिर्फ़ विभागोंमें शामिल होनेके लिअे तैयार हैं, बल्कि हमने यह भी सुझाया था कि अगर हमारा अर्थ न माना जाय, तो हम अिस सवालको फेडरल कोर्टके सामने रखनेकी बात भी मंज़ूर कर लेंगे।

यह तो सब कोअी जानते हैं कि सूबोंके ग्रूप बनानेकी तजवीज़ ख़ासकर आसाम और अुत्तर पच्छिमी सरहदके सूबोंको, और पंजाबके सिक्खोंको नुक़सान पहुँचानेवाली है। अुनके नुमाअिन्दों ने अिसका ज़ोरदार विरोध किया है। हिन्दुस्तानकी सरकारके वज़ीरको लिखे अपने २५ मअी, १९४६ के ख़तमें मास्टर तारासिंह ने सिक्खोंकी चिन्ताओं और आशंकाओं पर रोशनी डाली है, और कअी बातोंकी सफ़ाअी माँगी है। भारत-मंत्रीने १ जून, १९४६ को अिसका जवाब देते हुअे लिखा था कि "अपने ख़तके अख़ीरमें आपने विस्तारसे जो बातें रक्खी हैं, अुन पर मैंने ग़ौर किया है। मुझे डर है कि कैबिनेट मिशन न तो अपने बयानमें कोअी बात जोड़ सकता है, और न अुसका कोअी अर्थ कर सकता है।"

अिस तरहका साफ़ बयान दे चुकने पर भी छठी दिसम्बरको ब्रिटिश सरकार ने अेक बयान दिया है, जो १६ मअी, १९४६ के बयानमें कुछ जोड़ता है, और अुसका अर्थ भी करता है। साढ़े छह महीनों से भी ज़्यादा वक़्त बीत जानेके बाद, जब कि असल बयानके आधार पर बहुत-सी बातें हो चुकी हैं, अुन्होंने अैसा किया है। अिस सारे अरसेमें ब्रिटिश सरकार और अुसके नुमाअिन्दोंके सामने कांग्रेस अपनी स्थितिको बार-बार साफ़ कर चुकी थी। और अिस स्थितिकी पूरी जानकारीके साथ ही ब्रिटिश सरकारने कैबिनेट मिशनके प्रस्तावोंको आगे बढ़ानेके लिअे बादके क़दम अुठाये थे। यह स्थिति १६ मअी, १९४६ के बयानके अुन बुनियादी अुसूलोंके मुताबिक़ थी, जिन्हें कांग्रेस ने पूरी तरह मंज़ूर कर लिया था। अिसके बाद, कांग्रेस अिस बात पर भी राज़ी हो गअी थी कि ज़रूरत पड़ने पर अिसका अर्थ लगानेका मुद्दा फेडरल कोर्टके सामने रखा जाय, और अुसका फ़ैसला सभी सम्बन्धित दलों द्वारा मंज़ूर किया जाय।

२८ जून, १९४६को मि॰ जिन्नाके नाम लिखे गये अपने ख़तमें वाअिसरॉयने लिखा था कि "कांग्रेसने १६ मअीका बयान मंज़ूर कर लिया है"। २४ अगस्त, १९४६को रेडियो पर की गअी अपनी तक़रीरमें वाअिसरॉयने मुस्लिम लीगसे सहयोगकी अपील करते हुअे कहा था कि, "अर्थसे ताल्लुक़ रखनेवाला कोअी भी झगड़ा फेडरल कोर्टके सामने ले जानेके लिअे कांग्रेस तैयार है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुस्लिम लीगने अपना पिछला फ़ैसला बदल दिया, और बाक़ायदा अेक प्रस्ताव पास करके कैबिनेट मिशनकी स्कीमको नामंज़ूर कर दिया, और सीधी कार्रवाअीका सहारा लेनेका फ़ैसला किया। अुसके बादसे लीगके नेताओंने अुस स्कीमकी असल बुनियादका — यानी हिन्दुस्तानके संयुक्त राज्यके विधानका — भी बारबार विरोध किया है, और वे फिरसे हिन्दुस्तानके टुकड़े करनेकी बात कहने लगे हैं। ब्रिटिश सरकारके ६ दिसम्बर, १९४६वाले बयानके बाद भी मुस्लिम-लीगके नेताओंने हिन्दुस्तानके टुकड़े करने और यहाँ दो अलग-अलग आज़ाद सरकारें क़ायम करनेकी यह माँग फिर पेश की है।

गत नवम्बरके आख़ीरमें कांग्रेसको ब्रिटिश सरकारका न्योता मिला कि वह अपने नुमाअिन्दोंको लन्दन भेजे; अुस वक़्त भी कांग्रेसने अपनी स्थिति अेक बार फिर स्पष्ट कर दी थी। ग्रेटब्रिटनके वज़ीरेआज़मके यक़ीन दिलाने पर ही कांग्रेसका अेक नुमाअिन्दा लन्दनके लिअे रवाना हुआ था।

अिस और अिससे पहलेके अुन आश्वासनोंके बावजूद कि १६ मअी, १९४६ के बयानमें न तो कुछ जोड़ा जायगा, न अुसका अर्थ किया जायगा, ब्रिटिश सरकारने अब जो बयान दिया है, वह साफ़ तौर पर और कअी मामलोंमें अुस असल बयानकी सीमाको लाँघता है, जिसके आधार पर अभी तक आगे बढ़ा गया है।

वर्किंग कमेटीको यह देखकर सख़्त अफ़सोस होता है कि ब्रिटिश सरकारने अपने दिये हुअे आश्वासनोंके ख़िलाफ़ बरताव किया है। अिससे हिन्दुस्तानके बहुतसे लोगोंके दिलोंमें शक पैदा हो गया है। पिछले कुछ समयसे ब्रिटिश सरकार और हिन्दुस्तानमें रहनेवाले अुसके नुमाअिन्दोंका रुख़ मुल्ककी परिस्थितिमें मुश्किलें और उलझनें बढ़ानेवाला रहा है। विधान-सभाके मेम्बरोंका चुनाव होनेके बहुत दिनों बाद, अुनकी मौजूदा दस्तन्दाज़ीने अेक बिलकुल नअी हालत पैदा कर दी है, जो भविष्यके लिअे ख़तरोंसे भरी हुअी है। अिसलिअे कारबारी कमेटीने अिस पर फ़िकरके साथ और लम्बी चर्चा की है।

विधान-सभाके ज़रिये कांग्रेस हिन्दुस्तानकी जनताके तमाम तत्त्वोंके दिली सहयोगसे स्वाधीन और स्वतंत्र हिन्दुस्तानका विधान तैयार करना चाहती है। वर्किंग कमेटीको अिस बातका अफ़सोस है कि विधान-सभाके मुस्लिम लीगी मेम्बर सभाकी शुरूकी बैठकमें शामिल नहीं हुअे। मगर वर्किंग कमेटी अिस बातकी क़द्र करती है, और अिस पर अपना सन्तोष ज़ाहिर करती है कि हिन्दुस्तानकी जनताके दूसरे सब हितों और विभागोंके नुमाअिन्दे विधान-सभामें हाज़िर रहे हैं, और विधान-सभाकी बैठकोंमें, सारे मुल्कसे ताल्लुक़ रखनेवाले कामके लिअे सहयोगकी, और अुम्दा कोशिशकी, जो भावना नज़र आअी है, अुसे देखकर अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करती है। यह कमेटी विधान-सभाको समूचे हिन्दुस्तानकी पूरी पूरी नुमाअिन्दा-सभा बनानेकी अपनी कोशिशें जारी रक्खेगी। और अुसे यक़ीन है कि मुस्लिम लीगके मेम्बर अिस महान काममें अपना सहयोग देंगे। यह सहयोग हासिल करनेके लिअे कमेटीने विधान-सभाके कांग्रेसी नुमाअिन्दोंको सलाह दी है कि वे अहम सवालोंकी चर्चा सभाकी अगली बैठक तक मुल्तवी रखें।

६ दिसम्बर, १९४६को दिये गये अपने बयानमें कार्य-पद्धतिके शंकास्पद मुद्देकी व्याख्या करते हुअे ब्रिटिश सरकारने अुसे बुनियादी मुद्दा कहा है, और सुझाया है कि अगर विधान-सभा ज़रूरी समझे, तो वह अुसे जल्द ही फेडरल कोर्टके सामने पेश कर सकती है। अुसके बाद ब्रिटिश सरकारकी तरफ़से जो बयान दिये गये हैं, अुनमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि अगर अिस अदालतका फ़ैसला अुनके अपने अर्थके ख़िलाफ़ हुआ, तो वे अुसे माननेके लिअे तैयार नहीं हैं। मुस्लिम लीगकी तरफ़से भी यह कहा गया है कि फेडरल कोर्टका फ़ैसला अुसके लिअे बन्धनकारक न होगा। अिसके साथ ही, हिन्दुस्तानके टुकड़े करनेकी अुनकी वह माँग, जो कैबिनेट मिशनकी स्कीमका निषेध करती है, आज भी दुहराअी जा रही है। कांग्रेस फेडरल कोर्टसे फ़ैसला करानेके बारेमें हमेशा तैयार रही है, लेकिन जब दूसरी कोअी पार्टी अुसमें शामिल होने या अुसे मंज़ूर करनेके लिअे तैयार नहीं है, और अुनमेंसे अेक पार्टी तो कैबिनेट मिशनकी स्कीमके आधार तकको नामंज़ूर करती है, अैसी हालतमें फेडरल कोर्टके सामने जाना बिलकुल ग़ैरज़रूरी, ग़ैरमौज़ूँ और कांग्रेस व फेडरल कोर्ट दोनोंकी शानके ख़िलाफ़ है। अेकके बाद अेक दिये गये अपने बयानोंसे ब्रिटिश सरकारने अिसका निषेध किया है।

वर्किंग कमेटीकी आज भी यह राय है कि ब्रिटिश सरकारने विभागोंमें वोट देनेके तरीक़ेकी जो व्याख्या की है, वह प्रान्तीय-स्वराजके अुस अुसूलके ख़िलाफ़ है, जो १६ मअीके बयानमें दी हुअी स्कीमके ख़ास मुद्दोंमेंसे अेक है। विधान-सभाके कामयाबीसे काम करनेमें रुकावट पैदा करनेवाली हर चीज़ को टालनेके लिअे यह कमेटी अुत्सुक है, और किसी बुनियादी अुसूलको न तोड़नेका ख़याल रखते हुअे ज़्यादा-से-ज़्यादा सहयोग पानेके लिअे अपनी ताक़तभर सब कुछ करनेको तैयार है। मुल्कके सामने खड़े हुअे सवालोंकी अहमियत और ताकीदको देखते हुअे, और अिसका ख़याल रखते हुअे कि किसी भी फ़ैसलेका नतीजा ज़रूर दूर तक अपना असर डालेगा, ताज़ा-से-ताज़ा वाक़यात पर विचार करने और अुचित आदेश देनेके लिअे वर्किंग कमेटीने जनवरीके शुरूमें महासमितिकी अेक ज़रूरी बैठक बुलाअी है।

(अंग्रेज़ीसे)

हरिजनोंके लिअे अलग डिब्बे

छूतछातके बारेमें संकुचित या ओछे विचार रखनेवाले काठियावाड़में भी छुआछूत मिटानेकी कोशिशें शुरू हो चुकी हैं। अैसे वक़्त वढ़वाण रियासत द्वारा दिये गये अिजारेकी देख-रेखमें वढ़वाण जंक्शन और वढ़वाण शहरके बीच चलनेवाली ट्रॉली-रेलवेमें हरिजनोंके लिअे अलग बैठकें और अलग डिब्बा रक्खा जाता है, यह बड़ी शरमकी बात है। अिस ट्रॉली-कंपनीने 'हरिजनोंके लिअे' नामका अेक तख़्ता लगाकर हरिजनोंका भारी अपमान किया है। ताज्जुबकी बात यह है कि अिस तरहके 'अलग' डिब्बेमें भी सवर्ण कहे जानेवाले हिन्दू आरामसे सफ़र करते हैं, और कंपनीके संचालक अिस बातको जानते हैं। साथ ही, हरिजनोंके किसी दूसरे डिब्बेमें बैठने पर मुसाफ़िरोंने कभी कोअी अेतराज किया हो, अिसकी भी कोअी मिसाल नहीं मिलती। फिर भी कंपनी हरिजनोंके लिअे अलग जगह रखनेके रिवाजसे चिपटी हुअी है, और दुःख अिस बातका है कि अिस कंपनीको अिजारेकी सहूलियत देनेवाला राज अिस बातको निबाहता है।

कुछ दिन पहले कंपनीके किसी आदमीने अेक रातको ट्रॉलीमें सफ़र करते हुअे अेक हरिजन शिक्षककी बेअिज़्ज़ती की थी। सब कोअी जानते हैं कि जब अेक सवर्ण हरिजन-सेवक अुस शिक्षककी तरफ़से कंपनीके संचालकोंके पास अिसकी सफ़ाअी माँगने गया, तो अुसे पीटा गया। वढ़वाणमें सेवा-मण्डल है, और अेक युवक-मण्डल भी है। और पास ही वढ़वाण कैम्पमें रहनेवाले हरिजन (ख़ुशक़िस्मतीसे) थोड़ी ज़्यादा आज़ादीसे ज़िन्दगी बिताते हैं। अैसी हालतमें यह अुम्मीद की जाती है कि वढ़वाणके लोग ट्रॉली-कंपनीके संचालकों पर ज़रूरी दबाव डालकर हरिजनोंके साथ बरती जानेवाली अिस बेअिज़्ज़तीको हमेशाके लिअे बन्द करा देंगे, और हिन्दू-समाज पर लगी कालिखको मिटानेमें मदद करेंगे।

सावरमती, १७–१२–'४६ प० म०

(गुजरातीसे)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोआखाली

नोआखाली पूरबी बंगालके ठेठ दक्खिनका अेक ज़िला है। गंगा और ब्रह्मपुत्रा, अिन दो नदियोंके मेल से पद्मा नदी बनी है। वही आगे जाकर जहाँसे मेघना कहलाती है, वहीं, अुसके किनारे, यह ज़िला फैला हुआ है। नदियोंने समुद्रसे लड़-लड़कर और अुसे हटाकर जो समथल भूमि बनाअी है, यह ज़िला अुसकी आख़िरी सीमा पर बसा है। पुराणों में अिसका नाम समतत था। मुसलमान, पोर्तुगीज़ और ब्रह्मदेशकी तरफ़के आराकानी लोगोंने अिस ज़मीन पर बहुत लूटमार की है। आज यह ज़मीन (बंगाल की लीगी सरकार जिसे दबा न सकी, अैसे) गुंडाराजकी लीलाभूमिके नाते दुनियामें बदनाम हो चुकी है। लेकिन भविष्यमें नोआखालीकी यही ज़मीन मौजूदा ज़मानेकी अहिंसा-भूमिके नामसे मशहूर होगी।

मैं किसी कामसे, पिछले महीने, गांधीजीसे मिलनेके लिअे नोआखाली गया था। कलकत्तासे चाँदपुर बहुत दूर नहीं है। मगर नदी पार करनेकी मुश्किलके कारण, 'नौ दिन चले अढ़ाअी कोस'-वाली मसलके मुताबिक़ कलकत्ताके अुत्तरमें गोवालन्दो तक ट्रेनसे जाना पड़ता है। वहाँसे स्टीमरमें अुतना ही रास्ता तय करके दक्खिनमें चाँदपुर आना होता है। गांधीजी चाँदपुरसे आगे लक्सम व चौमुहानी होकर, दत्तपाड़ा और क़ाज़ीरखिल गये थे। वहाँसे अुनके श्रीरामपुर चले जानेके कारण, अुनसे मिलनेके लिअे मैं अेक छोटे रास्तेसे वहाँ जा सका। चाँदपुरसे रेलमें बैठकर हाजीगंज गया। वहाँसे किश्तीपर सवार होकर ६ घण्टोंमें खाड़ीका १२ मीलका रास्ता पार करके क़ाज़ीरखिल पहुँचा।

क़ाज़ीरखिलमें खादी प्रतिष्ठानवाले श्री सतीशचंद्र दासगुप्तकी छावनी थी। चारों तरफ़ ख़ामोशी और ग़मगीनी छाअी हुअी थी। छावनीके लोग जिस ज़मींदारके घरमें रहते थे, अुसके यहाँ तीन ख़ून हुअे थे। ख़ूनके छिड़कावसे सारा आँगन तर हो चुका था। जिस घरमें पाँच सौ आदमियोंकी मेहमानदारी करने लायक़ सामान था, वहाँ अब कुछ भी बाक़ी न रहा था। लूटमार और आगकी निशानियाँ जहाँ-तहाँ नज़र आती थीं। लोगोंकी आँखें देखकर मैं पहचान सकता था कि अुनमें कौन हिन्दू और कौन मुसलमान है। जिन आँखोंमें घबराहट, दब्बूपन या चिन्ता भरी हो, वे हिन्दूकी आँखें। मुसलमानोंकी आँखोंका मैं विशेष वर्णन नहीं करूँगा। अितना कहना काफ़ी होगा कि अुनमें कहीं पछतावा नज़र नहीं आता था।

क़ाज़ीरखिलकी छावनीमें अेक क़िस्मकी ग़मगीनी और अेक तरहका पक्का अिरादा दिखाअी पड़ता था। गांधीजीने श्रीरामपुरमें अकेले रहना तय किया था, और अपने साथियोंको नोआखालीके गाँवोंमें अकेले या किसीको साथ लेकर फैल जानेके लिअे कहा था। अुसके मुताबिक़ सबने अपने-अपने गाँव पसन्द कर लिये थे। मैंने श्री सुशीला पैसे पूछा-"आपने कौनसा गाँव पसन्द किया है?" अुन्होंने कहा-"मेरे अपना गाँव पसन्द करनेसे पहले ही फलाँ गाँवकी बहनोंने रोकर मुझे अपना बना लिया है। कितनी दुखी हैं वे बहनें! अुनका सब कुछ लुट गया, अुसकी अुन्हें कोअी परवाह नहीं। लेकिन घरके मर्दोंका ख़ून हो जानेसे वे अनाथ हो गअी हैं। "आप हमारे साथ आकर रहेंगी, तो हमें थोड़ा दिलासा मिलेगा।" सुशीला बहनने कहा कि रातको कुत्ते गाँवमें आकर अैसे डरावने ढंगसे रोते हैं कि दिल दहल अुठता है। और सचमुच अुस रातको बारह बजे बाद कुत्ते आकर अैसे करुणाजनक स्वरमें रोये कि मेरे लिअे फिर सोना मुश्किल हो गया।

खाना खाकर दोपहरको मैं पैदल श्रीरामपुर गया। तीन साढ़े तीन मीलका रास्ता था। आसपासकी ज़मीन माँकी तरह दुआअें दे रही थी। नारियल और सुपारीके दरख़्त बहुत पास-पास और घने लगे हुअे थे। खेतोंका हरा रंग सुनहला हो गया था। जिस तरह दुहनेका वक़्त होने पर गाय बेचैन होकर रँभाती है, अुसी तरह खेत धानके खड़े कटनीका न्योता दे रहे थे। रास्तेमें जहाँ-जहाँ दुकानें थीं, वहाँ राखके ढेर, आड़ी-टेढ़ी और काली पड़ी हुअी लोहेकी चादरें, और निकम्मी बनकर जहाँ-तहाँ बिखरी हुअी घरेलू चीज़ें, अिनसानकी पिशाचलीलाकी गवाही दे रही थीं। पानीके बहावमें 'हायासिंथ' के सुन्दर फूलोंवाले प्राणघातक पौधे बहुतायतसे फैले हुअे थे। घंटे सवा घंटे चलकर हम श्रीरामपुरमें गांधीजीके स्थान पर पहुँचे। लोहेकी जली हुअी चद्दरोंके ढेरके पासकी अेक झोंपड़ीमें गांधीजी चरखा चला रहे थे। वे सूत नहीं कात रहे थे, बल्कि अहिंसामें अिनसानकी श्रद्धाके टूटे हुअे तार फिरसे जोड़ रहे थे। आँसू बहाना अुनके लिअे मुमकिन न था। अपनी सारी ज़िन्दगीमें जैसा दृश्य अुन्होंने पहले कभी देखा न था, अुसी पर आज वे ग़ौर कर रहे थे।

कलकत्तेमें या अुसके बाद बिहारमें जितने आदमी मारे गये, अुतने नोआखालीमें नहीं मरे। मगर हत्यारोंने पहलेसे ही यह तय कर लिया था कि त्योहारके दिनोंमें घर आये हुअे लोगोंके वापस लौटनेसे पहले ही अुन्हें ख़त्म कर डाला जाय। नोआखाली और टिपराके बड़े-बड़े धनी-मानी और वज़नदार लोग चुन-चुनकर मार डाले गये। जो लोग मकानोंकी अूपरी मंज़िलों पर चढ़ गये थे, अुन्हें अुनके घर जलाकर बाहर निकाला गया, और फिर अुनके गले काटे गये। अिस तरह, हत्यारे पहले चंदा वसूल करते थे, फिर ज़मीनमें गड़ा हुआ धन खोद निकालते थे, और आख़िरमें घरके मालिकको मार डालते थे। अेक स्कीमके मुताबिक़ लोगोंको चुन-चुनकर मारनेके कारण हत्याकी तादाद हज़ारों तक न पहुँच सकी; मगर वहाँ अेक ख़ौफ़नाक क़हर बरपा हुआ। छोटी-बड़ी लड़कियोंके अपहरण वग़ैराकी बात न करना ही अच्छा है। मन्दिरोंकी मूर्तियोंके टुकड़े करके अुन्हें जहाँ-तहाँ बिखेर दिया गया था। अैसे प्रदेशमें अहिंसामूर्ति गांधीजी अिनसानियतको धरती पर वापस लानेके लिअे तप कर रहे थे।

अुनके साथ क्या बात की जाय? जो बात मुझे करनी थी, वह अुस धरती पर बेमौज़ूँ और तुच्छ मालूम होती थी। अेक ख़याल यह भी आया कि बिना कुछ बोले ही वापस चला जाअूँ। लेकिन मैंने गांधीजीको लिखा था कि मैं फलाँ बातें करनेके लिअे आ रहा हूँ, और अुन्होंने तारसे अिजाज़त भेजी थी।

दूसरी चीज़ोंके साथ मुझे हिन्दुस्तानीके बारेमें भी बातें करनी थीं, सो मैंने कीं, और दूसरी कअी ज़रूरी बातें करनेके बाद, अंधेरा होनेसे पहले हम लौटे। घर आते-आते गहरा अँधेरा हो गया था। मैं थका-माँदा सो गया, और जब तक कुत्तोंने रोना शुरू नहीं किया, तब तक गहरी नींद ली।

दूसरे दिन २२ नवम्बरको कस्तूरबा-दिन था। सवेरे सबने अुठकर पूरी गीताका पारायण किया।

जहाँ अनगिनत अबलाओं पर अत्याचार हुअे थे, अनेकोंको शंखकी चूड़ियाँ तोड़ डाली गअी थीं, और जहाँ बालाओंका अपहरण हुआ था, वहाँ, अुस प्रदेशमें, सती साध्वी कस्तूरबाकी पुण्यतिथि मनाते समय मन स्वस्थ कैसे रहता? गीता-पाठ पूरा करके, अेक भाअीको साथमें लेकर मैं श्रीरामपुर गया। जहाँ गांधीजी अकेले ही रहना चाहते हैं, वहाँ जिस तरह रात नहीं रहा जा सकता, अुसी तरह वहाँ भोजन पानेकी अुम्मीद भी नहीं की जा सकती; यह मर्यादा जानकर मैं अपना खाना अपने साथ ले गया था।

गांधीजीने अुसी दिन खाना शुरू किया था। वे थोड़ा खाकर सो गये। सवेरे तीन बजे अुठकर अुन्होंने पूरी गीता पढ़ी थी। सोलहवें अध्याय तक पहुँचते-पहुँचते वे अितने थक गये कि आगेके श्लोक ज़ोरसे बोल न सके। वे सोते वक़्त पंखा भी नहीं सह सकते थे। सवेरे नहानेसे पहले अुन्होंने अपने हाथसे ही मालिश कर ली थी, और धूपमें घूमे थे।

आनेवालोंके साथ गांधीजी बहुत मिठाससे बातें करते थे। अुनका अेक-अेक शब्द मानो किसी जंगलमें लगी आग (दावानल)को बुझा रहा था। लीग-सरकारके वज़ीर जनाब शमसुद्दीन साहबने गांधीजीको, दोपहरके वक़्त, रामगंज पुलिस थाने पर होनेवाली अेक सभाके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिअे बुलवाया था। जब रास्ता देखते-देखते थक गये, तब कहीं अेक किश्ती आअी। नाव तक जानेमें अेक पुल पार करना पड़ता था। यह पुल अितना कच्चा और अनगढ़ था कि अुसे लाँघते वक़्त जान मुट्ठीमें लेकर चलना पड़ता था; मगर अुसे सुधारनेकी परवाह न सरकारको थी, न वहाँके लोगोंको। नावमें भी गांधीजी फिर सो गये।

रामगंज थानेके हिन्दू-मुसलमान दोनोंके नुमाअिन्दोंकी सभा अेक खेमेमें बन्द दरवाज़ोंके भीतर हुअी थी। अुसमें जो बातें हुअीं, अुनका सार अखबारोंमें छप चुका है। चूँकि सभा खानगी थी, अिसलिअे अुसकी कअी जानने लायक़ बातें यहाँ नहीं दी जा सकतीं। सभाके खत्म होने तक बहुत रात बीत चुकी थी। किश्तीमें अेक किटसन बत्ती रखवाकर गांधीजी बहुत रात बीते श्रीरामपुरके लिअे रवाना हुअे, और मैं क़ाज़ीरखिल आकर सो गया।

दूसरे दिन दोपहरको खाना खाकर मैं वापस गया। वही नहरका रास्ता। बीचमें डकाअिती नदी पड़ती थी। छोटी-बड़ी किश्तियोंमें लोग नारियल, सुपारी, सन, साग-सब्ज़ी वग़ैरा मुक़ामी पैदावारकी चीज़ें बाज़ारमें ले जा रहे थे। मगर मेरा ध्यान अुस तरफ़ जाता न था।

रास्तेभर — नाव पर, ट्रेन पर, स्टीमर पर — अेक ही विचार मनमें अुठता रहा कि अहिंसामूर्त्ति गांधीजी किस तरह निडर बनकर बाघके मुँहमें जाकर बैठे हैं! अुन्होंने दक्खिनी अफ्रीकामें और हिन्दुस्तानमें सत्याग्रहीके नाते प्रतीकारात्मक अहिंसाका पहलेपहल विकास किया, और अपने क्षात्रतेजका चमत्कार दिखाया। अुसके बाद देशकी ताक़त बढ़ाकर राष्ट्रका निर्माण करनेके लिअे कअी क़िस्मके प्रोग्राम तफ़सीलवार पेश करके देशको रचनात्मक या तामीरी अहिंसाका परिचय कराया। अिसमें अुनकी वैश्यबुद्धिकी ताक़त प्रकट हुअी।

अब वे यहाँ दावानल पर अपना आसन जमाकर समन्वयात्मक अहिंसाका आवाहन कर रहे हैं, और तपस्यासे पवित्र ब्राह्मतेज प्रकट कर रहे हैं। अभी तक अुनकी साधना अेक क़िस्मकी थी, अब अिसके बादकी, बिलकुल दूसरी क़िस्मकी है। आगकी लपटोंके सामने हद दरजेकी शान्ति रखकर वे राक्षसोंके दिलोंको पिघलाना चाहते हैं; और प्रेम व तपस्याके ज़ोरसे कलियुगमेंसे सतयुग अुपजाना चाहते हैं। मैंने देखा कि अब गांधीजी अब तकके गांधीजी नहीं रहे। वे अेक बिलकुल नअी साधना लेकर बैठे हैं। मुसीबत जितनी भयंकर, अुतनी ही कठोर अुनकी साधना। जब तक जानमें जान है, तब तक पाप, अनाचार, दुर्जनता, और शैतानी बदनियतकी ताक़तोंसे न हारनेका अुनका निश्चय है। जब पापके पहाड़ सामने खड़े हों, तब श्रद्धाकी आँखें पापोंके समूहको दूर करनेवाली अहिंसाकी सर्वोत्तम विभूतिका ही ध्यान करेंगी।

और शरीर? शरीर तो जब तक जीता है, तब तक अुसे आत्माके पीछे-पीछे जाना ही चाहिये। वह तो आत्मशक्तिकी सेवाके लिअे ही बना है।

मैंने बड़ी आजिज़ीके साथ बापूजीसे कहा — "आप अनेक नये-नये सिद्धान्तोंका बोझ अेक साथ क्यों अुठाते हैं?" अेक अंग्रेज़ी कहावत याद आनेसे मैंने कहा — "अिज़ अिट् नॉट लाअिक टेम्प्टिंग प्रॉविडन्स?" — "क्या यह भगवान्‌की करुणाको कसौटी पर चढ़ाना नहीं है?"

वे गंभीरतासे बोले — "हाँ, लोग अैसा महसूस कर सकते हैं, मगर किसी-न-किसीको तो मेरी श्रद्धा समझ लेनी चाहिये। मुझे रामनामकी शक्तिका दिन-ब-दिन ज़्यादा तजरबा होता जाता है। क़ुदरती अिलाजमें पंचमहाभूतोंकी — मिट्टी, पानी, हवा, धूप वग़ैराकी — मदद चाहे ली जाय, मगर खास ताक़त तो रामनामकी ही है। रामनामका असर शरीर पर और सारी दुनिया पर अजीब तरीक़ेसे होता है। क़ुदरती अिलाजसे मुझे यह चीज़ मिली है। यह चीज़ श्रद्धा रखने लायक़ है।" वर्धा, १०-१२-'४६

(गुजरातीसे)

काका कालेलकर

गांधीजीका अेक ख़त

[श्रीरामपुरसे श्री नारणदास गांधी को लिखे गांधीजीके अेक ख़तमें दिया गया ब्योरा पाठकोंके कामका मालूम होनेसे अुसकी खास-ख़ास बातें नीचे दी हैं।

— सम्पादक]

चि० नारणदास,

तुम्हारे ख़तका जवाब देना ज़रूरी है। मैंने अपनी मामूली खुराक शुरू कर दी है, अिसलिअे अब फ़िकरकी कोअी वजह भी न रही। सच पूछो तो, विचारमय जीवनमें फ़िकरकी कोअी गुंजाअिश ही नहीं होती। अिस बारका काम मेरी ज़िन्दगीका सबसे ज़्यादा अटपटा काम है। 'मार्ग सूझे नव घोर रजनीमां, निज शिशुने संभाळ, मारो जीवनपंथ अुजाळ'* — अिस भजनको आज मैं सौ फ़ी सदी वाजिब तौर पर गा सकता हूँ। मुझे याद नहीं पड़ता कि मेरे रास्तेमें अैसा अँधेरा पहले कभी आया हो। और, रात लम्बी दिखाअी पड़ती है। सन्तोष सिर्फ़ यह है कि मैं न तो हारा हूँ, न नाअुम्मेद हुआ हूँ। जो होना होगा, सो होकर रहेगा। ख़याल यह है कि यहीं करना और यहीं मरना। 'करने'का मतलब यह है कि या तो हिन्दू-मुसलमान दोस्तकी तरह रहने लग जायँ, या अिस कोशिशमें मैं मर मिटूँ। यह काम कठिन है। 'हरि करे सो होय'।

अिस यज्ञमें सभी साथी अपनी राज़ी-ख़ुशीसे शामिल हुअे हैं। फिर भी जिन्हें अिसका पछतावा हो, वे अिससे अलग हो सकते हैं। सबको अेक-अेक गाँवमें बैठा दिया है। हरअेकके साथ अेक-अेक बंगाली दुभाषिया है। कनु भी बिछुड़ गया है। आभा भी। मैं दूरके अेक दुःखी गाँवमें रहता हूँ। परशुराम मेरे साथ हैं — अुन्हें (भाषा के कारण) कहीं अकेला नहीं छोड़ा जा सकता। वह मूक सेवक हैं। कुशल लघुलिपि लेखक हैं। दूसरे अेक बंगाली प्रोफेसर हैं। दोनों मेरी निजी ख़िदमतके काम भी करते हैं। बाक़ी सब मुझसे प्रायः दस-दस मीलके फ़ासले पर हैं। ज़रूरत होने पर मुझसे मिलने आ सकते हैं। प्यारेलाल, सुशीला नय्यर और सुशीला पै भी अलग-अलग गाँवोंमें हैं। कनु ख़ुश है। रामधुन गाता-गवाता है। वह अपना सब काम ठीक वक़्त पर करता है। अीश्वरने अुसे अच्छी तन्दुरुस्ती दी है। आभा बापा के साथ गअी है। वह यहाँसे सोलह मील दूर है। बापा आभाको बहुत चाहने लगे हैं। वे अुसकी सेवावृत्तिसे खुश हैं। आभा बापाके लिअे रोटी वग़ैरा बना देती है, और बंगाली होनेके कारण बंगाली बहनोंमें काम करती है। मुझसे अलग होते समय अुसे बहुत बुरा लगा। लेकिन धर्मका यही तक़ाज़ा था। अिसलिअे अुसे दूर भेजा है। मैं भी अुसकी सेवाका आदी बन गया था। मगर मेरी अिस कठिन साधनामें सेवाकी आदत कैसी? अब तुम यह समझ सकोगे कि सब कुछ शुद्ध धर्मके ख़यालसे हो रहा है। अिसलिअे सबको आनन्द ही लूटना है। बहुत लिख गया। अपना काम करते रहना।

५-१२-'४६

बापूके आशीर्वाद

(गुजरातीसे)

विषय-सूची

		पृ
सरकारी हाकिमोंकी बेअदबी	... किशोरलाल घ० मशरूवाला	४४
धर्म-कथा	... वालजी गोविन्दजी देसाअी	४५
सवर्ण हिन्दुओंका फ़र्ज़	...	४५
दक्खिनी अफ्रीका क्या करेगा?	... गांधीजी	४५
नोआखालीमें शान्ति-योजना	...	४५३
वर्किंग कमेटीका बयान	...	४५५
नोआखाली	... काका कालेलकर	४५६
गांधीजीका अेक ख़त	...	
टिप्पणी	...	४५
हरिजनोंकेलिअे अलग डिब्बे	... प्० म०	

* घनी अँधेरी रातमें रास्ता नहीं सूझता। (हे भगवन्!) अपने अिस बच्चेको सँभालो, अिसकी ज़िन्दगीके रास्तेको अुजालो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar